☆ सोहँ महाराज शेर सिँघ विशनूं भगवान दी जै ☆

निहकलंक हरिशब्द भंडार

पंद्रवां भाग

http://nehklankharshabad.com/

✪ तत्करा ✪

मिती–सम्मत	नाम	स्थान		पन्ना नं:
२० हाढ़ २०२० बिक्रमी	अजीत सिँघ दे गृह	बटाला	गुरदासपुर	००१
२१ हाढ़ २०२० बिक्रमी	प्रीतम सिँघ दे गृह	ढिलवां	कपूरथला	००४
२१ हाढ़ २०२० बिक्रमी	भाग सिँघ दे गृह	दुराहा	लुधिआणा	००७
२१ हाढ़ २०२० बिक्रमी	बिशन सिँघ सेवा सिँघ	गुड़गाउँ	गुड़गाउँ	००८
२२ हाढ़ २०२० बिक्रमी	बिशन सिँघ दे गृह	गुड़गाउँ	गुड़गाउँ	०१६
२३ हाढ़ २०२० बिक्रमी	पहाढ़ गंज शब्द सिँघासण	दिल्ली	दिल्ली	०१९
२३ हाढ़ २०२० बिक्रमी	गुरमेज सिँघ दे गृह	विने नगर	दिल्ली	१२२
२४ हाढ़ २०२० बिक्रमी	रेशम सिँघ दे गृह	मेरठ छाउँणी	मेरठ	०२४
२५ हाढ़ २०२० बिक्रमी	रामेशवर दास दे गृह	खतोली		०३१
२५ हाढ़ २०२० बिक्रमी	तेज़ भान	अंबाला छाउँणी		०३२
२६ हाढ़ २०२० बिक्रमी	गुरदेव सिँघ दे गृह	घड़ूआं	अंबाला	०३७
२७ हाढ़ २०२० बिक्रमी	सुरजीत सिँघ दे गृह	घड़ूआं	अंबाला	०४७
२७ हाढ़ २०२० बिक्रमी	सुखवंत कौर दे गृह	लुधिआणा	लुधिआणा	०४९
२७ हाढ़ २०२० बिक्रमी	निरंजण सिँघ दे गृह	लुधिआणा	लुधिआणा	०५१
२७ हाढ़ २०२० बिक्रमी	लाल सिँघ दे गृह	डल्लेवाल	जलंधर	०५२
२७ हाढ़ २०२० बिक्रमी	संतोख सिँघ दे गृह	सोढीआं	जलंधर	०५६
२८ हाढ़ २०२० बिक्रमी	गुरदेव सिँघ दे गृह	दोसांझ खुरद	जलंधर	०६३
२८ हाढ़ २०२० बिक्रमी	प्रीतम सिँघ साधू सिँघ	झंडेर कलां	जलंधर	०६८
२९ हाढ़ २०२० बिक्रमी	साधू सिँघ दे गृह	झंडेर कलां	जलंधर	०७३
२९ हाढ़ २०२० बिक्रमी	प्रीतम कौर दे गृह	करतार पुर	जलंधर	०७४

1
१५

1
१५

२६ हाढ़ २०२० बिक्रमी जसवंत सिँघ दे गृह करतार पुर जलंधर ०७६
०१ सावण २०२० बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच जेठूवाल अमृतसर ०८२
०२ सावण २०२० बिक्रमी बीबी बलवंत कौर दे गृह अमृतसर अमृतसर ०८६

२५ सावण २०२० बिक्रमी कपूर सिँघ दे गृह मौगा फिरोज़पुर ०६८
२६ सावण २०२० बिक्रमी माधा सिँघ दे गृह चीमा कलां अमृतसर १३४
२७ सावण २०२० बिक्रमी सड़क ते अकालीआं नाल बचन होए ठक्कर पुरा १४५
२७ सावण २०२० बिक्रमी बेला सिँघ दे गृह माहल अमृतसर १४७
२८ सावण २०२० बिक्रमी हरबंस सिँघ बलवंत सिँघ माहल अमृतसर १५८
२८ सावण २०२० बिक्रमी हज़ारा सिँघ दे गृह अमृतसर अमृतसर १६१
३२ सावण २०२० बिक्रमी हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर १६४
०१ भादरों २०२० बिक्रमी हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर १७५
2 ०२ भादरों २०२० बिक्रमी हरि भगत दवार जेठूवाल अमृतसर १६१ 2
१५ ०२ भादरों २०२० बिक्रमी प्रीतम सिँघ दे नवित नजाम पुरा अमृतसर १६८ १५
०३ भादरों २०२० बिक्रमी हरि भगत दवार (बीबी चरनी रूपो वाली नवित) जेठूवाल २०५
०३ भादरों २०२० बिक्रमी सुरजन सिँघ महिंदर सिँघ गुरबचन सिँघ बसंत कौर
मांगा सराए अमृतसर २१०

०४ भादरों २०२० बिक्रमी अजीत सिँघ, दलीप सिँघ मांगा सराए अमृतसर २१६
०४ भादरों २०२० बिक्रमी गिरधारा बलोवाली दे नवित जेठूवाल अमृतसर २२२
०५ भादरों २०२० बिक्रमी बख़शीश सिँघ दे गृह कादरबाद अमृतसर २२७
०५ भादरों २०२० बिक्रमी करनैल सिँघ दे गृह कादरबाद अमृतसर २३६
०५ भादरों २०२० बिक्रमी सवरन सिँघ दे गृह कादरबाद अमृतसर २३६
०६ भादरों २०२० बिक्रमी बूड़ सिँघ दे गृह कादरबाद अमृतसर २४१

०६	भादरों	२०२०	बिक्रमी	मस्सा सिँघ दे गृह	बल	अमृतसर	२४४
०७	भादरों	२०२०	बिक्रमी	अमराउ सिँघ दे गृह	बल	अमृतसर	२५२
०७	भादरों	२०२०	बिक्रमी	अजीत सिँघ दे गृह	बल	अमृतसर	२५४
०७	भादरों	२०२०	बिक्रमी	माता रणजीत कौर दे	नवित हरि भगत दवार	जेठूवाल	२५६
०८	भादरों	२०२०	बिक्रमी	गुरबख्श सिँघ दे	नवित हरि भगत दवार	जेठूवाल	२५६
०६	भादरों	२०२०	बिक्रमी	हरभजन सिँघ दे	नवित हरि भगत दवार	जेठूवाल	२६३
१०	भादरों	२०२०	बिक्रमी	ठाकर सिँघ दे	नवित हरि भगत दवार	जेठूवाल	२६७
११	भादरों	२०२०	बिक्रमी	हरि संगत दे	नवित हरि भगत दवार	जेठूवाल	२७२
१२	भादरों	२०२०	बिक्रमी	लंगर दी सेवा समापत होण समें दया कीती			२७८
१२	भादरों	२०२०	बिक्रमी	गुरदित सिँघ दे गृह	राम दीवाली	अमृतसर	२८५
१३	भादरों	२०२०	बिक्रमी	फौजा सिँघ दे गृह	राम दीवाली	अमृतसर	२६३
१३	भादरों	२०२०	बिक्रमी	सवरन सिँघ दे गृह	राम दीवाली	अमृतसर	२६६
१३	भादरों	२०२०	बिक्रमी	जिंदर सिँघ दे गृह	राम दीवाली	अमृतसर	२६६
१३	भादरों	२०२०	बिक्रमी	लक्खा सिँघ दे गृह	राम दीवाली	अमृतसर	२६७
२२	भादरों	२०२०	बिक्रमी	दलीप सिँघ दे गृह	जंडिआला गुरू	अमृतसर	२६८
२३	भादरों	२०२०	बिक्रमी	तेजा सिँघ दे गृह	जंडिआला गुरू	अमृतसर	३१०
२३	भादरों	२०२०	बिक्रमी	संतोख सिँघ दे गृह	जंडिआला गुरू	अमृतसर	३१३
२३	भादरों	२०२०	बिक्रमी	सुरैण सिँघ दे गृह	जंडिआला गुरू	अमृतसर	३१५
२३	भादरों	२०२०	बिक्रमी	सवरन सिँघ दे गृह	जंडिआला गुरू	अमृतसर	३१६
२३	भादरों	२०२०	बिक्रमी	नरिंदर सिँघ दे गृह	जंडिआला गुरू	अमृतसर	३२०
२३	भादरों	२०२०	बिक्रमी	सुरैण सिँघ दे गृह	जंडिआला गुरू	अमृतसर	३२१
२३	भादरों	२०२०	बिक्रमी	बूटा सिँघ दे गृह	एकल गंडा	अमृतसर	३१४

3
१५

२३	भादरों	२०२०	बिक्रमी	ज्ञान सिँघ दे गृह	भोरछी	अमृतसर	३२६
२४	भादरों	२०२०	बिक्रमी		भोरछी	अमृतसर	३३८
२४	भादरों	२०२०	बिक्रमी	डाकटर पाल सिँघ	भलाईपुर डोगरां	अमृतसर	३४२
२४	भादरों	२०२०	बिक्रमी	गुरमुख सिँघ पाल सिँघ	भलाईपुर डोगरां	अमृतसर	३४७
२५	भादरों	२०२०	बिक्रमी	फ़ौजा सिँघ दे गृह	भलाईपुर डोगरां	अमृतसर	३५२
२५	भादरों	२०२०	बिक्रमी	महिंदर सिँघ दे गृह	भलाईपुर डोगरां	अमृतसर	३५६
२५	भादरों	२०२०	बिक्रमी	ऊधम सिँघ दे गृह	जलालाबाद	अमृतसर	३५६
२५	भादरों	२०२०	बिक्रमी	बलवंत सिँघ दे गृह	जलालाबाद	अमृतसर	३५६
२५	भादरों	२०२०	बिक्रमी	धरमबीर दे गृह	जलालाबाद	अमृतसर	३६०
२५	भादरों	२०२०	बिक्रमी	सोहण सिँघ दे गृह	रामपुर	अमृतसर	३६२
२६	भादरों	२०२०	बिक्रमी	सुखदेव राज दे गृह	कल्ला	अमृतसर	३६८
२६	भादरों	२०२०	बिक्रमी	दलीप सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	३७१
२६	भादरों	२०२०	बिक्रमी	कुंदन सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	३७२
२६	भादरों	२०२०	बिक्रमी	अरूड़ सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	३७३
२६	भादरों	२०२०	बिक्रमी	हरी सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	३७४
२६	भादरों	२०२०	बिक्रमी	दर्शन सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	३७५
२६	भादरों	२०२०	बिक्रमी	लाल सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	३७६
२६	भादरों	२०२०	बिक्रमी	प्रीतम सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	३७७
२६	भादरों	२०२०	बिक्रमी	प्रीतम सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	३७७
२६	भादरों	२०२०	बिक्रमी	पूरन सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	३७७
२६	भादरों	२०२०	बिक्रमी	हरनाम सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	३७८
२६	भादरों	२०२०	बिक्रमी	गुरमुख सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	३८०

4 १५

4 १५

२६ भादरों २०२० बिक्रमी सरमुख सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	३८१
२६ भादरों २०२० बिक्रमी सुखदेव राज दे गृह	कल्ला	अमृतसर	३८२
२७ भादरों २०२० बिक्रमी प्रीतम सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	३६१
२७ भादरों २०२० बिक्रमी गुरबख्श सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	३६३
२७ भादरों २०२० बिक्रमी करम सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	३६४
२७ भादरों २०२० बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	३६४
२७ भादरों २०२० बिक्रमी गुरमुख सिँघ दे गृह	कल्ला	अमृतसर	३६५
२७ भादरों २०२० बिक्रमी नरैण सिँघ दे गृह	कंग	अमृतसर	३६७
२७ भादरों २०२० बिक्रमी गुरनाम सिँघ दे गृह	कंग	अमृतसर	४०४
२७ भादरों २०२० बिक्रमी कुंदन सिँघ दे गृह	माल चक्क	अमृतसर	४०७
२८ भादरों २०२० बिक्रमी महिंदर सिँघ दे गृह	बाठ	अमृतसर	४१४
२८ भादरों २०२० बिक्रमी मस्सा सिँघ दे गृह	नौरंगाबाद	अमृतसर	४१६
२८ भादरों २०२० बिक्रमी मक्खण सिँघ दे गृह	नौरंगाबाद	अमृतसर	४२२
२६ भादरों २०२० बिक्रमी राधा सुआमी डेरे	तरन तारन	अमृतसर	४२५
२६ भादरों २०२० बिक्रमी इन्दर सिँघ दे गृह	बंडाला	अमृतसर	४२६
२६ भादरों २०२० बिक्रमी शिव सिँघ दे गृह	बंडाला	अमृतसर	४३१
२६ भादरों २०२० बिक्रमी बुढ्ढा सिँघ दे गृह	बंडाला	अमृतसर	४३३
२६ भादरों २०२० बिक्रमी पाल सिँघ दे गृह	बंडाला	अमृतसर	४३४
२६ भादरों २०२० बिक्रमी त्रलोक सिँघ दे गृह	बंडाला	अमृतसर	४३५
०१ अस्सू २०२० बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	४३६
०२ अस्सू २०२० बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	४४५
०३ अस्सू २०२० बिक्रमी फ़ौजा सिँघ दे गृह	सिरहाली	अमृतसर	४४८

5
१५

०३	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	गुरबचन सिँघ गुरदीप सिँघ	सिरहाली	अमृतसर	४४६
०३	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	गुरदास सिँघ दे गृह	शाहवाला	अमृतसर	४५०
०३	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	करनैल सिँघ नछत्तर सिँघ	शाहवाला	अमृतसर	४५३
०४	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	करतार सिँघ दे गृह	शाहवाला	अमृतसर	४६०
०४	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	जरनैल सिँघ दे गृह	शाहवाला	अमृतसर	४६२
०४	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	बलवंत सिँघ दे गृह	तलवंडी	अमृतसर	४६५
०४	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	सरदारा सिँघ दे गृह	मनावां	फिरोज़पुर	४६६
०५	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	इन्दर सिँघ दे गृह	खोसे	फिरोज़पुर	४७६
०५	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	केहर सिँघ दे गृह	रजी वाला	फिरोज़पुर	४७६
०५	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	मल सिँघ दे गृह	रजी वाला	फिरोज़पुर	४८४
०५	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	सुरैण सिँघ दे गृह	निधां वाली	फिरोज़पुर	४६७
०६	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	मेला सिँघ दे गृह	डगरू	फिरोज़पुर	४६३
०६	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	धंना सिँघ दे गृह	डगरू	फिरोज़पुर	४६७
०६	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	सीतल सिँघ दे गृह	डगरू	फिरोज़पुर	४६७
०६	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	गुरबचन सिँघ दे गृह	सद्देवाला	फिरोज़पुर	५०४
०७	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	ज़ोरा सिँघ दे गृह	सद्देवाला	फिरोज़पुर	५१०
०७	अस्सू	२०२०	बिक्रमी		सद्देवाला	फिरोज़पुर	५१२
०७	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	हाकम सिँघ दे गृह	भाई की डरोली	फिरोज़पुर	५१४
०७	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	संपूरन सिँघ दे गृह	फिरोज़शाह	फिरोज़पुर	५२४
०७	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	सुंदर सिँघ दे गृह	फेरू	फिरोज़पुर	५२७
०७	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	अरजण सिँघ महिंदर सिँघ	बसती ख़लील	फिरोज़पुर	५२६
०८	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	हरी सिँघ दे गृह	बसती ख़लील	फिरोज़पुर	५३५

6
१५

०८	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	रक्खा सिँघ दे गृह	बसती ख़लील	फिरोज़पुर	५३७
०८	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	राम सिँघ दे गृह	फिरोज़पुर छौणी	फिरोज़पुर	५४६
०८	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	आज्ञा सिँघ दे गृह	फिरोज़पुर	फिरोज़पुर	५५५
०६	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	धरम सिँघ दे गृह	बसती हबीब	फिरोज़पुर	५५७
०६	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	सुरजण सिँघ दे गृह	फिरोज़पुर	फिरोज़पुर	५६२
१०	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	तारा सिँघ दे गृह	फिरोज़पुर	फिरोज़पुर	५७३
१०	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	हरजीत सिँघ दे गृह	बसती तेगा सिँघ	फिरोज़पुर	५७६
१०	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	दिलबाग सिँघ दे गृह	अटारी	फिरोज़पुर	५८२
१०	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	सुलक्खण सिँघ दे गृह	रुकना मूंगला	फरोज़पुर	५८६
११	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	जागीर सिँघ दे गृह	तूत	फिरोज़पुर	५६५
११	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	गुरदीप सिँघ दे गृह	तूत	फिरोज़पुर	६०५
११	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	गुरदेव सिँघ दे गृह	गोलेवाला	फिरोज़पुर	६०५
१२	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	बीबी निहाल कौर दे गृह	गोलेवाला	फिरोज़पुर	६१४
१२	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	कृपाल सिँघ दे गृह	गोलेवाला	फिरोज़पुर	६१६
१२	अस्सू	२०२०	बिक्रमी		गोलेवाला	फिरोज़पुर	६२१
१२	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	इन्दर कौर दे गृह	कोटकपूरा	फिरोज़पुर	६२३
१२	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	तेजा सिँघ	सादक	फिरोज़पुर	६२७
१३	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	अजैब सिँघ, राज सिँघ दे गृह	फरीदकोट	फिरोज़पुर	६३४
१३	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	बूड़ सिँघ दे गृह	नाथेवाल	फिरोज़पुर	६४०
१४	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	सौदागर सिँघ दे गृह	नाथेवाल	फिरोज़पुर	६४६
१४	अस्सू	२०२०	बिक्रमी	जसवंत सिँघ दे गृह	राजेवाल	फिरोज़पुर	६५१
१४	अस्सू	२०२०	बिक्रमी		कोटला	फिरोज़पुर	६५८

7
१५

१४ अस्सू २०२० बिक्रमी	कपूर सिँघ दे गृह	चनूं वाला	फिरोज़पुर	६६२
१४ अस्सू २०२० बिक्रमी	भाग सिँघ, नाज़र सिँघ, जागीर सिँघ	माड़ी मुसतफ़ा	फिरोज़पुर	६६७
१५ अस्सू २०२० बिक्रमी		रामू वाला	फिरोज़पुर	६७४
१५ अस्सू २०२० बिक्रमी	सुहावा सिँघ, मुखतार सिँघ, शेर सिँघ दे गृह	पंज गराई	फिरोज़पुर	६७८
१५ अस्सू २०२० बिक्रमी	गुलज़ार सिँघ दे गृह	शाहो	फिरोज़पुर	६८२
१६ अस्सू २०२० बिक्रमी		शाहो	फिरोज़पुर	६८६
१६ अस्सू २०२० बिक्रमी	बुगर सिँघ दे गृह	बरगाड़ी	फिरोज़पुर	६८८
१६ अस्सू २०२० बिक्रमी	भाग सिँघ दे गृह	दबड़ी खाना	बठिंडा	६९२
१७ अस्सू २०२० बिक्रमी	हरचंद सिँघ दे गृह	हरराए	बठिंडा	७००
१७ अस्सू २०२० बिक्रमी	जागीर दास दे गृह	खिआली वाला	बठिंडा	७०३
१७ अस्सू २०२० बिक्रमी	बख़तार सिँघ दे गृह	खिआली वाला	बठिंडा	७०५
१८ अस्सू २०२० बिक्रमी	हरनाम कौर दे गृह	खिआली वाला	बठिंडा	७१४
१८ अस्सू २०२० बिक्रमी	हरनाम कौर दे गृह	खिआली वाला	बठिंडा	७१७
१८ अस्सू २०२० बिक्रमी	गुरदवारे विच	खिआली वाला	बठिंडा	७२०
१८ अस्सू २०२० बिक्रमी	फ़तिह सिँघ, लाभ सिँघ दे गृह	चक्क	बठिंडा	७२०
१८ अस्सू २०२० बिक्रमी	मुकंद सिँघ दे गृह	मराज	बठिंडा	७२३
१९ अस्सू २०२० बिक्रमी	रोशन लाल दी दुकान विच	रामपुरा फूल	बठिंडा	७३१
१९ अस्सू २०२० बिक्रमी	सुख राज दे गृह	चक्कर	बठिंडा	७३६
२० अस्सू २०२० बिक्रमी	दलीप सिँघ दे गृह	बधनी	फिरोज़पुर	७४५
२० अस्सू २०२० बिक्रमी	गुरचरन सिँघ दे गृह	बधनी	फिरोज़पुर	७५३
२० अस्सू २०२० बिक्रमी	उजागर सिँघ दे गृह	नवां रामू वाला	फिरोज़पुर	७५६

9 १५

२० अस्सू २०२० बिक्रमी	गुरदयाल सिँघ दे गृह	रामू वाला	फिरोज़पुर	७५६
२० अस्सू २०२० बिक्रमी	महिंदर कौर दे गृह	चड़िक	फिरोज़पुर	७६१
२० अस्सू २०२० बिक्रमी	करतार सिँघ दे गृह	चड़िक	फिरोज़पुर	७६५
२१ अस्सू २०२० बिक्रमी	हरि संगत दा इकट्ठ होया	पक्खोवाल	लुधिआणा	७७३
२२ अस्सू २०२० बिक्रमी	मंगल सिँघ दे गृह	पक्खोवाल	लुधिआणा	८०४
२२ अस्सू २०२० बिक्रमी	नाज़र सिँघ दे गृह	पक्खोवाल	लुधिआणा	८०६
२२ अस्सू २०२० बिक्रमी	बीबी भगवान कौर दे गृह	पक्खोवाल	लुधिआणा	८०८
२२ अस्सू २०२० बिक्रमी	साधू सिँघ दे गृह	पक्खोवाल	लुधिआणा	८०९
२२ अस्सू २०२० बिक्रमी	सुरजन सिँघदे गृह	पक्खोवाल	लुधिआणा	८११
२२ अस्सू २०२० बिक्रमी	सरदारा सिँघ दे गृह	पक्खोवाल	लुधिआणा	७१२
२२ अस्सू २०२० बिक्रमी	अदालत सिँघ दे गृह	आडलू	लुधिआणा	७१३
२३ अस्सू २०२० बिक्रमी	गुलाब कौर	बुरज हकीमां	लुधिआणा	८२१
२३ अस्सू २०२० बिक्रमी	धंना सिँघ दे गृह	ढै पई	लुधिआणा	८२४
२३ अस्सू २०२० बिक्रमी	बलवंत सिँघ दे गृह	गुजरवाल	लुधिआणा	८२७
२३ अस्सू २०२० बिक्रमी	हरनाम सिँघ दे गृह	मैहमां सिँघ वाला	लुधिआणा	८२८
२३ अस्सू २०२० बिक्रमी	बाबू सिँघ दे गृह	डेहलों	लुधिआणा	८३०
२४ अस्सू २०२० बिक्रमी	सवरन सिँघ दे गृह	राम गड़्ह सरदारां	लुधिआणा	८३६
२४ अस्सू २०२० बिक्रमी	श्री राम दे गृह	मकसूदड़ा	लुधिआणा	८४३
२४ अस्सू २०२० बिक्रमी	बाबूराम दे गृह	मकसूदड़ा	लुधिआणा	८४६
२४ अस्सू २०२० बिक्रमी	बिशन सिँघ दे नाल	गुरदवारा गाड़्हे वाला	लुधिआणा	८४६
२४ अस्सू २०२० बिक्रमी	भजन सिँघ दे गृह	जीरख	लुधिआणा	८५१
२५ अस्सू २०२० बिक्रमी	नछत्तर सिँघ दे गृह	दबुरजी	लुधिआणा	८५८

9 १५

२५ अस्सू २०२० बिक्रमी पद्दी लुधिआणा ८६१
२५ अस्सू २०२० बिक्रमी बग्गा सिँघ दे गृह नत लुधिआणा ८६६
२५ अस्सू २०२० बिक्रमी हरबंस सिँघ दे गृह अजनौद लुधिआणा ८७४
२६ अस्सू २०२० बिक्रमी मदन लाल दे गृह विशकरमा पुरी लुधिआणा ८८१
२६ अस्सू २०२० बिक्रमी गुरदेव सिँघ दे गृह लुधिआणा लुधिआणा ८८३
२६ अस्सू २०२० बिक्रमी निरंजण सिँघ दे गृह उची आबादी लुधिआणा ८८४
२६ अस्सू २०२० बिक्रमी गुरमीत सिँघ दे गृह हरदो फराला जलंधर ८८६
२७ अस्सू २०२० बिक्रमी गुरबचन सिँघ दे गृह हरदो फराला जलंधर ८६८
२७ अस्सू २०२० बिक्रमी बीबी चरन कौर दे गृह हरदो फराला जलंधर ८६६
२७ अस्सू २०२० बिक्रमी मनसा सिँघ दे गृह हरदो फराला जलंधर ६०१
३० अस्सू २०२० बिक्रमी लछमण सिँघ दे गृह सुलतान विंड किते अमृतसर ६०३
३० अस्सू २०२० बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच जेठूवाल अमृतसर ६०७
०१ कत्तक २०२० बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच जेठूवाल अमृतसर ८०६
०३ कत्तक २०२० बिक्रमी लाल सिँघ दे गृह हेर जलंधर ६१८
०४ कत्तक २०२० बिक्रमी लाल सिँघ दे गृह हेर जलंधर ६३७
०५ कत्तक २०२० बिक्रमी लाल सिँघ दे गृह हेर जलंधर ६५४
०५ कत्तक २०२० बिक्रमी ज्ञान सिँघ दे गृह सुरख़पुर जलंधर ६५७
०७ कत्तक २०२० बिक्रमी अमर सिँघ दे नवित जेठूवाल अमृतसर ६६७
११ कत्तक २०२० बिक्रमी माहला सिँघ दे गृह जेठूवाल अमृतसर ६७०
१२ कत्तक २०२० बिक्रमी हरभजन सिँघ खुजाला दे नाल अचल नगर बटाला ६७२
१४ कत्तक २०२० बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच जेठूवाल अमृतसर ६७५
१५ कत्तक २०२० बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच जेठूवाल अमृतसर ६८३

10 १५

१६	कत्तक	२०२०	बिक्रमी	जेठूवाल दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	१०२८
०१	मग्घर	२०२०	बिक्रमी	जेठूवाल दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	१०३०
०२	मग्घर	२०२०	बिक्रमी	जेठूवाल दरबार विच	जेठूवाल	अमृतसर	१०३८
०७	मग्घर	२०२०	बिक्रमी	अजीत सिँघ दे गृह	बटाला	गुरदासपर	१०४५
०७	मग्घर	२०२०	बिक्रमी	बंता सिँघ दे गृह	पंज गराईं	गुरदासपर	१०४७
०८	मग्घर	२०२०	बिक्रमी	महिंदर सिँघ दे गृह	दय्या	गुरदासपर	१०५२
०८	मग्घर	२०२०	बिक्रमी	नौरंग सिँघ सविंदर सिँघ दे गृह	दय्या	गुरदासपुर	१०५७
०९	मग्घर	२०२०	बिक्रमी	जोगिंदर सिँघ दे गृह	डडवां	गुरदासपर	१०६३
०९	मग्घर	२०२०	बिक्रमी	जागीर सिँघ दे गृह	सोहल	गुरदासपर	१०६८
१०	मग्घर	२०२०	बिक्रमी	गुरबचन सिँघ दे गृह	नयाशाला	गुरदासपर	१०७७
१०	मग्घर	२०२०	बिक्रमी	अजीत सिँघ दे गृह	कतोवाल	गुरदासपर	१०८२
११	मग्घर	२०२०	बिक्रमी	अजीत सिँघ दे गृह	कतोवाल	गुरदासपर	१०८८
११	मग्घर	२०२०	बिक्रमी	चरन सिँघ दे गृह	कोतवाल	गुरदासपर	१०९१
११	मग्घर	२०२०	बिक्रमी	चरन सिँघ दे गृह	नवां पिंड	गुरदासपर	१०९३
११	मग्घर	२०२०	बिक्रमी	दुरगा देवी दे गृह	गुजरात	गुरदासपर	१०९६
११	मग्घर	२०२०	बिक्रमी	गुरमुख सिँघ दे गृह	गवार	गुरदासपर	१०९६

11
१५

सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै
सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै

✪ २० हाढ़ २०२० बिक्रमी अजीत सिँघ दे गृह बटाला ✪

सतिगुर दाता करनी करन, हरि करता खेल कराइंदा। जुग चौकड़ी मन्त्र हरन फरन, फुरना आपणे नाम सुणाइंदा।
दो जाहानां तरनी तरन, तारनहारा वेख वखाइंदा। भगत भगवान देवे इक सरन, सरनगति इक जणाइंदा। जुग जन्म
१ विछड़े आए फड़न, फड़ आपणा मेल मिलाइंदा। साचे पौड़े आए चढ़न, गृह मन्दिर खोज खुजाइंदा। आपणी करनी आए १
१५ करन, दूजा संग ना कोए मिलाइंदा। पारस नाल छुहाए स्वर्ण, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। जीवन विचों मिल्या मरन, मरन १५
विचों जीवण आप बदलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि करनी आप कमाइंदा। सतिगुर पूरा
साहिब समरथ, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी महिमा अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। निरवैर पुरख हो
प्रगट, निरगुण सरगुण धार चलाईआ। शब्द अगम्म इक्को वथ, सो साहिब आप वरताईआ। लख चुरासी विचों गुरमुख
सज्जण रख, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। काया चोली रंगे रत, रंग रतड़ा बेपरवाहीआ। धुरदरगाही देवे मति, साची
सिख्या इक समझाईआ। अमृत पीणा इक्को रस, सर सरोवर ताल सुहाईआ। नाम निधान लैणा रट, आत्म परमात्म करे
पढ़ाईआ। गृह मन्दिर वखाए साचा हट्ट, बिन तराज़ू तोल तुलाईआ। जन भगतां खोल्ह आपणी अक्ख, आखर आपणा
मेल मिलाईआ। नित नवित्त देवे हक़, देवणहार सर्ब सुखदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर
नज़र उठाईआ। सतिगुर पूरा सदा दयाल, आपणी दया कमाइंदा। गुरमुख गुर गुर वेखे लाल, लालन आपणा रंग रंगाइंदा।
आत्म परमात्म चले नाल नाल, जुग चौकड़ी संग निभाइंदा। कलयुग अन्तिम खेल करे कमाल, करनी आपणे हथ्थ वखाइंदा।
नाद धुन शब्द राग वज्जे ताल, तलवाड़ा आपणे हथ्थ रखाइंदा। वेखणहारा सच सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक्को इक

सुहाइंदा। निर्मल दीआ जोती बाल, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी नज़र उठाइंदा। सतिगुर पूरा दर्द दुःख भंजन, भव सागर पार कराईआ। नेत्र नाम निधान पाए अंजन, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। आत्म परमात्म बणाए सज्जण, सगला संग निभाईआ। चरण धूड़ वखाए इक्को मजन, दुरमति मैल धवाईआ। गुरमुख गुरसिख जगत नाता कूड़ा तजण, साचा बन्धन इक्को पाईआ। हरि सरनाई रहिण लगण, अन्तर आत्म इक लिव लाईआ। किरपा कर प्रभ आप आए सद्दण, सद्दा आपणा नाम दवाईआ। कूड़ी क्रिया पार हद्दन, साचा मन्दिर दए वखाईआ। जिस दवारे कोटन कोटि दर दरवेश बण के लभ्भण, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। तिस गृह सन्त सुहेले साचे सजण, जिन्हां मिल्या बेपरवाहीआ। ठाकर स्वामी पड़दा आए प्रभ आप कज्जण, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। साचा मार्ग आए दस्सण, दहि दिशा वेख वखाईआ। खुशीआं अन्दर आए हस्सण, ग़मी रहिण कोए ना पाईआ। जन भगत दवारे आए वसण, घर इक्को इक वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सतिगुर पूरा गहर गम्भीर, जगत नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। आदि जुगादी ठांडा सीत, अग्नी तत ना कोए वखाइंदा। जुग चौकड़ी बन्ने रीत, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढ्ढाइंदा। लेखा जाणे मन्दिर मसीत, गुरूदवारे शिवदुआले वंड वंडाइंदा। भंनणहारा कौड़ा रीठ, अमृत रस मुख चुआइंदा। लख चुरासी परखणहारा नीत, घट घट अन्दर फोल फोलाइंदा। लहिणा देणा जाणे हस्त कीट, ऊँच नीच राउ रंक खोज खोजाइंदा। करे खेल आप अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाइंदा। गुरमुख वेख गुरु गुर अजीत, जीत आपणे हथ्थ रखाइंदा। सच करनी सच चरण कँवल बंधाई प्रीत, प्रीतीवान प्रीतम आपणा रंग रंगाइंदा। लेखा चुकाए विच बीस, बीस बीसा पढ़दा लाहइंदा। मेहरवान हो जगदीश, जगदीशर आपणा हथ्थ उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाइंदा। सतिगुर पूरा खेले खेल, खेलणहार इक अख्वाईआ। जुग जन्म दे विछड़े लए मेल, विछोड़ा कोए रहिण ना पाईआ। जोत निरँजण चाढ़ तेल, घर साचे सगन वखाईआ। वसणहारा धाम नवेल, लोकमात फेरा पाईआ। नाता जोड़ गुरु गुर चेल, बन्धन इक्को नाम रखाईआ। जुग चौकड़ी थित वार जाणे आपणा मेल, रुत्त रुतड़ी आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बख्शणहार इक सरनाईआ। सतिगुर पूरा सर्ब सुखदाता, एकँकारा वड वड्याइंदा। भगत वछल गिरवर गिरधार देवणहारा साचा दाता, दाता दानी आप वरताइंदा। निरगुण सरगुण जोड़नहारा नाता, बिधाता आपणा बन्धन पाइंदा। सुहावणहारा आत्म सेजा साची खाटा, सच सिँघासण डेरा लाइंदा। करे खेल जोती जाता, जागरत जोत इक जगाइंदा। शब्द अगम्म सुणाए गाथा, बोध

अगाध आप पढ़ाइंदा। इक्को मन्त्र इक्को पूजा पाठा, इष्ट देव इक समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेख वखाइंदा। जन भगतां वेख चढ़े चाउ घनेरा, घर साचे वज्जे वधाईआ। पारब्रह्म कहे ब्रह्म मेरा, मेरा तेरा वंड ना कोए वंडाईआ। पुरख अकाल कहे गुरमुख गुर गुर मेरा चेरा, चेला इक्को नज़री आईआ। अबिनाशी करता कहे मेरा वक्त सुहेला, सोहणी रुत्त सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। सतिगुर वड्याई देवे आप, प्रभ आपणी दया कमाईआ। जगत जहान पत लए राख, मेहर नज़र उठाईआ। निरगुण हो के बणया साक, सरगुण संग निभाईआ। मेहरवान हो के खोल्हे ताक, घर मन्दिर कुण्डा लाहीआ। सतिगुर हो के पूरा करे भविक्ख्त वाक, पूरब लहिणा झोली पाईआ। दयाल हो के वसे पास, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। सतिगुर हो के धारे भेख, अवल्लड़ा भेख आप जणाईआ। धुरदरगाही लिखे लेख, लेखा आपणे हथ्थ वखाईआ। भगत भगवान बण दरवेश, दर ठांडे अलख जगाईआ। निउँ निउँ सीस झुकावण विष्न शिव ब्रह्म महेष, नेत्र नैण नैण शरमाईआ। श्री भगवान कलयुग अन्त जन भगतां करे हेत, बण हितकारी मेल मिलाईआ। वेखणहारा प्रभ नेतन नेत, निज घर बैठा सोभा पाईआ। आत्म परमात्म जो जन करे हेत, घर साचे वज्जे वधाईआ। मौले रुत्त खिड़े गुलज़ार रुत्त सुहञ्जणी चेत, चेतन सुरती आप कराईआ। गुरमुख गुर गुर दोवें लैण पेख, घर पेखत खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पड़दा दए उठाईआ। सतिगुर पूरा पड़दा खोल्ह, आपणा भेव जणाईआ। निझर धारों पए बोल, निराकार नाद सुणाईआ। दाता हो के तोले तोल, घर साचे सोभा पाईआ। अबिनाशी हो के बैठे अडोल, ना कोई डोल डुलाईआ। भगत वछल हो के वसे कोल, सगला संग निभाईआ। जोती जाता हो के जाए मौल, मौला आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवणहार वड्याईआ। हरिजन वड्याई सच दुआर, हरि दवारी आप जणाइंदा। जिस दा लहिणा रहे जुग चार, देवणहार भुल्ल कदे ना जाइंदा। द्रोपद सुत तारी द्रोपद नार, नर नरायण वेख वखाइंदा। अन्दरे अन्दर कर प्यार, पुकार प्यार विच बदलाइंदा। जन्म जन्म दा कर हुदार, कर्म कर्म दी गंढु पवाइंदा। तेरा खेल करे करतार, हरि करता आप समझाइंदा। साचा नाता विच संसार, वड संसारी आप जुड़ाइंदा। चौथे युग दे दिन चार, चार दिन तेरी महमानी, आपणे घर वखाइंदा। परम पुरख दी एह निशानी, दाता हो के दया कमाइंदा। जगत विद्या नहीं कहाणी, धुर दी करनी आप कमाइंदा। पारब्रह्म प्रभ सोफ़ी हो के बणे सवाणी, सुघड़ सुचज्जी आपणी धार वखाइंदा। देवणहार पद निरबाणी, निरबाण पद इक जणाइंदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा आप मुकाइंदा। पूरब लेखा झोली पा, पिछला मूल चुकाया। श्री भगवान दया कमा, दीनां नाथ होए सहाया। आत्म परमात्म आप प्रना, पड़दा उहला जगत तजाया। साचा मार्ग इक वखा, प्रभ रहबर नज़री आया। जिस दे नालों होए जुदा, सो अन्तिम आपणी गंढु पवाया। जिस नूं मन्नदे नूरी खुदा, सो नूर नुराना वेखे बेपरवाहया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा आपणे हथ्थ रखाया। पिछला लहिणा गया लथ्थ, प्रभ साचे दया कमाईआ। अगला मार्ग जगत दस्स, जगत करी कुड़माईआ। नार कन्त खेल समरथ, हरि साची बणत बणाईआ। सौहरे पेईए इक्को रस, रस रसीया दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा कारज आप वखाईआ। साचा कारज जगत दुनी, दुनिया नाल चलाइंदा। आपणे सिर तों लाह के चुन्नी, साहिब सतिगुर आपणा भेस वटाइंदा। कोई ना जाणे वड्डा गुणी, ऋषी मुनी समझ कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। सच सिँघासण चढ़ भगवान, आपणी दया कमाईआ। जगत कारज जगत निशान, पुरख बिधाता आप बणाईआ। गुरमुख कीता गुरमुख दान, गुरमुख गुरमुख झोली पाईआ। दोहां मेला विच जहान, जीवण जुगत समझाईआ। परम पुरख दा इक ध्यान, पारब्रह्म सरनाईआ। साचा मन्दिर इक मकान, काया बंक वड्याईआ। सोहला ढोला इक्को गाण, गावणहार जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिगुर पूरा होए सहाईआ। सतिगुर पूरा ठांडा सीता, अमृत धार वहाइंदा। जन भगत जणाए आपणी रीता, रीतीवान वेस वटाइंदा। लख चुरासी परखे नीता, सन्त सुहेले आपणा मेल मिलाइंदा। पिछला लेखा पिच्छे बीता, अग्गे आपणा राह वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी कर कर जोड़े जोड़, जोड़ी जगत जुग जणाईआ। इक दूजे नाल देवे तोर, तुरत आपणा हुक्म मनाईआ। साहिब सतिगुर जन भगतां रखे सदा लोड़, लोड़ींदड़ा वर इक्को इक रखाईआ। जिस आपणे हथ्थ रखी डोर, बिन तन्दी तन्द उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख वसाए इक्को घर, गुरमुख गुरमुख नाल मिलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साची करनी आप कर, करता कीमत आपे पाईआ।

४ ४

१५ १५

२१ हाढ़ २०२० बिक्रमी प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड ढिलवां ज़िला कपूरथला

सिरोपा भगत भगवान, मेहरवान जणाइंदा। चरण कँवल इक ध्यान, सतिगुर साहिब दया कमाइंदा। अन्तर आत्म

ब्रह्म ज्ञान, पारब्रह्म समझाइंदा। निर्मल दीआ जोत महान, नूर नुराना नूर वखाइंदा। आत्मक नाद शब्द धुन्कान, अनरागी राग अलाइंदा। काया मन्दिर सच्च मकान, बंद कवाड़ी ताक खुल्हाइंदा। साची सेजा कर परवान, सोभावन्त सुहाइंदा। देवणहारा साचा दान, दाता दानी दया कमाइंदा। सति धर्म दा इक निशान, निरवैर पुरख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगतन मीता इक अतीता ठांडा सीता गहर गम्भीर गवर आपणा भेव खुलाइंदा। सिरोपा भगत नलेर, लाल भूशन नाल वखाईआ। आदि शक्ति कर कर मेहर, दुर्गा रूप इक दरसाईआ। अष्टभुज सद वसे नेड़, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। मइया नाता चुकाए मेर तेर, दूई द्वैत ना कोए जणाईआ। घर प्रकाश करे ना लाए देर, दीआ बाती कमलापाती इक्को इक वखाईआ। अन्ध अन्धेर मिटे अन्धेर, चन्द चांदना इक चमकाईआ। पूरब जन्म दा लहिणा दए नबेड़, कर्म कांड कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जन भगतां देवणहार वड्याईआ। नलेर कहे प्रभ मेरे एक, चरण तेरी सरनाईआ। दो जहान साची टेक, कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड बैठे सीस निवाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा तैनूं रहे वेख, बिन नेत्र नैण उठाईआ। अगम्म अथाह बेपरवाह साहिब सतिगुर तेरा भेख, अकाल मूर्त अक्ल कल धारी नज़र किसे ना आईआ। सच स्वामी सदा नेहकामी नेहकर्मी वसें सचखण्ड देस, देस सुहञ्जणा इक्को इक सुहाईआ। कर किरपा मेहरवान ठाकर जन भगतां वल वेख, लोकमात तेरा ध्यान लगाईआ। अन्दर वड़ के खोल्ह भेत, बाहरों समझ किसे ना आईआ। मेहरवान हो के कर हेत, जिउँ पिता पूत प्यार जणाए माईआ। नित नवित्त तेरी खेड, निरगुण सरगुण कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जगत नलेर वास्ता पाईआ। नलेर कहे मेरे नाल दुपट्टा, सोहणा लालन रंग रंगाईआ। जिस दे अन्दर वसे पुरख समरथा, साहिब सतिगुर डेरा लाईआ। सो गुरमख हरिजन भगत खुशीआं अन्दर फिरे नट्ठा, चिन्ता रोग सोग नज़र कोए ना आईआ। आत्म प्रीती परमात्म चरण ढट्ठा, मिले सरन सची सरनाईआ। लेखा चुक्के तत अट्ठा, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध चले ना कोए चतुराईआ। जिस जन देवे चेतन सता, चेतन सुरती सुरत शब्द मिलाईआ। भगत भगवान इक्को रंग रत्ता, रंग रतड़ा बेपरवाहीआ। आवण जावण लख चुरासी जम की फाँसी मेटे रट्टा, जिस आपणा नाम रटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिरोपा सिर भगतां आप रखाईआ। सिरोपा सोहे जन भगत, श्री भगवान दया कमाइंदा। हरिजन लेखे लग्गे बूंद रक्त, हड्ड मास नाड़ी पिंजर खोज खोजाइंदा। मेल मिलाए ऊँधा कँवल परत, घर साचा संग रखाइंदा। नाता तोड़ सोग हरख़, घर सतिगुर

दरस दिखाइंदा। जन्म जन्म दी मिटे हरस, जिस जन आपणा मेल मिलाइंदा। गुर करता सद करे तरस, दयावान दया कमाइंदा। लेखा जाणे अर्श फ़र्श, काया कुरा खोज खोजाइंदा। प्रभ दर्शन जो रहे भटक, दे दरस तृखा बुझाइंदा। नौ दवारे सुखमन टेडी बंक कोई ना रहे अटक, जिस जन आपणा राह वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मार्ग इक रखाइंदा। सिरोपा जगत माया, माया जगत नाल प्रनाईआ। प्रभ का खेल बेपरवाहया, बेपरवाही विच समाईआ। सतिगुर प्रेम भुक्खा प्यार तयाया, दूजी वस्त कोए मंगण ना आईआ। देवणहार सर्ब सुखदाया, हरिजन साचे लए उठाईआ। कर किरपा प्रभ मेल मिलाया, मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ। प्रीतम मेला प्रीतम पाया, प्रीतम मन्दिर प्रीतम गृह प्रीतम वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच वस्त अमोलक झोली पाईआ। वस्त अमोलक सतिगुर नाम, जगत बाज़ार हथ्थ किसे ना आइंदा। देवणहार सदा मेहरवान, जन भगतां झोली पाइंदा। अमृत आत्म निझर झिरना प्याए जाम, रस इक्को इक वखाइंदा। सति धर्म दिसे निशान, धुर निशाना इक दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन हरि हरि इक्को घर वसाइंदा। सिरोपाउ भगती रंग, हरि भगवन आप चढ़ाईआ। अन्तर आत्म सेज पलँघ, सोभावन्त सुहाईआ। शब्द अनाद वज्जे मृदंग, धुन आत्मक राग अलाईआ। अठ्ठे पहर इक अनन्द, दिवस रैण खुमार चढ़ाईआ। बिन सूरज बिन चन्द चाढ़े चन्द, चन्द आपणा नूर चमकाईआ। सतिगुर पूरा सदा बख्शंद, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। आवण जावण जम की फाँसी लख चुरासी कटे फंद, मात गर्भ दस दस मास ना अग्न तपाईआ। लेखा जाणे जीव हँ, ब्रह्म आपणा भेव जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच धन, वस्त अनडिठ गुरमुख झोली पाईआ। सिरोपाउ रखणा संभाल, गुर सतिगुर दए वड्याईआ। शाहों करे कंगाल, शाह पातशाह होए सहाईआ। घर रंग चढ़े लाल गुलाल, जोबन इक्को इक वखाईआ। सुणनहार मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। भय चुकाए जगत काल, महाकाल वेख वखाईआ। काया मन्दिर सति धर्मसाल, धर्म दवारा इक्को इक वड्याईआ। जिस नालों विछड़ी रूह तिस नाल मिले आण, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। लेखे लग्गे वस्त्र लाल, लाल हरिजन मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सदा सुहेला इक इकेला अक्ल कल धारी जोत निरँकारी निरवैर पुरख पुरख अगम्म, लेखा जाणे पवण स्वासी दम, हरिजन दम दमां लेखा आपे पाईआ।

सो पुरख निरँजण ठांडा दरबार, सचखण्ड निवासी आप लगाइंदा। जुग चौकड़ी खेल अपार, हरि करता आप कराइंदा। निरगुण सरगुण लै अवतार, लोकमात वेस वटाइंदा। शब्द अगम्म धुर दी धार, जीवण जुगत जगत जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी करता आप कराइंदा। हरि पुरख निरँजण ठांडा सीता, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। करे खेल सदा अनडीठा, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। नित नवित्त चलाए आपणी रीता, रहबर आपणा फेरा पाईआ। निरगुण सरगुण जणाए सच प्रीता, प्रीतीवान वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। एकँकारा खेल अवल्ला, हरि करता आप कराइंदा। वसणहारा सच महल्ला, सच दवारे सोभा पाइंदा। निरगुण नूर जोती दीपक आपे बला, प्रकाश प्रकाश नज़री आइंदा। शब्दी धार फड़ाए पल्ला, गुर गुर आपणी वंड वंडाइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटला, महल अटल इक रुशनाइंदा। लेखा जाणे जलां थलां, घट घट अन्तर फोल फोलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। आदि निरँजण जोत प्रकाश, हरि करता वड वड्याईआ। खेलणहार खेल तमाश, दो जहानां वेख वखाईआ। दाता दानी सर्ब गुणतास, बेअन्त बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। साचे मण्डल पावे रास, गोपी काहन नाच नचाईआ। निरगुण सरगुण पूरी करे आस, आसा तृष्ना मेट मिटाईआ। निरवैर हो के वसे पास, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करे भगवान, भगवन आपणी दया कमाइंदा। निरगुण सरगुण हो प्रधान, साचा खेल आप वखाइंदा। गुर गुर रूप विच जहान, सतिगुर साचा सेव कमाइंदा। बोध अगाध नाम निधान, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाइंदा। आत्म परमात्म जीव जंत दे दान, साध सन्त आपणा राह वखाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर परवान, सच परवाना इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी धार चलाइंदा। जुग जुग धार चलाए पुरख अबिनाशी, अबिनाशी आपणी कार कमाइंदा। जुग चौकड़ी सज्जण साथी, सगला संग निभाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण चुकाए पाठी, पूजा इक्को इक वड्याइंदा। लेखा जाण तीर्थ ताटी, सर सरोवर इक बणाइंदा। लहिणा देणा चुकाए बाकी, पिछला लेखा झोली पाइंदा। वेखणहारा दिवस राती, घड़ी पल लेखे लाइंदा। चरण कँवल उपर धवल बंधे नाती, साचा नाता जोड़ जुड़ाइंदा। निरगुण सरगुण पुच्छे वाती, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान आप अख्वाइंदा। मेहरवान पारब्रह्म, प्रभ वड्डा वड वड्याईआ। नित नवित्त करे कराए आपणा कम्म, हरि करता भेव चुकाईआ।

ना मरे ना पए जम्म, जीवण मरन विच कदे ना आईआ। हरख सोग ना कोई ग़म, चिन्ता रोग ना कोए सताईआ। निरगुण सरगुण बेड़ा देवे बन्न्, बण खेवट खेटा पार कराईआ। जुग चौकड़ी देवणहारा नाम धन, वस्त अमोलक आप वरताईआ। भगत भगवान चाढ़े साचा चन्न, चन्द चांदनी इक चमकाईआ। कर प्रकाश अन्धेर अन्ध, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जन्म कर्म कट फंद, कूड़ा बन्धन दए तुड़ाईआ। आत्म परमात्म जोड़ी गंढु, गंढु इक्को वार पवाईआ। सीतल धार वखाए ठंड, अमृत मेघ इक बरसाईआ। गुरमुख सवाणी होवे ना मात रंड, कन्त कन्तूहल इक प्रनाईआ। गीत सुहागी सुणाए छन्द, सोहँ ढोला राग अलाईआ। आवण जावण मुक्के पन्ध, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। कलयुग अन्त सूरा सरबँग, कल कल्की वेस वटाईआ। लख चुरासी देवे दंड, डंका इक्को नाम वजाईआ। कूड़ी क्रिया भाण्डा भरम भउ ढाहे द्वैती कंध, हंगता बुरज रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अथाह, समझ कोए ना पाइंदा। निरगुण हो चलाए राह, सरगुण मार्ग आप वखाइंदा। भगत भगवान लए जगा, जागरत जोत डगमगाइंदा। सन्त सुहेले लए उठा, गुर चेले आप जगाइंदा। गुरमुख गोदी लए बहा, फड़ बाहों गले लगाइंदा। गुरसिख साचे मन्दिर लए बहा, हरि मन्दिर इक्को इक वखाइंदा। डूंघी कन्दर भाग लगा, भाग गुरमुखां हिस्सा आप वंडाइंदा। निर्मल दीपक जोती चिराग़ जगा, अन्ध अन्धेर गंवाइंदा। अनहद अनादी नाद वजा, धुन आत्मक राग सुणाइंदा। ब्रह्म ब्रह्मादी खोज खुजा, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत हरिसन्त सुहेले हरि घर मेल मिलाइंदा।

✪ २१ हाढ़ २०२० बिक्रमी बिशन सिँघ दे गृह गुड़गाउँ सेवा सिँघ दी परथाए ✪

शाह पातशाह हरि निरँकार, नर निरँकारा वड वड्याईआ। सतिगुर खेल अगम्म अपार, गुर गुर आपणी धार चलाईआ। नौजवाना शाहसवार, बेपरवाह सदा बेपरवाहीआ। लेखा जाणे धुर दरबार, दरगाह साची सोभा पाईआ। आदि जुगादी सांझा यार, नित नवित्त साची कार कमाईआ। लेखा जाण गुरू अवतार, पीर पैगम्बर वंड वंडाईआ। वसणहारा ठांडे दरबार, महल अटल इक सुहाईआ। करनी करता करनेहार, परम पुरख इक अख्वाईआ। पूरब जन्म कौल इकरार, कीता आप निभाईआ। पुष्कर लै के आया शाहसवार, पंज तत नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार

वड्याईआ। शाहसवार सतिगुर पूरा, पुरख अबिनाशी खेल कराइंदा। जुग चौकड़ी हाज़र हज़ूरा, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। शब्द नाद अगम्मी तूरा, धुर दा नाद आप सुणाइंदा। एथे ओथे हाज़र हज़ूरा, हर घट आपणा डेरा लाइंदा। जिस जन देवे मस्तक धूढ़ा, टिक्का इक्को नाम वखाइंदा। चाढ़े रंग चलूल गूढ़ा, उतर कदे ना जाइंदा। वसणहारा नेड़ दूरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा आप समझाइंदा। धुर दा लेखा श्री भगवान, सो साहिब आप जणाईआ। आदि पुरख सदा मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। सतिगुर रूप अनूप महान, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। गुर गुर देवणहारा दान, दाता दानी इक हो जाईआ। पुष्कर लेखा लेखे लाए आण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कराईआ। साची करनी करने जोग, हरि करता खेल कराइंदा। सति सरूपी दरस अमोघ, निर्मल नूर जोत धराइंदा। परम पुरख परमात्म धुर संजोग, नित नवित्त जोड़ जुड़ाइंदा। पुरख अकाल एका ओट, अक्ल कलधारी आप समझाइंदा। सच नगारे नाम चोट, अगम्म अथाह लगाइंदा। कर प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। वेखणहारा लोक परलोक, दो जहानां खोज खुजाइंदा। नाम निधाना सच श्लोक, साचा राग अलाइंदा। देवणहारा आपणी मोख, मुफ्त आपणी दया कमाइंदा। नाता तोड़ हरख सोग, चिन्ता ग़म मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी कर करतार, हरि करता आप जणाईआ। गोबिन्द कीता इक इकरार, कौल कँवल नाल जुड़ाईआ। अन्तर सच प्यार, बसन्तर बाहर नज़र कोए ना आईआ। मन्त्र सोहला सच जैकार, नाम निधान सुणाईआ। तूं मेरा मै तेरा दोहां मेला इक दरबार, दर दरवाज़े वज्जे वधाईआ। जोती सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करे गुर सूरा, सतिगुर दाता वड वड्याईआ। गुरमुख देवे एका नूरा, नूर नुराना नूर रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे कूड़ा, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। सच सुहागी चाढ़े चूड़ा, बन्धन इक्को नाम रखाईआ। रंग गुलाला वखाए गूढ़ा, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा रिहा जणाईआ। पूरब लेखा गोबिन्द मीत, मित्र प्यारा इक जणाइंदा। तेरी मेरी साची रीत, महिमा आपणे विच रखाइंदा। रखणहार सदा अतीत, त्रैगुण डेरा ढाइंदा। मिट्ठा कर कौड़ा रीठ, अमृत रस भराइंदा। साचा ढोला सुहञ्जणा गीत, गोबिन्द नाम दृढ़ाइंदा। चरण कँवल बन्ने प्रीत, प्रीतीवान आप वखाइंदा। ततव तत ठांडा सीत, अग्नी तत ना कोए जणाइंदा। सन्त सुहेले रखणी उडीक, सो साहिब आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। रखणी उडीक लोकमात, सतिगुर पूरा आप जणाईआ। चौथे

जुग देवे दात, चारे कुण्टां वेख वखाईआ। चार वरन तुट्टे साक, सज्जण नज़र कोए ना आईआ। चार खाणी लहिणा होए बेबाक, बाकी देणा कोए रहिण ना पाईआ। चार बाणी ना कोए आवाज़, परा पसन्ती मद्धम बैखरी राग ना कोए सुणाईआ। चार यारी ना कोई साथ, सगला संग ना कोए निभाईआ। नज़र ना आए माई बाप, भैण भय्या ना कोए वड्याईआ। नार कन्त ना कोए सुहाग, सुहञ्जणी रुत्त ना कोए सुहाईआ। पुत्तर धी ना कोए वैराग, श्री भगवान साची खेल समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा रिहा समझाईआ। साचा लेखा सतिगुर देव, सो साहिब आप जणाईआ। पूरब जन्म दी साची सेव, नर हरि लेखे लाईआ। जन्म जन्म दा रस अमृत मेव, फल इक्को इक खवाईआ। मेहरवान सदा नेहकेव, निहचल धाम दए वड्याईआ। अलख निरँजण खोल्हे भेव, भेद आपणा दए समझाईआ। जुग चौकड़ी अछल अछेद, वल छल धारी आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चौथे युग लहिणा लहिणे पाईआ। चौथे युग लहिणा देणा, सो सतिगुर आप जणाईआ। महा सिँघ वेखणा नैणां, नेत्र नैणां, नेत्र नैणां दए दरसाईआ। सच दवारे मन्नया कहिणा, पुष्कर सोभा पाईआ। महल अटल इक्को बहिणा, इक्को घर वज्जे वधाईआ। नर अवतार सज्जण सैणा, साक इक्को इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा मेला लए मिलाईआ। तेरा मेला अन्त मिलाउणा, सो साहिब सच जणाईआ। जन्म विच जन्म बदलाउणा, माणस माणस रंग रंगाईआ। कर्म विच कर्म रखाउणा, कर्म कांड वेख वखाईआ। धर्म विच धर्म धराउणा, धरनी धरत धवल सोभा पाईआ। जोत जगजीवण दाता मिलाउणा, फड़ बाहों गले लगाईआ। मरन जन्म दा लेखा मुकाउणा, जरम मरन रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप समझाईआ। साची करनी हरि करतार, दो इक जोड़ जुड़ाइंदा। एका इक्की कर तैयार, साची सिक्खी नाल मिलाइंदा। साची सिक्खी सिरजणहार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। धारों तिक्खी विच संसार, चार वरन विचों इक उपजाइंदा। निक्की निक्की कर गुफ़तार, अन्तर आपणी बूझ बुझाइंदा। गुरमुख गुरसिख लाए पार, गुर सतिगुर वेख वखाइंदा। पिता पूत जाणे धार, धुर दरबारी पड़दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे पार कराइंदा। हरिजन बेड़ा तारे आप, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। गुरमुख तेरा वड प्रताप, वड प्रतापी वेख वखाइंदा। पिछला नाता तुट्टा साक, सज्जण कोए नज़र ना आइंदा। बिशन सिँघ तेरा बाप, बलवन्त कौर मात गोद सुहाइंदा। पुरख अबिनाशी आपणा बन्ने आपे नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जीवन विचों जीवन

सतिगुर झोली पाइंदा। मात पिता दा मिथ्या नाता, लोकमात रहिण ना पाईआ। परम पुरख दा खेल तमाशा, जन भगतां आप कमाईआ। जन्म कर्म दी पूरी आसा, मनसा आपणे नाल रखाईआ। काया चोली भरना कासा, गहर गम्भीर होए सहाईआ। देवे दात पुरख अबिनाशा, दाता दानी वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। मेहर नज़र प्रभ पाए बन्धन, बंदगी इक्को नाम जणाईआ। गुरमुख टिक्का लाए चन्दन, सच सुगंधी आप वखाईआ। आत्म परमात्म दए अनन्दन, अनन्द इक्को इक समझाईआ। जन्म कर्म दी तुट्टी आया गंढुण, गंढुणहार गोपाल स्वामी इक अख्वाईआ। गीत सुणाए सुहागी छन्दण, साचा राग अलाईआ। सच प्रीती आवे मंगण, दर दरवेश फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख साचे घर साचे दए प्रगटाईआ। गुरमुख प्रगटया सतिगुर घर, घर साचे वज्जे वधाईआ। मस्तक लाली मिल्या वर, नूर नूर नाल रुशनाईआ। जम का भय चुक्कया डर, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरसिख देवे माण वड्याईआ। गुरसिख गुरमुख गुर गुर सेवा, सिँघ सेवा सति जणाईआ। पूरब जन्म दा मिल्या मेवा, फल इक्को इक खवाईआ। पुरख अकाल वड देवी देवा, देवणहार आप हो जाईआ। क्या कोई गाए रसना जिह्वा, सिफ्ती सिफ्त ना कोए सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची गोद आपणी आप सुहाईआ। साची गोद सोहे कुक्ख, श्री भगवान आप सुहाईआ। भगत सुहेला करे उजल मुख, मुख मुखड़ा रिहा वड्याईआ। पिछले जन्म दा मिटया दुःख, अगला जन्म गुर सतिगुर झोली पाईआ। मात गर्भ ना होया उलटा रुक्ख, दस दस मास ना अग्न तपाईआ। मम्मा सीर ना लग्गी भुक्ख, अमृत धार इक चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। मेहर नज़र प्रभ करे आप, आपणी दया कमाइंदा। जन्म जन्म दा रोग संताप, संसा आप मिटाइंदा। निरगुण सरगुण मेला साक, सज्जण इक्को इक अख्वाइंदा। घर विच घर खोल्ह ताक, पड़दा द्वैत चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा जन्म आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा जन्म देवे निरँकार, घर साचे वज्जे वधाईआ। जननी जन बण विच संसार, गोद सुहञ्जणी आप सुहाईआ। अमृत रस ठंडा ठार, साचा सीर मुख चुआईआ। नेत्र लोचण नैण दरस दीदार, दीद ईद चन्द चमकाईआ। किरपा करे करनेहार, किरपन आपणे अंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, इक्की असाड़ असल आपणा भेव खुल्हाईआ। इक्की हाढ़ कर ध्यान, शंकर नैणां नीर वहाईआ। आह लै त्रिशूल श्री भगवान, मेरे कम्म किसे ना आईआ। आपणी कीती लग्गों आप उलटाण, लोकमात फेरा

पाईआ। साडी सेवा ना होई परवान, परवाना तेरा आपणे हथ्थ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, क्यों जींवदयां जीवत रिहा कराईआ। शंकर अग्गों मारे धाह, नैणां नीर वहाइंदा। मेरी सेवा साहिब दिती ला, जो घड़या भन्न वखाइंदा। चार जुग कोई बचया ना, थिर नज़र कोए ना आइंदा। सब दा लहिणा दित्ता मुका, पंज तत रंग ना कोए रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, क्यों आपणी अचरज खेल वरताइंदा। श्री भगवान कहे सुण भोले नाथ, हरि भोले भाउ जणाईआ। कलयुग अन्तिम खेल तमाश, हरि करता आप वखाईआ। जिन्हां संग मेरा साथ, तिन्हां अन्त कोई मार ना सके राईआ। मारे ज्वाले पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता सेवा तेरी इक लगाईआ। सब कुछ रखे आपणे हाथ, देवणहार सर्ब वड्याईआ। साचे भगत मेरी आस, पूंजी इक्को इक जणाईआ। दिवस रैण वसां पास, अट्ठे पहर विछड़ कदे ना जाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मेरे मिलण दी रखदे आए आस, अन्तिम आसा पूर कराईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी मंगदी रही दोए कर के खाली हाथ, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। भोले नाथ सुण कर ध्यान, हरि सतिगुर आप जणाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी खेल महान, सो करता आप कमाईआ। गुरमुख मार्ग लाए विच जहान, सिंघ सेवा मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। शंकर सुण नेत्र खोल्ह, हरि सतिगुर आप समझाइंदा। कलयुग अन्तिम जिन्हां तोलया आपणे तोल, सो आपणे कंध उठाइंदा। कलयुग अन्तिम लै के जावां आपणे कोल, घर साचे आप बहाइंदा। तेरा वज्जे ना कोई ढोल, मृदंगा हथ्थ ना कोए उठाइंदा। जन भगतां लख चुरासी विचों लवां वरोल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। भोले नाथ कर ख्याल, हरि सतिगुर आप जणाईआ। पुरख अबिनाशी जिन्हां बणया आप दलाल, लोकमात वेखे चाईं चाईंआ। अन्तिम लै के जाए नाल, अद्धविचकार ना कोए रखाईआ। भगत भगवान सन्त सज्जण बणाए आपणे लाल, गुरसिख साचे चन्द चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां शब्द बबाणे लए बिठाईआ। भोला नाथ होया चुप्प, सुन्न समाध समाईआ। कवण प्रभ तैनूं लए पुच्छ, सब तेरे हथ्थ वड्याईआ। डरदे तैथों सारे रहे लुक, सीस सके ना कोई उठाईआ। साडी करनी गई लुट्ट, तेरे भगतां नेड़ कोए ना आईआ। जिउँ भावे तिउँ गोदी लैणा चुक्क, सचखण्ड लै के जाणा चाईं चाईंआ। अद्धविचकार कोई ना लए पुच्छ, पुच्छणहार नज़र कोए ना आईआ। असीं वेख्या गुरमुख बणाया आपणा पुत्त, बण जननी जन गोद टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक लगाईआ। साचा मार्ग वेख भगवान, चित्रगुप्त राह तकाइंदा।

राए धर्म होए हैरान, हरिजू एह की खेल रचाइंदा। लाड़ी मौत नैण शरमाण, अक्ख सनमुख ना कोए उठाइंदा। जिन्हां मिल्या सतिगुर नौजवान, तिन्हां भय नज़र कोए ना आइंदा। जींवदयां जग देवे दान, मरन विचों मरन आप बदलाइंदा। घर गोपी मिले काहन, गृह बंसुरी नाम सुणाइंदा। घर सुरती मेला राम, गृह साचा राग अलाइंदा। घर मन्दिर सोहे मकान, सेज सुहञ्जणी इक हंढाइंदा। घर सजदा करे प्रणाम, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। घर पैगम्बर नज़री आए अमाम, हज़रत आपणी खेल कराइंदा। घर झुक झुक करे सलाम, बरदा गुलाम आप अख्वाइंदा। घर देवणहार पैग़ाम, गुरमुख सोए मात उठाइंदा । गृह पकड़नहारा दाम, दामनगीर आप हो जाइंदा। घर लेखे लाए माटी चाम, कंचन काया गढ़ वसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सब दा लेखा आप मुकाइंदा। लेखा नहीं एह लखते जिगर, हरि जगत जुगत जणाइंदा। पारब्रह्म प्रभ लग्गा मगर, पिच्छे पिच्छे सेव कमाइंदा। पूरब जन्म दी पूरी करे सधर, संसा रोग चुकाइंदा। जीवण विचों जीवण देवे बदल, मस्तक रेखा आप चमकाइंदा। परम पुरख दा नाम कज्जल, नेत्र नैणां धार वखाइंदा। बेपरवाह हो के बणया सज्जण, घर साचे फेरा पाइंदा। गुरमुख भाण्डे कदे ना भज्जण, घड़न भंनणहार दया कमाइंदा। जिन्हां सतिगुर आप आए सद्दण, तिन्हां आपणा मेल मिलाइंदा। सन्त सुहेला कोई ना फिरे नग्न, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। गरुमुख दीपक साचे जगण, श्री भगवान आप जगाइंदा। प्रेम प्रीती साचा सगन, सेहरा सीस जगदीश सुहाइंदा। परम पुरख दी इक्को लग्न, प्रीतम आपणा राह जणाइंदा। चरण कँवल चुम्मे पदम, पारब्रह्म प्रभ खेल रचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पहला जन्म लाए लेखे, दूजी धार फेर वेखे, तीजे आपणा कर्म कमाइंदा । पहला जन्म गया मुक्क, इक्की हाढ़ वज्जी वधाईआ। जगत भाई लै गए चुक्क, जगत मसाणी डेरा लाईआ। कूड़ी क्रिया मिटी भुक्ख, तृष्ना कोए रहिण ना पाईआ। मुख वेखण लुक लुक, प्राणी नज़र किसे ना आईआ। इक दूजे नूं रहे पुच्छ, क्यों सेवा सिँघ कर के गया जुदाईआ। भाईचारा कहे अन्न पाणी गया मुक्क, लहिणा जगत कोए नज़र ना आईआ। छोटयाँ बच्चयां नालों गया रुस्स, नार प्यार ना कोए वखाईआ। भैणां भाईआं कोलों गया रुठ्ठ, आपणा मुख भवाईआ। माँ प्यो दा नाता गया तुट्ट, लोकमात नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। पंज तत काया जगत सड़या, लोकमात रहिण ना पाईआ । मढ़ी मसाणी जीव जंत वड़या, भय भउ इक जणाईआ। अन्त नूं सोहला इक्को पढ़या, कीर्तन राग सुणाईआ। जगत कहे जग प्राणी मरया, मर जन्मे नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। पहला जन्म गया मुक्क, मुक्की जगत लोकाईआ। श्री

भगवान साहिब तुट्ठ, आपणी दया कमाईआ। किरपा निधान गोदी चुक्क, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। उजल करे मात मुख, मुख मुखड़ा आप सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगतन सेहरा सीस गुंदाईआ। भगतन सेहरा सोहया सीस, हरि सतिगुर आप सुहाइंदा। किरपा कर पुरख जगदीश, जगदीश्र वेख वखाइंदा। साची धारा बीस बीस, बीस बीसा आप चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक लगाइंदा। साचा मार्ग लग्गे जग, हरि सतिगुर आप लगाईआ। गुरमुख मेल सूरा सरबग्ग, शाह पातशाह होए सहाईआ। त्रैगुण माया ना लग्गे अग्ग, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सेहरा मुख सुहाईआ। साचा सेहरा लग्गे मुखड़ा, रुत्त सुहञ्जणी आप सुहाइंदा। जरम कर्म दा गया दुखड़ा, दुःख दर्द आप वंडाइंदा। पारब्रह्म कहे उठ मेरे सच्चे पुत्तरा, पिता पूत रंग रंगाइंदा। लोकमात ना होणा नाशुकरा, शुक्रिया इक्को इक समझाइंदा। लुक्या रहिण ना देवे किसे नुक्करा, चारे कुण्टां फोल फोलाइंदा। जन्म कर्म गुरमुख कदे ना रुड्ढ़ा, हरि रुठयां आप मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र आप उठाइंदा। चौथा सेहरा सीस बन्धन, हरि बंदगी इक समझाईआ। तेरा नूर नुराना चन्दन, चन्द चांदनी इक चमकाईआ। जरम कर्म दा कटया फंदन, फांदनी कोए रहिण ना

१४ पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख जन्म सतिगुर घर आप दवाईआ। १४

१५ सतिगुर घर होया जन्म, दाई दाया नज़र कोए ना आईआ। कर्म कांड ना कोई कर्म, प्रकृती करे ना कोए कुड़माईआ। १५

ज़ात पात ना कोई वरन, बरन वंड ना कोए वखाईआ। पुरख अकाल इक्को सरन, सरनगति इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे चरणां विच बहाईआ। चरण कँवल प्रभ साचे बहिणा, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। नित नवित्त दर्शन नैणां, निज नेत्र आप खुलाइंदा। पिछली भगती दा मन्नया कहिणा, सो पूरब झोली पाइंदा। अग्गे बाकी रिहा देणा, देवणहार वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, पग्ग वटी दा दित्ता दान, पग्ग नाल पग्ग फेर बंधाइंदा।

इक्की सिक्खां चढ़े बरात, विच बराती सतिगुर नज़री आईआ। जन भगतां बणी इक जमात, वरन बरन ना कोए रखाईआ। उत्तम श्रेष्ट बणया साक, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। पत्तण मेला इक्को घाट, माही वेखे चाईं चाईंआ। निरगुण

पुरख देवे साथ, सगला संग निभाईआ। हरिजन साचे रखणा याद, याददाशत रिहा बणाईआ। वेले अन्त सुणे फ़रयाद, बेपरवाह फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दए वड्याईआ। जन भगतां बन्ने मौली तन्द, गानां इक्को इक वखाइंदा। गुरमुख गुरमुख बणे संग, सगला संग बणाइंदा। सतिगुर दवारे चढ़े चन्द, नूर नुराना चन्द चमकाइंदा। प्रेम प्रीती गाउणा छन्द, साचा राग सुणाइंदा। पिछले जन्म दी तुट्टी गंढु, अग्गे आपणे नाल जुड़ाइंदा। लख चुरासी गई हंढु, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे संग रखाइंदा। हरिजन साचे तन्द मौली, इक्को गंढु पवाईआ। करे खेल हरिजू हौली हौली, हल्का सब दा भार वखाईआ। देवे वड्याई उपर धौली, धरनी बैठी नैण शरमाईआ। कलयुग अन्त व्याहे बोली, बेपरवाह होए सहाईआ। गुरमुखां चुक्के आप डोली, बण कहार कंध टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची तन्द इक वखाईआ। साची तन्द रंग अमोला, हरि सतिगुर आप रंगाईआ । निरवैर हो के बण विचोला, सौहरे पईऐ जोड़ जुड़ाईआ। सच दुआर इक्को खोल्हा, दर दरवाज़ा दए वखाईआ। जिस घर डूम नाई कोई ना पाए रौला, सुन्न समाध सर्ब वखाईआ। तिस धाम जन भगतां बदले चोला, चोली आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे संग रखाईआ। गुरमुख साचे वड बराती, सो साहिब नाल मिलाइंदा। सारे मिल के गावण गाथी, सोहला इक्को राग सुणाइंदा। परम पुरख बणया नाती, नाता आपणे नाल जुड़ाइंदा। कलयुग मेट अन्धेरी राती, सतिजुग साचा चन्द चमकाइंदा । उपर चढ़ाए औखी घाटी, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। लहिणा देणा देवे बाकी, वस्त आपणी झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच बराती वेख वखाइंदा। भगत बराती होए तैयार, प्रभ साचे सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी किरपा धार, दर तेरे आस रखाईआ। धुर दा लाड़ा दए वखाल, जिस मिले माण वड्याईआ। भाग लग्गे इक्की हाढ़, दूआ एका गंढु पवाईआ। जिस प्रनौणी सुलखणी नार, जोत अकालण संग रखाईआ। वेखणहार सिरजणहार, गृह गृह फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सुच रिहा समझाईआ। आओ भगतो बण बराती, वतन बेवतन आप समझाइंदा। जिस दी सुणदे रहे साखी, सो साख्यात खेल कराइंदा। जिस दी सिख्या गुर अवतारां पीर पैगम्बरां भाखी, धुर संदेस राग अलाइंदा। सो साहिब बणया साथी, सगला संग निभाइंदा। जिस दी चाल अवल्लड़ी बांकी, नेत्र नैण वेख कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा दूल्हा आप वखाइंदा। गुरमुख आओ वेखो दूल्हा, सो साहिब आप वखाईआ। जिस मस्तक हार फूला, चन्द चांदनी नूर चमकाईआ। दीन दयाल पिछला

लहिणा कदे ना भूला, अभुल्ल वेख वखाईआ। धर्मखण्ड दा बणे असूला, साचा मार्ग इक लगाईआ। देवे हुक्म सच माअकूला, इक्को वार समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। वेख के लाड़ा होए हैरान, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। जिस दे मस्तक विच निशान, नूर नूर रिहा दरसाईआ। उस दे अन्दर वसया भगवान, भगवन आपणा डेरा लाईआ। जिस दा मन्दिर सुहाया मकान, बंक दुआरे खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा वेला दए सुहाईआ। वेख दूल्हा होए खुश, खुशीआं विच सर्ब समाईआ। रसन बोलणों होई चुप्प, उच्ची कूक ना कोए अलाईआ। धन्न भाग कलयुग अन्त जन भगतां वल कीता आपणा रुख़, बेपरवाह आपणा फेरा पाईआ। कूड़ी क्रिया विचों लए चुक्क, चुक्क आपणी गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, भगत बराती लाए लड़, गुरमुख लाड़ा वेखे खड़, दोहां विचोला महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, एकँकार इक अख्वाईआ।

✪ २२ हाढ़ २०२० बिक्रमीं बिशन सिँघ दे गृह गुड़गाउँ ✪

विष्नूं कहे हरि खेल अनोखा, इक इकल्ला आप कराइंदा। जुग चौकड़ी करदा रिहा धोखा, निरगुण सरगुण नाच नचाइंदा। कलयुग अन्त इक रखाए आपणी ओटा, दर इक्को इक समझाइंदा। जन भगतां मार्ग दस्से सौखा, फड़ बांहों राहे पाइंदा। आपणे मिलण दा जणाए सच्चा मौका, मुकम्मल आपणा भेव खुलाइंदा। हरिजन कोई ना जाए औंता, साचा नाता आपणे नाल बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। ब्रह्मा कहे प्रभ खेल अवल्ला, सो साहिब आप कराईआ। पारब्रह्म प्रभ इक इकल्ला, अक्ल कला वड्याईआ। वसणहारा जला थला, दो जहान समाईआ। निरगुण हो फड़ावे पल्ला, सरगुण देवणहार वड्याईआ। कलयुग अन्तिम हो के झल्ला, बेपरवाह आपणी झलक वखाईआ। भगत दुआर इक्को मल्ला, सच सिँघासण डेरा लाईआ। धुर संदेस साचा घल्ला, धुर दी धार दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया कमाईआ। शंकर कहे प्रभ खेल अगम्म, समझ विच ना आईआ। कलयुग अन्त प्रगट हो श्री भगवन, भगवन आपणी कार कमाईआ। सन्त सुहेले वेखे जन, गुरमुख आपणे नाल मिलाईआ। निरगुण नूर चढ़ावे चन्न, चन्द चांदनी इक चमकाईआ। साचा बेड़ा देवे बन्न्ह, बन्न्हणहार गोसाईंआ। एका राग सुणाए कन्न, हरि करनी करता दए जणाईआ। कर प्रकाश अन्धेर अन्ध, साचा नूर करे रुशनाईआ। पूरब जन्म मेटे

पन्ध, अग्गे इक्को राह वखाईआ। आत्म सोहला साचा छन्द, सोहँ राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। विष्नूं कहे मैनूं आवे हासा, खुशीआं नाल जणाइंदा। ब्रह्मा कहे मैं वेखां तमाशा, प्रभ की की खेल वरताइंदा। शंकर कहे मेरा मुक्कया उदासा, उदासी विच कोए ना आइंदा । श्री भगवान जन भगतां पूरा करे घाटा, सिर आपणा हत्थ टिकाइंदा। सति पुरख निरँजण हो के कटे वाटां, बण पांधी फेरा पाइंदा। दर दर घर घर पुच्छे वातां, बेपरवाह वेस धराइंदा। झल्ल ना सके विछोड़े रातां, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाइंदा। शंकर कहे मैं हैरान होया, अचरज हरि जी खेल रचाईआ। ब्रह्मा कहे मैं उठया सोया, नैण अक्ख खुलाईआ। शंकर कहे मैं सच दुआरा टोहया, दर घर साचा वेख वखाईआ। परम पुरख प्रभ नवां नरोया, एका रंग समाईआ । कलयुग अन्तिम जन भगतां दुरमति मैल धोया, अमृत नीर सीर वखाईआ। कूड़ कुड़यारा घर घर खोहया, ममता आपणी झोली पाईआ । सति धर्म दा बीज बोया, सोहँ बूटा लाईआ। धुरदरगाही लै के आया ढोया, देवणहार आप हो जाईआ। ना जन्मे ना कदे मोया, जन्म मरन विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां रंग रंगाईआ। विष्नूं कहे मैं वेखां हो दलेर, बल आपणा आप प्रगटाईआ। ब्रह्मा कहे मैं चुकाया मेर तेर, मेरा तेरा ना कोए रखाईआ। शंकर कहे मैं ल्यावां घेर घेर, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। अन्त श्री भगवन्त जन भगतां लहिणा देवे नबेड़, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। लख चुरासी करां ढेर, चार खाणी ख़ाक मिलाईआ। जुग चौकड़ी ल्यावां फेर फेर, फेरा इक्को वार रखाईआ। कलयुग प्रगट हो के नर हरि शेर, शहिनशाह आपणी भबक लगाईआ। मेहरवान हो के करे मेहर, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां होए सहाईआ। शंकर कहे मैं होया बलहीण, बल नज़र कोए ना आईआ। ब्रह्मा कहे मैं बण मस्कीन, आपणा सीस निवाईआ। शंकर कहे मेरा विछोड़ा जिउँ जल मीन, झल्ल ना सकां राईआ। पुरख अकाल कहे प्रबीन, वड दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप समझाईआ। सुण विष्नूं खोल्ह अक्ख, सो साहिब आप जणाईआ। ब्रह्मा उठ के चारे मुख हस्स, चारों कुण्ट वज्जे वधाईआ। शंकर हत्थ त्रसूल लै नट्ठ, पन्ध मुक्के वाहो दाहीआ। अबिनाशी करता हो प्रगट, प्रगट आपणी कार कमाईआ। भगत दवारा खोल्ह हट्ट, वणज इक्को इक जणाईआ। निर्मल नूर जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। शब्द अनाद पवण स्वास, धुन अनादी राग अल्हाईआ। साचे मण्डल अगम्मी रास, गृह गोपी काहन नचाईआ। परम पुरख प्रभ वसे पास, सगला संग हो आईआ। जरम कर्म दी मिटे ख्वाहिश, आसा तृष्ना दए गंवाईआ।

१८ १८

१५ १५

आत्म सेजा भोग बलास, परम पुरख पुरखोतम आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। साची सिख्या सद जणा, विष्न ब्रह्मा शिव रिहा समझाईआ। करे खेल बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। जिस तुहाढ्डी बणत दिती बणा, घड़न भंनणहार सो अख्वाईआ। सो कलयुग अन्तिम फेरा पा, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। जोती जाता डगमगा, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। साचा मन्दिर इक सुहा, सम्बल इक्को नूर धराईआ। हरिजन साचे मेल मिला, मिलणी जगदीश कराईआ। साचे राहे देवे पा, हरि रहबर इक्को नूर खुदाईआ। परम पुरख प्रभ बण मलाह, बेड़ा लोकमात चलाईआ । साची नईया लए चढ़ा, नौका इक्को इक वखाईआ। तट किनारा पार करा, तीर्थ सरोवर इक सुहाईआ। मेहरवान महिबूब बण खुदा, मुरीद मुर्शद वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दए वड्याईआ। शंकर सुण, दस्से भगवन्त, एको एक जणाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म प्रभ खेल महंत, महिमां अगणत गणी ना जाईआ। विष्नूं खेल वेख अनन्त, अनन्त कलधारी रिहा वखाईआ । हरिजन मेला साची संगत, हरिसंगत संग समाईआ। बोध अगाधा इक्को पंडत, परम पुरख करे पढ़ाईआ। देवे माण लख चुरासी विच्चों जंत, जीवण जगत जुगत जणाईआ। आत्म परमात्म नाम निधाना मंत, मन्त्र इक्को इक पढ़ाईआ। मिटे विछोड़ा विछुंनी नार कन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे चाईं चाईंआ। विष्नूं हरि हरि चाउ घनेरा, गहर गम्भीर जणाइंदा। ब्रह्मे नाता तेरा मेरा, मेहरवान जुड़ाइंदा। शंकर तेरा वेखे खेड़ा, खण्डा खड़ग हथ्थ उठाइंदा। कलयुग अन्तिम पाया फेरा, निहकलंक वेस वटाइंदा । भेव खुल्हाए गुरु गुर चेरा, चेला गुर वंड वंडाइंदा। दूर दुराडा आए नेरा, नेरन नेरा दरस दिखाइंदा। जन भगतां उते करे मेहरा, मेहर नज़र उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे संग निभाइंदा। विष्नूं हरिजन हरि का संग, सगला आप निभाईआ। ब्रह्मे आत्म परमात्म डोर पतंग, गुडीआ इक्को इक वखाईआ। शंकर खेड़ा होए ना भंग, सो सतिगुर आप वसाईआ । परम पुरख दा इक्को चन्द, गुरमुख नज़री आईआ। रसना ढोला गाए सोहँ छन्द, संसा रोग मिटाईआ। लख चुरासी मिटे चिन्द, चिन्ता कोए रहिण ना पाईआ। हरि सन्त भगवन्त आप बणाए आपणी बिंद, सुत अनादी रूप वटाईआ। दाता दानी गहर गम्भीर गुणी गहिंद, गवर इक्को इक अख्वाईआ। अमृत धार वहाए सागर सिन्ध, बेपरवाह अथाह आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरसिख आपणी गोद बहाईआ। गुरसिख गोदी साची बहिणा, घर साचे वज्जे वधाईआ। परम पुरख दा दर्शन नैणां, सच नेत्र इक खुल्हाईआ। नाता जोड़े सच्चे साक सज्जण सैणा, सगला संग निभाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान,

जिस जन मन्नया कहिणा, सो गुरमुख गुर गुर रंग समाईआ। कर्म कर्म दा चुक्के देणा लहिणा, फड़ फड़ झोली रिहा भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन हरि हरि हरि हरि रूप समाईआ।

✪ २३ हाढ़ २०२० बिक्रमी पहाड़ गंज दिल्ली शब्द सिँघासण ✪

सिँघ आसण कहे प्रभ पाया एक, एकँकार वज्जे वधाईआ। पुरख अबिनाशन साची टेक, श्री भगवान सदा सहाईआ। सचखण्ड निवासी रिहा वेख, निरवैर रूप धराईआ। दो जहानां जाणे लेख, शाहो भूप सच्चा शहिनशाहीआ। सति धर्म सद करे हेत, नित नवित्त वेस वटाईआ। जुग चौकड़ी जाणे रेख, भेव अभेदा आप खुल्ह्हाईआ। दूर दुराडा नेतन नेत, नेरन नेरा डेरा लाईआ। निरगुण हो के खेले खेड, खेडणहारा नज़र किसे ना आईआ। गुरमुख विरले दस्से भेत, भगत भगवान आप समझाईआ। आत्म परमात्म इक्को हेत, दूजी प्रीत ना कोए लगाईआ। माया ममता कोई ना लाए सेक, अग्नी तत ना लागे राईआ। जुग चौकड़ी रुत्त बसन्ती रखे चेत, फल फुल्लवाड़ी आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। सिँघासण कहे मेरा सोहया बंक, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। प्रभ पाया इक बेअन्त, बेपरवाह सच्चा बेपरवाहीआ। नाम जणाए आपणा मंत, मन्त्र इक्को इक दृढ़ाईआ। सच समझाए अगम्मी अंक, लेखा लिख्त विच ना आईआ। भेव खुल्ह्हाए विरले सन्त, गुरमुख गुर गुर बूझ बुझाईआ। मेल मिलावा नर हरि कन्त, दर साचे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। सिँघासण कहे मेरा साहिब सुल्तान, सो पुरख निरँजण नाउँ धराइंदा। हरि पुरख निरँजण बण मेहरवान, मेहर नज़र उठाइंदा। एकँकार वड्ड बलवान, बलधारी रूप प्रगटाइंदा। आदि निरँजण नूर महान, जोती जाता डगमगाइंदा। अबिनाशी करता बेपहचान, जगत नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। श्री भगवान राज राजान, दो जहानां हुक्म मनाइंदा। पारब्रह्म प्रभ खेल महान, ख़ालक ख़लक रूप वटाइंदा। निरगुण सरगुण कर प्रधान, जगत प्रधानगी आप कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा इक सुहाइंदा। सिँघासण कहे मोहे चाउ घनेरा, घर साचे वज्जे वधाईआ। पारब्रह्म प्रभ पाया नेरन नेरा, दूर दुराडा नज़र कोए ना आईआ। निरगुण हो के लाया डेरा, सरगुण सच सच समझाईआ। मेहरवान हो वसाया खेड़ा, बंक दवारा सोभा पाईआ। कूड़ी क्रिया चुक्कया झेड़ा, माया ममता ना कोए लड़ाईआ। हक़ हकीकत करे नबेड़ा, लाशरीक वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। सिँघासण कहे प्रभ मिल्या शाह, शहिनशाह

इक्को नज़री आईआ। सति सतिवादी सच चलाए राह, रहबर बणया बेपरवाहीआ। वरन बरन एका रंग दए रंगा, ज़ात पात वंड ना कोए वंडाईआ। धुर संदेसा एका हुक्म दए सुणा, दीन मज़्हब हद्द ना कोए रखाईआ। लख चुरासी जीव जंत पड़दा दए उठा, माया ममता मोह मिटाईआ। हउमें हंगता गढ़ दए तुड़ा, निवण-सो-अक्खर इक पढ़ाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा वेखे थाउँ थाँ, थान थनंतर खोज खुजाईआ। ज़िमीं असमानां फेरा पा, गगन गगनंतर डेरा ढाहीआ। सच संदेसा देवे आ, नर नरेशा इक अख्वाईआ। आत्म परमात्म सारे ढोला लओ गा, सोहँ नाद शब्द धुन शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। सिँघासण कहे प्रभ गाओ वार, वारता इक्को इक समझाईआ। जिस दा लेखा रहे जुग चार, चौकड़ी आपणा बन्धन पाईआ। जिस दा खेल विष्न ब्रह्मा शिव धार, त्रैगुण माया गंढु वखाईआ। जिस दा लेखा गुर अवतार, पीर पैगम्बर करे पढ़ाईआ। जिस दा नाम बोध अगाध जैकार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान रिहा दृढ़ाईआ। जिस दा महल अटल मन्दिर अपार, निर्मल नूर दीआ बाती डगमगाईआ। जिस दा अमृत ठंडा ठार, सर सरोवर घर घर रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो साहिब होए सहाईआ। सिँघासण कहे प्रभ पाया अगम्म, घर साची वज्जी वधाईआ। नाम अमोलक दित्ता धन, सच ख़ज़ीना इक वरताईआ। दो जहानां बेड़ा बन्ऩ, मेहर नज़र उठाईआ। एका राग सुणाए कन्न, साची सिख्या इक समझाईआ। भगत उपजाए भगवन जन, जन जननी रूप वटाईआ। लेखे लाए काया माटी तन, ततव तत वेख वखाईआ। करे प्रकाश अन्धेर अन्ऩ, आत्म जोत करे रुशनाईआ। पंच विकारा देवे डंऩ, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। सन्त सुहेले चाढ़े चन्न, चन्द चांदनी इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। सिँघासण कहे मेरे जागे भाग, वडभागी हरि पाया। जन्म कर्म दा मिटया दाग़, दुरमति मैल रहे ना राया। पुरख अबिनाशी मिल्या कन्त सुहाग, घर साचे वज्जे वधाया। कूड़ी क्रिया मिटे आग, अमृत मेघ इक बरसाया। प्रेम प्रीती बन्ऩे ताग, साचा सगन मनाया। धुरदरगाही बख्शे राज, लोकमात कूड़ी क्रिया डेरा ढाहया। जन भगतां करे साचा लाड, सिर आपणा हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। सिँघासण कहे मेरी लथ्थी उडीक, आस अवर रही ना राईआ। गुर अवतार जो दस्स के गए तरीक, तारीख अन्तिम रिहा वखाईआ। बीस बीसा परखणहारा नीत, हरि जगदीशा फेरा पाईआ। जन भगतां काया करे ठांडी सीत, सीतल धारा इक वहाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मवादी सति धर्म चलाए साची रीत, साचा मार्ग इक रखाईआ। आत्म परमात्म गाउणा गीत, सोहँ ढोला करे पढ़ाईआ। काया मन्दिर

सच मसीत, काअबा घर घर दए वखाईआ। अट्ठे पहर वसे चीत, चितवित ठगौरी कोए ना पाईआ। गुरमुख गुरसिख दूजे दर ना मंगे भीख, भिच्छया देवे बेपरवाहीआ। सज्जण बैठा रहे अतीत, त्रैगुण डेरा सतिगुर पूरा ढाहीआ। लेखा जाणे हस्त कीट, ऊँच नीच आपणे लेखे लाईआ जिस जन बख्शे सच प्रीत, प्रीतीवान होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सिँघासण आप सुहाईआ। सच सिँघासण हरिजू चढ़या, चरण कँवल टिकाईआ। धुर दा ढोला इक्को पढ़या, तेरा मेरा राग अलाईआ। ना जन्मे ना कदे मरया, आवण जावण खेल वखाईआ। सच दवारे आपे खड़या, महल अटल सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सिँघासण आप सुहाईआ। सच सिँघासण खेल समरथ, सो पुरख आप जणाईआ। सगल वसूरे गए लथ्थ, दुःख दर्द नेड़ ना आईआ। वस्त अमोलक फड़ाए हथ्थ, मेहरवान दया कमाईआ। सतिजुग मार्ग साचा दस्स, चार वरन समझाईआ। अमृत आत्म पीओ रस, घर निझर झिरना रिहा वहाईआ। निर्मल जोत करो प्रकाश, घट घट दीपक रिहा टिकाईआ। आत्म परमात्म करो पाठ, अजपा जाप इक समझाईआ। कलयुग मिटे अन्धेरी रात, सति सतिवादी साचा चन्द चमकाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म गाए गाथ, ढोला इक्को इक समझाईआ। गृह मन्दिर मिले अनाथां नाथ, नाथ अनाथां वेस वटाईआ। निरगुण हो के देवे साथ, सरगुण संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण सोभा पाईआ। सच सिँघासण बख्शे ओट, प्रभ चरण ध्यान इक रखाईआ। सच सुहाए तेरा कोट, बंक मिले वड्याईआ। नाम नगारे वज्जे चोट, डंका इक्को इक सुणाईआ। भगत भगवान मिलाए जोत, जोती जोत जोत समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सिँघासण सोभा पाईआ। सच सिँघासण तेरा लथ्थया आलस, निंद्रा अवर रहिण ना पाईआ। तेरा रूप निरवैर ख़ालस, हरि ख़ालस आप बणाईआ। बेपरवाह बण के सालस, साची सालसी जगत कमाईआ। नूर नुराना बण के आया ख़ालक, ख़लक वेखे थाउँ थाईंआ। भगत भगवान होए प्रितपालक, बण प्रितपालक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। सच सिँघासण सुण लै मीत, सो साहिब आप जणाईआ। सच धर्म दी तेरी रीत, रहबर नूर खुदाईआ। गुरमुख गुर गुर लाए प्रीत, प्रीतीवान जणाईआ। अन्तर अन्तर अगम्मी गीत, सोहँ राग अलाईआ। करे खेल साहिब अनडीठ, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। घर घर सुत्ता दे के पीठ, करवट बदले ना सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सिँघासण पुरख अबिनाशन, लेखा जाण पृथ्मी आकाशण, निरगुण सरगुण होवे साथन, सगला संग आप निभाईआ।

✪ २३ हाढ़ २०२० बिक्रमी गुरमेज सिँघ दे गृह विने नगर दिल्ली ✪

गुरमुख दर सोहणा इक लगदा ए। गृह सतिगुर बहि के सजदा ए। प्रेम प्यार दा दीपक जगदा ए। सच विहार दा मार्ग दस्सदा ए। अमृत अमिउँ रस इक्को चखदा ए। सच प्रीती अन्दर हस्सदा ए। धुर दी रीती वेख तुठदा ए। पिछली बीती आपणी दस्सदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आपे रखदा ए। गुरमुख दुआर सच महल्ला, सो साहिब आप वसाइंदा। पुरख अबिनाशी इक इकल्ला, एकँकारा डेरा लाइंदा। शब्दी धार फड़ाए पल्ला, सति सतिवादी गंढु पवाइंदा। जोत प्रकाश दीपक बला, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। प्रेम प्रीती अन्दर रला, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। जन्म कर्म दा मेटे सल्ला, दूई द्वैत पन्ध मुकाइंदा। सच संदेस इक्को घल्ला, धुर दी बाणी बाण लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। गुरमुख दवारा सोहणा रंग, घर वज्जे नाम वधाईआ। मेल मिलावा भगत भगवन्त, सन्त सतिगुर रंग चढ़ाईआ। सेज सुहञ्जणी सोभावन्त, नार कन्त खुशी मनाईआ। नाम निधाना मणीआ मंत, ढोला इक्को राग सुणाईआ। सच वड्याई जीव जंत, जागरत जोत करे रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया गढ़ तोड़ हउमें हंगत, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। साहिब सतिगुर आदि जुगादी पंडत, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। माणस जन्म बणाए बणत, घड़न भंनणहार आप अख्वाईआ। दर दरवेश ना जाए मंगत, रसना जिह्वा ना अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा देवे थाउँ थाईंआ। गुरमुख दुआर सोहणा चंगा, चन्द चांदनी नूर चमकाईआ। अन्दर बाहर बहु बिध रंगा, बिहतर आपणी धार वखाईआ। सति धर्म दा इक अनन्दा, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। उच्च महल्ल साचा डण्डा, घर साचे दए वखाईआ। माणस जन्म दा पार कन्ढा, कन्ढी पत्तण वेख वखाईआ। दो जहान दा साचा छन्दा, गीत गोबिन्द सुणाईआ। बिन बंदगीउँ बणाए आपणा बंदा, बन्दना इक्को इक समझाईआ। जगत वासना कूड़ा गंदा, निर्मल निरवैर आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसणहारा सदा संगा, हरिजन लेखा लेखे लाईआ। गुरमुख दुआर उच्च मुनार, ऊँचो ऊँच ऊँच जणाइंदा। जिस गृह वसे आप करतार, हरि करता खेल खिलाइंदा। अन्दर बाहर खोल्ह कवाड़, बंक दवारा इक सुहाइंदा। मार्ग पन्थ जणाए सिरजणहार, घाटी इक्को इक चढ़ाइंदा। लेखा जाण धुर दरबार, धुर दी धार आप कमाइंदा। जुग चौकड़ी हो उज्यार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाइंदा। नाम संदेसा देंदा गया वारो वार, नित नवित्त सर्ब समझाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर कर कर गए पुकार, पुनह पुनह सीस सर्ब झुकाइंदा। दोए दोए जोड़ मंगदे गए चरण धूढ़ी छार, मस्तक टिक्का खाकी खाक वखाइंदा।

कवण वेला प्रभ निरगुण लए अवतार, निहकलंका नाउँ रखाइंदा। सन्त सुहेले लए उभार, गुरमुख गुर गुर गोद बहाइंदा। गुरसिख सज्जण कर प्यार, साची रीती मात वखाइंदा। डुब्बदे पाहन ला पार, पाथर आपणे अंग लगाइंदा। साचा काहन निरगुण धार, बंसुरी इक्को नाम वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन दुआरा आप सुहाइंदा। गुरमुख दुआरा रंग गूढ़ा, उतर कदे ना जाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ा, मूर्ख मूढ़े आपणे धंदे लाईआ। कर प्रकाश देवे जोती नूरा, नूर ज़हूर इक दरसाईआ। कर्म कांड दा हूंझे कूड़ा, दुरमति मैल सर्ब धुआईआ। किरपा करे सतिगुर पूरा, मेहर नज़र उठाईआ। पैंडा मेटे दूर दुराडा दूरन दूरा, नेरन नेरा नज़री आईआ। महल्ल वसाए साचा खेड़ा, घर साचे खुशी मनाईआ। साहिब सतिगुर लाए डेरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाईआ। गुरमुख दुआरा सच दरवाज़ा, दो जहाना वाली आप खुल्लाइंदा। शाहो भूप बण राजन राजा, शहिनशाह आपणी खेल वखाइंदा। निरगुण सरगुण रच रच काजा, करनी करता आप कमाइंदा। शब्द गुरु गुर मारे वाजां, नाद धुन राग आपणा आप जणाइंदा। प्रेम प्रीती अन्दर फिरे भाजा, बण पांधी पन्ध मुकाइंदा। हरिजन तेरा रच रच काजा, हरि करता वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग आप वखाइंदा। गुरमुख घर वड्डा वड, सिफ्ती सिफ्त सालाहीआ। लख चुरासी नालों कीता अड्ड, वक्खरी धार वखाईआ। धर्म दुआर दी धर्मी हद्द, निहकर्मी आप बंधाईआ। साहिब सतिगुर बहे सज, सच सिँघासण इक लगाईआ। मार्ग देवे आपणा दस्स, नाम निधान कर पढ़ाईआ। हिरदे अन्दर आपे वस, हरि हरि धार दए समझाईआ। पूरब करे पूरी आस, जन्म कर्म तृष्ना मेट मिटाईआ। लेखा जाण पवण स्वास, स्वास स्वासां संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख घर देवे वड्याईआ। गुरमुख घर वसे गुरमुख, मुख उजल आप कराईआ। प्रभू मिलण दी रखे भुक्ख, दूजी ओट ना कोए तकाईआ। आवण जावण मिटे दुःख, नाता कोए रहिण ना पाईआ। आपे प्रभ गोदी लए चुक्क, निरगुण सरगुण लए उठाईआ। अन्दर वड़ के लए पुच्छ, भेव अभेदा आप समझाईआ। पिछला पैंडा जाए मुक्क, अग्गे लेखा आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। गुरमुख दवारे गुरमुख सोया, सुख सागर विच समाईआ। हरि किरपा हरि जेहा होया, हरि हरि रंग रंगाईआ। दीपक प्रकाश इक बलोया, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। धुरदरगाही देवे ढोया, वस्त अमोलक झोली पाईआ। साचा बीज इक्को बोया, फल फुल्लवाड़ी आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लहिणा झोली पाईआ। गुरमुख घर गुरमुख वड़या, गुर गुर वेख वखाईआ। गुर का शब्द गुरमुख पढ़या, गुर सतिगुर रिहा सुणाईआ।

आपणा विचोला आपे बणया, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख गुर गुर देवे माण, अभिमान रहिण कोए ना पाईआ।

✪ २४ हाढ़ २०२० बिक्रमी रेशम सिँघ दे गृह मेरठ छाउणी ✪

साचा तख्त वेख शाह सुल्तान, दो जहान वज्जे वधाईआ। निरगुण निरवैर खेल महान, सो पुरख निरजंण बेपरवाह आप कराईआ। हरि पुरख निरँजण नौजवान, एकँकारा बल आप प्रगटाईआ। आदि निरँजण नूर महान, अबिनाशी करता साची कार कमाईआ। श्री भगवान योद्धा सूरबीर बली बलवान, नूर नुराना नूर वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ बण प्रधान, सच प्रधानगी इक कमाईआ। तख्त निवासी नौजवान, अनुभव आपणी खेल रचाईआ। सच दवारा कर परवान, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। साचा खेल शाह सुल्तान, हरि सतिगुर आप कराइंदा। परम पुरख प्रभ बण प्रधान, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा। आदि जुगादी खेल महान, जुग चौकड़ी धार बंधाइंदा। निरगुण सरगुण पावे आण, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश प्रकाश आपणा नूर धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे सोभा पाइंदा। साचा तख्त वेख भगवान, घर साचे वज्जी वधाईआ। गुर अवतार होए हैरान, नेत्र नैण सर्ब खुल्हाईआ। पीर पैगम्बर करन ध्यान, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। भगत भगवान गायण गाण, गीत गोबिन्द इक अलाईआ। सन्त साचे मंगण दान, ख़ाली झोली रहे वखाईआ। गुरमुख मस्तक धूढ़ी टिक्का लाण, ख़ाकी ख़ाक ख़ाक रमाईआ। गुरसिख नढ्ढे बाल अञ्याण, नेत्र नैणां नीर नीर वहाईआ। कर किरपा श्री भगवान, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग शास्त्र सिमरत वेद पुराण तेरा गाउँदे रहे गान, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहीआ। साचा तख्त वेख भगवन्त, चार कुण्ट वज्जी वधाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव गावण एका मंत, मन्त्र हरि हरि नाम दृढ़ाईआ। आत्म परमात्म कहे प्रभ मेला नार कन्त, घट घट वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाईआ। साचा तख्त सूरबीर, सो साहिब आप सुहाइंदा। दाता दानी गुणी गहीर, गहर गवर आपणी कार कमाइंदा। पंज तत ना कोए सरीर, त्रैगुण बन्धन ना कोए रखाइंदा। वस्त्र भूशन ना कोए लीर, चोला तत ना कोए हंढ्ढाइंदा। करे खेल बेनज़ीर, जग नेत्र नज़र कोए ना आइंदा। भूपत भूप शाह हकीर, शहिनशाह आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा तख्त इक वड्याइंदा। साचा तख्त पारब्रह्म, प्रभ आपणा आप जणाईआ। निहकर्मी हो के करे कम्म, करनी करता आप जणाईआ। आदि जुगादी इक्को सरन, इष्ट देव इक समझाईआ। आत्म परमात्म साचा वरन, ज़ात पात ना वंड वंडाईआ। निज नेत्र मेला हरन फरन, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। पड़दा खोल्हे भंनण घड़न, घड़न भंनणहार आप हो जाईआ। साचे तख्त आवे चढ़न, तख्त निवासी फेरा पाईआ। नाम अगम्मा आए पढ़न, साचा ढोला राग सुणाईआ। सन्त सुहेले आए वरन, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण इक सुहाईआ। सच सिँघासण सुहाए भगवान, भगवन आपणी दया कमाइंदा। शाहो भूप बण राज राजान, दो जहानां वेख वखाइंदा। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां देवणहार ज्ञान, धुर संदेसा आप सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। त्रैगुण माया देवे दान, दाता दानी दया कमाइंदा। पंज तत खेल महान, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश वंड वंडाइंदा। निरगुण सरगुण नाता जोड़ विच जहान, जागरत जोत नूर धराइंदा। चारे खाणी दे निशान, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज रंग रंगाइंदा। चारे बाणी बोल बिन ज़बान, साचा सोहला राग सुणाइंदा। चारे कुण्ट मार ध्यान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाइंदा। सच सिँघासण हरि जू चढ़, शाह पातशाह सोभा पाईआ। दो जहान वखाए डर, भय भउ इक्को घर समझाईआ। करे खेल नरायण नर, नर हरि करता बेपरवाहीआ। लेखा जाणे चोटी जड़, मध आपणी कार कमाईआ। ना जन्मे ना जाए मर, जीवण मरन आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा तख्त इक सुहाईआ। साचा तख्त हरि सुहञ्जणा, सोभावन्त आप सुहाइंदा। दीनां नाथ दर्द दुःख भय भञ्जणा, सो साहिब डेरा लाइंदा। जुग चौकड़ी निरगुण अमृत कराए साचा मजना, भगत भगवान दुरमति मैल धवाइंदा। प्रभ प्रीतम प्यारा नेत्र पाए ज्ञान अंजना, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। आत्म परमात्म बणाए साचा सज्जणा, पारब्रह्म ब्रह्म साचा संग निभाइंदा। जोती जोत प्रकाश इक्को जगणा, घर घर आपणा खेल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण इक सालाहइंदा। सच सिँघासण सिफ्त सालाह, सतिगुर साचा आप जणाईआ। परम पुरख प्रभ बण मलाह, जुग जुग बेड़ा पार कराईआ। निरवैर हो जणाए आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा वंड ना कोए वंडाईआ। जन भगतां देवे साचा थाँ, चरण कँवल सच सरनाईआ। आत्म परमात्म पकड़े बांह, गृह मन्दिर खोज खुजाईआ। बण सहाई देवे सिर ठंडी छाँ, समरथ आपणी दया कमाईआ। हँस बणाए जगत काँ, कागों हँस आप उडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण इक समझाईआ। सच सिँघासण साहिब

सो, सो पुरख निरँजण आप प्रगटाईआ। कर प्रकाश निर्मल लो, जोती जाता जोत रुशनाईआ। आपणे जेहा आपे हो, प्रभ आपणी कल धराईआ। निरगुण करे निरगुण मोह, मुहब्बत सरगुण नाल बंधाईआ। आत्म परमात्म जावे छोह, भगत भगवान वेख वखाईआ। धुरदरगाही देवे ढोआ ढो, नाम अमोलक झोली पाईआ। निझर झिरना अमृत रस देवे चो, अनरस आपणा रस वखाईआ। कूड़ी क्रिया लवे खोह, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। सच सिँघासण देवे माण, प्रभ अबिनाशी दया कमाइंदा। जुग चौकड़ी वेंहदा रिहा नौजवान, निरगुण आपणी कार कमाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां देंदा रिहा दान, नाम निधाना झोली पाइंदा। अक्खर वक्खर लिख लिख करदा रिहा ज्ञान, अंक अंक मेल मिलाइंदा। मार्ग दस्सदा रिहा हो प्रधान, रहबर इक्को राह जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी कर करतार, दर घर साचा इक सुहाईआ। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, कोटन कोटि काल विहाईआ। गुर अवतार करदे गए पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। पीर पैगम्बर निउँ निउँ सीस सजदा कर के बणदे गए बरखुरदार, बेपरवाह इक्को इक मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि खेल अवल्ला, सो साहिब आप कराईआ। मुकामे हक़ वसाए सच महल्ला, महिफ़ल आपणी आप लगाईआ। वसणहारा निहचल धाम अटला, ऊँचो ऊँच वड वड्याईआ। सच संदेस जुग जुग घल्ला, निरगुण सरगुण कर पढ़ाईआ। चार जुग फड़ाउँदा रिहा पल्ला, साची पल्लू गंढु बंधाईआ। जल थल महीअल समुंद सागर उच्चे टिल्ले पर्बत आपे रला, हर घट आपणा डेरा लाईआ। दर दरवेश नर नरेश सच दवारे आपे खला, चोबदार आपणी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अथाह, सो साहिब आप कराइंदा। जुग जुग देंदा रिहा सलाह, सलाहगीर आप समझाइंदा। कलयुग अन्तिम जावे आ, लोकमात पांधी पन्ध मुकाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान बणे गवाह, खाणी बाणी नाल रलाइंदा। पीर पैगम्बर गुर अवतार जगत संदेसा गए सुणा, धुर फ़रमाना सर्ब जणाइंदा। बीस बीसा हरि जगदीशा नर नरेसा जाए आ, निरगुण आपणा नूर धराइंदा। हस्त कीटां ऊँचां नीचां राउ रंकां वेखे थाउँ थाँ, लख चुरासी फोल फुलाइंदा। निर्धन सरधन पकड़े बांह, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण आप वखाइंदा। सच सिँघासण वखाए चौदां लोक, त्रैभवण धनी वड्डी वड्याईआ। चौदां तबक जणाए इक श्लोक, सोहला इक्को नाम पढ़ाईआ। चौदां विद्या देवे मोख, मेहर नज़र इक उठाईआ। चौदस चन्द रिहा सोच, जगत चांदना कम्म किसे ना आईआ। चौदां

सदीआं रखदे रहे ओट, पीर पैगम्बर ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। निरगुण दाता तख्त निवासी, एकँकार वड्डी वड्याईआ। करे खेल पुरख अबिनाशी, अबिनाशी करता आपणी धार चलाईआ। प्रगट हो घनकपुर वासी, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। शाहो भूप शाहो शाबाशी, शहिनशाह आपणी कल धराईआ। जन भगतां जणाए धुर दी साखी, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। लहिणा देणा चुकाए बाकी, पूरब लेखा झोली पाईआ। बंद कवाड़ा खोल्हे ताकी, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। अमृत जाम प्याए बण के साकी, सच प्याला नाम हथ्थ उठाईआ। शब्द चढ़ाए अगम्म राकी, शाहसवारा होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच सरनाईआ। सच सरनाई एकँकार, एका एक जणाइंदा। जुग चौकड़ी वेख संसार, निरगुण सरगुण रंग रंगाइंदा। कलयुग अन्त श्री भगवन्त कल कल्की लै अवतार, जोती जामा वेस वटाइंदा। पंज तत ना कोए आकार, हड्ड मास नाड़ी चम्म संग ना कोए निभाइंदा। सम्बल नगर धाम न्यार, करे खेल आप करतार, करनी करता आप कराइंदा। नाम डंका अपर अपार, आप सुणाए सुणावणहार, दो जहानां आप जणाइंदा। राउ रंकां जीवां जंतां साधां सन्तां करे ख़बरदार, आलस निंद्रा कूड़ी क्रिया हउमें हंगता माया ममता मेट मिटाइंदा। नाम ढोला सोहला धुर दा बोला बोल जैकार, सोहँ राग आप अलाइंदा। पड़दा उहला दए निवार, आत्म परमात्म करे प्यार, पारब्रह्म ब्रह्म आपणी गंढु पवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे करतार, हरि करता वड वड्याईआ। जुग जन्म दे विछड़े यार, प्रेमी लए मिलाईआ। कर्म कर्म दा रोग निवार, सोग चिन्ता दए चुकाईआ। भव सागर कलयुग देवे तार, तारनहार वड वड्याईआ। एका बख्शे नाम अधार, अन्तर बाहर गुप्त ज़ाहर लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। जगत बसन्तर करे ठंडी ठार, अग्नी तत ना लागे राईआ। घर दीपक जोती देवे वाल, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। बूंद स्वांती दए प्याल, निझर झिरना आप प्याईआ। नाता तोड़ काल महाकाल, प्रभ बख्शे इक सरनाईआ। राए धर्म ना मारे मार, चित्रगुप्त ना लेखा सके कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सिँघासण आपे चढ़, हरिजन साचे आपे लए उठाईआ। हरिजन साचे उठाए आप, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। अन्दर वड़ के दस्से जाप, बिन रसना जिह्वा मेल मिलाइंदा। पूरब जन्म दा मेटे पाप, कर्म कांड ना कोए वखाइंदा। निरगुण निरगुण जोड़े साक, सरगुण सरगुण बंधप रूप वखाइंदा। मेल मिलावा नर हरि नरायण साचे कन्त सुहाग, रुत्त सुहञ्जणी आप सुहाइंदा। जन्म कर्म दा धोवे दाग़, दुरमति मैल मेट मिटाइंदा। शब्द अगम्म धुन आत्मक सुणाए साची आवाज़, अनहद नादी राग अलाइंदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सन्त सुहेले अंग लगाइंदा। सन्त सुहेले लाए अंग, अंगीकार आप अख्वाईआ। दिवस रैण जणाए परसंग, परम पुरख बेपरवाहीआ। अट्ठे पहर रहे अनन्द, घड़ी पल ना वंड वंडाईआ। सुरत सवाणी ना होवे रंड, शब्द हाणी जोड़ जुड़ाईआ। माणस जन्म नंगी होण ना देवे कंड, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। घर प्रकाश नूरी चन्द, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। गीत गाए ना बत्ती दन्द, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। नाता तोड़े जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज झगड़ा रहिण कोए ना पाईआ। मेल मिलाए सूरा सरबँग, प्रभ आपणी गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। हरिजन साचे वेखे प्रभ, वेखणहार अख्वाइंदा। जुग चौकड़ी लए लभ्भ, लख चुरासी फोल फुलाइंदा। जगत दवारा पार करे हद्द, घर आपणा इक समझाइंदा। धुन राग सुणाए नद, अनहद साची सेव लगाइंदा। घर मक्का काअबा साचे हुजरे कराए हज्ज, महिराब महिबूब इक्को इक सुहाइंदा। ढोला गीत छन्द सुणाए सद, हरिजन सद सद आपणा भेव चुकाइंदा। दरस दिखाए उपर शाह रग, नौ दवारे पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मीता आप हो जाइंदा। भगवन मीता मित्र प्यारा, हरि सतिगुर इक अख्वाईआ। नेत्र देवे निज दीदारा, नैण इक्को इक खुलाईआ। नूर मारे चमत्कारा, कोटन कोटि सूर्या चन्द शरमाईआ। मण्डल मण्डप शरमसारा, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। गुरमुख मन्दिर सोहे बंक दवारा, जिस घर आवे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, जन भगतां लए मिलाईआ। जन भगतां मेला करे प्रभ मीत, हरि सतिगुर खेल रचाइंदा। निरगुण दाता हो अतीत, त्रैगुण लेखा आप मुकाइंदा। आत्म परमात्म मिल अमृत बरखे ठांडा सीत, सीतल धार इक वहाइंदा। सच प्रीती ढोला गाए अगम्मी गीत, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाइंदा। तेरा मेरा गीत इक, एकँकार आप जणाईआ। जीव आत्मा साची सिख्या सिख, श्री भगवान करे पढ़ाईआ। घर मन्दिर गृह आवे दिस, निज वज्जे सच वधाईआ। करवट लै जो सुत्ता दे कर पिठ, आप आपणा मुख दिखलाईआ। सच प्रीती करे हित, हितकारी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप जगाईआ। जन भगत जगाए आप हरि, हरि आपणी दया कमाईआ। काया मन्दिर अन्दर जाए वड़, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। डूंघी भँवरी सोई सुरती लए फड़, नाम हलूणे नाल उठाईआ। उठ सवाणी ढोला पढ़, प्रभ हाणी रिहा पढ़ाईआ। घर वेख कन्त कन्तूल अगम्मी वर, दूल्हा इक्को नज़री आईआ। नेत्र खोल्ह फड़ लड़, कन्नी आपणी गंढु गंढुाईआ। सच रंगीले डोले चढ़, कहार बणया बेपरवाहीआ। महल्ल अगम्म आपणे

वड़, क्यों बैठी मुख भवाईआ। लैण आया नरायण नर, हरि करता फेरा पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर चार जुग देंदे रहे वर, जगत सिख्या कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां लेखा लेखे लाईआ। गुरमुख सवाणी चढ़े चा, घर आपणे खुशी मनाईआ। पारब्रह्म प्रभ मिले बेपरवाह, बेपरवाही खेल समझाईआ। साचा मार्ग देवे ला, रहबर इक्को नूर खुदाईआ। साचा कलमा दए पढ़ा, कायनात नाता दए तुड़ाईआ। साबत ईमान लए रखा, इस्म आपणा आप समझाईआ। इष्ट देव दए समझा, दृष्ट आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा लेखे लाईआ। गुरमुख आत्म मंगे मंग, घर आपणे ध्यान लगाईआ। कवण वेला प्रभ देवे संग, सगला संग रखाईआ। जन्म जन्म दी कटे भुक्ख नंग, मेरी तृष्ना मेट मिटाईआ। मेरा रूप बणया हँ, ब्रह्म आपणी वंड वंडाईआ। श्री भगवान मेरा चन्न, मैं किरन रूप रुशनाईआ। बिन साहिब मैं होई अन्ध, नज़र कुछ ना आईआ। त्रैगुण माया पंज तत केती चोला हंढ्ढाया गंद, कूड़ी क्रिया करी कुड़माईआ। बिन प्रीतम प्यारे कोई ना पाए ठंड, अंगीकार ना कोए कराईआ। जुग चौकड़ी गई हंढ, कलयुग अन्तिम राह तकाईआ। कवण वेला ठाकर स्वामी कट के आए पन्ध, बण पांधी फेरा पाईआ। निरगुण हो सुणाए आपणा छन्द, सोहँ राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा लए मुकाईआ। भगत भगवान लेख मुकाउणा, बाकी अन्त रहिण ना पाईआ। आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाउणा, जुड़या जोड़ ना कोए छुडाईआ। चरण प्रीती नाता तोड़ निभाउणा, अद्धविचकार ना कोए तुड़ाईआ। साचे घोड़ गुरमुख चढ़ाउणा, शब्दी घोड़ा इक वखाईआ। ठग्ग चोर यार कोई नज़र ना आउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा लहिणा झोली पाईआ। हरिजन लहिणा पाए झोली, सो पुरख निरँजण दया कमाइंदा। कलयुग अन्त श्री भगवन्त आपणे कंध उठाए डोली, दो जहानां पार कराइंदा। दरगाह साची सचखण्ड दुआर लै के जाए हौली हौली, विष्न ब्रह्मा शिव राह विच सीस झुकाइंदा। गोबिन्द धार जिन्हां प्रेम प्रीती तन्द बद्धा मौली, तिन्हां मेहरवान मेहर नज़र वखाइंदा। लख चुरासी जीव जंत कूड़ी क्रिया पावण रौली, आत्म अन्तर साचा मन्त्र नाम ना कोए दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचा आपणे घर वसाइंदा। हरिजन साचे घर वसाउणा, गहर गम्भीर दया कमाईआ। आवण जावण पन्ध मुकाउणा, लख चुरासी रहिण ना पाईआ। मात गर्भ दा पन्ध कटाउणा, दस दस मास ना अग्न तपाईआ। अन्तिम जोती जोत रलाउणा, जन जोती जोत समाईआ। थिर घर साचे कुण्डा लौहणा, शब्दी सुत समझाईआ। साचा मंगल इक्को गाउणा, घर वज्जे हरि वधाईआ। चरण कँवल हरि राह दरसाउणा, दर दरवाज़ा इक खुल्हाईआ। सच सिँघासण इक वडयाउणा,

सचखण्ड आपणा डेरा लाईआ। नूरी नूर डगमगाउणा, जोती जोत जोत रुशनाईआ । सीस जगदीश ताज सुहाउणा, पंचम मुख सिफ्त सालाहीआ। सोहँ रूप नज़री आउणा, तूं मेरा मैं तेरा दोहां इक्को धार बंधाईआ। एका दूआ भेव चुकाउणा, दूआ एका इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जन भगतां मेला सहिज सुभाईआ। भगत मिलावा सचखण्ड, घर साचे वज्जे वधाईआ। जरम कर्म दी मुक्के वंड, अग्गे लेखा कोए रहिण ना पाईआ। राए धर्म ना कोई दंड, चित्रगुप्त ना कोए सज़ाईआ। लाड़ी मौत ना मंगे मंग, दर अलख ना कोए जगाईआ। इक्को साहिब सतिगुर होवे संग, एथे ओथे आपणा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दीन दयाल होए सहाईआ। हरिजन भगत भगत कबीला, श्री भगवान आप बणाईआ। कलयुग अन्तिम बण वसीला, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। साची देवे नाम दलीला, दिलबर दिलदार दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बिन सतिगुर पूरे पार ना कोए लँघाईआ। सतिगुर पूरा इक अकाल, अक्ल कल धारी आप जणाइंदा। वसणहारा सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक वड्याइंदा । जन भगतां वसे सदा नाल, विछड़ कदे ना जाइंदा। कलयुग अन्तिम बण दलाल, जगत दलाली सेव कमाइंदा। नूरी जलवा दए वखाल, ज़ाहर ज़हूर नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पार कराइंदा। हरिजन पार करे करतार, करता आपणी दया कमाईआ। सिर रख हथ्थ निरँकार, निरगुण सरगुण लेख चुकाईआ। लख चुरासी नालों कर के वक्ख सिरजणहार, दरगाह साची दए वड्याईआ। अन्तिम मेला नर हरि नरायण कन्त भतार, गुरमुख नारी आप प्रनाईआ। प्रेम प्रीती फूलन सोहणा हार, कली कली नाल गुंदाईआ। लै के जावे धुर दरबार, धुर दरबारी वड वड्याईआ। सचखण्ड दवारे दए बहाल, चरण कँवल दए सरनाईआ। लेखा चुक्के शाह कंगाल, ऊँच नीच ना कोए जणाईआ। आपे सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। सन्त सुहेले सज्जण भाल, गुर चेले लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि खेल अगम्म, अगम्मड़ी कार कमाइंदा। भगतां बेड़ा आपे बन्नू, बण मलाह कंध उठाइंदा। वस्त अमोलक इक्को धन, सो साहिब झोली पाइंदा। हँ ब्रह्म जाए मन्न, मन मनसा मार मुकाइंदा। होए मिलावा काया तन, घर साची गंढु पवाइंदा। आत्म कहे परमात्म धन्न, परमात्म कहे आत्म धन्न, धन्न धन्न आपणा आप सर्ब वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण नूर इक ज़हूर, ज़ाहर आपणी कल धराइंदा।

✪ २५ हाढ़ २०२० बिक्रमी रामेश्वर दास दे गृह ख़तौली ✪

गृह मेला मनोहर मुकन्द, लखमी नरायण दया कमाईआ। आत्म अन्तर इक अनन्द, परमानंद वखाईआ। पूरब जन्म दा गाया छन्द, जन्म कर्म लेखे पाईआ। आत्म परमात्म पाए गंढ, निरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाईआ। दूई द्वैत भाण्डा भरम भउ ढाहे कंध, सांतक सति सति वरताईआ। घर प्रकाश दीपक चन्द, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। हरि स्वामी ठाकर मेटे पन्ध, जन्म अजन्म ना कोए भवाईआ। काया भीतर वसे संग, बाहर इक्को नज़री आईआ। आसा मनसा पूरी करे मंग, तृष्ना भुक्ख पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मेला बेपरवाहीआ। घर मेला हरि सच्चे काहन, बंसुरी इक्को नाम सुणाइंदा। सीता सुरती मिले राम, रघुपत आपणी दया कमाइंदा। घनघोर खुशी कराए शाम, गहर गम्भीर वेख वखाइंदा। अमृत मध प्याला जाम, नाम इक्को रस वखाइंदा। काया नगर खेड़ा वसे ग्राम, घर मन्दिर ठाकर दवारा सोभा पाइंदा। सुखआसण बैठ श्री भगवान, आत्म सेजा आप सुहाइंदा। आत्म परमात्म कर परवान, प्रेम प्रीती तोड़ निभाइंदा। पूरब लेखा वेखे आण, जग लहिणा देणा झोली पाइंदा। देवणहारा सच ज्ञान, नाम निधान इक समझाइंदा। चरण कँवल कँवल चरण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे रंग रंगाइंदा। मिले काहन प्रभू कन्तूहल, नर हरि नरायण वड्डी वड्याईआ। लेखे लाए तन्द डोरी माला फूल, सुगंधी इक्को नाम भराईआ। आदि जुगादी जुग चौकड़ी भगत भगवान कदे ना जाए भूल, भुल्लयां लए मिलाईआ। नेत्र पेखे शंकर हथ्थ लै त्रिसूल, ब्रह्म वेता आपणा नैण उठाईआ। विष्नूं विश्व चुकावणहारा मूल, देवणहार सहिज सुखदाईआ। – – –पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सदा स्वामी, हरिजन वेखे थाउँ थाईंआ। आत्म परमात्म पढ़ाए सच कहाणी, सोहँ ढोला इक अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाईआ। हरिजन उठे कूड़ी जाग, आलस निंद्रा ना कोए रखाइंदा। आत्म उपजे इक वैराग, वैरागी रूप आप समझाइंदा। जगत तृष्ना बुझे आग, माया ममता डेरा ढाइंदा। कूड़ी क्रिया दुरमति मैल धो दाग़, निर्मल नूर स्वच्छ सरूप प्रगटाइंदा। सच प्रकाश दीपक जोत जगे चिराग़, जगत अन्धेर मिटाइंदा। घर मेला नर हरि नरायण कन्त सुहाग, सेज सुहञ्जणी सोभा पाइंदा। हरिजन हरिभगत होइण वड वड भाग, वडभागी सो पुरख निरँजण वेख वखाइंदा। दूर दुराडे नेरन नेरे लख चुरासी विचों लाभ, भेव अभेद आप खुल्हाइंदा। मेल मिलावा मोहण माधव माध, मधुर धुन आपणा राग सुणाइंदा। सोवत जागत मारे नाम आवाज़, अनहद नादी नाद सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन आपणे रंग रंगाइंदा। हरिजन रंग रंग अमोला, श्री भगवान आप

चढ़ाईआ। चढ़ावणहारा काया चोला, पंज तत सोभा पाईआ। निरगुण हो के बणे विचोला, सरगुण बन्धन इक रखाईआ। अन्तर वड़ के गाए ढोला, सोहँ राग अलाईआ। धुरदरगाही सच्चा बोला, पारब्रह्म ब्रह्म करे इक पढ़ाईआ। भगत भगवान दोहां चुक्के पड़दा उहला, तेरा मेरा नज़र कोए ना आईआ। गीत गोबिन्द गायण सुहागी सोहला, सो पुरख निरँजण एकँकार इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन लेखा लेखे विच रखाईआ।

✪ २५ हाढ़ २०२० बिक्रमी तेज भान दे गृह अम्बाला छौणी ✪

३२ सचखण्ड दवारे सच दरबार, सति सतिवादी सोभा पाइंदा। सो पुरख निरँजण शाह सिक्दार, शहिनशाह इक्को नज़री आइंदा। हरि पुरख निरँजण सेवादार, घर ठांडे अलख जगाइंदा। एकँकारा वड बलकार, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। आदि निरँजण नूर उज्यार, निरगुण निरवैर जोती जाता डगमगाइंदा। श्री भगवान खोल्ह कवाड़, साचा मन्दिर इक सुहाइंदा। अबिनाशी करता कर पसार, निराकार वेख वखाइंदा। पारब्रह्म प्रभ पावे सार, आप आपणा भेव चुकाइंदा महल अटल इक मुनार, अगम्म अथाह वेख वखाइंदा। करे खेल सिरजणहार, बेपरवाह आपणी कार कमाइंदा। मुकामे हक़ मुरार, लाशरीक नूर प्रगटाइंदा। नूर इलाही सांझा यार, महिबूब इक्को नज़री आइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप सुहाइंदा। सचखण्ड दुआर श्री भगवान, सो साहिब खेल खिलाईआ। दीआ बाती इक महान, कमलापाती नूर रुशनाईआ। सच निशान झुलाए आण, आप आपणी बणत बणाईआ। नर निरँकार बण के काहन, दर घर साचा इक वड्याईआ। बोध अगाधा धुर फ़रमान, भिच्छया आपणी आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा इक सुहाईआ। सच दुआरा सोभावन्त, सो सतिगुर आप सुहाईआ। आदि जुगादी महिमां अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। आपणा खेल करे बेअन्त, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। नाउँ निरँकारा एका मंत, मन्त्र आपणा आप प्रगटाईआ। खेले खेल नार कन्त, सेज सुहञ्जणी इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। सचखण्ड दवारे पुरख अकाल, अक्ल कलधारी खेल कराइंदा। दीनां बंधप दीन दयाल, दयानिध ठाकर स्वामी आपणी कार कमाइंदा। निर्मल नूर जोत जलाल, जलवा ज़ाहर ज़हूर प्रगटाइंदा। करे खेल बेमिसाल, मिसल विच कदे ना आइंदा। धर्म दुआर कर प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाइंदा । आदि पुरख अपरम्पर स्वामी नौजवान, बिरध बाल रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर आप वसाइंदा। सचखण्ड

दुआर वसाए एक, एका एक वड्डी वड्याईआ। जुग चौकड़ी साची टेक, मेहरवान होए सहाईआ। करे खेल बहुबिध भांत अनेक, भेव अभेद ना किसे जणाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण धारनहारा भेख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करता करतार, सच दवारे आप कराइंदा। निरगुण नूर नूर हो उज्यार, जोती जोत डगमगाइंदा। साची इच्छया कर प्यार, भिच्छया इक्को इक वरताइंदा। देवणहार धुर दरबार, धुरदरगाही खेल कराइंदा । जननी जन बण निरँकार, सुत दुलारा इक्को जाइंदा। शब्दी शब्द कर प्यार, पूत सपूता गोद उठाइंदा। देवणहार इक आधार, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। साचा मन्दिर कर तैयार, थिर घर बंक वड्याइंदा। खोल्हणहारा आप कवाड़, बंद ताकी पड़दा लाहइंदा। छोटा बाला नढ्ढा सुत दुलारा अन्दर वाड़, साची सिख्या इक समझाइंदा। तेरा मेरा इक प्यार, हरि करता आप बंधाइंदा। सचखण्ड वसे वसणहार, नर निरँकारा सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दवारा इक सुहाइंदा। सचखण्ड अन्दर थिर घर, सो साहिब आप प्रगटाईआ। अबिनशी करता दे वर, सुत दुलारे रिहा समझाईआ। चरण कँवल सच सरनाई जाणा पड़, सरनगति इक रखाईआ। साचा ढोला लैणा पढ़, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। ना जन्मे ना जाए मर, जीवण जुगत ना कोए रखाईआ। सति सतिवादी इक वखाए सरोवर सर, अमृत ताल इक सुहाईआ। अगम्म अथाह ऊँचो ऊँच पौड़े जाणा चढ़, महल अटल इक्को सोभा पाईआ । साहिब सतिगुर दीन दयाल ठाकर स्वामी दर्शन करना खड़, स्वच्छ सरूपी शाहो भूपी इक्को नज़री आईआ। ना चोटी ना कोई जड़्ह, निरगुण निराकार अजूनी रहित अनभव प्रकाश इक दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड अन्दर साची कार कमाईआ । सचखण्ड अन्दर थिर दरवाज़ा, अबिनाशी करता आप खुल्हाईआ। मेहरवान वड ग़रीब निवाज़ा, दीनां नाथ दया कमाईआ। सुत दुलारे साजण साजा, शब्दी शब्द नाउँ प्रगटाईआ। भेव खुल्हाए बोध अगाधा, अगम्म अथाह पढ़ाईआ। शाहो भूप वड राजन राजा, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। सच दवारे रच रच काजा, हरि करता वेख वखाईआ। तेरा मेरा इक्को नाता, पुरख बिधाता आप जणाईआ। पुरख अकाल पिता माता, बालक साची गोद उठाईआ। इक्को नूर इक्को ज़ाता, अजाति होर ना कोए वटाईआ। इक्को मन्दिर सच दुआर शब्दी एहाता, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। इक्को नाम निधान इक्को धुर दी गाथा, इक्को सच पढ़ाईआ। इक्को तृष्ना इक्को पूरी करे आसा, इक्को हरस हवस मेट मिटाईआ। इक्को एकँकार वसे पासा, सद आपणा संग निभाईआ। इक्को आदि सुत शब्द देवे भरवासा, थिर घर साचे मिले वड्याईआ। इक्को नाम इक्को पूजा पाठा, इक्को मार्ग रिहा समझाईआ। इक्को वार इक्को हाटा, इक्को वणज रिहा वखाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत सच सच समझाईआ। सुत शब्द सच दुलारे, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। अस्थिल सोहण तेरे दुआरे, थिर घर इक्को रंग वखाईआ। निरगुण दीआ बाती कर उज्यारे, जोती जोत डगमगाईआ। अबिनाशी करता वेखणहारे, सच दवारे बैठा सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत सति सति जणाईआ। शब्द सुत सुण साचे लाल, हरि सतिगुर आख जणाया। थिर घर तेरी धर्मसाल, आदि मन्दिर इक वखाया। जुग चौकड़ी चले नाल, नित नवित्त वेख वखाया। भेव अभेदा दस्से अगम्म अहिवाल, पड़दा आपणा आप चुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे रिहा वडयाया। सुत दुलारा शब्दी सुत, दोए जोड़ प्या सरनाईआ। कर किरपा अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म प्रभ तेरे हथ्थ वड्याईआ। आपणी गोदी लैणा चुक्क, हउँ बालक रूप सखाईआ। थिर घर वेखां सोहणी रुत्त, रुतड़ी तेरे नाल महकाईआ। होए प्रकाश साची कूट, चार कुण्ट दहि दिशा वज्जे वधाईआ। मेरा कोई ना दिसे पंज तत बुत्त, त्रैगुण तत नज़र ना आईआ। तेरी धार अन्दर जावां लुक, छप्पर छन्न चार दीवार ना कोए बणाईआ। तेरे हुक्मे अन्दर आवां उठ, बण सेवक सेव कमाईआ। तूं साहिब मेरे जाणा तुठ, बेनज़ीर मेहर नज़र उठाईआ। मेरे कोल नहीं कुछ, ख़ाली झोली देणी भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सुत दुलारे दया कमाईआ। सुत दुलारे दया कमावांगा। सिर तेरे हथ्थ रखावांगा। पुरख अबिनाशी खेल खिलावांगा। दीआ बाती इक जगावांगा। कमलापाती हो के वेख वखावांगा। साची साखी इक पढ़ावांगा। आपणी जाति तेरा नूर जणावांगा। धुर दी दाती, तेरी झोली पावांगा। सच सिँघासण बैठ इकांती, अक्ल कल तेरी धार वखावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव बाल अञ्याणे तेरे साथी, सगला संग वखावांगा। त्रैगुण माया खेल तमाशी, तेरा रंग रंगावांगा। पंज तत पूरी करां आसी, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश वंड वंडावांगा। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ पाताल आकाश पावां रासी, मण्डल मण्डप तेरा नाच नचावांगा। धरनी धरत धवल जल थल महीअल पूरी करां आसी, सूरज चन्द तेरा नूर चमकावांगा। खेल खेल विच ब्रह्मण्ड, लेखा जाण जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज तेरी गंढु पवावांगा। चारे खाणी वसे संग, चारे बाणी तेरा परसंग, परा पसन्ती मद्धम बैखरी राग जणावांगा। लख चुरासी तेरी वंड, निरगुण सरगुण तेरा अनन्द, ततव तत वेख वखावांगा। आत्म परमात्म तेरा छन्द, ब्रह्म पारब्रह्म साचा रंग, सेज सुहञ्जणी इक वडयावांगा। जुग चौकड़ी तेरी मंग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तेरी मनसा पूर वखावांगा। तेरी मनसा पूर वखावांगा। निरगुण सरगुण धार चलावांगा। लख चुरासी डेरा लावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव पढ़ावांगा। शास्त्र सिमरत वेद जणावांगा। गुर अवतार रंग रंगावांगा। धुर दी बाणी

बोल जैकार, तेरा नाम सिफ्त सालाहवांगा। काग़ज़ कलम बण लिखार, कातब इक्को भेव चुकावांगा। खेल खेल जुग चौकड़ी चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरी गंढु पवावांगा। मेरा तेरा जगत प्यार, तेई अवतार बंध वखावांगा। भगत अठारां खोल्ह कवाड़, घर मन्दिर इक बहावांगा। ईसा मूसा मुहम्मद यार, यारी यारां नाल निभावांगा। मुरीद मुर्शद दे दीदार, दीद ईद चन्द चमकावांगा। नानक निर्मल जोत कर उज्यार, दो जहानां नूर वखावांगा। धुर दी धार बोल जैकार, सति नाम दृढ़ावांगा। साचा खेल सच्चे घर बार, इक दस वंड वंडावांगा। दहि दिशा वेख विचार, गोबिन्द आपणा सुत बणावांगा। रुत्त सोहे विच संसार, शब्दी शब्द तेरा रूप जणावांगा। लेखा जाण धुर दी धार, धुर मस्तक लेख लिखावांगा। साची सिख्या अन्तिम वार, साख्यात इक समझावांगा। धुर संदेसा दे सिरजणहार, सिर सिर हुक्म मनावांगा। कल्गी तोड़ा सीस दस्तार, शस्त्र वस्त्र इक सजावांगा। शाह सवारा अगम्म अपार, अस्व इक्को इक दौड़ावांगा। भेव अभेदा खोल्ह कवाड़, बोध अगाध जणावांगा। कल कल्की लै अवतार, नव नौ चार पन्ध मुकावांगा। सम्बल वसे धाम न्यार, हरि मन्दिर इक वखावांगा। कमलापाती हो उज्यार, दीआ बाती इक्को डगमगावांगा। शब्द सुत तेरा करां सच विहार, आदि अन्त तेरा हुक्म वरतावांगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे साचे खड़, साचा खेल वखावांगा। सुत दुलारे चढ़या चा, सचखण्ड वज्जी वधाईआ । जुग चौकड़ी पारब्रह्म प्रभ बणे मेरा मलाह, नित नवित्त बेड़ा पार कराईआ। सति पुरख निरँजण हो के देवे सति सलाह, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सेवा ला, साची सिख्या इक समझाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त दए समझा, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। वरन बरन ज़ात पात दीन मज़्हब वंड वंडा, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणी गंढु पवा, गंढुणहार आप गोसाईंआ। खड़ग खण्डा तीर चमका, चण्ड प्रचण्ड इक वखाईआ। तीर तरकश कमान टंक हथ्थ उठा, भथ्था इक्को नाम जणाईआ। आत्म परमात्म निशाना दए लगा, अणयाला तीर इक उठाईआ। शाह कंगालां वेखे थाउँ थाँ, बेपरवाह फेरा पाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द सुत रिहा समझाईआ। सुत दुलारा मंगे आदेस, दोए जोड़ सीस झुकाईआ । पुरख अकाल इक नरेश, नर निरँकार नजरी आईआ। जुग चौकड़ी धरे वेस, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। कलयुग अन्तिम धारे भेख, भेख अवल्लड़ा समझ कोए ना पाईआ। रूप रंग ना कोए रेख, अनभव आपणी कार कमाईआ। वसणहारा सचखण्ड साचे देस, लोकमात निरगुण जोत करे रुशनाईआ। लेखा जाणे गुर अवतार पीर पैगम्बर औलीए मुल्लां शेख, पंडत पांधे कुतब ग़ौंस वेखे थाउँ थाईंआ । लख चुरासी जीव जंत साध सन्त अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर

वेखणहारा रेख, धुर दा पड़दा आप उठाईआ। निरवैर पुरख अकाल दीन दयाल हो के खेले खेड, खेलणहारा इक्को इक अख्वाईआ। दूर दुराडा नेरन नेरा जन भगतां नज़री आए नेतन नेत, निज घर आपणा आसण लाईआ। अन्दर वड़ के काया पौड़े चढ़ के सुरत सवाणी फड़ के दस्म दवारी खोल्हे भेत, भेव अभेदा आप जणाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत शब्दी धार सतिगुर वेख, घर साचे सोभा पाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस दा लेख, सो लेखा आप मिटाईआ। आत्म परमात्म परम पुरख प्रीतम प्यारा दस्से साचा हेत, हितकारी इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द दुलारे देवे वर, तेरा लहिणा अन्तिम कलयुग तेरी झोली पाईआ। शब्द सुत तेरा लहिणा मीत, हरि मित्र प्यारा आप जणाइंदा। कलयुग अन्तिम श्री भगवान चलाए इक्को रीत, रीतीवान वेख वखाइंदा। चार वरन अठारां बरन काया करे ठंडी सीत, अमृत मेघ इक बरसाइंदा। घर स्वामी नज़र आए अतीत, त्रैगुण डेरा ढाइंदा। पंज तत रहे ना कोए शरीक, लाशरीक आपणा रंग वखाइंदा। दूर दुराडा नज़री आए नज़दीक, नेरन नेरा मेल मिलाइंदा। सच निशाना मारे ठीक, कूड़ा ठीकर भन्न वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर वाक भविक्ख्त लिख के गए तरीक, बीस बीसा हरि जगदीशा आपणी कार कमाइंदा। एका छत्र झुल्ले हरि साचे सीस, शाह सुल्तान राज राजन दो जहान दूजा नज़र कोए ना आइंदा। वेखणहारा हस्त कीट, ऊँचां नीचां राउ रंकां आपणा रंग रंगाइंदा। जुग चौकड़ी जो सुत्ता रिहा दे कर पीठ, सो साहिब कलयुग अन्त आपणी करवट आप बदलाइंदा। जन भगतां सुणाए सोहला ढोला इक्को गीत, आत्म परमात्म सोहँ राग पढ़ाइंदा। काया मन्दिर अन्दर शिवदुआला मट्ठ जणाए सच मसीत, हुजरा हक़ हक़ वखाइंदा। आत्म परमात्म शब्द अनादी गाए गीत, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म देवणहारा भीख, भिख्या आपणा नाम झोली पाइंदा। साची सिख्या इक्को लैणी सीख, दूजी पट्टी ना कोए पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुरु गुरदेव स्वामी, आदि जुगादि सदा निहकामी, निहचल धाम सच सिंघासण इक्को सोभा पाइंदा। सुत दुलारे तेरा सच सिंघासण, सो साहिब आप जणाईआ। जुग चौकड़ी खेल तमाशन, ख़ालक ख़लक वंड वंडाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां पूरी करे आसन, आसा तृष्णा पूर कराईआ। आत्म सेजा करे भोग बलासन, भस्मड़ आपणी कार कमाईआ। वेखणहारा खेल पृथ्मी आकासन, गगन मण्डल दो जहानां आपणी रास रचाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण दाता पुरख बिधाता करे खेल बण दासी दासन, सेवक सेवा आपणी इक जणाईआ। जन भगतां पूरा करे घाटन, पूरब लहिणा देवे थाउँ थाईंआ। नाता तोड़े आन बाटन, लख चुरासी मात गर्भ फंद कटाईआ। कलयुग मेटे रैण अन्धेरी रातन, सतिगुर चन्द इक्को नूर चमकाईआ। भेव खोल्हे आपणा

बातन, बैतुलमुक्दस इक्को धाम वखाईआ। मुरीद मरुशद होवे साथन, गुर चेला गंढु पवाईआ। लहिणा देणा चुक्के पूजा पाठन, जिस जन आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि शब्द शब्द सुत अनाद, खेले खेल ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड आपणी रचना आप रचाईआ। ब्रह्म ब्रह्मांड रचना अनेक, अक्ल कलधारी आप रचाइंदा। निरगुण हो के रिहा वेख, सरगुण खेल खिलाइंदा। कलयुग अन्तिम धरनी धरत धवल धरे भेख, जननी जन मात पित रूप ना कोए वटाइंदा। पुरख अकाल नर नरेश, नर हरि नरायण इक्को नज़री आइंदा। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले भगत भगवान करे हेत, बण हितकारी मेल मिलाइंदा। नाम दूत देवे भेज, घर घर सदा आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी भगत भगवान, इक्को वार जणाईआ। अन्तर आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान, सति धर्म करे सच पढ़ाईआ। धर्म वखाए इक निशान, दो जहानां आप झुलाईआ। साची सुरती मिले काहन, घर वज्जे इक वधाईआ। पूरब लेखा चुकाए आण, लहिणा देणा कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां देवे भगती दान, भगवन आपणी दया कमाईआ। भगवन दया कमाए आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतार पीर पैगम्बर देवणहारा जाप, निष्अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। मेटणहारा तीनों ताप, त्रैगुण डेरा रिहा ढाहीआ। कूड़ी क्रिया मिटावणहारा रोग संताप, संसा रोग रिहा चुकाईआ। जन भगतां बण के माई बाप, पिता पूत गोद सुहाईआ। जिस जन जणाए आपणा आप, दूई द्वैती पड़दा आप उठाईआ। सो गुरमुख जपे सोहँ जाप, तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म परमात्म आत्म तेरे नाल प्रनाईआ। एथे ओथे दो जहानां सज्जण साक, सगला संग निभाईआ। निज नेत्र खोल्हे इक्को अक्ख, आखर आपणा घर वखाईआ। नजरी आए शब्द गुरू प्रतख, जोती नूर डगमगाईआ। भगत भगवान चरणी जाए ढट्ठ, मस्तक धूढ़ी टिक्का इक्को लाईआ। इक्को उपजे ब्रह्म मति, दूजी धार ना कोए वखाईआ। बहत्तर नाड़ ना उबले रत्त, रत्ती रत्त दए सुकाईआ। भगत भगवान इक दूजे दा गावण गथ, सोहँ ढोला राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग मार्ग एका दस्स, दहि दिशा रिहा समझाईआ।

२६ हाढ़ २०२० बिक्रमी गुरदेव सिँघ दे गृह पिण्ड घड़ूआं अम्बाला

सो पुरख निरँजण शाह सुल्ताना, सति सतिवादी खेल कराइंदा। हरि पुरख निरँजण वड मेहरवाना, मेहरवान दया कमाइंदा।

एकँकार वड बलवाना, बलधारी रूप प्रगटाइंदा। आदि निरँजण नूर महाना, जोती जाता डगमगाइंदा। अबिनाशी करता राज राजाना, शाहो भूप वेस वटाइंदा। श्री भगवान मर्द मर्दाना, सच मर्दानगी आप कमाइंदा। पारब्रह्म प्रभ हो प्रधाना, निरगुण निरँकार निराकार खेल वखाइंदा। साची इच्छया कर परवाना, भिच्छया आपणी झोली पाइंदा। सचखण्ड दुआर सच मकाना, सो साहिब आप प्रगटाइंदा। सति सतिवादी इक सिँघासण नौजवाना, नर नरायण आप उपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। सच सिँघासण एका एक, सो साहिब आप प्रगटाईआ। सो पुरख निरँजण देवे साची टेक, वड दाता बेपरवाहीआ। निरगुण निरवैर निराकार आपे लए वेख, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती नूर धर धर भेख, नूर नुराना सोभा पाईआ। वसणहारा साचे देस, घर साचे खुशी मनाईआ। आदि जुगादि रहे हमेश, ना मरे ना जाईआ। भूपत भूप बण नरेश, दर दरवेश आपणी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। सचखण्ड दवारा सोभावन्त, सो साहिब आप सुहाईआ। श्री भगवान महिमा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। करे खेल आप बेअन्त, बेपरवाह वड्डी वड्याईआ। नाता जोड़ नार कन्त, सेज सुहञ्जणी इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि खेल अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। पारब्रह्म प्रभ इक इकल्ला, निरगुण आपणी धार प्रगटाइंदा। हरि पुरख निरँजण वसणहारा सच महल्ला, महल अटल इक रुशनाइंदा। आदि निरँजण जोती जोत आपे बला, तेल बाती नज़र कोए ना आइंदा। एकँकार धुर संदेस साचा घल्ला, शब्द अनादी राग अलाइंदा। श्री भगवान आपणा फड़े आपे पल्ला, पल्लू आपणी गंढु पवाइंदा। अबिनाशी करता वसणहारा निहचल धाम अटला, महल अटल इक्को इक सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर इक वड्याइंदा। सचखण्ड दवारे सोभनीक, हरि सतिगुर बेपरवाहीआ। दूसर ना कोई दिसे शरीक, लाशरीक नूर खुदाईआ। मुकामे हक़ वसणहारा ठीक, परवरदिगार बेपरवाहीआ। ना अन्धेरा ना तारीक, नूरी चन्द नूर रुशनाईआ। आदि जुगादि रहे अतीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड देवे माण वड्याईआ। सचखण्ड देवे हरि जू माण, मेहरवान दया कमाइंदा। धुरदरगाही इक निशान, दाता दानी आप उठाइंदा। वेखणहारा नौजवान, जोबन आपणे रंग रंगाइंदा। आदि जुगादी खेल महान, हरि करता आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दा सच दुआर आप प्रगटा, हरि करतार करता आपणी कार कमाइंदा। सच कार कमाए आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर वड वड्डा वड प्रताप, बेअन्त अन्त कहिण कोए ना पाईआ। निरगुण निरगुण देवे

साथ, सगला संग निभाईआ। निरगुण नईया निरगुण राथ, निरगुण खेवट खेटा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। सचखण्ड वज्जे वधाई आदि, आदि पुरख आप वजाइंदा। धुरदरगाही इक्को नाद, अनादी एका एक जणाइंदा। सदा स्वामी हो विस्माद, बिस्मिल आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा हरि निरँकारा सच सिँघासण इक सुहाइंदा। सच सिँघासण सचखण्ड, सति सतिवादी आप लगाईआ। करे प्रकाश बिन सूरज चन्द, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। गाए गीत बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द, सोहला ढोला इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड देवे माण वड्याईआ। सचखण्ड दवारा दोए जोड़, प्रभ अग्गे सीस निवाईआ। सच प्रीती हरि जू मोर, तेरी इक्को ओट तकाईआ। जुग चौकड़ी रहे लोड़, तेरी आस इक रखाईआ। निरवैर पुरख तेरे हथ्थ डोर, बेपरवाह तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। सचखण्ड दवारा मंगे मंग, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। श्री भगवान वसणा संग, तेरा संग मोहे भाईआ। प्रेम प्रीती चाढ़ रंग, उतर कदे ना जाईआ। आदि जुगादि रहे अनन्द, अनन्द अनन्द विचों प्रगटाईआ। होए प्रकाश तेरा नूर चन्द, साची किरन डगमगाईआ। तेरा खेल कोट ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड तेरे चरण ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। सचखण्ड दवारा हो अधीन, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। पुरख अबिनाशी तेरा मेरा मेला जिउं जल मीन, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। तेरा नूर ठांडा सीन, शाह पातशाह इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सद तेरी वज्जदी रहे वधाईआ। श्री भगवान हो मेहरवान, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। सचखण्ड दुआर दे सच मकान, घर तेरा इक सुहाइंदा। घर विच घर प्रगटाए श्री भगवान, महिमा गणत अगणत जणाइंदा। थिर घर देवणहारा माण, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सुत दुलारा बाल अञ्याण, शब्दी शब्द आप प्रगटाइंदा। तेरे घर वसाए आण, साचा जोड़ा जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड दवारे आप समझाइंदा। सचखण्ड दवारे कर ध्यान, सो साहिब आप जणाईआ। शब्द सुत मेरा बलवान, तेरा संग निभाईआ। घर विच घर होए प्रधान, थिर घर आपणी वंड वंडाईआ। लेखा जाण दो जहान, निरगुण निरगुण निरवैर आपणा भेव चुकाईआ। सूरबीर वड बलवान, बलधारी संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्दी सुत जोड़ जुड़ाईआ। शब्द सुत सच्चा बलकार, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। सचखण्ड तेरा करे प्यार, थिर घर तेरा

रंग वखाइंदा। लेखा जाण आप निरँकार, साची करनी आप कमाइंदा। वेखे विगसे वेखणहार, बेपरवाह पड़दा लाहइंदा। धुर संदेसा देवे इक्को वार, दूजी वार ना कोए सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तेरा महल्ल इक वसाइंदा। तेरा महल्ल वसाए प्रभ, आपणी दया कमाईआ। थिर घर वखाए साची हद्द, शब्दी वंड वंडाईआ। आदि जुगादि वज्जे नद्द, अनरागी आपणा राग अलाईआ। जगत नेत्र कोई ना सके लभ्भ, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची वड्याईआ। देवे वड्याई हो मेहरवान, मेहर नज़र उठाइंदा। सचखण्ड दवारे इक्को दान, दाता दानी झोली पाइंदा। थिर घर होए प्रधान, गुर शब्दी आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार आप समझाइंदा। साची कार जणाए प्रभ एक, एकँकार वड्डी वड्याईआ। निरगुण निरगुण बख्शे टेक, बेपरवाह बेपरवाहीआ। शब्दी सुत धारे भेख, विष्न ब्रह्मा शिव वंड वंडाईआ। त्रैगुण माया लिख्या लेख, पंज तत करे कुड़माईआ। लख चुरासी तेरी भेंट, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड वंडाईआ। जुग चौकड़ी खेले खेड, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाईआ। शब्द अगम्मी तेरा नाउँ भेज, परा पसन्ती मद्धम बैखरी चारे बाणी राग अलाईआ। पंज तत हंढाए अगम्मी सेज, आत्म परमात्म वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग आप रंगाईआ। सचखण्ड दवारे रंग अमोला, सो साहिब आप चढ़ाईआ। निरगुण हो के सरगुण बदले चोला, लोकमात वेस वटाईआ। अगम्म अथाह बेपरवाह बोध अगाधा बोले ढोला, नाउँ निरँकारा इक प्रगटाईआ। आत्म परमात्म बण विचोला, धुर दी सेव आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सचा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि खेल कराउणा, सचखण्ड दवारे आप सुणाईआ। लख चुरासी नाता जोड़ जुड़ाउणा, घर घर आपणा बंक सुहाईआ। नौ दुआर जगत बन्धन पाउणा, आसा तृष्ना हउमे हंगता माया ममता मेल मिलाईआ। घर विच घर आप वडयाउणा, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। टेडी बंक राह वखाउणा, ईड़ा पिंगल सेवादार दर साचे आपे जणाईआ। अमृत सरोवर इक भराउणा, काया मन्दिर आप टिकाउणा, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। दीआ बाती डगमगाउणा, जोत निरँजण नूर रुशनाउणा, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। बजर कपाटी पड़दा लौहणा, साची हाटी दिशा वखाउणा, नाम भण्डार इक जणाईआ। आत्म सेजा सोया हलाउणा, शब्द अनादी ढोला गाउणा, अनहद रागी राग अलाईआ। घर विच घर आप बणाउणा, सचखण्ड दवारे तेरा माण वधौणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। सचखण्ड दवारे तेरा माण रखावांगा। लोकमात वेस वटवांगा। निरगुण सरगुण हो के जावांगा। गुरु गुर गुरदेव आप अखवावांगा। पंज

तत चोला आप हंढावांगा। पड़दा ओहला सर्ब तजावांगा। साचा ढोला इक्को सुणावांगा। बण विचोला लख चुरासी विच्चों भगत सच्चा उठावांगा। धुर दा बोला इक्को राग अनमोला आप सुणावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड दवारा काया बंक आप वडयावांगा। सचखण्ड दुआर प्रभू बणाएगा। जिस घर अन्दर आपणा डेरा लाएगा। निरगुण नूर डगमगाएगा। शब्दी नाद धुन सुणाएगा। तेरा मेरा भेव चुकाएगा। साचा खेड़ा इक वसाएगा। पंचम झेड़ा रहिण कोए ना पाएगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर डेरा, घर घर आप लगाएगा। निरगुण हो के पावे फेरा, सरगुण आपणा भेव जणाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड दुआर इक्को इक वडयाएगा। सचखण्ड दवारे तेरा रूप, सो साहिब सच जणाईआ। नज़र ना आए चारे कूट, दहि दिशा वेखण कोए ना पाईआ। शब्दी धार सति सरूप, गुर इक्को एक एक वड्याईआ। वेस वटाए शाहो भूप, अक्ल कलधारी फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे तेरा घर आप वसाए नरायण नर, नर हरि आपणी दया कमाईआ। सचखण्ड दवारे तेरी धार, आदि पुरख आप प्रगटाईआ। लोकमात करे उज्यार, निरगुण निरवैर सच्चा शहिनशाहीआ। माण देवे तेई अवतार, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। घर दीआ बाती कर उज्यार, कमलापाती वेख वखाईआ। शब्द अनाद सच्ची धुनकार, धुन आत्मक राग अलाईआ। साची सखीआं मंगलाचार, गीत गोबिन्द अलाईआ। धुर दा मेला धुर दी कार, गुर चेला वेख वखाईआ। सज्जण सुहेला एकँकार, साचा संग निभाईआ। जिस घर जिस मन्दिर जिस गृह वसे आप करतार, सो सचखण्ड वखाईआ। सूरज चन्न करन निमस्कार, विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। सचखण्ड दवारे तेरा मेल भगत, हरि भगवन दया कमाइंदा। जिन्हां लेखे लाए बूँद रक्त, रती रत वेख वखाइंदा। श्री भगवान निरगुण हो के आत्म सेजा आए परत, प्रतिनिध हो के डेरा लाइंदा। बैठा रहे सदा नधड़क, भय भउ ना कोए जणाइंदा। अद्धविचकार ना जाए अटक, साचे मन्दिर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि मन्दिर तेरा नाउँ वड्याइंदा। हरिमन्दिर तेरा नाउँ अनडीठ, दिस किसे ना आइंदा। अबिनाशी करता तेरे अन्दर सुत्ता दे कर पीठ, बिन भगतां करवट ना कोए बदलाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी करे कराए साचा हित, हितकारी आपणी दया कमाइंदा। पुरख अकाल दीन दयाल सर्ब स्वामी बणे पित, पतिपरमेश्वर आपणा भेव खुलाइंदा। सन्त सुहेला लख चुरासी जाए जित, जीवण जुगत सतिगुर झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर सच पसारा, दीआ दीपक इक उज्यारा, अमृत धारा ठंडा रस वखाइंदा। सचखण्ड

दवारा मुकामे हक़, हकीकत हरि जणाईआ। पीर पैगम्बर राह रहे तक्क, निज नेत्र ध्यान लगाईआ। मार्ग मार्ग चलदे चलदे गए थक्क, पौड़ी पौड़ा पन्ध ना कोए मुकाईआ। साहिब सरनाई गए ढट्ठ, दोए जोड़ नेत्र नैणां नीर वहाईआ। साचा हुजरा हक़ महिबूब इक्को दस्स, महिराब दूजी नज़र कोए ना आईआ। जिस काअबे हज़रत रिहा वस, हज़ूर आपणा डेरा लाईआ। बेनज़ीर निरगुण नूर करे प्रकाश, जोती जलवा इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा इक्को इक जणाईआ। सचखण्ड दवारा दस्तगीर, सो साहिब आप बणाईआ। जिस गृह वसे साचा पीर, शाह पातशाह सचा शहिनशाहीआ। कटणहारा शरअ ज़ंजीर, लाशरीक नूर खुदाईआ। बदलणहार तकदीर, तदबीर आपणी दए समझाईआ। दो जहानां चौदां तबकां कटणहारा भीड़, औखा पन्ध ना कोए वखाईआ। खण्डा तीर नाम शमशीर, भथ्था इक्को नूर चमकाईआ। चोटी चढ़ के बैठा अख़ीर, आख़र आपणा नूर धराईआ। मुकामे हक़ ना हो दिलगीर, दिलबर इक्को बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुजरा इक्को इक सुहाईआ। साचा हुजरा सुहाए महिबूब, ईसा मूसा मुहम्मद भेव चुकाइंदा। शाह सुल्ताना उच्च अरूज, अर्श फर्श वेख वखाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी रहे महिफ़ूज़, मजलस आपणे घर लगाइंदा। किसे नज़र ना आए हदूद, पार किनारा भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे तेरी देवे साची सूझ, सुजान पुरख दया कमाइंदा। सचखण्ड दवारे तेरा दवारा, पुरख अकाल दए वड्याईआ। साढे तिन्न हथ्थ कर प्यारा, पंज तत वज्जे वधाईआ। निरगुण नूर कर उज्यारा, निरँकार खुशी मनाईआ। नानक नानक नानक तत कर प्यारा, परम पुरख वेख वखाईआ। सो मन्दिर सोहया ठाकर दवारा, जिस घर हरिजू डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड इक्को रंग वखाईआ। सचखण्ड रंग वेख अनोखा, घर साचे आप रंगाईआ। परम पुरख ना देवे धोखा, गुर गुर आपणा भेव खुल्हाईआ। जन भगतां बख्शे साची ओटा, ओट इक अकाल वड्याईआ। शब्द नगारे लाए चोटां, अनाद अनादी नाद सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दवारे सोभा पाईआ। सचखण्ड दुआर नानक धार, पुरख अकाल आप प्रगटाईआ। दीआ बाती जगे अगम्म अपार, दिवस रैण होए रुशनाईआ। अमृत भरया ठंडा ठार, सर सरोवर इक्को सोभा पाईआ,। अनहद नाद सच्ची धुनकार, शब्द अनादी गीत अलाईआ। घर मन्दिर सोहया बंक दुआर, गृह वज्जी नाम वधाईआ। पुरख अकाल वेखणहार, प्रभ वेखे चाईं चाईंआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी करदा रिहा प्यार, गुर अवतार पीर पैगम्बर सच दवारे आपणा डेरा लाईआ। बंद ताकी खोल्ह कवाड़, दर दरवाज़ा इक समझाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा दए जणाईआ। साचा लेखा पुरख अबिनाश, एका एक जणाईआ। जुग चौकड़ी खेल तमाश, हरि करता आप कराईआ। निरगुण सरगुण हो के दास, बण दास सेव कमाईआ। जन भगतां पूरी कर कर आस, सन्तां तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। गुरमुखां देवणहारा दात, नाम अमोलक झोली पाईआ। गुरसिखां चरण प्रीती बन्ने नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर पुच्छे वात, दिवस रैण वेख वखाईआ। काया भँवरी डूंघी कवरी वेखे मारे झात, पड़दा उहला आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे तेरा नाउँ, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाईआ। सचखण्ड दुआर नाउँ अमोला, हरि अमुलड़ी कार कमाइंदा। जिस घर वसे साहिब सच तोला, दो जहानां तोल तुलाइंदा। आदि जुगादि रहे अडोला, जुग चौकड़ी ना कोए डुलाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां आपणा नाम दस्सदा रहे ढोला, सोहला साचा राग सुणाइंदा। नित नवित्त बदलदा रहे काया चोला, निरगुण सरगुण आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम लेखा आप लिखाइंदा। अन्तिम लेखा सचखण्ड दुआर, प्रभ तेरा आप जणाईआ। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, नव नौ चार पन्ध मुकाईआ। सेवा कर कर जाण गुर अवतार, पीर पैगम्बर कार कमाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण करन पुकार, गीता ज्ञान कूक सुणाईआ। अञ्जील कुराना हाहाकार, खाणी बाणी भेव खुल्लाईआ। कलयुग अन्तिम चारों कुण्ट होए अँध्यार, कूड़ी क्रिया अन्धेरा छाईआ। साचा मिले ना कोई मीत मुरार, सज्जण नज़र कोए ना आईआ। अठ्ठ सठ्ठ तीर्थ होण ख्वार, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती दुआरे मारे धाहींआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ हाहाकार, हरि का नाउँ हिरदे ना कोए वसाईआ। कलयुग जीव कूड़ी क्रिया करन विहार, सच सुच ना कोए वड्याईआ। गुर का शब्द ना कोए प्यार, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। दीन मज़्ह्ब रोवे ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा लेखे सब दा पाईआ। सचखण्ड दवारे सुण ला कन्न, सो साहिब आप जणाईआ। कलयुग अन्तिम लख चुरासी कोलों खुस्से नाम धन, साचा वणज ना कोए वखाईआ। अबिनाशी करता कूड़ी क्रिया देवे डंन, डंका इक्को नाम वजाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आदि जुगादी शब्द अनादी निरगुण दाता पुरख बिधाता इक चढ़ाए अगम्मी चन्द, चन्द चांदना नूर चमकाईआ। दो जहान श्री भगवान बेड़ा देवे बन्नू, नईया नौका आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड तेरा पड़दा दए उठाईआ। सचखण्ड तेरा पड़दा लौहणा, सो साहिब सच जणाइंदा। गोबिन्द मेला मेल मिलाउणा, मिल्या मेल ना कोए मिटाइंदा। निरगुण निरगुण ढोला गाउणा, गीत गोबिन्द

अलाइंदा। साचा मन्दिर इक वसाउणा, सम्बल इक्को घर वखाइंदा। छप्पर छन्न ना कोए छुहाउणा, सूरज चन्द ना कोए चमकाइंदा। मण्डल मण्डप नज़र ना आउणा, ब्रह्मण्ड खण्ड वंड ना कोए वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साचा इक वसाइंदा। साचा घर वसे सच दुआर, कलयुग अन्त आप वसाईआ। प्रगट हो हरि करतार, करता खेल करे बेपरवाहीआ। सम्बल वेख धाम न्यार, महल अटल करे रुशनाईआ। घर ठांडा सोहे दरबार, धुर दी धार आप जणाईआ। मजलस करे परवरदिगार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड इक्को इक वड्याईआ। सचखण्ड मात सुहाउणा अन्त, अन्तष्करन सर्ब वेख वखाईआ। प्रगट हो श्री भगवन्त, भगवन आपणी धार चलाईआ। लेखा जाण लख चुरासी जीव जंत, चारे खाणी फोल फोलाईआ। घट घट वेखे मणीआ मंत, मन वासना जगत खोजणहार लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड तेरा दवारा इक्को इक दरसाईआ। सचखण्ड तेरा दुआर सुहाउणा, कलयुग अन्त वज्जे वधाईआ। पुरख अबिनाशी डेरा लाउणा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। रूप रंग कोई नज़र ना आउणा, ज़ात पात ना वंड वंडाईआ। पंज तत ना कोए हंढ्ढाउणा, त्रैगुण ना कोए कुड़माईआ। धुर दा नाद इक वजाउणा, रागी राग सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव उठाउणा, सोया कोए रहिण ना पाईआ। गुर अवतार दर बलाउणा, घर साचे खुशी मनाईआ। पीर पैगम्बर भेव चुकाउणा, पड़दा उहला आप उठाईआ। साचा मौला नज़री आउणा, निरगुण नूर नूर इलाहीआ। पिछला लेखा सब दी झोली पाउणा, बाकी कोई नज़र ना आईआ। साचा मार्ग इक समझाउणा, चार युग दा लेखा अन्त कराईआ। वरन बरन दा डेरा ढौहणा, ढाह ढाह ख़ाक मिलाईआ। पुरख अकाल इष्ट देव सर्ब मनाउणा, आत्म परमात्म गंढु पवाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म इक हंढ्ढाउणा, दूजी नार नज़र कोए ना आईआ। सतिजुग साचा राह चलाउणा, सति सतिवादी खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे इक्को इक वड्याईआ। सचखण्ड दवारे इक्को नाता, भगत भगवान जोड़ जुड़ाइंदा। सचखण्ड दवारे इक्को गाथा, आत्म परमात्म आप पढ़ाइंदा। सचखण्ड दवारे इक्को दाता, सो साहिब दया कमाइंदा। सचखण्ड दवारे इक्को राखा, लख चुरासी वेख वखाइंदा। सचखण्ड दवारे इक्को साका, हरि सुहञ्जणा नज़री आइंदा। सचखण्ड दवारे इक्को बाटा, प्रेम प्याला नाम वखाइंदा। सचखण्ड दवारे इक्को आका, शहिनशाह आपणा हुक्म मनाइंदा। सचखण्ड दवारे इक्को खाटा, सेज सुहञ्जणी इक वड्याइंदा। सचखण्ड दवारे इक्को कमलापाता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड दवारे तेरा राह, निरगुण निरवैर बण मलाह, लोकमात आप समझाइंदा। सचखण्ड दवारे इक्को रंग, सो साहिब आप

रंगाईआ। सचखण्ड दवारे इक्को मंग, मांगत मंगे नाम बेपरवाहीआ। सचखण्ड दवारे इक मृदंग, हरि मृदंगा आप वजाईआ। सचखण्ड दवारे इक्को छन्द, सोहँ ढोला राग अलाईआ। सचखण्ड दवारे नाम चण्ड प्रचण्ड, तेज धार धार प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग चन्द नूर रुशनाईआ। सचखण्ड तेरा सतिजुग मीत, मित्र प्यारा नज़री आईआ। चार वरन इक्को रीत, खत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। काया मन्दिर अन्दर ठाकर शिवदुआला मसीत, गुरुदुआर इक्को नज़री आईआ। पुरख अकाल बैठा सदा अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। मन वासना कूड़ी क्रिया लए जीत, बुध विवेकी रूप वटाईआ। काया चोला करे ठंडा सीत, अमृत धार मेघ बरसाईआ। सच बंधाए हरि चरण कँवल प्रीत, नाता इक्को इक जुड़ाईआ। लेखा जाणे हस्त कीट, ऊँचां नीचां एका घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे वसे बेपरवाहीआ। सचखण्ड दवारे तेरा सोहणा बंक, बंक दवारी आप बणाइंदा। मिले वड्याई राउ रंक, राज राजान वंड ना कोए वंडाइंदा। इक्को नाम इक्को ढोला इक्को छन्द इक्को संख, नाद राग इक अलाइंदा। इक्को साहिब इक्को पुरख इक्को नार इक्को कन्त, इक्को सेज सुहञ्जणी सोभा पाइंदा। इक्को भूशन इक्को वस्त्र इक्को चाढ़े रंग बसन्त, इक्को नेत्र वेख वखाइंदा। इक्को दर इक्को दरवेश इक्को होवे मंगत, भिखारी दातारी इक्को नज़री आइंदा। इक्को माण इक्को ताण, इक्को साहिब श्री भगवान, इक्को शब्द नाम निशान, इक्को दो जहान वखाइंदा। इक्को सचखण्ड मकान, दीवा जोती जगे महान, इक्को मन्दिर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारे सच पसारा, जन भगत जणाए भगत दवारा, भगवन इक्को इक नज़री आइंदा। सचखण्ड दुआर भगत प्यार, हरि भगवन आप जणाईआ। कलयुग अन्त हो तैयार, त्रैभवन धनी समझाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, पुरख अकाल इक अख्वाईआ। आत्म परमात्म वेखो मार ध्यान, दूई द्वैती पड़दा रिहा हटाईआ। बोध अगाधा हरि जू पंडत देवे इक ज्ञान, निष्अक्खर अक्खर नाल पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। लेखा जाणे थान थनंतर, कलयुग अन्तिम वेख वखाइंदा। नौं खण्ड पृथमी सत्त दीप माया ममता लग्गी कूड़ी बसन्तर, बिन सतिगुर पूरे ना कोए बुझाइंदा। चार वरन अठारां बरन रसना जिह्वा गाए गायत्री मन्त्र, आत्म परमात्म गंढु ना कोए पवाइंदा। परम पुरख प्रभ सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, घट घट आपणा डेरा लाइंदा। वेखणहार गगन गगनंतर, काया भीतर खोज खुजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड दवारा इक्को सोभा पाइंदा। सचखण्ड दवारे हरि जू वड़या, निरगुण नूर नूर धराईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत चढ़या, चोटी नज़र

किसे ना आईआ। निरवैर हो के ढोला पढ़या, भगत भगवान रिहा समझाईआ। आत्म परमात्म लड़ इक्को फड़या, दूजी पल्लू गंढु कोए ना पाईआ। करे खेल नरायण नरया, नर हरि आपणी धार समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग साचा चन्द सचखण्ड वासी आप चमकाईआ । सचखण्ड दवारे उपजे साचा नूर, साढे तिन्न हथ्थ मिले वड्याईआ। प्रगट होए सर्ब कला भरपूर, हरि भरपूरी फेरा पाईआ। नेरन नेरा आए जो वसणहारा दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जो बणया रिहा मफ़रूर, लभ्भदयां हथ्थ किसे ना आईआ । कलयुग अन्त श्री भगवन्त करे खेल हाज़र हज़ूर, हज़रत आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे इक वर, सच दुआरा घर घर दए वखाईआ। घर घर सतिगुर दया कमा, मेहर नज़र उठाईआ। भगत भगवन्त लए जगा, जागरत जोत कर रुशनाईआ। धुर दा नाद दए सुणा, अनादी नाद वजाईआ। आत्म पड़दा देवे लाह, परम पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा रंग वखाईआ। सतिजुग साचा रंग वखाउणा, सो साहिब खेल कराईआ। चार वरन रंग इक चढ़ाउणा, उतर कदे ना जाईआ। ज़ात पात दा पन्ध मुकाउणा, दीन मज़्हब ना कोए लड़ाईआ। धुर दा राग इक सुणाउणा, इक्को ढोला गाईआ। ग़रीब निवाज़ नज़री आउणा, ग़रीब निमाणयां होए सहाईआ। जन्म कर्म दा पाप धवाउणा, दुरमति मैल मिटाईआ। हरिजन फड़ के हँस काग बणाउणा, कागों हँस वखाईआ। दीपक दीआ जोत चिराग जगाउणा, जोत निरँजण नूर रुशनाईआ। साचा मजन इक कराउणा, सर सरोवर इक सुहाईआ। आदि पुरख अपरम्पर स्वामी आपणा मेल मिलाउणा, मिल्या मेल विछड़ ना जाईआ। सच सुअम्बर इक रचाउणा, सुरती शब्द करे कुड़माईआ। साची डोली आप बहाउणा, बणे कहार बेपरवाहीआ। गुरमुख साचा संग रखाउणा, सगला संग आप हो जाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, अन्तिम लेखा लेखे लाईआ। अन्तिम लेखा लाए मात, श्री भगवान दया कमाईआ। जन भगतां मेट अन्धेरी रात, सतिजुग साचा नूर दरसाईआ। अन्दर वड़ सुणाए गाथ, बाहरों करे ना कोए पढ़ाईआ । बजर कपाटी जाए पाट, साख्यात इक्को नज़री आईआ। दिवस रैण रहे ना कोई प्रभात, घड़ी पल ना वंड वंडाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी वसे साथ, साहिब सतिगुर संग निभाईआ। सतिजुग साची इक जमात, चार वरन रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा सच पसारा, सो साहिब वेख वखाईआ। सचखण्ड दुआरा भगतां अन्दर, हरि हरिजू आप बणाईआ । सच सुहञ्जणा सोहे मन्दिर, पुरख अबिनाशी डेरा लाईआ। गढ़ हँकारी तुट्टे जन्दर, त्रै त्रै नाता

४६
१५

रहिण ना पाईआ। मन वासना ना कोई बन्दर, तृष्ना जगत ना कोए वखाईआ। ना कोई प्रकाश सूर्या चन्द्र, चन्द चांदनी ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक सुहाए सच्चा मन्दिर, जिस घर आपणा नूर धराईआ। भगवान कहे भगत तेरा दुआरा, आदि जुगादि मोहे सद भाईआ। कलयुग अन्तिम लग्गे प्यारा, परम पुरख खुशी मनाईआ। जिस दे अन्तर इक्को धारा, दूजी धार ना कोए प्रगटाईआ। आत्मा बोले परमात्म नाअरा, ब्रह्म पारब्रह्म मंग मंगाईआ। सोहँ रूप आप निरँकारा, निरगुण सरगुण खेल खिलाईआ। सचखण्ड दा खोल्ह कवाड़ा, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। पुरख अकाल सर्ब दा लाड़ा, लख चुरासी नार कन्त भगवन्त आप प्रनाईआ। लेखा जाणे धुर दरबारा, धुर दा लेखा वेख वखाईआ। कलयुग मेटे कूड़ पसारा, कूड़ क्रिया दए खपाईआ। सर्ब जीआं दा इक्को इष्ट गुरदेव स्वामी प्रीतम प्यारा, परम पुरख परमात्म नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सच दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा, इक्को इक खुल्हाईआ। सच दरवाज़ा खोल्हे आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सर्ब जीआं दा इक्को जाप, जगजीवण दाता रिहा समझाईआ। लख चुरासी इक्को नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। आत्म परमात्म सच्चा पाठ, पूजा हवन आप समझाईआ। तट किनारा दस्से घाट, पत्तण बैठा सच्चा माहीआ। कलयुग अन्तिम मुक्के वाट, बीस बीसा खुशी मनाईआ। सदी चौधवीं मुक्के रात, चौदां तबक रहे जस गाईआ। चौदां लोक वेखण खोल्ह ताक, नेत्र नैण ध्यान लगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रख के बैठे आस, ओट इक्को इक तकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लेखा लिख गए लिखास, कातब बण बण कलम छाहीआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होवे परम पुरख अबिनाश, उच्चे टिल्ले पर्बत ब्रह्मण गौड़ा पूत सपूता आपणा डेरा लाईआ। ईसा कहे मेरा पिता मैनूं देवे शाबाश, रहबर बण के आवे वाहो दाहीआ। मुहम्मद कहे मैं उस दी साख, जो अमाम आपणे रंग समाईआ। अन्तिम देवे मेरा साथ, निरगुण हो के वेस वटाईआ। सतिगुर नानक कह के गया निहकलंक खेल तमाश, निरगुण आपणी धार चलाईआ। गोबिन्द लिख्या पुरख अकाल आवे ख़ास, कल कल्की फेरा पाईआ। जुग चौकड़ी पूरी करे आस, सम्बल आपणा धाम सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, भगत सुहेले सज्जण वर, गुर चेले आपणा भेव खुल्हाईआ।

✪ २७ हाढ़ २०२० बिक्रमी सुरजीत सिँघ दे गृह पिण्ड घड़ूआं ज़िला अम्बाला ✪

माणस मानुख उत्तम ज़ात, मनुष मिले वड्याईआ। गुर सतिगुर साहिब देवणहार दात, नाम अमोलक झोली पाईआ।

पारब्रह्म ब्रह्म बंधावणहारा साचा नात, नाता चरण कँवल जुड़ाईआ। आत्म परमात्म सुणावणहारा गाथ, साचा सोहला राग अलाईआ। लहिणा देणा पूरब चुकावे मस्तक माथ, भरम भुलेखा दूर कराईआ। होए सहाई अनाथां नाथ, दीनन दया आप कमाईआ। अन्तर आत्म मेट अन्धेरी रात, सच प्रकाश इक प्रगटाईआ। जन्म जन्म दी पूरी करे आस, आसा तृष्ना दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवणहार वड्याईआ। देवे वड्याई सतिगुर मीत, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। सन्त सुहेले परख नीत, नीतीवान वेख वखाइंदा। नाम जैकारा इक्को गीत, राग अनादी आप सुणाइंदा। पंज तत विकारा ठांडा सीत, अग्नी अग्ग ना कोए लगाइंदा। मन वासना लए जीत, मति बुध भेव चुकाइंदा। नज़री आए इक अतीत, त्रैभवन धनी सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन इक प्रीत लगाइंदा। हरिजन प्रीती सतिगुर चरण, चरण कँवल सरनाईआ। मिले वड्याई उपर धवल, धरनी धरत ख़ुशी मनाईआ। उलटा करे ऊँधा कँवल, घर अमृत झिरना आप झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। उलटे कँवल अमृत रस, रस रसीआ आप चखाइंदा। सुरत सवाणी होए वस, गुर शब्दी बन्धन पाइंदा। आत्म परमात्म मेल मिलावा नस्स नस्स, हरि पांधी आपणा पन्ध मुकाइंदा। सति सतिवादी मार्ग इक्को दस्स, साचा राह आप समझाइंदा। लेखा जाण तत अट्ठ, त्रै पंज पड़दा आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे भेव खुल्हाइंदा। हरिजन खोल्हे भेव आप भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। जुग चौकड़ी कर परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाईआ। शब्दी शब्द दे ज्ञान, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। सति धर्म दा इक निशान, घर साचे आप प्रगटाईआ। लेखा चुक्के दो जहान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए आपणा दर, तिस मन्दिर इक्को नज़री आईआ। गुरमुख मन्दिर सदा एक, एकँकार नज़री आइंदा। पुरख अकाल साची टेक, दूजा इष्ट ना कोए मनाइंदा। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अग्नी तत ना कोए वखाइंदा। काया मन्दिर साचे पौड़े चढ़ के दस्से भेत, अनभव आपणा खेल समझाइंदा। सुरती शब्दी साचा हेत, साची बन्दना बंदगी इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लिखणहार अगम्मी लेख, लिख्या लेख आपणे हथ्थ वखाइंदा। गुरमुख लेखा सतिगुर हथ्थ, हरि देवणहार वड्याईआ। जुग चौकड़ी चला रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मार्ग दस्स, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान करी पढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रगट, आपणा मन्त्र नाम समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरे वस, दूजा राह ना कोए चलाईआ। सोहँ शब्द धार अनरस, अनडिठड़ी कार कमाईआ।

आत्म परमात्म इक दुआरे होए इकट्ठ, गुरसिख गुर गुर रूप समाईआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत्त, ब्रह्म मति इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन देवे नाम दान, तिस जन एथे ओथे तत्ती वा ना लागे राईआ।

✪ २७ हाढ़ २०२० बिक्रमी बीबी सुखवन्त कौर दे गृह लुधियाणा ✪

श्री भगवान कदे ना रुस्सया, रोसा जगत ना कोए रखाईआ। जुग चौकड़ी जन भगतां आ के पुच्छया, निरगुण सरगुण बूझ बुझाईआ। जन्म जन्म दे मिटावणहारा ग़ुस्सया, गहर गम्भीर सहिज सुखदाईआ। लख चुरासी विचों गुरमुख कढ्ढे लुक्या, फड़ बांहों मेल मिलाईआ। काया चोली रंग सुहाए साची रुत्तया, रूप बसन्ती इक वखाईआ। दरगाह साची जो जन फिरे घुस्सया, तिस मार्ग पन्थ आप वखाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर फिरे भुख्या, वड दाता वाहो दाहीआ। सन्त सुहेला साहिब सतिगुर गोदी चुक्कया, दो जहान हुलारा इक वखाईआ। दीन दयाल ठाकर स्वामी परम पुरख परमात्म एका उठया, आत्म अन्तर जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, श्री भगवान होए सदा सहाईआ। श्री भगवान ना कोई रोसा, मेहरवान दया कमाईआ। जुग चौकड़ी जन भगतां आपणे मिलण दा देवे मौका, लख चुरासी गूढ़ी नींद सुआईआ। शब्द अनाद अगम्म अथाह देवे होका, दो जहानां इक्को कूक सुणाईआ। सन्त साजण मिलण दा सदा रखे शौका, शाह पातशाह आपणा वेस धराईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल दीना बंधप नित नवित्त कदे ना करे धोखा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सरन इक जणाईआ। आदि जुगादि ना रुस्से गोपाल, गोबिन्द आपणी दया कमाइंदा। भगत भगवन्त रखे नाल, नित नवित्त संग निभाइंदा। नाता तोड़ कूड़ा जंजाल, जागरत जोत इक रुशनाइंदा। काया मन्दिर सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा इक वखाइंदा। निर्मल दीआ दीपक जोती बाल, अंज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। अमृत आत्म जाम प्याल, सांतक सति सति वरताइंदा। लेखा जाण शाह कंगाल, ऊँच नीच भेव चुकाइंदा। शब्द सरूपी बण दलाल, गुर सतिगुर सेव कमाइंदा। लेखा जाणे हक़ हलाल, हकीकत आपणे हत्थ वखाइंदा। देवणहार सच्चा धन माल, नाम निधाना झोली पाइंदा। गुरमुख वेखे बाल अञ्याण, जगत दुखड़ा आप मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान प्रभ मेहर नज़र उठाइंदा। श्री भगवान रुस्से ना जग, बेपरवाह खेल खिलाइंदा। जन भगतां दर्शन देवे उपर शाह रग, कूड़ी क्रिया नाता तोड़ तुड़ाइंदा। जन्म कर्म दी मेटे अग्ग, अमृत मेघ इक बरसाइंदा। सच

दुआर वखाए हद्द, धर्म दवारा इक्को नज़री आइंदा। शब्द अनाद वज्जे अनहद, धुन आत्मक राग अलाइंदा। प्रेम प्यार प्याए मद, रस इक्को इक चखाइंदा। लख चुरासी विचों कढ्ढ, हरिजन आपणा मेल मिलाइंदा। लेखे लाए काया माटी हड्ड, अन्तर आत्म बूझ बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणा रंग वखाइंदा। साहिब सतिगुर रुस्से ना मीत, मित्र प्यारा दया कमाईआ। जुग चौकड़ी साची रीत, लोकमात आप वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जणाए ढोला गीत, अनरागी आपणा राग सुणाईआ। लेखा जाण मन्दिर मसीत, शिवदुआले मट्ठ खोज खुजाईआ। बैठा रहे सदा अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। लख चुरासी परखणहारा नीत, घट घट आपणा भेव खुल्हाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत देवे नाम अनडीठ, वस्त अमोलक झोली पाईआ। चरण प्रीती परम पुरख दी प्रीत, पारब्रह्म ब्रह्म आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। कदे ना रुस्से हरि गोबिन्द, गुर गहर गम्भीर अख्वाइंदा। अमृत धार वहाए सागर सिन्ध, हरिजन साचे एका रस चखाइंदा । सन्त सुहेले आपणी बिंद, सुत अनादी नाउँ धराइंदा। वेखणहारा जीउ पिण्ड, काया मन्दिर खोज खुजाइंदा। दीन दयाल हो बख्शिंद, बख्शिश आपणी आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा सदा सद सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। कदे ना रुस्से श्री भगवन्त, भगवन आपणी दया कमाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी खेल अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। हरिजन वेखे आपणे सन्त, सतिगुर साजण मेल मिलाईआ। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। बोध अगाधा इक्को पंडत, परम पुरख परमेश्वर करे पढ़ाईआ । गुरमुख मेला गुर गुर संगत, हरिसंगत आपणा रूप वखाईआ। लेखा चुके जेरज अण्डज, उत्भुज सेतज इक्को घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा लेखे लाईआ। हरि ना रुस्सया आदि जुगादि, रुस्सयां लए मनाईआ। वेखणहार कोट ब्रह्माद, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी धार चलाईआ। लेखे लाए सन्त साध, श्री भगवन्त दया कमाईआ। लख चुरासी विचों लाध, भेव अभेद खुल्हाईआ। आत्म परमात्म कर विस्माद, बिस्मिल आपणा रंग रंगाईआ। अनरस देवे इक स्वाद, रसना जिह्वा सार ना पाईआ। सति पुरख निरँजण धर्म दवारे करे लाड, पिता पूत गोद उठाईआ। निरगुण सरगुण कदे ना भुल्ले याद, याद आपणे विच छुपाईआ। जो जन सरनाई गया लाग, तिस देवणहार वड्याईआ। एथे ओथे रखे लाज, मेहर नज़र आप उठाईआ। जन भगतां पूरन करे काज, करनी करता आप कमाईआ। मेटणहारा वाद विवाद, विख अमृत रूप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक पढ़ाईआ। जगत नाल रुस्से भगवान, जन भगतां आपणी दया

कमाइंदा। लख चुरासी करे वैरान, जो घड़या भन्न वखाइंदा। जून अजूनी खेल महान, जीव जंत आप भवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जिन्हां नाल रुस्से तिन्हां मुख ना कदे वखाइंदा।

✪ २७ हाढ़ २०२० बिक्रमी निरँजण सिँघ दे गृह लुधियाणा ✪

पूरब जन्म लहिणा चुक्कया सूकर, सुरती सुध्ध कराईआ। अग्गे मेल मिले अकाल मूर्त, नूर इक्को करे रुशनाईआ। मानस जन्म बदली सूरत, देवणहार वड्याईआ। गुरमुख बणौण दी सच महूरत, श्री भगवान आप समझाईआ। पहला नाता तुटा कूड़ो कूड़त, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। चतुर सुघड़ बणे मूर्ख मूढ़त, मूर्ख मूढ़े आपणे धंदे लाईआ। नूर ज़हूर बख्शे इक्को नूरत, नर नरायण भेव चुकाईआ। आसा मनसा मनसा आसा पूरत, पूरी इच्छया आप कराईआ। काया चोली चाढ़े रंग गूढ़त, रंगण इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। पिछला लहिणा चुक्कया चुके पाप, पतित पापी आप तराइंदा। परम पुरख परमेश्वर बण के सज्जण साक, भगत वछल दया कमाइंदा। चरण प्रीत बंधाए नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। बंद कवाड़ी खोल्ह ताक, अन्तर आत्म कुण्डा लाहइंदा। दुरमति मैल दर ते काट, स्वच्छ सरूपी रूप वटाइंदा। आत्म सेज सुहञ्जणी खाट, सोभावन्त आप सुहाइंदा। पूरब जन्म मुक्की वाट, अगला जन्म कर्म आपणे लेखे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाइंदा। मेहर नज़र करे मेहरवान, दीन दयाल बेपरवाहीआ। जन्म विचों जन्म देवे दान, कर्म विचों कर्म दए बदलाईआ। बरन विचों बरन करे परवान, सरन विचों सरन मिले सरनाईआ। लेखा जाण जीव जहान, जीवण जुगत आप समझाईआ। सच मन्त्र धुर फ़रमान, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। जगत विद्या होए हैरान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पतित पापी आपणे लेखे पाईआ। गुरमुख रहे ना कोई पाप, परम पुरख प्रभ दया कमाइंदा। जिन्हां साहिब सतिगुर मिल्या आप, आपणे रंग रंगाइंदा। त्रैगुण माया मेटे तीनों ताप, त्रै काल दरसी आपणा कर्म कमाइंदा। आत्म परमात्म देवे साचा जाप, सोहँ मन्त्र इक पढ़ाइंदा। रूह बुत्त दोवें पाक, पाकीज़ा आपणा गृह वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पहला लेखा करे पाक, अग्गे झोली नाम भराइंदा। अग्गे झोली नाम भरपूर, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। दरस दिखाए हाज़र हज़ूर, हज़रत आपणा वेस वटाईआ। जन्म कर्म पूरब बख्शणहार कसूर, कूड़ी क्रिया नाता दए तुड़ाईआ। मस्तक टिक्का लाए नूरी धूढ़, चमक नूर इक्को इक रुशनाईआ। जन्म ना रिहा पिछला सूर, जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मानुख मानुष मनुष आपणे रंग रंगाईआ। मनुष रंग अनमोला, मानुख आपणी धार जणाइंदा। माणस बण विचोला, मेहरवान साचा संग रखाइंदा। वेखणहारा काया चोला, साढे तिन्न हथ्थ बंक फोल फुलाइंदा। भेव चुकाए पड़दा उहला, दूई द्वैती मेट मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म अन्तर आपे माणा, मालक आपणा घर वखाइंदा।

✪ २७ हाढ़ २०२० बिक्रमी लाल सिँघ दे गृह पिण्ड डल्लेवाल ज़िला जलन्धर ✪

नव नौ चार दे संदेसा, नित नवित्त आपणी धार चलाइंदा। जुग चौकड़ी धरे भेसा, नर हरि नरायण वेस वटाइंदा। निरगुण सरगुण खेले खेडा, दो जहानां नाच नचाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां देवे भेता, भेव अभेद आप समझाइंदा। लख चुरासी जानणहारा रेखा, घट घट अन्दर आपणा डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। नव नौ चार खेल अपार, हरि करता आप कराईआ। निरगुण सरगुण लै अवतार, अक्ल कल आपणा वेस वटाईआ। नाउँ धर गुरू अवतार, गुर गुर शब्दी नाद सुणाईआ। पीर पैगम्बर खेल अपार, परवरदिगार आप जणाईआ। कलमा नबी रसूल करे ख़बरदार, बेख़बर आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी करता आपणे हथ्थ रखाईआ। नव नौ चार पुरख समरथ, सो साहिब दया कमाईआ। जुग चौकड़ी चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। गुर अवतारां मार्ग दस्स, एका करे सच पढ़ाईआ। पीर पैगम्बर कर कर वस्स, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। दो जहानां पावे नथ्थ, ब्रह्मण्ड खण्ड इक्को डोरी तन्द बंधाईआ। लख चुरासी गेड़नहारा लट्ठ, हुक्मे हुक्म आप भवाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चार कुण्ट दहि दिशा वेखे नट्ठ नट्ठ, निरगुण सरगुण आपणी कार कमाईआ। घट घट अन्दर जोती धार रच रच, शब्दी नाद डंक शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप रचाईआ। नव नौं चार साहिब सुल्तान, सतिगुर आपणा खेल रचाइंदा। योद्धा सूरबीर बलवान, बलधारी वेख वखाइंदा। दाता दानी मर्द मर्दान, सच मर्दानगी आप कमाइंदा। निरगुण सरगुण कर परवान, परम पुरख प्रभ आपणा हुक्म वरताइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे मार ध्यान, नेत्र नैण अक्ख आपणे रंग रंगाइंदा। देवणहारा धुर फ़रमाण, सच संदेसा शब्द सुणाइंदा। धुर दी बाणी शास्त्र सिमरत वेद पुराण, गीता ज्ञान भेव चुकाइंदा। अञ्जील कुरान देवे माण, खाणी बाणी आपणी गंढु पवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप रचाइंदा। नव नौ चार खेल करतार, हरि करता आप

रचाईआ। निरगुण सरगुण कर प्यार, सच प्रीती इक रखाईआ। सेवा ला गुरू अवतार, पीर पैगम्बर कर पढ़ाईआ। साची सिख्या जगत सिखाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाईआ। नव नौं चार भेव अवल्ला, सो साहिब आप जणाईआ। एकँकारा इक इकल्ला, नित नित कार कमाईआ। जोती नूर आपे बला, शब्दी धार वहाईआ। वसणहारा जलां थलां, घट घट रिहा समाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात फड़ाया पल्ला, जलवा नूर नूर इलाहीआ। सच संदेस नर नरेश आदि जुगादि जुग चौकड़ी घल्ला, नाम निधान करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल सच्चा शहिनशाहीआ। नव नौ चार खेल शहिनशाह, सो सतिगुर आप खलाईआ। हरि पुरख निरँजण बण मलाह, बेड़ा दो जहान चलाईआ। एकँकारा दे सलाह, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त समझाईआ। आदि निरँजण बेपरवाह, पर्दानशीं पर्दा आपणा दए उठाईआ। अबिनाशी करता हो सहा, सहायक आपणी सेवा आप लगाईआ। श्री भगवान सच निशान उठा, निरगुण सरगुण दए वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ संग निभा, सगला साथी आप अख्वाईआ। ब्रह्म मेला सहिज सुभा, गुर चेला वंड वंडाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग जो दस्सदा रिहा राह, रहबर इक्को नूर खुदाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण जोत अगम्मी वेस वटा, अलख अगोचर आपणा फेरा पाईआ। धुर दा लेखा पूर करा, साची करनी आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नव नौ चार लेखे लाईआ। नव नौ चार लेखा पूर, पूरी आसा आप कराइंदा। सर्ब कला हो भरपूर, प्रभ आपणा खेल रचाइंदा। दूर दुराडा नेरन नेरा होए हाज़र हज़ूर, हरि जू आपणा घर वसाइंदा। कूड़ी क्रिया नाता तोड़े कूड़ो कूड़, सच सुच इक्को वंड वंडाइंदा। कलयुग अन्तिम प्रगट कर जोती नूर, नूर नुराना डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर घर साचा इक सुहाइंदा। नव नौं चार सुहाए बंक, बंक दवारी फेरा पाईआ। जिस दी ओट रखदे गए अन्त, गुर अवतार ध्यान लगाईआ। जिस नूं पारब्रह्म कहिन्दे श्री भगवन्त, पतिपरमेश्वर सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दा खेल आदि जुगादि जुगा जुगन्त, जुग चौकड़ी कार कमाईआ। जिस दा दो जहान विष्न ब्रह्मा शिव गायण नाम मंत, करोड़ तेतीसा बैठा ध्यान लगाईआ। जिस नूं लख चुरासी नर नरायण कहिन्दे कन्त, सो साहिब सतिगुर आपणा फेरा पाईआ। जिस दा नाम निधान सदा बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। जो दीन दयाल बोध अगाधा इक्को पंडत, ब्रह्मण्ड खण्ड करे पढ़ाईआ। जिस दा वासा जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज रिहा समाईआ। सो दीन दयाल कलयुग अन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नव नौं चार लेखे लाईआ। नव नौं चार लेखे लाए, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। कल कल्की हरि फेरा पाए, निहकलंक वज्जे

वधाईआ। साची करनी आप कमाए, करनहार आप अख्वाईआ। भगत भगवन्त लए जगाए, जागरत जोत करे रुशनाईआ। साचा मन्दिर इक सुहाए, गृह बंक मिले वड्याईआ। दीआ बाती इक टिकाए ,कमलापाती वेख वखाईआ। साचा साकी जाम प्याए, अमृत रस इक चखाईआ। पूरब जन्म दा लहिणा देणा बाकी झोली पाए, देवणहार आप प्रभ आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नव नौं चार पन्ध मुकाईआ। नव नौं चार मुकाउणा पन्ध, हरि पांधी फेरा पाइंदा। कूड़ी क्रिया मेटणा गंद, माया ममता मोह मिटाइंदा। सति सतिवादी इक चढ़ाउणा चन्द, सतिजुग साचा नूर चमकाइंदा। आत्म परमात्म ढोला गाउणा छन्द, सोहँ इक्को राग अलाइंदा। बंदीख़ाना तोड़े लख चुरासी फंद, आवण जावण गेड़ कटाइंदा। करे प्रकाश अन्धेरे अन्ध, आप आपणी बूझ बुझाइंदा। जन्म कर्म दी टुट्टी गंढ, गंढणहार गोपाल स्वामी इक्को आपणा बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप वखाइंदा। साची खेल करे गोबिन्द, गोबिन्द आपणा रंग रंगाईआ। माणस जन्म मेटे चिन्द, जिस जन आपणा दरस कराईआ। अमृत धार वहाए सागर सिन्ध, सर सरोवर इक बणाईआ। दीन दयाल बण बख्शिंद, बख्शिश नाम झोली पाईआ। भाग लगाए जीउ पिण्ड, पंज तत मिले वडयाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल सच्चा शहिनशाहीआ। नव नौ चार चुक्के लहिणा, लोकमात अन्त रहिण ना पाईआ । जन भगत वस्त्र भूशन सुहाए तन नाम गहिणा, रंग इक्को इक रंगाईआ। नेत्र निज नैण दरस कराए साचे नैणां, दोए लोचण बंद वखाईआ । महल अटल उच्च मनार गुरमुख बहिणा, सचखण्ड दुआर वज्जे वधाईआ। नाता तुट्टे मात पित भाई भैण साक सज्जण सैणा, नार कन्त सगला संग ना कोए बणाईआ। लख चुरासी जीव जंत लाड़ी मौत खाए डाइणा, जो घड़या सो अन्तिम भन्न वखाईआ। भगत भगवान दो जहान आदि जुगादि जुगा जुगन्तर नित नवित्त सदा रहिणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। गुरमुख गुर गुर इक दूजे दा मन्नण कहिणा, मन्न मन्न शुकर मनाईआ। सब ने भाणा हरि दा कहिणा, गुर अवतार पीर पैगम्बर बैठण सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप वरताईआ। नव नौं चार नेत्र रोवे, नैणां नीर वहाईआ। दुरमति मैल ना कोई धोवे, चारों कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। कलयुग मिले ना कोई ढोए, चार यारी संग ना कोए निभाईआ। मूर्ख मूढ़ गूढ़ी नींद सोए, ग़फ्लत विच सुत्ती लोकाईआ। ना जीउदे ना दिसण मोए, मरन जीवण समझ किसे ना आईआ। माणस जन्म बैठे खोए, ख़ालक ख़लक नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण निरवैर आपणी कल धराईआ। नव नौं चार मारे धाह, कूक कूक सुणाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरा गया छा, साचा चन्द सतिगुर नज़र किसे

ना आईआ। पुरख अबिनाशी मिले ना कोई मलाह, बेड़ा पार ना कोए कराईआ। धरनी धरत धवल रोवे उभे साह, सिसकीआं लै लै वक्त लँघाईआ। मेरा नज़र ना आऐ शहिनशाह, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नव नौं चार दए वड्याईआ। नव नौं चार वेखे अन्त, जन भगत खुशी मनाइंदा। पारब्रह्म जिस मिल्या कन्त, सो गुरमुख सोभा पाइंदा। इक्को नाम ध्याए मणीआ मंत, सोहँ राग अलाइंदा। मिले वड्याई विचों जीव जंत, लख चुरासी मोह तुड़ाइंदा। पुरख अबिनाशी मिलाए आपणी संगत, हरिसंगत आपणा रूप वखाइंदा। लेखा चुक्के भुक्ख नंगत, नाम निधान झोली पाइंदा। सन्त सुहेला दूजे दर ना जाए मंगत, भिखारी रूप ना कोए वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे खुशी वखाइंदा। हरिजन साचे गौंदे गीत, प्रभ चरण ध्यान लगाईआ। नव नौं चार दी अन्तिम रीत, श्री भगवान वेख वखाईआ। सन्त साजण मिल्या मीत, मित्र प्यारा फेरा पाईआ। घर घर अन्दर वेखे नीत, नीतीवान दया कमाईआ। करे खेल आप अनडीठ, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। हरिजन काया ठांडी सीत, अमृत धार मेघ बरसाईआ। आत्म परमात्म जणाए सच प्रीत, प्रीतम इक्को नज़री आईआ। बैठा रहे सदा अतीत, त्रैगुण बैठा डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां इक्को रंग वखाईआ। नव नौं चार गीत गोबिन्द गौंदे जन भगत, श्री भगवान ध्यान लगाईआ। नाता तोड़ कूड़ा जगत, जगजीवण दाता रहे मनाईआ। जिस गृह ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्ता ग़म ना कोए सताईआ। अट्ठे पहर आत्म परमात्म दरस, निज नेत्र नज़री आईआ। जन्म जन्म दी मेटे हरस, कर्म कर्म दा रोग गंवाईआ। अमृत मेघ इक्को बरस, मुख सीतल धार वहाईआ। लख चुरासी रही भटक, सतिगुर नज़र किसे ना आईआ। जगत विकारे रही लटक, साचा पन्ध ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे खुशी मनाईआ। हरिजन साचे खुशी मनौंदे, इक ध्यान लगाईआ। परम पुरख दा ढोला गौंदे, गोबिन्द मेला सहिज सुभाईआ। पिछला दुःख सर्ब भुलौंदे, भुल्ली जगत लोकाईआ। सचखण्ड दा राह तकौंदे, प्रभ मिले बेपरवाहीआ। बीस बीसा वेख वखौंदे, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। निज नेत्र साचे दर्शन पौंदे, दीद ईद चन्द चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे नाम दान, निधान आपणे रंग रंगाईआ।

✪ २७ हाढ़ २०२० बिक्रमी सन्तोख सिँघ दे गृह पिण्ड सोढीआं ✪

सो पुरख निरँजण हो मेहरवान, हरि देवणहार वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण साचा दान, दाता दानी आप वरताईआ। एकँकार कर परवान, प्रभ मेहर नज़र उठाईआ। आदि निरँजण चतुर सुजान, सति सतिवादी बूझ बुझाईआ। अबिनाशी करता देवे माण, अभिमान नज़र कोए ना आईआ। श्री भगवान खोल्ह दुकान, सचखण्ड निवासी साचा हट्ट चलाईआ। पारब्रह्म प्रभ खेले खेल महान, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। सचखण्ड निवासी शाह सुल्तान, निरगुण दाता फेरा पाईआ। धुर संदेसा हुक्मरान, भूपत भूप आप प्रगटाईआ। लेखा जाण जीव जहान, लख चुरासी रिहा जणाईआ। चार वरन करो ध्यान, धुर दी धार आप समझाईआ। अठारां बरन सुणो ला कर कान, अनाद अनादी नाद वजाईआ। जुग चौकड़ी बीते विच जहान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गए वेस वटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सेवा करदे रहे आण, निरगुण सरगुण रंग रंगाईआ। सोहला ढोला गौंदे रहे गाण, गीत गोबिन्द जणाईआ। दीन मज़्ब वंडां वंडदे रहे महान, ज़ात पात गंढु पवाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण, लेखा लिखदे रहे अञ्जील कुरान, बण बण कातब कलम छाहीआ। खाणी बाणी दस्सदे रहे निशान, निशाना दो जहान झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। धुर संदेसा साहिब सुल्ताना, हरि सज्जण आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी खेल महाना, हरि करता आप कराइंदा। लेखा जाण दो जहानां, दोए दोए आपणे रंग वखाइंदा। निरगुण सरगुण पहर बाणा, चोला पंज तत काया हंढाइंदा। धुर संदेसा शब्द ज्ञाना, बोध अगाधा आप सुणाइंदा । सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग हो प्रधाना, गुर गुर आपणा नाउँ वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप समझाइंदा। साची खेल हरि करतार, हरि करता आप जणाईआ। वेखणहारा धाम न्यार, सचखण्ड निवासी बेपरवाहीआ। थिर घर खोल्हणहार कवाड़, शब्दी नाद धुन शनवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवणहार सहार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। त्रैगुण भरनहार भण्डार, पंज तत वेखे चाईं चाईंआ। लख चुरासी कर प्यार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप रचाईआ। साची खेल रच भगवान, सो साहिब वेख वखाइंदा। जुग चौकड़ी देवणहारा दान, दाता दानी आप हो जाइंदा। सचखण्ड निवासी नौजवान, परम पुरख प्रभ भेव मिटाइंदा। नित नवित्त बण बण काहन, साची बंसुरी नाम वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। साची खेल कर पुरख समरथ, समरथ आपणी धार जणाइंदा। जुग चौकड़ी हो हो वक्ख, निरगुण सरगुण वंड वंडाइंदा। लख चुरासी चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। आत्म परमात्म

शब्द डोरी पाए नथ्थ, चारों कुण्ट आप भवाइंदा। वस्त अमोलक काया गोलक इक्को घत्त, जीव जंत सर्ब समझाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर देवणहारा साची मत्त, गुरमति इक दृढ़ाइंदा। काया चोली रंगे साची रत्त, रत्ती रत्त वेख वखाइंदा। सर्ब जीआं प्रभ जानणहारा मित गत, घर घर आपणा भेव मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म वरताए आप, प्रभ आपणी दया कमाईआ। चार युग चार वरन जाप, चारों कुण्ट कुण्ट समझाईआ। निरगुण सरगुण देवे साथ, गुर अवतार रूप धराईआ । लेखा जाण त्रिलोकी नाथ, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां खोज खुजाईआ। शब्द अगम्म मार अवाज़, आत्म परमात्म आप जगाईआ। धुर दी धार खोले राज़, राज़क रहीम फेरा पाईआ। नित नवित्त रच रच काज, करता पुरख वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी बणावणहार समाज, जगत बन्धन बंध वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आप दरसाईआ। साचा लेखा दस्से हाल, श्री भगवान दया कमाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी लख चुरासी खाए काल, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। धुरदरगाही बेपरवाही शब्दी धार बणे दलाल, नित नवित्त आपणी सेव कमाइंदा। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले भगत भगवान लए भाल, लख चुरासी विचों खोज खुजाइंदा। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर चले नाल, साहिब साचा संग निभाइंदा। सुणनहार मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत इक जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सृष्ट सबाई आप उठाइंदा। सृष्ट सबाई उठ उठ जाग, सो साहिब आप जगाईआ। जन भगतां देवे इक वैराग, वैरागी धार वखाईआ। शब्द अगम्म वजाए नाद, अनादी धुन शनवाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काग, सोहँ अजपा जाप जपाईआ। जिस ने रचना रची आदि, सो अन्तिम वेखण आईआ। जिस दी गुर अवतार पीर पैगम्बर करन याद, दोए जोड़ बैठण सीस झुकाईआ। सो पुरख अगम्म सुणनहार फ़रयाद, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। साची सिख्या सुणो मीत, सो साहिब आप जणाइंदा । क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश गाओ इक्को गीत, चार वरन आप पढ़ाइंदा। सतिजुग जणाए साची रीत, रीतीवान फेरा पाइंदा। घर मन्दिर ठाकर दुआरा नज़र आए मसीत, हुजरा इक्को इक वड्याइंदा। परम पुरख प्रभ बैठा रहे अतीत, त्रैभवन धनी आपणा आसण लाइंदा। आत्म परमात्म जणाए सच प्रीत, नाता बिधाता इक वखाइंदा। लहिणा देणा चुक्के हस्त कीट, ऊँच नीच राउ रंक वंड ना कोए ना वंडाइंदा । सच दुआरे मांगो भीख, दूजा दर नज़र कोए ना आइंदा। माणस जन्म लओ जीत, जीवण जुगत आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। चार वरन करो ख्याल, हरि

करता आप जणाईआ। अठारां बरन लभ्भो दलाल, हरि सतिगुर बेपरवाहीआ। लख चुरासी सिर ते कूके काल, चारों कुण्ट डंक वजाईआ। सृष्ट सबाई होई बेहाल, धीरज धीर ना धराईआ। परम पुरख परमात्म काया मन्दिर अन्दर लओ भाल, बाहर खोजिआं हथ्थ किसे ना आईआ। फल लगावो काया डाल, अमृत रस इक भराईआ। त्रैगुण माया तोड़े जंजाल, कूड़ी क्रिया मेट मिटाईआ। भाग लग्गे काया माटी खाल, घर विच घर होए रुशनाईआ। अमृत आत्म लओ उछाल, सर सरोवर इक्को नज़री आईआ। सच धर्म दी घालना लओ घाल, जन्म कर्म कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक जणाईआ। चार वरन सुणो संदेसा, नौं खण्ड पृथ्मी आप जणाइंदा। परम पुरख प्रभ इक नरेशा, नर नरायण वेस वटाइंदा। कलयुग अन्तिम धारे भेखा, कल कल्की फेरा पाइंदा। पूरब जन्म जणाए लेखा, लहिणेदार आप हो आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। चार वरन जाओ उठ, हरि सोवत जागत आप उठाईआ। फिरे दरोही चार कुण्ट चार गुठ्ठ, दहि दिशा पए दुहाईआ। धुरदरगाहों जो गए रुठ्ठ, कलयुग बैठे मुख भवाईआ। तिन्नां वेखणहार अबिनाशी अचुत, श्री भगवान घट घट रिहा समाईआ। सुहावणहारा साची रुत्त, काया रुतड़ी आप महकाईआ। हरिजन हरिभगत इक दूजे तों लओ पुच्छ, कवण दुआरे मिले बेपरवाईआ। देवणहार नाम अतुट्ट, सच भण्डार रिहा वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। चार वरन मंगो दात, हरि दाता दानी दया कमाइंदा। कलयुग मेटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाइंदा। ऊँच नीच बणाए इक्को जमात, दूजी पट्टी ना कोए पढ़ाइंदा। पुरख अकाल सच्चा नात, नाता आपणे नाल मिलाइंदा। राए धर्म ना वेखे खात, चित्रगुप्त ना लेख जणाइंदा। पूरब जन्मां पूरा करे घाट, जो जन सरनाई आइंदा। पिछली अगली मेटे वाट, फड़ बांहों गोद बहाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म देवणहारा साथ, सगला संग निभाइंदा। होए सहाई अनाथां नाथ, ग़रीब निमाणयां दया कमाइंदा। लहिणा देणा चुक्के ज़ात पात, वरन गोत कर्म कांड ना कोए रखाइंदा। सन्त सुहेले पूरी करे आस, कूड़ी तृष्ना मेट मिटाइंदा। लेखे लाए पवण स्वास, पवण पवणा वेख वखाइंदा। लहिणा देणा मुक्के पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर डेरा ढाइंदा। आप उतारे आपणे घाट, साचा पतण इक वखाइंदा। जिस दुआरे वसे पुरख समराथ, सो दवारा सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक समझाइंदा। चार वरन सुणो कन्न ला, हरि करता आप जणाईआ। कलयुग आया अन्तिम बेपरवाह, बेपरवाही खेल कराईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया डेरा देवे ढाह, लोकमात रहिण ना पाईआ। सतिजुग मार्ग दए वखा, सच सुच इक वरताईआ। राउ रंक एका रंग दए रंगा, शाह पातशाह सीस

ताज ना कोए टिकाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत लए उठा, भाख्या देवे थाउँ थाईंआ। जन्म कर्म दे विछड़े लए मिला, धुर संजोगी मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, चार वरन इक्को राह वखाईआ। चार वरन नेत्र खोल्ह, प्रभ इक्को अक्ख खुल्हाइंदा। श्री भगवान तोलण आया तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाइंदा। कलयुग अन्तिम लख चुरासी लए वरोल, नाम मधाणा इक्को पाइंदा। भगत भगवान रखे अडोल, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। साची वस्त देवे अनमोल, सोहँ दात झोली पाइंदा। बजर कपाटी कुण्डा खोल्ह, घर घर विच आप वखाइंदा। सुरती शब्दी जाए मौल, मौला आपणा रंग रंगाइंदा। पूरा करे कीता कौल, करनी करता आप कमाइंदा। देवे वड्याई उपर धौल, धरनी धरत धवल सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआर इक वखाइंदा। चार वरन वेख दुआर, धुर दरबारी आप जणाईआ। जिस गृह वसे आप करतार, सो मन्दिर मिले वड्याईआ। तिस मन्दिर होए उज्यार, दीआ बाती कमलापाती इक्को जोत नूर रुशनाईआ। साची सखीआँ मंगलचार, ढोला गाए आप निरँकार, गीत गोबिन्द इक सुणाईआ। वज्जदी रहे नाम सितार, सुणे सुणावे सुणनेहार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। वेखणहार गुर अवतार, पीर पैगम्बर दे आधार, मेहर नज़र आप उठाईआ। जुग चौकड़ी बीते चार, नव नौं चार गया हार, लख चुरासी करे पुकार, अन्तर रोवे मारे धाहींआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। निरगुण फेरा पाए पारब्रह्म, ब्रह्म नाता लए जुड़ाईआ। निहकर्मी जाणे आपणा कर्म, कर्म कांड मेटे थाउँ थाईंआ। चार वरन वखाए इक्को धर्म, धुर दी धार आप बंधाईआ। बख्शणहारा साची सरन, चरण कँवल दए सरनाईआ। लहिणा देणा चुकाए मरन डरन, लख चुरासी फंद कटाईआ। गुरमुख विरले सोहँ ढोला पढ़न, गीत गोबिन्द इक सुणाईआ। साचे पौड़े साचे मन्दिर चढ़न, राह विच ना कोए अटकाईआ। श्री भगवान दर्शन करन, जोती जाता नज़री आईआ। दोए जोड़ चरणी पड़न, मस्तक टिक्का धूढ़ी लाईआ। कलयुग अग्न विच ना सड़न, त्रैगुण लेखा मुक्के थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर मन्दिर इक वखाईआ। चार वरन मन्दिर दए वखाल, घर साचा इक सुहाईआ। किरपा कर दीन दयाल, दीनन आपणे गले लगाईआ। नाता तोड़ काल महाकाल, जगत जंजाल दए गंवाईआ। सुणनहार मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, साचा लेखा दए समझाईआ। चार वरन साचा लेखा, अज़ात अजाति मेट मिटाइंदा। चौथे युग कढ्ढे भरम भुलेखा, भाण्डा भरम भउ भंनाइंदा। निरगुण हो के धारे वेसा, सरगुण आपणा मेल मिलाइंदा। सम्बल

वसे साचे देसा, साढे तिन्न हथ्थ वंड वंडाइंदा। गुर गोबिन्द लै के गया ठेका, अन्तिम आपणा हक़ जमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दर इक सुहाइंदा। साचा दर खोल्ह दरवाज़ा, धुरदरगाही दया कमाईआ। करे खेल ग़रीब निवाज़ा, ग़रीब निमाणयां होए सहाईआ। शाहो भूप वड राजन राजा, शहिनशाह आपणा वेस धराईआ। कलयुग अन्तिम रच के काजा, सतिजुग साची धार बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह करे खेल, खेलणहार आप हो आईआ। गुरमुख गुरसिख साचे मेल, गुरमति आप पढ़ाईआ। करे प्रकाश बिन बाती बिन तेल, दीपक जोत इक रुशनाईआ। घर मिले सज्जण सुहेल, नर हरि नरायण वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। देवे वड्याई भगत जन, जन जननी आप अख्वाइंदा। एका राग सुणाए कन्न, संसा रोग सर्ब मिटाइंदा। भाग लगाए पंज तत तन, ततव तत इक दृढ़ाइंदा। कर प्रकाश अन्धेर अन्न्ह, निरगुण साचा चन्द चमकाइंदा। कर वसेरा बिन छप्पर छन्न, सचखण्ड दवारे सोभा पाइंदा। कूड़ी क्रिया देवणहारा डंन, आपणा डंका नाम वजाइंदा। जो घड़या सो देवे भन्न, घड़न भंनणहार आपणी कार कमाइंदा। जन भगतां देवे नाम धन, शब्द ख़ज़ाना झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, चार वरन इक्को सरन, घर मन्दिर इक वखाइंदा। चार वरन प्रभ खोल्ह ताक, तकवा इक्को इक जणाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां पूरा करे भविक्ख्त वाक, वास्ता आपणे नाल बंधाईआ। निरगुण सरगुण बणे साक, सज्जण इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुरमुख सज्जण आप उठाईआ। गुरमुख सज्जण उठाए जग, जगजीवण दाता दया कमाईआ। जन्म जन्म दी बुझाए अग्ग, अमृत मेघ इक बरसाईआ। धुरदरगाही सच्चा कराए इक्को हज्ज, हुजरा हक़ दए वखाईआ। परवरदिगार रिहा तक्क, बेनकाब पड़दा लाहीआ। सच महल्ले रिहा सज, उच्च मुकामे डेरा लाईआ। चौदां लौक रिहा भज्ज, चौदां तबक रिहा समझाईआ। शब्द नगारा रिहा वज्ज, पुरी लोअ करे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप वखाईआ। साची करनी अन्तिम कल, हरि करता आप कराईआ। करे खेल अछल अछल्ल, वल छल धारी समझ कोए ना पाईआ। जन भगतां अन्दर गया रल, जोती जोत जोत मिलाईआ। शब्द सुनेहड़ा रिहा घल्ल, धुन अनादी नाद अलाईआ। वसणहारा निहचल धाम अटल, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सन्त सुहेले मेल मिलाईआ। सन्त सुहेले मिले मलाह, खेवट खेटा इक्को नज़री आइंदा। बीस बीसा पकड़े बांह, फड़ बाहों बाहर कढ्ढाइंदा। हरि जगदीशा इक जपाए आपणा नाँ, नाउँ

निरँकारा आप दृढ़ाइंदा। सदा सुहेला देवे ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। निथाव्याँ देवे अगम्मी थाँ, चरण दवारा इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, चार वरन रंग रंगाइंदा। चार वरन रंग चलूल, रंग राता आप रंगाईआ। कलयुग अन्त ना जाए भूल, पूरा लहिणा रिहा वरताईआ। नानक गोबिन्द पूरा करे असूल, असलीअत सब नूं दए समझाईआ। लख चुरासी करना पए कबूल, हुक्म हाकम इक लगाईआ। धुर संदेसा कोई ना सके अदूल, धुरदरगाही एका डंका नाम वजाईआ। दो जहानां अन्दर झूला लए झूल, पवण उनन्जा सेव कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार पीर पैग़ंम्बर भगत भगवान बरसाइण फूल, बरखा इक्को धार वखाईआ। हरि सन्तां मेला कन्त कन्तूहल, घर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख गुरसिख हरिजन हरि हरि आपणे नाल मिलाईआ। नाल मिलाए प्रभ एक, एकँकारा दया कमाइंदा। एथे ओथे बख्शे टेक, दो जहानां वेख वखाइंदा। त्रैगुण ना लाए माया सेक, कूड़ा नाता तोड़ तुड़ाइंदा। सच वखाए आपणा देस, घर मन्दिर इक सुहाइंदा। तख्त निवासी नज़री आए नर नरेश, नर नरायण इक्को सोभा पाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चार वरन अठारां बरन खेलां रिहा खेड, बण खिलाड़ी आपणी खेड जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप
६१ आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे आपणा भेत, अन्दर वड़ के पड़दा लाहइंदा। अन्दर वड़ के पड़दा खोल्हे, ख़ालक ६१
१५ ख़लक दए समझाईआ। निरगुण निरवैर हो के आपे बोले, ढोला सोहला राग सुणाईआ। भाग लगावे काया चोले, चोली १५
आपणे रंग रंगाईआ। लख चुरासी एका कंडे तोले, तोला बणया बेपरवाहीआ। गुरसिख उठाए भाले भोले, भोले भाओ गोबिन्द मिलाईआ। सचखण्ड वसाए सच्ची धर्मसाले, धर्म दवारा इक्को नज़री आईआ। आदि अन्त सद चले नाले, जगत विछोड़ा ना कोए वखाईआ। साचा मन्त्र इक सखाले, सोहँ राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान लगाए लड़, पल्लू आपणे नाल बंधाईआ। पल्लू बन्न्हे नाम डोर, डोरी तन्द इक जणाइंदा। कर प्रकाश अन्धेर घोर, नूर इक्को इक वखाइंदा। ढाहे ढेरी पंज चोर, पंचम आपणा पड़दा पाइंदा। पंचम नाद शब्द घनघोर, अनहद रागी राग सुणाइंदा। लेखा चुके तोर मोर, मेरा तेरा इक्को रूप नज़री आइंदा। कूड़ी क्रिया ना पाए शोर, माया ममता मेट मिटाइंदा। लग्गी प्रीती निभाए तोड़, अद्धविचकार ना कोए रखाइंदा। जिन्हां आपणे नाल ल्या जोड़, तिन्हां लख चुरासी पन्ध मुकाइंदा। कलयुग अन्तिम जावे बौहड़, निरगुण हो के वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन साचे कर परवान, दरगाह साची देवे थान, आवण

जावण चुके जहान, अन्तिम जोती जाता आपणा मेल कराइंदा।

सतिजुग दी चले धारा, बीस बीसा नींह रखाईआ। आत्म परमात्म कर प्यारा, सोहँ शब्द नाद सुणाईआ। महाराज शेर सिँघ जैकारा, दो जहान रिहा जस गाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दोए जोड़ करे निमस्कारा, निउँ निउँ लागे पाईंआ। श्री भगवान तेरा आदि जुगादि सच पसारा, जै जैकार सर्ब लोकाईआ। सो पुरख निरँजण करे खेल न्यारा, हँ ब्रह्म आप पढ़ाईआ। सतिजुग वरते विच संसारा, कलयुग अन्त रहिण ना पाईआ। दाता दानी दात देवे देवणहारा, आपणी हथ्थीं आप वरताईआ। जड़ लाए अगम्म अपारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साची धार जणाईआ। सतिजुग साचा चले राह, सो पुरख निरँजण आप चलाईआ। पुरख अबिनाशी बण मलाह, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। नानक गोबिन्द दे के गए सलाह, कल कल्की कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। वेद व्यासा गया समझा, गौड़ ब्रह्मण उच्चे टिल्ले पर्बत फेरा पाईआ। मुहम्मद राह रिहा तका, मेरा पीर आवे वाहो दाहीआ। ईसा झोली रिहा डाह, सच पैगम्बर खाली झोली दए भराईआ। मूसा जलवा रिहा तका, नेत्र नैण नैण उठाईआ। वेद पुराण शास्त्र सिमरत गीता ज्ञान अञ्जील कुरान साची खाणी इक्को इक पढ़ाईआ। चारे बाणी लेखा लेखे लए लगा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग उखड़े कूड़ी जड़, सतिजुग साचा राह चलाईआ। सतिजुग साचा लग्गे जग्ग, हरि साचा आप लगाइंदा। कूड़ी क्रिया मिटे अग्ग, माया ममता मोह मिटाइंदा। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आदि जुगादी शब्द अनादी वजाए वज, दो जहानां आप सुणाइंदा। तख्त निवासी पुरख अबिनाशी राज राजान शाह सुल्तान लौण ना देवे कोई अज्ज पज्ज, ऊँचां नीचां राउ रंकां इक्को गीत सुणाइंदा । सन्त सुहेले गुरु गुर चेले लए सद्द, सद्दा इक्को नाम जणाइंदा। जिन्हां वखाए सतिजुग हद्द, सो गुरमुख सोहँ ढोला राग अलाइंदा। फड़ फड़ हँस बणाए कग्ग, बुद्धि काग आप बदलाइंदा। गुरमुखां अन्दर दीपक जोत हो के जाए जग, आपणा रूप ना कोए वखाइंदा। सोहँ चलया दो ज़ीरो, ज़ीरो ज़ीरो नाल मिलाईआ। वीह साल विच लेखा मुकाया पीर पैगम्बरां पीरो, गुर अवतारां लहिणा देणा झोली पाईआ। पन्द्रां कत्तक सब नूं वखाए सची तस्वीरो, लातस्वीर दया कमाईआ। शरअ शरीअत कटे आप ज़ंजीरो, नाम कटारा हथ्थ उठाईआ। चोटी चढ़ वेखे अख़ीरो, आख़र आपणा हुक्म मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस दी लगाए आप जड़, तिस नूं वेखे आप रघुराईआ। पहलों उखेड़े कलयुग जड़, बूटा लोकमात रहिण ना पाईआ। चार युग दे तेई अवतार अठारां भगत ईसा मूसा

मुहम्मद दस गुर सारे कलमा हदीस इक्को लओ पढ़, अल्ला राम वाहिगुरू एका नज़री आईआ। चार वरन अठारां बरन खत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ज़ात पात दीन मज़्ब रहे लड़, गुर का शब्द ना कोए कमाईआ। मनमुख जीव जीवत्यां जग्ग गए मर, मरना हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा खेल आपणे हुक्म विच रखाईआ।

✪ २८ हाढ़ २०२० बिक्रमी गुरदेव सिंघ दे गृह दोसांझ खुरद ✪

तेरा खेल पुरख अबिनाश, जुग चौकड़ी भेव कोए ना आईआ। जुग जुग रखदे गए आस, नित नित तेरा ध्यान लगाईआ। सदा सुहेले लग्गी रही प्यास, तृष्ना इक्को इक उपजाईआ। याद अन्दर लैंदे रहे सांस, साह साह तेरा नाम ध्याईआ। मंगदे रहे नूर प्रकाश, जोती जोत जोत रुशनाईआ। लोचदे रहे सच्चा साथ, सगला संग निभाईआ। वेंहदे रहे पत्तण घाट, नेत्र नैण नैण उठाईआ। फसे रहे ज़ात पात, दीन मज़्ब वंड वंडाईआ। तेरा नाउँ लिखदे रहे नाल कलम दवात, काग़ज़ छाही संग जणाईआ। गाउँदे रहे बहु बिध भांत, ढोला रसना जिह्वा गाईआ। पंज तत बंधाउँदे रहे नात, ततव तत गंढु रखाईआ। तेरा नूर नज़र ना आया साख्यात, बेपरवाह सचे शहिनशाहीआ। अन्त भगवन्त आ वेख सर्ब हालात, हालत आपणी सर्ब रहे वखाईआ। कोई माण ना रिहा मात, लोक परलोक ना कोए वड्याईआ। साची गायण ना कोए गाथ, कलमा हक़ ना कोए पढ़ाईआ। सृष्ट सबाई लख चुरासी कूड़ी क्रिया छाणे ख़ाक, पाक रूह ना कोए वखाईआ। सच दवारा किसे ना जाए भाख, माया ममता मोह वधाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे आए आख, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। कल प्रगट होवे प्रभू आप, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। जिस दा करदे रहे जाप, जुग चौकड़ी नाम ध्याईआ। सो साहिब इक्को दस्से पाठ, साचा नाम आप वड्याईआ। चार वरनां देवे दात, अनमुलड़ी दात आप वरताईआ। आत्म परमात्म जणाए सच करामात, कर्म कांड मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा हर घट थाईंआ। मेहरवान तेरा सहारा, जुग चौकड़ी ओट तकाईआ। दर दरवेश बण भिखारा, मंगदे रहे वाहो दाहीआ। जुग चौकड़ी लग्गा रिहा अखाड़ा, लख चुरासी नाच नचाईआ। लभ्भदे रहे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फुलाईआ। वड़दे रहे डूंघी ग़ारा, समुंद सागर खोज खुजाईआ। तेरा नज़र ना आया हक़ नज़ारा, बेनज़ीर नूर ना कोए रुशनाईआ। किसे ना करया पार किनारा, अद्धविचकार बैठे ढेरीआं ढाहीआ। जो आया सो वेख तेरा पसारा, तोहे बैठा सीस झुकाईआ। तेरे

नाम दा बण वणजारा, हट्ट इक्को जगत चलाईआ। शब्दी दे दे गया इशारा, इशारा इक्को नाम समझाईआ। सारे कहिन्दे गए कल कल्की आए हरि अवतारा, निहकलंक नाउँ धराईआ। जिस दा अन्त ना पारावारा, बेअन्त बेपरवाहीआ। शाहो भूप बण सिकादारा, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। दो जहानां पावे सारा, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो देंदा रिहा लारा, सो लहर आपणी लए प्रगटाईआ। रहबर बणे परवरदिगारा, बेपरवाह फेरा पाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यारा, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचा वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी तेरा तक्कदे रहे राह, नेत्र अक्ख नैण उठाईआ। कवण वेला प्रभ मिले मलाह, बेड़ा आप चलाईआ। खाणी बाणी देंदे रहे सलाह, जीव जंत कर पढ़ाईआ। आदि जुगादी रहबर बणे इक खुदा, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। सबर प्याला जाम दए प्या, मख़मूरी आपणा नाम चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। जुग चौकड़ी तेरा गौंदे रहे ढोला, नाम नामा वड वड्याईआ। निरगुण सरगुण पड़दा रख्या उहला, भेव अभेद ना कोए जणाईआ। नित नवित्त बणया रिहों तोला, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। साचा गौंदा रिहों सोहला, गुर अवतार पीर पैगम्बर कर पढ़ाईआ। आप लुक्या रिहों काया चोला, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। बण कहार चुक्कदा रिहों डोला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप कमाईआ। बेपरवाह तेरा मंगया दर, दर दरवेश अलख जगाईआ। जुग जुग तैथों रहे डर, भय भउ सिर रखाईआ। निवण सो अक्खर रहे पढ़, तेरा राग अलाईआ। चरण कँवल रहे फड़, दोए जोड़ जोड़ सरनाईआ। चार कुण्ट लभ्भदे रहे तेरा घर, कवण मन्दिर मिले वड्याईआ। नज़री आए नरायण नर, नर हरि आपणा फेरा पाईआ। आपणी किरपा देवे कर, कर किरपा मेल मिलाईआ। साचे पौड़े जाईए चढ़, उच्चा टिल्ला सोभा पाईआ। दर्शन करीए अग्गे खड़, हाज़र हज़ूर नज़री आईआ। पल्लू नाल बंधाईए लड़, लड़ी आपणी गंढु वखाईआ। बिरहों वैराग सच प्रीती अन्दर जाईए मर, मर जीवत रूप वटाईआ। घोली घोल सेव लईए कर, माण अभिमान कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणी सच वड्याईआ। जुग चौकड़ी तेरी मंगदे रहे ओट, प्रभू इक ध्यान लगाईआ। दर्शन करदे रहे निर्मल जोत, जोती जोत नूर रुशनाईआ। खेल वेंहदे रहे चौंदां लोक, परलोक तेरी शनवाईआ। तेरा नाउँ गौंदे रहे रसना जिह्वा नाल होंट, बत्ती दन्द सिफ्त सालाहीआ। तेरी प्रेम प्रीती अन्दर माणदे रहे मौज, मौजूदा तेरा राह तकाईआ। डूंग्घी कन्दर अन्दर करदे रहे खोज, घर घर दर दर तेरा राह तकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सोचदे रहे तेरी सोच, सोच समझ सके ना कोए राईआ। तेरा दर्शन दीदार रहे लोच, लोचण आपणे

नैण उठाईआ। पारब्रह्म प्रभ घर साचे पहुंच, मेहरवान आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी सच सच सरनाईआ। जुग चौकड़ी मंगी सरनगति, मिले सरन सरनाईआ। पारब्रह्म प्रभ देवे मति, इक्को गुण समझाईआ। अन्तर धीरज बख्शे सति, सति सन्तोख झोली पाईआ। वस्त अमोलक फड़ाए हथ्थ, नाम धन लुटाईआ। काया चोली चाढ़े रंग, रत्त आपणे रंग वखाईआ। सेज सुहञ्जणी सुहाए पलँघ, घर मिले बेपरवाहीआ। विछोड़ा कटे कूड़ी भुक्ख नंग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे ध्यान लगाईआ। जुग चौकड़ी मंगदे रहे भिख, प्रभ तेरा ध्यान लगाईआ । सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सिख्या रहे सिख, साची सिख्या इक जणाईआ। कवण वेला प्रभ करे हित, घर आवे चाईं चाईंआ। अट्ठे पहर दर्शन देवे नित, नवित्त आपणी धार बंधाईआ। कोई ना दिसे रस फिक, रस फिक्का अमृत रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। चार युग प्रभ रहे गौंदे, तेरा ध्यान लगाईआ। लोक लज्जया विच शरमौंदे, नेत्र नैण नैण छुपाईआ। चार कुण्ट उठ उठ धौंदे, जंगल जूह फेरा पाईआ। तन जल धार पाणी ठरौंदे, सिर छार ख़ाक रमाईआ। डूंघी कन्दर वड़ वड़ राह तकौंदे, नेत्र मीट वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। चार युग तेरा गौंदे रहे गीत, जन भगत रहे जणाईआ। कोई मन्दिर वड़या मसीत, शिवदुआला मट्ठ कोए मनाईआ । कोई जल धारा ठरया ठांडा सीत, अग्नी तत कोए तपाईआ। कोई गाए अन्दर वड़ के गीत, कोई उच्ची कूक सुणाईआ। कोई भुंनया वांग कबाब उपर सीख, कोई पुठड़ी खल्ल लुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे इक अरजोईआ। भगत सन्त सूफी कहिन्दे, प्रभ इक्को ध्यान लगाईआ। चार युग तेरा भाणा सहिंदे, दुखड़े जगत उठाईआ। डूंघी धार वहण वहिंदे, रुढ़दयां रुढ़दयां चार युग लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे अन्त वड्याईआ। भगत सन्त गुरमुख रो, दर साचे हाल सुणाईआ। पुरख अबिनाशी सहाई आपे हो, होका तेरे नाम वड्याईआ। तुध बिन नज़र ना आवे को, कूड़ी दिसे सर्ब लोकाईआ । आत्म परमात्म आ के छोह, शहिनशाह आपणे अंग लगाईआ। कर मुहब्बत पा मोह, मेहर नज़र इक उठाईआ। आपणे प्रकाश कर लो, दीपक नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, अन्तिम तेरा ध्यान लगाईआ । जुग चौकड़ी होई अखीर, आख़र तेरी आस रखाईआ। दर आ सांझे पीर, पीरन पीर तेरी वड्याईआ। प्रगट हो गहर गम्भीर, बेनज़ीर फेरा पाईआ। कलयुग अग्न तपे सरीर, सांतक सति ना कोए कराईआ। साचा भूशन वस्त्र पहने ना कोए

चीर, चोली तन ना कोए रंगाईआ। लख चुरासी कटे ना कोए भीड़, अगला पन्ध ना कोए मुकाईआ। माणस जन्म कोई ना बन्ने बीड़, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। तेरे भगत होए दिलगीर, दिल दिलासा कोए नज़र ना आईआ। एका पकड़ हथ्थ शमशीर, शाह पातशाह आपणा बल वखाईआ। लेखे ला शाह हकीर, हकीकत आपणी दे जणाईआ। दरोही खुदा बदल तकदीर, तस्वीर आपणी सच वखाईआ। शरअ तोड़ आण ज़ंजीर, जाबर जबर फेरा पाईआ। तेरा तक्कया राह यामबीन, मुफ़लस बैठे देण दुहाईआ। ना कोई मिसाल विछोड़ा मीन, मीन विछोड़ा जल नज़र कोए ना आईआ। हउँ बालक नढ्ढे तेरे अधीन, तूं पिता पुरख बेपरवाहीआ। सानूं तेरे उते यकीन, वेले अन्त होएं सहाईआ। बरदे बणे गुलाम मस्कीन, मुश्कल अन्तिम हल्ल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लहिणा झोली पाईआ। तक्क तक्क राह गए थक्क, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। पढ़ पढ़ कलमे गए अक्क, वेख लेखा कलम शाहीआ। बण बण पांधी रहे नट्ठ, तेरा पन्ध ना कोए मुकाईआ। फिर फिर वेखे तीर्थ तट, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। सूर्या चन्द्र पाणी झट्ट, जल धारा भेंट चढ़ाईआ। मणका मणका माला अठोतरी रट, अकोतरी तेरी गंढु वखाईआ। सच दवारा नज़र ना आया कोई हट्ट, चार कुण्ट फिरे वाहो दाहीआ। अन्तिम खेड़ा हुन्दा दिसे भट्ठ, भाण्डा भरम ना कोए भंनाईआ। तुध बिन कोई ना रखे पत, पतिपरमेश्वर सच गोसाईंआ। साचा मार्ग आ के दस्स, दर बैठे अलख जगाईआ। निरगुण हो के हिरदे वस, सरगुण देवणहार वड्याईआ। मेहरवान हो के गा जस, तेरा इक ध्यान रखाईआ। कलयुग अन्तिम साडी होई बस्स, बसता बद्धा वलों लोकाईआ। धीरज कोई ना रिहा हठ, तप संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आ के दे दे साडा हक़, इक्को आपणी मंग मंगाईआ। जुग चौकड़ी तेरा नाउँ रहे पढ़दे, रसना जिह्वा नाल मिलाईआ। हो के रहे दरवेश बरदे, बंदे बंदगी विच समाईआ। दर दर पाणी तेरा रहे भरदे, पनघट इक्को फेरा पाईआ। दीन मज़्ब नाल रहे लड़दे, छुरी शरअ वेखी जगत कसाईआ। अग्नी हवन रहे सड़दे, जल धारा रोड़ वहाईआ। तेरे पिच्छे रहे मरदे, तैनूं तरस कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे साचा वर, कल अन्तिम मंग मंगाईआ। अन्तिम मंगदे निरँकार, जन भगत आख जणाईआ। दर आए तेरे दरबार, घर साचे अलख जगाईआ। आदि जुगादी मीत मुरार, सच प्रीती तोड़ निभाईआ। जुग चौकड़ी करदे रहे प्यार, अनन्द वेखीए चाईं चाईंआ। नहीं ते कहदे मैं गया हार, मेरा बल कोए रहिण ना पाईआ। फेर असीं भरीए तेरा भण्डार, तेरा नाम तेरी झोली पाईआ। आपा आप तैथों वार, तेरी सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दे चुकाईआ। भगत कहिण प्रभ सच दस्स,

क्यों बैठा मुख शरमाईआ। की तूं साडा कि असीं तेरे वस, दोहां पड़दा दे खुलाईआ। की सब कुछ तेरे हथ्थ, की देवणहार भगत हो जाईआ। जे कहें मैं नहीं पुरख समरथ, तेरी समरथय देईए बणाईआ। जो मार्ग सानूं दित्ता दस्स, सो मातलोक प्रगटाईआ। कलयुग अन्तिम कर के आए हठ, बल आपणा आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, सद आपणे नाल रखाईआ। श्री भगवान कहे मैं समरथ, समरथ मेरी वड्याईआ। जन भगत चढ़ावां आपणे रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। जुग चौकड़ी जो मार्ग आया दस्स, अन्तिम नेत्र नैणां दयां वखाईआ। मेल मिलावा हस्स हस्स, घर साचे जोड़ जुड़ाईआ। अन्तर आत्म देवां रस, अमृत झिरना इक झिराईआ। प्रेमी हो के होवां वस, प्रीती इक्को ओड़ निभाईआ। तीर अणयाला मारां कस, बजर कपाटी पार कराईआ। मन्दिर बहि के गावां जस, ढोला राग सुणाईआ। नाता तुड़ावां तत अट्ठ, नौं दर पन्ध मुकाईआ । दसवें घर बोल अलख, अलख अलखणा भेव चुकाईआ। मेल मिलावां कमलापति, पतिपरमेश्वर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत आप तराईआ। जन भगत अन्तिम मेल मिलावांगा। गुर चेला रूप वटावांगा। सज्जण सुहेला संग निभावांगा । साचा वेला आप सुहावांगा। अचरज खेल आप खिलावांगा। आवण जावण लख चुरासी कूड़ी जेल पन्ध मुकावांगा। धाम वखावां इक नवेल, जिस घर आपणा आसण लावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, चार युग दी करनी कीती झोली पावांगा। चार युग दी झोली भरावांगा। फड़ बांहों पार लँघावांगा। साचे मन्दिर आप बहावांगा। मस्तक चन्दन टिक्का नाम लगावांगा । धुरदरगाही साचा सगन, सचखण्ड दवारे आप वखावांगा। अट्ठे पहर जोती मघन, पंज तत नाता तोड़ तुड़ावांगा। लोकमात कोई ना आवे सद्दण, सद्दा आपणा नाम रखावांगा। परम पुरख दा इक्को भजन, तूं मेरा मैं तेरा ढोला गावांगा। सन्त सुहेले गुरमुख सज्जण, दरगह साची बहि के नच्चण, खुशीआं आपणा रंग वखावांगा। पूरब जन्म दा कीता कौल पूरा करां बचन, बच्चत आपणे कोल ना कोए वखावांगा। घाट उतारां साचे पत्तण, डेरा इक्को घर लगावांगा। कलयुग अन्तिम आया रखण, राखा हो के वेख वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे कोल बहावांगा। हरिजन साचे कोल बहाएगा। प्रभ आपणी दया कमाएगा। चार युग दा लेखा अन्त मुकाएगा। मिट्ठा कर के कौड़ा रेठा, अमृत रस आप भराएगा। बण के दो जहानां नेता, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाएगा। जन भगतां करे अगम्मी हेता, आत्म परमात्म मेल मिलाएगा। निज नेत्र आपणे पेखा, पेख पेख खुशी जणाएगा। सचखण्ड दुआर कराए पिछला चेता, पूरब जन्म बूझ बुझाएगा। भगत भगवान नाता प्यो पुत जग बेटा, जगजीवण

दाता आपणा घर वसाएगा। वेखणा खेल सचखण्ड सच देसा, छप्पर छन्न ना कोए छुहाएगा। सद रखे चरणां हेठां, धूढ़ी टिक्का मस्तक इक्को लाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा देणा सब दा पूर कराएगा। प्रभ मनसा पूर करावेगा। जोती नूर चमकावेगा। हाज़र हज़ूर नज़री आवेगा। नेड़े दूर पन्ध मुकावेगा। नाता कूड़ो कूड़ तुड़ावेगा। मूर्ख मूढ़ चतुर सुघड़ बणावेगा। दे मस्तक धूढ़, टिक्का आपणा नाम लगावेगा। जन्म कर्म दी आसा पूर, भाण्डा भरम भउ भंनावेगा। गुर भुल्लयां जो कीते कसूर, सो कसूर मुआफ फ़रमावेगा। सर्ब कला हो भरपूर, प्रभ आपणी दया कमावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार युग दा चन्दन मस्तक नाम सुगंधी तिलक लगावेगा। नाम सुगंधी तिलक ललाट, त्रिसूल ना कोए वड्याईआ। अट्ठे पहर जोत प्रकाश, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। निरगुण हो के वसे साथ, निरगुण मेला सहिज सुभाईआ। निरगुण नज़री आए साख्यात, जोती जाता बेपरवाहीआ। भगत जन सारे मुखों कहिण आख, वाहवा भगवन तेरी वड्याईआ। तेरे दर ते होए दास, आस पुन्नी खुशी मनाईआ। तेरे मन्दिर मिल्या निवास, घर साचे वज्जी वधाईआ। तेरे उपजी विचों शाख़, अन्तिम तेरी गंढु बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच वखाया इक्को घर, जिस घर तेरा रूप नज़री आईआ। भगत वेख रूप सच, हरि सच सच दृढ़ाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा इक दूजे अन्दर गए रच, रचना आपणी फेर समझाइंदा। भगत दवारे भगवन नच्च, नाच भगतां आपणे घर वखाइंदा। धुर दा मार्ग धुरदरगाही दस्स, धुर दा मेला मेल मिलाइंदा। अग्गे रहिण ना देवां अड्ड, पिछला विछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। कूड़े नाते देणे छड्ड, शहिनशाह आपणे रंग रंगाइंदा। जिस दा लभ्भदे रहे चौथा पद, सो परम पुरख प्रभ आपणा घर वखाइंदा। बण के हाजी करो हज्ज, हुजरा इक्को नज़री आइंदा। प्रभ नेत्र निज दर्शन करो रज्ज रज्ज, अन्तिम तृष्ना भुक्ख बुझाइंदा। सच महल्ले वड़ो भज्ज भज्ज, सतिगुर दवारा इक खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, फेर वखावे उह घर, जिस घर विचों गुर अवतार पीर पैगम्बर भगत भगवान बाहर कढ्ढाइंदा।

६८ १५

✪ २८ हाढ़ २०२० बिक्रमी प्रीतम सिँघ साधू सिँघ दे गृह पिण्ड झण्डेर कलां ✪

हरिसंगत तेरा होए वाधा, वदी सुदी ना कोए वड्याईआ। गोबिन्द पिता पुरख अकाल दादा, घर साचे खुशी वखाईआ। दो जहानां फिरे भाजा, भगवन आपणी सेव कमाईआ। नव नौं चार पिच्छों रचया काजा, करनी करता आप कमाईआ। भूपत भूप वड शाहो राजन राजा, शहिनशाह आपणा खेल वखाईआ। साचे तेरा लावे भागा, वडभागी खुशी मनाईआ। भगत

भगवन्त साजण साजा, सच समग्री विच टिकाईआ। नाम निधान वजाए वाजा, सुर ताल समझ किसे ना आईआ। फड़ हँस बणाया कागा, सोहँ हँसा जाप जपाईआ। नाता तुट्टा जगत समाजा, चार वरन डेरा ढाहीआ। अन्तर उपजे इक वैरागा, हरि वैरागी आप उपजाईआ। पूरब जन्म दा मिल्या सज्जण साका, सगला संग निभाईआ। निरगुण निरवैर नज़री आया इक्को आका, अक्ल कलधारी बेपरवाईआ। होए सहाई नाथ अनाथा, निथाव्याँ देवणहार वड्याईआ। सति धर्म जणाए गाथा, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद मेहर नज़र उठाईआ। हरिसंगत तेरा वेखे माण, मन मनसा पूर कराईआ। गुर अवतार करन ध्यान, निज नेत्र नैण खुलाईआ। पीर पैगम्बर होए हैरान, नेत्र नैण नैण शरमाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त करया खेल महान, महिमां अकथ कथी ना जाईआ। सचखण्ड निवासी दाता दानी देवे दान, अनमुलड़ी वस्त आप वरताईआ। लख चुरासी विचों कर पहचान, हरिजन साचे बाहर कढ्ढाईआ। अन्तर आत्म दे ज्ञान, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। नाता छुट्टे जगत जहान, कूड़ा बन्धन कोए रहिण ना पाईआ। नज़री आवे इक निशान, दो जहानां वाली आप झुलाईआ। दीआ दीपक जोत जगे महान, तेल बाती विच ना कोए टिकाईआ। पुरख अबिनाशी मिले सच्चा काहन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। हरिसंगत तेरा सोहणा रूप, श्री भगवान आप उपाइंदा। तेरा डंका दो जहानां चार कूट, दहि दिशा आप सुणाइंदा। साहिब सुल्ताना सति सरूप, सति सतिवादी तेरे अन्दर आसण लाइंदा। जन्म कर्म दी मेटे भूख, माया ममता तृष्ना रोग गंवाइंदा। घर आत्म उपजे एका सूख, सुख सागर रूप वटाइंदा। सो गुरमुख सो हरिजन सच्चा पूत, जिस जन आपणी गोद बिठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी कार कमाइंदा। हरिसंगत तेरा सच्चा नूर, नूर नुराना आप धराईआ। श्री भगवान सर्ब कला भरपूर, खाली भाण्डे रिहा भराईआ। जन्म जन्म दे कटे जूड़, जोड़ी आपणे नाल जुड़ाईआ। मस्तक टिक्का बख्शे धूढ़, तिलक ललाटी जोत चमकाईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, घर साचे वज्जे वधाईआ। दाता दानी योद्धा सूर, सूरबीर होए सहाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर बख्शे कलयुग अन्त कसूर, कसम साचे नाम पवाईआ। इस्म आज़म इक्को दस्से हाज़र हज़ूर, हरि हज़रत वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा देवणहार एका एक आपणी सेव कमाईआ। हरिसंगत तेरा उत्तम नाता, नव नौं चार नज़र किसे ना आईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतार पीर पैगम्बर प्रभ दी पढ़दे गए गाथा, उच्च अगम्म अथाह चरण ध्यान लगाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण रूप वेखण आया आप तमाशा, शाह पातशाह आपणा फेरा पाईआ। दीन दयाल हो के जन भगतां देवे सच भरवासा, चरण

कँवल कँवल सरनाईआ। जन भगतां श्री भगवान आप गाए गाथा, गुरमुख गूढ़ी नींद सवाईआ। बिन करनीउँ पूरा करे घाटा, मेहर नज़र आप उठाईआ। काया भरे साचा कासा, वस्त अमोलक विच टिकाईआ। अगला खोल्हे भेव खुलासा, खुदी तकब्बर कोए रहिण ना पाईआ। दस्सण आया आपणा साका, साकी साचा नाम सुणाईआ। लेखा जाणे जोती जाता, जोती जोत डगमगाईआ। जन भगतां पूरा करे खाता, घाटा कोए रहिण ना पाईआ। पुरख अकाल बणया दाता, दाता दानी इक हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत रंग रंगाईआ। हरिसंगत तेरा उच्च महल्ला, श्री भगवान आप सुहाईआ। वेखणहारा इक इकल्ला, एकँकार अक्ख खुल्हाईआ। सच प्रकाश दीपक बला, जोती नूर नूर रुशनाईआ। धुर संदेसा इक्को घल्ला, करे नाम पढ़ाईआ। निरगुण हो फड़ाए पल्ला, सरगुण आपणे अंग लगाईआ। बिरहों वैरागी फिरे झल्ला, झलक इक्को नूर जणाईआ। मूर्ख हो के वड़ जाए काया डूंघी डल्ला, अन्ध अन्धेरे आपणा आसण लाईआ। करे खेल अछल अछल्ला, वल छल धारी समझ कोए ना पाईआ । मेहरवान हो के मारे इक्को नाम हल्ला, हौला सब दा भार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ । हरिसंगत तेरा सोहणा मुख, मुख उजल आप कराईआ। श्री भगवान लाहे आपणी भुक्ख, हरिजन तेरा दर्शन पाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर लए चुक्क, साची गोद आप उठाईआ। अग्गे हो के वेखे नेड़े ढुक्क, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। हरिसंगत तेरा सच मुनार, मुनी ऋषी बैठे ध्यान लगाईआ। चार युग करदे रहे विचार, समझ सके कोई ना राईआ। गुर अवतार देंदे रहे इशार, इशारयां नाल समझाईआ। पीर पैगम्बर दस्सदे रहे धार, धरनी धरत धवल वड्याईआ । सारे कहिन्दे रहे सांझा यार, यारी इक्को इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो साहिब वेख वखाईआ। हरिसंगत प्रभ वेखे एक, एकँकार वड्डी वड्याईआ। जिस दी अन्तिम साची टेक, सरनगति इक समझाईआ। तिस दा लेख सदा अलेख, लेखा लिख सके कोई ना राईआ। सो सतिगुर धर के आया भेख, भेखाधारी वेस वटाईआ। सचखण्ड निवासी रहे हमेश, ना मरे ना जाईआ। हुक्मे अन्दर भवाए विष्न ब्रह्मा शिव महेष, धुर संदेसा हुक्म मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। हरिसंगत तेरा सच्चा संग, सो साहिब आप निभाइंदा। दर दरवेश हो के नच्चे मलंग, घर घर आपणा डौरु डंक वजाइंदा। धुर दी रीती मंगे मंग, मांगत इक्को नज़री आइंदा। गृह मन्दिर वजा सच मृदंग, सोई सुरत शब्द उठाइंदा। उठ सवाणी वेख अनन्द, अनन्द आत्म इक जणाइंदा। परमानंद सच सुगंध, साची धार विच वखाइंदा। साचा ढोला गाओ छन्द, गीत गोबिन्द आप समझाइंदा।

दूर दुराडा कट के आया पन्ध, पांधी आपणा फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत वेख वखाइंदा। हरिसंगत तेरा दर अपार, अपरम्पर दए वड्याईआ। जिस दी सेवा करी सदा जुग चार, नव नौ चार ध्यान लगाईआ। छत्ती युग करदे गए पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। इकवंजा बवन्जा बणदे गए भिखार, पंज इक दो सीस झुकाईआ। नौ दर रोंदे गए ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। दसवें दहि दिशा मंगदे रहे सच्चा दीदार, दीद ईद चन्द कवण चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। हरिसंगत तेरा प्रेम सागर, लहर लहर नाल लहराईआ। श्री भगवान कलयुग अन्त करे उजागर, उजरत मूल ना लाए राईआ। सेवा कर के गया तेग़ बहादर, गोबिन्द बंस सरबंस भेंट चढ़ाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निर्मल कर्म करे उजागर, मुख उजाला आप वखाईआ। लोकमात देवे दात सच दवारे बख्शे आदर, आदर्श आपणा इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा सरनाईआ। हरिसंगत तेरा पुरख अकाल, गोबिन्द पिता गया समझाईआ। कलयुग वेखे आपणे लाल, लाल रंगीला बेपरवाहीआ। जोती नूर बेमिसाल, मिसल सके ना कोए बणाईआ। प्रगट होए विच जहान, निरगुण आपणा वेस धराईआ। भगत भगवान वेखे आण, भेव अभेदा आप जणाईआ। सच दवारे कट्ठे करे मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। ऊँच नीच राउ रंक गाओ साचा गान, गहर गम्भीर आप पढ़ाईआ। आत्म परमात्म मंगो दान, दाता दानी रिहा समझाईआ। सुरती शब्द मिलावा काहन, घर बंसुरी नाम सुणाईआ। पीर पैगम्बर देवे इलाही पैग़ाम, धुर संदेसा इक जणाईआ। कलमा नबी रसूल पढ़ो कलाम, कायनात खुशी मनाईआ। चार यारी करो प्रणाम, सजदा सीस जगदीश झुकाईआ। दर दरवेश बणो ग़ुलाम, दुरमति मैल रहे ना राईआ। नज़री वेखो इक अमाम, बेपरवाह नूर खुदाईआ। आबेहयात पीओ जाम, काया जामा दए बदलाईआ। हरिसंगत जणाए इक्को नाम, सोहँ नाम सच पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। हरिसंगत तेरा नाम करतार, करता आप जणाईआ। सोहँ रूप अगम्मी धार, पंज तत नज़र ना आईआ। आत्म परमात्म खेल सच्ची सरकार, शाह पातशाह आप खिलाईआ। वंडां वंडदा रिहा सदा जुग चार, चौकड़ी आपणा राह वखाईआ। होका देंदा रिहा विच संसार, गुर अवतार पीर पैगम्बर रूप वटाईआ। कलयुग आउणा कल कल्की अवतार, निहकलंक फेरा पाईआ। चार वरनां करे सच प्यार, साचा घर इक वखाईआ। पिछला लेखा दए निवार, अग्गे आपणा रंग रंगाईआ। नर नरेशा करे सच प्यार, नरायण आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवणहार वड्याईआ। हरिसंगत जिस होया मेला, प्रभ मिल्या बेपरवाहीआ। गुर गोबिन्द

दा बणया चेला, पुरख अकाल दया कमाईआ। कलयुग अन्तिम इक्को वेला, अख़ीर आख़र रिहा जणाईआ। सच स्वामी चाढ़े तेला, घर साचे सगन मनाईआ। लख चुरासी नालों हो के वेहला, प्यार भगतां नाल रखाईआ। ढूंडणहार जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत बेला, डूंग्घी कन्दर समुंद खाई वेख वखाईआ। सद वसणहारा धाम नवेला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत इक्को गंढु पवाईआ। हरिसंगत तेरी नाम गंढु, तन्दी तन्द आप बंधाइंदा। चार वरन पावे ठंड, ऊँच नीच ना कोए रखाइंदा। आत्म नाता जुड़या हँ, ब्रह्म आपणा मेल मिलाइंदा। लेखा जाणे डोरी संग पतंग, आकाश प्रकाश आप जणाइंदा। दूर दुराडा बेपरवाही साचा माही गुणी गहीरा कट के आया पन्ध, पांधी आपणा फेरा पाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां नालों हो अलग्ग जणाया छन्द, सोहँ ढोला आप अलाईआ। भगत भगवान इक दूजे दा माणो अनन्द, अनन्द आपणा आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत मेल मिलाईआ। हरिसंगत मेला सच दरबार, धुर दरबारी आप मिलाइंदा। कूड़ी क्रिया कर्म विचार, घर साचा इक सुहाइंदा। वरन बरन दा रोग निवार, दु:ख संसा ना कोए रखाइंदा। अमृत सरोवर इक नुहाल, दुरमति मैल धवाइंदा। चरण सरनाई सच्ची धर्मसाल, धर्म दवारा आप वखाइंदा। जिस गृह वसे शाह कंगाल, सो मन्दिर सोभा पाइंदा। नव नौं चार पिछों कर कर भाल, गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत मेल मिलाइंदा। निरगुण हो के बण दलाल, हरिसंगत इक्को गंढु पवाइंदा। पुरख अकाल हो के घाले घाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। हरिसंगत तेरा नाता जोड़, साचा रंग रंगाईआ। जगत विकार दर तों होड़, साढे तिन्न हथ्थ विचों बाहर कढ्ढाईआ। आप वेखे कर के ग़ौर, अन्दर वड़ वड़ फेरा पाईआ। लेखा लिखे रविदास चुमारा जो ढोए ढोर, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। साहिब स्वामी वसे कोल, कँवल नैण नूर रुशनाईआ। हरिसंगत देवे नाम अनमोल, अनमुलड़ी वस्त वरताईआ। अमृत रस भरे कौल, कँवल नाभ भवाईआ। मिले वड्याई उपर धौल, धरनी धरत सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान सदा सहाईआ। मेहरवान सदा स्वामी, मेहर नज़र उठाईआ। पुरख अबिनाशी अन्तरजामी, हर घट वेख वखाईआ। लेख चुकाए चार खाणी, बाणी आपणा नाम जपाईआ। शब्द मिलावा साचे हाणी, घर मन्दिर खुशी कराईआ। दाता हो के आया दानी, देवणहार दया कमाईआ। गुरमुख वेखे गुर गुर प्राणी, प्राण आधार सहिज सुखदाईआ। धर्म दुआर दी इक निशानी, सच प्रीती दए वखाईआ। भेव ना जाणे कोए विद्वानी, विद्वत सार कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत बणाए पुरख सुजानी, साचा राह इक वखाईआ। साचा राह जगत निराला, नर

हरि नरायण आप जणाइंदा। पुरख अकाल बण दलाला, सच दलाली मात कमाइंदा। चार वरन बणाए इक्को धर्मसाला, धर्म दवारा आप प्रगटाइंदा। सच प्रकाश दीपक होए निराला, जोती जाता नूर डगमगाइंदा। साचा मार्ग जगत सुखाला, सतिजुग सच सच समझाइंदा। आत्म परमात्म पाए साची माला, मन का मणका आप भवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, घर इक्को इक वसाइंदा। हरिसंगत घर वसे खेड़ा, खिड़की ताकी बंद आप खुल्हाईआ। चार युग दा मुक्के झेड़ा, चार वरन ना कोए लड़ाईआ। पुरख अबिनाशी मिल्या कर के आपणी मेहरा, मेहर नज़र उठाईआ। नाता जोड़या तेरा मेरा, मेरा तेरा आपणा रूप दरसाईआ। सचखण्ड वखाया खुल्ह्रा वेहड़ा, बिन भगतां दूजा नजर कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवणहार वड्याईआ। हरिसंगत पेख साचा घर, सचखण्ड निवासी आप वखाईआ। अग्गे पिच्छे पल्लू लैणा फड़, श्री भगवान रिहा फड़ाईआ। वारी वारी पौड़े जाणा चढ़, हरि करता आप चढ़ाईआ। साचे मन्दिर जाणा वड़, घर वज्जे नाम वधाईआ। पुरख अकाल अग्गे बैठा हरि, सच सिँघासण सोभा पाईआ। प्रीतम सिँघ लोकमात पुत्त वैराग ना कर, जिस दा पुत्त प्रभ आपणी गोद बहाईआ। हरिसंगत सारी लै जाए फड़, भाईआं नाल भाई लए मिलाईआ । रल मिल ढोला सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान लओ पढ़, पढ़यां अन्तिम लेखे लाईआ।

✪ २६ हाढ़ २०२० बिक्रमी साधू सिँघ दे गृह झण्डेर कलां ✪

हरि किरपा गुर प्रसादि, गुर प्रसादी संगत दया कमाईआ। हरि किरपा गुर सज्जण लाध, गुर सज्जण गुरमुख देवणहार वड्याईआ । हरि किरपा गुर देवे दाद, सतिगुर दाद जन भगतां झोली नाम भराईआ। हरि किरपा गुर मार आवाज़, सन्त सुहेले उठाए चाईं चाईंआ। हरि किरपा गुर कराए वड वड भाग, वडभागी आपणा रंग वखाईआ। हरि किरपा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि सतिगुर दया कमाईआ। हरि किरपा गुर प्रसादि अमोघ, दीन दयाल आप जणाइंदा। गुर गुर नाता धुर संजोग, धुर दरबारी मेल मिलाइंदा। वस्तू सति देवे चोग, धार अमृत नाल मिलाइंदा। जन्म अजन्म कटे रोग, चिन्ता सोग गंवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। हरि किरपा गुर देवे प्रसादि, प्रसादी आपणी दया कमाईआ। गुर प्रसादि अनरस स्वाद, रसना जिह्वा चक्ख ना सके राईआ। सो खाए जो होए विस्माद, बिस्मिल आपणा

आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। गुर प्रसादि कहे मेरा प्रेम मिठ्ठा, मिठ्ठत मेरे विच समाईआ। मेरा रस बिन गुरमुखां किसे ना डिठ्ठा, लख चुरासी फिरे तयाईआ। मैं अन्दर बाहर प्रेम प्रीती अन्दर बणां साचा मित्ता, मित्र प्यारा नाउँ धराईआ। जुग चौकड़ी करां हिता, बण हितकारी सेव कमाईआ। जगत दुआर रस होए फिक्का, फिक्की दिसे सर्ब लोकाईआ। जिस गुरमुख रस मेरा डिठा, सो गुरमुख गुर गुर घोली घोल घुमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र आप उठाईआ। गुर प्रसादि कहे मेरी बनावट नज़र किसे ना आईआ। त्रैगुण मेल सच मिलावट, मेल मिलावे बेपरवाहीआ। मैनूं खादयां गुरमुखां कदी ना आए थकावट, सुख सुख नाल उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद मेरा संग निभाईआ। गुर प्रसादि कहे मेरा साचा रस, हरि पुरख निरँजण आप भराईआ। जुग चौकड़ी मैं आवां भगतां हथ्थ, दूसर छोह ना सके राईआ। मेरे कोल बहि के पहलों गावण प्रभ दा जस, निज नेत्र ध्यान लगाईआ। दोए जोड़ आपणी अग्गे रखण आस, आसा प्रभ चरण मिलाईआ। निवण प्रीती करन हो के दास, दासी रूप वटाईआ। रसना गौण पवण स्वास, नेत्र नैण नैण शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद वेखणहार आप हो जाईआ। गुर प्रसादि कहे गुरमुख रखण चा, मेरे वल ध्यान लगाईआ। जुग चौकड़ी तक्कदे रहे राह, नेत्र नैण उठाईआ। कवण वेला श्री भगवान परम पुरख प्रभ निरगुण आपणा भोग लए लगा, सरगुण देवे आप वरताईआ। गुरमुख गुरमुख गुरसिख गुरसिख हरिजन हरिजन साचे सज्जण लैण खा, ख्वाहिश अवर रहिण ना पाईआ। प्रभ मिलण दा एहो लाह, ख़ाली भण्डारे रिहा भराईआ। देवणहार सच्चा शहिनशाह, दाता दर्दीआं दर्द वंडाईआ। गुर प्रसादि सांतक सति सीतल दए बणा, सति सरूप विच समाईआ। महाराज शेर सिंघ विष्णूं भगवान, जन्म मरन दुःख कटण दी देवे इक्को वार इक दवा, दूजी वार दुःख जन्म कर्म ना लागे राईआ।

✪ २६ हाढ़ २०२० बिक्रमी करतार पुर ज़िला जलन्धर बीबी प्रीतम कौर दे गृह ✪

गुरमुख आत्म मुक्की जुदाई, आवण जावण रहिण ना पाईआ। साहिब सतिगुर बेपरवाही, बेपरवाह दया कमाईआ। परम पुरख एका घर करे कुड़माई, बन्धन आपणा आप रखाईआ। सौहरे पईए धी जवाई, श्री भगवान रूप वटाईआ। वेखणहारा चाईं चाईं, दो जहानां पड़दा लाहीआ। ग़रीब निमाणयां पकड़े बाहीं, फड़ बाहों गले लगाईआ। देवणहारा ठंडीआं छाईं, मेहर नज़र तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन लेखा लेखे लाईआ।

आत्म परमात्म नाता बन्नू, संसा रोग चुकाईआ। भाग लगाए काया तन, तन तन्दूर अग्न बुझाईआ। मन वासना बन्ने मन, ममता मोह मिटाईआ। नाम अमोलक देवे धन, साची वस्त आप वरताईआ। लेखा जाणे भगती जन, भगवन होए सहाईआ। कर प्रकाश अन्धेर अन्नू, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। साचा नाउँ सुणा कन्न, सोहँ करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे लए तराईआ। आत्म आवण जावण जाए चुक्क, चुक्के लेखा सर्ब लोकाईआ। जन्म जन्म दी मिटे भुक्ख, तृष्ना रहिण ना पाईआ। मात गर्भ ना उलटा रुक्ख, जूनी जून ना कोए रखाईआ। कर्म वरन ना कोए दुःख, मरन नज़र कोए ना आईआ। साहिब सतिगुर आपणी गोदी लए चुक्क, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। उजल करे मात मुख, मुखड़ा जगत सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन लहिणा झोली पाईआ। आत्म पिच्छा जाए छुट्ट, परमात्म दए वड्याईआ। अगला घर जा के पुच्छ, जिस घर वज्जदी रहे वधाईआ। वेखणहार अबिनाशी अचुत, सति सरूप सोभा पाईआ। मेहरवान हो के जाए तुठ, दीन दयाल दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग विछुंनी मेल मिलाईआ। आत्म वेख सच दरवाज़ा, परमात्म आप खुल्हाईआ। जिस घर वसे ग़रीब निवाजा, परम पुरख प्रभ डेरा लाईआ। शाहो भूप वड राजन राजा, शहिनशाह इक्को हुक्म वरताईआ। आदि आदि जिस साजण साजा, अन्तिम आपणा रंग वखाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर फिरे भाजा, निरगुण निरवैर नज़र किसे ना आईआ। भगत सुहेला रखे लाजा, लाजावन्त आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सच दवारे रच के काजा, हरि करता खेल खिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साचे मेल मिलाईआ। आत्म परमात्म अन्त संजोग, धुर संजोगी आप कराइंदा। जन्म जन्म दा कटे रोग, कूड़ी क्रिया मोह मिटाइंदा। देवे दरस इक अमोघ, निरगुण नूर नज़री आइंदा। नाम चुगाए आपणी चोग, सोहँ अमृत रस मुख भराइंदा। सच दवारे एका भोग, परम पुरख प्रभ आप जणाइंदा। लहिणा चुक्के चौदां लोक, परलोक आपणी गंढु वखाइंदा। सचखण्ड दवारा अगम्म कोट, बंक इक्को इक वड्याइंदा। जिस मन्दिर जगे निर्मल जोत, अन्ध अन्धेरा नज़र कोए ना आइंदा। सो साहिब सतिगुर आत्म परमात्म मिलण दा रखे शौक, शहिनशाह नित नवित्त राह तकाइंदा। जन भगतां बख्शे एका ओट, ओट पुरख अकाल समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण इक्को घर वसाइंदा। आत्म घर सच वसेरा, परमात्म दए कराईआ। लोकमात बन्नू बेड़ा, दो जहान लए तराईआ। सचखण्ड वखाए साचा खेड़ा, घर साचा इक सुहाईआ। भगत वछल जन भगतां लाए डेरा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जुग चौकड़ी खुल्ह

रखे वेहड़ा, बंद ताकी ना कोए कराईआ। दूर दुराडा नज़री आए नेरन नेरा, घर सज्जण साहिब सच्चा पाईआ। कलयुग अन्तिम श्री भगवान पाया फेरा, पुरख अकाल वेस वटाईआ। जन भगतां नाता जोड़या तेरा मेरा, सोहँ करे सच पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन लेखा लेखे लाईआ। आत्म परमात्म लेखा ला, लहिणा दए चुकाईआ। पारब्रह्म प्रभ बण मलाह, ब्रह्म बेड़ा पार कराईआ। साचा पतण दए वखा, तट किनारा इक्को नज़री आईआ। साचे घर दए वसा, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। चरण कँवल लए बहा, देवणहार सची शरनाईआ। मेहर नज़र लए उठा, नेत्र नैण नैण मिलाईआ। पिछला लेखा दए मुका, अग्गे आपणा रंग वखाईआ। सचखण्ड दवारे लए वसा, घर इक्को सोभा पाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म मेला सहिज सुभा, गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत हरि हरि विच समाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन जपाए आपणा नाँ, तिन्हां अन्तिम आपणे विच समाईआ।

✪ २६ हाढ़ २०२० बिक्रमी जसवन्त सिँघ दे गृह करतार पुर ज़िला जलन्धर ✪

सो पुरख निरँजण वीह सौ वीह, दो जहानां वेख वखाइंदा। लेखा जाणे लख चुरासी जीअ, जीव जंत वेख वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर करदे रहे की, जुग चौकड़ी पड़दा लाहइंदा। भगत भगवान वंडदे रहे सीं, लोकमात खेल खिलाइंदा। चार युग बीजदे रहे बी, जुग चौकड़ी वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप समझाइंदा। वीह सौ वीह सो पुरख निरँजण, साहिब आपणी दया कमाईआ। दाता दानी दर्द दु:ख भय भंजन, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। जुग चौकड़ी बणदा रिहा सज्जण, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां बणत बणाईआ। नाम निधाना दस्सदा रिहा भजन, रसना जिह्वा कर कुड़माईआ। चरण धूढ़ जणौंदा रिहा मजन, मस्तक टिक्का ख़ाक रमाईआ। सचखण्ड दवारे बैठा रिहा मग्न, निरगुण नज़र किसे ना आईआ। जुग चौकड़ी पीर पैगम्बर पंज तत चोला रिहा बदल, बदली आपणा नाम कराईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड कमाए इक्को अदल, अदालत साचे घर लगाईआ। नाम निधान श्री भगवान जणौंदा रिहा ग़ज़ल, नग़मा इक्को इक प्रगटाईआ। साधां सन्तां दस्सदा रिहा मज़ल, रहबर बण बण फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। वीह सौ वीह बिक्रमी शाह सुल्ताना, शहिनशाह आपणी धार चलाइंदा। सचखण्ड निवासी हो प्रधाना, पुरख अबिनाशी वेस वटाइंदा। योद्धा सूरबीर बली बलवाना, बलधारी आपणा बल रखाइंदा। लेखा जाणे दो जहानां, ब्रह्मण्ड खण्ड भेव अभेद चुकाइंदा। देवणहारा धुर फ़रमाना, सच संदेसा नाम अलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव बख़्शे

इक ध्याना, चरण कँवल आप समझाइंदा। गुर अवतारां देवे दाना, दाता दानी दया कमाइंदा। पीर पैगम्बरां बन्ने गाना, मौली तन्द हथ्थ उठाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी खेले खेल महाना, ख़ालक ख़लक विच समाइंदा। साचा मन्दिर इक मकाना, सचखण्ड दुआर आप वंडाइंदा। शब्द अनाद धुर तराना, अनरागी राग सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। वीह सौ वीह बिक्रमी धुर दी धार, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, कलयुग वेला अन्तिम आईआ। गुर अवतार बण भिखार, दर बैठे सीस झुकाईआ। पीर पैगम्बर सजदा करन वारो वार, निउँ निउँ लागण पाईआ। उच्ची कूक कूक करन पुकार, दरोही दरोही तेरा नाम खुदाईआ। किरपा कर परवरदिगार, बेनज़ीर तेरी वड्याईआ। तोबा तोबा सारे गए हार, तुलबा नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार वाजां रहे मार, नेत्र नैण नैण उठाईआ। पुरख अबिनाशी लै अवतार, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। साचा नूर ना कोए उज्यार, निरगुण जोत चन्द ना कोए चमकाईआ। गुर का शब्द सके ना कोए विचार, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ धूंआँधार, सच प्रकाश ना कोए कराईआ। पढ़ पढ़ पुस्तक जीव जगत गए हार, हरि का रूप सति सरूप नज़र किसे ना आईआ। वरन बरन ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक राज राजान रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी सत दीप सृष्ट सबाई होए ख्वार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी घर मिले ना मीत मुरार, हरि सज्जण नज़र किसे ना आईआ। दुक्खां भरया सर्ब संसार, आत्म सुख ना कोए उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। वीह सौ वीह बिक्रमी तक्के राह, नेत्र नैण नैण उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर धुर लेखा गए समझा, बण कातब कलम छाहीआ। कलयुग अन्तिम वेला जाए आ, चार यारी संग ना कोए निभाईआ। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, भेव अभेदा आप जणाईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल दीन दयाल जोती जामा वेस लए वटा, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा भेव चुकाईआ। धुर संदेसा नर नरेसा एकँकार दए सुणा, साचा ढोला राग अलाईआ। साचा वेला दए वडया, गुर चेला इक्को घर बहाईआ। धुर संजोगी मेला लए मिला, जन्म कर्म दे विछड़े घर साचे गंढ पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। वीह सौ वीह बिक्रमी वेख तमाशा, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। हरि पुरख निरँजण करे हासा, नौं खण्ड पृथ्मी रही कुरलाईआ। एकँकार देवे ना किसे दिलासा, धीरज धीर नज़र किसे ना आईआ। आदि निरँजण नूर ना कोए प्रकाशा, अन्ध अन्धेर ना कोए मिटाईआ। श्री भगवान किसे ना वसे साथा, सुंञीं सेज सर्ब लोकाईआ। अबिनाशी

करता लख चुरासी जीव जंत करे निरासा, आसा पूर ना कोए वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ करवट लै ना बदले पासा, ब्रह्म ब्रह्माद माण ना कोए रखाईआ। चारों कुण्ट आया घाटा, साचा हट्ट ना कोए चलाईआ। परम पुरख प्रभ मिल्या किसे ना सज्जण साका, खुशीआं नाद ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। वीह सौ वीह बिक्रमी देवे धोखा, सृष्ट सबाई रही कुरलाईआ। वेख वखाए चौदां लोकां, चौदां तबक फेरा पाईआ। चार युग दा गाया गुर अवतारां पीर पैगम्बरां सुणे श्लोका, सुणनहार आपणा नाउँ वटाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान खाणी बाणी काग़ज़ कलम छाही लेखा वेखे पोथा, बोध अगाधा आपणा भेव चुकाईआ। कलयुग जीव जगत हँकारी अन्तिम होया थोथा, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। निर्मल नूर जगे ना कोई दीपक साचा जोता, जोती नूर ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। वीह सौ वीह बिक्रमी लेखा धरनी धरत धौल, धवला भेव ना कोए चुकाईआ। नव नौं चार पूरा करे कीता कौल, कीता इकरार भुल्ल कदे ना जाईआ। श्री भगवान खेले खेल आप अनभोल, अनभुल्ल आपणी कार कमाईआ। लख चुरासी रही डोल, सो साहिब कलयुग अन्त रिहा डुलाईआ। सच वस्त ना किसे कोल, ख़ाली झोली सर्ब कराईआ। हरि का भेव ना जाणे कोई पंडत पांधा रौल, मुल्ला शेख़ मुसायक अन्त कहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, घर साचे वज्जे वधाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी मंगे मंग, प्रभ अग्गे ध्यान लगाईआ। श्री भगवान तेरा सच संग, आदि जुगादि विछड़ ना जाईआ। कलयुग अन्तिम रिहा लँघ, पांधी आपणा पन्ध मुकाईआ। सृष्ट सबाई होई रंड, हरि कन्त ना कोए हंढाईआ। नों खण्ड पृथ्मी भेख पखण्ड, साचा राह ना कोए जणाईआ। आत्म भुल्लया सब नूं अनन्द, परमानंद विच ना कोए समाईआ। तेरा ढोला गीत गोबिन्द ना गाए कोई छन्द, संसा रोग ना कोए चुकाईआ। कूड़ी क्रिया घर घर वड़या घमण्ड, भाण्डा भरम ना कोए भंनाईआ। माणस जन्म सब दा दिसे भंग, अन्तिम करता कीमत कोए ना पाईआ। साहिब सतिगुर दीन दयाल स्वामी ठाकर तेरा वज्जे इक मृदंग, नाम निधाना आप सुणाईआ। लख चुरासी विचों गुरमुख विरला चढ़े अनोखा चन्द, सूरज चन्द वेख नैण शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी कहे भगवान, तेरे हथ्थ वड्याईआ। जन भगतां दे आपणा दान, वस्त अमोलक नाम वरताईआ। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर निज आत्म करे तेरा ध्यान, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। बिन पढ़यां दे ज्ञान, चौदां विद्या कम्म किसे ना आईआ। नाता तुट्टे पंज शैतान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना करे लड़ाईआ। घर दीपक जोत जगे महान, जोत

निरँजण करे रुशनाईआ। अनहद शब्द वज्जे धुन्कान, धुन आत्मक राग अलाईआ। अमृत मिले पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख रहे ना राईआ। साची सेजा कर परवान, आत्म परमात्म आपणी दया कमाईआ। घर मिल आ के साचे काहन, बंसुरी आपणा नाम सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी सरनाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी रखे आस, प्रभ तेरा ध्यान लगाईआ। जन भगत पुजा पूरब आस, पिछला लेखा दे मुकाईआ। अग्गे बख्श आपणा साथ, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म करे भोग बलास, साची सेजा सोभा पाईआ। घर मन्दिर वेखे साची रास, गोपी काहन नचाईआ। निर्मल जोत होए प्रकाश, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। लहिणा देणा चुक्के पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर डेरा ढाहीआ। लेखा चुक्के पूजा पाठ, हवन दीप ना कोए जगाईआ। नज़री आए इक्को पुरख समराथ, समरथ पुरख तेरी शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा आपणा घर, जिस घर इक्को नूर रुशनाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी करे याद, पिछली याद आप जणाईआ। कलयुग अन्त सुण फरयाद, बेपरवाह फेरा पाईआ। जन भगतां दे आपणी दाद, दौलत इक्को नाम वरताईआ। लख चुरासी विचों काढ, आवण जावण गेड़ कटाईआ। नाम सुणा अगम्म नाद, तुरिया बैठे नैण शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर मेला सहिज सुभाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी रही तक्क, तकवा तेरे उते रखाईआ। प्रगट हो पुरख समरथ, समरथ तेरी शरनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा मार्ग गए दस्स, वाक भविक्ख्त जगत जणाईआ। पंज तत काया चोला छड्ड के गए नट्ठ, दर तेरे जा के अलख जगाईआ। नाम निधान श्री भगवान तेरा रसना जिह्वा गए रट, मन का मणका आप भवाईआ। खाणी बाणी खोल्ह के गए हट्ट, जगत वणजारा राह चलाईआ। अन्तिम कलयुग खेड़ा होया दिसे भट्ठ, साचा रंग ना कोए रंगाईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत डूंघी कन्दर वेख्या नट्ठ नट्ठ, गुरमुख नज़र कोए ना आईआ। नाड़ बहत्तर सब दी उबले रत्त, रती रत ना कोए सुकाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश भुल्ली ब्रह्म मत्त, मनमति करी कुड़माईआ। ज़ात पात शरअ मज़्हब वज्जा फट्ट, पट्टी नाम ना कोए बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा आपणा दर, दर साचे अलख जगाईआ। श्री भगवान हो मेहरवान, बीस बीसा आप जणाईआ। जुग चौकड़ी कर परवान, कल अन्तिम वेस वटाईआ। निहकलंक नौजवान, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। दो जहानां सच्चा काहन, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। लख चुरासी वेखे आण, घर घर अन्दर पड़दा लाहीआ। भगत भगवन्त लए पहचान, जीव जंत खोज खुजाईआ। चरण कँवल बख्शे इक ध्यान, सुरती शब्द शब्द जुड़ाईआ। आत्म परमात्म मेले आण, दूई द्वैती पड़दा लाहीआ।

साचा मन्दिर वखाए श्री भगवान, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। दीपक जोत जगे महान, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। सर सरोवर अशनान कराए महान, दुरमति मैल दए धवाईआ। आवण जावण चुकाए काण, लख चुरासी फंद कटाईआ। अन्दर वड़ के देवे ज्ञान, बाहरों करे ना कोए पढ़ाईआ। नाम जपाए बिन रसना जिह्वा ज़बान, अजपा जाप आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी भगत प्यारा, हरि भगवन वेस वटाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यारा, सगला संग रखाईआ। ग़रीब निमाणयां पावे सारा, नाथ अनाथां दए वड्याईआ। साचा मन्दिर वखाए इक दवारा, प्रभ चरण सच्ची सरनाईआ। छप्पर छन्न ना कोए सहारा, चार दीवार ना कोए बणाईआ। सूरज चन्द ना कोए उज्यारा, निरगुण जोत दीप जगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर ढोला गावण साची वारा, वाहवा तेरी वज्जदी रहे वधाईआ। तेरा वसदा रहे सच्चा घर बारा, मन्दिर इक्को सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत लए उठाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी लाए भाग, वड भागी आप जणाईआ। जन भगतां खोले कूड़ी जाग, निज नेत्र नैण आप खुलाईआ। रातीं सुत्यां मार आवाज़, शब्दी नाद धुन शनवाईआ। त्रैगुण माया बुझा आग, अमृत मेघ इक बरसाईआ। आत्म परमात्म रच के काज, साचा नाता जोड़ जुड़ाईआ। पूरब जन्म दा धो दाग़, निर्मल नीर नीर वखाईआ। करे खेल गुरू महाराज, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। घर मिलावा कन्त सुहाग, जगत रंडेपा दूर कराईआ। मेल मिलावा मोहण माधव माध, मधुर धुन नाम सुणाईआ। लेखा चुके जगत समाज, जिस जन आपणा जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी तेरा वक्त सुहाउणा, सोहणी रुतड़ी नाल मिलाईआ। भगत भगवान वेख वखाउणा, दर वेखे चाईं चाईंआ। माणस जन्म लेखे लाउणा, मानुख आपणा दर बुझाईआ। साचा राग इक सुणाउणा, ढोला तेरा नाम वड्याईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म साची सेजा आप बहाउणा, सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां होए सहाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी भगतन मेला, हरि भगवन आप कराईआ। एका घर वसे गुरु गुर चेला, चेला गुर इक्को नूर रुशनाईआ। परम पुरख प्रभ सज्जण सुहेला, साहिब सतिगुर आप हो जाईआ। गुरमुख जणाए आपणा वेला, वार थित ना कोए वड्याईआ। सद वसणहारा धाम नवेला, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। अचरज खेल कलू कल खेला, कल कल्की वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत आप तराईआ। भगत जन आप तराउणा, तरनी तरन आप जणाइंदा। फड़ फड़ साचे मार्ग लाउणा, सतिजुग राह इक वखाइंदा। चार वरन दा डेरा ढाउणा, बरन अठारां

पन्ध मुकाइंदा। आत्म परमात्म हर घट नज़री आउणा, घर घर आपणा पड़दा लाहइंदा। सोहँ ढोला राग जणाउणा, दो जहानां आप पढ़ाइंदा । विष्न ब्रह्मा शिव शुकर मनाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचा आप उठाइंदा। वीह सौ वीह बिक्रमी तेरा सोहणा रंग, हरि महिबूब आप चढ़ाईआ। शाह सवारा अस्व घोड़े कस तंग, दो जहानां वाली जोत अकाली फेरा पाईआ। नाम निधान लै मृदंग, पुरी लोअ आकाश पाताल ब्रह्मण्ड खण्ड आप जगाईआ। वेख वखाणे हरि वरभण्ड, चार कुण्ट दहि दिशा नव खण्ड आपणा फेरा पाईआ। लख चुरासी गीत सुणाए सुहागी छन्द, सोहँ ढोला राग अलाईआ। सतिजुग दवारे आत्म परमात्म इक्को घर मिले अनन्द, अनन्द अनन्द विचों जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगत अन्तिम पार कराईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी तेरा खेड़ा, नगर ग्राम आप वसाईआ। अबिनाशी करता बन्ने बेड़ा, शौह दरया ना कोए रुढ़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुरमुख जो बैठे रहे कर के जेरा, श्री भगवान चरण ओट तकाईआ। कलयुग अन्तिम करे हक़ नबेड़ा, हक़ हकीकत वेख वखाईआ। नाता जोड़े तेरा मेरा, मेरा तेरा भेव रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे पार लँघाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी जन भगतां मीता, सो पुरख निरँजण फेरा पाईआ। धुर दरबार वखाए ठांडा सीता, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। इक्को रंग रंगाए हस्त कीटा, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। सोहँ शब्द माण चुकाए अठारां ध्याए गीता, अठ्ठ दस करे पढ़ाईआ। धाम वखाए इक अनडीठा, घर मन्दिर पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां अंग लगाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी सच प्यार, परम पुरखोतम आप जणाइंदा। जन भगतां करे अंगीकार, अंगण आपणा आप सुहाइंदा। वासना गंदी दए निकाल, सच सुगंधी नाम भराइंदा। चन्द नौचन्दी देवे चाढ़, अन्ध अन्धेर मिटाइंदा। पूरब लेखा लहिणा देवे पाड़, राए धर्म लहिणा नज़र कोए ना आइंदा। साचे पौड़े देवे चाढ़, चौथे पद आप बहाइंदा। कर प्रकाश बहत्तर नाड़, नाड़ी नाड़ी नूर वखाइंदा। आपे फिरे पिच्छे अगाड़, स्वच्छ सरूपी रूप आप प्रगटाइंदा। भगत सुहेला इक इकेला अन्तर आत्म करे प्यार, परमात्म आपणी दया कमाइंदा। साचे मन्दिर उच्च महल अटल देवे वाड़, मुकामे हक़ सोभा पाइंदा। मेल मिलावा परवरदिगार नज़री आए इक निरँकार, करता पुरख आपणी खेल वखाइंदा। दीवा बाती कमलापाती जोती नूर कर उज्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां देवे इक्को वर, अन्तिम साचे घर वसाइंदा। भगत वसेरा साचे घर, मिले अन्त वड्याईआ। साहिब सतिगुर लै जाए फड़, दर आपणी सेव कमाईआ। किरपा करे नरायण नर, नर हरि सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे इक्को दान, चरण प्रीती सच ध्यान, ध्यान ध्यान नाल मिलाईआ।

✪ पहली सावण २०२० बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ✪

सो पुरख निरँजण बणया आप, आपणे हथ्थ रखी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण बणया आप, प्रभ आपणी खेल रचाईआ। एकँकार बणया आप, अक्ल कल धार भेव ना राईआ। आदि निरँजण बणया आप, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। अबिनाशी करता बणया आप, आवण जावण ना कोए रखाईआ। श्री भगवान बणया आप, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। पारब्रह्म बणया आप, ना कोई पिता ना कोई माईआ। असुत्ते प्रकाश करया आप, रूप रंग रेख नज़र कोए ना आईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल होया आप, आप आपणी खेल रचाईआ। अजूनी रहित होया प्रभ आप, मात गर्भ ना कोए हंढ्ढाईआ। अनभव प्रकाश करया आप, आप आपणा नूर प्रगटाईआ। आपणी इच्छया प्रगटी आप, आप आपणी दया कमाईआ। आपणा भेव खुल्हाए आप, अभेव साचा सच समझाईआ। सचखण्ड दुआर बणाया आप, आप आपणी सेव लगाईआ। शाहो भूप बणया आप, राजन राज नाउँ वड्याईआ। दर दरवेश बणया आप, नर नरेश आप अख्वाईआ। निराकार बणया सज्जण साक आप, सगला संग निभाईआ। सेज सुहञ्जणी सुहाए आप, सोभावन्त डेरा लाईआ। दीनां बंधप बणे आप, बन्धन आपणे नाल रखाईआ। आपणा सगन मनावे आप, आपणी खुशी नाल समझाईआ। आपणी रंगण चढ़ावे आप, रंग रंगीला आप अख्वाईआ। आपणा कन्त बणे आप, नार आपणा आप आप हंढ्ढाईआ। आपणा वेस धरे प्रताप, वड प्रतापी भेव खुल्हाईआ। आपणा वेखे खेल तमाश, जोती जाता पड़दा लाहीआ। आपणा नूर करे प्रकाश, घर दीवा बाती आप जगाईआ। आपणी पूरी करे आस, आसा पूरन आप वखाईआ। आपणी आपे पाए रास, मण्डल मण्डप दए वड्याईआ। आपणा आपे देवे साथ, सगला संग निभाईआ। आपणा आप चलाए राथ, बण रथवाही खेल वखाईआ। आपणा आपे होए नाथ, अनाथ आपणा रूप वखाईआ। आपणा आपे लेखा लए भाख, धुर संदेस आप जणाईआ। आपणा मन्दिर आपे करे साख, सज्जण साहिब सहिज सुखदाईआ। आपणा खोल्हे आपे ताक, घर घर विच आप प्रगटाईआ। आपणा हुक्म देवे भविक्ख्त वाक, धुर संदेसा आप सुणाईआ। आपणी उपजावे आपे ज़ात, ज़ाहर ज़हूर वेस वटाईआ। आपणा आपे करे भोग बलास, घर साचे खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार आप कमाईआ। आपे होए पुरख समरथ, समरथ

आपणी कार कमाइंदा। आपणा मार्ग आपे दस्स, रहबर आपणी धार चलाइंदा। आपणे मन्दिर आपे वस, सच महल्ल आप सुहाइंदा। आपणे गृह आपे देवे रस, रस रसीआ आप हो जाइंदा। आपणी करनी आपणे रखे हथ्थ, हरि करता आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार आप कमाइंदा। साची कार करे प्रभ आप, आपणी दया कमाईआ। सचखण्ड अन्दर थिर घर थाप, वेखणहारा वेखे चाईं चाईंआ। पिता पूत बणाए वड प्रताप, आप आपणा नूर उपजाईआ। सुत दुलारा शब्दी साक, सज्जण इक्को इक अख्वाईआ। गृह मन्दिर खोल्ह ताक, घर साचे दए बहाईआ। मेहरवान हो अलखना अलाख, अलख इक्को इक जणाईआ। तूं मेरा मैं तेरे साथ, सगला संग निभाईआ। सचखण्ड दुआर पावे रास, थिर घर आपणा नाच नचाईआ। परम पुरख प्रभ खेल तमाश, आपणा आप वखाईआ। धुर दा भेव खोल्हे ख़ास, बिन हरि समझ किसे ना आईआ। जिस वेले रचना रची आदि, सो साहिब खुशी मनाईआ। खुशी विच दिती दाद, आपणी झोली आप भराईआ। तूं मेरा मैं तेरा मेरी तेरी भुल्ले कदे ना याद, सति सरूप सोहँ धार समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप जणाईआ। सोहँ धार बणया आप, निरगुण निरवैर दया कमाइंदा। सुत दुलारा बणया जाप, पिता पूत आप पढ़ाइंदा। थिर घर दुआरे होया पाक, पतित रूप ना कोए वखाइंदा। नूर उजाला इक्को ज़ात, गहर गम्भीर आप समझाइंदा। देवणहार सदा शाबाश, मेहर नज़र उठाइंदा। सुल्तान स्वामी पूरी आस, हरि करता आप कराइंदा। शब्द सुत तेरी साची रास, श्री भगवान वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप जणाइंदा। सोहँ बणया जाप आप, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सुत दुलार तेरा प्रताप, आपे आप दए बणाईआ। खेलणहार खेल तमाश, हरि ख़ालक वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। शब्द सुत बणया प्रभ आप, मात पित आप अख्वाईआ। निरगुण धार बणया जाप, निरवैर नाउँ वड्याईआ। दाता दान दातारी बणया आप, भिक्खक भिखारी आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची इच्छया आप अख्वाईआ। शब्द सुत खेल अकाला आप, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। विष्नूं नूर उजाला आप, आप आपणा नूर प्रगटाइंदा। ब्रह्मे देस बेमिसाल बणाया आप, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। शंकर धार बणया आप, धूंआँधार वेख वखाइंदा। सुन अगम्म बणया आप, आप आपणा पड़दा लाहइंदा। त्रै त्रै मेला कीता आप, गुर चेला खेल वखाइंदा। त्रैगुण माया प्रगटाई आप, आप आपणी कार कमाइंदा। पंज तत जणाया आप, आप आपणा संग निभाइंदा। प्रकृती खेल रचाया आप, आप आपणी कल वखाइंदा। सृष्टी बन्धन पाया आप, डोरी आपणा नाम जणाइंदा। दृष्टी भेव

चुकाया आप, आप आपणा महल्ल जणाइंदा। लख चुरासी वंड वंडाया आप, आपणा हिस्सा आप रखाइंदा। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज समाया आप, चारे खाणी खाण बणाइंदा। चारे बाणी राग अलाया आप, आप आपणी सुर समझाइंदा। चारे कुण्ट हुक्म वरताया आप, धुर फ़रमाना आप जणाइंदा। दहि दिशा रंग रंगाया आप, रंग रंगीला आप हो जाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड रचाया आप, पुरी लोअ आकाश प्रकाश धराइंदा। सूरज चन्द चमकाया आप, किरन किरन नाल मिलाइंदा। मण्डल मण्डप वडयाया आप, ताका आपणी तार हिलाइंदा। ज़िमीं असमान सुहाया आप, धरत धवल वेख वखाइंदा। जल जलधार जणाया आप, आप आपणा भेव छुपाइंदा। रुत्त माह वंड वंडाया आप, थित वार आपणे हथ्थ रखाइंदा। दिवस रैण राह चलाया आप, घड़ी पल आपणी कार कमाइंदा। आवण जावण खेल रचाया आप, लख चुरासी मेल मिलाइंदा। नार कन्त वंड वंडाया आप, आप आपणी गंढु पवाइंदा। कन्त भतार साक बणाया आप, दूल्हा दुल्हन वेस वटाइंदा। धुर संजोगी खेल कराया आप, एका दोआ बन्धन पाइंदा। दरस अमोघ दिखाया आप, आप आपणा पड़दा लाहइंदा। आत्म परमात्म संग रखाया आप, आप आपणी धार जणाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म समझाया आप, धुर दी सिख्या इक दृढ़ाइंदा। ईश जीव जगाया आप, जगदीशर आपणी कार कमाइंदा। जुग चौकड़ी वंड वंडाया आप, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाइंदा। चार वरनां खेल रचाया आप, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश राह वखाइंदा। धुर संदेस सुणाया आप, नर नरेश आप पढ़ाइंदा। निरगुण वेस वटाया आप, सरगुण आपणा राह जणाइंदा। विष्न सेव लगाया आप, सेवा सच सच समझाइंदा । गुर अवतार नाउँ धराया आप, पंज तत चोला आप हंढाइंदा। धुर दा शब्द सुणाया आप, राग अनादी राग अलाइंदा। खाणी बाणी भेव खुल्हाया आप, बोध अगाधा आप जणाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण घलाया आप, आप आपणा हुक्म वरताइंदा। गीता ज्ञान दृढ़ाया आप, दृढ़ विश्वाश इक समझाइंदा। अञ्जील कुरान सिखाया आप, काया कुरा खोज खुजाइंदा। खाणी बाणी बाण लगाया आप, तीर निराला इक चलाइंदा। पीर पैगम्बर समझाया आप, मुल्ला शेख़ मसायक राह वखाइंदा। लाशरीक अख्वाया आप, शिरकत विच कदे ना आइंदा। तुआरफ़ करे सर्ब प्रभ आप, ताअरीफ़ आपणी ना कोए जणाइंदा। सफ़ारश करे सदा प्रभ आप, जुग चौकड़ी भेव चुकाइंदा। शब्द अगम्मी देवे दात प्रभ आप, धुर दी वस्त आप वरताइंदा। निरगुण सरगुण देवे साथ प्रभ आप, सगला साथी आप हो जाइंदा। भगत भगवान प्रगटाए आप, भगती आपणा प्रेम समझाइंदा। सन्त साजण उठाए आप, अन्तर आत्म ज्ञान दृढ़ाइंदा। गुरमुख गोद बहाए आप, गुर गुर आपणा रंग रंगाइंदा। गुरसिख वेख वखाए आप, दो जहानां खोज खुजाइंदा। लख चुरासी गेड़ पवाए आप, लख चुरासी अन्दर आपणा डेरा आप लगाइंदा।

नित नवित्त शब्द राग जणाए पाठ आप, पाठशाला आपणी इक वखाइंदा। तीर्थ तट किनारा पनघट उपजाए आप, पत्तण इक्को इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जो करनी सो आपणी कार कमाइंदा। आदि जुगादी कार आप, हरि करता आप कराईआ। जुग चौकड़ी धार आप, दो जहानां आप जणाईआ। नित नवित्त खेल तमाश आप, गुर अवतार पीर पैगम्बर मण्डल रास रचाईआ। सदा सदा मेहरवान आप, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जो करना सो कर रिहा आपणी करनी आपणे विच छुपाईआ। साची करनी करे आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ । पूजा पाठ बणे आप, हवन सुगंधी आप समझाईआ। किनारा तीर्थ तट होवे आप, अमृत सरोवर धार आप वहाईआ। दीवा बाती तेल प्रकाश जोत नूर होवे आप, अन्ध अन्धेर आप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा खेल वखाईआ । आदि जुगादि होया प्रभ आप, आपणी दया कमाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दस्सदा रिहा जाप, विष्न ब्रह्मा शिव सर्ब पढ़ाईआ । निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खोल्हदा रिहा ताक, बंद कवाड़ी कुण्डा लाहीआ। निरवैर हो के बणदा रिहा साक, हरि सज्जण शहिनशाहीआ । परमात्म हो के बणदा रिहा ज़ात, आत्म आपणा रूप वखाईआ। पवित हो के बणदा रिहा पाक, पतित आपणा रंग रंगाईआ। आसावंद हो के पूरी करदा रिहा आस, तृष्ना मेट जगत लोकाईआ। बोध अगाधा भेव दस्सदा रिहा ख़ास, ख़ालस आपणा हुक्म वरताईआ। जुग चौकड़ी चले मेरी शाख, शहिनशाह इक्को इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हब कुछ आपणे विच समाईआ। हब किछ होया आप, आपणे विचों प्रगटाईआ। पारब्रह्म प्रभ माई बाप, पिता पुरख सहिज सुखदाईआ। आत्म देवे आपणा जाप, परमात्म करे पढ़ाईआ। साहिब स्वामी बण के वसे साथ, सगला संग निभाईआ। बेपरवाह हो के बणया रिहा पुरख समरथ, सार किसे ना आईआ। इशारयां नाल मार्ग रिहा दस्स, गुर अवतारां आप पढ़ाईआ। निरवैर हो के अन्दर रिहा वस, वास्ता आपणे नाल बंधाईआ । निरगुण नूर कर प्रकाश, जोत इक्को इक चमकाईआ। हुक्मे अन्दर दस्सदा रिहा आपणा प्रेम सिमरन पाठ, पूजा इष्ट इक समझाईआ । पत्तण मेला मिलौंदा रिहा साचे घाट, बेड़ी चप्पू नाम लगाईआ। सुहौंदा रिहा सुहञ्जणी खाट, खटीआ आपणा डेरा लाईआ। जुग चौकड़ी मिटौंदा रिहा वाट, भाणा आपणा हुक्म जणाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां शब्द अगम्मी देंदा रिहा भाख, भाख्या धुर दी आप जणाईआ । सृष्ट सबाई जीव जंत साध सन्त नौं खण्ड पृथ्मी जाओ आख, आख़र इक्को इक जणाईआ। कलयुग अन्त प्रगट होवे पुरख अबिनाश, अबिनाशी आपणी कार कमाईआ। निरगुण निरवैर नूर अकाल जोत करे प्रकाश, जोती जाता पुरख बिधाता पंज तत नूर तत नज़र कोए ना

आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी सृष्टी आपे वेख वखाईआ। आपणी सृष्टी वेखे आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। आपणी दृष्टी पावे आप, आप आपणा भेव चुकाईआ। आपणा इष्टी बणे आप, इष्ट देव गुरदेव स्वामी नमो सति समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल वखाईआ। आपणा खेल करे प्रभ आप, भेव आपणे हथ्थ रखाइंदा। आदि उपजाया जो अगम्मी जाप, सो अन्त आप प्रगटाइंदा। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी युग गुर अवतार पीर पैगम्बर बणे दास, दासी रूप सर्ब समझाइंदा। चरण कँवल दोए जोड़ मंगदे रहे प्रभ पूरी कर आस, आसा तेरी तृष्ना नाल मिलाइंदा। तेरे हुक्मे अन्दर चले पवण स्वास, आत्म परमात्म तेरा ढोला गाइंदा। साहिब दयाल ठाकर स्वामी हो सहाई अनाथां नाथ, दयावान हरि तेरी इक्को नज़र तकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी आपणा हुक्म आप वरताइंदा। आपे हुक्म फ़रमान आप, संदेसा देवणहारा अख्वाईआ। कलयुग अन्त प्रभ प्रगटे आप, आप आपणा पड़दा लाहीआ। आपणा नाउँ जपाए आप, दूजी करे ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणा आप समझाईआ। साचा लेख जणाए आप, आपणी बूझ बुझाईआ। नव नौ चार खेल खेलया आप, निरगुण सरगुण वेस धराईआ। कलयुग अन्तिम भेव चुकाए आप, जोती जामा नूर रुशनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर चार कुण्ट जो गए आख, आख़र सब दी पूर कराईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी वेखणहारा खेल तमाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप जणाईआ। जुग चौकड़ी खेल आप, प्रभ आपणा आप कराईआ। निरगुण सरगुण पूजा पाठ, शब्द नाम पढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम पूरी करे ख़ाहस, ख़ास आपणा राह वखाईआ। भगत भगवान देवे साथ, सगला संग निभाईआ। पूरब लेखा जाणे पुरख समराथ, देवणहार आप वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अगला भेव दए समझाईआ। अगला भेव खुलाउणा आप, आपणी दया कमाइंदा। सचखण्ड दुआर सुहाउणा आप, थिर घर आपणा डेरा लाइंदा। साचा राह चलाउणा आप, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। चार युग दा लहिणा झोली पाउणा आप, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां लेखा पूर कराइंदा। साचा हुक्म वरताउणा आप, धुर फ़रमाना आप समझाइंदा। साचा दाता अख्वाउणा आप, शाह पातशाह आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। साचा तख्त सुहाउणा आप, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। सुर साचा ताल चीने आप, रूप रंग रेख ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच विहार आप जणाइंदा। सच विहार करे प्रभ आप, बिवहारी आपणी कार कमाईआ। सच सिँघसण बहे प्रभ आप, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। सीस जगदीश ताज टिकाए आप, कल्गी तोड़ा सेव कमाईआ। जोती शब्दी

जोड़ा जोड़े प्रभ आप, जोड़ी आपणी गंढु पवाईआ। तन्द डोरी बणे प्रभ आप, तागा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जो करना सो कर वखाईआ। जो करना सो करदा आया आप, दूजे दर मंगण ना जाईआ। जो वरना सो वरदा आया आप, विच विचोला ना कोए बणाईआ। जिस रखणा तिस रखदा आया आप, सिर मेहर हथ्थ टिकाईआ। जिस घड़ना तिस घड़दा आया आप, बण ठठयार सेव कमाईआ। जिस फड़ना तिस फड़दा आया आप, आत्म परमात्म गंढु वखाईआ। जिस खड़ना तिस खड़दा आया आप, सचखण्ड साचे दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार आप कमाईआ। जो करना सो करे आप, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सचखण्ड दुआरे वड़े आप, आप आपणा नूर चमकाईआ। साचे तख्त चढ़े प्रभ आप, तख्त निवासी सोभा पाईआ। साचा हुक्म करे प्रभ आप, हुक्मरान इक अख्वाईआ। साचा बरदा दरवेश दर बणे प्रभ आप, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। सच ख़िताब देवे प्रभ आप, आप आपणा हुक्म वरताईआ। हक़ जनाब बणे प्रभ आप, बेताब नूर रुशनाईआ। सच महिराब बणे प्रभ आप, हुजरा इक्को इक वड्याईआ। सच महिबूब बणे प्रभ आप, मुहब्बत आपणे नाल पवाईआ। सच रफ़ीक बणे प्रभ आप, तौफ़ीक इक्को नाम खुदाईआ। काम मुफ़ीद करे प्रभ आप, मुफ्त आपणी सेव कमाईआ। सच ताकीद करे प्रभ आप, मुर्शद रसूल रसवा कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दा सच विहार, करे कराए एकँकार, कल आपणी आप कराईआ। सचखण्ड विहारा करे आप, आपणी धार चलाइंदा। नानक लिखारा बणे आप, धुर दा लेख आप समझाइंदा। पंच परवान करे आप, पंच प्रधान आप बणाइंदा। पंच सोहण दर राजान, पंचां का गुर इक ध्यान आप अख्वाइंदा। पंचां देवे दरगाह माण, सचखण्ड दुआर आप वड्याइंदा। पंचां रूप धरे भगवान, परम पुरख आपणी कार कमाइंदा। पंचां खेल करे महान, पंचम आपणी गंढु पवाइंदा। पंचम राज जोग सुल्तान, जोगीशर आपणा भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जो करनी सो कर वखाइंदा। जो करनी सो करे आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सचखण्ड दुआरे वड प्रताप, श्री भगवान आप अख्वाईआ। पंचम मीता ठांडा सीता पुरख अकाल दीन दयाल बण के सच्चा बाप, पिता पूत गोद उठाईआ। पंचम बणया साचा नात, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। पंज तत छड्ड के पारब्रह्म दी होए ज़ात, ज़ात ज़ात विच समाईआ। सचखण्ड दुआरे जा के पंजां इक्को वार दित्ता आख, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। अबिनाशी करता कहे मेरा सोहया घाट, घर वज्जी इक वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे साचे चढ़, आपणा हुक्म आपे दए लगाईआ। आपणा हुक्म लगाए

आप, हुक्मरान आप अख्वाइंदा। आपणा सीस झुकाए आप, जगदीश आपणी सेव कमाइंदा। आपणा माण वधाए आप, मेहरवान आप हो जाइंदा। आपणा निशान झुलाए आप, सति सतिवादी आप उठाइंदा। आपणा घर वसाए आप, सचखण्ड साचा आप सुहाइंदा। पंचम मेल मिलाए आप, आप आपणा पड़दा लाहइंदा। वीह सौ वीह बिक्रमी खेल कराए आप, ख़ालक नज़र किसे ना आइंदा। धुर दा राज कायम कराए आप, मुकामे हक़ नींह धराइंदा। दाइमी दाइरा नज़र ना आए किसे साख्यात, साफ़ आपणा पड़दा पाइंदा। नानक गोबिन्द पूरा करे भविक्ख्त वाक, सचखण्ड दुआरे सच अदालत वीह सौ वीह बिक्रमी आप लगाइंदा। सच अदालत लगाए आप, आपणा हुक्म आप वरताईआ। सच वकालत करे आप, वुकला नज़र कोए ना आईआ। सच शहादत देवे आप, शहीदी होर ना कोए जणाईआ। सच इबादत पढ़ाए आप, इबारत करे ना कोए लिखाईआ। सच तआकब करे आप, पिच्छा छोड़ कदे ना जाईआ। साचा आरफ़ बणे आप, आलम उल्मा ना कोए चतुराईआ। साची माअरफ़त दस्से आप, महिबूब मुहब्बत आपणे नाल लगाईआ। साचा सज्जण सुहेला बणे आप, सगला संग आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दी साची नींह, श्री भगवान आप जणाईआ। सचखण्ड घर सच वसाए आप, आपणी दया कमाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी तख्त सुहाए आप, तख्त निवासी डेरा लाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दर बुलाए आप, दर दरवेश रूप वखाईआ। पूजा पाठ सिमरत जुग चौकड़ी बुझाए आप, बुझारत आपणा नाम जपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड साचा रिहा वसाईआ। सचखण्ड दरबार लगाए आप, बीस बीसा खुशी मनाईआ। गुर अवतारां जपाए पहलों जाप, साची करे नाम पढ़ाईआ। पन्द्रां कत्तक रल मिल इकवंजा बवन्जा आखण पारब्रह्म तूं साडा बाप, दूजी माई नज़र कोई ना आईआ। तेरे विचों उपजी साडी ज़ात, ज़र्रा ज़र्रा वंड वंडाईआ। कतरा कतरा तेरा नूर बणया ख़ाक, पंज तत ख़ाक ख़ाकी बुत्त आया समझाईआ। दरोही साडे वेख ख़ाली हाथ, पल्ले गंढु नज़र कोए ना आईआ। तेरी ओट आए आख, आख़र तेरा इक इक्को घर जणाईआ। सेवा करके आए बणके दास, सेवक तेरा हुक्म कमाईआ। तेरी डाली तेरा पत तेरी शाख़, तेरी कली कली महकाईआ। तेरा भँवरा गूंजे बण के कमलापात, तेरा तेरा राग अलाईआ। तेरे दुआरे आ के बणे इक जमात, चार युग दी पिछली छड्ड पढ़ाईआ। तेरा नूर ज़ाहर ज़हूर दर्शन कीता साख्यात, शनाख़त अवर ना कोए जणाईआ। किरपा निधान पत लैणी राख, पतिपरमेश्वर तेरी ओट तकाईआ। सचखण्ड दुआरे तेरा साथ, संगी तू ही इक बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, चार युग दी पूरी आस कराईआ। गुर अवतार बणया प्रभ आप, गुर अवतारां रिहा समझाईआ।

आओ वेखो आपणा बाप, पिता पुरख अकाल पड़दा लाहीआ। सिफ्ती सिफ्त करो सच जाप, बिन अक्खरां अक्खर पढ़ाईआ। सौदा विके इक्को हाट, दूजा वणज ना कोए कराईआ। करया खेल पुरख समराथ, समरथ आपणी कार कमाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी सारे आए आख, प्रभ आवे वाहो दाहीआ। दो जहानां दए नजात, निज घर आपणा मेल मिलाईआ। जिस दे पिच्छे पा के आए वफ़ात, बण वफ़ादार सेव कमाईआ। मंगदे रहे प्याला सबर सबूरी आबे हयात, देवण देवे नूर इलाहीआ। सच पैग़ाम रसूल लिल्ला इलाही लिखदे रहे उपर काग़ज़ात, कज़ल कायम मुकाम दाइम दाइमी दाइरा हद्द ना कोए जणाईआ। कोई जाण ना सक्या प्रभ किवें बदले नज़ाम, नाज़म आज़म आपणा हुक्म जणाईआ। कलम्यां नाल कलमा मिला के कलमा करदे रहे कलाम, कलमा हथ्थ किसे ना आईआ। दरोही एसे करके करदे रहे सलाम, सभा तेरी दी समझ कोए ना पाईआ। सदी चौधवीं की करें मेरे वड्डे वड अमाम, तेरा अमल अमल विच किसे ना आईआ। मुच्छ दाढ़ी साडी मुंन देवें बण के हजाम, उसतरा तिक्खा इक नाम रसूल चलाईआ। असीं बणे बाले नढ्ढे अञ्याण, तेरा भेव कोई ना आईआ। तेरे दर ते कहीए श्री भगवान, जो करें सो तेरी रज़ाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी राह तक्कीए पन्द्रां कत्तक महान, सचखण्ड दुआरे हरि निरँकारे पीर ज़ाहरे तेरे होण इक मुज़ाहरे, मुजरे पिछले लेखे लाईआ। कलयुग अन्त आए किनारे, तुध बिन कवण पार उतारे, गोबिन्द सूरा इक ललकारे, जिस दी कल्गी चमकां मारे, दो जहान नैण उठाईआ। जिस दे गुरमुख सुत दुलारे, सचखण्ड सुत्ते पैर पसारे, पंजां इक्को रंग चाढ़े, रंगणहारा इक अख्वाईआ। सोहँ रूप आप निरँकारे, जिस दा अन्त ना पारावारे, जुग चौकड़ी गुर अवतार पीर पैगम्बर करदे गए निमस्कारे, नमों नमों आपणा सीस झुकाईआ। सो कादर करता करे खेल अगम्म अपारे, जगत रीती बेपरतीती, प्रतिनिध परम पुरख परमेश्वर ठोकर देवे लगाईआ। करे खेल इक अनडीठी, चल्ले धार अगम्मी रीती, कवण जाणे प्रभ तेरी कीती, कीता तेरा कहिण कोए ना पाईआ। श्री भगवान अग्गे दस्से आपणी बीती, जो आपणा हाल आपणे नाल चलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार युग दी समग्री गुर अवतार पीर पैगम्बर सचखण्ड दुआरे कट्ठी कीती, किते खाते आपणे विच पाईआ।

✪ २ सावण २०२० बिक्रमी बीबी बलवन्त कौर दे गृह अमृतसर ✪

सचखण्ड सच्चा शहिनशाह, सच तख्त आप सुहाइंदा। सो पुरख निरँजण बेपरवाह, बेपरवाही खेल कराइंदा। हरि पुरख निरँजण नाउँ धरा, धुर दी धार आप समझाइंदा। एकँकार हुक्म वरता, सच फ़रमाना आप अलाइंदा। श्री भगवान

सच निशान उठा, दो जहानां आप झुलाइंदा। अबिनाशी करता करनी रिहा कमा, निरगुण नज़र किसे ना आइंदा। पारब्रह्म प्रभ भेव अभेदा दए खुल्हा, पड़दा उहला आप चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा आप सुहाइंदा। सचखण्ड दुआर सुहाए आप, प्रभ आपणी जोत जगाईआ। निरगुण निरगुण सज्जण साक, हरि साचा संग रखाईआ। घर विच घर खोल्ह ताक, थिर घर देवे माण वड्याईआ। निरवैर पुरख आप उपाए आपणी ज़ात, सुत दुलारा शब्द साचा उठाईआ। धुर संदेसा नर नरेसा सच फ़रमाना देवे आख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म सचखण्ड दुआर, जुग चौकड़ी आप वरताइंदा। नव नौ चार बीते विच संसार, कलयुग अन्तिम वेला आइंदा। कट्ठे कर गुर अवतार, पीर पैगम्बर आप जणाइंदा। चार युग दी करो विचार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग भेव चुकाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खोल्ह किवाड़, खाणी बाणी पड़दा लाहइंदा। सृष्ट सबाई नौं खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चार कुण्ट दहि दिशा धूआं धार, साचा चन्द नज़र कोए ना आइंदा। गुर का शब्द जीव जंत कोई ना करे प्यार, सुरती शब्दी डोर ना कोए बंधाइंदा। आत्म परमात्म कोई ना करे वसाल, वसल हक़ ना कोए वखाइंदा। त्रैगुण माया कोई ना तोड़े जंजाल, जागरत जोत ना कोए जणाइंदा। काया मन्दिर अन्दर सच्ची दिसे ना किसे धर्मसाल, शिवदुआले ठाकर मन्दिर मस्जिद मट्ठ गुरुदुआर जीव जंत सर्ब फिराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी भेव चुकाइंदा। गुर अवतार सच दुआर, श्री भगवान आप उठाईआ। नेत्र खोल्हो वेख उग्घाड़, दो जहानां वाली दए समझाईआ। चारों कुण्ट हाहाकार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। निरगुण नज़र ना आए नर निरँकार, सरगुण रोवे मारे धाहींआ। माया ममता हउमे हंगता करे ख्वार, जूठ झूठ करे लड़ाईआ। ज़ात पात वरन गोत दीन मज़्हब चार कुण्ट करन हाहाकार, सति सन्तोख नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे भेव चुकाईआ। सचखण्ड दुआरे शाह सुल्तान, सो पुरख निरँजण सर्ब जणाइंदा। नेत्र खोल्ह वेखो मार ध्यान, दीन दुनी आप वखाइंदा। लख चुरासी अन्दर वड़या कल शैतान, माया ममता काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाच नचाइंदा। साचा नूर जोत प्रकाश चमके कोई ना भान, अन्ध अन्धेर ना कोए मिटाइंदा। परम पुरख सच प्रीती कोई ना देवे दान, आत्म मेल ना कोए वखाइंदा। घर सखी सवाणी नज़र ना आए शब्द सरूपी साहिब काहन, बंसुरी नाम ना कोए सुणाइंदा। आत्मक धुन उपजाए ना कोए धुन्कान, अनहद नादी राग ना कोए अलाइंदा। अमृत आत्म मिले ना पीण खाण, निझर झिरना ना कोए झिराइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सचखण्ड दुआरे सारे होए हैरान, नेत्र अक्ख ना कोए

खुल्हाइंदा। साबत रिहा ना किसे ईमान, सिदक सबूरी ना कोए हंढुाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा भेव आप चुकाइंदा। धुर दा भेव खोल्हे भगवान, सचखण्ड निवासी दया कमाईआ। कलयुग वेखो कूड़ होया प्रधान, चारों कुण्ट नाच नचाईआ। शरीअत विच वड़या शैतान, शमा सच ना कोए जगाईआ। चारों कुण्ट अन्ध अंध्यान, दीपक नूर ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर पारब्रह्म प्रभ आपे आप उठाईआ। गुर अवतार नेत्र खोल्ह दो जहान, ध्यान लगाईआ। पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड ना कोई ज्ञान, उत्भुज सेत्ज चले ना कोए चतुराईआ। सृष्ट सबाई लख चुरासी जीव जंत कलयुग बणया अन्त नादान, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। काया मन्दिर बंक सुहाए ना कोए मकान, दीपक दीआ घर करे ना कोए रुशनाईआ। नज़र ना आवे साचा काहन, निरवैर पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा रिहा वखाईआ। आपणा लेखा पूरब लैणा वेख, जुग चौकड़ी नाल रलाईआ। तेई अवतार आए धर धर भेख, लोकमात फेरा पाईआ। नाम स्नेहड़ा देंदे रहे संदेस, धुर दी धार आप जणाईआ। भगत अठारां करदे रहे हेत, हितकारी जोड़ जुड़ाईआ। लेखा लिखदे रहे पीर पैगम्बर औलीए मुल्लां शेख़, कुतब गौंस आपणा भेव जणाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद देंदे रहे उपदेश, कलमा नबी रसूल पढ़ाईआ। नानक गोबिन्द चेतन रहे चेत, चितवत ठगौरी कोए ना पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चार वरन खेली खेड, चार कुण्ट फेरा पाईआ। अन्तिम दस्स के गए अगम्मी भेत, भेव अभेद जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी दर दरवाज़ा इक्को इक सुहाईआ। सचखण्ड दुआर हरि जू चढ़या, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर फड़या, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। साचा ढोला इक्को पढ़या, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाइंदा। निरगुण धार सरगुण घड़या, घाड़त घड़त वेख वखाइंदा। निरवैर हो के अन्दर वड़या, रूप रंग रेख नज़र कोए ना आइंदा। ना जीवे ना कदे मरया, मरन जीवण वंड ना कोए वंडाइंदा। कलयुग अन्त लै अवतरया, जोती जोत जामा पाइंदा। सर्ब कलां भरपूर सूरा सरबँग एकंकरया, करनी करता आप कराइंदा। निरभउ होए कदे ना डरया, भय आपणा सर्ब रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच महल्ला इक वसाइंदा। सच महल्ले गुरू अवतार, सो साहिब आप बुलाईआ। पीर पैगम्बर दोए जोड़ करन निमस्कार, सजदा सीस जगदीश कराईआ। मुकामे हक़ सांझा यार, लाशरीक आसण लाईआ। जलवा नूर इक उज्यार, बेनज़ीर करे रुशनाईआ। वड अमाम सच्चा सिक्दार, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। रहमत कर आप निरँकार, निरगुण आपणी कार कमाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी

हो तैयार, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता सति सतिवादी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे एका जोत नूर रुशनाईआ। सचखण्ड दुआरे निरगुण जोत, निरवैर पुरख डगमगाइंदा। ना कोई किला ना कोई कोट, बंक दुआर आप वड्याइंदा। ना कोई समझ ना कोई सोच, ना कोई विद्या अक्खर पढ़ाइंदा। ना कोई खण्ड ब्रह्मण्ड परलोक लोक, चौदां तबक ना कोए वखाइंदा। ना कोई नाम नाद श्लोक, नाअरा हक़ ना कोए सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दवारा एकँकारा पुरख अबिनाशी आप सुहाइंदा। सचखण्ड दुआर सुहाए आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर इकट्ठे कीते आप, दीन मज़्ब ज़ात पात ना कोए लड़ाईआ। कलयुग अन्त सारे करो इक्को जाप, सतिजुग साची धार समझाईआ। श्री भगवान अगम्मी बाप, पुरख अकाल दए वड्याईआ। हरि सरनाई साचा नात, चार वरन ना कोए लड़ाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद गुर अवतार बणो इक जमात, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। लेखा चुकाए कायनात, कलमा नबी आप समझाईआ। जीव जंत प्याए आबे हयात, हयाती सब दी दए बदलाईआ। सतिजुग साची बख्शे दात, सति सतिवादी होए सहाईआ। धर्म दवारे लग्गे भाग, भगवन आपणा रंग रंगाईआ। कलयुग अन्त लख चुरासी विचों सन्त सुहेले विरले जाण जाग, जिन्हां आपणा भेव चुकाईआ। काया मन्दिर अन्दर दीपक जोत जगे चराग़, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाईआ । त्रैगुण माया बुझाए आग, अमृत मेघ इक बरसाईआ। सुरत सवाणी शब्द मिलाए सुहाग, कन्त कन्तूहल मेल मिलाईआ। धुरदरगाही बेपरवाही जन भगतां बख्शे सच्चा राज, सचखण्ड दुआर दए वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे समाज, साहिब सतिगुर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां करे पढ़ाईआ। तेई अवतार बिन रसना कहिन्दे, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। चरण सरनाई तेरी रहिंदे, दर तेरे अलख जगाईआ। पीर पैगम्बर सच भाणा सहिंदे, सिर सके ना कोए उठाईआ। गुर गुर धार चरणी ढहिंदे, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, घर तेरे वज्जे वधाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सुणो मीत, सो साहिब आप जणाइंदा। वीह सौ वीह बिक्रमी खेल करे अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आइंदा। पिछला लेखा वेखो मन्दिर मसीत, शिवदुआले मठ्ठ आप जणाइंदा। परम पुरख दी भुल्ले सारे रीत, निरगुण इष्ट ना कोए मनाइंदा । आत्म परमात्म ढोला गाए कोए ना गीत, सोहँ रूप ना कोए समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। गुर अवतार करो याद, पिछला लेखा रिहा जणाईआ। दोए जोड़ करदे रहे फ़रयाद, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। कलयुग अन्तिम देण दाद, निहकलंक नरायण नर वेस वटाईआ। निरवैर पुरख

देणा साथ, सगला संग निभाईआ। लहिणा देणा चुक्के पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल भेव चुकाईआ। चार युग दी पूरी करनी आस, आसा तृष्ना मेट मिटाईआ। भगत सुहेला हो के बणया दास, घर साचे सेव कमाईआ। निरगुण नूर कर प्रकाश, जोती जोत जोत रुशनाईआ। लेखा जाण पवण स्वास, पवण पवणां डेरा ढाहीआ। सिर रखणा आपणा हाथ, मेहर नज़र उठाईआ। तेरी महिमां बोध अगाध, गुर अवतार पीर पैगम्बर भेव कोए ना आईआ। अन्त ना पाया सन्त साध, बेअन्त तेरी शरनाईआ। लख चुरासी विचों काढ, चरण कँवल दे वड्याईआ। पुरख अकाल पिता रूप हो के कर लाड, पूत सपूते गुर अवतार गोद उठाईआ। तेरी नज़र ना आई किसे हद्द, पार किनारा समझ कोए ना पाईआ। पीर पैगम्बर तेरा करदे गए हज्ज, हज़रत तेरा हाज़र हज़ूर जलवा नूर इलाहीआ। कलयुग अन्तिम पड़दा लैणा कज्ज, तेई अठारां दस त्रै इक तेरी ओट तकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पन्ध मुकाया नट्ठ नट्ठ, बण पांधी फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर दर बैठे सीस झुकाईआ। दर तेरे झुकया सीस, दोए जोड़ पए सरनाईआ। कर किरपा हरि जगदीश, जगदीशर तेरी इक सरनाईआ। कलयुग अन्त तेरे नाम बिन ख़ाली होए खीस, माया ममता घर घर होए हल्काईआ। साची करे ना कोए हदीस, पट्टी नाम ना कोए पढ़ाईआ। तेरा खेल सदा अनडीठ, साहिब समझ कोए ना पाईआ। लहिणा चुका हस्त कीट, ऊँच नीच कोए रहिण ना पाईआ। काया काअबा दिसे मन्दिर मसीत, चार दीवारी वेखण कोए ना जाईआ। नज़री आए इक अतीत, त्रैभवन धनी स्वामी आपणा डेरा लाईआ। भगत भगवान करन सच प्रीत, प्रीती इक्को इक समझाईआ। दिवस रैण घड़ी पल वसणा आपे चीत, घर चेतन कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कलयुग अन्तिम आस रखाईआ। कलजुग अन्त अन्त कल आवांगा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां लेख चुकावांगा। सच सुअम्बर इक रचावांगा। दो जहान वेख वखावांगा। धर्म दुआरा इक प्रगटावांगा। निहकर्मी कर्म कमावांगा। पंज तत ना कोए वखावांगा। जोती जामा वेस वटावांगा। शब्द नाद धुन सुणावांगा। बोध अगाध पढ़ावांगा। हर हिरदा आपे सोध, हरि का रूप जणावांगा। कूड़ी क्रिया कोई ना करे योद्ध, योद्धा सूरबीर आपणा शब्द बणावांगा। जन भगतां दे दे दरस अमोघ, पिछला लेख चुकावांगा। भेव खुल्हावां अगला गोझ, सतिजुग राह समझावांगा। जो दर्शन रहे साचा लोच, तिन्हां लोचा पूर करावांगा। चौदां विद्या चौदां लोक कोई ना करे सोच, चौदां तबकां सोच भुलावांगा। निरगुण हो के सरगुण लवां खोज, खोजत खोजत आपणी कार कमावांगा। जन भगतां पूरब जन्म मेट के रोग, चिन्ता सोग सर्ब गंवावांगा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां सचखण्ड दुआर सुणा पहलां श्लोक,

सोहला इक्को इक वडयावांगा। बिन भगतीउँ देवणहारा मोख, मेहर नज़र इक उठावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां लहिणा देणा अन्त मुकावांगा। गुर अवतार लहिणा देणा आप मुकाएगा। पुरख अबिनाशी वेस वटाएगा। निहकलंक नाउँ रखाएगा। शब्द डंका इक वजाएगा। राउ रंक आप जगाएगा। सम्बल नगर इक वसाएगा। हो उज्यार नूर प्रगटाएगा। बण सौदागर वणज वखाएगा। बैठ इकागर हुक्म वरताएगा। जन भगतां देवे आदर, सचखण्ड दुआर सुहाएगा। निर्मल कर्म करे उजागर, दुरमति मैल धवाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा आपणे हथ्थ रखाएगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर चरण लग्ग, इक अरदास सुणाईआ। सो पुरख निरँजण सूरे सरबग्ग, शाह पातशाह तेरी सरनाईआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी युग जाण लँघ, अन्तिम कलयुग मात आईआ। तेरा ढोला गौंदे रहीए बण मलंग, निरगुण सरगुण नाच नचाईआ। जुग चौकड़ी चढ़दे रहिण चन्द, गुर गुर शब्दी रूप वटाईआ। अन्तिम सब दा मुके पन्ध, थिर रहिण कोए ना पाईआ। दीन दयाल साहिब इक बख्शंद, बख्शिश तेरे हथ्थ सुहाईआ। तेरी रचना कोट ब्रह्मण्ड, विष्न ब्रह्मा शिव बैठे सेव कमाईआ। आदि पुरख अबिनाशी करते तेरा कोई ना आया अन्त, बेअन्त कहिण कोए ना पाईआ। सारे गट्टीआं करदे गणत, अगणत अंक ना कोए जणाईआ। दर दरवेश भिखारी बणे मंगत, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। तूं साहिब सुल्ताना बोध अगाधा पंडत, तेरा निष्अक्खर समझ कोए ना पाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरा मंत, मन्त्र तेरा नाम अख्वाईआ। लख चुरासी आत्म परमात्म बणे कन्त, घर घर आपणी सेज हंढाईआ। पंज तत काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, लोकमात उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला अन्तिम आपणा मेल मिलाईआ। श्री भगवान हो मेहरवान, सचखण्ड निवासी आप जणाइंदा। कलयुग अन्त बेनन्ती करां आप परवान, मेहर नज़र उठाइंदा। नव नौं चार पिछों देवां दान, दाता दानी हो के दया कमाइंदा। प्रगट होवां विच जहान, निरगुण नूर डगमगाइंदा। सच दवारा खोल्ह महान, दीआ बाती इक टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा आप जणाइंदा। धुर दा लेखा आप जणावांगा। कलयुग अन्तिम वेस वटावांगा। कल कल्की फेरा पावांगा। चार वरन बण के दर्दी, दुखियां दर्द वंडावांगा। कलयुग अन्तिम वेख सृष्टी सड़दी, अमृत मेघ इक बरसावांगा। दीन मज़्हब ज़ात पात चार वरन जो लड़दी, झगड़ा कूड़ा सर्ब गंवावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां इक्को घर वसावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर इक्को घर वसणगे। रसना बोल हरि जैकार, ढोला लख चुरासी दस्सणगे। सतिजुग

साची चल्ले धार, सच दुआरे बहि के हस्सणगे। करे खेल आप करतार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन्दिर इक्को बहि के वसणगे। साचा मन्दिर इक बणावांगा। चार युग दे विछड़े मेल मिलावांगा। पूरब दुखड़े सर्ब गंवावांगा। सुक्के रुखड़े हरे करावांगा। उजल मुखड़े आप करावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव सुतड़े आप उठावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर कर इकरार कोई ना मुक्करे, मुकम्मल आपणा हुक्म वरतावांगा। चार कुण्ट दहि दिशा लुक्या कोए ना रहे नुकरे, नुक्ता नून सर्ब गंवावांगा। जिउँ गोबिन्द किहा पुत्तरे, पिता पुरख अकाल वेस वटावांगा। निहकलंक निरगुण धार आपे उतरे, मात पित ना कोए रखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा राह दरसावांगा। सतिजुग साचा राह चलाएगा। प्रभ आपणी दया कमाएगा। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश चार वरन इक्को गंढु पवाएगा। बरन अठारां मेट मिटाएगा। ऊँच नीच ना कोए वडयाएगा। राउँ रंक आप समझाएगा। दुआर बंक इक वडयाएगा। जन भगतां अन्दर डेरा लाएगा। साची रंगण रंगता रंग रंगाएगा। प्रेम भिखारी बण के मंगता, मंगत दवारे अलख जगाएगा। अबिनाशी करता भुक्खा नंगता, भुख्यां नंगयां सिर आपणा हथ्थ टिकाएगा। कोई भेव ना पाए पंडता, ग्रंथी पन्थी समझ कोए ना आएगा। मुल्ला शेख गढ़ होए हउँमें हंगता, निवण सो धार ना कोए कराएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासा पुरख अबिनाशा, गुर अवतारां दए धरवासा, सतिजुग साचा दस्से खुलासा, खुलासी कलयुग कोलों आप कराएगा। सतिजुग अन्त चलाए राह, बीस बीसा दया कमाईआ। निरगुण पुरख बण मलाह, जन भगतां बेड़ा कंध उठाईआ। जगत जहानों पार करा, साची मंज़ल आप मुकाईआ। देवणहारा नाम सलाह, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। गुर अवतार बणाए गवाह, शहादत इक्को वार भुगताईआ। बिन गुरमुखां कोई ना जपे धुर दा नाँ, धुर बाणी बाण ना कोए लगाईआ। कलयुग जीव रसना जिह्वा ढोला दिवस रैण रहे गा, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। बुद्धी काग वांग रही कुरला, माणक मोती हँस सोहँ चोग ना कोए चुगाईआ। दुरमति मैल दाग़ सके ना कोए धवा, दृष्ट इष्ट नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे आदम हव्वा, आदि शक्ति चतुर्भुज आपणी कार कमाईआ। सतिजुग मार्ग लाए आप, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सृष्ट सबाई एका जाप, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म बणाए सच्चा साक, सज्जण इक्को नज़री आईआ। घर विच घर खोले ताक, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। निरगुण जोत जगाए नूर ललाट, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। आत्म नज़री आए साथ, परम आत्म सगला संग निभाईआ। साची सेजा आत्म भोग बलास, घर मन्दिर वज्जे वधाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर पूरी आस, पुश्त दर पुश्त वेखे चाईं चाईंआ। होए सहाई

६५ १५

अनाथां नाथ, दीनन आपणी गोद उठाईआ। पार किनारा दस्से पत्तण घाट, खेवट खेटा जगत बेड़ा आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा भेव खुल्हाईआ। सतिजुग मार्ग चले जग, सो सतिगुर आप लाईआ। जन भगतां लख चुरासी नालों कर अलग्ग, वक्खरी धार दए समझाईआ। त्रैगुण माया बुझाए अग्ग, अग्नी तत ना कोए रखाईआ। नौं दवारे पार हद्द, दसवें आपणा पड़दा लाहीआ। देवे दीदार उपर शाह रग, दीन दयाल होए सहाईआ। बिन मक्कयों काअबयों कराए हज्ज, हुजरा काया बंक इक वड्याईआ। सच सिँघासण बहे सज, शाह नवाब बेपरवाहीआ। कलमा पढ़ाए इक्को हक़, हकीकत वेखे थाउँ थाईंआ। साचा मार्ग देवे दस्स, शरअ शरीअत रहिण कोए ना पाईआ। जिस मिले पुरख समरथ, सो ज़ात पात दीन मज़्हब ना कोए रखाईआ। इक्को ढोला गाए गाथ, तूं मेरा मैं तेरा दोहां इक्को नूर रुशनाईआ। श्री भगवान सतिजुग साचे देवे साची वथ, सोहँ वस्त झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दा सच विहारा, करे कराए आप निरँकारा, निरगुण आपणी सेवा आप कमाईआ। सचखण्ड लगाए आप प्रभ, लोकमात वज्जे वधाईआ। सन्त सुहेले सज्जण लभ्भ, सदा नाम सुणाईआ। अमृत जाम प्याए मध, मधुरा रस ना कोए वखाईआ। कूड़ी क्रिया पड़दा देवे कज्ज, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। नाता तोड़े लोकलाज, गुरमति इक समझाईआ। अन्दर वड़ के मारे शब्द आवाज़, रसना जिह्वा राग ना कोए सुणाईआ। बत्ती दन्द ना कोई देवे दाद, बिन दन्दां हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग दी साची धारा, जन भगतां अन्दर रखाए आप करतारा, करनी आपणी आप समझाईआ। सतिजुग नूर भगतन रंग, हरि भगवन आप चढ़ाइंदा। आत्म परमात्म सेज पलँघ, सुहञ्जणी आप सुहाइंदा। अन्दर बाहर इक अनन्द, गुप्त ज़ाहर आप जणाइंदा। समरथ स्वामी हो के वसे संग, साचा संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सतिजुग साचा धरनी धर, धरत धवल गोद सुहाइंदा। सतिजुग आए लोकमात, कलयुग मात्रा दए मिटाईआ। पुरख अकाल बख्शे दात, वस्त अमोलक गोलक आप टिकाईआ। नव नौ चार बणाए इक जमात, इक्को अक्खर नाम करे पढ़ाईआ। इक्को मंज़ल इक्को पत्तण इक्को घाट, घर इक्को इक सुहाईआ। इक्को साहिब पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता वेख वखाईआ। इक्को मण्डल इक्को रास, इक्को गोपी काहन नचाईआ। इक्को हर घट वसे पास, गृह गृह डेरा लाईआ। इक्को जुग चौकड़ी करे नास, इक्को जुग जुग राह वखाईआ। इक्को गुर अवतार पीर पैगम्बर करे दास, इक्को हुक्मी हुक्म वरताईआ। इक्को धुर संदेसा गया आख, सति सतिवादी साची कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक

नरायण नर, सतिजुग साचे तेरी धार, आप प्रगटाए विच संसार, संसा रोग कोए रहिण ना पाईआ। संसा रोग जाए चुक्क, दु:ख दर्द नज़र ना आईआ। कूड़ी क्रिया पैंडा जाए मुक्क, माया ममता ना होए हल्काईआ। जन भगतां श्री भगवान लए पुच्छ, अन्दर वड़ के फेरा पाईआ। गुरमुख सज्जण साचे उठ, सतिगुर पूरा आप जगाईआ। दयाल ठाकर हो के जाए तुठ, मेहरवान बेपरवाहीआ। सतिजुग सुहाए साची रुत्त, पत डाली आप महकाईआ। सच फुल्लवाड़ी पए फुट्ट, कली कली आप महकाईआ। गोबिन्द लेखा चुक्के पुत्त, पुरख अकाल झोली पाईआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी जो रिहा लुक, कलयुग अन्तिम पड़दा दए उठाईआ। सन्त सुहेले उजल करे मुख, मुखीआ होए आप शहिनशाहीआ। गुरमुख लख चुरासी आवण जावण पैंडा जाए मुक्क, राए धर्म दए ना कोए सज़ाईआ। मात गर्भ ना होवे उलटा रुख, दस दस मास ना अग्न तपाईआ। घर आत्म देवे सुख, गृह मन्दिर वज्जे शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत खुल्हाए साचा दर, दरस दिखाए अन्दर वड़, बाहरों नज़र किसे ना आईआ। भगत जनां प्रभ अन्दर वड़दा, किरपा निध निधान। साचे पौड़े आपे चढ़दा, नीकन नीका श्री भगवान। साचा ढोला आपे पढ़दा, गाए शब्द महान। सन्त सुहेला आपे वरदा, किरपा कर नौजवान। दर दुआरे आपे खड़दा, स्वच्छ सरूपी हो प्रधान। आपणी करनी आपे करदा, सचखण्ड निवासी खेल महान। कलयुग अन्तिम वेस धरदा, योद्धा सूरबीर बलवान। सम्बल नगर घाड़त घड़दा, साढे तिन्न हथ्थ इक मकान। गोबिन्द सूरा नाल रलदा, जोती शब्द मेल महान। सतिजुग साचे चुक्के पड़दा, पड़दानशीं वेखे मार ध्यान। सति धर्म लोकमात धरदा, धरनी धरत धवल देवे दान। कलयुग कूड़ा फिरे डरदा, नेत्र नैण सर्ब शरमाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी हो प्रधान। सति सतिवादी गहर गम्भीर, गवर भेव कोए ना आईआ। जन भगतां ठांडा करे सरीर, सांतक सति सति वरताईआ। अमृत बख्शे साचा नीर, कँवली कँवल कँवल भराईआ। जन्म जन्म दी कटे पीड़, हउमें हंगता रोग गंवाईआ। चोटी चढ़ के वेखे आप अखीर, मंज़ल इक्को इक सुहाईआ। सन्त सज्जण होए ना कोए दलगीर, जगत दलिद्दर रिहा गंवाईआ। तन वस्त्र अन्तिम पाटा चीथड़ दिसे चीर, थिर नज़र कोए ना आईआ। सचखण्ड दवारे हरि निरँकारे भगत भगवान भाईआं नाल मिलाए वीर, वेरवा आपणे हथ्थ रखाईआ। राह तक्के दर कबीर, नेत्र नैण नैण उठाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां बदले आप तकदीर, तबदीली सब दी दए वखाईआ। शरअ कट जगत ज़ंजीर, डोरी आपणा नाम बंधाईआ। प्रगट हो के ज़ाहरा पीर, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सन्त सुहेले गुरु गुर चेले, सचखण्ड निवासी आपे मेले, मेल

मिलावा इक्को घर जणाईआ। मेल मिलावा सतिगुर चरण, दूजा दर नज़र कोए ना आईआ। जन भगतां नेत्र खोल्हे हरन फरन, निज नैण करे रुशनाईआ। भय चुक्के मरन डरन, भउ अवर ना कोए वखाईआ। साचा नाउँ इक्को पढ़न, सोहँ राग अलाईआ। धुर दे पौड़े अन्तिम चढ़न, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव गुरमुख तेरी सेवा करन, दर घर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, चार युग दे विछड़े कलयुग अन्तिम आया खड़न, खटका होर रहे ना राईआ। भगत भगवान सचखण्ड दुआरे इक्को घर वड़न, दूजा दर वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साचे घर, घर सच दुआरा एकँकारा दीआ बाती इक उज्यारा, कमलापाती मीत मुरारा, साहिब सज्जण सचखण्ड साचे सच सिँघासण पुरख अबिनाशण डेरा लाईआ।

✪ २५ सावण २०२० बिक्रमी कपूर सिँघ दे गृह मोगा ज़िला फिरोजपुर ✪

सो पुरख निरँजण सच सुल्तान, शाह पातशाह वड्डी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण मेहरवान, बेपहचान बेपरवाहीआ। एकँकार वड बलवान, बलधारी इक अख्वाईआ। आदि निरँजण नूर महान, जोती जाता डगमगाईआ। अबिनाशी करता वसे सच भूमका अस्थान, सच दवारे सोभा पाईआ। श्री भगवान मर्द मर्दान, भेव अभेदा भेव ना राईआ। पारब्रह्म प्रभ खेल महान, खेलणहार इक अख्वाईआ। जोती नूर नूर कर प्रधान, दर घर साचे नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि खेल अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराइंदा। हरि पुरख निरँजण खोल्हे दुआरा, सचखण्ड साचा आप वसाइंदा। एकँकारा बन्ने धारा, थिर घर आपणा रंग रंगाइंदा। आदि निरँजण कर उज्यारा, जोती जाता नूर वखाइंदा। अबिनाशी करता पावे सारा, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। श्री भगवान मीत मुरारा, साचा सज्जण आप हो जाइंदा। पारब्रह्म आपणे रंग रहे करतारा, करता आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा खेल वखाइंदा। निरगुण खेल करे अगम्म, अगम्मड़ी कार कमाईआ। सो पुरख निरँजण बेड़ा बन्न्हे, हरि पुरख निरँजण सेव कमाईआ। एकँकार कहे धन्न धन्न, आदि निरँजण शुकर मनाईआ। श्री भगवान आपणा कहिणा आपे मन्न, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। अबिनाशी करता बण के जननी जन, सुत दुलारा इक्को जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप रचाईआ। आपणा खेल पुरख समरथ,

हरि करता आप रचाइंदा। निरगुण निरवैर हो प्रगट, निराकार कार कमाइंदा। सचखण्ड दुआर खोल्ह हट्ट, दर घर साचे सोभा पाइंदा। जोती जोत कर प्रकाश, नूर नुराना डगमगाइंदा। आपणी इच्छया आपणी आस, आपणे विचों आप उपाइंदा। आपे दासी आपे दास, बण सेवक सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच साची कार कमाइंदा। साची कार करे करतार, हरि करता वड वड्याईआ। साचा मन्दिर खोल्ह किवाड़, दरगाह साची सोभा पाईआ। नूर नुराना परवरदिगार, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। मुकामे हक़ सांझा यार, एका एक सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाईआ। साचा खेल करे सचखण्ड, सचखण्ड निवासी दया कमाइंदा। निरगुण नूर सूरा सरबँग, शाह पातशाह भेव खुल्हाइंदा। आपणे घर सच अनन्द, अनन्द इक्को इक उपजाइंदा। आपणा बन्धन पा बंध, साचा संग आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप रचाइंदा। साची खेल निरगुण धार, निरवैर पुरख आप रचाइंदा। आदि जुगादी हो तैयार, हरि करता कार कमाइंदा। सचखण्ड दुआरे बैठे ठांडे दरबार, घर साचा आप सुहाइंदा। जुग चौकड़ी वेख संसार, करनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। सेवा ला गुरू अवतार, गुर गुर शब्दी नाउँ वड्याइंदा। लख चुरासी भर भण्डार, चारे खाणी वंड वंडाइंदा। चारे बाणी बोल जैकार, नाअरा इक्को नाम समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप वखाइंदा। साची खेल करे गोबिन्द, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। आदि जुगादी बण बख्शंद, बख्शिश आपणी दए समझाईआ। निरगुण धार जोत सरूप वड सागर सिन्ध, गहर गम्भीर इक अख्वाईआ। शब्द अनादी साची बिंद, पूत सपूता एका जाईआ। सचखण्ड दुआरे अन्दर थिर घर वसाए इक्को पिण्ड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गृह मन्दिर दए वड्याईआ। साचा मन्दिर थिर घर, सचखण्ड अन्दर आप बणाइंदा। सो पुरख निरँजण देवणहारा वर, वर दाता आप हो जाइंदा। करे खेल नरायण नर, नर हरि आपणी कार कमाइंदा। सच महल्ले आपे खड़, सचखण्ड साचे जोत वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत दुलारे आप समझाइंदा। सुत दुलारे शब्दी सुत, हरि सच सच जणाईआ। जुग चौकड़ी सोहे तेरी रुत्त, रुत्त रुतड़ी आप महकाईआ। वेखे खेल अबिनाशी अचुत, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जुग चौकड़ी बैठा रहे लुक, सति सरूप नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच साचा दए समझाईआ। सच साचा हरि जणा, आदि आदि दए वड्याईआ। शब्द दुलारे बेपरवाह, बेपरवाही दए वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी झोली पा, तेरी गंढु बंधाईआ। जलवा जोती नूर धरा, ज़हूर इक्को इक रुशनाईआ। साचा मन्दिर

दए वसा, थिर घर वज्जे इक वधाईआ। सचखण्ड निवासी चढ़े चा, वेखणहारा चाईं चाईंआ। तेरी रचना दिती रचा, पंज तत मेला सहिज सुभाईआ। त्रै त्रै लेखा आप लिखा, लेखा जाणे बिन कलम शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार आप वड्याईआ। आदि पुरख दए वडया, हरि वड्डा वड वड्याइंदा। सुत दुलारे होए सहा, साची रमज़ आप अलाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी रचन रचा, पुरी लोअ आकाश पाताल तेरा रंग वखाइंदा। मण्डल मण्डप सोभा पा, गगन गगनंतर खोज खुजाइंदा। साचा हुक्म इक वरता, हुक्मी हुक्म आप सुणाइंदा। सचखण्ड निवासी सच्चा शहिनशाह, पातशाह आपणी कार कमाइंदा। जुग चौकड़ी कोई भेव ना सके पा, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह नज़र किसे ना आइंदा। तेरी गोदी दए सुहा, पिता पूत नाल मिलाइंदा। जोती जाता नूर रुशना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म वरते आदि, सुत दुलारे आप जणाईआ। तेरी रचना रच ब्रह्माद, ब्रह्मांड तेरी सरनाईआ। तेरा नाउँ वजाए नाद, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाईआ। तेरा लेखा बोध अगाध, भेव अभेद कोए ना पाईआ। निरवैर पुरख देवे तेरा साथ, तेरा सदा सहाईआ। हरि पुरख निरँजण सुणाए आपणी गाथ, एकँकार करे पढ़ाईआ। आदि निरँजण कर प्रकाश, दीपक दीआ इक जगाईआ। अबिनाशी करता पावे रास, गोपी काहन वेस वटाईआ। श्री भगवान दासी दास, सेवक सेवा आप कमाईआ। पारब्रह्म प्रभ वेखे खेल तमाश, ख़ालक ख़लक रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सुत दुलारे एह समझाईआ। सुत दुलारे चढ़या चा, चाउ घनेरा इक रखाईआ। आदि पुरख मिल्या इक मलाह, प्रभ दाता बेपरवाहीआ। साची रचना दए रचा, रच रच वेखे शहिनशाहीआ। सचखण्ड दुआरे आसण ला, थिर घर मेरी बणत बणाईआ। पुरी लोअ आकाश प्रकाश दए करा, ब्रह्मण्ड खण्ड वज्जे वधाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव नाल दए रला, धुर फ़रमाना हुक्म जणाईआ। त्रैगुण माया दए प्रगटा, पंज तत करे कुड़माईआ। लख चुरासी रंग रंगा, घट घट आपणा नूर वखाईआ। जुग चौकड़ी वंड वंडा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग अंग लगाईआ। धुर दी बाणी बाण लगा, बोध अगाध करे शनवाईआ। शब्द अनादी नाद अला, अनरागी आपणा राग सुणाईआ। निरगुण नूर जोत कर रुशना, दो जहान करे रुशनाईआ। पंज तत काया दए वडया, माणस मानुख सोभा पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लए प्रगटा, पारब्रह्म प्रभ बख्शे इक सरनाईआ। जुग चौकड़ी लए हंढा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पार कराईआ। नव नौ चार लेखा दए मुका, बेअन्त बेअन्त बेपरवाह आपणा भेव ना किसे जणाईआ। सुत दुलारे तेरा रंग लए रंगा, रंग रंगीला इक अख्वाईआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी दए खपा, जो उपजे सो रहिण कोए

ना पाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां धुर फ़रमाना दए समझा, सच संदेसा इक घलाईआ। वेद पुराण शास्त्र सिमरत गीता ज्ञान अञ्जील कुरान दए दृढ़ा, खाणी बाणी संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्दी सुत दए समझाईआ। शब्दी सुत छोटे बाल, हरि साचा सच जणाईआ। नेत्र खोल्ह कर ध्यान, हरि साची करे पढ़ाईआ। थिर घर तेरा मकान, सचखण्ड मेरी शनवाईआ। जुग चौकड़ी खेल महान, हरि करता आप कराईआ। गुर शब्दी देवे दान, शब्द अमोलक तेरी झोली पाईआ। निरगुण हो के जावीं काहन, सरगुण गोपी आप नचाईआ। परमात्म हो के देवीं दान, आत्म आपणा अंग बणाईआ। सच झुलाईं इक निशान, नाउँ निरँकारा इक वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर वेखीं आण, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा देण ब्यान, धुर दी धार इक दरसाईआ। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर करन कल्याण, कलमा नबी रसूल जणाईआ। साचा देणा धुर फ़रमान, बण फ़रमांबरदार सेव कमाईआ। तेरा मन्दिर सोहे मकान, महिमा अकथ इक वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्दी सुत आप समझाईआ। शब्द सुत मेरे सच दुलारे, सो साहिब आप जणाइंदा। तेरे सोहण सच मुनारे, थिर घर एका सोभा पाइंदा। निर्मल जोत जगे अगम्म अपारे, दीआ बाती नज़र कोए ना आइंदा। पुरख अबिनाशी एकँकारे, अक्ल कल धारी तेरी खेल रचाइंदा। जुग चौकड़ी कोई ना पारावारे, आदि अन्त कोए कहिण ना जाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी तेरे पनहारे, विष्न ब्रह्मा शिव तेरे चरणां सीस झुकाइंदा। पंज तत गुरू अवतार तेरे दर भिखारे, खाली झोली सर्ब भराइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण तेरी महिमां गायण गाणे, गीत संगीत आप बणाइंदा। तेरा रंग सूरा सरबँग इक्को माणे, पुरख अकाल तेरी सेज हंढाइंदा। तेरे हुक्मे अन्दर राजे राणे, शाह सुल्तान तेरी धार वखाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड तेरे भाणे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर तेरे हथ्थ रखाइंदा। सुत दुलारे मेरे लाल, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी दो जहानां बणीं दलाल, निरगुण सरगुण वणज कराईआ। तेरा मन्दिर सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक वड्याईआ। सच स्वामी वसे नाल, हरि विछड़ कदे ना जाईआ । तेरी लेखे लावे घाल, कीती घाल थाएँ पाईआ। आदि पुरख कहे कोई कर स्वाल, बण स्वाली मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त इक वरताईआ। सुत दुलारा मंगे मंग, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। शाह पातशाह सूरे सरबँग, तेरे हथ्थ मेरी वड्याईआ। जुग चौकड़ी दो जहान तेरा वजावां मृदंग, नाम नगारा हथ्थ उठाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल वेखां लँघ, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। हुक्मे अन्दर बदलां सूरज चन्द, ज़िमीं

असमान सदा सरनाईआ। नित नवित्त तेरा रहे अनन्द, दूजा रस ना कोए वखाईआ। तेरे मिलण दा सदा मुकया रहे पन्ध, पांधी बण ना फेरा पाईआ। मेरा प्रेम ना होवे भंग, तेरी प्रीती घट ना जाईआ। मैं सुत दुलारा तेरा फ़र्ज़ंद, फ़रमांबरदार इक अख्वाईआ। जुग चौकड़ी कोटन कोटि जाण लँघ, थिर कोए रहिण ना पाईआ। इक्को मंगां हरि जू मंग, दर तेरे अलख जगाईआ। तेरा रूप लख चुरासी हँ, ब्रह्म पारब्रह्म तेरा बंस इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे ओट तकाईआ। सुत दुलारे आप समझावांगा। तेरा हुक्म इक वरतावांगा। दो जहानां हुक्म समझावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव आप प्रगटावांगा। त्रैगुण माया गंढु पवावांगा। पंज तत इक्को गंढु वखावांगा। लख चुरासी वंड वंडावांगा। घट घट वासी वेस वटावांगा। पुरख अबिनाशी कार कमावांगा। पवण स्वास धार चलावांगा। जोत प्रकाश नूर रखावांगा। ज़िमीं असमान नाल मिलावांगा। कर ध्यान वेख वखावांगा। तेरा नाम ज्ञान जणावांगा। कर प्रधान लोकमात, पंज तत साचा जोड़ जुड़ावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हावांगा। लख चुरासी रंग रंगवांगा। चारे खाणी वेख वखावांगा। चारे बाणी भेव चुकावांगा। चारे कुण्ट फोल फुलावांगा। चारे युग पन्ध मुकावांगा। जुग जुग आपणी धार वखावांगा। गुर अवतार पैगम्बर नाल मिलावांगा। धुर दी धार आप समझावांगा।
१०२ सच गुफ़तार आप समझावांगा। काया तत आप वडयावांगा। ब्रह्ममत्त आप दृढ़ावांगा। चरण नत इक जुड़ावांगा। सति १०२
संग आपणे हथ्थ रखावांगा। अन्तिम चौकड़ इक्को भेव खुल्हावांगा। तेई अवतारां पड़दा लाहवांगा। भगत अठारां जोड़ जुड़ावांगा। ईसा मूसा मुहम्मद मुख नकाब उठावांगा। नानक गोबिन्द जोत जगावांगा। शब्द चोट नगारे लावांगा। पुरख अकाल इक्को ओट जणावांगा। निहकलंकी वेस वटावांगा। दुआर बंक इक सुहावांगा। सम्बल डेरा साचा लावांगा। राउ रंक रंग रंगावांगा। शब्दी सुत इक उपजावांगा। काया बुत्त ना कोए वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जोती धार इक रखावांगा। जोती धार इक रखावांगा। कलयुग अन्तिम वेस वटावांगा। नौ खण्ड पृथमी हुक्म मनावांगा। सत्तां दीपां पड़दा लाहवांगा। ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजावांगा। जेरज अंड भेव चुकावांगा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां मेट पन्ध, साचा मार्ग इक वखावांगा। जुग जन्म दी टुट्टी गंढु, गंढुणहार गोपाल स्वामी इक्को गंढु पवावांगा। चार वरन दा शब्दी तन्द, आत्म परमात्म खेल खलावांगा। पारब्रह्म ब्रह्म वसे संग, शरअ ज़ंजीर तोड़ तुड़ावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द सुत तेरा डंका इक वजावांगा। शब्द सुत तेरा डंका इक वजावेगा। श्री भगवान वेस वटावेगा। नर नरेश फेरा पावेगा। विष्न ब्रह्मा महेष सीस झुकावेगा। वसणहारा सचखंड साचे

देस, लोकमात नूर धरावेगा। मुच्छ दाढ़ी ना कोए केस, मूंड मुंडाया नज़र किसे ना आवेगा। कलयुग अन्तिम मेटे भेख, भेखी कोए रहिण ना पावेगा। लेखा चुक्के मुल्लां शेख, पीर पैगम्बरां गोद सवावेगा। आत्म परमात्म करे साचा हेत, हितकारी आपणा रंग रंगावेगा। लख चुरासी वेखे जगत संसारी खेत, गुरमुख गुर गुर आपणे घर वसावेगा। शब्द सुत तेरी खेडे खेड, हरि खडारी इक्को आवेगा। पीर पैगम्बर पहलों भेज, सच संदेसा आप सुणावेगा। श्री भगवन्त साचा कन्त कलयुग अन्तिम अन्त जोती नूर धर के तेज, तेज आपणा इक जणावेगा। जन भगतां माणे सेज, आत्म अन्तर सोभा पावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा लेखा आपणे हथ्थ रखावेगा। धुर दा लेखा आप मुकाएगा। पुरख अबिनाशी वेस वटाएगा। कल कल्की नाउँ धराएगा। साची वनगी इक वखाएगा। दुआर बंकी इक सुहाएगा। राउ रंकी आप उठाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा भेव आप चुकाएगा। साचा भेव प्रभू चुकावेगा। कलयुग अन्तिम वेस वटाएगा। निर्भय हो के आप आएगा। भउ सब दे सिर जणाएगा। मैं तूं पन्ध मुकाएगा। हां हूं ना कोए जणाएगा। आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाएगा। साची गाथन इक सुणाएगा। बातन बात आप पढ़ाएगा। कलयुग मेट अन्धेरी रातन, सतिजुग साचा चन्द चमकाएगा। वीह सौ वीह बिक्रमी देवे सच्चा साथन, संगी इक्को नज़री आएगा। कोटी कोट दर दरवेश खड़न त्रैलोकी नाथन, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाएगा। भगत भगवान पूरी करे आसन, गुरमुख गुर गुर आपणे अंग लगाएगा। वेखणहार पृथ्मी आकाशन, गगन मण्डल फोल फुलाएगा। जिस दी गुर अवतार पीर पैगम्बर बणे शाख़न, सो आपणी शनाख़त आपणे हथ्थ रखाएगा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण जीव जंत साध सन्त बीसवीं सदी सारे आखण, निहकलंक निरवैर पुरख प्रभ आएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द सुत तैनूं वडयाएगा। शब्द सुत तैनूं वडयावेगा। प्रभ इक्को सतिगुर आवेगा। दूजा रहिण कोए ना पावेगा। धुर संदेसा आप सुणावेगा। ब्रह्मा विष्न महेषा, चरणां हेठ रखावेगा। जिस नूं गुर अवतार पीर पैगम्बर करन आदेसा, सो पुरख निरँजण नज़री आवेगा। जिस दी विष्नूं माणे सांगोपांग बाशक सेजा, सो नेत्र नैणां नीर वहावेगा। चार युग सुनेहड़ा पहलों भेजा, धुर दी खबर आप पहुंचावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सदी बीसवीं आपणा पड़दा लाहवेगा। सदी बीसवीं पड़दा लौहणा ए। निहकलंक आप अख्वाउणा ए। शब्द डंक नाम वजाउणा ए। दो जहान आप जगाउणा ए। लख चुरासी भरम मिटाउणा ए। जन भगतां भेव खुलाउणा ए। साचे सन्तां मेल मिलाउणा ए। गुरमुखां आपणी गोद उठाउणा ए। गुरसिखां इक्को राह वखाउणा ए। चार वरन दा पन्ध मुकाउणा ए। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र

वैश इक्को घर वसाउणा ए। ना कोई दूई ना द्वैत, शरअ शरीअत मेट मिटाउणा ए। नानक गोबिन्द कर के गया हदाइत, पुरख अकाल इक मनाउणा ए। वीहवीं सदी पूरी करे शरायत, आपणे लेखे आपणा लेखा पाउणा ए। पन्द्रां कत्तक किसे ना जाणी पेश, राजे राणयां इक्को वार समझाउणा ए। साधो सन्तो छड्डु दयो भेख, पुरख अकाल दीन दयाल हुक्म धुर दा आप जणाउणा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआर इक वसाउणा ए। सुत दुलारे उठ के भज्ज, सो साहिब हुक्म जणाईआ। दो जहानां जा के गज्ज, उच्ची गरज नाम लगाईआ। कूड़ी क्रिया देवो तज, जगत अभिमान रहिण ना पाईआ। अबिनाशी करता श्री भगवान साहिब सुल्तान सच सिँघासण बैठा सज, साढे तिन्न हथ्थ दए वड्याईआ। जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग इकावन बावन जो पड़दा रिहा कज्ज, सो सावण खुशी मनाईआ। बिन मक्कयों बिन काअबयों कराए हज्ज, घर हाज़र हुजरा इक वखाईआ। साचे तख्त बैठ समरथ, महिमा अकथ दए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर संदेसा आप सुणाईआ। शब्द सुत साचे मीत, मित्र प्यारे तेरी वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा गौंदे रहे गीत, ढोला सोहला सिफ्त सालाहीआ। तेरे हुक्मे अन्दर मन्दिर मसीत, शिवदुआले मट्ठ तेरी करन वड्याईआ। तेरा खेल सदा अनडीठ, जग नेत्र नज़र ना आईआ। बिन भगतां कोई ना करे तेरी प्रीत, प्रीतीवान बैठे मुख छुपाईआ। मेहरवान हो के देवीं भीख, भिच्छया आपणी इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तेरा लेखा तेरे हथ्थ फड़ाईआ। शब्द दुलारे तेरा सुल्तान, सो साहिब सच जणाईआ। जुग चौकड़ी हुक्मरान, आपणा हुक्म मनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगण दान, दर दरवेश सीस झुकाईआ। रसना जिह्वा शब्दी ढोला करदे गए कलाम, कायनात कर पढ़ाईआ। कलयुग अन्त प्रगट होए इक अमाम, बेपहचान बेपरवाहीआ। लेखा जाणे दो जहान, निरगुण सरगुण धार वखाईआ। गुर अवतार मन्नदे गए इक्को काहन, सो साहिब सच्चा शहिनशाहीआ। भगत करदे गए प्रणाम, बन्दना बंदगी इक समझाईआ। कल कल्की प्रगट होवे आण, कल कलेश दए खपाईआ। जिस दा शब्द झुल्ले निशान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सदी बीसवीं होए प्रधान, बीस बीसा इक अख्वाईआ। सब नूं मन्नणी पए आण, सीस सके ना कोए उठाईआ। कलयुग जीव होए अञ्याण, सुरती शब्द ना कोए जुड़ाईआ। चारों कुण्ट फिरन सुआन, घर मिल्या ना सच्चा माहीआ। पंज तत मगर लग्गा शैतान, शरअ करे लड़ाईआ। सिदक सबूरी मिल्या ना सच ईमान, अमल आमल ना कोए कमाईआ। सच हदीस ना पढ़ी कुरान, काया कुरा ना खोज खुजाईआ। मन्त्र नज़र ना आया सति नाम, नाम सति ना कोए समझाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दे

के गए पैग़ाम, परा पसन्ती मद्धम बैखरी राग सुणाईआ। बिन सतिगुर पूरे करे ना कोई पहचान, अन्तर नज़र किसे ना आईआ। जगत विद्या ना कोई ज्ञान, चौदां विद्या नैण शरमाईआ। चौदां तबक होए हैरान, चौदां लोक सार ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सुत दुलारे शब्दी फड़, तेरी कार दए समझाईआ। प्रभू तेरी कार समझावेगा। वीह सौ वीह बिक्रमी भेव खुलावेगा। इक्की सावण रुत्त वडयावेगा। जो बैठे लुक लुक, तिन्हां फड़ के बाहर कढ्ढावेगा। शब्दी शब्द लए पुच्छ, रसना विवाद ना कोए वधावेगा। जे कोई है किसे कोल कुच्छ, कुशता सब दा आप बणावेगा। पिछला पैंडा सब दा रिहा मुक्क, अग्गे इक्को धार वखावेगा। सन्त सुहेले गोदी चुक्क, चारों कुण्ट आप प्रगटावेगा। हरि का शब्द साचा शेर रिहा बुक्क, लख चुरासी जम्बक सिर ना कोए चुकावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द सुत इक्को इक उठावेगा। शब्द सुत दुलारा उठेगा। लख चुरासी जीवां जंतां साधां सन्तां कोलों पुछेगा। अन्दर वड़ साढे तिन्न हथ्थ अन्दर कोए ना लुकेगा। निरगुण सरगुण चले धार, सरगुण निरगुण अग्गे झुकेगा। आदि जुगादी इक प्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि नरायण इक्को तुठेगा। नर हरि नरायण दया कमाइंदा, हरि सतिगुर मेहरवान। जुग चौकड़ी वेस वटाइंदा, निरगुण सरगुण हो प्रधान । कलयुग अन्तिम वेखण आइंदा, योद्धा सूरबीर बली बलवान। सन्त सुहेले नाल मिलाइंदा, जुग चौकड़ी कर परवान। अन्तर वड़ वड़ आप उठाइंदा, बाहरों बोले ना कोई ज़बान। दीपक जोती इक जगाइंदा, दीआ जगे सच महान। शब्द अनादी नाद सुणाइंदा, अनहद राग सच्ची धुन्कान। अमृत आत्म जाम प्याइंदा, तृष्ना भुक्ख मेट निशान। आत्म सेजा सोभा पाइंदा, सच तख्त बैठ सुल्तान। कर्म कांड मेट मिटाइंदा, पंज तत नेड़ ना आए शैतान। ब्रह्म मति इक समझाइंदा, आत्म परमात्म कर ध्यान। घर मन्दिर इक वखाइंदा, घर घर विच सोहे मकान। हरिसंगत आप जगाइंदा, जागणहार श्री भगवान। निज नेत्र आप खुल्हाइंदा, दोए लोचण बंद दुकान। साचा खेत्र इक वखाइंदा, जिस घर वसे मेहरवान। रुत्त चेत्र आप वड्याइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा दान। दाता दानी आए आप, प्रभ वड्डा वड वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा जपदे गए जाप, सो सच रिहा दृढ़ाईआ । जन भगत जणाए आपणा आप, भेव अभेदा भेव खुल्हाईआ। आत्म परमात्म मेल करे वड प्रताप, जगत संताप रहिण ना पाईआ। सोहँ शब्द साचा पाठ, पूजा इक्को इक समझाईआ। आत्म सरोवर तीर्थ ताट, साचा रंग इक रंगाईआ। फड़ उतारे आपणे घाट, पत्तण आया चल के माहीआ। कलयुग पिछली मुक्की वाट, सतिजुग साचा राह जणाईआ। हरिसंगत मिल के गाओ

साची गाथ, चार वरन इक पढ़ाईआ। नानक गोबिन्द सब दे वसे साथ, राम कृष्न विछड़ कदे ना जाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद बणे दास, बण सेवक साची सेव कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव पूरी करे आस, निरासा कोए नज़र ना आईआ। जिस दी उपजे धुर तों शाख़, सो शनाख़त रिहा समझाईआ। मिल सतिगुर कोई ना होए उदास, सतिगुर शब्द उदासी दए मिटाईआ। भरम भउ दा करो विनास, अबिनाशी करता दया कमाईआ। श्री भगवान सदा सहाई अनाथां नाथ, जगजीवण दाता वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत संग समाईआ। हरिसंगत तेरा लेखा सच, सो सतिगुर आप लगाइंदा। मन बन्दर ना जाए नच्च, मन मनसा मेट मिटाइंदा। लूं लूं अन्दर आपे रच, साढे तिन्न करोड़ रंग रंगाइंदा। लेखे लग्गे काया कच्च, कंचन गढ़ आप वसाइंदा। सति धर्म दा मार्ग दस्स, चार वरनां जोड़ जुड़ाइंदा। पुरख अकाल मेला हस्स हस्स, आत्म परमात्म संग निभाइंदा। प्रेम प्याला पीओ रस, निझर झिरना आप झिराइंदा। इक दूजे नूं दयो दस्स, श्री भगवान दया कमाइंदा। जिस दे पिच्छे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत रहे नट्ठ, चारों कुण्ट नज़र किते ना आइंदा। जोग अभ्यास करदे पूजा पाठ, तीर्थ तट डेरा लाइंदा। सो पुरख समरथ कलयुग अन्तिम हो प्रगट, गोबिन्द खोल्लया इक्को हट्ट, सम्बल आपणा राह जणाइंदा। बाहरों दिसे गंवार जट्ट, अन्दरों मारे शब्द निशाना तीर फट्ट, चिल्ला नज़र किसे ना आइंदा। जो चरणी जाए ढट्ठ, तिस बिन हथ्थां लए चक्क, करे नबेड़ा हक़ो हक़, हकीकत आपणी आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिसंगत इक्को घर वसाइंदा। हरिसंगत तेरा वसे खेड़ा, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। अबिनाशी करता बन्ने बेड़ा, श्री भगवान चप्पू नाम लगाईआ। कर्म कांड दा कटे जेड़ा, बन्धन कोए रहिण ना पाईआ। शरअ शरीअत दा खुल्ला वेहड़ा, लाशरीक करे खुदाईआ। इक्को नाम जणाए तूं मेरा मैं तेरा, आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को गंढु पवाईआ। लख चुरासी आवण जावण पतित पावण चुकावे गेड़ा, दस दस मास अग्न ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिसंगत लेखा लेखे पाईआ। हरिसंगत लेखा जाए लग्ग, लगावणहार गोपाल स्वामी दया कमाइंदा। मिल्या मेल सूरे सरबग्ग, सो साहिब वेख वखाइंदा। त्रैगुण माया लग्गी बुझे अग्ग, झूठी ममता मोह मिटाइंदा। दरस दिखाए उपर शाह रग, शहिनशाह आपणा पड़दा लाहइंदा। अमृत जाम प्याए मध, रस इक्को इक वखाइंदा। नौं दुआरे पार हद्द, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। दस्म दुआरी आपे सद्द, सद्दा आपणा नाम सुणाइंदा। हरिमन्दिर गुरमुख बीह के जाओ सज, सच दुआर इक वड्याइंदा। मुरीदो मुर्शद करो हाज़र हज्ज, हाज़र हज़ूर इक्को नज़री आइंदा। लोक लज्जया देवो तज, लोकलाज

भगतां संग संग ना कोए निभाइंदा। श्री भगवान तुहाढे अन्दर वड़े भज्ज, आउँदा जांदा हथ्थ किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिसंगत रंग रंगाइंदा। हरिसंगत रंग चढ़े चलूल, चार वरन मिले वड्याईआ। वेखो शंकर सुट्ट बैठा त्रसूल, निउँ निउँ बैठा सीस झुकाईआ। ब्रह्मा कहे मेरा कोई ना रिहा मूल, ब्रह्म चले ना कोए वड्याईआ। विष्नूं कहे मेरा भुल्लया सर्ब असूल, असलीअत कोए रहिण ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैग़म्बंर कहिण प्रभ भुल्लया कन्त कन्तूहल, लख चरुासी भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। सच पंघूड़ा कोई ना रिहा झूल, नाम हुलारा ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिसंगत संग रखाईआ। हरिसंगत तेरा सगला साथ, सो सतिगुर आप निभाइंदा। पूरब लहिणा वेखे मस्तक माथ, भेव अभेदा आप जणाइंदा। शब्द अगम्मी चाढ़े राथ, रथ रथवाही सेव कमाइंदा। पार उतारे कलयुग घाट, नईया नाम इक जणाइंदा। कूड़ी क्रिया जाए पाट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा दिवस आप सुहाइंदा। साचा दिवस सुहाए इक्की सावण, साँवल सुन्दर बेपरवाहीआ। परम पुरख प्रभ आया पतित पावण, पतित पापी पार कराईआ। आत्म परमात्म चार वरन ढोला गावण, गा गा खुशी मनाईआ। नारी कन्त आपणा रावण, घर सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। आत्म परमात्म होया ज़ामन, धुर दी ज़ामनी आप निभाईआ। गुरमुखो गुरसिखो तुहाढे नेड़ ना आए कामनी कामन, काम चेष्टा दए गंवाईआ। इक दूजे दा दरस करो आमॄणो सामॄण, सनमुख बैठा बेपरवाहीआ। शब्द सरूप फड़ाया दामन, दामनगीर आप हो जाईआ। ना कोई खत्री ना कोई ब्राह्मण, शूद्र वैश नज़र कोए ना आईआ। ना कोई देस राम रावण, ना कोई लंका गढ़ करे लड़ाईआ। ना कोई काहना कृष्ना मुकन्द मनोहर लखमी नरायण करे पहचानन, वराट रूप ना कोए समझाईआ। ना कोई ईसा मूसा सुणाए पैग़ामन, धुर कलाम ना कोए जणाईआ। ना कोई नानक गोबिन्द धरे ध्यानन, ध्यान ध्यान विच ना कोए रखाईआ। कलयुग जीव होए बेईमानन, मनसा कूड़ी सर्ब वधाईआ। हरिसंगत तेरा इक्को सच्चा कामन, प्रभ चरण ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, इष्ट दृष्ट आप खुल्हाईआ। हरिसंगत तेरा रूप अनोखा, चार युग मिले वड्याईआ। गुरसिख गुरसिख किसे नाल करे ना कोई धोखा, सच सुच इक समझाईआ। माणस जन्म प्रभ मिलण दा मौका, लख चुरासी विचों नज़री आईआ। कूड़ी क्रिया अन्दर ना होणा थोथा, होछी मति ना कोए वड्याईआ। काया अन्दर आपणा खोल्ह के पढ़ो पोथा, पुस्तक हरि जी आप लिखाईआ। जिस दे अन्दर लुके चौदां लोका, चौदां तबक मुख छुपाईआ। तिस दा नाम इक श्लोका, सोहला इक्को इक वड्याईआ। उस साहिब दी रखो ओटा,

पुरख अकाल सची सरनाईआ। जिस वसाया पटणा पौंटा, अन्त नदेड़ गया समझाईआ। सो इक्को ढईआ सुत्ता रिहा ला के ढौंका, सचखण्ड आपणी सेज बणाईआ। कलयुग अन्तिम साढे तिन्न हथ्थ आपे वेखे कोठा, सम्बल नगरी डेरा लाईआ। पुरख अकाल सतिगुरू इक्को बहुता, बहुते गुरू कम्म किसे ना आईआ। काया अन्दर मार के वेखो गोता, हीरे माणक लाल जवाहर मेरा नाउँ घर घर विच नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिसंगत सतिजुग सच करे पढ़ाईआ। हरिसंगत तेरा सतिजुग सोहला, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। आत्म परमात्म मिल के गाओ ढोला, ढोलक छैणा ना कोए वजाइंदा। काया बदलणहारा चोला, चोली रंग आप रंगाइंदा। अन्तर आत्म आपे मौला, मौला आपणी खेल वखाइंदा। अमृत भरे नाभ कौला, कँवल नाभी आप उलटाइंदा। देवे वड्याई उपर धवला, धरनी धरत धवल सुहाइंदा। जिस नूं कहिन्दे नूर इलाही अवल्ला, आलमीन खेल खलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिसंगत आई आपणे रंग रंगाइंदा। हरिसंगत आई सच दुआर, मिले नाम वड्याईआ। राए धर्म ना करे ख्वार, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। लाड़ी मौत ना करे श्रृंगार, वेले अन्त ना लए प्रनाईआ। सतिगुर पूरा दए दीदार, निरगुण सरगुण होए सहाईआ। फड़ के बाहों लए उठाल, आत्म परमात्म आप जगाईआ। उठ सवाणी चल मेरे नाल, पीआ प्रीतम उँगली लाईआ। नाता तोड़ शाह कंगाल, चारे वरनां करे कुड़माईआ। जन भगतां पुछे आपे हाल, मुर्शद मुरीदां वेख वखाईआ। वेले अन्त ना खाए काल, महाकाल पल्लू दए छुडाईआ। जन भगतो हल्ल होए स्वाल, बाकी कोए रहिण ना पाईआ। श्री भगवान बणे दलाल, सच दलाली आप कमाईआ। धन्न भाग जो घालण आए घाल, दूर दुराडा पंध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत तेरा ढोला गाईआ। हरिसंगत तेरा नाम प्यारा, चार युग वड्याइंदा। जिस दे हिरदे वसे गुरू अवतारा, पीर पैगम्बर डेरा लाइंदा। तिन्नां मित्र आप निरँकारा, निरगुण आपणी सेव कमाइंदा। सच्चा सोभिआ इक दुआरा, सो साहिब वेख वखाइंदा। मालवे खोल्लया सच कवाड़ा, कुण्डा आपणी हथ्थीं लाहइंदा। गोबिन्द अन्त पा के गया पुआड़ा, श्री भगवान साचा संग निभाइंदा। कपूर सिँघ कढ्ढणा रिहा हाढ़ा, चालीवां मुक्ता आपणे दोए दोए जोड़ हक़ सीस निवाइंदा। कवण वेला वेखां धुरदरगाही लाड़ा, सतिगुर इक्को नज़री आइंदा। जिस ने हरिसंगत माण दिवाया सतारां हाढ़ा, हरि जू आपणा लेखा हरिसंगत झोली पाइंदा। जिस दीआं गुर अवतार पीर पैगम्बर गाउँदे गए वारां, सो वारता भगतां आप सुणाइंदा। जन वेखण आया तेरा प्यारा, पीआ प्रीतम फेरा पाइंदा। हरिसंगत तेरा वेख्या मुफ्त नज़ारा, नज़र विच इक्को नर हरि नज़री आइंदा। सब नालों कर के बैठे किनारा, कर्म कांड किसे नेड़ ना

आइंदा। कोई लभ्भण जाए ना जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, अन्दर वड़ डूंग्घी कन्दर ध्यान ना कोए लगाइंदा। जिन्हां सतिगुर पूरा नज़री आए ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर दया कमाइंदा। तिस दा दो जहान करन मुज़ाहरा, मुफ्त आपणा खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिसंगत तेरा वेख्या घर, घर इक्को नज़री आइंदा। इक्को घर इक दरवाज़ा, इक्को बंक सुहाईआ। इक्को पुरख ग़रीब निवाज़ा, देवणहार सदा वड्याईआ। इक्को नाम निधान वजाए वाजा, सुर ताल इक रखाईआ। इक्को भूप इक्को राजा, शहिनशाह इक अख्वाईआ। इक्को करता इक्को काजा, इक्को करनी रिहा कमाईआ। इक्को मारनहारा वाजां, इक्को सतिगुर रिहा जगाईआ। इक्को जुग चौकड़ी फिरे भाजा, नित नवित्त आपणा वेस वटाईआ। इक्को कलयुग अन्तिम आया देस माझा, सम्बल नगरी सोभा पाईआ। इक्को वजाए सति रबाबा, नाम सति करे पढ़ाईआ। इक्को पकड़े हथ्थ वागा, डोर इक्को हथ्थ उठाईआ। इक्को पार कराए हादा, हदूद अरबा आपणे चरणां हेठ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत दए वड्याईआ। हरिसंगत तेरा सच मुनारा, मुनी मुनीशर ध्यान लगाईआ। इक्की सावण चल के औण गुरू अवतारा, पीर पैगम्बर फेरा पाईआ। साचा लग्गे धर्म अखाड़ा, निरगुण सरगुण गोपी काहन नचाईआ। मिले मीत अगम्मी यारा, यारी यारां नाल रखाईआ। जिस नूं कहिन्दे एकँकारा, अक्ल कला रिहा समाईआ। सो लै के आया नाम भण्डारा, अणमंगयां रिहा वरताईआ। रातीं सुत्यां दए दीदारा, दिने जागदयां दरस दिखाईआ। निरगुण नूर जोत उज्यारा, शब्दी शब्द डंक वजाईआ। कागद कलम लिख लिख हारा, कातब चले ना कोए चतुराईआ। बेअन्त अन्त कहे ना कोई विच संसारा, "क्यों" घर घर बैठा डेरा लाईआ। जो आपणा खोल्हे आप कवाड़ा, तिस सतिगुर दए बुझाईआ। जिस निरँकार मिल्या नानक सतिगुर मीत मुरारा, सो सतिगुर नानक भगतां गुरसिखां दए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पीर पैगम्बर गुर अवतार कुतब औलीए गौंस यार वेखणहारा थाउँ थाईंआ। हरिसंगत साचा मेला, मिलणी जगदीश कराईआ। इक्को घर सोहे गुरू चेला, चेला गुरू रूप वटाईआ। पुरख अबिनाशी मिल्या सज्जण सुहेला, घर साचे वज्जे वधाईआ। वसणहारा धाम नवेला, हरिजन वेखे चाईं चाईंआ। जोत निरँजण चाढ़े तेला, आदि निरँजण सगन मनाईआ। अचरज खेल प्रभू कल खेला, ख़ालक ख़लक भेव ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिसंगत दुआरे दए वड्याईआ। हरिसंगत तेरा नाम इकट्ठ, हरि शब्दी जोड़ जुड़ाइंदा। बीज बीजे आत्म वत, अमृत सिंच हरा कराइंदा। फुल्ल फुलवाड़ी वेखे पत, पत डाली आप महकाइंदा। बूटा गोबिन्द लाया हस्स हस्स, श्री भगवान फुल्ल खिलाइंदा। दूर दुराडा वेखे नट्ठ नट्ठ, बण पांधी पन्ध मुकाइंदा।

१०६ १५

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिसंगत जोड़ जुड़ाइंदा। हरिसंगत हरि जू जुड़या जोड़ा, शब्दी सुरती मेल मिलाईआ। साहिब सतिगुर इक्को घोड़ा, नाम निरवैर रिहा वखाईआ। सस्से उपर लाया होड़ा, होका दो जहानां सुणाईआ। हँ ब्रह्म प्रभ आपे बौहड़ा, आत्म परमात्म भेव चुकाईआ। अग्गे वेला रहि गया थोड़ा, कलयुग रोवे मारे धाहींआ। किसे दा अटकाया अटके कोई ना रोड़ा, रोकणहारा नज़र कोए ना आईआ। ज़ोरू ज़र ना चले ज़ोरा, ज़ोरावर बेपरवाहीआ। जिस दा मन्त्र इक्को फोरा, फ़ुरने विच सर्ब लोकाईआ। सो साहिब हरिसंगत तेरी पकड़े डोरा, डोरी आपणे नाल बंधाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त मनमुखां देवे जवाब कोरा, लारा लप्पा ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, सच अखाड़ा एकँकारा विच संसारा, निरगुण धारा आप लगाईआ। निरगुण धार संगत वेस, अवल्लड़ी कार कमाईआ। जोती जोत जोत प्रवेश, परम पुरख बेपरवाहीआ। डूंग्घी भँवरी करे हेत, काया कवरी वेख वखाईआ। सोहणा वसे साहिब दा देस, जिस दुआरे फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बिरध बाल नौ जवान मूर्ख मूढ़ जगत अञ्याण, जो अन्तर बैठे कर के ध्यान, तिन्हां बेड़ा पार कराईआ। तिन्हां बेड़ा होए पार, जो एका नाम ध्याईआ। साची रैण खिले गुलज़ार, गुलशन आप महकाईआ। प्रेम प्रीती चले फुहार, अमृत मेघ बरसाईआ। गुरमुख गुरसिख सन्त सुहेले दए आधार, भगत भगवन्त जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि इक्को इक फेरा पाईआ। इक्की सावण सच विहार, बिवहारी आप कराईआ। दो इक दा सच प्यार, इक दो जोड़ जुड़ाईआ। दो तों बणया निरगुण धार, इक इक्को नज़री आईआ। इक एकँकार पसार, दोए धार आप प्रगटाईआ। दूआ एका जगत वणजार, बण वणजारा हट्ट चलाईआ। दूआ बणे गुरू अवतार, एका पुरख अकाल रिहा समाईआ। दोहां मेला कलयुग अन्तिम एका वार, कोई समझ ना सके राईआ। पढ़ पढ़ विद्या गए हार, विद्या दाता नज़र किसे ना आईआ। इक दूजे नाल करन विचार, मन मति बुध रहे दृढ़ाईआ। इक दो तिन्नां तों वसण बाहर, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। दोआ हो के गुरू अवतार करदे गए पुकार, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। इक हो के निरगुण आवें निराकार, निरगुण तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरे पिच्छे दो तेरा लैण सहार, अग्गे तेरा राह तकाईआ। दूए अग्गे एका लग्गे इक्की जुड़ जाए विच संसार, इक्की गोबिन्द गया पाईआ। इक्की सिखां देवे आधार, निक्की निक्की कर गुफ़तार, अन्तर दे शब्द कटार, खण्डा इक्को इक चमकाईआ। सस्सा साहिब सतिगुर प्यार, वावा विश्व दए आधार, णाणा कोई सार ना पाए विच संसार, संसे विच सर्ब लुकाईआ। इक दो दा जोड़ा जुड़या खेल

खलाए अगम्म अपार, अगम्मड़ी कार कमाईआ। इक्की सावण दा इक विहार, पन्द्रां कत्तक दी बन्ने धार, सतिजुग बणाए सचखण्ड सच दरबार, दरगाह साची इक वखाईआ। चार युग दा लिख्या गुर अवतारां पीर पैगम्बरां लेखा सामणे देवे पाड़, रुक्का किसे हथ्थ रहिण ना पाईआ। वीहवीं सदी जिस दी करदे गए पुकार, पुश्त दर पुश्त गए समझाईआ। तिस दा लेखा दस्से आप अहिवाल, ऐहल आपणा आप जणाईआ। रात नूं सुणना नाल ख्याल, सुरती शब्द नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, इक्की सावण, आया प्रेम प्रीती सेज रावण, रव रिहा हर घट थाईंआ। इक्की सावण पैणी इकी, इक्को वार जणाईआ। चार वरन दी बणनी सिक्खी, सो साहिब दए वड्याईआ। जिस दी धार होणी तिक्खी, जग नेत्र नज़र ना आईआ। धरत मात सच दवारे जा के पिट्टी, खुलड़े केस दए दुहाईआ। मेरी ख़ाक उड गई मिट्टी, प्रभू तेरी चरण धूढ़ नज़र ना आईआ। तेरी खेल किसे ना डिठी, तेरा रंग ना कोए वखाईआ। मैं तेरे भगतां चुकदी चुकदी गई भिटी, ऊँच नीच ज़ात पात मेरे उते करन लड़ाईआ। तेरी सिख्या साहिब किसे ना सिक्खी, गुर अवतार पीर पैगम्बर कर कर गए पढ़ाईआ। जिध्धर वेखां लख चुरासी दिसे फिकी, अमृत रस रसना ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। साची सिक्खी कर परवान, परवाना आपणा नाम फड़ाईआ। अन्दर वड़ श्री भगवान, दूई द्वैत दे कढ्ढाईआ। सच सरोवर करा अशनान, अठ्ठसठ्ठ लोड़ रहे ना राईआ। शब्द भण्डारा दे दान, दूजे दर मंगण कोए ना जाईआ। घर दीवा बाती दे महान, अन्ध अन्धेर दए चुकाईआ। चार वरन दे ज्ञान, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश पढ़ाईआ। तेरी आत्म सब दे अन्दर बलवान, क्यों माया हेठ दबाईआ। कर्म कांड कर कल्याण, कलमा आपणा नाम पढ़ाईआ। साचा दस्स इक ईमान, सिदक सबूरी इक जणाईआ। कूड़ी क्रिया मेट तूफान, शौह दरिया दे रुढ़ाईआ। इक्को वार कर सर्ब कल्याण, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। किरपा कर श्री भगवान, साहिब सतिगुर तेरी सरनाईआ। बिन इक्की इक्की कुलां तारे ना कोए जहान, जहंनम विच जांदी दिसे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग जुग आपणी धार बंधाईआ। मैं एका इक्की वडयावांगा। निरगुण हो के हुक्म मनावांगा। साची सिक्खी सिख समझावांगा। धुर दी लिखी लेखे लावांगा। गोबिन्द हथ्थ दिती चिट्ठी, अन्तिम पढ़ के आप सुणावांगा। धरत मात ना जाए भिटी, सच सुच अमृत मेघ बरसावांगा। सतिजुग साची चले रीती, रीतीवान इक दरसावांगा। लेखा चुके हस्त कीटी, ऊँच नीच मेट मिटावांगा। इक्की सावण सुणनी पिछली बीती, अगली गंढ्ढ आप खुल्हावांगा। कोई चढ़या रहे ना उपर टीसी, सब नूं फड़ के थल्ले लाहवांगा। सारे कहिण बीस बीसी,

वीहवीं सदी आप समझावांगा। जिन्हां भुंन कबाब खाधा उपर सीखीं, तिन्हां अज़ाब अन्त दिवावांगा। जो भुल्ले हक़ हदीसी, तिन्हां हज़रत कोलों मूँह भवावांगा। सब दे खाली कर के खीसी, राजे राणयां तख्तों लाहवांगा। गुरमुख गुरसिख हरिसन्त हरिभगत प्रभ दे बणन नज़दीकी, नेरन नेरा राह जणावांगा। जो शरीक फसे विच शरीकी, तिन्हां शिरकत मेट मिटावांगा। धरत मात चौदां कत्तक इक्को वार उडीकीं, तेरा लेखा तेरी झोली पावांगा। प्रभ ने लिखी लिख्त बारीकी, बिन हरफ़ां पढ़ सुणावांगा। चार युग पैंती अक्खरां नाल लग्गी रही प्रीती, बावन अक्खर बाबत आपणी आप जणावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्की सावण दा इक दिहाढ़ा, इक्को वार वडयावांगा। इक्की सावण वीहवीं सदी, सद्दा सर्ब दिवाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस ने बद्धी, बदला लेखा सब दा झोली पाइंदा। कलयुग उलटी वहण वहे नदी, वाहवा आपणी धार वखाइंदा। भगत भगवन्त लख चुरासी विचों जाए कढ्ढी, फड़ फड़ बाहों पार कराइंदा। पार कराए कूड़ी हद्दी, घर साचा इक वखाइंदा। पुश्त दर पुश्त वेखे यदी, विष्न ब्रह्मा शिव विश्व आपणी धार वखाइंदा। सच प्रीती जिन्हां लग्गी, लागत सब दी झोली पाइंदा। कलयुग अन्तिम ख्वाहिश फिरे भज्जी, चारों कुण्ट आप दौड़ाइंदा। कूड़ी क्रिया खा खा रज्जी, सच सुच झोली ना कोए पाइंदा। मंदभागण होई नढ्ढी, हरिभगत नढ्ढा अंग ना कोए लगाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर दस्स के गए साची सदी, सच सुनेहड़ा इक सुणाइंदा। मुल्लां शेख पंडत पांधे कूड़ी क्रिया खावण वढ्ढी, हरि का नाम सच ना कोए वरताइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान गुरबाणी कागजां उते कीती रद्दी, सच सुच सति तोड़ ना कोए निभाइंदा। मदिरा मास खा खा मधुर रस लैण मध्धी, आत्म रस नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, इक्की सावण इक्को रंग रंगाइंदा। इक्की सावण आया उह, जिस दा सच ध्यान लगाईआ। जिस दे पिच्छे बाले दित्ते नीहां हेठ महीना पोह, वदी सुदी ना कोए जुड़ाईआ। जिन्हां पिच्छे माछूवाड़े सूलां सत्थर ल्या जोह, यारड़ा इक ध्यान लगाईआ। जिस दे पिच्छे नईया नौका लई डबो, खेवट खेटा संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो साहिब लै के आया ढोआ ढो, दूआ एका एका दूआ एका दोआ जोड़ जुड़ाईआ। इक्की सावण सब दा सांझा, सभना आप जणाईआ। हरि के नाम बिनां कोई ना रहे वांझा, प्रभ देवणहार सर्ब वड्याईआ। कलयुग अन्तिम कूड़ी क्रिया झक्खड़ वगे झांजा, उच्चे पर्बत रिहा ढाहीआ। वीहवीं सदी पिछों फिरना मांजा, सफा सब दी दए उठाईआ। किसे ना गाउणा हीर रांझा, सद हेक ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत दिवस समझाईआ। इक्की सावण आया मुका पन्ध, पांधी आपणा फेरा पाईआ।

श्री भगवान दा सुणना छन्द, इक्को ढोला रिहा सुणाईआ। कूड़ी क्रिया मुक्के गंद, कूड़ कुड़यारा रहिण ना पाईआ। हरि का नाउँ चढ़े चन्द, जगत अन्धेर दए गंवाईआ। चार वरनां आवे इक अनन्द, निजानंद इक रसाईआ। नौ दुआरे खण्ड खण्ड, घर दसवें बूझ बुझाईआ। सुरत सवाणी ना होए रंड, गुर शब्द लए प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका इक्की दए जणाईआ। सावण इक्की जग विच आया, मिले माण वड्याईआ। सतिगुर पूरा दया कमाया, होए आप सहाईआ। त्रैगुण माया डेरा ढाहया, ढाह ढाह ख़ाक कराईआ। साचा मन्त्र इक दृढ़ाया, भाण्डा भरम भंनाईआ। घर परमेश्वर नज़री आया, सच ताकी खोल्ह खुल्हाईआ। सखीआँ मिल के मंगल गाया, वज्जी नाम वधाईआ। मालवा संगत वड वडयाया, हरि मिल्या बेपरवाहीआ। मार्ग सौखा इक लगाया, चलो वाहो दाहीआ । अद्धविचकार ना कोई अटकाया, विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाईआ। थिर घर साचे लए मिलाया, हरि शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। सचखण्ड निवासी होए सहाया, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, एका इक्की आख़र आपणे नाम जणाईआ। एका इक्की हरि का नाम, दो इक आप जणाइंदा। दो जहान पीओ जाम, सच प्याला हथ्थ उठाइंदा। श्री भगवान सुणो पैग़ाम, कलमा नबी रसूल पढ़ाइंदा। मन्त्र सचा सति नाम, नाम सति आप उपाइंदा। काया नगर खेड़ा ग्राम, जिस घर साचे डेरा लाइंदा। सो मन्दिर सोहे मकान, सोभावन्त आप सुहाइंदा। सृष्टी भुल्ली विच जहान, दूती दुष्टी सर्ब कुरलाइंदा। कूड़ी क्रिया कलयुग करी प्रधान, सच सुच नज़र कोए ना आइंदा। राजा प्रजा दोए होए हैरान, धीरज धीर ना कोए रखाइंदा। साबत दिसे ना कोए ईमान, हदीस सच ना कोए समझाइंदा। एका इक्की कलयुग अन्त होए परवान, सतिजुग साची सिक्खी रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि दाता पुरख बिधाता वेखणहारा इक इकांता, अक्ल कलधारी एकँकारी खेल न्यारी वड संसारी, संसार सागर खोज खुजाइंदा। खोजणहार संसार सागर, गहर गम्भीर खेल कराइंदा। वेखणहारा काया गागर, लख चुरासी फोल फोलाइंदा। नाम वणजारा बण सौदागर, सौदा इक्को हट्ट विकाइंदा। जन भगतां जुग जुग देवे आदर, मनमुखां दर दुरकाइंदा। शब्द दुशाला अगम्मी चादर, साचा पड़दा आप उठाइंदा। निर्मल कर्म कर उजागर, दुरमति मैल आप धवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलयुग अन्तिम देवे वर, सतिजुग साचा मार्ग लाइंदा। सतिजुग साचा मार्ग लाउणा, सो साहिब हथ्थ वड्याईआ। एका इक्की अंग लगाउणा, अक्ल कला सरनाईआ। भेव अभेदा आप जणाउणा, अनभव आपणा राह वखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलयुग अन्तिम

देवे वर, सतिजुग साचा राह जणाईआ। तख्त निवासी शाह सुल्तान, नर निरँकार वड्डी वड्याईआ। पुरख अकाल वाली दो जहान, सति सतिवादी बेपरवाहीआ। वसणहारा सच मकान, सचखण्ड साचे डेरा लाईआ। निरगुण रूप बेपहचान, रंग रेख ना कोए वखाईआ। जोती जाता हो प्रधान, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। मुकामे हक़ खेल महान, बेपरवाह आप प्रगटाईआ। लाशरीक नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आपणी कार कमाईआ। शाह सुल्ताना मेहरवान महिबूब, मुहब्बत इक अख्वाइंदा। निरगुण निरवैर सति सरूप, सति सति कार कमाइंदा। आपे वसे आपणी कूट, दिशा वंड ना कोए वंडाइंदा। आपे तागा आपे सूत, ताणा पेटा आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आपणा खेल कराइंदा। आदि पुरख हरि खेल अवल्ला, अलख अगोचर आप कराईआ। निरगुण धार इक इकल्ला, अक्ल कल वड्डी वड्याईआ। सति प्रकाश दीपक बला, तेल बत्ती ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाईआ। आपणा भेव खोल्है निरँकार, नर हरि आपणी दया कमाइंदा। सो पुरख निरँजण हो तैयार, हरि पुरख निरँजण पड़दा लाहइंदा। एकँकार कर विहार, बिवहारी आपणी धार चलाइंदा। आदि निरँजण नूर उज्यार, ज़हूर इक्को इक दरसाइंदा। अबिनाशी करता खोल्है कवाड़, सचखण्ड दुआर आप वड्याइंदा। श्री भगवान हो तैयार, साहिब सुल्तान आसण लाइंदा। पारब्रह्म प्रभ बण भिखार, दर दरवेश अलख जगाइंदा। पुरख अकाला वड बलकार, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। दीन दयाला देवणहार, दाता दानी आप अख्वाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबार, दरगाह साचा धाम सुहाइंदा। इक इकल्ला निराकार, निरवैर आपणा भेव आपणे विच छुपाइंदा। सचखण्ड वसे सच दरबार, सोभावन्त सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आदि आपणी कल वरताइंदा। आदि कल हरि वरतंता, भेव कोए ना पाईआ। खेले खेल श्री भगवन्ता, भगवन आपणी धार चलाईआ। आप बणाए आपणी बणता, घड़न भंनणहार आप हो जाईआ। आपे इष्ट देव गुर मंता, सीस जगदीश आप सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि आपणे हथ्थ रखी वड्याईआ। आदि पुरख प्रभ हो तैयार, निरगुण आपणा रूप वटाया। मात पित ना कोए प्यार, पूत सपूत ना कोए जाया। दाई दाया ना कोए आधार, सेवक सेव ना कोए कमाया। साचा मन्दिर ना कोए मकान, सुहञ्जणी सेज ना कोए वखाया। शत्रु मीत ना कोए आधार, साचा संग ना कोए निभाया। इक इकल्ला एकँकार, आपणी कल आप प्रगटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख आपणा पड़दा आप उठाया। आपणा पड़दा आपे खोल्है, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। आपा वखाए आपणे कोल, दूजा नज़र कोए ना आईआ।

आपे तोले आपणा तोल, तोलणहारा बेपरवाहीआ। जोती जाता वसे अडोल, डुल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए समझाईआ। आपणा लेखा दस्से भगवान, भगवन आपणी दया कमाइंदा। सो पुरख निरँजण हो मेहरवान, मेहर नज़र उठाइंदा। हरि पुरख निरँजण देवे दान, दयावान वेख वखाइंदा। एकँकारा कर परवान, सच परवाना इक प्रगटाइंदा। आदि निरँजण खेल महान, नूर नूर विचों वखाइंदा। अबिनाशी करता बण के काहन, दर घर साचे सोभा पाइंदा। श्री भगवान गुण निधान, गुण निधान आप हो जाइंदा। पारब्रह्म प्रभ आपा आप कर परवान, आप आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुलाइंदा। आदि पुरख हरि आप स्वामी, अपरम्पर आपणा खेल रचाईआ। सो साहिब बण निहकामी, निहकर्मी कर्म कमाईआ। पुरख अकाला अन्तरजामी, अन्तरयामता आपणे विच छुपाईआ। आदि बणया आपणा बानी, आपणी धार आप प्रगटाईआ। करे खेल आप लासानी, गहर गम्भीर सचा शहिनशाहीआ। जिस दी दस्से ना कोए निशानी, बेअन्त कह कह सीस झुकाईआ। सो साहिब वड प्रधानी, वड प्रधानगी आप कमाईआ। सचखण्ड दुआर बणाए सच्ची राजधानी, राजा इक्को नज़री आईआ। तख्त निवासी खेल महानी, महाबली आप समझाईआ। आपे जाणे धुर फ़रमानी, धुर संदेसा आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप रचाईआ। आपणा खेल रचे अगम्म, अगम्मड़ी कार कमाइंदा। मात पिता गोदी पए ना जम्म, काया तत ना कोए वखाइंदा। निराकार करे कराए साचा कम्म, कर्म कांड ना वंड वंडाइंदा। आदि बेड़ा आपणा बन्न्ह, साची धार आप वखाइंदा। सचखण्ड दुआरे चाढ़ चन्न, जोती जोत डगमगाइंदा। देवणहारा साचा धन, नाम आपणा आप वरताइंदा। ना कोई मनसा ना कोई मन, ममता होर ना कोए रखाइंदा। आपे बण के जननी जन, धन्न जणेंदी माई आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार आप कमाइंदा। साची कार आपे कर, हरि करता खेल रचाईआ। निरगुण जोत आपे धर, वेखणहार बेपरवाहीआ। देवणहारा साचा वर, साची वस्त आप वरताईआ। निरगुण घाड़न अगम्मी घड़, ठठयारा आपणी कार कमाईआ। सच महल्ले आप चढ़, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। निष्अक्खर अक्खर आपे पढ़, एकँकारा करे पढ़ाईआ। सति सतिवादी फड़ाए लड़, पल्लू एका गंढु पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दा सच विहारा, करे कराए एकँकारा, जोती जोत करे प्यारा, नार कन्त रूप सुहाईआ। नार कन्त श्री भगवन्त, सचखण्ड सेज हंढाइंदा। आप बणा आपणी बणत, साचा रूप आप प्रगटाइंदा। करे खेल साहिब बेअन्त, भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप वखाइंदा। साचा राह साहिब सुल्तान,

हरि इक्को इक प्रगटाईआ। सचखण्ड अन्दर खोल्ह दुकान, थिर घर देवणहार वड्याईआ। दीवा जोत जगे महान, तेल बाती नज़र कोए ना आईआ। घाड़त घड़े बेपहचान, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी थिर घर वासी, शब्दी शब्द आप कराइंदा। निरगुण नूर जोत प्रकाशी, प्रकाशवान भेव चुकाइंदा। आपणी इच्छया पूरी करे आसी, आसावंद आप हो जाइंदा। नाउँ रख पुरख अबिनाशी, आपणी कला आप प्रगटाइंदा। चिन्ता ग़म ना कोए उदासी, हरख़ सोग ना कोए वखाइंदा। मण्डल मण्डप ना कोए रासी, सूरज चन्द ना कोए चमकाइंदा। गगन गगनंतर ना पृथ्मी आकाशी, धरत धवल ना कोए वखाइंदा। गुर अवतार ना कोई साथी, पीर पैगम्बर ना वंड वंडाइंदा। शब्द नाद धुन ना कोए पूजा पाठी, शास्त्र सिमरत लेख ना कोए लिखाइंदा। तीर्थ किनार ना कोए ताटी, सरोवर रूप ना कोए वखाइंदा। चौदां लोक ना कोए हाटी, चौदां तबक ना कुण्डा लाहइंदा। करे खेल प्रभ कमलापाती, इक इकल्ला वेस वटाइंदा। ना कोई दिवस ना कोई राती, घड़ी पल ना वंड वंडाइंदा। ना कोई संधया ना प्रभाती, भेव अभेदा आपणे हथ्थ रखाइंदा। ना कोई दीवा ना कोई बाती, हवन धूप ना कोए वखाइंदा। ना कोई मज़्हब ना कोई जाति, दीन वंड ना कोए वंडाइंदा। ना कोई पाखर ना कोई आसण ना कोई अस्व पावे काठी, शाहसवार ना कोए अख्वाइंदा। ना कोई दिसे ऐरावत हाथी, चौदां रतन वंड ना कोए वंडाइंदा। ना कोई प्याला ना कोई साकी, भर प्याला जाम ना कोए प्याइंदा। करे खेल आदि पुरख इक इकांती, अक्ल कल आपणी कार कमाइंदा। आदि आदि, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप समझाइंदा। साची करनी करने योग, सो साहिब इक अख्वाईआ। सचखण्ड निवासी निरगुण निरगुण भोगे भोग, भस्मड़ आपणी धार जणाईआ। धुरदरबारी करके धुर संजोग, जोती जोत मेल मिलाईआ। सचखण्ड दुआरा किला कोट, बंक देवे माण वड्याईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती जोत करे रुशनाईआ। अन्तिम दस्से इक्को ओट, सच सहारा इक समझाईआ। निरगुण निरगुण उते होवे मोहत, मुहब्बत इक्को घर वखाईआ। इक्को प्रेम इक्को प्रीतम इक्को ढोला गाए श्लोक, राग इक्को इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा दए समझाईआ। धुर दा लेखा सचखण्ड दुआर, हरि सतिगुर आप कराइंदा। आदि पुरख आपणी किरपा धार, आप आपणा मेल मिलाइंदा। थिर घर अन्दर सच विहार, थिर दरबारी आप कराइंदा। दाई दाया बण निरँकार, निरगुण आपणी सेव कमाइंदा। जननी जन अगम्म अपार, मीत मुरारा गोद सुहाइंदा। घर मन्दिर ठांडा दरबार, अग्नी तत ना कोए रखाइंदा। सच दुआर खोल्ह किवाड़, ताकी इक्को इक बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, थिर घर इक्को इक वसाइंदा। थिर घर वसाए आप प्रभ, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सुत दुलारा साची यद, साचा बंस दए बणाईआ। आदि जुगादि आपणी जाणे आपे हद्द, दूसर समझ किसे ना आईआ। बिन अक्खरों बिन कलमिउँ बिन सिफ्ती नामों वज्जे नद, नाद अनादी आप सुणाईआ। सच सिँघासण पुरख अबिनाशन एकँकारा आपे सज, सति पुरख निरँजण सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दी साची धार, आप जणाए हरि निरँकार, दूजे समझ किसे ना आईआ। सचखण्ड अन्दर खेल अवल्ला, थिर घर आपणी रुत्त सुहाईआ। सुत दुलारा इक इकल्ला, शब्दी डेरा लाईआ। श्री भगवान फड़ाए पल्ला, पल्लू नज़र किसे ना आईआ। जोती धार आपे रला, शब्दी राग आप अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सुत दुलारे हो मेहरवान, सो साहिब देवे इक्को दान, सचखण्ड निवासी चरण ध्यान, सच चरणोदक इक वखाईआ। चरण ध्यान लैणा रख, सो साहिब आप जणाइंदा। सचखण्ड दुआरे श्री भगवान सदा प्रतख, निरगुण आपणा आसण लाइंदा। आदि जुगादि तेरा करे पक्ख, मेहर नज़र इक उठाइंदा। साचा मार्ग देवे दस्स, धुर दी धार आप जणाइंदा। वस्त अमोलक देवे हथ्थ, बिन हथ्थां आप वरताइंदा। महिमा दस्से इक अकथ, कथनी कथ ना कोए सुणाइंदा। सुत दुलारे तेरा चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, बेपरवाह आपणी कल आप वरताइंदा। थिर घर देवे इक्को रस, रस रसीया आप हो जाइंदा। तूं मेरा मैं तेरे वस, इक्को प्रेम बंधाइंदा। साचा मार्ग लाए हस्स हस्स, सो साहिब आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, थिर घर आपणा हुक्म मनाइंदा। सो कहे मैं वड बलवाना, पुरख अकाल अख्वाईआ। शब्द सुत तेरा निशाना, गुप्त तेरी धार चलाईआ। दोहां मेल इक मकाना, घर साचे वज्जे वधाईआ। मेरा नाउँ तेरा परवाना, तेरा परवाना सर्ब शनवाईआ। मेरा प्रेम तेरा गाणा, तेरा गाणा साचा राह वखाईआ। तेरा बाप पुरख सुल्ताना, शाह पातशाह इक हो जाईआ। योद्धा मर्द बणे मर्दाना, सच मर्दानगी आप जणाईआ। सचखण्ड बैठा रहे बण के काहना, सच सिँघासण सोभा पाईआ। देंदा रहे सदा सद दाना, दाता दानी वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक समझाईआ। सो कहे सुण मेरे सुत, इक मेरी वड्याईआ। थिर घर सोहे तेरी रुत्त, सचखण्ड मेरी धार चलाईआ। जो कुछ पुच्छणा सो मैथों पुच्छ, सच सच दयां जणाईआ। आदि जुगादि रवां लुक, नज़र किसे ना आईआ। सदा मिटावां तेरी भुक्ख, तृष्ना रहे ना राईआ। लाडले पुत्त गोदी चुक्क, सच दुआर दयां वसाईआ। तेरा पैंडा ना जावे मुक्क, जुग चौकड़ी वंड वंडाईआ। तूं मेरी धार प्या उठ, मैं तेरा नूर करां रुशनाईआ। थिर घर वसे तेरी इक्को

११७ १५

गुड्ड, नुकर कोना नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्दी सुत रिहा समझाईआ। सो कहे मैं तेरा बाप, पिता इक अख्वाईआ। हँ ब्रह्म कर मेरा जाप, तेरी धार समझाईआ। आदि जुगादि तेरा साथ, सगला संग रखाईआ। तेरे अन्दर खोल्हां ताक, कुण्डा आपणी हथ्थीं लाहीआ। मेरी पट्टी तेरी जमात, अक्खर अक्खर ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख आप समझाईआ। सुत कहे मैं तेरा लाल, प्रभ लालन तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरे दर करां स्वाल, बण स्वाली झोली डाहीआ। मेरी वसदी रहे सच्ची धर्मसाल, थिर घर वज्जदी रहे वधाईआ। आदि जुगादि ना होवां कंगाल, शहिनशाह तेरी ओट तकाईआ। एथे ओथे दो जहानां सुणदा रहीं मेरा हाल, हालत तेरी झोली पाईआ। जिध्धर वेखां वसें नाल, विछोड़ा कोई नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, मेरी आसा पूर कराईआ। तेरी आसा पूर करावांगा। शब्दी सुत संग निभावांगा। अबिनाशी अचुत दया कमावांगा। तैनूं बणाया आपणा पुत्त, पोतरा विष्न ब्रह्मा शिव तेरी गोद बहावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा जाप इक जपावांगा। तूं मेरा मैं तेरा नाउँ, नर निरँकार आप जणाईआ। तेरा मेरा साचा थाउँ, समझ कोए ना पाईआ। पिता पूत पकड़े बांहों, फड़ बांहों गले लगाईआ। सचखण्ड दुआरे इक नयाउँ, शहिनशाह हक़ो हक़ समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख सच सुल्तान, सच सच दृढ़ाईआ। सुत दुलारे चढ़या रंग, रंग इक्को इक रंगाया। थिर घर वज्जा नाम मृदंग, ढोलक छैणा ना कोए रखाया। पिता पूत इक्को आया अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाया। इक्को ढोला इक्को छन्द, सोहँ राग अलाया। तेरा मेरा मुकया पन्ध, पांधी रूप ना कोए वखाया। तेरा चरण मेरा अंग, सूरे सरबँग तेरी सरनाया। बिन तेरे कदे ना पवे ठंड, सांतक सति ना कोए कराया। तेरा विछोड़ा ना होए रंड, रंडेपा कोए रहिण ना पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाया। दर साचे जगाई अलख, अलख निरँजण दया कमाइंदा। आपणी धारों कीता वक्ख, अन्तिम आपणा मेल मिलाइंदा। हथ्थ नाल आप मिलावे हथ्थ, बिन हथ्थां हथ्थ फड़ाइंदा। सति सरूपी चलाए रथ, रथवाही आप हो जाइंदा। साचा मार्ग इक्को दस्स, साची इच्छया इक प्रगटाइंदा। विश्व खेल करे समरथ, वास्ता आपणे नाल जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरे अन्दरों कढ्ढे तेरी धार, किरपा करे आप निरँकार, भेव अभेद ना कोए जणाइंदा। तेरे अन्दरों कढ्ढे धार, धार आपणी नाल मिलाईआ। आपणी इच्छया कर बलकार, भिच्छया तेरी झोली पाईआ। तेरा मूल बणे संसार, तेरी रचना रिहा समझाईआ। विष्नूं विश्व दए आधार, आप आपणा

रंग रंगाईआ। देवणहार सच भण्डार, अमृत जाम दए पिलाईआ। कँवली कँवल कर तैयार, कँवल नैण वेख वखाईआ। खिली सच्ची इक गुलज़ार, गुलशन आपणा आप महकाईआ। धार धार नाल धार, धार धार दए जणाईआ। विष्नूं अन्दर प्रेम प्यार, पारब्रह्म लए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। विष्न ब्रह्मा जाया आप, आपणे हत्थ रखे वड्याईआ। आपे करे वड प्रताप, वड प्रतापी आप हो जाईआ। सुन्न अगम्म खेल तमाश, धूंआँधार आप समाईआ। शंकर करे साचा साथ, शहिनशाह देवणहार वड्याईआ। एका माई अलखना लाख, अलख अगोचर आप प्रगटाईआ। ना कोई सज्जण ना कोई साक, बंधप कोए नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्दी शब्द दए वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जाया प्रभ, आपणी दया कमाईआ। आपणी धारों आपे लभ्भ, आपे लए प्रगटाईआ। आपे अमृत चोवे नभ, कँवली कँवल आप खिलाईआ। आप वखाए आपणी हद्द, भेव अभेदा आप समझाईआ। आप जणाए साचा छन्द, साचा ढोला इक पढ़ाईआ। आप प्याए जाम मध, मधुर रस इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आदि आपणा भेव दए समझाईआ। आदि आदि खोल्हे भेद, भेव आपणा आप जणाइंदा। करे खेल अछल अछेद, वल छलधारी कार कमाइंदा। ना कोई रूप ना कोई रेख, रंग नज़र किसे ना आइंदा। ना कोई मुच्छ दाढ़ी केस, मूंड मुंडाया ना कोए वखाइंदा। ना कोई कातब ना कोई लेख, ना कोई अक्खर वक्खर वंड वंडाइंदा। पुरी खण्ड ना कोए देस, गगन मण्डल ना कोए सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। सुत दुलारे विश्व प्यार, विष्नूं आप जणाईआ। विष्नूं दोए जोड़ करे पुकार, निरगुण अग्गे सीस झुकाईआ। तूं दाता सिरजणहार, हत्थ तेरे वड्याईआ। हउँ बालक बाल नादान, समझ कोए ना पाईआ। सति प्रीती दे ज्ञान, निष्अक्खर आप जणाईआ। तेरे दर ते मिले दान, दूजा घर ना कोए वखाईआ। तूं साहिब सच्चा सुल्तान, शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। साचा दे सति फ़रमान, फ़रमांबरदार सेव कमाईआ। मैं मन्नां तेरी आण, दर तेरे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। ब्रह्मा दोवें जोड़ हत्थ, निरगुण अग्गे सीस झुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरे वस, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। साचा मार्ग देणा दस्स, प्रभ तेरी सेव कमाईआ। मेरे खाली वेख हत्थ, झोली नज़र किछ ना पाईआ। चरण कँवल गया ढठ्ठ, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, तेरे दर अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। शंकर रोवे भोला नाथ, भोले भाउ ध्यान लगाइंदा। कोई ना लभ्भे सच्चा साथ, उँगली उँगली ना कोए मिलाइंदा।

ना कोई पत्तण दिसे घाट, तट कोई ना वेख वखाइंदा। ना कोई पिता ना कोई मात, सज्जण रूप ना कोए वखाइंदा। तेरे नाल जुड़या नात, नाता इक्को घर वखाइंदा। तेरे चरणां होवां दास, बण सेवक सेव कमाइंदा। प्रभ पूरी करनी आस, आसा इक्को इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे वास्ता पाइंदा। तिन्नां देवे इक इशारा, सो साहिब आप जणाईआ। शब्द सुत करो प्यारा, परम पुरख आप समझाईआ। जिस दे कोल मेरा भण्डारा, थिर घर बैठा डेरा लाईआ। साचा वणज करे वणजारा, तिन्नां इक्को हट्ट चलाईआ। करे खेल अगम्म अपारा, अगम्मड़ी कार आप वखाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। रागां नादां वसे बाहरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा दए समझाईआ। तिन्ने उठे नेत्र खोल्ह, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। सुत दुलारा बैठ अडोल, थिर घर सच्चा आसण लाईआ। प्रेम नाल सद्दे कोल, हौली हौली रिहा बुलाईआ। मेरे नाल करो कौल, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख अपरम्पर स्वामी आपणी कार दए समझाईआ। तिन्नां करना कौल इकरार, इक इकल्ला आप जणाइंदा। साचा दस्सां इक विहार, बण बिवहारी आप समझाइंदा। विष्नूं हथ्थ तेरे भण्डार, दाता दानी दया कमाइंदा। ब्रह्मे ब्रह्म कर पसार, पारब्रह्म आप समझाइंदा। शंकर तेरे हथ्थ कटार, ब्रह्मे कीता मूल मुकाइंदा। त्रिसूल करे ख़बरदार, अकाल रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि पुरख आपणा भेव आपे आप खुल्हाइंदा। तिन्नां करी इक सलाह, इक दूजे नाल ध्यान लगाईआ। पारब्रह्म प्रभ मिले मलाह, बेड़ा सब दा लए चलाईआ। साचा मार्ग दए समझा, सिख्या इक्को करे पढ़ाईआ। आपणी उँगली लए लगा, चारों कुण्ट लए भवाईआ। सिर हथ्थ लए टिक्का, मेहर नज़र उठाईआ। आपणा भेत दए खुल्हा, अनभव आपणा नूर करे रुशनाईआ। वस्त अमोलक साडी झोली देवे पा, ख़ाली भण्डार दए भराईआ। हौली हौली मार्ग देवे ला, राह खैहड़ा इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा संग आप निभाईआ। तिन्नां कीती इक दलील, इक ध्यान लगाईआ। प्रभ अग्गे करो इक अपील, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। शब्द बणे सदा वकील, साडा साचा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया दए कमाईआ। तिन्नां करी इक अरदास, प्रभ अग्गे सीस झुकाया। कर किरपा पुरख अबिनाश, मेहरवान बेपरवाहया। आदि रची तूं आपणी रास, तेरा मण्डल नज़र किसे ना आया। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा प्रकाश, दूजी वंड ना कोए वखाया। सुत दुलारा सदा साथ, आपणा संग निभाया। साचा दरसदे पूजा पाठ, मन्त्र इक्को इक्को दृढ़ाया। जिस जपयां आवे ना घाट, घाटा कोए रहिण ना

पाया। तेरे चरणां जुड़या रहे नात, नाता बिधाता ना कोए तुड़ाया। साडी इक्को रहे जमात, दूजी पट्टी ना कोए वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्त्र दे समझाया। साचा मन्त्र हरि समझाइंदा, आदि पुरख करतार। सो साहिब आप अख्वाइंदा, हँ सरूप करे पसार। सोहँ ढोला राग अलाइंदा, आदि जुगादी इक जैकार। तेरा मेरा प्यार वखाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा खेल रचाइंदा। सोहँ ढोला सदा गाओगे। श्री भगवान दर्शन पाओगे। माण अभिमान विच कदे ना आओगे। आपा हरि जू भेंट चढ़ाओगे। सज्जण साक इक बणाओगे। घर ताक इक खुल्हाओगे। भविक्खत वाक इक प्रगटाओगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे मन्दिर सोभा पाओगे। श्री भगवान तेरा नाम ध्यावांगे। सोहँ ढोला गावांगे। मेरा तेरा भेव ना कोए रखावांगे। बिन रसना जिह्वा राग अलावांगे। बण सेवक सेव कमावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा साचा घर, जिस घर तेरा दर्शन पावांगे। जिस वेले सोहँ ढोला गाओगे। घर आपणे मैनूं पाओगे। पड़दा आपणा परे हटाओगे। घर मन्दिर इक सुहाओगे। अन्दरे अन्दर जोत जगाओगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर सज्जण वेख वखाओगे। प्रभ तेरा ढोला गीत गावांगे। प्रीत तेरे नाल रखावांगे। तूं वसणा साडे चीत, चेतन तेरी कार कमावांगे। तेरे दर तों मंगी भीख, भिक्खक बण के अलख जगावांगे। तेरी रखीए सदा उडीक, नित नित तेरा ध्यान लगावांगे। आपणी दस्स सच तरीक, जिस वेले तेरा साख्यात दर्शन पावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, दर आयां लेखा पूर करावांगे। विष्न ब्रह्मा शिव हरि समझाइंदा। भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। विष्नूं तेरे हत्थ भण्डार वखाइंदा। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म रूप प्रगटाइंदा। शंकर तेरी त्रिसूल इक चमकाइंदा। आदि रखाया तुहाड्डा मूल, अन्तिम आपणा राह जणाइंदा। करे खेल कन्त कन्तूहल, साचा बंक आप बणाइंदा। त्रैगुण माया बरसे फूल, फूलन बरखा एका लाइंदा। पंज तत बन्न्हे असूल, अप तेज वाए पृथमी आकाश गंढु पवाइंदा। लख चुरासी करनी पए कबूल, तिन्नां इक्को वार समझाइंदा। धुर दा हुक्म ना जाणा भूल, अभुल्ल आप दृढ़ाइंदा। किसे कोलों लैणा ना मसूल, मुफ्त आपणा हुक्म वरताइंदा। धुर दा हुक्म इक माअकूल, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। इक्को दाता दूल्हो दूल्ह, दो जहानां इक अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धार आप जणाइंदा। साची धार सुणो सच एक, एकँकार जणाईआ। त्रै पंज जग साची टेक, श्री भगवान दए समझाईआ। पारब्रह्म प्रभ धारे भेख, लख चुरासी वंड वंडाईआ। चारे खाणी लए पेख, अण्डज जेरज उत्भुज सेतज रंग चढ़ाईआ। साचे मन्दिर करे आदेस, सजदा इक्को सीस झुकाईआ।

निरगुण जोत कर प्रवेश, घर भाण्डे करे रुशनाईआ। नौ दुआरे लए वेख, ख़ालक ख़लक वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि आदि दए समझाईआ। विष्न ब्रह्मे शिव सेव कमौणी, हरि साचा सच जणाइंदा। लख चुरासी मात उपजौणी, साचा मार्ग इक दृढ़ाइंदा। लख चुरासी वंड वंडौणी, जून अजूनी आप जणाइंदा। साची गंढु आप पवौणी, तन्द डोरी आपणे हथ्थ रखाइंदा। धुर दी जोत इक जगौणी, जोत निरँजण रंग रंगाइंदा। शब्द धुन इक सुणौणी, अनहद राग राग अलाइंदा। आत्म सेजा इक बणौणी, घर घर विच डेरा लाइंदा। आसा तृष्ना नाल मिलौणी, काम क्रोध लोभ मोह हँकार संग निभाइंदा। पंज दस हरि खेल वखौणी, पंजी आपणी धार बंधाइंदा। निरगुण सरगुण कार कमौणी, करता आपणी कार कमाइंदा। जुग चौकड़ी स्वांग रचौणी, स्वांगी आपणा स्वांग समझाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बन्धन पौणी, बन्दना आपणे हथ्थ वखाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक समझाइंदा। साची सिख्या देवे आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जपणा इक्को जाप, सोहँ ढोला रिहा पढ़ाईआ। लख चुरासी वेखे वड प्रताप, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ । जुग चौकड़ी थापण थाप, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार कमाईआ। प्रभ साची कार कमावेगा। लख चुरासी आप उपावेगा। निरगुण सरगुण रंग रंगावेगा। माणस मानुख आप प्रगटावेगा। जोती जोत जगावेगा। शब्दी नाद इक सुणावेगा। पंज तत काया लावे भाग, आत्म परमात्म मेल मिलावेगा। सुरती बन्ने साचा ताग, शब्दी आपणा सगन जणावेगा। निर्धन मारे सच्ची वाज, सरधन सोया आप उठावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेख आप समझावेगा। धुर दा लेख आप जणाएगा। लख चुरासी वेख वखाएगा। निरगुण सरगुण रूप वटाएगा। भेव अभेदा आप खुल्हाएगा। ब्रह्मवेता आप पढ़ाएगा। चारे वेदां भेव चुकाएगा। चारे कुण्ट खेल खिलाएगा। दहि दिशा पड़दा लाहेगा। साचा हिस्सा आप वंडाएगा। धुर दी धार आप प्रगटाएगा। जल बिम्ब रूप समाएगा। किरन किरन विचों प्रगटाएगा। चन्द सूरज आप चमकाएगा। मण्डल मण्डप आसण लाएगा। गगन गगनंतर सोभा पाएगा। भेव अभेदा आप खुल्हाएगा। अछल अछेदा वेख वखाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार आप कमाएगा। प्रभ साचा कार कमावेगा। सतिजुग साचा राह चलावेगा। ब्रह्मवेता वेख वखावेगा। साचा नेता इक बणावेगा। धुर दा भेता आप खुल्हावेगा। ब्रह्मा सुत आप उठावेगा। सन्त कुमार माण दिवावेगा। बराह रूप आप धरावेगा। यगै पुरुष भेव ना आवेगा। हाव ग़रीब रंग रंगावेगा। नर नरायण वंड वंडावेगा। कपलमुन आप समझावेगा। दत्ता त्रै फड़ उठावेगा। रिखप देव राह जणावेगा। पिरथू आपणी गोद बहावेगा।

मत्तस इक्को खेल खिलावेगा। कच्छ भार सीस उठावेगा। धनंतर आपणा भेव चुकावेगा। बावन आपणी खेल खिलावेगा। हँसा इक्को चोग चुगावेगा। मोहणी रूप वटावेगा। सोहणी सूरत आप बणावेगा। नर सिंघ नाउँ धरावेगा। हरी हरि आप हो जावेगा। नरायण आपणा पड़दा लाहवेगा। ब्रह्मण इक्को माण दिवावेगा। राम रूप सर्ब समावेगा। लंका गढ़ तुड़ावेगा। कुँवारी कन्या भाग लगावेगा। वेद व्यासा आप प्रगटावेगा। पुराण अठारां भेव खुलासा आप खुल्हावेगा। साची बंसुरी नाम वजावेगा। काहन घनईया नाउँ धरावेगा। साची गोपी आप प्रनावेगा। घाटी औखी आप चढ़ावेगा। गीता ज्ञान इक दृढ़ावेगा। अट्ठ दस मेल मिलावेगा। ग़रीब निमाणे पार करावेगा। बोध बोध ज्ञान इक समझावेगा। मूसा आपणी कल वरतावेगा। ईसा इक बाप ध्यावेगा। मुहम्मद निउँ निउँ सीस झुकावेगा। चार यारी गंढु पवावेगा। अल्ला राणी जोड़ जुड़ावेगा। नानक निरगुण जोत जगावेगा। वरन गोत ना कोए रखावेगा। काया कोट बंक सुहावेगा। शब्द चोट इक लगावेगा। साची जोत इक प्रगटावेगा। लोक परलोक आप समझावेगा। सच श्लोक आपे गावेगा। सोहँ ढोला राग अलावेगा। मन्त्र सति नाम दृढ़ावेगा। सचखण्ड दवारे सोभा पावेगा। दर दरवेश अलख जगावेगा। लख चुरासी नालों हो के वक्ख, पुरख अकाल इक मनावेगा। चार वरनां मार्ग दस्स, ज़ातां पातां मेट मिटावेगा। अंगद सिर ते रख हथ्थ, अंगीकार आप करावेगा। अमृत अमरू दे रस, अमरापद इक जणावेगा। राम दास हो के वस, वास्ता आपणे नाल रखावेगा। गुर अर्जन मार्ग दस्स, बोध अगाध शब्द ज्ञान पढ़ावेगा। हरि गोबिन्द मेला हस्स हस्स, दो धारां खेल खिलावेगा। हरिराए महिमा अकथ, कथनी कथ ना कोए जणावेगा। हरिकृष्न हरि सरनाई गया ढट्ठ, बाल बाला वंड वंडावेगा। तेग़ बहादर खोल्लया हट्ट, सीस धड़ वंड वंडावेगा। गुर गोबिन्द बोल अलख, पुरख अकाल इक मन्नावेगा। बाले नीहां हेठां रख, कलयुग अन्त जड़ उखड़ावेगा। साचा लेखा गया दस्स, धुर दा लेख आप समझावेगा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण रहे हस्स, हरि का भेव कोए ना पावेगा। वेद व्यासा लिख के गया हथ्थ, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा उच्चे टिल्ले पर्बत डेरा लावेगा। मूसा वेंहदा रिहा प्रतख, जलवा नूर इक जणावेगा। ईसा अक्खां नाल रिहा तक्क, मेरा पीर मेरे पिच्छे फेरा पावेगा। मुहम्मद कहे नबेड़ा करे हक़, सिर अमामां रूप वटावेगा। नानक किहा आए पुरख समरथ, निहकलंका नाउँ रखावेगा। गुर गोबिन्द किहा सम्बल जाए नगर वस, साढे तिन्न हथ्थ आप वडयावेगा। चार युग दा खेड़ा जाए ढट्ठ, नौं सौ चुरानवे चौकड़ी पन्ध मुकावेगा। सच धर्म दा खोल्हे हट्ट, कूड़ी क्रिया रोग गंवावेगा। चार वरनां देवे इक्को मत्त, ब्रह्म मति इक समझावेगा। ग़रीब निमाणयां रखे दे कर हथ्थ, कोझयां कमलयां गोद बहावेगा। शाह सुल्तानां झोली करे सक्ख, तख्त ताज सर्ब मिटावेगा। अन्तिम खेड़ा

सब दा करे भट्ठ, बण भठियाला अग्नी डाहवेगा। लख चुरासी विचों गुरमुख विरले लए रख, जिन्हां आपणा भेव खुल्हावेगा। पीर पैगम्बर गुर अवतार सब दा करे इकट्ठ, चार युग दा पन्ध मुकावेगा। प्रगट हो पुरख समरथ, धुर दा हुक्म इक सुणावेगा। जिस दा पन्ध मुकौदे नट्ठ नट्ठ, सो पांधी बण के आवेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, विष्न ब्रह्मा शिव तेरा लहिणा अन्त मुकावेगा। तेरा लहिणा अन्त मुकाएगा। अबिनाशी करता इक्को आएगा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग वेख वखाएगा। कलयुग अन्तिम फेरा पाएगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर आप उठाएगा। विष्न ब्रह्मा शिव नाल रलाएगा। करोड़ तेतीसा भेव चुकाएगा। ईसा मूसा पड़दा लाहेगा। मुख नकाब ना कोए रखाएगा। सच आदाब इक समझाएगा। हक़ जनाब फेरा पाएगा। आफ्ताब इक रुशनाएगा। महिबूब इक्को नज़री आएगा। सच अरूज सोभा पाएगा। मुरीद मुर्शद कर महिफ़ूज, महिफ़ल आपणी आप समझाएगा। दरगह साची वखाए हदूद, हाज़र हो के आप समझाएगा। जिस दा पढ़दे हज़ारा दरूद, इस्म आज़म आपणी कार कमाएगा। सो साहिब होए मौजूद, मौजूदगी सब दी वेख वखाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम लेख चुकाएगा।

१२४ विष्न ब्रह्मा शिव रखणा याद, आदि पुरख आप समझाईआ। जुग चौकड़ी देवां दाद, गुर अवतार मात प्रगटाईआ। लेखा जाणा सन्त साध, भगत भगवान कर पढ़ाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड वजा नाद, पुरी लोअ करां शनवाईआ। लख चुरासी साजण साज, घर घर आपणा डेरा लाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चला जहाज़, चप्पू इक्को हथ्थ उठाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां धुर दी मार आवाज़, इकट्ठे इक्को घर कराईआ। वेखो हरि का कलमा सच निमाज़, नमाज़ी आपणा भेव जणाईआ। जिस साजण ल्या साज, सो सज्जण रिहा उठाईआ। सच दुआरे आउणा भाज, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। सचखण्ड दा वेखो राज, रयत्त इक्को रिहा बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम मेला लए मिलाईआ। कलयुग वेला अन्तिम आवेगा। सच अमाम फेरा पावेगा। धुर कलाम इक जणावेगा। सच पैग़ाम इक पुचावेगा। चौदां सदीआं जो होए बदनाम, बदी सब दी वेख वखावेगा। जिस ने पीर पैगम्बर कीते ग़ुलाम, सो बरदे बन्न्ह ल्यावेगा। चार कुण्ट रहिण ना देवे कोई हराम, हरामी सारे वेख वखावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल अन्तिम फेरा पावेगा। कल अन्तिम हरि जू आया ए। नर नरेश रूप वटाया ए। दर दरवेश फेरा पाया ए। विष्न ब्रह्मा शिव उठाया ए। अन्तर जणाए इक्को लिव, बाहरों नाद ना कोए वजाया ए। डूंघी धार खोल्हे भेव, अभेद आप दृढ़ाया ए। जुग जुग करो साची सेव, सेवा हरि जू लेखे लाया ए। देवणहारा अगम्मी मेव, अमृत फल इक वखाया ए। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, साचा राह आप दरसाया ए। साचा राह इक दरसाउँदा ए। सचखण्ड दुआर वडयाउँदा ए। लोकमात वेस वटाउँदा ए। नर नरायण नाउँ धराउँदा ए। सीस जगदीश ताज सुहाउँदा ए। आपणे मुख आप वखाउँदा ए। दो जहानां दुःख गवाउँदा ए। जुग चौकड़ी जो सुखणा रहे सुख, तिन्हां आसा पूर कराउँदा ए। जन भगतां लाहे लग्गी भुक्ख, जन्म कर्म रोग मिटाउँदा ए। साची गोदी लए चुक्क, चुक्क चुक्क खुशी आप मनौंदा ए। दूर दुराडयां लए पुच्छ, नेरन नेरा नज़री आउँदा ए। सति सतिवादी वेखे झुक, शहिनशाह आपणी वंड वंडाउँदा ए। कलयुग अन्तिम बूटा देवे पुट्ट, धुर दा माली फेरा पाउँदा ए। श्री भगवान नालों गए जो रुट्ठ, तिन्हां दोज़ख़ अग्न तपाउँदा ए। विष्न ब्रह्मा शिव अन्त कोई ना रहे लुक, लुक्या आपणा पड़दा लौंहदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाउँदा ए। साची करनी हरि कमाउँदा ए। निहकलंक नाउँ धराउँदा ए। शब्दी डंक इक वजाउँदा ए। गुर अवतार आप उठाउँदा ए। दर दुआर बंक बणाउँदा ए। साचा हुक्म इक सुणाउँदा ए। चार युग दे विछड़े यार मिलाउँदा ए। दीन मज़्हब दा मोह चुकाउँदा ए। साची सो इक सुणाउँदा ए। तुसीं मेरे गए हो, होका हरि जू इक अलाउँदा ए। दूजा रहे ना कोए को, कोटी कोट उठाउँदा ए। घर दीपक करे लो, अज्ञान अन्धेर मिटाउँदा ए। आत्म परमात्म जाए छोह, ब्रह्म पारब्रह्म समाउँदा ए। कूड़ी क्रिया सब तों लए खोह, ख़ाली हथ्थ फिराउँदा ए। गुर अवतार पीर पैगम्बर किसे नाल ना करे धरोह, धोखा दे ना कोए भुलाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग वेला अन्त सुहाउँदा ए। कलयुग वेला अन्त सुहाउँदा ए। नानक लेखा पूर कराउँदा ए। कल कल्की वेस वटाउँदा ए। सृष्ट सबाई मरदी आप बचौंदा ए। माणस जन्म सृष्टी हरदी, साचा सुख़न आप सुणाउँदा ए। जिस साहिब कोलों गुरमुख आसा डरदी, तिस सतिगुर आप मिलाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल वखाउँदा ए। हरि आपणी खेल वखावेगा। इक्की सावण दया कमावेगा। पतित पावण लेख लिखावेगा। लिख्या लेख ना कोए मिटावेगा। कलयुग कूड़ा भेख चुकावेगा। साचा देस इक वसावेगा। नर नरेश वेख वखावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कल आप वरतावेगा। साची कल प्रभू वरतावेगा। चार कुण्ट अन्धेरा छावेगा। साचा चन्द नज़र ना आवेगा। टुट्टी गंढु ना कोए वखावेगा। सृष्ट सबाई पावे डण्ड, हरि का नाम ना कोए ध्यावेगा। कलयुग जीव होई नार रंड, हरि कन्त ना कोए हंढ़ावेगा। लख चुरासी भागां मंद, चारों कुण्ट वेख वखावेगा। जिन्हां साहिब दा गाया सच्चा छन्द, तिन्हां आपणा रंग वखावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी पूरी करे मंग, मांगत नज़र कोई ना आवेगा। हरि मंगता इक उपजाइंदा, पारब्रह्म करतार। जुग चौकड़ी

वेख वखाइंदा, निरगुण सरगुण लै अवतार । जीव जंत वेख वखाइंदा, लख चुरासी पावे सार। शास्त्र सिमरत वेद पुराण आप उपजाइंदा, गीता ज्ञान दए आधार। अञ्जील कुरान तीस बतीस आप समझाइंदा, सच हदीस परवरदिगार। मुकामे हक़ सोभा पाइंदा, शाह पातशाह सच्ची सरकार। राम रहीम रहमान आप अख्वाइंदा, रहबर बणे विच संसार। कलयुग अन्तिम मेट मिटाइंदा, सतिजुग साचा करे उज्यार। साची रुत्त इक सुहाइंदा, सचखण्ड निवासी सांझा यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुर दी धार। धुर दी धार आप समझाएगा। जुग चौकड़ी लेख मुकाएगा। दो जहान वेख वखाएगा। राज राजान डेरा ढाहेगा। शाह सुल्तान इक हो जाएगा। मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला, इलाही नूर इक चमकाएगा। दो जहानां देवे सद्दा, सद आवाज़ इक सुणाएगा। पन्द्रां कत्तक आवे भज्जा, पारब्रह्म प्रभ फेरा पाएगा। सच दुआरे बहि के सजा, भगत दुआर इक वडयाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आप आपणा खेल खिलाएगा। भगत दुआर सच्ची सरकार, सच सिँघासण सोभा पाईआ। दिल्ली तख्त दिली दिलदार, दिलबर आपणा लए बणाईआ। आपे तालब पूरी करे आपणी तलब तलबगार, ताकत आपणे हथ्थ रखाईआ। वरते हुक्म इक संसार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। वाली हिन्द होणा ख्वार, होणी सब दे सिर ते छाईआ। आउणा पए सच दरबार, नंगी पैरीं फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दो इक वंड वंडाईआ। दो इक दा सच्चा गानां, सो साहिब आप बंधाईआ। प्रगट हो श्री भगवाना, भगवन आपणी कार कमाईआ। लेखा जाणे दो जहानां, ज़िमीं असमानां पड़दा लाहीआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दए परवाना, धुर फ़रमाना आप जणाईआ। पिछला छड्डणा पए ईमाना, आमल इक्को अमल कराईआ। सब ने गाउणा सच्चा गाणा, सोहँ राग इक अलाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश करे परवाना, हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई इक पढ़ाईआ। कलमा रसूल सच्चा गाणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका एक दए जणाईआ । गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे हस्सण, प्रभ दर ते ख़ुशी मनाईआ। वड वड्याई प्रभ आया मार्ग दस्सण, निरगुण आपणा वेस वटाईआ । हर हिरदे अन्दर आया वसण, हरि मन्दिर रूप वखाईआ। तीर अणयाला आया कसण, तिक्खी मुखी धार चलाईआ। कूड़ी क्रिया आया झस्सण, चरणां हेठ दबाईआ। लख चुरासी विचों वरोले मक्खण, नाम मधाणा इक्को पाईआ। जन भगतां खोल्हे इक्को अक्खन, सो अक्ख आपणे नाल मिलाईआ। साचे काअबे कराए आपणा हजन, हाजी आपणी दया जणाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड सत्त दीप जीव जंत साध सन्त किसे ना देवे भज्जण, भज्जयां राह नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दृष्टी दए खुल्हाईआ। साची दृष्टी देवे खोल्ह, दृष्टांत इक्को इक जणाइंदा। सृष्टी

मालक बोले बोल, अनबोलत राग अलाइंदा। गुरमुख वसो प्रभ दे कोल, बिन भगतां श्री भगवान ना सोभा पाइंदा। दर आ के पड़दे लवो खोल्ह, बंद ताकी कुण्डा लाहइंदा। घर शब्द अगम्मी सुणो ढोल, अनहद नादी नाद सुणाइंदा। आत्म परमात्म मिल के करो चोल्ह, साची सेजा इक सुहाइंदा। हरि का रूप कोई ना जाणे पंडत पांधा रौल, पढ़यां हथ्थ किसे ना आइंदा। जुग चौकड़ी निरगुण तैनूं सरगुण करदा रिहा मखौल, मसख़रा तेरा रूप वटाइंदा। तेरा अन्त ना पाए कोई उपर धौल, धरनी धरत समझ ना कोए समझाइंदा। विष्नूं तेरा पूरा करे कौल, ब्रह्मे तेरा इकरार वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां रखे अडोल, अडुल आपणे रंग रंगाइंदा। साचे रंग रंगे भगवन्त, भगवन आपणी दया कमाईआ। सतिजुग तेरा साचा मंत, मन्त्र इक्को नाम पढ़ाईआ। गढ़ तोड़े हउमें हंगत, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। मेल मिलावा साची संगत, सगला संग निभाईआ। भेव खुलाए बोध अगाधा आत्म पंडत, परमात्म करे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा इक प्रगटाईआ । सचखण्ड दुआरा प्रगटे मात, धरत धवल आप सुहाइंदा। चार वरन बणाए इक जमात, अक्खर वक्खर इक पढ़ाइंदा। कलयुग मेटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चढ़ाइंदा। पुरख अकाल सज्जण साक, दीन दयाल दया कमाइंदा। जन भगतां खोल्ह ताक, आपणा घर वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साची कल वरताइंदा। सतिजुग वरते साची कल, कलधारी आप वरताईआ। नव खण्ड जाए हल, धरनी धीर ना कोए धराईआ। सृष्ट सबाई वेखे डूंग्घी डल, डूंग्घा सागर तरन कोए ना पाईआ। सिंमल नज़र ना आए फल, ख़ाली रुक्ख फुल्ल रहे महकाईआ। अमृत मिले ना कोई जल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेखण आईआ। कलयुग अन्तिम वेखणहारा, एकँकारा आप अख्वाइंदा। सो पुरख निरँजण निरगुण धारा, हरि पुरख निरँजण फेरा पाइंदा। एकँकारा कर पसारा, आदि निरँजण डगमगाइंदा। अबिनाशी करता ला अखाड़ा, लख चुरासी नाच नचाइंदा। श्री भगवान वजावे ताड़ा, ताल इक्को इक समझाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म दस्से भेव न्यारा, निरगुण आपणा राह समझाइंदा। सोहँ शब्द सच जैकारा, आदि जुगादि आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दी साची धारा, थिर घर दा इक पसारा, कलयुग दी अन्तिम वारा, लोकमात आप जणाइंदा। लोकमात कल अन्तिम वेला, वेला वक्त समझ ना आईआ। श्री भगवान सज्जण सुहेला, सांझा पीर फेरा पाईआ। वसणहारा सदा रंग नवेला, निरगुण आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जाता वड वड्याईआ। जोती जाता आदि निरँजण, जुग चौकड़ी खेल खिलाइंदा। सतिगुर साहिब दर्द दुःख भय भंजन, भव

सागर पार कराइंदा। चरण धूढ़ी देवे मजन, दुरमति मैल धवाइंदा। नेत्र नाम पाए अंजन, अज्ञान अन्धेर गंवाइंदा। कलयुग अन्त सन्त सुहेले आया सद्दण, धुर संदेसा आप सुणाइंदा। जोत सरूप जोती मघन, साची लग्न इक लगाइंदा। त्रैगुण मेटे लग्गी अग्न, अमृत मेघ मेघ बरसाइंदा। नाम साचा लाए मुख सगन, साचा संग बणाइंदा। आत्म परमात्म तेरा इक्को भजन, सोहँ ढोला राग अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा नाम समझाइंदा। सतिजुग सच्चा इक्को नाम, अमृत बाणी रस जणाईआ। सतिजुग सच्चे इक्को काम, निहकर्मी आप समझाईआ। सतिजुग सच्चे इक्को राम, राम रूप हरि वखाईआ। सतिजुग सच्चे इक्को काहन, साची बंसुरी नाम शनवाईआ। सतिजुग साचे इक्को अमाम, इक्को कलमा दए पढ़ाईआ। सतिजुग सच्चे इक मकान, मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मठ्ठ गुरुदुआरा इक्को नज़री आईआ। सतिजुग सच्चे इक्को तीर्थ तट, सरोवर इक्को इक सुहाईआ। सतिजुग सच्चे खुल्हे इक्को हट्ट, चार वरन वणज वखाईआ। सतिजुग सच्चे इक्को मति, मनमति रहिण ना पाईआ। सतिजुग सच्चे इक्को रत्त, नाड़ बहत्तर रत्त ना कोए उबलाईआ। सतिजुग सच्चे इक्को वत, बीज मन्त्र घर घर दए बिजाईआ। सतिजुग सच्चे इक्को रथ, बण रथवाई आप चलाईआ। सतिजुग सच्चे पाए नथ्थ, नाम डोरी हथ्थ उठाईआ। सतिजुग सच्चे सोहँ ढोला लैणा रट, चारे युग खुशी मनाईआ। द्वापर त्रेता चरणी रहे ढठ्ठ, कलयुग रोवे मारे धाहींआ। दरोही खुदाए मेरी होई बस्स, बसता अलिफ़ ये बंधाईआ। अक्खरां नाल गाया ना जाए जस, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। लभ्भयां किसे ना आयों हथ्थ, प्रभ तेरी वड वड्याईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रगट, जन भगतां इक बुझाईआ। हिरदे अन्दर गिउँ वस, वास्ता आपणे नाल पाईआ। अमृत निझर दित्ता रस, झिरना इक्को इक झिराईआ। दूई द्वैती मिटी वट, शरअ शरीअत नज़र कोए ना आईआ। साचा मार्ग दित्ता दस्स, दहि दिशा वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे मेल मिलाईआ। घर साचे हरि मिलंदड़ा, मेहरवान भगवान। कलयुग अन्तिम वेस वटंदड़ा, योद्धा सूरबीर बलवान। गुर अवतार आप उठंदड़ा, पीर पैगम्बरां देवे ध्यान। विष्न ब्रह्मा शिव नाल रलंदड़ा, हुक्म सुणाए हुक्मरान। कलयुग अन्तिम पन्ध मुकन्दड़ा, कूड़ी क्रिया मिटे निशान। सतिजुग साचा आप उठंदड़ा, साचा युग करे सवाधान। साचा नाम झोली पवंदड़ा, सोहँ देवे दान। मस्तक टिक्का इक लगंदड़ा, जोती नूर जगे जहान। बजर कपाटी तोड़ तुड़ंदड़ा, बख्शणहारा चरण कँवल ध्यान। आत्म सेज इक सुहंदड़ा, सच दुआरे हो मेहरवान। आत्म परमात्म मेल मिलंदड़ा, आवण जावण चुक्के काण। सुरती शब्दी गंढु पवंदड़ा, नाता जोड़े नौजवान। अंगीकार आप अख्वंदड़ा, लेखा जाणे गोपी काहन। साचा मन्दिर इक वसंदड़ा, भगत दुआरा करे परवान। पन्द्रां कत्तक हुक्म वरतन्दड़ा,

१२६

१५

कलयुग क्रिया पूरी कीती आण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे दो जहान। दो जहानां बण के वाली, वली अहिद ना कोए बणाइंदा। पन्द्रां कत्तक चौथे युग कर के ख़ाली, चारों कुण्ट आप फिराइंदा। चल्ल के आए धुर दा माली, जो बाग़ीचा आदि लगाइंदा। जिस दे अग्गे विष्न ब्रह्मा शिव स्वाली, सब दी आसा पूर कराइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर शब्दी करदे रहे दलाली, जुग चौकड़ी खेल कराइंदा। खेल दस्सदे रहे हक़ हलाली, हकीकत इक्को इक वड्याइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आपणा हुक्म वरताइंदा। हुक्म वरते दो जहान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सचखण्ड निवासी धुर फ़रमान, धर्म संदेसा इक जणाईआ। नर नरेसा वड प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मन्नण इक्को आण, दूजा राह ना कोए वखाईआ। पन्द्रां कत्तक सारे इकट्ठे हो के आपणा आपणा देण ब्यान, कीती करनी सर्ब जणाईआ। तेरे हथ्थ श्री भगवान, आपणी डोर फड़ाईआ। किसे दी करे ना कोई कमान, हुक्म देवे ना वाहो दाहीआ। तेरे बालक बच्चे नढ्ढे नादान, तेरे चरणां सीस झुकाईआ। तेरा संदेसा सुण फ़रमान, सब ने ख़ुशी मनाईआ। कलयुग अन्तिम तेरी तक्कदे गए आण, इक्को ओट रखाईआ। कवण वेला साहिब सतिगुर वेखे आण, प्रभ आपणा फेरा पाईआ। तेरे अग्गे साडा ख़ाली दिसे मैदान, शस्त्र हथ्थ ना कोए उठाईआ। योद्धा हो के फिर बलवान, बलधारी तेरी शरनाईआ। तेरा झुलणा इक निशान, पुरख अकाल तेरे नाम वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग लैणा लाईआ। पन्द्रां कत्तक लेखा लिख के, हथ्थ फड़ावांगे। सारे इकट्ठे आईए मिथ के, मिथ्या सर्ब जहान करावांगे। तेरी नज़री आईए दिस के, दिशा तेरी वंड वंडावांगे। तेरे पेशी आईए पिस के, कलयुग चक्की अन्त चलावांगे। तेरे हुक्मे उत्तों कलयुग जीव सारे खिसके, फड़ सारे बन्न्ह ल्यावांगे। दो जहानां विचों फिटके, डूंघी भँवरी अन्त रुढ़ावांगे। तेरा नाम मधाणा रिड़के, नेत्रा गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणी हथ्थीं खिच खिचावांगे। जेहड़े तेरीआं उडीकां करदे चिर के, तिन्हां सोइआं आप उठावांगे। वेखो हाल सच्चे पिर दे, पिता परमेश्वर तेरे नाल मिलावांगे। दीन मज़्हब जो आपो विच दी भिड़दे, तिन्हां फड़ के ख़ाक रलावांगे। जुग चौकड़ी तेरे गेड़े गिढ़दे, कलयुग उलटी लट्ठ गिढ़ावांगे। शाह सुल्तान वेखो तख़्तों रिड़्हदे, सम्मत इक्की वंड वंडावांगे। जन भगतां हिरदे कदी ना फिरदे, तेरे भगत तेरे नाल मिलावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरा वेख वखावांगे। गुर अवतार सारे आउणगे। पन्द्रां कत्तक रुत्त सुहाउणगे। छत्र सीस इक झुलाउणगे। जगदीश पुरख इक मन्नाउणगे। हदीस इक्को इक पड़्हौणगे। राग छत्तीस नैण शरमाउणगे। बीस इकीस ख़ुशी मनाउणगे। जो चिट्टे उते काली पा के गए लीक,

सो गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणी अक्खीं वेख प्रभ अग्गे आप टिकाउणगे। तेरे दर तों मंगदे रहे भीख, भिक्खक हो के एह सुणाउणगे। कलयुग अन्तिम साडा साहिब सब नूं लए जीत, निहकलंक तेरी सरन सर्ब तकाउणगे। एथे ओथे दो जहान तेरा गौण इक्को गीत, मन्दिर मसीत तेरा राह तकाउणगे। सदी चौधवीं रही बीत, बिस्तरे सारे आप उठाउणगे। किसे ना मिले मंगयां भीख, दर दर भुक्खे पेट वजाउणगे। शाह सुल्तानां होणा ढीठ, ग़रीब निमाणे तेरा नाम ध्याउणगे। तेरे नाम दी चले इक्को रीत, दूजा राह ना कोए लगाउणगे। तेरे चरणां लग्गे प्रीत, परम पुरख तेरी ओट सर्ब रखाउणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देणा साचा वर, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान तेरा हुक्म इक सुणाउणगे। तेरा हुक्म इक अवल्लड़ा, समझ किसे ना आईआ। जुग जुग देवें आप इकल्लड़ा, बेपरवाह तेरी बेपरवाहीआ। कलयुग अन्त धाम इक्को मल्लड़ा, सम्बल नगर डेरा लाईआ। महल अटल इक अटलड़ा, अचल्ल नज़री आईआ। धुर दा दीपक सच्चा बलड़ा, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। नाम संदेसा साचा घल्लड़ा, घर घर करें पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, साची करनी कार कमाईआ। साची करनी कर कार, करते तेरे हथ्थ वड्याईआ। सदी चौधवीं रोंदे चार यार, साचा संग ना कोए निभाईआ। अल्ला राणी नार मुटयार, कन्या कुँवार ना कोए प्रनाईआ। झूठा करया जगत शृंगार, कज्जल नैण धार बंधाईआ। लाल मैंहदी कर प्यार, कूड़ी क्रिया रंग वखाईआ। अन्तिम रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। चौदां तबक सुणे ना कोई पुकार, इक चार ना कोए शनवाईआ। इक इकल्ला एकँकार, चौथे युग फेरा पाईआ। डुब्बदे पाहन लाए पार, पाथर आपणा चरण छुहाईआ। सखी सरवर इक सरदार, सच सुल्तान वड वड्याईआ। रहबर बणया परवरदिगार, बेपरवाही विच समाईआ। ख़ालक ख़लक लए उठाल, धुर संदेसा इक जणाईआ। सब दे सिर कूके काल, कलयुग नगारा काल वजाईआ। कोई ना पुच्छे मुरीदां हाल, मुर्शद बैठे मुख छुपाईआ। मक्का काअबा रहे भाल, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा रिहा मुकाईआ। सब दा लेखा मुक्कदा जांदा, मुक्के जगत लोकाईआ। कलयुग अन्तिम थक्का मांदा, आपणा बेड़ा रिहा डुबाईआ। चारों कुण्ट वेख वखांदा, साचा संग ना कोए रखाईआ। भरमे भुल्ला पंडत पांधा, पांधा कुण्डली रास ना कोए जणाईआ। चौदां विद्या अन्तर आंधा, बसन्तर अग्न रही जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कल कल्की खेल रचाईआ। कल कल्की खेल करे गोबिन्द, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। लेखा जाणे डूंघी भँवरी सागर सिन्ध, गहर गवर बेपरवाहीआ। तख़्तों लाहे सुरप्त राजा इंद, शंकर लेखा मूल चुकाईआ।

ब्रह्मा पारब्रह्म प्रभ वेखे आपणी बिंद, विष्नूं विश्व धार समझाईआ। दीन दयाल बण बख्शंद, बख्शिश आपणी आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर दा सच विहारा, करे कराए करतारा, कुदरत करता वेख वखाईआ। कुदरत करता वेखण आया, वेद शास्त्र भेव ना आईआ। लेखा जाणे त्रैगुण माया, त्रै त्रै पड़दा आप उठाईआ। पंज तत तन भेव चुकाया, घर वज्जे नाम वधाईआ। सम्बल नगर डेरा लाया, संभल संभल चरण टिकाईआ। अबिनाशी करता नज़र ना आया, धरनी धरत सोभा पाईआ। धुर दा बकता बोल सुणाया, सुणे सर्ब लोकाईआ। जुग जुग रच्छया करदा आया, जन भगतां लए तराईआ। कलयुग अन्तिम वेख वखाया, गुरमुख गुर गुर लए उठाईआ। भगत दवारे लए बहाया, साहिब सतिगुर कर कुड़माईआ। सुरती शब्दी मेल मिलाया, अनन्द मंगल इक्को गाईआ। साची जोड़ी जोड़ जुड़ाया, घोड़ी नाम आप चढ़ाईआ। थोड़ी थोड़ी संगत दए समझाया, बौहड़ी बौहड़ी करे सर्ब लोकाईआ। लख चुरासी कौड़ी वेल वेख वखाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अमृत रस गुरमुखां विच भराईआ। अंमित रस इक अनूठा, सो साहिब आप उपजाइंदा। दीन दयाल ठाकर स्वामी तुट्ठा, मेहरवान दया कमाइंदा। गुरसिखां उठावे जिउँ माँ करे लाड आपणे पुत्ता, बिन पिता पुत्त गोद ना सोभा पाइंदा। किसे कम्म ना पीता आउणा हुक्का, हुक्म धुर दा आप जणाइंदा। औह वेखो पीर पैगम्बर अग्गों वखावण इक्को मुक्का, मुख़बर हरि जू आप हो जाइंदा। अञ्जील कुरान जेहड़े दे के गए रुक्का, सो रुख़सत कट के अन्तिम वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार पीर पैगम्बर इक्को दर सुहाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखण आए, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। साडी सिख्या सारे गए भुलाए, धुर दा हुक्म सीस ना कोए टिकाईआ। तेई अवतार रहे शरमाए, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। भगत अठारां रहे कुरलाए, कबीर जुलाहा रोवे मारे धाहींआ। कलयुग जीव मेरा साहिब क्यों गए भुलाए, जिस दिती माण वड्याईआ। राम कृष्न ना किसे नज़री आए, इष्ट दृष्ट ना कोए खुल्हाईआ। साचे हुजरे कोई चढ़न ना पाए, जगत मुजरा वेखे ख़लक खुदाईआ। आबरू इज्ज़त गए गंवाए, बेइज्ज़त देण दुहाईआ। साची ख़िदमत ना कोए कमाए, ख़ादम नज़र कोए ना आईआ। फ़ितरत गए सर्ब मिटाए, ऐश इशर्त इक हंढ्ढाईआ। सिखर चोटी चढ़ के कोई रास ना पाए, महिबूब बैठा मुख छुपाईआ। विछड़ विछड़ सारे देण दुहाए, दरोही दरोही रहे सुणाईआ। बिखर बिखर मणके लए गंवाए, गानी कंठ ना कोए बंधाईआ। तसबी हथ्थ ना कोए उठाए, मन का मणका ना कोए भवाईआ। नील वस्त्र ना कोए रंगाए, नीली धार पन्ध ना कोए मुकाईआ। काला सूसा ना कोई तन छुहाए, ईसा मूसा ना दए गवाहीआ। सच हदीसा ना कोई पढ़ाए, अलिफ़ ये रही कुरलाईआ। साचा मकतब

कोई नज़र ना आए, मतलब सके ना कोए समझाईआ। ऐन ग़ैन ना कोई दृढ़ाए, हमज़ा रमज़ ना कोए लगाईआ। ज़ेर ज़बर ना कोई समझाए, नुक्ता नून ना कोए मिटाईआ। बेखबर खबर ना कोई सुणाए, खाह मखाह लड़े जगत लोकाईआ। सबर प्याला जाम ना कोई प्याए, आबेहयात ना मुख लगाईआ। सच लुग़ात ना कोई वखाए, जिस दा अक्खर समझ कोई ना पाईआ। बिन वफ़ात कोई नज़र ना आए, फ़तवे सब दे उते लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक दे दे साचा वर, कलयुग अन्त तेरी सरनाईआ। कलयुग अन्त मेरे महिबूब, वास्ता तेरे नाल बंधाईआ। बाकी सारे होए मौकूफ़, मुफ़लस दिसे सर्ब लोकाईआ। पीर पैगम्बरां कोलों खुसणे हकूक, हक़ तेरे हथ्थ वड्याईआ। तूं आप होणा मसरूफ़, आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जलवागर कर रुशनाईआ। जलवागर तेरी रुशनाई, रोशन ज़मीर इक जणाईआ। बेपरवाह तेरी बेपरवाही, बेपरवाही खेल खिलाईआ। परवरदिगार तेरी वड्याई, पर्दानशीं तेरा पर्दा दए चुकाईआ। कागद कलम ना जाणे शाही, अञ्जील कुरान समझ ना पाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद इक्को रमज़ लगाई, रमज़ान विच फ़ाके दित्ते कटाईआ। सच ईमान इक दृढ़ाई, इबनुलवक्त आप समझाईआ। सच शहादत इक रखाई, शहिनशाह आपणी दया कमाईआ। इबादत इक्को इक वखाई, काया काअबा पढ़े कलमा, बुतखाना बणे मैख़ाना, विच फिरे इक दीवाना, दीन दुनी जिस समझ कोए ना पाईआ। सो साहिब कलयुग अन्तिम लै के आए परवाना, लेखा जाणे दो जहानां, नूर इलाही नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सदी चौधवीं तेरा तग़मा, पीर पैगम्बर धुर दा सुणो उठ के नग़मा, हाज़रीन नाज़रीन नायक सहायक ख़ालक ख़लक आप जणाईआ। ख़ालक ख़लक कहे मबीन, महिव तेरे हथ्थ वड्याईआ। पीर पैगम्बर तेरा करन यकीन, बण बरदे सीस झुकाईआ। हुक्मे अन्दर कर इक तलकीन, तकवा इक जणाईआ। पन्द्रां कत्तक सब ने बणना दर मस्कीन, मस्ती सब दी देवे लाहीआ। दर दरवेश होण अधीन, आदाब सलाम इक कराईआ। जो दस्सदे गए गोईपेशीन, सो आपणा हक़ देण हथ्थ फड़ाईआ। लेखा चुक्के नर मदीन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताईआ। साचा हुक्म देवे कलाम, कलमा नबी पढ़ाईआ। सजदा सीस करे सलाम, इक ध्यान लगाईआ। दो इक दा सच निशान, दो जहान झुलाईआ। इक्की सावण इक अमाम, बेपरवाह फेरा पाईआ। शाह पातशाह श्री भगवान, शहिनशाह इक अख्वाईआ। तख्त निवासी हुक्मरान, धुर संदेसा आप सुणाईआ। सतिजुग साचे हो प्रधान, कलयुग कूड़ी मिटे छाहीआ। चार वरनां मिले ज्ञान, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। आत्म परमात्म मिले आण, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। हरिसंगत तेरा आउणा जाणा होया परवान, माणस जन्म

वज्जे वधाईआ। सतिगुर पूरा साहिब सदा मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर नरेश इक हो जाईआ। नर नरेश भगत भगवान, दर साचे दया कमाइंदा। रल मिल गाओ एका गाण, गीत गोबिन्द जणाइंदा। सब दा इष्ट श्री भगवान, पुरख अकाल नज़री आइंदा। जुग चौकड़ी देवे दान, भगत वछल झोली आप भराइंदा। ध्रू प्रहिलाद तारे आण, बल बावन वेख वखाइंदा। अमरीक करे कल्याण, जनक रंग रंगाइंदा। हरी चन्द कर परवान, बिदर सुदामा वेख वखाइंदा। जै देव कर प्रधान, पाती पाती आप पढ़ाइंदा। धन्ने सधने हो मेहरवान, बेणी आपणी गंढु खुलाइंदा। रविदास चुमारे दे निशान, कंगण कसीरा रूप वटाइंदा। कबीर जुलाहे ताणा तणे आण, तन्दन तन्द गंढु पवाइंदा। सैण नाई हो मेहरवान, राज राजान सेव कमाइंदा। गनका बद्धक पूतना तारे आप भगवान, सिर मेहर हथ्थ टिकाइंदा। जुग विछड़े मेले आण, नामे छप्पर छन्न छुहाइंदा। नानक गोबिन्द कर परवान, छत्ती युग दी वंड वंडाइंदा। जुग चौकड़ी खेल महान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढ्ढाइंदा। कलयुग अन्तिम हो प्रधान, निहकलंका नाउँ रखाइंदा। साढे तिन्न हथ्थ दा इक निशान, साची वस्त आप प्रगटाइंदा। नौ दुआरे खोल्ह दुकान, सृष्ट सबाई आप समझाइंदा। भगत दुआरा कर परवान, साची वंडण वंड वंडाइंदा। जिस गृह वसे नौजवान, सच सिँघासण डेरा लाइंदा। धुर दा देवे इक फ़रमान, भेव अभेदा आप खुलाइंदा। सत्तर बहत्तर चुहत्तर करे परवान, पंचम पंच परपंच मेट मिटाइंदा। चार युग दा सच विधान, विद्दत आपणी कार कमाइंदा। वीह सौ वीह बिक्रमी खेल करे महान, मतलब इक्को इक जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सब नूं इक्को हुक्म वरताइंदा। सब ने मन्नणा हुक्म एक, एकँकार आप वरताईआ। नौ खण्ड पृथ्मी रखे टेक, दो जहान करे जणाईआ। पुरख अकाल धर के भेख, अवल्लड़ा वेस वटाईआ। वसणहारा साचे देस, सम्बल आपणी रुत्त सुहाईआ। लख चुरासी रिहा वेख, आप नज़र किसे ना आईआ। गुरमुख विरले करे हेत, फड़ बांहों गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे आप तराईआ।

✪ २६ सावण २०२० बिक्रमी माधा सिँघ दे गृह चीमा कलां ज़िला अमृतसर ✪

सचखण्ड निवासी सच दरबार, सो पुरख निरँजण आप लगाइंदा। दर दरवेश चोबदार, हरि पुरख निरँजण आप अख्वाइंदा। एकँकार सेवादार, सच साचा चाकर सेव कमाइंदा। आदि निरँजण कर उज्यार, निरगुण जोत नूर रुशनाइंदा। अबिनाशी करता बण के हुक्मरान, तख्त निवासी साचे तख्त सोभा पाइंदा। श्री भगवान सच निशान, निरगुण निरवैर आप उठाइंदा। पारब्रह्म प्रभ हो प्रधान, सति प्रधानगी आप कमाइंदा। भूपत भूप राज राजान, शहिनशाह आपणी खेल रचाइंदा। धुर संदेसा इक फ़रमान, धुरदरगाही आप उपजाइंदा। मुकामे हक़ खेल महान, परवरदिगार भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप उपाइंदा। साचा हुक्म वरते निरँकार, दूजा संग ना कोए रखाईआ। सच दुआरे हो तैयार, सति सतिवादी ख़ुशी मनाईआ। आदि जुगादी भेव न्यार, अपरम्पर स्वामी आप खुल्हाईआ। जोती शब्दी करे ख़बरदार, सच संदेसा इक सुणाईआ। नर नरेशा शाहकार, पातशाह बेपरवाहीआ। अगम्म अथाह हो उज्यार, सच विहार इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप रचाईआ। साची खेल रचे भगवान, हरि करता वेख वखाइंदा। निरगुण दाता नौजवान, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। दीपक जोती जगे महान, बाती तेल ना कोए पाइंदा। सुहाए भूमका सच अस्थान, सचखण्ड दुआर आप वड्याइंदा। छप्पर छन्न ना कोए मकान, चार दीवार ना कोए वखाइंदा। सूरज चन्द ना कोए महान, मण्डल मण्डप ना कोए डगमगाइंदा। ना कोई ज़िमीं दिसे असमान, समुंद सागर संग ना कोए रखाइंदा। करे खेल आप मेहरवान, मिहबान बीदो आपणी कार आप कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप सुहाइंदा । सच दुआर सोभावन्त, सो साहिब आप सुहाईआ। निरगुण निरगुण नर हरि नरायण बण बण कन्त, सच कन्तूहल सेज सुहाईआ। धार अगम्म बणाए बणत, ना को पिता ना कोए माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख अपरम्पर स्वामी जुग चौकड़ी सदा निहकामी, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि खेल अपारा, आदि जुगादी आप कराइंदा। लेखा जाणे धुर दरबारा, दरगाह साची सोभा पाइंदा। शब्दी सुत सुत दुलारा, विष्न ब्रह्मा शिव जोड़ जुड़ाइंदा। लख चुरासी ला अखाड़ा, चारे खाणी नाच नचाइंदा। चारे बाणी बोल जैकारा, शब्द अनादी राग अलाइंदा। दीआ बाती कमलापाती कर उज्यारा, जोत निरँजण डगमगाइंदा। जुग चौकड़ी वेखे वारो वारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाइंदा। त्रैगुण माया भर भण्डारा, पंचम वस्त आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल करे करतार, आपणे हथ्थ रखे

वड्याईआ। निरगुण सरगुण बन्ने धार, धरनी धरत धवल वड्याईआ। पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड महल अटल उसार, अचल्ल अटल दए सुहाईआ। रवि ससि कर उज्यार, जोती किरन नूर रुशनाईआ। बोध अगाध शब्द जैकार, विष्न ब्रह्मा शिव पढ़ाईआ। सच तौफ़ीक परवरदिगार, लाशरीक नूर इलाहीआ। हकीकत खोले आप किवाड़, हक़ हकूक दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रचना आप रचाईआ। साची रचना रच भगवन्त, नर हरि आपणी कार कमाइंदा। आपे आदि आपे अन्त, मध आपणा खेल वखाइंदा। आपे नार आपे कन्त, सेज सुहञ्जणी आप हंढाइंदा। आपे मणीआ आपे मंत, नाउँ निरँकारा आप प्रगटाइंदा। आपे जीव आपे जंत, साध सन्त आप हो आइंदा। आपे बोध अगाधा होए पंडत, ज्ञान गोझ आप समझाइंदा। आपे आदि जुगादी बणे अखण्डत, खण्ड खण्ड ना कोए कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा राह चलाइंदा। जुग जुग चलाए राह, हरि वड्डा वड वड्याईआ। दाता दानी बेपरवाह, निरगुण सरगुण भेव चुकाईआ। आत्म परमात्म बन्धन पा, ब्रह्म पारब्रह्म वंड वंडाईआ। ईश जीव रंग रंगा, जगदीश करे कुड़ामाईआ। सुरती शब्दी मेल मिला, मिलणी इक्को घर रखाईआ। लेखा लिख लिख कलम शाह, शास्त्र सिमरत करे पढ़ाईआ। वेद पुराणां दए समझा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी कार कमाईआ। आपणी करनी करे कार, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। जुग चौकड़ी वेखे चार, कोटन कोटि काल बिताइंदा। दो जहानां खेल न्यार, चौदां तबकां भेव चुकाइंदा। लोक चौदां खोल्ह किवाड़, शब्दी निरगुण कुण्डा लाहइंदा। लख चुरासी कर पसार, घट घट अन्दर वेख वखाइंदा। सेवा ला गुरू अवतार, पीर पैगम्बर हुक्म मनाइंदा। शब्दी ढोला गा विच संसार, जुग चौकड़ी नाम प्रगटाइंदा। वेखे विगसे वारो वार, वेखणहारा नज़र किसे ना आइंदा। धुर संदेसा नर नरेशा शब्द अगम्मी देंदा रिहा सिरजणहार, सच सुच सच आप दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाइंदा। साचा खेल वखाए आप, निरगुण सरगुण दया कमाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दस्से जाप, निष्अक्खर अक्खर रूप वटाईआ। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर बातन करे बात, बैतल आपणा भेव चुकाईआ। सति धर्म इक बणाए प्रभ जमात, इक्को अक्खर आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नित नवित्त आपणा वेस वटाईआ। नित नवित्त वेस अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप वटाइंदा। हरि पुरख निरँजण इक इकल्ला, अक्ल कलधारी खेल कराइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार फड़ाया पल्ला, पीर पैगम्बर आपणी गंढ पवाइंदा। जलवा नूर वखाया अल्ला, बिस्मिल आपणी कार कमाइंदा। जोती धार शब्दी रला, रूप रंग रेख साचे देस नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना आप मनाइंदा। धुर फ़रमाना देंदा आया, हरि शब्दी हुक्म मनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवा लाया, दर बैठे सीस झुकाईआ। त्रैगुण माया राह जणाया, पंज तत करे कुड़माईआ। लख चुरासी बन्धन पाया, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। गुर अवतार नाल रलाया, पीर पैगम्बर वेख वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढ्ढाया, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग पन्ध मुकाईआ। सच संदेस धुर दा लेख आप समझाया, रमज़ समझ नाल मिलाईआ। कमचखेल हरि खेल खिलाया, अलनेक नूर खुदाईआ। आलम उल्मा आप पढ़ाया, बेनज़ीर नजर इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी हुक्मे अन्दर, जुग चौकड़ी आप कराइंदा। पंज तत काया खोल्ह जन्दर, गुर अवतार पड़दा लाहइंदा। मन वासना बन्न्हे बन्दर, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाइंदा। भाग लग्गा डूंघे खण्डर, जोती दीप डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म वरते जग्ग, लोकमात वज्जे वधाईआ। सन्त सुहेले भगत भगवान आपे लभ्भ, लख चुरासी विचों मेल मिलाईआ। सच दुआरे निरगुण सद्द, सरगुण दए समझाईआ। कर प्रकाश उपर शाह रग, भेव अभेद खुल्हाईआ। नाम निधान वजाए नद, अनहद राग सुणाईआ। कूड़ी क्रिया पार हद्द, घर घर विच लए मिलाईआ। सच जणाए विश्व यद, वासतक आपणा भेव मिटाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म होण ना देवे अड्ड, हरिजन साचे जोड़ जुड़ाईआ। दुआर वखाए इक्को पद, पतिपरमेश्वर वज्जे वधाईआ। कोटन कोटि जुग गए लद, जुग चौकड़ी गेड़ा आप दिवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा समझाईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतार, लोकमात सेव कमाईआ। दोए जोड़ करदे गए निमस्कार, निउँ नउँ सजदा सीस झुकाईआ। तेरा नग़मा अगम्मी गुफ़तार, कलमा नबी रसूल पढ़ाईआ। तेरा सदका सिरजणहार, सिर सिर रिज़क सबाईआ। तेरा मन्दिर उच्च मनार, महिफ़ल इक्को नज़री आईआ। तेरा हुक्म अगम्म अपार, जुग चौकड़ी वरते बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराईआ। साचा खेल करे निरँकार, निरवैर दया कमाइंदा। गुर अवातर पीर पैगम्बर मंगदे गए दीदार, निरगुण निरवैर आपणा नूर आप चमकाइंदा। दर दरवेश बणदे रहे भिखार, खाली झोली सर्ब भराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा संग आप निभाइंदा। साचा संग निभाए एक, एका हथ्थ वड्डी वड्याईआ। तेई अवतारां दिती टेक, भगत अठारां भेव चुकाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद लिख्या लेख, लेखा लिखे बिन कलम शाहीआ। नानक गोबिन्द दस्सया भेत, श्री भगवान पड़दा लाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सारे मंगदे गए टेक, हरि चरण तेरी सरनाईआ। कवण वेला धारें भेख, जोती नूर करें रुशनाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए जणाईआ। आपणा लेखा दस्से भगवान, जुग चौकड़ी आप जणाईआ। नव नौ चार बीते विच जहान, थिर कोए रहिण ना पाईआ। कलयुग अन्त होए प्रधान, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। धर्म उठाए इक निशान, दो जहानां दए वखाईआ। सम्बल वसे सच मकान, डेरा इक्को घर लगाईआ। धुर संदेसा दे फ़रमान, शब्द अगम्मी आप जणाईआ। लेखा जाण राज राजान, भूपत भूप भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए मुकाईआ। साचा लेख मुकावे अन्त, अन्तष्करन सब दा वेख वखाइंदा। प्रगट हो श्री भगवन्त, भगवन आपणी कार कमाइंदा। लख चुरासी वेखे जीव जंत, साध असाध पड़दा लाहइंदा। आत्म परमात्म जणाए साचा मंत, मन्त्र इक्को इक समझाइंदा। सच सवाणी शब्द हाणी मेले कन्त, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाइंदा। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म आप समझाइंदा। सो पुरख निरँजण बण के पंडत, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा दर इक सुहाइंदा। साचा दर सोहे दरबार, घर साचे वज्जे वधाईआ। चार युग दे गुर अवतार, पीर पैगम्बर लए उठाईआ। इकट्ठे करे एको वार, एकँकारा आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। कलयुग अन्तिम चार कुण्ट दहि दिशा दए वखाल, नौ खण्ड पृथ्मी पड़दा लाहीआ। नेत्र खोल्ह करो वसाल, भेव अभेद आप जणाईआ।

१३७ १३७

१५ १५

गुरमुख लभ्भ सच्चे लाल, लाल लाल पुरख अकाल रहे मनाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ होण कंगाल, साचा हट्ट ना कोए चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कलयुग अन्तिम इक इशारा नाम जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन ध्यान, सदी वीहवीं नैण उठाईआ। सति धर्म दिसे ना कोए निशान, हरि का शब्द ना कोए कमाईआ। सिदक सबूरी ना कोए ईमान, साची शरअ ना कोए वड्याईआ। कलयुग घर घर वड़या शैतान, दर दर होए लड़ाईआ। साध सन्त होए बेईमान, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। राज राजान ना करे कोई ध्यान, रय्यत रंग ना कोए रंगाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण सर्ब पछताण, पश्चाताप करे सर्ब लोकाईआ। अञ्जील कुरान नैण शरमाण, अल्ला राणी मुख घूँगट रही पाईआ। पीर पैगम्बर ईसा मूसा मुहम्मद उच्ची बोल ना सकण ज़बान, ज़ेर ज़बर ना कोए समझाईआ। चारों कुण्ट कूड़ प्रधान, डंका इक्को रिहा वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर चार कुण्ट रहे तक्क, नेत्र नैण नैण उठाईआ। सृष्ट सबाई जो मार्ग आए दस्स, जीव जंत भुल्ले पांधी राहीआ। हिरदे हरि किसे ना रिहा वस, खाली भाण्डे रहे वखाईआ। मन वासना रहे नच्च, मति कूड़ी करे कुड़माईआ। बुद्धि हो निमाणी गई ढट्ठ, दर चले ना कोए चतुराईआ। मणका मणका

हथ्थां नाल माला रहे रट, मन का मणका ना कोए भवाईआ। हरि का नाम लभ्भदे हट्टो हट्ट, काया मन्दिर अन्दर खोजण कोए ना पाईआ। नहा नहा थक्के अट्ठसट्ठ, अमृत सरोवर अशनान करन कोए ना आईआ। पूजा करदे शिवदुआले मट्ठ, साढे तिन्न हथ्थ बंक देवे ना कोए वड्याईआ। दुरमति मैल सके ना कोई कट, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखण तमाशा, दो जहान ध्यान लगाईआ। कलयुग तेरा उलटे पासा, पुश्त तेरी रहिण ना पाईआ। सति धर्म दा होया नासा, कूड़ो कूड़ वज्जी वधाईआ। गुरमुख गुरसिख फिरे निरासा, आसा पूर ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे कहिन्दे, श्री भगवान अग्गे सुणाईआ। चारों कुण्ट सति मनारे खेड़े ढहिंदे, साचा बुरज नज़र ना आईआ। कूड़े मार्ग मनमुख जीव पैंदे, पैंडा हक़ ना कोए मुकाईआ। दीन मज़्ब इक दूजे दे नाल खहिंदे, ज़ात पात करे लड़ाईआ। चार वरन इकट्ठे हो किते ना बहिंदे, नानक गुर गोबिन्द सिख्या गए भुलाईआ। ना मुरदे ना दिसण जींदे, माणस जन्म रहे लुटाईआ। प्रभ सरनाई ना कोई थींदे, थिर घर मेल ना कोए मिलाईआ। कूड़ी मदिरा सारे पींदे, गोबिन्द तेरा अमृत पीण कोई ना आईआ। कूड़ी निंद्रा सुत्ते नींदे, ज्ञान अक्ख ना किसे खुल्ाईआ। कलयुग हुलारे चढ़ी पींघे, अन्तिम टुट्टण वेला आईआ। जिउँ किरसाण बीज बींदे, फल वढुण चाईं चाईंआ। गुरमुख सच ध्यान रखींदे, सच तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतारां रिहा जणाईआ। गुर अवतार नेत्र पेख, प्रभ साचे रहे जणाईआ। सो साहिब सतिगुर तेरा कोई ना आवे भेत, बेअन्त तेरी वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरे हुक्मे अन्दर खेड के आए खेड, बण खडारी जगत फेरा पाईआ। अन्तिम तेरा नेंहों लग्गा हेत, प्रीती इक्को चरण रखाईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा पेख, पेखणहार सच गोसाईंआ। तेरे हथ्थ असाडा लेख, दूजा समझ ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गुर अवतार मंग मंगाईआ। गुर अवतार मंगण मंग, कलयुग अन्त ध्यान लगाईआ। सृष्ट सबाई होई नंग, पड़दा ओढण सिर नज़र किसे ना आईआ। सति सरूप ना चढ़या रंग, रूप कसुंभड़ा सर्ब लोकाईआ। भंडी दिसे सर्ब वरभण्ड, भाण्डा भरम ना कोए भंनाईआ। कूड़ी क्रिया कीता रंड, साचा कन्त ना कोए हंढाईआ। बण वैरागी कोई ना गावे छन्द, अन्तर आत्म सच ध्यान ना कोए लगाईआ। दूई द्वैत कोई ना ढाहे कंध, शरअ शरीअत ना कोए मिटाईआ। दीन दयाल किसे ना मिले बख्शंद, रहमत सच ना कोए कमाईआ। ना कोई समाए परमानंद, निजानंद ना कोए रसाईआ। ना कोई

टुट्टी सके गंढु, तन्दी तन्द ना कोए जुड़ाईआ। कलयुग जीव होए अन्ध, साची अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण प्रभ वीहवीं सदी साडा मुकया पन्ध, सदी चौधवीं लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। गुर अवतारो पीर पैगम्बरो तक्को जग, जगजीवण दाता आप जणाईआ। वेखो घर घर लग्गी अग्ग, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। मन वासना सृष्ट सबाई रही भज्ज, हद्द किनारा नज़र किसे ना आईआ। माया ममता हउमें हंगता घर घर लई सद्द, सद्दा इक्को वार सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा दरसाईआ। साचा खेल वेख्या आप, गुर अवतार सीस झुकाईआ। पीर पैगम्बर कहिण तूं इक्को बाप, पिता पुरख तेरे हथ्थ वड्याईआ। गुर अवतार कहिण तूं सच्चा साक, सज्जण इक्को नज़री आईआ। सारे बैठे तेरे घाट, इकावन बावन वेस वटाईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा राख, रक्षक तेरी इक शरनाईआ। तेरी धारों उपजी तेरी ज़ात, अन्तिम तेरे विच समाईआ। पंज तत काया पा के आए वफ़ात, लोकमात रहिण ना पाईआ। तेरा हुक्म संदेसा लिख के आए कलम दवात, खाणी बाणी भेव चुकाईआ। कलयुग अन्तिम सारे बणो इक जमात, साचा अक्खर शब्द पढ़ाईआ। मिटे रैण अन्धेरी रात, कूड़ अमावस दिस ना आईआ। मिलो मेल कमलापात, कँवल नैण रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे सच्चा वर, साहिब तेरी सच सरनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बरो करो इक दलील, दयावान अख्वाइंदा। श्री भगवान बिन लिख्यों सुणे अपील, दरगाह साची सच दरबार लगाइंदा। वस्त्र पहन बनवारी नील, धुर दी करनी कार कमाइंदा। योद्धा सूरबीर छैल छबील, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आप समझाइंदा। सब दा सीस गया झुक, बन्दना इक्को वार जणाईआ। श्री भगवान साडा पैंडा गया मुक्क, एसे कारण अन्तिम तेरी ओट तकाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी सरबगुण दाता आपणी धारों पए उठ, ना कोई जन्मे पिता माईआ। दो जहान सुहञ्जणी सुहाए रुत्त, फुल फुलवाड़ी आप महकाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां जुग चौकड़ी लए पुच्छ, अगला पिछला लेखा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे दे साचा वर, जिस घर वज्जे तेरी वधाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सच जणावांगा। सब दा लेखा लेखे लावांगा। कलयुग अन्तिम लख चुरासी भरम भुलेखा आप कढ्ढावांगा। निरगुण सरगुण बण के इक्को नेता, दो जहानां हुक्म चलावांगा। जन भगतां देवां आपणा भेता, साचे सन्तां आप उठावांगा। नौ खण्ड पृथमी खेलां खेडा, सत्तां दीपां वंड वंडावांगा। शाह सुल्तानां राज राजानां तख्तों लाह के जंगल बियाबान फेरां वांग भेडां, छेड़ू इक्को बण के आवांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमावांगा। साची करनी कार कमावेगा। सो साहिब इक्को आवेगा। देस परदेस डंक वजावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव आप उठावेगा। सोया कोए रहिण ना पावेगा। लहिणा देणा सर्ब मुकावेगा। साक सैण इक हो जावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार पीर पैगम्बर इक्को नाम जपावेगा। प्रभ इक्को नाम जपावेगा। चार युग दा रंग वखावेगा। सति संग इक लगावेगा। मजलस साची आप सुहावेगा। कलयुग ख़सलत आप मिटावेगा। साचा असलत इक प्रगटावेगा। रामा बेटा दसरथ, कृष्ना काहना सीस झुकावेगा। जन भगतां मेला मेले बिछरत, विछड़े आपणा जोड़ जुड़ावेगा। अमाम आवे बण के हज़रत, हाज़र हज़ूर जलवा इक रखावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख वखावेगा। कलयुग अन्तिम वेख वखाएगा। कल कल्की निरगुण आएगा। निहकलंक डंक वजाएगा। राउ रंक आप उठाएगा। सम्बल बंक इक सुहाएगा। जीव जंत सर्ब समझाएगा। चार वरन मेल मिलाएगा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश कोई रहिण ना पाएगा। सति संदेस इक सुणाएगा। पुरख अकाल इष्ट वखाएगा। दीन दयाल दया कमाएगा। पत डाली फल महकाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराएगा। साची करनी करेगा। निरगुण नूर जोत धरेगा। सन्त सुहेले सज्जण वरेगा। गुरमुख गुरसिख आपे फड़ेगा। काया मन्दिर अन्दर चढ़ेगा। दस्म दुआरी आपे खड़ेगा। पंजा चोरां नाल लड़ेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा मार्ग इक्को धरेगा। सच्चा मार्ग इक लगावेगा। सतिजुग राह वखावेगा। कलयुग अन्त मिटावेगा। कूड़ी क्रिया दूर करावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार पीर पैगम्बर एका मन्दिर आप रखावेगा। एका मन्दिर वसेगा। पुरख अकाल निरगुण हस्सेगा। सच दवारा इक्को दस्सेगा। सेवादार हो के नट्ठेगा। करनी कोलों कदे ना हटेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, गुरमुख आपणे रंग रत्तेगा। गुरमुख आपणे रंग रंगाएगा। काया अन्दर पड़दा लाहेगा। बजर कपाटी तोड़ तुड़ाएगा। साची हाटी नाम वखाएगा। बूँद स्वांती अमृत जाम प्याएगा। रैण अन्धेरी राती मेट मिटाएगा। साची घाटी आप चढ़ाएगा। उत्तम जाति आप बणाएगा। अट्ठे पहर रहे प्रभाती, सूरज चन्द ना कोए चमकाएगा। हरिजन लाए आपणी छाती, शहिनशाह आपणा कर्म कमाएगा। करे प्रकाश बिन तेल बाती, जोत निरँजण डगमगाएगा। अमृत जाम प्याए काया बाटी, सरोवर इक्को इक वखाएगा। मेल मिलाए कमलापाती, पतिपरमेश्वर अंग लगाएगा। सतिजुग साचे बणे साथी, मार्ग इक्को इक रखाएगा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश गावण गाथी, आत्म परमात्म ढोला इक सुणाएगा। खेले खेल पाकन पाकी, पतित पापी आप तराएगा। शब्द अगम्मी चढ़ के राकी, अस्व घोड़ा

इक दौड़ाएगा। दो जहानां चाल रखे बांकी, शाह सवारा नज़र किसे ना आएगा। गोबिन्द लिख के गया पाती, अन्तिम पत्रा आप उठाएगा। जेहड़ी पहलों रहि गई बाकी, अन्तिम लेखा पूर कराएगा। जाम प्याला प्याए बण के साकी, गुरमुखां इक्को रस वखाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग साचा रंग रंगाएगा। सतिजुग साचा रंग चाढ़ेगा। श्री भगवान वेख विचारेगा। गुर अवतार सर्ब पुकारेगा। पीर पैगम्बर दर निमस्कारेगा। भगत भगवान वाजां मारेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच महल्ल इक उसारेगा। सच महल्ल प्रभू बणाएगा। कारीगर आप अख्वाएगा। बाढी नज़र कोए ना आएगा। तिन्न सौ सठ्ठ हाडी जोड़ जुड़ाएगा। बहत्तर नाड़ी नत पवाएगा। लहू मिझ गारा आप बणाएगा। नाम तगारा हथ्थ उठाएगा। प्रेम कांडी पोच पुचाएगा। ठांडा बंक इक सुहाएगा। अन्तिम आपणा डेरा लाएगा। सम्बल नाउँ इक रखाएगा। गोबिन्द गढ़ इक वसाएगा। उपर चढ़ दरस दिखाएगा। जन भगतां मेटे पिछली हरस, अगला जन्म लेखे पाएगा। कलयुग अन्तिम कर के तरस, ग़रीब निमाणे अंग लगाएगा। अमृत मेघ देवे बरस, तपदे हिरदे ठंड वरताएगा। निरगुण धारों आया परत, सरगुण आपणा हुक्म चलाएगा। गोबिन्द सूरा ला के गया शर्त, कलयुग अन्तिम निहकलंक डंक वजाएगा। कलयुग जीवां पढ़न दा होया ठरक, अन्दर वड़ दरस कोए ना पाएगा। जे कोई दूरों वेखे मन करे हरख, आत्म मेल ना कोए मिलाएगा। कलयुग सब दे कोलों मंगे धड़त, कूड़ा वट्टा हथ्थ उठाएगा। कोई ना जाणे गोबिन्द तेरी लिख्त पढ़त, लिख्त पढ़त सरसा विच रखाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां देवे वर, वर दाता अन्तिम आपणा राह लगाएगा। अन्तिम मार्ग लग्गे मात, चार युग मता इक पकाईआ। सतिजुग साची चले गाथ, हरि का नाम इक पढ़ाईआ। चरण कँवल सहारा नात, सच बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। लहिणा चुक्के मस्तक माथ, पूरब सब दा झोली पाईआ। खेले खेल पुरख समराथ, शास्त्र सिमरत वेद पुराण समझ कोए ना आईआ। सारे बैठे आपणे घाट, राह तक्कण बेपरवाहीआ। कवण वेला आए पुरख अबिनाश, साडी नईया लए चलाईआ। गोपी काहन खुशीआं विच पौंदे रास, मण्डल मण्डप नाच नचाईआ। साहिब सतिगुर दीन दयाल ठाकर स्वामी साडे आवे पास, करवट आपणी आप बदलाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद रहे झाक, झाकी इक्को इक रखाईआ। कवण वेला प्रभ खोल्हे आपणा ताक, साचे हुजरे उच्च महिराबे मुख नकाबे पड़दा लाहीआ। सति सरूप मारे इक आवाज़े, कलमा नबी रसूल दए समझाईआ। निउँ निउँ सजदा करीए दर आदाबे, सलाम असलामअलैकम आलमीन इक जणाईआ। शाहसवारा निरगुण धारा चरण देवे इक रकाबे, मक्के काअबे चरणां हेठ दबाईआ।

आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण जिस साजण साजे, तिस सजदा करना सो पीर बेपरवाहीआ। मिले मेल हरि माधव माधे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, साचा भेव आप जणाईआ। गुर अवतार करन उडीक, इक्को ओट तकाईआ। जेहड़ी लिख के गए तरीक, सो वेला नेड़े आईआ। साहिब स्वामी करन आए प्रीत, प्रीतीवान फेरा पाईआ। कलयुग बदली पिछली रीत, सतिजुग साचा राह चलाईआ। लहिणा चुके मन्दिर मसीत, घर घर विच काअबा इक्को नज़री आईआ। आत्मा गाए परमात्मा गीत, दूजी होर ना कोए पढ़ाईआ। नज़र आए ना कोए शरीक, शिरकत करे ना कोए लोकाईआ। मार्ग मिले इक बारीक, गुर किरपा चलीए वाहो दाहीआ। पुरख अकाल निरगुण दाता मिले ठीक, ठीकर कूड़ा भन्न वखाईआ। वखाए धाम इक अनडीठ, जिस घर वसे सच्चा माहीआ। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, कल आपणा वेस वटाईआ। कलयुग वेस वटाए अन्त, हरि सज्जण खेल कराइंदा। गुरमुख वेखे साचे सन्त, लख चुरासी खोज खुजाइंदा। चार वरनां मणीआ मंत, मन्त्र इक दृढ़ाइंदा। सब ने मिलणा आपणे कन्त, नर हरि कन्त इक्को नज़री आइंदा । गुरमुखो गुरसिखो काया चोली चाढ़ो रंग बसन्त, शब्द मजीठी रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जाता पुरख बिधाता कलजुग मेटे अन्धेरी राता, सतिजुग सुणाए साची गाथा, खेले खेल पुरख समराथा, देवे सहार नाथ अनाथां, दीनन आपणी दया कमाइंदा । दीनन दया कमाइंदा, दयावान करतार। विष्नूं हुक्मे नाल उठाइंदा, उठ वेख मार ध्यान। कलयुग जीव ग़रीब निमाणा अन्त कुरलाइंदा, किसे मिले ना सच पकवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे धुर फ़रमान। उठ ब्रह्मे खोल्ह अक्ख, सो साहिब आप जणाईआ । सच ब्रह्म मार्ग सके ना कोई दस्स, चार वेद विद्या ना कोए पढ़ाईआ। सच दवारिओं उठ के नट्ठ, वेला अन्तिम गया आईआ। अन्तिम छड्डुणा पए मट्ठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेस इक जणाईआ। शंकर हथ्थों सुट्ट त्रिसूल, त्रैगुण अतीता आप जणाइंदा। तेरा अन्तिम मुक्कणा मूल, लेखा लेखे हरि जू पाइंदा। नित नवित्त बदले आपणा आप असूल, असलीअत आपणे विच छुपाइंदा। धुर दा हुक्म करना पए कबूल, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। अबिनाशी करता सुणाए हुक्म माअकूल, मुकम्मल आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला कीता सर्ब उलटाइंदा। पिछला कीता उलटावे आप, उलटी कल वरताईआ। खेले खेल पुरख अबिनाश, समझ कोए ना पाईआ। अकल्ला लेखा रखे आपणे हाथ, अनभव आपणी कार कमाईआ। जन भगत दुआरे हरि भगतां हो के दास, भगवन आपणी सेव कमाईआ। घर दीआ बाती कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। पूरब जन्म दी पूरी आस, पूरब लेखा लेखे

लाईआ। वेखणहारा पवण स्वास, पवण पवणी रिहा समाईआ। लेखा मुक्के धरनी धरत पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल डेरा ढाहीआ। लख चुरासी करे बंद खुलास, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। लाड़ी मौत ना आवे पास, चित्रगुप्त लेखा रहिण ना पाईआ । जिन्हां सतिगुर पूरा वसया साथ, अन्तिम आपणी उंगले लाईआ। मेहरवान करे मेहर अनाथां नाथ, नाथ अनाथी वेख वखाईआ। लै के जाए आपणे घाट, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। सचखण्ड दुआर करे निवास, चरण कँवल दए शरनाईआ। जिन्हां ढोला गाया तूं मेरा मैं तेरा साक, सज्जण बणया बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि इक्को फेरा पाईआ। नर हरि फेरा पाए एक, एकँकारा दया कमाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड जणाए साची टेक, वरभण्ड आप समझाइंदा। साहिब सतिगुर खोल्हे भेत, भेद आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण कर के हेत, हितकारी वेख वखाइंदा। हितकारी हरि वेखण आया, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। त्रैगुण मेटे ममता माया, मेहर नज़र उठाईआ। समरथ सिर दे कर हथ्थ रखे ठंडी छाया, कलयुग तत्ती अग्न ना लागे राईआ। मन्त्र नाम इक दृढ़ाया, हरिजन फड़ के मार्ग पाया, पन्ध मुके वाहो दाहीआ। पुरख अकाल होए सहाया, साची धर्मसाल लए बहाया, धर्म दुआरा इक वखाईआ। काल महाकाल भय चुकाया, सच प्रीती तोड़ निभाया,
१४३ जग रीती पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे लेखे पाईआ। १४३
१५ हरिजन साचा लेखे पा, पल्लू नाम फड़ाइंदा। लख चुरासी कट के फाह, फ़ारग़ आप कराइंदा। रहबर बण के दस्से राह, १५
रस्ता इक समझाइंदा । मन वासना दए मिटा, मनसा पूर कराइंदा। कागों हँसा दए बणा, सोहँ हँसा जाप जपाइंदा। साचा बंसा इक प्रगटा, चारे वरन गंढु रखाइंदा। साचा डंका नाम सुणा, कूड़ी क्रिया डेरा ढाइंदा। बंदगी बंदा देवे ला, बंदी छोड़ वेख वखाइंदा। चन्द नवचन्दा दए चढ़ा, चौदस आपणी कार कमाइंदा। साचा छन्दा दए सुणा, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। बजर कपाटी कुण्डा दए तुड़ा, नाम हथौड़ा हथ्थ उठाइंदा। लंगढ़ा लूल्हा टुंडा दर आया लेखे लए लगा, जो अन्तर आत्म ध्यान लगाइंदा। अवण गवण दए मिटा, त्रैभवन पार कराइंदा । साची सावण रुत्त दए सुहा, अमृत मेघ बूँद बरसाइंदा। कँवल नाभी दए भरा, भर भण्डारा वेख वखाइंदा। जन्म कर्म दा रोग दए मिटा, हरख सोग ना कोए रखाइंदा। धुर संजोग मेला लए मिला, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। साचा डोला गुरमुख कंध लए उठा, बण के काहनी सेव कमाइंदा। पन्ध मुकाए वाहो दाह, पुरीआं लोआं ब्रह्मण्डां खण्डां चरणां हेठ दबाइंदा। थिर घर जा के दए रखा, उतर पूरब पच्छिम दक्खण दिशा ना कोए जणाइंदा। इक्को जोत नूर लए मिला, मेल मिलावा आपणे हथ्थ वखाइंदा। जोती जोत

जोत जाणा समा, समां सब नूं आप समझाइंदा। कूड़ी तमां देणी गंवा, तृष्ना तृखा आप बुझाइंदा। रवां रवीं सच दुआरे जाणा आ, साहिब सतिगुर वेख वखाइंदा। निहकर्मी आपणा कर्म रिहा कमा, कर्म कांड डेरा ढाइंदा। आपणा मन लओ समझा, मन वासना जगत भटकाइंदा। घर घर लाउँदा रहे दाअ, बचया कोई नज़र ना आइंदा। बिन सतिगुर पूरे खैहड़ा सके ना कोए छुडा, सिर हथ्थ ना कोए टिकाइंदा। जिन्हां नाल पिच्छे सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आया निभा, तिन्हां अन्तिम मेल मिलाइंदा। जन भगतां मिलण दी प्रभ नूं अदा, बिन भगतां हरि जू कम्म किसे ना आइंदा। इक इकल्ला परवरदिगार मुकामे हक़ बैठा रोंदा रहे खुदा, बिना मुरीद मुर्शद सोभा कोई ना पाइंदा। हरिसंगत तेरा सतिगुर तेरे नालों होए ना कदे जुदा, सद तेरे अन्दर डेरा लाइंदा। गुरमुख बण के आपणा पड़दा लओ उठा, नानक गोबिन्द अन्दरों नज़री आइंदा। जलवा नूर जोत दए दरसा, शब्दी गाणा साचा राणा धुर दा नाद सुणाइंदा। बेमुहाणा शाह सुल्ताना तख्त निवासी नौजवां, बिरध बालां लेखे लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग चौकड़ी देवे वर, जन भगतां दया कमाइंदा। जन भगतां उपर होए दयाल, दयावान वड्डी वड्याईआ। सन्त सुहेले सच्चे लाल, नित नवित्त आप प्रगटाईआ। गुरमुख गुरसिख जणाए अगम्मी चाल, अवल्लड़ी धार आप प्रगटाईआ। आपे सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद दाता बेपरवाहीआ। सारे रल के करो इक स्वाल, श्री भगवान अन्तिम लेखा कोए रहिण ना पाईआ। लख चुरासी तोड़ जंजाल, आवण जावण कट फाहीआ। तेरे हथ्थ प्रेम रुमाल, छोटे बाले लै उठाईआ। जिउँ गोबिन्द महासिँघ उते होया दयाल, बिन मुक्तीउँ मुक्ती झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, एथे ओथे दो जहान पुरख अकाल मिले सच्ची सरनाईआ। पुरख अकाल तेरा मिलणा, खाली कदी ना जाईआ। साडे मन नहीं जुलणा हिलणा, कलयुग डोरी बंध बंधाईआ। तेरा प्रेम फुल इक्को खिलना, पंखड़ीआं आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे देदे आपणा वर, तैनूं देंदयां तोट कोई ना आईआ। देवे वर साहिब सतिगुर ठाकर, ठोकर नाम लगाइंदा। हरिसंगत तेरा कर्म उजागर, प्रभ निर्मल आप कराइंदा। दर आयां सब नूं देवे आदर, दयावान वेख वखाइंदा। भाग लगाए काया गागर, समुंद सागर फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख सज्जण लए फड़, काया मन्दिर अन्दर चढ़, किला तोड़ हँकारी गढ़, महल अटल उच्च मनार घर विच घर दए वखाल, निरगुण हो के वसे नाल, सरगुण नाता तुट्टे काल, हो कृपाल जिस जन प्रभ आपणा मेल मिलाइंदा।

१४५

१५

✪ २७ सावण २०२० बिक्रमी ठक्कर पुरा सड़क उते अकालीआं नाल बचन होए ज़िला अमृतसर ✪

दूर समां आया नेड़े, गुरमुख बैठे ध्यान लगाईआ। कलयुग अन्तिम मिटणे झेड़े, चारों कुण्ट पए दुहाईआ। दुआरे उजड़न वाले खेड़े, श्री भगवान खेल रचाईआ। जेहड़े करदे मेरे मेरे, अन्तिम ख़ाकी ख़ाक समाईआ। झूठे रहिण ना देवे लग्गे डेरे, उच्चे टिल्ले पर्बत डेरा ढाहीआ। लख चुरासी जीव जंत कूड़ी क्रिया अन्दर आई घेरे, बिन सतिगुर पूरे पार ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। दूर दुराडा पैंडा रिहा मुक्क, सो पुरख निरँजण आप मुकाईआ। हरि नामे बिन खाली दिसण बुत्त, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। भज्जे फिरन पिच्छे रोटी टुक्क, गुर का शब्द प्रीत ना कोए लगाईआ। प्रेम प्रीती वधी पुत्त, सतिगुर इष्ट ना कोए मनाईआ। कौड़ा फल उलटे रुक्ख, अमृत नज़र कोए ना आईआ। अन्तर आत्म दर्शन किसे ना पाया झुक, बाहरों फिरदे सीस निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। अन्तिम मुक्कण वाला पन्ध, पैंडा कलयुग रहिण ना पाईआ। कूड़ी क्रिया मिटणा गंद, जगत अन्धेर दए गंवाईआ। प्रगट हो सूरा सरबँग, शाह पातशाह आपणा हुक्म मनाईआ। लेखा जाणे नव खण्ड, दीप सत्त फोल फुलाईआ। पड़दा लाहे कोट ब्रह्मण्ड, पुरी लोअ आकाश पाताल भेव चुकाईआ। लेखा जाणे सूरज चन्द, मण्डल मण्डप वेख वखाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां देवणहारा आपणा अनन्द, साचा छन्द इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। दूर दुराडा पैंडा अन्तिम रिहा जा, लोकमात रहिण ना पाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी बणे गवाह, शहादत इक्को वार भुगताईआ। अबिनाशी करता परवरदिगार सांझा यार नूर इलाही बेपरवाही राम रहीम जाए आ, फेरा ख़ालक खलक विच पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वड वड्डा शहिनशाहीआ। वेला अन्तिम आया अन्त, अन्तष्करन वेख वखाइंदा। लख चुरासी जीव जंत, कलयुग अग्नी विच तपाइंदा। गुर का शब्द ना जाणे कोए मंत, रसना जिह्वा सर्ब हल्काइंदा। आत्म परमात्म नाता तुट्टा नार कन्त, सेज सुहञ्जणी ना कोए हंढाइंदा। काया चोली चढ़े रंग ना कोई बसन्त, साची रंगण ना कोए रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा खेल आप वखाइंदा। साचा खेल करे करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। दो जहानां सांझा यार, लाशरीक वेस वटाईआ। मुकामे हक़ हो उज्यार, लोकमात करे रुशनाईआ। सचखण्ड निवासी एकँकार, आदि पुरख वड्डी वड्याईआ। लेखा जाणे गुरू अवतार, पीर पैगम्बर

१४५

१५

आपणे हुक्म चलाईआ। कलयुग अन्त लै अवतार, कल कल्की वेस वटाईआ। सम्बल वसे धाम न्यार, त्रैगुण अतीता आपणा आसण लाईआ। धुर दी बाणी बोल जैकार, शब्दी ढोला इक्को गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरवैर पुरख आपणी धार चलाईआ। निरवैर पुरख हरि इक इकल्ला, एकँकार हरि अख्वाइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटला, ऊँच अगम्म अथाह बेपरवाह फेरी पाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां जुग चौकड़ी जो फड़ौंदा रिहा पल्ला, पल्लू नाम आपणी गंढु पवाइंदा। कलयुग अन्तिम शब्द सरूपी साचे शब्द कराए इक्को हल्ला, खण्डा खड़ग तीर कमान हथ्थ ना कोए रखाइंदा। लहिणा देण चुकाए राणी अल्ला, सदी चौधवीं चौदां तबकां साचा सबक इक पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। निरगुण वेस धरे निरँकार, भेव अभेद ना कोए जणाईआ। लिख लिख गए गुरू अवतार, नानक गोबिन्द गया समझाईआ। प्रगट होवे कल कल्की अवतार, ना कोई जन्मे पिता माईआ। धुर दी जोत होए उज्यार, साचा शब्द करे शनवाईआ। डंका वज्जे दो जहान, राउ रंकां लए उठाईआ। साधा सन्तां दए ज्ञान, अन्तर आत्म बूझ बुझाईआ। घर घर विच वखाए सच मकान, श्री भगवान कुण्डा लाहीआ। दीपक जोत जगे महान, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। अनहद शब्द सुणाए धुन्कान, अनरागी राग अलाईआ। अमृत आत्म देवे पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। मेट मिटाए पंज शैतान, शरअ शरीअत करे ना कोए लड़ाईआ। इक्को नाम देवे दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश चारे वरन करे परवान, परवाना आपणा नाम हथ्थ फड़ाईआ। बीस बीसा हो प्रधान, हरि जगदीशा सच्चा शहिनशाहीआ। तख्तों लाहे राज राजान, दर दरवेश खाली हथ्थ फिराईआ। योद्धा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप प्रगटाईआ। गोबिन्द मेला विच जहान, सीस जगदीश ताज सुहाईआ। भरमे भुल्लण जीव नादान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। पढ़ पढ़ विद्या होण हैरान, हरिमन्दिर हरि जू नज़र किसे ना आईआ। करे खेल श्री भगवान, भगवन आपणा हुक्म वरताईआ। सर्ब जीआं दा दाता इक्को प्रगट होवे पुरख अकाल, अक्ल कल आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, दूर दुराडा पैंडा आए नज़दीक, सो पुरख निरँजण खेल करे ठीक, कूड़ी क्रिया ठीकर भन्न वखाईआ। जिस मंज़ल दी करदे रहे उडीक, सो वेला गया आईआ। जिस दी गुर अवतार लिखदे गए तारीख़, सो तवारीख रिहा बदलाईआ। जिस दा मार्ग अगम्म बारीक, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जो साहिब हर घट वसया चीत, लख चुरासी रिहा समाईआ। जिस दी सदी बीसवीं रही बीत, सो अगली पिछली बीती जन भगतां दए समझाईआ। सतिजुग चलाए साची रीत, कलयुग

१४७ १५

कूड़ी क्रिया मेट मिटाईआ। चार वरन बन्नाए इक प्रीत, ऊँच नीच आपणी गोद सुहाईआ। पुरख अकाल गाउणा सब ने गीत, गोबिन्द मिले इक शरनाईआ। लेखा चुक्के हस्त कीट, राउ रंक एका नाम ध्याईआ। दर दरवेश नर नरेश हो के मंगण भीख, सीस ताज ना कोए रखाईआ। साहिब स्वामी सतिगुर मीत, परम पुरख पतिपरमेश्वर कलयुग अन्तिम आपणा फेरा पाईआ। जन भगतां सतिजुग वखाए साची लीक, फड़ बांहों पार लँघाईआ। कलयुग जीव जो सतिगुर भुल्ल बणे रहिण ढीठ, तिन्हां शौह दरयाए दए रुढ़ाईआ। वेखणहारा लख चुरासी मिट्टा कौड़ा रीठ, घर घर अन्दर फोल फुलाईआ। बीस बीसे खेल करे जगदीश, जगदीश्र आपणा हुक्म मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नेड़े ल्याए दुराडा पन्ध, कूड़ी क्रिया ढाहे कंध, सर्ब जीआं आत्म परमात्म जणाए छन्द, रसना जिह्वा बत्ती दन्द कोई ना लावे गंद, सतिगुर प्रीती साची नीती इक उपजाए सच सुगंध, घर घर इक्को रंग वखाईआ। दूर दुराडा पैंडा आ वड़या घर, जुग चौथे पन्ध मुकाईआ। गोबिन्द कोलों गुरमुख रहे डर, गुरसिख बैठे मुख भवाईआ। जिस ने लाई इन्हां जड़, बूटा लोकमात महकाईआ। सो रूप धर के आए नरायण नर, नर हरि आपणी कार कमाईआ। अगला लेखा आपणे हथ्थ फड़, फांदी फाँसी सब दे गल विच पाईआ। सन्त सुहेला गुरु गुर चेला गुरमुख विरला अन्दर वेखे चढ़, बाहरों नज़र किसे ना आईआ। सतिगुर रूप ना कोई सीस ना कोई धड़, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। शब्दी ढोला रिहा पढ़, छत्ती राग समझ ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वसावणहारा साचा घर, जुग चौकड़ी जुग जुग गेड़ा हुक्मे विच भवाईआ।

१४७ १५

✪ २७ सावण २०२० बिक्रमी बेला सिँघ दे गृह पिण्ड माहल ज़िला अमृतसर ✪

सचखण्ड निवासी सतिगुर एक, पुरख अकाल खेल कराइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी देवे टेक, दो जहान दया कमाइंदा। निरगुण सरगुण लिखे लेख, लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। निरवैर पुरख धारे भेस, वेस अवल्लड़ा आप कराइंदा। शाहो भूप बण नरेश, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। इक सुहाए सुहंजणा देस, जोती जाता डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा वेस आप वखाइंदा। साचा वेस धरे निरँकार, आदि कहिण कोए ना पाईआ। वसणहारा धाम न्यार, निहचल बैठा डेरा लाईआ। निरगुण दीआ कर उज्यार, जोती जोत जोत रुशनाईआ। शाह पातशाह सच्ची सरकार, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। लेखा जाणे धुर दरबार, मुकामे हक़ वड्डी वड्याईआ। नूर नुराना परवरदिगार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार कमाईआ। आपणी कार करे करतार, करनी आपणे हथ्थ

रखाइंदा। सो पुरख निरँजण हो तैयार, साहिब सतिगुर धार चलाइंदा। हरि पुरख निरँजण खोल्ह किवाड़, बंक दुआरी बंक वड्याइंदा। एकँकार पावे सार, भेव अभेदा आपणा आप खुल्हाइंदा। आदि निरँजण कर उज्यार, उजाला इक्को इक प्रगटाइंदा। अबिनाशी करता मीत मुरार, सच्चा सज्जण आप हो जाइंदा। श्री भगवान लेखा जाणे धुर दी धार, अलेख रूप ना कोए वटाइंदा। पारब्रह्म प्रभ दर दरवेश बण भिखार, भिक्खक एका मंग मंगाइंदा। तख्त निवासी पुरख अबिनाशी सच महल अटल सोभावन्त बैठ सच्ची सरकार, सच संदेसा नर नरेशा इक इकल्ला आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, दूजा संग ना कोए रलाइंदा। दूजा संग ना कोए साथ, साथी नज़र कोए ना आईआ। प्रगट हो पुरख अबिनाश, आपणी कल धराईआ। असुते रूप कर प्रकाश, अनभव आपणी खेल रचाईआ। वेखणहारा खेल तमाश, आप आपणे रंग समाईआ। राजन राज बण दासी दास, चाकर पा ख़ाक आप हो आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा तख्त इक वड्याईआ। साचे तख्त बैठ सुल्तान, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। सति सतिवादी इक निशान, निरवैर पुरख आप उपाइंदा। दाता हो के मन्ने आण, दीनन आपणी कार कमाइंदा। करे खेल आप महान, महिमा कथ ना कोए सुणाइंदा। योद्धा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची खेल आप समझाइंदा। साची खेल करे समरथ, बेपरवाह वड्डी वड्याईआ। निरगुण धार कर प्रगट, ना कोई पिता ना कोई माईआ। सचखण्ड दुआर खोल्ह हट्ट, बण वणजारा सेव कमाईआ। आपणी महिमा गा अकथ, नाउँ निरँकारा सिफ्त सालाहीआ। ठाकर स्वामी चलाए रथ, रथवाही नज़र किसे ना आईआ। जुग चौकड़ी मार्ग दस्स, पांधी आपणा राह वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड वज्जे इक वधाईआ। सचखण्ड वज्जे वधाई एक, एकँकारा आप वजाइंदा। पुरख अगम्मा देवे टेक, मेहरवान मेहर नज़र उठाइंदा। निरगुण निरगुण कर कर हेत, साचा संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। साची खेल करनेयोग, सो पुरख निरँजण वड्डी वड्याईआ। निरगुण निरगुण कर संजोग, सचखण्ड मेला सहिज सुभाईआ। नारी कन्त भोगे भोग, ततव तत ना कोए रखाईआ। इक सुहाए साचा कोट, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। जोती मेला निर्मल जोत, जोती जोत करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नर हरि दाता बेपरवाहीआ। नर हरि दाता नरायण, इक इकल्ला आप अख्वाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी कोई ना सके कहिण, सिफ्त सालाही सिफ्त विच कदे ना आइंदा। आपे बणे साक सज्जण सैण, साचा

संग आपणा आप निभाइंदा। आपे जाणे लहिणा देण, देवणहार आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा भेव आप जणाइंदा। साचा भेव पुरख अकाल, एकँकारा आप खुल्हाईआ। सति सतिवादी हो तैयार, साची कार आप कमाईआ। शब्दी सुत कर प्यार, अबिनाशी अचुत दए वड्याईआ। साची रुत्त सिरजणहार, सच दुआरे आप सुहाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर उज्यार, साची सेवा इक लगाईआ। त्रैगुण माया भर भण्डार, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। लख चुरासी भाण्डा घड़ बण ठठयार, घट घट वस्त आप प्रगटाईआ। दीआ बाती कर उज्यार, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। अमृत प्याला साकी बण के दए प्याल, निझर झिरना आप झिराईआ। जुग चौकड़ी वंड वंड अगम्म अपार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराईआ। जुग जुग खेल करे भगवान, भगवन आपणी कार कमाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दे ज्ञान, साचा मन्त्र इक दृढ़ाइंदा। लख चुरासी कर प्रधान, बोध अगाधी भेव खुलाइंदा। नाम निधाना धुर फ़रमान, धुर संदेसा आप अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साची सिख्या, नाम अगम्मी पाए भिख्या, देवणहारा देंदा लैंदा नज़र किसे ना आइंदा। नाम भिख्या पा भरपूर, भरपूरी दया कमाईआ। घट घट वजाए नाद तूर, तुरत आपणा हुक्म सुणाईआ। जोती जलवा दे के नूर, नूरो नूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख पुरख अबिनाशा, लख चुरासी वेखे खेल तमाशा, धरनी धरत धवल रचना आप रचाईआ। धरनी धरत धवल पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल खेल खिलाइंदा। पुरी लोअ दे धरवास, ब्रह्मण्ड खण्ड रास रचाइंदा। सूरज चन्द कर प्रकाश, किरन किरन आप चमकाइंदा। निरगुण सरगुण बण बण दास, गुर अवतार पीर पैगम्बर रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण कल आपणी कार कमाइंदा। निरगुण सरगुण दोवें रंग, हरि करता आप जणाईआ। पंज तत माणे सेज पलँघ, सेज सुहञ्जणी आप हंढ्ढाईआ। अन्तर आत्म देवे अनन्द, परमात्म खुशी मनाईआ। जोती जोत चाढ़े चन्द, सूरज चन्द ना कोए चमकाईआ। आदि पुरख आदि सुणाया इक्को छन्द, सोहँ ढोला राग अलाईआ। जुग चौकड़ी मेटे पन्ध, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मार्ग आपे लाईआ। सोहँ रूप उपजाई धार, परमात्म आत्म खेल कराइंदा। निरगुण सरगुण कर उज्यार, जोती जाता मेल मिलाइंदा। शब्द विचोला गुर करतार, हरि करता नाल रलाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग वेखे वारो वार, चारे खाणी चारे बाणी चारों कुण्ट फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धार धार नाल मिलाइंदा।

सोहँ धार पुरख अगम्म, निरगुण निरगुण आप उपाईआ। ना मरे ना पए जम्म, जीवण जुगत ना कोए वड्याईआ। करता पुरख करे कराए आपणा कम्म, निहकर्मी आपणी धार वखाईआ । हरख सोग ना कोए ग़म, चिन्ता रोग ना कोए वधाईआ। पवण स्वास ना कोए दम, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। चार दीवार ना छप्पर छन्न, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रचना आप रचाईआ। साची रचना रच अकाल, अक्ल कल खेल खिलाइंदा। निरगुण सरगुण उपर हो दयाल, दीनन आपणा भेव चुकाइंदा। काया मन्दिर अन्दर सच्ची धर्मसाल, गुर अवतार आप वखाइंदा। पीर पैगम्बर दीपक जोत जगे बेमिसाल, मिसल आपणे नाल मिलाइंदा। सति सरूपी बण दलाल, लोकमात वणज कराइंदा। हकीकत जणाए हक़ हलाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा भेव आप खुल्हाइंदा। साचा भेव खोल्हे आप, आपणे हथ्थ रखी वड्याईआ। जिस विष्न ब्रह्मा शिव दस्सया जाप, तूं मेरा मैं तेरा दूजी करे ना कोए पढ़ाईआ। जिस लख चुरासी थापण दित्ता थाप, घड़ भाण्डे वेख वखाईआ। जिस गुर अवतार पीर पैगम्बर बणाए दास, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाईआ। जिस गोपी काहन रचाई रास, मण्डल मण्डप सोभा पाईआ। जिस जोती नूर कीता प्रकाश, निरगुण निरगुण निरवैर इक अख्वाईआ। जिस दा खेल पृथ्मी आकाश, ब्रह्मण्ड खण्ड वज्जे वधाईआ। जिस दी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रखदे गए आस, सो साहिब इक अख्वाईआ। जिस नूं भगत गौंदे स्वास स्वास, सन्त बैठे ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आदि पुरख एका हरि, जुग जुग आपणी खेल रचाईआ। जुग जुग खेल करे करतार, हरि करता दया कमाइंदा। शब्द संदेसा दे गुरू अवतार, पीर पैगम्बर आप पढ़ाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण बण लिखार, कातब इक्को कलम चलाइंदा। गीता ज्ञान दे संसार, अञ्जील कुराना आप अलाइंदा। खाणी बाणी दे प्यार, चारों कुण्ट रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सो करता कार कमाइंदा। सो करता हरि साहिब स्वामी, पुरख अकाल इक अख्वाईआ। आदि जुगादि अन्तरजामी, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। योद्धा सूर सदा निहकामी, कर्म कांड ना कोए रखाईआ। बोध अगाध अगम्मी बोले बाणी, चौदां विद्या ना कोए पढ़ाईआ। सुरत शब्द मिलावे हाणी, घर मेला सहिज सुभाईआ। अमृत प्याए ठंडा पाणी, कँवल नाभी मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल करदा आया, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। सन्त सुहेले लए जगाया, पड़दा दूई द्वैत चुकाईआ। भगत भगवान लए उठाया, फड़ बांहों गले लगाईआ। हउमें रोग दए गंवाया, माया ममता आप मिटाईआ । भुक्खा नंगता गोद बहाया, राज राजानां ख़ाक मिलाईआ। साचा पंडता इक बण जाया, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग निरगुण सरगुण आप हंढ्ढाईआ। जुग चौकड़ी जाए हंढ्ढ, थिर कोए रहिण ना पाईआ। गुर अवतार कर कर गए वंड, लेखा लेख लिख्त विच पाईआ। नव नौ चार जाए लँघ, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। कलयुग अन्त प्रगट होवे सूरा सरबँग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। दो जहानां चाढ़े इक्को चन्द, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया ढाहे कंध, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। चार वरन सुणाए इक्को छन्द, क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश दए समझाईआ। भेव चुकाए आत्म हँ, ब्रह्म आपणा आप बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी धार जणाईआ। जुग जुग धार दस्से आप, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। साहिब सतिगुर सच्चा बाप, पिता पुरख वेस वटाइंदा। दो जहानां लए नाप, शब्द पैमाना हथ्थ उठाइंदा। वेखणहारा चौदां हाट, चौदां तबकां कुण्डा लाहइंदा। पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड चरण कँवल बणाई खाट, साची सेजा सोभा पाइंदा। कलयुग अन्तिम मेटे वाट, पांधी इक्को नज़री आइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप लख चुरासी वेख अन्धेरी रात, साचा चन्द नाम चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे भगवन्त, भगवन आपणी दया कमाईआ। लेखा जाणे जुगा जुगन्त, जुग जुग आपणा राह वखाईआ। कोटन कोटि दस्स दस्स नाम मणीआ मंत, रसना जिह्वा करे पढ़ाईआ। हरिजन विरले मेले सन्त, गुरमुख आपणे रंग रंगाईआ। आपणा नाउँ देवे मणीआ मंत, मन वासना दए मिटाईआ। दूजी रहे ना कोई चिन्त, चिन्ता चिखा ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह प्रभ खेल करदा, करनहार अख्वाइंदा। निर्भय हो कदे ना डरदा, भउ सर्ब सिर जणाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी घाड़न घड़दा, घड़ भाण्डे वेख वखाइंदा। डूंघी भँवरी काया कवरी साढे तिन्न हथ्थ अन्दर आपे वड़दा, औंदा जांदा नज़र किसे ना आइंदा। ना जींदा ना कदे मरदा, मात गर्भ ना अग्न तपाइंदा। शब्द अगाध बोध ढोला इक्को पढ़दा, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। करे खेल नरायण नर दा, नर हरि आपणा हुक्म वरताइंदा। जुग चौकड़ी बण के बरदा, जन भगतां सेव कमाइंदा। पौड़ा वखाए हरी हरि दा, जन भगत सुहेले आप चढ़ाइंदा। लेखा जाणे थिर घर दा, सचखण्ड साचे आसण लाइंदा। इक्को देस सच्चे पिर दा, जुग जुग आपणा वेस धराइंदा। जिस दी उडीक गुर अवतार पीर पैगम्बर रखे चिर दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सो साहिब वेख वखाइंदा। सो साहिब प्रभ लए वेख, जिस विच वड्डी वड्याईआ। किसे नज़र ना आए रूप रेख, रंग कहिण कोए ना पाईआ। वसणहारा सचखण्ड देस, थिर घर शब्द दए वड्याईआ। दो जहानां बण नरेश, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। बण स्वामी धारे भेख,

बंक दुआर करे रुशनाईआ। सम्बल करे इक्को हेत, बंक दुआरी वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पड़दा आप उठईआ। साचा पड़दा अन्तिम चुक्क, निरगुण नूर करे उज्यारया। दो जहानां वखाए इक्को मुख, श्री भगवान परवरदगारया। कलयुग अन्तिम वेला रिहा ढुक, गुर अवतार पीर पैगम्बर सदके वारी घोली वारया। श्री स्वामी पुरख अकाला एका पए बुक्क, नाम शब्द मारे ललकारया। सन्त सुहेले गुरमुख सच्चे गोदी लए चुक्क, देवे सति सति हुलारया। लख चुरासी कूड़ी क्रिया वेखे दुःख, नव नौ हाहाकारया। कलयुग कूड़ा चार कुण्ट दहि दिशा माया ममता हउमें हंगता पाई लुट्ट, मिले सति ना कोए भण्डारया। दीनां मज़्बां ज़ातां पातां पई फुट्ट, साधां सन्तां भुल्लया हरि करतारया। अबिनाशी करते कोलों गए रुठ, काम क्रोध लोभ मोह घर घर भरम हंकारया। किसे नज़र ना आवे अबिनाशी अचुत, निर्मल जोत ना कोए उज्यारया। झूठा प्यार मांवां पुत, वेले अन्त संग ना कोए निभा रिहा। लख चुरासी कोल नहीं कुछ, बिन हरि नाम खाली सर्ब वखा रिहा। राज राजानां लग्गी भुक्ख, ग़रीब निमाणे गले ना कोई लगा रिहा। जिध्धर वेखो पई लुट्ट, सांतक सति ना कोई वरता रिहा। पुरख अकाल दीन दयाल कलयुग अन्तिम गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कोलों रिहा पुच्छ, नेत्र खोल्ह वेखो विच संसारया। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ गुरुदुआर कोई हिरदा ना जावे झुक, सजदा हक़ ना कोए करा रिहा। आत्म परमात्म तीर निशानिउँ रिहा उक, अणयाला रूप ना कोए वटा रिहा। सति धर्म दा तागा रिहा टुट्ट, फड़ गंढु ना कोए पवा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख वखा रिहा। कलयुग अन्त वेखे भगवान, सचखण्ड वासी नैण उठाईआ। चारों कुण्ट फिरे शैतान, दरोही ख़ुदाए वाहो दाहीआ। चार वरन ना दिसे कोई ईमान, बेईमान जगत लोकाईआ। ग़रीब निमाणयां सारे खाण, मेहर नज़र ना कोए उठाईआ। चार कुण्ट होई हैरान, धरनी धरत धवल दए दुहाईआ। नेत्र रोवे नैण शरमाण, अक्खीं हन्झूआं हार परोईआ। किरपा कर मेरे मेहरवान, तुध बिन होए ना कोए सहाईआ। सदी बीसवीं पहुंची आण, सतिगुर गोबिन्द गया लिखाईआ। चारों कुण्ट झुल्ले कूड़ निशान, सति निशान ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहार आप हो जाईआ। कलयुग अन्तिम वेखे पारब्रह्म, ब्रह्म पड़दा आप उठाईआ। खाली दिसे काया चम्म, हरि का नाउँ नज़र किते ना आईआ। रसना कहिन्दे असीं जपदे दमां दम, अन्तर लिव ना कोए लगाईआ। पूजा पाठ कर के स्वारदे आपणा कम्म, जगत वासना नाल मिलाईआ। बिन माया दिसे घर घर ग़म, खुशी नज़र कोए ना आईआ। जो ठग्गी यारी करे तिस नूं माता कहे पुत्त मेरा प्या जम्म, जिस दी सिफ्त करे लुकाईआ। कलयुग कहे मेरा कम्म, घर घर रिहा भुलाईआ। गुरमुख कहिण प्रभ देवणहारा

डंन, मिले अन्त सजाईआ। पुरख अकाल मन्नो सब दा जननी जन, आदि जुगादी पिता माईआ। उस दे चरण कँवल करो ध्यान, इष्ट इक्को नज़री आईआ। जिस दे अग्गे गुर अवतार पीर पैगम्बर देण ब्यान, करनी रहे अग्गे सर्ब टिकाईआ। लोकमात सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बण के आए महमान, हुक्मे अन्दर फेरा पाईआ। दस्स के गए इलाही कलाम, नग़मा तेरा नाम सुणाईआ। खाणी बाणी करके गए प्रधान, ढोला सच्चो सच अलाईआ। कलयुग भुल्ले जीव अञ्याण, साची सिख्या सर्ब भुलाईआ। कूड़ी क्रिया पीण खाण, सतिगुर रस नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा हरि, कलयुग अन्तिम पड़दा लाहीआ। कलयुग अन्तिम पड़दा लौहणा, सो साहिब हुक्म वरताइंदा। कलयुग कूड़ा कूड़ मिटाउणा, कूड़ी क्रिया आप खपाइंदा। सच धर्म इक चलाउणा, रहबर इक्को फेरा पाइंदा। चार वरनां रंग रंगाउणा, ज़ात पात ना वंड वंडाइंदा। धर्म दुआरा इक वसाउणा, धुर दी धार इक जणाइंदा। सतिगुर पूरा सृष्ट सबाई इक मनाउणा, दूजा गुरू नज़र कोए ना आइंदा। आत्म परमात्म परमात्म आत्म मेल मिलाउणा, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाइंदा। सच रंगीला पलँघ विछाउणा, पावा चूल ना कोए बणाइंदा। सज्जण मीत स्वामी घर बहाउणा, दोए जोड़ ध्यान लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, साचा मार्ग इक समझाइंदा। साचा मार्ग दस्से अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। माणस मानुख मानुष काया होए ठंडी सीत, मन वासना ना होए कोई हल्काईआ। सतिजुग चले इक्को रीत, साची होवे नाम पढ़ाईआ। मिले धाम इक अनडीठ, जिस घर वसे बेपरवाहीआ। सखीआँ मिल के गाए गीत, ढोला इक्को इक अलाईआ। निरगुण निरगुण करे प्रीत, सरगुण सरगुण सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सर्ब वड्याईआ। सतिजुग देवे सच वड्याई, हरि वड्डा दया कमाइंदा। भगत जनां कर कुड़माई, घर सज्जण मेल मिलाइंदा। अन्तर बाहर वज्जे वधाई, साचा नाद आप सुणाइंदा। पुरख परमेश्वर पारब्रह्म साहिब सतिगुर वेखे चाईं चाईं, चाउ घनेरा इक जणाइंदा। मार्ग लाए पांधी राही, राह इक्को इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची धार आप बदलाइंदा। साची धारा जावे बदल, कलयुग अन्त रहिण ना पाईआ। पुरख अकाल करे अदल, अदालत इक्को इक वखाईआ। जन भगतां पूरी करे मज़ल, घर साचे मेल मिलाईआ। गुरमुख कोई ना रहे बुज़दिल, भय भउ दए मिटाईआ। गुरमुख सूरा सदा खुशदिल, खुशीआं विच साहिब गुण गाईआ। लख चुरासी रही भुल्ल, हरि जू नज़र किसे ना आईआ। जगत माया रहे रुल, रौला पाए कूड़ लोकाईआ। हरि का नाम ना मिल्या अनमुल्ल, कीमत हट्ट ना कोए लगाईआ। सतिजुग सच दुआरा गया खुल्ह, हरि करता आप खुल्हाईआ। जो गुरमुख दर

ते आवे भुल्ल, तिन्हां भुल्लयां मार्ग लाईआ। सन्त सुहेले तेरा बूटा जाए ना हुल, फल अमृत आप लगाईआ। भाग लग्गे साची कुल, धन धन जणेंदी माईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सुरप्त इन्द करोड़ तेतीसा गुर अवतार पीर पैगम्बर खुशीआं नाल बरसावण फुल्ल, बरखा इक्को इक लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, रुत्त रुतड़ी आप महकाईआ। सतिजुग सोहे रुतड़ी रुत्त, प्रभ साचा दया कमाइंदा। करे खेल अबिनाशी अचुत, चेतन आपणी धार समझाइंदा। सुत दुलारे साचे उठ, श्री भगवान आप जगाइंदा। जन भगतां उपर जा के तुठ, तेरा साचा रंग रंगाइंदा। अमृत जाम देदे घुट्ट, सच प्याला हथ्थ फड़ाइंदा। आवण जावण जाए छुट्ट, लख चुरासी फंद कटाइंदा। लोकमात दा बूटा पुट्ट, सचखण्ड दुआरे आप लगाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो गए रुस, प्रभ कलयुग अन्तिम आपणे घर वसाइंदा। नव नौ चार निरगुण हो के जो रिहा लुक, सो निरवैर आपणा पड़दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरि जू आपणी कार कमाइंदा। हरि जू कार करे अपार, अन्त कहिण कोई ना जाईआ। कल कल्की लै अवतार, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। डंका वज्जे विच संसार, शब्द नगारा नाद सुणाईआ। चारों कुण्ट पावे सार, दहि दिशा खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा हरि इक्को नाम जणाईआ।
सच संदेसा देवे आण, आण आपणी इक समझाइंदा। विष्नूं उठ कर ध्यान, बेपरवाह हुक्म वरताइंदा। ब्रह्मे आपणी वेख दुकान, ब्रह्मण्ड आप वखाइंदा। शंकर तेरी चुके काण, त्रिसूल बल ना कोए धराइंदा। त्रैगुण माया आए हान, रजो तमो सतो एका हुक्म जणाइंदा। पंज तत तेरा खेल महान, सो साहिब आप वखाइंदा। लख चुरासी चुके काण, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आपणी रचना आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म इक वरताइंदा। धुर दा हुक्म गुर अवतार, तेई अवतारां आप जणाईआ। भगत अठारां होवो ख़बरदार, बेख़बर ख़बर आप पुचाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद खोल्हो अक्ख नैण किवाड़, ग़फ्लत कोए रहिण ना पाईआ। लेखा जाणे परवरदिगार, लाशरीक सच्चा शहिनशाहीआ। नानक गोबिन्द निरगुण जोत करे प्यार, परम प्रीती इक दृढ़ाईआ। साची बाणी तीर निराला देवे मार, अणयाला आप चलाईआ। भरमे भुल्ला सर्ब संसार, गुरमति नज़र किते ना आईआ। कुँवार कन्या करे श्रृंगार, मात पूत सेज हंढाईआ। धीआं भैणां करन वणज व्यपार, गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ कूड़ी क्रिया करे कुड़माईआ। नाता तुट्टा तीर्थ तट जमना गंगा सुरस्ती त्रबैणी, नेत्र नैण नीर वहाईआ। कोई ना मेटे गोबिन्द तेरी कहिणी, नानक सतिगुर लेख ना कोए बुझाईआ। कलयुग अन्तिम लहिणी देणी, सब दी लेख लिख्त वेख वखाए थाउँ थाईंआ। नव नौ दिसे अन्धेरी

रैणी, चन्द नूर ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, चार युग दी पिछली गाथा, अगला खेल करे पुरख समराथा, अकथना काथा, कथनी कथ कथ कहिण कोए ना पाईआ। अगला भेव हथ्थ भगवान, समझ किसे ना आईआ। गुर अवतार दस्स के गए निशान, निशाना नाम तीर चलाईआ । दो जहानां हुक्मरान, हाकम इक अख्वाईआ। कलयुग अन्त हो प्रधान, सच प्रधानगी दए समझाईआ। सतिजुग मार्ग लाए आण, कलयुग कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। चार वरनां दए ज्ञान, बरन अठारां करे पढ़ाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर प्रभ दर ते ढोला इक्को गाण, दीन मज़्हब वंड ना कोए वंडाईआ। सारे कहिण तूं मेरा मैं तेरा तुध बिन दिसे ना कोए निशान, दर नज़र कोए ना आईआ। कर किरपा कर कल्याण, कलमा नबी रसूल समझाईआ। मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला इलाही नूर तेरा महान, महिफल मजलस तेरी इक्को भाईआ । आदि जुगादि सति सतिवादी तेरा नाम, साचे राम साचे काहन तेरी सरनाईआ। साचे गोबिन्द तोहे प्रणाम, चरण सरन मिले सरनाईआ। कलयुग अन्तिम किरपा कर महान, महाबली वेस वटाईआ। तेरे अर्पन कीता तेरा दान, तेरी वस्त तेरे दस्त फड़ाईआ। हउँ बाले नढ्ढे तेरे अञ्याण, तेरा भेव कोई ना आईआ। तूं साहिब सतिगुर चतुर सुघड़ सुजान, सच तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सच सुच आप समझाईआ। चरण प्रीत इक जणावांगा। साची रीत आप वखावांगा। धुर दा गीत इक अलावांगा। मन्दिर मसीत पन्ध चुकावांगा। हर घट वस के चीत, चेतन सुरती आप बणावांगा। पतित पापी कर पुनीत, पुनह पुनह वेख वखावांगा । लहिणा देणा चुक्के हस्त कीट, ऊँचां नीचां राउ रंकां इक्को घर बहावांगा। दूजे दर कोई ना मंगे भीख, हरि का नाम आप वरतावांगा। लख चुरासी आत्म परमात्म आपे जीत, जित हार इक्को हथ्थ फड़ावांगा। करे खेल साहिब अनडीठ, अनडिठड़ा राह इक जणावांगा। कोई ना दिसे कलयुग कौड़ा रीठ, मिठ्ठा अमृत रस आप भरावांगा। घर घर नज़री आए मीत, शत्रु सर्ब मेट मिटावांगा। पुरख अकाल नज़री आए इक अतीत, त्रैगुण डेरा आपे ढावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचा राह चलावांगा । सतिजुग साचा राह चलाएगा। प्रभ आपणी दया कमाएगा। निरगुण हो के वेख वखाएगा। सरगुण पड़दा आप चुकाएगा। कलयुग अन्तिम सड़दा, ठंडा सीत अमृत आप बरसाएगा। जन भगतां अन्दर आपे वड़दा, बंद किवाड़ी कुण्डा ताकी लाहेगा। आत्म परमात्म ढोला आपे पढ़दा, सोहँ राग आप अलाएगा। करे खेल नरायण नर दा, नर हरि आपणी कार कमाएगा। जुग चौकड़ी आपणा भाणा आपे जरदा, लख चुरासी भाणे विच वखाएगा। सन्त साजण गुरमुख गुर गुर सतिगुर पूरा आपे वरदा, नार कन्त रूप वटाएगा। डूंग्घी भँवरी काया कवरी आत्म

सेजा आपे चढ़दा, सेज सुहञ्जणी सोभा पाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे आप मिलाएगा। हरिजन मेला उपर शाह रग, शहिनशाह आपणा मेल मिलाईआ। निर्मल दीपक जोत जाए जग, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। घर विच घर कराए हज्ज, मक्का काअबा इक्को नज़री आईआ। सच महिराबे बहे सज, हुजरा सच्चा सोभा पाईआ। जिस नूं नूर इलाही कहिन्दे आलमीन रब्ब, यामबीन बेपरवाह इक्को इक नूर खुदाईआ। सो लेखा जाणे सब, बसते सब दे फोल फुलाईआ। चार युग दी मेटे हद्द, अग्गे मार्ग इक वखाईआ। चार वरन इक दवारिउँ पए लभ्भ, घर घर आपणा पड़दा लाहीआ। साचा नाम वजाए नद, अनहद सेव लगाईआ । फड़ फड़ हँस बणाए कग्ग, कागों हँस उडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साहिब सतिगुर देवे वर, भगत भगवान अंग लगाईआ। भगत भगवान लगाए अंग, अंगीकार हरि अख्वाइंदा। निज आत्म परमात्म देवे अनन्द, अनन्द अनन्द विचों प्रगटाइंदा। कूड़ी क्रिया जगत वासना मेटे गंद, सच सुगंध इक उपजाइंदा। नाम जपाए बिन बत्ती दन्द, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। धुर दी धारों आवे छन्द, संसा रोग सर्ब मिटाइंदा। सुरत सवाणी ना होवे रंड, शब्द हाणी मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जाता पुरख बिधाता, कलयुग मेटे अन्धेरी राता, सतिजुग देवे साची दाता, इक्को नाम धुर सौगाता, चार वरन पढ़ाए गाथा, अठारां बरन लहिणा देणा चुके मस्तक माथा, पुरख अकाल होवे साथा, नज़री आए त्रिलोकी नाथा, कोटन कोटि त्रिलोकी नाथ आपणे हुक्मे विच फिराईआ। साचा हुक्म धुर फ़रमान, धुरदरगाही आप सुणाइंदा। जिस दे उत्तों पीर पैगम्बर गुर अवतार होए कुरबान, सो करबला रूप वटाइंदा। जिस दे पिच्छे गोबिन्द नींहां हेठ दब्बे बाल अञ्याण, सो कलयुग जड़् उखड़ाइंदा। जिस दा लेखा दो जहान, भरम भुलेखा सर्ब चुकाइंदा। जन भगतां मिले आण, मिलणी आपणे नाल कराइंदा। कबीर जुलाहा वेखे मार ध्यान, नेत्र नैण नैण उठाइंदा। कलयुग अन्त श्री भगवन्त साचा कन्त खेल करे महान, ग़रीब निमाणे कोझे कमले आपणी गोद बहाइंदा। लभ्भदे फिरदे सुघड़ स्याणे वड विद्वाने, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत डूंघी कन्दर समुंद खाई बेपरवाही नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे आप जगाइंदा। हरिजन साचे खोले जाग, हरि जागरत जोत जगाईआ। घर मिलावा कन्त सुहाग, बाहर खोजण कोए ना जाईआ । प्रेम प्रीती देवे इक वैराग, वैरागी आपणी धार वखाईआ। मेहर नज़र कर पूरब जन्म दा धोवे दाग़, कर्म कांड दए मिटाईआ। शब्द अगम्मी चढ़ाए जहाज़, नौका नईया आपणा नाम वखाईआ। घर दीपक जोत जगे चराग़, बिन तेल बाती डगमगाईआ। दर्शन कर के जन भगत कहे मेरे वड वड भाग,

प्रभ मिल्या सहिज सुखदाईआ। जिस ने साजण ल्या साज, सो सज्जण होए सहाईआ। जिस दा सचखण्ड साचे राज, शहिनशाह इक्को इक अख्वाईआ। सो जुग चौकड़ी करता हो के करे काज, करनी आपणी आप कमाईआ। नमो नमो नमो करो ओस महाराज, जिस सिर ताज इक्को इक सुहाईआ। जुग जुग नित नवित्त निरगुण सरगुण हो के रिहा भाज, भावी आपणे चरणां हेठ रखाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त शब्द सरूपी हो के मारे आवाज़, साचा नाअरा इक सुणाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख गुरसिख तेरी सतिगुर रखे लाज, कलयुग अग्नी पोह ना सके राईआ। सच मेला मोहण माधव माध, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरवैर पुरख इक्को हरि, हरिमन्दिर इक सुहाईआ। हरिमन्दिर सुहावे सुहञ्जणा, सो साहिब पुरख सुल्तान। दीपक जगाए आदि निरँजणा, करे प्रकाश दो जहान। प्रगट हो दीनां नाथ दर्द दु:ख भय भंजना, ग़रीब निमाणयां पुच्छे आण। चार वरन कराए साचा मजना, अमृत सरोवर इक अशनान। कूड़ी क्रिया भाण्डा भज्जणा, थिर रहे ना विच जहान। साचा मार्ग इक्को लग्गणा, सतिजुग मात होए प्रधान। ज़ात पात दीन मज़्हब दी चुके हदना, हद्द वखाए इक श्री भगवान। चौथे युग आपणा भार लद्दणा, नाल लै के जाए बेईमान शैतान। हरिमन्दिर विच गुरमुख विरले बहि के सजणा, जिस अन्दर दीपक जोत जगे महान। अट्ठे पहर रहे मग्ना, काम क्रोध ना कोए पहचान। सच नगारा इक्को वज्जणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल सच्चा सुल्तान। सच सुल्तान बण निरँकार, हुक्म हाकम आप चलाईआ। कलयुग अन्तिम करे ख़बरदार, नाम संदेसा इक सुणाईआ। कलयुग कूड़े आपणे कट्ठे कर लै यार, यारी यारां नाल लगाईआ। वीहवीं सदी पैणी मार, अन्त सके ना कोए बचाईआ। चार यारी आई हार, मुहम्मद बैठा मुख लुकाईआ। अल्ला राणी धाहां रही मार, मुख घूँगट इक्को पाईआ। मूसा ईसा करे पुकार, पिता बौहड़ दरोही तेरे नाम दुहाईआ। गोबिन्द सूरा बोल कहे ललकार, पुरख अकाल आवे सच्चा माहीआ। जिस गुरमुख वेखणे आपणे लाल, लालन आपणा रंग रंगाईआ। जो पुच्छे मुरीदां हाल, सो मुर्शद फेरा पाईआ। जिस शाहों करने कंगाल, कंगालों शाह बणाईआ। सो लेखा जाणे हक़ हलाल, हकीकत वेखे थाउँ थाईंआ। उस दे अग्गे किसे दी चले ना कोई चाल, चलाकी सब दी दए मिटाईआ। जिस दा नाम खण्डा सच प्रीती सच्ची ढाल, शब्द चिला साचा इक उठाईआ। सो सतिगुर सदा दीन दयाल, दीनन होए सहाईआ। कलयुग अन्त गुर अवतारां पीर पैगम्बरां सब दा मन्ने स्वाल, आसा सब दी पूर कराईआ। चारों कुण्ट हुक्मे अन्दर फिरे काल, महाकाल हुक्म आप वरताईआ। आप वेखे बहि के सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्को सोभा पाईआ। सम्बल खेल करे कमाल, कमला रमला झल्ला बण के आपणा भेव छुपाईआ। जन भगतां चले नाल नाल, अन्दर वड़ वड़ राह

वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण निराकार करे खेल आप करतार, कलयुग सतिजुग जाणे धार, धरनी धरत धवल हौला भार आप कराईआ।

✪ २८ सावण २०२० बिक्रमी हरबंस सिँघ बलवन्त सिँघ दे गृह पिण्ड माहल ज़िला अमृतसर ✪

तेरा दर पुरख अबिनाशी, कल अन्तिम इक्को नज़री आईआ। चार युग दी भटकदी दासी, भगती दर तेरे कुरलाईआ। चारों कुण्ट जीव जंत मैनूं करदे हासी, मेरे नेत्र नैण रहे शरमाईआ। तीर्थ तट्टां कोई ना लभ्भी मैनूं घाटी, मन्दिर मस्जिद थाँ नज़र कोए ना आईआ। वेख के आई चौदां लोक हाटी, चौदां तबकां नट्ठी वाहो दाहीआ। जिध्धर जावां वज्जे काती, सच प्रीत ना कोए वखाईआ। मैनूं नज़र ना आई कोई प्रभाती, संधया सोभा कोई ना पाईआ। कूड़ी क्रिया रुले बंदे ख़ाकी, तेरी ख़ाहिश ना किसे रखाईआ। गुर अवतारां कोलों हो के आकी, मन डंका रहे वजाईआ। किसे गृह नज़र ना आई खुल्ही ताकी, जिस घर वेखां सच्चा माहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरे सन्तां देंदी रही पाती, घर घर सुनेहड़ा आप पुचाईआ। प्रीतीवान प्रीत करदी रही दिवस राती, घड़ी पल वंड ना कोए वंडाईआ। कलयुग अन्त नज़र ना आए कोए साची खाटी, सुंञी सेज सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, दर मिले इक सरनाईआ। भगती कहे मैं आई रो, दर तेरे सीस झुकाईआ। लख चुरासी लई टोह, घर वड़न कोए ना पाईआ। साचा करे ना कोई मोह, मुहब्बत इक ना कोए रखाईआ। चार युग दी करनी खोह, ख़ाली हथ्थ फिराईआ। सच प्रकाश ना दिसे लो, अन्ध अन्धेरा छाईआ। किसे दर ना मिले ढो, खुलड़े केस रही वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। भगती कहे मैं बण निमाणी, दर तेरे कूक सुणाईआ। अठसठ तीर्थ बणया पाणी, सीतल धार ना कोए वहाईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद मट्ठ गुरमुख लभ्भा ना कोई हाणी, माया ममता बैठी नाच नचाईआ। लख चुरासी पुणी छाणी, घर घर रड़कणा पाईआ। अन्तर आत्म गावे कोई ना बाणी, रसना जिह्वा सर्ब हिलाईआ। सतिगुर मेरे दीन दयाल तूं मैनूं आपणे घर दी बणाया शाहणी, कलयुग अन्तिम ख़ाली हथ्थां दयां दुहाईआ। ना कोई सुणे तेरी मेरी कहाणी, कूड़ा गीत ढोला सर्ब गाईआ। उठ वेख फिरे भुल्ली तेरी चारे खाणी, ख़ाह मख़ाह मेरे नाल करे लड़ाईआ। मैं तेरी बाली नढ्ढी धी नयाणी, जुग चौकड़ी तेरी आस रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, घर सच मिले सरनाईआ। भगती कहे प्रभ मैं आई दौड़, दर तेरे सीस झुकाईआ। जीव जंत रीठा होया

कौड़, साचा रस नज़र कोए ना आईआ। कोई ना तक्के मेरे वल कर के ग़ौर, गहर गम्भीर तेरी सार कोए ना पाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार मचावे शोर, बांके छोहर रिहा भरमाईआ। अन्दर वड़ गए कूड़े चोर, ठग्गी करन वाहो दाहीआ। सारे कहिन्दे कलयुग अन्त प्रभ दी रही ना लोड़, घर बुद्धि इक्को इक चतुराईआ। श्री भगवान तेरे वेखण वाले सारे ज़ोर, जोरू ज़र आपणा ध्यान लगाईआ। औह वेख जो रविदास ढोए ढोर, चम्म दृष्टी डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। भगती कहे मेरा टुट्टा माण, सार कोए ना पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर तिन्ने जुग वेख करन पछताण, पश्चाताप रहे जणाईआ। कलयुग अन्तिम होया बेईमान, बेपरवाह नज़र ना आईआ। कूड़ कुड़यारा कर प्रधान, सच सुच दिती छुपाईआ। साचा धर्म ना कोए निशान, साचा कर्म ना कोए कमाईआ। साचा नाम ना कोई गाण, साचा मन्दिर ना कोए सुहाईआ। साचा अमृत ना कोई पान, कूड़ी क्रिया जिह्वा होई हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, दर तेरे सेव कमाईआ। साची सेवा दस्स प्रभ एक, एकँकार तेरी सरनाईआ। मैं तक्क के आई टेक, इक्को ओट रखाईआ। नेत्र खोल्ह साहिब सतिगुर वेख, नैण मूंद नैण उठाईआ। चार कुण्ट वध्या भेख, भेखाधारी कूकण वाहो दाहीआ। तेरे नाउँ दी मिटदी जावे रेख, तेरा ध्यान ना कोए लगाईआ। मैं घर घर करन गई हेत, मैनूं अंग ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे घर दे वड्याईआ। दे वड्याई पुरख समरथ, थाँ नज़र कोए ना आइंदा। जिउँ भावे तिउँ लैणा रख, दर तेरा इक्को सोभा पाइंदा। मेरे कोल नहीं कुछ वथ, तेरी मेहर मेरा रंग वखाइंदा। दहि दिशा आई नट्ठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, दर तेरा इक्को भाइंदा। दर तेरे आई कर परवान, इक्को मंग मंगाईआ। साचा दस्स इक मकान, जिस घर वसां चाईं चाईंआ। अट्ठे पहर रहे तेरा ध्यान, दूजा नज़र कोए ना आईआ। तेरे प्रेम अन्दर करां तेरी पहचान, बेपहचान तेरी सरनाईआ। दर खलोती मंगां दान, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर दे वखाईआ। साचा मन्दिर इक वखाल, वास्ता तेरे अग्गे पाईआ। तेरा नाउँ दीन दयाल, दीनां अनाथां होएं सहाईआ। मैं घालण आई घाल, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। फल रिहा ना किसे डाल, कलयुग सिंमल रुक्ख रिहा लहराईआ। कोई ना चले मेरे नाल, सच्चा संग ना कोए बणाईआ। मैं कर के आई हाल हाल, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। प्रभ साचे दे उठो लाल, हरि लालन फेरा पाईआ। जिस दी जुग चौकड़ी अवल्लड़ी चाल, समझ किसे ना पाईआ। जिस दा मन्दिर सति सच्ची धर्मसाल, धुर दरबारे डेरा लाईआ। जा के सुणावो आपणा हाल, हालत

सब दी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हरि सज्जण बेपरवाहीआ। साहिब सतिगुर पुरख अकाला, अक्ल कलधारी दया कमाइंदा। सति धर्म दी सच धर्मसाला, सच दुआरा इक वखाइंदा। निरगुण निरवैर बणे दलाला, सच दलाली आप कमाइंदा। कूड़ी क्रिया तोड़ जंजाला, साचा मार्ग इक समझाइंदा। मार्ग दस्से अन्त सुखाला, रहबर इक्को नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। साची भगती सुण ला कन्न, हरि करता आप जणाइंदा। मेरे भगतां दा कहिणा मन्न, धुर दी धार आप उपाइंदा। जा के वेख गुरमुख चन्न, सो साहिब आप चमकाइंदा। सिफ्त सुनेहड़ा दे के कह धन्न धन्न, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक वखाइंदा। भगती सुण कर ध्यान, श्री भगवान आप जणाईआ। खैहड़ा छड्ड दे कूड़ जहान, बेमुख संग ना कोए निभाईआ। गुरमुख साचे कर पहचान, जिन्हां प्रभ आपणा रंग वखाईआ। जा के वस ओस मकान, जिस घर वसे बेपरवाहीआ। बिन मंगया देवे तैनूं दान, ख़ाली झोली दए भराईआ। साचा खेल करे महान, मेहरवान होए सहाईआ। बाली नढ्ढी गुरमुख करे परवान, गुरसिख वेखे चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी सेवा इक लगाईआ। भगती तेरी सेवा एक, हरि साचा आप लगाइंदा। जिन्हां पुरख अकाल ल्या वेख, तिन्हां तेरे नाल मिलाइंदा। पिच्छे रखदे आए तेरी टेक, हुण तेरी टेक भगत आप बणाइंदा। घर घर दर दर गुरमुखां नाल कर हेत, हितकारी आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक अलाइंदा। सच संदेसा देवे मीत, सो सतिगुर आप सुणाईआ। गुरमुख वेख बैठे अतीत, कलयुग नाता रहे तुड़ाईआ। इक्को गौंदे तेरा मेरा गीत, सोहँ ढोला राग अलाईआ। प्रभ वसया ओन्हां चीत, ठगौरी नजर कोए ना आईआ। सतिजुग सच चलाए रीत, रीतीवान फेरा पाईआ। ना कोई मन्दिर ना मसीत, मुल्लां क़ाज़ी करे ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। ना कोई मुल्लां ना कोई क़ाज़ी, आयत शरायत ना कोए जणाइंदा। ना कोई मसल्ला ना निमाज़ी, सजदा सीस ना कोए झुकाइंदा। ना कोई काअबा ना कोई हाज़ी, ना कोई पांधी पन्ध वखाइंदा। ना कोई अस्व ना कोई ताजी, शाहसवारा नज़र किसे ना आइंदा। आदि जुगादि जिस साजण साजी, सो साहिब खेल वखाइंदा। कलयुग अन्तिम कूड़ी क्रिया कोई ना दिसे ग़ाज़ी, ग़फ्लत सब दी आप मिटाइंदा। जन भगत वेखे वड सवाबी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। साची सिख्या दए नवाब, शाह पातशाह दया कमाईआ। साची भगती उठ उठ भाग, सो साहिब हुक्म वरताईआ। प्रेम प्रीती हथ्थ

फड़ रबाब, भगत दुआरे जा वजाईआ। निउँ निउँ सीस कर आदाब, अदब नाल चरण सीस टिकाईआ। दोवें हत्थ जोड़ मारीं आवाज, नेत्र नैण शरमाईआ। जन भगतो रखो मेरी लाज, कलयुग रैण अन्धेरी छाईआ। मैनूं हुक्म देवे जिस दे सीस सोहे ताज, तख्त ताज नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। भगती कहे मैं जावांगी। तेरे भगतां सीस निवावांगी। जगदीश तेरा शुकर मनावांगी। जिस वेले दर्शन पावांगी। बण सेवक सेव कमावांगी। काया अन्दरों कूड़ा करकट हूंझ के बाहर कढ्ढावांगी। अन्दर वड़ के तेरा प्रेम प्रीती ढोला गावांगी। गुरमुख झरोखे बारी खड़ के, प्रभ तेरा राह तकावांगी। लख चुरासी नालों लड़ के, गुरमुखां गंढु पवावांगी। घर घर अन्दर पाणी भर के, कँवल नाभ भरावांगी। सच रबाब हत्थीं फड़ के, अनहद नाद सुणावांगी। प्रेम प्रीती तेल बाती धर के, घर दीपक जोत जगावांगी। बण निमाणी दर ते खड़ के, दोए जोड़ वास्ता पावांगी। मैं चौथे युग गुरमुख लम्भया मर मर के, बिन मरनीउँ मरना आप सिखावांगी। साहिब सतिगुर जो तेरा ढोला आए पढ़ के, तिन्हां कोलों आपणी भुल्ल बख्शावांगी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, बण बरदी सेव कमावांगी। सेवा करां प्रभ बण के बरदी, अट्ठे पहर ध्यान लगाईआ। दिवस रैण रवां डरदी, भय भउ सिर मनाईआ। तेरा ढोला रहां पढ़दी, सोहँ राग अलाईआ। तू ही तू रहां करदी, करते तेरी इक सरनाईआ। मेहरवान तूं बणया दर्दी, दुखियां दर्द वंडाईआ। चार युग साधां सन्तां नाल रही लड़दी, घर घर झगड़ा पाईआ। बिन सतिगुर पूरे बिन तेरे घर किसे ना वड़दी, दूरों दूरों सब नाल यारी लाईआ। कोई कहे गर्मी कोई कहे मिले विच सर्दी, छे रुत्तड़ी रंग ना कोए वखाईआ। बारां मास मैं रही मरदी, घड़ी पल वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दित्ता साचा वर, धन्न तेरी वड्याईआ। धन्न वड्याई वड मेरे भाग, हरि साचे भाग लगाया। जुग चौकड़ी पिछला धोया दाग़, निहकर्मी कर्म कमाया। जन भगत हत्थ फड़ाई मेरी वाग, वास्ता इक्को घर रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, साचा दित्ता इक्को दान, गुरमुख सज्जण मिले आण, घर इक्को नज़री आया।

✪ २८ सावण २०२० बिक्रमी हज़ारा सिँघ दे गृह अमृतसर ✪

धुर दी लिख्त सतिगुर हत्थ, दूसर हत्थ ना किसे फड़ाइंदा। आदि जुगादी पुरख समरथ, साची हुक्मे कार कराइंदा। धाम न्यारे लए रख, छप्पर छन्न नज़र कोए ना आइंदा। शब्दी गुर साची धार देवे दस्स, लिख्त पढ़त आपणा नाम जणाइंदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वरताइंदा। लिख्त पढ़त सदा अनडिठ, कलम शाही ना कोए चतुराईआ। बिन अक्खरां देवे लिख, निष्अक्खर दए वड्याईआ। नित नवित्त भगत भगवान करे हित, गुर गुर गुरसिख वेख वखाईआ। पुरख अकाला दीन दयाला बण के सच्चा पित, पतिपरमेश्वर पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भविख भविश आपणे हथ्थ रखाईआ। गोबिन्द लेखा गोबिन्द पढ़या, जीव जंत कहिण कोए ना पाईआ। गोबिन्द मन्दिर गोबिन्द वड़या, दूजा नज़र कोए ना आईआ। गोबिन्द दुआरे गोबिन्द खड़या, गोबिन्द वेखे चाईं चाईंआ। गोबिन्द चरण गोबिन्द पड़या, गोबिन्द साची अलख जगाईआ। गोबिन्द करनी गोबिन्द करया, गोबिन्द दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी खेल गोबिन्द विच रखाईआ। गोबिन्द लेख सदा अलेख, लिखण पढ़न विच कदे ना आइंदा। जुग चौकड़ी धर धर भेस, सो साहिब आप समझाइंदा। वसणहारा सचखण्ड देस, महल अटल इक रुशनाइंदा। करे खेल आदि जुगादी एक, एकँकार कल वरताइंदा। सरसे दिती चरण टेक, सच सहारा इक वखाइंदा। निर्मल कर आप विवेक, ववेकी खेल रचाइंदा। निरगुण सरगुण साचा हेत, जल बिम्ब रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि करनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। लिख्त पढ़त गोबिन्द संदेसा, धुर फ़रमाणा इक जणाईआ। शाहो भूप वड नरेशा, नर हरि नरायण बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी धर धर वेसा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढुाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां नित नवित्त जाणे लेखा, लिखणहार इक्को इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। गोबिन्द लेख गोबिन्द आसा, गोबिन्द सरसे विच दबाईआ। सो सर जिस गृह गोबिन्द भरवासा, सो साबत इक्को नज़री आईआ। जिस दा आर पार किनारा नज़र ना आए कोई पासा, डूंग्घा सागर गहर गम्भीर इक्को इक रखाईआ। तिस मन्दिर ना कोई लेख ना लिखासा, लिख्त नज़र कोए ना आईआ। तिस मन्दिर गोबिन्द दा गोबिन्द करे अरदासा, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। पारब्रह्म प्रभ तेरा खोल्ह ना सके कोई खुलासा, पड़दा उपर ना कोए उठाईआ। कूड़ी क्रिया होवे नासा, अन्त कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सो सरसा हरि सतिगुर चरण, गोबिन्द इक ओट जणाइंदा। जिथ्थे खुल्हे नेत्र हरन फरन, जगत अक्ख ना कोए रखाइंदा। जिस दुआरे गुर अवतार पीर पैगम्बर पढ़न, सो लिख्त गोबिन्द आप जणाइंदा। कलयुग अन्तिम श्री भगवान अबिनाशी करता करे खेल हरन फरन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अनभव आपणी धार चलाइंदा। गोबिन्द लिख्त पढ़त दित्ता इशारा, सृष्ट सबाई गया जणाईआ। वेखो

गोबिन्द खाली छड्ड के गया दुआरा, पुरी अनन्द ना भाग लगाईआ। धन दौलत पिता पुत ना कीता प्यारा, साक सज्जण सैण ना कोए रखाईआ। इक्को पुरख अकाल तक्क सहारा, साचे मार्ग चले वाहो दाहीआ। सृष्ट सबाई लख चुरासी जीव जंत चारे खाणी कूड़ पसारा, अन्त रहिण कोए ना पाईआ। जिस ने पुरख अकाल दीन दयाल सच स्वामी इक्को विचारा, अन्तर आत्म खोज खुजाईआ। तिस दर शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान दर दर फिरन भिखारा, भिख्या मंगण वाहो दाहीआ। सो साहिब अगम्म अपारा, अलख अगोचर बेनज़ीर नज़र किसे ना आईआ। लाशरीक परवरदिगारा मुकामे हक़ एकँकारा, सचखण्ड निवासी घर साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गोबिन्द एका लेख जणाईआ। गोबिन्द लेखा बिन लिख्त पढ़त, अक्षर वंड ना कोए वंडाईआ। कलयुग करनी ना मंगे धड़त, आड़्त रूप ना कोए वंडाईआ। आपणे विचों आपणा लिख्या लेख मुड़ कढ्ढे परत, बिन लेखा जाणे कलम शाहीआ। लख चुरासी जीव जंत सारे करन हरख, सोग चिन्ता ग़म नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, डूंग्घे सर आपणा लेखा आप दबाईआ। डूंग्घा सर सरसा रूप, साहिब गोबिन्द आप जणाइंदा। जिस दी दिशा ना कोई कूट, हिस्सा वंड ना कोए वंडाइंदा। नज़र ना आए कोई सरूप, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। सो लेखा जाणे अनूप, महिमा अकथ कथ्थ दृढ़ाइंदा। कलयुग अन्तिम प्रगट होए साचा भूप, आपणा हुक्म आपणा फ़रमाण, धुर दी बाण निरगुण सरगुण धार आप प्रगटाइंदा। कलयुग जीव गुर का लेख सके ना कोए पछाण, बेपहचान पहचान विच किसे ना आइंदा। रसना जिह्वा ढोले सारे गाण, अन्दर वड़ मन्दिर चढ़ गोबिन्द धार दरस कोए ना पाइंदा। जिस धार आपणा लेखा गया धर, तिस धार विचों प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा जाणे साचा हरि, गोबिन्द लेखा हथ्थ किसे ना आइंदा। सतिगुर पूरा होए मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। बिन भगतीउँ देवे आपणा दान, नाम अमुलड़ा झोली पाईआ। अन्तर वड़ के होए दयावान, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस वखाए आपणा घर, तिस दूजी लोड़ रहे ना राईआ। सतिगुर पूरा सदा समरथ, दीन दयाल अख्वाइंदा। जिस सिर रखे आपणा हथ्थ, दो जहानां पन्ध मुकाइंदा। आत्म परमात्म जोड़े नात, दूई द्वैती मोह मिटाइंदा। अन्दर बाहर मेट अन्धेरी रात, निरगुण साचा चन्द चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, फड़ बाहों पार कराइंदा। सतिगुर पूरा सज्जण मीत, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। जुग चौकड़ी चलाए रीत, गुरमुख सज्जण आप जगाईआ। मेल मिलाए बिन मन्दिर मसीत, काया काअबा इक्को इक वखाईआ। आत्म परमात्म

पारब्रह्म ब्रह्म गाए इक्को गीत, करे सच पढ़ाईआ। धर्म निशान वखाए ठीक, घर घर विच पड़दा लाहीआ। नज़री आवे इक अतीत, त्रैगुण लेखा दए मुकाईआ। चरण कँवल हरि बख्शे इक प्रीत, पूजा पाठ सिमरन जोग अभ्यास हठ तप साधन इक्को विच समाईआ। गुरू बिनां ना उतरे पार, निरगुण सरगुण आप समझाइंदा। बिन करनी कमाईउँ सतिगुर पूरा देवे तार, मेहर नज़र आप टिकाइंदा। खोल्हे दृष्ट वखाए इष्ट सच्चे घर बार, घर घर विच मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस खोल्हे बंद किवाड़, तिस दर आपणा रंग रंगाइंदा। समरथ पुरख साहिब सुल्तान, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। अनपढ़यां देवे आप ज्ञान, सुत्तयां जागदयां लए जगाईआ। घर विच घर दरस दिखा श्री भगवान, आपणी बूझ दए बुझाईआ। उठ सुत मेरे बाल नादान, गुरसिख साची सोझी पाईआ। लभ्भणहारा सतिगुर पूरा आप मेहरवान, गुरसिख लभ्भण कदे किते ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, उच्चे टिल्ले पर्बत पहाड़ समुंद सागर डूंगर खाई हथ्थ किसे ना आईआ।

✪ ३२ सावण २०२० बिक्रमी हरि भगत दुआर जेठूवाल ✪

१६४ १५

डंका वज्जे दो जहान, सो पुरख निरँजण आप वजाइंदा। शाहो भूप वड राज राजान, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। दो जहानां दए ज्ञान, विष्न ब्रह्म शिव आप समझाइंदा। धर्म वखाए इक निशान, सचखण्ड दुआरे आप झुलाइंदा। लेखा जाणे धुर दी बाण, धुरदरगाही हुक्म वरताइंदा। निरगुण सरगुण वेखे मार ध्यान, लख चुरासी खोज खुजाइंदा। आत्म परमात्म देवणहारा माण, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा भेव चुकाइंदा। ईश जीव करे ध्यान, जगदीश आपणा पड़दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धुर दी धार आप समझइन्दा । धुर दी धार पुरख समरथ, सो साहिब आप जणाईआ। निरवैर हो चलाए रथ, महासाथीं सेव कमाईआ। पुरी लोअ आकाश पाताल जुग चौकड़ी खण्ड ब्रह्मण्ड मथ, चरण सरन बख्शे इक सरनाईआ। लहिणा जाणे सीआं साढे तिन्न तिन्न हथ्थ, वड दाता बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी जणावणहार बोध अगाध अकथना अकथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा भेव आप खुल्हाइंदा। साचा भेव खोल्हे निरँकार, निरगुण हथ्थ वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादि वड शाहकार, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। जुग चौकड़ी वेखणहार विच संसार, निरगुण सरगुण धार प्रगटाईआ। कल कल्की लै अवतार, योद्धा सूरबीर वेस वटाईआ। वसणहारा धाम न्यार, सम्बल आपणा डेरा लाईआ। सच संदेसा देवे आण, नर नरेशा बेपरवाहीआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले भगत भगवान करे परवान,

नाम परवाना हथ्थ फड़ाईआ। आत्म परमात्म देवे इक ज्ञान, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोए पढ़ाईआ। काया महल अटल उच्च मकान, घर घर विच सोभा पाईआ। दीआ बाती दीपक जोती जगे महान, कमलापाती निरगुण नूर करे रुशनाईआ। अमृत बूँद प्याए स्वांती, ठांडी ठार धार जणाईआ। कलयुग मेटे अन्धेरी राती, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। दिवस रैण रहे प्रभाती, संधया रूप ना कोए वटाईआ। चरण कँवल पतिपरमेश्वर इक्को बन्ने नाती, दूजा नाता नज़र कोए ना आईआ। नव नौ चार उतरे पार घाटी, शौह दरया ना कोए रुढ़ाईआ। मित्र प्यारा मिले इक्को साकी, भर प्याला जाम नाम प्याईआ। लेखा जाणे माणस ख़ाकी, बंद ताकी आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, नर हरि नरायण आप कराइंदा। महल अटल उच्च मुनारा, बंक दुआरा इक सुहाइंदा। निरगुण नूर कर उज्यारा, सोभावन्त सोभा पाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, लेखा लेख ना कोए समझाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर आदि जुगादि जुग चौकड़ी करदे गए निमस्कारा, सजदा सीस सर्ब झुकाइंदा। जलवा नूर परवरदिगारा, बेपरवाह आपणी कार कमाइंदा। कलयुग अन्तिम खेल करे न्यारा, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता, कल आपणी धार प्रगटाइंदा। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर निरगुण सरगुण सच्चा मीता, सज्जण इक्को इक अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, दूसर संग ना कोए बणाइंदा। दूसर संग ना कोए मीत, सज्जण नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल अगम्म अथाह बेपरवाह बैठा रहे सदा अतीत, घर साचे डेरा लाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सुणावणहारा साचा गीत, मेरा तेरा राग अलाईआ। ना कोई मन्दिर ना मसीत, शिवदुआला मठ्ठ नज़र कोए ना आईआ। ना कोई हस्त ना कोई कीट, ना कोई ऊँच ना कोई नीच, राउ रंक ना कोए वखाईआ। करे खेल सदा अनडीठ, जगत नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, वड वड्डा शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। शाह पातशाह हरि पुरख अकाल, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। सचखण्ड निवासी दीन दयाल, दयानिध ठाकर स्वामी मेहर नज़र इक उठाइंदा। सन्त सुहेले गुरमुख वेखे आपणे लाल, लालन आपणे रंग रंगाइंदा। शब्द विचोला बण दलाल, साचा हट्ट इक खुल्हाइंदा। पुच्छणहार मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाइंदा। नाता तोड़ काल महाकाल, निरवैर आपणा घर वखाइंदा। लख चुरासी विचों भाल, भगत भगवन्त मेल मिलाइंदा। अन्त खाए ना कोई काल, जम का डण्ड ना कोए वखाइंदा। काया मन्दिर अन्दर वखाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक वड्याइंदा। जोत निरँजण दीपक बाल, आदि निरँजण वेख वखाइंदा। अमृत आत्म जाम दए प्याल, निझर झिरना आप झिराइंदा। आत्म सेजा दए स्वाल, सेज सुहञ्जणी इक

वड्याइंदा। काया माटी वेखणहारा हड्ड मास नाड़ी खाल, रक्त बूँद फोल फोलाइंदा। जुग जुग चले अवल्लड़ी चाल, शास्त्र सिमरत वेद पुराण भेव कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निरगुण निरगुण अपणी कार आप कमाइंदा। निरगुण कार करे करतार, करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। सचखण्ड निवासी साचे तख़्त बैठ सच्चे दरबार, दरगाह साची सोभा पाईआ। ना कोई दिसे चोबदार, दर दरवेश नज़र कोए ना आईआ। ना कोई मंगे दर भिखार, भिक्खक रूप ना कोए वटाईआ। ना कोई गुरू पीर अवतार, साध सन्त संग ना कोए रखाईआ। ना कोई शास्त्र सिमरत वेद करे विचार, ना कोई अञ्जील कुरान रिहा उच्चार, तीस बतीस हदीस करे ना कोए पढ़ाईआ। ना कोई पीर पैगम्बर ना कोई दिसे यार, मुल्लां शेख़ मसायक रूप ना कोए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी कमावे जग, जगजीवण दाते हथ्थ वड्याईआ। जुग चौकड़ी नव नौं चार गए लँघ, कलयुग अन्तिम वेला आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सोहले ढोले गा के गए छन्द, रसना जिह्वा बत्ती दन्द कर पढ़ाईआ। सीस झुकाउँदे रहे दीन दयाल साहिब बख़्शंद, सजदा इक्को इक जणाईआ। मंगदे रहे परमानंद, निज आत्म होए रसाईआ। नाता तुटे दूई द्वैती झूठी कंध, भाण्डा भरम भउ भनाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म देवे गंढ, दिती गंढ ना कोए खुल्हाईआ। सुरत सवाणी ना होवे रंड, गुर शब्दी मेला सहिज सुभाईआ। आवण जावण दो जहान लख चुरासी मुक्के पन्ध, मात गर्भ फेरा कोए ना पाईआ। नर निरँकार सदा वसे संग, साचा संग निभाईआ। करे खेल सूरा सरबँग, शाह पातशाह वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र बेनज़ीर इक्को इक उठाईआ। बेनज़ीर लाशरीक, शिरकत विच कदे ना आइंदा। कलयुग अन्तिम मेटे अन्धेरा तारीक, नूरी चन्द इक चमकाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद मंगदे गए भीख, अन्तर आत्म ध्यान सर्ब लगाइंदा। परवरदिगार बेपरवाह वड अमाम तेरा गौंदे गए गीत, रसना जिह्वा सिफ्त सालाहइंदा। अञ्जील कुरान लेखा दस्सदे गए हदीस, मसला हक़ हक़ समझाइंदा। त्रैभवन धनी साहिब सतिगुर बैठा रहे अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आइंदा। मुरीद मुर्शद वसे चीत, चेतन धार आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण सरगुण आपणी कार कमाइंदा। निरगुण सरगुण करे धन्दा, नज़र किसे ना आईआ। देवे वड्याई पंज तत ख़ाकी बंदा, ख़ालस आपणा भेव चुकाईआ। साहिब ठाकर सद बख़्शंदा, बख़्शिश इक्को झोली पाईआ। एथे ओथे आर पार मँझधार वखाए आपणा कन्ढा, नईया सागर आप तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा

१६६
१५

साचा वर, जुग चौकड़ी वेखे चाईं चाईंआ। जुग चौकड़ी वेख वखाउँदा ए। सो पुरख निरँजण वेस वटौंदा ए। हरि पुरख निरँजण निरगुण धार चलाउँदा ए। एकँकारा आपणी कल वखाउँदा ए। आदि निरँजण जोती नूर डगमगाउँदा ए। अबिनाशी करता शाहो भूप नाम धराउँदा ए। श्री भगवान हुक्म वरताउँदा ए। पारब्रह्म प्रभ सीस झुकाउँदा ए। ब्रह्म आपणी वंड वंडाउँदा ए। निहकर्मी कर्म कमाउँदा ए। साची सरन इक दरसाउँदा ए। चरण कँवल इक वडयाउँदा ए। धरनी धरत धवल सोभा पाउँदा ए। निरगुण सरगुण खेल कराउँदा ए। गुर अवतार भेव चुकाउँदा ए। शब्द जैकार ढोला गाउँदा ए। नाउँ निरँकार आप दृढ़ाउँदा ए। महल अटल इक रुशनाउँदा ए। दीआ बाती आप जगाउँदा ए। कमलापाती सोभा पाउँदा ए। सूरज चन्न आप चमकाउँदा ए। मण्डल मण्डप डेरा लाउँदा ए। ज़िमी असमान रंग रंगाउँदा ए। गगन गगनंतर खोज खुजाउँदा ए। साचा मन्त्र इक समझाउँदा ए। लख चुरासी बणतर आप बणाउँदा ए। त्रैगुण माया लाह बसन्तर, अग्नी इक्को इक वखाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप रचाउँदा ए। आपणा खेल आप रचाउँदा ए। निरगुण सरगुण धार बंधाउँदा ए। लख चुरासी आप रचाउँदा ए। अण्डज जेरज वंड वंडाउँदा ए। उतभुज सेत्ज बणत बणाउँदा ए। शब्द धार इक सुणाउँदा ए। बेपरवाह कार कमाउँदा ए। खोल्ह किवाड़ बंक सुहाउँदा ए। हो उज्यार नूर चमकाउँदा ए। बण के यार संग निभाउँदा ए। पारब्रह्म प्रभ भेव खुलाउँदा ए। ब्रह्म आपणा घर वखाउँदा ए। काया मास नाड़ी चम्म हड्ड गंढु पवाउँदा ए। पवण स्वास दे के दम, रसना जिह्वा नाल रलाउँदा ए। साचा नूर चाढ़ चन्न, घर घर विच दीपक आप जगाउँदा ए। लेखा जाण मति बुध मन, मनसा जगत नाल प्रनाउँदा ए। सरवण सरोते ला कन्न, नेत्र अक्ख अक्खां नाल मिलाउँदा ए। आप हो के सब तों वक्ख, हरिजू आपणी कार कमाउँदा ए। जुग चौकड़ी मार्ग दस्स, गुर अवतार पीर पैगम्बर निष्अक्खर अक्खर आप पड़ाउँदा ए। निरवैर हो के अन्दर वस, साची करनी आप कमाउँदा ए। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी मुकाए नट्ठ नट्ठ, पांधी बण के फेरा पाउँदा ए। निरगुण सरगुण सति सतिवादी नाम रट, रट्टा दो जहान चुकाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धुर दी धार आप प्रगटाउँदा ए। धुर दी धार आप प्रगटाउँदा ए। पुरख अबिनाशी खेल कराउँदा ए। सचखण्ड निवासी वेस वटाउँदा ए। जोत प्रकाशी नूर धराउँदा ए। आदि जुगादी साचा साथी, सगला संग निभाउँदा ए। बिन अक्खरां दस्से पूजा पाठी, अन्तर मन्त्र इक दृढ़ौंदा ए। लहिणा चुकाए दिवस राती, घड़ी पल ना वंड वंडाउँदा ए। बोध अगाध सुणाए गाथी, भेव अभेदा आप खुलाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जुग करनी आप कमाउँदा ए। जुग करनी कार कमाउँदा ए। धुर

दा प्यार तोड़ निभाउँदा ए। मित्र प्यारा इक अख्वाउँदा ए। सांझा यार नाउँ प्रगटौंदा ए। धुर कलाम आप समझाउँदा ए। वड अमाम वेख वखाउँदा ए। नग़मा इक्को इक अलाउँदा ए। सलाम सब नूं आप पुचाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची खेल आप वखाउँदा ए। साची खेल आप वखाउँदा ए। गुर अवतार हुक्म मनाउँदा ए। धुर दी धार राहे पौंदा ए। शब्द नगार ढोल वजाउँदा ए। अनहद निक्की निक्की गुफ़तार, घर घर मंगल गीत अलाउँदा ए। आप बोल सच जैकार, धुर संदेस आप समझाउँदा ए। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बीतया विच संसार, थिर रहिण कोए ना पाउँदा ए। पंज तत चोला छड्ड गए गुरू अवतार, गुर शब्दी इक्को सोभा पाउँदा ए। जिस दा डंका वज्जे सदा संसार, राउ रंक आप जगाउँदा ए। सो साहिब करे खेल करतार, कुदरत कादर वेख वखाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणा भेव आप चुकाउँदा ए। आपणा भेव आप चुकाउँदा ए। निरगुण आपणा वेस वटाउँदा ए। निहकलंक नाउँ प्रगटाउँदा ए। जोती जोत जोत रुशनाउँदा ए। शब्द बोध अगाध सणाउँदा ए। गुरमुख विरले सन्त साध उठाउँदा ए। लख चुरासी विचों काढ, निरगुण आपणा मेल मिलाउँदा ए। पुरख अकाल करे लाड, जोती माता गोद सुहाउँदा ए। सति पुरख निरँजण बणया साक, सगला संग बणाउँदा ए। बजर कपाटी खोल्ह ताक, तकवा इक्को इक रखाउँदा ए। कल मेट अन्धेरी रात, शमां दीप इक जगाउँदा ए । जुग विछड़यां पुच्छे वात, अन्तिम मेला आप मिलाउँदा ए। दुरमति मैल देवे काट, अमृत मेघ इक बरसाउँदा ए। लेखा चुक्के चौदां लोक हाट, जिस जन आपणे घर वसाउँदा ए। अठसठ तीर्थ ना कोई ताट, सच सरोवर आप नुहाउँदा ए। मेल मिलावा पुरख समराथ, आवण जावण पन्ध चुकाउँदा ए। साचे पत्तण पाली बैठा घाट, फड़ बेड़े आप चढ़ाउँदा ए। कलयुग अन्तिम मेटे वाट, पांधी आपणा फेरा पाउँदा ए। भगत भगवन्त लए राख, सिरजणहार घर घर वेख वखाउँदा ए। लेखा चुके जात पात, चार वरन एका गंढु बंधाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा हुक्म वरताउँदा ए। निरगुण साचा हुक्म वरताउँदा ए। दो जहानां पढ़दा लौंहदा ए। शब्द गुरू बलकार इक अख्वाउँदा ए। नाम खण्डा तिक्खी धार, आप चमकाउँदा ए। ना कोई घड़े लुहार तरखाण, बाढी नज़र कोए ना आउँदा ए। पुरख अकाल आवे विच मैदान, साची मजलस आप लगाउँदा ए। लेखा जाणे दो जहान, दोए दोए धार रूप वटाउँदा ए। निरगुण सरगुण साचा रूप वखाए काहन, गुरमुख सखी आप प्रनाउँदा ए। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी वेखे मार ध्यान, पूरब लहिणा फोल फुलाउँदा ए। बिन पढ़यां देवे ज्ञान, अक्खर इक्को इक समझाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि साची खेल वखाउँदा ए। हरि साची खेल

वखाउँदा ए। घर मन्दिर अन्दर वड़ के आपणा गीत अलाउँदा ए। साचे पौड़े साहिब चढ़ के, महल अटल इक रुशनाउँदा ए। सुरत सवाणी डूंघी भँवरों फड़ के, पार किनारे आप लगाउँदा ए। शब्द हाणी नाल जोड़ जड़ के, साची सेजा आप सुहौंदा ए। आपे वेखे अग्गे खड़ के, मुख पड़दा ना कोए रखाउँदा ए। जेहड़ा हथ्थ ना आया मर के, सो जींवदयां जीव जीव बदलाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग आप रंगाउँदा ए। आपणा रंग प्रभू रंगाउँदा ए। कलयुग अन्त वेख वखाउँदा ए। गुरमुख साचे सज्जण उठाउँदा ए। फड़ बाहों गोद बठाउँदा ए। जन्म जन्म दा रोग मिटाउँदा ए। चिन्ता सोग ना कोए रखाउँदा ए। साचा जोग इक समझाउँदा ए। धुर संजोग मेल मिलाउँदा ए। घर विजोग ना कोए वडयाउँदा ए। किला कोट इक वसाउँदा ए। चोट नगारे नाम लगाउँदा ए। निर्मल जोत जोत जगाउँदा ए। घर घर गुरमुख पहुंच, आप आपणा मेल मिलाउँदा ए। श्री भगवान जन भगतां मिलण दा रखे सदा शौक, बण के शौहर नार कन्त हंढाउँदा ए। लख चुरासी मचाए शोर, नेत्र नैण सतिगुर पूरे दरस कोए ना पाउँदा ए। कोई कहे उच्चे टिले पर्बत प्रगट होणा पूत सपूता ब्राह्मण गौड़, साचे आसण सोभा पाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाउँदा ए। आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाउँदा ए। समरथ कार कमाउँदा ए। बोल अलख, अलख नाम जणाउँदा ए। जन भगतां मार्ग दस्स, दहि दिशा मेल मिलाउँदा ए। अन्दर वड़ जाए हस्स हस्स, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आउँदा ए। तीर निशाना नाम मारे कस कस, अणयाला आप चलाउँदा ए। बुरज हँकारी जाए ढठ्ठ, कूड़ी क्रिया मेट मिटौंदा ए। मन खेड़ा होवे भठ्ठ, कूड़ी अग्नी आप जलाउँदा ए। सच दुआरे खोल्ह के हट्ट, घर घर विच आप प्रगटाउँदा ए। करे स्वांग बण नटुआ नट, नट नटुआ आपणी धार जणाउँदा ए। गुरमुख विरले देवे मत्त, जिस आपणा ब्रह्म ज्ञान दृढ़ाउँदा ए। नाड़ बहत्तर ना उबले रत, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए हल्काउँदा ए। हिरदे हरि जू जाए वस, वास्ता आपणे नाल पाउँदा ए। नानक गोबिन्द ईसा मूसा मुहम्मद गया दस्स, कलयुग वेला अन्त आप सुहौंदा ए। प्रगट होए पुरख समरथ, कल कल्की वेस वटाउँदा ए। जिस दा नाम आदि जुगादि जुग चौकड़ी रसना जिह्वा रहे रट, बत्ती दन्द सिफ्त सलौंहदा ए। सो साहिब करे जोत प्रकाश, प्रकाशवान इक्को नज़री आउँदा ए। साचे मण्डल पाए रास, गोपी काहन नाच नचाउँदा ए। गुर अवतार पीर पैगम्बर जन भगतां पूरी करे आस, निरासा कोए नज़र ना आउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल आपणी धार बन्हाउँदा ए। कल आपणी धार बन्हावेगा। प्रभ अचरज खेल रचावेगा। निरगुण नज़र किसे ना आवेगा। लख चुरासी भरम भुलावेगा। गुरमुख साथी आप उठावेगा। कर के राखी,

सेव कमावेगा। गुर गोबिन्द सच्ची आखी, सो पूरी कर वखावेगा। शब्द अगम्मी चढ़ के राकी, अस्व इक्को इक दौड़ावेगा। चौदां तबकां खोल्ह ताकी, चौदां लोकां पड़दा लाहवेगा। सरगुण कोए रहे ना आकी, फड़ फड़ सब दा सीस निवावेगा। लहिणा देणा सब दा चुक्के बाकी, हिसाब किताब आपणे हथ्थ रखावेगा। लख चुरासी जगावणहारा दीवा बाती, जोती चराग़ इक जगावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि करता खेल वखावेगा। हरि करता खेल करेगा। निरभउ कदे ना डरेगा। जन भगतां अन्दर वड़ेगा। साचे पौड़े आपे चढ़ेगा। सच महल्ले आपे खड़ेगा। सोहँ ढोला इक्को पढ़ेगा। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म नार वरेगा। गोबिन्द वसदा रहे खेड़ा, दीपक जोती एका धरेगा। सन्त साजण बन्न्हे बेड़ा, जिन्हां आपणे नाल जड़ेगा। लख चुरासी देवे गेड़ा, अग्गे कोई मात ना अड़ेगा। अन्तिम करे हक़ नबेड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण हो के आपे लड़ेगा। निरगुण हो के करे लड़ाई, शस्त्र नज़र कोए ना आइंदा। नाम खण्डा खड़ग चमकाई, दोहरी धार रूप प्रगटाइंदा। कूड़ी क्रिया दए कढ्ढाई, भय भउ आप रखाइंदा। बुध विवेक करे कर सफाई, निर्मल नीर सीर प्याइंदा। बेपरवाह होए सहाई, दयावान दया कमाइंदा। आत्म परमात्म करे कुड़माई, घर मेला मेल मिलाइंदा। सुरती शब्दी धी जवाई, सौहरे पेईए इक्को घर वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म वरते जग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सृष्ट सबाई बुझे अग्ग, अग्नी तत रहिण ना पाईआ। ज़ात पात मिटे हद्द, दीन मज़्हब ना कोए लड़ाईआ। विश्व उपजे इक्को यद, बंस सरबंस आप सुहाईआ। कूड़ी क्रिया विचों कढ्ढ, साचा मार्ग दए वखाईआ। लेखे लाए काया माटी हड्ड, नाड़ बहत्तर सोभा पाईआ। दरस दिखाए उपर शाह रग, शहिनशाह आपणा मेल मिलाईआ। बिन मक्कयों काअबयों कराए हज्ज, हुजरा हक़ इक वखाईआ। सच महिबूब बहे सज, महिराब इक्को इक रुशनाईआ। नाम नगारा जाए वज्ज, नौबत इक्को इक शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल खलाउणा, ख़ालक ख़लक आप समझाइंदा। वड अमाम रूप वटाउणा, बेनज़ीर नज़र किसे ना आइंदा। साचा कलमा नबी रसूल आप पढ़ाउणा, अलिफ़ ये पन्ध मुकाइंदा। साचा नग़मा इक्को गाउणा, लाशरीक आप सुणाइंदा। साची मजलस सोभा पाउणा, महिफ़ल इक्को इक वड्याइंदा। चौदां लोक हसरत आप मिटाउणा, हशर आपणे हथ्थ वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी खेल आप समझाइंदा। साची खेल खेले परवरदिगार, बेपरवाह वड्डी वड्याईआ। पीर पैग़ंबर हुक्म सुणाए एका वार, वारता आपणी दए जणाईआ। साचा सजदा करो सच दरबार, सच हदीस इक सुणाईआ। पूरब लेखा चुक्के विच संसार, वड संसारी

आप चुकाईआ। कागज़ कलम गए हार, नेत्र रोवे जगत शाहीआ। दरोही खुदाए मेरे यार, मिहबान बीदो तेरी इक सरनाईआ। रहमत कर अन्तिम वार, दर तेरे इक्को अर्ज सुणाईआ। कोना कोना होया ख़बरदार, बेख़बर तेरी ख़बर ना कोए सुणाईआ। सदी चौधवीं गई हार, हर के हरि की ओट तकाईआ। थक्की मांदी फिरे दर दर भिखार, नेत्र आंधी नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान आपणा हुक्म आप समझाईआ। साचा हुक्म कलमा कलाम, कायनात आप जणाइंदा। कलयुग प्रगट होए इक अमाम, सिर अमामां फेरा पाइंदा। पीर पैगम्बर बरदे करे गुलाम, बरखुरदार आपणी सेवा लाइंदा। चौदां तबकां बदल देवे निज़ाम, नज़रीआ इक्को वार उठाइंदा। सच संदेसा दए पैग़ाम, पात्र इक्को इक वखाइंदा। जिस दा दीन मज़्हब इस्लाम, सो असल वसल आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप मनाइंदा। साचा हुक्म नबी रसूल, रसवा इक्को इक मनाईआ। बीस बीसा करना पए कबूल, अज्ज किबल आपणा खेल समझाईआ। धुर दा हुक्म इक माअकूल, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद ना जाणा भूल, अभुल रिहा जणाईआ। सदी चौधवीं बदले आप असूल, असलीअत आपणी दए समझाईआ। उम्मत उम्मती अन्तिम वेला गया फ़ज़ूल, फ़ाज़ल फ़ज़ल ना कोए कमाईआ। मस्तक मिली ना किसे धूल, टिक्का हक़ ना कोए लगाईआ। आत्म सेजा टुट्टी चूल, बाढी बणत ना कोए बणाईआ। नज़र ना आए कन्त कन्तूहल, दरस मिले ना सच्चे माहीआ। सच पंघूड़ा कोई ना लए झूल, बैठे हूरां ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। लेखा जाणे चौदां तबक, तबअ सब दी खोज खुजाइंदा। साहिब सुल्तान सुणाए इक्को सबक, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। लाशरीक आया परत, लाताअरीफ़ फेरा पाइंदा। ना कोई सोग ना कोई हरख, हरस हवस ना कोए वधाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस दा इक्को अर्श, कुर्श आपणी कार कमाइंदा। सो साहिब मेहरवान करे तरस, रहमत नाल आप समझाइंदा। उठ के वेखो सदी चौधवीं लिख्त पढ़त, लेखा पिछला आप जणाइंदा। मुल्लां शेख़ कलयुग अन्तिम मेरा कलमा लैंदे धड़त, मुफ्त नाम ना कोए जणाइंदा। वढ्ढीखोर होए नधड़क, ख़तरा ख़ौफ़ ना कोए जणाइंदा। जीवां जंतां रहे झटक, छुरी हक़ हथ्थ ना कोए उठाइंदा। बीस बीसा परवरदिगार सांझा यार नूर इलाही सब नूं पाए वखत, वेला वक्त हथ्थ किसे ना आइंदा। जिस दा फ़रमान इक्को सख्त, दो जहान ना कोए मिटाइंदा। ज़िमीं असमानां उलटाए तख्त, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाइंदा। जिस दा हुक्म ना जाए अटक, अद्धविचकार ना कोए रखाइंदा। सो शाहसवारा बांकी चल्ले चाल मटक, मेहरवान आपणा कदम टिकाइंदा। शब्द अगम्मी चढ़ाए कटक, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। दुष्टां मारना ना समझे आपणी हत्तक, हत्या

विच कदे ना आइंदा। जिस दा खेल होणा अन्तिम जगत, पीर पैगम्बर ध्यान लगाइंदा। परवरदिगार आउणा इक्को फ़कत, फ़िकरा आपणा नाम सुणाइंदा। लख चुरासी विचों गुरमुख विरले कढ्ढे भगत, मुरीद मुर्शद जोड़ जुड़ाइंदा। तिस दी नज़र ना आए हरकत, अन्दर वड़ वड़ पड़दा लाहइंदा। आदि जुगादि नित नवित्त जिस साहिब दी साची बरकत, सो बरीख़ाना आप खुलाइंदा। उस दे नाल क्या कोई करे शिरकत, जिस लाशरीक आपणी गोद बहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदी सदीवी वेख वखाइंदा। सदी सदीवी खोल्हे अक्ख, आख़र आपणा नैण उठाईआ। ईसा कह के गया दस्स, दहि दिशा आप जणाईआ। मेरा बाप मेरे पिच्छे आवे हस्स हस्स, नूरी नूर नूर रुशनाईआ। सब दा खेड़ा करे भट्ठ, मार्ग आपणा दए समझाईआ। मुहम्मद चरण गया ढठ, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। वड अमाम नबेड़ा करे हक़, हकीकत साची खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सच पड़दा आप उठाईआ। साचा पड़दा देवे चुक्क, उहला रहिण कोए ना पाईआ। निरगुण आपणी धारों पए उठ, मात पित पूत कोए ना जाईआ। एथे ओथे दो जहान आप सुहाए सुहञ्जणी रुत्त, गुर अवतार पीर पैगम्बर भगत भगवान सन्त सुजान गुरमुख गुरसिख फुलवाड़ी आप महकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो सच दवारिओं गए रुट्ठ, कर किरपा मेल मिलाईआ। अन्तर आत्म जाम प्याए घुट्ट, अमृत रस इक चखाईआ। जागत सोवत हालत लए पुच्छ, हाल मुरीदां आप जणाईआ। फड़ फड़ बांहों गोदी लए चुक, चुक चुक आपणी खुशी वखाईआ। कलयुग अन्तिम वेला रिहा ढुक, बण पांधी वेख वखाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी कूड़ी क्रिया लग्गी भुक्ख, हरि का नाम मंगण कोए ना आईआ। चौथे युग बूटा रिहा सुक्क, हरया सिंच ना कोए कराईआ। भाग लग्गे ना जननी कुक्ख, भगत रूप ना कोए दरसाईआ। मात गर्भ उलटा रुख, दस दस मास अग्न तपाईआ। कलयुग अन्तिम बैठा होए चुप्प, हिरदे हरि ना कोए ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल खिलाउणा, ख़ालक ख़लक मख़लूक एका वार जणाईआ। रूप अनूप आप वटाउणा, सति सरूप फेरा पाईआ। शाहो भूप नाम धराउणा, राजन राज राजान शाह सुल्तान भूपत भूप इक्को नज़री आईआ। गोपी काहन श्री भगवान वखाए निशान, दो जहान आप झुलाईआ। गुर अवतार होण हैरान, पीर पैगम्बर सीस झुकाईआ। कलमा नबी रसूल सुणाण, शास्त्र सिमरत वेद करन ध्यान, अञ्जील कुरान दोए जोड़ वास्ता पाण, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। खाणी बाणी करे ब्यान, कलयुग अन्तिम चार वरन होए शैतान, घर घर शरअ करे लड़ाईआ। साचा मन्दिर ना कोए मकान, नज़र ना आवे निगहबान, नेत्र नैण अक्ख प्रतख निज नेत्र ना कोए खुल्हाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द ढोले सारे गाण,

अनहद नादी राग ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग तेरी अन्तिम वर, इष्ट देव गुरदेव स्वामी, आप उपाए सदा निहकामी, घट निवासी अन्तरजामी, जोत प्रकाशी ब्रह्म ज्ञानी, भेव ना जाणे कोए विद्वानी, विद्या विच सार किसे ना आईआ। चौदां विद्या मारे धाह, कलयुग अन्त रही कुरलाईआ। निरगुण मिले ना सच मलाह, बेड़ा सच ना कोए वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी लिख लिख देंदी रही सलाह, सिफ्त नाल मिलाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मैनूं बणा के गए गवाह, शहादत अन्त लैण कोए ना आईआ। मैं चारों कुण्ट उच्ची कूक दित्ता सुणा, खुल्ह्ड़े केस दयां दुहाईआ। रहबर इक बेपरवाह, दूजा नज़र कोए ना आईआ। खाणी बाणी मंगे सदा पनाह, बैठी चरण ध्यान लगाईआ। मैं उस दे ढोले रही गा, जिस मेरी बणत बणाईआ। कलयुग वेखो पारब्रह्म सच्चा शहिनशाह, सीस जगदीश ताज सुहाईआ। जिस दा लेखा जाणे कोई ना, बेअन्त बेअन्त बेअन्त कह के पल्लू सारे गए छुडाईआ। उह बख़्शे सर्ब गुनाह, मेहर नज़र इक उठाईआ। फड़ बांहों पार दए करा, लख चुरासी धार ना कोए रुढ़ाईआ। जगत विद्या रही सुणा, बांह हुलारे नाल हिलाईआ। चार वरन वेखो आ, प्रभ वक्खरी कार कमाईआ। सब दा नख़रा दए गंवा, नालश कोए रहिण ना पाईआ। जन भगतां सधरां पूरीआं रिहा करा, सिधी धार इक वखाईआ। चार वरनां पध्धरा धाम दए बणा, ज़ात पात नज़र कोए ना आईआ। धर्म राज दा ख़तरा दए मुका, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। बहत्तर नाड़ी करे रुशना, बहत्तरां आपणा अंक बणाईआ। सत्तरां मेला सहिज सुभा, सतर विच रखे थाउँ थाईंआ। चुहत्तरां साता चौका वंड वंडा, सति सतिवादी खेल वखाईआ। पंचम मेला सहिज सुभा, चार करे इक कुड़माईआ। रंग रंगीला पलँघ वछा, सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। दलीलां नाल ना मिले खुदा, जगत वकीलां नाल ना कोए मिलाईआ। अन्त वसीला इक्को लओ बणा, गोबिन्द सूरा वड वड्याईआ। जिस वस्त्र नीला नीली धारों ल्या बदला, नीले वाला सच्चा माहीआ। छैल छबीला नौजवान दर्शन लओ पा, पा दर्शन हरस मिटाईआ। सच कबीला लओ बणा, काबल इक्को नूर खुदाईआ। ढीलापन दयो गंवा, ग़फ्लत कूड़ी दयो चुकाईआ। क्यों जल बिन मीना रहे तड़फा, सुरती शब्द लओ मिलाईआ। घर उजड़या लओ वसा, खेड़ा इक्को सोभा पाईआ। दूजा झेड़ा लओ चुका, तीजा नैण इक खुल्हाईआ। चौथे मेल सहिज सुभा, पंचम वेखे चाईं चाईंआ। छेवें छप्पर छन्न दए वडया, सतवें सति सतिवादी फेरा पाईआ। अठ्ठवें अठ्ठां तत्तां लहिणा देणा लओ मुका, नांवें नौ दर अग्न ना कोए तपाईआ। दस्म दुआरी मिल के आपणा प्रीतम लओ मना, क्यों बैठे मुख भवाईआ। कलयुग चार कुण्ट जे किते नहीं मिलदा थाँ, साची आओ चल सरनाईआ। सतिगुर पूरा पकड़े बांह, फड़ बांहों गले लगाईआ। करे लाड जिउँ पुत्रां

माँ, पिता पूत सहिज सुखदाईआ। फड़ के हँस बणाए काँ, कागों हँस आप उडाईआ। माणक मोती चोग दए चुगा, तृष्ना भुक्ख रहे ना राईआ। दरस अमोघ दए करा, घर घर विच मेला सहिज सुभाईआ। जन्म जन्म दा रोग दए गंवा, दुखड़ा कोए नज़र ना आईआ। साचा मुखड़ा लए सुहा, जिस मुखड़े हरि का नाम ध्याईआ। साचे पुत्तर लए प्रना, जिन्हां पुत्रां मिल्या सच्चा माहीआ। पूरब चेता दए करा, पिछला लेख भुल्ल ना जाईआ। गोबिन्द विछड़न मिलण दा कोई ना करे वसाह, वेला गया हथ्थ ना आईआ। आपणा आप करो फ़िदा, फ़ितरत आपणी जगत मिटाईआ। जेहड़ा तुहाढे नालों होया जुदा, अंगीकार सो अख्वाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत काया चोली लओ रंगा, रंग मजीठी इक चढ़ाईआ। माणस जन्म लेखे लओ पा, दोज़ख़ बहिश्तां दोहां कोलों खैहड़ा दए छुडाईआ। नरक स्वर्ग कोई ना सके भुआ, स्वर्ग गुरमुखां चरणां हेठ रखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव गुरमुख तेरे मिलण दा रखण चा, अद्ध विच बैठे ध्यान लगाईआ। सच स्नेहड़ा कबीर जुलाहा गया सुणा, बिन हरि साचे मिले ना कोई सरनाईआ। भगतो सन्तो मेरे पिच्छे आउणा वाहो दाह, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आपणी दया आप कमाईआ। दया कमाए दयावान, दयानिध अख्वाइंदा। गुरमुख गुरसिख बाल अञ्याण, भुल्ले भटके आप जगाइंदा। चरण कँवल बख्शे इक ध्यान, ध्यान ध्यान नाल मिलाइंदा। अन्तर अन्तर दे ज्ञान, कूड़ी बसन्तर आप बुझाइंदा। मन्त्र इक्को श्री भगवान, सोहँ ढोला राग सुणाइंदा। एथे ओथे चुक्के काण, आवण जाण ना कोए रखाइंदा। देवणहार स्वामी माण, सदा आपणा मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, नर हरि साचा आपणी नज़र उठाइंदा। आपणी नज़र उठाए बेनज़ीर, नैण अक्ख खुल्हाईआ। बदलणहारा सदा तकदीर, तदबीर आपणी दए समझाईआ। सूरत सच वखाए तस्वीर, जलवा नूर ज़हूर रुशनाईआ। चोटी चाढ़े फड़ अख़ीर, आख़र आपणा मेल मिलाईआ। कट शरअ ज़ंजीर, शहिनशाह इक्को घर दए वड्याईआ। लेखा चुक्के शाह हकीर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सच खुल्हाए इक घर, दर दरवाज़ा आप लगाईआ। दर दरवाज़ा आप लगाउणा, साचा बंक इक सुहाइंदा। ग़रीब निमाणा विच बहाउणा, सोभावन्त आप सुहाइंदा। चार वरनां रंग चढ़ाउणा, रंग रंगीला आप हो जाइंदा। साचा ढोला आप सुणाउणा, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। पवण स्वासी हुक्म वरताउणा, साह साह आप समझाइंदा। पुरख अबिनाशी खेल कराउणा, भेव कोए ना पाइंदा। राम हो के नज़री आउणा, काहन कृष्न रूप वटाइंदा। ईसा मूसा चोला आप बदलाउणा, अल्फ़ी मुहम्मद आप पहनाइंदा। हरफ़ बहरफ़ी आप पढ़ाउणा, सिह-हरफ़ी भेव ना कोए जणाइंदा। चौतरफ़ी चार कुण्ट चौथा

पग पड़दा लौहणा, मुख नक़ाब ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सच अदाब इक सिखाउणा, नवाब इक्को नज़री आइंदा। इक नवाब इक्को आका, अक्ल कल वड्डी वड्याईआ। इक्को हिसाब इक्को बाका, बाकी नवीस इक हो जाईआ। इक्को दर इक्को ताका, इक्को कुण्डा रिहा खुल्हाईआ। इक्को अस्व इक्को राका, शाहसवार इक्को बेपरवाहीआ। इक्को सज्जण इक्को साका, सगला संग इक निभाईआ। इक्को अनाथ इक्को होए नाथ अनाथा, इक्को आपणा भेव चुकाईआ। इक्को गाए मन्त्र गाथा, इक्को करे सच पढ़ाईआ। इक्को मल्ले आपणा घाटा, इक्को पत्तण बैठा बेपरवाहीआ। इक्को बणाए सच जमाता, चार वरन इक समझाईआ। इक्को खोल्हे आपणा खाता, ख़ालक ख़लक दए वरताईआ। इक्को समझाए आपणी भाषा, भाषण देवे थाउँ थाईंआ। इक्को जणाए आपणी रासा, बारां रासी पन्ध मुकाईआ। इक खुल्हाए आपणा सच खुलासा, खुल्ही रहमत आप वरताईआ। इक्को घर घर वेखे तमाशा, तमअ तुखम करे लड़ाईआ। इक्को वेखे खेल सार पासा, पुट्ठी नरद आप उलटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, अन्तष्करन सब दा वेखे सृष्ट सबाई रही भरम भुलेखे, नेत्र लोचण नैण साहिब कोई ना पेखे, रसना कह कह वेला वक्त रहे लँघाईआ।

✪ पहली भाद्रों २०२० बिक्रमी हरि भगत दुआर जेठूवाल ✪

सो पुरख निरँजण सच सुल्तान, तख़्त निवासी खेल कराइंदा। हरि पुरख निरँजण नौजवान, नर हरि नरायण हुक्म वरताइंदा। एकँकार वड बलवान, बलधारी भेव चुकाइंदा। आदि निरँजण हो प्रधान, जोती जाता नूर वखाइंदा। अबिनाशी करता हो मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाइंदा। श्री भगवान सच निशान, निरगुण निरवैर आप झुलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ करे ध्यान, निराकार वेख वखाइंदा। सचखण्ड दुआरा सच मकान, आदि पुरख आप सुहाइंदा। भूपत भूप राज राजान, नीकन नीक खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। आपणा भेव खोल्हे आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सचखण्ड निवासी खोल्हे ताक, पर्दा इक्को इक चुकाईआ। निरगुण नूर कर प्रकाश, जोती जोत जोत जोत रुशनाईआ। इक इकल्ला देवे साथ, दूजा संग ना कोए निभाईआ। करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी धार बंधाईआ। थिर घर खोल्हे सचखण्ड अन्दर हट्ट, घर घर विच लए प्रगटाईआ। नाउँ निरँकार बोल अलख, नाअरा इक्को इक सुणाईआ। दीन दयाल हो प्रतख, अनभव नूर करे रुशनाईआ। सति सतिवादी गाए आपणा जस, सिफ्ती

सिफ्त सिफ्त सलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, घर साचे सोभा पाईआ। घर साचे हरि सोभावन्त, सो साहिब खेल कराइंदा। निरगुण जोत श्री भगवन्त, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। करे खेल आप बेअन्त, कथनी कथ ना कोए समझाइंदा। नाता जोड़ नार कन्त, सेज सुहञ्जणी आप हंढाइंदा। निरवैर बणाए अगम्मी बणत, अलख अगोचर आपणी धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी खेल आप वखाइंदा। आपणी खेल करे करतार, सचखण्ड वज्जे सच वधाईआ। निर्मल दीआ कर उज्यार, तेल बाती ना कोए टिकाईआ। साचा माही बेऐब परवरदिगार, नूर नुराना नूर इलाहीआ। मुकामे हक़ ठांडे दरबार, सच सिँघसण आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच तौफ़ीक इक प्रगटाईआ। सच प्रगटाए इक तौफ़ीक, तोहफ़ा आपणा आप जणाइंदा। दूसर ना कोई दिसे रफ़ीक, संगी रूप ना कोए वखाइंदा। बैठा रहे आप अतीत, भेव अभेद कोए ना पाइंदा। साचा कलमा साचा नग़मा गाए अगम्मी गीत, गावणहारा आप अलाइंदा। करे खेल इक अनडीठ, नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप चुकाइंदा। आपणा भेव चुकाए भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। सचखण्ड दुआरे हो प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाईआ। बख्शणहारा इक ध्यान, ध्यान ध्यान विच समाईआ। देवणहारा इक ज्ञान, ज्ञान इक्को इक समझाईआ। वखावणहारा इक मकान, मुकामे हक़ करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। देवे वड्याई वड्डा वड, वड दाता दया कमाइंदा। आपणी धारों आपा कढ, आपणे घर वसाइंदा। आपणा प्रेम प्रीत करे लड, साची रीती आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण दाता पुरख बिधाता साची वस्त आप उपाइंदा। साची वस्त उपाए एक, एकँकार वड्डी वड्याईआ। सच दुआरे बख्शे टेक, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। बिन कलम शाही कागद लिखे लेख, अक्खर रूप ना कोए जणाईआ। सति स्वामी आपणा जाणे भेत, भेव समझ सके ना कोए राईआ। धार धार नाल करे हेत, प्यार प्यार नाल प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। धुर दा लेखा रखे हथ्थ, शाहो भूप खेल कराइंदा। प्रगट हो पुरख समरथ, निरगुण आपणी धार चलाइंदा। ना कोई नेत्र ना कोई अक्ख, नैण नज़र कोए ना आइंदा। ना कोई पैर ना कोई हथ्थ, सरवण रूप ना कोए वटाइंदा। ना कोई जिह्वा ना कोई बत्ती दन्द वखाए हट्ट, वणज वणजारा ना कोए कराइंदा। ना कोई ततव ना कोई तत्त, पंज तत मेल ना कोए मिलाइंदा। ना कोई बूँद ना कोई रत, रक्त रंग ना कोए वखाइंदा। ना कोई तीर्थ ना कोई घाट, सरोवर साचा सर ना कोए वहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, सचखण्ड दुआरे हरि सोभा पाइंदा। सचखण्ड दुआरा सुहाए आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। ना कोई पूजा ना कोई पाठ, सिमरन रूप ना कोए वखाईआ। ना कोई तीर्थ ना कोई ताट, किनारा वंड ना कोए वंडाईआ। ना कोई सखीआं मिल के मंगल गाए गाथ, गोपी काहन रूप ना कोए वटाईआ। ना कोई सज्जण ना कोई साक, बंधप नज़र कोए ना आईआ। ना कोई लोक ना कोई हाट, ना कोई तबक वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि आपणी धार आप प्रगटाईआ। आपणी धार आपे रख, निरगुण आपणी कार कमाइंदा। बेपरवाह हो प्रतख, बेपरवाही खेल खिलाइंदा। साचा मार्ग आपे दस्स, बण पांधी पन्ध मुकाइंदा। साचे मन्दिर आपे वस, गृह आपणे सोभा पाइंदा। साचा प्रेम देवे रस, रस रसीआ आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। आपणा हुक्म वरते वड राजा, हरि दाता बेपरवाहीआ। सचखण्ड दुआर रच के काजा, रचना आपणी दए जणाईआ। छप्पर छन्न चार दीवार ना कोए दरवाज़ा, ताकी नज़र कोए ना आईआ। जोती धार ग़रीब निवाज़ा, नर हरि इक्को आसण लाईआ। ना कोई राग नाद वज्जे वाजा, धुन करे ना कोए शनवाईआ। ना कोई बोल जैकार मारे वाजा, उच्ची कूक ना कोए सुणाईआ। करे खेल पुरख समराथा, समरथ आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घर दए वड्याईआ। साचा घर सचखण्ड, सो पुरख निरँजण आप बणाईआ। जिस दी एको जाणे वंड, दूजा समझ सके ना राईआ। जिस गृह वसे सूरा सरबँग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दुआरे इक अनन्द, अनन्द अनन्द विचों प्रगटाईआ। जिस दर दरवेश इक्को रिहा मंग, भिक्खक स्वाली रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव दए खुलाईआ। आदि पुरख श्री भगवान, भगवन आपणा खेल कराइंदा। धर्म दुआरे इक निशान, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। पुरख अकाला हुक्मरान, आपणी इच्छया हुक्म प्रगटाइंदा। दर दरवेश बण दरबान, दर आपणे अलख जगाइंदा। आप आपणा कर परवान, मिहबान आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म देवे एकँकार, अक्ल कला वड्याईआ। सचखण्ड बैठ सच्चे दरबार, दरगाह साची सोभा पाईआ। निरगुण नूर नूर उज्यार, आपणी खेल आप कराईआ। सो पुरख निरँजण बण सरकार, सच सरकार लए बणाईआ। हरि पुरख निरँजण मददगार, संगी इक्को नज़री आईआ। एकँकार बण के यार, यारी आपणे नाल लगाईआ। अबिनाशी करता खोल्ह किवाड़, दर साची सेव कमाईआ। श्री भगवान नैण उग्घाड़, बिन अक्खां अक्ख मिलाईआ। पंचम मेल इक दुआर, जोत निरँजण आदि निरँजण आपणी धार जणाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मरान इक हो जाईआ। हुक्मरान इक्को दाता, आदि पुरख आप अख्वाइंदा। आपणी रखे उत्तम ज़ाता, अजाति रूप ना कोए वटाइंदा। आपणे नाल बन्ने नाता, बिधाता आपणा मेल मिलाइंदा। सच दुआर इक्को हाता, हदूद रूप ना कोए वखाइंदा। ज़ाहर बातन करे बातां, रसना जिह्वा सिफ्ती सिफ्त ना कोए सालाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे साचे तख्त सोभा पाइंदा। साचे तख्त हरिजू चढ़या, आदि पुरख वड्डी वड्याईआ। आपणा खेल आपे करया, करनहार बेपरवाहीआ। आपणा नाउँ ढोला गीत आपे पढ़या, करे सच पढ़ाईआ। आपणे भय भउ आपे डरया, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सच महल्ले आपे खड़या, उच्चे टिल्ले सोभा पाईआ। आपणा वर आपे वरया, आपे कन्त कन्तूहल साची सेज हंढाईआ। आपणा भण्डार आपे भरया, वड वडी दया कमाईआ। आपणा घाड़न आपे घड़या, ना को पिता ना को माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणी रचना लए रचाईआ। आदि रचना रच निरँकार, आपणा आप उपाया। साची इच्छया खोल्ह किवाड़, सचखण्ड लए प्रगटाया। करे खेल अगम्म अपार अगम्मड़ी धार चलाया। हड्ड मास नाड़ चमड़ा ना कोए आधार, रंग रूप नज़र ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख आपणा पड़दा दए खुल्हाया। आदि पुरख प्रभ पड़दा लाह, सचखण्ड दुआर खुशी मनाईआ। निरगुण बणया निरगुण मलाह, निरगुण बेड़ा आप चलाईआ। निरगुण देवे निरगुण सलाह, निरगुण निरगुण मता पकाईआ। निरगुण मेला निरगुण सहिज सुभा, निरगुण निरगुण लए प्रनाईआ। निरगुण रंग निरगुण सूरा सरबँग दए चढ़ा, निरगुण निरगुण वेखे चाईं चाईंआ। निरगुण साचा खेड़ा दए वसा, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। निरगुण उच्च महल अटल डेरा देवे ला, महिफ़ल इक्को घर वखाईआ। निरगुण नूर कर रुशना, जोती जाता डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा भेव आप खुल्हाईआ। धुर दा भेत हरि जू खोल्हे, खोल्हणहार इक अख्वाइंदा। जोती धार शब्दी बोले, शब्द आपणी इच्छया विच प्रगटाइंदा। अन्तर बाहर भीतर वसणहारा कोले, दूर दुराडा पांधी पन्ध नज़र ना आइंदा। साचे मन्दिर उच्चे टिल्ले घर बहि के गाए ढोले, ढोला आपणा नाम समझाइंदा। आपणा पड़दा आपे फोले, आपणा खेल आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी करनी आप कमाइंदा। धुर दी करनी करे करनेयोग, दूजा नज़र कोए ना आईआ। आदि पुरख अनादी कर सच संजोग, मेला एका एक मिलाईआ। देवणहारा दरस अमोघ, मुख पड़दा नक़ाब दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार आप समझाईआ। आपणी धार दस्से भगवान, श्री भगवन दया कमाईआ। आदि आदि बण सुल्तान, शहिनशाह आपणा हुक्म

वरताईआ। दर दरवेश खेल महान, मेहरवान आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपे राजा आपे प्रजा आपे हुक्म दए समझाईआ। राजा प्रजा बण के एक, एकँकार दए जणाईआ। मेरी मेरा रखे टेक, मेरा तेरा नज़र कोए ना आईआ। निरगुण निरगुण करे हेत, हितकारी इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो पुरख निरँजण बण के भूप, भूपत इक्को सोभा पाईआ। सो पुरख निरँजण बणया राजा, शाह पातशाह सोभा पाइंदा। पारब्रह्म प्रभ रच आपणा काजा, करनी करता आप कमाइंदा। दोहां खेल खेल तमाशा, इक इकल्ला आप वखाइंदा। साचे मण्डल पावे रासा, गोपी काहन आपणा नूर नचाइंदा। अगम्म अथाह बेपरवाह जोती जाता पुरख बिधाता इक्को इक हो प्रकाशा, प्रकाशवान आप हो आइंदा। ना कोई तोला ना कोई मासा, ना कोई भार वंड वंडाइंदा। करे खेल शाहो शबाशा, शाह पातशाह आपणी कार कमाइंदा। आपे भिच्छया आपे इच्छया आपे पूरी करे आसा, आसावंद आप हो आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। आपणा हुक्म वरते राणा, राजन एक वड्डी वड्याईआ। निरगुण मन्ने निरगुण भाणा, निरगुण निरगुण सीस झुकाईआ। निरगुण गावे निरगुण गाणा, निरगुण निरगुण ध्यान लगाईआ। निरगुण वखाए निरगुण मकाना, धर्म दुआर इक प्रगटाईआ। निरगुण हुक्म निरगुण परवाना, निरगुण संदेसा दए जणाईआ। निरगुण पावे निरगुण आणा, निरगुण निउँ निउँ लागे पाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच साची कार कमाईआ। सच साचा हरि कार कमाए, करनहार खेल कराइंदा। आपणा हुक्म आप वरताए, धुर दी धार आप समझाइंदा। पारब्रह्म तेरी सेवा लाए, सो पुरख निरँजण शहिनशाह अख्वाइंदा। तेरा मार्ग इक उपजाए, शब्दी वंड वंडाइंदा। साची गंढु एका पाए, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाइंदा। धुर दा अनन्द इक वखाए, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार आप जणाइंदा। धुर दी धार पारब्रह्म तेरी सेवा, सो पुरख निरँजण आप लगाईआ। करे खेल अगम्म अभेवा, भेव अभेद दए जणाईआ। तेरी धारों उपजे तेरा मेवा, अमृत इक्को फल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्म इक्को इक जणाईआ। हुक्म एको एक वरतारा, वरतावणहार आप वरताइंदा। पारब्रह्म तेरी चले धारा, सो पुरख निरँजण हरि समझाइंदा। दोए जोड़ कर निमस्कारा, साचा मार्ग इक रखाइंदा। तेरा मेरा खेल न्यारा, आदि नज़र कोए ना आइंदा। ना कोई दूजा वेखणहारा, संगी रूप ना कोए रखाइंदा। ना कोई कातब बणे लिखारा, कलम शाही वंड ना कोए वंडाइंदा। ना कोई मित्र ना कोई यारा, ना कोई सत्थर सेज हंढाइंदा। ना कोई गुर ना अवतारा, पीर पैगम्बर नज़र कोए ना आइंदा। तेरा

मेरा इक विहारा, बिवहारी आप समझाइंदा। आदि पुरख प्रभ बण वणजारा, तेरा साचा हट्ट चलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ कढ्ढे हाढ़ा, निरगुण निरगुण अग्गे वास्ता पाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देदे साचा वर, पारब्रह्म मंग मंगाइंदा। पारब्रह्म प्रभ मंगे मंग, निरगुण अग्गे झोली डाहीआ। सो पुरख निरँजण तेरा संग, आदि जुगादि मेरी धार प्रगटाईआ। तेरा नाउँ साचा छन्द, शब्दी ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, कवण वेला लएं मिलाईआ। कवण वेला मेलें मेल, पारब्रह्म प्रभ आप जणाइंदा। सो पुरख निरँजण तेरा अचरज खेल, खेल खेल मैं बिगसाइंदा। दीवा जगे बिन बाती तेल, नूरो नूर डगमगाइंदा। सचखण्ड निवासी सज्जण सुहेल, तख्त निवासी हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, कवण वेला अंग लगाइंदा। सो पुरख निरँजण कहे सरबँग, सूरबीर दया कमाईआ। पारब्रह्म प्रभ लाए अंग, अंगीकार आप हो जाईआ। सच दुआरे चाढ़े रंग, रंग इक्को इक वखाईआ। तेरी धार उपजाए आप बख्शंद, बख्शश तेरी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो पुरख निरँजण देवणहार वड्याईआ। पारब्रह्म दोए जोड़ करे असीस, सो सतिगुर तेरी सरनाईआ। सचखण्ड दुआर वसें जगदीश, जगदीशर तेरी शहिनशाहीआ। तेरे ताज सोहे सीस, पंचम पंचम सोभा पाईआ। तेरी करे ना कोए रीस, तेरा सानी नज़र कोए ना आईआ। तेरी आदि जुगादि चले रीत, रीतीवान तेरी बेपरवाहीआ। तेरा खेल सदा अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाईआ। तेरा कलमा इक हदीस, मेरा नाम सच पढ़ाईआ। हउँ दर ते मंगां भीख, बण स्वाली झोली डाहीआ। अन्तिम दस्स दे सच तारीख़, जिस दी तवारीख़ सके ना कोए लिखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दी बज्झे इक्को प्रीत, नाता आदि जुगादि जुड़ाईआ। तेरा मुख मेरी पीठ, पीठ तेरा मुख बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे सच्चा वर, पारब्रह्म प्या सरनाईआ। पारब्रह्म प्रभ सरन ढट्ठ, इक अरदास सुणाइंदा। सो पुरख निरँजण खोल्ह हट्ट, दर दरवाज़ा तेरा नज़र कोए ना आइंदा। वस्त अगम्मी इक्को वार घत्त, दूजी वार मंगण कोए ना आइंदा। तेरा मेरा खेड़ा जाए वस, घर इक्को सोभा पाइंदा। तेरा नाउँ पुरख समरथ, हथ्थ तेरे नाल मिलाइंदा। तेरी महिमा अकथना अकथ, तेरा ढोला राग अलाइंदा । तेरा पैंडा मुकावां नट्ठ नट्ठ, बण पांधी सेव कमाइंदा। सच सुल्तान इक्को सच्ची दस्स, कवण वेला अन्त मिलाइंदा। सो पुरख निरँजण सचखण्ड निवासी सच्चा राजा प्या हस्स, हँसमुख आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म तेरा मार्ग इक जणाइंदा । पारब्रह्म तेरा मार्ग आप लगावांगा। सचखण्ड साचा खेल रचावांगा। वंड आपणे हथ्थ रखावांगा। सगला संग आप हो जावांगा। तेरा घर इक

प्रगटावांगा। नारी नरायण सेज हंढ्ढावांगा। दे के अगम्मी वर, सुत शब्द तेरी झोली पावांगा। शब्द सुत दुलारा फड़, तेरा राह समझावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव घाड़न घड़, साची सेवा इक लगावांगा। त्रैगुण माया ला लड़, रजो तमो सतो गंढु रखावांगा। पंज तत जड़त जड़, साचा मेला मेल मिलावांगा। लख चुरासी घाड़न घड़, पारब्रह्म ब्रह्म तेरी अंस उपजावांगा। लख चुरासी रूप धर सहँस, सहँसर आपणी कार कमावांगा। निरगुण सरगुण बणा के बंस, बंसाँवली इक चलावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म ब्रह्म तेरा मार्ग इक दरसावांगा। पारब्रह्म ब्रह्म मार्ग इक लगाएगा। प्रभ आपणी दया कमाएगा। निरगुण निरगुण वंड वंडाएगा। सरगुण साची वस्त दस्त फड़ाएगा। निरवैर हो के रहे मस्त, अलमस्त आपणी कार कमाएगा। डेरा लाए कीट हसत, ऊँच नीच ना कोए जणाएगा। निरगुण सरगुण अन्दर आवे परत, प्रतिनिध आप हो जाएगा। ना कोई सोग ना कोई हरख़, चिन्ता ग़म ना कोए जणाएगा। अमृत मेघ इक्को बरख, सीतल धार इक वहाएगा। जुग चौकड़ी करके तरस, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आप पढ़ाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार आप जणाएगा। धुर दी धार आप जणाउँदा ए। पारब्रह्म प्रभ भेव खुल्हाउँदा ए। ब्रह्म तेरी अंस बणाउँदा ए। लख चुरासी विच टिकाउँदा ए। घर घर विच आप सुहाउँदा ए। उपर पड़दा एका पाउँदा ए। बजर कपाटी जिंदा लाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो पुरख निरँजण आप समझौंदा ए। सो पुरख निरँजण आप समझाया ए। धुर दा भेव आप खुलाया ए। निरगुण सरगुण वेस वटाया ए। जोती जोत जोत रुशनाया ए। काया कोट बंक सुहाया ए। लोक परलोक वेख वखाया ए। सच श्लोक इक्को गाया ए। निरगुण निरगुण रखे ओट, ओढण इक्को नज़री आया ए। प्रेम प्रीती लग्गे चोट, नाम नगारा इक वजाया ए। जुग चौकड़ी सिफ्ती सिफ्त कराए रसना जिह्वा होंट, बत्ती दन्द मेल मिलाया ए। घर घर दर दर आपे पहुंच, आप आपणा पड़दा लाहया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, ब्रह्म पारब्रह्म आप जणाया ए। पारब्रह्म तेरा खेल अपारा, हरि करता आप कराईआ। आत्म ब्रह्म तेरा सहारा, ईश जीव तेरी वड्याईआ। तेरी नईया तेरा किनारा, तेरी मंज़ल तेरे हथ्थ फड़ाईआ। तेरा सईया मीत मुरारा, बेपरवाह इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, धुर दा पड़दा आप उठाईआ। प्रभ सच दस्स, कद आपणा रूप वटाओगे। निरगुण सरगुण पार करके हद्द, हदूद आपणी आप समझाओगे। प्रगट कर के आपणी यद, विश्व आपणी कार कमाओगे। जुग चौकड़ी कर के रद्द, रस्ता इक्को इक वखाओगे। लख चुरासी जीव वासना बध, बदला लेखा झोली पाओगे। भाग लग्गा के काया हड्ड, पंज तत जोत जगाओगे।

चार दीवारी जगत छड्डु, बिन छप्पर छन्न सोभा पाओगे। मैं दर्शन करां रज्ज, नेत्र नैणां नाल मिलाओगे। तेरा नज़री आए इक्को हज, काअबे कोलों मुख भवाओगे। जुग चौकड़ी खेड़ा दिसे भट्ठ, साचा मन्दिर इक वसाओगे। सति धर्म दा खोलू के हट्ट, सौदा इक्को नाम विकाओगे। निरगुण जोत कर प्रकाश, प्रकाशवान आप हो आओगे। घट घट अन्दर रख के वास, तख्त निवासी हुक्म वरताओगे। गुर अवतार पीर पैगम्बर सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो गौंदे रहे तेरी गाथ, तिन्हां लहिणा झोली पाओगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर सज्जण कवण बिध दरस दिखाओगे। हरि साचा कहे सच जणावांगा। पारब्रह्म ब्रह्म तेरा आदि जुगादि समझावांगा। गुर अवतार धार प्रगटावांगा। पीर पैगम्बर नूर रखावांगा। भगतां खोलू बंद किवाड़, मन्दिर इक्को इक सुहावांगा। धुरदरगाही बण के लाड़, दो जहानां सोभा पावांगा। कलयुग द्वापर त्रेता सतिजुग नव नौ चार कर के पार, पार किनारा इक समझावांगा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी बण लिखार, धुर दा लेखा आप प्रगटावांगा। कागद कलम शाही कर प्यार, शहिनशाह इक्को रूप जणावांगा। नित नवित्त निरगुण सरगुण सुणदा रहां पुकार, पुनह पुनह वेख वखावांगा। घर घर विच देंदा रहां दीदार, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ावांगा। मेरी कोई ना पाए सार, आपणा अन्त ना किसे समझावांगा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां बच्चयां वांग करां प्यार, फड़ के उँगली आप लगावांगा। काया मन्दिर अन्दर वज्जे रबाब, सच सतार तन्दी तन्द आप हिलावांगा। धुर दा ढोला सच जैकार, छन्दा बंदी राग अलावांगा। बंदीख़ाना बंदगी खोलू किवाड़, बंदगी इक्को इक समझावांगा। चरणां कँवलां हेठां जोड़, अमृत मेघ मुख चुआवांगा। बण के वेखां सांझा यार, सगला संग निभावांगा। लेखा जाणां जुग चौकड़ी चार, चौकड़ आपणी गंढु जणावांगा। चारे वेदां भर भण्डार, चारे मुख सिफ्त जणावांगा। चारे बाणी बोल जैकार, चारे खाणी आप पढ़ावांगा। चारे युग कर के ख़बरदार, सोइआं सुत्यां आप उठावांगा। चारों कुण्ट लै बहार, सुख सागर रूप वटावांगा। लख चुरासी हंढावां नार, कन्त इक्को इक अख्वावांगा। गुर अवतार सेवादार, पीर पैगम्बर दर दरबान बहावांगा। दूरों दूरों करन निमस्कार, सीस सजदा सब दा आप झुकावांगा। रहबर बण के वेखां निरगुण सरगुण धार, सतिगुर बण के आपणी कार कमावांगा। ब्रह्म तेरे नाल कर प्यार, पारब्रह्म तेरी अंस आप उपजावांगा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग सुता रहु पैर पसार, वेले अन्त आप उठावांगा। जुग जुग दे रुठड़े मेलां यार, फड़ बाहों रुस्सयां गले लगावांगा। धुर दे भुक्ख्यां दयां दीदार, स्वच्छ सरूपी रूप वटावांगा। माया विच लुकयां लवां उठाल, त्रैगुण नाता तोड़ तुड़ावांगा। लेखा जाण शाह कंगाल, चारे वरनां मेल मिलावांगा। पारब्रह्म तेरा बण के साहिब आप दलाल, ब्रह्म हट्टी

इक विकावांगा। तेरी लेखे लावां घाल, घाली घाल थाएँ पावांगा। तूं मेरा मैं तेरे नाल, तेरा मेरा इक्को बंक सुहावांगा। दीपक जोत अगम्मी बाल, साचा नूरी चन्द चमकावांगा। साचे तख्त बैठ करतार, करनी आपणी आप कमावांगा। धुर संदेसा देवां अन्तिम वार, बाणी बाण निराला तीर चलावांगा। इकट्ठे कर गुरू अवतार, तेई अवतारां नैण खुल्हावांगा। भगत अठारां कर प्यार, चरण कँवल इक समझावांगा। ईसा मूसा वेख मुहम्मद यार, यारी हकीकत नाल जणावांगा। नानक गोबिन्द वखाल सच दरबार, सचखण्ड साचा इक वडयावांगा। धुर दा बोल नाम जैकार, शब्दी ढोला इक्को गावांगा। साचा सोहला सिफ्ती वार, छत्ती रागां सेवा लावांगा। दस अट्ठ कर विचार, अट्ठ दस भेव चुकावांगा। चौदां लोकां ला के पाड़, पड़दा सब दा आप मुकावांगा। चौदां तबकां चरणां हेठ लताड़, भार इक्को वार पावांगा। बण के आवां साचा लाड़, साचा अस्व इक दौड़ावांगा। उच्ची बोल नाम जैकार, तेरा मेरा ढोला इक सुणावांगा। ना कोई पुरख ना कोई नार, नर नरायण रूप वखावांगा । जोती जोत जोत उज्यार, शब्दी शब्द डंक सुणावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव कर ख़बरदार, धुर दा हुक्म इक मनावांगा। सुरप्त इन्द करोड़ तेतीसा नेत्र रोवे धाहां मार, धुर दा हुक्म आप वरतावांगा। कलयुग अन्तिम खेल करां कमाल, कमला रमला हो के आपणा झट्ट लँघावांगा । जे कोई लभ्भण जाए विचों धर्मसाल, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आवांगा। जे कोई मन्दिरां करे भाल, अग्गों खाली हथ्थ मुड़ावांगा। जे कोई मस्जिदीं लभ्भे दलाल, झूठा वणज इक जणावांगा। जिन ईसा मूसा बणाए लाल, सो जलवा नूर आप प्रगटावांगा। आ के वेखां मुरीदां हाल, मुरीद मुर्शद आपणी कार कमावांगा। गुरमुख गुर गुर आप उठाल, गोद सुहञ्जणी आप सुहावांगा। लेखे ला के गुज़री लाल, गुज़रया हाल फेर परतावांगा। पारब्रह्म तेरी कर के आपे भाल, ब्रह्म विचों तेरा आपे भेव चुकावांगा। साढे तिन्न हथ्थ अन्दर वज्जे ताल, ताल तलवाड़ा इक रखावांगा। ऊँचां नीचां वेखां शाह कंगाल, बरन अठारां वरन चार मेल मिलावांगा। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले भगत भगवान गोदी लए स्वाल, सुत्यां फेर ना कदे जगावांगा। सचखण्ड दुआरे लै के जावां नाल, दूजे हथ्थ ना किसे फड़ावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पारब्रह्म तेरा अन्तिम रंग रंगावांगा। पारब्रह्म प्रभ तेरा रंग रंगाएगा। सो पुरख निरँजण वेस वटाएगा। हरि पुरख निरँजण आपे आएगा। एकँकारा कार कमाएगा। आदि निरँजण नूर रुशनाएगा। अबिनाशी करता दर्द दुःख भय भंजन आप हो जाएगा। श्री भगवान नेत्र अंजन इक्को पाएगा। पारब्रह्म प्रभ वस्त मंगण इक्को आएगा। चार कुण्ट वज्जे नाम मृदंगन, मृदंगा इक्को हथ्थ उठाएगा। जिस कसीरिउँ बणाया कंगण, रविदास चमारा चमड़ी गंढु पाणां, पारब्रह्म प्रभ नज़री आएगा। जिस कबीर जुलाहे तणया ताणा, तन्दी तन्द नाल जुड़ाएगा। जिस सैण

पिच्छे रीझाया राणा, सो रय्यत वेखण आएगा। जिस नामे छप्पर छन्न छुहाणा, सो भगत दुआरा वेखण आएगा। चार युग दा माण गंवाणा, अभिमान रूप ना कोए वटाएगा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां जुग जुग देंदा रिहा जो धुर फ़रमाना, अन्तिम आपणा हुक्म वरताएगा। सब ने मन्नणा सिर ते भाणा, सीस अग्गों ना कोए उठाएगा। लेखा लिख लिख गए वेद पुराणा, शास्त्र सिमरत सर्ब समझाएगा। कलयुग अन्तिम आए भगवाना, भगवन आपणा वेस वटाएगा। निहकलंक बण जरवाणा, जाबर जबर सर्ब खपाएगा। दो जहानां गाए तराना, तुरीआ राग मुख शरमाएगा। करे खेल वाली दो जहाना, चौदस चौदां चन्द ना नैण उठाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो पुरख निरँजण अन्तिम वेखण आवेगा। सो पुरख अन्तिम वेखण आएगा। निरगुण हो के जोत जगावेगा। सरगुण साची खेल समझावेगा। त्रैगुण नाता तोड़ तुड़ावेगा। पंज तत आपणी बूझ बुझावेगा। नाड़ बहत्तर ना कोई तपावेगा। अमृत मेघ इक बरसावेगा। मनमति दूर करावेगा। गुरमति इक प्रगटावेगा। नौ खण्ड मार्ग लावेगा। सत्त दीप राह चलावेगा। नीच ऊँच इक बणावेगा। सच तमीज़ इक समझावेगा। ग़रीब निमाणयां रीझ पूर करावेगा। आप बण के रहे नाचीज़, जन भगतां ऊँचो ऊँच रखावेगा। गुरमुखां नाल गोबिन्द गंढु गया पीच, कर किरपा आप खुल्हावेगा। कलयुग दोहां होवे बीच, विचोला इक्को रूप वटावेगा। शाह पातशाह राज राजान खाली करे खीस, माया राणी नाच नचावेगा। जो साहिब सतिगुर उते जाण पतीज, तिन्हां अग्गे पर्चा कोई ना पावांगा। लख चुरासी मंगे भीख, दर दर सृष्ट सबाई आप भवावांगा। जिन्हां साहिब ना वसया चीत, तिन्हां चातरी अन्त गंवावांगा। जिन्हां हरि ना गाया गीत, तिन्हां डूंघी धार वहावांगा। जो लभ्भदे फिरदे शिवदुआले मठ मन्दिर मसीत, तिन्हां साख्यात नज़री आवांगा। चार वरन सृष्ट सबाई आत्म परमात्म करो प्रीत, घर ब्रह्म पारब्रह्म मेल मिलावांगा। रल के सखीआं गाओ एका गीत, सोहँ ढोला आप जणावांगा। लख चुरासी लओ जीत, हार चरणां हेठ रखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म आप वरतावांगा। साचा हुक्म आप वरतावांगा। कलयुग अन्तिम डेरा ढाहवांगा। दीन मज़्ब दा राह खैहड़ा मेट मिटावांगा। धुर फ़रमान ग़ज़ब दा, इक्को इक सुणावांगा। वेखो हाल की हुन्दा बशर दा, विछड़यां कूड़े धंदे लावांगा। पुरख अकाल इक्को नितरदा, कलयुग कूड़ा बद्दल आप उडावांगा। करे खेल साचे पितर दा, गुर अवतार पीर पैगम्बर पूत गोद सुहावांगा। लख चुरासी घाड़न घड़ के बण तसवर जो तस्वीर चित्रदा, सो साहिब आपणा हुक्म वरतावांगा। कलयुग अन्तिम वेला लख चुरासी फ़िकर दा, फ़िकरे इके नाल समझावांगा। हुण वेला नहीं कहाणी ज़िकर दा, ध्यान इक्को चरण लगावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ब्रह्म पारब्रह्म आप दरसावांगा। पारब्रह्म

ब्रह्म तेरा प्रभू उपजाएगा। निहकर्मी कर्म कमाएगा। साची धरनी सोभा पाएगा। मरन डरन भय मिटाएगा। साची तरनी आप तराएगा। हरन फरन नेत्र आप खुल्हाएगा। वरनी बरनी मोह तुड़ाएगा। गुरमुखो साची पौड़ी चढ़नी, घर विच डण्डा आप लगाएगा। तुख्म तासीर हो के तुक इक्को पढ़नी, ढोला इक्को राग अल्हाएगा। सुखमन टेडी बंक नौ दुआर ईड़ा पिंगल अन्ध अन्धेर कूड़ी क्रिया कोई ना अग्गे अड़नी, जिस सिर आपणा हत्थ टिकाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, पारब्रह्म ब्रह्म तेरा आप समझाएगा। ब्रह्म ब्रह्म अन्त समझावेगा। फड़ मार्ग आपे लावेगा। कर्म कांड मेट मिटावेगा। साचा नाद धुन सुणावेगा। ब्रह्म ब्रह्माद खोज खुजावेगा। अनरसीआ सच स्वाद, इक वखावेगा। ढोला गा के बोध अगाध, निष्अक्खर आप पढ़ावेगा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कराए पिछली याद, भविक्ख्त वाक आप समझावेगा। वाहद लाशरीक निरगुण दाता आवे गॉड, गाईड सब नूं आप करावेगा। जन भगतां रखे लाज, सिर आपणा हत्थ टिकावेगा। जिस नूं कहिन्दे गुरू महाराज, सच्चे पातशाह शाह पातशाह सीस आपणे ताज टिकावेगा। उहदा कोई ना जाणे काज, करनी करता आप कमावेगा। सब नूं अन्तिम छड्डुणी पए निमाज़, हुजरा हज्ज इक्को वार वखावेगा। जिस नूं सजदा करे ईसा मूसा मुहम्मद मन्ने नवाब, सो शहिनशाह नज़री आवेगा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सारे करन आदाब, रूप इक्को इक समझावेगा। नबी रसूलां देवणहारा दात, दयावान फेरा पावेगा। पट्टी पढ़ाए इक जमात, अलिफ़ ये नुक़ता नून आप मिटावेगा। साची दस्से इक्को रीत, रहबर इक्को हुक्म मनावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, पारब्रह्म तेरा ब्रह्म आप उठावेगा। श्री भगवान ब्रह्म उठाएगा। निहकर्मी कर्म कमाएगा। फड़ चरणी सीस झुकाएगा। साची कथा कहाणी पढ़नी, आत्म परमात्म राग जणाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण आपणा वेस धराएगा। निरगुण धर के आए वेस, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। साहिब वसे अगम्मड़े देस, अगम्म हत्थ वड्याईआ। हुक्म वरताए बण नरेश, शहिनशाह अख्वाईआ। कलयुग अन्तिम वेखे खेल, खेलणहारा ख़लक खुदाईआ। सन्त सुहेले सज्जण गुरमुख मेल, गुरसिख गुर गुर बूझ बुझाईआ। जोत निरँजण चाढ़े तेल, आदि निरँजण खुशी वखाईआ। प्रभ ठाकर मिल्या सज्जण सुहेल, हरि सतिगुर सच्चा माहीआ। जिस लख चुरासी हुक्मे अन्दर धर्म राए दी घल्ले जेल, गुरमुख साचे सचखण्ड वसाईआ। वसणहारा धाम नवेल, दहि दिशा वेखे चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म लए मिलाईआ। पारब्रह्म मिलणा अन्त, अन्त आप जणाइंदा। खेल करना नार कन्त, कन्त कन्तूहल सेज हंढाइंदा। रंग चढ़े इक्को बसन्त, उतर कदे ना जाइंदा। तेरा मेरा भेव ना पाए कोई पंडत, चौदां विद्या नैण शरमाइंदा। चार युग दा

लेखा अन्तिम करे खण्डत, खण्डा खड़ग नाम उठाइंदा। भेव खुल्हाए जेरज अण्डज, उतभुज सेत्ज फोल फुलाइंदा। भगत दुआरे बणे मंगत, प्रेम प्रीती भिख्या मंग मंगाइंदा। गुरसिखो गढ़ तोड़ो हउमे हंगत, निवण-सो-अक्खर इक पढ़ाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म लाए अंगत, अंगीकार आप हो जाइंदा। सर्ब जीआं दा इक्को मंत, मन्त्र ढोला आपे गाइंदा। रल के बहि जाओ साची पंगत, ऊँच नीच ज़ात पात जूठ झूठ डेरा ढाइंदा। पुरख अकाल अग्गे करो मिन्नत, जो साहिब विछड़े मेल मिलाइंदा। कलयुग किसे दी चलण ना देवे कोई हिम्मत, कोटन कोटि अन्दर वड़ वड़, पाणी ठर ठर, अग्नी सड़ सड़, उच्चे टिले चढ़ चढ़, शास्त्र सिमरत पढ़ पढ़ ध्यान लगाइंदा। अबिनाशी करता वेखणहारा दर दर घर घर नर नर, लख चुरासी खोज खुजाइंदा। कलयुग अन्त श्री भगवन्त गुरमुख गुरसिख सज्जण फड़ फड़, डूंघी कन्दर आपे वड़ वड़, लेखा जाण सीस धड़ धड़, धड़ा आपणे नाल मिलाइंदा। जन भगतां पिच्छे आप मर मर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रूप वटाइंदा। नित नवित्त आदि जुगादि पल्लू फड़ फड़, साची गंढु आप पवाइंदा। कलयुग अन्त नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप लख चुरासी कोई ना जाए अग्गे अड़, जो अड़या सो पार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा आपे वर, वर आपणा झोली आपे पाइंदा। आपे दाता आप भिखारी, देवणहार आप अख्वाईआ। आपे भूप आप सिक्दारी, आपे भिख्या मंगे चाईं चाईंआ। आपे शाह पातशाह फड़े तेज़ कटारी, ख़ाली हथ्थ आप हो जाईआ। आपे खेले खेल पुरख नारी, नार कन्त सेज सोभा पाईआ। आपे करे सच संगारी, साची इच्छया आप प्रगटाईआ। आपे बणे कन्या कुँवारी, अंगीकार ना कोए रखाईआ। आपे बणे शाहसवारी, शहिनशाह साचे आसण सोभा पाईआ। आपे बण वड्डा दरबारी, धुर दरबारा इक लगाईआ। आपे सेवक सेवा करे न्यारी, निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। आपे योद्धा सूरबीर बण बलकारी, बलहीण आप हो जाईआ। आपे बण गुरू अवतारी, ज्ञान गुरदेव आप समझाईआ। आपे कागद कलम लिखणहारी, आपे लेखा दए मिटाईआ। आपे खेल खेले जुग चारी, जुग चौकड़ी आपे डेरा ढाहीआ। आपे प्रनावे गुरमुख सची लाड़ी, बण कहार डोली आपणे कंध उठाईआ। आपे घूँगट चुक्के पहली वारी, आपे नेत्र नैण नैण शरमाईआ। आपे सच झरोखे खोल्हे बारी, बंद किवाड़ा आप कराईआ । आपे निरगुण जोत जगे निरँकारी, अन्ध अन्धेर आप अख्वाईआ। आपे अमृत झिरे ठंडा पाणी, अग्नी अग्ग आप बरसाईआ। आपे शब्द बणे सच्चा हाणी, आपे बैठा मुख भवाईआ। आपे वेखे चारे खाणी, आपे पड़दा रिहा वखाईआ। आपे सुरत बणाए साची राणी, आपे धक्का देवे लाईआ। आपे सुणाए अकथ कहाणी, आपे भरम भुलेखा देवे पाईआ। आपे जाणे पद निरबाणी, आपे धूंआँधार समाईआ। आपे खेल करे महानी, आपे नज़र किसे ना आईआ। आपे बणे वड विद्वानी,

आपे शैतानी धार चलाईआ। आपे मारे तीर अणयाला कानी, आपे मुखी दए तुड़ाईआ। आपे माण दवाए जगत मात भानी, आपे शब्दी बूझ बुझाईआ। करे खेल श्री भगवानी, भगवन आपणा हुक्म वरताईआ। पारब्रह्म उठ कर ध्यानी, धीरजवान रिहा समझाईआ। उठ वेख सच निशानी, शहिनशाह आपणी दए बुझाईआ। जिस नूं कहिन्दे आदि शक्ति जोत नुरानी, सो जोत सेवा रही कमाईआ। जिस दा खेल शक्ति भवानी, सो भावना विच समाईआ। जिस दी चतुर्भुज निशानी, सो निशाना रिहा लगाईआ। आ दर ते सुण सच्ची कहाणी, हरि करता रिहा जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर होए हैरानी, हरि का भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, अन्तिम आपणा घर वसाईआ। अन्तिम घर वसाउणा तेरा, तेरी वज्जे वधाईआ। ब्रह्म कहे तूं मेरा, मैं तेरी तक्कां सरनाईआ। कलयुग अन्तिम कर नबेड़ा, हकीकत वेख थाउँ थाईंआ। कूड़यां साधां सन्तां डुब्बदा जांदा बेड़ा, जो प्रभ नूं धोखा दे जीवां जंतां रहे भरमाईआ। कलयुग अन्तिम उजड़न वाला खेड़ा, खिड़की कुण्डा नज़र कोए ना आईआ। रसना जिह्वा जगत ज्ञान करदे झेड़ा, अन्तर मेल ना कोए मिलाईआ। चारों कुण्ट होया अन्धेरा, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। मन हँकार कहे मेरा मेरा, मति मतिवाली दए दुहाईआ। बुद्धि कहे मेरा ढट्ठा डेरा, मेरा बल ना सके बणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल साहिब सतिगुर निरगुण रूप सच स्वामी ठाकर आवे बण के शेरा, सिँघ आपणी भबक लगाईआ। सारे इक्को वार धरत मात दा खुल्ह्रा कर जाण वेहड़ा, जम्बक नज़र कोए ना आईआ। अन्दर वड़ के पुरख अकाल कोलों डर के कहिण तूं मेरा मैं तेरा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल कहे मैं आया दो जहान हथ्थीं डोर फड़ के, बचया कोए रहिण ना पाईआ। मैं नित नित वेखां जो उठ के बाहरों नहौंदे तड़के, अन्तर अमृत सरोवर नहावण कोए ना जाईआ। मैं सदा वेखां जो घरों निकले लड़ के, मन झगड़ा सके ना कोए मुकाईआ। मैं वेखणहारा जो अठसठ तीर्थ भटके, काम वासना सके ना कोए मिटाईआ। मैं वेखां गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ वड़ के, कलयुग जीव धीआं भैणां रहे तकाईआ। मैं वेखां जो घर घर मंगदे फिरदे लड़ के, आपणा आप रहे मिटाईआ। गुरसिखो गुरमुखो सतिगुरू मिलदा जींवदयां मर के, मरना नानक गोबिन्द गया समझाईआ। आओ वेखो पल्लू फड़ के, गंढु आपणे नाल बंधाईआ। जेहड़ा तुहाढ्ढी नींह गया धर के, अन्तिम महल्ल दए वसाईआ। पुरख अकाल नाल आया रल के, जोती शब्द वज्जी वधाईआ। लभ्भणा फेर किसे ना भलके, भुल्लयां हथ्थ किसे ना आईआ। सति सिँघासण बैठा मल के, सम्बल आपणा डेरा लाईआ। उठो वेखो भज्ज भज्ज के, हरिमन्दिर रिहा सुहाईआ। मन बन्दर ना जाए छल के, वलीआ छलीआ आया बेपरवाहीआ। पहलों गुर अवतार पीर पैगम्बर घल्ल के, आपणा सुनेहड़ा दित्ता पुचाईआ।

अन्तिम जोती धार इक्को डलके, पंज तत ना कोए वड्याईआ। धरत मात दे भार करे हल्के, बेमुख कोए रहिण ना पाईआ। सृष्ट सबाई मारे उथल के, गेड़ा इके वार भवाईआ। गुरमुख प्रेम कुठाली आवण ढल के, कंचन सोना आपणे रंग रंगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दीवे वेखे बलदे, शमअ आपणी हथ्थीं जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, पारब्रह्म तेरा लहिणा झोली पाईआ। पारब्रह्म तेरा लहिणा ब्रह्म, श्री भगवान आप जणाइंदा। जिस दे नाल लगाए कर्म, कर्म सेवा रूप बणाइंदा। तैनूं लपेटया विच काया माटी चम, नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। बिन सतिगुर सब नूं प्या भरम, भाण्डा भरम ना कोए भंनाइंदा। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म सारे पढ़न, ब्रह्म रूप आपणा नज़र किसे ना आइंदा। दूर दुराडे चल के औण गल्लां करन, गल्लीं बातीं प्रभ का भेव कोए ना पाइंदा। मन हँकारी कर के आवण लड़न, हरिजू आदि जुगादी वड लड़ाका जो अड़या भन्न वखाइंदा। जो सन्त सुहेले गुरमुख चेले आवण सरन, तिन्हां आपणा मेल मिलाइंदा। निज नेत्र खोल्हे हरन फरन, मन फ़ुरना बंद कराइंदा। ज्ञान ध्यान अशनान पूजा पाठ सिमरन गुरमुख तेरा पाणी भरन, तेरा प्रभ तेरा खेड़ा आप वसाइंदा। तेरे कोलों विष्न ब्रह्मा शिव डरन, अग्गे अक्ख ना कोए उठाइंदा। जिन्हां पुरख अबिनाशी आया वरन, तिन्हां हथ्थ ना कोई लगाइंदा। पुरख अकाल दीन दयाल आदि पुरख अन्त कीता प्रण, पतिपरमेश्वर आपणा

१८८ रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जाता पुरख बिधाता इक इकांता अक्ल कला भरपूर १८८

१५ आप अख्वाइंदा। अक्ल कल भरपूर स्वामी, सर्ब जीआं दए वड्याईआ। घट निवासी अन्तरजामी, ब्रह्म प्रकाशी जोत लए १५

मिलाईआ। धुर दी बाणी शब्द कहाणी, साची राणी लए प्रगटाईआ। खेले खेल दो जहानी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर किरपा वेख वखाईआ। किरपा अन्दर वेखण आया, वड दाता गुण निधान। भगत भगवन्त लए जगाया, जागरत जोत करे प्रधान। अमृत आत्म दए पिलाया, कूड़ी क्रिया मेटे निशान। साची रमज दए समझाया, बिन रसना करे ज्ञान। साची अक्ख लए मिलाया, प्रतख नज़र आए भगवान। मार्ग दस्स राहे पाया, मंज़ल चढ़ाए आप मेहरवान। हस्स हस्स जोड़ जुड़ाया, नाता तोड़ सर्ब शैतान। साचा घोड़ इक मंगाया, धुरदरगाही दे फ़रमान। सोलां कलीआं आसण लाया, तंग कसे नौजवान। चरण रकाबे इक टिकाया, खेले खेल मर्द मर्दान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा धुर फ़रमान। धुर फ़रमाना सति संदेसा, इक्को वार सुणाईआ। पुरख अकाल नर नरेशा, बेपरवाह फेरा पाईआ। आदि जुगादि रहे हमेशा, ना मरे ना जाईआ। हुक्मे अन्दर विष्न ब्रह्मा शिव महेषा, गणपति गणेशा बैठे सीस झुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन आदेसा, सजदा इक्को घर वखाईआ। कलयुग अन्तिम पूरा करे सदी बीसवीं

सब दा लेखा, लेखा आपणे लेखे पाईआ। जिन्हां रहि जाए भरम भुलेखा, तिन्हां बीस इकीसा भरम मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आपणा देवणहारा आपे दान, अन्त कन्त भगवन्त वेखे आण, महिमा अणगणत आपणे विच छुपाईआ। महिमा अगणत बैठी छुप, ज़ाहर नज़र किसे ना आईआ। नव नौं चार रही चुप्प, आपणा भेव ना कोए जणाईआ। कलयुग अन्तिम बैठी उठ, घर साचे लए अंगड़ाईआ। जन भगतां वल कीता रुख़, भज्जे वाहो दाहीआ। मैं वेखां जा के गोबिन्द तेरे पुत्त, जिन्हां पिच्छे आपणे पुत्तर नींहां हेठ दबाईआ। मैं गोदी लवां जा के चुक्क, आपणी सेव कमाईआ। मैंनूं सोहणा लग्गे मुख, जो तैनूं रहे ध्याईआ। गोबिन्द सूरा आपे तुठ, दे मति रिहा समझाईआ। वेख मेरा अबिनाशी अचुत, मेरे नाल सोभा पाईआ। जिस ने पहलों मैनूं बणाया पुत्त, फिर मैं पुत्रां पुत्रां उत्तों वार कराईआ। हुण नहीं बहिणा मात लुक, आपणा पड़दा दयां उठाईआ। बिन मेरी किरपा कोई ना होवे मेरे उेते खुश, कलयुग जीव करन लड़ाईआ। मैं सब दे नेड़े अन्दर बैठा ढुक, घर आपणे मैनूं मिलण कोई ना आईआ। दर दर जा के डेरयां विच इक दूजे नूं रहे पुछ, किस घर मिले सच्चा माहीआ। सदी वीहवीं किसे कोल नहीं है कुछ, प्रभ खाली भाण्डे दित्ते कराईआ। डरदे साहिब कोलों बैठे लुक, अग्गे आ के मुख ना कोए वखाईआ। जगत वड्याई लग्गी भुक्ख, मस्तक चरणां उते रहे छुहाईआ। किसे नूं देंदे दुद्ध पुत्त, किसे नूं अक्खां मीट ध्यान जणाईआ। किसे नूं कहिण सुरती गई रुट्ठ, भज्जे वाहो दाहीआ। किसे नूं कहिण अन्दर वड़ के बहि जाओ चुप्प, रसना जिह्वा ना कोई गाईआ। जे पुरख अबिनाशी आप लए पुच्छ, फिर बैठण मुख भवाईआ। कलयुग कहे प्रभ वेख मेरी लुट्ट, मैं दिन दिहाढ़े रिहा मचाईआ। बाहरों तैनूं सयदे करन झुक, अन्दर काम क्रोध लोभ मोह हँकार होया हल्काईआ। रात अन्धेरी घर बेगाने करन रुख़, वेसवा रूप जगत वटाईआ। ठाकर स्वामी अन्तर उठ, क्यों बैठा मुख भवाईआ। धर्म नाता सब दा गया तुट्ट, धरत धवल दए दुहाईआ। ख़ाली दिसण सब दे ठूठ, हरि का नाम नज़र कोए ना आईआ। करी कुड़माई जूठ झूठ, हउमे हंगता वज्जी वधाईआ। लख चुरासी वेख करतूत, तेरे तेरी कीती गए भुलाईआ। कलयुग अन्तिम सारा लँघ गया अन्तिम पिच्छे रहि गई निक्की पूछ, सो गोबिन्द आपणी हत्थीं दए कटाईआ। किसे दी खड़ी रहे ना मुच्छ, मुश्कल विच पए लोकाईआ। जो तैनूं समझदे तुछ, तुरत आपणा हुक्म वरताईआ। सतिजुग बदले तेरी रुत्त, रुत्त रुतड़ी आप महकाईआ। धरत मात कहे मेरे घर छन्नयां पुत्त, सख़ीओ दयो वधाई चाईं चाईंआ। मैं पन्द्रां कत्तक आवां गोदी चुक्क, पुरख अकाल नूं मथ्था दयां टिकाईआ। फड़ के दोंह हथ्थां नाल गोदी देवां सुट, आपणा भार सिर तों लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरि का खेल कोई समझ

१८६
१५

सके ना राईआ। हरि का खेल सर्ब उडीकण, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। पाबंदी अन्दर सर्ब चीकण, उच्ची कूक रहे सुणाईआ। जिउँ गोबिन्द नज़र आया भीखण, तिउँ गुरमुखां रिहा जगाईआ। कलयुग कहर अन्धेरी तीखण, आपणी धार वहाईआ। गुरमुख करे विरला सच प्रीतण, प्रीती प्रीतम नाल लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कल अन्तिम वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम रहे उडीक, जगत उडारी मात लगाईआ। गुर अवतारां जो लिखी तरीक, तारीख़ रही समझाईआ। लख चुरासी होई विप्रीत, प्रीती सच ना कोए कमाईआ। सख़ीआँ मिल कोई ना गाए गोबिन्द दा गीत, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। लभ्भदे फिरन मन्दिर मसीत, मुल्लां शेख़ मुसायक उँगलां नाल रहे समझाईआ। बिन साचे कलमिउँ पढ़ पढ़ होए ढीठ, डेरा कूड़ ना कोए ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोती जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत होए रुशना, रोशन इक मनार वखाइंदा। जलवा नूर नूर धरा, जलवागर भेव चुकाइंदा। दर दुआर इक खुल्हा, दर्दीआं दर्द आप वंडाइंदा। सब दी सध्धर पूरी दए करा, जो सदके वारी घोली घोल घुमाइंदा। जन्म कर्म दा पत्रा दए उलटा, वरका वरका लेख बदलाइंदा। शत्रु मित्रां दए बणा, शस्त्र खण्डा ना कोए चमकाइंदा। चोटी सिख़रां दए चढ़ा, सकीरी आपणे नाल बणाइंदा। अन्तिम फिकरा दए पढ़ा, सोहँ ढोला राग अलाइंदा। जो बाज़ां तित्तरां गया लड़ा, सो कलयुग अन्तिम निरगुण हो के आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम शिकरा बाज लए बणा, लख चुरासी चिढ़ी आप तुड़ाइंदा। लख चुरासी शब्दी बाज़ चोगा, गोबिन्द चोग चुगाईआ। उच्ची कूक देवे होका, हुक्म दए समझाईआ। फिरे दरोही चौदां तबक चौदां लोका, लुकवीं खेल रहे ना राईआ। अन्दर वड़ के आपणा वेखो कोठा, काया कोठी सोभा पाईआ। जिस दे अन्दर अगम्मी पोथा, बिन इलमों करे पढ़ाईआ। आपणे मिलण दा देवे इक्को मौका, मुकम्मल आपणा हुक्म वरताईआ। किसे नाल करे ना धोखा, जो फड़या सो पार कराईआ। सतिजुग मार्ग दस्से सौखा, आत्म परमात्म सोहँ रूप इक समझाईआ। गुरसिख कोई ना होवे औखा, वेले अन्त सतिगुर पूरा लैण आए चाईं चाईंआ। जोत अकालण साफ़ कर के बैठी चौंका, जन भगतां उपर दए बहाईआ। बिन भगतां श्री भगवान जाए औंता, बिन सिखां गुरू कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलयुग अन्तिम आपे पहुंचा, वीहवीं सदी आपणा हुक्म आप वरताईआ। वीहवीं सदी नूं सारे रोंदे, दो जहान ध्यान लगाईआ। गुर अवतार ढोला गौंदे, तूही तूही राग अलाईआ। तेरा राह इक तकौंदे, तकवा इक जणाईआ। जुग चौकड़ी रहे भौंदे, इकठ्ठयां मेल ना कोए मिलाईआ। उच्चे नीवें सारे सौंदे, बिस्तर इक्को ना कोए हंढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सो वीहवीं सदी लेखे लाईआ। वीहवीं सदी करे मंज़ूर, हरि करता दया कमाइंदा। पहलों बख्शे सर्ब कसूर, सब दे लेखे आप मुकाइंदा। जिस दे पिच्छे सूली चढ़या मनसूर, सो सूली मनसूर आपणे गल लटकाइंदा। जिस दे पिच्छे अग्नी सड़े वांग तन्दूर, तिन्हां अग्नी तत बुझाइंदा। जिहड़े जुग चौकड़ी औंदे रहे बण मज़दूर, तिन्हां मज़दूरी वेख वखाइंदा। जेहड़े वसदे रहे दूर दूर, अन्तिम आपणे कोल बहाइंदा। सारे मंगो इक्को वार बख्श साडे कसूर, कुलवन्ता आपणी दया कमाइंदा। सब दे भाण्डे करे भरपूर, ख़ाली नज़र कोए ना आइंदा। ज़रूरत पूरी करे ज़रूर, ज़ाहर ज़हूर वेख वखाइंदा। काग़ज़ कलम शाही निहकलंक कीता मशहूर, गुर अवतार लेख लिखाइंदा। अन्तिम मिलण नूं होए सर्ब मजबूर, मुश्कल हल्ल ना कोए कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, जलवा देवे नूर ज़हूर, ज़ाहरा पीर बेनज़ीर लाशरीक सच तौफ़ीक इक खुदाए बेपरवाहे इक्को इस्म इक्को आअज़म इक्को आदम आप जणाइंदा। इक्को आदम आदम बू, बेवफ़ा सर्ब लोकाईआ। इक्को नाअरा इक्को लारा दस्से हू, अन्ना हू नाल मिलाईआ। रल मिल कहे आपा तू ही तू, तू ही तू ही राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि शब्द ब्रह्माद वेखे आपणी जूह, साचे खेड़े डेरा लाईआ। वेखणहारा पाक रूह, बुत्त बुत्तख़ाना फोल फुलावे थाउँ थाईंआ। जो मुरीद मुर्शद गया छूह, वांग शमस तबरेज़ शमअ देवे जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, जन भगतां वेखण आवे मूँह, जिन्हां मुखड़ा गोबिन्द धोता चाईं चाईंआ।

✪ २ भाद्रों २०२० बिक्रमी हरि भगत दुआर जेठूवाल ✪

हथ्थ नाल मिलाया हथ्थ, दस्त दस्त नाल जुड़ाईआ। शब्द उडारी लैणा नट्ठ, भज्जणा वाहो दाहीआ। संगीआं साथीआं कर इकट्ठ, आपणा मेल मिलाईआ। वेख खेल पुरख समरथ, बेपरवाह दए समझाईआ। वारता रसना जिह्वा गाथ, छन्दा बंदी बेपरवाहीआ। सति सतिवादी खेल तमाश, दो जहाना दए जणाईआ। साचे मण्डल पावे रास, काहन आपणा खेल वखाईआ। कवण दवारिओं अइउँ चल के पास, पासा आपणा लै उलटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, छन्दा बंदी वारतालाप, दोंहां करे आप मिलाप, मेला वेखे थाउँ थाईंआ। आपणी बोलो रसना ज़बान, बत्ती दन्द हिलाईआ। कवण कलमा कवण कलाम, कवण घट घट रिहा टिकाईआ। कवण इस्म आअज़म सच निशान, कवण महिराब रिहा सुहाईआ। कवण देवणहार पैग़ाम, सच साची करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, करे खेल साचा हरि, छन्दा बंदी बत्ती दन्दी बंदा बंदगी विचों प्रगटाईआ। कवण सच कवण झूठ, कवण खेल रिहा दरसाईआ। कवण दिशा कवण कूट, कवण हिस्सा वंड वंडाईआ। कवण साध कवण अवधूत, कवण लेख रिहा जणाईआ। कवण पूत कवण कपूत, कवण दर दर फिरे आपणा फेरा पाईआ। कवण तागा कवण सूत, कवण तन्दी जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वारतालाप बिन वर्तमान वरतंत भगवन्त इक्को इक समझाईआ। वारतालाप दस्सो उह, जो लिखण पढ़न विच ना आईआ। जिस दी धार सदा निरमोह, निरवैर खेल कराईआ। ओस नाल जाणा छोह, जगत छोहर मिले वड्याईआ। दुरमति मैल मैल धो, निर्मल रूप इक प्रगटाईआ। आपा आप ना लैणा खोह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वारतालाप जगत कहाणी, बोध अगाध धुर दी बाणी, शब्दी शब्द भेव चुकाईआ। ना कोई वेखे वेखणयोग, मन मति बुध ना कोए चतुराईआ। जगत वासना करदा फिरें भोग, साची सेज ना कोए हंढ्ढाईआ। हउमे हंगता लग्गा रोग, कूड़ी क्रिया करे लड़ाईआ। शब्द तन ना लग्गी चोट, नगारा सच ना कोए वजाईआ। आलूणिउँ डिग्गा बोट, मातलोक रिहा कुरलाईआ। नज़र ना आई निर्मल जोत, अन्ध अन्धेरे बैठा आसण लाईआ। शब्द सुणा उह श्लोक, जिस धारों नूर करे रुशनाईआ। ओस धाम किस बिध जाए पहुंच, कवण पौड़ी डण्डा वेख वखाईआ। लखण पुष्कर वेख करौच, सलमल सान जम्बु दीप खुशी मनाईआ। कुशा कुत्ते रहे भौंक, कूकर सूकर आपणा राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुच्छणहारा उह घर, जिस दा दरवाजा नज़र किसे ना आईआ। सिधी सादी जगत गल्ल, गल्लीं बातीं जगत खेल कराइंदा। प्रभ का खेल सदा अछल्ल, जीव जंत भेव कोए ना पाइंदा। उच्चे टिल्ले पर्बत लोअ पुरी अकाश रहे हल्ल, बेपरवाह आपणा धक्का लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, बोध अगाध शब्द अनाद विच ब्रह्माद ब्रह्माड आपणी कार कमाइंदा। वारता बोले जगत कहाणी, लख चुरासी जीव जंत देण दुहाईआ। सतिगुर बोले धुर दी बाणी, शब्दी राग सुणाईआ। आवण जाण खेल महानी, जुग चौकड़ी कार कमाईआ। शाहो भूप वड सुल्तानी, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। पारब्रह्म ब्रह्म देवे दानी, दाता दानी दया कमाईआ। धुरदरगाही इक निशानी, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। निहकलंक वड्डा बलवानी, बलधारी आप हो जाईआ। जगत नेत्र ना कोई वेखे जीव नादानी, निज नेत्र गुरमुखां नज़री आईआ। जिस दा नाम तीर निशान तिक्खी कानी, आर पार दो जहान कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निक्की निक्की वारता विच कदे ना आईआ। बहिस विच राग सस्ता, हरि का नाम कीमत कोई ना पाईआ। जगत विद्या काया कम्म ना

आए बसता, हरि का अक्खर पढ़न कोए ना पाईआ। श्री भगवान हर घट अन्दर दीपक नूर हो के जगदा, जोती जोत करे रुशनाईआ। नौ दुआरे पार लँघदा, साचे मन्दिर डेरा लाईआ। ना रोवे ना कदे हस्सदा, अट्ठे पहर खुशी मनाईआ। प्रेम प्यार देवे आपणे रस दा, रस रसीआ साचा माहीआ। ब्रह्म पारब्रह्म सद हुक्म घल्लदा, हुक्मे अन्दर फिराईआ। एह खेल पुरख अटल दा, ना कोई जाणे जीव सौदाईआ। वारता विच आपणी धार कदे ना घल्लदा, धुर दी करे अगम्म पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पारब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म पारब्रह्म एका धार बंधाईआ। सेवो भाई सेवो, सेवण जाच अजे ना आईआ। लेवो भाई लेवो, वड दाता दात आप वरताईआ। देवो भाई देवो, आपणा आप भेंट चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल खेलणहार आपणी खेल खलाईआ। पुरख अकाल कोल इक सटेज, सीट सदा रिज़र्व रखाईआ। जिन्हां आपणे करके दए भेज, तिन्हां किरपा कर के लए मिलाईआ। गुर अवतार जगत मार्ग देंदे रहे संदेस, अक्खर अक्खर नाम पढ़ाईआ। पौड़ी पौड़ी चढ़ के लैणा वेख, घर घर विच नज़री आईआ। पंचम मीता पंचम अलेख, इक्को अगम्म अथाह वड्डी वड्याईआ। अबिनाशी करता जन भगतां संग करे इक्को हेत, हितकारी फेरा पाईआ। रुत बसन्ती मौले चेत, फुल फुलवाड़ी आप महकाईआ। ठाकर हो के ठोकर ला लवे वेख, अन्दर बाहर खोज खुजाईआ। जिन्हां आपणा देवे भेत, पड़दा कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आत्म परमात्म परमात्म आत्म निज धारा जोड़ जुड़ाईआ। कबीर किहा साचा बोल, अनबोलत आप सुणाईआ। साहिब स्वामी जिस आए कोल, घर सज्जण फेरा पाईआ। सुरत सुआणी जावे मौल, शब्द हाणी मेल मिलाईआ। देवे वड्याई उपर धौल, धरनी धरत खुशी मनाईआ। आदि अन्त पूरा करे कौल, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मेले सहिज सुभाईआ। घर मेला हरि जू कन्त, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। नाल लै के जाए भगवन्त, जिस जन आप प्रनाइंदा। सो उधरे साचा सन्त, जिस नारी कन्त प्रनाइंदा। धाम सुहाए सोभावन्त, घर सुहञ्जणा इक वड्याइंदा। कबीर पुरख पाया इक भगवन्त, दूजा अंग ना कोए लगाइंदा। ब्रह्म जोत होए प्रकाश, घर घर विच करे रुशनाईआ। काला नीला पीला खेल तमाश, चिट्टी धार रूप वटाईआ। सूहा कंचन लाल नरेश, निरगुण नूर रुशनाईआ। ककी धार दए संदेस, शब्दी रूप प्रगटाईआ। जो कबीर निरगुण ल्या वेख, सो कबीर सरगुण गया समझाईआ। जिस वेले होए जोत प्रवेश, जोती जोत करे कुड़माईआ। पिछों वखावे सच्चा देस, जिस घर वसे सच्चा माहीआ। जिस गृह रूप ना कोई रेख, रंग नज़र किसे ना आईआ। उच्चे गढ़ चढ़ के देवे इक संदेस, सृष्ट सबाई गया समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, दीपक दीपक नाल करे रुशनाईआ। कँवल नाभी ना खिले फुल्ल, मुख कँवल ना कोए खिलाईआ। किरपा करे आप अभुल्ल, मेहरवान होए सहाईआ। भगत उपजाए आपणी कुल्ल, कुलवन्ता बेपरवाहीआ। निझर झिरना जाए डुल्ल, अमृत मेघ इक बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, तिस पत डाली रूप महकाईआ। ऊँधे कँवल होए प्रकाश, जोती जोत जोत रुशनाईआ। घर मिले आबेहयात, हयाती हयाती विचों दए बदलाईआ। नज़री आए इक नवाब, नौबत साचे नाम वजाईआ। दर दरवेश करे आदाब, सजदा सर इक झुकाईआ। जिस दा खेल बेताब, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल दए जणाईआ। ईड़ा पिंगल सुखमन मार्ग निक्का, पगडण्डी रूप जणाईआ। जिस दा मार्ग जगत दिसे तिक्खा, तिन्हां तीखण रिहा बुझाईआ। संदेसा देवे उठ गुरमुखा, गुर गुर बूझ बुझाईआ। सचखण्ड दुआर वखाए इक्को सुखा, सुख आत्म दए जणाईआ। कबीर जुलाहा प्रभ दरस दा भुक्खा, छोटे मोटे राह खहिड़े चरणां हेठां गया दबाईआ। जा के मन्दिर इक्को डिठा, घर साचे होई रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन सद्दे आपणे घर, तिस मार्ग मार्ग विचों लँघाईआ। सच निशान सतिगुर इष्ट, इष्ट गुर देव आप बंधाइंदा। कर किरपा खोल्हे दृष्ट, दिब नेत्र पड़दा लाहइंदा। जिस नूं राम गुर चेला मन्नदे गए वशिष्ट, विश्व आपणी कार कमाइंदा। जिस दा खेल आदि जुगादि भविक्ख्त, भावना सब दी पूर कराइंदा। जिस दी महिमा करे लिख्त, लिख लिख लेखा सर्ब जणाइंदा। सो सतिगुर सदा निरिछत, इच्छया सब दी पूर कराइंदा। कर किरपा जिस देवे आपणा इष्ट, सो बिन जगत नेत्र ध्यान लगाइंदा। माणस जन्म ना होए भृष्ट, मनमति ना कोए कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा इष्ट आप रखाइंदा। जिस दी जोत उस दे अंग, सो अंगीकार अख्वाईआ। जिस दी खेल सो सूरा सरबँग, शाह पातशाह हुक्म वरताईआ। जिस दा नूर उस दा चन्द, चन्द चांदनी रिहा चमकाईआ। जिस ने घड़या सो देवे भन्न, घड़न भंनणहार आप हो जाईआ। जिस ने जणया सो लेखा जाणे जननी जन, बणे धन जणेंदी माईआ। सो कट देवो कन्न, जो सतिगुर शब्द सुणन ना पाईआ। सो नेत्र होवण अन्न्हे, जिन्हां सतिगुर साहिब नज़र ना आईआ। सो रसना करो खन खन, जो हरि हरि नाम ना सदा ध्याईआ। सो बत्ती दन्द देवो डंन, जो कूड़ी क्रिया वासना नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, आपणे हुक्मे अन्दर जुग जुग कार कमाईआ। रोम रोम साढे तिन्न करोड़, साढे तिन्न हथ्थ मिली वड्याईआ। जिस दा नाता पुरख अकाल ल्या जोड़, मास चम्मड़ी मेल मिलाईआ। आप बैठा रिहा ख़ामोश,

चुप चाप बोल ना कोए सुणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल वेखणहारा आपे दोष, निर्दोष नज़र कोए ना आईआ। जिस रचाई रचना सो सोचणहारा सोच, दूजा समझ कोए ना पाईआ। पूरी करे प्रभ आपणी लोचना लोच, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अंग अंग आपणा रंग आप रंगाईआ। जोग अभ्यास जुगत जग धार, जगजीवण दाते आप बणाईआ। जटा जूट करन विचार, अन्तर बैठे ध्यान लगाईआ। जिस किरपा करे आप करतार, तिस साची बूझ बुझाईआ। जिस दर्शन पाया सो उच्ची कूक करे पुकार, रसना जिह्वा ढोला गाईआ। जिस उपजाया सर्ब संसार, तिस अग्गे चले ना कोए चतुराईआ। रोम रोम ना कोए आधार, रौणक आपणे नाल बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोगा अभ्यास देवे अभ्यासी, करे खेल पुरख अबिनाशी, साची शाखी शनाख़त वासते आप प्रगटाईआ। जिस गृह जोत होवे प्रकाश, प्रकाशवान नज़री आईआ। तिस होर ना कोई आस, आसा ओट ना कोए रखाईआ। सो खेल करे तमाश, बेपरवाह बेपरवाहीआ। धुर दा हुक्म सच बलास, निरगुण धार दए प्रगटाईआ। बैखरी बाणी बोल खोल्हे भेव खुलास, ख़ालस मार्ग दए समझाईआ। लख चुरासी जिस दवारिओं उपजी शाख़, सो शनाख़त रिहा जणाईआ। हुक्म संदेसा जाए आख, आखर नज़र किसे ना आईआ। आपणे गृह वसे शाहो शाबाश, शहिनशाह आपणे रंग समाईआ। बिन बैखरी बाणी जोत दा कोई ना जाणे प्रकाश, बिन दस्सयां समझ किसे ना आईआ। जन भगतां अन्दर गुप्त चले धार, बिन अक्खरां करे पढ़ाईआ। अट्ठे पहर नूर उज्यार, जोती जोत जोत रुशनाईआ। बिन रसना करे गुफ़तार, गीत अतीत इक समझाईआ। रौला पावे वासते संसार, भुल्लयां भटकयां रिहा उठाईआ। हरि भुल्लो ना जीव गंवार, हर घट बैठा आसण लाईआ। नेत्र खोल्ह करो दीदार, दीद ईद चन्द चढ़ाईआ। सिफ्त सालाह तों वसे बाहर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी धार जोत प्यार, जोत जोती दए समझाईआ। जोत धार सदा निष्अक्खर, अक्खर नज़र कोए ना आईआ। वसे धाम निराले वक्खर, साचे घर सोभा पाईआ। शब्दी धार हो के आए दिसण, जोत सिफ्ती ढोला गाईआ। लख चुरासी जीव जंत आए हिक्रण, नाम इशारे नाल समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे वसे सदा वक्खर, सुरत विच ना आए फ़र्क, फ़कत आपणी खेल कराईआ। जिस रचना रचाई जगत, सो जुगती रिहा छुपाईआ। भेव खोल्हे आपणे वक्त, भरमे रखे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी दए समझाईआ। जिस अन्दर निरगुण जोत वखाए आपणा मुख, मुख मुखड़ा आप दरसाईआ। तिस नूं भुल्लयां भटकयां वल वेख के आवे दुःख, क्यों भुल्ले बेपरवाहीआ। मन मति बुध बदलण आपणा रुख़, मार्ग साचे

पन्ध मुकाईआ। गुरमुख वेख कूड़ी क्रिया कदे ना रहे चुप्प, कूड़ी क्रिया दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोती जोत करे रुशनाईआ। कलयुग अन्तिम वध्या पाप, पापी घर घर डेरा लाईआ। कोई किसे ना सके आख, आपणा आप ना कोए बचाईआ। घर घर कूड़ा बणया साक, सतिगुर सज्जण ना कोए समझाईआ। गुर नानक वेले फुटी शाख़, हुण चारों कुण्ट वड्डा बूटा सब नूं आपणे हेठां रिहा दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल पुरख समरथे, समरथ धार चलाइंदा। हुक्मे अन्दर सारे बद्धे, बाहर हुक्म ना कोए वखाइंदा। दो जहान फिरन भज्जे, पुरी लोअ नाच नचाइंदा। गुर अवतार देंदे फिरन सद्दे, सच सुनेहड़ा आप घलाइंदा। पुरख अकाल अन्तिम इक्को लभ्भे, निरगुण नूर जोत प्रगटाइंदा। सच सिंघासण बहि के सजे, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। जन भगतां पड़दा कज्जे, नाम दोशाला हथ्थ उठाइंदा। कूड़ी क्रिया भाण्डा भज्जे, साची सिख्या इक समझाइंदा । एथे ओथे दो जहान रखाए लज्जे, लाजावन्त आप हो जाइंदा। सिंघ सूरबीर हो के गज्जे, गर्ज आपणा नाम प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी कर कार, हरि करता वड वड्याईआ। खेले खेल सर्ब संसार, महासार्थी फेरा पाईआ। लहिणा चुक्के चौथे युग आपणी वार, वारता सके ना कोए सुणाईआ। नव नौ दिसे धूंआँधार, सत्त वज्जे ना कोए वधाईआ। करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर सच्चा शहिनशाहीआ। सच महल्ल इक उसार, देवणहार नाम वड्याईआ। जन भगतां कर प्यार, प्रीती आपणे नाम बंधाईआ। साचे मन्दिर गाए आपणी वार, सोहला इक्को इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि खेल करदा, करनी आप कमाइंदा। निरगुण हो के घर घर वड़दा, सरगुण पड़दा आप उठाइंदा । जन भगत दुआरे बणे बरदा, बण सेवक सेव कमाइंदा। मार्ग दस्से इक्को हरि दा, दूजा राह ना कोए वखाइंदा। शब्द ढोला इक्को पढ़दा, सो साहिब आप समझाइंदा। कूड़ी क्रिया नाल लड़दा, नाम खण्डा इक चमकाइंदा। साचा भाणा आपे जरदा, सिर भाणा आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। साची खेल देवे दस्स, दस्सणहार आप अख्वाईआ। लख चुरासी रिहा वस, बिस्तर इक्को सेज हंढ्ढाईआ। पांधी पन्ध मुकाए नस्स नस्स, दोए दोए आपणी धार चलाईआ। अन्तिम खेल करे समरथ, महिमा अकथ करे पढ़ाईआ। कूड़ा बुरज जाए ढठ्ठ, अन्त नज़र कोए ना आईआ। धीरज देवे इक्को हठ, सबर सबूरी प्याला जाम प्याईआ। पुरख अकाल बंधाए नत, नाता इक्को नाल जुड़ाईआ। धीरज देवे साचा सति, सन्तोख आपणा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह

प्रभ खेल करदा, करनहार कल आया। निरवैर हो कदे ना डरदा, डर सब दे सिर रखाया । लेखा जाणे सीस धड़ दा, लख चुरासी खोज खुजाया। जन भगत दुआरे होए बरदा, बण सेवक सेव कमाया। लेखा जाणे नर हरि दा, नर नरायण वड्डी वडयाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर इक सुहाया। साचा मन्दिर भगत दुआर, हरि भगवन आप सुहाईआ। दर्शन देवे खोल्ह किवाड़, नौ दुआरे पार कराईआ। साचे तख्त बैठ निरँकार, निरगुण आपणा राह समझाईआ। दीआ बाती एका बाल, कमलापाती करे रुशनाईआ। धर्म वखाए सची धर्मसाल, घर घर विच वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। लेखा जाणे हरि गोपाल, गोपालन आपणी दया कमाइंदा। हरि भगत उठाए साचे लाल, लाल रंगीला रंग रंगाइंदा। चरण कँवल दए बहाल, साचा मन्दिर इक सुहाइंदा। अन्दर बाहर चले नाल, जगत विछोड़ा मेट मिटाइंदा। लख चुरासी विचों भाल, कोझे कमले गले लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगत दुआरा आप सुहाइंदा। भगत दुआरे श्री भगवान वड़ के, वाहवा एका करे पढ़ाईआ। महल अटल उच्चे चढ़ के, चोट नगारे नाम लगाईआ। दरस देवे प्रभ साचा खड़ के, ख़ालस आपणा नूर दरसाईआ। निरगुण जोत जोत धर के, ज़हूर इक्को इक शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा जाणे एका थाईंआ । एका थाँ चाउ घनेरा, सो साहिब आप जणाईआ। गुरसिख तूं मेरा मैं तेरा, भगत भगवान वज्जे वधाईआ। नित नवित्त वसावण आए खेड़ा, निरवैर आपणा फेरा पाईआ। कलयुग वेखणहारा झेड़ा, झगड़ा करे सर्ब लोकाईआ। खेल खेले हेरा फेरा, अछल अछल्ल बेपरवाहीआ। गुरमुख बैठे कर के जेरा, ध्यान इक्को इक लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अवल्ला, अवल्ल आप कराइंदा। सच महल्ल इक्को मल्ला, आसण सिँघासण सोभा पाइंदा। निरगुण हो के सरगुण फड़ाए पल्ला, आप आपणा रंग रंगाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप वसाइंदा। सच दुआरा भगत घर, श्री भगवान आप वसाईआ। जन्म मरन दा चुक्के डर, लख चुरासी रहिण ना पाईआ। पुरख अकाल लाए लड़, नार कन्त लए प्रनाईआ। आत्म सेजा जाए चढ़, सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। बिन रस्सी डोरी लए फड़, शब्दी तन्द इक बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा सहिज सुखदाईआ । हरि सच्चा सहिज सदा सुखदायक, सुख सागर रूप वटाइंदा। सति सतिवादी बण के नायक, नईया नौका आपणा नाम वखाइंदा। जन भगतां उते होए सदा मुशतायक, मुश्कल कूड़ी हल्ल कराइंदा। वेले अन्त देवे किफ़ायत, किफ़ायत शुआरी आप समझाइंदा। कलयुग अन्तिम करे रयाइत, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। चार

वरन ना कोए शरायत, शरीअत लेखा आप चुकाइंदा। आत्म परमात्म दए हदाइत, हदीस कलमा इक सुणाइंदा। सतिजुग साची मिले रवाइत, राह इक्को इक रखाइंदा। लेखा जाणे कायनात, चारों कुण्ट खोज खुजाइंदा। लेखा चुके कूड़ी मायक, माया पल्लू नाम झोली पाइंदा। सतिगुर हो के बणे सहायक, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बोध अगाधी करे बहिस, शब्दी ढोला राग अलाइंदा। शब्दी ढोला गावे गीत, गहर गम्भीर दया कमाईआ। भेव खुलाए हस्त कीट, कीट कीटां दए समझाईआ। माणस मानुख मानव जन्म लैणा जीत, जीवण जुगत इक दृढ़ाईआ। दर्शन पाओ हरि अतीत, त्रैगुण देवे डेरा ढाहीआ। पंज तत चोला होए ठांडा सीत, काया अग्नी तत ना कोए तपाईआ। भगत भगवान चले सांझी रीत, सतिजुग साचे आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, वड दाता इक अख्वाईआ।

★ २ भाद्रों २०२० बिक्रमी प्रीतम सिँघ नज़ाम पुरा दे नवित्त हरि भगत दुआर जेठूवाल ★

१६८ श्री भगवान सुहाए रुत्ते, रुत्त आपणी आप जणाईआ। लहिणा देणा सब तों पुछे, पिछला लेखा वेख वखाईआ। कलयुग कहे उठो सारे सुत्ते, द्वापर त्रेता सतिजुग तिन्नां रिहा जणाईआ। डूंग्घी धार क्यों बैठे लुके, आपणा मुख छुपाईआ। वेखो नाम जपण वाले पींदे हुक्के, रसना कूड़ होई हल्काईआ। मन वासना बण सवान फिरदे कुत्ते, कुटलता घर घर डेरा लाईआ। सच प्रीती कोलों रुक्खे, नीती नज़र किसे ना आईआ । प्यो पुत्त नूं फड़ के कुट्टे, मावां धीआं पई लड़ाईआ। साध सन्त वड़ गए गुट्टे, सिर सके ना कोए उठाईआ। कूड़ विकारा लैंदा हूटे, पींघ हुलारे इक चढ़ाईआ। गोबिन्द दिसण ना सच्चे बूटे, पत डाली रही कुमलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। कलयुग बोले दस्से हाल, हालत सर्ब जणाईआ। प्रगट होया दीन दयाल, दयानिध वड्डी वड्याईआ। दर आ के करो स्वाल, बण स्वाली झोली डाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर वेखो मार ध्यान, निज नेत्र नैण खुल्हाईआ। चारों कुण्ट भुल्लया सर्ब ज्ञान, मन्त्र नाम ना कोए दृढ़ाईआ। घर घर वसया कूड़ अभिमान, निम्रता नज़र कोए ना आईआ। कूड़ी आसा पीण खाण, धीरज धीर ना कोए वखाईआ। जगत संदेसा ढोले गाण, नर नरेश सिफ्त ना कोए सालाहीआ। साचा घर सके ना कोए पहचान, कूड़े मन्दिर बहि बहि खुशी मनाईआ। नेत्र नज़र ना आए श्री भगवान, जगत लोचण लोचा जगत पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी दए जणाईआ। कलयुग कहे मैं की की दस्सां, दस्सण विच कोए ना

आईआ। नाले रोवां नाले हस्सां, खुशी ग़मी नाल जुड़ाईआ। चारों कुण्ट उठ उठ नट्ठां, बण पांधी फेरा पाईआ। चौंदां लोक वेखां हट्टां, चौंदां तबकां फेरा फेरे नाल पाईआ। चार वरन प्या रट्टा, रटन नाम ना कोए लगाईआ। धूढ़ी खेह उडे घट्टा, चरण धूढ़ी टिक्का ना कोए लगाईआ। साचा लाहा किसे ना खटा, वस्त अमोलक झोली कोए ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सच संदेसा दे दे दस्सदे गए पता, पतिपरमेश्वर आवे बेपरवाहीआ। जिस दा नूर किसे नज़र ना आए रता, रती रत समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल दए वखाईआ। कलयुग कहे उठो बोलो, आपणा बोल जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर आपणा तोल तोलो, तराज़ू कंडा साहिब रिहा वखाईआ। आपणी करनी आपे फोलो, पड़दा मात चुकाईआ। आपणी गंढु आपे खोल्हो, धुर दा भेव समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। कलयुग कहे मैनूं आवे हासा, हस्त कीट वेख वखाईआ। घर घर वेखां कूड़ तमाशा, तमअ तामस फिरे हल्काईआ। पुट्ठी नरद उलट पासा, सारपाश खेल ना कोए खलाईआ। चार वरन दिसे नासा, थिर नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार दस्सदे गए खुलासा, खुल्ही तरा समझाईआ। अन्तिम आए पुरख अबिनाशा, अबिनाशी आपणी धार प्रगटाईआ। साचे मन्दिर करे वासा, वसल आपणा आप वखाईआ। ना कोई हज़ारा दरूद पड़े फ़ाता, फ़ाका रूप ना कोए वटाईआ। दो जहाना बणे आका, अक्ल कल बेपरवाहीआ। चार युग दा दर बुला के सुणे साका, सगला भेव लोकाईआ। सारे मन्न लओ इक्को आखा, आख़र प्रभ जू हुक्म वरताईआ। इष्ट देव मन्नणा छड्डो बहु बिध भांता, भाव इक्को इक दृढ़ाईआ। मेटो रैण अन्धेरी राता, चन्द नूर इक चमकाईआ। चल के आया जोती जाता, जात आपणी दए समझाईआ। लेखा जाणे धुर दी गाथा, गहर गम्भीर करे पढ़ाईआ। बण के वेखे पिता माता, सुत दुलारे गोद उठाईआ। निरगुण हो के जोड़े नाता, सरगुण मेल मिलाईआ। काया माटी भरे कासा, नाम नामा आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। कलयुग कहे आओ नेड़े, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जुग जुग आपणे बन्नदे गए बेड़े, बेड़ा लोकमात वखाईआ। अन्तिम कल ढट्ठण वाले खेड़े, हरि जू खण्डा खड़ग चमकाईआ। आपणी दिशा खुल्हे वेखो वेहड़े, हिस्सा इक्को नज़री आईआ। झूठे ढहिण वाले डेरे, डेरी नज़र कोए ना आईआ। कूड़ कुड़ावा बेरे बेरे, बेपरवाह आप वखाईआ। जुग चौकड़ी सारे करदे गए मेरे मेरे, मेहरवान ध्यान ना कोई लगाईआ। अन्तिम देवे उलटे गेड़े, लख चुरासी आप भवाईआ। तख़्त निवासी एकँकार करे आपणी मेहरे, मेहर नज़र नैण उठाईआ। हकीकत हक़ करे नबेड़े, लाशरीक शिरकत दए गंवाईआ। गुरमुख गुरसिख लख चुरासी विचों

कर किरपा बाहर नखेड़े, लुक्या कोए रहिण ना पाईआ। प्रेम प्रीती शब्दी बन्ने जेड़े, जेवड़ा आपणे नाल मिलाईआ। खेल खिलाए सतिजुग त्रेता द्वापर बथेरे, बिस्तर सेज मात हंढाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी करता दए जणाईआ। कलयुग कहे आओ, आपणा पन्ध मुकाईआ। पारब्रह्म प्रभ दर्शन पाओ, जिस दी गए ओट तकाईआ। रल मिल ढोला सारे गाओ, घर वज्जे नाम वधाईआ। परम पुरख दा दर्शन पाओ, दर्दीआं दर्द रिहा वंडाईआ। साची धूढ़ी चरण नहाओ, दुरमति मैल धवाईआ। घर अबिनाशी साचा पाओ, बाहर लभ्भण कोए ना जाईआ। गुरमुख उठाए फड़ के बाहों, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मार्ग पाए भुल्लयां राहों, रहबर आपणा रूप प्रगटाईआ । कलयुग कहे वेखो छेती, शहिनशाह आपणी धार जणाइंदा। सतिजुग त्रेते द्वापर पूरब लहिणे दा तेरा भेती, भेव आपणे हथ्थ वखाइंदा। वेखणहारा शाह सुल्तान वड वड सेठी, दर दर घर घर खोज खुजाइंदा। सन्त साजण बण के हेती, हित्त आपणे नाल मिलाइंदा। अन्त भगवन्त सब दी करे पेशी, पिछला लेखा मंग मंगाइंदा। अग्गे रहिण ना देवे कोई शेख़ी, शाख़ आपणे विच छुपाइंदा। लेखा जाणे धुर दी लेखी, लिख्त आपणी सिफ्त वड्याइंदा। सजदा सीस करे आदेसी, आदर्श इक्को इक प्रगटाइंदा। जे कोई लभ्भे प्रभ सिर ते रखे केसी, केसाधारी नज़र किसे ना आइंदा। जे कोई कहे मूंड मुंडाए भेखी, भेख अवल्लड़ा आप छुपाइंदा। जे कोई कहे सर्ब जीआं दा हेती, घर घर डेरा लाइंदा । चार युग दी जाणे बदी नेकी, बदला सब दा रिहा मुकाईआ। अग्गे मार्ग दस्से इक्को टेकी, टिक्का नाम मस्तक दए लगाईआ। सुत दुलारा चल के आया पुत्त पलेठी, जिस दा सानी नज़र कोए ना आईआ। जुग चौकड़ी बणया रहे परदेसी, आपणा घर ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी करता आप कमाईआ। कलयुग बोले पावे रौला, रौणक आपणी रिहा वखाईआ। उठो वेखो हरि जू मौला, मवल रिहा सब थाईंआ। करे प्रकाश उपर धौला, धरनी धरत दए वड्याईआ। कूड़ी क्रिया भार करे हौला, हौली हौली बणत बणाईआ। जगत विकारे सिर विच मारे पौला, पलक डेर ना कोए लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। कलयुग कहे उठो करो असीस, चरण कँवल मिले सरनाईआ। जिस दी दस्सदे आए हदीस, सो हज़रत आया माहीआ । जिस दे छत्र झुल्ले सीस, शहिनशाह वड वड्याईआ। सब नूं अन्तिम रिहा जीत, हार घर घर रोवे दए दुहाईआ। दर दरवेश बण के मंगो भीख, भिच्छया देवे झोली पाईआ। सच करनी दी सिखो प्रीत, प्रीती इक्को घर लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सचा शनिशाहीआ। कलयुग कहे उठो वेखो मुख, मुख नक़ाब हरि उठाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर तिन्ने

मैंनूं नाल लै के लओ पुच्छ, की प्रभू तेरी वड्याईआ। पहलों बणौंदा रिहों आपणे पुत्त, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। हुण साडे कोल रहिण नहीं देणा कुछ, तेरी सो सुण के सारे देण दुहाईआ। साडा पैंडा जाणा मुक्क, मुक्की खेल पराईआ। निरगुण हो के बदलया रुख़, रुक्खापन रिहो जणाईआ। तेरी सृष्टी आउणा दुःख, दृष्टी देवे ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। कलयुग कहे प्रभ सब दा बापू, बाबत आपणी फेरा पाईआ। पीर पैगम्बरो उम्मत कोलों हथ्थों सुटाओ तमाकू, तुख्म तासीर दयो जणाईआ। अन्तिम इक्को वार आखू, घड़ी घड़ी ना कोए जणाईआ। भुल्लयां पड़दा कोए ना ढाकू, सिर हथ्थ ना कोए रखाईआ। चार युग दिसण निक्के बच्चे नंन्हे काकू, बल सके ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। कलयुग कहे डाहो झोली, मंगो वस्त बेपरवाहीआ। मेरे अन्त पैणी रौली, रौला सब नूं रिहा जणाईआ। श्री भगवान खेल रचौणी, रच रच वेखे चाईं चाईंआ। लख चुरासी चाढ़्हे तौणी, दो जहानां दए सजाईआ। जन भगतां पूरी करे भौणी, भावी चरणां हेठ दबाईआ। साची प्रीत तोड़ निभौणी, मँझधार ना कोए रुढ़्हाईआ। पुरख अकाल दील दयाल सखी सहेली इक प्रनौणी, जिस आपणा मेल मिलाईआ। धुर दी धार इक समझौणी, दूजी समझ रमज ना कोए लगाईआ। अग्गे पिच्छे ना कोए पछतौणी, पश्चाताप ना कोए कराईआ। सच दुआरे आप बहौणी, सौहरे पेईए खुशी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे सोभा पाईआ। कलयुग कहे वेखो वीर, त्रेता द्वापर सतिजुग संग मिलाईआ। मेरा होणा अन्त अख़ीर, तुहाढ्ढे कोल आवां चाईं चाईंआ। मेरा टुट्टणा शरअ ज़ंजीर, शरीअत रहिण कोए ना पाईआ। मैं कट के आवां भीड़, भीड़ी गली पन्ध मुकाईआ। उठ के वेखो मेरी हड्डी टुट्टी रीड़्ह, जीव जंत कूड़ी क्रिया भार मेरे उते टिकाईआ। सदी वीहवीं मैंनूं लग्गी पीड़, सद भरावां रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म रिहा वरताईआ। कलयुग कहे मेरा वंडो दर्द, दर्दवंद नज़र कोए ना आईआ। मेरे अन्दरे अन्दर फिरे करद, कातिल मकतूल खेल वखाईआ। मैंनूं कोई ना लभ्भे मर्द, ज़नानी नज़र कोए ना आईआ। जिध्धर वेखां चार कुण्ट होए नपड़द, आपणा पड़दा कोई ढक ना सके राईआ। पिछली फोल के प्रभ वेखे सब दी फ़रद, फ़र्ज ज़ुल्म सब ते रिहा लाईआ। किसे कोलों लथ्था ना आपणा फ़र्ज, बरीख़ाना नज़र किसे ना आईआ। सारे करके बैठे आपणा हर्ज, हर्जाना भरे जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान खेल रचाईआ। कलयुग कहे मैंनूं दयो दिलासा, धीरज नज़र कोए ना आईआ। अठसठ दिसे ना कोई साथा, जलधार संग ना कोए निभाईआ। बणे ना साथी पूजा पाठा, पुस्तक बैठे मुख भवाईआ। मेरी

कुंनी विच ना दिसे आटा, पाणी जल नज़र कोए ना आईआ। बिन कलमिउँ खाली दिसे बाटा, बठल कूड़ी क्रिया नाल भराईआ। नज़र ना आया रसूल पाका, वसल असल ना कोए कराईआ। प्यार करदा रिहा तन ख़ाका, नार कन्त कर कुड़माईआ। पुत्तर धीआं बणदा रिहा साका, हरिजू सज्जण संग ना कोए वखाईआ। अन्तिम कटणा प्या फ़ाका, मेरा फ़िकर ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे मति रिहा जणाईआ। कलयुग कहे मेरी अर्ज़ करो मंज़ूर, मुज़रे मेरा लेखा लाईआ। मेरा घर तपे वांग तन्दूर, तमअ तृष्ना अग्न जलाईआ। मेरा खेल होया मशहूर, काम क्रोध नच्चे चाईं चाईंआ। कूड़ी क्रिया भाण्डा होया भरभूर, ख़ाली सके ना कोए कराईआ । पीर पैगम्बर लभ्भदे फिरदे हूर, साची हूर इलाही नूर माशूक आशक नज़र किसे ना आईआ। हथ्थ ना आए हक़ हकूक, हकीकत सके ना कोए दृढ़ाईआ। जगत वासना भौंदे फिरदे भूत, बेताले ताल वजाईआ। अन्तिम सब दे सिर विच पानही वज्जणा जूत, पूत कपूत कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अचरज आपणी धार चलाईआ। कलयुग कहे वेखो राजा, राजन इक्को नज़री आईआ । आदि जुगादि जिस बणाया आप समाजा, सामराज बेपरवाहीआ। भूपत भूप महिबूब बणे राजा, वड महाराजा आपणी कार कमाईआ। उच्चे टिल्ले चढ़ के गाजा, ग़ज़ल नग़मा रिहा सुणाईआ। शब्द अगम्म मारे वाजां, वाजब आपणा हुक्म वरताईआ। चल के आया शाह नवाबा, बेनक़ाब पड़दा लाहीआ। सच दुआर इक आदाबा, आदत इक्को इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जोरू ज़र दए जणाईआ। कलयुग कहे मेरी पुन्ने आस, निरासा रूप नज़र ना आईआ। परम पुरख मेरे आवे पास, पासा मेरा दए बदलाईआ। अन्तिम खेल करे ख़ास, ख़ालस आपणा रूप प्रगटाईआ। मन्दिर वड़ के लए झाक, झाकी आपणी आप दिवाईआ। मेटे रैण अन्धेरी रात, चन्न नूर कर रुशनाईआ। सति वखाए इक प्रभात, प्रभू आपणा रंग रंगाईआ। सुल्तान हो के गावे गाथ, मेहरवान करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, राह इक्को इक दरसाईआ। कलयुग कहे मेरा चुक्के लेखा, लिख्त मेरी झोली पाईआ। आप मिटावे सर्ब भुलेखा, भाख्या देवे बेपरवाहीआ। वसणहारा साचे देसा, सचखण्ड निवासी फेरा पाईआ। सब दा जाणे पिछला चेता, चातर भुल्ल कदे ना जाईआ । लख चुरासी वेखे जीव कौड़ा रीठा, रीठा कौड़ा भन्न वखाईआ। जिस ने इक बणाया बेटा, शब्दी सुत दए वड्याईआ। सो आया तीर्थ तट वेखदा खेटा, खेवट आपणा पन्ध मुकाईआ। दो जहानां बण के नेता, नित नवित्त आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग अन्तिम धर के भेखा, पूरब लेखा दए चुकाईआ। सहँसर मुख गाए शेशा, दो सहँसर जिह्वा नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धरनी धरत

दए वड्याईआ। कलयुग कहे धरनी धरत, धौल धवला हरि आया बेपरवाहीआ। निरवैर हो के आया परत, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। मेहरवान हो के दित्ता दरस, तरस रहमत आप कमाईआ। जन भगतां मेटी हरस, हासल अंक आपणे नाल मिलाईआ। लेखा जाण फर्श अर्श, आशक बणया बेपरवाहीआ। जिस दी गुर अवतार पीर पैगम्बर लौंदे शर्त, सो शरायत रिहा जणाईआ। जुग चौकड़ी जो पिच्छे रहि गया फ़र्क, अन्तिम पूरा दए कराईआ। चार युग दा लेखा करे तरक, तुरत आपणा हुक्म वरताईआ। ना कोई संजम नेम दस्से बरत, हवन पूजा पाठ घृत दीप तेल बाती वट्टी जगत ना कोए वटाईआ। साचा मार्ग आत्म परमात्म फड़ के पाए आपणी सड़क, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। निरगुण हो के सरगुण नाल करे आपणी लिख्त पढ़त, लिख्त पढ़त आपणा नाम जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, रहमत इक्को इक वखाईआ। कलयुग कहे मेरी सुणो कूक, कुला ख़ाली दयां दुहाईआ। अन्दरों दिसां ख़ाली भूक, वस्त नज़र कोए ना आईआ। कलयुग जीव होए कपूत, पुत्त पिता ना कोए मनाईआ। कूड़ी तृष्ना सब नूं लग्गी भूख, भुक्ख्यां धीर ना कोए धराईआ। मन वासना कारण धुखौंदे धूप, संधया बाती तेल जगाईआ। ढोले गौंदे आपणी कूट, सोहला राम ना कोए जणाईआ। गूढ़ी नींदे सारे सुत्ते घूक, बिन सतिगुर पूरे जाग ना कोए खुल्लाईआ। बौहड़ी मेरी अन्तिम चुकणी कूक, श्री भगवान रिहा चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धार रिहा समझाईआ। कलयुग कहे वेखो धार, धर्म आत्मा आप जणाइंदा। प्रगट हो कल्की अवतार, कल कलेश सर्ब गंवाइंदा। मरदी मरदी गुरमुख आत्म लए तार, डुबदी डुबदी पार कराइंदा। सड़दी सड़दी देवें ठार, अमृत मेघ इक बरसाइंदा। वड़दी वड़दी वेखे डूंघी गार, काया कवरी भँवरी विचों बाहर कढ्ढाइंदा। गर्मी सर्दी ना करे कोई विचार, छे रुत्त बारां मास दिवस दिन घड़ी पल आपणा हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाइंदा। कलयुग कहे मैं होया बेहाल, बिहबल हो के देवां दुहाईआ। मेरा संग अन्त निभया ना किसे नाल, पल्लू सारे गए छुडाईआ। साचा दिसे ना कोए दलाल, वणज वणजारा नज़र कोए ना आईआ। वेखां इक अवल्लड़ी चाल, बेपरवाह रिहा चलाईआ। सच दवारिओं आवे मार के छाल, शाला आपणा रूप वटाईआ। हालत आपणी लए संभाल, अलामत लावे सर्ब लोकाईआ। जलवा देवे नूर जलाल, जलवागर फेरी पाईआ। कामल मुर्शद खेल करे कमाल, अवल्ल आपणा नूर दरसाईआ। सही सलामत दीन दयाल, अज़मत आपणी दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, घर बग़ावत वेखे लड़ाईआ। कलयुग कहे वेखो बग़ावत, बाग़ी घर घर नज़री आइंदा। नार कन्त लग्गी अदावत, दाअवे नव नौ चार वखाइंदा। साची

करे ना कोए सख़ावत, सख़ी रूप ना कोए वटाइंदा। चारौं कुण्ट कूड़ी आदत, अदल इन्साफ़ ना कोए कमाइंदा। सच दिसे ना कोए इबादत, कलमा हक़ ना कोए पढ़ाइंदा। श्री भगवान कलयुग अन्तिम सब नूं करे फ़ारग़, फ़ैसला इक्को वार सुणाइंदा। भेव ना पाए कोई आरफ़, हरफ़ां विच ना कोए समझाइंदा। जिस जन करे कराए आप तुआरफ़, दोहरी धार खेल वखाइंदा। कलयुग कहे मेरी करो सफ़ारिश, सतिजुग त्रेता द्वापर तेरे अग्गे वास्ता पाइंदा। प्रभू प्रगट होया कलयुग अन्तिम भारत, इबारत आपणी आप लिखाइंदा। दो जहानां बण महावत, ऐराप्त हाथी सेवा लाइंदा। साची करन आए अदालत, अदल आपणे हथ्थ वखाइंदा। बिन भगतां किसे ना देवे शनाख़त, शेख़ी सब दी आप मिटाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी प्रभ नूं इक अलामत, अलैहदा आपणी कार कमाइंदा। बैठा रहे सही सलामत, दुःख रोग विच कदे ना आइंदा। उठो मेरी देवो कोई ज़मानत, दोए जोड़ वास्ता पाइंदा। मेरे घर नज़र ना आए कोई अमानत, सब दा लेखा खा खा आपणा शुकर मनाइंदा। वक्त गंवा के पता लग्गा हरि का नाम नयामत, बिन हरि नामे पार ना कोई कराइंदा। नाम जपण दी किसे नहीं ममानत, जो उपज्या सो हरि का रूप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आपणी कार कमाइंदा।

दिल्ली तख्त दिली दिलदार, दिलबर आपणा फेरा पाइंदा। हरि का तख्त सच मनार, मीनाकारी आप कराइंदा। जड़त जड़े अगम्म अपार, घाड़त घड़त आपणे हथ्थ रखाइंदा। बाढी घड़े ना कोए तरखाण, लोहार वंड ना कोए वंडाइंदा। जिस उपर बहे श्री भगवान, सो तख्त गुरमुखां अन्दर आप रखाइंदा। रहबर बहि के देवे ज्ञान, आपणा नाम समझाइंदा। दिली तख्त कर परवान, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। दिलबर बण शाह सुल्तान, दिल दी कहाणी दिल दी राणी दिल दिल नाल मिलाइंदा। धुर दा मेला धुर दी बाणी, धुर दा कन्त धुर दी सवाणी, धुर दी तपत धुर दा पाणी, धुर दा मेला धुर दा हाणी, दर घर साचे सोभा पाइंदा। दिली तख्त बहे दिलदार, दलिद्दर नज़र कोए ना आईआ। सिधी सादी करे गुफ़तार, रमज़ रमज़ नाल मिलाईआ। जिस तख्त बैठे आप निरँकार, शहिनशाह सोभा पाईआ। सो तख्त नज़र ना आए विच संसार, जगत नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। जिस दिलबर नाल गुर अवतार पीर पैगम्बर करदे गए प्यार, प्रेम प्रीती मंग मंगाईआ। आपणी काया काअबा खोल्ह् किवाड़, उच्ची कूक सद्दा देंदे रहे वाहो दाहीआ। आ वस साडे सांझे यार, घर मैंडे फेरा पाईआ। तैंडे नाल करां प्यार, पैंडे कूड़े पन्ध मुकाईआ। तेरा वेख नूर जलवा जलाल, आपणा आप हलाल दयां कराईआ। छुरी चले बेमिसाल, जिस दी मिसल सके ना कोए बणाईआ। सो तख्त सोहे ओस धर्मसाल, जिस दर वसे बेपरवाहीआ। एहो सिफ्त

शाह करे कंगाल, क्यों ग़रीबां अन्दर साचे तख्त आपणा आसण लाईआ। जुग चौकड़ी जिस दी करदे रहे भाल, सो भला माणस मुंडा मुशटंडा आपणा रूप वटाईआ। बण के दलील दिलबर दलाल, दौलत महा-बदौलत दए वखाईआ। बिन हरि हरि का कोई ना जाणे स्वाल, गुर अवतार जो सुणया सो ढोला गए गाईआ। अन्तिम सब दा होया ज़वाल, ज़ालम बणया आप कसाईआ। प्रभ का खेल सदा कमाल, कामल मुर्शद आप कराईआ। दिली तख्त गुरमुखां करे बहाल, जिस उपर राजा वसे शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची खेल ख़ालस आप कराईआ।

✪ ३ भाद्रों २०२० बिक्रमी हरि भगत दुआर जेठूवाल बीबी चरणी रूपो वाली दे नवित्त ✪

शाहो भूप हरि सुल्तान, सो पुरख निरँजण खेल रचाइंदा। धर्म दुआरे सच निशान, दरगाह साची आप झुलाइंदा। नाम संदेसा धुर फ़रमान, आदि जुगादी आप सुणाइंदा। जुग चौकड़ी खेल महान, करनी करता आप कमाइंदा। खेले खेल श्री भगवान, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे आण, निरगुण सरगुण धार वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म श्री भगवान, एका एक एक वरताईआ। दूजा दिसे ना कोए निशान, रंग रूप ना कोए वखाईआ। गहर गम्भीर एका काहन, तत सरीर ना कोए वखाईआ। देवणहारा साचा दान, मुकामे हक़ हट्ट चलाईआ। लाशरीक नौजवान, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। कलयुग अन्त हो प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाईआ। चौथे युग बदल देवे नज़ाम, अदालत हक़ इक वखाईआ। चार वरन अठारां बरन देवे इक कलाम, कलमा नबी रसूल पढ़ाईआ। क्षत्री ब्राह्मण शूद्र वैश देवे नाम, नाउँ निरँकारा इक जणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान होवे हैरान, खाणी बाणी समझ कोए ना आईआ। निरगुण सरगुण करे खेल वाली दो जहान, वड दाता आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी कलयुग अन्त, सो साहिब आप कराइंदा। खेले खेल श्री भगवन्त, भगवन आपणी धार चलाइंदा। बोध अगाधा मणीआ मंत, शब्द अनादी राग अलाइंदा। गुरमुख विरला जाणे सन्त, लख चुरासी भरम भुलाइंदा। नार मिलावा हरि हरि कन्त, कन्तूहल इक्को सेजा सोभा पाइंदा। गढ़ तोड़ हउमें हंगत, हँ ब्रह्म आप दरसाइंदा। धुरदरगाही इक्को पंडत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग आप लगाइंदा। साचा मार्ग देवे ला, बेअन्त हथ्थ वड्डी वड्याईआ। कलयुग धार दए बदला, दो जहानां हुक्म वरताईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल दए सुहा, ज़िमीं असमान गगन गगनंतर

खोज खुजाईआ। रहबर बणे इक खुदा, लाशरीक फेरा पाईआ। दीन मज़्ब ज़ात पात जो जुज़ बणे जुदा, अन्तिम मेला इक मिलाईआ। आत्म ब्रह्म घर घर दए वखा, बंद ताकी कुण्डा लाहीआ। साची हाटी दए समझा, वणज वणजारा बेपरवाहीआ। कूड़ी रैण अन्धेरी राती दए मिटा, सतिगुर साचा शब्दी चन्द चढ़ाईआ। धुर दी गाथी दए समझा, पिछला लेखा पढ़न कोए ना आईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले धर्म जमाती लए उठा, पट्टी इक्को नाम वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म अन्त अतीत, त्रैभवन धनी खेल खिलाईआ। नाता तोड़ मन्दिर मसीत, शिवदुआले मट्ठ डेरा ढाहीआ। घर विच घर वखाए ठीक, कूड़ी ठीकर भन्न वखाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक दूजे दा मिल मिल गाए गीत, सोहँ ढोला राग अलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां विचों बदले कोई ना पीठ, पिच्छा दे ना मुख भवाईआ। कलयुग अन्तिम कूड़ी मिटणी रीत, सतिजुग साचा नूर धराईआ। चार वरन अठारां बरन सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी गाउणा इक्को गीत, ढोला सोहला राग अलाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर निहकर्मी इक्को मिले मीत, सच स्वामी दरस दिखाईआ। ठाकर हो के वसे चीत, ठोकर आपणे नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल करे बेपरवाहीआ। साचा खेल कराए आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जुग चौकड़ी देवे जाप, गुर अवतार पीर पैगम्बर भगत भगवान साध सन्त आप पढ़ाईआ। अक्खर वक्खर खाणी बाणी लिख लिख सच संदेसा जाए आख, आख़र आपणी कार कमाईआ। कलयुग अन्तिम सृष्ट सबाई होई गुसताख़, गुस्सा घर घर फेरा पाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार होई प्रभात, कूड़ी क्रिया बैठी रंग रंगाईआ। साचे मन्दिर तन अन्दर कोई ना सुणे नाद, ढोलक छैणे गा गा रसना जिह्वा होई हल्काईआ। सति सरूप ना कोई विस्माद, बिस्मिल धार नज़र ना आईआ। अन्तर नेत्र खुल्ही ना किसे जाग, दोए लोचण देण दुहाईआ। दुरमति मैल ना धुपया दाग़, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। घर कन्त ना मिल्या सुहाग, साची सेज ना कोए सुहाईआ। दीपक दीआ जगया ना कोई चिराग़, जोत निरँजण ना कोए रुशनाईआ। धुर का शब्द ना सुणया आदि, जगत गाथा करी पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका घर वसाईआ। निरगुण सरगुण घर वसेरा, मन्दिर इक्को इक सुहाइंदा। आत्म परमात्म नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। जन भगतां बन्न्हे साहिब बेड़ा, सो पुरख निरँजण सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। लख चुरासी जीव जंत कलयुग क्रिया देवे गेड़ा, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चार कुण्ट दहि दिशा आप भवाइंदा। अन्तिम करे हक़ नबेड़ा, हक़ हकीकत वेख वखाइंदा। साहिब सतिगुर हो दलेरा, धुर दा शब्द आप अलाइंदा। गुरमुखां कहे तूं मेरा मैं तेरा, दूजा

नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलयुग तेरा लेख मुकाइंदा। कलयुग तेरा मुक्के लेख, सो साहिब आप मुकाईआ। कूड़ी क्रिया रहे ना भेख, भेखाधारी दए गंवाईआ। लेखा जाणे पीर पैगम्बर मुल्लां शेख़, मुसायक वेखे थाउँ थाईंआ। पंडत पांधा कोई ना जाणे हरि की रेख, रास मण्डल समझ कोए ना आईआ। ग्रन्थी पन्थी कोई ना पाए भेत, अन्दर वड़ दरस कोए ना पाईआ। गुरमुख विरला सन्त सुहेला सद वेखे नेतन नेत, निज नेत्र ध्यान लगाईआ। सतिगुर स्वामी करे हेत, पुरख अबिनाशी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग लहिणा झोली पाईआ। कलयुग तेरा अन्तिम लहिणा, पुरख अकाल झोली पाईआ। चौथे युग मन्न कहिणा, तेरा वेला रिहा विहाईआ। ना कोई सज्जण ना कोई सैणा, चार यारी बैठी मुख भवाईआ। अल्ला राणी तन श्रृंगार लावे गहिणा, मुहम्मद रोवे नेत्र मारे धाहींआ। सदी चौधवीं वहण वहणा, चौदां तबक पए दुहाईआ। हरि का भाणा सब ने कहिणा, ईसा मूसा बैठे सीस झुकाईआ। उम्मत उम्मत नाल खहिणा, ख़ाह-मख़ाह करे लड़ाईआ। लाड़ी मौत फिरे डाइणा, घर घर डौरु वाईआ। गुरमुख विरला मात रहिणा, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाईआ। धुर फ़रमाना एकँकार, अक्ल कलधारी आप सुणाइंदा। कूड़ कुड़यारा मेटे संसार, जूठ झूठ रहिण ना पाइंदा। माया ममता गढ़ तुटे हँकार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार डेरा ढाइंदा। सतिगुर तुट्ठे एका वार, मेहर नज़र उठाइंदा। जुग जन्म दे रुट्ठे मेले मेलणहार, मिलणी आपणा नाम कराइंदा। गुरमुख सुत्ते लए जगा, जागरत जोत इक जणाइंदा। भेव अभेद दए खुल्हा, अनभव आपणा खेल वखाइंदा। जोती जोत कर रुशना, घर दीपक इक टिकाइंदा। अनहद नादी राग सुणा, धुर दा राग अलाइंदा। अमृत आत्म जाम प्या, अठसठ पन्ध मुकाइंदा। नज़री आए इक खुदा, ख़ालस आपणा रूप वखाइंदा। साची नौबत रिहा वजा, डंका इक्को नाम लगाइंदा। महल अटल कर रुशना, सच महिराबे सोभा पाइंदा। साचा नग़मा रिहा गा, तार सितार ना कोए हिलाइंदा। आलम उल्मा रिहा पढ़ा, अलिफ़ ये वंड ना कोए वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलयुग लेखा दए चुका, सिर सिर सब दे भार टिकाइंदा। कलयुग लेखा लहिणा चुक्क, चुक्के चूक लोकाईआ। नेत्र खोल्ह वेख उठ, चारों कुण्ट दुहाईआ। ग़रीब निमाणे रोवण मारे भुक्ख, विष्नूं भण्डार ना कोए भराईआ। ब्रह्मे ब्रह्म नज़र ना आया पारब्रह्म साचा सुत, सुत अपराधी रूप वटाईआ। साढे तिन्न हथ्थ काया अन्दर बैठा लुक, पड़दा सके ना कोए उठाईआ। इक दूजे नूं रहे पुच्छ, कवण दुआरे मिले प्रभू माहीआ। साहिब स्वामी बहि के चुप्प, घर बैठा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ।

कलयुग तेरा चुक्के लेखा, लेखा लिख्त विच बदलाईआ। चार वरन दा मिटे भुलेखा, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। धुरदरगाही देवे इक संदेसा, दो जहान करे पढ़ाईआ। श्री भगवान कलयुग अन्त वटाए वेसा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। मुच्छ दाढ़ी ना कोई केसा, ना को मूंड मुंडाईआ। भगत भगवन्त करे हेता, सन्त सुहेले वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी रखे चेता, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। बण के आवे सब दा नेता, निरगुण दाता रूप वटाईआ। लख चुरासी वेखे काया खेता, घर घर खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, प्रगट हो बेपरवाहीआ। बेपरवाह प्रगट हो, होका नाम जणाईआ। रूप वखाए इक्को सो, हँ आपणी धार जणाईआ। हँ ब्रह्म साची डोर नाम परो, गंढु इक्को इक वखाईआ। कलयुग तेरी वस्त तेरे कोलों खोह, चरणां हेठ लए दबाईआ। सतिजुग लै के आवे ढोआ ढो, सोहँ ढोला इक सुणाईआ। उच्ची कूक कहे मैं भगतां जोगा गया हो, दूजा संग ना कोए रखाईआ। सच प्रकाश करे लो, जगत ज्ञान ना कोए दृढ़ाईआ। अन्तर आत्म दुरमति मैल देवे धो, त्रैगुण लग्गी बसन्तर दए बुझाईआ। आत्म परमात्म जावे छोह, घर साचे वज्जे वधाईआ। मेल मिलाए नेत्र बिन नैण रो, नीर वहौंदा नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरा लेख चुकाईआ। कलयुग तेरी तोड़े शरअ ज़ंजीर, शरीअत विच कदे ना आइंदा। लाशरीक चोटी चढ़ वेखे अख़ीर, आख़र आपणा हुक्म वरताइंदा। बदलणहार सर्ब तकदीर, तदबीर आपणी आप समझाइंदा। हकीकत हक़ वखाए तस्वीर, तसव्वर इक्को नज़री आइंदा। लेखा जाणे शाह हकीर, ऊँच नीच राउ रंक आप समझाइंदा। दीनां नाथ ग़रीब निमाणयां वंडे पीड़, दर्दी दर्दीआं दर्द वंडाइंदा। जन भगतां बजर कपाटी पड़दा देवे चीर, नाम निराला तीर लगाइंदा। अमृत बख्शे इक्को सीर, सांतक सति सति वरताइंदा। पिछली मेट देवे लकीर, फड़ मार्ग अग्गे लाइंदा। हथ्थ फड़ाए नाम शमशीर, बलधारी बल पगटाइंदा। करे खेल वड पीरन पीर, पैगम्बर आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा रंग आप रंगाइंदा। कलयुग अन्तिम चाढ़े रंग, रंग रंगीला फेरा पाईआ। सच सिँघासण बैठ पलँघ, सेज सुहञ्जणी आप सुहाईआ। नाम निधान वजाए मृदंग, बोध अगाध सुणाईआ। पुरी आकाश आपे लँघ, प्रकाश करे थाउँ थाईंआ। बिन चन्दों चढ़ाए आपणा चन्द, बिन सूर्या सूरज करे रुशनाईआ। बिन खाध्यां पीत्तयां देवे अनन्द, अनन्द अनन्द विचों वखाईआ। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द गावे छन्द, घर ढोला इक्को माहीआ। जुग जन्म दी टुट्टी देवे गंढु, कर्म कांड रहिण ना पाईआ। लेखा जाणे जीउ पिण्ड, ब्रह्मण्ड वेखे बेपरवाहीआ। दीन दयाल सदा बख्शंद, बख्शिश आपणी रिहा वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची धारा इक समझाईआ। साची धारा सतिगुर धार, धरनी धरत धवल धराइंदा।

लेखा चुके नव नौं चार, चार यारी पन्ध मुकाइंदा। चार वरन कर ख्वार, साचा मन्त्र इक दृढ़ाइंदा । चार वेद करन पुकार, नेत्र नैणां नीर सर्ब वखाइंदा। शास्त्र सिमरत गए हार, हरि का अन्त कोए ना आइंदा। पुराण अठारां करन विचार, बेपरवाह भेव कोए ना पाइंदा। गीता ज्ञान कहे पुकार, उच्ची कूक कूक अलाइंदा। अञ्जील कुरान धाहां रही मार, महिबूब हथ्थ किसे ना आइंदा। मुहब्बत करे ना सांझा यार, साची सेज ना कोए हंढाइंदा। हक़ करे ना कोए गुफ़तार, गुफ़त शुनीद रूप ना कोए वटाइंदा । खाणी बाणी डिगी मूँह दे भार, फड़ बांहों ना कोए उठाइंदा। गुर का शब्द कोई ना सके विचार, कलयुग जीव भरम भुलाइंदा। नाता जुड़या कूड़ी नार, जगत नारी इच्छया रूप वखाइंदा। साचा करे ना कोई दीदार, दीद ईद चन्द ना कोए चमकाइंदा। कलमा काअबा दोवें होए ख्वार, सच नवाबा मेल ना कोए मिलाइंदा। आफ्ताब ना कोए उज्यार, नूरी जलवा ना कोए धराइंदा। महिराब करे ना कोए आदाब, सजदा सीस ना कोए निवाइंदा। अन्तिम सब नूं मिले अज़ाब, अदल इक्को इक कमाइंदा। कलयुग तेरी ख़ता कोई ना करे मुआफ़, मुफ़लस जीव घर घर नज़री आइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा लैंदे रहे ख़ुआब, सो ख़ैरख़ाह आपणा रूप वटाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा पाक, पतित पापी पार कराइंदा। कलयुग अन्त सतिजुग खोल्हे ताक, दर दरवाज़ा इक वखाइंदा। पूरा करे भविक्ख्त वाक, भविश आपणे हथ्थ रखाइंदा। सन्त सुहेले सच्चे साक, सज्जण गुरमुख आप बणाइंदा। काया माटी वेख हाट, वस्त अमोलक विच टिकाइंदा । गुप्त हो के करे बात, ज़ाहर हो के ज़ारो ज़ार रुवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। कूड़ी क्रिया मिटे धन्दा, कल अन्त रहिण ना पाईआ। बंदगी लग्गे बंदगी वाला बंदा, बंदीख़ाना दए तुड़ाईआ। सतिगुरू दुआरे कोई ना रहे गंदा, सच सुगंध इक वखाईआ। घर प्रकाश करे नव चन्दा, चन्द चांदनी आप चमकाईआ। भेव खुल्हाए खण्ड ब्रह्मण्डा, ब्रह्मण्ड खण्ड घर घर दए वखाईआ। सृष्ट सबाई गाए इक्को छन्दा, इक्को ढोला राग अलाईआ। मनमुख नेत्रहीण कोई ना रहे अन्धा, अन्ध अन्धेर सर्ब गंवाईआ। शब्द गुर शब्द वखाए इक्को डण्डा, लख चुरासी सीस लगाईआ। तिक्खी धार जणाए खण्डा, लोहार तरखाण ना कोए घड़ाईआ। गुरमुख कोई ना रहे रंडा, हरि कन्त लए प्रनाईआ। मेल मिलाए सूरा सरबँगा, मिलणी इक्को घर वखाईआ। मंदयों करे चंगा, पूरे सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त बण बण मित, भगत वछल गिरवर गिरधार, ठाकर स्वामी मीत मुरार, सृष्ट सबाई जीव जंत साध सन्त श्री भगवन्त हरि कन्त नज़री आईआ।

✪ ३ भाद्रों २०२० बिक्रमी मांगा सराए सुरजन सिँघ महिन्दर सिँघ गुरबचन सिँघ बसन्त कौर ज़िला अमृतसर ✪

सतिजुग कहे उठ त्रेता, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। पारब्रह्म प्रभ वेख इक्को नेता, दो जहानां वाली नज़री आईआ। गुर अवातारां पीर पैगम्बरां पूरब कराए चेता, पिछला लेखा रिहा जणाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा खोल्हणहारा भेता, अनभव आपणी कार कमाईआ। लख चुरासी विचों जन भगतां नाल करे हेता, प्रेम प्रीती इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा रचाईआ। त्रेता कहे उठ द्वापर, दोए दोए धार प्रभू जणाईआ। दो जहानां की रिहा वापर, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान समझ कोए ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर नाम संदेसा दे दे गए पात्र, बोध अगाध लेख लिखाईआ। चार वरन अठारां बरन नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप बणया चातर, निरगुण समझ कोए ना पाईआ। पुरख अबिनाशी साचे अस्व पावे पाखर, सोलां कलीआं इक शृंगार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। द्वापर कहे उठ कलयुग, कल काती वेख वखाईआ। तेरी औध रही पुग, वेला वक्त विहाईआ। सच ना दिसे कोई रुत्त, रुतड़ी नाम ना कोए महकाईआ। चार कुण्ट दिसे भुक्ख, हरि का नाम झोली कोए ना पाईआ। उजल करे ना कोई मुख, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। सति सरूप नज़र ना आए कोई मनुक्ख, माणस बैठे भेव गंवाईआ। वेखणहारा साहिब स्वामी अबिनाशी अचुत, चेतन आपणी धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रचना आप समझाईआ। कलयुग कहे सतिजुग मीत, मित्र प्यारे तेरी वड वड्याईआ। कूड़ कुड़यारी मेरी रीत, जन भगतां प्रीत ना कोए लगाईआ। काया होई ना ठांडी सीत, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। हरि का नाम किसे हथ्थ ना आए मन्दिर मसीत, मुल्लां शेख मसायक पंडत पांधे रहे कुरलाईआ। निरवैर पुरख दीन दयाल करन सर्ब उडीक, गुर अवतार बैठे ध्यान लगाईआ। कवण वेला प्रगट होवे लाशरीक, शिरकत सब दी दए गंवाईआ। चार युग दी वेखे आदि तारीख़, तवारीख़ फोले थाउँ थाईंआ। शाह सुल्तान राज राजान दर दरवेश मंगण भीख, घर घर बैठे अलख जगाईआ। साचा ताज दिसे ना किसे सीस, जगदीश मिले ना कोए वड्याईआ। कलमा नबी ना कोए हदीस, हज़रत हक़ ना कोए पढ़ाईआ। मन वासना लए ना कोए जीत, माया ममता होए हल्काईआ। आत्म परमात्म ढोला गाए कोए ना गीत, चौदां विद्या पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी हर घट सुत्ता दे कर पीठ, करवट सके ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप वरताईआ।

सतिजुग कहे त्रेते सज्जण, हरि साचा सच जणाइंदा। एका वार कर मजन, सर सरोवर इक नुहाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर साचा मार्ग आए दस्सण, रहबर इक्को नज़री आइंदा। हर हिरदे अन्दर आए वसण, काया मन्दिर अन्दर डेरा लाइंदा। तीर निराला मारे कसण, अणयाला आप चलाइंदा। कूड़ विकारा चरणां हेठ आए झस्सण, सच सुच इक ज्ञान दृढ़ाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी दहि दिशा जन भगतां पिच्छे आए नट्ठण, बण पांधी पन्ध मुकाइंदा। लख चुरासी छाछ वरोले मक्खण, नाम मधाणा इक्को पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार आप कराइंदा। त्रेता कहे द्वापर संग, सगला संगी आप अख्वाईआ। उठ वेख वज्जे मृदंग, मर्द मर्दाना रिहा सुणाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड आया लँघ, पुरी लोअ चरणां हेठ दबाईआ। दो जहानां मेट पन्ध, दर घर साचे सोभा पाईआ। आत्म परमात्म दए अनन्द, निजानंद इक समझाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म ढोला गाए छन्द, तेरा मेरा राग अलाईआ। दूई द्वैती ढाहे कंध, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। खेले खेल विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड खोज खुजाईआ। गुरमुख वेखे नूरी चन्द, चन्द चांदनी मुख शरमाईआ। आत्म सेज सुहाए पलँघ, पावा चूल ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी रिहा कमाईआ। द्वापर कहे कलयुग उठ, नेत्र नैण उग्घाड़। अबिनाशी करता रिहा तुठ, वेखणहारा जंगल जूह उजाड़ पहाड़। नाल रलाया गोबिन्द सुत, शब्द अगम्मी खेल अपार। करे खेल अबिनाशी अचुत, निरगुण दाता वड बलकार। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कोलों रिहा पुच्छ, चार युग दा लेखा दयो वखाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्ची सरकार। कलयुग कहे सतिजुग साथी, सगला संग निभाईआ। तेरा मेल पुरख अबिनाशी, दर घर साचे सोभा पाईआ। मण्डल पावे इक्को रासी, गोपी काहन नचाईआ। निर्मल जोत करे प्रकाशी, प्रकाशवान बेपरवाहीआ। लख चुरासी करे बंद खुलासी, बंदीख़ाना तोड़ तुड़ाईआ। जुग चौकड़ी करनहारा राखी, तेरा साथी इक्को नज़री आईआ। मेहरवान हो के मन्न मेरी आखी, आख़र तेरे नाल जोड़ा ल्या जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा समझाईआ। सतिजुग कहे त्रेते जाग, त्रैगुण अतीता खेल कराइंदा। सच महल्ले लाया भाग, दर घर सच्चा इक वसाइंदा। निर्मल जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर ना कोए रखाइंदा। शब्द अगम्मी गाए गाथ, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। चार वरन बणाए इक जमात, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को रंग रंगाइंदा। नाम निधाना देवे दात, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। सच प्रीती बन्ने नात, नाता बिधाता वेख वखाइंदा। नज़री आए इक इकांत, सचखण्ड निवासी दर घर साचे आसण लाइंदा। खोलणहारा बंद ताक, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। पूरा करे भविक्खत वाक, लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। देवे दरस बण सज्जण

साक, सगला संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाइंदा। त्रेता कहे द्वापर झाक, पड़दा इक उठाईआ। अबिनाशी करता करे खेल तमाश, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण देवे साथ, समरथ पुरख वड्डी वड्याईआ। आत्म परमात्म जोड़े नात, घर साचे मेल मिलाईआ। रहिण ना देवे मनमति कमज़ात, गुरमति इक्को करे पढ़ाईआ। कूड़ी मेटे अन्धेरी रात, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। खोल्हणहारा बंद ताक, पर्दा आपणा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार रिहा समझाईआ। द्वापर कहे कलयुग कुलवन्त, कुलधारी वेख वखाईआ। लख चुरासी जिस उपाया जीव जंत, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज रिहा समाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर जणौंदा रिहा नाम मंत, मन्त्र आपणा नाम समझाईआ। आत्म परमात्म बणदा रिहा नार कन्त, घर सज्जण सेज हंढ्ढाईआ। भेव खुलौंदा रिहा साचे सन्त, भगत भगवान कर पढ़ाईआ। गुर अवतारां बणौंदा रिहा बणत, पीर पैगम्बर नाल रलाईआ। नाम निधाना वजौंदा रिहा संख, अनहद नादी नाद सुणाईआ। जुग चौकड़ी करदा रिहा अन्त, थिर कोए रहिण ना पाईआ। आपणी महिमा दस्से अगणत, लेखा लिख सके कोए ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चारों युग नेत्र नैण रिहा खुल्हाईआ। चारे युग करन सलाह, इक दूजे नाल मता पकाईआ । गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे लओ ध्या, अन्तर इक ध्यान लगाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान बणाओ गवाह, शहादत देण थाउँ थाईंआ। कलयुग जीव भुल्ले प्रभ का नाँ, नाउँ निरँकारा नज़र किसे ना आईआ। कोई खाए सूर कोई खाए गां, मन वासना सके ना कोए मिटाईआ। काया मन्दिर अन्दर सच भूमिका दिसे ना कोए थाँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। चारे युग हो इकट्ठे, एका एक ध्यान लगाईआ। खाणी बाणी धुर दी देंदे रहे पते, पतिपरमेश्वर हुक्म सुणाईआ। भगत भगवान उपर प्रीती विरले रत्ते, रत्ती रत जिन्हां सुकाईआ। सच सरनाई एका ढट्ठे, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग चौकड़ी लेख मुकाईआ। सतिजुग कहे मैं होया पार, पार किनारा प्रभू कराईआ। मेरे अन्तर अठारां अवतार, अट्ठ दस ढोला गए गाईआ। त्रेता कहे खेल करे करतार, कुदरत करता वेख वखाईआ। लहिणा देणा चुकाए विच संसार, वड संसारी बेपरवाहीआ। दोए दोए रूप धर निरँकार, निरगुण सरगुण करी कुड़माईआ। अन्तिम सब नूं आई हार, जित नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म आप वरताईआ। द्वापर कहे प्रभ खेल अगम्म, हरि करता आप कराइंदा। ना मरे ना पए जम्म, मात गर्भ ना फेरा पाइंदा। पवण स्वास ना कोए दम, रसना

जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। हड्ड मास नाड़ी ना कोए चम्म, रक्त बूँद ना वंड वंडाइंदा। हरख़ सोग ना कोए ग़म, चिन्ता रंग ना कोए रंगाइंदा। मात पित ना जननी जन, गोदी गोद ना कोए रखाइंदा। ना घड़े ना कोई देवे भन्न, घड़न भंनणहार आप हो जाइंदा। जुग चौकड़ी गुर अवतार घल्ल, सच संदेसा इक सुणाइंदा। दोए दोए रूप खेल प्रबल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, द्वापर लेखा आप मुकाइंदा। कलयुग कूके कूक पुकार, उच्ची उच्ची आख सुणाईआ। हरि का खेल कोई ना पावे सार, महासार्थी बेपरवाहीआ। हुक्मे अन्दर वरते वरतार, वारता आपणी दए जणाईआ। बोध बोधा भेव न्यार, नाद अनादा नाद वजाईआ। ईसा मूसा मूसा ईसा ख़बरदार, कलमा नबी इक पढ़ाईआ। लेखा जाण मुहम्मद यार, जलवा नूर नूर इलाहीआ। नानक गोबिन्द एका धार, घर मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी सेवा सर्ब लगाईआ। जुग चौकड़ी सेवादार, चाकर चाकरी सर्ब कमाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव बणन पनहार, दर दर घर घर आप फिराइंदा। गुर अवतार बोल जैकार, धुर संदेसा नाम सुणाइंदा। पीर पैगम्बर उच्ची कूक कूक वाजां रहे मार, हक़ हकीकत सर्ब समझाइंदा। नानक मन्त्र दस्सया एका वार, नाम सति सर्ब पढ़ाइंदा। गोबिन्द बोल फतहि जैकार, डंका इक्को इक वजाइंदा। जुग चौकड़ी मंगदे गए बण भिखार, दोए दोए जोड़ वास्ता सर्ब पाइंदा। कलयुग अन्त श्री भगवन्त चौथे युग आवे परवरदिगार, जलवा नूर नूर प्रगटाइंदा । मुकामे हक़ हक़ दीदार, देवणहार आप करतार, करनी करता आप कमाइंदा। सम्बल सुहाए बंक दुआर, महल अटल उच्च मनार, टिल्ला पर्बत भेव कोए ना पाइंदा। शब्द अनाद बोले जैकार, पुरीआं लोआं पावे सार, चौदां चौदां लोकां खोल्ह किवाड़, चौदां तबकां दए वखाल, बेनज़ीर सच्चा शहिनशाहीआ। निरगुण हो के बणे दलाल, सन्त सुहेले लए उठाल, गुर चेले मेले आण, भगत भगवान देवे दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। कलयुग अन्त चुकाए काण, कूड़ी क्रिया मिटे निशान, सच सुच करे प्रधान, साची सिख्या इक समझाईआ। दो जहानां बण के काहन, धर्म उठाए इक निशान, ब्रह्मण्डां खण्डां पावे आण, वरभण्ड एका हुक्म मनाईआ। दाता सूरबीर बलवान, योद्धा इक्को नौजवान, शब्द खण्डा तीर कमान, चिल्ला भथ्था आपणा नाउँ जणाईआ। निरगुण नूर शाह सुल्तान, प्रगट हो अगम्मी राम, दामनगीर पकड़े दाम, ज़ामन इक्को नज़री आईआ । अबिनाशी करता साचा काहन, लेखा जाणे दो जहान, बंसुरी वजाए नाम महान, धुन अनाद इक्को इक शनवाईआ। पिता पूत वेखे आण, ईसा मंगया एका दान, परवरदिगार खेल करे महान, जलवा नूर नूर प्रगटाइंदा। मुहम्मद लेखा लए जाण, अमाम अमामां हो प्रधान, सदी चौधवीं खेल महान, ख़ालक ख़लक पड़दा लाहइंदा। नानक निरगुण वेखे मार ध्यान, सचखण्ड दुआर सोहे इक मकान,

२१३
१५

पुरख अबिनाशी देवे धुर फ़रमान, सच संदेसा नाम सुणाइंदा। गोबिन्द सूरा बण के पुत्त, गोद सुहञ्जणी इक सुहाईआ। अन्दर वड़ के लए पुच्छ, पुरख अकाल भेव खुलाईआ। कवण वेला निरगुण हो सुहाए रुत्त, निरवैर आपणा फेरा पाईआ। जोती धारों पए उठ, ना कोई पिता ना कोई माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे हथ्थ वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे मंगण, दोए दोए जोड़ ध्यान लगाईआ। कवण वेला प्रभ लाए अंगन, अंगीकार इक अख्वाईआ। सच अनन्द देवें अनन्दन, अनन्द आपणे विचों प्रगटाईआ। जगत नाता तुट्टे बन्धन, बंदगी तेरी विच समाईआ। तेरा ढोला इक्को छन्दन, गा गा शुकर मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव दे खुलाईआ। चार युग दे गुर अवतार, तेई अवतार ध्यान लगाईआ। भगत अठारां करन पुकार, पुनह पुनह सीस झुकाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। कवण वेला प्रभ पड़दा देवें पाड़, मुख नक़ाब नज़र ना आईआ। नानक गोबिन्द मंगे प्यार, चरण धूढ़ सच्ची सरनाईआ। तेरा खेल पुरख अकाल, जुग चौकड़ी समझ कोए ना पाईआ। तेरी महिमां गा गा होए बेहाल, सिफ्ती तेरी सिफ्त ना कोए सुणाईआ। नित नवित्त अवल्लड़ी चाल, चाल निराली आपणे विच छुपाईआ। सच संदेसा दे गोपाल, पारब्रह्म प्रभ तेरी वड वड्याईआ। कवण वेला लख चुरासी जीव जंत साध सन्त लएं संभाल, सम्बल आपणा डेरा लाईआ। लेखा चुक्के शाह कंगाल, ज़ात पात ऊँच नीच रहिण कोए ना पाईआ। चार वरनां दिसे इक्को धर्मसाल, शिवदुआला मट्ठ इक्को घर वखाईआ। दिवस रैण बणें प्रितपाल, बण सेवक सेव कमाईआ। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर निरगुण चल्ले नाल नाल, जगत विछोड़ा नज़र कोए ना आईआ। तेरे नाम दा वज्जे ताल, अनहद नादी नाद सुणाईआ। अमृत आत्म देणा प्याल, अठसठ खैहड़ा देणा छुडाईआ। साचा मन्दिर वखाउणा इक्को धर्मसाल, साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत करें रुशनाईआ। आ के पुच्छें मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। भगत भगवन्त लएं उठाल, लख चुरासी विचों खोज खुजाईआ। गुरमुख वेखें आपणे लाल, गुर गुर गोद उठाईआ। नेड़ ना आए काल महाकाल, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चारे इक्को वार करन स्वाल, बण स्वाली मंग मंगाईआ। किरपा कर दीन दयाल, दीन रोवण मारन धाहींआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साहिब तेरी सच सरनाईआ। चारे युग कट्ठे रोवण, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। गूढ़ी नींद कदे ना सोवण, सुख नज़र कोए ना आईआ। जुग जुग आपणा बीज बोवण, फल वढ्ढण थाउँ थाईंआ। कर्म धर्म दोवें ढोवण, सिर आपणा भार उठाईआ। खुलड़े केस सारे खोवण, उच्ची कूक कूक कुरलाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा दए जणाईआ। धुर दा लेखा सुणो एक, एकँकार आप जणाइंदा। चौथे युग मिटणा भेख, नव नौं चार पन्ध मुकाइंदा। अबिनाशी करता खेले खेड, बण खिलाड़ी वेख वखाइंदा। गुरमुख विरले देवे आपणा भेत, लख चुरासी भरम भुलाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे वेख, सचखण्ड दुआरे पड़दा आप उठाइंदा। दूई द्वैती मेटणहारा रेख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। चार युग करन पुकार, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। तूं सर्ब जीआं दा सांझा यार, बेऐब नूर खुदाईआ। कर मुहब्बत मीत मुरार, महिबूब सच गोसाईंआ। कातब कोई ना बणे तेरा लिखार, लेखा लिख ना कोए समझाईआ । दर मंगदे पीर पैगम्बर कर निमस्कार, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। चौदां तबक हाहाकार, आबेहयात ना कोए प्याईआ। सदी चौधवीं होण दुख्यार, दुखियां दर्द ना कोए वंडाईआ। गोबिन्द लेखा लिख के गया अपार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सदी बीसवीं वाजां रही मार, पुरख अकाल मिले सच्चा माहीआ। चारों कुण्ट होए बेहाल, दहि दिशा धीर ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार युग दा अन्त अख़ीर, आप वखाए पीरन पीर, बेपरवाह बेपरवाहीआ। चारे युग रहो तैयार, सो साहिब आप सुणाईआ। हरि पुरख निरँजण खेल करे अपार, अपरम्पर आपणी धार जणाईआ। एकँकार होया बेदार, ग़फ्लत सब दी दए गंवाईआ। आदि निरँजण कर उज्यार, कूड़ अन्धेरा दए मिटाईआ। अबिनाशी करता सच निशान, धर्म दुआरे इक झुलाईआ। श्री भगवान पावे सार, हर घट वेखे थाउँ थाईंआ । पारब्रह्म ब्रह्म दए उठाल, सोया कोए रहिण ना पाईआ। त्रैगुण माया तोड़े जंजाल, पंज तत करे शनवाईआ। निरगुण खेल करे कमाल, कामल मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। दो जहानां बण दलाल, वणज वणजारा इक्को हट्ट खुलाईआ। लेखा जाणे शाह कंगाल, शाहो भूप सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। चारे युग वाजां रहे मार, आपणा ध्यान लगाईआ । होवो सहाई गुरू अवतार, पीर पैगम्बर वड वड्याईआ। चारों कुण्ट धूंआँधार, जगत अन्धेरा गया छाईआ। ना कोई सज्जण मीत मुरार, साक सैण बंधप नज़र कोए ना आईआ। कूड़ी क्रिया करया श्रृंगार, मन ममता रहे हंढ्ढाईआ। धीआं भैणां करन व्यपार, नेत्र नैण लाज कोए ना आईआ। माँ पुत्तर करन प्यार, भय्या भैण सेज हंढ्ढाईआ। नज़र ना आए इक निरँकार, नर नरायण दरस कोए ना पाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण पढ़ पढ़ गए हार, पढ़यां पन्ध ना कोए मुकाईआ। किरपा कर दीन दयाल, ठाकर तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। श्री भगवान हो मेहरवान, धुर संदेस इक जणाईआ। चारे युग करो ध्यान, नौं सौ

चुरानवे चौकड़ी युग नाल मिलाईआ। ब्रह्मावेता होया हैरान, चारे मुख ना कोए खुल्हाईआ। शंकर ख़ाक रिहा छाण, धूढ़ी टिक्का मस्तक ना कोए रमाईआ। विष्नूं विश्व तुटा माण, सांगोपांग ना सोभा पाईआ। करोड़ तेतीस सर्ब पछताण, सुरप्त इन्द दए दुहाईआ। पीर पैगम्बर मंगण दान, दर बैठे सीस झुकाईआ। गुर अवतार करन परवान, हरि का नाउँ सहिज सुखदाईआ। कलयुग अन्त खेल करे महान, बेअन्त वड वड्याईआ। सृष्ट सबाई देवे इक्को ज्ञान, दूजी करे ना कोए पढ़ाईआ। इक्को मन्दिर सच वखाए मकान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप जणाईआ। साचा भेव लैणा जाण, श्री भगवान आप समझाइंदा। प्रगट होया गुण निधान, गुणवन्ता वेख वखाइंदा। कूड़ी क्रिया शरअ मेटे शैतान, साख्यात आपणा हुक्म वरताइंदा। दो जहान बरदे करे ग़ुलाम, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर निउँ निउँ करन प्रणाम, सजदा इक्को इक समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग कलमा नाम आप पढ़ाइंदा। कलयुग वेख खोल्ह अक्ख, सो साहिब साहिब समझाईआ। द्वापर प्रभू एक प्रतख, पारब्रह्म जोत रुशनाईआ। त्रेते दो जहानां उठ उठ दस्स, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। सतिजुग साचे घर घर वस, एका नाम कर पढ़ाईआ। श्री भगवान करे खेल पुरख समरथ, दूजा नज़र कोए ना आईआ। लहिणा चुक्के सीआं साढे तिन्न हथ्थ, घर मन्दिर वज्जे वधाईआ । भगत भगवान लए रख, रक्षया करे थाउँ थाईंआ। सच ख़जाने लए घत्त, खोटे खरे झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची समझ दए समझाईआ। हरि की समझ बेपहचान, नेत्र नैण नज़र ना आईआ। रमज़ मारे आपे भगवान, रहमत रहीम कमाईआ। खेले खेल सच्चा राम, रमया होया हर घट थाईंआ। लेखा जाणे आपणा शाम, शहिनशाह इक्को वड वड्याईआ। सच संदेसा दए पैग़ाम, कायनात करे पढ़ाईआ। मन्त्र दृढ़ाए इक्को नाम, जाप जपत विच ना आईआ। डंक वजाए दो जहान, फ़ातया सब दा दए पढ़ाईआ। क्रिया कूड़ मेटे निशान, धूढ़ गुरमुख विरले टिक्का लाईआ। योद्धा सूर बली बलवान, पुरख अकाल इक अख्वाईआ। खेले खेल दो जहान, निरगुण निरवैर धार चलाईआ। धुर संदेसा देवे आण, नर नरेशा करे पढ़ाईआ। सतिजुग साचा बणे विधान, पंच परवान आप कराईआ । अनपढ़यां देवे इक ज्ञान, चौदां विद्या नेत्र शरमाईआ। गुरमुख सुघड़ सुचज्जे बणाए बाल अञ्याण, बाली बुध दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, चौथा युग वेख वखाईआ। चौथा युग वेखे हरि, हरिमन्दिर डेरा लाईआ। सच वसाए इक्को घर, सम्बल नगर सोभा पाईआ। निरगुण हो के अन्दर जाए वड़, सच महल्ल करे रुशनाईआ। आपणे पौड़े जाए चढ़, डण्डा इक्को नाम वखाईआ। धुर दा राग लवे पढ़, छत्ती

राग ना कोए गाईआ। आत्म लाए आपणे लड़, परमात्म कर कुड़माईआ। सुरत सवाणी लए फड़, शब्द हाणी जोड़ जुड़ाईआ। दरस दिखाए अग्गे खड़, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। ना जन्मे ना जाए मर, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सब दा लेखा दए चुकाईआ। सब दा लेखा हरि चुकाउणा, बाकी कोए रहिण ना पाईआ। लख चुरासी वेख वखाउणा, पड़दा सब दा रिहा उठाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरा छौणा, शाह पातशाह रोवण मारन धाहींआ। तख्त ताज सर्ब तजाउणा, दर दरबान रहिण कोए ना पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव आपणी धार मिलाउणा, अन्तिम लेखा रिहा मुकाईआ। भगत भगवान इक जगाउणा, योद्धा सूरबीर बणाईआ। शब्द खण्डा हथ्थ फड़ाउणा, ब्रह्मण्डां रिहा डराईआ। साची वंडा आप वंडाउणा, गुरमुख मनमुख दोवें धार प्रगटाईआ। जगत घमण्डा मेट मिटाउणा, झूठा बुरज नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग छन्दा आपे गाउणा, अछल छल आपणा भेव चुकाईआ। अछल अछल्ल प्रभू स्वामी, समझ विच किसे ना आइंदा। आदि जुगादी अन्तरजामी, इक इकल्ला खेल वखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बोध अगाधी बोले बाणी, बाण निराला तीर चलाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दस्सदा रिहा इक निशानी, निशाना आपणे हथ्थ रखाइंदा। सारे मंगदे गए कलयुग अन्त श्री भगवन्त आए वड सुल्तानी, कल कल्की फेरा पाइंदा। जुग चौकड़ी जिस दा दिसे ना कोए सानी, लासानी आपणी कार कमाइंदा। लख चुरासी जाणो फ़ानी, फ़ैसला इक्को वार कराइंदा। कूड़ी क्रिया चढ़े तुझानी, शौह दरिया नाल मिलाइंदा। मनमुखता अन्त ना रहे निशानी, गुरमुख इक्को रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिजुग साचा राह चलाइंदा। सतिजुग राह चले मात, धरनी धरत धवल मिले वड्याईआ। चार वरन बणाए इक जमात, इक्को करे नाम पढ़ाईआ। बख्शणहारा साची दात, वस्त अमोलक झोली पाईआ। फड़ उतारे आपणे घाट, बेड़े इक्को नाम चढ़ाईआ। अग्गे पिच्छे दो जहानां मुक्के वाट, लख चुरासी गेड़ नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे लए तराईआ। हरिजन तारे आप प्रभ, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। गुरमुख गुरसिख आपे लभ्भ, गुर गुर गोद उठाइंदा। कँवल झिरना अमृत नभ, बूँद बूँदी आप टपकाइंदा। जगत दुआरा पार हद्द, घर साचे आप बहाइंदा। नाम खुमार चढ़ाए मध, मधुर धुन राग सुणाइंदा। हँस बणाए फड़ के कग, सोहँ माणक मोती चोग चुगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे साचा वर, तिस आपणा मेल मिलाइंदा। साचा मेल मिलाए पुरख, हरि वड्डा वड वड्याईआ। भगतां देवे इक्को दरस, दरसी दरस दिखाईआ। रहमत कर करे तरस, मेहर नज़र उठाईआ।

मेघ अगम्मी देवे बरस, अग्नी तत बुझाईआ। जुग जन्म जो रहे भटक, कलयुग अन्तिम वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। हरिजन मेला सहिज सुभाओ, सुब्हा शाम वेख वखाइंदा। रातीं सुत्यां पकड़े बाहों, दिने जागदयां गले लगाइंदा। माणस जन्म करे नयाउँ, नयामत अमृत झोली पाइंदा। करे प्यार जिउँ पुत्रां माउँ, सिर मेहर हथ्थ टिकाइंदा। एथे ओथे दो जहान देवे ठंडी छाउँ, अग्नी तत ना कोए तपाइंदा। चार वरन वखाए इक्को राहो, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को घर बहाइंदा। सारे सिमरो प्रभ का नाउँ, बिन हरि नामे पार ना कोए लँघाइंदा। पुरख अकाल लागो पाउँ, इष्ट देव इक जणाइंदा। सतिगुर पूरे मिलण दा रखो चाउ, चाउ घनेरा इक दृढ़ाइंदा। वेला गया फेर पछताओ, पश्चाताप कम्म किसे ना आइंदा। दर दरबार हरि निरँकार घर मन्दिर दर्शन एका पाओ, परम पुरख प्रभ मेल मिलाइंदा। साची नार बण के कन्त करतार एका राओ, दूजी सेज ना कोए सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे साचा वर, कलयुग अन्तिम मेल मिलाइंदा। सन्त सुहेले चढ़े चा, घर वज्जे नाम वधाईआ। प्रभ ठाकर मिले बेपरवाह, बेपरवाही दए वखाईआ। डूंघी भँवरी काया कवरी बाहर लए कढ्ढा, सुखमन टेडी बंक देवे पन्ध मुकाईआ। ईड़ा पिंगल खैहड़ा देवे छुडा, ततव तत ना कोए लड़ाईआ। नौ दुआरे पन्ध देवे मुका, नव रस ना कोए चतुराईआ। अमृत जाम दए प्या, फड़ प्याला मुख लगाईआ। अनहद धुन दए उपजा, सुन्न समाध खुल्हाईआ । बोध अगाधी अक्खर दए पढ़ा, साची सिख्या इक समझाईआ। बजर कपाटी दए तुड़ा, पड़दा रहिण कोए ना पाईआ। आत्म सेजा दए सुहा, सेज सुहञ्जणी डेरा लाईआ। कोझी कमली गले लए लगा, मेहर नज़र इक उठाईआ। अंगीकार लए करा, अंगन इक्को दस्से साचा माहीआ । साची रंगण दए चढ़ा, रंग आपणा नाम रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे मेल मिलाईआ। घर साचे मेल मिलाए आप, प्रभ आपणी दया कमाईआ। आत्म परमात्म इक्को जाप, सोहँ ढोला रिहा जणाईआ। जन्म कर्म दे उतरन पाप, दुरमति मैल धवाईआ। साचा सिमरन पूजा पाठ, इष्ट देव इक वखाईआ। सच सरोवर तीर्थ ताट, नहावण इक्को वार नुहाईआ। अग्गे पिच्छे मुक्के वाट, पांधी पन्ध रहिण कोए ना पाईआ। आत्म सेजा सोहे खाट, खटोला इक्को रिहा सुहाईआ। खेवट खेटा बण के पुछे वात, दर घर आवे वाहो दाहीआ। चार वरन अन्तर वेखो मार झात, घर बैठा सच्चा माहीआ। उस नाल मिल के करो बात, बातन भेव दए खुल्हाईआ। जगत नेत्र बाहर रहे झाक, अन्दर वड़न कोए ना पाईआ। गुरसिखो गुरमुखो तुहाडे अन्दर परम पुरख दा सच्चा हाट, नाम वस्त सच ख़ज़ाना बैठा विच टिकाईआ। सतिगुरू मिल के लै लओ आपणी दात, करता कीमत कोए ना लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, जुग चौकड़ी देवे वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर हुक्मे अन्दर देवे घल्ल, सच संदेसा धुर दी धार विच संसार जुग चौकड़ी आप जणाईआ।

✪ ४ भाद्रों २०२० बिक्रमी अजीत सिँघ, दलीप सिँघ दे गृह मांगा सराए ज़िला अमृतसर ✪

चार युग रखणा याद, धुर दा लेखा हरि समझाइंदा। कलयुग अन्त सुणे फ़रयाद, निरगुण निरवैर वेख वखाइंदा। जिस रचना रची आदि, अन्तिम आपणा फेरा पाइंदा। जुग चौकड़ी सुणनहार फ़रयाद, साचा अदल इक कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरि आपणी कार कमाइंदा। चार युग निवावण सीस, दोए जोड़ जोड़ सरनाईआ। पारब्रह्म तेरी पढ़दे रहे हदीस, नित नित कर पढ़ाईआ। राह तक्कदे रहे बीस बीस, सदी सदीवी ध्यान लगाईआ। कवण वेला आए जगदीश, जगदीशर फेरा पाईआ। सति धर्म चलाए रीत, दीन मज़्ब ना कोए वखाईआ। छत्र वखाए इक्को सीस, दो जहान वज्जे वधाईआ। देवे वड्याई हस्त कीट, ऊँच नीच रंग रंगाईआ। भगतन देवे इक्को भीख, नाम भण्डार वरताईआ। सृष्ट सबाई लए जीत, हार घर घर रोवे मारे धाहींआ। सर्ब जीआं सुणाए इक्को गीत, साचा राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। चार युग उठ उठ वेखण, नैनन ध्यान लगाईआ। अबिनाशी करता खोल्हे भेतन, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाईआ। जन भगतां करे इक्को हेतन, हितकारी वड्डा माहीआ। पूरब जन्म मेटे लेखन, लेखा अग्गे इक्को इक बणाईआ। बाल अञाणयां नाल आया खेडण, बाल बाला सच्चा शहिनशाहीआ। शब्द संदेसा आया भेजण, धुर दा राग आप अलाईआ। दो जहानां आया मेचण, बल बावण माण गंवाईआ। अगम्मी सोच आया सोचण, सोच समझ किसे रहिण ना पाईआ। हरिजन खुल्हावण आया लोचण, निज नेत्र कर रुशनाईआ। घर घर अन्दर आया पहुंचण, बण पांधी फेरा पाईआ। देवण आया इक्को मोखन, मुफ्त आपणा नाम विकाईआ। पकड़नहारा जगत विकारी दोषन, दोषीआं दोष आप लगाईआ। साचे वस्त्र पहने भूशन, रंग रंगीला रंग वखाईआ। अन्तर आत्म जो जन लोचण, तिन्हां देवे दरस कराईआ। लेखा जाणे लोक परलोकन, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाईआ। कलयुग जीव आहलणिउँ डिगे बोटन, लख चुरासी गोद ना कोए बहाईआ। नानक निरगुण मिणदा गया नाल जोजन, जुज जुज़ बैठा वंड वंडाईआ। पुरख अकाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप कराईआ। चार युग गौंदे गीत, वाहवा खुशी मनाईआ। पारब्रह्म प्रभ मिल्या इक अतीत, धुर दा नाता जोड़ जुड़ाईआ। खैहड़ा छुटया मन्दिर मसीत, शिवदुआला

मट्ठ नज़र ना आईआ। मन वासना गुर किरपा जन लए जीत, तृष्ना अग्न ना लागे राईआ। साचा ढोला मिले गीत, गीत गोबिन्द अलाईआ। हरि सरनाई इक प्रीत, चरण कँवल मिले वड्याईआ। करवट बदले जो सुत्ता दे कर पीठ, मुख मुखड़ा दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप रचाईआ। साचा खेल जुग चौकड़ी चार, हरि करता आप जणाईआ। कलयुग वेखो सर्ब संसार, वड संसारी रिहा,समझाईआ । गृह गृह दिसे कूड़ विभचार, सति सन्तोख नज़र ना आईआ। कागद कलम होए ख्वार, शाही रोवे मारे धाहीआ। मेरा लेखा लिख्या सके ना कोए विचार, बेसमझ समझ कोए ना पाईआ। गुर अवतार मार्ग दस्स दस्स गए सच विहार, बिवहारी आपणा हुक्म वरताईआ। भरमे भुला नर नार, नरायण नज़र किसे ना आईआ। चारे कुण्ट होण ख्वार, वरभण्डी भंडी रही पाईआ। प्रभ ना मिले मीत मुरार, पुरख पुरखोतम संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म साहिब गुरदेव, स्वामी सतिगुर आप वरताइंदा। वसणहारा निहचल धाम निहकेव, नर हरि आपणी कार कमाइंदा। बोध अगाध अगम्म अथाह बेपरवाह खोल्ह्भेव, पड़दा दूई ना कोए जणाइंदा। धुरदरगाही अमृत देवे साचा मेव, रस इक्को नाम वखाइंदा। लेखा जाणे रसना जिह्वा, बत्ती दन्द सिफ्त वड्याइंदा। सन्त साजण भगवन्त भगत लगाए सेवा सेव, चाकर इक्को नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाइंदा। साची करनी करे करतार, हरि करता वड वड्याईआ। लेखा जाणे इक चार, दो तिन्न भेव चुकाईआ। चौका कहे मेरी अन्तिम वार, लुक्या रहिण कोए ना पाईआ। एका कहे मैं आवां आपणी धार, इक इकल्ला वाहो दाहीआ। दोहां विचोला नर निरँकार, निरगुण दाता वड वड्याईआ। औंदयां जांदयां दोहां देवे प्यार, फड़ बाहों गले लगाईआ। हुक्मे अन्दर खेल करन बरखुरदार, बाले नढ्ढे बच्चे जुग जुग आपणा फेरा पाईआ। दोए जोड़ करन निमस्कार, दर निउँ निउँ लागण पाईंआ। तेरा दर सच्चा दरबार, घर वज्जे नाम वधाईआ। चौका एका तेरा खेल करतार, इक चार जोड़ अंक अंक नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। चार युग करन हासा, खुशी खुशी नाल मिलाईआ। प्रगट होए पुरख अबिनाशा, अबिनाशी आपणा रूप वटाईआ। दो जहानां वेखे खेल तमाशा, ख़ालक ख़लक दए जणाईआ। जन भगता पूरी करे आसा, आसा तृष्ना मेट मिटाईआ । सेवक बणे दासी दासा, ठाकर आपणी कार कमाईआ। अगला भेव खोल्ह खुलासा, खुदमुखतार दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमाईआ। चारे युग खुशी मनौंदे, सच इक ध्यान लगाईआ। श्री भगवान रसना ध्यौंदे, ढोले गीत गोबिन्द अलाईआ। इक दूजे दा

भार वंडौंदे, उठण वाहो दाहीआ। कलयुग अन्त नैण शरमौंदे, नेत्र सके ना आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सर्ब वड्याईआ। कलयुग अन्त नैण रहे शरमा, अक्ख सके ना उपर उठाईआ। मुख कालख लग्गी छाह, टिक्का सके ना कोए धवाईआ। चार वरन घर घर दित्ते लड़ा, कूड़ कुड़यारा डंक वजाईआ। दीन मज़्ब दित्ते बणा, शरअ शरीअत गंढु वखाईआ। गुर अवतार दित्ते भिड़ा, बचया कोए रहिण ना पाईआ। साध सन्त दित्ते भुला, हरि मार्ग नज़र किसे ना आईआ। हँस काग दित्ते बणा, कूड़ी क्रिया विश्टा चोग मुख रखाईआ। अठसठ तीर्थ माण दित्ता गंवा, सति सच नज़र कोए ना आईआ। चारों कुण्ट मारे धाह, सति सन्तोख ना कोए वखाईआ। धरनी रोवे धरत माँ, खुलड़े केस दए दुहाईआ। गऊ ग़रीब रहे कुरला, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरा गया छा, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मिले सरनाईआ। चौथा युग मारे चीक, बोले नाम ख़ुदाईआ। वेला अन्त अन्तिम इक तरीक, ताकत कोए रहिण ना पाईआ। गोबिन्द तीर निशाना वज्जे ठीक, ठाकर स्वामी आप चलाईआ। जिस दी करन सर्ब उडीक, सो आया बेपरवाहीआ। चल के मंगीए दर तों भीख, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। काया करे ठंडी सीत, अग्नी तत दए बुझाईआ। घर विच घर सुणाए गीत, गृह शब्द अनाद वजाईआ। आत्म अन्तर बन्ने प्रीत, प्रेम नेम इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर मेहर हथ्थ उठाईआ। कलयुग अन्तिम पावे रौला, हाहाकार मचाईआ। कोई ना करे भार हौला, चार यारी बैठी मुख भवाईआ। धरनी माण ना मिले धौला, धवल दए दुहाईआ। पारब्रह्म प्रभ पूरा कर कौला, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। तेरा नाम अगम्मी मौला, मौलया हर घट थाईंआ। कलयुग अन्तिम बदल चोला, चोली आपणा रंग चढ़ाईआ। सतिजुग सच्चा दे दे भोला, भोले भाओ सृष्ट लए समझाईआ। कलयुग कूड़ा उठ जाए गोला, गोलक आपणी नाल रलाईआ। सतिजुग साचा दए झकोला, धर्म हुलारा इक वखाईआ। चार वरन सुणाए इक्को बोला, सोहँ करे सच पढ़ाईआ। सच दुआरा साचे खोल्हा, ख़ालक ख़लक नज़री आईआ। कलमा नबी इक्को ढोला, सदा नाम सुणाईआ। निरगुण बण के आए तोला, तोलणहार सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। कलयुग अन्तिम नेत्र नीर, हन्झूआं हार वखाईआ। कोई ना संगी पीर फ़कीर, चार यार नज़र कोए ना आईआ। कूड़ी क्रिया अन्दर होया दिलगीर, दिलबर धीर ना कोए रखाईआ। शरअ शरायत दीन मज़्ब वज्झा ज़ंजीर, गुर अवतार पीर पैगम्बर हथ्थकड़ी गए लगाईआ। कोई ना चाढ़े चोटी फड़ अख़ीर, आखर तेरा मेल मिलाईआ। तेरी सिफ्त दी बन्नदे

गए बीड़, खाणी बाणी राग अलाईआ। सारे मन्नदे गए वड पीरन पीर, बेनज़ीर इक खुदाईआ। रखे हथ्थ नाम शमशीर, खण्डा इक्को इक चमकाईआ। दो जहानां देवे चीर, निरगुण सरगुण वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देणा साचा वर, हरि सच तेरी सरनाईआ। हरि सरनाई तेरी सच, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। गुर अवतार गए दस्स, धुर दा हुक्म आप सुणाइंदा। जन भगतां हरि जू होए वस, वसल आपणा आप कराइंदा। मेल मिलाए हस्स हस्स, सोहँ हँसा राग अलाइंदा। आत्म परमात्म गावे जस, वेद पुराण ना कोए वंडआइंदा। दरस दिखाए नट्ठ नट्ठ, बण पांधी पन्ध मुकाइंदा। सर्ब जीआं देवे इक्को मत्त, साची सिख्या इक समझाइंदा। नाड़ बहत्तर ना उबले रत, अग्नी तत ना कोए तपाइंदा। जाणणहारा मित गत, गति मित आपणे हथ्थ रखाइंदा। सन्त सुहेले लए रख, जुग जुग कूड़ी अग्नी विचों बाहर कढ्ढाइंदा। करे कराए नबेड़ा हक़, हाकम इक्को इक अख्वाइंदा । कलयुग अन्तिम ब्रह्मण्ड खण्ड रिहा तक्क, तक्कणहारा नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां करे सदा पक्ख, मनमुख गले ना कोए लगाइंदा।

✪ ४ भाद्रों २०२० बिक्रमी गिरधारा सिँघ बलोवाली दे नवित्त हरि भगत दुआर जेठूवाल ✪

निरगुण उठ गोतम गुप्त, हरि गुप्ती आप उठाईआ। वंडण आया दात मुफ्त, करता कीमत कोए ना लाईआ। बिन हथ्थां बाहवां रहिणा चुस्त, आलस निंद्रा ना कोए रखाईआ। तेरा लेख दर लेख पुश्त दर पुश्त, पेशतर तेरी धार जणाईआ। ना नंग ना कोई भुखत, सच भण्डार नाम वखाईआ। ना कोई मंगे दर ते धड़त, धुर दी खेल बेपरवाहीआ। ना कोई लिख्त ना कोई पढ़त, यारी यारां नाल निभाईआ । पुरख अकाल आया परत, पतिपरमेश्वर फेरा पाईआ। अग्गे रहिण ना देवे फ़र्क, बिन भगतीउँ भगत बणाईआ। बग़लगीर मिलाए दस्त, बदस्त जोड़ जुड़ाईआ। लहिणा चुका कीट हसत, आपणा रंग दए चढ़ाईआ। नाम खुमारी रखे मस्त, अन्तर आत्म इक लिव लाईआ। घर वखाए इक्को फ़कत, फ़िकरा आपणा नाम पढ़ाईआ। जुग चौकड़ी बीते बरस, रुत्त रुतड़ी गई विहाईआ। दीन दयाल कर कर तरस, मेहरवान दया कमाईआ। डूंघी धार अमृत बरख, तृखा तृष्ना आप गंवाईआ। पूरब जन्म मेट हरस, घर साचे दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। गोतम गुप्त गुप्ती दान, हरि गोबिन्द आप वरताइंदा। नेत्र खोल् कर ध्यान, चरण कँवल इक वखाइंदा। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द दए ज्ञान, विद्या चौदां ना कोए पढ़ाइंदा। काया मन्दिर

सच मकान, गुरुदुआर इक्को इक वखाइंदा। धर्म झुलाए अगम्म निशान, रंग रंगीला हथ्थ उठाइंदा। आदि जुगादी बण के काहन, गुरमुख सखी आप प्रनाइंदा। घर विच घर करे प्रधान, बेनकाब पड़दा आप उठाइंदा। महिबूब सच मुहब्बत मिले आण, महिवख़ाना इक सुहाइंदा । लेखा मेटे कूड़ शैतान, शरअ वंड ना कोए वंडाइंदा। नाम निधाना मारे तीर निशान, बजर कपाटी चीर चिराइंदा। आत्म परमात्म घर मेला श्री भगवान, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा जोड़ जुड़ाइंदा। दो जहाना चुक्के काण, पुरी लोअ ध्यान ना कोए वखाइंदा। दर घर साचे देवे माण, अभिमान रूप ना कोए वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। उठ गौतम गठड़ी खोल्, काया तत पंड बंधाईआ। तेरे अन्दर नाम अनमोल, बिन गुर नेत्र नज़र कोए ना आईआ। दिवस रैण वज्जे ढोल, अनहद मृदंगा नाद वजाईआ। पुरख अकाल वसे कोल, घर बैठे बेपरवाहीआ। एथे ओथे पूरा तोले तोल, कंडा नाम हथ्थ उठाईआ। दो जहान रहे अडोल, चौदां लोक ना कोए हिलाईआ। साचे भगतां करे चोल, प्रेम प्रीती इक समझाईआ। सच प्रीती जाए मौल, मौला आपणी कार कमाईआ। देवे वड्याई उपर धौल, धरनी धरत सोभा पाईआ। सतिजुग साचे कर के गया कौल, कीता कौल तोड़ निभाईआ। लख चुरासी सुत्ती रही अनभोल, हरि का भेव कोए ना पाईआ। धुर संदेसा ना कोई बोले बोल, शब्दी राग ना कोए अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप खलाईआ। उठ गौतम वेख रुत्त, सो साहिब आप सुहाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, चारों कुण्ट नूर रुशनाईआ । लेखा जाणे अनादी सुत, सुत अनादी नाल रखाईआ। दर दरवेश रिहा पुच्छ, घर घर फेरा पाईआ। कलयुग पैंडा रिहा मुक्क, मुके वाट पराईआ। सतिजुग नेड़े रिहा ढुक, दूर दुराडा चल के आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर गए लुक, ज़ाहरा नूर नज़र कोए ना आईआ । साधां सन्तां कोल रिहा ना कुछ, ख़ाली हथ्थ देण दुहाईआ। मूंड मुंडाए नाल कटाई मुच्छ, मुश्कल हल्ल ना कोए कराईआ। सजदा सीस ना कीता झुक्क, अदब आदाब नज़र कोए ना पाईआ। धुरदरगाहों बैठे रुठ, करवट सके ना कोए बदलाईआ। दीन दयाल सतिगुर स्वामी जन भगतां उपर जाए तुठ, भगत वछल सदा सहिज सुखदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दर घर साचा इक वखाईआ । गोतम वेख वेख किनारा, कल्की धर आप वखाइंदा। आदि जुगादि जिस दा अन्त ना पारावारा, सो साहिब वेस वटाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ गगन गगनंतर लाए इक अखाड़ा, निरगुण रास आप रचाइंदा। शब्द अनाद अगम्मी वज्जे ताड़ा, ताल तलवाड़ा नज़र कोए ना आइंदा । खेले खेल जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फुलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ तेरी कोई ना पाए सारा, सारंगधर तेरा संग ना कोए रखाइंदा। कागद

कलम रोवे ज़ारो ज़ारा, शाही कहे शहिनशाह नज़र किते ना आइंदा। चार वेद करन पुकारा, ब्रह्मा रोवे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। सच नाम ना कोई भण्डारा, विष्नूं विश्व ना कोए आधारा, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। शंकर वेखे ना कोए अखाड़ा, हथ्थ त्रिसूल ना कोए नगारा, भय भउ नज़र कोए ना आईआ। लख चुरासी धूंआँधारा, चारों कुण्ट अन्ध अँध्यारा, दहि दिशा जोत नूर ना कोए रुशनाईआ। करे खेल आप करतारा, कुदरत वेखे वारो वारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। गोतम वेख हरि की नज़र, बेनज़ीर आप उठाईआ। रैण अन्धेरीउँ बणाए फ़ज़र, फ़ज़ल आपणा आप कमाईआ। तख्त निवासी करे सच्चा अदल, अदालत इक्को इक समझाईआ। मकतूल कातिल दोहां इक्को कतल, खण्डा धार इक चमकाईआ। कूड़ी क्रिया देवे बदल, बदले नाउँ बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। गोतम वेख हरि का हक़, सच हकीकत खोज खुजाइंदा। करे खेल सदा अनथक्क, दो जहानां फिर फिर वेख वखाइंदा। लेखा जाणे मदीना मक्क, काअबा हुजरा वेस वटाइंदा। सदी चौधवीं आए नट्ठ, वड्ड अमाम फेरा पाइंदा। चौदां तबकां खोल्हे गट्ठ, अन्दर वड़ वड़ पड़दा लाहइंदा। पीर पैगम्बरां देवे दस्स, धुर दा हुक्म आप सुणाइंदा। साचा कलमा नूर इलाही बेनज़ीर अन्तर जाए दस्स, जगत दिलगीर रहिण कोए ना पाईआ। अमृत झिरना आबे हयात निझर देवे रस, अमृत मेघ बूँद आप बरसाईआ। साहिब सतिगुर पुरख अकाल सीस रखे उपर हथ्थ, सदा सुहेला होए सहाईआ। सच जैकारा बोल अलख, एकँकारा नाम समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मेला सहिज सभाईआ। गोतम वेख हरि का रंग, बण ललारी आप चढ़ाइंदा। साची सेजा बैठ पलँघ, साचे मन्दिर डेरा लाइंदा। सच नगार वज्जे मृदंग, ढोलक छैणा ना कोए खड़काइंदा। दूई द्वैती ढाहे कंध, भाण्डा भरम भउ भंनाइंदा। कर प्रकाश जोत चन्द, जोत निरँजण डगमगाइंदा। अन्दर बाहर वसे संग, आत्म परमात्म बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। गोतम सुण के होया बेहाल, बिहबल हो के दए दुहाईआ। हउँ बाला नढ्ढा तेरा बाल, बुद्धि चले ना कोए चतुराईआ। एथे ओथे सुरत संभाल, सुरती तेरी झोली पाईआ। साची सेवा घोली घोल लई घाल, घाल विच कदे ना आईआ। जुग चौकड़ी तेरी अवल्लड़ी चाल, समझ सके ना कोए राईआ। कलयुग अन्त हो दयाल, दीनां नाथ तेरी वड्याईआ। फल लगा आपणे डाल, पत टहिणी आप महकाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत करी रुशनाईआ। लेखा चुक्कया शाह कंगाल, शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। सतिगुर हो के बणया दलाल, साचा वणज हट्ट वखाईआ। नाता तोड़ काल महाकाल, इक्को बख्श चरण सरनाईआ। आ

के वेख मुरीदां हाल, मेहरवान मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। गोतम कहे मेरी अरदास, अरदास इक्को वार कराईआ। मेरे नालों तैंनूं मिलण दी लोड़ ख़ास, बिन मेरे तेरा कम्म रास ना आईआ। आदि जुगादि प्रभू तूं भगतां दास, बण सेवक सेव कमाईआ। अन्तर चले पवण स्वास, बाहर रसना जिह्वा ढोला गाईआ। निरगुण हो के देवें साथ, सरगुण सच्चा संग वखाईआ। सच संदेसा जावें आख, आख़र आपणा मेल मिलाईआ। धुर दरबारे खोल्हें ताक, पड़दा कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सदा वड्याईआ। गोतम कहे मैं की दस्सा, दस्सण विच कदे ना आईआ । तेरी प्रेम प्रीती अन्दर वसां, वसल माअशूक इक्को पाईआ। नाले रोवां नाले हस्सां, ग़मी खुशी नाल मिलाईआ। नाले डिगां नाले नट्ठां, लंगढ़ा हो के भज्जां वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दर तेरा इक्को नज़री आईआ। गोतम कहे ना जाईं फिर, अछल अछल्ल तेरा भेव कोए ना आईआ। ऋषी नाल उधार कीता सिर, सिर सदके घोली वारी घोल घुमाईआ। आ वेख मेरा दिल, दिलबर तेरी तांघ तकाईआ। अट्ठे पहर ना जाए हिल, बिस्मिल रूप रिहा वटाईआ। तूं आप ना करीं ढिल, ग़फ्लत विच साहिब ना आईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर मिले सच सरनाईआ। गोतम कहे तेरा नित नित धोखा, जन भगत रहे कुरलाईआ । तेरा भाणा किसे ना रोका, भाणे विच सर्ब समाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरी रखदे गए ओटा, चरण कँवल ध्यान लगाईआ। गोबिन्द हो के मंगे मंग पुत्त छोटा, पुरख अकाल अग्गे झोली डाहीआ। तेरा खेल जोती जोता, जोत तेरा नूर रुशनाईआ । कलयुग अन्तिम मार्ग दस्सणा सौखा, बिन जप तप जोग अभिमास हठ तेरा नाम हरिजन हिरदे लए वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। गोतम कहे तेरा इक सहारा, सख़ी सुल्तान तेरी वड्याईआ। दूजा ना कोई लग्गे प्यारा, प्रीती नाल ना किसे लगाईआ। तिन्न युग तुध बिन बैठा रिहा कुँवारा, सेज सुहञ्जणी नज़र कोए ना आईआ। अन्तिम दे के गिउँ लारा, धुर संदेसा हुक्म सुणाईआ। कल कल्की लै अवतारा, निहकलंक फेरा पाईआ। तेरा बणे साक दो धारा, दोहरी गंढु दए पवाईआ। इक ठाकर इक मित्र प्यारा, इक ठोकर रिहा लगाईआ। इक सागर इक दस्से किनारा, बिन किनारे सागर सार कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। गोतम वेख धरत मात दी खुल्ही गुत्त, मींढी सीस ना कोए गुंदाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कोलों रही पुच्छ, उच्ची कूक दए दुहाईआ। दरोही खुदाए दी हुण क्यों बैठे लुक, कलयुग अन्त अन्धेरा छाईआ। नाता तुटा माँ पुत्त,

पिता पूत ना कोए वड्याईआ। चारों कुण्ट अन्धेरा घुप्प, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। होया प्रधान जूठ झूठ, काम क्रोध लोभ मोह हँकार दिसे हल्काईआ। नजर ना आए निर्मल जोत, शब्द अनाद ना कोए सुणाईआ। झगड़ा प्या वरन गोत, दीन मज़ब करन लड़ाईआ । हरिजू नज़र ना आए सच्चा खौंत, नारी कन्त ना कोए प्रनाईआ। लख चुरासी दिसे औंत, साची गोद ना कोए सुहाईआ। श्री भगवान अन्तिम पहुंच, पारब्रह्म प्रभ तेरी ओट तकाईआ। मेरी कोई ना चले सोच, सोच समझ समझ ना सके राईआ। तेरे दर्शन लोचण रहे लोच, आसा मनसा इक वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर आ सच्चे माहीआ। धरनी कहे आ माहीआ, मेहरवान तेरी वड्याईआ । दो जहानां सच्चे राहीआ, पांधी बण के फेरा पाईआ। गुर अवतार तेरी देण गवाहीआ, शहादत इक्को इक समझाईआ। निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ, कलयुग अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। चार वरन भाईआं नाल मिलाए भाईआं, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश लड़या कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा खेल आप कराईआ। धरनी कहे मेरे साहिब सज्जन, प्रभ तेरी ओट तकाईआ । सच ना दिसे कोई मजन, अठसठ रोवे मारे धाहींआ। कूड़ी क्रिया सारे भजण, सच सुच ना कोए समाईआ। काम वासना होए मग्न, हिरदे हरि ना कोए ध्याईआ। त्रैगुण माया लग्गी अग्न, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। कोई ना आवे पड़दा कज्जण, कलयुग जीव मेरा पड़दा रहे उठाईआ। बेपरवाह तेरी बांदी तेरी दासी तुध बिन होई नगण, सच दोशाला नज़र कोए ना आईआ। थक्की मांदी दर कुरलांदी आई मंगण, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। कर किरपा चाढ़ इक्को रंगण, रंग मजीठी दे वखाईआ। मेरा सोहे साचा अंगन, घर वज्जे नाम वधाईआ । मेल मिले साचे सज्जण, सतिगुर विछड़ कदे ना जाईआ। जिस दा इक्को धुर दा भजन, सोहँ ढोला राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मेला लए मिलाईआ। धरनी कूक कहे कुरला, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। कलयुग अन्त ना साहिब रुला, माटी ख़ाकी खेह सीस पवाईआ। सागर बेड़ा ना मेरा डुबा, डूंघे वहण ना अन्त वहाईआ। दोए जोड़ वास्ता रही पा, गल पल्लू रही वखाईआ। मैं निमाणी तेरी गां, तेरी इक्को ओट तकाईआ। कलयुग अन्त करें न्याँ, मनमुख कसाई कोई रहिण ना पाईआ। जन भगतां देवें ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दरगाह साची देवें बहा, सचखण्ड देवणहार वड्याईआ। पूरब लेखा दएं चुका, अगला लहिणा झोली पाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। धरनी देवे हरि दिलासा, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। परम पुरख दा रख भरवासा, श्री भगवान होए सहाईआ। निरगुण बण के आवे राखा, होका देवे थाउँ थाईंआ। जन भगतां खोल्हे बंद कवाड़ी ताका, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ।

साची सेजा सोवे खाटा, बिस्तर इक्को नाम विछाईआ। अगम्म अथाह आपणी रखे ज़ाता, ज़ात ज़ात विचों प्रगटाईआ। होए सहाई जगत माता, धरनी तेरी लाज रखाईआ। खुल्ला दिसे तेरा हाता, पतित रहिण कोए ना पाईआ। धर्म राए दा भरे खाता, खेवट खतौनी वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप रचाईआ। पुरख अकाल कहे ना हो ग़मगीन, दु:ख दर्द आप वंडाईआ। तेरी माटी ख़ाकी वेखे ज़मीन, ज़ामन होवे बेपरवाहीआ। तेरी आसा दिसे मस्कीन, तेरी तृष्ना मसला हल कराईआ। तेरा नाउँ दस्से मदीन, नर इक्को हुक्म वरताईआ। तेरी कफ़नी चाढ़े रंग भीन्न, भिन्नड़ी धार नाल मिलाईआ। तैनूं देवे आप यकीन, यकमुशत फ़ैसला दए कराईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां करे तलकीन, ताकतवर वेख वखाईआ। अन्तिम सारे होए अधीन, सिर सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। धरनी कहे क्यों बैठा चुप, प्रभू आपणा आप छुपाईआ। मेरी सहायता करे तेरा मुन रिख, गोतम हथ्थ लए वटाईआ। जिस तेरे दवारिओं लई भिख, अग्गे मेरी झोली देवे भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जागरत जोत करे रुशनाईआ। सुण धरनी सच एको टेक, टिक्का तेरे मस्तक लाईआ। अन्तिम लहिणा लैणा वेख, श्री भगवान दए वखाईआ। जिन्हां नाल करे आपणा हेत, तिन्हां भगवन्त भगत रूप वटाईआ। अन्दर वड़ के देवे भेत, बाहरों नज़र कोए ना आईआ। पंच विकार दर तों देवे छेक, छेकड़ आपणा हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। सद वड्याई रखे हथ्थ, दस्त बदस्त आप फड़ाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी कार कमाइंदा। सतिजुग मार्ग देवे दस्स, कलयुग कूड़ा पन्ध मुकाइंदा। धर्म दुआरा खोल्ह हट्ट, नाम वस्त इक वरताइंदा। करे खेल हरि अकथ, कथनी कथ ना कोए सुणाइंदा। अमृत आत्म देवे रस, निझर झिरना इक झिराइंदा। नाम पढ़ाई तूं मेरा मैं तेरे वस, सोहँ ढोला आप सुणाइंदा। आत्म परमात्म गावे जस, जस वेद पुराण ना सिफ्त सालाहइंदा। जन भगतां पूरी करे आस, आसा तृष्ना मेट मिटाइंदा। सब दी बुझावणहारा प्यास, अमृत सीर मुख चुआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा देवे धुर दा दान, साची वस्त आप वरताइंदा।

✪ ५ भाद्रों २०२० बिक्रमी कादराबाद बख्शीश सिँघ दे गृह ✪

सचखण्ड साहिब अतीत, सो बैठा बेपरवाहीआ। निरगुण निरगुण इक प्रीत, एकँकारा आप निभाईआ। सच निशाना

दस्से ठीक, दरगाह साची सोभा पाईआ। जुग चौकड़ी करन उडीक, बिन नेत्र बैठे ध्यान लगाईआ। विष्नूं दुआरे मंगे भीख, घर साचे अलख जगाईआ। ब्रह्मा कहे प्रभ प्रीत, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। शंकर कहे मेरी करे जीत, हथ्थ त्रिसूल फड़ाईआ। त्रैगुण कहे मेरे छत्र झुलाए सीस, मेहरवान होए सहाईआ। पंज तत कहे वसे नज़दीक, घर घर बैठा डेरा लाईआ। जुग चौकड़ी कहे धार बारीक, नेत्र नज़र किसे ना आईआ। शब्द कहे मैं वसां हर घट भीत, भीतर आपणा आप जणाईआ। आदि जुगादि चले रीत, नित नवित्त राह वखाईआ। धुरदरगाही इक्को गीत, मन्त्र सति सति पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप समझाईआ। साचा खेल साहिब गुरदेव, निरगुण निरँकार आप जणाइंदा। आदि पुरख अलख अभेव, अनभव आपणी कार कमाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव लगाए सेव, साची सेवा इक समझाइंदा। आप वसणहार सदा निहकेव, निहचल आपणा आसण लाइंदा। रसना गा ना सके कोई जिह्व, बत्ती दन्द ना सिफ्त सालाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच करनी कार कमाइंदा। साची कार करे भगवान, भगवन आपणी धार चलाईआ। लेखा जाण दो जहान, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। सतिजुग त्रेता हो प्रधान, द्वापर कलयुग हुक्म वरताईआ। पुरी लोअ इक निशान, ब्रह्मण्ड खण्ड आप झुलाईआ। आत्म परमात्म देवे ज्ञान, लख चुरासी करे पढ़ाईआ। गुर अवतारां दे दे दान, पीर पैगम्बरां झोली आप भराईआ। धुर संदेसा धुर फ़रमान, धुर दी धार जणाईआ। सच नरेशा बण के काहन, हरि करता वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। थान थनंतर सोभावन्त, घर साचे वज्जे वधाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी श्री भगवन्त, भगवन एका सोभा पाईआ। नाम जणाए साचा मंत, मन्त्र इक्को इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ । साची करनी करे एक, एका आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। गुर अवतारां देवे टेक, पीर पैगम्बर हुक्म वरताईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण लिखे लेख, गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी भेव चुकाईआ। सचखण्ड दुआरे वसे देस, थिर घर आपणा चरण टिकाईआ। लेखा जाणे विष्न ब्रह्म महेष, शंकर आपणी धार बंधाईआ। जुग चौकड़ी लए वेख, निरगुण सरगुण कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा लेखे लाईआ। धुर दा लेखा मंगण ओट, विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान लगाईआ। गुर अवतार रहे सोच, हरि का भेव कोए ना पाईआ। पीर पैगम्बर रहे लोच, नेत्र नैण ध्यान लगाईआ। भगत भगवान मिलण दा रखण शौक, शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। नेत्र रोवण लोक परलोक, चौदां तबक देण दुहाईआ। चार वरन मंगण इक श्लोक, बरन अठारां इक्को राग अलाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश मिले इक्को कोट,

२२८
१५

बंक दुआरा सोभा पाईआ। नाम नगारे लग्गे चोट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म वरते आण, अनक कल वड्डी वड्याईआ। चार युग वेखे मार ध्यान, नव नौं पड़दा रिहा उठाईआ। तख्त निवासी नौजवान, साचे तख्त सोभा पाईआ। दो जहानां हुक्मरान, धुर दी धार इक समझाईआ। महल अटल उच्च मकान, सच सिँघासण रिहा सुहाईआ। योद्धा सूरबीर बलवान, बल आपणा आप रखाईआ। आदि जुगादी देवणहारा दान, वस्त अमोलक इक वरताईआ। गुर अवतारां दे ज्ञान, मन्त्र नाम करे पढ़ाईआ। पीर पैगम्बर करन सलाम, इस्म इक्को इक जणाईआ। धुर दा कलमा बोल कलाम, नबी रसूल दए समझाईआ। काग़ज़ कलम होए हैरान, लेखा लिख्त विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी आए आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जुग चौकड़ी जिस दा जाप, सरगुण निरगुण रहे ध्याईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण जिस दा पाठ, अञ्जील कुरान बैठण सीस झुकाईआ। गुर अवतार जिस दे दास, पीर पैगम्बर सजदा सीस वखाईआ। चार युग जिस दी आस, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गोपी काहन नचाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड जिस दी रखण आस, नव खण्ड इक्को राह तकाईआ। सूरज चन्न जिस दा प्रकाश, किरन किरन चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक सुणाईआ। साचा हुक्म देवे अलोप, जगत नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। लख चुरासी इक श्लोक, आत्म परमात्म ढोला राग अलाइंदा। मन मति बुध कोई ना सके सोच, सोचयां सोच विच कदे ना आइंदा। जन भगत प्रभ दर्शन विरले रहे लोच, जिन्हां आसा अन्तिम पूर कराइंदा। लख चुरासी खोजे खोज, घट घट अन्दर फोल फुलाइंदा। वड़या रहे बण ख़मोश, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोए हिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म देवे जगदीश, सो पुरख निरँजण वड्डी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण एका ताज धरे हरि सीस, तख्त निवासी सोभा पाईआ। एकँकारा कलमा पढ़ाए सच हदीस, नाम निधान इक समझाईआ। आदि निरँजण करवट लै बदले पीठ, सनमुख निरगुण जोत करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता लख चुरासी लए जीत, बलधारी बल प्रगटाईआ। श्री भगवान सच निशान उठाए अतीत, त्रैगुण बैठा डेरा ढाहीआ। पारब्रह्म प्रभ नज़र आए नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। खेले खेल परवरदिगार लाशरीक, शिरकत रूप ना कोए वटाईआ। कलयुग मेटे अन्धेर तारीक, तारीख़ पिछली दए पलटाईआ। गुर अवतार रसना कहिण ठीक, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त चार वरन सुणाए इक हदीस, कलमा नाम इक उपजाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां ख़ाली करे खीस, दर दर घर घर भिख्या मंगण जाईआ। गुरमुख विरला सन्त सुहेला पंज तत

काया जाए जीत, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म ढोला सुणाए गीत, सोहँ इक्को राग समझाईआ। निरगुण हो के वसे चीत, सरगुण आपणा बन्धन पाईआ। मित्र प्यारा बणे मीत, यारड़ा सत्थर आप हंढाईआ। करे खेल सदा अनडीठ, जोती जाता नूर रुशनाईआ। पावे सार हस्त कीट, ऊँच नीच वेख वखाईआ। नाम अमोलक पाए भीख, भिच्छया इक्को वार वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराईआ। साची खेल करे करतार, हरि करनी कार कमाइंदा। तख्त निवासी बैठ सच्चे दरबार, धुर दरबारी हुक्म सुणाइंदा। चार युग रहिणा ख़बरदार, नेत्र अक्ख सर्ब खुल्हाइंदा। चार वरन खोल्ह किवाड़, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आप उठाइंदा। चारे खाणी हो तैयार, त्रैगुण अतीता आप जणाइंदा। चारे बाणी बोल जैकार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आप समझाइंदा। चार यारी करो विचार, संग मुहम्मद नज़र कोए ना आइंदा। अल्ला राणी होए बेज़ार, नेत्र नैणां नीर वखाइंदा। उच्ची कूके धाहां मार, दरोही दरोही सर्ब अलाइंदा। सदी चौधवीं आई विच संसार, चौदस चन्द ना कोए चमकाइंदा। नज़र ना आए साचा यार, महिबूब रूप ना कोए वखाइंदा। हुजरे हक़ ना करे प्यार, महिराब आब ना कोए प्याइंदा। बेताब होया संसार, सबर प्याला जाम हत्थ ना कोए उठाइंदा। शाहो भूप इक नवाब, शहिनशाह आपणी कार कमाइंदा। चार युग दा पूरा करे ख़ुआब, ख़ालस आपणी धार रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा आप अलाइंदा। धुर संदेसा नूर इलाही, लाशरीक आप जणाइंदा। पीर पैगम्बर देण गवाही, सालस इक्को नज़री आइंदा। कलयुग अन्त चारों कुण्ट अन्धेरा छाई, साचा चन्द ना कोए चमकाइंदा। नाता तुटया भाईआं भाई, भय्या रूप ना कोए वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म पुरख अगम्म, हरि एका एका वार वरताईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त पवण स्वासी वेखे दम, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। नाता जुड़या हड्ड मास नाड़ी चम्म, चम्म दृष्ट होई हल्काईआ। अन्तर आत्म धीरज सके ना कोए बन्न्ह, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। वस्त नाम मिले ना धन, कूड़ ख़ज़ाना जगत लुटाईआ। नज़र ना आए गुरमुख जन, मिले वड्याई ना कोई जणेंदी माईआ। जो घड़या सो देवे भन्न, राए धर्म दए सज़ाईआ। कलयुग जीव नेत्र अन्न्ह, दोए लोचण बंद कराईआ। कूड़ी क्रिया घर विच लाए संन्ह, ठग्ग चोर लुट्टण वाहो दाहीआ। मन वासना मारे मन, मन का मणका ना कोए भवाईआ। अनहद नाद ना सुणे कन्न, छत्ती राग रहे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम आया नेड़े, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात कर्म धर्म पए झेड़े, झगड़ा सके ना कोए मिटाईआ। वरन बरन डुब्बण वाले बेड़े,

साची सरन नज़र कोए ना आईआ। वसदे दिसण ना सच्चे खेड़े, कूड़ी क्रिया घर घर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल कराउणा, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। लख चुरासी भरम भुलाउणा, माया ममता होए हल्काईआ। गुरमुख विरला आप जगाउणा, जिस अन्तर बूझ बुझाईआ। सुरती शब्दी मेल मिलाउणा, घर साचे वज्जे वधाईआ। आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाउणा, जोड़ी इक्को घर वसाईआ। थोड़ा थोड़ा राग सुणाउणा, अनहद नादी नाद शनवाईआ। अमृत आत्म जाम पिआउणा, झिरना निझर इक झिराईआ। कागों फड़ हँस बणाउणा, सोहँ माणक मोती चोग चुगाईआ। साची अंस आप उपजाउणा, पिता पूत वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे भगत भगवान कलयुग अन्त करे प्रधान, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दए वखाईआ। पीर पैगम्बरां दए वखाल, गुरमुख वड्डा वड वड्याईआ। गुर अवतारां दए ध्यान, धुर दी धार आप समझाईआ। चारों कुण्ट वेखो नच्चे शैतान, घर घर करे लड़ाईआ। साबत रिहा ना किसे ईमान, धर्म धीर ना कोए धराईआ। चारे वेद नैण शरमाण, अक्ख सके ना कोए उठाईआ। ब्रह्मा तेरा ना कोए ज्ञान, ब्रह्म मति ना कोए चतुराईआ। दहि दिशां सर्ब पछताण, उच्ची कूकण मारन धाहींआ। विष्नूं तेरा विश्व मिले ना कोई पकवान, फ़ाके मरे सर्ब लोकाईआ। साचा मिले ना कोई दान, झोली ख़ाली ना कोए भराईआ। कूड़ी क्रिया होई प्रधान, घर घर भेखी स्वांग वटाईआ। कवण वेला प्रभ मिले आण, दुखियां दर्द दए गंवाईआ। चार वरन करे परवान, बरन अठारां गोद सुहाईआ। अमृत आत्म देवे पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। शब्द अनाद सुणाए गाण, गीत गोबिन्द इक अलाईआ। नाता तुटे पंज शैतान, शरअ करे ना कोए लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख विरले लए तराईआ। गुरमुख विरले तारे प्रभ, गुर अवतारां आप समझाइंदा। बिन करनीउँ हरि लए लभ्भ, करता कीमत आपे पाइंदा। जगत दुआरा पार हद्द, मन्दिर इक्को इक वखाइंदा। सति सतिवाद वजाए नद, अनरागी राग अलाइंदा। बिन मक्कयों काअबयों कराए हज्ज, हज़रत इक्को नज़री आइंदा। मुर्शद मुरीदां लए सद्द, मुफ्त आपणा नाम वरताइंदा। दरस दिखाए उपर शाह रग, शहिनशाह आपणा मेल मिलाइंदा। त्रैगुण माया बुझाए अग्ग, अग्नी तत ना कोए रखाइंदा। सच दुआरे लए सद्द, सदा इक्को नाम दिवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्त श्री भगवन्त भगत भगवान वेख वखाइंदा। भगत भगवान वेखे एक, एकँकार वड्डी वड्याईआ। अन्तर करे बुध विवेक, बाहर बसन्तर नज़र कोए ना आईआ। शब्द सरूपी खोल्हे भेत, अनभव प्रकाश करे रुशनाईआ। हरि का भेव कोई ना जाणे मुल्लां शेख़, मुसायक पीर अन्त कहिण ना पाईआ। जुग चौकड़ी दीन दयाल ठाकर

स्वामी निर्धन सरधन करे हेत, सरगुण आपणे अंग लगाईआ। कलयुग अन्तिम खेडे खेड, सदी बीसवीं खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुर अवतार पहलों भेज, भाजी घर घर नाम फिराईआ। गुर अवतार चार युग भेजे, धुर संदेसा नाम सुणाईआ। आप सौंदा रिहा वड़ के अन्धेरी सेजे, जग नज़र किसे ना आईआ। पुरख अगम्म अथाह बेपरवाह सच महल्ले आपे लेटे, सुत्रीं वंड नज़र कोए ना आईआ। दो जहान नौजवान श्री भगवान लख चुरासी आपे वेखे, वेखणहारा आपणी खेल कराईआ। मर्द मर्दान हो मेहरवान बोध अगाधा अन्तर आत्म खोल्ले भेते, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। जन भगतां पूरब जन्म कराए चेते, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नाल मिलाईआ। आपे मेटणहारा रेखे, रेखा रुत्त पत आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत देवे वड्याईआ। जन भगत तेरा वड्डा माण, अभिमान नज़र कोए ना आईआ। तेरे संग वसे भगवान, संगी बणे बेपरवाहीआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां साधां सन्तां जीवां जंतां दए वखाल, वक्खर आपणी धार समझाईआ। सन्त सुहेले बणाए आपणे लाल, गुर चेले जोड़ जुड़ाईआ। नाता तोड़ काल महाकाल, वखाए सच सच्ची धर्मसाल, सचखण्ड वज्जे नाम शनवाईआ। त्रैगुण रहे ना कोई जंजाल, आपे सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। गुरसिख गुर गुर लए उठाल, जन्म जन्म जो घालन आए घाल, कीती घाल लेखे पाईआ। घर विच घर वखाए सची धर्मसाल, बिन तेल बाती दीपक आप जगाईआ। रोशन कराए पुरख अकाल, अक्ल कल दाता वड वड्याईआ। लख चुरासी भरमे भुली काया माटी झूठी खाल, खालक खलक भेव कोए ना पाईआ। नित नवित्त करे हित, निरगुण सरगुण जो रिहा पाल, बण प्रितपालक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आओ दर, दर दरवाज़ा आप खुल्लाईआ। सब दा पूरा होवे वर, वर दाता आप समझाईआ। जिस दा भय भउ करदे रहे डर, सो भ्यानक रिहा मिटाईआ। दरस करो अग्गे खड़, सनमुख लेखा दए चुकाईआ। काया मन्दिर अन्दर डूंघी भँवरी जाए वड़, आत्म सेजा सोभा पाईआ। आत्म परमात्म ढोला लए पढ़, सोहँ इक्को राग अलाईआ। चार वरन सरन सरनाई डिगे दड़, नधड़क इष्ट देव इक्को नज़री आईआ। सतिजुग साची लाए जड़, कलयुग कूड़ी क्रिया दए उखड़ाईआ। देवत सुर विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा पाणी रहे भर, सीस गगरीआ इक उठाईआ। गुरमुख सज्जण रहे तर, जिन्हां आपणी नईया नाम चढ़ाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कलयुग अन्त प्रभ दा खेल वेखण खड़, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। धन्न वड्याई साचे हरि, प्रभ तेरा अन्त कहिण कोए ना पाईआ। लख चुरासी विचों भगत साजण आंदे फड़, अन्दर वड़ वड़ खोज खोजाईआ। साचे पौड़े आपे चढ़, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ।

२३३
१५

तेरे गुरमुख जींवदयां जग गए मर, मरयां जीवण झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा वखाईआ। गुरमुख सारे तैनूं गौंदे, प्रभ इक ध्यान लगाईआ। पुरख अकाल इष्ट मनौंदे, दूजा नज़र कोए ना आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण तेरा राह तकौंदे, खाणी बाणी नाल रलाईआ। छत्ती राग तेरा सिफ्ती ढोला गौंदे, दर घर साचे सेव कमाईआ। गुरमुख गुर गुर दर्शन पौंदे, पा पा दर्शन खुशी मनाईआ। गढ़ हँकारी बुरज ढौंदे, माया ममता मोह चुकाईआ। सुरत सवाणी शब्द हाणी कोल बहौंदे, घर घर विच वज्जे वधाईआ। जगत लज्जया लोक गवौंदे, हय्या इक्को प्रभ रखाईआ। चरण कँवल जगदीश सीस झुकौंदे, जगत धूढ़ी टिक्का लावण छाहीआ। मन का मणका फेर वखौंदे, मन वासना नेड़े रहिण ना पाईआ। कूड़ा भाण्डा साफ़ करौंदे, दुरमति मैल धवाईआ। पुरख अकाल जो तेरा दर्शन करन औंदे, तिन्हां दीद ईद चन्द आपणी चमक ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां दए जणाईआ। गुर अवतार होए हैरान, तेई बैठे ध्यान लगाईआ। दस गुरू करन पहचान, बेपरवाह तेरी वड्याईआ। ईसा मूसा मुहम्मद नेत्र नैण शरमाण, अक्ख सके ना कोए खुल्हाईआ। चारे युग बणे शैतान, शरअ शरीअत नाल मिलाईआ। हरि का भेव कोए ना पाण, कूड़े धंदे जगत लोकाईआ। कामी क्रोधी हँकारी गंदे, माया ममता करन कुड़माईआ। बिन सतिगुर पूरे कोई ना करे ठंडे, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। चौथा युग आया कन्ढे, अन्तिम बैठे डेरा ढाहीआ। मनमुख जीवां करे रंडे, साचा कन्त नज़र किसे ना आईआ। बंदगीउँ भुल्ले तेरे बंदे, बंदीखाना सके ना कोए तुड़ाईआ। साची वस्त कोई ना मंगे, कूड़ी क्रिया झोली रहे भराईआ। कोई ना चढ़या हरि के डण्डे, साचे मन्दिर चरण ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान रिहा मिलाईआ। भगत भगवान मिलाए अन्त, कलयुग वज्जे मात वधाईआ। सतिजुग सच जणाए मंत, मन्त्र इक्को इक पढ़ाईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, पतिपरमेश्वर फेरा पाईआ। माण रखाए निरगुण संगत, सरगुण अंगीकार हो जाईआ। माणस जन्म ना होवे भंगत, मेहर नज़र आप उठाईआ। काया चोले चाढ़े रंगत, रंग रंगीला वेख वखाईआ। हरिजन तेरी बणाए आप बणत, जन्म जन्म विचों बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। लेखा जाणे चार युग, चौकड़ी आपणे विच छुपाईआ। अन्तिम सब दी आयू जाए पुग, थिर कोए रहिण ना पाईआ। कलयुग छोटा प्रभ दा पुत्त, चौथा हिस्सा आपणी झोली रिहा वखाईआ। अन्तिम गद्दीउँ जाए उठ, सीस छत्र ना कोए झुलाईआ। आपणा दुआरा आपे जाए लुट्ट, घर घर लुट्टी जाए लोकाईआ। मांवां नज़र ना आयण पुत्त, पिता पूत ना सोझी पाईआ। ख़ाली हत्थ कोल ना कुछ, नेत्र रोवण मारन धाहींआ। रसना

२३३
१५

२३४
१५

कूकण अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। सतिगुर साडी मेट भुक्ख, नाम वस्त इक वरताईआ। तेरे विछोड़े लग्गा दुःख, दर्दीआं दर्द ना कोए गंवाईआ। तेरा पैंडा रिहा मुक्क, कलयुग लोकमात रहिण ना पाईआ। ठाकर स्वामी सतिगुर वेखे झुक, दूर दुराडा नेड़े आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान रिहा जणाईआ। भगत भगवान इक्को संग, संगीत इक्को इक जणाईआ। इक्को चोला इक्को रंग, रंगणहार इक अख्वाईआ। इक नाम इक मृदंग, ताल तलवाड़ा इक वजाईआ। एका नूर इक्को चन्द, एका जोत करे रुशनाईआ। एका ढोला एका गीत छन्द, सोहला इक्को इक जपाईआ। एका देवे सच अनन्द, अनन्द अनन्द विचों वखाईआ। एका टुट्टी देवे गंढु, गंढुणहार गोपाल स्वामी गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। एका सब दा कीता करे खण्ड खण्ड, खण्डा नाम हथ्थ चमकाईआ। एका गुर अवतारां देवे दात वंड, पीर पैगम्बर इशारे नाल नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, कल कल्की वेस वटाईआ। कल कल्की खेले खेल कल्गीधर, धरनी धरत खुशी मनाईआ। निरगुण आवे जोत धर, ना कोई पिता ना कोई माईआ। आपणा राग आपे लए पढ़, चार युग दी पिछली करे ना कोए पढ़ाईआ। सतिजुग लाए साची जड़, कलयुग बूटा दए उखड़ाईआ। लेखा जाणे नार नर, नर नरायण भेव चुकाईआ। सच महल्ले आपे वड़, अछल अछल्ला रूप धराईआ। नहावणहारा साचे सर, सरोवर इक्को इक वखाईआ। निर्भय चुकाए भय डर, मेहर नज़र उठाईआ। साची सिख्या गुरमति गुरमुख विरला लए पढ़, पढ़ पढ़ आपणा घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतां सदा सदा सहाईआ। गुर अवतार नेत्र पेखण, पीर पैगम्बर ध्यान लगाईआ। कोई नज़र ना आए मुल्लां शेख़न, मसायक मसाहिब रूप ना कोए वटाईआ। साहिब सतिगुर वसे आपणे देसन, दहि दिशां खेल कराईआ। दर दरवेश विष्न ब्रह्म महेषन, शंकर इक लिव लाईआ। तेरी गोदी सारे खेडण, तूं साहिब पिता माईआ। चार युग तेरा कोई ना पाए भेतन, भेव कोई समझ सके ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे कराए नूर खुदाईआ। नूर खुदाई नूर नुराना, नौबत इक्को नाम वजाइंदा। चौदां तबकां दे परवाना, परम पुरख हुक्म सुणाइंदा। कलयुग होणा अन्त वैराना, वैरी घर घर नज़री आइंदा। सब नूं मन्दिर दिसे बेगाना, बिन सतिगुर पूरे गृह ना कोए वसाइंदा। अन्तिम लेखा चुक्कणा विच जहानां, दो जहाना अंग ना कोए लगाइंदा। सति सतिवादी कोई ना बन्न्हे गाना, मौली तन्द ना कोए जणाइंदा। सिर ते सच मन्ने ना कोई भाणा, मन्न के भाणा शुकर ना कोए मन्नाइंदा। अग्नी तड़पे राजा राणा, त्रैगुण तत ना कोए मिटाइंदा। चारों कुण्ट खेल महाना, ख़ालस रूप ना कोए वखाइंदा। चार वरन होए शैताना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, साचे भगतां आप सालाहइंदा। भगत सालाह श्री भगवान, कलयुग अन्त दए वड्याईआ। जिन्हां सिध्धा मिल्या आण, पुस्तक करी ना कोए पढ़ाईआ। बिन पढ़यां दित्ता ज्ञान, अन्तर आत्म बूझ बुझाईआ। साचा मन्दिर वखा मकान, घर नूर ज़हूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर मन्दिर इक वसाईआ। घर मन्दिर वसे साढे तिन्न हथ्थ, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। जिस गृह वसे पुरख समरथ, सो दूजे दर लभ्भण कोए ना जाइंदा। श्री भगवान लेखा चुकाए अठसठ, अमृत सरोवर तीर्थ इक नुहाइंदा। ज़ात पात दीन मज़्हब दुरमति मैल देवे कट, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को घर वखाइंदा। चौदां लोक खोल्ह हट्ट नाम निधान दए रख, चौदां तबकां सबक इक पढ़ाइंदा। पुरख अकाल होए प्रतख, लहिणा देणा जाणे हथ्थो हथ्थ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कल आपणा खेल वखाइंदा। कलयुग खेल अन्त निरँकार, नर हरि आप वरताईआ। सतिजुग सच करे प्यार, सम्मत सम्मती रिहा जणाईआ। शब्द अगाध बोल जैकार, खण्डा नाम इक चमकाईआ। ब्रह्मण्डां कोई ना पावे सार, जेरज अण्डज रोवण मारन धाहींआ। भेख पखण्डा फिरे विच संसार, घर घर भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। हरिजन मेला अन्त मिलाउणा, घर इक्को इक दरसाईआ। सच संदेसा राग सुणाउणा, रघुपत आपणा रंग रंगाईआ। काहन हो के बंसुरी नाम वजाउणा, सृष्टी ढोला रही गाईआ। सतिगुर हो के नूर चमकाउणा, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। पुरख अकाल हो के अक्ल कल धार चलाउणा, कलकाती तीर चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सरनाईआ। दर सरनाई तेरी आस, आसावंद ध्यान लगाईआ। पारब्रह्म प्रभ बुझे प्यास, श्री भगवान तेरा दर्शन पाईआ। तेरा मिलणा विच जीवण खास, ख़ालस तेरा रूप समाईआ। धुर दा भाषण गया भाख, भाख्या इक्को इक समझाईआ। गोबिन्द सूरा गया आख, आख़र आपणा मेल मिलाईआ। गुरमुख कदे ना होणा गुसताख़, गुस्सा नज़र कोए ना आईआ। अन्दर वड़ के लैणा झाक, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। सतिगुर पूरा वसे पास, विछड़ कदे ना जाईआ। चरण प्रीती जोग अभ्यास, जप तप हठ जग संजम नेम इक्को इक कराईआ। इक्को एक संजम नेमा, सो सतिगुर आप कराईआ। ठंडी धार जाणे कुण्ट हेमा, हेम कुण्ट सीतल धार वहाईआ। पुरख अकाल नाल मिल के चुक्कया नेमा, सुगंध इक्को वार खाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होवे नैण नैणां, जगत अक्ख नज़र ना आईआ। सति पुरख निरँजण हो के बणे साक सैणा, सज्जण दाता बेपरवाहीआ। कलयुग अन्तिम मन्ने कहिणा, साचा मार्ग इक वखाईआ। उच्चा टिल्ला पर्बत ढहिणा, डूंग्घी भँवरी कवरी पए दुहाईआ। गुरमुख गुर गुर इक्को धाम बहिणा, धाम अवल्लड़ा सोभा पाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा रिहा जणाईआ। सच संदेसा गुरू अवतार, गहर गम्भीर आप समझाइंदा। इकट्ठे होवो एका वार, चार युग दा लेखा आप मुकाइंदा। दूर दुराडे सद्द यार, सद्दा नाम इक समझाइंदा। सनमुख बैठ होए गुफ़तार, गुफ़त शनीद धार चलाइंदा। वाहवा वज्जदी रहे सितार, सतार सतिवन्ती तन्द बिन तन्द हिलाइंदा। तू ही तू करे पुकार, तूं मेरा मैं तेरा दोहां इक्को घर नज़री आइंदा। सच दुआरे पाए घेरा, चारों कुण्ट वेख वखाइंदा। जिस घर गुरमुख तेरा लग्गा डेरा, सो दर हथ्थ किसे ना आइंदा। कलयुग जीव कोई बन्नृ ना सके बेड़ा, चपू नाम ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, घर साचे सोभा पाइंदा। दर घर साचे सोभा पाए, परम पुरख बेपरवाहीआ। दीआ बाती कमलापाती निरगुण जोत करे रुशनाए, अग्नी हवन पवन ना कोए वखाईआ। धुर दी गाथी नाम ढोला बण विचोला आपे गाए, रागी इक्को राग जणाईआ। पड़दा उहला दए उठाए, जिस आपणे नाल मिलाईआ। कलयुग अन्तिम निरगुण चोला लए बदलाए, चोली वेखण घर किसे ना जाईआ। भोला भाला खेल कराए, भोले भाउ धरती मइया दोए जोड़ पए सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। साची सिख्या हरि का मंत, मन्त्र इक्को इक समझाइंदा। आत्म विछड़ी मिले कन्त, नर नरायण इक्को नज़री आइंदा। काया चोली चाढ़ृ रंग बसन्त, उतर कदे ना जाइंदा। माणस जन्म ना होए भंगत, भाण्डा भरम ना कोए वखाइंदा। मिले वड्याई विच जंत, दो जहाना खेल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, करे खेल श्री भगवन्त, भगवन आपणा लेखा जुग जुग आपणे हथ्थ वखाइंदा।

✪ ५ भाद्रों २०२० बिक्रमी करनैल सिँघ दे गृह कादराबाद ✪

मन चंचल जगत अन्धा, दहि दिशा उठ उठ धाहीआ। बिन सतिगुर सरन ना कोई बंदा, बिन बंदगी सतिगुर मिले ना बेपरवाहीआ। जगत वासना खोटा गंदा, कूड़ी क्रिया गंढु पवाईआ। दीन दयाल सदा बख़्शंदा, बख़्शणहार बेपरवाहीआ। वस्त अमोलक इक्को देंदा, सति साची झोली पाईआ। नाम जैकारा इक्को कहिन्दा, आत्म परमात्म ढोला गाईआ। घर सेज सुहञ्जणी आ के बहिंदा, सोभावन्त सोभा पाईआ। निज आसण आपणे डेरे रहिंदा, नज़र किसे ना आईआ। ना कुछ खांदा ना कुछ पींदा, प्रेम प्रीती मंग मंगाईआ। घोल घुमाई विटुह थींदा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। बीज अगम्मी इक्को बींदा, बीजणहारा बेपरवाहीआ। ना मरया ना दिसे जींदा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। ना आलस ना कोई नींदा,

२३७ १५

ग़फ्लत रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन विछड़े आप मिलाईआ। विछड़यां जग मेला मेल, मिलणी नाम कराईआ। घर ठाकर मिले सज्जण सुहेल, झगड़ा कोए रहिण ना पाईआ। जोत निरँजण चाढ़े तेल, घर सज्जण आवे बेपरवाहीआ। अचरज वखाए आपणा खेल, आत्म अन्तर बूझ बुझाईआ। करे प्रकाश बिन बाती तेल, चन्द चांदनी इक चमकाईआ । घर वखाए धुर नवेल, दरगाह साची सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन टुट्टी गंढु वखाईआ। टुट्टी गंढे गोबिन्द गोपाल, सो साहिब दया कमाईआ। जन्म जन्म दे विछड़े लाल, कर किरपा आप मिलाईआ। कवण बिध होवे दयाल, समझ सके कोई ना राईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नित नवित्त चलदा रिहा नाल, निरगुण सरगुण हो के संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। हरिजन विछड़े मारे धाह, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। कूड़े संगी रहे भुला, भरम भुलेखा पाईआ। घर चंगी वस्त रहे गंवा, पल्ले गंढु ना कोए वखाईआ। श्री भगवान बेपरवाह, बेपरवाही धार चलाईआ। जो जन सरनी डिगे आ, फड़ बाहों लए उठाईआ। डुबदे पाहन लए तरा, पाथर आपणा चरण छुहाईआ। समुंद सागर पार दए करा, कलयुग भँवरी रहिण कोए ना पाईआ। कर्म कांड दए गंवा, खण्डा खड़ग तीर चलाईआ। साचा संजम नेम दए समझा, धुर दी धार इक सुणाईआ । बिन सतिगुर पूरे कोई ना दिसे मलाह, बेड़ा पार ना कोए कराईआ। अग्गे पिच्छे वेखो थल अस्गाह, जलधार समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन सदा सदा सहाईआ। सदा सहाई होया आप, आपणे हथ्थ रखी वड्याईआ। पिछले मेटे सारे पाप, पतित रूप रहिण ना पाईआ। अग्गे हरिसंगत दित्ता साथ, सगला संग जणाईआ। रसना जिह्वा पूजा पाठ, इक्को मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। जागत सोवत पुछे वात, घर आ आ वेखे बेपरवाहीआ। धन सुहञ्जणी सोही रात, भिन्नड़ी रैण खुशी मनाईआ। मस्तक धर के बैठी दोवें हाथ, सोच समझ सके ना कुछ राईआ। दो हथ्थीं खोल्ले आपणा ताक, नेत्र नैण उठाईआ। नज़री आया पुरख अबिनाश, जोती जाता जोत जगाईआ। जो लिख के गया भविक्ख्त वाक, सो लेखा लेखे रिहा लगाईआ। अन्दर बाहर चले साथ, विछोड़ा रहिण कोए ना पाईआ। लै के जाए आपणे घाट, पत्तण इक्को इक वखाईआ। गुरसिख तेरी पिछली मुक्की वाट, अग्गे औझड़ पन्ध नज़र ना आईआ। सतिगुर रखे दे कर हाथ, मेहर नज़र उठाईआ। बिनां श्री भगवान झूठे दिसण साक, वेले अन्त ना कोए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बेअन्त खेल वखाईआ। बेअन्त खेल रिहा वखा, हरि जू वक्खरी धार चलाइंदा। जग विछड़े रिहा मिला, मेला इक्को घर रखाइंदा। जगत दलिद्र रिहा गंवा, दुःख दर्द नाल मिलाइंदा। चोटी सिखर रिहा

चढ़ा, सोटी नाम हथ्थ फड़ाइंदा। जोती जोत रिहा जगा, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। लोक परलोकी रिहा वडया, सच श्लोकी नाम अलाइंदा। काया थोथी भाण्डा रिहा भरा, नाम निधाना झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख गुरमुख गुरसिख गुरसिख गुर इक्को रंग रंगाइंदा। इक रंग सिख गुर, गुर सिख आप रंगाईआ। इक मृदंग सिख गुर, सिख गुर इक अनन्द वखाईआ। इक चन्द सिख गुर, गुर सिख इक्को नूर करे रुशनाईआ। इक पिण्ड गुर सिख पिण्ड गुर सिख इक्को डेरा लाईआ। दीन दयाल बण बख्शिंद, मेहरवान होए सहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन तेरी मेटे चिन्द, चिन्ता ग़म ना कोए सताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेख वखाणे साची बिंद, जीव जंत खोज खुजाईआ।

करनैल मिले घर नैण, नैनन नैन मिलाईआ। देवणहारा लहिणा देण, झोली नाम भराईआ। अग्गे ना वहणा पिछले वहण, पिछला लेखा एसे कारण दित्ता मुकाईआ। तन वस्त्र पाए नाम गहिण, गहिणे प्या तन देवे छुडाईआ। आपणी हथ्थीं कर के जाए साईन, सैनत नाल समझाईआ। हरि का शब्द गुर का कहिण, गुरसिख मन्नण चाईं चाईंआ। हरिसंगत विच जो गुरमुख बहिण, तिन्हां मिले माण वड्याईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार नैण शरमाइण, अक्ख सके ना कोए उठाईआ। आसा तृष्ना निउँ निउँ लागे पाइन, गुरमुख तेरी चरण धूढ़ी मंगे थाउँ थाईंआ। माया ममता खाए ना डाइण, कूड़ी इच्छया ना होवे हल्काईआ। दरस दिखाए इक्को नैण, निज नेत्र नैण खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वर दाता बेपरवाहीआ। गुरमुख अर्ज़ सदा मंज़ूर, सतिगुर पूरा दया कमाइंदा। पिछला बख्शणहार कसूर, अगला मार्ग आपे लाइंदा। काया पंज तत तपे ना वांग तन्दूर, अमृत मेघ इक बरसाइंदा। नाता तुटे कूड़ो कूड़, सच सुच झोली आप भराइंदा। जिन्हां लगावे मस्तक धूढ़, तिन्हां दुरमति मैल धवाइंदा। जो सतिगुर कोलों रहे दूर दूर, तिन्हां एथे ओथे थाएँ नज़र कोए ना आइंदा। सतिगुरू भण्डारा शब्द भरपूर, गुरमुखां जुग जुग आप वरताइंदा। ठाकर हो के बणे मज़दूर, जन भगतां घर घर सेव कमाइंदा। जे कोई वेखे दर हज़ूर, हाज़र हो के नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आत्म दरसी स्वच्छ सरूपी आपणा दरस कराइंदा। स्वच्छ सरूपी दरस अनोखा, जोती जोत जोत जोत रुशनाईआ। बेशक गुरसिख गुर नूं दे जावे धोखा, गुर मुख ना कदे भवाईआ। जिस वेले गुरमुख होवे औखा, सुणे फरियाद बेपरवाहीआ। अन्तिम स्वास तक्क देवे मौका, पिछली भुल्ल सारी देवे बख्शाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन लेखा लेखे पाईआ। हरिजन लेखा जाए मुक्क, मुके चूक पराईआ। मात गर्भ फेर ना होवे दुःख, लख चुरासी पन्ध मुकाईआ। राए धर्म ना सके पुच्छ, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सीस निवावण झुक, वाहवा गुरसिख तेरी वड्याईआ। जिस दा नाम गाए मुख, रसना जिह्वा हरि हरि गुण ध्याईआ। सो साहिब दा बणे साचा पुत्त, पुरख अबिनाशी आपणी गोद उठाईआ। धर्म दुआरे हरि निरँकारे सुखणा रिहा सुख, कवण वेला जन भगतां मिलां चाईं चाईंआ। प्रेम प्यार दी मिटावां भुक्ख, प्रेम प्रीती इक्को समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हर घट अन्दर वेखे लुक, बिन सतिगुर नेत्र नज़र किसे ना आईआ। गुरसिख रोवे अन्तर धाह, रसना कूक दुहाईआ। पवण स्वास नाल रलाए साह, उणंजा पवण संग निभाईआ। चारों कुण्ट वेखे नैण उठा, नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। दुक्खां भरया सर्ब जहां, सुख रूप ना कोए समाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोई ना पकड़े बांह, सज्जण यार बैठण मुख भवाईआ। दीन दयाल जिस जन जपाए आपणा नाँ, नांवां लेखा लेखे लवे पाईआ। दरगाह साची देवे थाँ, दो जहाना पन्ध मुकाईआ। अन्तिम जोती मेला लए मिला, जोती जोत समाईआ। करनैल कर्म कांड दा मिटया गुनाह, जन्म मरन दा टुट्टा फाह, ठग्ग चोर दा छुट्टा राह, हरिसंगत नाता जुड़या भैण भ्रा, कूड़ी अक्ख प्रतख ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अर्ज़ी अर्ज़ी अर्ज़ आरज़ू लेखे पा, लेखा लेखिउँ बाहर कढ्ढाईआ।

✪ ५ भाद्रों २०२० बिक्रमी सवरन सिँघ दे गृह कादराबाद ✪

गुरसिख माणक मोती सच स्वर्ण, कंचन काया कोट गढ़ वसाईआ। दर दरवेश मंगे प्रभ सरन, सरनगति इक रखाईआ। नाता तोड़े मरन डरन, भय भउ ना कोए तकाईआ। ढोला इक्को आए पढ़न, दूजी करे ना कोए पढ़ाईआ। सतिगुर डण्डे आए चढ़न, पौड़ी रूप ना कोए वखाईआ। लेख चुकाए वरन बरन, अट्ठ दस ना कोए वंड वंडाईआ। जगत विकारे आए लड़न, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। साची तरनी आए तरन, चप्पू नाम हथ्थ उठाईआ। हरि का दरस आए करन, निज नेत्र ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे वेखणहार, अभुल्ल भुल कदे ना जाईआ। कंचन सोना माणक मोती, गुरमुख विरला नज़री आईआ। जिस घर जगे निर्मल जोती, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाईआ। वासना निकले विचों खोटी, दुरमति बैठे मुख भवाईआ। अन्तर आत्म फोले आपणी पोथी, काया वरका लए उलटाईआ। जन्म

जन्म दी मैल जाए धोती, पाप कलेवर रहिण कोए ना पाईआ। सुरत सवाणी उठे सोती, घर साचे लए अंगड़ाईआ। मति रहे ना कोई होछी, गुरमत्त मिले वड्याईआ। चरण कँवल इक्को ओटी, पुरख अकाल सच्ची सरनाईआ। रसन आहार ना कोई बोटी, प्रेम प्रीती मंग मंगाईआ। चढ़ के वेखे आपणी चोटी, घर वसे सतिगुर सच्चा माहीआ। जिस नूं लभ्भदे बाहर कलयुग जीव लोकीं, सो लुक्या नज़र किसे ना आईआ। प्रभ दी घाटी बड़ी औखी, पार करन कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां दए बुझाईआ। हीरा लाल जवाहर मोती माणक, माणस जन्म मिली वड्याईआ। लख चुरासी विच मिल्या ना कोई मालक, मलकीअत हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी लभ्भदा रिहा ख़ालक, ख़ालस रूप नज़र कोए ना आईआ। भरमे भुलदा रिहा बाशक, बिन सतिगुर पूरे भरम ना कोए चुकाईआ। घर घर विच बहि के करे अदालत, अदल इक्को इक कमाईआ। गुरसिख रहिण ना देवे कोई अलामत, झूठा झगड़ा दए मुकाईआ। नाम ख़ज़ाना देवे धुर दी अमानत, हरिजन साचे झोली पाईआ। पंज तत करे ना कोई ख़िआनत, ठग्ग चोर लुट्ट ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां दिती इक्को स्याणप, हरिसंगत वेखण चाईं चाईंआ। माणक मोती हीरा लाल, गुरसिख विरला नज़री आइंदा। जिस जन मिल्या हरि गोपाल, गोपी नाथ दया कमाइंदा। काया मन्दिर अन्दर वखाए सच्ची धर्मसाल, मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मड्ड नज़र कोए ना आइंदा। दीपक दीआ जोत जगे कमाल, बेमिसाल डगमगाइंदा। जलवा नूर देवे जलाल, ज़ाहर ज़हूर खेल वखाइंदा। सन्त सतिगुर साचे लभ्भे आपे लाल, लालन आपणे हट्ट विकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख गुर गुर वेख वखाइंदा। लाल अमुलड़ा गुरमुख हीरा, हरि दो जहान बणाईआ। सच भगती सीस बन्ने चीरा, मस्तक टिक्का नाम लगाईआ। औखा मार्ग चुक्के भीड़ा, राह साचा दए समझाईआ। अमृत बख्शे ठांडा नीरा, निझर झिरना आप झिराईआ। बदलणहार साहिब तकदीरा, तदबीर आपणी दए समझाईआ। लख चुरासी विचों माणस जन्म अख़ीरा, हरि सतिगुर मिलणा हरिजन निउँ निउँ लग्गणा पाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख गुर गुर गोद उठाईआ। गुरमुख गुर गुर गोदी चुक्क, घर घर दए वखाईआ। वेख लोकाई गुरमुख मुख, श्री भगवान रिहा धवाईआ। जन्म कर्म दा मिटया दुःख, भाण्डा भरम भंनाईआ। बण माँ प्यो बणाए पुत्त, पूत सपूता गोद सुहाईआ। दरस दिखाए नेड़े हो के झुक, दो जहाना पन्ध मुकाईआ। सेज सुहाए सुहञ्जणी रुत्त, रुत्त रुत्तड़ी आप महकाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, चेतन आपणी धार समझाईआ। गृह मन्दिर आए उठ, पड़दा दूई दए मिटाईआ। घर वखाए सच सुच, सुच संजम आप बणाईआ। जोती

२४०

१५

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख काग हँस वखाईआ। गुरमुख कागों बणे हँस, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाइंदा। प्रगट होवे कोटन कोटां विचों सहँस, सहँस सहँसरां विचों आप उपाइंदा। चार युग विच प्रभ दा बणे छोटा बंस, लख चुरासी संग ना कोए रखाइंदा। दुष्ट सँघारे जिउँ काहना कंस, राम रामा रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे माण रखाइंदा। हरिजन माण सर्ब सुख सागर, मिले लोकमात वड्याईआ। वस्त अमोलक काया गागर, गहर गम्भीर दए भराईआ। ग़रीब निमाणयां दर देवे आदर, दर्दी हो के दर्द वंडाईआ। पार कराए सिन्ध सागर, भँवरी सके ना कोए रुढ़ाईआ। वणज कराए बण सौदागर, नाम हट्ट इक चलाईआ। दर आयां दर देवे आदर, अदल इक्को इक वखाईआ। किरपा करे करीम कादर, कुदरत कादर राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे नाम वर, सिदक सबूरी सबर प्याला इक्को जाम प्याईआ । इक्को जाम नाम खुमारी, दिवस रैण रखाईआ। सच प्रीती निरगुण यारी, सरगुण आप लगाईआ। कूड़ी क्रिया कट बीमारी, आत्म सुख उपजाईआ । भगत भगवान साचा मेला कन्त नारी, नारी कन्त आप प्रनाईआ। सेज सुहञ्जणी आत्म रिहा चाढ़ी, पलँघ रंगीला इक सुहाईआ। आपे फिरे पिच्छे अगाड़ी, बण सेवक सेव कमाईआ। करे प्रकाश बहत्तर नाड़ी, घर घर जोत रुशनाईआ। माणस जन्म ना होए ख्वारी, खुशी ग़मी इक्को रंग वखाईआ। जिस पुरख अकाल नाल लाई यारी, तिस याराना सके ना कोए तुड़ाईआ। सो गुरमुख मारे इक उडारी, पुरीआं लोआं चरणां हेठ दबाईआ। जा के मिले जोत निरँकारी, निरगुण मेला सहिज सुभाईआ। जिस दे कोलों भिख्या मंगदे रहे गुर अवतारी, सो दातारी फेरा पाईआ। कलयुग अन्त जन भगतां मिलण दी आई वारी, जुग जुग दा लहिणा झोली पाईआ। रखे लाज जिस चरण छुहाई दाढ़ी, एथे ओथे लेखा वेखे शहिनशाहीआ। गुरमुख लभ्भण जाए ना कोए जंगल जूह उजाड़ पहाड़ी, बन खोजण कोए ना जाईआ। मेल मिलावा धुर दरबारी, धुर दी धारी दए समझाईआ। दोए दोए जोड़ सद निमस्कारी, नमों नमों सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख साचे देवे दान, दाता दानी दो जहानी शाह सुल्तानी भगत भगवान इक अख्वाईआ।

६ भाद्रों २०२० बिक्रमी बूड़ सिँघ दे गृह कादराबाद

सति सरूप सतिगुर दरस, अग्नी तत बुझाइंदा। अमृत मेघ देवे बरस, तृष्ना तृखा गंवाइंदा। लेखा चुकाए सोग

हरख, चिन्ता ग़म ना कोए जणाइंदा। अन्तर आत्म जो रहे भड़क, तिन्हां भाण्डा भरम भंनाइंदा। अद्धविचकारे जो रहे लटक, तिन्हां धुर दा हुक्म सुणाइंदा। गुरमुख मार्ग चले बेखटक, ख़तरा नज़र कोए ना आइंदा। हरिजू तारनहारा बधक, गनका कुल ना वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि हरिजन वेख वखाइंदा। हरिजन वेखे खोल्ह ताकी, पड़दा मन्दिर आप उठाईआ। निरगुण हो के बणे साथी, साचा संग रखाईआ। सेवक हो के करे राखी, मेहर नज़र उठाईआ। प्रीतम हो के बणे पाठी, गुरमुख ढोला गाए चाईं चाईंआ। सरोवर हो के बणे तीर्थ ताटी, साचा सीर मुख चुआईआ। वणजारा हो के खोल्हे हाटी, घर घर विच सोभा पाईआ। उज्यारा हो के जगाए बाती, जोत निरँजण कर रुशनाईआ। अमृत हो के जाम प्याए बाटी, निझर झिरना आप झिराईआ। मेहरवान हो के पुच्छे वाती, निरगुण सरगुण फेरा पाईआ। अछल अछल्ल हो के खेल करे बहुभांती, हरि का भेव समझ कोए ना पाईआ। नूर नुराना हो के मेटे अन्धेरी राती, साचा चन्द कर रुशनाईआ। लहिणेदार हो के लेखा मुकाए बाकी, पिछला रहिण कोए ना पाईआ। खेवट हो के पार कराए घाटी, पतण मिले बेपरवाहीआ। दाता हो के उत्तम रखे जाति, वरन बरन ना कोए दसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दए समझाईआ। हरिजन सच दए बुझा, बुझारत नाम पाईआ। अग्नी तत दए गंवा, ज्ञान गुरू समझाईआ। शब्दी नाद दए अल्हा, घर घर इक पढ़ाईआ। कागद कलम लेखा दए मुका, धुर संदेसा इक सुणाईआ। दरस हमेशा दए वखा, नित नवित्त वेख वखाईआ। अर्श फर्श बण मलाह, बेड़ा पार वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अधवाटी फेरा पाईआ। अधवाटी फिरे आदि जुगादि मध, मधुर धुन नाम सुणाईआ। दो जहानां निरगुण हो के रिहा भज्ज, सच संदेसा इक अलाईआ। सच सिँघासण बहे सज, शाह पातशाह बेपरवाहीआ। दो जहानां पार कर के हद्द, सच हदूद आप वंडाईआ। लख चुरासी विचों कड्ढ, हरि सज्जण लए उठाईआ। नाम प्याए साची मध, अट्ठे पहर खुमार वखाईआ। सीस जगदीश पड़दा देवे कज, समरथ आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा लेखे पाईआ। हरिजन भरम ना जाए भुल्ल, बेपरवाह आप समझाईआ। गुरमुख सदा नवेली कुल, कुलवन्ता आप बणाईआ। देवे नाम निधान आप अनमुल्ल, कीमत अन्त ना लाए कोई आ। सच दुआरा जाए खुल्ह, खुल्ही वस्त आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि रहे अभुल्ल, भुल्लयां मार्ग दए वखाईआ। भुल्लयां मार्ग दस्से राह, रहबर इक अख्वाइंदा। नाम संदेसा देवे सलाह, साची धार बंधाइंदा। निरगुण हो के बणे गवाह, सरगुण संग निभाइंदा। प्रीतम हो के होए फ़िदा, आप आपणा भेंट चढ़ाइंदा। सतिगुर हो के मार्ग दस्से

२४२ १५

सिध्धा, अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। मेहरवान हो के लेखा जाणे नौं अठारां सिध्धा, साधना आपणे हथ्थ वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन अन्तर आत्म विधा, तीर अणयाला इक चलाइंदा। तीर अणयाला तिक्खी मुखी, गुर सतिगुर घाड़त आप घड़ाईआ। गुरमुख मेटे जन्म जन्म दी दुखी, कर्म कर्म रोग गंवाईआ। साची धारों धार उठी, बाहरों लभ्भण कोए ना पाईआ। जुग जन्म दी विछड़ी रुट्ठी, रुठड़े लए मनाईआ। घर उपजावे इक्को सुखी, सुख सागर रूप समझाईआ। आपणे निशानिउँ कदे ना उकी, सच निशाना दए लगाईआ। गुरमुख प्रेम रहे सद भुक्खी, तृष्ना जगत ना कोए वधाईआ। तोड़न विछोड़न मेलणहारा मध टुट्टी, अनन्त आपणी गंढ पवाईआ। हरिजन चोग ना कदे निखुटी, स्वास स्वास लेखे पाईआ। जगत सोहे माता पिता पुत्तीं, भगवान भगतां गोद बहाईआ। परम पुरख दी कुल उच्ची, गुरमुख साचे देण बणाईआ। सुरत सवाणी रखण सुची, कूड़ी करे ना कोए कुड़माईआ। हरि चरण ध्यान इक्को रुची, घर रचना वेख वखाईआ। सतिगुर जोत रहे ना लुकी, पड़दा सके कोई ना पाईआ। जीव जंत जानण धार पुट्ठी, बेसमझ समझ कोए ना पाईआ। कूड़ी क्रिया सृष्टी जाए लुट्टी, इष्टी नज़र किसे ना आईआ। नाम वस्त किसे कोल ना दिसे मुट्ठी, ख़ाली झोली रहे वखाईआ। सब दी जाए मिटी पुट्टी, धूढ़ी धूंआँधार वखाईआ। गुरमुखां धार सदा चिट्टी, काला लेख ना कोए जणाईआ। कूड़ी रस वेखण फिकी, रसना जिह्वा ना कोए चखाईआ। घर विच जोत दिसे निक्की, गुर पूरा दए वखाईआ। जिस दी गुरू अवतार पीर पैगम्बर लिख लिख देंदे गए चिट्ठी, खाणी बाणी राग अलाईआ। सो साहिब सब नूं रिहा जिती, जित हार रूप वटाईआ। दो जहानां वंडणहारा हिस्सी, हिस्सा आपणा आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साजण लए उठाईआ। विछोड़ा मेला धुर दा रंग, सो साहिब आप रंगाईआ। चढ़ना उतरना हथ्थ डोर पतंग, जगत खिलाड़ी खेल खिलाईआ। प्रेम रस धुर दा अनन्द, सद बख्शंद आप वखाईआ। ढोला राग अगम्मी छन्द, गहर गम्भीर सुणाईआ। वस्त अमोलक मांगत मंग, दाता दानी झोली भराईआ। प्रकाश नूर सीतल चन्द, अग्नी तत गंवाईआ। दूई द्वैत भरमां कंध, भाण्डा भउ भंनाईआ। काया कोट खोज ब्रह्मण्ड, जीउँ पिण्ड दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, डुब्बदे डुब्बदे पार कराईआ। डुब्बदे डुब्बदे वेखे सागर, जग डूंघी धार वखाइंदा। नज़र ना आए कोई बहादुर, जो भँवरी कवरी पार कराइंदा। किसे ना मिले दरगाह आदर, आदम आमद विच नज़र कोए ना आइंदा। जिन्हां भुल्लया करता कादर, तिन्हां कातिल आपणी धार वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजू हरि हरि भेव खुल्हाइंदा। गुरमुख प्रभ मिलण दा इक्को मतलब, सच साची सच दृढ़ाईआ। जो

जन पढ़े हरि के मकतब, अलिफ़ ये देवे भुलाईआ। भेव खुल्हाए नर हरि असलत, असलीयत आपणी दए बुझाईआ। पिछली मेटणहारा ख़सलत, साचा मार्ग इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे मेले विछड़े बिछरत, बिछरत मेला आप कराईआ। साचा मेला बिन सोच समझ, हरि सतिगुर आप कराईआ। अन्दर बाहर मारे रमज़, नाम इशारे नाल उठाईआ। लेखा जाणे पूरब जन्म, जन्म कर्म फोल फुलाईआ। वेख वखाए धुर दा धर्म, धर धरनी दए वड्याईआ। सन्त सुहेले धुर दा ढोला जो जन पढ़न, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। तिन्हां अन्तिम आए वरन, हरि करता फेरा पाईआ। बख्शे सरनाई साचे चरण, दरगाह मिले माण वड्याईआ। अद्धविचकार कोए ना अड़न, मूर्ख धन्दा ना कोए वखाईआ। गुरसिख गुर गुर दोवें करन इक्को प्रण, पल्लू छुट्टे जगत ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म कर्म पूरब लेखा झोली पाए आण, बाकी आपणे हथ्थ रखाईआ।

२४४

✪ ६ भाद्रों २०२० बिक्रमी पिण्ड बल मसा सिँघ दे गृह ✪

१५

जुग चौकड़ी रखे उडीक, सम्मत सम्मती ध्यान लगाईआ। गुर अवतार दस्सण ठीक, पीर पैगम्बर देण गवाहीआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण बणन तारीख़, तवारीख़ रूप वटाईआ। हरि का समां जुग जुग मीत, लख चुरासी संग निभाईआ। लेखा जाणे हस्त कीट, ऊँच नीच वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम परखे नीत, नव नौं पड़दा आप उठाईआ। फिरी दरोही जगत मसीत, मुसल्ला हक़ ना कोए विछाईआ। साचे हुजरे दिसे ना कोए प्रीत, मक्का काअबा रिहा कुरलाईआ। चौदां तबक नज़र ना आए लाशरीक, सिरकत भरी सर्ब खुदाईआ। मिहबान बीदो सुत्ता दे कर पीठ, नूर इलाही नज़र किसे ना आईआ। आत्म परमात्म कोई ना रिहा चीत, मन वासना जगत हल्काईआ। पारब्रह्म ब्रह्म ढोला गाए कोए ना गीत, कूड़ी क्रिया रसन हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा समां आप समझाईआ। साचा समां श्री भगवान आदि जुगादि आप जणाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाइंदा। निरगुण सरगुण दे दे दान, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी करे खेल महान, ख़ालक ख़लक नज़र किसे ना आइंदा। गुर अवतार कर प्रधान, सच प्रधानगी नाम जणाइंदा। बोध अगाधा दे ज्ञान, शब्द अनादी नाद सुणाइंदा। दीपक दीआ जगे महान, जोत निरँजण डगमगाइंदा। अमृत आत्म पीण खाण, कूड़ी तृष्ना तृखा मिटाइंदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा समां आप उपाइंदा। साचा समां रखणा याद, यादाश्त इक जणाईआ। जुग चौकड़ी सुणे फ़रयाद, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। मेट मिटाए वाद विवाद, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। होए सहाई सन्त साध, हरि सज्जण लए मिलाईआ। शब्द निशाना देवे गाड, दो जहानां आप वखाईआ। परम पुरख प्रभ बण बण साक, हरिजन साचे वेखण आईआ। बंद कवाड़ी खोल्हे ताक, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। चौदां लोक वखाए हाट, त्रैगुण अतीता बेपरवाहीआ। शब्द अगम्म सुणाए बात, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। जोती नूर जगे ललाट, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। नित नवित्त वेखणहारा वाट, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख वखाईआ। चारे युग पतण बैठा घाट, हरि दाता वड मलाहीआ। लेखा लिख्या नाल कलम दवात, शाही सही रही पाईआ। वेखणहारा खेल तमाश, परवरदिगार नूर इलाहीआ। मुकामे हक़ कर निवास, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। सचखण्ड निवासी शाहो शाबास, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। पूरी करनहारा आस, तृष्ना मेटे थाउँ थाईंआ। लहिणा देणा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर खोज खुजाईआ। लख चुरासी हर घट अन्दर रखे वास, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समें समें एका हुक्म वरताईआ। चार युग दा समां निराला, निरगुण सरगुण आप जणाइंदा। वसणहारा धाम अपारा, बेपरवाह खेल कराइंदा। लेखा जाणे धुरदरबारा, दरगाह साची सोभा पाइंदा। शब्दी सुत इक दुलारा, थिर घर साचे आप जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा समां आप उपाइंदा। साचा समां स्वामी एक, हरि करता आप जणाईआ। सुत दुलारे साची टेक, थिर घर वज्जे इक वधाईआ। विष्नूं उठ नेत्र पेख, पारब्रह्म रिहा समझाईआ। ब्रह्मे वेख आपणा लेख, पारब्रह्म करे पढ़ाईआ। शंकर वेख आपणी खेड, हथ्थ त्रिसूल रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा समां इक दृढ़ाईआ। साचा समां वेखे त्रैगुण माया, सो साहिब आप वखाईआ। पंज तत रिहा कुरलाया, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश दए दुहाईआ। तेई अवतारां हुक्म सुणाया, धुर संदेसा बेपरवाहीआ। भगत अठारां भेव चुकाया, पड़दा उहला आप उठाईआ। मूसा ईसा मुहम्मद पढ़ाया, कलमा इक्को हक़ जणाईआ। नानक निरगुण मेल मिलाया, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। गोबिन्द सूरा सुत उपजाया, सीस जगदीश हथ्थ टिकाईआ। चार युग दा भेव खुलाया, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। चार वरनां मेल मिलाया, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका रंग वखाईआ। बरन अठारां डेरा ढाहया, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। अनबोलत राग इक सुणाया, लिखण पढ़न विच ना आईआ। मोह मुहब्बत इक बणाया, मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला इलाही नूर नूर समाईआ। कुदरत कादर वेख वखाया, करता करीम बेनज़ीर, जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा समां आप प्रगटाईआ। साचा समां आए जग, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी लग्गे अग्ग, अग्नी तत रूप वटाईआ। कलयुग जीव होए कग्ग, हँस रूप ना कोए वखाईआ। कूड़ी क्रिया पीवण मध, अमृत रस रसना कोई ना लाईआ। नौ दुआरे पार ना करे कोई हद्द, दसवें घर बूझ कोए ना पाईआ। अनहद सुणे ना कोई छन्द, अन्तर आत्म धुन ना कोए उपजाईआ। मन वासना कोई ना देवे कढ्ढ, कूड़ी ममता रही कुरलाईआ। बिन हरि नामे खाली दिसण हड्ड, पंज तत ब्रह्म मति साख्यात रूप ना कोए दृढ़ाईआ। गुर का मार्ग गए छड्ड, नानक गोबिन्द गए भुलाईआ। सतिगुर नालों होए अड्ड, कल बैठे मुख भवाईआ। करे खेल सूरा सरबग्ग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल एका थाईंआ। साचा खेल करे करतार, करनी आपणे हथ्थ रखाइंदा। लिख लिख लेखा गए गुरू अवतार, पीर पैगम्बरां बूझ बुझाइंदा। शास्त्र सिमरत करन पुकार, वेद व्यास उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा साचे टिल्ले पर्बत उतरे आपणी धार, मात पित नज़र कोए ना आइंदा। योद्धा सूरबीर बण बलकार, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। कल कल्की लै अवतार, कल आपणी आप वखाइंदा। मूसा लिखे नाल प्यार, मेरा पिता सिर मेरे हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा समां आप उपाइंदा। सच समां मुहम्मद धार, नूर इलाही नूर जणाईआ। वड अमाम आए परवरदिगार, वेखे थाउँ थाईंआ। नानक निरगुण लिख के गया लिखार, निहकलंक एका डंक वजाईआ। गुर गोबिन्द उच्ची कूक गया पुकार, कल कल्की वेस वटाईआ। सम्बल वसे धाम न्यार, सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। जोती जाता पुरख करतार, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। शब्दी दाता सिरजणहार, शब्द भण्डारा इक वरताईआ। कलयुग अन्तिम पावे सार, लख चुरासी जीव जंत साध सन्त वेख वखाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी होए विभचार, साची नार कन्त ना कोए हंढाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ ना कोई बोले धर्म जैकार, जगत सियासत करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समां इक्को इक समझाईआ। कलयुग अन्त समां बलवान, बलधारी आप जणाईआ। करे खेल नौजवान, प्रभ नौबत नाम वजाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव उठाए आण, करोड़ तेतीसा सुरप्त इन्द सोया रहिण ना पाईआ। गुर अवतार करन ध्यान, पीर पैगम्बर नैण उठाईआ। शास्त्र सिमरत वेद होण हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेखे शैतान, शरअ घर घर करे लड़ाईआ। राजा प्रजा दोवे होए बेईमान, साबत नज़र कोए ना आईआ। सिदक सबूरी ना कोए ईमान, सदके पीर ना घोल घुमाईआ। सच ना दिसे कोई निशान, कूड़ निशाना रहे झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समां वेखे चाईं चाईंआ। समां कहे मैं आया

२४६ १५

नेड़े, कलयुग अन्तिम पन्ध मुकाईआ। दीन मज़्हब दे चुकणे झेड़े, ज़ात पात ना कोए लड़ाईआ। चार वरनां कूड़े डुबणे बेड़े, सच मलाह इक्को फेरा पाईआ। काम क्रोध हँकारी उजड़ने खेड़े, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची खेल आप कराईआ। साचा समां तक्के राह, नेत्र नैण नैण उठाईआ। चार युग दे गुर अवतार गए लिखा, पीर पैगम्बर शहादत देण गवाहीआ। कलयुग अन्तिम आवे सच्चा शहिनशाह, निरगुण निरवैर फेरा पाईआ। सच अदालत लए लगा, जगत वकील ना कोए वड्याईआ। धुर संदेसा नर नरेसा एकँकारा एका वार दए सुणा, दूजा मेटे ना कोए मिटाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समां इक्को हथ्थ रखाईआ। समां कहे मैं हरि के हथ्थ, मेरी चले ना कोए चतुराईआ। जिउँ भावे तिउँ मार्ग देवे दस्स, जुग जुग मेरी सेव लगाईआ। मैं चाकर बणां हस्स हस्स, निउँ निउँ चरणां सीस झुकाईआ। कलयुग अन्तिम खेड़ा होणा भट्ठ, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा शब्द अगम्मी वज्जे सट्ट, मारनहारा नज़र ना आईआ। लेखा चुकणा तीर्थ तट, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती मिले ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा समां आप समझाईआ । साचा समां सुणो ला कन्न, सो साहिब आप समझाईआ। जो घड़या सो देवे भन्न, घड़न भंनणहार बेपरवाहीआ। मनमुख जीवां देवे डंन, जो बैठे हरि भुलाईआ। गुरमुख उपजाए साचे चन्न, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। वस्त अमोलक देवे धन, सच ख़ज़ीना झोली पाईआ। जग वड्याई जननी जन, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। करे निवास बिन छप्परी छन्न, चार दीवार ना वंड वंडाईआ। डुबदा बेड़ा देवे बन्न्ह, पाहन पाथर आप तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल श्री भगवन, भगवन आपणा हुक्म वरताईआ। हरि का हुक्म धुर संदेस, सद्दा नाम जणाईआ। कलयुग अन्तिम मिटे रेख, कूड़ कुड़यारा रहिण ना पाईआ। उठ के जाए आपणे देस, खाली धरत धवल कराईआ । वेखणहारा गुर दस्मेश, दहि दिशा नैण उठाईआ। नेत्र रोवण विष्न ब्रह्म महेष, शंकर रोवे मारे धाहींआ। विष्नूं भुल्ले बाशक सेज, सांगोपांग ना कोए हंढाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सच स्वामी इक आदेस, सजदा सीस जगदीश झुकाईआ। कलयुग समां लैणां वेख, दूर दुराडा नेड़े आईआ। कूड़ कुड़यारा मिटणा भेख, भेखी कोई रहिण ना पाईआ। श्री भगवान इक्को सब ने रखणी टेक, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समां सागर रूप जणाईआ। कलयुग समां डूंघा सागर, गहर गम्भीर रखाइंदा। कोई ना जाणे साढे तिन्न हथ्थ काया गागर, अन्दर वड़ भेव कोए ना पाइंदा। जगत हट्ट बणे सौदागर, काया पड़दा ना कोए उठाइंदा । करता मिले ना करीम कादर, मेहर नज़र ना कोए तकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, साची करनी आप वखाइंदा। कलयुग समां रिहा रो, नेत्र नीर वहाईआ। सच प्रकाश ना दिसे लो, जगत, अन्धेरा छाईआ। भाई भाईआं रहे कोह, भैण भईआ संग ना कोए निभाईआ। मात पुत ना कोए मोह, मुहब्बत सच ना कोए कमाईआ। आत्म परमात्म जाए ना छोह, निरगुण सरगुण होए ना कोए कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल समां दए बदलाईआ। कलयुग समां बदलण आया, हरि बदले बेपरवाह। साचा अदल कमावण आया, निरगुण दाता शहिनशाह। सन्त सुहेले लए उठाया, गुर चेले भेव चुका। भगत भगवन्त जोड़ जुड़ाया, घर मन्दिर वेख वखा। जन्म कर्म दा रोग मिटाया, पूरब लहिणा लेखे पा। दरस अमोघ इक कराया, पड़दा विचों चुका। धुर संजोग मेल मिलाया, कागों हँस बणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे समें रंग रंगाया, रंग इक्को रिहा जणा। समां कहे मेरा रंग अनोखा, कलयुग अन्त चढ़ाईआ। सदी वीहवीं सब नाल होणा धोखा, हरि का भेव कोए ना पाईआ। एकँकारा एका देवे मिलण दा मौका, लख चुरासी विचों माणस जन्म उपजाईआ। कलयुग जीव सुत्ते ला के ढौंका, नेत्र खोल्ह लए ना कोए अंगड़ाईआ। हरि का नाम ना जपया रसना जिह्वा होंटा, अन्तर आत्म मेल ना कोए मिलाईआ। घर प्रकाश ना होया काया कोठा, साढे तिन्न हथ्थ मिले ना कोए वड्याईआ। पढ़ पढ़ थक्कया जगत पोथा, आत्म ताकी कुण्डा कोए ना लाहीआ। चौथा युग कहे मैं प्रभ दा पुत्त छोटा, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार दित्ता होका, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। मेरा खेल किसे ना रोका, गुर अवतार पीर पैगम्बर गए फेरीआं पाईआ। अन्तिम रखदे गए प्रभ दी ओटा, समां साचा नाल मिलाईआ। सदी वीहवीं परखे खरा खोटा, लख चुरासी वेख वखाईआ। जिस दा नाम ध्या के उतरया पार तोता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समां इक्को इक जणाईआ। कलयुग समां रिहा दस्स, नेत्र नैणां नाल वखाईआ। जत धीरज रिहा ना कोई हठ, सति रूप ना कोए वखाईआ। साध सन्त काम वासना रहे नट्ठ, सच तमाशा ना कोए लाईआ। हरि का दर्शन ना पाया तन घट, घाटा पूर ना कोए कराईआ। मन्दिर अन्दर किसे ना मुकी वाट, आत्म सेजा चढ़ सेज सुहञ्जणी ना कोए सुहाईआ। कलयुग वेख अन्धेरी रात, चारों कुण्ट रही कुरलाईआ। सच ना दिसे कोई जमात, अक्खर इक ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव रिहा खुल्हाईआ। कलयुग समां कहे मैं बोलां गीत, इक्को वार सुणाईआ। मिले ना ढोई विच मसीत, मुर्शद नज़र कोए ना आईआ। चार वरनां उलटी होई नीत, नीतीवान बैठे मुख भवाईआ। ना कोई सहारा कीटन कीट, हस्त मस्त दस्त रहे उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा समां आप भुगताईआ। कलयुग अन्तिम समां

आवेगा। श्री भगवान खेल खिलावेगा। निरगुण नूर चन्न चमकावेगा। जननी जन वेख वखावेगा। साचा राग कन्न सुणावेगा। जोत प्रकाश तन करावेगा। जन भगतां पूरी करे आस, आसा आपणे नाल मिलावेगा। कोई रहिण ना देवे जगत बदमुआश, बदमुआशी सब दी मेट मिटावेगा। ख़ालस ख़ालसा करे ख़ास, ख्वाहिश आपणी पूर करावेगा। सेवा करे बण के दास, दासी दास रूप वटावेगा। सतिजुग साचा चले साथ, धरत मात गोद सुहावेगा। होए सहाई अनाथां नाथ, ग़रीब निमाणे गोद उठावेगा। कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी रात, सतिगुर नूर इक चमकावेगा। पत्तण वखाए साचा घाट, शौह दरया ना कोए रुढ़ावेगा। चार वरन बणाए इक जमात, साची विद्या आप समझावेगा। वेखणहारा डूंघा खात, पड़दा दूई आप उठावेगा। साचा समां जणाए इक प्रभात, संधया रूप ना कोए रखावेगा। प्रभ नज़री आए इक इकांत, अक्ल कलधारी खेल जणावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल कलेश आप मिटावेगा। कल कलेश आप मिटाएगा। सो साहिब वेख वखाएगा। दर दरवेश अलख जगाएगा। नर नरेश फेरा पाएगा। औलीआ पीर शेख़ मुसायक फड़ उठाएगा। निज नेत्र आपणे पेख, धुर दा हुक्म आप सुणाएगा। नव नौ चार मिटे रेख, अन्त कोई रहिण ना पाएगा। योद्धा सूरबीर दस दस्मेस, दहि दिशा डंक वजाएगा। गुर शब्दी रहे हमेश, जन्म मरन खेल ना कोए कराएगा। सो समां लैणां वेख, श्री भगवान जो वरताएगा। बिन हरि सतिगुर झूठा दिसणा हेत, भैण भाई वेले अन्त ना कोए छुडाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, समां आपणे नाल मिलाएगा। समां मिलाए हरि जू मीत, आपणा बन्धन पाईआ। सतिजुग साची चले रीत, बीस इकीस वज्जे वधाईआ। गुरमुख गुरसिख मन वासना लैण जीत, कूड़ी क्रिया ना होए हल्काईआ। गुर का शब्द गाओ गीत, नानक निरगुण गया समझाईआ। घर मिले स्वामी जो सुत्ता दे कर पीठ, आपणी करवट लए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समां सब नूं रिहा भुलाईआ। समां भुलाए जग संसार, नेत्र जाग ना कोए खुल्हाइंदा। जगत वासना भरया हँकार, निवण-सो-अक्खर ना कोए पढ़ाइंदा। माया ममता मारे मार, हउँमें हंगता गढ़ बणाइंदा। साची संगत ना कोए प्यार, घर घर मंगत फेरा पाइंदा। भुक्खा नंगता रोवे ज़ारो ज़ार, सीस दोशाला ओढण पड़दा कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा समां सर्ब जणाइंदा। साचे समें दा जिन्हां चा, चाउ घनेरा दए समझाईआ। गुर शब्द वेखो इक मलाह, जो बेड़ा पार कराईआ। झूठयां नाल ना करो सलाह, कूड़ा संग रहिण ना पाईआ। गुरमुख सज्जण भेव जणा, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। गलवकड़ी पा के मिलो बांह, दस्त दस्त नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग समां सब नूं रिहा डुलाईआ। समें अन्दर गए डोल, धीरज धीर ना

कोए रखाइंदा। मात गर्भ जो कीता कौल, लख चुरासी जीव भुलाइंदा। मन हँकारी उपर धौल, धरनी कूड़ा भार चुकाइंदा। रसना जिह्वा बोले बोल कबोल, काग काग वांग कुरलाइंदा। सच दुआरा कोई ना सके खोल्ह, पड़दा अन्तर कोए ना उठाइंदा। सुरती शब्द ना जाए मौल, शब्द सुरत ना कोए प्रनाइंदा। कलयुग सारे कीते अनभोल, समें सिर सिर आपणा ना कोए उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, समां सब नाल करे मखौल, मख़लूक सलूक ना कोए रखाइंदा। समां कहे मेरी वड वड्याई, कलयुग खुशी मनाईआ। घर घर करावां नित लड़ाई, मन वासना नाल मिलाईआ। आत्म परमात्म करी जुदाई, पारब्रह्म ब्रह्म अंग ना कोए लगाईआ। नाता जुड़या धी जवाई, घर सगन सच्चा कोई ना पाईआ। भरमे भुल्ली सर्ब लोकाई, लुक्या नूर नज़र किसे ना आईआ। ग़फ्लत विच होई शौदाई, भज्जे वाहो दाहीआ। सच ना मिले कोई सरनाई, सरनगति ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलयुग समां अन्त चारों कुण्ट दए सताईआ। कलयुग समां कहे मैं मारां मार, जीव जंत सर्ब कुरलाईआ। जिन्हां भुल्लया हरि करतार, धरनी उपर रहिण ना पाईआ। धृग जीवण संसार, माणस जन्म मनुख मानव ना कोए वड्याईआ। वेले अन्त आवे हार, हरिमन्दिर वड़न कोए ना पाईआ। नव नौं दिसे धूंआँधार, चार चार ना कोए रुशनाईआ। गुरमुख विरला समां रिहा विचार, जिस सतिगुर समझ पाईआ। बाकी समां सारे जावण हार, भाण्डा भरम ना कोए भंनाईआ। रैण वसेरा कट के जावण दिन चार, लोकमात ख़ाकी तन हंढाईआ। सो समां सदा परवान, जो गुरमुख परवाने रिहा बणाईआ। पढ़यां सुणयां गायां समां कोई ना करे पार, जिन्ना चिर साहिब सतिगुर देवे ना सच सरनाईआ। उठो जीवो होवो ख़बरदार, बेख़बर ख़बर सुणाईआ। कलयुग अन्त काया नईया डुब्बदी लवो तार, पार किनारा इक्को नज़री आईआ। जिस नूं गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिन्दे गए सांझा यार, सो यारी सच निभाईआ। नेत्र खोल्ह करो दीदार, दीद ईद चन्द चढ़ाईआ। समां जुग जुग जन भगतां पिच्छे फिरे बण भिखार, आपणी झोली अग्गे डाहीआ। कर किरपा दयो तार, साचे सन्तो तुहाढे हथ्थ वड्याईआ। तुहाढे नाल मिल्या हरि करतार, जिस करते खेल रचाईआ। मैं उहदा बरखुरदार, बरख़लाफ़ धार ना कोए रखाईआ। डरदा डरदा फिरां विच संसार, भज्जां वाहो दाहीआ। हुक्मे अन्दर ना होए खलहार, हुक्मी हुक्म हुक्म वरताईआ। साचे समें गुर अवतार पीर पैगम्बर कीते ख्वार, पंज तत काया नाल लड़ाईआ। समें अन्दर गोबिन्द बाले नीहां हेठ गया स्वाल, हरख़ सोग ना कोए जणाईआ। समें अन्दर सतिगुर अर्जन तत्ती अग्नी हेठां गया बाल, सच समाधी उपर लाईआ। समें अन्दर तेग़ बहादर तेग़ गया संभाल, सीस धड़ वंड वंडाईआ। समें अन्दर शमस तबरेज़ लुहाई खाल, खलड़ी रंग

ना कोए रंगाईआ। समें अन्दर ऐनलहक लगाई आवाज़, हक़ हकीकत बूझ बुझाईआ। समें अन्दर गुर अवतार पीर पैगम्बर चलण नाल नाल, बण सेवक सेव कमाईआ। समें अन्दर सतिगुर पूरा होए दयाल, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। समें अन्दर लेखा चुकाए काल महाकाल, महाबली वड वड्याईआ। समें अन्दर पुरख अबिनाशी लओ भाल, घर घर बैठा आसण लाईआ। समें अन्दर गुर शब्द बणे दलाल, जगत दलाली आप कमाईआ। समें अन्दर वखाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक जणाईआ। समें अन्दर गुरमुख वेखे सुचे लाल, सुचज्जे आपणी झोली पाईआ। समें अन्दर पत डाल्ही ख़ाली करे जहान, सिम्मल रूप सब नज़री आईआ। समें अन्दर चले अवल्लड़ी चाल, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाईआ। समें अन्दर सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलयुग समां दए बदलाईआ। कलयुग अन्तिम समां बदले, बदली हरि भगवान कराइंदा। धुरदरगाही करे अदले, अदालत इक्को इक जणाइंदा। भगत भगवान जाए सदके, सद्दा आपणा नाम सुणाइंदा। जेहड़े उडीकदे जुग जन्म जद कद दे, तिन्हां आपणा मेल मिलाइंदा। काया मन्दिर साचे लँघ के, सच सिँघासण सोभा पाइंदा । प्रेम प्रीती नाता बन्ह के, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। पंच विकारा कूड़ा डंन के, डंका इक्को नाम सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा समां आप उलटाइंदा। साचा समां जाए बीत, सम्मत बीस बीस वड्याईआ। सतिजुग साची चले रीत, रीतीवान नींह रखाईआ। सब ने गाउणा इक्को गीत, मिल सखीआं राग अलाईआ। परम पुरख प्रभ देवे प्रीत, साची डोरी तन्द बंधाईआ। साचे समें साची सिख्या गुरमुख लैण सीख, गुरमति इक्को इक प्रनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समां आपणे हथ्थ वखाईआ। समें हथ्थ प्रभ रखी डोर, तन्दी तन्द तन्द बंधाइंदा। कलयुग मारे ठग्ग चोर, जूठ झूठ मेट मिटाइंदा। जगत विकारा देवे होड़, सस्से उपर होड़ा इक वखाइंदा। हँ ब्रह्म प्रभ जाए बौहड़, हाहा हरि का रूप समाइंदा। वेख वखाए मिट्ठा कौड़, रस अनरस आप जणाइंदा। गुरमुख गुर गुर नाता जोड़, जोड़ी दो जहान बणाइंदा। शब्द अगम्म चढ़ाए घोड़, शाह सवारा अस्व इक्को इक रखाइंदा। पार कराए अन्धेरा घोर, डूंघी भँवर ना कोए भवाइंदा। तिस अग्गे चले ना कोई ज़ोर, जोरू ज़र वेख वखाइंदा। समें सिर प्रभू जाए बौहड़, जन भगतां दया कमाइंदा । जन्म जन्म दी बुझाए लग्गी औड़, अमृत मेघ बूँद बरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा समां आप प्रगटाइंदा । साचा समां होवे प्रगट, हरि प्रभाती रूप वखाईआ। सच दुआरा नज़री आए इक्को हट्ट, पुरख अकाल चरण सरनाईआ। दूई द्वैती शरअ शरायती हउमें हंगता मिटे वट्ट, हद्द नज़र कोए ना आईआ। साचा मार्ग साहिब सुल्तान हो मेहरवान देवे

दस्स, दहि दिशा वज्जे शनवाईआ। गुरमुख पीणा अमृत रस, हिरदे जोत करे प्रकाश, नव नौं लैणा मूल चुकाईआ। लेखे लग्गे पवण स्वास, समें दी पूरी होए आस, समाप्त समां दए कराईआ। जो गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत वसण हरिजू पास, तिन्नां समां बिन खुशी ग़मां इक्को रंग वखाईआ। जिन्नां अन्तर कूड़ी तमअ, सो सवान कूकर भज्जण वाहो दाहीआ। कलयुग अन्तिम बुझणी शमअ, सतिजुग सतिगुर निरगुण जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादि शब्द ब्रह्माद एका एक वजाए नाद, धुन आत्मक अगम्मी राग सुणाईआ।

७ भाद्रों २०२० बिक्रमी पिण्ड बल अमराउ सिंघ दे गृह

सतिगुर समां सब तों चंगा, सच मिले वड्याईआ। लभ्भदा गया सिंघ रंगा, तन काया रंग रंगाईआ। बुध सिंघ भुक्खा नंगा, हो के सेव कमाईआ। बहौल सिंघ बण पतंगा, मस्त मस्ताना फिरे वाहो दाहीआ। गुरमुख सिंघ चरण कँवल पा के ढंगा, अस्व भज्जे चाईं चाईंआ। तेजा सिंघ सूरा सरबँगा, ज़ोरो ज़ोर रिहा वखाईआ। बिन बंदगीउँ दर आया कीता बंदा, बन्धन कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा समां रिहा वड्याईआ। साचा समां सिंघ मनी, मन मनसा नाल बणाईआ। साचा समां सतिगुर धनी, सच ख़ज़ाना आप वरताईआ। साचा समां सतिगुर नाल बणी, नाता तुटे जगत लोकाईआ। साचा समां सच वसेरा दिसे छप्पर छन्नी, छहबर अमृत गुर गुर लाईआ। साचा समां जुग चौकड़ी सब नूं फिरदा भंनी, अड़या कोए रहिण ना पाईआ। धुर दा समां लख चुरासी करे अन्नी, पुरख अकाल नज़र किसे ना आईआ। साचा समां मनमुखां रिहा डंनी, डंका आपणा नाम वजाईआ। साचा समां सब दी ख़ाली करे कन्नी, राज राजानां ख़ाक मिलाईआ। साचा समां साचा तनी, घर घर विच मेल मिलाईआ। साचा समां हरि हरि हरि संग नाल बणी, बन बनवाली वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा समां रिहा सुहाईआ। साचा समां साचा मित्र, मीतन मीत अख्वाइंदा। साचा समां खेल खेलया बाज़ तितर, त्रैगुण भेव कोए ना पाइंदा। साचा समां निरगुण निरवैर शब्दी धार आए नितर, पड़दा तत ना कोए वखाइंदा। साचा समां सतिगुर वेखे चढ़ के चोटी सिखर, सिख्या आपणे हथ्थ रखाइंदा। लख चुरासी विचों गुरमुख उजल जाए निखर, कूड़ कुकर्म पड़दा आपे लाइंदा। साचा समां चार युग दी मेटे भिटड़, आत्म परमात्म भिटया कदे ना जाइंदा। साचा समां जन भगतां उत्तों लाहे पूरब चिकड़, फड़ हथ्थीं

मैल धवाईआ। साचा समां सतिगुर मिलयां मिल के फेर ना जाए विछड़, अग्गे मेला सद रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। साचा समां सोभावन्त, घर वज्जे नाम वधाईआ। वैरागण पाया हरिजू कन्त, सुहागण खुशी मनाईआ। सच चोली चढ़े रंग बसन्त, तन माटी सोभा पाईआ। घर उपजे मणीआ मंत, रस जिह्वा सिफ्त सालाहीआ। गढ़ तुट्टे हउमें हंगत, हरि चरण मिले सरनाईआ। गुरमुख बणदे रहे मंगत, दर बैठे अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा समां आप वरताईआ। साचा समां सुहावणा, सोभावन्त सुहाए। पुरख अकाल सब ने गावणा, गा गा खुशी मनाए। इष्ट गुरदेव इक्को नज़री आवणा, हरिजन साचा सेव कमाए। दर दुआरा इक खुलावणा, धुर दरबारी आसण लाए। साचा मन्दिर इक वडयावणा, भगत वछल बेपरवाहे। साचे अन्दर सोभा पावणा, दीपक दीआ इक जगाए। साचा हुक्म इक वरतावणा, दो जहानां आप सुणाए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साचा समां आप उपाए। साचा समां देवे समझ, भेव अभेद खुलाईआ। हरि करता मारे इक्को रमज़, महीना रमज़ान ना कोए वड्याईआ। लेखा जाणे शाइत हमज़, आशक माअशूक दोवें कार कमाईआ। चार युग जो करदा रिहा किफ़ायत, कलयुग अन्तिम इक्को वार वरताईआ। गुर अवतारां जो करदा रिहा हदाइत, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, सो साहिब बण के आया आप मुसाहिब, मुसलसल आपणी कार कमाईआ। समां कहे मैं सदा मुतफ़िक, मुतफ़रक कार ना कोए कराईआ। मेरा लेखा बिन लिख्यों देवे लिख, बेपरवाह मेरी तहिरीर आप बणाईआ। दाता हो के पावे भिख, दानी झोली आप भराईआ। मेरी करनी आपे लए नजिठ, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। चार युग मैं सब नूं दे के आया पिठ, मेरी समझ किसे ना पाईआ। अमृत रस करदा रिहा फिक, फिके कौड़े रूप वटाईआ। दीन मज़्ह्ब ज़ात पात आपणे अन्दर वंडौंदा रिहा हिस, हिस्से गुर अवतारां नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म वरताए एक, एकँकार वड्डी वड्याईआ। कलयुग अन्त बख्शे साची टेक, टिक्का मस्तक नाम लगाईआ। कूड़ कुड़ावा टुट्टे हेत, हरि चरण मिले सरनाईआ। गुरसिख गुरमुख निज नेत्र दर्शन पेख, रातीं सुत्यां खुशी मनाईआ। समां सुहावणा खेले खेड, जगत खिलाड़ी रिहा खिलाईआ। भगत भगवान माणे सेज, सेज सुहञ्जणी आसण लाईआ। जोती धार चमके तेज, तेज धार तलवार आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, समां गुरमुख सखीआ नाल सुहाईआ।

✪ ੭ भाद्रों २०२० बिक्रमी पिण्ड बल अजीत सिंघ दे गृह ✪

समां कहे मैं भगतां जोगा, हरि जू सेवा आप लगाईआ। अन्तर देवां अमृत चोगा, हँसां माणक मोती चुंज भराईआ। बाहरों सब नूं देवां धोखा, साची समझ कोए ना पाईआ। बिन सतिगुर पूरे आदि जुगादि समां औखा, भीड़ी गली औझड़ राह, जम डण्ड ना कोए बचाईआ। जुग जुग देवां सच सलाह, सर्ब जीआं समझाईआ। करता पुरख लओ मना, कीमत आपे पाईआ। हाज़र कोलों बख्शाओ गुनाह, जो गया सो गया पल्लू छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। समां कहे मेरा उलट समाज, समझ कोए ना पाइंदा। जुग जुग पलटा जगत राज, राजा प्रजा दोहां वेख वखाइंदा। नित नवित्त करां नाच, दर दर घर घर डोरू वाइंदा। खुशी नाल लगावां आंच, अग्न अग्नी रूप वखाइंदा। भन्न वखावां कूड़ी माटी कांच, लख चुरासी फोल फुलाइंदा। नित नित जन भगतां हो के रहां दास, जिन्हां पुरख अकाल दया कमाइंदा। निर्धन हो के वसां पास, बलहीण सेव कमाइंदा। वेले अन्तिम पत लवां राख, पतिपरमेश्वर नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा समां आप सुहाइंदा। साचा समां सदा सुहञ्जणा, जिस घर वज्जे नाम वधाईआ। सतिगुर धूढ़ी मिले मजना, चरण कँवल सरनाईआ। जगत विकारा मिटे हद्दना, गुरू दुआरा इक्को नज़री आईआ। आत्म गाए परमात्म छन्दना, ब्रह्म करे सच पढ़ाईआ। इक्को दुआरे साची बन्दना, बिन बंदगीउँ लेखा लए पाईआ। साची धूढ़ी निर्मल चन्दना, चन्द चांदनी नूर रुशनाईआ। सतिगुर मन्दिर इक्को लँघणा, दूजा दर लँघण ना पाईआ। पुरख अकाल इक्को मंगणा, देवणहार सर्ब सुखदाईआ। लख चुरासी तुड़ाउणा फंदना, फाँसी अन्त कोए ना पाईआ। मिले मेल सूरा सरबँगना, सूरबीर होए सहाईआ। साची गोदी बहिणा अंगना, अंगीकार इक हो जाईआ। तन माटी चोला रंगणा, साची भट्ठी नाम चढ़ाईआ। सच दवारिओं कदे ना संगणा, सतिगुर मिले सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। समां कहे मेरा हक़ हकूक, हाकम नज़र कोए ना आईआ। जुग चौकड़ी मैं रिहा मसरूफ़, जुग जुग साची सेव कमाईआ। मेरे अन्दर दर दर घर घर धुखदे धूप, सच सुगंधी काया विचों बाहर ना कोए प्रगटाईआ। मेरे अन्दर कूड़ी क्रिया नच्चदी फिरे भूख, जीवां जंतां तृप्त ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, समां साचा दए सुहाईआ। समां कहे मैं लग्गां सोहणा, सोहणी बणत बणाईआ। भगत भगवान इक्को होणा, दूजा भेख ना कोए वटाईआ। जिन्हां दी चरणी बहि के सौणा, सोवत खुशी मनाईआ। लख चुरासी जीव रोणा, नेत्र नीर वहाईआ। खुलड़े केस सब ने खोहणा, मींढी सीस ना कोए गुंदाईआ। टिल्ले

पर्बत सारे टोहणा, डूंग्घी कवर भँवर वेख वखाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां बलधारी बल वेख वखाउणा, वेला वक्त समझ कोए ना पाईआ। गुरमुख गुरसिख सच प्रीती मोहणा, मोहणी रूप निरगुण धार जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समां समरथ आप जणाईआ। समें नाल आए समरथ, समरथ धार चलाईआ। जुग चौकड़ी देवे मथ, मथणहार बेपरवाहीआ। रहबर बण चलाए रथ, मार्ग इक्को इक दरसाईआ। सच संदेसा देवे हस्स हस्स, ढोला सोहला राग अलाईआ। अमृत आत्म प्रगटाए रस, निझर झिरना आप झिराईआ। सब दा बसता बन्नृ के फेर करे ना बस्स, बग़लगीर किसे नाल नज़र ना आईआ। जो अड़या सो समें अन्दर जाए ढट्ठ, समें दा मालक बेपरवाहीआ। जिस दा लेख अलखना अलख, ना कोई सके मेट मिटाईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रगट, प्रभ आपणा हुक्म मनाईआ । जिस अग्गे समां जोड़ खलोता हथ्थ, हथ्थ पैर दो दो चार चार चार चार मंगण सरनाईआ।

✪ ७ भाद्रों २०२० बिक्रमी जगत माता रणजीत कौर दे नवित्त हरि भगत दुआर जेठूवाल ✪

गोबिन्द सुत शब्द बबाण, सच दुआर वखाईआ। अबिनाशी अचुत खेल महान, हरि करता आप कराईआ। जन्म जन्म जग देवे माण, कर्म कर्म वेख वखाईआ। धुर दा धर्म इक निसान, सच निशाना दए झुलाईआ। लेखा जाण जीव जहान, लिख्त भविक्ख्त भेव चुकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा संग इक हो जाईआ। गोबिन्द सुत पूरब रेख, सच सच्ची प्रगटाईआ। धाम अवल्लड़े वस के देस, वेखण आया हरि रघुराईआ। लहिणा गोबिन्द दस दस्मेस, दहि दिशा झोली पाईआ। शाह सुल्ताना खोले भेत, पड़दा आप उठाईआ। जिन्नां नाल खेली जगत खेड, बण खिलाड़ी फेरा पाईआ। सो स्वामी साहिब सतिगुर गुरसिख गुर गुर दए भेज, साचा हुक्म इक वरताईआ। सति धर्म देवे जहेज़, धीरज नाल करे कुड़माईआ। निज नेत्र लए वेख, दोए लोचण बंद जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। गोबिन्द सुत सूत्र तागा, तन्द डोरी रूप वटाईआ। निरगुण सरगुण मिल मिल काजा, रचना रच रच वेख वखाईआ। मेहरवान हरि फिरे भाजा, दो जहानां वेख वखाईआ। जगत जवारी लेखा जाणे समाजा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा तेज आप दरसाईआ। जोती धार शब्द सुत बूटा, पत डाली फुल महकाईआ। सचखण्ड दा साचा हूटा, सो पुरख निरँजण इक्को वार दवाईआ। सरगुण हो के निरगुण वेखे सूचा, सुच संजम सतिगुर विच समाईआ। काया अन्दर फिर के वेखे आपणा कूचा, गली बाज़ार फेरा पाईआ। दीन दयाल लख चुरासी

२५५ १५

नालों वेखे रुट्ठा, नेत्र अक्ख ना कोए मिलाईआ। पुरख अकाल प्यार नाल कहे आ गोबिन्द मेरे पुत्ता, पूत सपूत मिले वड्याईआ। जिस दी धारों गुरमुख उठा, सो धार चमक चमकौर जणाईआ। मेहरवान हरि इक्को तुट्ठा, अतुट्ट दया कमाईआ। उजल करनहारा मुखा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि देवणहार वड्याईआ। देवे वड्याई साजण एक, सगला संग वखाईआ। अन्दर वड़ के खोल्हे भेत, बाहर मेला सहिज सुभाईआ। प्रेम प्रीती करे हेत, परम पुरख दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धुर दा लेखा आप दृढ़ाईआ। धुर दा लेखा गोबिन्द लाल, घर लालन वेख वखाइंदा। धर्मदुआर सच्ची धर्मसाल, गढ़ कंचन बंक वड्याइंदा। दीपक जोती दीआ बाल, नूर नुराना नूर रुशनाइंदा। लेखा जाण दो जहान, दोहरी धार ठोकर आप लगाइंदा। काया मन्दिर सच मकान, बे-मुकाम वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि आपणी गंढु पवाइंदा। आपणी गंढु पवाए प्रेम, डोरी इक्को तन्द बंधाईआ। दरगाह साची चुक्के आपणा नेम, नयामत मुख ना कोए रखाईआ। लहिणा चुक्कया उपर हेम, कुण्ट कुण्ट वज्जी वधाईआ। अन्तिम जाए साचा देण, देवणहार दया कमाईआ। गुर गुर साचा आवे लैण, मंगे मंग झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची जोग जुगत जणाईआ। साचा जोग जुगती रंग, हरि राघव आप जणाईआ। मस्त मतिवाला वजाए मृदंग, मन मती दूर कराईआ। बण रखवाला वसे संग, सगला संग निभाईआ। शाह कंगाला वंडण वंड, नाम भण्डारा झोली पाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे भेख पखण्ड, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। साचा गावे इक्को छन्द, सोहँ राग अलाईआ। पूरी करे धुर दी मंग, मनसा माणस झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साचे खुशी वखाईआ। साचे घर सुख गुरदेव, सतिगुरू देवे वड्याईआ। मेहरवान हो खोल्हे भेव, पर्दा दूई उठाईआ। सेवा लाए रसना जिह्व, हरि मन्त्र नाम समझाईआ। खेले खेल अलख अभेव, अगोचर अगम्म सीस ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा देवे थाउँ थाईंआ। साचा लेखा पूरब जन्म, जानब आपणी वेख वखाइंदा। मेहरवान हो बख्शे कर्म, कुकर्म अंग ना कोए लगाइंदा। साचा हेत साचे धर्म, रण खेत भूम सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धार धार नाल टकराइंदा। धार नाल लाए धार टक्कर, टुकड़ा नज़र कोए ना आईआ। गोबिन्द नाल गोबिन्द दिसे ना कोई वक्खर, गोबिन्द शाह कंगाल रूप वटाईआ। गोबिन्द तोड़नहारा गोबिन्द पत्थर, पाहन गोबिन्द परे हटाईआ। गोबिन्द हंढावणहारा गोबिन्द सत्थर, गोबिन्द सेज सुहञ्जणी डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिक्खी धार आप वखाईआ। तिक्खी धार तरकश, तीर मुखी अणयाला रूप जणाईआ। हरि का

२५६
१५

खेल ना ऐशो इशर्त, आरामगाह डेरा कोई ना लाईआ। सो फड़ मेले जो गए विछड़त, वछड़यां मेल मिलाईआ। गल लगाए भरीआं चिकड़, दुरमति मैल धवाईआ। पिता पूत प्रभ होए मित्र, साची यारी तोड़ निभाईआ। चोटी चढ़ के वेखण सिखर, सिख्या इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। गोबिन्द कटया गोबिन्द फट्टया, गोबिन्द वार धार जणाइंदा। गोबिन्द लुटया गोबिन्द रक्षया, गोबिन्द आपणा रंग रंगाइंदा। गोबिन्द तुट्ठया गोबिन्द पुच्छया, हरि गोबिन्द पन्ध मुकाइंदा। गोबिन्द लुक्या गोबिन्द रुस्सया, हरि गोबिन्द आप मनाइंदा। गोबिन्द वेला गोबिन्द पुच्छया, गोबिन्द गोबिन्द भेव खुल्हाइंदा। गोबिन्द धार पुरख समरथया, समरथ पुरख जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा संग सच निभाइंदा। गोबिन्द वेखे गोबिन्द पेखे, हरि गोबिन्द नैण खुल्हाईआ। गोबिन्द लेखे गोबिन्द रेखे, गोबिन्द वेखे मस्तक टिक्का लाईआ। गोबिन्द भेंटे गोबिन्द खेटे, हरि गोबिन्द खेवट रूप जणाईआ। गोबिन्द ज़ाहर गोबिन्द पेटे, गोबिन्द आपणा पड़दा आप चुकाईआ। गोबिन्द अग्गे गोबिन्द बेटे, हरि गोबिन्द दए वखाईआ। गोबिन्द पुत्त नीहां हेठ लेटे, घर साचे ख़ुशी मनाईआ। गोबिन्द अन्तर गोबिन्द वेखे, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। गोबिन्द जणाए गोबिन्द चेते, चेतन भुल्ल कदे ना जाईआ। गोबिन्द खेल गोबिन्द खेडे, वड खिलाड़ी इक अख्वाईआ। गोबिन्द सेजा गोबिन्द लेटे, गोबिन्द बैठा डेरा लाईआ। गोबिन्द पिता गोबिन्द बेटे, गोबिन्द पूत सपूत उठाईआ। गोबिन्द लहिणे गोबिन्द लेखे, गोबिन्द वस्त अमोलक आप वरताईआ। गोबिन्द नर गोबिन्द नरेशे, नर नरायण गोबिन्द इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुरू दए समझाईआ। गोबिन्द गुर गोबिन्द गुरदेव, स्वामी गुरू गोबिन्द अख्वाइंदा। गोबिन्द गीत गोबिन्द जिह्व, गोबिन्द रसना सिफ्त सालाइंदा। गोबिन्द वस्त गोबिन्द मेव, गोबिन्द फल गोबिन्द झोली पाइंदा। गोबिन्द खोल्हे गोबिन्द भेव, गोबिन्द पड़दा ना कोए जणाइंदा। गोबिन्द देवी देवत वसे धाम सदा निहकेव, गोबिन्द निहचल आपणा आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि साचा भेव चुकाइंदा। गोबिन्द सुत गोबिन्द जाया, जागरत जोत रुशनाईआ। गोबिन्द पड़दा गोबिन्द लाहया, गोबिन्द वेखे चाईं चाईंआ। गोबिन्द बैठा गोबिन्द दर सीस झुकाया, अलख अलख इक्को नाम सुणाईआ। गोबिन्द त्रैगुण माया डेरा ढाहया, गोबिन्द पंज तत करे कुड़माईआ। गोबिन्द रंग महल्ल दए वखाया, जिस घर वसे बेपरवाहीआ। गोबिन्द सूरा सरबँग नाद वजाया, ब्रह्म ब्रह्माद आप शनवाईआ। गोबिन्द लख चुरासी विचों बाहर कढ्ढाया, गोबिन्द लेखा लेखे आपणे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि गोबिन्द वेखे गोबिन्द पुत्त जिस दी सोहे सुहञ्जणी रुत्त, भिन्नड़ी रैण रुत्त महकाईआ। भिन्नड़ी

रैण कहे सुहेलड़ीए, उठ नेत्र खोल्ह विचार। भिन्नड़ी रैण कहे उठ इकेलड़ीए, चौथे युग खोल्ह इक किवाड़। भिन्नी रैनड़ीए उठ नार अलबेलड़ीए, हरि कन्त भगवन्त वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। गोबिन्द सुत गोबिन्द जन्मे, जन्म मरन कर्म आप बणाईआ। गोबिन्द ब्रह्म गोबिन्द ब्रह्मे, पारब्रह्म गोबिन्द आप अख्वाईआ। गोबिन्द ओट गोबिन्द सरने, सरनगति गोबिन्द आप हो जाईआ। गोबिन्द अक्खर गोबिन्द पढ़ने, दूजा करे ना कोए पढ़ाईआ। गोबिन्द अन्दर गोबिन्द रूप वड़ने, मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। गोबिन्द महल्ल गोबिन्द सुत चढ़ने, घर साचे खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। गोबिन्द पिता पूत होए पुत्तर, भेव अभेद आप छुपाईआ। दुलारे वार करे सच शुकर, शुक्रिया इक्को वार जणाईआ। तेरी धारों औण उतर, दर तेरी सेव कमाईआ। जोती माता चुक्के कुच्छड़, अमृत सीर मुख चुआईआ। धुर दा प्रेम भगती देवे मिट्ठा टुक्कड़, तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। लहिणा देणा चुकाए कलयुग बुच्चढ़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि आपणा कर्म कमाईआ। गोबिन्द रेख गोबिन्द भेख, भविश गोबिन्द हथ्थ वड्याईआ। गोबिन्द नेत गोबिन्द खेत, रण भूमी गोबिन्द कार कमाईआ। गोबिन्द वेस गोबिन्द खेड, गोबिन्द दो जहानां करे पढ़ाईआ। गोबिन्द नर गोबिन्द नरेश, गोबिन्द हुक्म आप वरताईआ। गोबिन्द देवे गोबिन्द भेत, गोबिन्द पड़दा आप चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल हरि रघुराईआ। गोबिन्द खेल अपर अपारा, जगत वारता कोए ना गाईआ। गुर अवतार बण लिखारा, कातब कलम कानी गए चलाईआ। राह तक्कदे गए परवरदिगारा, साचे टिल्ले ध्यान लगाईआ। दोए जोड़ करदे रहे निमस्कारा, श्री भगवान तेरी सरनाईआ। नेत्र राउँदे रहे ज़ारो ज़ारा, छहबर इक्को इक लगाईआ। जिस ने उपाया सुत दुलारा, सो गोबिन्द होए सहाईआ। कलयुग नईया पार किनारा, सईया साहिब दए समझाईआ। कूड़ा नाता छुटे संसारा, हरिजन साचा संग रखाईआ। अन्दर बाहर करे प्यारा, दूर दुराडा नेरन नेरा नज़री आईआ। कूड़ी क्रिया ना कोए अखाड़ा, वेसवा नाच ना कोए नचाईआ। ना कोई रूप वखाए विभचारा, विभचारी नज़र कोए ना पाईआ। धुर दा खेल करे करतारा, करनी करता आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। सद वड्याई साचे बाल, बाल सखाई आप हो जाइंदा। नाम वजाए इक्को ताल, ताल तलवाड़ा नज़र कोए ना आइंदा। माणक मोती दए उछाल, घर सरोवर वेख वखाइंदा। साची सिख्या इक सिखाल, छोटे वढुयां नाल मिलाइंदा। पुरख अकाल हो दयाल, दीनन आपणी दया कमाइंदा। साची सच सेवा जो जन रहे घाल, तिन्हां घाली घाल लेखे लाइंदा। गोबिन्द घर उपजे गोबिन्द लाल, गोबिन्द

२५८ १५

लाल विच समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा आप प्रगटाइंदा। धुर दा लेखा उग्घड़े अन्त, अन्तष्करन दए जणाईआ। सर्ब व्यापी इक्को मंत, गुर मन्त्र दए पढ़ाईआ। मिले वड्याई विच जीव जंत, जागरत जोत होए रुशनाईआ। कूड़ विछोड़ा चुक्के श्री भगवन्त, अठ्ठे पहर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। देवे वड्याई सतिगुर अतीत, सच साची कार कमाइंदा। पूत सपूता बाला नढ्ढा सरजीत, जीत सर विचों प्रगटइन्दा। जिस विचों उपजे हस्त कीट, सो असल आपणी धार वखाइंदा। अगला पिछला खेल सदा अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाइंदा। हरिसंगत बण के हरि जू मीत, मतलब सब दा हल्ल कराइंदा। भिखारी हो के मंगे भीख, आपणी वस्त आपे झोली पाइंदा। दूर दुराडा चल आए नज़दीक, नाज़क कोमल सोहल मिज़ाज, सुहबत जन भगतां नाल मिल के पाइंदा। लेवण आया अन्त ख़राज, चार युग दा लहिणा वेख वखाइंदा। जिस दे गुरू अवतार होए मुहताज, सो मुतला सब नूं आप कराइंदा। आओ वेखो सच नवाब, बेनकाब फेरा पाइंदा। सीस हथ्थ सजदा दोवें करन आदाब, आदत पिछली आप बदलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच समाज इक समझाइंदा। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, जिस जन देवे धुर दा राज, दरगाह साची इक वखाइंदा।

८ भाद्रों २०२० बिक्रमी गुरबख्श सिंघ दे नवित्त हरि भगत दुआर जेठूवाल

गुर अवतार सारे आखण, पीर पैगम्बर सीस झुकाईआ। नाथ अनाथा बणया साथन, हरि साचा संग निभाईआ। चार वरन करे दासी दासन, साची सेव समझाईआ। लहिणा चुका पृथ्मी आकाशन, गगन मण्डल वेख वखाईआ। घर घर अन्दर पावे रासन, सुरती शब्दी गोपी काहन नचाईआ। जन्म जन्म दी पूरी करे आसन, हरिजन साचे वेख वखाईआ। जन्म कर्म दा तोड़े फासन, राए धर्म ना कोए सज़ाईआ। सच सरनाई गुरमुख लागण, गुर गुर दे बुझाईआ। लख चुरासी विचों वरोले माखण, नाम मधाणा इक्को पाईआ। धुर संदेसे सब नूं भाखण, भाख्या भाउ दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गुर अवतार सारे कहिण, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। पीर पैगम्बर वेखण नैण, नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। पुरख अबिनाशी साचा सैण, सज्जण इक्को संग निभाईआ। हरिजन चुकाए देण लैण, नाम वस्त अमोलक झोली पाईआ। सच दुआरे साचे बहिण, दरगाह सच मिली वड्याईआ। कोई ना जाणे अक्ख ऐन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग रंगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे बोल, सच जैकार लगाईआ।

कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण सरगुण वसया कोल, भगत भगवन्त वेख वखाईआ। नाम निधाना नौजवाना सच वजाए ढोल, मृदंगा इक्को हथ्थ उठाईआ। धुर दरबारा हरि निरँकारा सच कवाड़ा देवे खोल्ह, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। अनरागी अनडिठ अनडिठड़े धाम पए बोल, साचा सोहला आप सुणाईआ। सच वस्त सद मेरे कोल, देवणहार गोसाईंआ। लख चुरासी विचों टोल, सन्त सुहेले मात जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गुर अवतार सारे दस्सण, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। भगत भगवान मिल मिल हस्सण, जगत यारी आप रखाईआ। खुशीआं अन्दर उठ उठ नच्चण, भज्जण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। गुर अवतार रहे सोच, सोच समझ समझ कोए ना पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल खेल करे ख़ामोश, अनभव आपणी धार चलाईआ। जिस दर्शन नूं रहे लोच, सो दरस देवे बेपरवाहीआ। साचा भोगण रिहा भोग, हरिजन साचा आप हंढ्ढाईआ। भगतां झल्ल ना सके विजोग, विचली गल्ल समझ किसे ना आईआ। जिस घर होवे धुर संजोग, सो घर घर विच रिहा छुपाईआ। खुशीआं नाल गा के सच श्लोक, साचा ढोला लए प्रगटाईआ। हरि भगत दुआरा भगवन कोट, कंचन गढ़ इक्को नज़री आईआ। सो पुरख निरँजण सद प्रगटाए बिमल जोत, जोती जोत डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन ध्यान, नेत्र इक्को वार उठाईआ। अबिनाशी करता हो मेहरवान, जन भगतां वेख वखाईआ। बुढ्ढे बाले वेख जवान, जोबन रत्ता सच्चा माहीआ। सच सच बणाए साचा काहन, साची सईयां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा भेव चुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन विचार, हरि विचार विच किसे ना आईआ। ग़फ़लत दे दिन रहि गए चार, आलस निंद्रा दए मिटाईआ। मुफ़लस जीव ना होए ख्वार, सब दी ख्वारी दए गंवाईआ। उल्फ़त जाणे आपे निरँकार, मुश्कल मुश्कल हल्ल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म धुर दा एक, एकँकार जणाइंदा। सति दुआरे साची टेक, मस्तक टिक्का नाम लगाइंदा। जन भगतां करे साचा हेत, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखाइंदा। नज़री आए नेतन नेत, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजू हरि हरि धार वखाइंदा। हरिजू वखाए हरि की धार, नव नौ चार आप समझाईआ। बिन सद्दयां आवे मीत मुरार, घर साजण फेरा पाईआ। चतुर्भुज भेव न्यार, पर्दा गोझ ना कोए उठाईआ। साची सख़ीआँ मंगलचार, गीत गोबिन्द अलाईआ। लेखा जाणे धुर दरबार, धुर दी धार आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन संग सदा

समाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे सोच, इकट्ठे इक्को ध्यान लगाईआ। नेत्र खोल्ह वेखे चौदां लोक, चौदां लोकां नज़र कोए ना आईआ। पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड लए घोख, ढोला गीत ना कोए सुणाईआ। सचखण्ड दुआरे कोई ना माणे मौज, मौजूदा मेहरवान नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि खेल कराए, करनहार करतारा। धुर दी धार आप बंधाए, साची करनी करे अपारा। नाम गुफ़तार आप सुणाए, शब्दी शब्द बोल जैकारा। हकीकत मजलस एका लाए, हक़ वेखे परवरदिगारा। सच तौफ़ीक इक खुदाए, खुदी करे ना कोए प्यारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुर दरबारा। धुर दरबार लेख अवल्ला, समझ कोए ना पाईआ। पारब्रह्म प्रभ इक इकल्ला, हुक्मी हुक्म वरताईआ। वेखणहारा जल थला, डूंघी भँवरी खोज खुजाईआ। सच सुनेहड़ा एका घल्ला, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेहर नज़र उठाए बेनज़ीर, तस्वीर रूप ना कोए वखाइंदा। कलयुग अन्तिम वेख अख़ीर, पुरख अकाल वेस वटाइंदा। शरअ शरीअत तोड़ ज़ंजीर, सच सुच आप समझाइंदा। पीर पैगम्बर जो कर के गए तहिरीर, सो तहिरीर ताअरीफ़ रूप वखाइंदा। राह दस्सदे गए शाह हकीर, हाकम इक्को इक अख्वाइंदा। कलयुग तोड़ शरअ ज़ंजीर, साख्यात आपणा हुक्म समझाइंदा। प्रगट हो वड पीरन पीर, पारब्रह्म प्रभ आपणा खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच शमशीर हथ्थ उठाइंदा। सच शमशीर पकड़े हथ्थ, श्री भगवान वड्डी वड्याईआ। कलयुग अन्तिम देवे वथ, हरिजन साचे नाल मिलाईआ। अन्दर वड़ के खोल्हे अक्ख, आपणा भेव दए जणाईआ। हिरदे अन्तर जाए वस, प्रेम प्रीती बन्धन पाईआ। भगत दुआर इक इकट्ठ, एकँकार आप वखाईआ। हरिजन रख्या धीरज हठ, सच सुचम लभ्भे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म वरताईआ। साचा हुक्म सच सुणाउणा, गुर सतिगुर आप जणाईआ। हरिसंगत साचा माण रखाउणा, मन मनसा मोह मिटाईआ। सति धर्म दा रंग चढ़ाउणा, उतर कदे ना जाईआ। धर्म दुआरा इक वखाउणा, जिस घर वज्जे नाम वधाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मेल मिलाउणा, घर मेला एका थाईंआ। अन्तिम लेखा सर्ब चुकाउणा, बचया कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा दए जणाईआ। साचा लेखा हरि जू संगत, सचखण्ड निवासी आप जणाइंदा। धुर दरगाही अगम्मी पंडत, विद्या बोध अगाध समझाइंदा। माणस जन्म ना होए खण्डत, खण्डा खड़ग आप चमकाइंदा। गुरमुख होए कदे ना मंगत, साची भिच्छया आप वरताइंदा। गढ़ तोड़ हउमें हंगत, निवण-सो-अक्खर इक रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

हरिजन साचे पार कराइंदा । हरिजन साचे करे पार, पार उतारा सके ना कोए जणाईआ। जगत प्यारा कर प्यार, प्रेमी प्रेमिका वेख वखाईआ। पुरख अकाल हो तैयार, त्रैगुण अतीता वेस वटाईआ। भगत भगवन्त लए उभार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जिन्हां विसरया घर बार, जग दिसे वस्त पराईआ । सो गुरमुख सेवादार, साची सेव इक कमाईआ। जिस सेवा दा फल रहे जुग चार, चौकड़ बैठे सीस झुकाईआ। जिस दी पिछों सिफ्त करन अवतार, गुर गुर देण गवाहीआ। सो भगवन भगतां रिहा तार, भाग आपणा झोली पाईआ। दीआ इक होए उज्यार, जोत शमअ बुझ कदे ना जाईआ। कूड़ी क्रिया मेट अँध्यार, चांदना चन्द दए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतारां रिहा वखाईआ। गुर अवतार वेखो आ, आदम रिहा जणाईआ। करे खेल सहिज सुभा, हव्वा हवास ना कोए रखाईआ। नूर नुराना बेपरवाह, धुर दी धार आप प्रगटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गया हंढा, तेई अवतारां वेस वटाईआ। साचा दस्सदा रिहा राह, जुग जुग आपणा हुक्म सुणाईआ। कलयुग अन्त बण मलाह, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। साचे सन्त लए उठा, गुर मंत इक पढ़ाईआ। आत्म अन्तर बूझ दए बुझा, जगत बसन्तर दए गंवाईआ। साची सूझ देवे पा, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। मूर्ख मूढ़े धंदे ला, नाम भण्डारा इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि खेल निराला, हरि करता आप कराईआ। जन भगतां देवे नाम सुखाला, सोहँ ढोला इक सुणाईआ। त्रैगुण माया तुटे जंजाला, पंज तत ना कोए लड़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। हुक्म वरते आप, प्रभ वड्डा वड वड्याईआ। सच दुआरे बणे साचा जाप, जप जाप दए उपजाईआ। दुरमति कलेवर धोवे पाप, मैल रहिण कोए ना पाईआ। जिन्हां पुरख अकाल वसया साथ, तिन्हां भय ना कोए वखाईआ। इक्को रख के बैठे आस, हरि मिले सच सरनाईआ। जन्म कर्म दी बुझे प्यास, पूरब लेखा पन्ध मुकाईआ। लहिणा चुके मस्तक माथ, रेखा दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। हरिजन साचा सेवादार, सेवक रूप वटाईआ। पुरख अकाल बणे मददगार, मुद्दत आपणी नाल प्रगटाईआ। उदम करे अपर अपार, ऊधो सेवा इक समझाईआ । साची सखीआं मंगलाचार, घर साचे नाम वज्जे वधाईआ। घर प्रीतम प्यारा करे सच प्यार, सेज सुहञ्जणी इक सुहाईआ। सो गुरमुख उधरे पार, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा लेखे पाईआ। हरिजन लेखा गुर का रंग, घर साचे आप रंगाइंदा। जुग चौकड़ी मंगे मंग, देवणहार दया कमाइंदा। जन भगत सेवा होए ना भंग, दर साचे जो कमाइंदा । दो जहान मिले

अनन्द, अनन्द इक्को नज़री आइंदा। पिछला भुल्ल जाए गाउणा छन्द, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल करके ख़ास, ख़ालस ख़ालसा लए बणाईआ। जिस दी गुर अवतार रख के गए आस, सो असल आपणा रूप प्रगटाईआ। घट घट वेखे सर्ब स्वास, पवण पवणां खोज खुजाईआ। लेख चुकाए पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर खोज खुजाईआ। जन भगत दुआरे पावे रास, स्वांगी आपणा स्वांग वटाईआ। गुरमुखां इक्को वार देवे शाबास, मेहर नज़र आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख साचे सन्त सुहेले, कर किरपा हरि ठाकर मेले, मिलणी जगदीश आप कराईआ। मिलणी जगदीश करे जग नित, नवित्त फेरा पाइंदा। गुरमुख गुर गुर कर कर हित, साची जोड़ी जोड़ जुड़ाइंदा। साचा कर्म देवे लिख, लिख्या लेख ना कोए मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरि किरपा देवे आपणा दान, गुर बख्शश बख्शीश झोली पाइंदा।

✪ ६ भाद्रों २०२० बिक्रमी हरभजन सिँघ दे नवित्त हरि भगत दुआर जेठूवाल ✪

लेखा जाणे हरि जू सगला, दो जहानां वेख वखाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी भेव जाणे आपणा अगला, रसना कह ना कोए समझाइंदा। कलयुग कूड़ कुड़यार चार कुण्ट होया पगला, धीरज धीर ना कोए वखाइंदा। वरन बरन होया कंगला, हरि का नाम दर नज़र किसे ना आइंदा। साध सन्त भौंदे जंगलां, काया जूह खोज ना कोए खुजाइंदा। घर नाद ना सुणया कोई मंगला, ढोलक छैणे सर्ब वजाइंदा। सच महल्ल ना सोहया बंगला, जगत गढ़ वड वड्याइंदा। निरगुण निरवैर लख चुरासी चुकावणहारा बदला, बदली तबदीली आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। कलयुग कूड़ा पागलपन, चारों कुण्ट रिहा वखाईआ। सृष्ट सबाई होई नेत्र अन्न्ह, निज नेत्र ना कोए खुल्हाईआ। पढ़ पढ़ सुण सुण कहिण धन्न धन्न, घर दर्शन दीदार कोए ना पाईआ। सरवण थक्के सुण सुण कन्न, कानी तीर ना कोए लगाईआ। नेत्र थक्के वेख वेख चन्न, घर निरगुण जोत चन्द ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा खिलाईआ। पागल हो के होया बवरा, बाहर भज्जे वाहो दाहीआ। हरि का खेल गहर गवरा, समझ ना सके कोई राईआ। खेले खेल अवर की अवरा, भेव अभेदा आप जणाईआ। माणस जन्म गुरमुख विरले सवरा, जिस सतिगुर मिल्या बेपरवाहीआ। लख चुरासी सड़ी दब्बी मढ़ी कबरा, कब्रिस्तान देण दुहाईआ। साचा

कारज किसे ना सवरा, सबर प्याला जाम ना कोए प्याईआ । गुरदर मन्दिर वजौंदे फिरदे तबला, तन रबाब ना कोए वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल सच्चा शहिनशाहीआ । शहिनशाह हरि वेखे खेल, कलयुग अन्तिम वेस वटाईआ। सुरत शब्द ना कोई मेल, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। घर आत्म परमात्म चढ़या ना कोए तेल, साचा सगन ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग पागल रिहा दौड़, चारों कुण्ट वाहो दाहीआ। लख चुरासी रीठा वेखे कौड़, अमृत रस ना कोए भराईआ। साध सन्त बैठे अन्ध घोर, निरगुण नूर चन्द ना कोए चमकाईआ। रसना जिह्वा कूक कूक मचावण शोर, शहिनशाह नज़र किसे ना आईआ। दूजे हथ्थ फड़ा के डोर, जगत गुडीआ रहे उडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। कलयुग पागल रिहा नट्ठ, चार कुण्ट वाहो दाहीआ । चार वरनां वेखे तुटा हठ, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश सति सरूप ना कोए समाईआ। फिर फिर वेखे तीर्थ तट अठसठ, सच सुच नज़र कोए ना आईआ। साध सन्त जीव जंत नाड़ बहत्तर उबले रत्त, रती रत ना कोए सुकाईआ। अन्तर आत्म मिले ना ब्रह्म मति, मन मति होए हल्काईआ । लग्गी अग्ग पंज तत्त, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। जगत मार्ग रहे दस्स, आपणा राह नज़र किसे ना आईआ। जगत समेलन कर इकट्ठ, उच्ची कूकण ढोला गाईआ। निज नेत्र नज़र ना आए पुरख समरथ, घर साचे दरस दिखाईआ। सिमरन पूजा पाठ जोग अभ्यास करदे तप, उच्चे टिल्ले पर्बत डूंघी कन्दर ध्यान लगाईआ। साचे मन्दिर साढे तिन्न हथ्थ अन्दर कोई ना लए लभ्भ, बाहर खोजे सर्ब लोकाईआ। सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा आत्म सेजा बैठा सज, सच सिँघासण सोभा पाईआ। शब्द अगम्म अनाद नादी वजाए नद, अनहद साची सेव लगाईआ । जगत दुआरा कराए पार हद्द, घर इक्को इक वखाईआ। साचा ढोला सोहला गाए राग छन्द, तूं मेरा मैं तेरा इक्को नाम ध्याईआ। लहिणा चुके बत्ती दन्द, रसना जिह्वा ना कोए वड्याईआ। घर परमेश्वर देवे परमानंद, निज आत्म करे रमाईआ। नाम भण्डारा खोल्ह गंढ, वस्त अमोलक घर वरताईआ। निरगुण जोत चाढ़ चन्द, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। सच महल्ले आपे लँघ, उच्च अटले वेख वखाईआ। सति सरूपी चाढ़े रंग, उतर कदे ना जाईआ। जन भगतां पूरी करे मंग, प्रभ दाता बेपरवाहीआ। माणस जन्म ना होए भंग, लख चुरासी लेख चुकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ। कलयुग पागल पावे रौला, रसना जिह्वा कूक सुणाईआ। कोई ना करे भार हौला, सिर गठड़ी पाप उठाईआ। परवरदिगार बेपरवाह नज़र ना आए मौला, मुश्कल हल्ल दए कराईआ। निउँ के तक्के पुरख अकाल दीन दयाल गोबिन्द नाल करके गया कौला, इकरार इक्को घर

जणाईआ। कलयुग अन्त निहकलंक श्री भगवन्त प्रगट होए उपर धौला, धरनी धरत धवल वेख वखाईआ। दो जहान नौजवान मर्द मर्दान शाह सुल्तान इक सुणाए बोला, लोअ पुरी आकाश ब्रह्मण्ड खण्ड दो जहान इक्को हुक्म वरताईआ। सति धर्म सच दुआर एकँकार इक्को खोल्हा, ख़ालक ख़लक मख़लूक दए समझाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त निरगुण सरगुण बणे तोला, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। धुरदरगाही बेपरवाही शब्द अगम्म लै के आए डोला, सन्त सुहेले गुरु गुर चेले साजण साचे विच बहाईआ। सचखण्ड दुआरा हरि करतारा एका एक खोल्हा, ताक बंद ना कोए वखाईआ। चरण प्रीती साची रीती नीतीवान जो घोली घोला, कीती घाल लेखे लाईआ। लहिणा चुक्कया कला सोल्ह, करे खेल साहिब अनमोला, अनगिणत आपणी धार चलाईआ। शब्द सरूपी बण विचोला, जन भगतां चुकाए पड़दा ओहला, घर घर विच मन्दिर दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। कलयुग पागल रिहा कूक, कुला खण्ड दए दुहाईआ। चार कुण्ट मेरी चुकी चूक, चकनाचूर मेरी लोकाईआ। अन्दरों थोथे होए वांग भूक, नाम सति नज़र कोए ना आईआ। बाहरों दिसे पंज तत भूत, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बैठा गंढु पवाईआ। अन्दर वड़ कोई ना वेखे आपणी कूट, जिस घर वसे बेपरवाहीआ। कूड़ी क्रिया मारदे फिरदे झूठ, जूठ बैठे मुख लगाईआ। ना कोई ताणां पेटा दिसे सूत, सूत्रधारी आपणी कार रिहा कमाईआ। लख चुरासी विचों गुरमुख विरला उपजे पूत, जिस प्रभ आपणे चरण लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। कलयुग पागल आए नेड़े, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। नेत्र रो रो करे झेड़े, उच्ची कूके कूक कूक सुणाईआ। ख़ाली दिसण साधां डेरे, सन्त सति ना कोए समाईआ। गुरमुख विरले भगत तेरे, जिन्हां तेरी ओट तकाईआ। नाता जोड़ कहिन्दे मेरे तेरे, तेरा मेरा भेव कोए ना आईआ। कलयुग वेखे झूठे खेड़े, साचा मन्दिर ना कोए सुहाईआ। अन्तिम अन्त डुब्बण वाले बेड़े, शौह दरया पार ना कोए कराईआ। जीव जंत लख चुरासी कलयुग अन्तिम आए घेरे, चार दीवार सफ़ील कंध पार ना कोए कराईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात पए झगढ़े झेड़े, झंजट सके ना कोए मुकाईआ। भाईआं नालों भाई बखेड़े, पिता पूत दे पाए झेड़े, नार कन्त करे लड़ाईआ। नव नौं चार युग हरि करता वेंहदा रिहा करके जेरे, ज़ेर ज़बर जाबर आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। कलयुग पागल हो के फिरे हल्का, हालत आपणी रिहा जणाईआ। लेखा कोई ना जाणे कल का, हरि करता की खेल वरताईआ। नहीं विसाह घड़ी पल का, पलक पलक अन्दर पालक आपणी दया कमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो रिहा घल्लदा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग हुक्म सुणाईआ। कलयुग अन्तिम खेल

२६५
१५

करे वल छल दा, अछल छलधारी नज़र किसे ना आईआ। वसे निहचल धाम कदे ना हल दा, सचखण्ड साचा डेरा लाईआ। भेव खुल्हाए जल थल दा, महीअल वेखे बेपरवाहीआ। आपणी जोत जोत आपे रलदा, शब्दी शब्द नाद आप सुणाईआ। अगम्म खेल श्री भगवन दा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण खाणी बाणी कोई समझ ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार आप जणाईआ। कलयुग पागल हो के रिहा कूक, इक्को नाअरा लाईआ। त्रैगुण माया रही फूक, पंज तत अग्नी लाईआ। कोई ना दिसे साचा भूप, जो सगला संग निभाईआ। वेख के आया चारे कूट, दहि दिशा पड़दा लाहीआ। घर घर वड़या जूठ झूठ, सच सुच नजर किते ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, मेहरवान तेरी सरनाईआ। उठ पागल खोल्ह सुरत, पुरख अकाल रिहा जणाईआ। श्री भगवान मेल मिलाए तुरत, तेरा पड़दा दूई चुकाईआ। भगत दुआर वेख अकाल मूर्त, अक्ल कल प्रभ बेपरवाहीआ। जिस दा नाद अगम्म तूरत, तुरिया बैठे मुख शरमाईआ। तिस साहिब दी साची सूरत, सालस साबत हुक्म मनाईआ। आसा मनसा सब दी पूरत, ख़ाहिश कोए रहिण ना पाईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़त, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़त, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलयुग पागल हो ना बण मूर्ख, क्यों बैठा मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लहिणा दए चुकाईआ। कलयुग पागल तेरा लहिणा चुक्के, चुक्के पीड़ पराईआ। अन्तिम पैंडा मात मुक्के, धरत धवल रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचा सति सतिवादी उठे, उठ आपणा बल रखाईआ। जन भगतां कोलों जा के पुच्छे, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। कवण दुआरे सन्त सुहेले सुत्ते, कवण मन्दिर वज्जे वधाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुते, चेतन धार आप समझाईआ। हर घट अन्दर घर विच घर अगम्मी गुट्ठे, हरि सतिगुर वसे सहिज सुखदाईआ। हरिजन मिलाए जो जन्म जन्म दे रुट्ठे, कर्म कांड दए गंवाईआ। कलयुग वेख गुर अवतार पीर पैगम्बर प्रभ मिलण दे सारे भुक्खे, दोए जोड़ बैठे ध्यान लगाईआ। मूसा ईसा कोलों पुच्छे, ईसा मुहम्मद ध्यान लगाईआ। सदी चौधवीं कब पैंडा मुक्के, नाता तुट्टे ख़लक ख़ुदाईआ। परवरदिगार बेपरवाह सांझा यार इक्को उठे, सगला संग निभाईआ। कूड़ विकारा फड़ के कुट्टे, नाम खण्डा इक चमकाईआ। शेर हो के सतिगुर बुक्के, भबक आपणा नाम लगाईआ। आपणे निशानिउँ कदे ना उके, तीर अणयाला इक चलाईआ। वेखणहारा टिल्ले उच्चे, पर्बत फोले थाउँ थाईंआ। जो बाहरों बण के बैठे सुच्चे, तिन्हां अन्तर मैल दए वखाईआ। सूरबीर हो के योद्धा पुच्छे, बल आपणा आप प्रगटाईआ। अन्तिम वेला नेड़े ढुके, बणया पांधी राहीआ। गुरमुख बूटे कदे ना सुक्के, सतिगुर पूरा अमृत सिंच हरे कराईआ। उजल करे मात मुखे,

मुख मुखड़ा सिफ्त सालाहीआ। भगत भगवान इक दूजे नूं आपे झुके, अन्दर बाहर इक्को रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, बख्शे सच सच्ची सरनाईआ। भगत भगवान इक दूजे दे वड़न अन्दर, अन्तर आपणा मेल मिलाईआ। साढे तिन्न हथ्थ सुहौण साचा मन्दिर, छप्पर छन्न ना कोए वड्याईआ। कर प्रकाश अन्धेरी कन्दर, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। मन मनुआ ना दौड़े बन्दर, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी कार कमाईआ। कलयुग पागल उठ रख आस, आसावंद दया कमाइंदा। तेरी अन्त बुझाए प्यास, तृष्ना दुःख मिटाइंदा। नाल रलाए तेरे साथ, लख चुरासी भार बंधाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर गया आख, कलयुग अन्त निहकलंक वेस वटाइंदा। मुर्शद मुरीद देंदे रहे भाख्या भाख, भविक्ख्त लिख्त भेव चुकाइंदा। निरगुण नूर सच रसूल पाक, पुनीत आपणी धार चलाइंदा। देवणहारा आबे हयात, हयाती सब दी आप बदलाइंदा। वेखणहारा कायनात, चौदां तबकां खोज खुजाइंदा। साची खोल्हे अगम्म लुग़ात, अलिफ़ ये पट्टी ना कोए पढ़ाइंदा। जुग चौकड़ी ना पाए वफ़ात, मकबरा नज़र कोए ना आइंदा। लेखा लिखे बिन कलम दवात, कातब कार ना कोए कमाइंदा। दो जहानां वड नवाब, नौबत आपणा नाम वजाइंदा। सच सुणाए इक रबाब, अहिबाब आपणा राग अलाइंदा। जन भगत जणाए आपणा मिज़ाज, बण संगी संग रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे इक्को दान, बण दाता आप वरताइंदा।

✪ १० भाद्रों २०२० बिक्रमी ठाकर सिँघ दे नवित्त हरि भगत दुआर जेठूवाल ✪

जोत अकालण हो हो खुश, मुख घूँगट रही उठाईआ। लोकमात करे रुख, ब्रह्मण्डां खण्डां पार कराईआ। भेव चुकाए अबिनाशी अचुत, सच संदेस सुणाईआ। उजल करां भगतां मुख, दुखड़ा दर्द मिटाईआ। साची गोदी लवां चुक्क, अंगन इक सुहाईआ। वैरागण हो के लवां पुच्छ, अन्तर आत्म वेख वखाईआ। जन्म जन्म दी मेटां भुक्ख, तृष्ना रोग गंवाईआ। डूंघे मन्दिर वड़ां लुक, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। नव नौं चार सुखणा रही सुख, सचखण्ड बैठी ध्यान लगाईआ। कवण वेला पुरख अकाल दीन दयाल गोबिन्द वेखे सुत, सुत दुलारा गोबिन्द अंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म वरताईआ। जोत अकालण नैण शृंगार, नैनण नैण रही मटकाईआ। सच प्रीती साची धार, कज्जल रूप वटाईआ। पलक पलक लए उग्घाड़, अक्ख प्रतख रूप वटाईआ। दो जहानां वेखे वारो वार, पुरी

लोअ खोज खुजाईआ। दहि दिशा लए उग्घाड़, चार कुण्ट पड़दा लाहीआ। लख चुरासी खोल्ह कवाड़, घर घर आपणा फेरा पाईआ। कलयुग तेरी अन्तिम वार, बेअन्त दया कमाईआ। सन्त सुहेले साचे यार, गुरमुख वेखे थाउँ थाईंआ। प्रेम करे पहली वार, सच प्रीती आप लगाईआ। नेम करे एका धार, कीता कौल भुल्ल ना जाईआ। नाम बोले सच जैकार, धुर दा राग अलाईआ। महल्ल वखाए इक मनार, अटल करे रुशनाईआ । दीवा बाती इक उज्यार, तेल वत्ती ना कोए वखाईआ। साचा पति मिले अगम्म अपार, रूप रंग रेख नज़र कोए ना आईआ। सती हो जावां बलिहार, सिदक सबूरी इक निभाईआ। रती रती देवां वार, रती रत रहिण ना पाईआ। नड्डी नड्डी आवां विच संसार, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। गुरमुख विरला लभ्भे यार, जो यारड़ा सत्थर रिहा हंढ्ढाईआ। इक्को मंगे दरस दीदार, पुरख अकाल नूर रुशनाईआ। दर दर घर घर जा के लवां भाल, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। इशारे नाल लवां उठाल, सैनत नाल समझाईआ। उठ वेख आपणी धर्मसाल, घर घर विच वज्जी वधाईआ। दर्शन कर दीन दयाल, दयानिध रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र आप उठाईआ। जोत अकालण गुंदे सीस, मींढी इक्को इक वखाईआ। साचा नाता हरि जगदीश, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस दे आदि जुगादि छत्र झुल्ले सीस, तख्त निवासी बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी जिस दा कलमा पढ़न हदीस, गुर अवतार पीर पैगम्बर बैठण सीस झुकाईआ। जिस दा खेल बीस इकीस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप जणाईआ। जोत अकालण चुक नकाब, जलवा नूर दरसाईआ। परवरदिगार सच आदाब मुकामे हक़ शनवाईआ। सच महल्ला इक महिराब, महिबूब नज़री आईआ। देवणहारा साची दाद, दौलत इक्को घर वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा जलवा नूर रुशनाईआ। जलवा नूर रुशनाए एक, एकँकार वड्डी वड्याईआ। दरगाह साची धाम सुहाए एक, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। कलमा नबी रसूल पढ़ाए एक, अक्खर वक्खर कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच सुच रिहा समझाईआ। जोत अकालण दस्से हाल, हरि का भेव खुल्हाईआ । निरगुण दीआ दीपक बाल, घर सच करां रुशनाईआ। आदि जुगादी खेल कमाल, दो जहान वखाईआ। सरगुण उपजावां साचे लाल, निरगुण मेला सहिज सुभाईआ। शब्द बणावां धुर दलाल, दर घर साचे मेल मिलाईआ। हुक्म सुणावां काल महाकाल, लख चुरासी डेरा ढाहीआ । सच वखावां सच्ची धर्मसाल, जिस दुआरे सेज सुहाईआ। नाम नगारा वजावां ताल, अनहद नादी राग अलाईआ। लख चुरासी विचों गुरमुख गुरसिख सज्जण भाल, दर साचे मेल मिलाईआ। अन्दर बाहर चलां नाल नाल, साचा संग आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। जोत अकालण करे हासा, हस्त कीट वेख वखाईआ। धारे भेख पुरख अबिनाशा, अबिनाशी सार कोए ना पाईआ। वेखण आए जगत तमाशा, जोती जाता नूर रुशनाईआ। जन भगतां देवे इक भरवासा, सरन चरण कँवल सरनाईआ। गुरमुखां पूरी करे आसा, जगत तृष्ना मेट मिटाईआ। गुरसिखां देवे सच्चा साथा, सगला संग निभाईआ। आप होए नाथ अनाथा, दीन दयाल दीनन गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बेपरवाही धार वखाईआ। जोत अकालण गौंदी गीत, सोहँ राग अलाईआ । कलयुग अन्तिम छड्ड मन्दिर मसीत, जन भगत दुआरे फेरा पाईआ। बदलां कूड़ कुड़यारी रीत, साचा मार्ग इक लगाईआ। मिले माण हस्त कीट, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। हर घट अन्दर वसां चीत, घर घर डेरा लाईआ। गुरमुख विरला मिले मीत, मित्र प्यारा नज़री आईआ। मेल मिलावां साहिब अतीत, त्रैगुण डेरा ढाहीआ। जिस दे छत्र झुल्ले सीस, सो पुरख निरँजण इक अख्वाईआ। जुग चौकड़ी जिस दी मन्नदे रहे हदीस, सजदा सीस चरण झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। जोत अकालण पाए रौला, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। निरगुण नूर वेखो मौला, हर घट रिहा समाईआ। गोबिन्द नाल पूरा करे कौला, कीता इकरार भुल्ल ना जाईआ। जन भगतां भार करे हौला, कर्म कांड दी गठड़ी आपणे सीस उठाईआ। हरि भगत तेरा बाहू बल फरके डौला, तन अन्तर आत्मा लए अंगड़ाईआ। सच प्रीती घोल घोला, घोली घोल घोल घुमाईआ। सतिगुर चुक्के पड़दा उहला, दूई द्वैत मिटाईआ। सच सुणाए इक्को बोला, सोहँ राग अलाईआ। नाम तराज़ू तोले तोला, कंडा इक्को इक वखाईआ। धर्म दुआरा साचा खोल्ला, कूड़ी क्रिया हट्ट ना कोए विकाईआ। उतरे पार भाला भोला, जो चल आए सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। जोत अकालण कहे मैं सखी सहेली, साचा संग निभाईआ। जुग जुग फिरां इक इकेली, दो जहानां नस्सां वाहो दाहीआ। इक्को कूक सुणावां भगत प्यारा मेलीं, जिस मिलयां विछड़ कदे ना जाईआ। दो जहानां बणे बेली, गलवकड़ी इक रखाईआ। लै के जावां धाम नवेली, महल अटल सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जोत अकालण बण मलंग, घर घर नाच वखाईआ। जन भगतां कोलों मंगे मंग, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। गुरमुख सज्जण मेरा देणा संग, सच प्रीत लगाईआ। सेज सुहौणी इक पलँघ, पावा चूल नज़र कोए आईआ। मैं बण वैरागण हो सुहागण वजावां रबाब तन्द, सारंग सारंगढ़ा सार कोए ना पाईआ। खुशीआं अन्दर प्रेम प्रीती गावां छन्द, तूं मेरा मैं तेरा तेरा मेरा नाता इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा संग इक रखाईआ। जोत अकालण झोली

अड्ड, उच्ची कूक रही सुणाईआ। गुरमुख पिच्छा दे ना छड्ड, तेरे पिच्छे छड्डी सर्ब लोकाईआ। लख चुरासी नालों हो के अड्ड, मंगणी तेरे नाल कराईआ। सचखण्ड दुआरा तज आ के वेखी तेरी हद्द, काया अन्दर फेरा पाईआ। मेहर नज़र कर के दुआरे आपणे सद्द, मैं आवां चाईं चाईंआ। खुश होवां कर के तेरा हज्ज, काया काअबा वेख वखाईआ। दर्शन करां रज्ज रज्ज, चार युग दी तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। जे कोई पुछे सब नूं ला देवां पज, आपणी समझ किसे ना पाईआ। बिन भगतां कोई ना सके लभ्भ, जंगल जूह फिरे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साची सेव कमाईआ। जोत अकालण दर निमाणी, खुलड़े केस रही वखाईआ। गुरमुख मिले सच्चा हाणी, घर साचे वज्जे वधाईआ। अमृत पीवां ठंडा पाणी, निझर झिरना मुख खुल्हाईआ। सोहँ पढ़ां साची बाणी, तूं मेरा मैं तेरा तेरा मेरा इक्को माहीआ। आ वेख मेरी निशानी, धुर दी कानी तीर लगाईआ। समझ सके ना कोए विद्वानी, पड़दा सके ना कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग इक रंगाईआ। जोत अकालण खोल्ह पड़दा, मुख नूर ज़हूर वखाईआ। जन भगत उधारे कलयुग सड़दा, अग्नी तत मिटाईआ। भेव खुल्हाए आपणे घर दा, घर घर विच मेल मिलाईआ। अशनान कराए साचे सर दा, सरोवर इक्को इक नुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। जोत अकालण रखे आस, इक्को आस तकाईआ। बिन भगत ना बुझे मेरी प्यास, तृष्ना नज़र कोए ना आईआ। दो जहानां कोई ना लभ्भे साथ, इक इकल्ली कम्म किसे ना आईआ। ख़ाली दिसण पतण घाट, तट किनारे देण दुहाईआ। कोझी कमली मुका ना सके वाट, पांधी पन्ध पार ना कोए कराईआ । कलयुग वेख अन्धेरी रात, नेत्र रोवण वाहो दाहीआ। बिन भगतां बणी नार कमज़ात, कुलखणी कम्म किसे ना आईआ। कवण वेला हरि सज्जण घर मेरे औण लै बरात, दूल्हा इक्को नाल मिलाईआ। रविदास चुमारा लै कलम दवात, लेखा लिखे थाउँ थाईंआ। लुकी छिपी रहे ना कोई बात, ज़ाहरा रूप करे कुड़माईआ। गुस्सा करे ना कोई माई बाप, प्रभ नेत्र वेख दर घर वरया बेपरवाहीआ। जिस दी सच सच्ची जमात, पट्टी इक्को नाम पढ़ाईआ। जिस दा मन्दिर सच्चा ख़ास, ख्वाहिश सब दी पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला दए मिलाईआ। जोत अकालण पाए वेल, घर साचे ख़ुशी मनाईआ। साची सखी सच चढ़े तेल, सुहञ्जणी रुत्त वड्याईआ। दया करे प्रभ सज्जण सुहेल, अबिनाशी करता बेपरवाहीआ। जुग जन्म दे लए मेल, विछड़े आपणे नाल मिलाईआ। अचरज करे अगम्मी खेल, समझ सके कोई ना राईआ। वसणहारा धाम नवेल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा नाता दए जुड़ाईआ। जोत अकालण जुड़े नाता, घर साचे मेल मिलाईआ। वेखे खेल

पुरख बिधाता, ग़मी खुशी ना कोए जणाईआ। निरगुण हो के देवे साथा, सरगुण अंग लगाईआ। दो जहान चलाए राथा, रथवाही इक्को नज़री आईआ। चार युग दी पूजा पाठा, मन्त्र शब्द करे पढ़ाईआ। दो जहानां खोल्ह् खुलासा, भेव अभेदा दए समझाईआ। अन्त कन्त भगवन्त पूरी करे आसा, निरासा नज़र कोए ना आईआ। जिस दा सुणदे सारे साका, सख्यात वेस वटाईआ। घर मन्दिर खोल्ह् ताका, पढ़दा दूई दए चुकाईआ। अन्दर वड़ के करे बातां, बातन भेव दए समझाईआ। जन भगतां मेला एका घाटा, घाट पत्तण इक्को इक वखाईआ। अगली पिछली मुक्के वाटा, पांधी पन्ध ना कोए भवाईआ। सोहँ ढोला गाए गाथा, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। जोत अकालण तेरा सोहे मस्तक माथा, टिक्का इक्को इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। जोत अकालण होए मिलाप, जन भगत वज्जे वधाईआ। दो जहानां बणे साक, सज्जण इक्को रूप समाईआ। खेले खेल दीनां नाथ, दीनन लए उठाईआ। लहिणा चुक्के मस्तक माथ, पूरब झोली आप भराईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त बेअन्त जणाए पूजा पाठ, सोहँ सच नाम पढ़ाईआ। गुरमुख मिले इक जमात, चार वरन इक्को राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। जोत अकालण आसा पुन्नी, हरि पूरन पुरख प्रभ पाया। ओढण मिल्या सिर ते चुन्नी, ढाकण-कू-पत बेपरवाहया। गावे गीत वड गुण गुणी, गोबिन्द ढोला राग अलाया। सच पुकार मेरी सुणी, बेपरवाह होए सहाया। गुरमुख मेले आपणी धुनी, धुन आत्मक राग अलाया। लख चुरासी विचों चुणी, चुण चुण एका रंग चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे जोड़ जुड़ाया। घर साचे जोड़ी गई जुड़, जोबन इक्को नूर वखाईआ। आत्म परमात्म पई लोड़, परमात्म आत्म मिले चाईं चाईंआ। रविदास चुमारा ढोवणहारा ढोर, पानहां गंढ्ढ वक्त लँघाईआ। तिस साहिब स्वामी गया बौहड़, बावर आपणे लेखे पाईआ। कलयुग सतिजुग दोवें मार्ग देवे तोर, लहिणा दोहां नाल रिहा चुकाईआ। वेख वखाए अन्ध घोर, लेखा जाणे चन्द नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेल मिलावा एका थाईंआ। मेल मिलावा एक थनंतर, धाम सुहञ्जणा आप सुहाइंदा। मिल मिल गाया साचा मन्त्र, मन्त्र सोहला ढोला सोहँ राग अलाइंदा। हर घट बिध जाणे अन्तर, अन्तर आत्म वेख वखाइंदा। कलयुग विच सतिजुग बणाए बणतर, गुरमुख साचे आप जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म जोत अकालण, अक्ल कल धारी आप जणाईआ। जन भगत दुआरे जाणा बण के मालण, प्रेम फूलण हार तन पहनाईआ। जा के फड़ना गुरमुखां दामन, पल्लू आपणे नाल गंढ्ढाईआ। मेटणी रैण अन्धेरी शामन, सतिजुग सच्चा चन्द रुशनाईआ। दरस करना आमृ्णो सामृ्ण, सनमुख

दीदारा पाईआ। विचोला कोई ना बणे क्षत्री ब्राह्मण, पारब्रह्म ब्रह्म पड़दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे इक्को दान, साचा मेला विच जहान, जीवण जुगत जग दाता जागरत जोत दए समझाईआ।

✪ ११ भाद्रों २०२० बिक्रमी हरिसंगत दे नवित्त हरि भगत दुआर जेठूवाल ✪

शाही कहे मेरे शहिनशाह, शाह पातशाह तेरी सरनाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी मंगां पनाह, चरण कँवल ध्यान लगाईआ। दोए जोड़ पवां सरना, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सद मनां तेरी रज़ा, तेरा हुक्म आपणे सीस टिकाईआ। रहमत कर सच खुदा, खुदी तकब्बर कोए रहिण ना पाईआ। तेरे प्रेम विच होई फ़िदा, आपणा आप मिटाईआ। आपणा आप दित्ता कटा, अंग अंग नालों जुदा कराईआ। तेरे मिलण दा चढ़या चा, तिक्खी करद छुरी चलाईआ। पुरज़ा पुरज़ा अंग कटा, आपणा आप मिटाईआ। पत डाली शाख़ दिती तजा, तज आपणा आप गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणी सच सरनाईआ। शाही कहे मेरे शहिनशाह, बेपरवाह तेरी वड्याईआ। दर दरवेश मंगां राह, इक ध्यान लगाईआ। किरपा कर वड निगहबान मेहरवां, मेहर नज़र उठाईआ। साची सेवा लवां कमा, कमली कोझी आपणा आप भेंट चढ़ाईआ। तेरा सिफ्ती ढोला लवां गा, गा गा खुशी मनाईआ। नाता लवां जुड़ा, जुग चौकड़ी सके ना कोए तुड़ाईआ। तेरा मेरा लेखा दो जहां, दोए दोए धार रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। सुण के हाल जगत शाही, कलम उठी कुरलाईआ। मेरा मैनूं मिले माही, प्रेम मेरे नाल बंधाईआ। मैं चल के देवां आप वधाई, सच सुनेहड़ा इक सुणाईआ। उठ वेख मेरे सच गोसाईं, दर तेरे अलख जगाईआ। बण के आई पांधी राही, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नैण उठाईआ। सच पुकार करे कलम, कलमा इक्को सुणाईआ। बेपरवाह मेरे बलम, वड तेरी वड्याईआ। निहकर्मी वेख मेरे कर्म, कर्म कांड ना कोए रखाईआ। तेरा मेरा इक्को धर्म, धर्म दुआरे गंढु पवाईआ। दूजा ना कोई दिसे भरम, भाण्डा भरम भंनाईआ। मैनूं आवे तैथों शरम, नेत्र नैण ना कोए उठाईआ। सद वसां तेरे हरम, महल्ल इक्को इक रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे वड्याईआ। कलम कहे मैं तेरी दासी, दासन रूप वटाईआ। निरगुण रूप पुरख अबिनाशी, तेरी समझ कोए ना पाईआ। सचखण्ड दुआर सच धार जोत प्रकासी, प्रकाशवान बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। कलम कहे मैं मंगण आई, दर साचे सच सरनाईआ। तेरी मेरी ना होए जुदाई, नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। निरगुण हो के कर कुड़माई, सरगुण लेखे लाईआ। तूं मेरा बण सच्चा माही, मैं तेरी नार रूप वटाईआ। बेशक मेरा मूल बूटा काही, तेरी जड़ तेरे नाल बंधाईआ। तेरे नाम दी वजावां वधाई, साचा ढोला राग समझाईआ। मेरे बिनां प्रभू तेरी ना कोई शनवाई, निशान नज़र कोए ना आईआ। मैं शहादत देवां तेरी गवाही, लिख लेखा आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। कलम तेरी सुण के बात, शाही आपणी लए अंगड़ाईआ। मेरे बिनां की करें खेल तमाश, तेरी चले ना कोए चतुराईआ। तेरा खाली पिंजर दिसे सास, रूप नज़र कोए ना आईआ। मैं सच सुनेहड़ा देवां आख, इक्को वार जणाईआ। जिन्ना चिर तेरा मेरा जुड़े ना नात, पुरख बिधाता अंग ना कोए लगाईआ। सुण के हाल लागों उठी मिट्टी दवात, माटी काची रही कुरलाईआ। मेरे बिनां ना किसे नजात, बन्धन सके ना कोए पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। श्री भगवान सुण के बात, हरि बातन भेव जणाइंदा। कलम उठ मार झात, हरि कालम वंड वंडाइंदा। शाही लेखा वेख सफ़ात, सफ़ा हस्ती रूप ना कोए जणाइंदा। भेव खुल्हाए जगत दवात, दुआरा आपणा आप समझाइंदा। तिन्नां पुच्छणहारा वात, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। नेत्र खोल्ह वखाए मार झात, पड़दा आपणा आप चुकाइंदा। शब्द गुरदेव देवणहारा दात, वस्त अमोलक सच वरताइंदा। निरगुण बन्न्हे सरगुण नात, नाता इक्को वार जुड़ाइंदा। धुर दी धार वखाए खात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार आप जणाइंदा। साची कार शब्दी तूर, हरि तुरत आप जणाईआ। उठे सुत योद्धा सूर, बल आपणा आप प्रगटाईआ। मेरा खेल होणा ज़रूर, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सर्ब कलां बण भरपूर, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। चार खाणी जिस भरया पूर, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज बेड़ा रिहा चलाईआ। कलम ना होणा मजबूर, दुःख दर्द रहिण कोए ना पाईआ। शाही शहिनशाह वेख हज़ूर, हरि जू दए समझाईआ। दवात कहे मेरा पैंडा नेड़े दूर, दो जहानां गंढु पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। शब्द सुत कहे सुण कलम कानी, कायनात हरि जणाइंदा। शाही शहिनशाह खेल करे महानी, शास्त्र सिमरत वेद पुराणी सिफ्ती सिफ्त वड्याइंदा। दवात कहे मैं वड विद्वानी, घर भण्डारा इक भराइंदा। तेरी धार अगम्म नूरानी, धुन नजर किसे ना आइंदा। बिन सरगुण तेरी बणे ना कोए निशानी, तेरा नाउँ कोए ना गाइंदा। किरपा कर शाह सुल्तानी, शहिनशाह तेरा हुक्म इक्को भाइंदा। कलम कहे मैं लेखा लिखां महानी, शाही कहे मैं आपणा रंग वखाइंदा।

दवात कहे मेरा दर परवानी, परवाना सब दे हथ्थ फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप चलाइंदा। कलम कहे मेरे भगवान, मैं देवां सच सुणाईआ। मेरे बिनां ना तेरा कोई निशान, तेरा नाउँ ना कोए समझाईआ। तेरी सिफ्त ना कोई जाणे जीव जहान, ढोला राग ना कोए अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर तेरी सेव कमाईआ। शाही कहे मेरा शान, निरगुण सरगुण दयां समझाईआ। श्री भगवान तेरा ब्यान, लेखा लिख लिख दयां वखाईआ। ना कोई मेटे मेट मिटान, हरफ़ हरूफ़ ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर साची सेव कमाईआ। दवात कहे मेरी खेल निराली, जगत शाही रही समझाईआ। मेरे बिनां तेरा कोई ना बणे पाली, तेरी धार ना कोए वखाईआ। कलम विचारी रहे बेहाली, हाल बेहाल सके ना कोए लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सेवा दए लगाईआ। सुण कलम हरि करतार, आदि आदि जणाईआ। शाही नाल तेरा प्यार, शाह पातशाह जोड़ जुड़ाईआ। दवात तेरी चार दीवार, चार कुण्ट वखाईआ। तेरा मुख देवे उग्घाड़, आप आपणा ध्यान लगाईआ। तेरे अन्तर उलटा रुख़ देवे वाड़, कलम आपणा मुख छुपाईआ। दोहां मिल के खेल होए अपार, शाही आपणा रंग चढ़ाईआ। सतिगुर खिच के ल्याए बाहर, आप आपणा हुक्म वरताईआ। साची सिफ्त नाम भण्डार, सेवा इक्को इक लगाईआ। लेखा लिखणा वेद चार, शास्त्र सिमरत नाल रलाईआ। गीता ज्ञान दे आधार, अञ्जील कुरान करी कुड़माईआ। खाणी बाणी कर प्यार, साची सिख्या इक समझाईआ। हरि का शब्द धुर जैकार, ढोला इक सुणाईआ। कलम शाही मिल मिल करे प्यार, दवात द्वैत ना कोए जणाईआ। लेखा लिखण विच संसार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। कलम कहे मेरे भगवन्त, दर तेरे सीस झुकाईआ। शाही कहे मेरे साजण कन्त, दोए जोड़ लागां पाईंआ। दवात कहे तेरी महिमां अगणत, सिफ्ती सिफ्त तेरी वड्याईआ। दर तेरे ते मंगण मंगत, बैठे झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी सरनाईआ। तिन्ने बोलण एका वार, दर साचे कूक सुणाईआ। तेरा सिफ्ती लेखा लिखीए सदा जुग चार, जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। तेरा नाम ढोला गाईए वार, वारतालाप इक जणाईआ। तेरे मन्दिर अन्दर बहि बहि करीए प्यार, प्रेम प्रीती इक्को नज़री आईआ। तेरा शब्द स्वामी बोल जैकार, जै जैकार दो जहान शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साचा संग इक वखाईआ। साचा संग प्रभ इक वखाउणा, दर तेरे इक अरज़ोईआ। साचे भगतां मेल मिलाउणा, जो तेरा ढोला रहे गाईआ। दूजा कोई नज़र ना आउणा, अंगीकार

ना कोए अख्वाईआ। धुर दा लेख इक लिखाउणा, दूजी अवर ना कोए लिखाईआ। बिन तेरे तेरा भेव ना किसे खुलाउणा, अन्त कहिण कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। तेरे दर मंगीए टेक, सरन मिले सरनाईआ। तेरी सिफ्त दा अगम्मी लेख, लिख लिख जगत जीव समझाईआ। तेरा मेला तेरे देस, तेरे नगर खेड़े वज्जे इक वधाईआ। तेरा प्रेम प्रीतम रहे हमेश, परम पुरख टुट्ट ना जाईआ। सदा सदा नित नवित्त तेरे भेख दा लिखदे रहीए लेख, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालाहीआ। मनमुख कोई ना लए वेख, गुरमुख सदा संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, जन भगतां आपणा हुक्म वरताईआ। श्री भगवान सच सुणाउँदा ए। धुर दा भेव आप खुलाउँदा ए। कलम इक्को हुक्म वरताउँदा ए। शाही तेरे नाल मिलाउँदा ए। दवात किला कोट बणाउँदा ए। सच प्रेम दा इक्को प्यार, अमृत जल बरसाउँदा ए। तिन्नां मेला इक्को धार, रंग साचा इक रंगाउँदा ए। सेवा ला गुरू अवतार, धुर दा हुक्म इक सुणाउँदा ए। हथ्थ नाल हथ्थ करे प्यार, फड़ बांहों लेख लिखाउँदा ए। जुग चौकड़ी वारो वार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाउँदा ए। पीर पैगम्बर बरखुरदार, साचा हुक्म आप समझाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची करनी आप कमाउँदा ए। साची करनी आप कमावेगा। प्रभ जुग चौकड़ी तुहाढ्ढी सेवा वेख वखावेगा। धुर दा लेखा लिख्या ना कोई मिटावेगा। लख चुरासी जीव जंत सिफ्ती ढोला सारे गावेगा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण रूप धरावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेख इक समझावेगा। साचा लेख प्रभू जणाएगा। जुग चौकड़ी पन्ध मुकाएगा। कलयुग अन्तिम वेख वखाएगा। निरगुण हो के फेरा पाएगा। सरगुण आपणा मेल मिलाएगा। भगत भगवान साचे चुण, माणस मानुख जन्म दवाएगा। आपे जाणे सच गुण, अवगुण कूड़े बाहर कढ्ढाएगा। लख चुरासी छाण पुण, गुरमुख विरले निर्मल रूप वटाएगा। धुर दी धार पुकार सुण, लेखा तिन्नां इक समझाएगा। लहिणा देणा चुकाए रिख मुन, मुनी मुनीशर पड़दा लाहेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां तेरा नाता इक जुड़ाएगा। जन भगतां नाता आप जुड़ावेगा। पुरख बिधाता वेख वखावेगा। कलयुग अन्तिम वेस वटावेगा। श्री भगवन्त खेल खलावेगा। गुरमुख साचे सन्त आप जगावेगा। रविदास चुमारा सेवा लावेगा। गुरदास निउँ निउँ सीस झुकावेगा। दोहां विचोला बण के खेल रचावेगा। कलम तेरी कातब बण के वंड वंडावेगा। शाही तेरे मुख तों लाह छाही, शहिनशाह नवां रंग वखावेगा। दवात तेरी काची माटी कूड़ा भाण्डा भन्न के कर तबाही, साचा बरतन इक प्रगटावेगा। वेखण आवे सच्चा माही, बेपरवाह फेरा पावेगा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा मूल चुकावेगा। सब दा लहिणा मूल चुकाएगा। निरगुण हो के वेख वखाएगा। सरगुण पड़दा आप उठाएगा। गुरमुख बरदा आप बणाएगा। घर घर दा भेव आप चुकाएगा। डरदा डरदा जन भगतां सेव कमाएगा। कलम शाही दवात तेरे ब्यान तों जो रिहा अड़दा, तिस अन्तिम मेट मिटाएगा। बिन लेखा लिख्यों आपे फड़दा, आपणा हुक्म आप चलाएगा। दो जहानां उच्ची मंज़ल आपे चढ़दा, बुज़दिल रूप ना कोए वटाएगा। लख चुरासी विचों सन्त सुहेले आपे खड़दा, मार्ग इक्को इक वखाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तिन्नां इक्को राह वखाएगा। तिन्नां राह वखाए एक, एकँकार दया कमाईआ। आत्म परमात्म बख्शे साची टेक, शब्दी सुरती जोड़ जुड़ाईआ। चार युग दा पूरा करे लेख, पिछला लेखा लेखे पाईआ। निरगुण हो के धारे भेख, सरगुण देवे माण वड्याईआ। वसणहारा नेतन नेत, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, साचे भगतां जोड़ जुड़ाईआ। साचे भगतां जोड़ जुड़ना, जोड़ी जगदीश बणाइंदा। ख़ाली हथ्थ किसे ना मुड़ना, सच भण्डारा आप वरताइंदा। कूड़ी क्रिया बंद करे फ़ुरना, फुरो मन्त्र नाम सच इक्को इक समझाइंदा। झूठे वहण किसे ना रुढ़ना, डुबदे पाथर पार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा लेखे लाइंदा। लेखा लग्गे कलम शाही दवात, त्रैगुण माया डेरा ढाहीआ। तिन्नां मेला इक जमात, एका घर खुशी वखाईआ। सच स्वामी लिख लिख गाथ, सदा देवणहार वड्याईआ। पुरख अकाल रखो आस, निज नेत्र ध्यान लगाईआ। दयावान जोत करे प्रकाश, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। दर आयां लेखे लाए सास ग्रास, लेखा लेखे नाल मिलाईआ। उठ सवाणी कलम दवात, शाही इक्को हुक्म वरताईआ। पहलों भगतां वेख मार झात, घर साचे खुशी मनाईआ। चार वरन बणे इक जमात, दूई द्वैत ना कोए रखाईआ। प्रभ मिलण दी रखण ख्वाहिश, दूजी आस ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां सेवा तेरी लाईआ। मैं जन भगतां राग अलावांगी। दासी बण के सेव कमावांगी। राखी कर के पार लँघावांगी। साखी बण के जगत सुणावांगी। बाणी बण के हुक्म पुचावांगी। नाती बण के जोड़ जुड़ावांगी। साथी बण के तोड़ निभावांगी। आखी मन्न के सीस निवावांगी। हासी कर कर गुरमुख खुशीआं नाल हसावांगी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे भगतां राग अलावांगी। साचे भगतां लेख लिखावांगी। तेरे नाम नाल मिलावांगी। हड्ड मास नाड़ी चाम प्रेम रंग इक चढ़ावांगी। नाता तोड़ लोभ मोह हँकार, क्रोध काम मेट मिटावांगी। गुरमुख कोई ना करे आराम, हरफ़ इक्को इक समझावांगी। दर दरवेश बण गुलाम, घर घर

अलख जगावांगी। साचा मेला श्री भगवान, दूजा नाता तोड़ तुड़ावांगी। कलयुग अन्तिम लिख के इक्को ज्ञान, चौदां विद्या पन्ध मुकावांगी। तूं मेरा मैं तेरे दर होई परवान, घर इक्को इक वखावांगी। साचा झुलदा रहे निशान, निशाना इक्को इक चढ़ावांगी। लोकमात गुरमुख बण के आए महमान, तिन्नां दा सिफ्ती राग अलावांगी। जिस वेले मुड़ के घर नूं जाण, कर कर सेवा लिख लिख लेखा अगला धाम साफ़ करावांगी। चार युग मैं बणी रही नादान, अन्तिम आपणी अक्ख खुल्हावांगी। जिन्नां मैनूं कीता परवान, तिन्नां परवाना लिख के हथ्थ फड़ावांगी। आदि जुगादि किसे ना मिल्या विष्नूं भगवान, जुग विछड़यां काग़ज़ उते फड़ मिलावांगी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे भगतां संग निभावांगी। मेरे भगत सच्चे जन आउणगे। लोकमात फेरा पाउणगे। इक्को मेरा नाँ ध्याउणगे। दूजी ओट ना कोई रखाउणगे। आत्म सेजा साची सौणगे। उठदे ढोला इक्को गाउणगे। जगत विचोला ना कोई बणाउणगे। कूड़े नेत्र मात शरमाउणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साचे सोभा पाउणगे। घर साचे गुरमुख सोभा पाउणगे। धुर दा हुक्म इक सुणाउणगे। कलम शाही लेख बणाउणगे। धरनी धरत धवल वडयाउणगे। कागद आपणा रंग चढ़ाउणगे। दो जहानां बैठ समझाउणगे। श्री भगवाना संग रखाउणगे। साचा गाना हथ्थ बन्नाउणगे। सगन इक्को वार मनाउणगे। धुर दा नाता जोड़ जुड़ाउणगे। पुरख बिधाता कन्त हंढाउणगे। कूड़ी सेजा कदी ना सौणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर इक्को इक सुहाउणगे। घर साचा सच सुहावणगे। पुरख अकाल इक मनावणगे। इष्ट देव इक बणावणगे। महल अटल इक रुशनावणगे। सच ध्यान इक लगावणगे। बण बलवान वेस वटावणगे। फड़ निशान जगत झुलावणगे। हो नौजवान, नौबत नाम वजावणगे। श्री भगवान उते हो मेहरवान, भगत आपणा एहसान सिर चढ़ावणगे। तेरा बणौण आए निशान, निशाना तेरा नाउँ वखावणगे। सेवा करन बण अञ्याण, आपणा माण मिटावणगे। इक्को मंगण दान, दोए जोड़ वास्ता पावणगे। जिस घर वसे आप भगवान, ओसे घर वस के तेरे तेरे नाल जोड़ जुड़ावणगे। आपणा आप भेंट कर हस्स हस्स के, हस्ती सर्ब गंवावणगे। तेरी छत्र छाया हेठ वस के, शत्रू कूड़े जगत मिटावणगे। प्रेम प्रीती अन्दर फस के, पल्लू इक्को वार गंढावणगे। रविदास चुमारा लेख जाए लिख के, लेखा लेखे तेरे अन्त लगावणगे। धुर दी धार धुरों आए सिख के, अन्तिम तेरे कोल सुणावणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर तेरे आपणा घर बणावणगे।

२७८ १५

✪ १२ भाद्रों २०२० बिक्रमी हरि भगत दुआर जेठूवाल
लंगर दी सेवा समाप्त होण समें दया कीती ✪

धुर दा हुक्म धुर फ़रमान, धुर दी धार विचों प्रगटाईआ। धुर दा खेल श्री भगवान, धुरदरगाही आप कराईआ। धुर दा दाता वड मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। धुर दा खेल करे भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। धुर दा मेला विच जहान, दो जहानां वाली आप कराईआ। धुर दा संदेसा शाह सुल्तान, राज भूप आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी कार आप कमाईआ। धुर दी कार धुर दरबार, हरि करता आप कराईआ। करे खेल अपर अपार, अगम्म अगोचर वड वड्याईआ। करे कराए करनेहार, हरि करता कार कमाईआ। निरगुण सरगुण कर प्यार, साचा संग रखाईआ। जुग चौकड़ी दे आधार, गुर अवतार हुक्म मनाईआ । सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग उतरे पार, चौथी कुण्ट वंड वंडाईआ। नव नौ रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नीर वहाईआ। ग़रीब निमाणे करन पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। भुख्यां भुक्ख ना उतरे विच संसार, दुखियां दु:ख ना कोए गंवाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मिले ना कन्त भतार, सुंञी सेज ना कोए सुहाईआ। सच कटार सके ना कोई उठाल, त्रै त्रै डेरा देवे ढाहीआ। जो दीसे सो होया कंगाल, साची वस्त हथ्थ ना कोए रखाईआ। सरगुण निरगुण अग्गे करदे गए स्वाल, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। किरपा कर श्री भगवान, प्रभ तेरे हथ्थ वड्याईआ। एका बख्श अगम्मी दान, दितयां तोट रहे ना राईआ। बण बालक बाल नादान, सेवक सेवा गए कमाईआ। सृष्ट सबाई दे ज्ञान, जीव जंत सर्ब समझाईआ। कलयुग अन्तिम करो ध्यान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म वरताईआ। साचा हुक्म श्री भगवन्त, सो साहिब आप वरताईआ। वेख्या खेल जुगा जुगन्त, जुग चौकड़ी बेपरवाहीआ। गुर अवतार लेखा मणीआ मंत, अन्तर मन्त्र गए जणाईआ। इक्को आस नर हरि कन्त, बेपरवाह गए तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वरताईआ । साचा खेल करता हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। सच दुआरा खोल्ह् दर, दर दरवाज़ा इक समझाईआ। निरगुण सरगुण लाए जड़, सरगुण निरगुण वेखे चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल वखाईआ। साची खेल रिहा वखाल, प्रभ वड्डा वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतार पीर पैगम्बर उपजाए नन्ने बाल, बालक आपणी कारे लाईआ। साची सिख्या जगत सिखाल, जुग चौकड़ी करी पढ़ाईआ। विष्न भण्डारा देंदा रिहा नाल, ब्रह्मा ब्रह्म रूप समाईआ। शंकर घालदा रिहा घाल, हथ्थ त्रिशूल उठाईआ। संग मंगदा रिहा काल महाकाल, महाबली ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। देवे वड्याई एकँकार, अक्ल कल आपणी खेल खिलाईआ। नव नौं चार वेख संसार, वड संसारी भेव चुकाईआ। कागद कलम लिख लिख गए सदा जुग चार, लेखा सब दा फोल फोलाईआ। गुर अवतार कर कर गए पुकार, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाईआ। पीर पैगम्बर नाता रखदे गए सांझे यार, साची यारी इक वखाईआ। तोबा तोबा करदे गए अन्तिम वार, होका हू हू नाम लगाईआ। तू ही तू ही परवरदिगार, तेरी तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे सच सरनाईआ। सच सरना दो जहान, आदि जुगादी इक रखाइंदा। सति भण्डारा श्री भगवान, थिर दरबारा आप वरताइंदा। करे कराए करनेहार, करता पुरख बेपरवाह आपणी धार समझाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। जुग चौकड़ी देंदा रिहा भण्डार, विष्नूं सेवा सच लगाईआ। घर घर देंदा रिहा आधार, दर दर फेरा पाईआ। जिस खाध्यां घर उपजे हँकार, काम क्रोध लोभ आपणी गंढु पवाईआ। कूड़ी क्रिया करे प्यार, आसा तृष्ना जोड़ जुड़ाईआ। साचा मन्त्र ना कोए जैकार, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। बंक दिसे ना कोट दुआर, मंत मिले ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। जुग चौकड़ी गए लँघ, वारता आपणी आप लिखाईआ। वस्त अमोलक गए मंग, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। किरपा कर सूरे सरबँग, बेपरवाह तेरी सरनाईआ। घर साचे दे अनन्द, अनन्द आत्म इक वखाईआ। जगत तृष्ना पा ठंड, तपश कोए रहिण ना पाईआ। करवट बदल मोड़ कंड, सनमुख आपणा रूप वखाईआ । बंदीख़ाना तोड़ बंद, बंदगी इक्को इक समझाईआ। निरगुण नूर चाढ़ चन्द, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आसा सब दी पूर वखाईआ। सब दी आसा पूर हरि, दर तेरे अलख जगाईआ। इक्को वार दे वर, वड वड्डी तेरी वड्याईआ । सच भण्डारा दे भर, भरपूर रहे सर्ब ठाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। सच भण्डार दे भगवान, दर इक्को आस रखाईआ। जीव जंत मिले पकवान, पक्की तेरे नाल पकाईआ। तृष्ना भुक्ख सर्ब मिट जाण, दु:ख दर्द रहे ना राईआ। साचा घर मिले मकान, मन्दिर इक्को नज़री आईआ। जिस घर वसें श्री भगवान, सच सिँघासण सोभा पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरे दरबान, दूर दुराडे बैठण सीस झुकाईआ। रल के ढोला तेरा गाण, मिल के गीत गोबिन्द अलाईआ। बण भिखारी मंगण दान, दाता तेरी बेपरवाहीआ । साचा वेला वक्त सुजान, रुत्त सुहञ्जणी सोभा पाईआ। बाढी बण श्री भगवान, बिन तेरे कारज रास कोई ना आईआ। सरगुण हो के कुल तार इक तरखाण, तिक्खी आपणी धार रखाईआ। जिन्हां विचों पंच कर परवान, पंचम आपणा जोड़ जुड़ाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी सरनाईआ। सच तेरी सरना स्वामी, तेरे हथ्थ प्रभू वड्याईआ। आदि जुगादी अन्तरजामी, बेअन्त तेरी बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी तेरी सुणदे रहे बाणी, गुर अवतार ढोला राग अलाईआ। कहिन्दे रहे अकथ कहाणी, गा गा शुकर मनाईआ। तेरी दस्सदे गए निशानी, सच निशाना तीर चलाईआ। कल प्रगट होवे सूरबीर सुल्तानी, जोती जोत जोत रुशनाईआ। करे खेल दो जहानी, पुरी लोअ वेख वखाईआ। धुर दा ल्याए ठंडा पाणी, अमृत चरण कँवल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराईआ। साची खेल करे करतार, हरि करनहार अख्वाइंदा। विष्नूं रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। ख़ाली दिसे मेरा भण्डार, साचा हट्ट ना कोए चलाइंदा। तेरे अग्गे मेरी निमस्कार, दोए जोड़ वास्ता पाइंदा। कर किरपा मेरे निरँकार, हउँ बालक भुल्ल बख्शाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दी धार आप समझाइंदा। धुर दी धार बिन मस्तक लेख, बिन कलम शाही बिन अक्खर बणत बणाईआ। पारब्रह्म प्रभ अवल्लड़ा भेख, जोती नूर ज़हूर रुशनाईआ। निरगुण हो के खेले खेड, सरगुण सच दए समझाईआ। पुरख अकाल हो के दस्से भेत, दीन दयाल पड़दा लाहीआ। कलयुग अन्तिम करे हेत, हितकारी वड वड्याईआ। सन्त सुहेले साचे पेख, भगत भगवान ख़ुशी मनाईआ। सच दुआरे लाए मेख, भगत दुआर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। उठ विष्नूं कर ध्यान, हरि ठोकर नाल जगाइंदा। श्री भगवान देवणहारा दान, अनमुलड़ी दात आप वरताइंदा। कलयुग अन्त हो प्रधान, नाम प्रधानगी आप कमाइंदा। चार वरनां दे ज्ञान, गुरमुख विरले आप उठाइंदा। मेहरवान मेले आण, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। गुर अवतार करन पहचान, हौली हौली सब दा पड़दा लाहइंदा। सारे इकट्ठे करे आण, पिछला लेखा आप चुकाइंदा। धारा बदले विच जहान, सतारा इक्को इक चमकाइंदा। साचा पक्के दर पकवान, सो साहिब आप समझाइंदा। साध सन्त जिस दुआरे दा करदे रहे ध्यान, सो दुआरा आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप वखाइंदा। साची खेल दस्से प्रभ आप, आपणा भेव चुकाईआ। जुग चौकड़ी जिस दा करदे रहे पाठ, अन्दर बाहर ध्यान लगाईआ। गुर अवतार जिस दी रखदे गए आस, धुर निशाना सच जणाईआ। पुरख अकाल जिस मन्दिर वसे ख़ास, सो ख़ालस रूप वटाईआ। निरगुण जोत होवे प्रकाश, दीवा बाती ना कोए रखाईआ। दूजा कोई ना दिसे साथ, संगी इक्को बेपरवाहीआ। होए सहाई अनाथां नाथ, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। गुर अवतार जो गए आख, आख़र सब दी आसा पूर कराईआ। पीर पैगम्बर जो गए भाख, भाख्या सब दी लेखे लाईआ।

सच दुआरा खोल्हे ताक, दो जहानां राह चलाईआ। लेखा कर भविक्ख्त वाक, पूरब लहिणा झोली पाईआ। अगला लेखा लिखे हरि जू साची कलम दवात, शाही काग़ज़ जोड़ जुड़ाईआ। रविदास चुमारे तेरी कोई ना लभ्भे ज़ात, तेरा वरन ना कोए वंडाईआ। पारब्रह्म तेरा सज्जण साक, श्री भगवान मीत नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म वरताईआ। साचा हुक्म सच्ची सरकार, हरि साचा सच जणाइंदा। धरती वंडे आई वंड किरसाण, किसान जट्ट इक वखाइंदा। घाड़त घड़े बण तरखाण, तिक्खी धार वेख वखाइंदा। तीजा चम्यार रलया आण, सीस भार इक उठाइंदा। तिन्नां लोकां देवे ज्ञान, सच श्लोका इक समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। जट्ट नाल मिल्या चम्यार, जोड़ी इक्को वार बणाईआ। तीजा उठया वड तरखाण, हत्थ कुहाड़ा रिहा चमकाईआ। सारे मिल के खोलीए इक दुकान, सच दुआरा मात प्रगटाईआ। चम्यार कहे मैं नीहां पुटूं आण, तिक्खी कलम मुख चलाईआ। जट्ट कहे मैं भूमी देवां दान, आपणा आप भेंट चढ़ाईआ। तरखाण कहे मैं बणावां सच मकान, जिस दी समझ किसे ना आईआ। जगत झरोखे कोई ना सके पहचान, अन्तर बाहरी नज़र किसे ना आईआ। वीह सौ दस बिक्रमी जड़ रखी आण, वीह सौ यारां इक इक नाल गंढु पवाईआ। वीह सौ बारां हो मेहरवान, साची दात दिती वरताईआ। सारी संगत कर परवान, हुक्म इक्को इक सुणाईआ। धुर दा लंगर चले जहान, ऊँच नीच रहिण कोए ना पाईआ। उन्नी हाढ़ दिवस महान, हरि करता आपणी सेव कमाईआ। लेखा लिख लिख दस्सदा रिहा फ़रमान, साची सिख्या इक समझाईआ। सम्मत तेरां देंदा रिहा ज्ञान, साधां सन्तां राज राजानां आपणी कार दृढ़ाईआ। सम्मत चौदां इक्की इक्की सुणौंदा रिहा फ़रमान, धुर संदेसा आप सुणाईआ। सम्मत पन्द्रां तीर्थ तटां वेंहदा आया अशनान, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। सम्मत सोलां दित्ता आप ब्यान, साचा लेखा लेख लिखाईआ। मस्तुआणा मस्त मुकाम, मस्तक टिक्का इक्को लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। सम्मत सोलां मस्तक धार, मस्तुआणे आप समझाईआ। नौं सौ नड़िनवे राजन राज करे ख़बरदार, बेख़बर ख़बर सुणाईआ। साचे दर औण दुआर, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। वस्त मंगण एका वार, ख़ाली हत्थ सर्ब वखाईआ। देवणहार आप करतार, हरि करनी दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर संदेसा रिहा सुणाईआ। सम्मत सत्तरा साची धार, सीस जगदीश ताज सुहाईआ। शाहो भूप बण सिक्दार, दो जहानां हुक्म मनाईआ। करे खेल अपर अपार, बेअन्त बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। सम्मत अठारां अचरज खेल, हरि करता आप कराईआ।

सन्त साजण साचे मेल, भगत भगवान जोड़ जुड़ाईआ। निरगुण सरगुण चाढ़ तेल, दो जहान खुशी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाईआ। अठ दस खेल जगत, जगजीवण दाता आप कराइंदा। धुर दा लेख जाणे आपणा वक्त, वार थित ना कोए समझाइंदा। लख चुरासी विचों कढ्ढ भगत, श्री भगवान वेख वखाइंदा। लेखे ला बूँद रक्त, रती रत रंग चढ़ाइंदा। वेला सुहाए आदि शक्ति, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा आप वड्याइंदा। सच दुआरा भगत भगवान, इक्को इक बणाईआ। छत्ती छत्ती सच निशान, निशाना दए वखाईआ। गुरमुख सज्जण वेखे आण, भगत भगवान पड़दा लाहीआ। दर दरवेश देवे माण, विष्न ब्रह्मा महेष शिव नाल रखाईआ। गुर अवतार कर परवान, पीर पैगम्बर जोड़ जुड़ाईआ। लेखा जाण दो जहान, इक नौं करे कुड़माईआ। सम्मत उन्नी शाह सुल्तान, धुर दा हुक्म आप वरताईआ। साचे तख्त बैठ निगहबान, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां पुछे आण, पूरब लेखा मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सम्मत उन्नी गुर अवतार मंगाए दर, पीर पैगम्बर नाल मिलाईआ। सारे कहिण प्रभ तेरा सोहणा घर, जिस घर मिले वड्याईआ। असीं दूर दुराडे बैठे डर, बिन हुक्म अन्दर लँघण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी सरनाईआ। सो साहिब सच सुणाया, इक नौ वज्जी वधाईआ। भगत दुआर इक सुहाया, दर मन्दिर सोभा पाईआ। सच दरबारा इक लगाया, दरवाज़ा आपणा आप खुल्हाईआ। सीस ताज जगदीश टिकाया, शाह पातशाह रूप वटाईआ। नंगी खड़ग हथ्थ चमकाया, अन्दर बाहर आवे जावे वाहो दाहीआ। साचा मार्ग इक समझाया, जिस मार्ग चलदयां भुल्ले कोई ना राहीआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां आ के सीस झुकाया, धूढ़ी टिक्का मस्तक ख़ाक रमाईआ। शाह पातशाह तेरी सच्ची शहिनशाहया, सच दुआरे बैठा आसण लाईआ। मनमुख कोई नज़र ना आया, जो आया सो तेरा ढोला गाईआ। सब ने बोल इक सुणाया, उच्ची कूक कूक अलाईआ। गल पल्लू मुख घाह रखाया, माण ना कोए वड्याईआ। प्रभू चार युग गए समझाया, चार वरन समझ सके ना राईआ। इक दुआर कोई नज़र ना आया, चार कुण्ट बैठे वंड वंडाईआ। तेरा इष्ट ना किसे मनाया, सच दृष्ट ना कोए खुल्हाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका गंढु ना कोई पवाया, गठड़ी आपो आपणी रहे उठाईआ। साडा बल ज़ोर रिहा ना राया, बलहीण रहे कुरलाईआ। अन्त अख़ीर तेरा वेला आया, तेरी इक्को आस रखाईआ। साडा यकीन ना किसे धराया, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। हुक्मे अन्दर तलकीन कराया, ताकत आपणी मात अज़माईआ। तेरा दीन ना किसे मनाया, तेरा मज़्हब समझ सके कोई ना राईआ। कूड़ी क्रिया फर्क रखाया, फ़िरका

फ़िरका करे लड़ाईआ। तेरा निश्चय ना किसे बंधाया, तेरा दरस कोए ना पाईआ। तेरा फ़रिश्ता कूड़ खुदाया, भज्जे वाहो दाहीआ। फिरदा फिरदा दो जहानां पार कराया, अन्तिम तेरे डेरे आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। श्री भगवान तेरे दुआरे आए लँघ, भगत दुआर वज्जे वधाईआ। सृष्ट सबाई वेखे चार पावे दा डिठा पलँघ, गुर अवतार कहिण प्रभ तेरा नूर इक्को नज़री आईआ। दीन दयाल हो बख्शंद, बख्शिश आपणी झोली पाईआ। सदी सदीवी रही लँघ, बीस बीसा सोभा पाईआ। साडी कट भुक्ख नंग, दीन मज़्हब हरस मिटाईआ। कर किरपा ला अंग, अंगीकार तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। चार युग दे तक्कदे आस, इक ध्यान लगाईआ। कवण वेला प्रभ मेटे प्यास, तृष्ना रहे ना राईआ। भुक्ख्यां देवे आपणा साथ, साचा संग निभाईआ। मस्तक सीस रखे हाथ, दोवें रंग वखाईआ। चार वरन सुणाए गाथ, करे सच पढ़ाईआ। विष्नूं बण के आए दास, भण्डारी आपणी सेव कमाईआ। निउँ निउँ दोए जोड़ रहे आख, इक्को सोहला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक तकाईआ। विष्नूं आवे दर दुआर, गुर अवतार वेख वखाईआ। इशारे मारन वारो वार, सैनत नाल समझाईआ। साडा वेख इक प्यार, पीर पैगम्बर बैठे एका थाईंआ। वस्त इक्को दे वखाल, दूजी नज़र कोए ना आईआ। इक्को बाटे पाणी देणा प्याल, आबेहयात अमृत इक्को रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक जणाईआ। श्री भगवान प्या हस्स, धुरदरगाही खेल खलाइंदा। कलयुग अन्त किसे चले ना कोई वस, वास्ता सब दा आपणे नाल रखाइंदा। जगत जहान करो बस, बसता सर्ब दा अन्तिम बंधाइंदा। दोवें खाली वखाओ हथ्थ, हथ्थ हथ्थां नाल जुड़ाइंदा। रल मिल गाओ सारे जस, साचा राग आप सुणाइंदा। सब दी पूरी करे आस, आसावंद आप हो जाइंदा। लोकमात कर प्रकाश, निरगुण नूर जोत जगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म हरि करतार, आपणा आप वरताईआ। भगत दुआरा कर तैयार, हरि भगवन विच बहाईआ। अगली खेल करे करतार, करनी आप जणाईआ। जिस घर परौहणे आवण चार, सो सवाणी भज्जे वाहो दाहीआ। की इन्हां दयां खवाल, भेंटा की कुछ चढ़ाईआ। भावें शाह भावें कंगाल, सब दी आसा इक्को जेही बणाईआ। जिन्हां उपर होए दयाल, तिन्हां भण्डार अतुट वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणी खेल जणाईआ। श्री भगवान घर भगत परौहणे, कलयुग आए चाईं चाईंआ। प्रभ जी सोचे किथे बहौणे, धाम अवल्लड़ा इक वखाईआ। पहलों आपणे नाल रलौणे, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। दोहां मिल के ढोले गौणे, सोहँ

राग अलाईआ। प्रेम प्रीती विछण विछौणे, लेफ़ तलाई सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। परौहणे आवण भगत सुहेले, प्रभ आपणा फ़िकर जणाईआ। जिन्हां नाल मेरे मेले, तिन्हां मिलणी नज़र कोए ना आईआ। भगत भगवान इक दूजे बिना रहिण वेहले, जगत कम्म ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। घर आए परौहणे वेख भगवान, अन्तर खुशी मनाइंदा । धन्नभाग घर वसया विच जहान, औंतरा बाप ना कोए अख्वाइंदा। बिन भगतां धर्म ना झुल्ले कोई निशान, निशाना सच ना कोए बणाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाइंदा। आए परौहणे सन्त सुहेले सज्जण, घर वज्जी नाम वधाईआ। पुरख अबिनाशी चढ़या लभ्भण, दो जहान खोज खुजाईआ। किस बिध मीत रहिण मग्न, सो वस्त दयां वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां कोलों मंग मंगाईआ। जन भगतो दस्सो सच, हरि साची पुच्छ पुछाईआ। तुसीं मेरे अन्तर गए रच, मेरा अन्तर गुरमुख नज़री आईआ। लख चुरसी कोलों बच, सम्बल नगरी चरण टिकाईआ। मिल के मेल पुरख समरथ, आपणा घर वसाईआ। मेरे नाल वटावो हथ्थ, इक तुहाढ्ढी ओट रखाईआ। चार वरनां मार्ग देवां दस्स, लोकमात सच पढ़ाईआ। ऊँच नीच करो इकट्ठ, राउ रंक बणो भैणां भाईआ । सोहँ ढोला गाओ गथ, राग इक्को इक सुणाईआ। कलयुग कूड़ा मन्दिर रिहा ढट्ठ, सतिजुग साची नींह धराईआ। सेवा करो हस्स हस्स, खुशी नाल खुशी मनाईआ। जुग चौकड़ी तुहाढ्ढा रहिणा जस, गुर अवतार ढोले गाईआ। जिन्हां श्री भगवान कीता वस, वास्ता आपणे नाल पाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक बणाईआ। साचा मार्ग भगत दुआर अन्दर, हरि हरि जू आप जणाईआ । जिस गृह लग्गे इक्को लंगर, चार वरन वरताईआ। पशु प्रेत पंखी खावण डंगर, देवत देवत देव नाल तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। बेपरवाह लेखा अथाह, हरि आपणा आप जणाइंदा। जन भगत भण्डारा रिहा वरता, मेहरवान दया कमाइंदा। सर्ब सहारा रिहा बणा, जीव जंतां आप जणाइंदा। वीह सौ वीह किनारा रिहा आ, कन्ढ्ढा नज़र कोए ना आइंदा। जिस दा लेखा दो जहां, दोए दोए आपणी कल वरताइंदा। साचे सन्तां पकड़ बांह, फड़ बाहों आप उठाइंदा। इक पकवान लए पका, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच विहार आप कराइंदा। सच विहार करे बिवहारी, बिध आपणे हथ्थ रखाईआ। हरिसंगत कर प्यारी, साचा रंग चढ़ाईआ। जिन्हां सेवा कीती बण बलकारी, बल आपणे नाल मिलाईआ। तिन्हां लेखे लग्गे तेसी कांडी तगारी, सीस पैर धड़ हथ्थ जो भज्जण वाहो दाहीआ। दर आई संगत प्रभ सगली तारी, बचया कोए रहिण

ना पाईआ। लंगर नहीं दुखियां भुक्ख्यां कटे बीमारी, दर्दीआं दर्द आप वंडाईआ। जिन्हां किते ना मिले सहारी, तिन्हां आपणे घर दए वड्याईआ। लहिंदी दिशा खेल न्यारी, भट्ठी अग्नी लोह तपाईआ। चढ़दी दिशा धर्म अटारी, सिँघ मनजीता अद्धविचकारे बैठा वेखे चाईं चाईंआ। एह लिख्त जणाई पहली वारी, जिस वेले वीह सौ दस बिक्रमी आपणा लेख लिखाईआ। सौ सौ कर्म कदम कादर बणे अटारी, कुदरत बन्धन पाईआ। विच वसे शाहो शहिनशाह निरँकारी, जिस दी शान नज़र किसे ना आईआ। जन भगतां नाल लाए यारी, पिछला लेखा झोली पाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आप बणया भण्डारी, अनडिठड़ी अतुल वस्त आप वरताईआ।

✪ १२ भाद्रों २०२० बिक्रमी गुरदित्त सिँघ दे गृह राम दीवाली ज़िला अमृतसर ✪

सचखण्ड दुआरे खेल अकथे, कथनी कथ ना सके राईआ। गुर अवतार होए इकट्ठे, पीर पैगम्बर नाल मिलाईआ। साहिब सुल्तान चरणी ढट्ठे, दोए जोड़ करन अरज़ोईआ। चार युग तेरे नाम दे दे के आए पते, धुर संदेसा राग अलाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी लेख लिखे, कलम शाही सिफ्त सालाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चार वरन अठारां बरन बणाए हिस्से, राउ रंक वंड वंडाईआ। सति धर्म नाम निधान शब्द निशान भगत भगवान विरले दिसे, निज नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। साची सिख्या लख चुरासी तेरी सिखे, साख्यात करी पढ़ाईआ। अन्तिम दस के आए मिथ्या मिथे, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, प्रभ तेरे हत्थ वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन सलाम, सजदा परवरदिगार झुकाईआ। बेपरवाह तेरा हक़ मुकाम, हकीकत तेरे हत्थ वड्याईआ। कलयुग अन्तिम विगड़ गया नज़ाम, नौबत नाम ना कोए वजाईआ। शरअ शरीअत होई ग़ुलाम, लाशरीक तेरा हुक्म भुलाईआ। चारों कुण्ट होया हराम, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द साध सन्त करन कल्याण, कलमा हक़ ना कोए समझाईआ। सचा दस्से ना कोए ईमान, दीन मज़्हब होए लड़ाईआ। घर मन्दिर नज़र ना आए मकान, काया काअबा फोल ना कोए वखाईआ। दीपक दीआ निरगुण जोत ना जगे महान, जोत निरँजण ना कोए रुशनाईआ। अमृत आत्म किसे ना मिले पीण खाण, लख चुरासी मरे अन्त तयाईआ। नेत्र नैण लोचण दरस होए ना श्री भगवान, पड़दा दूई ना कोए उठाईआ। चारों कुण्ट दिसे वैरान, दहि दिशा अन्धेरा छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, प्रभ दर तेरे सरनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सचखण्ड दुआर, इक्को नाअरा लाईआ। तेरी

ओट सांझे यार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी वेंहदे आए वारो वार, नव नौं पन्ध मुकाईआ। धुर संदेसा दस्सदे रहे गुफ़तार, गुफ़त शुनीद भेव खुल्हाईआ। उच्ची कूक करदे रहे पुकार, नाअरा हक़ हक़ समझाईआ। मन्त्र बोल नाम जैकार, सति सति दृढ़ाईआ। सर्ब जीआं दा मीत एका एकँकार, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। इष्ट गुरदेव स्वामी धुर दरबार, सच सिँघासण बैठा सच्चा माहीआ। आदि जुगादि सदा निहकामी, निहकर्मी कर्म कांड ना कोए रखाईआ। सच संदेसा देवे अगम्मी बाणी, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। दो जहान श्री भगवान लख चुरासी आत्म परमात्म होवे अन्तरयामी, घट घट वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे इक्को आस रखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कढ्ढण हाढ़ा, दोए जोड़ जोड़ सरनाईआ। पुरख अकाल बेपरवाह कलयुग अन्तिम लग्गा कूड़ अखाड़ा, चारों कुण्ट चार वरन डंक वजाईआ । सति धर्म ना पुरख नारा, विभचार करी कुड़माईआ। गुर का शब्द ना किसे विचारा, हिरदे हरि ना कोए ध्याईआ। काया मन्दिर ना होया उज्यारा, दीपक जोत ना कोए रुशनाईआ। साढे तिन्न हथ्थ दिसे धूंआँधारा, सच समग्री हथ्थ ना कोए रखाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, लेखा लिख्या सारे गए भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। श्री भगवान हो मेहरवान, सचखण्ड निवासी हुक्म सुणाइंदा। सारे सुणो धुर फ़रमान, धुर दी धार आप जणाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी खेल महान, हरि करता आप कराइंदा। नित नवित्त देवे दान, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। शब्दी शब्द शब्द बलवान, गुर गुर आपणा हुक्म वरताइंदा । नेत्र खोल्ह वेखो दो जहान, दो जहानां वाली आप वखाइंदा। ना कोई दीन मज़्हब इस्लाम, इस्म आअज़म नज़र किसे ना आइंदा। ना कोई गुरमुख गुरसिख गुर करे पहचान, निज नेत्र नैण ना कोए खुलाइंदा। ना कोई सन्त सतिगुर धरे ध्यान, आसा तृष्ना माया ममता हउमे हंगता ना कोए मिटाइंदा। ना कोई भगत मिले भगवान, भाण्डा भरम ना कोए भंनाइंदा। घर घर वड़या कूड़ शैतान, डौरु डंका हथ्थ रखाइंदा । ज्ञानी ध्यानी वड विद्वानी होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। उच्ची कूकण गावण गाण, धुन आत्मक राग ना कोए सुणाइंदा । काया मन्दिर दिसे वैरान, शिवदुआला मढ्ढ सोभा कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक समझाइंदा। तेई अवतार खोल्हो अक्ख, हरि आख़र आप जणाईआ। लख चुरासी वेखो प्रतख, कलयुग भरमे भरम भुलाईआ। जुग चौकड़ी जो मार्ग आए दस्स, निरगुण सरगुण कर पढ़ाईआ। लेखा लिख के आए नाल हथ्थ, नाता जोड़ कलम शाहीआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण मार्ग लाया हस्स हस्स, लोकमात खुशी मनाईआ। अन्तिम सारे आए छड्ड, पंज तत चोला जगत हंढाईआ। निरगुण

सरगुण नालों हो के अड्ड, घर साचे खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा दए जणाईआ। उठो भगत अठारां, अड्ड दस हरि जणाइंदा। उच्ची कूको लाओ नाअरा, नर नरायण आप सुणाइंदा। चार युग दा खेल न्यारा, निरवैर पुरख आप समझाइंदा। भेव अभेदा खोल्हे धुर दरबारा, दरगाह साची पड़दा लाहइंदा। मुरीद मुर्शद करे प्यारा, दीद ईद चन्द चमकाइंदा। कलयुग अन्तिम इक किनारा, नईया जगत जहान वखाइंदा। भुल्लया इक्को सांझा यारा, साहिब सुल्तान नज़र किसे ना आइंदा। जुग चौकड़ी लै अवतारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। भगत जन खोल्हो ताक, बंद कवाड़ी कुण्डा लाहीआ। कोई ना लभ्भे साचा साथ, सगला संग ना कोए रखाईआ। आत्म परमात्म कोई ना गाए गाथ, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। काया मन्दिर अन्दर साचे मण्डल कोई ना पाए रास, सुरती शब्दी गोपी काहन ना कोए नचाईआ। सतिगुरू दुआरे कोई ना होवे दास, हंगता गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। घर दीप ना कोए प्रकाश, अन्ध अन्धेर ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां रिहा वखाईआ। मूसा ईसा मुहम्मद करो ध्यान, धुरदरगाही आप उठाइंदा। ना कोई कलमा नबी रसूल कलाम, कायनात कादर नज़र किसे ना आइंदा। मुरीद मुर्शद कोई ना प्याए आबेहयात, हयाती विचों हयाती ना कोए बदलाइंदा। सजदा सीस ना कोए आदाब, सच दुआ ना कोए कराइंदा। नज़र ना आए शाह नवाब, शहिनशाह मुख नक़ाब पड़दा ना कोए उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा आप वखाइंदा। गुरू दस करो विचार, दहि दिशा भरम भुलाईआ। सति नाम ना कोए प्यार, सति सरूप ना कोए समाईआ। चार वरन ना कोई आधार, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश एका रंग ना कोए रंगाईआ। निवण-सो-अक्खर ना कोई धार, साची सिख्या ना कोए पढ़ाईआ। नाम खण्डा ना कोई खड़ग कटार, तन गात्रे ना कोए छुहाईआ। फ़तह डंका ना कोए जैकार, मन वासना ना कोए मिटाईआ। हरि का मन्दिर ना दिसे हरी दुआर, घर घर विच मेल ना कोए मिलाईआ। सुरत सवाणी सुत्ती ना सके कोए उठाल, शब्द हाणी नज़र किसे ना आईआ। गुर अवतारो पीर पैगम्बरो तुहाड्डा मन्नणा पए स्वाल, हरि साचा सच जणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त प्रगट होवे दीन दयाल, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। सच दुआरे वसे सची धर्मसाल, छप्पर छन्न नज़र किसे ना आईआ। पुरख अगम्म अगम्मड़ा दीपक लए बाल, तेल बाती ना कोए पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा लेखा आप समझाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रखो याद, सो साहिब आप सुणाईआ। सो पुरख निरँजण सुणे फरियाद, बेपरवाह फेरा पाईआ। हरि पुरख निरँजण वजावे

नाद, दो जहान पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड सुणाईआ। एकँकारा देवे दाद, धुर वस्त आप वरताईआ। आदि निरँजण करे प्रकाश, जोती जोत जोत रुशनाईआ। श्री भगवान देवे साथ, सगला संग निभाईआ। अबिनाशी करता होवे दास, बण सेवक सेव कमाईआ। पारब्रह्म प्रभ वेखे खेल तमाश, ब्रह्म पड़दा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा झोली पाईआ। सब दा लहिणा झोली पाउणा, निरगुण निरवैर आप जणाइंदा। पीर पैगम्बर मन्नो कहिणा, बिन रसना जिह्वा आप समझाइंदा। कलयुग अन्तिम भाणा सिर ते सहिणा पैणा, दो जहान ना कोए मिटाइंदा। कूड़ कुड़यारा बुरज ढहिणा, उच्चा टिल्ला पर्बत रहिण कोए ना पाइंदा। लख चुरासी जीव जंत लेखा चुके लहिणा देणा, कर्म कांड दा लेखा झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। साचा हुक्म धुर फ़रमाणा, सचखण्ड निवासी आप जणाईआ। पुरख अबिनाशी शाह सुल्ताना, शहिनशाह इक्को इक अख्वाईआ। जुग चौकड़ी पहरे बाणा, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। धुर दी बाणी गाए गाणा, अलख निरँजण अलख जगाईआ। लेखा जाणे दो जहाना, दोए दोए आपणी धार प्रगटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे ज्ञाना, नाम धुन शब्द शनवाईआ। त्रैगुण माया बन्ने गानां, पंज तत करे कुड़माईआ। लख चुरासी खेल महाना, महाबली आप अख्वाईआ। नौं सौ चुरानवे चौकड़ी युग खेल करदा रिहा श्री भगवाना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी कार आप जणाईआ। गुर अवतार ध्यान लगा, नेत्र नैण नीर वहाईआ। एकँकार तेरी सरना, सरनगति मिले वड्याईआ। साचे रहबर तेरा राह, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। तेरा सिफ्ती ढोला आए गा, रसना जिह्वा राग अलाईआ। तेरा हुक्म संदेसा आए सुणा, लोकमात सेव कमाईआ। लेखा लिख के नाल कलम शाह, कागद करी जगत कुड़माईआ। अन्तिम तेरी ओट तका, तकवा इक्को इक जणाईआ। कलयुग आवे बेपरवाह, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। नूरी जलवा नूर खुदा, सूरत नज़र किसे ना आईआ। चौदां तबक वेखे पड़दा लाह, बेवफ़ा वेखे सर्ब लोकाईआ। पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा उच्चे टिल्ले फेरा पा, पर्बत इक्को करे रुशनाईआ। निहकलंक नाउँ रखा, डंका नाम शब्द सुणाईआ। कल कल्की वेस वटा, सम्बल साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक अलाईआ। सच संदेसा एका गीत, हरि सतिगुर आप जणाईआ। चार युग दी बदले रीत, रीतीवान वड्डी वड्याईआ। लख चुरासी बण के मीत, चार वरन करे कुड़माईआ। नाता तोड़ मन्दिर मसीत, घर इक्को इक दृष्टाईआ। खेल करे आप अनडीठ, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। सदी चौधवीं जाए बीत, चौदस चन्द ना कोए चमकाईआ। बीस बीसा रिहा उडीक, नेत्र नैण नैण उठाईआ। शाह सुल्तानां खाली

करे खीस, दर दर मंगण भिख्या कोए ना पाईआ। सच धर्म दी दस्से हदीस, हज़रत साची करे पढ़ाईआ। लेखा जाणे बीस इकीस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक्को लाईआ। गुर अवतारां दए दिलासा, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। कलयुग वेखो खेल तमाशा, हरि ख़ालक ख़लक वखाईआ। कूड़ी क्रिया उलटे पासा, सच सुच मिले वड्याईआ। जूठ झूठ होए नासा, लोकमात रहिण ना पाईआ। चार वरन ना रहे शाख़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म हरि वरताउणा, श्री भगवान साहिब जणाइंदा। कूड़ कूड़यारा मेट मिटाउणा, भाण्डा भरम भउ भंनाइंदा। सतिजुग साचा मार्ग लाउणा, सति धर्म आप प्रगटाइंदा। धरनी धरत धवल गोद सुहाउणा, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। चिन्ता सोग ना कोए जणाउणा, माया ममता मोह मिटाइंदा। धुर संजोग आप मिलाउणा, भगत भगवान वेख वखाइंदा। सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाउणा, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। साचा ढोला इक श्लोक सणाउणा, धुर संदेसा आप अलाइंदा। लोक परलोक दो जहान एका नाद वजाउणा, नौबत इक्को नाम सुणाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर एका घर बहाउणा, दीन मज़्हब वंड ना कोए वंडाइंदा। मुहम्मद लेखा झोली पाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच करनी आप कमाइंदा। सच करनी आप कमावेगा। प्रभ निरगुण वेस वटावेगा। लोकमात वेख वखावेगा। लख चुरासी देवे दात, अनमुल्ल नाम वरतावेगा। कूड़ी क्रिया कढु नार कमज़ात, गुरमति इक समझावेगा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश बणो इक जमात, घर इक्को इक सुहावेगा। भगत भगवान बणे दास, साचा मार्ग इक वखावेगा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां पूरी करे आस, निरासा कोई रहिण ना पावेगा। निरगुण जोत कर प्रकाश, सतिजुग साचा चन्द चमकावेगा। साचे मण्डल पावे रास, निरगुण सरगुण नाच नचावेगा। लेखा जाण पृथ्मी अकाश, गगन गगनंतर खोज खुजावेगा। जन भगतां वसे पास, करवट आपणी आप बदलावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक दृढ़ावेगा। साचा नाम इक दृढ़ाएगा। सो पुरख निरँजण खेल रचाएगा। हरि पुरख निरँजण नाद वजाएगा। एकँकारा हुक्म सुणाएगा। आदि निरँजण वेखण आएगा। अबिनाशी करता घर घर फेरी पाएगा। श्री भगवान दूई द्वैत पड़दा उठाएगा। पारब्रह्म ब्रह्म आत्म परमात्म मेल मिलाएगा। निहकर्मी करे आपणा कर्म, कुदरत कादर आप जणाएगा। आत्म जोत साचा वरन, ज़ात पात ना कोए रखाएगा। नेत्र खोल्ह हरन फरन, गुरमुख विरले आप उठाएगा। साचे पौड़े सज्जण चढ़न, घर डण्डा इक्को लाएगा। दस्म दुआरी जा के वड़न, नौ दुआरे पन्ध मुकाएगा। टेडी बंक मूल ना सड़न, ईड़ा पिंगल ना कोए अटकाएगा। तेरा मेरा मेरा तेरा जो सोहँ ढोला पढ़न, सो सतिगुर विच समाएगा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचा राह वखाएगा। सतिजुग साचा राह वखावेगा। निरवैर पुरख इक्को आवेगा। साची सिख्या सिख समझावेगा। दहि दिशा पाए भिख, अट्ठां तत्तां जोड़ जुड़ावेगा। मन मति बुध करे हित, मन वासना मेट मिटावेगा। लख चुरासी कूड़ी क्रिया जित, डंका फतहि इक वजावेगा। सृष्ट सबाई बण के पित, पतिपरमेश्वर नज़री आवेगा। जन भगतां करे हित, हितकारी वेस वटावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम लेख चुकावेगा। कलयुग अन्तिम लेख चुकावेगा। हरि जू कन्त वेख वखावेगा। गुरमुख सन्त आप जगावेगा। महिमा अगणत आप समझावेगा। मणीआ मंत नाम दृढ़ावेगा। रंग बसन्त इक चढ़ावेगा। नार कन्त मेल मिलावेगा। हउमें हंगत गढ़ तुड़ावेगा। बोध अगाधा बण के पंडत, निष्अक्खर अक्खर रूप समझावेगा। चार युग कर खण्डत, खण्डा खड़ग इक चमकावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम सब दी मन्ने मिनत, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक उठावेगा। मेहरवान हरि मन्ने मिन्नत, आपणी दया कमाईआ। उठो वेखो आपणी हिम्मत, लख चुरासी भरमे भुल्ली बणी पांधी राहीआ। चार कुण्ट दहि दिशा साचा पोल नज़र ना आए सिम्मत, साचा मार्ग पन्ध ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर सब दा लेखा झोली पाईआ। कवण वेला प्रभ लेखा चुक्के, बाकी कोई रहिण ना पाईआ। लोकमात पैंडा मुक्के, आवण जावण पन्ध कटाईआ। सदा वेखीए तेरी रुत्ते, रुत्त रुतड़ी इक महकाईआ। गोदी तेरी रहीए सुत्ते, चार युग ना कोए उठाईआ। अन्तिम लहिणा कोई ना पुच्छे, हुक्म हक़ ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मिले सच सच्ची सरनाईआ। सच सरनाई इक रखावेगा। प्रभ आपणा नैण उठावेगा। गुर अवतार सैण बणावेगा। जो दर दुआर कहिण, सो पूरी कर वखावेगा। आप चुकाए लहिण देण, देणा आपणे हथ्थ रखावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साची वंड वंडावेगा। सतिजुग वंड वंडे करतार, हरि करनहार निरँकारा। नव नौ चार उतरे पार, लेखा चुक्के विच संसारा। अल्ला राणी रोवे नेत्र धार, चौदां तबक हाहाकारा। चौदां लोक होण ख्वार, साचा मिले ना मीत मुरारा। चौदां विद्या गई हार, बजर कपाटी तोड़े ना कोई ताला। चौदस चन्द ना कोए उज्यार, चारों कुण्ट अन्ध अँध्यारा। कलयुग कूड़ी क्रिया सर्ब संसार, साचा पन्ध ना किसे विचारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण लै अवतारा। निरगुण अवतारी होए अन्त, अन्तष्करन वेख वखाईआ। लख चुरासी जीव जंत, नौ खण्ड पृथमी फोले थाउँ थाईआ। गुरमुख विरले लभ्भे सन्त, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादि खेल ब्रह्माद, शब्द धुर नाद अनादी राग सुणाईआ।

औण वाला सुणो ज़माना, ज़मानत सब दी ज़बत कराईआ। करे खेल श्री भगवाना, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जुग चौकड़ी देंदा रिहा परवाना, धुर संदेसा हुक्म सुणाईआ। कलयुग अन्तिम खेल करे महाना, समझ सके कोए ना राईआ। प्रगट होवे निहकलंक बली बलवाना, बलधारी फेरा पाईआ। सम्बल वसे सच मकाना, आसण इक्को इक लगाईआ। धर्म वखाए इक निशाना, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दे दे गए ब्याना, लेखा लिख्त भविक्ख्त समझाईआ। सृष्ट सबाई होए वैराना, घर घर वैरी नज़री आईआ। कलयुग काती मारे तीर निशाना, जीवां जंतां देवे डेरा ढाहीआ। वीह सौ वीह बिक्रमी लेखा जाणे दो जहानां, दूआ सिफ़रा ज़ीरो आपणा अंक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भविक्ख्त लेखा जाणे बेपरवाहीआ। भविक्ख्त लेखा आया नेड़े, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी वसदे उजड़ने खेड़े, कलयुग सके ना कोए बचाईआ। दीन मज़्हब दे चुक्कणे झेड़े, ज़ात पात ना कोए लड़ाईआ। धरत मात दे खुल्हे वेहड़े, मनमुख कोए रहिण ना पाईआ। श्री भगवान नूं भगत थोड़े थोड़े बथेरे, जो हिरदे हरि हरि रहे ध्याईआ। बाकी ढहिंदे वेखो डेरे, बीस इकीसा रंग रंगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे बैठे करके जेरे, जिन्हां दा हुक्म सारे गए भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी खेल कर, कलयुग लेखा दए जणाईआ। भविक्ख्त वाक सुणो ला कन्न, इक ध्यान जणाईआ। अन्तिम लेखा चुक्कणा छप्परी छन्न, महल अटल ना कोए रुशनाईआ। जिस घड़या सो रिहा भन्न, घड़न भंनणहार हथ्थ वड्याईआ। कलयुग जीव होए नेत्र अन्न्हे, अक्ख प्रतख ना कोए खुल्हाईआ। शाह सुल्तानां लुट्टया जाणा धन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, राज राजानां ख़ाक मिलाईआ। सुणो भविक्ख्त जगत जीव, जुग रिहा कुरलाईआ। अन्तिम लहिणा साढे तिन्न हथ्थ सींव, बाकी संग किछ ना जाईआ।

चार कुण्ट दहि दिशा कोई ना करे सच प्रेम, प्रीतीवान नज़र कोए ना आईआ। जिस ने खेल खेलया कुण्ट हेम, सो वेखे बेपरवाहीआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआले वड़ के चुकदे नेम, अन्त अन्त जाण भुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग लेखा रिहा चुकाईआ। भविक्ख्त वाक सुणो गोबिन्द, पुरख अकाल गया जणाईआ। करे खेल गहर गम्भीर गुणी गहिंद, वड दाता वड वड्याईआ। कलयुग कूड़ी धार वहाए सागर सिन्ध, शौह दरया आप

रुढ़ाईआ। गुरमुख विरला बचे साची बिंद, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। जन्म मरन दी चुक्के चिन्द, चिन्ता चिखा ना कोए सताईआ। जो पारब्रह्म दी करदे निन्द, तिन्हां देवणहार सज़ाईआ। बीस इकीसा कूड़ कुड़यार सब दी भंने किंग, किंगरे किंगरे मृदंग वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भविक्ख्त भावी रिहा जणाईआ। भविक्ख्त भावी होवे बलवान, भाणा आपणे नाल मिलाईआ। जोद्धे सूरबीर वेखे जवान, कलयुग जीवां नाल करे लड़ाईआ। गढ़ हँकारी तोड़े आण, चारों कुण्ट डेरा ढाहीआ। वेखो खेल की वरते भगवान, नेत्र नैणां सर्ब दसाईआ। बीस इकीस इकीस अन्त सर्ब पछताण, पश्चाताप करे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भविक्ख्त भाख्या गोबिन्द आख्या ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। साचा दर्शन जो जन लोड़े, अन्तर आत्म ध्यान लगाईआ। सतिगुर पूरा घर सुत्यां बौहड़े, बांहों पकड़ लए उठाईआ। सुरती शब्दी घर घर विच जोड़े, टुट्टी गंढु वखाईआ। पंच विकारा दर तों होड़े, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आईआ। स्वच्छ सरूपी नज़री आए मोहरे, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। कर प्रकाश अन्ध घोरे, आपणा पड़दा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर्शन देवे थाउँ थाईंआ। जो जन साचा दरस मंगे, इक ध्यान लगाईआ। सतिगुर पूरा काया चोली रंगे, रंग मजीठी इक चढ़ाईआ। पौड़ी चढ़ाए आपणे डण्डे, घर घर विच दए वड्याईआ। पार कराए डूंघे सागर कन्ढे, शौह दरया ना कोए रुढ़ाईआ। आत्म देवे इक अनन्दे, परमानंद वखाईआ। बिन रसना जिह्वा गाए छन्दे, अजपा जाप समझाईआ। बंदगी लाए आपणे बंदे, बंदीख़ाना तोड़ तुड़ाईआ। विचों कढ्ढे वासना गंदे, सच सुगंधी नाम भराईआ। माणस जन्म होए ना भंगे, लख चुरासी देवे तन्द तुड़ाईआ। रातीं सुत्यां दिने जागदयां गुरमुखां दे अन्दर लँघे, औंदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। देवे दरस जीउ पिण्डे, इंड ब्रह्मण्ड खोज खुजाईआ। अमृत धार वहाए सागर सिन्धे, कँवल नाभ नाभ उलटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दे दरस मन तृप्ताईआ। जो जन दरस करन दी रखे आसा, आसा मनसा नाल मिलाईआ। साहिब सतिगुर दीन दयाल तिस दा दासी दासा, ठाकर बण के ठोकर नाम लगाईआ। चरण कँवल उपर धवल देवे भरवासा, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। जो जन आए वेखण तमाशा, तिन्हां जगत तमाशे नाल रलाईआ। जो जन आए करन हासा, तिन्हां हँस-मुख सालाहीआ। जो जन आए प्रभ वसे सदा पासा, तिन्हां अन्तर दरस दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। दरस करन दी जिस लग्गी प्यास, आत्म रही बिल्लाईआ। तिन्हां नाम कटोरा दए ग्लास, घाड़त घड़ी नज़र किसे ना आईआ। मन मति बुध तिन्ने कर ना सकण उदास, चंचल रूप ना कोए वटाईआ। अन्दर

वड़ के जाए आख, उठ गुरसिख दर्शन कर चाईं चाईंआ। घर मेला कमलापात, कँवल नैण फेरा पाईआ। जन भगतां मिल इक जमात, जिथ्थे इक्को नाम पढ़ाईआ। सतिगुर नज़री आए साख्यात, पर्दा नज़र कोए ना आईआ। सनमुख होए कर बात, अग्गे पिच्छे मुख ना कोए छुपाईआ। दरस कीत्यां मिले नजात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। साचा दरस जो जन जाणे, अन्जाणत दए जणाईआ। गुरसिख गुर दोवें चलण इक दूजे दे भाणे, भाणे भाणे विच समाईआ। गुरमुख चतुर सुघड़ स्याणे, मूर्ख मूढ़े आपणा रूप वटाईआ। दर घर साचे होण परवाने, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, देवणहारा नाम वर, दरस इक्को घर जणाईआ।

✪ १३ भाद्रों २०२० बिक्रमी फ़ौजा सिंघ दे गृह राम दीवाली ज़िला अमृतसर ✪

हरिजन सदा रखे आस, जगत अभिमान तजाईआ। कूड़ी क्रिया होवे नास, सच सुच मिले वड्याईआ। आत्म परमात्म वसे पास, साचा संग निभाईआ। अट्ठे पहर रहे प्रभात, संधया रूप ना कोए वटाईआ। उत्तम होवे माणस ज़ात, जन्म जन्म लेखे लाईआ। मिटे रैण अन्धेरी रात, सतिगुर साचा चन्द चढ़ाईआ। नाम वखाए डूंघा खात, गृह मन्दिर खोज खुजाईआ।
२८३ एथे ओथे देवे साथ, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणे अंग लगाईआ। २८३
१५ गुरमुख रखे इक्को ओट, घर सच मिले वड्याईआ। होए प्रकाश निर्मल जोत, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। धुर दा नाम मिले सच श्लोक, साचा ढोला इक्को गाईआ। चरणां हेठां दब्बे मोख, मुक्ती कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। गुरमुख सज्जण रहे उडीक, निज नेत्र ध्यान लगाईआ। कवण वेला प्रभ मिले ठीक, ठाकर स्वामी फेरा पाईआ। काया चाढ़े रंग मजीठ, उतर कदे ना जाईआ। सोहँ ढोला सुणाए गीत, आत्म परमात्म राग अलाईआ। नाता तुट्टे मन्दिर मसीत, काया काअबा साचा हुजरा इक्को नज़री आईआ। बैठा दिसे साहिब अतीत, त्रैगुण माया डेरा ढाहीआ। वेख वखाए हस्त कीट, ऊँच नीच रिहा समाईआ। लख चुरासी जाए जीत, आवण जावण पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे नाम वड्याईआ। गुरमुख गुरसिख रहे तक्क, नेत्र नैण नैण उठाईआ। कवण वेला प्रभ देवे हक़, ख़ाली झोली दए भराईआ। जुग चौकड़ी गए थक्क, बण बण पांधी राहीआ। अठसठ तीर्थ गए अक्क, चारों कुण्ट रही कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण सच्ची वड्याईआ। गुरमुख सज्जण मंगण भिख, भिच्छया इक्को मंग मंगाईआ। साचा लेख देवे लिख, पिछला लेखा दए गंवाईआ।

सतिगुर हो के करे हित, गुरमुख गुर गुर गोद बहाईआ। दो जहानां बणे पित, माता इक्को नज़री आईआ। जन्म कर्म दी लाहे विख, दुरमति मैल धवाईआ। साची सिख्या लए सिख, करे सच पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुरमुख गुरसिख तक्कण राह, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। कवण वेला प्रभ मिले मलाह, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। साची देवे इक सलाह, नाम निधाना ढोला गाईआ। भव सागर पार दए करा, शौह दरया ना कोए रुढ़ाईआ। कागों हँस दए बणा, बुद्धि काग ना कोए कुरलाईआ। सहँसां विचों लए उपजा, आप आपणा रंग रंगाईआ। साचा बंसा लए बणा, गुरमुख गुर गुर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, बख्शणहार चरण सरनाईआ। गुरमुख गुरसिख वेखण उठ, दहि दिशा भेव चुकाईआ। कवण वेला प्रभ जाए तुठ, दीनन होए सहाईआ। अमृत जाम प्याए घुट्ट, रस इक्को इक वखाईआ। आवण जावण लख चुरासी मात गर्भ गेड़ा जाए छुट्ट, जून अजून ना कोए भवाईआ। देवे भण्डार इक अतुट, वस्तु सति सति वरताईआ। आपणी गोदी लए चुक्क, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। उजल करे मात मुख, दुरमति मैल रहिण ना पाईआ। सफ़ल कराए जननी कुक्ख, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, दर घर साचे मेल मिलाईआ। गुरमुख गुरसिख मंगण सच प्रीत, प्रीतीवान तेरी वड्याईआ। तेरा राग गाईए गीत, गहर गम्भीर तेरी सरनाईआ। नज़री आईं सदा अतीत, त्रैगुण कूड़ा डेरा ढाहीआ। सच दुआरयों मिले भीख, भिच्छया इक्को नज़री आईआ। पुरख अकाल साचा मीत, सज्जण दाता बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी चलाए रीत, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढुाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मेले थाउँ थाईंआ। गुरसिख गुरमुख मेल मिलावा, सो सतिगुर आप मिलाइंदा। साची दरगाह साचा नावां, बिन अक्खरां आप लगाइंदा। करे प्यार जिउँ पुत्रां मावां, पिता पूत गोद सुहाइंदा। समरथ सदा सदा सद देवे ठंडीआं छावां, मेहर नज़र नैण उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे घर वसाइंदा। गुरमुख गुरसिख पूरन आसा, आसा आसा विच मिलाईआ। माणस जन्म दे भरवासा, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। अन्दर बाहर देवे साथा, गुप्त ज़ाहर संग निभाईआ। नाम जणाए पूजा पाठा, सोहँ अक्खर इक पढ़ाईआ। मिले मेल पुरख बिधाता, पुरख पुरखोतम वड सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, जन भगतां देवे इक्को दान, नाम निधान झोली आपे पाईआ।

✪ १३ भाद्रों २०२० बिक्रमी सवरन सिँघ दे गृह राम दीवाली ज़िला अमृतसर ✪

गुरमुखां हरि करे रखवाली, रक्षक इक्को इक अख्वाइंदा। दो जहानां फिरे खाली, खण्डा खड़ग नाम चमकाइंदा। निरगुण हो के बणे पाली, घर घर वेख वखाइंदा। पूरब जन्म जिन्नां घाल घाली, अन्तिम लेखा लेखे पाइंदा। सतिगुर हो के करे दलाली, शब्द विचोला मेल मिलाइंदा। लख चुरासी विचों भाली, गुरसिख गुरमुख आप जगाइंदा। कलयुग वेख अन्धेरी रैण काली, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दया कमाइंदा। प्रितपालक बणे निरँकार, सेवा सच कमाईआ। डुब्बदे पाथर लए तार, जिस जन आपणा रंग रंगाईआ। साचा देवे नाम आधार, साची सिख्या इक समझाईआ। जन्म कर्म दा रोग निवार, आवण जावण दए कटाईआ। घर मेला सिरजणहार, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए तराईआ । गुरमुख तारे हरि निरँकार, जुग जुग वेख वखाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबार, भेव अभेद खुल्ाइंदा। साचे मन्दिर खोल्ह कवाड़, पड़दा दूई द्वैत चुकाइंदा। अग्ग ना लग्गे तत्ती हाढ़, अमृत मेघ इक बरसाइंदा। कर प्रकाश नाड़ नाड़, सांतक सति सति वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। हरिजन वेखे लोकमात, धरत धवल सोभा पाईआ। लहिणा तोड़ ज़ात पात, ज़ेर ज़बर इक समझाईआ। दे वड्याई कायनात, नाम कलमा मकतब इक पढ़ाईआ। धर्म दुआरे मार झात, घर साचा इक वखाईआ । फल फुलवाड़ी पत डाली वेखे आप, पंखड़ी गुंचा फोल फोलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए तराईआ । हरिजन तारे दीन दयाल, आदि जुगादि दया कमाइंदा। एथे ओथे चले नाल, दो जहानां संग रखाइंदा। नाता तोड़ काल महाकाल, चरण प्रीती इक समझाइंदा। साचा मन्दिर जणाए धर्मसाल, घर ठाकर रूप वटाइंदा। गुरमुख गुर गुर सुरत संभाल, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाइंदा । लेखा जाण शाह कंगाल, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। हरिजन साचे होए सहाई, मेहर नज़र उठाइंदा। ना कोई अंकड़े जाणे इकाई, दहाई धार ना कोए जणाइंदा। दहि दिशा सर्ब कुरलाई, दस्म दुआरी घर ना कोए वसाइंदा। मन आसा दए दुहाई, तृष्ना भुक्ख ना कोए मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे अंग लगाइंदा। हरिजन साचे लाए अंग, अंगीकार अख्वाईआ। सतिगुर पूरा सद सरबँग, दीन दयाल अख्वाईआ। भाण्डा भरम ढाहे कंध, कूड़ी क्रिया सफ़ा उठाईआ। नाम निधान वजाए मृदंग,

अनहद नाद सुणाईआ। जन भगतां वसे सदा संग, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन वेखे बाल अञ्याण, बाली बुध सुद्ध इक्को घर वखाईआ।

✪ १३ भाद्रों २०२० बिक्रमी जिन्दर सिँघ दे गृह राम दीवाली ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर पूरा करे किरपा, कृपानिधान दया कमाइंदा। जन्म कर्म दी मिटे बिपता, दु:ख दर्द गंवाइंदा। माणस जन्म ना जाए बिरथा, तन माटी लेखे पाइंदा। चार कुण्ट जो रिहा फिरदा, दहि दिशां डेरा ढाइंदा। सतिगुर वणज कराए इक्को सिर दा, हट्ट साचे आप वकाइंदा। आदि जुगादी खेल अगम्मी पिर दा, पिता पूत वेख वखाइंदा। लेखा जन्म पूरब जन्म चिर दा, निरगुण सरगुण वंड वंडाइंदा । भेव वखाए घर थिर दा, थिर घर आपणा घर जणाइंदा। कूड़ी क्रिया गेड़ा गिढ़दा, साचा मार्ग इक समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणे घर वसाइंदा। जन्म कर्म दा कटे रोग, हरि सतिगुर दया कमाईआ। नाम भण्डारा देवे चोग, रसना जिह्वा बत्ती दन्द आप खवाईआ। आत्म परमात्म होए संजोग, धुर मिलणी मेल मिलाईआ। वज्जे वधाई चौंदां लोक, परलोक रहे जस गाईआ। दर निमाणी फिरे मोख, नेत्र नैण नैण शरमाईआ। जिन्हां पुरख अकाल मिली ओट, तिन्हां वेले अन्त दु:ख ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। दु:ख रोग उतरे संताप, पत्तत पापी पार कराइंदा। बालक वेखे साचा बाप, पिता पूत गोद उठाइंदा। प्रेम प्रीती साचा जाप, निरगुण सरगुण आप समझाइंदा। घर ठाकर मिले सज्जण साक, कूड़ा नाता तोड़ तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भव सागर पार कराइंदा। जगत रोग मेटे दुख, दुखियां दर्द वंडाईआ । घर उपजाए इक्को सुख, हरि वज्जे नाम वधाईआ। उजल करे मात मुख, जो श्री भगवान रहे जस गाईआ। वेख वखाणे अपराधी सुत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। लेखा जाणे अन्दर बाहर, पड़दा सके कोई ना पाईआ। करनहारा गुप्त ज़ाहर, ज़ाहर ज़हूर खेल वखाईआ। डुब्बदे पाथर जाए तार, जिस गृह आपणा चरण छुहाईआ। साचा बख्शे इक प्यार, प्रेम प्रीती तन्द बंधाईआ। भूत प्रेत जिन ख़बीस कोए ना करे ख्वार, इक लख अस्सी हज़ार नेड़ कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम डंका इक वजाईआ। नाम डंका वज्जे घर, घर साचे खुशी वखाइंदा। पिछला चुक्के भउ डर, अग्गे इक्को राह जणाइंदा। सतिगुर स्वामी पल्लू फड़, जग मार्ग आपे लाइंदा। डूंघी भँवरी काया वड़, बंद ताकी आप खुल्हाइंदा।

सच सुहेला देवे वर, गुर चेला वेख वखाइंदा। लेखा जाणे नरायण नर, नर हरि आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सच घर सच इक्को इक वखाइंदा। सच घर हरि शब्द स्वामी, गुर मन्त्र नाम वड्याईआ। सर्ब जीआं घट अन्तरजामी, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। अमृत बख्शे आत्म बाणी, अंमिउँ रस जाम प्याईआ। आवण जावण चुक्के जम की काणी, राए धर्म ना दए सजाईआ। साचा बख्शे पद निरबाणी, निरबाण पद इक्को इक वखाईआ। तख्त निवासी शाह सुल्तानी, शहिनशाह आपणी मेहर नज़र उठाईआ। तिक्खी मारे तीर कानी, दो जहानी पार लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे लए उठाईआ। दुःख रोग मिटे झेड़ा, झंजट कोए रहिण ना पाईआ। आप वसाए साचा खेड़ा, घर वज्जे नाम वधाईआ। एथे ओथे बन्ने बेड़ा, खेवट खेटा बेपरवाहीआ। अन्तिम करे हक़ नबेड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आत्म परमात्म परमात्म आत्म आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सोहँ मन्त्र इक पढ़ाईआ।

✪ १३ भाद्रों २०२० बिक्रमी लखा सिँघ दे गृह राम दीवाली ज़िला अमृतसर ✪

२६७ १५

सर्ब कल हरि समराथा, पुरख समरथ इक अख्वाइंदा। लेखा जाणे त्रिलोकी नाथा, लोक परलोक हुक्म मनाइंदा। जुग चौकड़ी जणाए गाथा, गुर अवतार आप पढ़ाइंदा। भगत भगवान देवे साथा, सगला संग निभाइंदा। गुरमुखां करे पूरा घाटा, पूरब लहिणा वेख वखाइंदा । चरण कँवल बंधाए नाता, साचा सज्जण वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन हरि हरि रंग रंगाइंदा। पुरख समरथ साहिब गुरदेव, देवत सुर दए वड्याईआ। आदि जुगादि सदा निहकेव, निहचल धाम डेरा लाईआ। अलख अगोचर अगम्म अभेव, भेव अभेद जणाईआ। अमृत रस देवे मेव, फल इक्को इक खवाईआ। लेखा जाणे रसना जिह्व, बत्ती दन्द वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। समरथ पुरख साहिब सुल्तान, पुरख अकाल इक अख्वाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा हुक्म वरताइंदा। धर्म उठाए इक निशान, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। जीव जंत साध सन्त देवे शब्द ज्ञान, आत्म परमात्म बोध अगाधा अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। काया मन्दिर वेख मकान, घर दीआ बाती, कमलापाती नूर नुराना जोत डगमगाइंदा । अमृत जाम प्याए बण के साकी, सच प्याला काया कासा आप भराइंदा। लेखा जाणे तन ख़ाकी, ख़ालक वेख वखाइंदा। जन भगतां बंद कवाड़ा खोल्हे ताकी, एका दूजा दूजा एका पड़दा आप उठाइंदा। अस्व

घोड़े चढ़े राकी, शाहसवारा हरि निरँकारा दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा । धुर संदेसा लै के आए पाती, नाम निधाना आप समझाइंदा। जन भगतां चुक्के लहिणा बाकी, देणा आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सगला संग आप निभाइंदा। समरथ पुरख अगम्म अथाह, निरगुण निरवैर वड्डी वड्याईआ । जुग चौकड़ी मार्ग ला, नित नवित्त वेख वखाईआ। शब्द सरूपी बण मलाह, बेड़ा लख चुरासी आप चलाईआ। साची नईया लए बहा, सईया बणे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन लेखा लेखे पाईआ। पुरख समरथ सर्ब सुख दाता, लख चुरासी खोज खुजाइंदा। आदि जुगादि पतिपरमेश्वर पारब्रह्म प्रभ पुरख बिधाता, बिध आपणे हथ्थ रखाइंदा। सन्त साजण भगत भगवान गुरमुख गुरसिख बन्ने नाता, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाइंदा। सोहँ ढोला बण विचोला गाए गाथा, तूं मेरा मैं तेरा दोहां इक्को राग अलाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपे जाणे धुर दा बोला, अनबोलत आपणी धार वखाइंदा। समरथ स्वामी खेले खेल डूंघे सागर, समुंद वरोले बेपरवाहीआ। भेव चुकाए काया गागर, गगरीआ निर्मल जोत जोत रुशनाईआ। वणज कराए हट्ट सौदागर, नाम इक्को वस्त विकाईआ। खेले खेल करीम कादर, कुदरत करता दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ । समरथ हुक्म धुर फ़रमान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सीस झुकाण, नेत्र नैण अक्ख ना कोए उठाईआ। निवण-सो-अक्खर ढोला सारे गाण, तूही तूही राग अलाईआ। चरण कँवल सच प्रीती इक ध्यान, ध्यान ध्यान विचों प्रगटाईआ। अन्तष्करन आतश मिटे अमृत देवे पीण खाण, रस इक्को इक भराईआ। दाता दानी श्री भगवान, भगवन मीता सदा सहाईआ। जन्म जन्म आवण जावण दु:ख कटे आण, फाँसी जम ना कोए लटकाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, हरिजन साचे करे परवान, पार किनारा इक्को इक वखाईआ ।

२९८ १५

✪ २२ भाद्रों २०२० बिक्रमी दलीप सिँघ दे गृह जंडयाला गुरू ज़िला अमृतसर ✪

सचखण्ड दुआरे सति निवास, सति सतिवादी आप कराइंदा। खेले खेल पुरख अबिनाश, अबिनाशी आपणी धार चलाइंदा। निर्मल नूर जोत कर प्रकाश, जोती जाता डगमगाइंदा। निरगुण निरगुण पूरी करे आस, आसा आसा नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच दवारे सोभा पाइंदा। सच दुआरा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। हरि पुरख निरँजण खेल बेअन्त, बेपरवाह आप रखाईआ। एकँकार महिमा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। आदि

निरँजण जोती नूर अनन्त, अक्ल कलधारी भेव चुकाईआ। अबिनाशी करता खेले खेल जुगा जुगन्त, जुग चौकड़ी धार बंधाईआ। श्री भगवान सोभावन्त, दो जहानां रुत्त सुहाईआ। पारब्रह्म प्रभ खेले खेल आदि अन्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी सचखण्ड दुआर, हरि करता आप कराइंदा। सो पुरख निरँजण बेऐब परवरदिगार, नूर नुराना डगमगाइंदा। शाहो भूप बण सिक्दार, तख्त निवासी पुरख अबिनाशी शाह सुल्ताना सोभा पाइंदा। दीआ बाती कमलापाती जोती जोता पुरख बिधाता कर उज्यार, निरगुण धार हरि निरँकार दीन दयाल पुरख अकाल आपणी धार चलाइंदा। अटल महल्ल थिर मनार, खेले खेल परवरदिगार, नूरी जलवा नूर अपार, मुकामे हक़ सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, साचा मन्दिर इक सुहाइंदा। साचा मन्दिर सोभनीक, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। दूसर ना कोई दिसे शरीक, लाशरीक बेपरवाहीआ। ना अन्धेरा कोई तारीक, जोती नूर चन्द रुशनाईआ। लेखा जाणे हकीकत हकीक, हक़ हक़ दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआर इक वसाईआ। सच दुआर जाए वस, सो साहिब आप वसाईआ। निरगुण नूर कर प्रकाश, जोती जोत जोत रुशनाईआ। शाहो भूप पुरख अबिनाश, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। दूसर ना कोए वसे साथ, संगी संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। सचखण्ड दुआरा उच्च अटला, सो साहिब आप सुहाईआ। दीआ बाती कमलापाती निरगुण जोत एका बला, एका एक करे रुशनाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण वसे सद इकल्ला, अक्ल कलधारी खेल कराईआ। निरवैर पुरख आपणा फड़े आपे पल्ला, पल्लू साची गंढु बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड साचे वड वड्याईआ। सचखण्ड वड्याई एका एक, एकँकार आप जणाइंदा। आदि पुरख अपरम्पर स्वामी आपे जाणे आपणा भेख, रूप रंग रेख नज़र कोए ना आइंदा। अगम्म अगम्मड़ा वसणहारा अगम्मड़े देस, छप्पर छन्न चार दीवार ना कोए बणाइंदा। निरगुण अन्दर निरगुण रहे अलेप, भेव अभेद ना कोए खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरा एकँकारा करता पुरख आप वसाइंदा। सचखण्ड दुआर वसे आदि, आदि पुरख आप वसाईआ। एका एक वजाए आपणा नाद, आपणी इच्छया आप प्रगटाईआ। लेखा जाणे बोध अगाध, अगाध बोध बेपरवाहीआ। निरगुण निरगुण सज्जण साक, सगला संग निभाईआ। जोती जोत पाकी पाक, बेऐब नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। सचखण्ड दुआरे वज्जे वधाई, डौरु डंका नज़र कोए ना आइंदा। राग नाद

२६६
१५

ना कोए गाई, नादी नाद ना कोए अलाइंदा। ढोलक छैणा ना कोए वजाई, ताल तलवाड़ा ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे साचा खेल, निरगुण निरगुण साचा मेल, मेल मिलावा आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा खेल करे करतार, सचखण्ड वड्डी वड्याईआ। निरगुण पुरख पुरख करतार, परम पुरख बेपरवाहीआ। साची नगरी कर तैयार, समग्री इक्को इक उपाईआ। जोत इक्गी होए उज्यार, उजल मुख मुख सालाहीआ। रूप रंग रेख तों वसे बाहर, अजूनी रहित अक्ल कल वडी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि आपणी कल धराईआ। आदि आपणी कल रख, हरि करता खेल कराइंदा। सो पुरख निरँजण हो प्रतख, हरि पुरख निरँजण वेस वटाइंदा। एकँकारा बोल अलख, आदि निरँजण हुक्म वरताइंदा । श्री भगवान मार्ग दस्स, अबिनाशी करता राह चलाइंदा। पारब्रह्म प्रभ नस्स नस्स, बण पांधी पन्ध मुकाइंदा। कर खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी धार जणाइंदा। निरगुण धार कर प्रगट, प्रगट आपणा खेल वखाइंदा। सचखण्ड दुआर खोल्ह हट्ट, हटवाणा सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त आप विकाइंदा। सचखण्ड दुआरा खोल्ह हट्ट, सो साहिब वेख वखाईआ। कर खेल पुरख समरथ, समरथ धार जणाईआ। निरगुण निरगुण हो के वस, नार कन्त रूप वटाईआ। मेल मिलावा हस्स हस्स, घर मन्दिर वज्जे वधाईआ। प्रेम प्रीती अगम्मी दस्स, नज़र किसे ना आईआ। अन्तर अन्तर आपे वस, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि खेल करदा, आदि पुरख इक अख्वाइंदा। निरगुण निरगुण अन्दर वड़दा, नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर रखे पड़दा, उहला रूप ना कोए वटाइंदा। आपणे पौड़े आपे चढ़दा, साचे मन्दिर सोभा पाइंदा। दर दरवेश दर भिखारी आपे बणदा, शाह सुल्तान आप हो जाइंदा। आपणी करनी आपे करदा, करता पुरख कार कमाइंदा। आपणा नाउँ आपणा राग ढोला गीत आपे पढ़दा, नाउँ निरँकार आप अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका हुक्म आप वरताइंदा। आपणा हुक्म शाह सुल्तान, आदि आदि वरताईआ। एका पुरख नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। एका हुक्म हुक्मरान, शाह पातशाह इक अख्वाईआ। एका खेले खेल महान, वड ख़ालक नूर ख़ुदाईआ। एका रहमत रहीम करे रहमान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप वखाईआ। साची खेल आदि कर, हरि करता दए वड्याईआ। धुरदरगाही देवणहारा वर, साची वस्त आप वरताईआ। सुत दुलारा आपे घड़, घड़त घाड़न वेख वखाईआ। लेखा जाणे नारी नर, नर नरायण ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड

दवारे खेल अपारे, हरि करता एका एक वार कराईआ। एका खेल दस्से भगवान, धुरदरगाही आप जणाइंदा। शब्दी सुत उठे बलवान, बलधारी आप प्रगटाइंदा। विष्नूं देवे एका दान, विश्व वस्त आप वरताइंदा। ब्रह्म पारब्रह्म कर परवान, आपणा हुक्म जणाइंदा। शंकर देवे इक ज्ञान, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। त्रैगुण माया कर प्रधान, पंचम नाता जोड़ जुड़ाइंदा। शब्दी शब्द बणा विधान, साचा मार्ग इक समझाइंदा। लख चुरासी कर परवान, सच परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज देवे दान, चारे खाणी झोली पाइंदा। चारे बाणी बोल बेज़बान, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपे गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, धुर संदेसा नर नरेशा इक इकल्ला आप जणाइंदा। सच संदेसा दस्से भगवन्त, आदि आदि सुणाईआ। खेले खेल जुगा जुगन्त, जुग चौकड़ी वंड वंडाईआ। बोध अगाधा नाम मंत, मन्त्र इक्को इक दृढ़ाईआ। आत्म परमात्म खेल नार कन्त, ब्रह्म पारब्रह्म करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप रचाईआ। साचा खेल रचे करतार, हरि करता दया कमाइंदा। अनभव प्रकाश नूर उज्यार, अजूनी रहित डगमगाइंदा। लेखा जाणे धुर दरबार, धुर दी धार आप वरताइंदा। लख चुरासी कर तैयार, घट घट आपणा नूर धराइंदा। शब्द नाद सच्ची धुनकार, अनहद नादी नाद वजाइंदा। अमृत आत्म सुहाए ताल, सर सरोवर इक भराइंदा। नौ दुआरे खोल्ह किवाड़, मन वासना मेल मिलाइंदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार, माया ममता हउमें हंगता गढ़ सुहाइंदा। सृष्ट सबाई कर तैयार, त्रैगुण अतीता ठांडा सीता साची रीता आप जणाइंदा। करे खेल साहिब अनडीठा, निरगुण नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सुनेहड़ा इक अलाइंदा। सच सुनेहड़ा दस्से मीत, मुरार वड्डा वड वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव चलौणी रीत, त्रै पंज कर कुड़माईआ। शब्द हदीस सुणाए गीत, मुख मुखड़ा आप सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार आप प्रगटाईआ। धुर दी धार शब्द हरि नाद, अनादी आप सुणाइंदा। रचना रच कोट ब्रह्माद, ब्रह्मंड आपणा खेल कराइंदा। निरगुण हो के वरते आपणा स्वांग, स्वांगी आपणी धार चलाइंदा। दर दुआर लए मांग, भिक्खक आपणी झोली डाहइंदा। नित नवित्त रखे तांघ, आसा आसा विचों प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक्को वार जणाइंदा। धुर दा हुक्म इक जणाया, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। शब्द सुत प्रभ आप वडयाया, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड रचन रचाया, पुरी लोअ आकाश सुहाईआ। रवि ससि सूरज चन्न चमकाया, मण्डल मण्डप डेरा लाईआ। ज़िमीं असमानां बन्धन पाया, लोक परलोक गंढु रखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव उठाया, धुर दा हुक्म आप वरताईआ।

३०१ १५

त्रैगुण साचा मेल मिलाया, पंज तत करी कुड़माईआ। लख चुरासी वंड वंडाया, वंडणहार इक हो जाईआ। आत्म परमात्म भेव छुपाया, मन मति बुध समझ सके ना राईआ। कागद कलम नाल रलाया, लेख लिखाया लेखा शाहीआ। निरगुण सरगुण धार बंधाया, बन्धन एका दूजा पाईआ। ब्रह्मावेता आप पढ़ाया, चारे वेदां दए समझाईआ। चारे युग हुक्म वरताया, चारे कुण्टां डंक वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को हुक्म दए सुणाईआ। इक्को हुक्म सच संदेसा, सो साहिब आप जणाईआ। पुरख अकाल वड नरेशा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जुग चौकड़ी करे वेसा, वेस अवल्लड़ा रूप वटाईआ। निरगुण सरगुण धारे भेसा, गुर अवतार नाउँ रखाईआ। आत्म कराए परमात्म चेता, सोई सुरती लए जगाईआ। भेव चुकाए इक्को नेता, नर नरायण दए समझाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग खेले खेडा, चारे आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक समझाईआ । धुर दा हुक्म इक समझाया, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। चार युग दा गेड़ बणाया, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग बन्धन पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बैठे सीस झुकाया, नेत्र नैण ना कोए उठाईआ। दोए जोड़ पए सरनाया, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। विष्न बंस तेरा इक सुहाया, सरबंस तेरी वड्याईआ। मन्त्र अन्तर इक ध्याया, सो पुरख निरँजण राग अलाईआ। हँ ब्रह्म वंड वंडाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। सच संदेसा सुणो कर ध्यान, सो साहिब आप जणाईआ। अदि पुरख दा इक ज्ञान, जुग चौकड़ी भुल्ल कोए ना जाईआ। सो साहिब पुरख सुल्तान, हँ ब्रह्म सृष्ट सबाई लए प्रगटाईआ। सोहँ रूप इक परवान, धुर परवाना दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ । साची सिख्या एका वार, एकँकारा आप जणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखां वारो वार, जोती जाता पुरख बिधाता निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। हुक्मे अन्दर घल्लां तेई अवतार, त्रै त्रै धार आप जणाइंदा। हुक्मे अन्दर भगत अठारां कर उज्यार, अठ दस भाण्डा भेव चुकाइंदा। हुक्मे अन्दर ईसा मूसा मुहम्मद बणाए बरखुरदार, ख़ालक ख़लक आप समझाइंदा। हुक्मे अन्दर नानक गोबिन्द बने धार, धुर फ़रमाना आप जणाइंदा। हुक्मे अन्दर जुग चौकड़ी बीते विच संसार, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। हुक्मे अन्दर शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान, खाणी बाणी आपणी सिफ्त सालाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताइंदा । धुर दा हुक्म इक वरताउणा, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मात प्रगटाउणा, अन्त कोए रहिण ना पाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान कलमा नबी रसूल पढ़ौणा, खाणी बाणी

गुर गुर ज्ञान दृढ़ाईआ। आत्म परमात्म पड़दा लौहणा, पारब्रह्म ब्रह्म लेखा दए जणाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त श्री भगवन्त नार कन्त अंग लगाउणा, कोटन कोटि ईश जीव करे कुड़माईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग ज़ात पात दीन मज़्ब राउ रंक आप हंढ्ढाउणा, बंक दुआरी वेख वखाईआ। सच सुच जूठ झूठ माया ममता हउमें हंगता मार्ग लाउणा, दूरन दूर नेरन नेर पांधी आपणा पन्ध वखाईआ। काग हँस खेल कराउणा, भेव अभेदा भेव कोए ना पाईआ । धुर संदेसा इक सुणाउणा, गुर अवतार पीर पैगम्बर करन पढ़ाईआ। पुरख अकाल सर्ब मनाउणा, पारब्रह्म इक सरनाईआ। सांझा यार इक्को नज़री आउणा, लाशरीक नूर इलाहीआ। जिस दा कलमा ना किसे लिखाउणा, कलम शाही नेत्र रोवे मारे धाहींआ। सिफ्त सालाही बेपरवाही बेवफ़ाई विच कदे ना आउणा, वफ़ादार सर्ब बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि पुरख एका हरि, सच सुनेहड़ा इक घलाइंदा। सच सुनेहड़ा शब्द गुर जुग चार, हरि सतिगुर आप जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सृष्ट सबाई करो ख़बरदार, सोया कोए रहिण ना पाईआ। आत्म परमात्म दस्सो सच प्यार, प्रेम प्रीती इक जणाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म घर घर खोल्हो बंक किवाड़, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। दीआ बाती निरगुण जोती देवो बाल, जोत निरँजण कर रुशनाईआ। त्रैगुण माया तोड़ो जंजाल, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। साचा मार्ग दयो सिखाल, पांधी वेखो सच्चा राहीआ। लेखा चुक्के शाह कंगाल, ऊँच नीच ना कोए रखाईआ। गुर शब्द हो के बणो दलाल, काया हट्ट सौदा हक़ कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। धुर दा हुक्म धुर फ़रमाणा, धुरदरगाही आप जणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पीर पैगम्बर मन्नण भाणा, हरि का भाणा ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। तख्त निवासी पुरख अबिनाशी शाहो शाबाशी भूपत भूप राजा राणा, दो जहानां वड मेहरवाना, ब्रह्मण्डां खण्डां दीपां लोआं वेख वखाइंदा। सच संदेसा नर नरेशा देवणहार अगम्मी गाणा, कलमा कलाम वड अमाम कायनात आप समझाइंदा। नबी रसूल पीर पैगम्बर मुल्लां शेख़ मसायक दए कलामा, गुर अवतार साध सन्त श्री भगवन्त भेव अभेदा आप खुलाइंदा। आत्म परमात्म मणीआ मंत, पारब्रह्म ब्रह्म मेला हरि जू कन्त, कन्त कन्तूहल सेज सुहञ्जणी दर घर साचे काया मन्दिर अन्दर साढे तिन्न हथ्थ आप विछाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि संदेसा नर नरेशा एकँकारा हरि निरँकारा करता पुरख दीन दयाल ठाकर स्वामी इक्को वार सुणाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सुणदे रहे ला कर कन्न, दोए नेत्र नेत्र ध्यान लगाईआ। अन्तर बाहर गुप्त ज़ाहर रसना जिह्वा बत्ती दन्द कहिन्दे रहे धन्न धन्न, धन्न प्रभू तेरी वड्याईआ। वसदे रहे काया खेड़ा चमड़ी चम्म, काया माटी खेड़ा छन्न छप्परी चार दीवार

३०३
१५

बणाईआ। अन्दर डेरा लाया बुध मति मन, मन मनसा मनसा विच खपाईआ। जगत नेत्र होए अन्न्, निज नेत्र नैण खुल्हाईआ। भाण्डा भरम भउ दित्ता भन्न, कूड़ी क्रिया दिती तजाईआ। इक्को ध्यान श्री भगवन, चरण कँवल उपर धवल रखी सच सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सृष्ट खोल्हे दृष्ट, वखाए इष्ट, इष्ट इक्को नज़री आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रखो याद, यादाशत हरि जणाइंदा। जुग चौकड़ी होए बरबाद, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। पारब्रह्म प्रभ इक्को वजाए नाद, दो जहानां आप सुणाइंदा। जिस दा लेखा बोध अगाध, पढ़न लिखण विच कदे ना आइंदा। जिस ने गाया तिस अन्तर ल्या स्वाद, बाहर अनन्द करे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर चार युग दे हो इकट्ठे, दोए जोड़ जोड़ सरनाईआ। साहिब सुल्तान तेरी सरनाई ढट्ठे, बेपरवाह इक ओट तकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लोकमात जीवां जंतां राह मार्ग दस्से, लिख लिख तेरा कलमा नाम सुणाईआ। बेपरवाही तेरे दस्स के आए पते, पता निशाना इक जणाईआ। पुरख अकाल समरथ स्वामी सचखण्ड दुआरे वसे, चौदां लोक हथ्थ किसे ना आईआ। चौदां तबक फिरन नस्से, चारों कुण्ट भज्जण वाहो दाहीआ। सृष्ट सबाई जीव जंत बिरहों अग्नी कलयुग तपे, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। शिवदुआले मट्ठ गुरुदुआर मन्दिर मसीत सारे होए इकट्ठे, नेत्र रोवण मारन धाहींआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप वेख आपणा घर, तेरी रोवे सर्ब लोकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दस्सण हाल, चार युग दा भेव खुल्हाईआ। पारब्रह्म तेरा हल ना होया साथों स्वाल, सृष्ट सबाई आए पढ़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बणदे रहे दलाल, जगत दलाली मात कमाईआ। अन्त कोई ना निभया नाल, संगी साथी बैठे पल्लू छुडाईआ। कोई ना मन्ने पुरख अकाल, सच तक्के ना कोए सरनाईआ। साची दिसे ना कोए धर्मसाल, धर्म दुआरा नज़र कोए ना आईआ। फल दिसे ना किसे डाल, सिम्मल रुक्ख रहे लहराईआ। चारों कुण्ट सब दे सिर ते कूके काल, कलयुग काल भार वधाईआ। आ के वेख मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर होए कंगाल, तेरा नाम किसे हट्ट नज़र ना आईआ। धुरदरगाही सच अगम्मी मार छाल, औंदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। दर तेरे आस रख, इक्को ओट तकाईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रगट, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। वेख खेल बाज़ीगर नट, स्वांगी आपणा स्वांग रचाईआ। वेद व्यासा गया दस्स, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा उच्चे टिल्ले पर्बत आवे चाईं चाईंआ। ईसा तेरा राह तक्कदा गया हस्स हस्स, नेत्र नैण अक्ख प्रतख परवरदिगार तेरे नाल मिलाईआ। मुहम्मद

रसना जिह्वा बत्ती दन्द तेरा कलमा गया रट, मेरा अमाम आवे बेपरवाहीआ । नानक कह के गया पुरख समरथ, कलयुग अन्तिम वेस वटाईआ। गोबिन्द दस्सया कल कल्की सम्बल नगर जाए वस, बंक दुआर इक सुहाईआ । जुग चौकड़ी लहिणा देणा करे वक्ख, आप आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर साध सन्त भगत भगवान चार युग दे करे इकट्ठ, साचा दर इक खुल्हाईआ। लेखा जाणे तीर्थ अठ सठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती वेखे थाउँ थाईंआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त बहत्तर नाड़ उबलदी वेखे रत्त, रती रत फोल फुलाईआ। वरन बरन ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक राज राजन शाह सुल्तान देवणहारा ब्रह्ममत, ब्रह्म विद्या करे पढ़ाईआ। जिउँ भावे तिउँ लए रख, रखणहार तेरी सरनाईआ। सति स्वामी सदा निहकर्मी अन्तरजामी हो प्रगट, घर घर आपणा पड़दा लाहीआ। सतिजुग साचा चला रथ, कलयुग अग्नी दे मथ, नाम मधाणा इक्को पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, बेअन्त तेरी सरनाईआ। बेअन्त तेरा इक सहारा, गुर अवतार ओट तकाईआ। जुग चौकड़ी तेरा करदे रहे मुज़ाहरा, जीवां जंतां मात समझाईआ। पारब्रह्म प्रभ खेल न्यारा, हरि का भेव कोए ना पाईआ। वसणहारा महल अटल उच्च मनारा, सचखण्ड वसे सच्चा माहीआ। शब्द नाद सच्ची धुनकारा, अनरागी राग सुणाईआ। गावत गावत गाए सर्ब संसारा, रसना जिह्वा करे पढ़ाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, बनास्पत रोवे मारे धाहींआ। समुंद सागर ना कोए विचारा, जल थल महीअल भेव कोए ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दोए जोड़ करन निमस्कारा, गल पल्लू रहे पाईआ। तेरी कुदरत सांझे यारा, तेरे हथ्थ रखाईआ। हउँ याचक सेवक बरखुरदार, फ़रमाबरदारा तेरी चाकरी मात कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख्या वारो वारा, जुग चौकड़ी फेरा पाईआ। आत्म दस्सया तेरा इक किनारा, नौका नईया तेरा नाम जणाईआ। कल कल्की अन्तिम लै मात अवतारा, निहकलंक रूप वटाईआ। दो जहान श्री भगवान करे ख़बरदारा, विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा सुरप्त इन्द गण गंधर्ब सोया कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक जणाईआ। सच संदेसा ल्या जाण, भुल्ल रहे ना राईआ। कलयुग तेरा खेल महान, श्री भगवान बेपरवाहीआ। प्रगट हो के वाली दो जहान, निरगुण नूर जोत करे रुशनाईआ। सृष्ट सबाई दए ज्ञान, आत्म परमात्म इक पढ़ाईआ। दीन मज़्हब दी छुट्टे काण, ज़ात पात ना कोए जणाईआ। राउ रंक इक हो जाण, ऊँच नीच नज़र कोए ना आईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप तेरा ढोला इक्को गाण, सोहँ कर सच पढ़ाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मन्नण तेरी आण, अग्गे आपणा हुक्म ना कोए वरताईआ। तेरी झोली पौण आपणा ईमान, सिदक सबूरी तेरे चरण रखाईआ। दर कोई ना आए शैतान, शरीअत शरअ ना कोए लड़ाईआ ।

दिसे कोई ना बेईमान, बेवा रूप ना कोए वटाईआ। तेरा नाम सारे ध्याण, तू ही तू ही राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दो जहान तेरी सरनाईआ। दो जहान देवां सरनागत, सो सतिगुर आप जणाइंदा। दो जहानां इक्को मति, ब्रह्म विद्या इक पढ़ाइंदा। वेख वखावां पंज तत्त, कूड़ी क्रिया डेरा ढाइंदा। लेखे लावां गुरमुख रती रत, रती रत नाल रंगाइंदा। साचा मार्ग इक्को दस्स, चार वरन आप उठाइंदा। अठारां बरन करां वस, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। भगत मिलावां हस्स हस्स, भगवन आपणा पड़दा उठाइंदा। निरगुण जोत कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। काया मन्दिर अन्दर पावे रास, गोपी काहन आप नचाइंदा। सीता सुरती राम पुजाए आस, आसा तृष्ना मेट मिटाइंदा। चतुर्भुज वसे पास, आदि शक्ति आपणी गंढु पवाइंदा। नूर नुराना शाहो शाबाश, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे दोए जोड़ करो अरदास, अरदासा सब नूं इक समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार युग दा लेखा लिखणहारा वेख वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे बोलो, इक जैकार लगाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द बिन मुख मुखड़ा खोलो, पंज तत नज़र ना आईआ। सच प्रीती आप आपणा घोली घोल घोलो, घोली घोल लेखे लाईआ। वेखो साहिब इक अडोलो, अडोल डुल कदे ना जाईआ। चार युग दा भार हरि दे कंडे तोलो, नाम कंडा इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां रिहा समझाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर चार कुण्ट वेखण मार ध्यान, लोकमात अक्ख उठाईआ। कलयुग अन्तिम साबत दिसे ना किसे ईमान, धीरज जत नज़र कोए ना आईआ। गुर का इष्ट ना कोए मनाण, दृष्ट सके ना कोए खुलाईआ। अमृत मिल्या ना पीण खाण, कूड़ी क्रिया तृसन वधाईआ। आत्म परमात्म पाया ना किसे ज्ञान, जगत विद्या करन पढ़ाईआ। जो लेखा लिख लिख दे के आए ब्यान, ब्याना लोकमात धराईआ। तिस नूं सक्या ना कोए पहचान, बेपहचान नज़र किसे ना आईआ। दरोही खुदाए होए हैरान, बी पिहरबान मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला, तेरा पड़दा सके ना कोए उठाईआ। राम रमईया नज़र ना आया घर घर फिरे शैतान, काहना बंसुरी नाम ना कोए वजाईआ। नानक मन्त्र भुल्लया सति नाम, नाम सति तन मन्दिर हट ना कोए वखाईआ। गोबिन्द दस्स के आया इक पुरख अकाल, आदि जुगादि सब दा लेखा लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सब दा लहिणा झोली पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर हो निरास, प्रभ अग्गे ध्यान लगाईआ। हरि जू तेरा खेल तमाश, समझ सके कोई ना राईआ। सृष्ट सबाई गुर अवतारां उत्तों उडया विश्वाश, धीरज सच ना कोए रखाईआ। काम क्रोध सब दे पास, लोभ मोह हँकार वज्जी

वधाईआ। साचा नाम ना गाए कोई गाथ, कूड़ी क्रिया ढोला गाईआ। साची पढ़े ना कोई रहिरास, माणस जन्म माणस मानुख मानव रंग ना कोए रंगाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा घट घट वेख्या भाख, साची भाख्या ना कोए सुणाईआ। एसे करके सारे अन्तिम आए आख, लोकमात जणाईआ। प्रगट होवे पुरख समराथ, निहकलंक नरायण बेपरवाहीआ। जिस दी ना कोई ज़ात ना कोई पात, दीन मज़ूब ना कोए रखाईआ। ना कोई पिता ना कोई मात, गोदी गोद ना कोए उठाईआ। ना कोई पत्तण ना कोई घाट, शिवदुआले मट्ठ मन्दिर मस्जिद गुरुदुआर नज़र किसे ना आईआ। ना कोई जाणे दिवस रात, घड़ी पल वंड ना कोए वंडाईआ। ना कोई संधया ना प्रभात, दीपक दीआ ना कोए जगाईआ। आपणा खेल करे प्रभ ख़ास, ख़ालस ख़ालसा लए प्रगटाईआ। चौंह वरनां विचों कर प्रकाश, इक्को ज़ात दए समझाईआ। सो ज़ात सदा पाक, पाक रसूल आप बणाईआ। जिस दा नूर चमके आफ़्ताब, महिताब करे रुशनाईआ। सो साहिब वजाए इक रबाब, अहिबाब दए सुणाईआ। मुख पड़दा रखे नक़ाब, नेत्र अक्ख ना किसे मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग चौकड़ी वेखे थाउँ थाईंआ। जुग चौकड़ी वेखणहारा, इक इकल्ला आप अख्वाईआ। कलयुग अन्तिम हो तैयारा, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। जोती नूर कर उज्यारा, शब्दी डंक डंक सुणाईआ। साचा धाम सुहाए दुआरा, बंक मिले माण वड्याईआ। शाहो भूप बण सिक्दारा, राजन राज आप हो जाईआ। योद्धा सूरबीर बलकारा, बल आपणा आप प्रगटाईआ। खड़ग खण्डा तेज़ कटारा, चण्ड प्रचण्ड नाम चमकाईआ। वेखणहारा लख चुरासी खोल्ह कवाड़ा, नौ दुआरे डेरा ढाहीआ। धुरदरगाही बण के लाड़ा, दर दर घर घर आपणा फेरा पाईआ। मेल मिलावे साचे यारां, यारी यारां नाल बंधाईआ। भगत भगवान करे प्यारा, मुरीद मुर्शद गोद सुहाईआ। कल कल्की ल्या अवतारा, अमाम अमामां फेरा पाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस दा तक्कदे रहे सहारा, इक्को ओट रखाईआ। सो वेखण आया अन्त किनारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा पड़दा रिहा उठाईआ। सब दा पड़दा देवे चुक्क, लुक्या कोए रहिण ना पाईआ। शब्द अगम्मी धुर दा शेर रिहा बुक्क, नाम भबक इक्को लाईआ। लख चुरासी वेखे उलटा रुख़, मात गर्भ फोल फुलाईआ। धुर दा हुक्म सुणाए अबिनाशी अचुत, चेतन सब नूं रिहा कराईआ। इक्को इक सुहौणी सुहञ्जणी रुत्त, रुत्त रुतड़ी आप महकाईआ। जन भगत उठाए श्री भगवान जिउँ माँ पुत्त, पिता पूत लए जगाईआ। दो जहान उजल करे मुख, दुरमति मैल नज़र ना आईआ। लेखे लाए जननी कुक्ख, धन्न धन्न जणेंदी माईआ। आवण जावण लख चुरासी जाए छुट्ट, जिस जन आपणा दरस दिखाईआ। जन्म जन्म दी कटे भुक्ख, कर्म कर्म दी तृष्ना रहिण ना पाईआ। लोकमात

दा बूटा पुट, गुरमुख सचखण्ड साचे लए लगाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी देवणहारा सब कुछ, आपणा धन ख़ज़ाना दौलत नाम जगत रखाईआ। रातीं सुत्यां दिने जागदयां जन भगतां अन्दर वड़ के लए पुच्छ, आत्म परमात्म आप जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। कलयुग अन्तिम फेरा पाया, गहर गम्भीर नज़र किसे ना आइंदा। गुरमुख साचे लए जगाया, जागरत जोत इक वखाइंदा। आप आपणा रंग रंगाया, कूड़ा रंग रहिण कोए ना पाइंदा। दूई द्वैती डेरा ढाहया, माया ममता मोह मिटाइंदा। हउमें हंगता गढ़ तुड़ाया, निवण सो अक्खर इक समझाइंदा। साची संगता मेल मिलाया, शरअ संगल ना कोए जणाइंदा। चार वरन इक्को घर बहाया, ऊँच नीच वंड ना कोए वंडाइंदा। आत्म परमात्म पड़दा दए उठाया, बजर कपाटी कुण्डा लाहइंदा। नौ दुआरे पन्ध मुकाया, सुखमन टेडी बंक पार कराइंदा। अनहद नादी नाद सुणाया, धुन आत्मक राग सुणाइंदा। अमृत आत्म जाम प्याया, तृष्ना भुक्ख ना कोए वखाइंदा। निर्मल दीआ इक जगाया, जोती नूर डगमगाइंदा। सच सिँघासण इक वछाया, आत्म सेजा सोभा पाइंदा। पलँघ रंगीला इक डाहया, पावा चूल ना कोए बणाइंदा। सच सवाणी लए जगाया, सुरती सुरत आप हिलाइंदा। सोलां इच्छया पूर कराया, सोलां श्रृंगार वड वड्याइंदा। नाम नेत्र कज्जल पाया, धार धार विचों बन्नाइंदा। सोहणा पल्लू सीस टिकाया, सुभर इक्को इक वखाइंदा। धी जवाई इक्को घर बहाया, मन्दिर इक्को इक वड्याइंदा। साचा लाड़ा बेपरवाया, नूर नुराना नज़री आइंदा। साचे घोड़े चरण टिकाया, अस्व इक्को इक दौड़ाइंदा। साची पाखर आप सुहाया, सोलां कलीआं सोभा पाइंदा। कल्गी तोड़ा सीस सुहाया, जगत जगदीश वेख वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा ढोला रहे जस गाया, वेद पुराण सिफ्त सालाहइंदा। जिस दा नूर ज़हूर बेनज़ीर खुदाया, सो सच तस्वीर आप प्रगटाइंदा। वड पीरन पीर फेरा पाया, दस्तगीर दस्त मिलाइंदा। कलयुग अन्त अख़ीर आया, चौदां सदीआं पन्ध मुकाइंदा। बीस बीसा वेख वखाया, नानक गोबिन्द मेल मिलाइंदा। राम कृष्न रंग रंगाया, रंग इक्को इक चढ़ाइंदा। मुहम्मद महिबूब दए समझाया। मुहब्बत इक्को घर बणाइंदा। सच अरूज अर्श कुर्श महिराब हुजरा इक्को नज़री आया, अटल मनार सच सच वड्याइंदा। परवरदिगार बेपरवाह डेरा लाया, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर पुरख अकाल वेख वखाइंदा। रुत्त रुतड़ी दए सुहाया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सन्त सुहेले लए फड़, गुर चेले लगाए आपणे लड़, पल्लू इक्को नाम बंधाइंदा। पल्लू बन्ने नाम तन्द, तन्द नज़र किसे ना आइंदा। करे खेल सूरा सरबँग, सो साहिब दया कमाइंदा। जन्म जन्म दी पूरी करे मंग, जन भगतां आपणा मेल मिलाइंदा। अन्तर अन्तर देवे अनन्द, बाहरों पंज तत काया चोला जगत हंढाइंदा।

बिन रसना जिह्वा सुणा के जाए आपणा छन्द, बत्ती दन्द ना कोए हिलाइंदा। बिन हथ्थां पैरां पांधी हो के मुका के जाए पन्ध, दो जहानां आपणयां चरणां हेठ रखाइंदा। गुरमुख सवाणी सुघड़ सुचज्जी जुग चौकड़ी कदे ना होवे रंड, जगत रंडेपा आप कटाइंदा। अन्तिम लै के जाए सचखण्ड, सच दुआरे आप बहाइंदा। नाता तोड़ कूड़ वरभंड, ब्रह्मण्ड पार कराइंदा। जिथ्थे परम पुरख दा इक्को छन्द, दूजा राग ना कोए अलाइंदा। तिस दुआरे गुर अवतार पीर पैगम्बर भगत सन्त सारे जोदड़ी कर के रहे मंग, निउँ निउँ सीस सर्ब झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन हरिभगत गुरमुख आप आपणा मेल मिलाइंदा। गुरसिख आप आपणा मिलाए मेला, मिलणी जगदीश कराईआ। इक्को घर वसे गुरु गुर चेला, चेला गुरू इक्को गृह डेरा लाईआ। परम पुरख प्रभ सज्जण सुहेला, सति पुरख निरँजण मिले चाईं चाईंआ। कलयुग अन्त मिलण दा इक्को वेला, माणस जन्म मिले वड्याईआ। लख चुरासी वक्त दुहेला, सतिगुर संग ना कोए निभाईआ। अन्तिम धर्म राए दी पए जेला, जम का फास ना कोए कटाईआ । चित्रगुप्त ना बैठे वेहला, सब दा लेखा रिहा लिखाईआ। किसे कम्म ना आउणा पैसा धेला, बिन हरि के नाम संग कोई ना जाईआ। मरदयां तक्क कोई ना होवे वेहला, जींवदयां कम्म ना कोए मुकाईआ। जिस ने मिलणा सतिगुर साचे सज्जण सुहेला, कूड़े धंदे दयो तजाईआ। आत्म परमात्म वेखो सब तों रहे नवेला, घर घर विच डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां इक्को राह बुझाईआ । गुरमुख कहिण असीं आवांगे। प्रभ तेरा नाम ध्यावांगे। इक्को ओट रखावांगा। घर काया शब्द चोट लगावांगे। कूड़ी क्रिया खोट कढ्ढावांगे। आहलणिउँ डिगे बोट, अन्त तेरी झोली बहि के खुशी मनावांगे। तेरे विचों उपजी तेरी जोत, अन्त तेरे विच मिलावांगे। तूं बैठा रिहों ख़ामोश, अन्दर वड़ के तैनूं बुलावांगे। जे सानूं देवें दरस अमोघ, तेरी चरणी सीस झुकावांगे। दोए लोचण तेरे दर्शन रहे लोच, कर दर्शन निज नेत्र होर खुल्हावांगे। प्रभू तेरे मिलण दी साडे कोल नहीं पहुंच, तैनूं आपणे घर मंगावांगे। तूं सोचयां किसे ना आवें सोच, तेरी सोच आपणी सोच बणावांगे। तेरे प्रेम अन्दर होए मदहोश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, अन्त तेरा घर वसावेंगा । जो प्रभ नूं अन्तर ध्याएगा। श्री भगवान वेखण आएगा। बण दरबान फेरा पाएगा। गुरमुख तेरा एहसान, तेरी झोली आप टिकाएगा। तेरे अन्दर वड़े हो मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाएगा। आपणा वखाए सच मकान, घर घर विच कुण्डा लाहेगा। दीवा जोती जगे महान, अन्ध अन्धेर गंवाएगा। शब्द सुणाए बिन कान, साचा राग अल्हाएगा। आपणा प्रेम प्याए जाम, मध इक्को इक वखाएगा। सीता सुरती मिले राम, रमईया आपणी गोद उठाएगा। घर कन्हय्या मिले शाम, बंसुरी इक्को राग

अल्लाएगा। घर ईसा मूसा मुहम्मद दए पैग़ाम, सच कलाम आप पढ़ाएगा। नानक निरगुण जणाए सति नाम, गोबिन्द गुर गुर वेख वखाएगा। जो दर बरदा बणे गुलाम, तिस गुरबत मेट मिटाएगा। गृह सजदा इक सलाम, झुक झुक सीस निवाएगा। साचे भगत कर परवान, भगती मार्ग इक वखाएगा। साचे सन्त सच निशान, धर्म निशाना इक प्रगटाएगा। साचे गुरमुख गुर गुर ढोला गाण, राग नाद ना कोए जणाएगा। साचे गुरसिख चरण कँवल करन ध्यान, धूढ़ी मस्तक टिक्का इक्को लाएगा। जिन्हां मिल्या श्री भगवान, तिन्हां गुरु गुर वेख खुशी वखाएगा। विष्न ब्रह्मा शिव करन प्रणाम, सीस सीस सर्ब झुकाएगा। गुरमुख तेरा उच्चा नाम, पुरख अकाल आप वडयाएगा। निहकर्मी करे पूरा काम, कर्म कांड मेट मिटाएगा। सोहँ ढोला गाउणा गान, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आएगा। आत्म परमात्म इक ईमान, धर्म इक्को इक वखाएगा। सतिजुग सच दुआरा लोकामत खोल्हे आण, अनक कल धारी आपणी कल वरताएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लख चुरासी विचों हरि भगत कर प्रधान, प्रधानगी दो जहान वखाएगा।

✪ २३ भाद्रों २०२० बिक्रमी जंडयाला गुरू तेजा सिँघ दे गृह ज़िला अमृतसर ✪

३१० १५

नव जोबन उठी जोत अकालण, सच दुआर खुशी मनाईआ। धुरदरगाही बण के मालण, साची खारी प्रेम उठाईआ। जुग चौकड़ी बण दलालण, दो जहानां वेखे चाईं चाईंआ। कलयुग अन्तिम चढ़ी भालण, लख चुरासी पड़दा लाहीआ। भगत सन्त आई उठालण, कलयुग सोया कोए रहिण ना पाईआ। साचा मार्ग आई सिखालण, सिख्या सच करे पढ़ाईआ। धुर दी घाल आई घालण, बण सेवक सेव कमाईआ। जन भगतां करे सच्ची प्रितपालण, प्रितपालक रूप वटाईआ। साची गोद आई स्वालण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। घर मन्दिर करन आई चानण, जगत अन्धेर गंवाईआ। पुच्छण आई मुरीदां हालण, मुर्शद आपणा भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वरताईआ। जोत अकालण बण के लाड़ी, दो जहानां वेख वखाईआ। लेखा जाण धुर दरबारी, धुर संदेसा इक सुणाईआ। सन्त सुहेले उठो आपणी वारी, श्री भगवान आप उठाईआ। जुग जन्म सतिगुर सरन जिन छुहाई दाढ़ी, तिन्हां लेखा लेखे पाईआ। विरले कन्त बणी साची नारी, गुरमुख दर घर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। जोत अकालण बण सुचज्जी, चारों कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। नौ खण्ड पृथमी विचों गुरमुख सज्जण रही लभ्भी, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। प्रेम प्रीती बणी लबी, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। वेखणहारी बीसवीं सदी, सद्दा

घर घर नाम जणाईआ। पुरख अकाल दी इक्को रहिणी गद्दी, गदागर सर्ब लोकाईआ। ज़ात पात मज़्ब दीन कोई ना दिसे हद्दी, हक़ हदीस इक पढ़ाईआ। कूड़ कुड़यारन जगत विचों कढ्ढी, लोकमात रहिण ना पाईआ। मिले वड्याई कबीर जुलाहे खड्डी, खड्डे सुट्टे बेवफ़ाईआ। दो जहान गुरमुख प्यार बद्धी, बन्दना जोड़ करे सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ। जोत अकालण कर श्रृंगार, नेत्र नैण नैण मटकाईआ। सचखण्ड दवारिओं हो तैयार, थिर घर आपणा पड़दा लाहीआ। सुन्न अगम्मों हो के बाहर, रूप अनूप लए वटाईआ। नव नौ जोबन दमकां रिहा मार, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। दो जहानां कर के आर पार, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आपणा पन्ध मुकाईआ। लख चुरासी कर विचार, माणस मानुख फोल फुलाईआ। गुरमुख विरले कर प्यार, आप आपणा बन्धन पाईआ। मुख घूँगट दए उतार, सच दीदार इक वखाईआ। बिन रसना जिह्वा करे गुफ़तार, सच सतार आप हिलाईआ। अन्दर वड़ के वाजां रही मार, धुर संदेसा इक सुणाईआ। उठ सज्जण मीत मुरार, वेला वक्त रही वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम आपणा भेव जणाईआ। जोत अकालण करे हासा, हँसमुख आप सुहाईआ। वेखण आई जगत तमासा, बेनज़ीर रूप वटाईआ। प्रेम प्यार दा फड़ के कासा, घर घर फिरे वाहो दाहीआ। कवण गुरमुख सच प्रीत प्यासा, बैठा इक ध्यान लगाईआ। जन्म जन्म दी पूरी करे आसा, कूड़ी तृष्ना मेट मिटाईआ। अन्दर बाहर देवे साथा, सगला संग निभाईआ। इक जणाए पूजा पाठा, तूं मेरा मैं तेरा तेरी मेरी इक पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। जोत अकालण चढ़ के डोली, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। जन भगत दुआरे होए गोली, बण सेवक सेव कमाईआ। आपणा भेव खुलाए हौली हौली, उच्ची कूक ना कोए जणाईआ। पूरा करे इकरार कौली, कीता इकरार भुल ना जाईआ। देवे वड्याई उपर धवली, धरनी धरत सोभा पाईआ। लेखा जाणे नूर खुदाई अवल्ली, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार आप कमाईआ। जोत अकालण मुका पन्ध, थक्की मादी खुशी मनाईआ। गुरमुख वेख चढ़या चन्द, करे सच रुशनाईआ। मिल सज्जण आया इक अनन्द, अनन्द अनन्द विचों प्रगटाईआ। दोहां मिल के ढोला गाया साचा छन्द, सो पुरख निरँजण इक्को इक सच्चा माहीआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन्म जन्म दी टुट्टी देवे गंढु, गंढुणहार गोपाल स्वामी दाता इक अख्वाईआ। ठाकर हो बणे बख्शंद, बख्शश आपणी झोली पाईआ। हरिजन दुआरा रही मंग, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। गुरमुख उठ रल मेरे संग, दूजा संग नज़र कोए ना आईआ। तेरी प्रीती चढ़े रंग, रंग मजीठी नैण शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल बेपरवाहीआ।

जोत अकालण रही दौड़, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। निरगुण सरगुण अन्दर लाया पौड़, डण्डा आपणा आप वखाईआ। लख चुरासी वेखे रीठा मिट्ठा कौड़, घट घट अन्दर फोल फुलाईआ। साची धार गुरमुखां जाए बौहड़, बौहड़ी बौहड़ी करे सर्ब लोकाईआ। लग्गी प्रीत निभाए तोड़, अद्धविचकार ना कोए तुड़ाईआ। साची जोड़ी देवे जोड़, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि हरि आपणी दया कमाईआ। जोत अकालण चढ़े चा, चाउ घनेरा इक रखाईआ। गुरमुख सज्जण मिल्या आ, मिलणी इक्को घर वखाईआ। साचे मन्दिर लए बहा, घर देवणहार वड्याईआ। आपणा पड़दा दए चुका, उहला रहिण कोए ना पाईआ। साचे अंगण लए बहा, मेहर नज़र उठाईआ। परमानंदी जाए समा, समाप्त करे खेड पराईआ। एका छन्दन दए सुणा, सोहँ ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग जुग आपणा रंग रंगाईआ। जोत अकालण होई खुश, खुशीआं नाल गीत इक्को गाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग जो बैठा रिहा चुप्प, सो अन्तिम आपणा फेरा पाईआ। कर प्रकाश अन्धेरे घुप्प, साचा नूर करे रुशनाईआ। निरगुण धारों निरगुण उठ, सरगुण देवे माण वड्याईआ। जिस गुर गोबिन्द बणाया सुत, सो साहिब भेव चुकाईआ। सच सुहञ्जणी सुहाए रुत्त, रुतड़ी आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। जोत अकालण चाउ घनेरा, घर इक्को नाम वधाईआ। जन भगतां कहे तूं मेरा मैं तेरा, नढ्ढी बाली आपणा रंग वखाईआ। एका घर वसे गुरु गुर चेरा, चेला गुर इक्को रूप वखाईआ। कूड़ी क्रिया भरमां ढाहे डेरा, सञ्झ सवेरा इक्को रंग वखाईआ। साढे तिन्न हथ्थ काया मन्दिर हरिजन तेरा वसदा रहे खेड़ा, खिड़की सतिगुर आप खुल्हाईआ। अन्तिम करे हक़ नबेड़ा, शाहो भूप बेपरवाहीआ। पार लगाए फड़ फड़ बेड़ा, मझधार ना कोए रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बख्शे सच सच्ची सरनाईआ। जोत अकालण आई वेहड़े, खुल्ल्हा वेहड़ा इक वखाईआ। चौथे युग मुक्कणे झेड़े, झगड़ा कोए रहिण ना पाईआ। उलटी लट्ठ आपे गेड़े, गेड़ा इक्को वार भवाईआ। काया अन्दर घर विच घर वसावे खेड़े, खेड़ा इक्को सोभा पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो बैठे कर कर जेरे, तिन्हां आपणा रंग रंगाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल फड़ के चाढ़े आपणे बेड़े, बेड़ा इक्को नाम वखाईआ। सच दुआरे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। जोत अकालण वेखे अन्त, अन्तष्करन वेख वखाईआ। मेल मिलावा गुरमुख साचे सन्त, गुरसिख इक्को घर वखाईआ। शब्द अनादी महिमा अगणत, सिफ्ती सिफ्त रही जस गाईआ। गढ़ तोड़ हँकारी हउमें हंगत, हँ ब्रह्म रही समझाईआ। दर दरवेश बण के मंगत,

बण निमाणी झोली डाहीआ। गुरमुख मैनूं लाउणा अंगन, अंगीकार इक हो जाईआ। रल मिल साची बणे संगत, प्रभ सगला संग वखाईआ। जिस दा भेव ना जाणे कोई पंडत, पढ़यां हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, हरिजन पड़दा आप चुकाईआ। जोत अकालण लँघ दरवाज़ा, घर आपणा आसण लाईआ। मेल मिलाए ग़रीब निवाज़ा, निवाज़श आपणी इक जणाईआ। शब्द अगम्म वजाए वाजा, तुरिया बैठी नैण शरमाईआ। प्रेम प्यार अन्दर मारे वाजां, धुर दी धार आप प्रगटाईआ। सच सुअम्बर रच के काजा, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। हरि भगत दुआरे साजण साजा, सज्जण मीत इक अख्वाईआ। ना कोई दूसर वजाए रबाबा, तन्दी तन्द सतार ना कोए हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां करे इक कुड़माईआ। जोत अकालण वर इक्को पा, घर साचे खुशी मनाईआ। गुरमुख सूरा मिल्या आ, जिस दी आदि जुगादि ओट तकाईआ। कूड़ी क्रिया कूड़ा दए मिटा, सच सुच सर्ब समझाईआ। जोती नूर करे रुशना, पड़दा आपणा आप उठाईआ। साची तूरा नाद दए सुणा, अनहद नादी नाद वजाईआ। हाज़र हज़ूरा मिले बेपरवाह, पर्दानशीं आपणा मुख वखाईआ। फड़ बांहों गले लए लगा, सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। आदि निरँजण दया कमा, जोत निरँजण जोत मिलाईआ। दीनां नाथ दर्द दुःख भय भंजन भव सागर पार दए करा, अन्तिम मेला सहिज सुभाईआ। भगत भगवान दोहां दा दिसे इक्को थाँ, दूजा धाम नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वर इक्को इक जणाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन पकड़े बांह, बाबल इक्को नज़री आईआ।

१५

✪ २३ भाद्रों २०२० बिक्रमी जंडयाला सन्तोख सिँघ दे गृह ज़िला अमृतसर ✪

जन भगतां प्रभ आसा पूर, आसा पूरन आप कराइंदा। नाता तोड़ जगत कूड़, साचा मार्ग इक वखाइंदा। अन्तर आत्म देवे नूर, अज्ञान अन्धेर मेट मिटाइंदा। साचा देवे इक सरूर, रस इक्को इक वखाइंदा। प्रगट होवे हाज़र हज़ूर, घर मन्दिर वेस वटाइंदा। सर्ब कला आपे भरपूर, ख़ाली भाण्डे आप भराइंदा। वसणहारा नेड़े दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। बख्शणहारा चरण धूढ़, मस्तक टिक्का इक्को लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची आसा पूर वखाइंदा। साची आसा पूरे सतिगुर, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। लेखा जाणे धुरदरगाही धुर, धुर मस्तक वेख वखाईआ। शब्द अगम्मी चढ़े घोड़, शाहसवारा वेस वटाईआ। कलयुग अन्त भगवन्त निरगुण हो के जाए बौहड़, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ।

अन्दर वड़ के मन्दिर चढ़ के वेखे कर के ग़ौर, गहर गम्भीर आपणी दया कमाईआ। पंच विकार घर घर पावे शोर, कूड़ी क्रिया करे लड़ाईआ। दिवस रैण ठग्गी जावण पंज चोर, दर दरबान सके ना कोए हटाईआ। जन भगतां श्री भगवान दी पई लोड़, नेत्र रो रो रहे ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, घर मेला सहिज सुभाईआ। भगत जनां आसा पुनी, इच्छया पूर आप हो जाइंदा। प्रगट हो वड दाता गुणी, गुणवन्ता खेल कराइंदा। सच पुकार इक्को सुणी, एकँकार वेख वखाइंदा। लख चुरासी सृष्ट सबाई छाणी पुणी, गुरमुख विरला नज़री आइंदा। जिस जन सुणाए आपणी धुनी, धुन आत्मक राग अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे पार लँघाइंदा। आसा पूर होए भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। जुग चौकड़ी देवे माण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सिफ्ती ढोला गायण ज़िमीं असमान, लोक परलोक रहे जस गाईआ । जिन्हां बख्शे चरण ध्यान, देवणहार सच्ची सरनाईआ। तिन्हां चुके जम की काण, काल नगारा डौरु डंका ना कोए वजाईआ। एथे ओथे दो जहान करे परवान, सगला संग आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख तृष्ना दए बुझाईआ। गुरमुख तृष्ना जाए बुझ, अग्नी अग्ग रहिण ना पाईआ। आपणा आप जाए सुझ, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। भेव खुलाए सतिगुर गुझ, दूई द्वैत डेरा ढाहीआ। सच प्रीती इक्को लुझ, इष्ट गुरदेव स्वामी इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मन्दिर इक सुहाईआ। गुरमुख आसा साचे मन्दिर, हरि सतिगुर पूर कराइंदा। वेख वखाए काया डूंग्घी कन्दर, माटी भाण्डा फोल फुलाइंदा। बजर कपाटी तोड़े जन्दर, साची हाटी आप खुल्हाइंदा। मन वासना बन्ने बन्दर, दहि दिशा ना उठ उठ धाइंदा। भाग लगाए अन्धेरे कन्दर, निरगुण जोत जोत रुशनाइंदा। करे खेल सूरा सरबँगन, सूरबीर आपणा रंग रंगाइंदा। अट्ठे पहर वज्जे मृदंगन, मृदंगा इक्को नाम उपाइंदा। साची चोली चाढ़े रंगन, रंग रंगीला आप रंगाइंदा। गुरमुख किसे दुआरे ना जाए मंगण, सतिगुर पूरा नाम झोली आप भराइंदा। लोकमात चढ़ाए साचा चन्दन, चन्द चांदनी नैण शरमाइंदा। खेले खेल विच ब्रह्मण्डन, वरभण्डी खोज खुजाइंदा। आवण जावण लख चुरासी जम का फास तोड़े बन्धन, फाँसी गल ना कोए लटकाइंदा। जोत ललाटी मस्तक लाए चन्दन, तिलक इक्को इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख इच्छया पूर कराइंदा। गुरमुख पूरी करे इच्छया, निरइच्छत दया कमाईआ। नाम अमोलक पाए भिच्छया, बिन दमां आप वरताईआ। साची देवे धुर दी सिख्या, आत्म परमात्म इक पढ़ाईआ। लेखा लेख ना मिटे लिख्या, मेटणहारा नज़र कोए ना आईआ। गुरमुख गुरसिख कदे ना

३१४
१५

जाए भिटया, ज़ात पात वंड ना कोए वंडाईआ। पुरख अकाल जिस घर सज्जण आपणा डिठया, तिस नाता तुट्टे जगत लोकाईआ। हरि का नाम रस जाणे मिट्ठया, फिका रस सर्ब वखाईआ। सृष्ट सबाई अन्तिम मिथ्या, साचा संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे लए तराईआ। गुरमुख आसा होए पूरी, निर्धन सरधन दए वड्याईआ। मनसा कोए ना रहे अधूरी, हद्द हदूद दए गंवाईआ। पुरख अकाल नाल मिल के दूजे घर दी लैणी ना पए मंज़ूरी, मुश्कल सब दी हल्ल कराईआ। जिस नूं मिलण पिच्छे सूफ़ी कटदे गए मजबूरी, सो मजबूरन आपणा मेल कराईआ। जिस दी हद्द हदूद दिसे दूरी, दूर दुराडा नेड़े आईआ। साहिब सतिगुर नाल मिल के सृष्ट सबाई दिसे कूड़ी, कूड़ा नाता तोड़ तुड़ाईआ। गुरमुख विरला लाए मस्तक धूढ़ी, जिस आपणी मेहर नज़र उठाईआ। सर्ब कला हरि भरपूरी, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। जन भगतां मिले आदि जुगादि ज़रूरी, ज़रूरत सब दी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख गुरसिख तृष्ना दए बुझाईआ। गुरमुख गुरसिख मेटे तृष्ना, तृखा नज़र कोए ना आईआ। जिस दे हुक्म अन्दर शिव ब्रह्मा विष्ना, दर बैठे सीस झुकाईआ। तिस दा खेल किसे ना दिसणा, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जन भगत दुआरे गुरमुखां देवे इक सिखना, सिख्या सच सच पढ़ाईआ। धुर दा लेख आप लिखणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। वड्डा वड्डा वड होए नीक निकना, नीकन नीका आपणा भेव छुपाईआ। लेखा जाणे जीव जीअ का, हर घट अन्दर डेरा लाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत आपणे मिलण दा दस्से तरीका, तरा तरा समझाईआ। पुरख अकाल भाणा मन्नो मीठा, मिठत इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जन भगतां देवे इक्को वर, आसा तृष्ना इच्छया भिच्छया साची झोली पाईआ।

३१५

१५

✪ २३ भाद्रों २०२० बिक्रमी जंडयाला सुरैण सिंघ दे घर ज़िला अमृतसर ✪

श्री भगवान सर्ब स्वामी, एकँकार इक अख्वाइंदा। निरगुण सरगुण अन्तरजामी, हरि घट घट वेख वखाइंदा। बोध अगाध अगम्मी बाणी, धुर दी धार आप उपाइंदा। गुर अवतार कथ कहाणी, महिमा सिफ्त सिफ्त सालाहइंदा। पीर पैगम्बर बण के दानी, दाता दया आप कमाइंदा। खेले खेल दो जहानी, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाइंदा। भूपत भूप राज राजानी, शाह पातशाह आप हो आइंदा। सचखण्ड दी सच निशानी, लोकमात प्रगटाइंदा। करे खेल इक लासानी, लाशरीक वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी कार कमाइंदा। जुग जुग कार करे करतार,

हरि करता वड वड्याईआ। निरगुण सरगुण लै अवतार, गुर गुर नाद शब्द शनवाईआ। नाअरा बोल सति जैकार, हक़ हकीकत दए समझाईआ। बंद ताला खोल्ह कवाड़, पड़दा दूई द्वैत चुकाईआ। कर प्रकाश बहत्तर नाड़, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। आत्म परमात्म बण दलाल, साचा वणज इक कराईआ। सोई सुरती सति उठाल, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तर आपणा भेव खुल्हाईआ। अन्तर खोल्हे आपणा भेव, अभेद आप जणाइंदा। वसणहारा धाम अटल सदा निहकेव, निहचल आपणा आसण लाइंदा। जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण करे सेव, सेवक आपणी कार कमाइंदा। हँ ब्रह्म पारब्रह्म जणाए साचा मेव, रस इक्को आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तर आत्म खोज खोजाइंदा। अन्तर आत्म करे विचार, बेसमझ समझ विच ना आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण वसे बाहर, बेपरवाह वड्डी वड्याईआ। गीता ज्ञान जिस दा करे ध्यान, सो शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। अञ्जील कुरान सिफ्ती सिफ्त करन पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। खाणी बाणी करे निमस्कार, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। गुर अवतार जिस दर भिखार, दर मंगण चाईं चाईंआ। सो साहिब सतिगुर इक निरँकार, निरगुण वड्डा वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी देवणहार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढ्ढाईआ। लेखा जाण धुर दी धार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रचना आप रचाईआ। साची रचना रचणहारा, हरि हरि जू वेख वखाइंदा। आदि जुगादी जगत कारा, जुग जुग वेस वटाइंदा। धुर फ़रमाण सच्ची सरकारा, सच संदेसा इक अलाइंदा। लख चुरासी अन्दर वसे वसणहारा, रूप अनूपा वेस वटाइंदा। कागद कलम ना लिखणहारा, लिख लिख लेख ना कोए मुकाइंदा। बेअन्त बेअन्त गुर अवतार पीर पैगम्बर सर्ब पुकारा, भेव अभेदा हथ्थ किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अनभव आपणा खेल खिलाइंदा। अनभव खेल करे भगवान, भगवन नज़र किसे ना आईआ। निरगुण सरगुण देवणहारा दान, वस्त अमोलक इक वरताईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी सच महल्ले उच्च अटले बैठा इक्को काहन, घनईया आपणी धार जणाईआ। रूप रंग रेख ते वसे बाहर, साचा राम रहमत आप कमाईआ। देवणहार सदा पैग़ाम, पीर पैगम्बर करे पढ़ाईआ। जुग चौकड़ी आदि जुगादि नित नवित्त जिस दा इक इस्लाम, इस्म आअज़म इक समझाईआ। दो जहान झुलदा रहे जिस निशान, धर्म निशाना इक उठाईआ। जिस दी सिफ्त सति नाम, नाम सति करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो पुरख वेख वखाईआ। सो पुरख हरि पुरख अगम्म, अगम्मड़ी कार कमाइंदा। मात पिता कोए ना लए जम्म, जननी जन गोद ना कोए सुहाइंदा। पंज तत माटी काया ख़ाकी दिसे ना

कोए तन, ततव रूप ना कोए वटाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी ना कोई छप्पर ना कोई छन्न मन्दिर मस्जिद मट्ठ शिवदुआला गुरदुआर वंड ना कोए वंडाइंदा। ना कोई राग ना कोई कन्न, ना कोई मनसा ना कोई मन, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ढोला सोहला कोई ना गाइंदा। ना कोई दौलत माया दिसे धन, जगत ख़ज़ीना कोल ना कोए रखाइंदा। ना कोई नेत्र नैण होए अन्न्ह, अक्ख प्रतख रूप ना कोए जणाइंदा। ना कोई घड़े ना कोई लए भन्न, घाड़त घड़त विच ना आइंदा। ना कोई सूर्या ना कोई चन्न, रवि ससि नूर ना कोई डगमगाइंदा। करे खेल श्री भगवन, भगवन आपणी कार कमाइंदा। आदि बेड़ा ल्या बन्न्ह, जुग जुग चप्पू नाम लगाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर घल्ल, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पतिपरमेश्वर वेख वखाइंदा। पतिपरमेश्वर पारब्रह्म, ब्रह्मवेता इक अख्वाईआ। आदि जुगादि जाणे आपणा कम्म, निहकर्मी कर्म कमाईआ। पीर पैगम्बर गुर अवतार गुरदेव स्वामी देवे नाम धन, बण वणजारा हट्ट चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह प्रभ खेल करदा, करनहार अख्वाइंदा। सचखण्ड दुआरे साचे चढ़दा, तख्त निवासी सोभा पाइंदा। सोहँ राग इक्को पढ़दा, निश्अक्खर आपणा रूप वखाइंदा। शब्दी धार घाड़न घड़दा, बण ठठयार सेव कमाइंदा। थिर घर अन्दर आपे वड़दा, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। करे खेल नरायण नर दा, नर हरि आपणी कार कमाइंदा। ना जींदा ना कदे मरदा, जीवण जुगत आपणे हथ्थ रखाइंदा। दर दरवेश गोला बरदा, बण सेवक सेव कमाइंदा। जुग चौकड़ी भगत भगवान आपे फड़दा, फड़ बांहों आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा रंग आप रंगाइंदा। साचा रंग रंगे निरँकार, निरगुण आपणी दया कमाईआ। जगत नेत्र नज़र ना आए संसार, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। घर घर वड़या काम क्रोध लोभ मोह हँकार, कूड़ी क्रिया अग्नी रही लगाईआ। मिले हरि ना मीत मुरार, मित्र प्यारा संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अन्तर आत्म आप समझाईआ। अन्तर आत्म लैणा जाण, सो सतिगुर आप जणाईआ। तेरा मेरा इक ज्ञान, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। तेरा मेरा इक ध्यान, ध्यान ध्यान विच रखाईआ। तेरा मेरा इक अस्थान, सच दुआरे डेरा लाईआ। तेरा मेरा इक मकान, काया हट्ट वज्जे वधाईआ। तेरा मेरा इक निशान, निरगुण निरगुण दए झुलाईआ। तेरा मेरा इक दान, वस्त अमोलक आप वरताईआ। तेरा मेरा मेरा तेरा इक्को काहन, तूं मेरा मैं तेरा गोपी काहन इक्को नज़री आईआ। तूं मेरा मैं तेरा राम, तेरा राम तेरे रंग समाईआ। लेखा जाण जीव जहान, जीवण जुगत इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अन्तर आत्म इक

दरसाईआ। अन्तर आत्म कर दरस, परमात्म आपणी दया कमाइंदा। पूरब मिटे पिछली हरस, हवस होर ना कोए वधाइंदा। आपणी अंस करे तरस, मेहर नज़र उठाइंदा। जग सुत्ती उठ के कर परख, पारखू आपणा रंग चढ़ाइंदा। जिस नूं लभ्भदयां कोटन कोटि काल बीते असंख बरस, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। तिस दा मेला अन्त नधड़क, काम क्रोध लोभ मोह हँकार मन मति बुध अद्धविचकार ना कोए अटकाइंदा। तिस साहिब दी सच दुआरे इक्को चढ़त, चढ़दा लैहन्दा इक्को रंग वखाइंदा। जिस दुआरे ना कोई लिख्त ना कोई पढ़त, बिन लिख्यां पढ़या लेखा पार कराइंदा। जिस पुरख अकाल दी नानक गोबिन्द लिख के गए शर्त, सो शहिनशाह आपणा वेस वटाइंदा। निरगुण धार हो के आया परत, प्रतिनिध आपणा नाम वड्याइंदा। ना कोई सोग़ ना कोई हरख़, चिन्ता ग़म ना कोए जणाइंदा। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां उते करे तरस, जगत भुल्लयां मार्ग लाइंदा। अमृत मेघ इक्को बरस, जुग जन्म दी अग्नी आप बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हर घट आपणा डेरा लाइंदा। हर घट अन्दर हरिजू वड़, निरगुण आपणा आप छुपाईआ। साचे पौड़े बैठा चढ़, चढ़दा नज़र किसे ना आईआ। सच महल्ले बैठा दड़, आपणा अंग ना कोए हिलाईआ। करे खेल नरायण नर, नर हरि आपणी धार समझाईआ। गुरमुख विरला सन्त सुहेला परम पुरख पतिपरमेश्वर लए वर, वर इक्को इक जणाईआ। सरन सरनागत स्वामी जाए पड़, पड़दा उहला इक उठाईआ। जींवदयां जग जाए मर, मरना जीवत रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर अन्दर रिहा वड़, सच सिँघासण सोभा पाईआ। सच सिँघासण आत्म पलँघ, पावा चूल ना कोए बणाइंदा। उपर बैठ सूरा सरबँग, शाह पातशाह हुक्म सुणाइंदा। अनहद वज्जे इक मृदंग, नाद अनादी राग अलाइंदा। अमृत जल मंगे मंग, धार धार विचों आप प्रगटाइंदा। वेखे खेल हरि ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड आपणा हुक्म वरताइंदा। निरगुण नूर चाढ़ चन्द, चन्द चांदनी नैण शरमाइंदा। सुरत शब्द मिला दोहां सुणाए सोहँ छन्द, तूं मेरा मैं तेरा दोहां इक्को अंगण बहाइंदा। जन्म जन्म दी टुट्टी गंढ, गंढु इक्को हरि रखाइंदा। अन्तरजामी पाए ठंड, दुखड़ा दर्दी दर्द मिटाइंदा। सच सवाणी होए ना रंड, कन्त कन्तूहल इक्को नज़री आइंदा। लेखा चुक्के कूड़ पखण्ड, सच मार्ग इक समझाइंदा। अन्तर देवे इक अनन्द, निजानंद रूप वटाइंदा। सच दुआरे आपे लँघ, आपणा पड़दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, अन्तर आत्म मेल मिलाइंदा। अन्तर अन्तर मेल मिलाप, मिलणी इक्को घर कराईआ। सच सुनेहड़ा अजपा जाप, जगजीवण दाता दए दृढ़ाईआ। नाता तुट्टे तीनों ताप, त्रैगुण माया डेरा ढाहीआ। पंज पंज ना कोए संताप, संसा रोग दए मुकाईआ। होए सहाई अनाथां नाथ, नाथ अनाथी वेख वखाईआ। आत्म परमात्म

जणाए साची गाथ, गावत गावत आपणा रंग रंगाईआ। लहिणा देण चुकाए मस्तक माथ, पूरब लेखा झोली पाईआ। गुरमुख तेरा इक्को पूजा पाठ, इष्ट गुरदेव स्वामी इक्को नज़री आईआ। इक्को सरोवर तीर्थ ताट, अठसठ लेखा रिहा मुकाईआ। इक्को प्रीती चरण नात, हरि चरण सच्ची सरनाईआ। इक्को उत्तम तेरी ज़ात, आत्म परमात्म दए समझाईआ। मेटे रैण अन्धेरी रात, कूड़ अमावस दए खपाईआ। बंद कवाड़ी खोल्हे ताक, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। पार उतारे आपणे घाट, पतण बहि के सच्चा माहीआ। गोबिन्द पूरा करे भविक्ख्त वाक, साचा लेखे आपे पाईआ। जन भगतां बण के सज्जण साक, गुरमुख साचे नाल रलाईआ। सच धर्म दा खोल्हु हाट, चारे वरन दए समझाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश अन्तर वेखो आत्म राम इक्को ज़ात, राम रमईया हर घट थाईंआ। जिस ने बेटा जणया पूत दसराथ, दहि दिशा वेखे चाईं चाईंआ। जिस दा घनईया होया त्रिलोकी नाथ, चौदां लोक आपणे विच छुपाईआ। जिस दी मूसा ईसा दस्सदे गए इक आदात, अदावत विच कदे ना आईआ। जिस दी मुहम्मद पढ़दा गया सफ़ात, सफ़री आपणा सफ़र मुकाईआ। तिस दा खेल सदा कायनात, कलमा इक्को इक समझाईआ। आदि जुगादि दो जहान कदी ना पाए वफ़ात, फ़तवा सके ना कोए लगाईआ। जिस दा प्याला आबेहयात, हयाती हयाती विचों दए बदलाईआ। सो साहिब सतिगुर साख्यात, सच सुल्तान सहिज सुखदाईआ। जन भगतां देवे नाम दात, सच भण्डारा नाम वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, वखावणहारा इक घर, घर मन्दिर अन्दर डेरा लाईआ।

✪ २३ भाद्रों २०२० बिक्रमी जंडयाला सवरन सिँघ दे गृह ज़िला अमृतसर ✪

सुख दुःख दोवें आए, घर बैठे डेरा लाईआ। गुरमुख सुख विच समाए, मन सीतल सति कराईआ। मनमुख करन हाए हाए, दुखी दर्द ना कोए वंडाईआ। माणस मानुख भेव ना आए, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। पंज तत जो खेल रचाए, काया माटी हट्ट चलाईआ। जन्म मरन आपणे हथ्थ रखाए, लख चुरासी गेड़ भवाईआ। देवणहारा इक रघराए, दो जहान बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी इक कमाईआ। सुख कहे मैं तेरा सागर, दर तेरे ओट तकाईआ। जन भगतां वसां काया गागर, घर साचे सोभा पाईआ। सच दुआरे मिले आदर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जुग जुग मेरा इक्को वणज सौदागर, धुर दा हट्ट चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा रंग इक वखाईआ। दुःख कहे मैं दुख्यार, दुखियां नाल सोभा पाइंदा। मन हँकारी मेरा यार, सद मेरा

संग निभाइंदा। अन्दर रोवे धाहां मार, बाहरों नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाइंदा। दु:ख सुख दोवें कहिण, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। इक दूजे दा चुक्के देण लहिण, देणा कोए रहिण ना पाईआ। साक नहीं ना कोई सैण, सगला संग ना कोए बणाईआ। झूठा नाता माता पिता भाई भैण, कूड़ी क्रिया बन्धन पाईआ। बिन हरि विछोड़े सब दे वहण, वैंहदी धार सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल इक रघुराईआ। दु:ख कहे मैं तेरा बरदा, दर घर साचे सेव कमाईआ। तेरे कोलों साहिब जो डरदा, दूर दुराडा धक्का देवां लाईआ। मेरा खेल जिस अन्दर वड़दा, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दित्ता साचा वर, मेरी इच्छया पूर कराईआ। सुख कहे प्रभ पाया मीत, घर सतिगुर नज़री आईआ। गुरमुख सुणन साचा गीत, अन्तर इक ध्यान लगाईआ। मनमुख रसना होई पलीत, कूड़ी क्रिया नाल प्रनाईआ। करे खेल इक अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दोहां मिलावा इक्को घर, घर साचा इक सुहाईआ। महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सर्ब जीआं दा जाणी जाण, जानणहार जगत जुगत जीवण नाल मिलाईआ।

✪ २३ भाद्रों २०२० बिक्रमी जंडयाला नरिन्दर कुमार दे गृह ज़िला अमृतसर ✪

बिरध बालां इक भगवान, घट घट रिहा समाईआ। जिस जन देवे आपणा ज्ञान, आत्म परमात्म बूझ बुझाईआ। अन्तर बख्शे सच ध्यान, जगत बसन्तर दए बुझाईआ। नज़री आए इक निशान, धर्म दुआरा इक वखाईआ। चरण कँवल इक ध्यान, सरन सच सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, नाम निरँकारा झोली पाईआ। नाउँ निरँकार आत्म रंग, काया अन्दर आप वखाइंदा। सच दुआरे हरि जू लँघ, डूंघी कवरी भँवरी फोल फुलाइंदा। शब्द नाद वजाए मृदंग, धुन आत्मक आप सुणाइंदा। निरगुण जोत चाढ़ चन्द, सच प्रकाश इक कराइंदा। सोहँ ढोला सुणाए छन्द, बत्ती दन्द ना कोए वड्याइंदा। निज घर देवे इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच वखाइंदा। कूड़ी क्रिया ढाहे कंध, भाण्डा भरम भउ भंनाइंदा। हरिजन हरि हरि साची डोरी बन्न्हे तन्द, नाम तन्दी इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बिरध बालां इक्को नज़री आइंदा। बिरध बाल वेखे हरि बालक, बचपन सब दा लेखे लाईआ। सति सरूपी बण के ख़ालक, ख़लकत वेखे थाउँ थाईंआ। भगत भगवान बणे सदा

प्रितपालक, जुग जुग आपणी सेव कमाईआ। मेट मिटाए निंद्रा आलस, जगत दलिद्री दलिद्र गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणे मेले घर, तिस आत्म वज्जे वधाईआ। आत्म गाए परमात्म गीत, इक्को राग अलाईआ। काया होवे ठांडी सीत, त्रैगुण अग्नी तत बुझाईआ। शब्द स्वामी आवे चीत, जगत ठगौरी कोए रहिण ना पाईआ। सति सतिवादी मिले रीत, रीती इक्को इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन मेले आपणे दर, तिस काया मन्दिर अन्दर पड़दा लाहीआ। काया मन्दिर अन्दर चुक्के पड़दा, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। त्रैगुण अग्नी माया सड़दा, पंज तत आपणे लेखे पाइंदा। भेव खुल्हाए घर विच घर दा, घर घर विच मेल मिलाइंदा। जुग जुग हरिजन विरला तरदा, लख चुरासी शहु दरयाए आप रुढ़ाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर श्री भगवान जिस जन मिलदा, मिल मिल आपणा रंग रंगाइंदा। निशान वखाए अगम्मी तिल दा, तिलक ललाटी आप लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बिरध बाल बाल अञ्याणा आप बणाए सुघड़ स्याणा, जिस जन गुरमति साची सच समझाइंदा।

✪ २३ भाद्रों २०२० बिक्रमी जंडयाला सुरैण सिंघ दे गृह ज़िला अमृतसर ✪

तख्त निवासी हरि सुल्तान, शहिनशाह इक्को इक अख्वाइंदा। जुग चौकड़ी हो प्रधान, सच प्रधानगी नाम जणाइंदा। चारे युग कर कल्याण, चारों कुण्ट वेख वखाइंदा। चारे वरनां दे निशान, साचा मार्ग इक समझाइंदा। चार यारी कर परवान, परवाना इक्को हथ्थ फड़ाइंदा। करे खेल श्री भगवान, भगवन आपणी कार कमाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। साचा मन्दिर वेख मकान, काया अन्दर डेरा लाइंदा। जोती दीप जगे महान, नूर नुराना डगमगाइंदा। शब्दी राग सच्ची धुन्कान, घर साचे आप उपाइंदा। अमृत आत्म पीण खाण, रस रसीया इक जणाइंदा। आत्म परमात्म खेल महान, हरि करता आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नर हरि आपणा खेल वखाइंदा। नर हरि खेल करे करतार, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। जुग चौकड़ी सेवादार, विष्न ब्रह्मा शिव हुक्म मनाईआ। करोड़ तेतीसा दे आधार, सुरप्त देवणहार वड्याईआ। धुर संदेसा वारो वार, गुर अवतार पीर पैगम्बर आप जणाईआ। लेखा लेख लिख्त अगम्म अपार, कलम शाही बन्धन इक बंधाईआ। साची सिख्या सर्ब सिखाल, गुर मन्त्र दए जणाईआ। काया मन्दिर अन्दर पुरख अकाल लओ भाल, बाहरों खोजण कोए ना पाईआ। शब्दी गुर बण दलाल, साचा वणज हट्ट जणाईआ।

चौदां लोक दए वखाल, सच श्लोक इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मन्त्र इक दृढ़ाईआ। साचा मन्त्र नाम नमो सति, सति स्वामी आप जणाइंदा। सर्ब जीवां देवे ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या इक पढ़ाइंदा। अन्तर आत्म जाणे मित गत, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। सच जणाए वार थित, घड़ी पल आपणे हथ्थ रखाइंदा। श्री भगवान जन भगतां जुग जुग करे हित, हितकारी फेरा पाइंदा। वेख वखाए नित नवित्त, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे चार वरन, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आप जणाईआ। नेत्र खोल्हे हरन फरन, जो जन हिरदे हरि वसाईआ। करता पुरख करनी करन, कीमत घर घर आपे पाईआ। जन भगतां चुकाए मरन डरन, भय भउ ना कोए रखाईआ। सन्त सुहेले साचे पौड़े चढ़न, महल अटल इक्को नज़री आईआ। आत्म परमात्म ढोला पढ़न, सोहँ साचा राग अलाईआ । मिले सरनाई सतिगुर चरण, चरण चरणोदक इक्को मुख चुआईआ। नाता तुट्टे ज़ात पात वरन बरन, आत्म ब्रह्म हर घट नज़री आईआ। पुरख अकाल साची सरन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लख चुरासी लहिणा आप चुकाईआ। लख चुरासी वेखे आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जुग चौकड़ी देवे जाप, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग करे पढ़ाईआ। पीर पैगम्बरां गुर अवतारां बण के माई बाप, पिता पूत गोद सुहाईआ। एथे ओथे दो जहान चरण कँवल बंधाए नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। निरगुण सरगुण बण के सज्जण साक, पंज तत काया चोला आप हंढ्ढाईआ। साची सिख्या जणाए बिन जगत जमात, पट्टी इक्को इक लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि साचा रहबर इक अख्वाईआ। साचा रहबर इक रहीम, रहमत आपणी आप कराइंदा। दाता करता बण करीम, कुदरत कादर खेल वखाइंदा। वसणहारा धाम अज़ीम, शहिनशाह आपणा रंग रंगाइंदा। जुग चौकड़ी जन भगतां होए अधीन, मुरीद मुर्शद वेख वखाइंदा। दर बरदा बण मस्कीन, दर बदर आपणी अलख जगाइंदा। लेखा जाणे लोक तीन, चौदां हट्ट वेख वखाइंदा। चौदां तबकां करे आप तरमीम, बणत बनवारी आपणा रंग रंगाइंदा। आपणी धार रखे महीन, जगत नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणा हुक्म वरताइंदा। जुग जुग हुक्म करे दातार, दाता निरगुण इक अख्वाईआ। सेवा ला गुरू अवतार, पीर पैगम्बर देवे सिफ्त सालाहीआ। लेखा जाण चौकड़ी जुग चार, नव नौ चार वज्जे वधाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करदा रिहा ख़बरदार, सच संदेसा इक सुणाईआ। चतुर्भुज मीत मुरार, आदि शक्ति आपणा संग निभाईआ।

३२२
१५

सति सतिवादी खेल करे अपार, अपरम्पर आपणा वेस वटाईआ। भगत भगवन्त लए उठाल, साचे सन्त सतिगुर आप जगाईआ। लेखा चुक्के शाह कंगाल, ऊँच नीच राउ रंक ना कोए वड्याईआ। जिस जन उपर होए आप दयाल, दीनन आपणी गोद बहाईआ। काया मन्दिर अन्दर वखाए सच्ची धर्मसाल, दीवा बाती कमलापाती जोती जाता इक्को इक जगाईआ। अन्त नेड़ ना आए काल, महाकाल बैठा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा नाम वर, तिस आपणा पड़दा दए उठाईआ। तिस जन पड़दा देवे खोल्ह, आप आपणी दया कमाइंदा। अन्तर आत्म आपे बोल, धुर दा राग आप सुणाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म वसे कोल, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। सुरती शब्दी जाए मौल, मौला आपणी कार कराइंदा। अमृत आत्म प्याए सच्ची पौहल, रस इक्को इक वखाइंदा। देवे वड्याई उपर धौल, जिस जन आपणे चरण बहाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नव नौ चार पूरा करे कीता कौल, कौल भुल्ल कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सचखण्ड दुआरे बैठा रहे अडोल, दो जहान श्री भगवान ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज चारे खाणी चारे बाणी चार कुण्ट चार वरन चार यारी चौथे पद मेल मिलाइंदा। जीव अन्दर जीव पहिचाण, स्वच्छ सरूप जणाईआ। जीव अन्दर जीव वसे भगवान, भगवन आपणा डेरा लाईआ। जीव अन्दर जीव रूप हो के मिले आण, आप आपणा मेल मिलाईआ। सो जीव होए परवान, जिन्हां आपणे कोल बहाईआ। बिन जीवां तों प्रगट होए ना कदे भगवान, जीव भगत ढोला भगवान गाईआ। दोहां दा इक्को रहे निशान, जगत निशाना आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस मन्दिर वड़े आण, तिस कुण्डा खिड़की देवे लाहीआ। कुण्डा खिड़की जाए लथ्थ, सतिगुर पूरा दया कमाईआ। कर खेल पुरख समरथ, समरथ दए वड्याईआ। जिस हथ्थ नाल मिलाए हथ्थ, हथ्थकड़ी जम की दए तुड़ाईआ। जीव अन्दर जीव मार्ग रिहा दस्स, जीवण जुगत जगत समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरे वस, दोहां विच भेत रहे ना राईआ। आत्म परमात्म मेला हस्स हस्स, काया मन्दिर वज्जे वधाईआ। इक दूजे कोलों दोवें ना जाण नस्स, पारब्रह्म ब्रह्म वेखण चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे साचा वर, तिस जीव विचों जीव बुझाईआ। जीव विचों जीव जाए बुझ, बुझारत आपणा नाम रखाइंदा। जिस दा भेव खोल्हे पड़दा गुझ, दूई द्वैत परे हटाइंदा। तिस सब कुछ जाए सुझ, बिन समझाइआं समझ विच समझ पाइंदा। सतिगुर पूरा गुरसिखां गुरमुखां जन भगतां कोलों अन्दर वड़ के रिहा पुच्छ, हौली हौली आपणा हुक्म मनाइंदा। जग माया विच क्यों बैठे रुस्स, रुस्सयां नज़र किसे ना आइंदा। आपणी धारों आपे पए उठ, जोती नूर नूर रुशनाइंदा। जिस उते दयाल हो के

जाए तुठ, तिस जीव आपणा भेव खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम दान, तिस भगतां करे सच पहचान, बेपहचान पहचान विच आपे नज़री आइंदा।

अग्गे यारी सी, हुण याराना। अग्गे तीर सी, हुण निशाना। अग्गे सिँघ शेर सी, हुण विष्नूं भगवाना। अग्गे लड़न वासते दलेर सी, हुण लेखा जाणे दो जहानां। अग्गे सज्जणां मिलदा घेर घेर सी, हुण अन्तर आत्म देवे ज्ञाना। अग्गे लौंदा थोड़ी डेर सी, हुण होया मेहरवाना। घविंड विच बहि के गेड़या गेड़ सी, आप आपणा मुख छुपाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, करता पुरख करनहार नौजवाना।

✪ २३ भाद्रों २०२० बिक्रमी एकल गड्डा बूटा सिँघ दे गृह ज़िला अमृतसर ✪

पुरख अकाल दर सोहे एक, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। गुर अवतार मंगण टेक, पीर पैगम्बर ध्यान लगाईआ। भगत भगवान रहे वेख, निज नेत्र खुल्हाईआ। जुग चौकड़ी धर धर आवे भेस, वेस अवल्लड़ा रूप वटाईआ। शाहो भूप बण नर नरेश, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त लिखणहारा लेख, धुर दा लेखा आप प्रगटाईआ। आत्म परमात्म करे हेत, ब्रह्म पारब्रह्म वड्याईआ। दो जहानां वेखे खेड, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देस इक सुहाईआ । साचा देस सुहञ्जणा, सचखण्ड सति सरूप। करे खेल आदि निरँजणा, बेपरवाह महिमा अनूप। आदि जुगादी दर्द दुःख भय भंजना, वेखणहारा चारे कूट। निरगुण सरगुण साचा सज्जणा, पंज तत लेखा जाणे जगत कलबूत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेले खेल हक़ महिबूब। हक़ महिबूब परवरदिगार, बेपरवाह वड्डी वड्याईआ। मुकामे हक़ खेल न्यार, नूरी जलवा नूर रुशनाईआ। सचखण्ड दुआरे हो उज्यार, जोती जाता डगमगाईआ। धुर दी बाणी बोल जैकार, चारे खाणी दए समझाईआ। चारों कुण्ट करे विचार, चार यारी बन्धन पाईआ । सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी करता पुरख मीत मुरार, सगला संग इक हो जाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग वेखे वारो वार, नित नवित्त कर कर हित आपणा फेरा पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करे ख़बरदार, धुर संदेसा आप सुणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी देवणहार सहार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा इक सुहाईआ।

३२४
१५

सच दुआरा सोभावन्त, सचखण्ड इक्को इक वड्याइंदा। करे खेल श्री भगवन्त, सो पुरख निरँजण आपणी कार कमाइंदा। जुग चौकड़ी महिमा अगणत, शास्त्र सिमरत वेद सिफ्त सालाहइंदा। आत्म परमात्म एका नाम मणीआ मंत, गुरदेव स्वामी साचा मार्ग इक वखाइंदा। लेखा जाण जीव जंत, जागरत जोत डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा आप कराइंदा। धुर दा लेखा धुर दरबार, दरगाह साची आप रखाईआ। जुग चौकड़ी मेटणहार, थिर रहिण कोए ना पाईआ। गुर अवतार आवण वारो वार, लोकमात सेव कमाईआ। उच्ची कूकण करन पुकार, पुरख अकाल ढोला गाईआ। रसना जिह्वा बोल जैकार, सृष्ट सबाई जाण समझाईआ। खाणी बाणी इक ध्यान, नाम निधान नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक रखाईआ। साचा मार्ग आदि जुगादि, जुग चौकड़ी आप चलाइंदा। सतिजुग त्रेता देवे दाद, द्वापर कलयुग राह वखाइंदा। गुर अवतार वजावण नाद, पीर पैगम्बर राग अलाइंदा। स्वांगी हो के वरते स्वांग, रूप रंग रेख नज़र किसे ना आइंदा। साचे हुजरे उच्च महल्ले शब्द अगम्मी देवे बांग, दो जहानां श्री भगवाना परवरदिगार आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरा इक उपाइंदा। सच दुआरा इक उपा, खण्ड सच वज्जे वधाईआ। बैठा रहे बेपरवाह, बेनज़ीर रूप वटाईआ। सच संदेसा दए घला, धुर कलाम इक पढ़ाईआ। खाणी बाणी नाउँ धरा, लोकमात करे शनवाईआ। काग़ज़ कलम लिखे शाह, लेखा लिख्त रूप वटाईआ। अन्तिम भेव सके कोए ना पा, बेअन्त बेअन्त कह कह पल्लू गए सर्ब छुडाईआ। दोए जोड़ पए सरना, सरनगति इक रखाईआ। सारे मंगदे गए दुआ, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। तेई अवतार गए ध्या, भगत अठारां नैण उठाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद सजदा गए करा, निउँ निउँ लागण पाईंआ। नानक गोबिन्द इक्को इष्ट गए मना, पुरख अकाल सच्ची सरनाईआ। कलयुग अन्तिम जोती धार निरगुण वेस लए वटा, ना कोई पिता ना कोई माईआ। सच महल्ले उच्च अटले सम्बल डेरा लए ला, छप्पर छन्न चार दीवार ना कोए बणाईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले भगत भगवान लए उठा, सोई सुरती आप जगाईआ। शब्द हाणी मेल मिलाए सहिज सुभा, घर मेला एका थाईंआ। साचा मार्ग दए वखा, आत्म परमात्म परमात्म आत्म जोड़ जुड़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया दए मिटा, रैण अन्धेरी रहिण ना पाईआ। जूठा झूठा मन्दिर देवे ढाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा वेस आप वटाईआ। साचा वेस वटाए अवल्ला, अवल्ल आपणा नूर रखाईआ। वसणहारा निहचल धाम अटला, अटल पदवी इक जणाईआ। पावे सार जलां थलां, समुंद सागर वेखणहारा डूंघी खाईआ। जोती शब्दी धार आपे रला, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। सच

संदेस बोध अगाध शब्दी हुक्म सुनेहड़ा घल्ला, दो जहान करे पढ़ाईआ। गुर अवतार फड़ाए पल्ला, पल्लू आपणा नाम बंधाईआ। धार जणाए इक बिसमिल्ला, बिस्मिल आपणे नाल कराईआ। चार युग कटदा रिहा छिला, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी, ख़ालक ख़लक वेखे चाईं चाईंआ। ख़ालक ख़लक वेखे मेहरवान, मिहबान बीदो आपणी दया कमाइंदा। कूड़ी क्रिया कलयुग अन्तिम मेट निशान, साचा मार्ग इक लगाइंदा। शरअ शरीअत वेखे आण, अमाम अमामा वेस वटाइंदा। चौदा तबक होण हैरान, साचा सबक इक पढ़ाइंदा। चौदां लोक वेखे दुकान, भेव अभेदा आप खुलाइंदा। सतिजुग साचा देवे दान, वस्त अमोलक इक वरताइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा सुरप्त इन्द गुर अवतार पीर पैगम्बर साध सन्त जीव जंत भगत भगवन्त ढोला इक्को गाण, साचा नाम इक दृढ़ाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चार कुण्ट दहि दिशा झुल्ले इक निशान, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आदि जुगादी जुग करता आप झुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। कूड़ी क्रिया मेटे जग, लोकमात रहिण ना पाईआ। त्रैगुण बुझाए लग्गी अग्ग, अमृत मेघ इक बरसाईआ। हँस बणाए फड़ के कग्ग, सोहँ हँसा जाप जपाईआ। बिन मकयों काअबयों कराए हज्ज, घर काया मन्दिर अन्दर हुजरा इक सुहाईआ। सच महल्ले बहे सज, आत्म सेजा डेरा लाईआ। शब्द अगम्म वजाए नद, अनहद नादी नाद सुणाईआ। जगत दुआर मुक्के पन्ध, नौ दुआरे डेरा ढाहीआ। सुरती शब्दी मेला गाए इक्को छन्द, सोहँ राग अलाईआ। घर घर विच मिले अनन्द, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। लेखा चुक्के भेख पखण्ड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे साचे दर, दर दरवाज़ा इक वखाईआ। दर दरवाज़ा एका खोल्ह, हरि दर्दी दर्द वंडाइंदा। अबिनाशी करता बोल अगम्मी बोल, धुर फ़रमाणा आप सुणाइंदा। नाम कंडे तोले तोल, सच तराज़ू इक उठाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग दीन मज़्हब जो करदा रिहा घोल, ज़ात पात वंड वंडाइंदा। आप बैठा रिहा अडोल, जग नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। कलयुग अन्त प्रगट होवे उपर धोल, धरनी धरत धवल चरणां हेठ दबाइंदा। गोबिन्द नाल पूरा करे कीता कौल, कौल इकरार आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। निरगुण आपणा वेस वटाए, जोती जोत जोत रुशनाईआ। सचखण्ड दुआर इक सुहाए, सच सिँघासण डेरा लाईआ। भूपत भूप राज राजान शाह पातशाह आप हो जाए, हुक्मरान इक अख्वाईआ। धुर संदेसा इक घलाए, शब्दी शब्दी राग अलाईआ। दो जहान फड़ उठाए, सोया कोए रहिण ना पाईआ। गुर अवतार दर बुलाए, पीर पैगम्बर नट्ठे आवण वाहो दाहीआ। भगत

सन्त संग रलाए, साचा संग बणाईआ। सच मृदंग इक वजाए, मर्द मर्दाना दया कमाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाए, पुरीआं लोआं पड़दा आप उठाईआ। साचा चन्द इक चमकाए, जगत चन्द नैण शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर दुआर इक वड्याईआ। दर दुआरा वड्डा सचखण्ड, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस घर बहि के करे अगम्मी वंड, लेखा लिख्त ना कोए जणाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां पाए बंद, बंदीख़ाना इक वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग कोटन कोटि नाम सुणाया साचा छन्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। गुर अवतार गाउँदे आए, लोकमात वज्जी वधाईआ। पुरख अकाल ध्यौंदे आए, इक्को ओट तकाईआ। नेत्र नैण शरमाउँदे आए, अक्ख प्रतख ना कोए खुल्हाईआ। दोए जोड़ वास्ता पाउँदे आए, बेपरवाह तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। थाउँ थाईं लेख अपारा, सो सतिगुर आप जणाईआ। कलयुग अन्तिम खेल न्यारा, हरि करता आप वखाईआ। कल कल्की लै अवतारा, कूड़ी क्रिया मेट मिटाईआ। भगतां करे सच प्यारा, भगवन आपणा रंग रंगाईआ। लेखा जाणे अन्दर बाहरा, गुप्त ज़ाहरा खोज खुजाईआ। सच सुणाए इक्को नाअरा, जै जैकार करे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लोकमात फेरा पाईआ। लोकमात फेरा पा, हरि जू आपणा खेल कराइंदा। कलयुग अन्त बणे मलाह, हरिजन बेड़ा आप चलाइंदा। भगत भगवन्त लए जगा, जागरत जोत डगमगाइंदा। सन्त सुहेले लए उठा, गुर चेले रंग रंगाइंदा। गुरमुख गोदी लए बहा, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। गुरसिख पड़दा देवे लाह, दूई द्वैती पड़दा ना कोए रखाइंदा। साचा मन्त्र दए सिखा, सिख्या इक्को इक समझाइंदा। बिन अक्खीआं अक्खर दए पढ़ा, निष्अक्खर आप प्रगटाइंदा । बिन सखीआं मंगल देवे गा, शब्द अनादी नाद सुणाइंदा। बिन बत्तीआं चानण दए करा, जोत निरँजण डगमगाइंदा। बिन हट्टीआं आपणा नाम सौदा दए विका, करता कीमत कोए ना लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम वेख वखाइंदा। कलयुग अन्तिम वेखे हरि, हरि जू आपणी दया कमाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी आवे डर, चार कुण्ट धीरज धीर ना कोए धराईआ । काम क्रोध लोभ मोह हँकार रिहा लड़, आसा तृष्ना कूड़ी क्रिया डंका रही वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अन्तिम आपणा फेरा पाईआ। कलयुग फेरा बेपरवाह, नव नौ वेख वखाइंदा। चारों कुण्ट अन्धेरा गया छा, साचा चन्द ना कोए चमकाइंदा। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ गुरुदुआर नेत्र रोवण मारन धाह, सांतक सति ना कोए वरताइंदा। मुल्लां शेख़

मसायक होए बेवफ़ा, फ़रमांबरदार नज़र कोए ना आइंदा। पंडत पांधे करन गुनाह, साचा सिदक ना कोए निभाइंदा। ग्रन्थी पन्थी धीआं भैणां रहे तका, नेत्र अक्ख ना कोए शरमाइंदा। एका भुल्लया गुर का नाँ, हरि का रूप नज़र किसे ना आइंदा। नाता तुट्टा पुत्रां माँ, पिता पूत मेल ना कोए मिलाइंदा। हँस बुद्धी होई काँ, कलयुग जीव काग वांग कुरलाइंदा। कोई खाए सूर कोई खाए गां, अमृत रस हथ्थ किसे ना आइंदा। बिन सतिगुर पूरे कोई ना पकड़े अन्तिम बांह, लख चुरासी विचों बाहर ना कोए कढ्ढाइंदा। सदी चौधवीं गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे कर गए नांह, सिर हथ्थ ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। कलयुग रैण अन्धेरी रात, चारों कुण्ट नज़री आईआ। साची दिसे ना कोए जमात, कूड़ी क्रिया करन पढ़ाईआ। लेखा लिखे ना कोई कलम दवात, शाही नेत्र नैणां नीर वहाईआ। तीस बतीस शरअ शरीअत भुल्ली सर्ब आयत, कलमा नबी रसूल हक़ हकीकत ना कोए समझाईआ। खाणी बाणी बोध अगाध आत्म परमात्म गाए ना कोई गाथ, छत्ती राग उच्ची कूकण देण दुहाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान कोई ना देवे साथ, कलयुग भुल्ले पांधी राहीआ। नेत्र रोवण तीर्थ ताट, अठ सठ डेरा रिहा ढाहीआ। गंगा जमना सुरस्ती गोदावरी पत सके ना कोई राख, नंगे पुरुष तारीआं रहे लाईआ। साचा लेखा मुक्के ना किसे मात, लहिणा झोली कोए ना पाईआ। गोबिन्द नानक अन्तिम इक्को गए आख, आखर आवे बेपरवाहीआ। जिस रचना रची आदि, सो वेखे चाईं चाईंआ। सन्त सुहेले सज्जण लए लाध, लख चुरासी विचों खोज खुजाईआ। फड़ बांहों लए काढ, कलयुग तत्ती वा ना लागे राईआ। घर मन्दिर सुणाए नाद, अगम्मी राग अलाईआ। बिन रसना देवे स्वाद, रस आत्म इक चखाईआ। सदी बीसवीं गुरमुख विरला जाए जाग, जिस नेत्र नैण अक्ख खुल्लाईआ। नव नौ कूड़ी क्रिया माया ममता लग्गी आग, पंज तत काया रही जलाईआ। दीपक जोत ना जगे चराग़, घर घर अन्धेरा गया छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। नूर ज़हूर करे रुशना, मेहरवान वेस वटाईआ। सच मुनारा दए सुहा, सोभावन्त डेरा लाईआ। मुरीद मुर्शद लए उठा, मुफ्त आपणी सेव कमाईआ। पूरब जन्म बख्शे सर्ब गुनाह, मार्ग अग्गे इक समझाईआ। दीन मज़्ह़ब नाता दए तुड़ा, साचा साका इक सुणाईआ। ज़ात पात दए खपा, ऊँच नीच ना कोए वड्याईआ। आत्म परमात्म दए समझा, पड़दा आपणा आप चुकाईआ। घर घर विच मेला लए मिला, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। सज्जण सुहेला नज़री जाए आ, नज़र आपणी आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। कलयुग अन्तिम

श्री भगवान, भगवन आपणा वेस वटाईआ। लेखा जाण दो जहान, निरगुण सरगुण करे पढ़ाईआ। सतिजुग साचा देवे दान, वस्तू सति सति वरताईआ। लख चुरासी नज़री आवे इक्को काहन, इष्ट देव इक गोसाईंआ। रूप जणाए इक्को राम, रमईया बण बेपरवाहीआ। सच अमाम दए पैग़ाम, परवरदिगार सिफ्त सालाहीआ। दाता बणे पुरख अकाल, बिधाता आपणी धार चलाईआ। उत्तम ज़ाता विच जहान, सच जमाता लए बणाईआ। चारे वरनां इक ज्ञान, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश करे पढ़ाईआ। नानक निरगुण लिख्या होए परवान, सच परवाना दए वखाईआ। इष्ट मनाउणा इक भगवान, दृष्ट सब दी दए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, अन्तर अन्तर साचा मन्त्र जगत बसन्तर आप बुझाईआ। साचा मन्त्र नाम गुरदेव स्वामी, नमो सति सति जणाइंदा। जिस दी सिफ्त करे चार युग चार बाणी, चारे खाणी राह वखाइंदा। जिस दा नूर दो जहानी, सो लासानी वेख वखाइंदा। कलयुग अन्त लख चुरासी दस्से फानी, फ़ैसला सब दा आपणे हथ्थ रखाइंदा। गोबिन्द गुर तीर निशाना मारे कानी, चिल्ला इक्को इक उठाइंदा। चण्ड प्रचण्ड खड़ग खण्डा इक चमकानी, दोहरी धार आप वखाइंदा। गुरमुख विरला सतिजुग तेरी रहे निशानी, दूजा रहिण कोए ना पाइंदा। अठ सठ तीर्थ सरोवर वेखणहारा पाणी, जल थल महीअल आपणा फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग सुणाए इक ज्ञानी, आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को नाम समझाइंदा।

✪ २३ भाद्रों २०२० बिक्रमी ज्ञान सिँघ दे गृह भोरछी ज़िला अमृतसर ✪

सो पुरख निरँजण शाह पातशाह, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। हरि पुरख निरँजण बेपरवाह, बेपरवाही खेल खिलाइंदा। एकँकारा साचा हुक्म चला, धुर फ़रमाना आप अलाइंदा। आदि निरँजण कर रुशना, जोती जाता डगमगाइंदा। श्री भगवान झुलाए सच निशान, धर्म निशाना इक वखाइंदा। अबिनाशी करता मार्ग दस्से राह, रहबर इक्को इक वखाइंदा। पारब्रह्म प्रभ भेव रिहा चुका, पड़दा उहला ना कोए जणाइंदा। सचखण्ड दुआरा इक सुहा, महल अटल इक वड्याइंदा। दरगाह साची सोभा पा, मुकामे हक़ नूर प्रगटाइंदा। थिर घर दुआरा दए खुल्हा, घर घर विच वेख वखाइंदा। एका इच्छया आप प्रगटा, साची भिच्छया झोली पाइंदा। निरगुण निरगुण मेल मिला, घर साचे रंग रंगाइंदा। नार कन्त वेस वटा, सेज सुहञ्जणी सोभा पाइंदा। जननी जन आप अख्वा, सुत दुलारा, एका जाइंदा। सीस जगदीश हथ्थ टिका, मेहर नज़र

आप उठाइंदा। धुर दी बाणी दए समझा, साची कार आप कराइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव नाल रला, सगला संग आप निभाइंदा। त्रैगुण माया झोली पा, पंचम जोड़ा जोड़ जुड़ाइंदा। लख चुरासी वंड वंडा, चारे खाणी वेख वखाइंदा। चारे बाणी ढोला गा, चारों कुण्ट नाद अलाइंदा। चारे युग अक्ख खुल्हा, नेत्र नैण इक चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि करता कार कमाइंदा। हरि करता करे अगम्मी कार, लिखण पढ़न विच ना आईआ। सचखण्ड निवासी वसणहार सच दुआर, दरगाह साची सोभा पाईआ। दीआ बाती कमलापाती एका एक कर उज्यार, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। साचा मन्दिर खोल्ह कवाड़, घर वसे बेपरवाहीआ। धुरदरगाही बण के लाड़, शाह पातशाह आपणा वेस वटाईआ। रूप रंग रेख ते वसया बाहर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह हरि इक इकल्ला, अक्ल कलधारी खेल कराइंदा। वसणहारा सच महल्ला, सच दुआरे सोभा पाइंदा। जोती शब्दी धार रला, निरगुण निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार आपणे हथ्थ रखाइंदा। साची कार करे करतार, करनी आपणे विच छुपाईआ। आदि पुरख हो तैयार, अपरम्पर आपणी रास रचाईआ। गोपी काहन खेल अपार, मण्डल मण्डप वज्जे वधाईआ। साचा गाए मंगलाचार, गीत गोबिन्द आप अलाईआ। ना कोई लेखा लिखणहार, लिख लिख लेख ना कोए समझाईआ । खेले खेल अपर अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पड़दा आप उठाईआ। साचा पड़दा देवे लाह, मुख नक़ाब ना कोए रखाईआ। नूर विचों नूर धरा, ज़हूर इक्को इक प्रगटाईआ। परवरदिगार सच खुदा, राम रहीम इक हो जाईआ। शाहो भूप बण शहिनशाह, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ रचन रचा, आकाश प्रकाश करे रुशनाईआ। धरत धवल आप सुहा, जल बिम्ब दए वड्याईआ। लख चुरासी बन्धन पा, आप आपणा संग वखाईआ। आत्म परमात्म वंड वंडा, घर घर बैठा डेरा लाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म वेस वटा, ब्रह्मवेता वेख वखाईआ। धुर दा राग इक सुणा, शब्द अगम्मी ढोला गाईआ। अमृत रस इक चुआ, निझर झिरना धार वहाईआ। साचा मन्दिर कर रुशना, नूरो नूर आप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दाता भिखारी आपणी कार कमाईआ। निरगुण आदि बणया दाता, दानी हरि अख्वाइंदा। खेले खेल पुरख बिधाता, बिध आपणी आप समझाइंदाउ। निरगुण निरगुण जोड़ नाता, सरगुण आपणा बन्धन पाइंदा। कर खेल तमाशा, काया मन्दिर अन्दर वेख वखाइंदा। नाम निधान गाए गाथा, बिन रसना जिह्वा आप सुणाइंदा। वेखे विगसे पुरख समराथा, वेखणहारा नज़र ना आइंदा। सेवा करे बण बण दासी दासा, सेवक साची सेव कमाइंदा। आपे इच्छया पूरन आसा, आसावंद आप

३३० १५

अख्वाइंदा। आपे प्रेम प्रीती रहे प्यासा, तृखा आप बुझाइंदा। खेले खेल पृथ्मी आकाशा, गगन गगनंतर खोज खुजाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण जीवां जंतां दे दिलासा, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर आत्म सेजा भोग बलासा, सेज सुहञ्जणी आप वड्याइंदा। गोपी काहन बण बण पाए रासा, सीता राम रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी कमाए करने योग, युगती आपणे हथ्थ रखाईआ। निरगुण सरगुण धुर संजोग, दो जहानां मेल मिलाईआ। वेखणहारा चौदां लोक, लोक परलोक फेरा पाईआ। सुणावणहारा नाम श्लोक, साचा ढोला इक्को गाईआ। बख्शणहारा अन्तिम ओट, पुरख अकाल चरण सरनाईआ। जगावणहारा निर्मल जोत, जोती जोत करे रुशनाईआ। वसावणहारा साचा कोट, काया बंक वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार आप कमाईआ। साची कार करे करतार, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। जुग चौकड़ी पावे सार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढ्ढाइंदा। निरगुण सरगुण करे प्यार, मेहर मुहब्बत इक समझाइंदा। नाता जोड़ विच संसार, समुंद सागर खोज खुजाइंदा। भगत भगवन्त लए उठाल, साचे सन्त संग निभाइंदा। गुरमुख लेखा चुक्के शाह कंगाल, राउ रंक ना कोए वखाइंदा। गुरसिखां बणे आप दलाल, शब्द विचोला फेरा पाइंदा। लख चुरासी विचों

३३१ भाल, हरिजन आपणा मेल मिलाइंदा। अन्दर बाहर सुरत संभाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची ३३१

१५ करनी आप कमाइंदा। साची करनी करता पुरख, वड पुरखोतम आप कराईआ। ना कोई सोग़ ना कोई हरख़, चिन्ता १५

ग़म ना कोए जणाईआ। निरगुण सरगुण देवे दरस, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। अमृत मेघ देवे बरस, साची धारा आप वहाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सति सरूप आए परत, प्रतिनिध आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। साचा लेखा रखे हथ्थ, आदि जुगादि भेव कोए ना पाइंदा। करे खेल पुरख समरथ, दूजा संग ना कोए मिलाइंदा। जुग चौकड़ी मार्ग दस्स, गुर अवतार पीर पैगम्बर धंदे लाइंदा। निरगुण हो के अन्तर वस, सरगुण आपणा मेल मिलाइंदा। सच प्रीती देवे रस, रस इक्को इक चखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा आप जणाइंदा। धुर दा लेखा देवे खोल्ह, खोल्हणहार वड्डी वड्याईआ। जुग चौकड़ी तोलदा रिहा तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। जीव जंत साध सन्त दस्सदा रिहा अगम्मी बोल, पंज तत करे शनवाईआ। अनहद नाद वजौंदा रिहा ढोल, ब्रह्मण्डां खण्डां रिहा सुणाईआ। आप बैठा रिहा अडोल, सच दुआरे डेरा लाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात वरन बरन करदा रिहा घोल, जगत अखाड़ा इक लगाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा खेल आप समझाईआ। जगत अखाड़ा वेखे जुग चार, चौकड़ी आपणा बन्धन पाईआ। हुक्मे अन्दर घल्ल अवतार, गुर गुर आपणा राग जणाईआ। खेल करे अगम्म अपार, पीर पैगम्बर सिफ्त सालाहीआ। भगत भगवान रहे पुकार, उच्ची कूकण मारन धाहींआ। सन्त बोलण सच जैकार, नाअरा इक्को इक सुणाईआ। गुरमुख मंगण दरस दीदार, नेत्र नैण नैण उठाईआ। गुरसिख मंगण चरण धूढ़ी छार, मस्तक टिक्का इक्को लाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन पुकार, नेत्र नैण नैण उठाईआ। करोड़ तेतीसा हाहाकार, सुरप्त बैठा ध्यान लगाईआ। सतिजुग वेखे आपणी वार, त्रेता पड़दा रिहा चुकाईआ। द्वापर पुच्छे सांझा यार, कलयुग घर घर अलख जगाईआ। ना कोई मिले मीत मुरार, लग्गी यारी ना तोड़ निभाईआ। लेखा लिख लिख गए गुरू अवतार, पीर पैगम्बर मात जणाईआ। कलमा नबी रसूल गए सिखाल, कायनात कर पढ़ाईआ। एका जलवा नूर हक़ जुमाल, ज़ाहर ज़हूर इक रुशनाईआ। करे खेल बेमिसाल, जिस दी मिसल सके ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण आपणा रंग वखाईआ। निरगुण रंग वखाए अगम्म, जग नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। मात कुक्ख ना पए जम्म, पिता गोद ना कोए बहाइंदा। पवण स्वास ना लए दम, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। हरख़ सोग ना कोए ग़म, चिन्ता चिखा ना कोए तपाइंदा। हड्ड मास नाड़ी ना कोई चम्म, चम्म दृष्टी वंड ना कोए वंडाइंदा। पंज तत ना दिसे तन, हड्ड मास नाड़ी जोड़ ना कोए जुड़ाइंदा। ना कोई छप्परी ना कोई छन्न, मस्जिद मन्दिर गुरुदुआर शिवदुआला मट्ठ ना कोए दसाइंदा। हथ्थ मूँह ना कोई कन्न, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाइंदा। ना कोई घड़े ना लए भन्न, घड़न भंनणहार आपणी धार आप चलाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग जुग बेड़ा आपे बन्न, बन्नणहार आप हो जाइंदा। कर प्रकाश सूरज चन्न, धरत धवल आप सुहाइंदा। देवे ज्ञान आत्म अन्न, परमात्म आपणा पड़दा लाहइंदा। लेखा जाणे बुध मति मन, मन मनसा वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि अन्त जुगा जुगन्त जुग करता आपणी कार कमाइंदा। जुग करता करे खेल करतार, हरि वड्डा वड वड्याईआ। गुर अवतार लेखा लिख लिख गए विच संसार, बोध अगाध शब्द शनवाईआ। सब दा इष्ट इक निरँकार, दृष्ट इक्को वार खुल्हाईआ। रामा वशिष्ट करे प्यार, गुरदेव स्वामी साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। दोज़ख़ बहिश्त ना देवे कोई साड़, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। नरक स्वर्ग ना कोए प्यार, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। चौदां लोक ना कोई सहार, चौदां तबक ना कोए सरनाईआ। चौदां विद्या ना कोई आधार, चौदस चन्द ना कोए रुशनाईआ। इक इकल्ला पुरख अबिनाश, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी सांझा यार, सगला संग आप निभाईआ।

३३३ ३३३

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दी करनी कार कमाईआ। धुर दी करनी करे भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। जिस दा गुर अवतार दे के गए ब्यान, लेखा लोकमात समझाईआ। पीर पैगम्बर गा गा गए गान, कलमा नबी रसूल इलाहीआ। भगत दस्सदे गए निशान, सच निशाना इक वखाईआ। सन्त मंगदे गए दान, बण भिखारी अलख जगाईआ। सो साहिब वेखे दो जहान, दो जहानां वाली वेस वटाईआ। जिस नूं आदि जुगादि जुगा जुगन्तर मन्नदे सच्चा काहन, लख चुरासी आप हंढाईआ। जिस दा सचखण्ड दुआर सच मकान, सच सिँघासण डेरा लाईआ। सो कलयुग अन्त होए आप मेहरवान, मिहबान बीदो आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा दए चुकाईआ। सब दा लेखा श्री भगवन्त, पुरख अबिनाशी आप चुकाईआ। जुग चौकड़ी करनहारा अन्त, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाईआ। वेखणहारा लख चुरासी जीव जंत, घर घर पड़दा रिहा उठाईआ। तोड़नहारा गढ़ हउमें हंगत, हँ ब्रह्म इक समझाईआ। बोध अगाधा हो के पंडत, साची सिख्या इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। निरगुण फेरा अन्तिम धार, धरनी धरत धवल सुहाइंदा। लेखा जाण तेई अवतार, विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलाइंदा। भगत अठारां सुण पुकार, अठ दस पैंडा आप मुकाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद रोवण ज़ारो ज़ार, अल्ला राणी नेत्र नैण शरमाइंदा। नानक गोबिन्द कर के गए पुकार, उच्ची कूक कूक सर्ब सुणाइंदा। कलयुग अन्तिम प्रगट होवे पुरख अकाल, अक्ल कलधारी आपणा वेस वटाइंदा। सच दुआरा प्रगट करे इक्को धर्मसाल, चार वरनां माण दवाइंदा। लेखा चुक्के शाह कंगाल, ऊँच नीच राउ रंक नज़र कोए ना आइंदा। दीनां बंधप दीनां नाथ ठाकर होए आप दयाल, ठोकर घर घर नाम लगाइंदा। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले गुरमुख गुर गुर लए उठाल, सुरती शब्दी मेल मिलाइंदा। आपे सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा वेस वटाइंदा। अन्त चले अवल्लड़ी चाल, चाल निराली इक रखाइंदा। निरगुण हो के बणे दलाल, सरगुण आपणे हट्ट विकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम आपणा खेल रचाइंदा। अन्तिम खेल करे भगवाना, भगवन आपणी दया कमाईआ। निहकलंक हो प्रधाना, नाम प्रधानगी इक वखाईआ। शब्द अगम्मी सच तराना, लोआं पुरीआं आप सुणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया तोड़े माणा, अभिमान रहिण कोए ना पाईआ। जूठा झूठा मेटे निशाना, सच सुच दए वड्याईआ। कूड़ी क्रिया बन्ने गाना, बीस बीसा सगन मनाईआ। भगत भगवान करे परवाना, घर साचे मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कल अन्तिम वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम वेखे हाल, हालत सब दी फोल फुलाईआ। कलयुग जीव होए कंगाल, नाम वस्त हथ्थ किसे ना आईआ।

कूड़ी क्रिया त्रैगुण माया प्या जंजाल, पंच विकार करी कुड़माईआ। आसा तृष्ना घाली घाल, मन वासना खुशी मनाईआ। जगत सरोवर नहौंदे रहे ताल, अमृत आत्म अशनान ना कोए कराईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ गुरुदुआरे रहे भाल, काया अन्दर सतिगुर नज़र किसे ना आईआ। जगत दीपक रहे बाल, साचे मन्दिर दीआ बाती ना कोए टिकाईआ। बिन हरि नामे होए कंगाल, शाह सुल्तान देण दुहाईआ । सदी चौधवीं आए ज़वाल, ज़ेर ज़बर सब दी दए मिटाईआ। अलिफ़ ये इक्को सबर प्याला दए प्याल, सिदक सबूरी इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम वेखे हाल मुरीद, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। जिन्हां गुर गोबिन्द प्रेम प्रीती दे के गया रसीद, तिन्हां आपणा रंग रंगाईआ। वेले अन्त कर गया ताकीद, तकवा इक्को इक जणाईआ। जिस दे पिच्छे हुन्दे रहे शहीद, सो अन्त शहादत देवे गवाहीआ। गुरमुखो गुरसिखो तुहाड्डा बणे मुरीद, मुश्कल देवे हल्ल कराईआ। करे खेल आप अजीब, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेखण आईआ। कलयुग अन्तिम वेखण आवेगा। प्रभ आपणा वेस वटावेगा। नर नरेश जोत जगावेगा। साचा देस इक वसावेगा। धुर दा लेख, लेख प्रगटावेगा। मुच्छ दाढ़ी ना कोए केस, सीस जगदीश ना मूंड मुंडावेगा। आदि जुगादि रहे हमेश, जन्म मरन ना कोए वखावेगा। निरगुण हो के दए संदेस, सरगुण जीव जंत समझावेगा। अन्दर वड़ के खोल्हे भेत, बाहरों पड़दा माया पावेगा। रुत्त सुहञ्जणी वेखे चेत, फुल्ल फुलवाड़ी आप महकावेगा। गुरमुख साचे करे हेत, भगत भगवन्त आप जगावेगा। नज़री आए नेतन नेत, दूर दुराडा पन्ध मुकावेगा। निरगुण हो के खेडे खेड, जगत खडारी वेख वखावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम फेरा पावेगा। कलयुग अन्त प्रभू प्रभ आएगा। दीन दयाल वेस वटाएगा। काल महाकाल हुक्म सुणाएगा। लाड़ी मौत नाल रलाएगा। लख चुरासी वंड वंडाएगा। राए धर्म आप समझाएगा। चित्रगुप्त लेख वखाएगा। कलम शाही बंद कराएगा। कागज़ रूप ना कोए वटाएगा। शरअ शरीअत मेट मिटाएगा। साची आयत इक पढ़ाएगा। जमात इक्को इक रखाएगा। वफ़ात कदे आप ना पाएगा। आबेहयात सर्ब प्याएगा। सच लुग़ात इक वखाएगा। अलिफ़ ये ना कोए जणाएगा। साचा नेह इक लगाएगा। अमृत मेंह आप बरसाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग रुतड़ी वेख वखाएगा। कलयुग रुतड़ी वेख वखावेगा। चारों कुण्ट फेरा पावेगा। नौ खण्ड फोल फुलावेगा। सत्तां दीपां डेरा ढावेगा। लख चुरासी पड़दा लाहवेगा। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वेला वक्त चुकावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलकाती वेस वटावेगा। कल काती वेस वटावेगा । धुर दा साथी बण के आवेगा। नानक गोबिन्द

आखी पूर करावेगा। वेद व्यासा लिख के गया साखी, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा उच्चे टिल्ले पर्बत डेरा लावेगा। ईसा मूसा खोल् के गए ताकी, अन्त दरवाज़ा आप जणावेगा। मुहम्मद मंगदा गया दाती पंज तत ख़ाकी, अन्तिम नूर ज़हूर ज़ाहर रूप आप प्रगटावेगा। दो जहान लहिणा देणा चुकाए बाकी, कर्ज़ा मकरूज सिर ना कोए धरावेगा। कलयुग मेटे अन्धेरी राती, सतिजुग साचा चन्द चढ़ावेगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर उच्ची कूक इक्को ढोला सारे आखी, आख़र आपणी खेल खिलावेगा। आदि जुगादी कमलापाती, कँवल नैण इक मटकावेगा। चार वरन अठारां बरन राउ रंक पढ़ाए इक जमाती, सोहँ ढोला इक समझावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग लेखा लेखे लावेगा। कलयुग लेखा लेखे लाएगा। कूड़ी क्रिया मेट मिटाएगा। मूर्ख मूढ़े अन्त खपाएगा। गुरमुख सूरे आप जगाएगा। नाद वजाए अनहद तूरे, तुरत आपणा मेल मिलाएगा। सर्ब कला बण भरपूरे, सच भण्डारा इक वखाएगा। लेखा चुक्के नेड़ दूरे, दूर दुराडा नेरन नेरा नज़री आएगा। जिन्हां देवे मस्तक धूढ़े, दुरमति मैल प्रभू धवाएगा। जुग चौकड़ी करनहारा बचन पूरे, भविक्ख्त वाक आप समझाएगा। शाह सुल्तानां राज राजानां तोड़े मात गरूरे, तख्त ताज नज़र कोए ना आएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग तेरी आसा पूरे, पूरी आसा कर वखाएगा। सतिजुग आसा इक्को रख, सो साहिब आप जणाईआ। भगत भगवान होए वस, दूजा इष्ट ना कोए धराईआ। आत्म परमात्म मार्ग देवे दस्स, ब्रह्म पारब्रह्म करे कुड़माईआ। इक दुजे दा ढोला गावण जस, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। खेले खेल पुरख समरथ, महिमा कथ्थ आप जणाईआ। सेवक बण के चलाए रथ, रथ रथवाही दया कमाईआ। लेखा जाणे तत अठ्ठ, नौ दुआरे फोल फुलाईआ। दस्म दुआरी मेला हस्स हस्स, हँस-मुख आपणा भेव चुकाईआ । साची सेजा चढ़े भज्ज, आत्म अन्तर डेरा लाईआ। इक सिँघासण बहे सज, श्री भगवान बेपरवाहीआ। साचा नद जाए वज्ज, अनरंगा नाद सुणाईआ। जगत दवारा लँघे हद्द, हदूद आपणी दए वखाईआ। कर खेल सूरा सरबग्ग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि सज्जण एका घर वसाईआ। सतिजुग बैठा रिहा उडीक, नेत्र नैण ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सदी वीहवीं लिख के गए तरीक, तरीका तर्‍ा तर्‍ा समझाईआ। प्रगट होवे परवरदिगार लाशरीक, वड अमाम फेरा पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल दूर दुराडा आए नज़दीक, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। सम्बल खेड़ा वसे ठीक, कूड़ा ठीकर भन्न वखाईआ। आत्म परमात्म लाए इक प्रीत, दूजी रीत ना कोए वखाईआ। काया अन्दर मन्दिर मसीत, गुरुदुआर दए प्रगटाईआ। अमृत बरसे ठांडा सीत, निझर झिरना दए झिराईआ। एका रंग रंगाए हस्त कीट, ऊँच नीच आप समाईआ। करवट बदले जो

सुता दे कर पीठ, आप आपणा नैण खुलाईआ। साचा गाए इक्को गीत, सोहँ नाम सच पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग लेखा रिहा जणाईआ। सतिजुग बैठा तक्के राह, तकवा इक रखाईआ। पुरख अकाल बणना अन्त मलाह, बेड़ा लोकमात चलाईआ। गोबिन्द दे के गया सलाह, साची सिख्या कर पढ़ाईआ। इक्को इष्ट लैणा मना, इक्को रूप नज़री आईआ। इक्को मन्दिर लैणा सुहा, इक्को जोत नूर रुशनाईआ। इक्को कन्त लैणा हंढा, कन्त कन्तूहल सच्चा शहिनशाहीआ। इक्को बंस लैणा वडया, बंक दुआरी विच बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग चौकड़ी आप बदलाईआ। जुग चौकड़ी करे पार, पार उतारा आप कराइंदा। प्रगट हो के वेंहदा रिहा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाइंदा। अन्तिम लेखा लिख के गया विच संसार, लिख्या लेख ना कोए मिटाइंदा। कल कल्की आवे निरँकार, निहकलंक डंक वजाइंदा। शाह सुल्ताना शाहसवार, राज राजाना फेरा पाइंदा। अस्व घोड़ा इक अपार, जोती शब्दी जोड़ा जोड़ जुड़ाइंदा। पौड़ा चुक्के पहली वार, लोकमात आप टिकाइंदा। कलयुग कूड़ी क्रिया कर ख्वार, सतिजुग साचा राह वखाइंदा। सर्ब जीआं दा इक प्यार, दूई द्वैत डेरा ढाइंदा। आत्म परमात्म दे आधार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, वरन बरन जणाए इक्को सरन, सरनगति आप हो जाइंदा। वरन बरन साची टेक, ज़ात पात वड्याईआ। दीन मज़्ब मेटे भेख, शरअ शरीअत ना कोए लड़ाईआ। सृष्ट सबाई माणस माणस करे हेत, हितकारी आपणा जोड़ जुड़ाईआ। निज घर निज आत्म निज नेत्र नैण लए पेख, निज दुआर देवणहार वड्याईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण बण विचोला खोले भेत, भेव अभेदा आप जणाईआ। सतिजुग साची लोकमात लग्गे मेख, जीव जंत साध सन्त सके ना कोए उखड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कूड़ी क्रिया दए खपाईआ। कूड़ी क्रिया जाए नट्ठ, कलयुग अन्त रहिण ना पाईआ। अग्नी खेड़ा होए भट्ठ, त्रैगुण तपत ना कोए रखाईआ। लेखा चुके अठसठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नैण शरमाईआ। इक्को नज़री आए पुरख समरथ, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। साचा ढोला ईश जीव गाउणा जस, सिफ्त सालाही साची सिफ्त जणाईआ। भगत भगवान इक दूजे दे होणा वस, बन्धन कोए रहिण ना पाईआ। जन भगतां मिलणा आपणा हक़, हकीकत इक्को दए समझाईआ। नाम वरासत गुरमुखां नाल कर दए फ़क्क, दूजा वंडण कोए ना आईआ। धुरदरगाही बण मलाही साचा मार्ग देवे दस्स, रहबर इक्को इक आईआ। पुरख अकाल मिलणा नट्ठ नट्ठ, जगत विकारा डेरा ढाहीआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार देणा छड्ड, माया ममता संग ना कोए रखाईआ। गुरमुख मनमुखां नालों होणा अड्ड, आदि जगादि शब्द

ब्रह्माद प्रभ साचा राह वखाईआ। लहिणा चुक्के काया अन्धेरी खड्ड, डूंग्घी कन्दर डेरा ढाहीआ। पार किनारा होए हद्द, नौ दुआरे पन्ध मुकाईआ। दस्म दुआरी आपे सद्द, सतिगुर साचा मेल मिलाईआ। राग सुणाए अनहद, धुन आत्मक इक्को धुन उपजाईआ। कर प्रकाश कोटन रवि ससि, जोती जोत करे रुशनाईआ। सुरती शब्दी मेला हस्स हस्स, चिन्ता ग़म नज़र कोए ना आईआ। नेत्र खोल्ह् अक्ख नाल मिलाए अक्ख, निज नेत्र मेल मिलाईआ। साचा अमृत देवे रस, रस रसया आप झिराईआ। निरगुण हो के होवे वस, सरगुण तेरी ओट तकाईआ। नाम खज़ाना खोल्ह् वखाए हट्ट, बण वणजारा आप लुटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख गुरसिख इक्को ज्ञान दृढ़ाईआ। गुरमुख गुर का इक ज्ञान, जगत विद्या भेव ना आईआ। गुरसिख गुर का इक ब्यान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। गुरसिख गुर का इक ध्यान, लिव अन्तर आत्म इक जणाईआ। गुरसिख गुर का इक इश्नान, दुरमति मैल दए धवाईआ। गुरसिख गुर का इक निशान, सच दुआरे आप झुलाईआ। गुरसिख गुर का इक माण, निमाणयां गले लगाईआ। गुरसिख गुर का इक फ़रमाण, नाम सुनेहड़ा रिहा घलाईआ। गुरसिख गुर का इक दान, ख़ाली झोली दए भराईआ। गुरसिख गुर का इक बाण, अणयाला तीर चलाईआ। गुरसिख गुर का इक मकान, घर घर विच दए वखाईआ। गुरसिख गुर का इक्को गाण, साचा ढोला छन्द अलाईआ। गुरसिख गुर का इक परवान, चारे खाणी समझ सके ना राईआ। गुरसिख गुर का बण बाल अञ्याण, आपणी दस्स ना कोए चतुराईआ। कर किरपा मेले आण, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। लख चुरासी विचों कर पहिचाण, बेपहिचाण बूझ बुझाईआ। शब्द बठाए सच बबाण, नाम बबाणा इक ल्याईआ। लेखा चुकाए दो जहान, पुरी लोअ पन्ध मुकाईआ। थिर घर मेल मिलाए आण, करे इक्को इक कुड़माईआ। सचखण्ड दुआरे लै के जाए आप भगवान, जोती जोत जोत मिलाईआ। जिस किरपा करे हो मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा ज्ञान, तिस मन्त्र नाम ना होर पढ़ाईआ। ज्ञान गुरदेव गुर सतिगुर रंग, रंग रंगीला आप रंगाइंदा। आत्म सेज सुहञ्जणी वेख पलँघ, पारब्रह्म प्रभ आपणा आसण लाइंदा। गुरमुख तेरी पूरी करे मंग, जन्म जन्म दी तृष्ना भुक्ख मिटाइंदा। अन्तर देवे इक अनन्द, बसन्तर बाहरों आप बुझाइंदा। जगत विकारा करे खण्ड खण्ड, खण्डा खड़ग नाम चमकाइंदा। तेरे पिच्छे कट के आए पन्ध, बण पांधी फेरा पाइंदा। सतिगुर कोलों मंगदयां कोई ना जावे संग, देवणहार दयाल सदा दया कमाइंदा। जिन्हां लगाया आपणे अंग, तिन्हां नानक अंगद रूप वखाइंदा। माणस जन्म ना होए भंग, मात गर्भ फंद कटाइंदा। गुरसिख गुरमुख सतिगुर दा चढ़े नूरी चन्द, जगत चांद नैण शरमाइंदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख देवे इक ज्ञान, ज्ञान गुर दाता इक्को आपणा नाम समझाइंदा। सच ज्ञान गुर का नाम, बिन अक्खरां बूझ बुझाईआ। नज़री आए इक्को राम, रमईया आपणा पड़दा लाहीआ। बंसुरी वजाए साचा शाम, गीत सुर ताल साचा दए समझाईआ। सच पैगम्बर दए पैग़ाम, कलमा इक्को इक द्रिड़ाईआ। सच मन्त्र सुणाए सति नाम, नाम सति इक वखाईआ। साचा मेला श्री भगवान, पुरख अकाल सच्ची सरनाईआ। अन्त विचोला दो जहान, निरगुण सरगुण पार कराईआ। हँ ब्रह्म प्रभ वेखे आण, पारब्रह्म फेरा पाईआ। सोहँ रूप लख चुरासी जीव जहान, बिन सोहँ धार निरगुण सरगुण नज़र कोए ना आईआ। निरगुण सो, सोहँ हँ निरगुण रूप वखाईआ। हँ ब्रह्म आपे हो, निर्मल जोत जोत रुशनाईआ। सो पुरख निरँजण आपणा प्रकाश दे लो, हँ ब्रह्म करे रुशनाईआ। हँ ब्रह्म बिन पारब्रह्म रही रो, तुध बिन संग ना कोए निभाईआ। कर किरपा किरपा निधान, इक वार मेरे नाल जा छोह, तेरे मिलयां मेरा दु:ख रहे ना राईआ। जुग चौकड़ी मैं तेरी रही हो, तूं स्वामी बेपरवाहीआ। बिन तेरे कोई ना करे सच्चा मोह, जगत प्रीती कूड़ी नज़री आईआ। साहिब स्वामी तुध बिन देवे ना कोई ढो, चारों कुण्ट उच्ची रोवां कूकां दयां दुहाईआ। कलयुग मेरा सब कुछ ल्या खोह, काया भाण्डा ख़ाली रही वखाईआ। दीन मज़्ह़ब वरन गोत मेरे नाल करन धरोह, दरोही खुदाए तेरी सार कोए ना पाईआ। लोक परलोक तबक सबक सिख्या संथ्या मकतब मदरस्से पाठशाला मैं आई टोह, तेरा दर नज़र किते ना आईआ। कर किरपा मेहरवान श्री भगवान आपणी सुणा साची सो, जिस घर वसें डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, देवणहारा साचा वर, इक वखाए अगम्मी घर, जिथ्थे नज़र ना आवे कोई डर, भय भउ भ्यानक रूप नज़र कोए ना आईआ। गूढ़ी नींद सेजे चढ़ के सौं, सुत्यां फेर ना कोए उठाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे मैं हउं, हउँ मैं तूही राग अलाईआ।

✪ २४ भाद्रों २०२० बिक्रमी भोरछी ज़िला अमृतसर ✪

गुरमुख साचे उठ जाग, कलयुग रैण अन्धेरी छाईआ। हरि सरनाई साची लाग, कूड़ी क्रिया मेट मिटाईआ। अन्तर आत्म उपजे इक वैराग, सच वैरागी दए समझाईआ। हउमे हंगता दे त्याग, माया ममता नाता जगत तुड़ाईआ। त्रैगुण माया बुझे आग, पंज तत अग्न ना कोए जलाईआ। घर मेला वेख कन्त सुहाग, प्रभ मिले चाईं चाईंआ। जन्म जन्म दा दुरमति मैल धोवे दाग़, अमृत मेघ इक बरसाईआ। फड़ फड़ हँस बणावे काग, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ।

शब्द अगम्मी तन बन्ने ताग, शरअ ज़ंजीर दए कटाईआ। अन्दर वड़ के मारे आवाज, सोई सुरती आप उठाईआ। लख चुरासी विचों लए काढ, आवण जावण गेड़ रहिण ना पाईआ। सेज सुहञ्जणी करे लाड, नव दुआरे डेरा ढाहीआ। लेखे लाए काया माटी हाड, चम्म दृष्टी पन्ध मुकाईआ। आत्म परमात्म बणे सज्जण साक, पारब्रह्म ब्रह्म साचा संग निभाईआ। बजर कपाटी खोले ताक, पड़दा दूई द्वैत उठाईआ। गुरमुख तेरी वखाए उत्तम ज़ात, जगत अजाति मेट मिटाईआ। अट्ठे पहर रखे प्रभात, संधया रूप ना कोए वखाईआ। नज़री आए इक इकांत, घर घर वसे सच्चा माहीआ। साची पट्टी पढ़ाए नाम जमात, अक्खर वक्खर आप समझाईआ। सच वखाए डूंघा खात, गहर गम्भीर भेव जणाईआ। मेटे रैण अन्धेरी रात, निरगुण साचा चन्द चमकाईआ। कलयुग अन्तिम पुछे वात, बेपरवाह फेरा पाईआ। नानक गोबिन्द सच संदेसा गया आख, आख़र मेला शहिनशाहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर हरिजन साचे आप उठाईआ। गुरमुख सज्जण खोल्ल अक्ख, सतिगुर पूरा आप जगाईआ। हरि प्रीतम वेख प्रतख, दर पर्दा रिहा उठाईआ। मिले मेल पुरख समरथ, समरथ आपणा रंग रंगाईआ। बोध अगाध शब्द नाद सुणाए अकथ, साची बाणी आप पढ़ाईआ। कूड़ विकारा जगत हँकारा हउमे बुरज जाए ढट्ठ, निवण-सो-अक्खर इक समझाईआ। लहिणा देणा चुके तीर्थ तट्ट, सच सरोवर इक जणाईआ। घर विच घर वखाए मन्दिर मस्जिद मट्ठ, शिवदुआला इक्को नज़री आईआ। निर्मल जोत करे प्रकाश, जोती जाता नूर रखाईआ। जन्म कर्म दी पूरी करे आस, निरासा रहिण कोए ना पाईआ। लेखे लाए पवण स्वास, पवणी पवण रिहा समाईआ। जन भगतां गुरमुखां कहे सदा शाबाश, गुरसिख तेरी वड्याईआ। उठ वेख आपणा पत्तण घाट, घर सतिगुर बैठा बण मलाहीआ। चौथे युग मुक्के वाट, पांधी पन्ध ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख गुरसिख आप जगाईआ। गुरसिख उठ कर ध्यान, नेत्र नैण नैण जणाइंदा। साचा मेला श्री भगवान, दूजा संग ना कोए निभाइंदा। जुग चौकड़ी खेल महान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव देवे दान, तिन्न पंज मेला मेल मिलाइंदा। निरगुण सरगुण कर प्रधान, सति सतिवादी हुक्म वरताइंदा। काया मन्दिर खोल्ल दुकान, वस्त अमोलक हट्ट टिकाइंदा। वेखणहारा मेहरवान, बेनज़ीर आपणी नज़र उठाइंदा। घट स्वामी जाणी जाण, घर घर खोज खुजाइंदा। एथे ओथे दो जहान करे परवान, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे आप बुलाइंदा । गुरमुख उठ कर प्रतीत, पारब्रह्म प्रभ आप जणाईआ। कलयुग बदलण वाली रीत, सतिजुग साचा राह वखाईआ। लेखा चुके मन्दिर मसीत,

काया काअबा इक रुशनाईआ। आत्म परमात्म गाए गीत, सोहला ढोला राग सुणाईआ। जगत विकारा लैणा जीत, मन मनसा विच खपाईआ । तन होए ठांडा सीत, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। लेखा चुके हस्त कीट, ऊँच नीच नज़र ना आईआ। नज़री आए इक अतीत, त्रैगुण दाता सच्चा माहीआ। सदी बीसवीं रही बीत, बीती कहाणी सब दी वेख वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लेखा लिख के गए ठीक, ठाकर स्वामी आवे वाहो दाहीआ। दो जहानां वेखे नेरन नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। आपणी धार रखे बारीक, जगत नेत्र वेखण कोए ना पाईआ। नाउँ धराए लाशरीक, शिरकत रखे ना बेपरवाहीआ। गुरमुख गुरसिख प्रभ मिलण दी आई तरीक, तालब तुलबा करे पढ़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन सज्जण रिहा जणाईआ। गुरसिख उठ कर निमस्कार, नमो सति सति जणाइंदा। खेले खेल परवरदिगार, बेऐब आपणी धार जणाइंदा। सर्ब जीआं दा सांझा यार, सगला संग आप निभाइंदा। कलमा हक़ दए उच्चार, हकीकत आपणी आप समझाइंदा। मेल मिलाए सच दरबार, दरगाह साची सोभा पाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, चौदां तबकां पड़दा लाहइंदा। शरअ शरीअत वेख अञ्जील कुरान, तीस बतीसा आप समझाइंदा। सिदक सबूरी सच ईमान, इष्ट गुरदेव इक्को नज़री आइंदा । साचा सज्जण साहिब राम, रमईया आपणी कार कमाइंदा। भगत भगवाना वेखे आण, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी कल वखाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख गुरसिख पड़दा लाहइंदा। गुरमुख पड़दा जाए लथ्थ, उहला अन्दर रहिण ना पाईआ। किरपा करे पुरख समरथ, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। निरगुण नूर जोत कर प्रगट, हर घट करे रुशनाईआ । शब्द अनाद वजाए अनहद, नादी नाद आप सुणाईआ। गृह मन्दिर कराए साचा हज्ज, हुजरा इक्को इक सुहाईआ। आत्म सेजा चढ़े भज्ज, औंदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। सच सिंघासण बहे सज, शाह पातशाह वड्डी वड्याईआ। कलयुग अन्तिम करनी करे रद्द, साचा मार्ग अग्गे लाईआ। दो जहान वेखणहारा हद्द, पुरी लोअ आकाश चरणां हेठ दबाईआ। करे खेल सूरा सरबग्ग, बेपरवाह आपणा हुक्म वरताईआ । जन भगत दरस वखाए उपर शाह रग, साचा मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे इक्को घर समझाईआ। गुरमुख साचे उठ उठ वेख, चार कुण्ट आप जणाईआ। दहि दिशा कूड़ा दिसे भेख, भेखाधारी करन लड़ाईआ । कोई ना वसे सतिगुर देस, आपणे मन्दिर सोभा कोए ना पाईआ। कूड़ी क्रिया रहे खेड, साची बाज़ी हथ्थ किसे ना आईआ। तन काया माटी माणी झूठी सेज, अन्तर आत्म सोभा कोए ना पाईआ। डूंघी भँवरी किसे ना पाया भेत, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ।

नज़र ना आया नेतन नेत, निज नेत्र सके ना कोए खुलाईआ। बिन गुरमुख हरि का दरस कोई ना सके पेख, साख्यात संग ना कोए निभाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। गुरमुख उठ कर हरि याद, याददाशत इक जणाइंदा। जुग चौकड़ी सुणनहार फ़रयाद, कलयुग अन्तिम वेस वटाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां देवणहारा दाद, वस्त अमोलक जुग जुग आप वरताइंदा। लेखा जाणे ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड आपणी खेल खलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा निरगुण दाता पुरख बिधाता एकँकार इक इकल्ला आप जणाइंदा। गुरमुख साचा लए अंगड़ाई, आपणा आप बेदार कराईआ। किरपा कर बेपरवाही, आपणी धार दए समझाईआ। कवण दुआरे मिले सच्चा माही, कवण कूटे वेख वखाईआ । कवण वेला पकड़े बाहीं, फड़ बाहों गले लगाईआ। कवण वक्त धोवे दुरमति छाही, मैल पापां दए मिटाईआ। कवण वेला साची गोद लए बहाई, बाले आपणे आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कवण वेला वज्जे वधाईआ। गुरमुख सुण सच कन्न ला, सो सतिगुर आप जणाईआ। पुरख अकाल सदा मलाह, जुग जुग बेड़ा रिहा चलाईआ। जो जन दुआरे जाए आ, तिस आपणी गोद बहाईआ। फड़ बाहों सतिगुर लए उठा, आप आपणी सेव कमाईआ। कागज़ कलम शाही भेव ना जाणे रा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण उच्ची कूकण देण दुहाईआ। सच सुल्तान हरि मेहरवान जुग जुग जिस जन मिल्या आ, तिस दूजा नज़र कोए ना आईआ। घर वखाए सच्चा थाँ, थान थनंतर इक वड्याईआ। बण के आपे पिता माँ, गुरमुख साचे गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप मिलाईआ। गुरमुख कहे प्रभू दर आवांगे। निज नेत्र दर्शन पावांगे। जन्म जन्म दी हरस मिटावांगे। अर्श फर्श डेरा ढाहवांगे। साहिब करना इक्को तरस, सद तेरे बण अख्वावांगे। अद्धविचकार कोई ना जाए अटक, सचखण्ड साचे डेरा लावांगे। जिस धारों आए परत, अन्त ओसे धार समावांगे। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्ता ग़म ना कोए जणावांगे। ना कोई लिख्त ना कोई पढ़त, साचा लेखा तेरी झोली पावांगे। राए धर्म मंगे ना कोई धड़त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, नाता तेरे नाल रखावांगे। जो दर प्रभ दे आएगा। कर किरपा मेल मिलाएगा। जन्म जन्म दा रोग गंवाएगा। धुर संजोग इक वखाएगा। लोक परलोक पार कराएगा। मुक्ती मोख चरणां हेठ दबाएगा। सच सुणाए नाम श्लोक, साचा ढोला इक्को गाएगा । अन्तिम मेला निर्मल जोत, जोती जोत आप रलाएगा। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत श्री भगवान दी साची गोत, दूजा वरन ना कोए बणाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा

साचा वर, सन्त सुहेला इक इकेला गुर चेला वेख वखाएगा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर लख चुरासी जीव जंत साध सन्त आत्म परमात्म इक्को टेक, बिन रूप रंग रेख, रेख सब दी वेख वखाएगा।

✪ २४ भाद्रों २०२० बिक्रमी डाक्टर पाल सिँघ दे गृह भलाई पुर डोगराँ ज़िला अमृतसर ✪

विष्नूं उठ उठ तक्के राह, नैण मूंद नैण उठाईआ। ब्रह्मा वास्ता रिहा पा, दोए जोड़ मंगे सरनाईआ। शंकर रोवे मारे धाह, हथ्थ त्रिसूल सुटाईआ। त्रैगुण वास्ता रही पा, आपणा आप गंवाईआ। पंज तत चरणी डिगे आ, पिछली भुल्ल बख्शाईआ। गुर अवतार मंगण पनाह, सिर सके ना कोए उठाईआ। पीर पैगम्बर कहिण ऐ खुदा, ख़ालक तेरी इक सरनाईआ। भगत भगवान रहे ध्या, निज नैण ध्यान लगाईआ। सन्त साजण मस्तक टिक्का धूढ़ी लावण छाह, छार इक्को इक उठाईआ। गुरमुख कहिण पारब्रह्म प्रभ फेरा पा, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। गुरसिख कहिण बिन सतिगुर पूरे कोई ना होए सहा, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। दो जहान डेरा रहे ढाह, आपणा बल ना कोए वखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा आप रहे गंवा, साची धार ना कोए जणाईआ। पुरी लोअ पृथ्मी आकाश आपणा मुख रहे छुपा, नेत्र नैण ना कोए उठाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर तिन्ने उठ उठ बणन गवाह, सच शहादत देण जणाईआ। कलयुग अन्तिम आपणी कूक रिहा सुणा, सच संदेसा इक्को माहीआ। नव खण्ड पृथ्मी सत दीप जीव जंत साध सन्त भरे गुनाह, माटी पाक नज़र कोए ना आईआ। साचा आफ्ताब होए ना कोए रुशना, चौंधवीं चन्द ना कोए चमकाईआ। चौंदां तबक सके ना कोई बचा, चौदां लोक ना कोए वड्याईआ। चौदां विद्या करे हा हा, हाहाकार मचाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ साचा लभ्भे किसे ना नाँ, नाउँ निरँकारा हथ्थ किसे ना आईआ। माणस मानुख मानव हँस बणे काँ, बुद्धि काग वांग कुरलाईआ। सच भूमका मिले ना कोई थाँ, महल अटल नज़र कोए ना आईआ। अन्तर आत्म पकड़े कोई ना बांह, परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। सति प्रकाश सके ना कोए करा, जोत निरँजण नूर ना कोए रुशनाईआ। अनहद नादी नाद ना सके कोई सुणा, छत्ती राग कर कर थक्के पढ़ाईआ। ब्रह्म ब्रह्मादी भेव सके ना कोई खुल्हा, पड़दा दूई ना कोए चुकाईआ। बज़र कपाटी सके ना कोए तुड़ा, घर विच घर मेल ना कोए मिलाईआ। साचा कन्त सके ना कोए हंढा, विभचार करे लोकाईआ। सतिगुर इष्ट कोई ना सके बणा, गुरदेव स्वामी संग ना कोए निभाईआ। साचा मन्दिर दीपक सके ना कोई जगा, जगत अन्धेरा ना कोए मिटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ रूप सके ना कोई बणा, लख चुरासी पन्ध ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण सरगुण वेखे थाउँ थाईंआ। विष्न ब्रह्मा शिव हरि वेखणहारा, त्रै पंज पड़दा आपे लाहइंदा। लेखा जाण गुरू अवतारा, पीर पैगम्बर भेव चुकाइंदा। भगत भगवान खोल्ह कवाड़ा, सन्त साजण रंग जणाइंदा। गुरमुख गुरसिख वखाए नाम अखाड़ा, सच दुआरे आप लगाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखणहारा वारो वारा, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। बोध अगाधी शब्द अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी बण लिखारा, धुर दी बाणी चारे खाणी आप बुझाइंदा। चारे वेदां दे सहारा, चारे वरन कर उज्यारा, पुराण अठारां इक अखाड़ा, बरन अठारां मारे मारा, दहि दिशा आपणा हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल करे करतार, करता आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। लेखा जाणे धुर दरबार, सचखण्ड वसे सचा माहीआ। सो पुरख निरँजण शाहो भूप बण सिक्दार, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। हरि पुरख निरँजण सेवादार, एकँकारा सिफ्त सालाहीआ। आदि निरँजण कर उज्यार, श्री भगवान सगला संग निभाईआ। अबिनाशी करता खोल्ह कवाड़, पारब्रह्म प्रभ पड़दा दए उठाईआ। लेखा जाणे दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा हुक्म वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे ज्ञान, लोक परलोक हुक्म वरताईआ। रव सस सूरज चन्न कर प्रधान, किरन किरन जोत रुशनाईआ। लख चुरासी खोल्ह दुकान, घट घट साचा वणज बण वणजारा आप कराईआ। नाम वस्त इक महान, काया माटी आप रखाईआ। देवणहार श्री भगवान, बेपरवाह बेपरवाहीआ। निरगुण सरगुण हो प्रधान, गुर अवतार हुक्म चलाईआ। धुर संदेसा देवे आण, शब्द अगम्मी राग अलाईआ। चारे युग कर पहचान, चार कुण्ट खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। चार युग दा लेखा लहिणा, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां विष्न ब्रह्मा शिव आप चुकाइंदा। तख्त निवासी साचे तख्त बहिणा, पुरख अकाल दीन दयाल सूरा सरबँग बिन रूप रंग बेपरवाह आपणी कार कमाइंदा। दो जहान आप वखाए आपणा लहिणा, निज नेत्र इक खुलाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड वरभण्ड जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज भाणा कहिणा, हरि का भाणा ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर पंज तत काया चोला थिर ना रहिणा, अन्तिम ख़ाकी ख़ाक ख़ाक मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा एकँकारा इक्को इक सुणाइंदा। चार युग दे सुणो संगी, निरगुण निरवैर आप जणाईआ। जुग चौकड़ी खेल बहु रंगी, गुर अवतार पीर पैगम्बर करी पढ़ाईआ। देंदा रिहा वस्त सदा अनमंगी, धुर दी धार झोली पाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात वंडदा रिहा वंडी, हद्द हदूद आप समझाईआ। जीव जंत वासना भरदा रिहा गंदी, काम क्रोध लोभ मोह हँकार आसा तृष्ना हउमे हंगता नाल मिलाईआ। जोत प्रकाश करदा

रिहा चन्द नवचन्दी, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। पवण स्वास देंदा रिहा ठंडी, सांतक सति सति कराईआ। आत्म पंज तत काया पाउँदा रिहा ख़ानेबंदी, बंदीख़ाना इक बणाईआ। ढोला राग सुणाउँदा रिहा छन्दी, रसना जिह्वा बत्ती दन्द हिलाईआ। नाम चमकाउँदा रिहा साची चण्डी, चण्ड प्रचण्ड इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा लेखा रिहा मुकाईआ । धुर दा लेखा जाए मुक्क, नव नौं चार रहिण ना पाईआ। पुरख अकाल आए उठ, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। शब्द अगम्मी हो के जाए बुक्क, भब्बक आपणा नाम लगाईआ। दो जहान इक्को नाम सुणाए तुक्क, सोहँ करे सच पड़्हाईआ। आवण जावण पैंडा जाए मुक्क, जूनी जून ना कोए भवाईआ। मात गर्भ ना उलटा रुख़, दस दस मास ना अग्न तपाईआ। जन भगतां उजल करे मुख, मुख मुखड़ा सिफ्त सालाहीआ । जन्म कर्म दा मिटे दुःख, कर्म कांड ना कोए दरसाईआ। आपणी गोदी लए चुक्क, फड़ बाहों गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा रिहा जणाईआ। सब दा लेखा रिहा जणा, जाणी जाण दया कमाईआ। तेई अवतार रिहा उठा, भगत अठारां नाल मिलाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद रिहा हिला, नानक गोबिन्द नैण खुल्हाईआ। सच संदेसा रिहा सुणा, पुरख अबिनाशी मिलो चाईं चाईंआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान खाणी बाणी बणे गवाह, शहादत इक्को इक रखाईआ। वरन बरन ज़ात पात नाता दयो तुड़ा, दीन मज़्हब ना कोए वखाईआ। इष्ट देव गुरू स्वामी पुरख अकाल लओ मना, दूजा नज़र कोए ना आईआ। शब्द निशानी रिहा वखा, तीर कानी इक चलाईआ। गोबिन्द मेला सहिज सुभा, पर्दा दूई द्वैत उठाईआ। मुल्लां शेख़ मसायक पंडत पांधा सके ना कोए समझा, ज्ञान ध्यान चले ना कोए चतुराईआ। बिन सतिगुर पूरे आदि अन्त जुगा जुगन्त सरगुण तेरा बणे ना कोई मलाह, बेड़ा पार ना कोए कराईआ। कलयुग वेला अन्तिम रिहा आ, चारों कुण्ट दए दुहाईआ। राज राजान शाह सुल्तान कूड़ी क्रिया रहे कमा, सच सुच्च नज़र कोए ना आईआ। ग़रीब निमाणयां कोई ना पकड़े बांह, डुबदे बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। हिरदे हरि ना कोई रिहा वसा, रसना जिह्वा गा गा करन लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अन्तिम लेखा दए मुकाईआ। अन्तिम लेखा हरि मुकाउणा, कलयुग अन्त रहिण ना पाईआ। निरगुण निरवैर फेरा पाउणा, कल कल्की वेस वटाईआ। शब्द अगम्मी डंक वजाउणा, ढोलक छैणा ना कोए खड़काईआ। सच संदेसा इक सुणाउणा, गुरमुख तेरा सतिगुर आप गावे जस, गुरमुख तेरी वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर आत्म मन्त्र इक पढ़ाईआ। आत्म मन्त्र शब्द स्वामी, सो सतिगुर आप जणाईआ। सर्ब जीआं घट अन्तरजामी,

ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दी गाउँदे बाणी, सोहला ढोला राग अलाईआ। सो साहिब शाह पातशाह सचा सुल्तानी, तख्त निवासी इक अख्वाईआ। जिस दा दर दरबार उच्च महल अटल सदा लासानी, बेनज़ीर नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। लेखा जाणे थान थनंतर, दो जहानां वेख वखाइंदा। आदि जुगादि जिस दा मन्त्र, सो आपणा नाम समझाइंदा। गुरमुख उठ के वेख अन्तर, तेरे काया मन्दिर हरि जी डेरा लाइंदा। कर किरपा बुझाए तेरी बसन्तर, अमृत मेघ इक बरसाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा नित नवित्त गाए मन्त्र, दूजा राग ना कोए अलाइंदा। घर विच घर वखाए गगन गगनंतर, मण्डल मण्डप आप वड्याइंदा। माणस जन्म बणाए बणतर, लख चुरासी लेख मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग लहिणा झोली पाइंदा। जुग जुग लहिणा झोली पा, मकरूज आपणा कर्ज़ लाहीआ। जन भगतां बणे आप मलाह, भगवन बेड़े नाम चढ़ाईआ। सन्तां देवे सच सलाह, सिफ्ती ढोला इक्को गाईआ। गुरमुख गोदी लए उठा, फड़ बाहों आप बहाईआ। गुरसिख चरण कँवल धरत धवल उते लए टिका, माण निमाणयां सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। साचा मार्ग दए समझा, कूड़ी क्रिया नाता तोड़ तुड़ाईआ। मेल मिलाए बेपरवाह, बेपरवाही विच रखाईआ। जिस नूं पीर पैगम्बर सजदा रहे करा, सो खुदावंद आपणा रंग रंगाईआ। जिस दा राम कृष्न इष्ट रहे जणा, सो दृष्ट रिहा खुल्हाईआ। जिस दा खाणी बाणी गाए नाँ, सो नर निरँकारा वेख वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव त्रैगुण पंज तत तेरा लहिणा दए चुका, पीर पैगम्बर बाकी कोई रहिण ना पाईआ। अलिफ़ ये चौदां विद्या आपणी झोली लए पा, ला-इलम करे पढ़ाईआ। अन्दरे अन्दर तार सितार दए हिला, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। अजपा जाप दए समझा, बत्ती दन्द ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा मूल चुकाईआ। सब दा लहिणा चुके मूल, अमुल आप चुकाइंदा। आदि पुरख ना जाए भूल, अभुल आपणी दया कमाइंदा। सब नूं देवे जवाब इक माअकूल, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग निरगुण सरगुण बन्न्हया आप असूल, असलीअत साची सच समझाइंदा। कलयुग अन्तिम चौथे युग सब नूं करना पए कबूल, धुर फ़ुरमाना हुक्म जो सुणाइंदा। दो जहान होए अन्त जबबूर, मजबूरी हरि जू वेख वखाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप सतिगुर भुल्ली करे कसूर, साचा मार्ग नज़र किसे ना आइंदा। घर विच वसदा नेड़े रहिंदा सब नूं दिसे दूर, काया मन्दिर अन्दर दरस कोए ना पाइंदा। सो साहिब आपणा खेल करे ज़रूर, ख़ालक ख़लक पड़दा लाहइंदा। नव नौं चार निरगुण हो के बणया रिहा मफ़रूर, लोकमात हथ्थ किसे ना आइंदा। कलयुग अन्त श्री भगवन्त कूड़ी क्रिया

तोड़े सर्ब ग़रूर, गुरबत सब दी मेट मिटाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद आसा तृष्ना पिछली मेटे जो बहिश्ती मंगदे हूर, हुलीआ सब नूं इक समझाइंदा। आदि जुगादि सच खुदाए इक्को नूर, मिहबान बीदो बी खैर या अल्ला रहमत रहीम रहमान इक कमाइंदा। गुर अवातार पीर पैगम्बर दोए जोड़ खड़न हज़ूर, हाज़र हज़रत शहिनशाह इक्को नज़री आइंदा। सारे कहिण प्रभू असीं तेरे मज़दूर, जुग जुग सब तेरी सेव कमाइंदा। तूं समरथ स्वामी सर्ब कला भरपूर, तेरा अन्त कोई ना आइंदा। तेरे चरण मस्तक लाईए धूढ़, तिलक ललाटी इक्को नज़री आइंदा। चतुर सुघड़ बणीए मूर्ख मूढ़, माण अभिमान रहिण कोए ना पाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, पिछला लेखा बाकी नज़र कोए ना आइंदा। पिछला लेखा रहे ना बाकी, निरगुण अग्गे सर्ब सुणाईआ। पंज तत काया चोला हंढ्ाया खाकी, जुग जुग लोकमात वेस वटाईआ। तेरे शब्द घोड़े चढ़ के गए राकी, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पार कराईआ। तेरे झरोखे दी खोल्ह के आए ताकी, घर घर विच पड़दा लाहीआ। जाम प्या के आए बण के साकी, अमृत प्याला आबे हयात हथ्थ उठाईआ। तेरी दस्स के आए खेल बांकी, तेरी चाल निराली समझ किसे ना आईआ। तेरी खोल्ह के आए नाम हाटी, गुर अवतार तेरा हट्ट चलाईआ। तेरे प्रेम प्यार दी प्या के आए बाटी, हथ्थ प्याला इक उठाईआ। तेरी दस्स के आए साची साखी, बिन पुरख अकाल वेले अन्त ना कोए बचाईआ। तेरी दे के आए साची बाणी धुर दी भाखी, भाख्या इक्को इक जणाईआ । पढ़ा के आए तेरे नाम दी इक जमाती, दूजी पट्टी ना कोए लिखाईआ। दस्स के आए पूजा पाठी, सतिगुर साचा इक मन्नाईआ। वखा के आए तीर्थ ताटी, अमृत सरोवर आत्म इक नुहाईआ। मेट के आए अन्धेरी राती, तेरा नाम चन्द चमकाईआ। दे के आए सुनेहड़ा तेरी पाती, कमलापाती तेरा हुक्म समझाईआ। प्या के आए अमृत बूँद स्वांती, निझर झिरना घर घर आप झिराईआ। तेरा धाम दस्स के आए प्रभ बैठा रहे इक इकांती, इक इकल्ला डेरा लाईआ। सतिगुर सुल्तान साहिब पुरख समराथी, दूजा संग ना कोए निभाईआ। जिस दी जुग चौकड़ी सारे गाउँदे गाथी, गा गा शुकर मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी. किरपा कर, एका देणा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर दर दरवेश सारे मंगण, एका चाढ़ अगम्मी रंगण, तेरा रंग नज़र किसे ना आईआ। अन्तिम लहिणा देवां अन्त, अन्तष्करन सर्ब वेख वखाइंदा। लेखा जाणा लख चुरासी जीव जंत, बचया कोई रहिण ना पाइंदा। फोल फुलावां गुरमुख सच्चा सन्त, जो जन हिरदे हरि हरि इक ध्याइंदा। लेख मुकावां गुरमुख वड वड भगत, भगवन्त आपणी दया कमाइंदा। साचा मन्त्र इक दृढ़ावां मणीआं मंत, मन वासना मेट मिटाइंदा। लख चुरासी जणावां इक्को कन्त, नर हरि नरायण नज़री आइंदा। साची चोली चाढ़ां रंग बसन्त,

रंग बसन्त आपणा नाम वखाइंदा। गुरमुख दूजे दर ना जाए मंगत, जिस हरि सतिगुर आपणा नाम झोली पाइंदा। गुर की सिख्या कोई ना देवे पंडत, मुल्ला शेख हक़ ना कोए समझाइंदा। कलयुग अन्तिम सारे होए खण्डत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी. किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सब दा लहिणा घर घर झोली पाइंदा। लहिणा देवे जा के घर, वस्तू आपणा नाम टिकाईआ। गुरमुख मिले सतिगुर वर, वर दाता बेपरवाहीआ। शब्द विचोला आपे बण, सौहरे पेईए आवे जावे चाईं चाईंआ। मेल मिलावा नारी नर, सुरती शब्द करे कुड़माईआ। सच दुआरे वेखे खड़, पड़दा उहला आप उठाईआ। इक्को ढोला लए पढ़, मेरा तेरा भेत रहिण ना पाईआ। साचा पल्लू लैणा फड़, निरगुण सरगुण गंढु बंधाईआ। इक महल्ले जाणा चढ़, सतिगुर बैठा सेज सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी. किरपा कर, जन भगतां लहिणा देणा इक्को रंग वखाईआ। जन भगत लहिणा देणा मंगण, झोली सतिगुर अग्गे डाहीआ। श्री भगवान चाढ़्नहारा रंगण, सच ललारी नाम रंग चढ़ाईआ। अन्दर वड़ वजाए मृदंगन, सच मृदंगा इक उठाईआ। सच दुआरे गुरसिख लँघण, गुरुदुआर इक्को नज़री आईआ। ना कोई सूरज ना कोई चन्दन, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। ना कोई गीत ना कोई छन्दन, ढोला राग ना कोए अलाईआ। सच दुआरे नज़री आए इक्को साहिब सूरा सरबँगन, वड वड्डा वड वड्याईआ। सच दृढ़ाए इक अनन्दन, अनन्द अनन्द विचों जणाईआ। आप समाए परमानंदन, परम पुरख बेपरवाहीआ। गुरमुख तेरा कलयुग अन्त माणस जन्म ना होवे भंगन, जिस मिल्या गोबिन्द सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी. जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि लेखा लेखे रिहा लगाईआ।

✪ २४ भाद्रों २०२० बिक्रमी भलाई पुर डोगराँ गुरमुख सिँघ,
पाल सिँघ दे गृह ज़िला अमृतसर ✪

गुरमुख सदा रहे भटक, प्रभ चरण ध्यान लगाईआ। मनमुख राह विच रहे अटक, पांधी पन्ध ना कोए मुकाईआ। गुरसिख दर ते औण सदा बेखटक, खटका कोए नज़र ना आईआ। लख चुरासी विचों जिन्हां माणस जन्म मिल्या परत, ब्रह्म पारब्रह्म दए समझाईआ। सतिगुर पूरा कोई ना जाणे सोग़ हरख़, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। जिस जन कराए आपणा दरस, तिस जन्म कर्म दी मैल धवाईआ। अमृत मेघ अन्तर बरस, दुरमति मैल धवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी. किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। कर्म जरम पूरब कोई ना सके जाण, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जगत

विद्या होई नादान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। पढ़ पढ़ सारे दस्सण निशान, मंज़ल चढ़ के दरस कोए ना पाईआ। रसना जिह्वा देवण सर्ब ज्ञान, नेत्र नैण नज़र किसे ना आईआ। गुरमुख गुरसिख कदे ना भुल्ले बाल अञ्याण, अभुल्ल आपणी दया कमाईआ। जन्म जन्म दा लेखा चुक्के आण, जिस जन मेहर नज़र उठाईआ। आत्म अन्तर देवे दान, बसन्तर कूड़ी दए बुझाईआ। मन वासना तोड़ अभिमान, निवण-सो-अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी. किरपा कर, सद सदा होए सहाईआ। जन्म कर्म दा लेखा जाणे आप, निरगुण सरगुण भेव चुकाइंदा। आदि जुगादी माई बाप, जुग जुग पिता पूत भेव चुकाइंदा। नित नवित्त देवे साचा साथ, सगला संग निभाइंदा। एथे ओथे पत लए राख, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। कूड़ कुड़यारा कोई ना करे अन्तिम घात, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी. किरपा कर, साची भटकना वेख वखाइंदा। जगत भटकना मन दा कम्म, मन मनसा नाल मिलाईआ। गुरमुख भटकना प्रभ दर्शन मंगे दमो दम, अन्तर इक ध्यान लगाईआ। गुर दा भटकना गुरमुखां बेड़ा देवे बन्न्, जुग जुग सेव कमाईआ। हरि दा भटकना जन भगतां आवे कम्म, दूजे सार किसे ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी. किरपा कर, साची भटकना दए समझाईआ। सब तों पहलों भटकया आप भगवान, आपणी बणत आप बणाईआ। आपणी भटकना अन्दर दित्ता दान, निरगुण झोली सच वखाईआ। भटकना अन्दर जननी जन के छन्नयां पुत सुल्तान, शब्द दुलारा नाउँ रखाईआ। भटकना अन्दर बणया शाह सुल्तान, शहिनशाह वड्डी वड्याईआ। भटकना अन्दर सचखण्ड बणाया मकान, चार दीवारी नज़र किसे ना आईआ। भटकना अन्दर थिर घर खोल्ह आप दुकान, दर दरवाज़ा आपणे विच छुपाईआ। भटकना अन्दर शब्दी सुत दित्ता दान, विश्व विष्नूं जाग खुल्हाईआ। भटकना अन्दर पारब्रह्म ब्रह्म वंडी पाए आण, वंडणहारा इक अख्वाईआ। भटकना अन्दर शंकर कर परवान, हथ्थ त्रिसूल फड़ाईआ। भटकना अन्दर त्रैगुण माया कर बलवान, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। भटकना अन्दर पंज तत करे निशान, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश आप उपाईआ। भटकना अन्दर खेले खेल ज़िमीं असमान, गगन मण्डल दए वड्याईआ। भटकना अन्दर निरगुण सरगुण प्रगट होवे आण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची भटकना आप बणाईआ। भटकना अन्दर खेल करतार, हरि करता आप कराइंदा। भटकना अन्दर लेखा लेख लिख जुग चार, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा। भटकना अन्दर ब्रह्मवेता कर तैयार, ब्रह्म विद्या इक समझाइंदा। भटकना अन्दर लख चुरासी कार, जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज रंग रंगाइंदा। भटकना अन्दर आपणा नाउँ निरँकारा बोल जैकार, साचा नाम आप सालाहइंदा। भटकना अन्दर खेल करे अगम्म अपार, अलख अगोचर आपणी कार कमाइंदा। भटकना अन्दर विष्नूं

भरे भण्डार, साची वस्त आप वरताइंदा। भटकना अन्दर ब्रह्मे दए आधार, घट घट ब्रह्म जोत वखाइंदा। भटकना अन्दर शंकर करे होशियार, भोले नाथ त्रिसूल हथ्थ वखाइंदा। भटकना अन्दर रजो तमो सतो करे श्रृंगार, नेत्र नैण नैण मटकाइंदा। भटकना अन्दर लेखा जाण सच्ची सरकार, शाह पातशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। भटकना अन्दर रच के खाणी चार, ख़ालस आपणा रूप वखाइंदा। भटकना अन्दर निरगुण सरगुण लै अवतार, गुर गुर आपणी धार जणाइंदा। भटकना अन्दर बोल सच जैकार, शब्द अनादी नाद सुणाइंदा। भटकना अन्दर होए ख़बरदार, बेख़बर ख़बर आप सुणाइंदा। भटकना अन्दर बण के सांझा यार, सगला संग आप निभाइंदा। भटकना अन्दर आत्म परमात्म करे प्यार, सच प्रीती आप निभाइंदा। भटकना अन्दर सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रचे वारो वार, साची रचना आप रचाइंदा। भटकना अन्दर साची सिख्या दए सिखाल, विद्दत इक्को नाम पढ़ाइंदा। भटकना अन्दर होए दीन दयाल, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। भटकना अन्दर दो जहानां बणे दलाल, सच दलाली आप कमाइंदा। भटकना अन्दर वेख वखाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक खुल्हाइंदा। भटकना अन्दर गुरु गुरदेव उपजाए आपणे लाल, लालन आपणा रंग रंगाइंदा। भटकना अन्दर सब घट चले नाल, विछोड़ा नज़र कोए ना आइंदा। भटकना अन्दर आपणी घालन रिहा घाल, बण सेवक सेव कमाइंदा। भटकना अन्दर बणे सदा प्रितपाल, प्रितपालक वेस वटाइंदा। भटकना अन्दर देवे नाम सच्चा धन माल, सच ख़ज़ीना आप लुटाइंदा। भटकना अन्दर पीर पैगम्बर लए उठाल, जोती जोत जोत रुशनाइंदा। भटकना अन्दर हक़ हकीकत दए वखाल, लाशरीक पड़दा लाहइंदा। भटकना अन्दर मुकामे हक़ नूर धरे जलाल, जलवा इक्को इक समझाइंदा। भटकना अन्दर साचा कलमा बोले कलाम, कायनात आप पढ़ाइंदा। भटकना अन्दर बणे अमाम, आप आपणा वेस धराइंदा। भटकना अन्दर प्याए जाम, आबे हयात हथ्थ रखाइंदा। भटकना अन्दर करे सलाम, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाइंदा। भटकना अन्दर बणे ग़ुलाम, दर बरदा आप अखवाइंदा। भटकना अन्दर दए पैग़ाम, धुर संदेसा आप सुणाइंदा। भटकना अन्दर करे काम, करनी करता आप कमाइंदा। भटकना अन्दर बदले नज़ाम, धुर दी नौबत नाम वजाइंदा। भटकना अन्दर दे ज्ञान, साची सिख्या इक समझाइंदा। भटकना अन्दर झुलाए निशान, दो जहानां आप वखाइंदा। भटकना अन्दर बणे काहन, गोपी काहन रूप धराइंदा। भटकना अन्दर बणे राम, सीता सुरती आप प्रनाइंदा। भटकना अन्दर बोले सति नाम, नानक निरगुण मन्त्र इक दृढ़ाइंदा। भटकना अन्दर सृष्ट सबाई वेखे आण, आप आपणा फेरा पाइंदा। भटकना अन्दर गोबिन्द करे इक प्रणाम, मस्तक धूढ़ी टिक्का इक वखाइंदा। भटकना अन्दर इक्को खेल करे अकाल, अक्ल कलधारी राह चलाइंदा। भटकना अन्दर जन भगतां उते होए आप दयाल, मेहरवान मेहर

नज़र उठाइंदा। भटकना अन्दर साचे सन्त लए संभाल, संभल सम्बल आपणा राह जणाइंदा। भटकना अन्दर गुरमुख गोदी लए बठाल, फड़ बांहों गले लगाइंदा। भटकना अन्दर गुरसिखां चले नाल नाल, नाम इशारा इक वखाइंदा। भटकना अन्दर खेल करे जुग चार, नौं सौ चुरानवे चौकड़ी पन्ध मुकाइंदा। भटकना अन्दर खेल गुरू अवतार, पीर पैगम्बर भटकना विच धुर दी धार इक जणाइंदा। भटकना विच शास्त्र सिमरत वेद पुराण बण लिखार, गीता ज्ञान ज्ञान दृढ़ाइंदा। भटकना अन्दर अञ्जील कुरानां दए आधार, तीस बतीसा सिफ्त सालाइंदा। भटकना अन्दर नानक निरगुण बोल जैकार, मन्त्र इक्को इक समझाइंदा। भटकना अन्दर गुरू ग्रन्थ गुरदेव कर प्यार, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। भटकना अन्दर करे सर्ब निसमकार, निउँ निउँ आपणा राह वखाइंदा । भटकना अन्दर सब दी आसा मनसा पूरे ताल, तृष्ना तृप्त आप कराइंदा। भटकना अन्दर सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाइंदा । भटकना अन्दर राए धर्म दए बिठाल, साचा हुक्म इक जणाइंदा। भटकना अन्दर चित्रगुप्त दए सिखाल, सिख्या इक्को इक रखाइंदा। भटकना अन्दर लाड़ी मौत हो के करे भाल, बचया कोई रहिण ना पाइंदा। भटकना अन्दर लेखा जाणे काल महाकाल, मेहरवान आपणा हुक्म वरताइंदा। भटकना अन्दर गोबिन्द सुत बणाया अकाल, पूत सपूता दए वड्याईआ। भटकना अन्दर दुलारे नीहां हेठ दित्ते स्वाल, साची सेव इक समझाईआ। भटकना अन्दर खेल करे अपार, अपरम्पर आपणा राह जणाईआ। प्रभ की भटकना कदे ना मुक्के विच संसार, बिन भटकना सृष्टी नज़र कोए ना आईआ। गुरसिख तेरी भटकना सदा ख़बरदार, जो प्रभ दा राह रही तकाईआ। दूर दुराडा डिगदा ढैंहदा गुरमुख दुआरे मिल्या आण, घर साचे वज्जे वधाईआ। जन्म कर्म सारे वेखण आण, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। निरगुण दाता नौजवान, परम पुरख प्रभ वेस वटाईआ। जिस दा रूप गोपी काहन, कोटन कोटि उपजाईआ। जिस नूं ईसा मूसा मुहम्मद करन सलाम, दर बैठे सीस झुकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख तेरी भटकना इक जणाईआ। गुरमुख भटके सतिगुर रंग, रंग सतिगुर आप चढ़ाईआ । जन्म जन्म दी पूरी करे मंग, होर लेखा रहिण ना पाईआ। अन्तर देवे इक अनन्द, बाहरों मन वासना करे लड़ाईआ। हरिजन चढ़ाए साचे चन्द, गुजरी चन्द नूर चमकाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी साचा नाम देवे वंड, लोकमात फेरा पाईआ। गुरमुख सुहागण नार ना होए रंड, कन्त इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सर्ब स्वामी दया कमाईआ। गुरमुख भटकना भटके आप, आपणी दया कमाइंदा। गुरमुख गुरसिख साचा जाप, तेरा मेरा रूप धराइंदा। गुरमुख गुरसिख प्रभ मिले सच्चा बाप, जगत नाता तोड़ तुड़ाइंदा । गुरमुख गुरसिख दरस पाए पाकी पाक, पाक रसूल नज़री आइंदा। गुरसिख गुरमुख भटकना दा

नौं सौ चुरानवे चौकड़ी युग पिच्छों मिल्या इतफ़ाक, इतफ़ाकीआ आपणा मेल मिलाइंदा। ना पतण ना कोई घाट, किनारा नज़र किसे ना आइंदा। जिउँ भावें तिउँ रिहा राख, मेहर नज़र इक उठाइंदा। किरपा कर पुरख समराथ, समरथ आपणी धार जणाइंदा। पूरब वसूरे गए लाथ, अगला सुख सुख आप जणाइंदा । लहिणा देणा देवे हाथ, जगत उधार ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे दया कमाइंदा। सूफ़ीआं दस्सी इक्को कतलगाह, कातिल मकतूल रूप समझाईआ। जिस घर वसे बेपरवाह, बेऐब रूप वखाईआ। सच ध्यान दित्ता लगा, नूरी इस्म इक समझाईआ। पंज तत काया करो फ़िदा, फ़ितरत आपणी मात मिटाईआ। बिस्मिल हो के पंज तत नालों होवो जुदा, जुज़ खाली आपणा जुज़ मिलाईआ। अन्दरों दित्ता राह सिध्धा, बाहरों समझ कोए ना पाईआ। जिन्ॣां मिलण दी सुफ़ने विच दिती बिधा, बिध आपणी आप समझाईआ। परवरदिगार खुशीआं नाल पावे गिधा, मनसूर सूलीआं उते चढ़ाईआ। शमस तबरेज़ आपणी नैणी डिठा, पुठड़ी खल्ल लुहाईआ। बिन अक्खीआं पढ़दे धुर दा चिट्ठा, बिन नैणां देण सुणाईआ। सांझे यार दा साचा हिता, बिरहों अग्नी रिहा जलाईआ। उन्ॣां कदे याद ना आया पिच्छा, जिन्ॣां अग्गे मिल्या बेपरवाहीआ। एथे ओथे दरगाह साची सचखण्ड दुआर करे रिच्छा, प्रितपालक इक गोसाईंआ । सो सूफी जिस जगत रस जाता फिका, फिकी वेखी सर्ब लोकाईआ। हरि का रूप आपणे विच वेख्या निक्का, निकयों वड्डे नाल मिलाईआ। बिन पंडत पांधे बिन मुल्ला शेख़ लग्गा मिट्ठा, धुर दी रेख आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो सूफी साबत सूरत आपणी दए समझाईआ। भटकना अन्दर साचा भाउ, भगत भगवान जणाईआ। भटकना अन्दर रहे चाउ, चाउ घनेरा इक दृढ़ाईआ। भटकना अन्दर जपाए नाउँ, नाउँ निरँकार आप समझाईआ। भटकना अन्दर चरण रूप बणाए पाउँ, सीस जगदीश इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भटकना भटकना विचों प्रगटाईआ। भटकना अन्दर भटके एक, अनेक रूप वटाईआ। साची भटकना आपे लए वेख, जन भगतां अन्दर डेरा लाईआ। सो भटकना सतिगुर भेख, जिस भटकना अन्दर गुरमुख गुर गुर नाउँ ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भटक भटक भावना आपणी नाल मिलाईआ। भटकना अन्दर रख भावना, भाण्डा भरम भंनाइंदा। भटकना अन्दर पकड़े दामना, दामनगीर आप अख्वाइंदा। भटकना अन्दर होए ज़ामना, धुर दी ज़ामनी आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भटकना अन्दर आम्ॣो साम्ॣणा हो के साम्ॣणे रूप वखाइंदा। जे भटकना होवे ना इक भगवान, भटके मात ना कोए लोकाईआ। नव नौ चार दा दस्से ब्यान, भेव अभेदा भेव खुल्ॣाईआ। नव नौ वेख जगत दुकान, नौ खण्ड फेरा

आपे पाईआ। नौ दुआर फिरे शैतान, जुग जुग शरअ करे लड़ाईआ। चारे कुण्ट होए प्रधान, चारे खाणी रिहा हिलाईआ। चारे बाणी दे ज्ञान, चार यारी वंड वंडाईआ। चार वेद कर प्रधान, जीव जंत जगत समझाईआ। नव नौ चार दा खेल जहान, आदि जुगादि इक जणाईआ। तिन्नां नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग पन्ध मुके आण, जो चौथे पद सतिगुर विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी नव नौ चार धार बंधाईआ। कलयुग अन्तिम होई रहमत, रहमान दया कमाईआ। पुरख अकाल गोबिन्द नाल होया सहिमत, निरगुण निरगुण जोड़ी आप बणाईआ। ना कोई धोती ना कोई तहिमत, पाजामा बन्धन ना कोए रखाईआ। ना कोई मूर्ख ना कोई अहिमक, ना कोई विद्या करे पढ़ाईआ। ना कोई इशारा ना कोई सैनत, ना कोई शरअ रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप खिलाईआ। रहमत करके आप रहीम, आपणी दया कमाइंदा। आपणे भाग कर तरमीम, साचा मार्ग आप जणाइंदा। जिस दा खेल सदा अज़ीम, शान शौकत इक वखाइंदा। जिस दा भेव किसे ना पाया क़दीम, क़ुदरत क़ादर नाउँ धराइंदा। सो कलयुग अन्तिम जन भगत वखाए आपणा सीन, साख्यात रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रहमत इक्को इक वखाइंदा। रहम करे मेहर नज़र, नज़रीआ इक उठाईआ। जन भगत वखाए इक्को फ़ज़ल, फ़ज़ल आपणा आप कमाईआ। पिछली धारा देवे बदल, बदला चुक्के सर्ब लोकाईआ। तख्त निवासी करे अदल, अदालत इक्को इक जणाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत मुरीद सूफ़ी कोई ना करे कतल, कातिला हथ्थ ना कोए उठाईआ। कलयुग अन्तिम श्री भगवान जन भगतां कोलों कढ्ढुण आया आपणा मतलब, मुतला सब नूं रिहा कराईआ। निरगुण सरगुण करके करतब, नाम खण्डा खड़ग चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नव नौ चार पिछों कीता रहम, जन भगतां नाल बणया बहिण, घर इके बहि बहि, मन्दिर इक्को रहि रहि, नाम इक्को कह कह, भाणा साचा सहि सहि, जन भगतां चरण ढह ढह, माण अभिमान इक निशान श्री भगवान आत्म परमात्म सोहँ धार रूप आपणा लए प्रगटाईआ।

✪ २५ भाद्रों २०२० बिक्रमी भलाईपुर डोगराँ फ़ौजा सिँघ दे गृह ज़िला अमृतसर ✪

साहिब सतिगुर दीन दयाला, हरि जुग जुग दया कमाइंदा। सति सरूपी अमृत जाम प्याला, निरगुण सरगुण आप प्याइंदा। काया मन्दिर अन्दर सच्ची धर्मसाला, धुर दरबार आप वखाइंदा। अन्तर अन्तर अगम्मी माला, बिन रसना जिह्वा जाप जपाइंदा। शब्द सरूपी बण दलाला, घर घर साची सेव कमाइंदा। जन भगतां मार्ग दस्से सुखाला, औझड़ राह ना

कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाइंदा। सतिगुर पूरा सच्चा ठाकर, ठोकर इक्को नाम लगाईआ। वेख वखाए काया गागर, गहर गम्भीर खोज खोजाईआ। नाम वणजारा बण सौदागर, साची वस्त हट्ट विकाईआ। निर्मल कर्म कर उजागर, गुरमुख इक्को बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन हरि देवे माण वड्याईआ। साहिब सतिगुर सच स्वामी, एकँकार इक अख्वाइंदा। लख चुरासी अन्तरजामी, घट घट डेरा लाइंदा। बोध अगाध अगम्मी बाणी, धुर दी धार आप समझाइंदा। अमृत जल ठंडा पाणी, निझर झिरना आप झिराइंदा। सुरत मिलावा शब्दी हाणी, सेज सुहञ्जणी इक वड्याइंदा। खेले खेल जोत नुरानी, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी कार कमाइंदा। बख्शणहारा पद निरबाणी, घर साचा इक वखाइंदा। शाहो भूप हरि वड सुल्तानी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। सतिगुर सच्चा सर्ब व्यापी, घट घट रिहा समाईआ। आदि जुगादी वड प्रतापी, बेपरवाह नाउँ रखाईआ। सच रसूल पाकन पाकी, परवरदिगार नूर खुदाईआ। जन भगतां पुश्त देवे अगम्मी थापी, थापणा इक्को इक वखाईआ। सच जपाए आपणा जापी, जीवण जपत जुगत जणाईआ। खोलू वखाए धुर दी हाटी, साचा कुण्डा मन्दिर लाहीआ। पार उतारे फड़ के घाटी, शौह दरया ना कोए रुढ़ाईआ। एथे ओथे दो जहान मुकाए वाटी, पांधी आपणा पन्ध मुकाईआ। धुर संदेसा लै के आवे पाती, पतण बहि बहि बेपरवाहीआ। करे खेल निरवैर पुरख जोत प्रकाशी, प्रकाशवान वेस वटाईआ । जन भगतां पूरब जन्म लाहे उदासी, चिन्ता रोग ना कोए वखाईआ । सचखण्ड दुआर दी नाम सुणाए साखी, शब्दी राग आप अलाईआ। सतिगुर पूरा दीन दयाल जुग जुग धर्म दुआर दा बणया रहे पाठी, पाठशाला इक्को इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। साहिब सतिगुर पुरख अकाल, अक्ल कला वड्याईआ। जुग चौकड़ी नित नवित्त निभे नाल, सगला संग ना कोए तजाईआ। गुरमुख गुरसिख सन्त सुहेले लए भाल, लख चुरासी खोज खुजाईआ। काया मन्दिर अन्दर करे प्रकाश सच्ची धर्मसाल, जोत निरँजण नूर रुशनाईआ। अमृत आत्म जाम दए प्याल, सर सरोवर इक नुहाईआ। कूड़ी क्रिया त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, सतिगुर बख्शे सच सरनाईआ। नाता तोड़ काल महाकाल, राए धर्म दर दुरकाईआ। चित्रगुप्त लेख ना सके वखाल, लाड़ी मौत ना करे कुड़माईआ। गुरमुख गुरसिख अन्तिम आपणी गोदी लए उठाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहारा आपणा वर, वर दाता इक अख्वाईआ। सतिगुर पूरा साहिब सुल्तान, प्रभ वड्डा वड वड्याईआ। तख्त निवासी नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। दो जहानां पहलवान, बल आपणा आप वखाईआ ।

धर्म उठाए इक निशान, साचे मन्दिर आप झुलाईआ। देवणहारा धुर फ़रमान, शब्दी नाद वजाईआ। वेखणहारा जीव जहान, लख चुरासी जोत रुशनाईआ। गावणहारा आपणा गान, शब्दी ढोला राग अलाईआ। देवणहारा धुर दा दान, गुर अवतार पीर पैगम्बर नाम अमोलक वस्त झोली पाईआ। बख़्शणहारा साचा माण, चरण कँवल दए सरनाईआ। देवणहारा इक ध्यान, अन्तर आत्म परमात्म इक लिव लाईआ। मारनहारा अगम्मी बाण, तीर अणयाला नाम चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुरमुख गुर गुर आप सालाहीआ। सतिगुर पूरा सालाहण योग, ब्रह्मण्ड खण्ड राग अलाइंदा। जन भगतां देवे इक्को जोग, साची सिख्या सिख दृढ़ाइंदा। अन्तर अन्तर होए संजोग, बाहर बसन्तर ना कोए लगाइंदा। मन्त्र जणाए काया कोट, घर इक्को इक्को गाइंदा। तन नगार लगाए चोट, शब्द नगारा आप वजाइंदा। सच सुणाए धुर श्लोक, धुर दी धार आप बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाइंदा। सतिगुर पूरा सच दुआर, सचखण्ड इक वखाईआ। जिस गृह वसे आप निरँकार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। नानक कबीर करे प्यार, बिनां शरीर खुशी मनाईआ। ना कोई शरअ ना ज़ंजीर, तकबीर इक्को इक पढ़ाईआ। हज़रत नूर इलाही तस्वीर, बेनज़ीर आप वखाईआ। निगहबान दस्तगीर, दस्त दस्त नाल मिलाईआ। लेखा तोड़ शाह हकीर, शहिनशाह इक्को रंग रंगाईआ। दर दरवेश कर फ़कीर, फ़िकरा सति नाम पढ़ाईआ। चार वरनां दे धीर, धीरज इक्को घर समझाईआ। अठ सठ तीर्थ वेख नीर, दर दर आपणा फेरा पाईआ। चारे कुण्ट पन्ध चीर, उतर पूरब पच्छिम दक्खण वंड वंडाईआ। कलयुग जीवां बदल जा तकदीर, तसबी इक्को हथ्थ फड़ाईआ। दहि दिशा फिर वड पीरन पीर, शब्द गुर तेरी वड्याईआ। तेरा लेखा धुर लकीर, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। गुरमुख गुरसिख अमृत जाम प्या सीर, दुःख दर्द दर्द गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिगुर सच्चा हुक्म वरताईआ। सतिगुर सच्चा शब्द गुरदेव, पंज तत कम्म किसे ना आईआ। आदि जुगादि सदा निहकेव, निहचल बैठा डेरा लाईआ। जुग चौकड़ी देवणहारा अमृत मेव, फल साचा इक खवाईआ। खोल्णहारा भेद अभेव, पड़दा उहला दए चुकाईआ। गावणहारा रसना जिह्व, धुर दी धार आप अलाईआ। करनहारा साची सेव, घर घर आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा वड वड्याईआ। सतिगुर पूरा शब्द गुर दाता, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। शब्दी सुरती बन्ने नाता, कूड़ा रंग ना कोए चढ़ाइंदा। नाम निधान सुणाए गाथा, घर घर राग अलाइंदा। पुरख अकाल बणाए पिता माता, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। प्रितपालक बण के होवे राखा, साची सेवा आप कमाइंदा। जन्म जन्म दा पूरा करे घाटा, लेखा

पूरब वेख वखाइंदा। नाम खुमारी वेखे खेल तमाशा, तू ही तू ही राग अलाइंदा। जन्म जन्म दी पूरी करे आसा, तृष्ना आसा मेट मिटाइंदा। साचा नूर कर प्रकाशा, अज्ञान अन्धेर आप चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख लेखा झोली पाइंदा। गुरमुख लेखा झोली पाए, पावणहार वड्डी वड्याईआ। जन्म अजन्मा वेख वखाए, जुग जुग फेरा पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर विछड़े कलयुग अन्तिम लए मिलाए, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। नानक गोबिन्द धार चलाए, अर्जण लेखा लेख समझाईआ। डूम मरासी लए जगाए, बलवंडे सत्ते समझ समझाईआ। करे खेल आप रघराए, रघपत आपणी धार जणाईआ। आदि जुगादि धुर दा लेखा आपणी झोली पाए, जुग जुग लोकमात वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच कहाणी इक जणाईआ। सच कहाणी धुर दी धार, शब्द गुरू वड्याईआ। अर्जण गुर गुर इक दरबार, धुर दरबार रिहा समझाईआ। सत्ता गावे अपणी वार, वारता इक इलाहीआ। हरि का खेल ना जाणे सिरजणहार, बेपरवाह लेखा बेपरवाहीआ। अन्तर वड़या इक हँकार, अग्नी इक लगाईआ। बिन मेरे गुरू दा सोहे ना कोई दुआर, सच दुआर ना कोए वड्याईआ। कूड़ी माया करे प्यार, सतिगुर प्यार गया भुलाईआ। जिस दे नाल चले विहार, सो विवहारी खेल वखाईआ। गहर गम्भीर जानणहार, अन्तिम बूझ बुझाईआ। वर दित्ता इक्को वार, तेरा तेरा तेरी झोली पाईआ। बिन सतिगुर पूरे राग रागनी गए हार, सुर ताल कम्म किसे ना आईआ। अन्तिम दोए जोड़ करे निमस्कार, नेत्र रोवे मारे धाहींआ। किरपा कर मेरे दातार, तेरे हथ्थ मेरी वड्याईआ। हउँ बालक भुल्लणहार, अभुल्ल तेरी सरनाईआ। बख्शणहार हो तैयार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। उठ सत्ते वेख खोलॢ कवाड़, सतिगुर पूरा इक्को नज़री आईआ। तेरा लहिणा देणा देवां कर्ज उतार, कर्जा कोए रहिण ना पाईआ। माणस जन्म विचों माणस जन्म देवां दूजी वार, टेडी जून ना कोए भवाईआ। निरगुण हो के आवां विच संसार, रूप रंग रेख नज़र किसे ना आईआ। अन्दर हो के तेरी काया जोह के रबाब बण के वजावां सतार, इक्को इक्को राग अलाईआ। जिन्ना चिर ना कहें तूं मेरा मैं तेरा यार, सोहँ ढोला रसना गाईआ। उस वेले तेरा कर्जा लाहवां उधार, मकरूज आपणा फ़र्ज अदा कराईआ। गुरमुख बणा करां प्यार, भगतां विच दयां वड्याईआ। मेरा नाउँ नर निरँकार, निरवैर सदा अख्वाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, द्वैत रूप ना कोए वटाईआ। फ़ौजा सिँघ नहीं सत्ता डूम जिस दे अन्दर कीआ प्यार, नाम खुमारी शब्द यारी नाल गंढ्ढाईआ। उच्ची कूक घर बाहर करदा रिहा पुकार, कवण वेले प्रभ मिले सच्चा माहीआ। दिल्ली दुआर गली कूचे कीता हाहाकार, साधां सन्तां रिहा डराईआ। उठो वेखो मेरा अगम्मी यार, जिस दा नूर बेनज़ीर नज़र किसे ना आईआ। मेरे अन्दर उहदी तस्वीर, जिस दे हथ्थ नाम

शमशीर, खण्डा खड़ग रिहा चमकाईआ। उह साहिब पीरां दा पीर, मैनूं वेख्या विचों आण हकीर, हकीकत आपणी रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, जुग चौकड़ी लहिणा देणा सब दा झोली पाईआ।

✪ २५ भाद्रों २०२० बिक्रमी भलाई पुर डोगराँ महिन्दर सिँघ दे गृह ज़िला अमृतसर ✪

देवणहार सर्ब वड्याई, वड दाता हरि अख्वाइंदा। हरिजन साचे लए तराई, तारनहार दया कमाइंदा। मेहर नज़र इक उठाई, मेहरवान भेव चुकाइंदा। नीचों ऊँच रिहा बणाई, जिस जन आपणे घर वसाइंदा। जन्म जन्म दा लेख मिटाई, साचा लेखा इक रखाइंदा । गुरसिख मेला सहिज सुभाई, घर सतिगुर फेरा पाइंदा। भरमे भुल्ले ना कोए राही, पांधी आपणा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन देवे नाम दान, तिस दा रहे जगत निशान, लोकमात ना कोए मिटाइंदा।

✪ २५ भाद्रों २०२० बिक्रमी जलालाबाद ऊधम सिँघ दे गृह ज़िला अमृतसर ✪

मित्र प्यारा जगत सच मीत, हरि सतिगुर इक अख्वाईआ। जगत बन्धन जगत रीत, काया तत कुड़माईआ। जुग चौकड़ी खेल अनडीठ, अनडिठड़ी आप कराईआ। मन वासना मनुआ सीत, आत्म सांत ना कोए कराईआ। खा पी गौणे गीत, जगत जुग वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप दृढ़ाईआ। पंज तत काया पुच्छण यारी, यारी यारां नाल हंढ्वाईआ। खेलां खेलदे रहे बण संसारी, संसार जीवण झोली पाईआ। बिन सतिगुर पूरे अन्तिम तोड़ निभे किसे ना यारी, हाणी हाणीआं गए तजाईआ। चारों कुण्ट दिसे ख्वारी, साची धार ना कोए बंधाईआ। गुरमुख विरला मिले जोत इक निरँकारी, निरगुण मेला मेल मिलाईआ। दोए जोड़ करे निमस्कारी, निमख निमख आपणा भेंट चढ़ाईआ। कर किरपा हरि वड बनवारी, शाह पातशाह दया कमाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दी लग्गी अन्तिम यारी, पिछली यारी भुल्ल ना जाईआ। तेरे यारां दी आत्मा अजे कुँवारी, बिन हरि कन्त सके ना कोए प्रनाईआ। तेरे पिच्छे ओन्हां जाए तारी, जिन्हां यारी तेरे नाल लगाईआ। सवरन नहीं सवरन कन्या कुँवारी, काया सतिगुर सति सरूप बणाईआ। जिस दा लेखा जाणे रविदास चुमारी, जिन धीआ पुत्री सपुत्री एका जाईआ। कुनी पाणी दित्ता अमृत बाटा , चम्म दृष्टी परे

हटाईआ। तिस दा लेखा मुकया सच दरबारी, शाह पातशाह आप मुकाईआ। बटवारे तेरी वेखी यारी, जुग चौकड़ी फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच याराना इक समझाईआ। सच याराना लग्गे एक, एकँकारा आप जणाइंदा। दो जहान लग्गे ना सेक, त्रैगुण अग्न ना कोए तपाइंदा। बुद्धी सदा रहे विवेक, दुरमति मैल रूप नज़र कोए ना आइंदा। बिन कर्मां मिटे रेख, बिन धर्मां पार कराइंदा। बिन साकों करे हेत, बिन सज्जणो रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साजण घर वेखे साजण, साजण साजण नाल उठाइंदा। वेख सज्जण पिछले यार, बीती कहाणी रिहा जणाईआ। जिन्हां नाल करदे रहे प्यार, लग्गी प्रीत तोड़ ना कोए निभाईआ। छड्ड के गए विच संसार, बण संसारी फेरा पाईआ। दूर दुराडे उच्ची कूकण करन पुकार, नेत्र नैण नैण उठाईआ। वेखो बटवारा मिल गया चम्यार, यार पिछली यारी रिहा भुलाईआ। तेरे सज्जण दी आत्मा दर बांदी आई दुआर, नेत्र रोवे मारे धाहींआ। वेखे विगसे वेखणहार, बेनज़ीर आपणी नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सगला संग रिहा तराईआ । तेरा सज्जण आया दुआर, तेरी ओट तकाईआ। एसे कारण पुच्छया शब्द विहार, भेव अभेद जणाईआ। तेरी बेनन्ती मंज़ूर करे निरँकार, निरगुण आपणी दया कमाईआ। अठ दस दा बेड़ा पार, साल बसाल लेखे आपणे लाईआ। यारां नाल मिलावे यार, याद पिछली इक जणाईआ। अक्खीं मीट मार पलाकी इक दूजे दे उते चढ़दे रहे हो अस्वार, साची खेल जगत बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर्दीआं दर्द वंडाईआ। पिछली याद आई चेते, सज्जण मंग मंगाईआ। पारब्रह्म प्रभ लाए लेखे, लेखा आपणी झोली पाईआ। जिन्हां तेरा संग कीता भरम भुलेखे, तिन्हां बेड़ा रिहा तराईआ। अन्दर वड़ के आपे वेखे, बाहरों नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लहिणा आप चुकाईआ। गुरमुख तेरी उधरे कुल, सिँघ ऊधम वड वड्याईआ। करता कीमत पाए मुल, आपणे हट्ट विकाईआ। सच दुआरा रिहा खुल्ह, कूड़ा हट्ट ना कोए वखाईआ। गुरमुख हीरा जाए ना रुल, माणक मोती आप रखाईआ। दरगाह साची दा साचा फुल, दो जहान आप महकाईआ। साचे कंडे तोले तोल, नाम तराज़ू इक वखाईआ। हरिजन चरण प्रीती घोली घोल, घोल घुमाई लेखे पाईआ। अन्तर आत्म जाए मौल, मौला आपणी दया कमाईआ। अमृत रस भरे कँवल कौल, नाभी इक्को रंग रंगाईआ। देवे वड्याई उपर धौल, धरनी धरत सुहाईआ। जन्म कर्म दा भार करे हौल, वेले अन्त ना कोए सज़ाईआ। जामा बदलया सिँघ बहौल, बहुती कीती जगत कमाईआ। सतिगुर पूरा कदे ना मारे रोल, सच्चे मार्ग आपे पाईआ । मंगी दात वसां

कोल, माणस हो के तेरी सेव कमाईआ। तूं तख्त बहें अडोल, हउँ बालक रूप नज़री आईआ। प्रभू तेरा भेख लिख ना सके कोई भगोल, तेरी तारीख ना किसे बणाईआ। तेरी सिफ्त कर कर गए कला सोल, रसना जिह्वा ढोले गए गाईआ। तूं पड़दा रख्या आपणा ओहल, आलमगीर समझ किसे ना पाईआ। जुग चौकड़ी सब दे नाल करदा रिहों मखौल, इशारयां नाल नचाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर नाल करदा रिहों कोल, इकरार आपणा इक जणाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होइउँ निरगुण धार उपर धौल, दो जहानां आपणा हुक्म वरताईआ । सब दा लेखा वखावां फोल, वरका वरका आप उलटाईआ। लख चुरासी विचों चार युग दे सज्जण लवां टोल, वेखां थाउँ थाईंआ। लख चुरासी माया ममता विच देवां वरोल, नेत्र नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। सृष्ट सबाई सुत्ती रहे अनभोल, जगत जाग ना कोए जगाईआ। जागदयां कोल वजावां ढोल, जागदयां कोलों सुत्तयां लवां जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वस्त वसीला झोली पाईआ। वस्त वसीला हरि जू आप, आपणी दया कमाईआ। जिस दा सच्चा इक्को जाप, जप जीवण जुगत जणाईआ। सच दुआरे सच्चा पाठ, काया पाठशाला पढ़ाईआ। जिस दी पट्टी इक जमात, अगला सबक ना कोए सिखाईआ। जिस दा लेखा बिन कलम दवात, शाही बैठी नैण शरमाईआ। जिस दा खेल दो जहान तमाश, निरगुण सरगुण धार चलाईआ। सो साहिब जन भगतां पूरी करे आस, आहिस्ता आहिस्ता आपणा मेल मिलाईआ। जिस धारों उपजी शाख, सो बूटा रिहा लगाईआ। अन्त वेले निकलण लग्गे स्वास, सवा स्वास प्रभ दी झोली पाईआ। इक नाल तेरा प्रकाश, चौथा हिस्सा तेरी रहमत नज़री आईआ। तेरी किरपा मेरी प्यास, मेरी प्यास तेरी अमृत धार मंग मंगाईआ। सरगुण हो के मंगां साथ, निरगुण तेरी सेव कमाईआ। सतिगुर पूरे ल्या झाक, बिन अक्खां अक्ख मिलाईआ। तेरा खोल्हां इक ताक, धुर दी ताकत नाल समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आप लँघाए आपणे घाट, पतण पार सच मलाहीआ।

रातों आई दिन, दिवस रूप वटाईआ। भाईआं भरावां दा लेखा चुकाया गिण गिण, सनमुख हो के बेपरवाहीआ। जिस दा रूप रेख ना कोए चिन्ह, चिन्ता रिहा मिटाईआ। करे खेल अगम्मी छिन, लग-मात्र ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची थित आप वटाईआ। दिन दिहाढ़े दस्सया हाल, सभा विच समझाईआ। रातर हुन्दी माया नींदर पाउँदी जाल, सुरत विच कोई रहिण ना पाईआ। सब नूं मार्ग दित्ता सखाल,

गुरमुखां नाल करो प्यार, मूर्ख मुग्ध उतरो पार, पल्लू फड़ के चाईं चाईंआ। श्री भगवान होया दयाल, जिस दे हथ्थ काल महाकाल, स्वाल सब दे हल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, बहौल सिंघ दित्ता इक्को दान, दिन दिहाढ़े तैनूं करां परवान, तेरे उते रैण अन्धेरी कदे ना छाईआ।

✪ २५ भाद्रों २०२० बिक्रमी बलवन्त सिंघ दे गृह जलालाबाद ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर सूरबीर सरबँग, वड बलकारी खेल कराइंदा। गुरमुख अन्दर वेखे लँघ, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। सेज सुहञ्जणी सुहाए पलँघ, आसण अबिनाशी इक वखाइंदा। निर्मल जोत चाढ़ चन्द, नूरो नूर डगमगाइंदा। अनहद नादी साचा छन्द, धुर दा राग अलाइंदा। दूई द्वैती ढाह कंध, भाण्डा भरम भउ भंनाइंदा। पंच विकारा खण्ड खण्ड, खण्डा खड़ग नाम चमकाइंदा। दे ज्ञान अन्धेर अन्ध, अज्ञान रूप वटाइंदा। दयाल हो सदा बख्शंद, बख्शिश आपणी झोली पाइंदा। जन्म जन्म दा मेटे पन्ध, कर्म कर्म दा रोग गंवाइंदा। सच दुआर वखाए इक्को हद्द, साची नगरी आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख मन्दिर इक वड्याइंदा। गुरमुख अन्दर सोहणा रंग, रंग रंगीला आप रंगाईआ। अट्ठे पहर इक अनन्द, सदा सदा रिहा समझाईआ। वस्त अमोलक लैणी मंग, दाता दानी दर वरताईआ । बाल अवस्था गई लँघ, जोबन सिर उते डेरा लाईआ। मन विच आए ना कदे घमण्ड, तृष्ना अवर ना कोए वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख गृह साचा धाम सुहाईआ। गुरमुख मन्दिर सोहणा उच्चा, अगम्म अथाह बणाईआ। तत विकारे नालों सुच्चा, सूखम रूप समझाईआ। जिस अन्दर साहिब सतिगुर वेखे मुखा, घर घर विच दर्शन पाईआ। नाता तुटे मात गर्भ उलटे रुखा, दस दस मास अग्न ना कोए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन डेरा इक वसाईआ। गुरमुख मन्दिर सच दीवार, छप्पर छन्न प्रभू छुहाईआ। दीवा बाती इक उज्यार, तेल वत्ती ना कोए रखाईआ। साची सखीआँ मंगलाचार, गीत गोबिन्द अलाईआ। इक्को नाद सच्ची धुनकार, ताल तलवाड़ा नज़र कोए ना आईआ। सच प्रीती इक प्यार, परम पुरख आप कराईआ। मन्दिर मसीत छुट्टे दुआर, घर नज़री आए माहीआ। पंच तत ना होए ख्वार, पंचम मेला सहिज सुभाईआ। गुर चेला बैठ इक दरबार, दर दरवाज़ा देण खुलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन मन्दिर सोभा पाईआ। हरिजन मन्दिर सच महल्ल, हरि जू हरि हरि आप सुहाइंदा। आदि जुगादि रहे अटल, खण्डर थेह ना कोए कराइंदा। जिस दे अन्दर नाम संदेसा देवे

घल्ल, धुर फ़रमान सुणाइंदा। दीपक हो के जाए बल, जोती नूर नूर रुशनाइंदा। अमृत हो के बरसे जल, जलधारा रूप वटाइंदा। निक्का हो के जाए पल, अन्दर आपणा आसण लाइंदा। सुघड़ हो के दस्से वल, साचा मार्ग इक समझाइंदा। पुरख हो के करे छल, अछल छलधारी भेव जणाइंदा। हँकारी हो के सुट्टे डूंघी डल, घर अन्धेरा इक वखाइंदा। प्रीतम हो के सच सिँघासण लए मल्ल, आत्म सेजा सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मन्दिर इक वखाइंदा। गुरमुख मन्दिर वेख दयाल, दीनन आप समझाइंदा। वस्त अमोलक साचा लाल, अगम्मड़े रंग रंगाइंदा। जीव जंत विचों भाल, साध सन्त विचों उठाइंदा। लेखा जाण शाह कंगाल, शहिनशाह आपणा मेल मिलाइंदा। हालत वेख पिछला हाल, हरि जू आपणा भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, काया मन्दिर इक रुशनाइंदा । काया मन्दिर रोशन मनारा, नूर नूर जणाईआ। गुरमुख गुर गुर लग्गे प्यारा, सच प्रीती इक लगाईआ। लख चुरासी नालों कर किनारा, हरिजन आपणा जोड़ जुड़ाईआ। निरगुण सरगुण करे विहारा, बिवहारी धार बंधाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म बोल जैकारा, जै जैकार सर्ब सुणाईआ। घर वखाए ठांडा दरबारा, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। कागद कलम ना लिखणहारा, कातब पट्टी नैण शरमाईआ । बाबल मिल्या इक निरँकारा, घर साचे वज्जे वधाईआ। मन्दिर सोहे सच दरबारा, दर दरवाज़ा दए खुल्हाईआ। आदि अन्त जिस दा अन्त ना पारावारा, सो पारब्रह्म मेल मिलाईआ। जन भगत वखाए इक अखाड़ा, बिन गोपी काहन नाच नचाईआ। भाग लगाए जंगल जूह उजाड़ा, टिल्ले पर्बत वेख वखाईआ। वेखणहारा काया भँवरी डूंघी ग़ारा, ग़ाइब प्रगट हो के नज़री आईआ। निरगुण हो के सतिगुर आया दुबारा, दो धार खेल चलाईआ। बाल अवस्था कीता प्यारा, बाली बुध सुद्ध जणाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर मन्दिर बणे सहारा, तन गृह करे उज्यारा, जगत अँध्यारा रहिण कोए ना पाईआ। बलवन्त कन्त भगवन्त मिल्या विच संसारा, संसार सागर काया गागर कर कर्म निर्मल उजागर, दो जहानां पार कराईआ।

✪ २५ भाद्रों २०२० बिक्रमी धर्मबीर दे गृह जलालाबाद ज़िला अमृतसर ✪

जुग जुग मेला भगत भगवान, लोकमात वज्जे वधाईआ। धर्म वखाए इक निशान, कूड़ा नाता तोड़ तुड़ाईआ। अन्तर आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान, साची विद्या करे पढ़ाईआ। अमृत सरोवर सच कराए इश्नान, दुरमति मैल धवाईआ। घर मेल मिलावा गोपी काहन, सुरती शब्द करे कुड़माईआ। करे प्रकाश कोटन भान, जोती नूर नूर रुशनाईआ। वस्त अमोलक देवे दान,

सच समग्री झोली पाईआ। कूड़ा तोड़े माण अभिमान, बख्शे चरण साची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। भगत भगवान सगला साथ, दो जहानां आप चलाइंदा। जुग चौकड़ी चढ़ाए राथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। पार उतारे आपणे घाट, जगत मलाह आप अख्वाइंदा । मेटे रैण अन्धेरी रात, सति सतिवादी सच चन्द चमकाइंदा। लहिणा देणा चुकाए बिन लेखा कलम दवात, धुर मस्तक वेख वखाइंदा। जिउँ भावे पत लए राख, मेहर नज़र आप उठाइंदा। पड़दा जाणे तत आठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश, मन मति बुध फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। भगत भगवान सदा संग, जुग जुग विछड़ कदे ना जाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नित नवित्त चाढ़े रंग, रंग रंगीला इक रंगाईआ। आत्म सेजा बैठ पलँघ, साचे मन्दिर खुशी वखाईआ। दिवस रैण इक अनन्द, खुशी ग़मी ना कोए जणाईआ। साचा मेला सूरा सरबँग, साहिब सतिगुर आप कराईआ। जगत दुआरा वेखे लँघ, नौ दर डेरा आपे ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दए वड्याईआ। भगतन मीता इक गोपाल, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जुग जुग वेखे आपणे लाल, लालन आपणी गोद बहाईआ। काया मन्दिर अन्दर वखाए साची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक प्रगटाईआ। दीपक दीआ जोती बाल, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। अमृत आत्म जाम प्याल, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। पंज तत काया दिसे कंगाल, नाम ख़ज़ीना अन्दर इक रखाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जीवण जुगत दए जणाईआ। धर्म दुआरे धर्म पाल, धर्म आत्मा इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगतन मीता ठांडा सीता, आदि पुरख इक रघुराईआ। भगत भगवान धुर संदेस, धुर दी बाणी आप जणाईआ। अन्तर अन्तर हो प्रवेश, जोती जोत जोत समाईआ। लेखा जाण विष्न ब्रह्म महेष, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा दए प्रगटाईआ। भगत भगवान कर प्रगट, प्रगट आपणा खेल वखाइंदा। जगत वणजारा खोल्ह हट्ट, वस्त अमोलक इक वरताइंदा। जन भगतां देवे हथ्थो हथ्थ, गुरमुख झोली आप भराइंदा। लख चुरासी जीव जंत वेखण अन्धेरी रैण मस्स, साचा चन्द नज़र किसे ना आइंदा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार कूड़ी वासना अन्दर रहे नट्ठ, चार कुण्ट दहि दिशां उठ उठ सर्ब धाइंदा । श्री भगवान सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग निरगुण सरगुण जन भगतां होया सदा वस, वसीकार आपणा खेल आप रचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भगत भगवान साचा मीता आप चलाए आपणी रीता, साचा मार्ग इक्को लाइंदा। भगत भगवान मार्ग ला, सृष्ट सबाई आप समझाइंदा। पारब्रह्म मिलण दा रखो चा, दूजा सज्जण ना कोए बणाइंदा। रहबर

लभ्भो इक ख़ुदा, बेनज़ीर नज़र बदलाइंदा। रहमत करे बेपरवाह, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान देवे दान, मुरीद मुर्शद मिले आण, मेला आपणे घर कराइंदा। भगत भगवान साचा मेला, काया तत मिले वड्याईआ। साचे घर वसे गुरु गुर चेला, चेला गुर इक्को रंग समाईआ। आत्म परमात्म सज्जण सुहेला, पारब्रह्म ब्रह्म मिल मिल ख़ुशी मनाईआ। सुहञ्जणी रैण सुहञ्जणा वेला, सुहञ्जणी थित आप वड्याईआ। अचरज खेल पारब्रह्म प्रभ अबिनाशी करता आदि जुगादि जुगा जुगन्तर खेला, ख़ालक ख़लक दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, भगत भगवान वसण इक्को घर, सचखण्ड दुआर वेखण चढ़, ना कोई सीस ना कोई धड़, ना कोई चोटी ना कोई जड़, ना कोई विद्या अक्खर लैण पढ़, निश्अक्खर अक्खर विच समाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करता पुरख आपणी करनी रिहा कर, निरगुण निरवैर निराकार हरिजन आपणे घर वसाईआ।

✪ २५ भाद्रों २०२० बिक्रमी सोहण सिँघ दे गृह राम पुर ज़िला अमृतसर ✪

सति दरबार हरि का वेख, दो जहान लैण अंगड़ाईआ। चारों कुण्ट रोवण भेख, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कोई ना देवे भेत, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। सन्त सतिगुर कोए ना करे हेत, सच प्रीत ना कोए लगाईआ। कूड़ी क्रिया खेडी खेड, साची वस्त हथ्थ ना आईआ। अन्त ना मुकाए कोई लेख, लेखा लग्गे कोए ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। हरि का वेख सच दरबारा, दो जहान देण दुहाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड रोवे ज़ारो ज़ारा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। ज़िमी असमान ना कोए सहारा, धरत धवल दए दुहाईआ। गुर अवतार ना कोई प्यारा, पीर पैगम्बर नज़र किसे ना आईआ। कागद कलम शाही ना कोई वणजारा, साचा हट्ट ना कोए वखाईआ। चौदां लोक ना कोई आधारा, चौदां तबक धीर ना कोए रखाईआ। चौदां विद्या डुब्बी डूंघे सागर गारा, गहर गम्भीर हथ्थ किसे ना आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण करन पुकारा, ख़ाली झोली रहे वखाईआ। दर दरवेश मंगण गुर अवतारा, पीर पैगम्बर ध्यान लगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर निउँ निउँ करे निमस्कारा, सजदा सीस जगदीश झुकाईआ । कलयुग कढ्ढे इक्को हाढ़ा, बौहड़ी बौहड़ी दए दुहाईआ। सज्जण मिले ना मीत मुरारा, संग सच्चा ना कोए निभाईआ। चार वरन लग्गा अखाड़ा, ज़ात पात करे लड़ाईआ। नौं खण्ड पृथ्मी धूंआँधारा, सत्त दीप ना कोए रुशनाईआ। शिवदुआला मन्दिर कोई ना करे हक़ प्यारा, हकीकत दए ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच

३६२
१५

दरबार इक सुहाईआ। सच दरबार वेख मात, विष्न ब्रह्मा शिव नैण उठाईआ। नेत्र खोल्ह मारन झात, नैण अक्ख इक उग्घड़ाईआ। जिस दा लेखा लिखदे रहे नाल कलम दवात, बण बण कातब जगत राहीआ। सो पुरख अगम्मा कलयुग वेखे खेल तमाश, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। दो जहान श्री भगवान निरगुण सरगुण वेखण आए रास, गोपी काहन नचाईआ। सच वस्त ना किसे पास, ब्रह्मा नेत्र नैण नैण शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। सच दरबार हरि का एक, एकँकार आप जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर भगत भगवान लओ वेख, निज नेत्र रिहा जणाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी वसणहारा सचखण्ड साचे देस, निरवैर पुरख निरगुण जोत करे रुशनाईआ। तिस साहिब नूं करो आदेस, जो ना मरे ना जाईआ। नेड़े हो को सुणो संदेस, साचा ढोला रिहा जणाईआ। जिस दे अग्गे चले कोई ना पेश, पेशतर आपणा हुक्म मनाईआ। जिस दी पूजा विष्न ब्रह्मा करे महेष, इष्ट देव इक अख्वाईआ। सो साहिब दाता ना दाढ़ी मुच्छ कोई केस, मूंड मुंडाया रूप ना कोए रखाईआ। जिन सुत बणाया गुर दस्मेश, दहि दिशा दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बंक इक वड्याईआ। सच दरबार मातलोक, सो पुरख निरँजण आप लगाईआ। सच सुणाए इक श्लोक, हरि पुरख निरँजण एका गाईआ। एकँकारा सुहाए बंक कोट, मन्दिर इक्को डेरा लाईआ। आदि निरँजण निर्मल प्रकाश कर जोत, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। अबिनाशी करता कढुणहारा खोट, सच समग्री इक वखाईआ। श्री भगवान सुणावणहारा अगम्म श्लोक, नाम निधान इक जणाईआ। पारब्रह्म बणावणहारा ओत पोत, घाड़न घड़न लए घड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबार इक सुहाईआ। सच दरबार श्री भगवान, निरवैर पुरख आप लगाईआ। साचा झुल्ले इक निशान, दूजा नज़र कोए ना आईआ। चारे वरनां दए ज्ञान, बरन अठारां करे पढ़ाईआ। साचा मन्दिर वखाए मकान, गुरुदुआर इक समझाईआ। सच सरोवर कराए अशनान, तीर्थ तट इक वखाईआ। साचा नाम जपाए बिन रसना जिह्वा ज़बान, बत्ती दन्द ना कोए हिलाईआ। साचा नाद वजाए सच्ची धुन्कान, अनहद नादी राग अलाईआ। साचा अमृत देवे पीण खाण, तृष्ना भुक्ख रहे ना राईआ। साचा बख्शे चरण ध्यान, कँवल चरण मिले वड्याईआ। साचा देवे दरगाह माण, सचखण्ड दुआरे मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दरबार आप प्रगटाईआ। सच दरबार सतिगुर पूरा, हरि एको एक लगाइंदा। कर प्रकाश जोती नूरा, दीवा बाती ना कोए जगाइंदा। कूड़ा किरकट हूंझ कूड़ा, साफ़ महल्ल आप सुहाइंदा। शब्द अनाद अनादी तूरा, तुरत आवाज़ लगाइंदा। सर्ब कला बण भरपूरा, प्रभ आपणा खेल वखाइंदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबार आप सुहाइंदा। सच दरबार श्री भगवन्त, सति पुरख निरँजण आप लगाईआ। तख़्त निवासी नर हरि नरायण कन्त, करता इक्को डेरा लाईआ। आदि जुगादि महिमां अगणत, भेव अभेद सके ना कोए खुल्हाईआ। रसना जिह्वा गुर अवतार पीर पैगम्बर गाउँदे गए मंत, निज घर बैठे ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबार इक सुहाईआ। सच दरबार लग्गा सोहणा, हरि सोहणी बणत बणाईआ। दो जहानां आपे मोहणा, मोहणी रूप वटाईआ। ना हस्सणा ना कदे रोणा, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। ना जागणा ना कदे सौणा, आलस निंद्रा ना कोए वड्याईआ। ना ढोला ना गीत गाउणा, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। ना पिता ना मात बणाउणा, पूत गोद ना कोए उठाईआ। ना सज्जण ना साक रखाउणा, बन्धन बंधप नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबारे दए वड्याईआ। सच दरबार बणा निरँकार, निरगुण खेड़ा आप वसाईआ। लेखा जाण धुर दरबार, धुर दी धार आप प्रगटाईआ। जिस नूं गाउँदे गए गुरू अवतार, पीर पैगम्बर सिफ्त सालाहीआ। जिस दा मंगदे गए दरस दीदार, नित नवित्त आस तकाईआ। जिस नूं कहिन्दे सांझा यार, मुकामे हक़ डेरा लाईआ। जिस नूं कहिन्दे राम करे प्यार, रमया हर घट थाईंआ। जिस नूं कहिन्दे काहन बणे सर्ब संसार, लख चुरासी गोपी रिहा हंढ्ढाईआ। जिस नूं कहिन्दे साचा बोले नाम जैकार, जै जैकार सुणाईआ। जिस नूं कहिन्दे पुरख अकाल, अक्ल कला वड्याईआ। जिस नूं मन्नदे दीन दयाल, ठाकर इक्को बेपरवाहीआ। जिस दा लहिणा शाह कंगाल, ऊँचां नीचां वेख वखाईआ। जिस दा त्रैगुण वड्डा जाल, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। जिस दे हुक्मे अन्दर काल महाकाल, जुग जुग आपणी सेव कमाईआ। जिस दा खेल सदा बेमिसाल, मिसल सके ना कोए बणाईआ। जिस दा लेखा हक़ हलाल, हकीकत सब नूं रिहा समझाईआ। जिस दा नाम ख़ज़ाना धन माल, नित नवित्त रिहा लुटाईआ। जिस दा बाग़ बाग़ीचा फुल्ल फुलवाड़ी दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड रचन रचाईआ। जिस दा नाम धर्म इक निशान, आदि जुगादि सदा सहिज सुखदाईआ। जिस दा मन्दिर सच्चा देवे बिसराम, विश्व आसण इक लगाईआ। जिस दा घर मिले पैग़ाम, धुर संदेसा इक अलाईआ। जिस दा कदी ना बदले नज़ाम, शहिनशाह इक्को इक अख्वाईआ। सो साहिब होया प्रधान, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। सच दरबार लगाया आण, सचखण्ड निवासी डेरा लाईआ। धुर संदेसा दे फ़रमान, इक्को हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर निरगुण रूप वेखो आण, कलयुग वज्जे सच वधाईआ। भगत दुआरे करो पहचान, जिस दा बाढी आप पारब्रह्म अख्वाईआ। तिस मन्दिर बहि के गाओ गान, मेरा तेरा ध्यान लगाईआ। साचा चुक्को इक ईमान, साचा धर्म इक समझाईआ। इक्को कलमा पढ़ो आण,

इक्को नाम दए समझाईआ। इक्को इष्ट मन्नो भगवान, दूजा संग ना कोए निभाईआ। उच्ची कूक दयो ब्यान, चार युग दी कहाणी दयो सुणाईआ। जिस दे पिच्छे लै के आउँदे रहे पैग़ाम, सरगुण हो के सेव कमाईआ। सो साहिब वेखो अमाम, साचे हुजरे डेरा लाईआ। बण बरदे करो सलाम, बरखुरदारी दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबार इक वखाईआ। सच दरबार वेखो लग्गा, सचखण्ड निवासी आप लगाइंदा। दीपक दीआ इक्को जगा, दो जहान डगमगाइंदा। पिछला करो चेता फिर दस्से हाल अग्गा, अगला खेल आप समझाईआ। प्रगट हो सूरा सरबग्गा, सूरबीर हुक्म वरताईआ। नौबत नगारा नाम निधान वज्जा, ब्रह्मण्ड खण्ड करे शनवाईआ । बिन पुरख अकाल पड़दा किसे ना कज्जा, नंगी फिरे सर्ब लोकाईआ। किसे कम्म ना आवे कीता हज्जा, हज़रत फड़ बांहों ना गले लगाईआ। जगत सवान फिरे भज्जा, कूकर वाहो दाहीआ। सच दुआरे बहि ना सजा, साजण मिल्या ना हरि निरँकार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबार इक वखाईआ। सच दरबार वेखो नाल अक्ख, आख़र आप जणाइंदा। जिस सिँघासण साहिब प्रतख, निरगुण जोत डगमगाइंदा। बण ग़ुलाम जोड़े हथ्थ, बरदे रूप सर्ब समझाइंदा। हरि सरनाई जाओ ढट्ठ, तुख्म तासीर वेख वखाइंदा। जिस दी धारों होए प्रगट, सो मेला आप कराइंदा। आपणा खोल्ह वखाओ हट्ट, सौदा कवण घर रखाइंदा। लोकमात की कुझ आए दस्स, साची सिख्या कवण दृढ़ाइंदा। कवण वेखो तुहाढे वस, कवण बैठा मुख भवाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे कहिण पारब्रह्म साडी होई बस्स, बिस्तर आपणा सर्ब बंद कराइंदा। कलयुग जीव झूठा पींदे रस, तेरा नाम ना कोए ध्याइंदा। काम क्रोध लोभ हँकार दे होए वस, विभचार सर्ब कमाइंदा। रसना जिह्वा आत्म परमात्म हरि का सिमरन कोई ना लए रट, निज नेत्र दरस कोए ना पाइंदा। दूई द्वैती हउमे हंगता घर घर वज्जा फट्ट, धुर दा मेला मेल ना कोए मिलाइंदा। कूड़ा रस रहे चट्ट, अमृत रस हथ्थ किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर दरबार तेरा इक्को नज़री आइंदा। सच दरबारा तेरा साहिब, प्रभ इक्को इक वड्याईआ । जुग चौकड़ी रिहों ग़ाइब, तेरी सूरत नज़र किसे ना आईआ। कलयुग अन्तिम खेल करें अजीब अजाइब, अजब तेरी वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरे नाइब, धुर दा हुक्म गए सुणाईआ। सारे कह के गए अन्तिम परवरदिगार पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आवे वाहद, लाशरीक फेरा पाईआ। चार युग दा वेखे कानून कवाइद, काइदा इक्को इक समझाईआ। साचा हुक्म करे आइद, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। दो जहानां देवे हदाइत, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। कोई रहिण ना देवे विच गुंजाइश, कमी नज़र कोए ना आईआ। लख चुरासी घर घर कर पैमाइश, नाम पैमाना दए वखाईआ।

लख चुरासी जीव जंत तेरी करे ना कोए फ़रमाइश, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। कलयुग पूरी होवे ख़ाहिश, ख़ासतगार सर्ब लोकाईआ। कुम्भी नरक करे रिहाइश, जिन्हां भुल्लया बेपरवाहीआ। जन्म जन्म होवे पैदाइश, लख चुरासी विच भवाईआ। सचखण्ड दुआरे बिन गुरमुखां किसे ना मिले रिहाइश, बंदीख़ाना सब नूं नज़री आईआ। हुक्मे अन्दर ना कोए शरायत, शरीअत रूप ना कोए वटाईआ। लख चुरासी विचों गुरसिख थोड़े रखे कर कफ़ायत, आप आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबार इक्को हुक्म वरताईआ। साचा हुक्म वरता प्रभ, गुर अवतार देण दुहाईआ। सन्त सुहेले साचे लभ्भ, लख चुरासी फोल फुलाईआ। अमृत झिरना झिरा कँवल नभ, सच बूँद बरसाईआ। जगत दुआरे पार कर हद्द, घर आपणा इक वखाईआ। साचा नाम सुणा अनहद, अनरागी राग अलाईआ। विश्व बणा साची यद्द, नाता तुट्टे पिता माईआ। हँस बणा फड़ के कग्ग, सोहँ हँसा जाप जपाईआ। लख चुरासी विचों कढ्ढ, तेरी इक सरनाईआ। धर्म निशाना दे गड्ड, ना सके कोए उखड़ाईआ। कूड़ी क्रिया नालों कर अड्ड, आप आपणा मेल मिलाईआ। सीस दस्तार बन्न्ह सच धर्म दी पग्ग, कूड़ी चोटी दे मुंडाईआ। तेरी सरनाई जाईए लग्ग, दूजा नज़र कोए ना आईआ। त्रैगुण माया बुझे अग्ग, पंज तत ना कोए लड़ाईआ। बिन मक्के काअबयों होवे हज्ज, तेरा नूर इक्को नजरी आईआ। घर आपणे लैणा सद्द, छुट्टे वात पराईआ। साडा पड़दा लैणा कज, मेहर नज़र उठाईआ। कलयुग सब दे पिच्छे रिहा भज्ज, बिन तेरी किरपा बचया कोई रहिण ना पाईआ। जगत विकारा पीती मध, मदन मोहन नज़र किसे ना आईआ। अन्तिम डिगे डूंग्घी खड्ड, बाहर सके ना कोए कढ्ढाईआ। बिन हरि नामे ख़ाली दिसण हड्ड, लख चुरासी झूठा डौरु डंक वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे दरबार वड्डी वड्याईआ। कर किरपा प्रभ ठाकर स्वामी, चार युग ध्यान लगाईआ। उठ वेख हरि अन्तरजामी, घट घट आपणा फेरा पाईआ। कलयुग जीव भुल्ले सतिगुर बाणी, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। चारों कुण्ट दिसे शैतानी, शरीअत करे इक लड़ाईआ। भरमे भुल्ले पंडत पांधे वड विद्वानी, मुल्ला शेख़ मशायक नायक नज़र किसे ना आईआ। उच्ची कूकण वाहद गावण दस्सण धुर निशानी, निज नेत्र दरस कोए ना पाईआ। अठसठ तीर्थ कलयुग अग्नी उबलया पाणी, अमृत रूप ना कोए वटाईआ। कूड़ी क्रिया लग्गी चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज सति पुरख निरँजण तेरा संग ना कोए निभाईआ। सुरती शब्द ना मिल्या हाणी, सुणावे कोई ना अकथ कहाणी, गीत गोबिन्द ना कोए अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच दरबार जन भगतां दे वड्याईआ । जन भगतां प्रभ दे दान, दातार तेरी सरनाईआ। बिनां पढ़यां दे ज्ञान, तेरे नाम वड

वड्याईआ। ग़रीब निमाणयां बख्श माण, कोझे कमलयां गले लगाईआ। डुब्बदे पाहन तार आण, पाथर आपणा चरण छुहाईआ। जग रोंदयां कुरलांदयां कर कल्याण, जो तेरा ध्यान लगाईआ। लख चुरासी विचों कर पहचान, बेपहचान फेरा पाईआ। अन्दर वड़ के दे ज्ञान, बाहरों समझ सके कोए ना राईआ। सृष्ट सबाई दिसे कूड़ निशान, कूड़े धंदे लग्गी सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां लै जगाईआ। जन भगत जगाए किरपा कर, कल आपणी बूझ बुझाईआ। शब्द सिँघसण साचे चढ़, धुर दा हुक्म मनाईआ। अन्तर आत्म आंदी फड़, सुरती सुरत भवाईआ। किला तोड़ हँकारी गढ़, माया ममता डेरा ढाहीआ। वेखणहारा चेतन जड़, आपणा भेव खुल्हाईआ। प्रगट हो नरायण नर, हरिजन नारी आप प्रनाईआ। दरस दिखाए अग्गे खड़, मुख नक़ाब ना कोए टिकाईआ। ग़रीब निवाज़ खोल्ह दर, दर दरवाज़ा आप लँघाईआ। साची सेजे बैठा चढ़, चतुर्भुज वड्याईआ। आपणा अक्खर रिहा पढ़, तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबार गुरमुख साचे आप बहाईआ। गुरमुख जगाए आपणी अक्ख, भेव अभेद जणाया। आत्म परमात्म मार्ग दस्स, ब्रह्म पारब्रह्म पढ़ाया। सुरती शब्दी मेला हस्स हस्स, नारी कन्त मेल मिलाया। काया मन्दिर दोवें रहे वस, सौहरे पेईए इक्को घर जणाया। इक दूजे नाल कर इकट्ठ, पतिपरमेश्वर वेख वखाया। लेखा जाणे पुरख समरथ साहिब स्वामी आपणा रंग रंगाया। जन भगतां लेखा देवे हक़, हक़ सब दा झोली पाया। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो लभ्भ लभ्भ गए थक्क, तिन्हां अन्तिम आपणा रंग चढ़ाया । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबारे हरिजन साचे लए तराया। हरिजन तारे श्री भगवन्त, भगवन दया कमाईआ । सर्ब जीआं दा इक्को मंत, हरि मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम लेखा जाणे जीव जंत, लख चुरासी खोज खुजाईआ। सन्त सुहेले कर कर मेले गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक दृढ़ाईआ। मेल मिलावा साची संगत, हरिसंगत विच समाईआ। सच भण्डार धुर दी पंगत, विष्णूं घर घर रिहा वरताईआ। ब्रह्मा दर दरवेश मंगत, बैठा अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मीता ठांडा सीता सच दरबारे हरि निरँकारे वस्त इक्को इक वरताईआ। भगतन देवे वस्त आप अपार, अपरम्पर दया कमाइंदा। धर्म दुआरे कर प्यार, घर साचा मेल मिलाइंदा। जन्म कर्म तों कर के बाहर, निहकर्मी आपणे रंग रंगाइंदा। वरन बरन दा तोड़ जंजाल, ऊँच नीच एका घर वसाइंदा। लेखा जाण शाह कंगाल, ग़रीब निमाणे गोद उठाइंदा। बरन अठारां वखाए इक्को धर्मसाल, दूजा इष्ट ना कोए. बणाइंदा। सब दा पिता पुरख अकाल, लख चुरासी गोद सुहाइंदा। गुरमुख बणो साचे लाल, हरि लालन रंग रंगाइंदा। कूड़ी माया तोड़ो जंजाल, जागरत जोत इक

जगाइंदा। मुरीदां पुच्छे मुर्शद हाल, बेपरवाह फेरा पाइंदा। जा के आपणा करो स्वाल, हल स्वाल सर्ब कराइंदा। सतिगुर पूरा लभ्भो इक दलाल, दो जहानां वणज आप वखाइंदा। नाता तोड़ो काल महाकाल, राए धर्म ना हुक्म वरताइंदा। सतिगुर पूरे चलो नाल नाल, बण पांधी पन्ध मुकाइंदा। काया मन्दिर अन्दर गुरमुख वेखो सच्ची धर्मसाल, घर घर विच डेरा आप लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबार इक वखाइंदा। सच दरबार वेख्या घर, गृह ठाकर आप वखाईआ। जिस दे बंद कीते नौ दर, राह इक्को इक जणाईआ। सुखमन टेडी बंक कोई ना जाए अड़, ईड़ा पिंगल ना कोए समझाईआ। भ्यानक रूप ना कोई डर, भय सिर ना कोए रखाईआ। सोहँ ढोला लैणा पढ़, अग्गे आउणा वाहो दाहीआ। निरगुण दाता लए फड़, निरवैर आपणा मेल मिलाईआ। घर विच घर वेखो चढ़, नित हुन्दी इक रुशनाईआ। सच सरनाई जावो पड़, डिगदयां लए उठाईआ। गुरमुख नारी लए वर, पैज स्वारे पैज धराईआ। प्रेम बन्धन बन्ने लड़, पल्लू इक्को वार गंढुाईआ। लेखा चुक्के सीस धड़, निरगुण निरगुण खुशी वखाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिसन्त आपणा सतिगुर अन्दर वेखो वड़, अट्ठे पहर बैठा राह तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबार देवे वर, जुग विछड़े आप मिलाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, जिस जन किरपा देवे कर, तिस कपट कोए रहिण ना पाईआ।

✪ २६ भाद्रों २०२० बिक्रमी पिण्ड कल्ला सुखदेव राज दे गृह ज़िला अमृतसर ✪

धर्म मज़्हब रोवण दीन, दुनीया नाल रलाईआ। हरि हरि नाम ना रिहा कोई चीन, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। नाता जुड़या माया तीन, पंज तत कूड़ी कुड़माईआ। अन्तर आत्म होए ना कोए लीन, लिव परमात्म कोए ना लाईआ। माया ममता होए अधीन, साचा मार्ग नज़र किसे ना आईआ। नेत्र हुंदया होए नाबीन, अक्ख प्रतख ना कोए खुल्हाईआ। गढ़ हँकार ना होए मस्कीन, प्रेम प्रीत ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। दीन मज़्हब रोवे ज़ात, वरन बरन दुहाईआ। कूड़ी क्रिया नार कमज़ात, कुलखणी घर घर डेरा लाईआ। हरि का नाम ना किसे पास, खाली दिसे सर्ब लोकाईआ। जगत वासना चलण स्वास, स्वास स्वास ना कोए ध्याईआ। साचा जोग ना कोए अभ्यास, अन्तर आत्म ध्यान ना कोए लगाईआ। प्रभ मिलण दी रखे कोए ना ख्वाहिश, कूड़ी आसा रहे तकाईआ। साचे सतिगुर कोई ना होवे दास, निउँ निउँ सीस ना कोए झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। दीन मज़्ब पावण रौला, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। कोई ना करे भार हौला, धरनी धरत धवल दए दुहाईआ। नज़र ना आए किसे मौला, मूल सके ना कोए चुकाईआ। पूरा करे ना कोई कौला, कीता कौल तोड़ ना कोए निभाईआ। जगत कहार चुक्कण डोला, सतिगुर सेज नज़र किसे ना आईआ। कलयुग जीव अन्न्हा बोला, हरि का नाउँ सुणन कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दीन मज़्ब नेत्र रोंदे, नैणां नीर वहाईआ। दिवस रैण कदे ना सौंदे, घड़ी पल सुख चैन नज़र कोए ना आईआ। जगत वासना खेल रचाउँदे, साचा मन्दिर ना कोए सुहाईआ। सच प्रीत ना कोई कमाउँदे, कूड़ी अग्नी रही तपाईआ। साचा ढोला कोई ना गाउँदे, गुर गुर भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, प्रभ मिले सच सरनाईआ। दीन मज़्ब दस्सण हाल, चार युग कहाणी रहे सुणाईआ। चारों कुण्ट होई बेहाल, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ । आत्म अन्तर चले कोई ना नाल, परमात्म मीत ना कोए बणाईआ। साध सन्त होए कंगाल, साची वस्त हट्ट ना कोए विकाईआ। कूड़ी क्रिया बणी दलाल, घर घर वणज रही कराईआ। गुरमुख विरला लख चुरासी विचों बचे लाल, जिस सतिगुर आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। दीन मज़्ब मारन धाह, दो जहान सुणाईआ। किरपा कर बेपरवाह, परवरदिगार तेरी सरनाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरा गया छा, साचा चन्द नज़र किसे ना आईआ। कूड़ी क्रिया जीव जंत रहे कमा, सच मिले ना कोए वड्याईआ। नाता तुटा पुत्रां माँ, पिता पूत मेल ना कोए मिलाईआ। ग़रीब निमाणयां देवे ना कोई थाँ, मेहर नज़र ना कोए उठाईआ। लहिणा देणा चुके किसे ना, मकरूज होई अन्त लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, लेखा सब दा पार कराईआ। दीन मज़्ब गए ढट्ठ, प्रभ तेरी सच सरनाईआ। साडा टुट्टा अन्तिम हठ, धीरज रहिण कोए ना पाईआ। घर घर उबले कूड़ी रत, रती रत रही तपाईआ। अमृत मिले ना अठसठ, तीर्थ तट देण दुहाईआ। लेखा वेख्या मन्दिर मस्जिद मट्ठ, शिवदुआले सार कोए ना पाईआ। गुरुदुआरा तेरा हरि हरि नाम ना लए रट, जगत झगड़ा इक वखाईआ। दरोही खुदाए कलयुग अन्तिम वज्जा फट्ट, पट्टी नाम ना कोए बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेले अन्तिम हो सहाईआ। धर्म कहे ना कोई दिसे धर्म आत्मा, धरनापत नज़र कोए ना आईआ। मेल मिलाए ना कोई परम आत्मा, परमात्म तेरी सार कोए ना पाईआ। लेखा जाणे ना कोई साहिब साचे नाथना, दीना नाथ देवे ना कोए सरनाईआ। साची विद्या पड़े ना कोई गाथना, चौदां विद्या रही कुरलाईआ । पतण मिले ना कोई घाटना,

तट किनारा नज़र किसे ना आईआ। साचा बचन किसे ना मिले आखणा, कूड़ो कूड़ चले चतुराईआ। तुध बिन पड़दा किसे ना ढाकणा, गुर पीर बैठे मुख शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देणी माण वड्याईआ। मज़्हब कहे ना कोई दिसे ईमान, अमल हक़ ना कोए कमाइंदा। ना कोई शरअ दिसे कुरान, काअबा सच ना कोए सुहाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी होई बेईमान, बेवा रूप सर्ब वटाइंदा। चारों कुण्ट फिरे शैतान, घर घर आपणा हुक्म वरताइंदा। जीव जंत होए नादान, साध सन्त सोई सुरत ना कोए जगाइंदा। जगत वासना होई प्रधान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नाल मिलाइंदा। कोई ना मारे अणयाला बाण, बजर कपाटी पार ना कोए कराइंदा। कूड़ कुड़यारा पीण खाण, अमृत रस हथ्थ किसे ना आइंदा। भरमे भुले जीव अञ्याण, बाली बुध ना कोए बदलाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को तेरी ओट तकाइंदा। मज़्हब कहे मेरे मिहबान, मेहरवान तेरी सरनाईआ । धर्म ना दिसे कोई निशान, दो जहान देण दुहाईआ। दोहां वचोला बण आण, वड दाते तेरी वड वड्याईआ। झगड़ा मेट ज़िमीं असमान, शरअ कोए रहिण ना पाईआ। इक्को तेरी सिफ्त करे जहान, तेरा ढोला नाम गाईआ। ज़ात पात कूड़ी मुके दुकान, ऊँच नीच नज़र कोए ना आईआ। सब दी रसना इक ज़बान, साचा नाम इक पढ़ाईआ। धुर दा कलमा तेरी कलाम, कायनात दे समझाईआ। नज़री आए इक ईमान, आदत इक्को दे पाईआ। इक्को धर्म होए परवान, परवाना घर घर दे फड़ाईआ। तेरे दुआरे दोहां मिले माण, मनसा होर रहे ना राईआ। आदि जुगादि श्री भगवान, सद तेरी इक सरनाईआ। कलयुग अन्त किरपा कर आण, कृपानिध आपणा फेरा पाईआ । तेरा सुणीए सच फ़रमाण, धुर संदेसा इक्को गाईआ। योद्धा सूरबीर बण मर्द मर्दान, बलकारी बल धराईआ। लख चुरासी पा इक्को आण, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। तेरा नाम आदि निरँजण सारे गाण, सो साहिब तेरी सरनाईआ। हँ ब्रह्म आप पहचान, तेरी अंस रही कुरलाईआ । बीस बीसे हरि जगदीशे नेत्र खोल्ह मार ध्यान, दो जहान नैण उठाईआ। चौदां तबक दिसे वैरान, साचा सबक ना कोए सुणाईआ। चौदां लोक मंगण दान, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची बख्श चरण सरनाईआ। दीन मज़्हब दोवें करन पुकार, निर्धन सरधन रूप वटाईआ। कर किरपा आप निरँकार, तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। पिछला लेखा दे निवार, अग्गे झगड़ा रहे ना राईआ। साचा मार्ग दे वखाल, रहबर इक्को राह चलाईआ। जूठा झूठा तुटे जंजाल, जीवण जुगत दे समझाईआ। सृष्ट सबाई कर संभाल, तेरे हथ्थ तेरी वड्याईआ। उठ वेख शाह कंगाल, ग़रीब निमाणे रोवण मारन धाहीआ। चार कुण्ट होए बेहाल, बिहबल हो के ध्यान लगाईआ। साडा मन्न इक स्वाल, बण स्वाली रहे सुणाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर दे वखाईआ। दीन मज़ब रोवे धर्म, धरनी नाल मिलाईआ। कलयुग भुल्लया साचा कर्म, कर्म कांड गए सर्ब तजाईआ। घर घर दिसे इक्को भरम, प्रभ पड़दा रिहा पाईआ। जीवां जंतां साधां सन्तां लथ्थी शरम, हय्या हरि ना कोए रखाईआ। साचा रिहा ना कोई वरन, बरन सति ना कोए नज़री आईआ। रसना जिह्वा सारे पढ़न, अन्तर आत्म ध्यान ना कोए लगाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले सारे खड़न, साहिब सतिगुर साचा सीस ना कोए झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। दीन मज़ब धर्म रखो उडीक, हरि इक्को इक जणाईआ। जुग चौकड़ी अन्तिम नेड़े आई तरीक, तारीख़ सब दी दए बदलाईआ। साची धार दस्से बारीक, रहबर इक्को राह वखाईआ। दूर दुराडा आ नज़दीक, नेरन नेर दए बुझाईआ। दीन मज़ब कोई ना रहे शरीक, शिरकत सब दी दए गंवाईआ। इक्को नाम खुदाए रहे तौफीक, तोहफा घर घर आप पुचाईआ। सदी चौधवीं रही बीत, बीस बीसा वेख वखाईआ। अन्तिम मार्ग दस्से ठीक, साचा राह इक चलाईआ। आत्म परमात्म करे ठांडी सीत, अग्नी तत ना लागे राईआ। चार वरन इक्को ढोला गाए गीत, सोहँ सच करे पढ़ाईआ। पुरख अकाल मिले मीत, परमात्म आत्म जोड़ जुड़ाईआ। साची चले धुर दी रीत, सति सतिवादी आप समझाईआ। किसे दर कोई ना मंगे भीख, बिन सतिगुर पूरे भिच्छया कोई ना पाईआ। चौथे युग मेटे लीक, अग्गे अक्खर इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, देवणहारा साचा दान, जुग चौकड़ी करे कल्याण, दीन मज़ब धर्म वेखे ईमान, कलमा कलाम फोल फोलाया।

✪ २६ भाद्रों २०२० दलीप सिंघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

गुरसिख सदा रखे आस, सतिगुर सरन मिले सरनाईआ। जन्म कर्म दा कटे फास, जम की फाँसी दए तुड़ाईआ। मेहरवान हो के वसे पास, अन्तर आत्म डेरा लाईआ। किरपा निधान हो के दस्से गाथ, साचा मन्त्र नाम पढ़ाईआ। रथवाही बण के चढ़ाए साचे राथ, बेड़ा शौह दरिया पार कराईआ। माही बण के मिले पत्तण घाट, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। श्री भगवान हो के चरण कँवल जोड़े नात, कूड़ा नाता दए तुड़ाईआ। दयाल हो के खोल्ले बंद ताक, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख वेखे थाउँ थाईंआ। गुरसिख साचा रखे ओट, प्रभ चरण ध्यान लगाईआ। सतिगुर भाग लगाए काया कोट, घर घर विच मेल मिलाईआ। करे प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अन्धेर रहिण

ना पाईआ। नेड़ ना आए लाड़ी मौत, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे सच्चा नाम वर, घर इक्को इक बुझाईआ। गुरसिख सदा राह रिहा तक्क, नेत्र नैण नैण उठाईआ। कवण वेले मिले पुरख समरथ, प्रभ आपणी गोद बहाईआ। लेखे लाए रती रत, रती रत आपणे रंग रंगाईआ। एका देवे ब्रह्ममत्त, मनमति दए गंवाईआ। लख चुरासी विचों लए रख, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। अन्तर आत्म खोल्हे अक्ख, निज नेत्र करे रुशनाईआ। मार्ग दस्से इक्को सच, कूड़ी क्रिया ना कोए पढ़ाईआ। भाग लगाए काया माटी कच्च, कंचन रूप दए बणाईआ। मन मनुआ ना जाए नच्च, मनसा मनसा विच खपाईआ। लूं लूं अन्दर सतिगुर पूरा जाए वस, दूजा नज़र कोए ना आईआ। घर घर बहि के खुशी ग़मी रला के पए हस्स, दुःख दर्द कोए रहिण ना पाईआ। वेले अन्तिम रखे पत्त, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद पूरी आस कराईआ। गुरसिख सच्चा तक्के राह, नेत्र नैण नैण उठाईआ। कवण वेला प्रभ मिले मलाह, फड़ बेड़ा पार कराईआ। धर्म देवे इक सलाह, साचा नाम पढ़ाईआ। नथाव्याँ देवे साचा थाँ, चरण कँवल सरनाईआ। बाल अञ्याणे उठाए जिउँ बालक माँ, फड़ बाहों गले लगाईआ। बुद्धि हँस बणाए काँ, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। कर किरपा घर सज्जण मिले आ, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ लभ्भण कोए ना जाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुखां उपर दया रिहा कमा, कर्म कांड सब दे आपणी झोली पाईआ।

३७२

१५

✪ २६ भाद्रों २०२० बिक्रमी कुंदन सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर पूरा सदा दयाल, गुरमुख आपणे रंग रंगाइंदा। जुग चौकड़ी कर कर भाल, लख चुरासी विचों खोज खुजाइंदा। गोदी चुक्क अनमुलड़े लाल, लालन आपणे घर वसाइंदा। सच वखाए सच्ची धर्मसाल, सचखण्ड दुआर सोभा पाइंदा। दीपक दीआ इक्को बाल, जोती जोत जोत रुशनाइंदा। अमृत जाम दए प्याल, तृष्ना भुक्ख सर्ब गंवाइंदा। नाता तोड़ काल महाकाल, चरण प्रीती इक रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख आपणे घर वसाइंदा। सतिगुर पूरा सच्चा ठाकर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। आपणा नाम देवे रती रत्नागर, रती रत आपणे रंग रंगाईआ। भाग लगाए काया गागर, साढे तिन्न हथ्थ देवे वड्याईआ। बण वणजारा सच सौदागर, नाम हट्ट इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां होए सदा सहाईआ। नाम अमोलक वस्त एक, एकँकार आप समझाईआ। गुरमुख विरला लए वेख, जिस अन्तर बूझ बुझाईआ। त्रैगुण माया ना लाए सेक, पंज तत ना अग्न तपाईआ। निज नेत्र निज

मन्दिर निज गृह निज सतिगुर लए वेख, घर साचे नज़री आईआ। कूड़ी क्रिया नाता तुटे भेख, वज्जे इक्को नाम वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, गुरमुखां एका घर बुझाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म मरन भय भउ चुकाए डर, सति सति सरूप विच समाईआ।

✪ २६ भाद्रों २०२० बिक्रमी अरूड़ सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

गुरसिख मंगे साची मंग, सतिगुर सच ध्यान लगाईआ। प्रीतम दे इक अनन्द, अन्तर आत्म रस चुआईआ। निरगुण जोत चाढ़ चन्द, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। बंदीख़ाना तोड़ बंद, बंद खलासी दे कराईआ। जाप जपा बिन बत्ती दन्द, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। दूई द्वैती ढाह कंध, शरअ शरीअत नेड़ कोए ना आईआ। गोबिन्द हो सुणा छन्द, गीत गोबिन्द अलाईआ। काया चोली इक्को रंग, रंग मजीठी सच चढ़ाईआ। त्रैगुण माया पए ठंड, पंचम तत ना कोए जलाईआ। सुरत सवाणी ना होए रंड, कन्त सुहागी इक मिलाईआ। धार वहा जमना सुरस्ती साची गंग, गोदावरी आपणी दया कमाईआ। निरगुण हो के ला अंग, सरगुण ओट तकाईआ। लेखा चुके ब्रह्म हँ, पारब्रह्म प्रभ तेरा रूप नजरी आईआ। जुग जन्म दी टुट्टी गंढु, गंढुणहार गोपाल स्वामी तेरे हथ्थ वड्याईआ। नाता तुटे भेख पखण्ड, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। राए धर्म ना देवे दंड, चित्रगुप्त लेख ना कोए वखाईआ। तेरा दवारा वेखीए लँघ, जिस घर वसें बेपरवाहीआ। जन्म जन्म दा मुक्के पन्ध, अग्गे राह ना कोए वखाईआ। सीतल धार अमृत मेघ बरसा पाए ठंड, निझर झिरना इक झिराईआ। खैहड़ा छुट्टे जीउ पिण्ड, ब्रह्मांड तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गुरसिख बैठा ध्यान लगाईआ। गुरसिख मंगे इक प्यार, चरण प्रीती मंग मंगाईआ। बिन नैणां दे दीदार, बिन अक्खां वेख वखाईआ। बिन गीतां मंगलाचार, बिन ताल तलवाड़े राग अलाईआ। बिन सूरज चन्द कर उज्यार, बिन तेल बाती होवे रुशनाईआ। बिन सरोवर दे नुहाल, अमृत सर इक वखाईआ। बिन सद्दयां बण दलाल, निरगुण साची सेव कमाईआ। कलयुग वहिंदी धार डुब्बदे दे तार, तारनहार तेरी वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग जुग करदा रिहों उधार, सच संदेसा इक सुणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बणाउँदा रिहों मीत मुरार, सज्जण लोकमात वखाईआ। कर किरपा आप निरँकार, सतिगुर शाह पातशाह सचे शहिनशाहीआ। दर भिखारी डिगा आण, भिखक इक्को मंग मंगाईआ। तेरा दिसे धर्म निशान, धर्म दुआरा इक्को नज़री आईआ। जिस घर वसें आप भगवान, सो मन्दिर दे वखाईआ। गुरसिख झोली अड्ड के मंगे दान,

नेत्र नैणां नीर वहाईआ। हउँ बाली बुध अञ्याण, तेरी समझ कोए ना आईआ। बिन पढ़यां दे ज्ञान, साची विद्या नाम पढ़ाईआ। तेरा लेखा दो जहान, निरगुण सरगुण तेरी धार नज़री आईआ। तेरा कलमा सच ईमान, तेरा सिफ्ती नूर इलाहीआ। तेरा डेरा हक़ मुकाम, तेरी हकीकत जुग चार वड्याईआ। तेरा हुक्म संदेसा सच फ़रमान, हउँ फ़रमाबरदार सेव कमाईआ। कर किरपा मेरे मेहरवान, मिहबान बीदो तेरी ओट रखाईआ। गुरसिख निउँ निउँ सजदा करे सलाम, मुरीद मुर्शद फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गुरसिख बैठा ओट तकाईआ। गुरसिख ओट लई रख, प्रभ तेरी सच सरनाईआ। दर्शन दे हो प्रतख, रूप अनूप आप वटाईआ। कर किरपा खोल्ह अक्ख, जिस अक्ख नाल तेरा नूर नज़री आईआ। हिरदे अन्तर आत्म परमात्म हो के वस, वसल आपणा दे कराईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला गावां जस, दूजी भुल्ले सर्ब पढ़ाईआ। तेरा नाउँ पुरख समरथ, सचखण्ड तेरी शहिनशाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नव नौ चार चले तेरा रथ, गुरमुख साचे लएं चढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम लख चुरासी विचों रख, दर तेरे इक्को आस रखाईआ। नित नवित्त जन भगतां देवें आपणा हक़, हकीकत सब दी झोली पाईआ। निरगुण नूर हो प्रगट, जोती जोत कर रुशनाईआ। तेरा इक्को दिसे हट्ट, चौदां लोक बैठे ध्यान लगाईआ। चौदां तबक रहे नस्स, भज्जण वाहो दाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा मार्ग गए दस्स, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी हुक्म वरताईआ। गुरसिख प्यासा ना होए निरासा, कर पूरन आस आसा, तृष्ना तृखा मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नेत्र खोल्ह वेख दर, गुरमुख तेरी आदि जुगादी शाख़ा, शनाख़त तेरे हथ्थ वड्याईआ।

✪ २६ भाद्रों २०२० बिक्रमी हरी सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर पूरा सदा सहाई, जुग जुग दया कमाइंदा। गुरसिख तेरी कटे जुदाई, विछोड़ा कोई रहिण ना पाइंदा। दर घर साचे लए मिलाई, घर इक्को इक वखाइंदा। जिस गृह वज्जे नाम वधाई, साचा नाम ढोला गाइंदा। आत्म परमात्म दए बुझाई, सूझ इक्को इक समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दया कमाइंदा। सतिगुर पूरा दया कमाए, गुरसिख देवे माण वड्याईआ। जुग जन्म दे विछड़े लए मिलाए, घर साचे जोड़ जुड़ाईआ। कर्म कांड दा लेख मुकाए, दूई द्वैत रहिण ना पाईआ। साची सिख्या इक समझाए, ब्रह्म पारब्रह्म करे पढ़ाईआ। मन्दिर अन्दर डेरा लाए, घर घर विच खुशी मनाईआ। लहिणा देणा मूल चुकाए, बाकी कोए रहिण ना पाईआ। अंगीकार हो अंग लगाए,

अंगण आपणे लए बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त नाम वरताईआ। सतिगुर पूरा देवे दात, गुरसिख माण वड्याईआ। मेटे रैण अन्धेरी रात, साचा नूर करे रुशनाईआ। मनमति सुट्टे डूंघे खात, कूड़ी क्रिया दए दबाईआ। साचा नूर करे प्रकाश, घट दीपक इक जगाईआ। लहिणा देणा चुकाए पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल डेरा पार कराईआ। गोपी काहन वखाए रास, घर स्वांगी स्वांग रचाईआ। जुग जन्म दी पूरी करे आस, बेआस रहिण कोए ना पाईआ। नित नवित्त वसे पास, घर सच्चे नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख साचा राह जणाईआ। गुरसिख सदा रख चाउ, चाउ घनेरा इक जणाईआ। सतिगुर पूरा पकड़े बाहों, वेले अन्त लए तराईआ। दरगाह साची देवे थाउँ, सचखण्ड मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख साचे लए उठाईआ। सतिगुर पूरा लए उठा, लोकमात फेरा पाईआ। चार जुग दा रुस्सा लए मना, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। अन्दर लुक्का दर्शन देवे आ, आप आपणा पड़दा लाहीआ। साचा रंग दए रंगा, रंग इक्को इक चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख मन्दिर दए वखाईआ। गुरमुख साचे रहिणा तैयार, त्रैगुण अतीता आप जणाइंदा। सतिगुर पूरा करे प्यार, पुरख अकाल वेख वखाइंदा। अन्दर बाहर बण के यार, गुप्त ज़ाहर दया कमाइंदा। साची गोदी लए उठाल, फड़ बाहों सेव कमाइंदा। आत्म परमात्म लै के जाए नाल, अद्धविचकार ना कोए रखाइंदा। साचे मन्दिर दए बहाल, थिर घर डेरा इक्को लाइंदा। सचखण्ड दुआरा खोल्ह कवाड़, आप आपणा भेव चुकाइंदा। नज़री आए इक्को धर्मसाल, श्री भगवान सोभा पाइंदा। जोती जोत जगे बेमिसाल, दीवा बाती नज़र कोए ना आइंदा। दर दरवेश ना कोई दरबान, हुक्मरान इक्को सोभा पाइंदा। शाहो भूप वड सुल्तान, शहिनशाह आपणी दया कमाइंदा। गुरमुख जोती मेले आण, जोती जोत जोत समाइंदा। आवण जावण दो जहान चुक्के काण, चारे कुण्टां दहि दिशा डेरा ढाइंदा। जिन्हां उपर सतिगुर पूरा होए आप मेहरवान, मेहर नज़र उठाइंदा। सचखण्ड दुआरा देवे इक मकान, दरगाह साची नाउँ लगाइंदा। सच बेनन्ती करे परवान, बिने आपणी झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे साचे घर वसाइंदा।

२६ भाद्रों २०२० बिक्रमी दर्शन सिंघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर

गुरसिख कहे सद तेरा सहारा, सतिगुर तेरी सरनाईआ। तुध बिन दिसे ना कोए किनारा, खेवट रूप ना कोए वखाईआ।

चार कुण्ट धूंआँधारा, साचा नूर ना कोए चमकाईआ। ना कोई मीत मित्र प्यारा, सगला संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर आपणे मेल मिलाईआ। गुरसिख कहे बिन सतिगुर तेरे, मेरी सार कोए ना पाइंदा। भाण्डा भरम भउ कोई ना ढाहे डेरे, कूड़ी क्रिया ना कोए मिटाइंदा। पंच विकार लग्गे झेड़े, झगड़ा अन्त ना कोए चुकाइंदा। वसदे उजड़न दिसण खेड़े, खेड़ा बंक सोभा कोए ना पाइंदा। कोई ना करे हक़ नबेड़े, हकीकत सच ना कोए समझाइंदा। सृष्ट सबाई छड्ड के साहिब सतिगुर तेरे होए चेरे, चेला गुरू इक्को घर समाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरा इक्को मोहे भाइंदा । गुरसिख कहे मेरे महाराज, पारब्रह्म तेरी वड्याईआ। तेरे प्रेम दा इक मुहताज, बैठा ध्यान लगाईआ। अन्तर आत्म मार आवाज़, सुत्यां मात जगाईआ। निरगुण हो के रचे काज, सरगुण कर कुड़माईआ। जगत संसारी रख लाज, वड्ड भण्डारी फेरा पाईआ। चरण धूढ़ी मजन करीए माघ, दुरमति मैल रहिण ना पाईआ। डुबदा बेड़ा पार कर जहाज़, नईया नौका इक वखाईआ। तेरे सीस दिसे प्रभ ताज, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तुध बिन बेनन्ती कोए ना सुणने आईआ।

✪ २६ भाद्रों २०२० बिक्रमी लाल सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

गुरसिख सदा उजल मुख, सदा सदा वड्याईआ। लेखे लग्गे जन्म मनुक्ख, माणस रंग रंगाईआ। आवण जावण मिटे दुःख, कर्म कांड चुकाईआ। सफ़ल कराए जननी कुक्ख, धन्न जणेंदी माईआ। सतिगुर गोदी लए चुक्क, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। मात गर्भ ना होवे उलटा रुख, जूनी जून ना कोए भवाईआ। वेले अन्तिम आ के लए पुछ, आपणा मेला लए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख सदा तराईआ। गुरसिख मेटे रोग संताप, सतिगुर दया कमाईआ। सच बुझाए आपणा आप, आप आपणा मेल मिलाईआ । आत्म परमात्म सोहँ जाप, सच सच करे पढ़ाईआ। लेखा चुके लोकमात, अग्गे मिले इक सरनाईआ। उत्तम होवे हरिजन तेरी ज़ात, मज़्ह्ब रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिन्हां गुरमुखां सज्जण बणया साक, तिन्हां नाता इक्को जुड़ाईआ।

✪ २६ भाद्रों २०२० बिक्रमी प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

किरपा करे गुर गोपाला, गहर गम्भीर दया कमाईआ। गुरमुख वेखे साचा लाला, अमुलड़ा लाल आप प्रगटाईआ। मार्ग दस्से इक सुखाला, मन्त्र नाम करे पढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया तोड़ जंजाला, जीवण जुगत दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच प्रीती इक लगाईआ। सच प्रीती चरण जोड़, गुरमुख जोड़ी जोड़ जुड़ाइंदा। अन्त निभाए लग्गी तोड़, कर किरपा दया कमाइंदा। कर प्रकाश अन्धेरे घोर, साचा नूर इक चमकाइंदा। पंच विकार ना करे शोर, शोरश सब दी मेट मिटाइंदा। आपणे हथ्थ पकड़े डोर, चारों कुण्ट आप भुआइंदा। किरपा कर के गुरसिखां आपणे नाल लए तोर, अग्गे पिच्छे आपणा खेल कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुखां सदा रखे लोड़, लोड़ गुरमुखां पूरन आप कराइंदा।

✪ २६ भाद्रों २०२० बिक्रमी प्रीतम सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

गुरसिख सोहे साचा बंक, भगत दुआर वड्याईआ। लेखा चुक्के राउ रंक, रंक राजान इक्को नज़री आईआ। सुणे नाम साचा डंक, सच शब्द शनवाईआ। माणस जन्म बणे बणत, लेखा चुके लेखा कोए रहिण ना पाईआ। अन्तिम मेला हरि जू कन्त, श्री भगवन्त लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा लेखे पाईआ। गुरसिख लेखा सदा एक, एकँकार मुकाईआ। परम पुरख दी साची टेक, परमात्म आत्म दए समझाईआ। निरवैर पुरख चेतन चेत, निज घर बैठा डेरा लाईआ। नित नवित्त करे हेत, जुग जुग वेख वखाईआ। जिन्नां लग्गी धुर मस्तक मेख, तिन्नां मिले हरि गोसाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन वसाए आपणे देस, सच दुआरे दए बहाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस जन बख्शे टेक, तिन्नां टिक्का मस्तक नाम लगाईआ।

✪ २६ भाद्रों २०२० बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

गुरसिख करे चरण बन्दन, बंदगी इक प्रणाम। सतिगुर पूरा तोड़े बन्धन, कारज करे काम। देवे इक अनन्दन, आत्म कर बिसराम। सुणावे साचा छन्दन, सोहँ ढोला अगम्मी गान, तिलक ललाटी लावे चन्दन, धूढ़ी बख्शे इक अशनान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे कर परवान। गुरसिख मंगे धूढ़ी ख़ाक, ख़ाकी ख़ाक रमाईआ।

सतिगुर पूरा खोले ताक, बंद कवाड़ खुलाईआ। निरगुण सरगुण वचोला बण के आप, साचा मेल मिलाईआ। नाम जणाए धुर दा जाप, बोध करे पढ़ाईआ। सच प्रीती जोड़े नात, सज्जण सैण रूप वटाईआ। अन्तिम रखे दे कर हाथ, समरथ हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख करे आपणे दास, घर साचे सेव लगाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म जन्म दे कट पाप, पत्तत पापी लए तराईआ।

✪ २६ भाद्रों २०२० बिक्रमी हरनाम सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर पूरा बख्शण जोग, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। गुरमुखां दरस देवे अमोघ, निज नेत्र नैण खुलाईआ। अमृत रस चुगाए साची चोग, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। हउमे हंगता कटे रोग, चिन्ता सोग दए गंवाईआ। नाम सुणाए इक श्लोक, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। भाग लगाए काया कोट, साचे मन्दिर दया कमाईआ। करे प्रकाश निर्मल जोत, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। सच लगाए अगम्मी चोट, शब्द नगारा इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख देवे माण वड्याईआ। सतिगुर पूरा सच्चा स्वामी, पुरख अकाल इक अख्वाइंदा। आदि जुगादि अन्तरजामी, जुग चौकड़ी घट घट वेख वखाइंदा। धुर संदेस सुणाए धुर दी बाणी, बोध अगाधा नाउँ प्रगटाइंदा। दो जहानां होवे जाण जाणी, ब्रह्मण्ड खण्ड भेव खुलाइंदा। अमृत आत्म बख्शणहारा ठंडा पाणी, सच सरोवर इक जणाइंदा। वस्त अमोलक देवणहारा दात दानी, दयावान दया कमाइंदा। सचखण्ड दी सच निशानी, आत्म परमात्म आप बुझाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म कर वड विद्वानी, ब्रह्म विद्या इक पढ़ाइंदा। दरस कराए जोत नूरानी, अन्ध अन्धेर मेट मिटाइंदा। लेखा चुकाए चार खाणी, चारे बाणी पड़दा लाहइंदा। देवणहारा पद निरबाणी, महल अटल इक सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दया कमाइंदा। सतिगुर पूरा पुरख समरथ, शाह पातशाह आप अख्वाईआ। जुग चौकड़ी हो प्रगट, निरगुण सरगुण सेव कमाईआ। नाम खुलाए धुर दा हट्ट, जगत वणजारा रूप वटाईआ। गुरमुख विरले मार्ग दस्स, साचा राह दए समझाईआ। आत्म सेजा साचे मन्दिर चढ़े भज्ज, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। साचे काअबे कराए हज्ज, हुजरा इक्को इक वखाईआ। नौबत नाम जाए वज्ज, धुर दा रागी अनरागी राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरसिख गुरमुख सतिगुर आपणे घर मिलाईआ। सतिगुर पूरा उच्च अगम्म, बेपरवाह खेल कराइंदा। ना मरे ना पए जम्म, मात गर्भ ना डेरा लाइंदा। जुग चौकड़ी करे आपणा कम्म, हरि करता कार कमाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर

कलयुग लेखा जाण दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा हुक्म वरताइंदा। वस्त अमोलक देवणहारा नाम धन, सच ख़ज़ीना आप वरताइंदा । गुरसिखां बेड़ा देवे बन्न्ह, गुरमुख साचे पार कराइंदा। धर्म दुआरे चाढ़े चन्न, चन्द चांदना नूर चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए आपणा घर, तिस दूजा दर नज़र कोए ना आइंदा। सतिगुर पूरा करता पुरख, पुरखोतम वड वड्याईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। गुरसिखां देवे आपणा दरस, घर घर फेरा पाईआ। जन्म जन्म दी मेटे हरस, हवस अवर ना कोए वधाईआ। पूरब जन्म दा लाहवे कर्ज, लहिणा देणा रिहा चुकाईआ। करे खेल आप असचरज, अचरज लीला आप वरताईआ। योद्धा सूरबीर बण के मर्द, मर्द मर्दाना होए सहाईआ। जन्म कर्म दी वेखे फ़रद, अक्खर अक्खर लए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुरमुख गुरसिख हरिजन लए तराईआ। सतिगुर पूरा तारनहारा, गहर गम्भीर इक अखवाइंदा। जुग जुग लै मात अवतारा, निरगुण सरगुण वेस वटाइंदा। सर्ब जीआं दा बण के सांझा यारा, सगल सृष्टी बूझ बुझाइंदा । आपणा नाम निधान कर उज्यारा, साचा सोहला राग सुणाइंदा। कलयुग अन्तिम करे खेल अपारा, अपरम्पर आपणी धार चलाइंदा। जोती जाता हो उज्यारा, निरगुण निरवैर फेरा पाइंदा। ग़रीब निमाणयां देवे सहारा, चार वरनां गोद बहाइंदा। ज़ात पात ते वसे बाहरा, वरन बरन वंड ना कोए वंडाइंदा। आत्म परमात्म करे प्यारा, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाइंदा। सुरती शब्दी दे सहारा, साचा घर आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख गुरसिख गुर गुर देवे इक ज्ञान, आत्म अन्तर इक भगवान, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। सतिगुर पूरा बेपरवाह, बेपरवाही खेल खलाइंदा। जुग जुग बणे मात मलाह, लोक परलोक दया कमाइंदा। चौदां लोक वेखे थाउँ थाँ, चौदां तबकां फोल फोलाइंदा। काया मन्दिर डूंघे अन्दर पड़दा देवे लाह, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। अमृत आत्म साचा जाम दए प्या, सच प्याला हथ्थ उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नगर खेड़ा दए वसा, जिस घर अपणा आसण लाइंदा। नगर खेड़ा जाए वस, साढे तिन्न हथ्थ मिले वड्याईआ। सतिगुर पूरा देवे रस, रस रसीआ इक्को माहीआ। मेल मिलाए हस्स हस्स, सुरत शब्द करे कुड़माईआ। लेखा जाणे तत अट्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध भेव दए जणाईआ। सति सन्तोख धीरज देवे हठ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नज़री आए घट घट, घर घर रिहा समाईआ। गुरमुख गुरसिख हरि सज्जण कर के आपणे वस, वसीकार आप हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग खेल करे पुरख समरथ, समरथ आपणी दया कमाईआ ।

✪ २६ भाद्रों २०२० बिक्रमी गुरमुख सिंघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

गुरसिख मंगे साची मेहरा, दोए जोड़ सरनाईआ। आवण जावण चुक्के झेड़ा, झगड़ा जन्म मरन रहे ना राईआ। लेखा चुक्के तेरा मेरा, तूं मेरा मैं तेरा इक्को लए दसाईआ। कूड़ी क्रिया ढहे डेरा, भाण्डा भरम दे भंनाईआ। तूं सतिगुर मैं तेरा चेरा, चेला गुरू वज्जे वधाईआ। वसदा रहे साचा खेड़ा, काया बंक मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा पिछला दे मुकाईआ। सतिगुर कहे सुण गुरसिख मीत, तेरा माण रखाईआ। सदा सदा सद वसां चीत, घर घर विच डेरा लाईआ। काया काअबा मन्दिर मसीत, साचा मन्दिर दयां सुहाईआ। नित उठ गावां तेरा गीत, आपणा नाउँ दयां समझाईआ। साची सिख्या लैणी सीख, सुखदायक इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लहिणा दए चुकाईआ। गुरसिख कहे मेरे गोबिन्द, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। जन्म जन्म ना मिटे चिन्द, चिन्ता सके ना कोए गंवाईआ। गुरमुख गुरसिख ठाकर तेरी बिंद, अन्तिम लेखा लै लगाईआ। दाते दानी गुणी गहिंद, तेरे हथ्थ दिती फड़ाईआ। कलयुग वहण डूंघी धार सागर सिन्ध, दिसे ना कोए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा बन्धन दे कटाईआ। गुरसिख साचे सुण ला कन्न, हरि करता आप जणाईआ। मन मनसा मेट मन, मन का मणका दए भवाईआ। साचा गीत गाओ जन, बिन रबाब वजाईआ। रसना कहे धन्न धन्न, धन्न प्रभू सरनाईआ। होए प्रकाश नेत्र अन्न, सच ज्ञान दए दृढ़ाईआ। राए धर्म ना देवे डंन, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। अन्त वसेरा बिन छप्परी छन्न, साचे मन्दिर लए वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दीन दयाल सदा सहाईआ। गुरसिख कहे मेरे भगवन्त, भगवन तेरी इक सरनाईआ। मैं नारी तूं मेरा कन्त, शाह पातशाह तेरी वड्याईआ। तेरी महिमा सदा अगणत, जीव जंत सके ना कोए गाईआ। तेरा भेव ना पाए कोई पंडत, पंडत पांधे बैठे ध्यान लगाईआ। तेरा धुर दा नाम सच्चा मंत, मन्त्र इक्को दे समझाईआ। मानस जन्म बणे बणत, दूजी वार फेरा कोई ना पाईआ। दर तेरे उते आए मंगत, मंगण वस्त चाईं चाईंआ। सच प्रीती चाढ़ रंगत, तन उतर कदे ना जाईआ। मेल मिला साची संगत, सगला संग निभाईआ। माणस जन्म ना होए भंगत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख साचे रिहा समझाईआ। गुरमुख तेरा मेला संगत, संगत हरि हरि रूप वखाईआ। नाता तुटे दोज़ख़ बहिश्त जंनत, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। दूजे दर ना जाणा मंगत, अनमंगयां दान झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख बेड़ा इक वखाईआ। गुरसिख संगत वेख बेड़ा, हरि करता आप बंधाईआ। उपर चढ़या

जेहड़ा जेहड़ा, सो बन्ने देवे लाईआ। आप वसाए दुआरा खेड़ा, जिस घर वसे बेपरवाहीआ। दूर दुराडा पन्ध आया नेड़ा, नेरन नेरा वेख वखाईआ। गुरमुख रखे मन चाउ घनेरा, घर इक्को ओट तकाईआ। सतिगुर अन्तिम मिले मेरा, मेरी झोली दए भराईआ। जम का फास कटे जेड़ा, स्वास स्वास लेखे लाईआ। करे कराए हक़ नबेड़ा, हक़ो हक़ दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख गुरसिख हरिसंगत वसाया साचा डेरा, जिस डेरे अन्दर वड़या हरि रघुराईआ।

३८१

१५

✪ २६ भाद्रों २०२० बिक्रमी सरमुख सिंघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

हरि सतिगुर खेल सदा अनोखा, नव नौ समझ कोए ना पाईआ। लेखा जाणे लोक परलोका, दो जहानां हुक्म वरताईआ। नाम प्रगटाए सच श्लोका, जुग चौकड़ी करे पढ़ाईआ। नित नवित्त जन भगतां मार्ग दस्से सौखा, औझड़ राह ना कोए पाईआ। निरगुण सरगुण मिलण दा देवे मौका, माणस जन्म मात प्रगटाईआ। शब्दी शब्द उच्ची कूक देवे होका, धुर दा नाम इक सुणाईआ। किसे नाल करे कदे ना धोखा, सच सुच करे पढ़ाईआ। साचे सन्तां बख्शे इक्को ओटा, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। करे प्रकाश निर्मल जोता, नूरो नूर नूर धराईआ। लहिणा चुकाए वरन गोता, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। काया मन्दिर सुहाए साचा कोठा, साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाईआ। डूंग्घी भँवरी मारे ग़ोता, काया कवरी खोज खुजाईआ। गुरमुखां मेटे जन्म जन्म दा रोसा, सोई सुरती लए जगाईआ। पंज तत पाणी कदे ना होवे कोसा, अमृत मेघ झिरना इक झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख साचे इक्को दर समझाईआ। सतिगुर पूरा उच्च अपार, सचखण्ड निवासी दया कमाईआ। साचे भगतां लए उभार, भगवन आपणा पड़दा लाहीआ। साचे सन्तां दए दीदार, निज नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। साचे गुरमुख लाए पार, जुग जुग बेड़ा पार कराईआ। साचे गुरसिख लए उठाल, गूढ़ी नींद ना कोए सुआईआ। नाता तोड़ काल महाकाल, महिमा आपणी दए जणाईआ। अट्ठे पहर दिवस रैण घड़ी पल वसे नाल, जगत विछोड़ा ना कोए जणाईआ। निरगुण सरगुण घालण लए घाल, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। आप उठाए अञ्याणे बाल, साची गोदी आप बहाईआ। एथे ओथे बण दलाल, दो जहानां पार कराईआ। साचा मन्त्र दए सिखाल, करे कराए इक पढ़ाईआ। चौदां विद्या होए बेहाल, चारों कुण्ट कूके दए दुहाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरि भगत प्रभ जोती मिलण आण, अन्तिम जोती जोत समाईआ। सचखण्ड वसण सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरे डेरा लाईआ। ओथे

ना कोई शाह ना कंगाल, ऊँच नीच नज़र कोए ना आईआ। ना कोई भूप राज राजान, रंग रूप ना कोए वटाईआ। तख्त निवासी नौजवान, श्री भगवान डेरा लाईआ। देवणहारा इक फ़रमाण, धुर संदेसा शब्द सुणाईआ। जन भगतो मिलो आण, घर दरवाज़ा रिहा खुल्हाईआ। साचे सन्तो करो पहचान, बेपहचान फेरा पाईआ। गुरमुख गुर का करो ध्यान, गोझ भेव खुल्हाईआ। गुरसिख गुर चरण करो परवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख आत्म मेल परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म निहकर्मी बिन कर्म कांड आपणे नाल मिलाईआ।

✪ २६ भाद्रों २०२० बिक्रमी सुखदेव राज दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

सो पुरख निरँजण खेल वखाउणा, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण भेव चुकाउणा, पड़दा कोए रहिण ना पाईआ। एकँकार हुक्म वरताउणा, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। आदि निरँजण नूर चमकाउणा, साची जोत करे रुशनाईआ। श्री भगवान बंक सुहाउणा, घर साचे खुशी मनाईआ। अबिनाशी करते राग अल्हाउणा, सोहला साचा गीत सुणाईआ। पारब्रह्म प्रभ राह चलाउणा, मार्ग इक्को इक वखाईआ। महल अटल इक रुशनाउणा, दरगाह साची सोभा पाईआ। परवरदिगार वेस वटाउणा, मुकामे हक़ आपणी कार जणाईआ। समरथ आपणा रंग वखाउणा, रंग रंगीला इक्को नज़री आईआ। विष्नूं विश्व धार समझाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल बेपरवाहीआ। विष्नूं साचा हुक्म समझाउणा, समझ आपणी दए जणाईआ। ब्रह्मे नेत्र नैण खुलाउणा, अक्ख प्रतख वखाईआ। शंकर संसा रोग मिटाउणा, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। त्रैगुण माया हुक्म वरताउणा, पंज तत नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करनी करता आप कमाईआ। साची करनी हरि कमावे, आदि पुरख वड्डी वड्याईआ। सुत दुलारा इक उठावे, धुर दी धार दए जणाईआ। थिर घर दरवाज़ा इक खुल्हावे, बंद कवाड़ा रहिण कोए ना पाईआ। साचे मार्ग आपे लावे, रहबर इक्को इक बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी कार आप कमाईआ। धुर दी कार करे निरँकार, निरगुण आपणा खेल खलाइंदा। सचखण्ड निवासी हो तैयार, त्रैगुण अतीता कल वरताइंदा। ठांडा सीता कर पसार, दो जहानां वेख वखाइंदा। लोआं पुरीआं करे ख़बरदार, हुक्म संदेसा इक घलाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड लए उठाल, ज़िमीं असमान पड़दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धुर दा लेखा आप समझाइंदा। धुर दा लेखा दस्से बोल, अनबोलत आप जणाईआ। सच वजावे इक्को ढोल, नाउँ निरँकारा आप सुणाईआ। धर्म दुआर देवे खोल्ह,

सच हट्ट प्रगटाईआ। धुर दी वस्त लै के आए कोल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेसा, एकँकार इक्को इक सुणाईआ। सच संदेसा देवे अगम्म, अगम्मड़ी कार कमाईआ। जुग चौकड़ी बेड़ा बन्न्ह, निरगुण सरगुण राह वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग करदा आया आपणा कम्म, निहकर्मी हुक्म वरताईआ। वसदा आया हड्ड मास नाड़ी चम्म, पंज तत कर कुड़माईआ। त्रैगुण देंदा आया साचा धन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप समझाईआ। साची खेल दस्से करतार, हरि करता बूझ बुझाईआ। गुर अवतार लए उठाल, पीर पैगम्बर नाल मिलाईआ। करे खेल आप निरँकार, दूजा संग ना कोए रलाईआ। लेखा वेखो सर्ब जुग चार, कलयुग अन्तिम वेला आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण करो विचार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार आप जणाईआ। धुर दी धार दस्से भगवन्त, भगवन आपणा हुक्म वरताईआ। लेखा वेखो जुगा जुगन्त, जुग चौकड़ी रिहा समझाईआ। जिस बणाई तुहाढ्ढी बणत, सो पुच्छणहारा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि खेल खलाउणा, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। गुर अवतार इक उठाउणा, नेत्र नैण अक्ख खुल्ल्हाईआ। पीर पैगम्बर हुक्म वरताउणा, धुर संदेस सुणाईआ। भगत भगवान आप जगाउणा, जागरत जोत कर रुशनाईआ। सन्त साजण पड़दा लौहणा, उहला रहिण कोए ना पाईआ। गुरमुख रंग इक वखाउणा, दो जहान दए समझाईआ। गुरसिख साचा घर मिलाउणा, आप आपणा मेल मिलाईआ। धुर दा बोल इक जणाउणा, गीत गोबिन्द अलाईआ। साचा नग़मा आप अलाउणा, कायनात करे पढ़ाईआ। पीर पैगम्बर सीस झुकाउणा, सजदा सीस जगदीश इक कराईआ। सच हदीस इक पढ़ौणा, हज़रत इक्को बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सुनेहड़ा इक सुणाईआ। सच सुनेहड़ा सुणो मीत, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। चार युग दी वेखो रीत, दीन मज़्हब वंड वंडाईआ। ज़ात पात बणाई ठीक, वरन गोत गंढु रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप खलाईआ। साची खेल करदा आया, निरगुण वड्डा वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी फेरा पाया, बेपरवाह वेस वटाईआ। धुर संदेसा आण सुणाया, लोकमात करी पढ़ाईआ। साचा लेखा लेख लिखाया, कातब आपणा आप जणाईआ। कलम शाही संग निभाया, ना कोई सके मात तुड़ाईआ। साचा छन्दन इक अलाया, गीत गोबिन्द सुणाईआ। ब्रह्मण्डां खण्डां हुक्म वरताया, चार कुण्ट दहि दिशा डेरा लाईआ। नाम प्रचण्डण हथ्थ चमकाया, चण्डका आपणा रूप जणाईआ। आदि शक्ति खेल रचाया, चतुर्भुज सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव दए जणाईआ।

३८३
१५

३८४

१५

साचा भेव अन्त खुलौणा, हरि करता दए जणाईआ। साचा मार्ग इक वखाउणा, वास्ता आपणे नाल जुड़ाईआ। साचा ढोला नाम पढ़ौणा, धुर दा राग अलाईआ। चार युग दा लेख मुकाउणा, लेखा आपणी झोली पाईआ। सच नरेश इक समझाउणा, शाह पातशाह नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी करता आप जणाईआ। करनी करता देवे दस्स, दो जहानां वाली दया कमाईआ। पीर पैगम्बर गुर अवतार जिस दा लेखा गए लिख, लोकमात कर लिखाईआ। निरगुण सरगुण नाल करदा रिहा हित, नित नवित्त दया कमाईआ। आदि जुगादि बणया रिहा पित, पिता पुरख वड्डी वड्याईआ। दस्सदा रिहा अगम्मी थित, कूट नज़र किसे ना आईआ। सुत्ता रिहा दे कर पिठ्ठ, करवट सके ना कोए बदलाईआ। जुग चौकड़ी चार वरन कीता मिस, मिसल आपणी इक बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम वेखणहारा आईआ। वेखणहारा होया आप, आपणी दया कमाइंदा। चार युग जिस दा जाप, गुर अवतार सर्ब गाइंदा। पीर पैगम्बर जिस नूं कहिन्दे पाक, सो साहिब वेस वटाइंदा। सच दुआरा खोल्ह ताक, मन्दिर इक्को इक सुहाइंदा। अन्तिम अन्त पूरा करे भविक्ख्त वाक, वातावरण आपणे विच छुपाइंदा। दो जहानां जाणे सर्ब हालात, आपणा हाल ना किसे जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, इक्को मार्ग आप दृढ़ाइंदा। इक्को मार्ग हरि लगाउणा, दूजी धार रहिण ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सब ने शुकर मनाउणा, निउँ निउँ सीस जगदीश झुकाईआ। रल मिल ढोला इक्को गाउणा, तूं मेरा मैं तेरा तेरी मेरी होए ना कदे जुदाईआ। आत्म परमात्म सब नूं नज़री आउणा, निज नेत्र इक खुल्हाईआ। अमृत साचा जाम पिआउणा, नाम प्याला हथ्थ उठाईआ। कलयुग जीव कागों हँस बणाउणा, बुद्धि काग रहिण ना पाईआ। घर घर विच बुझया दीप चराग़ जगाउणा, बत्ती इक्को इक लगाईआ। साची हट्टी नाम खुलाउणा, पट्टी इक्को दए पढ़ाईआ। रती रत लेखे लाउणा, रुत रुतड़ी नाल महकाईआ। पक्की कर के इक्को वार समझाउणा, गुरमुख भुल्ल कोए ना जाईआ। तत्ती वा नेड़ ना आउणा, अमृत मेघ इक बरसाईआ। छत्ती युग दा पन्ध मुकाउणा, नव नौ चार डेरा ढाहीआ। सर्ब भखी आप अख्वाउणा, आदि जुगादि आपणा आपणे विच छुपाईआ। साचा खेल अक्खीं आप वखाउणा, आख़र आपणा हुक्म वरताईआ। पिछली दस्सी पूरा अन्त कराउणा, करता आपणी खेल जणाईआ। धरनी धरत धवल साचा धर्म इक टिकाउणा, कूड़ी जड़्ह देवे उखड़ाईआ। कलयुग शौह दरया रुढ़्हाउणा, अन्त सके ना कोए बचाईआ। चार यारी डेरा ढाउणा, मुहम्मद कूके दए दुहाईआ। अल्ला राणी नैण शरमाउणा, मुख घूँगट नज़र कोए ना आईआ। चौदां तबकां हाहाकार मचाउणा, नेत्र रोवे जगत लोकाईआ। परवरदिगार किसे नज़र ना आउणा, साचा कलमा गए भुलाईआ। आलम

उल्मा कोई ना राह दखाउणा, तुलबा करे ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म वरतावे एक, एकँकार वड्डी वड्याईआ। गुर अवतार मंगण टेक, नेत्र नैण नैण उठाईआ। तेरा कोई ना जाणे लेख, बेअन्त तेरी वड्याईआ। कर किरपा मेट पिछला लेख, लेखा लिख्त आपणी झोली पाईआ। तेरे हुक्मे अन्दर खेडां आए खेड, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मात हंढाईआ। तेरे नाम दी ला के आए मेख, लोकमात निशाना इक गडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सुणो कन्न ला, सचखण्ड निवासी आप जणाईआ। सब दा लहिणा दयां चुका, बाकी कोई नजर ना आईआ। चार युग हुक्मे अन्दर वंडां आए पा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश हिंदू मुस्लिम सिख कर पढ़ाईआ। मेरे नाम दीआं गंढां घर घर आए वंडा, बण बण पांधी राहीआ। ज़ात पात दीआं कंधां आए बणा, दीन मज़्ब महल्ल बणाईआ। कलमी छन्दा आए सुणा, शहिनशाह साचा हुक्म वरताईआ। बंदगी बंदा आए ला, बन्धन नाता तोड़ तुड़ाईआ। परमानंदन आए समझा, घर घर विच नज़री आईआ। चन्द नवचन्दा आए चढ़ा, चन्द चौधवीं धार जणाईआ। सद बख्शंदा आए समझा, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। जो ब्रह्मण्डां रिहा समा, जेरज अंडां उत्भुज सेत्ज राह वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा रिहा जणाईआ। सुण लओ मीत प्यारे सज्जण, हरि सतिगुर आप जणाईआ। कलयुग अन्तिम आया भज्जण, थिर रहिण कोए ना पाईआ। चार वरन अठारां बरन दीन मज़्ब ज़ात पात प्रभ आया ठग्गण, जगत ठगौरी एका पाईआ। किसे लौण ना देवे अज्जण पज्जण, बचया रहिण कोए ना पाईआ। चार कुण्ट दहि दिशां ज़िमी असमान गगन गगनंतर किसे देवे ना भज्जण, भज्जयां पन्ध ना कोए मुकाईआ। शब्द डोरी नाल आया बन्नण, धुर दा दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच साची कार कमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दोए जोड़, प्रभ डिगे इक सरनाईआ। परम पुरख प्रभ तेरी लोड़, पुरख अकाल तेरी इक सरनाईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा तोर, तुरत आपणा हुक्म सुणाईआ। सदा सदा हथ्थ तेरे डोर, दूजा नज़र कोए ना आईआ। कलयुग वेख्या अन्धघोर, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। मन वासना होई ठग्ग चोर, लुट्टी जाए वाहो दाहीआ। कूड़ी क्रिया मच्चे शोर, संसा सके ना कोए मुकाईआ। पूरे सतिगुर दी कलयुग जीवां भुल्ली लोड़, एका इष्ट गए भुलाईआ। काम वासना होए हरामखोर, अन्तर आत्म ध्यान ना कोए लगाईआ। माया ममता हउमे हंगता गढ़ सके ना कोई तोड़, अन्दर वड़ वड़ खुशी मनाईआ। किसे ना फुरे मन्त्र तेरा फुरना फोर, सुरती शब्द ना कोए कुड़माईआ। असीं मार्ग दस्स के आए होर, जीव जंत आपणा राह

रहे चलाईआ। तेरे नालों होया अजोड़, साडी लोड़ ना कोए रखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल असीं सारे बैठे मुख मोड़, किसे दा होए ना कोए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा लेखा तेरे हथ्थ फड़ाईआ। पुरख अकाल अग्गों बोल, इक्को इक जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणे आपणे आपणे कंडे लओ तोल, तोला इक्को गुण जणाईआ। साहिब सतिगुर सदा अडोल, अडुल कदे ना जाईआ। कलयुग अन्त रहे ना कोई अनभोल, भुल्लयां लओ समझाईआ। अबिनाशी करता कदे ना मारे रोल, धुर दा हुक्म इक समझाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा वजा के आए ढोल, मृदंगा हथ्थ उठाईआ। उठ के वेखो कवण वसे तुहाढे कोल, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे कहिण पारब्रह्म प्रभ कलयुग जीव सारे करन मखौल, मुख सुहंदा नज़र कोए ना आईआ। मात गर्भ दा भुल्ल गए सारे कौल, कीता कौल ना कोए निभाईआ। साडा हिस्सा रिहा ना रती चौल, चारों कुण्ट ख़ाली नज़री आईआ। दुक्खां भरी रोवे धौल, धरनी देवे इक दुहाईआ। कवण करे भार हौल, मेरा दर्दी दर्द वंडाईआ। कलयुग जीव मचाया घोल, कुशती काम क्रोध रिहा लगाईआ। मेरा पड़दा अन्दर वड़ के दित्ता फोल, शरम हय्या लज ना कोए रखाईआ। तीर्थ तट्टां अठसठां पाणी दित्ता विरोल, नारी पुरुष नंगे तारीआं लाईआ। साचे मन्दिर कोई ना वसे आत्म अन्तर मौल, मौला नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। गुर अवतार पीर पैग़बर सुणो सच ज्ञान, हरि करता आप जणाईआ। तुहाढा मनजूर होया ब्यान, बेज़बान लेखे लाईआ। सारे मन्नो इक ईमान, धर्म इक्को नज़री आईआ। सारे सजदा करो सलाम, सारे नमो नमो सीस झुकाईआ। सारे मन्त्र पढ़ो सतिनाम, सारे फ़तहि डंका इक सुणाईआ। सारे भजो राम राम, सारे रमईया वेखो हर घट रिहा समाईआ। सारे तक्को इक्को शाम, शहिनशाह बंसुरी नाम वजाईआ। सारे सुणो इक पैग़ाम, सच पैगम्बर रिहा जणाईआ। सारे पढ़ो इक कलाम, साचा कलमा इक दृढ़ाईआ। सारे मन्नो इक अमाम, आदि जुगादि नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे सीस निवाउँदे, प्रभ तेरी सच सरनाईआ। तूही तूही ढोला गाउँदे, तेरा नाम ध्याईआ। दीन मज़्हब ना कोए रखाउँदे, ना कोई वंड वंडाईआ। शरअ शरीअत पन्ध मुकाउँदे, इक्को मार्ग लाईआ। जीव जंत साध सन्त तेरे बरदे सारे नज़री आउँदे, तेरे हुक्मे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे दस्सीए चाईं चाईंआ। पुरख अकाल दस्से गीत, इक्को नाम जणाईआ। पीर पैगम्बर वेखो जा मसीत, मसला हक़ ना कोए पढ़ाईआ । गुर अवतार गुरदुआरे मन्दिरीं

जा के तक्को नीत, नीतीवान नज़र कोए ना आईआ। पंडत पांधे पन्थी ग्रंथी धीआं भैणां तक्कण नीत, साबत सबर ना कोए रखाईआ। नानक गोबिन्द भुल्ली प्रीत, गुरू ग्रन्थ गुरदेव इष्ट दृष्ट ना कोए खुल्हाईआ। साचे राम ना कोई सेव, आत्म राम ना कोए मनाईआ। साचे कृष्न कोई ना खोल्हे भेव, गोपी काहन मण्डल रास ना कोए रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा घर घर, दो जहानां खोज खोजाईआ। दो जहानां वेख जा, प्रभ तेरी आस रखाईआ। साडी अन्तिम इक्को हां, तेरी सरन सच्ची सरनाईआ। आपणा पन्ध आए मुका, लोकमात फेरा पाईआ। जीव जंत आए समझा, लिख लिख लेख झोली पाईआ। शास्त्र सिमरत रहे गा, तेरे हथ्थ तेरी वड्याईआ। वेद व्यासा आया ध्या, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा उच्चे टिल्ले पर्बत आसण लाईआ। ईसा कह के आया मेरा खुदा, पिच्छे आवे वाहो दाहीआ। मुहम्मद उच्ची कूक गया सुणा, वड अमाम वेस वटाईआ। नानक निरगुण साचा ढोला दित्ता गा, निहकलंक वज्जे वधाईआ। गोबिन्द आखे पुरख अकाल फेरा जावे पा, कल कल्की वेस वटाईआ। सम्बल डेरा लावे आ, नगर नज़र किसे ना आईआ। मन्दिर इक्को लए बणा, जन्दर आपणा आप लगाईआ। उजड़या खण्डर लए वसा, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा मार्ग आपे लाईआ। साचा मार्ग ला भगवान, प्रभ तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग अन्तिम दस्स के आए सर्ब निशान, जीव जंत समझाईआ। निहकलंक आए बली बलवान, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। दो जहानां बणे हुक्मरान, निरगुण सरगुण लए समझाईआ। लख चुरासी बणे काहन, राम रमईया वेस वटाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद चुकाए काण, लेखा देवे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच वसा आपणा घर, लोकमात तेरा राह तकाईआ। लोकमात तक्के राह, नेत्र नैण नैण उठाईआ। नानक गोबिन्द गया लिखा, अन्तिम आवे सच्चा माहीआ। कवण कूटे डेरा लए ला, छप्पर छन्न इक छुहाईआ। निरगुण हो के बणे मलाह, सरगुण बेड़ा पार कराईआ। नज़री आए इक खुदा, खुदी सब दी दए मिटाईआ। जिस नूं कहिन्दे सदा जुदा, सो जुज़ आपणे नाल जणाईआ। नूरी जलवा दए धरा, जागरत जोत करे रुशनाईआ। साचा हुक्म दए सुणा, ना कोए मेटे मेट मिटाईआ। सदी चौधवीं पन्ध दए मुका, चौदां तबक करे रुशनाईआ। इक्को सबक दए पढ़ा, अलिफ़ ये समझ सके ना राईआ। मज़्हब ज़ात नुक़ता दए उडा, नून गुना इक्को नज़री आईआ। हमज़ा रमज़ दए लगा, ऐन अक्ख प्रतख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर खेल साचे हरि, डोर तेरे हथ्थ फड़ाईआ। आपणे हथ्थ फड़ लै डोर, अनडोलत तेरी सृष्टी तेरे हथ्थ फड़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेख ठग्ग चोर, घट घट आपणा फेरा पाईआ। जगत विकारिउँ असीं आए होड़, होका

तेरा नाम सुणाईआ। सब नूं दस्स के आए सुरती शब्द लवो जोड़, घर मेला मेल मिलाईआ। कर प्रकाश अन्ध घोर, जोत निरँजण कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे लै फड़, जो तेरे तैनूं रहे गाईआ। जो मेरे मैनूं ध्यावणगे। हिरदे हरि का नाम वसावणगे। रसना जिह्वा गीत अलावणगे। काया मन्दिर मसीत सोभा पावणगे। आत्म परमात्म वेख निशाना ठीक, मार्ग आपणा पन्ध मुकावणगे। एथे ओथे लग्गी प्रीत, वेले अन्त तोड़ निभावणगे। मैं हर घट वसां चीत, चार युग मुख शरमावणगे। बैठा रहां सदा अतीत, गुर अवतार सर्ब फ़रमावणगे। काले उते पा के गए लीक, लकीर सब दी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख साचे वेख वखावणगे। गुरमुख साचे वेख वखावांगा। कलयुग अन्तिम पड़दा चुकावांगा। हरिजन सड़दा आप बचावांगा। धुर दा बरदा इक बणावांगा। घर घर दर दर भेव खुल्हावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मार्ग इक रखावांगा। साचा मार्ग इक रखावांगा। जन भगतां आप जगावांगा। साचे सन्तां मेल मिलावांगा। गुरमुखां रंग रंगावांगा। गुरसिखां मृदंग वजावांगा। सेज पलँघ हंढावांगा। अनहद राग सुणावांगा। यद पुश्त आप बणावांगा। यकमुशत खेल करावांगा। आशक माशूक रूप वटावांगा। धुर दा सच हकूक, जन भगतां झोली पावांगा। बाकी सब नूं करां मनसूख़, पिछला लेखा मेट मिटावांगा। चार वरनां बणे इक रसूख़, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को घर बहावांगा। सब दी मेटां तृष्ना भूख, अमृत आत्म जाम प्यावांगा। जन्म मरन दा रहे ना दूख, जिस नूं आपणी गोद बहावांगा। जन भगतां हित जावां झूझ, आपणा सीस जगदीश कटावांगा। दो जहानां दी देवां सूझ, पड़दा उहला आप चुकावांगा। लहिणा चुके एका दूज, भाण्डा भरम भउ भंनावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्दर सतिजुग रूप वटावांगा। कलयुग अन्तिम डेरा ढाहेगा। प्रभ आपणा हुक्म वरताएगा। ना कोई मेटे मेट मिटाएगा। गुर अवतार सीस झुकाएगा। पीर पैगम्बर कलमा नबी रसूल ना कोए पढ़ाएगा। सारे हुक्म करन कबूल, काया काअबा इक्को नज़री आएगा। जिन्हां मिल्या आप महिबूब, मुहब्बत आपणे नाल लगाएगा। चार युग दा दे सबूत, सबर प्याला जाम प्याएगा। भाग लगा काया कलबूत, रूह पाक आप कराएगा। कूड़ी अग्नी देवे फूक, जोती लम्बू इक्को लाएगा। मुरीद मुर्शद दोहां इक रसूख़, रसवागर आप अख्वाएगा। हर घट होए सदा मौजूद, ख़ाली दर ना कोए वखाएगा। आदि जुगादि ना होए नेसतो नाबूद, सच निशान इक उठाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक वखाएगा। प्रभ भगती मार्ग लावेगा। भगत भगवान आप जगावेगा। धुर दा नाम दे के दान, ख़ाली झोली सर्ब भरावेगा। जो सुत्ते बाल अञ्याण, फड़ बाहों

३८८
१५

आप हिलावेगा। अगली पिछली चुके काण, बिन कन्नां राग सुणावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान जोड़ जुड़ावेगा। जन भगत आप उठाएगा। तुठ आपणी दया कमाएगा। कुछ नाम कोलों वरताएगा। मुख उजल मात कराएगा। सुख सहिज घर वसाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां रंग रंगाएगा। जन भगतां रंग रंगावेगा। आत्म सेजा डेरा लावेगा। धुर संदेस इक्को भेजा, भजन बंदगी नाम प्रगटावेगा। निज नेत्र आपे पेखा, पेखत पेखत खुशी मनावेगा। ना कोई रहे औलीआ पीर शेखा, मसायक रूप ना कोए धरावेगा। दीन मज़्ब दा कर के इक्को एका, आखर इक्को अक्खर पढ़ावेगा। पारब्रह्म पुरख अकाल दी इक्को टेका, खुदावंद करीम इक्को नज़री आवेगा। सब दी करे बुध बबेका, मन मनसा मेट मिटावेगा। दीन मज़्ब दा बोली उते अग्गे कोई ना लए ठेका, ठेकेदार नज़र कोए ना आवेगा। लोकमात सब दा इक्को बणे पुरख अबिनाशी नेता, निरगुण आपणा हुक्म वरतावेगा। मात गर्भ दा सब कराए चेता, लिव छुटकी फेर लगावेगा। सोहँ शब्द दा दस्से भेता, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ावेगा। जो उपरों आया हेठां, हेठों फड़ के उपर लै जावेगा। जिस दा शब्दी पुत्त इक्को जेठा, थिर घर साचे सोभा पावेगा। सो भगतां कदे ना भुल्ले चेता, जुग चौकड़ी वेखण आवेगा। कलयुग जीवो उठो मुकावो आपणा लेखा, श्री भगवान लेख चुकावेगा। वेला लँघ ना जाए वेखी वेखा, वेला लँघया हथ्थ ना आवेगा। जिस दा रूप रूप अनेका, बहु कूट फोल फुलावेगा। जिस दा मेल दस दस्मेशा, दहि दिशा खोज खोजावेगा। जिस दी अंस विष्न ब्रह्म महेषा, करोड़ तेतीसा सुरप्त इन्द जिस ध्यावेगा। तिस साहिब करो आदेसा, अन्तिम आपणे देस लै जावेगा। तिस मुच्छ दाढ़ी ना केसा, ना कोई मूंड मूंडावेगा। आत्म परमात्म करे हेता, नित नवित्त आपणे घर वसावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे इक्को वर, भगती डेरा इक लगावेगा। जन भगतां प्रभ होए वस, आपणा माण गंवाईआ। धुरदरगाहों आए नस्स, जुग जुग फेरा पाईआ। साचा मार्ग देवे दस्स, करे अगम्म पढ़ाईआ। जुग चौकड़ी किसे ना आया हथ्थ, लभ्भ लभ्भ थक्के सर्ब लोकाईआ। खोजत खोजत गए अक्क, हरि का नूर नज़र ना आईआ। कोटन बैठे तीर्थ तट, डूंघी कन्दर ध्यान लगाईआ। कोटन अग्नी रहे तप, जल धार कोटन रहे वहाईआ। कोटन करन पूजा पाठ शिवदुआले मठ्ठ, मन्दिर मसीत गुरू रहे ध्याईआ। चार कुण्ट दहि दिशा किसे ना आया हथ्थ, ख़ाली हथ्थ रहे वखाईआ। जिन्हां उपर किरपा करे पुरख समरथ, सतिगुर पूरा दया कमाईआ। रातीं सुत्यां निज खोल्हे नेत्र अक्ख, दिने जागदयां बिन अक्खां नज़री आईआ। सति सरूप हो प्रतख, पर्दा उहला दए उठाईआ। लख चुरासी नालों कर के वक्ख, आपणा मेल मिलाईआ। तूं मेरा मैं तेरे वस, भगत भगवान इक

दूजे नूं रहे सुणाईआ। बिन भगत भगवान दोहां दा खेड़ा कदी ना सके वस, दो जहान औंतरे नज़री आईआ। भगत कहे भगवान मेरी रखे पत्त, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। भगवान कहे बिन भगतां मेरा नाम कोई ना लए जप, लोकमात निशाना नज़र कोए ना आईआ। दोहां दा इक दूजे बिनां चले कोई ना वस, मज़बूर हो के इक दूजे नाल बन्धन पाईआ। धन नगर धन्न खेड़ा जिथ्थे पिता पुत्त दोवें गावण जस, रसना जिह्वा बत्ती दन्द सिफ्त सालाहीआ। हरिसंगत दुआरा रिहा वस, सारी बस्ती खुशी मनाईआ। कल्लयो काल कलन्दर जाए नस्स, जो जन दर ते आए दर्शन पाईआ। अन्तिम वेले दर्शन देवे हस्स हस्स, सीस जगदीश ताज टिकाईआ। गुरमुखो घरदयां देणा दस्स, प्रभ पिता आया सच्चा माहीआ। जो होया भगतां वस, सो भगतां पिच्छे फेरा पाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी पुरख अकाल इक समरथ, सतिगुर पूरा इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिसंगत तेरी प्रेम प्रीती अन्दर जाए ढट्ठ, तेरे मन्दिर आपणा डेरा लाईआ। सचखण्ड दा सच इकट्ठ, लोकमात वखाईआ। जिस घर निरगुण निरवैर होए प्रगट, सो प्रगट विच लोकाईआ। सारे रल मिल आत्म परमात्म इक दूजे दा गाओ जस, दूई द्वैती किसे विच रहिण ना पाईआ। ज़ात पात दीन मज़्हब खैहड़ा दयो छड्ड, इक दूजे नूं जाणो भाई भाईआ। नानक गोबिन्द सच्चा मार्ग गया दस्स, ऊँच नीच रहिण कोए ना पाईआ। हर घट हर हिरदे साचा राम रिहा वस, घर घर काहन आपणी बंसुरी नाम रिहा वजाईआ। सीता सुरती हो के प्रीतम आपणा कर लओ वस, राधा हो के कृष्न लओ मनाईआ। तुहाढे पिच्छे तुहाढा सतिगुर होए बेवस, भज्जा फिरे वाहो दाहीआ। छड्ड के आए तीर्थ तट, मन्दिर मट्ठ सर्ब तजाईआ। जिथ्थे भगत सन्त गुरमुख गुरसिख हरिसंगत हरि का नाम रही रट, तिस बिन दूजा दर अवर ना कोए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सर्ब वर, गुरमुखो आपणा वेखो आप घर, जिस घर विच घर सतिगुर डेरा लाईआ। गुरसिख अग्गों देवे आख, उच्ची कूक सणाईआ। बिन सतिगुर मैनूं कुझ ना सके भाख, होए ना कोए सुणाईआ। नौ दुआरे बड़े चालाक, अट्ठे पहर आपणा बल वखाईआ। पंज विकारे अगला बंद कीता ताक, सके ना कोए खुल्हाईआ। जिन्ना चिर सतिगुर पूरा सिर आपणे हथ्थ ना लए राख, राह नज़र कोए ना आईआ। सुखमन टेडी बंक पार ना होवे घाट, ईड़ा पिंगल पन्ध ना कोए मुकाईआ। शब्द सुणे ना कोई नाद, अनहद राग ना कोए सुणाईआ। अमृत आत्म ना आए स्वाद नौ रस फिके रसना जिह्वा रही खाईआ। आत्म अन्तर ना होए प्रकाश, अन्ध अन्धेर ना कोए मिटाईआ। कर किरपा सतिगुर पूरा अन्दर वड़ के साचे मन्दिर चढ़ के सुरती शब्द फड़ के दरस दिखाए साख्यात, सज्जण इके नज़री आईआ। गुरमुख ओस घर ओस दर कदी ना होए वफ़ात,

३६०

१५

जन्म मरन गेड़ रहिण ना पाईआ। लेखा लिख दए बिन कलम दवात, काग़ज़ लोड़ रहे ना राईआ। बिन प्यासिउँ प्याए आबे हयात, हयाती हयाती विचों बदलाईआ। मुख तों लाह के पड़दा नक़ाब, नक़ाबपोश आपणा नूर दए चमकाईआ। जो हर घट अन्दर बैठा ख़ामोश, सो गुरमुखो गुरसिखो जन भगतो तुहाढ्ढे नाल अन्दर वड़या गल्लां करे चाईं चाईंआ। आओ रल के बणो इक जमात, कबीर जुलाहा उच्ची कूके दए दुहाईआ। नानक निरगुण सति सरूप सब नूं बणाए पारजात, जो परम पुरख पतिपरमेश्वर चरण लागण पाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत देवे इक्को वर, जम का चुकाओ भय डर, वेले अन्त श्री भगवन्त अन्त आपणी गोद बहाईआ।

✪ २७ भाद्रों २०२० बिक्रमी पिण्ड कल्ला प्रीतम सिंघ दे गृह ज़िला अमृतसर ✪

गुरमुख मिटे अन्धेरी रात, जगत अन्धेर रहिण ना पाईआ। घर सतिगुर दरस पाए साख्यात, शाह पातशाह नज़री आईआ। अन्दर खोल्हे आपणा ताक, पड़दा बजर कपाट उठाईआ। पुरख अकाल मिले सज्जण साक, दर बैठा बेपरवाहीआ। सच प्रीती बन्न्हे नात, नाता आपणे नाल जुड़ाईआ। आत्म देवे इक्को दात, परमात्म मेल मिलाईआ। बख्शे अमृत बूँद स्वांत, सांतक सति सति वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख इक ज्ञान दृढ़ाईआ। गुरमुख देवे इक ज्ञान, सतिगुर साचा दया कमाइंदा। अन्तर आत्म धर्म निशान, धर्म दुआरे आप वखाइंदा। कूड़ी क्रिया छुट्टे पीण खाण, अमृत रस आप चखाइंदा। चरण कँवल कँवल चरण प्रभ स्वामी इक ध्यान, इष्ट देव गुर इक्को नज़री आइंदा। साचा नाम सुणे सच कान, सरवण साचे लेखे लाइंदा। बाली बुध ना होए अञ्याण, सुरती स्वच्छ सरूप बणाइंदा। घर मेला निरगुण काहन, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। जन्म कर्म रोग सर्ब मिट जाण, संसा रहिण कोए ना पाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख गुर गुर बूझ बुझाइंदा। गुरमुख बूझे सतिगुर रंग, हरि साचा सच बुझाईआ। मन्दिर वेखे अन्दर लँघ, पड़दा आप चुकाईआ। नाम निधान वज्जे मृदंग, ताल तलवाड़ा इक वखाईआ। जगत विकारा खण्ड खण्ड, कूड़ कुड़यार नज़र कोए ना आईआ। आत्म मिले इक अनन्द, परमानंद आप समाईआ। साची देवे नाम सुगंध, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख एका घर वखाईआ। गुरमुख वेख पहला घर, जिस घर वसे बेपरवाहीआ। लोकमात क्यों बैठा अड़, मनमति रंग रंगाईआ। काया मन्दिर साचे पौड़े वेख चढ़, उच्चा टिल्ला नज़री आईआ। नेत्र लोचण दर्शन कर, निज नैण इक खुल्हाईआ। नज़री आए नरायण नर, हरि करता बेपरवाहीआ। जन्म

जन्म दा चुक्के डर, आवण जावण रहिण ना पाईआ। बिन रसना जिह्वा सोहँ ढोला पढ़, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। घर विच उपजे तेरा घर, घर घर विच वज्जे वधाईआ। साचे नहाउणा इक्को सर, सर अमृत इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। गुरमुख तेरी धुर दी प्रीत, हरि सतिगुर आप जणाईआ। जन्म जन्म दी वेखे रीत, कर्म कर्म दी धार समझाईआ। तेरे अन्दर अमृत ठांडा सीत, बिन किरपा हथ्थ किसे ना आईआ। अग्गे हो के वेख नज़दीक, दूरन दूर पैंडा रिहा मुकाईआ। सदा सुहेला वसे चीत, चेतन आपणा हुक्म वरताईआ। दर दरवेश बण मंग नाम भीख, भिच्छया इक्को झोली पाईआ। मन आत्मा दोवें रहिण अतीत, बुध मति नाल मिलाईआ। लेखा चुक्के हस्त कीट, हर घट रमया राम नज़री आईआ। माणस जन्म लैणा जीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच देवणहार वड्याईआ। साची प्रीती लाओ एक, पुरख अकाल दया कमाईआ। आदि जुगादि जिस दा भेख, निरगुण सरगुण रूप धराईआ। लख चुरासी लिखे लेख, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाईआ। भगत भगवान देवणहारा टेक, जुग जुग हुक्म वरताईआ। निज नेत्र निज आत्म निज गृह निज स्वामी लैणा वेख, घर बैठा बेपरवाहीआ। सच प्रेम करो हेत, नेम इक्को इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख देवे सदा वड्याईआ। सच प्रीती सतिगुर चरण, मिले माण वड्याईआ। नेत्र खुल्ले हरन फरन, जोती नूर नूर रुशनाईआ। लेखा चुक्के मरन डरन, जीवण मुक्त इक्को इक समझाईआ। गुरमुख विरले तरनी तरन, कलयुग डुब्बी सर्ब लोकाईआ। सन्त सुहेले गुरू चेले आया फड़न, बण पांधी फेरा पाईआ। काया मन्दिर डूंघी कन्दर आया वड़न, नौ दुआरे डेरा देवे ढाहीआ। सच महल्ले आया चढ़न, दस्म दुआरी बहि के आया पढ़न, सोहँ ढोला इक्को गाईआ। लेखा चुकावण आया वरन बरन, समझावण आया इक्को सरन, श्री भगवान सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख नेत्र नैण अक्ख खुल्लाईआ। गुरमुख खुल्ली अक्ख अगम्म, हरि हरि भेव जणाया। सुणया नाउँ एका कन्न, दोए सरवण बंद कराया। नाम पाया धुर दा धन, सच ख़ज़ीना नज़री आया। निरगुण चढ़या इक्को चन्न, जोत निरँजण नूर रुशनाया। कूड़ी क्रिया भाण्डा भन्न, सच भण्डार झोली पाया। मेट वासना आपणा मन, मन ममता मोह चुकाया। कर प्रकाश साचे तन, घर मन्दिर इक सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गृह गुरमुख आप सुहाया। गृह गुरमुख घर सुहञ्जणा, सोभनीक वड्याईआ। घर दीपक जगे निरँजणा, निरवैर पुरख आप जगाईआ। हरि सतिगुर मिले दर्द दु:ख भय भंजना, सुख सागर रूप वटाईआ। नेत्र पाए नाम अंजना, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। चरण धूढ़ कराए

मजना, दुरमति मैल धवाईआ। काया चोली चाढ़े रंगना, रंग मजीठ इक रखाईआ। सति सन्तोखी इक पहनाए अंगना, अंगीकार इक हो जाईआ। ढोला गीत सुणाए साचा छन्दना, तूं मेरा मैं तेरा करे सच पढ़ाईआ। गुरसिख गुरु गुर गुरदेव इक दूजे नूं दोवें करन बन्दना, बंदगी प्रेम प्रीती इक जणाईआ। गुरमुख तेरा लख चुरासी कटे फंदना, फाँसी गल ना कोए लटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच प्रीती ठांडी नीती हरिजन हरि जू काया झोली आप टिकाईआ।

२७ भाद्रों २०२० बिक्रमी पिण्ड कल्ला गुरबख्श सिँघ दे गृह ज़िला अमृतसर

सचखण्ड निवासी सचखण्ड रहिंदा, सतिगुर पूरा इक अख्वाइंदा। जन भगतां अन्दर निरगुण हो के बहिंदा, सच सिँघासण सोभा पाइंदा। निरवैर हो के ढोला कहिन्दा, नाम निधान जणाइंदा। आदि जुगादि भाणा सहिंदा, सिर आपणे भार उठाइंदा। घर घर जा जा देणा देंदा, देवणहार आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी करनी आप कमाइंदा। सचखण्ड निवासी वसे सचखण्ड दुआर, सच साचा इक अख्वाईआ। जुग जुग वेखे विच संसार, निरगुण सरगुण भेव चुकाईआ। भगत कबीला इक परिवार, पारब्रह्म प्रभ बणत बणाईआ। नित नित मेले विछड़े यार, सच प्रीती इक लगाईआ। जुग जुग मार्ग दए सिखाल, साची सिख्या इक समझाईआ। नाम निधान बुलाए जैकार, साचा राग सुणाईआ। डूंघे वहण करे पार, भव सागर लए तराईआ। नेत्र खोल्ह देवे दीदार, लोचण इक्को नज़री आईआ। सोच विच ना आए सिरजणहार, सोच समझ चले कोई ना राईआ। जिस बख्शे बख्शणहार, बख्शिश आपणी मेहर वखाईआ। फड़ बांहों लए उठाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमाईआ। सचखण्ड निवासी साहिब सुल्तान, पारब्रह्म इक अख्वाइंदा। जुग जुग देवे जगत ज्ञान, भगत भगवान आप समझाइंदा। मार्ग लाए सृष्ट आण, दृष्ट इक्को इक खुल्हाइंदा। सच बणाए धर्म विधान, धुर दा हुक्म इक सुणाइंदा। गुर अवतार देण ब्यान, लेखा लिख्त लेख पढ़ाइंदा। प्रगट हो वाली दो जहान, दोए दोए आपणी कार कमाइंदा। निरगुण सरगुण करे विहार, बिवहारी आपणी रचन रचाइंदा। कलयुग अन्त लै अवतार, वड अवतारी फेरा पाइंदा। गुरसिख साचे करे प्यार, पारब्रह्म प्रभ आपणा मेल मिलाइंदा। जींवदयां जग करे उधार, मरयां जम नेड़ ना आइंदा। माणस जन्म पैज दए स्वार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी, घट घट वासी, हरिजन साचे साचे मन्दिर सद सदा आपणे विच समाइंदा।

✪ २७ भाद्रों २०२० बिक्रमी कर्म सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

सचखण्ड निवासी सुहाए थान, धरनी धरत मिले वड्याईआ। देवत सुर सारे गाण, गण गंधर्ब ध्यान लगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव नैण उठाण, उठ उठ वेखण चाईं चाईंआ। चार युग खुशी मनाण, घर साचे वज्जे वधाईआ। जुग चौकड़ी खेल महान, हरि करता आप कराईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण सिफ्ती ढोले सर्ब सुणान, उच्ची कूक कूक अलाईआ। वड वड्याई गुरमुख चतुर सुजान, जिस मिले बेपरवाहीआ। अनमंगया देवे दान, धुर दी दात वरताईआ। चरण धूढ़ बख्शे अशनान, सरोवर इक बणाईआ। माणस जन्म देवे माण, मानुख आपणे लेखे लाईआ। पिछला लेखा चुक्के जहान, अग्गे इक्को बूझ बुझाईआ। सोहँ शब्द कर परवान, परम पुरख करे पढ़ाईआ। अन्तर आत्म उपजे इक ज्ञान, इक अक्खर दए जणाईआ। झूठा दिसे जगत मकान, अन्त खेड़ा कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे पार कराईआ। सचखण्ड निवासी किरपा निध, किरपन आपणी दया कमाइंदा। जन भगतां कारज करे सिध, साचा खेल आप वरताइंदा। आपणे मिलण दी आपे जाणे बिध, दूजा मार्ग नज़र किसे ना आइंदा। मेल मिलावे घर धाम निज, निज घर आपणा डेरा लाइंदा। हरिजन हरी दुआर जाए सुझ, सूझ बूझ इक्को पाइंदा। सतिगुर प्रीती जाए लुझ, दूजी हरस ना कोए वधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां आपे लए पुच्छ, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आइंदा।

✪ २७ भाद्रों २०२० बिक्रमी पूरन सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

सचखण्ड निवासी वस्त दे, हरि भगत मंग मंगाइंदा। ठाकर नाल लगे नेंह, नाता इक्को इक जुड़ाइंदा। अमृत बरख साचा मेंह, मेघला नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर तेरे सीस झुकाइंदा। किरपा कर सच्चे भगवान, हरि भगत आस रखाईआ। धुर दा दे अगम्मी दान, लोकमात हथ्थ किसे ना आईआ। लभ्भ लभ्भ थक्का जीव जहान, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। पढ़ पढ़ थक्के अञ्जील कुरान, शास्त्र सिमरत वेद गाईआ। तेरा मिल्या ना कोई निशान, निशाना हथ्थ किसे ना आईआ। नव नौ चार होया हैरान, परेशान सर्ब लोकाईआ। ख़ाली दिसे जगत दुकान, वस्त नाम ना कोए विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वस्त अमोलक झोली पाईआ। किरपा कर सर्ब गुणवन्त, जन भगत इक्को आस रखाइंदा। साचा नाम दे मणीआ मंत, मन मनसा पूर कराइंदा। गढ़

तुट्टे हउमे हंगत, हँ ब्रह्म भेव चुकाइंदा। लेखा चुक्के जगत पंडत, बोध अगाध इक्को नज़री आइंदा। मेल मिला साची संगत, जिस संगत विच समाइंदा। कर किरपा ला अंग अंगद, अंगीकार तेरा दर इक्को भाइंदा। दर दरवेश होया मंगत, दोए जोड़ सीस झुकाइंदा। साहिब सतिगुर मन्न इक्को मिन्नत, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। काया चोली चाढ़ रंग भिन्नत, भिन्नड़ी घड़ी नाल सुहाइंदा। कूड़ी रहे ना कोई इलत, एका तेरा रूप नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची दरस्स धुर दी मिलत, जिस गृह आपणा मेल मिलाइंदा। शाह पातशाह सच सूरबीर, तेरी ओट तकाईआ। चोटी चाढ़ फड़ अखीर, आख़र आपणा दरस कराईआ। चार युग रहे दलगीर, तेरा नाम ध्याईआ। शरअ वज्जदे रहे ज़ंजीर, शरीअत करदी रही लड़ाईआ। सूली चढ़दे रहे अख़ीर, पुट्ठी खल्ल मात लुहाईआ। तेरे पिच्छे सांझे पीर, पैर ज़ंजीर हथ्थ हथकड़ी लई बंधाईआ। डुब्बदे रहे विच नीर, टिल्ले पर्बत धक्का देवण लाईआ। तेरी लभ्भदे रहे तस्वीर, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाल आपणा घर, जिस घर रुत्तबा ना कोई अमीर हकीर, सब इक्को नज़री आईआ। जगत विछोड़ा कट भीड़, बन्धन कोए रहिण ना पाईआ। बिरहों लग्गी मेट पीड़, दुखियां दर्द दर्द वंडाईआ। बदल दे साडी तकदीर, तदबीर आपणी इक समझाईआ। तेरे हथ्थ नाम शमशीर, कूड़ी क्रिया सीस दे कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत रहे ध्याईआ। जन भगत कहिण बोल, आपणा नाअरा लाईआ। अबिनाशी करते पड़दा खोल्ह, घर आपणा दे समझाईआ। साचे कंडे लै तोल, तोला बण के इक्को माहीआ। लख चुरासी विचों लै वरोल, हरिजन आपणे बाहर कढ्ढाईआ। नेड़े हो के वस कोल, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। नाम हो के वजा ढोल, ढोला इक्को राग सुणाईआ। शब्द हो के बण विचोल, विचोला निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। मौला हो के जा मौल, रूप रंग रेख नजर कोए ना आईआ। साडा भार कर हौल, सिर आपणे गंढ उठाईआ। लेखा चुक्के उपर धौल, धरनी धरत लहिणा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मेल साचे घर, जिस घर मिलयां विछड़ कदे ना जाईआ।

✪ २७ भाद्रों २०२० बिक्रमी गुरमुख सिँघ दे गृह पिण्ड कल्ला ज़िला अमृतसर ✪

हरि सतिगुर दया कमाइंदा, आदि पुरख निरँकार। गुर गुर वेस वटाइंदा, शब्द जोत आधार। भगत भगवान वेख वखाइंदा, निरगुण सरगुण कर प्यार। सन्त साजन पड़दा लाहइंदा, दूई द्वैत उतार। गुरमुख गोद बहाइंदा, देवे सच

प्यार। गुरसिख वेख वखाइंदा, सद सद वेखणहार। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढ्ढाइंदा, नित नवित्त साची कार। विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाइंदा, देवे धुर फ़रमान। गुर अवतार हुक्म वरताइंदा, लेखा जाण दो जहान। पीर पैगम्बर आप समझाइंदा, देवे ब्रह्म ज्ञान। सब दा दाता इक अख्वाइंदा, आदि जुगादि श्री भगवान। सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा, तख्त निवासी नौजवान। सीस जगदीश ताज सुहाइंदा, पंचम पंच करे परवान। साचा धर्म इक बणाइंदा, साची शरअ इक ईमान। साचा रहबर इक अख्वाइंदा, सच पैगम्बर हो प्रधान। सच सुअम्बर आप रचाइंदा, लख चुरासी खेल महान। सर्ब घट भरतम्बर दया कमाइंदा, जुग चौकड़ी वेस महान। कलयुग कूड़ा अडम्बर आप मिटाइंदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल शाह सुल्तान। हरि का खेल हरि का रंग, हरि हरि जू आप जणाईआ। गुर की धार डोर पतंग, निरगुण सरगुण आप जणाईआ। भगत भगवान एका सेजा बहिण पलँघ, सुहञ्जणी रुत्त सुहाईआ। सन्त सज्जण लैण अनन्द, आत्म रस इक वखाईआ। गुरमुख गुरुदुआरा वेखण लँघ, राह विच ना कोए अटकाईआ। गुरसिख साचा नाम वजावण मृदंग, तार सतार ना कोए हिलाईआ। श्री भगवान सूरा सरबँग, शहिनशाह आपणी खेल रचाईआ। कर प्रकाश सूरज चन्द, त्रैभवन करे रुशनाईआ। लेखा जाण जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज वंड वंडाईआ। हुक्मे अन्दर कोट ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड आसण लाईआ। नाम खण्डा चण्ड प्रचण्ड, दो धार आप चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। सच दाता निरवैर, निरगुण इक अख्वाइंदा। गुर किरपा कदी ना होवे कहर, अग्नी तत ना कोए जलाइंदा। भगत मिलण दी भगवान कदे ना करे डेर, दूर दुराडा नेड़े नज़री आइंदा। सन्तां मेला करे एका वेर, एका घर सोभा पाइंदा। गुरमुखां लहिणा देणा दए नबेड़, लेखा लेखे विच जणाइंदा। गुरसिखां दस्से ना कोई हेर फेर, हेरा फेरी सर्ब चुकाइंदा। नज़री आए शब्द स्वामी साचा शेर, भबक आपणे नाम लगाइंदा। लख चुरासी विचों घेर, गुरमुख थोड़े बाहर कढ्ढाइंदा। कलयुग जीव कूड़ी क्रिया करन भेड़, मनमति मनमति नाल टकराइंदा। चारों कुण्ट छेड़ां रहे छेड़, छेड़खानी सब दे विच वखाइंदा। कोई ना जाणे मेर तेर, तेरा मेरा भेव ना कोए मिटाइंदा। अन्तिम वाड़ा दिसे भेडां हेड़, राए धर्म हथ्थ फड़ाइंदा। लहिणा इक्को वारी दए नबेड़, झगड़ा अग्गे हो ना कोई पाइंदा। वेखणहारा अण्डज जेर, उत्भुज सेत्ज फोल फोलाइंदा। पुरख अबिनाशी इक्को केहर, भय भउ आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुरमुख गुर गुर आप जगाइंदा। गुरमुख वेख प्रभू स्वामी, हरि सतिगुर नज़री आईआ। हर घट बैठा अन्तरजामी, आत्म सेजा आसण लाईआ। बोध अगाध सुणाए शब्दी बाणी, दूजी करे ना कोए पढ़ाईआ। सोई

उठाए सुरत सवाणी, आलस निंद्रा दए मिटाईआ। फड़ बणाए धुर दी राणी, शब्दी कन्त मिलाईआ। सच सुणाए अकथ कहाणी, कह कह खुशी मनाईआ। अमृत प्याए ठंडा पाणी, सर इक्को इक जणाईआ। आपे होए जाण जाणी, जानणहार आप अख्वाईआ। सचखण्ड दी दए निशानी, नाम निशाना हथ्थ फड़ाईआ। पद जणाए इक निरबाणी, परम पुरख बेपरवाहीआ। प्रभ मिलण दी कीती आसानी, मार्ग सुखल्ला इक वखाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गाओ ज़बानी, ज़ाबर ज़बर दूजा नेड़ कोए ना आईआ। अन्तिम मेला मेल मिले पुरख जोत नुरानी, जोती जोत जोत समाईआ। आवण जावण चुक्के कानी, लख चुरासी डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुखां वखाए आलमे जावदानी, फ़ानी नज़र कोए ना आईआ।

✪ २७ भाद्रों २०२० बिक्रमी पिण्ड कंग नरैण सिँघ दे गृह ज़िला अमृतसर ✪

जगत मर्यादा गुरू ग्रन्थ, गुर गोबिन्द सिँघ सिँघ समझाईआ। चार वरन दा सच्चा पन्थ, इष्ट इक मनाईआ। नारी बण हंढ्ढावे कन्त, बेपरवाह सच्ची सरनाईआ। अन्तर आत्म इक मंत, मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। गुरसिख साचा बणे सन्त, दूई द्वैत रहिण ना पाईआ। लख चुरासी रूप हरि का वेखे जीव जंत, दूजा नैण ना कोए उठाईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, उतर कदे ना जाईआ। कूड़ी क्रिया गढ़ तोड़े हउमे हंगत, चरण कँवल इक सरनाईआ। बोध अगाधा गुर शब्दी साचा पंडत, निरवैर करे पढ़ाईआ। जगत वासना करे खण्डत, खण्डा खड़ग नाम रखाईआ। लेख चुकाए जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज पन्ध मुकाईआ। दूजे दर ना जाए मंगत, घर वस्तू इक वखाईआ। साचा हुक्म संदेसा दित्ता सतिगुर पूरे साची संगत, सच संदेसा इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी रिहा जणाईआ। पंज पैसे नाल नलेर, सरगुण निरगुण अग्गे चढ़ाईआ। शब्द गुरू दाता करे मेहर, मेहरवान अख्वाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी वरन बरन ना कोए हेर फेर, साची सरन इक तकाईआ। आत्म परमात्म लहिणा देणा दए नबेड़, हिरदे हरि का नाम जो ध्याईआ। पंच विकार करे ना कोई भेड़, काम क्रोध लोभ मोह हँकार रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। साची सिख्या गुर गोबिन्द, एका एका वार जणाईआ। सर्ब जीआं दी मेट चिन्द, साचा राह वखाईआ। सतिगुर पूरा गुणी गहिंद, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। अमृत धार वहाए सागर सिन्ध, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए जणाईआ। गुरू ग्रन्थ शब्द गुरदेव, हरि बाणी सिफ्त

सालाहीआ। भेव खुल्हाए अलख अभेव, अगम्म अथाह दए जणाईआ। वसणहारा सदा धाम निहचल निहकेव, अटल वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। गुरू ग्रन्थ गुरदेव स्वामी, पंज तत करे पढ़ाईआ। होई सिफ्त अगम्मी बाणी, बाण निराला तीर चलाईआ। लेखा जाणे चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फोल फुलाईआ। अमृत आत्म घर सरोवर देवे ठंडा पाणी, नीर वरोले थाउँ थाईंआ। महिमां अकथ सुणाए कहाणी, बोध अगाध पढ़ाईआ। इक वखाए पद निरबाणी, निरबाण पद समाईआ। कोई ना भुल्ले जीव प्राणी, परम पुरख गया समझाईआ। जिस दी महिमां दो जहानी, शास्त्र सिमरत वेद पुराण रहे जस गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणी धार जणाईआ। गुरू ग्रन्थ शब्द गुर दाता, गुर गोबिन्द आप जणाया। निरगुण सरगुण बणे राखा, बण प्रितपालक सेव कमाया। पारब्रह्म ब्रह्म जणाए गाथा, साचा मन्त्र नाम दृढ़ाया। आत्म परमात्म पूरी करे आसा, जो जन हिरदे हरि वसाया। भाग लगाए साचे कासा, अमृत बाटा आप भराया। निरगुण निरवैर पुरख अकाल जोड़े नाता, कूड़ा बन्धन तोड़ तुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा गुरू इक समझाया। साचा गुरू दस्से गोबिन्द, एका एक जणाईआ। जुग जुग मेटणहारा चिन्द, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। दो जहानां गुणी गहिंद, गहर गम्भीर अख्वाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जिस दी बिंद, निरगुण नूर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पड़दा सब दा दए उठाईआ। शब्द गुरू सद मानो एक, गुरू ग्रन्थ वडियाइंदा। नित नवित्त जिस दी टेक, टेक एक रघनाथ समझाइंदा। मन मति बुध कर विवेक, दुरमति मैल कूड़ा किरकट पार कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरदेव स्वामी इक्को इक वखाइंदा। शब्द गुरू मानो सद जग, गुर गोबिन्द सिँघ गया समझाईआ। जिस दा मेल उपर शाह रग, नौ दुआरे पन्ध मुकाईआ। निर्मल जोत करे प्रगट, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। शब्द अनाद लगाए सट्ट, अनहद ठोकर इक जणाईआ। नज़री आए घट घट, हर घट रिहा समाईआ। साचे मन्दिर बहे समरथ, समरथ आपणा आसण लाईआ। गुरू ग्रन्थ गुर बाणी सब नूं मार्ग दस्स, जीव जंत जगत पढ़ाईआ। इक्को ओट लैणी रख, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। जिस दे हुक्मे अन्दर चौदां लोक चौदां हट्ट, चौदां विद्या वज्जी वधाईआ। जिस दा खेल बाज़ीगर नट, लोकमात समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक समझाईआ। जिस दे उते पंज पैसे दित्ते टिक्का, टिका इक्को इक लगाईआ। सो गुरू गुरुदुआर काया मन्दिर अन्दर नज़री जाए आ, निष्अक्खर अक्खर रूप वटाईआ। जिस दी सिफ्त सालाही दो जहान, आदि जुगादि रहे जस गाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा गुरू इक वखाईआ। साचा गुरू इक स्वामी, आदि जुगादि अख्वाइंदा। जुग चौकड़ी अन्तरजामी, लख चुरासी फोल फोलाइंदा। बोध अगाध सुणाए बाणी, धुर दी धार समझाइंदा। आत्म परमात्म मेल मिलाए साचे हाणी, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाइंदा। साचा लेखा चार खाणी, चारों कुण्ट लेखे पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा इक वडियाइंदा। गुरू ग्रन्थ गुर देवे उपदेश, जीव जंत करे पढ़ाईआ। पारब्रह्म प्रभ सच नरेश, पुरख अकाल सच्चा शहिनशाहीआ। सचखण्ड दुआरे वसे अगम्मी देस, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जिस गुर अवतार पीर पैगम्बर दित्ते भेज, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाईआ। जिस दी गोबिन्द सुत माणे साची सेज, गोदी बैठे चाईं चाईंआ। उस दा इक्को सच्चा लेख, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। बिन शब्द गुरू बाणी सृष्ट सबाई भेख, भेखा धारी जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरू इक्को इक वड्याईआ। आदि जुगादी इक्को गुर, सतिगुर सच्चा हरि अख्वाइंदा। सब दा लेखा जाणे धुर, भेव अभेदा भेव खुल्हाइंदा। जिस दी पूजा करन विष्न ब्रह्मा शिव देवत सुर, करोड़ तेतीसा सीस निवाइंदा। ओस सतिगुर दी आदि जुगादि जुगा जुगन्तर लोड़, गुरू ग्रन्थ सर्ब समझाइंदा। जो आत्म विछड़ी परमात्म नाल देवे जोड़, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। जगत विकारा कूड़ कुड़यारा देवे होड़, हरि का नाम इक समझाइंदा। लहिणा देणा चुकाए मोर तोर, तुरत आपणा खेल वखाइंदा। तिस अग्गे किसे दा चले नाहीं ज़ोर, दो जहानां हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार आप समझाइंदा। पंज पैसे रख नरेल टेकया मथ्था, मस्तक शब्द गुरू निवाईआ। तेरा खेल पुरख समरथा, समरथ तेरी शरनाईआ। आदि जुगादि जिस दा भेव किसे ना लिखा, अलख निरँजण तेरी वड वड्याईआ। बिन नानक निरगुण सरगुण हाल किसे ना दस्सा, सचखण्ड दुआरे फेरा कोई ना पाईआ। सो गुरु गुर गोबिन्द इक्को रखा, जिस विच बद्धी सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द शब्द गुरू गया समझाईआ। शब्द गुरू माने संसार, सर्ब जीआं जणाईआ। पंज तत ना कोए प्यार, काया माटी खेह वखाईआ। त्रैगुण लेखा चुक्के अन्तिम वार, प्रकृती नज़र कोए ना आईआ। शब्द गुरू सद बोले जैकार, ना मरे ना जाईआ। आवे जावे वारो वार, लेखा सके ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा गुरू इक्को इक रखाईआ। सच्चा गुरू सतिगुर आदि, सो पुरख निरँजण आप प्रगटाया। हरि पुरख निरँजण वजाए नाद, एकँकार राग अलाया। आदि निरँजण जोत प्रकाश, श्री भगवान भेव खुल्हाया। अबिनाशी करता देवे दाद, पारब्रह्म प्रभ पड़दा लाहया। ब्रह्म मारे आपणी इक आवाज़, लख चुरासी लए उठाया। दो जहानां भोगे राज,

शाह सुल्तान आप हो जाया। जुग चौकड़ी रचे काज, करनी करता आप कमाया। जिस दा गुर अवतार पीर पैगम्बर समाज, निरगुण सरगुण वंड वंडाया। साची देवे धुर दी दाद, नाम भण्डार आप वरताया। सो वेखणहार जुगादि, भेव अभेदा भेव खुल्हाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा गुरू इक्को प्रगटाए मात, दूजा गुरू कम्म किसे ना आया। सतिगुर सच्चा इक्को बहुता, बहुते गुरू कम्म किसे ना आईआ। जिस दा खेल लोक परलोका, दो जहानां वेख वखाईआ। जिस दा नाउँ अगम्म श्लोका, निष्अक्खर अक्खर करे पढ़ाईआ। जिस दा भाणा किसे ना रोका, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सो सतिगुर सदा होए बेदोषा, दोष सब दे उते लगाईआ। आप बैठा रहे ख़मोशा, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा गुरू इक प्रगटाईआ। साचा गुरू परवरदिगार, बेपरवाह आप जणाइंदा। सर्ब जीआं दा सांझा यार, मुकामे हक़ डेरा लाइंदा। सच तौफ़ीक मेहरवान, मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला इलाही नूर इक धराइंदा। लेखा जाणे दो जहान, बेनिशान नज़र किसे ना आइंदा। मुख नक़ाब खेल महान, पर्दानशीं पर्दा आपणा ना कोए चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा गुरू इक वडियाइंदा। सच्चा गुरू गोबिन्द मीता, चार वरन समझाईआ। जिस दा खेल सदा अनडीठा, बिन गुरमुख पूरे समझ किसे ना आईआ। अन्दर बाहर साची रीता, गुप्त आपणी धार चलाईआ। जिस नूं लभ्भदे मन्दिर मसीतां, गुरुदुआर ठाकर शिवदुआले वेखण चाईं चाईंआ। सो साहिब सदा अतीता, हर घट बैठा डेरा लाईआ। गुर शब्द नाल करो प्रीता, प्रीती इक्को इक जणाईआ। दिवस रैण अट्ठे पहर सतिगुर सदा वसे चीता, चितवित ठगौरी कोए रहिण ना पाईआ। जिस दी सिफ्त शास्त्र सिमरत वेद पुराण अठारां ध्याए करे गीता, अञ्जील कुरान तीस बतीसा रही समझाईआ। सो सतिगुर नानक निरवैर पुरख इक दृढ़ीता, जिस दी वज्जे सच वधाईआ। तिस दा लेखा गुरू ग्रन्थ अलेख लिखीता, कातब बण के लेख लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरू इक्को इक वड्याईआ। आपे गुरु गुर आपे बाणी, सतिगुर शब्द आप अख्वाइंदा। आपे दाता आपे दानी, देवणहार आप हो जाइंदा। आपे खेले खेल दो जहानी, लोकमात आपे आपणा मार्ग लाइंदा। गुर गोबिन्द अन्तिम दे के गया ब्यानी, सच ब्यान इक समझाइंदा। प्रगट होवे शाह पातशाह सच्चा सुल्तानी, शहिनशाह आपणा रूप धराइंदा। जिस दा खेल बेमहानी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप चुकाइंदा। गुरू गोबिन्द सिँघ प्यारा, सच नसीहत गया समझाईआ। गुर शब्द इक्को मन्नो जीव संसारा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस दे मन्यां मिले पुरख अकाल निरँकारा, निरगुण वड्डा वड वड्याईआ। सो सतिगुर वसे धाम न्यारा, सचखण्ड

बैठा डेरा लाईआ। जिस दा इक्को सुत दुलारा, शब्दी नाउँ रखाईआ। थिर घर खोल्ह आप कवाड़ा, साची भूमका वंड वंडाईआ। सुन अगम्मों वसे बाहरा, नेत्र नैण नज़र किसे ना आईआ। जिस महल्ले चढ़ के कबीर कूके वारो वारा, उच्ची उच्ची रिहा सुणाईआ। जिस ने नानक निरगुण नाम सति दित्ता कर प्यारा, साचा वणज मात वखाईआ। जिस गोबिन्द कीता सुत दुलारा, पूत सपूता गोद बहाईआ। गुर गोबिन्द सिँघ सब नूं दे के गया लारा, शब्द इशारे नाल समझाईआ। कलयुग अन्तिम कल कल्की लए अवतारा, जिस दा पिता ना कोई माईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यारा, निरगुण आवे फेरा पाईआ। सम्बल वसे धाम न्यारा, बंक दुआरा समझ कोए ना पाईआ। डंका वजाए दोहरी धारा, शब्दी ताल आप वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। गुर गोबिन्द सिँघ दस्स के गया सच, सच सच दृढ़ाईआ। गुर शब्द जिस हिरदे जाए रच, लूं लूं राग अलाईआ। मन मनुआ ना पए नच्च, नौ दवारे ना ताल वजाईआ। काया माटी कंचन बणे कच्च, काची गगरीआ लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा आप समझाईआ। गुरू ग्रन्थ गुर सब दा सांझा, वरन बरन नज़र कोए ना आईआ। आत्म परमात्म मिलण दी रखे तांघा, घर बैठा आसण लाईआ। ना सोया ना कदे जागा, आलस निंद्रा ना कोए रखाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगतां मार आवाज़ां, धुर दा नाद सुणाईआ। साचे सन्तां पिच्छे फिरे भाजा, निरगुण नस्से वाहो दाहीआ। गुरमुखां रखे आपे लाजा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ । गुरसिख सच्चे तेरा साजण साजा, साची सिख्या इक समझाईआ। सतिगुर मन्नो ग़रीब निवाज़ा, ग़रीब निमाणयां होए सहाईआ। सच रसूल पाकी पाका, कलमा नबी इक पढ़ाईआ। बंद कवाड़ी खोल्हे ताका, मक्का काअबा हुजरा इक सुहाईआ। भूपत भूप वड नवाबा, शहिनशाह हरि अख्वाईआ। सीस जगदीश सोहे ताजा, दो जहान रय्यत लए बणाईआ। दो जहान आवे भाजा, तेई अवतारां माण दिवाईआ। भगत अठारां साजण साजा, सच सुच करे पढ़ाईआ। मूसा ईसा मुहम्मद रचया काजा, कलमा कायनात जणाईआ। नानक गोबिन्द खोल्ह इक दरवाज़ा, चार वरन अठारां बरन गया समझाईआ। इक्को राम इक्को शाम इक्को नूर खुदाई पढ़ो निमाज़ा, नाम सति वाहिगुरू फ़तहि इक जणाईआ। गुरू ग्रन्थ गुरदेव सतिगुर सब दी रखे लाजा, जो जन मंगे सच सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द दस्सया आपणा हाल, भेव खोलया दीन दयाल, दयानिध आपणी दया कमाईआ। गोबिन्द हाल दस्से अकाल, अक्ल कल वड्याईआ। तेरा मन्दिर मेरी धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्को नज़री आईआ। निरगुण हो के मारां छाल, सरगुण वेखां चाईं चाईंआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, पंज तत कूड़ा डेरा ढाहीआ।

जोती नूर कर जलाल, जलवा इक्को इक दरसाईआ। जन भगतां लेखा वेखां आण, लाशरीक फेरा पाईआ। नव नौ चार करां परवान, बेपरवाह बेपरवाहीआ। कूड़ी क्रिया मेटां निशान, सच सुच दयां प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गोबिन्द दित्ता इक्को वर, लेखा लिख्या बिन कलम शाहीआ। ना कोई शाही कलम दवात, काग़ज़ नज़र कोए ना आईआ। लिखणहारा लिखे आप, बिन अक्खरां अक्खर बणाईआ। सर्ब जीआं दा इक्को जाप, नानक गोबिन्द गया समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा बाप, पिता पूत होए कुड़माईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म जुड़े नात, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। सोहँ शब्द धुर दी गाथ, सच साजण करे पढ़ाईआ। सतिजुग चलाए राथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां लहिणा देणा चुकाए पूरब माथ, मस्तक टिक्का इक लगाईआ । सच दरबारे हरि निरँकारे इक बणाए धुर जमात, दीन मज़्हब ज़ात पात वरन गोत रहिण कोए ना पाईआ। अलिफ़ ये ना कोई लुगात, एका एक करे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गोबिन्द सच्चा दित्ता वर, गुर शब्दी साचा इक मनाओ, दूजे दर ना मंगण जाओ, जुग जुग आसा आप पुजाईआ। टेक मथ्था दिती असीस, गुर गोबिन्द आख सुणाईआ। जीवो जंतो साधो सन्तो गुरबाणी धुर दी इक हदीस, माणस मानुख ना किसे बणाईआ। एहदी कोई ना करे रीस, झूठी नकल ना कोए लगाईआ। इस नूं वेखण आए आप जगदीश, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दा वेला बीस बीस, निरगुण सरगुण बण के दूआ ज़ीरो दस्से सर्ब लोकाईआ। गुरू ग्रन्थ तेरी कोई ना लवे फ़ीस, हट्टो हट्ट ना कोए विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस दी सिफ्त गाए राग छतीस, बहत्तर नाड़ एका तन्द सतार वजाईआ। छत्ती राग गाउँदे आपणी धार, धारना नाल मिलाईआ। तेई अवतार करन प्यार, भगत अठारां खुशी मनाईआ । ईसा मूसा बोलण जैकार, मुहम्मद इक्को राग जणाईआ। नानक गोबिन्द खेल अपार, गुर अर्जण लेखा सहिज सुभाईआ। शब्द गुरु गुर कर तैयार, सृष्ट सबाई दए वखाईआ। कलयुग भुल्ले ना कोई जीव गंवार, जीवण जुगत इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, गुर गोबिन्द आपणी सेवा आप कमाईआ। सीस झुका सच गुर चेला, शब्द करे शनवाईआ। पारब्रह्म दा साचा मेला, ब्रह्म मिलणी आप जणाईआ। हर घट वसे सज्जण सुहेला, मिलो चाईं चाईंआ। निरगुण सदा रहे वेहला, गुरमुखां राह तकाईआ । कलयुग अन्तिम गुरमुख विरला संभले सच्चा वेला, बाकी भुल्ले सर्ब लोकाईआ। गुरू ग्रन्थ गुर शब्द सब नूं करे फ़ेला, पास कोए नजर ना आईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, दस्स के गया साचा घर, घर विच घर वखाईआ। चार वरन करो प्यार, एका दूजा भेव चुकाईआ । दीन मज़्हब दा झगड़ा छड्डो संसार,

सब दा दाता इक्को पिता माईआ। साची सिख्या सिखो सिरजणहार, चार युग गुर अवतार पीर पैगम्बर गए पढ़ाईआ। आपणे इष्ट करो दीदार, दृष्ट ताकी बंद खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समाज सब नूं रिहा समझाईआ। सारे बण जाओ सज्जण मीत, दूजा नज़र कोए ना आईआ। राम कृष्न खुदा वाहिगुरू गॉड गावो गीत, मन्दिर मसीत झगड़ा कोए रहिण ना पाईआ। हुक्मरानां दा हुक्म मन्नो ठीक, तबदीली शहिनशाही विच कदे ना आईआ। सारे घर घर आपणी ठीक रखो नीत, बाहर समझावण कोए ना जाईआ। जिस कर्म वासते गुरुदुआर मन्दिर बणाई मसीत, सो मसले सिखो चाईं चाईंआ। हर घट रमया वेखो हस्त कीट, श्री भगवान मन्नो रज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची हालत सब नूं रिहा जणाईआ। राउ रंक सारे करो विचार, शाह सुल्ताना आप जणाइंदा। कूड़ी क्रिया छड्डो विहार, सच सुच इक वखाइंदा। इक दर इक घर बहि के करो प्यार, वड्डा छोटा नज़र कोए ना आइंदा। जे कोई भुल्ल हो जाए आपणी भुल्ल कहो पुकार, पड़दा उपर ना कोए रखाइंदा। मनमुख हो ना बणो गंवार, जगत ख्वारी चारों कुण्ट आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दिशा सब दी आप बदलाइंदा। जे कोई वेखे हाल समाज़क, समाजवादी देण दुहाईआ। लड़न भिड़न दी पै गई आदत, दिवस रैण करन लड़ाईआ। गुरुदुआरे मन्दिर छड्ड इबादत, सियासत राणी बैठे घर प्रनाईआ। आपा चीन कोई ना करे शनाख़त, आपणा पड़दा ना कोए उठाईआ। जिध्धर वेखो कूड़ी लाअनत, कलयुग डौरु डंक रिहा वजाईआ। सतिगुरू सब नूं कर के गए ममानत, काम क्रोध लोभ मोह हँकार होए ना कदे हल्काईआ। सतिगुर भुल्लयां भरे ना कोए ज़मानत, बरीख़ाना नजर कोए ना आईआ। ठग्गां चोरां यारां फड़न नूं हरि बणाई अदालत, पुलीस जगदीश नाल मिलाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत इक दूजे दी सारे करो रफ़ाकत, वफ़ादार बणे सर्ब लोकाईआ। किसे उते कदे ना आवे आफ्त, जो गुरमुख बण के हरि का नाम ध्याईआ। आपणे सज्जणां नूं घर घर जा के करो मुख़ातब, सच स्नेहड़ा दयो सुणाईआ। आपणे इष्ट दे बणो तालब, दृष्टी आपणी पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा सृष्ट सबाई इक्को इक जणाईआ। सच संदेसा दित्ता राष्ट्रपति, वाली हिन्द आप समझाईआ। नाड़ बहत्तर उबले कोई ना रत, जो राष्ट्र भवन डेरा लाईआ। चार वरन ऊँच नीच राउ रंक वेख इक्को अक्ख, अक्ख सके ना कोए बदलाईआ। सब नूं मिलणा हस्स हस्स, क्रोध रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुखां गुरसिखां हरिजनां हरिभगतां जीवां जंतां साधां सन्तां आदि जुगादि जुगा जुगन्तर कूक जणाए साचा मन्त्र, सच समाजक जगत आरथक इक परमारथक पारब्रह्म ब्रह्म इक्को इक जणाईआ। समाजक वादी जे जाण समझ, झगड़ा कोई

४०३ १५

रहिण ना पाईआ। सतिगुर देवे इक रमज़, इशारे नाल समझाईआ। घर घर वेखो हरि जू ख़सम, आत्म सेजा बैठा डेरा लाईआ। उस दे प्यार विच उस दे दीदार विच हो जाओ भस्म, आपणा आप गंवाईआ। जो एथे आए खा के जाओ कसम, इक दूजे नाल ना होए लड़ाईआ। आपणा हिरदा करो नरम, गर्मजोशी ना कोए वखाईआ। काया वेखो वड्डी खुल्ही फ़रम, जिस विच मन मति बुध अनेक पुरज़े दित्ते टिकाईआ। जिस नाल आपणा सौरे जरम, सो गुरमुखो कर्म करो चाईं चाईंआ। दूई द्वैत दा मेटो भरम, ऊँचां नीचां समझो भाई भाईआ। हुण वेला नहीं करन दा शरम, पुरख अकाल सब दा शरम हय्या रिहा उडाईआ। जे कोई समझे साचा धर्म, प्यार सभनां नाल इक्को जिहा रखाईआ। अन्तिम लेखा चुक्के मरन डरन, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। सच दुआरे सो गुरमुख वड़न, जो गुर का शब्द कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, इक्को मार्ग सर्ब दसाईआ। आरथक वादी जे कोई कढ्ढे अरथ, अर्थात आपणा लए जणाईआ। इक दूजे दा कोई ना समझे फ़र्क, फ़िकरा कूड़ा बोले ना कोए लोकाईआ। कूड़ा झगड़ा करे तरक, तुरत आपणा आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत तेरे कोलों इक्को मंगे प्रीती मंगत, दोए जोड़ जोड़ वास्ता पाईआ।

✪ २७ भाद्रों २०२० बिक्रमी गुरनाम सिँघ दे गृह पिण्ड कंग ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर नाम सदा सति, आदि जुगादि रखाइंदा। जन भगतां देवे ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या इक पढ़ाइंदा। आत्म परमात्म जोड़े नत्त, नाता बिधाता इक वखाइंदा। नाड़ बहत्तर ना उबले रत, रती रत ना कोए तपाइंदा। लेखा चुक्के पंज तत्त, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए हल्काइंदा। सति सन्तोख धीरज देवे जत, गुर ज्ञान इक दृढ़ाइंदा। मेट मिटाए मनमति, गुरमति इक समझाइंदा। लख चुरासी विचों लए रख, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। साचा मार्ग देवे दस्स, दहि दिशा पन्ध मुकाइंदा। अमृत देवे आत्म रस, निझर झिरना इक झिराइंदा। जोत निरँजण करे प्रकाश, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। लेखे लाए पवण स्वास, पवण पवणी मेल मिलाइंदा। जन्म कर्म दी पूरी करे आस, निरासा कोई रहिण ना पाइंदा। निरगुण सरगुण देवे साथ, सगला संग निभाइंदा। सच पढ़ाए इक्को गाथ, साचा मन्त्र इक समझाइंदा। धुर दी देवे अगम्मी दात, घर भण्डार आप वरताइंदा। मेटे रैण अन्धेरी रात, साचा चन्द इक चमकाइंदा। नेड़े हो के पुच्छे वात, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। पार कराए आपणे घाट, मझधार ना कोए रुढ़ाइंदा। लहिणा चुक्के तत आठ, नौ दुआरे डेरा ढाइंदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन सतिगुर नाम समझाइंदा। सतिगुर नाम सदा अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। सच जणाए इक प्रीत, प्रीतीवान वेख वखाईआ। आत्म गाए सुहागी गीत, ढोला धुर दा राग अलाईआ। साहिब सतिगुर वसे चीत, घर मन्दिर सोभा पाईआ। काया करे ठांडी सीत, अग्नी तत बुझाईआ। लेख चुकाए हस्त कीट, ऊँच नीच नज़र कोए ना आईआ। जीवदयां जग लए जीत, मोइआं मरन लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणा नाम समझाईआ। गुर का नाम सदा अनडिठ, जग नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। जन भगतां कर कर देवे हित, जुग जुग आपणा मेल मिलाइंदा। साची दिशा पए दिस, घर मन्दिर कुण्डा लाहइंदा। धुर दा लेखा देवे लिख, लिख्या लेख ना कोए मिटाइंदा। धन्न वड्याई साचे सिख, जिस सतिगुर नज़री आइंदा। नेत्र लोचण आपणे पेख, पेख पेख ख़ुशी मनाइंदा। सच सुहाए सुहञ्जणा देस, घर घर विच डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणे नाम रंग रंगाइंदा। गुर का नाम रंग रंगीला, रंग रता आप रंगाईआ। जुग चौकड़ी बणे वसीला, लोकमात होए सहाईआ। जन भगत बणाए इक कबीला, वरन बरन ना कोए समझाईआ। मेल मिलाए छैल छबीला, जोबन मता बेपरवाहीआ। किसे हथ्थ ना आए जगत दलीला, मन मति बुध चले ना कोए चतुराईआ। बिन सतिगुर पूरे बणे ना कोए वसीला, वसल सच ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। गुर का नाउँ सदा सहाई, आदि जुगादि दया कमाइंदा। गुरमुख विरले रहे ध्याई, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। उच्ची कूकण मारन धाहीं, नेत्र नीर सर्ब वखाइंदा। कवण वेला प्रभ मिले माही, पांधी आपणा फेरा पाइंदा। बांहों पकड़ लए उठाई, रुठ्ठड़े आप मनाइंदा। भेव खुल्हाए चाईं चाईं, पड़दा उहला आप चुकाइंदा। घर मन्दिर करे रुशनाई, अज्ञान अन्धेर गवाइंदा। अमृत जाम दए प्याई, रस इक्को इक वखाइंदा। अनहद नाद दए सुणाई, धुन आत्मक राग अल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणा नाम समझाइंदा। सतिगुर नाम सर्ब दा प्यारा, प्रेम इक्को जिहा रखाईआ। गुरमुख विरला वेखे हो के न्यारा, नाता तोड़े जगत लोकाईआ। अन्दरे अन्दर मिले इशारा, बाहरों सैनत ना कोए लगाईआ। बंद कवाड़ी खुल्हे ताला, ताकी खिड़की बंद ना कोए रखाईआ। करे प्रकाश डूंघी गारा, काया भँवरी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर नाम इक दृढ़ाईआ। गुर का नाम सच्चा उपदेश, उपदेशक हरि अख्वाइंदा। जुग जुग देवणहार संदेस, धुर दी बाणी बाण लगाइंदा। नित नित वेखणहारा लए वेख, निरगुण सरगुण रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक बुझाइंदा। साचा नाम

शब्द ज्ञान, अज्ञानीआं दए समझाईआ। साचा बख्शे इक ध्यान, प्रभू मिले सच सरनाईआ। साचा देवे अगम्मी दान, ईश्वर आपणा नाम वरताईआ। धुर संदेसा दए पैग़ाम, कलमा इक्को इक सुणाईआ। घट अन्दर मिले आण, स्वामी आपणा फेरा पाईआ। जन भगतां देवे माण, अभिमान कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम सच इक समझाईआ। गुर का नाम सदा सच, सतिगुर साचे हट्ट विकाइंदा। वेखणहारा काया माटी कच्च, पंज तत फोलन आप फोलाइंदा। दो जहानां वेखे नस्स नस्स, बण पांधी पन्ध मुकाइंदा। सन्त सुहेले लए लभ्भ, आप आपणा पड़दा लाहइंदा। करे प्रकाश निरगुण झब्ब, झलक आपणी आप जणाइंदा। अमृत झिरना झिराए कँवल नभ, बूँद स्वांती आप टपकाइंदा। जगत दुआरा पार करे हद्द, घर साचा इक वखाइंदा। शब्द अगम्मी वज्जे नद, ढोलक छैणा नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम वडियाइंदा। सतिगुर नाम सदा सुहेला, जुग जुग पैज रखाईआ। आवे जावे इक इकेला, आपणा फेरा पाईआ। जन भगतां करे भगती मेला, भगवन आपणे घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक प्रगटाईआ। सतिगुर नाम सदा सदा प्रगट, परम पुरख आप प्रगटाईआ। आप टिकाए लख चुरासी घट घट, दर दर आप बहाईआ। आत्म परमात्म मार्ग दस्स दस्स, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा राह जणाईआ। सुरती शब्दी मेल मिलावा हस्स हस्स, जगत विछोड़ा रहे ना राईआ। प्रेम प्याला जाम प्याए रस रस, अमृत रस इक खवाईआ। पन्ध मुकाए पांधी नस्स नस्स, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। दुरमति मैल कट कट, स्वच्छ सरूपी रूप समझाईआ। साचा लाहा खट्ट खट्ट, गुरमुख आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर नाम इक्को इक रखाईआ। गुर का नाम डूंघा सागर, बिन भगतां हथ्थ किसे ना आईआ। गुरमुख विरला बणे सौदागर, काया मन्दिर अन्दर लभ्भण आईआ। सतिगुर पड़दा खोल्ह वखाए गागर, काया गगरीआ फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम इक्को इक रखाईआ। गुर का नाम सदा सदा जग इक, एकँकार आप दृढ़ाईआ। सिफ्ती नाम कोटन कोटि लिख, जग जीवण जुगत रहे जणाईआ। नित नवित्त मंगदे रहिण भिख, बण भिखारी अलख जगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणी आपणी झोली पाउँदे रहे हिस्स, हिस्सा आपणे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक्को घर जणाईआ। साचा नाम सतिगुर सरन, प्रभ सरन मिले वड्याईआ। जिस मिलयां खुल्हे नेत्र हरन फरन, निज नेत्र होए रुशनाईआ। आवण जावण गेड़ा चुक्के मरन डरन, लख चुरासी रहिण ना पाईआ। सो गुरमुख साची तरनी तरन, जिन्हां गुर गुर नाम करे पढ़ाईआ। अद्धविचकार कदे ना अड़न, राह विच ना कोए अटकाईआ।

४०६ १५

कूड़ी अग्नी कदे ना सड़न, माया ममता ना कोए जलाईआ । जम का दूत ना आए फड़न, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। सतिगुर पौड़े साचे चढ़न, नाम डण्डा इक्को हथ्थ वखाईआ। सचखण्ड दुआरे जा के सतिगुर पूरे दा ढोला इक्को पढ़न, तूं मेरा मैं तेरा तेरा मेरा सोहँ रूप इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, सतिगुर शब्द गुर गुर नाम देवे सदा सदा सद वधाईआ।

✪ २७ भाद्रों २०२० बिक्रमी कुंदन सिंघ दे गृह माल चक ज़िला अमृतसर ✪

सो पुरख निरँजण सच नरेशा, धुर फ़रमान इक जणाईआ। हरि पुरख निरँजण दए संदेसा, धुर दी धार समझाईआ। एकँकार धारे भेखा, बेपरवाह बेपरवाहीआ। आदि निरँजण बणे नेता, राजन भूप वड वड्याईआ। अबिनाशी करता जाणे लेखा, इक इकल्ला सच्चा माहीआ । श्री भगवान रखे चेता, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। पारब्रह्म करे साचा हेता, हितकारी इक्को नज़री आईआ। सचखण्ड निवासी प्रगट होए आप अभेता, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। खेले खेल साहिब सुल्तान हुक्मरान पकड़ उठाए साचा बेटा, शब्दी सुत इक जगाईआ। दो जहानां बण खेवट खेटा, मार्ग इक्को इक वखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा छोटा जिहा हिस्सा, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। त्रै पंज वेख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। साचे सुत उठ दुलारे सो पुरख निरँजण आप जगाईआ । दो जहान तेरे वणजारे, पुरी लोअ ध्यान लगाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड तेरे पनहारे, दर सेवक सेव कमाईआ। लोक परलोक तेरे सहारे, तेरा अन्त कोए ना पाईआ। गुर अवतार तेरे प्यारे, नित बैठे ध्यान लगाईआ। तेरा सच नाम जैकारे, प्रीतम रहे सुणाईआ। भगत भगती तेरे वणजारे, साचा हट्ट इक खुल्हाईआ। सन्तां दे साची धारे, धार धार विचों प्रगटाईआ। गुरमुखां खोल्ह बंद कवाड़े, बंद हाटी कुण्डा लाहीआ । गुरसिखां दे सच इशारे, सच इशारा इक वखाईआ। नव नौ नईया वेख किनारे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। शब्द सुत उठ बलवान, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। निरगुण सरगुण वेख साचे काहन, लख चुरासी गोपी तेरे अंग लगाइंदा। नव नौ चार होया वैरान, साची धार ना कोए समझाइंदा। चार युग दा भुल्लया सर्ब ज्ञान, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान समझ कोए ना पाइंदा। दहि दिशा चार कुण्ट कूड़ी क्रिया होई प्रधान, कलयुग चारों कुण्ट डौरु डंक वजाइंदा । दरोही फिरी जगत शैतान, शरअ शरीअत नाल टकराइंदा। सतिगुर शब्द साचा ढोला कोई ना गाण, रसना जिह्वा काग वांग जीव जंत सर्ब कुरलाइंदा। आत्म अन्तर

किसे ना मिल्या ब्रह्म ज्ञान, पारब्रह्म नज़र किसे ना आइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी झूठी दिसे दुकान, सत्त दीप वणज वणजारा साचा हट्ट ना कोई खुल्हाइंदा। चौदां लोक रोवण मारन नाअरा, उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। चौदां तबक ना कोए सहारा, साचा पीर नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताइंदा। उठ सुत शब्द बलवान, तेरे हथ्थ वड्याईआ । सति उठा इक निशान, दो जहान झुलाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त दे ज्ञान, अक्खर इक्को इक पढ़ाईआ। दीन मज़्ब ज़ात पात ऊँच नीच झगड़ा चुक्के कूड़ी क्रिया ना रहे निशान, सच सुच इक समझाईआ। अमृत आत्म प्रेम प्याला बख्श दान, आबे हयात मुख चुआईआ । एका राग अनहद नादी सुणा कान, धुर दी धार आप समझाईआ। निर्मल जोत कर प्रकाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा आप जणाईआ। उठ सुत बांके नौजवान, श्री भगवान सच जणाइंदा। तेरे हथ्थ तेरा खड़ग खण्डा किरपान, तीर चिल्ला इक्को नज़री आइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी मन्नण आण, विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाइंदा। करोड़ तेतीसा नैण शरमाण, सुरप्त अक्ख ना कोए उठाइंदा। चार युग तेरे ढोले गाण, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरी ओट तकाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरी दस्स के गए पहचान, लेखा लिख लिख सर्ब समझाइंदा। मन्दिर महल अटल इक मकान, उच्च मनारा सोभा पाइंदा। दीवा जोती जगे इक नुरान, नूरो नूर नूर रुशनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लेखा तेरी झोली पाइंदा। उठ सुत सच दुलारे, सो साहिब आप जणाईआ। सृष्ट सबाई आपा आप हारे, आपणा पड़दा सके ना कोए उठाईआ। साचे भगत फिरन कुआरे, तुध बिन करे ना कोए कुड़माईआ। सुरत सवाणी काया डूंग्घी कन्दर बैठी वाजां मारे, आ मिल मेरे सच्चे माहीआ। सन्त सज्जण राह तक्कण नेत्र नैण उग्घाड़े, निज नेत्र कर रुशनाईआ। गुरमुख वेखण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा भेव आप जणाईआ। शब्द सुत कहे मैं जावांगा। थिर घर आपणा कुण्डा लाहवांगा। सुन अगम्म पार करावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव आप जगावांगा। करोड़ तेतीसा अक्ख खुल्हावांगा। लख चुरासी हिरदे वस, त्रैगुण नाता तोड़ तुड़ावांगा। साचा मार्ग इक्को दस्स, रहबर दो जहान अख्वावांगा। पन्ध मुकावां नस्स नस्स, बण पांधी आपणी सेव कमावांगा। कर प्रकाश जोत घट घट, घर घर नाद सुणावागा। लेखे लावां रत्ती रत्त, रुत्त रुतड़ी नाल महकावांगा। जो भगत भगवान तेरा राह रहे तक्क, ओन्हां आपणे नाल मिलावांगा। जिन्हां प्या पुरख अकाल तेरा शक़, ओन्हां राए धर्म हथ्थ फड़ावांगा। निरगुण धार हो प्रगट, सरगुण आपणी कार कमावांगा। लेखा तोड़ां कूड़ी मति, गुरमति इक समझावांगा। बीज बीजां अगम्मी वत, पत डाल्ही फुल्ल आप महकावांगा । जो सत्थर बैठे

घत, तिन्हां साची सेज सुहावांगा। जो रख के बैठे आस, तिन्हां आसा पूर करावांगा। जो तक्कण धुर दी रास, तिन्हां गोपी काहन नाच नचावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा हुक्म इक बजावांगा। तेरा हुक्म इक सुणावांगा । लोकमात फेरा पावांगा। लख चुरासी जीव जंत उठावांगा। गुरमुख साचे सन्त सुहेले, फड़ बांहों बाहर कढ्ढावांगा। सुरती शब्दी कर कर मेले, अगला पिछला विछोड़ा पन्ध मुकावांगा। इक्को घर वसण गुरु गुर चेले, गुर गोबिन्द गोद बहावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, अबिनाशी अचुत तेरी साची सेव कमावांगा। प्रभ तेरी साची सेव कमावांगा। तेरे तेरे नाल मिलावांगा। झूठे झेड़े सर्ब मुकावांगा। कूड़े डेरे सारे ढाहवांगा। करां हक़ नबेड़े, हकीकत सब नूं इक वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा हुक्म सीस टिकावांगा। तेरा हुक्म इक जणावांगा। भुल्लयां मार्ग लावांगा। सच संदेस अलावांगा । नर नरेश जणावांगा। दर दरवेश अख्वावांगा। विष्न ब्रह्म महेष, शिव शंकर तेरी ओट तकावांगा। जा के वसां तेरे देस, साचा मन्दिर इक प्रगटावांगा। ब्रह्मण्ड खण्ड करां खेड, ख़ालक ख़लक तेरे नाल मिलावांगा। चार युग गुर अवतार पीर पैगम्बर जो वंडां आए वंड, अन्तिम इक्को झोली पावांगा। चार वरन अठारां बरन नौ खण्ड सुणावां साचा छन्द, साचा ढोला राग अलावांगा। कूड़ी क्रिया भरम भुलेखा ढाहवां कंध, पड़दा उहला सर्ब चुकावांगा। ग़रीब निमाणे लोकमात फिरन जो नंग, तिन्हां ओढण इक्को सीस टिकावांगा। जन भगतां जुग जन्म दी टुट्टी गंढ, गोपाल स्वामी तेरी गोद बहावांगा। काया चोली चाढ़ मजीठी रंग, रंग इक्को इक वखावांगा। तेरे प्रेम दा घर घर वजावां मृदंग, मृदंगा इक्को हथ्थ उठावांगा। नौ दुआरे जावां लँघ, सुखमन टेडी बंक पार करावांगा। ईड़ा पिंगल जाण संग, नेत्र नैण सर्ब शरमावांगा। निज अमृत आत्म दयां अनन्द, रस इक्को इक चुआवांगा। साची जोत प्रकाश कर चाढ़ अगम्मी चन्द, जोत निरँजण डगमगावांगा। जगत विकारा कर खण्ड खण्ड, नाम खण्डा इक चमकावांगा। लेखा जाण जीउ पिण्ड, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी धार प्रगटावांगा। वहण वहे सागर सिन्ध, सरोवर इक्को इक नुहावांगा। हरिभगत बणावां तेरी बिंद, सुत अनादी रूप वटावांगा। किंगरे किंगरे वज्जे इक किंग, नाम ढोला साचा गावांगा। तूं ठाकर स्वामी साहिब सच्चा बख्शंद, बख्शणहार तेरी ओट तकावांगा। गहर गम्भीर गुणी गहिंद, तेरा नाम सागर इक प्रगटावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दो जहानां तेरी सेव कमावांगा। प्रभ तेरी सेवा करांगा। दो जहान कदे ना डरांगा। ना जीवांगा ना मरांगा। लख चुरासी अन्दर वड़ांगा। साचे पौड़े आपे चढ़ांगा। सच महल्ले साचे खड़ांगा। इक्को ढोला तेरा नाम पढ़ांगा। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी करनी आपणे सीस धरांगा। तेरी करनी सच कमावांगा। पुरख अबिनाशी तेरी धार बंधावांगा। वखावां साचा मण्डल रासी, गोपी काहन इक नचावांगा। लख चुरासी कर के दासी, सेवक सेवा इक समझावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, लोकमात मैं जावां बण के सांसी, गुरमुख भगत तेरे साचे जजमान आप बणावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सुत दुलारा शब्द पल्लू रिहा फड़, दोए जोड़ वास्ता पावांगा। शाह पातशाह श्री भगवान, सो साहिब दया कमाईआ। उठ सुत मेरे वड बलवान, तेरे हथ्थ दयां वड्याईआ। कलयुग अन्तिम वेख कूड़ी दुकान, चारों कुण्ट अन्धेरा रिहा छाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे होए हैरान, गुर का शब्द ना कोए कमाईआ। साबत रिहा ना किसे ईमान, धीरज जत ना कोए जणाईआ। नेत्र अक्ख ना कोए खुलाण, निज नेत्र मिले ना किसे वड्याईआ। माया ममता हउमे हंगता गढ़ बणया जीव जहान, निवण-सो-अक्खर ना कोए पढ़ाईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ तीर्थ तट धीआं भैणां सर्ब तकाण, सतिगुर भउ सिर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सुत शब्द जाणा चाईं चाईंआ। प्रभू मैं चाईं चाईं जावांगा। चार युग दा लेखा वेख वखावांगा। सब दे पड़दे चुक्क, पड़दा उहला आप हटावांगा। जेहड़े तैथों होए बेमुख, तिन्हां कालख टिक्का इक लगावांगा। मात गर्भ जुग जुग उलटा रुख, लख चुरासी गेड़ भवावांगा। नरक दोज़ख़ मिले दुःख, हवन कुण्ड अग्न तपावांगा। जननी लेखे ना लग्गे कुक्ख, पूत सपूत ना कोए समझावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा लहिणा सर्ब चुकावांगा। उठ सुत मेरे वड बलकार, प्रभ सच सच जणाईआ। लोकमात मार इक ललकार, साची भबक नाम जणाईआ। सोए जीव दे उठाल, आलस निंद्रा दे मिटाईआ। लेखा जाण शाह कंगाल, राउ रंक वेख वखाईआ। निरगुण हो के बण दलाल, सरगुण वणज कराईआ। हकीकत वेख हक़ हलाल, लाशरीक फेरा पाईआ। जलवा दस्स नूर जलाल, जोबन नूर जोत रुशनाईआ। लेखा जाण काल महाकाल, धर्मसाल इक सुहाईआ। पुरख अबिनाशी तेरे नाल, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कोलों लै जवाब, क्यों कलयुग जीव भुल्ले पांधी राहीआ। मुख पड़दा खोल्ह नक़ाब, नक़ाबपोश आपणा मुख वखाईआ। सब दा सजदा वेख आदाब, कवण सीस जगदीश रिहा झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे सुत इक दृढ़ाईआ। सुत कहे मैं वेख वखावांगा। प्रभ तेरी सेव कमावांगा। कलयुग अन्तिम वेख, भेख सर्ब मिटावांगा। सच सुहावां सुहञ्जणा देस, भूमका इक्को इक वडयावांगा। जिस दा लेखा

रहे हमेश, सो कातब इक जणावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, कलयुग इक्को हुक्म वरतावांगा। कलयुग सच हुक्म वरताएगा। प्रभ तेरा सुत सेव कमाएगा। चार कुण्ट वेख वखाएगा। दहि दिशा फेरी पाएगा। बचया कोई नज़र ना आएगा। गुरमुख सच्चयां आप जगाएगा। कलयुग जीवां भांडयां कच्चयां, अन्तिम भन्न वखाएगा। जिन्हां सतिगुर मार्ग दस्सया, तिन्हां आपणे नाल मिलाएगा। जिन्हां हिरदे हरि जू वसया, तिन्हां हरि मन्दिर आप बहाएगा। सेवक बण के फिरे नट्ठया, बण सेवक आपणी सेव कमाएगा। कलयुग मेटे कूड़े रट्टया, रट्टा इक्को वार चुकाएगा। दीन मज़्ब दे मेटे फट्टया, पट्टी इक्को नाम बंधाएगा। लेख चुकाए धड़ी वटयां, तोला इक्को इक अख्वाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा मार्ग इक जणाएगा। तेरा मार्ग इक जणावांगा। चार वरन समझावांगा। ऊँच नीच उठावांगा। राउ रंक अक्ख खुल्हावांगा। निरगुण रूप प्रतख इक दृढ़ावांगा। निज नेत्र नैण अक्ख खुल्हावांगा। कूड़ी क्रिया नालों कर के वक्ख, सच वस्त आप वरतावांगा। कलयुग खेड़ा होवे भट्ठ, सतिजुग साचा राह चलावांगा। सच दवारा खोल्ह हट्ट, तेरा नाम इक विकावांगा। मेल मिला के कमलापति, कोझी कमली गले लगावांगा। तेरा नाउँ पुरख समरथ, लोकमात जणावांगा। सौदा विके हथ्थो हथ्थ, उधार लेख ना कोए रखावांगा। सन्त सुहेले साचे

सद, गुरमुख आपणे अंग लगावांगा। अन्तर अन्तर वज्जे नद, अनहद नादी राग सुणावांगा। नौ दुआरे चुक्के हद्द, दसवां

दर इक खुल्हावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा मेरा गावां छन्द, दूजा राग ना कोए अलावांगा। तेरा मेरा छन्द गावांगा। सोहँ ढोला इक सुणावांगा। ओअँ रूप आप समझावांगा। नर निरँकार खेल खलावांगा। सच सरकार इक दृढ़ावांगा। धुर फ़रमान आप सुणावांगा। जोती जाता हो उज्यार, नूरो नूर डगमगावांगा। कल कल्की लै अवतार, कला आपणी आप रखावांगा। कूड़ी क्रिया उतरे पार, शहु दरया आप रुढ़ावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा नगर इक वसावांगा। तेरा नगर खेड़ा इक वसाएगा। शब्द गुरू डेरा लाएगा। सम्बल साचा सोभा पाएगा। पीर पैगम्बर ध्यान लगाएगा। गुर अवतार जस सुणाएगा। विष्न ब्रह्मा शिव हस्स हस्स, दर्शन पाएगा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चारे आवण नट्ठ नट्ठ, दूर बैठ सीस सर्ब झुकाएगा। मूसा ईसा मुहम्मद दोए जोड़ खलोवण हथ्थ, पल्लू गल विच सर्ब वखाएगा। अल्ला राणी नक्कों लाह सुहाग नथ्थ, खुली मींढी वास्ता इक जणाएगा। नेत्र नीर रोवे अक्ख, हन्झूआं हार आप वखाएगा। दरोही खुदाए मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला सदी चौधवीं होई बस, अग्गे लेखा समझ कोए ना पाएगा। उच्चा मन्दिर साचा हुजरा जाणा ढट्ठ, महिराब डेरा कोए ना

लाएगा। शरअ शरीअत जाणा नट्ठ, कलमा नबी ना कोए पढ़ाएगा। कायनात तुट्टणा हठ, सिदक सबूरी ना कोए हंढ्ढाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा हुक्म दो जहान सर्ब वरताएगा। तेरा हुक्म इक वरताएगा। साचा दीन इक बणाएगा। मज़्हब इक्को नज़री आएगा। वरन गोत ना कोए रखाएगा। निर्मल जोत सर्ब जगाएगा। नाम श्लोक इक सुणाएगा। सतिगुर पूरा नज़री आएगा। पुरख अकाल वेख वखाएगा। तेई अवतार गंढु पवाएगा। भगत अठारां जोड़ जुड़ाएगा। ईसा मूसा मुहम्मद नाल मिलाएगा। नानक गोबिन्द हुक्म वरताएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, शब्द गुर सूरा इक्को खेल रचाएगा। शब्द गुर सूरा हाज़र हज़ूर, हरि अग्गे सीस झुकाईआ। तेरा हुक्म मैनूं मंज़ूर, हाकम तेरी ओट तकाईआ। लोकमात लख चुरासी वेखां सर्ब कसूर, घर घर फेरा पाईआ। जेहड़े कहिन्दे साहिब सतिगुर वसे दूर, तिन्हां घर घर विच नेरन नेर दयां वखाईआ। कूड़ी क्रिया करां दूर, सच सुच इक प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। सो साहिब सिर रखे हथ्थ, पुसत थापी इक लगाईआ। तेरा मेल पुरख समरथ, बेपरवाह तेरा सहाईआ। कलयुग अन्तिम वेख नट्ठ, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। चार कुण्ट अन्धेरी छत्त, सृष्ट सबाई राह नज़र कोए ना आईआ। वरन बरन उबले रत, दीन मज़्हब करे लड़ाईआ। साचा खेड़ा होया भट्ठ, गुर का शब्द ना कोए गाईआ। चारों कुण्ट दिसे मनमति, गुरमति गए भुलाईआ। चार वरनां जा के सुत्तयां मार्ग दस्स, नानक गोबिन्द सारे गए भुलाईआ। तीर निशाना मार कस, अणयाला इक चलाईआ। हँकारी बुरज जावे ढट्ठ, कूड़ अडम्बर नज़र कोए ना आईआ। सर्ब जीआं जाण मितगत, गतमित तेरे हथ्थ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची देवणहार वड्याईआ। शब्द कहे मेरे पुरख अकाल, वाहवा तेरी सच सरनाईआ। ठाकर हो के होइउँ दयाल, दयालता इक्को इक जणाईआ। कलयुग जा के वेखां हाल, दर दर फेरा पाईआ। त्रैगुण माया तोड़ां जंजाल, जागरत जोत कर रुशनाईआ। जा के पुच्छां मुरीदां हाल, जो मुरशद ध्यान लगाईआ। साचे भगत लवां उठाल, जो बैठे राह तकाईआ। साचे सन्तां चलां नाल, अन्दर बाहर पन्ध मुकाईआ। गुरमुखां हल करां स्वाल, दूजी करे ना कोए पढ़ाईआ। गुरमुख वेखां सच्चे लाल, लालन आपणे रंग रंगाईआ। लख चुरासी विचों भाल, मेल मिलावां सहिज सुभाईआ। धर्म दुआर वखावां सच्ची धर्मसाल, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। दीवा बाती इक्को बाल, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। जिस घर वसण शाह कंगाल, ऊँच नीच बैठण डेरा लाईआ। सदा स्वामी करे सदा प्रितपाल, बण प्रितपालक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे

तेरे नाल मिलाईआ। जा के दस्स नाम निधान, मन्त्र इक दृढ़ाईआ। सुत्यां दे इक ज्ञान, बिन रसना जिह्वा कर पढ़ाईआ। उठो वेखो श्री भगवान, शाह पातशाह इक्को नज़री आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दे बाल अञ्याण, जुग जुग सेव कमाईआ। देंदे आए धुर फ़रमान, सच संदेसा इक सुणाईआ। अन्तिम जोती जोत मिले आण, पंज तत चोला जगत तजाईआ। समरथ पुरख करे खेल महान, ख़ालक ख़लक आप दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुरू इक जणाईआ। शब्द गुरू कहे मैं तेरा सूरा, प्रभ तेरी ओट तकाइंदा। लख चुरासी करां चूरा, बचया कोए रहिण ना पाइंदा। तेरा हुक्म करां पूरा, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। साचे भगतां बख़्शां चरण धूढ़ा, मस्तक टिक्का इक लगाइंदा। कलयुग वेखां मूर्ख मुग्ध मूढ़ा, जो प्रभ तैथों मुख भवाइंदा। सब दा तोड़ां अन्त ग़रूरा, ख़ाकी ख़ाक सर्ब रलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा लेखा मोहे भाइंदा। तेरा लेखा जाए चुक्क, कल अन्त रहिण ना पाईआ। रहिण ना दे कोई बेमुख, मनमुखता दए मिटाईआ। सच प्रगटावे सच्चे गुरमुख, मुख गुरु गुर सिफ्त सालाहीआ। जन्म जन्म दा लाहवे दुःख, संताप कोए रहिण ना पाईआ। दरस प्यास्सयां मेटे भुक्ख, निज नेत्र मेल मिलाईआ। जननी हो के रखे कुक्ख, बणे धन जणेंदी माईआ। श्री भगवान मैं तेरा पुत्त, शब्द दुलारा रिहा जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका घर देणा वखाईआ। सुण सुत मेरे साचे लाड़े, तेरा इक श्रृंगार कराईआ। भगत सन्त दर कुआरे, आपणे नाल मिलाईआ। फड़ के बांहों घोड़ी चाढ़े, साचा घोड़ा इक जणाईआ। जिस दी डोरी नज़र ना आवे विच संसारे, वाग हथ्थ ना कोए रखाईआ। जिस नूं लभ्भदे गए सदा जुग चारे, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। सो खेल करे करतारे, करता पुरख बेपरवाहीआ। डंका मार इक नगारे, चोट नाम शब्द लगाईआ। गोबिन्द सूरा इक ललकारे, दो जहानां रिहा जणाईआ। कलयुग अन्तिम कल कल्की लै अवतारे, सम्बल आपणा आसण लाईआ। वसणहारा धाम न्यारे, हरि मन्दिर इक्को इक वड्याईआ। साचा मार्ग इक सिखाले, चार वरन दए जणाईआ। लेखा चुक्के शाह कंगाले, ऊँच नीच कोई रहिण ना पाईआ। आत्म परमात्म बोल जैकारे, जै जैकार दे सुणाईआ। तूं मेरा मैं तेरे दुआरे, दूजा नज़र कोए ना आईआ। पिता पूत पैज संवारे, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे सुत तेरी वज्जे वधाईआ। शब्द वधाई वज्जे जग, गुर अवतार ढोला गाईआ। पीर पैगम्बर करन हज्ज, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। भगतां दिसे उपर शाह रग, नौ दुआरे पन्ध मुकाईआ। सन्त सुहेले वेखण आत्म सेजा भज्ज, सेज सुहञ्जणी बैठा डेरा लाईआ। गुरमुख निज नेत्र दरस करन रज्ज रज्ज, जन्म जन्म दी तृष्ना भुक्ख

मिटाईआ। गुरसिख चरणी डिगण ढह्व, चरण कँवल मिले सरनाईआ। लहिणा चुक्के तत अह्व, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध सतिगुर झोली पाईआ। आत्म परमात्म अग्गे चले ना कोई वस, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। सुरती शब्दी मेला हस्स हस्स, सोहँ हँसा राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुरू इक वखाईआ। शब्द गुरू कहे मेरा सतिगुर वड्डा, पुरख अकाल इक अख्वाइंदा। पुरख अकाल कहे मेरा बाला नढ्ढा, शब्दी इक्को नज़री आइंदा। शब्द कहे मेरा साहिब स्वामी मैनूं देवे सद्दा, जुग जुग हुक्म वरताइंदा। पुरख अकाल कहे मेरा बाला निक्का फिरे भज्जा, दो जहानां सेव कमाइंदा। शब्द कहे मेरा स्वामी सूरा सरबग्गा, शाह पातशाह इक्को नज़री आइंदा। पुरख अकाल कहे मेरा पूत सपूता लध्धा, चाल बांकी इक चलाइंदा। शब्द कहे मेरा बाप पुरख समरथा, पिता इक्को इक अख्वाइंदा। श्री भगवान कहे मेरा सुत लख चुरासी अन्दर बहि बहि सजा, घर घर डेरा लाइंदा। सुत शब्द कहे मेरा श्री भगवान चलाए अग्गा, साचा राह इक समझाइंदा। श्री भगवान कहे मेरा सुत मेरा नाम नगारा हो के वज्जा, वाहद सब नूं आप जगाइंदा। दोहां मिल के दो जहान खेल रचा, रच रचना आपणी धार बंधाइंदा। पुरख अकाल कहे मेरा पुत सच्चा, जुग जुग साचा हुक्म सुणाइंदा। सुत कहे मेरा पिता सब तों अच्छा, जो साचे मार्ग मोहे लाइंदा। दोहां विचोला बण के आपणा खेल खेले चंगा, जन भगतां चंगी तऱ्हा समझाइंदा। आओ वेखो घर पलँघ रंगीला डाहया मंजा, पावा चूल नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, शब्द गुर देवे वर, दो जहान आदि जुगादि श्री भगवान, सच फ़रमान नर नरेश निरगुण निरवैर पुरख अकाल दीन दयाल बैठ सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, लोक परलोक लख चुरासी जीव जंत साध सन्त भगत भगवान आप समझाइंदा।

४१४ १५

✪ २८ भाद्रों २०२० बिक्रमी महिन्दर सिँघ दे गृह पिण्ड बाठ ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर सच्चा सब तों नींवां, नीकन नीक अख्वाइंदा। वसणहारा धाम साढे तिन्न हथ्थ सीआं, महल अटल इक्को रुशनाइंदा। पावे सार लख चुरासी जीवां, जीवण जुगत सब दी वेख वखाइंदा। प्रेम प्रीती अन्दर होवे खीवा, मस्त खुमारी इक जणाइंदा। सच प्रकाश वेखे जगदा दीवा, बिन तेल बाती डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे भेव चुकाइंदा। सतिगुर पूरा नीकन नीका, निवण-सो-अक्खर करे पढ़ाईआ। जाणे भेव सर्ब जन जीअ का, घट घट रिहा समाईआ। गुरमुख रखे सदा उडीका, निज नेत्र ध्यान लगाईआ। मिले दरस प्राण पती का, घर मेले

सच्चा माहीआ। जन्म जन्म दी बदले रीता, साचा मार्ग इक वखाईआ। जिस दी सिफ्त करे शास्त्र सिमरत वेद अठारां ध्याए गीता, सो गोबिन्द होए सहाईआ। अग्नी तत करे ठांडा सीता, अमृत मेघ बरसाईआ। नाम ख़ज़ाना पावे खीसा, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। भगतां विचों भगती देवे हिस्सा, भावना भगती नाल मिलाईआ। जुग चौकड़ी जगत रहि जाए किस्सा, कहाणी गावे जगत लोकाईआ। जिन्हां सतिगुर पूरा डिठ्ठा, तिन्हां वज्जे नाम वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेख इक्को वार लिखा, दूजी वार मेटण कोए ना आईआ। सतिगुर पूरा सब ते छोटा, नज़र किसे ना आईआ। वेखणहारा लोक परलोका, भज्जा फिरे वाहो दाहीआ। सुणावणहारा नाम श्लोका, शब्द जैकारा इक लगाईआ। दो जहानां देवे होका, ब्रह्मण्ड खण्ड समझाईआ। माणस जन्म लख चुरासी विचों सब नूं देवे इक वार मौका, मुकम्मल आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे भेव चुकाईआ। सतिगुर पूरा नंन्हां बाल, घर घर खेल खलाईआ। काया मन्दिर अन्दर वड़ सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरे डेरा लाईआ। लेखा तोड़ शाह कंगाल, ऊँच नीच मेल मिलाए चाईं चाईंआ। जा के सुणे मुर्शद हाल, आप आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे वेख वखाईआ। सतिगुर पूरा बाल बाला, बालक लख चुरासी वेख वखाइंदा। निरगुण हो के बण दलाला, सरगुण आपणा वणज कराइंदा। मार्ग दस्से इक सुखाला, साचे राहे पाइंदा। अन्तर अन्तर आत्म परमात्म वखाए साची माला, अजपा जाप आप जपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे हरि हरि आपणे रंग रंगाइंदा। सतिगुर पूरा सदा अनडिठ, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। गुरमुख विरले करे हित, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। निरवैर हो के वसे चित, चेतन सुरती दए वखाईआ। करवट लै बदले पिठ, सनमुख इक्को नज़री आईआ। बिन नेत्र बिन नैण बिन अक्खां पए दिस, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख गुर गुर बूझ बुझाईआ। सतिगुर पूरा सदा वसे ओहले, काया माटी नज़र किसे ना आइंदा। आसण लाए काया चोले, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा । बिन भगतां किसे नाल ना बोले, सुन्न समाधी विच समाइंदा। लख चुरासी वेखे लोकमात दे गोले, साचा घर नज़र किसे ना आइंदा। निरपक्ख हो के तोल तोले, कंडा आपणा नाम उठाइंदा। जो गुरमुख गुरसिख धर ध्यान होए भाले भोले, तिन्हां भाउ आप मिलाइंदा। लख चुरासी विच कदे ना रोले, जन्म मरन जम का फास कटाइंदा। अन्तिम चाढ़े आपणे डोले, बण कहार कंध उठाइंदा। सचखण्ड दा कुण्डा खोल्हे, दर दरवाज़ा इक वखाइंदा। अन्त भगवन्त साचे सन्त बण

कन्त लै जाए कोले, गुरमुख नारी कर प्यारी सद आपणे संग रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नीकन नीका सच जणाए आपणा तरीका, तड़ा तड़ा नाल हरिजन आप मिलाइंदा।

✪ २८ भाद्रों २०२० बिक्रमी मस्सा सिँघ दे गृह नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ✪

किरपा अन्दर आदि जुगादि, जुग चौकड़ी रचन रचाईआ। किरपा अन्दर कोट ब्रह्माद, खेले खेल बेपरवाहीआ। किरपा अन्दर सचखण्ड दुआरे रहे विस्माद, किरपा अन्दर थिर घर सुत दुलारे शब्द दए वड्याईआ। किरपा अन्दर विष्न ब्रह्मा शिव देवे दाद, वस्त अमोलक आप वरताईआ। किरपा अन्दर नाउँ निरँकार वजाए नाद, नर निरँकार आप सुणाईआ। किरपा अन्दर निर्मल जोत कर प्रकाश, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। किरपा अन्दर त्रैगुण माया खेल तमाश, पंज तत नाता दए जुड़ाईआ। किरपा अन्दर लख चुरासी वेखे खेल तमाश, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आपणा बन्धन पाईआ। किरपा अन्दर दो जहान मण्डल मण्डप पावे रास, गोपी काहन निरगुण निरगुण आप नचाईआ। किरपा अन्दर रवि ससि सूरज चन्न ब्रह्मण्ड खण्ड पूरी करे आस, आसा आपणी इक समझाईआ। किरपा अन्दर घट घट अन्तर पवण पवणी दे स्वास, साह साह आपणी धार चलाईआ। किरपा अन्दर बोध अगाध पढ़ाए गाथ, नाम नामा इक जणाईआ। किरपा अन्दर खेल खलाए दिवस रात, घड़ी पल वंड वंडाईआ। किरपा अन्दर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को किरपा आपणे हथ्थ रखाईआ। किरपा अन्दर गुण निधान, गुणवन्ता खेल खलाइंदा। किरपा अन्दर नौजवान, बलधारी बल प्रगटाइंदा। किरपा अन्दर शाहो भूप बण राजान, तख्त निवासी साचा तख्त सुहाइंदा। किरपा अन्दर धर्म उठाए इक निशान, सच निशाना नाम प्रगटाइंदा। किरपा अन्दर सचखण्ड दुआर सुहाए सच मकान, छप्पर छन्न ना कोए छुहाइंदा। किरपा अन्दर धुर दा बणे हुक्मरान, धुरदरगाही हुक्म वरताइंदा। किरपा अन्दर परवरदिगार होए प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाइंदा। किरपा अन्दर धुर संदेसा देवे मेहरवान, मेहर नज़र आप उठाइंदा। किरपा अन्दर विष्नूं देवे दान, विश्व भण्डार आप वरताइंदा। किरपा अन्दर ब्रह्मे देवे ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या आप समझाइंदा। किरपा अन्दर शंकर करे पहचान, संसा रोग सर्ब मिटाइंदा। किरपा अन्दर करे खेल श्री भगवान, भगवन आपणी धार चलाइंदा। किरपा अन्दर पारब्रह्म लेखा जाणे जीव जहान, जागरत जोत आप जगाइंदा। किरपा अन्दर लेखा जाणे पवण पाणी मसाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। किरपा अन्दर खाणी चार, हरि सतिगुर वंड वंडाईआ। किरपा अन्दर बाणी चार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी बोल सुणाईआ। किरपा अन्दर

खेल करे जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाईआ। किरपा अन्दर ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश महल्ल लए उसार, मण्डल मण्डप सोभा पाईआ। किरपा अन्दर धरत धवल दए आधार, जल बिम्ब आपणी धार जणाईआ। किरपा अन्दर समुंद सागर वेखे गार, जल थल महीअल आपणा रंग रंगाईआ। किरपा अन्दर लख चुरासी जीव जंत दए आधार, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। किरपा अन्दर घट घट दीआ बाती दीपक बाल, जोती जोत जोत रुशनाईआ। किरपा अन्दर घर विच घर उपाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक रखाईआ। किरपा अन्दर अमृत आत्म अमृत मारे उछाल, सर सरोवर इक प्रगटाईआ। किरपा अन्दर अनहद नाद वजाए अगम्मी ताल, ताल तलवाड़ा इक रखाईआ। किरपा अन्दर प्रितपालक हो के करे प्रितपाल, बण सेवक सेव कमाईआ। किरपा अन्दर निरगुण सरगुण लै अवतार, गुर गुर आपणा रूप वटाईआ। किरपा अन्दर पंज तत करे शृंगार, काया चोला जगत रंगाईआ। किरपा अन्दर साचा नाम दए सिखाल, सिख्या इक्को इक समझाईआ। किरपा अन्दर होए दयाल, दीनन आपणे गले लगाईआ। किरपा अन्दर देवे नाम सच्चा धन माल, धुर ख़ज़ाना इक वखाईआ। किरपा अन्दर जुग जुग खेले खेल कमाल, बेमिसाल, आपणी कार कमाईआ। किरपा अन्दर साची घालन लए घाल, घोली घोल आप घुमाईआ। किरपा अन्दर शब्द गुरदेव हो के बणे दलाल, स्वामी आपणी धार समझाईआ। किरपा अन्दर वेखणहारा पत डाल्ह, ज़र्रा ज़र्रा खोज खुजाईआ। किरपा अन्दर जन भगत लए उठाल, सोई सुरती आप जगाईआ। किरपा अन्दर साचे सन्तां करे निहाल, निउँ निउँ आपणा घर वखाईआ। किरपा अन्दर गुरमुख साचे पकड़ उठाए लाल, लालन आपणे रंग रंगाईआ। किरपा अन्दर गुरसिख सज्जण लख चुरासी विचों भाल, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। किरपा अन्दर मुरीद मुर्शद वेखे आण, बेनज़ीर आपणी नज़र उठाईआ। किरपा अन्दर नाता तोड़े काल महाकाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। किरपा अन्दर लेखा चुकाए त्रैगुण माया जगत जंजाल, जीवण जुगत इक जणाईआ। किरपा अन्दर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मार्ग इक दरसाईआ। किरपा अन्दर खेल अगम्म, हरि करता आप कराइंदा। किरपा अन्दर लोक परलोक बेड़ा देवे बन्न, दो जहान पार कराइंदा। किरपा अन्दर निरगुण जोत चाढ़े चन्न, सच प्रकाश इक वखाइंदा। किरपा अन्दर भगत भगवान वेखे बण के जननी जन, धन जणेंदी माउँ आप हो जाइंदा। किरपा अन्दर जगत विकारे देवे डंन, काम क्रोध लोभ मोह हँकार नेड़ ना आइंदा। किरपा अन्दर भाग लगाए काया माटी तन, माया ममता मोह चुकाइंदा। किरपा अन्दर अन्दर वड़ के सच दुआरे लावे संन, नाम संधेवा हथ्थ उठाइंदा। किरपा अन्दर बजर कपाटी देवे भन्न, भाण्डा भरम भउ भंनाइंदा। किरपा अन्दर करे प्रकाश नेत्र अन्न्ह, निज नेत्र आप खुल्हाइंदा। किरपा

अन्दर करे वासना बंद मन, मन मनसा मेट मिटाइंदा। किरपा अन्दर आपणा राग सुणाए कन्न, छत्ती राग सिफ्त सालाहइंदा। किरपा अन्दर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। किरपा अन्दर साचा खेल, हरि सतिगुर आप कराईआ। किरपा अन्दर लए मेल, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाईआ। किरपा अन्दर साचा सगन मना चाढ़े तेल, घर वज्जे नाम वधाईआ। किरपा अन्दर धाम वखाए इक नवेल, निरगुण आपणा पड़दा लाहीआ। किरपा अन्दर वेख वखाए गुरु गुर चेल, चेला गुर इक्को नूर नज़री आईआ। किरपा अन्दर आवण जावण लख चुरासी कटे जेल, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। किरपा अन्दर जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। किरपा अन्दर तारे आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। किरपा अन्दर माई बाप, पिता पूत वेख वखाईआ। किरपा अन्दर देवे जाप, अजपा जाप समझाईआ। किरपा अन्दर नाता तोड़े तीनों ताप, त्रैगुण अग्नी रहे ना राईआ। किरपा अन्दर सुरत सवाणी करे पाकी पाक, पतित पुनीत वेख वखाईआ। किरपा अन्दर बंद कवाड़ी खोल्हे ताक, कुण्डा आपणी हथ्थीं लाहीआ। किरपा अन्दर आत्म परमात्म बणावे साक, साचा बंधप आप हो जाईआ। किरपा अन्दर चढ़ाए साचे राथ, शब्द रथवाही फेरा पाईआ। किरपा अन्दर वखाए आपणा घाट, पत्तण बैठा सच्चा माहीआ। किरपा अन्दर लहिणा देणा चुकाए ज़ात पात, वरन बरन नज़र कोए ना आईआ। किरपा अन्दर जन भगतां करे आपणी बात, दूजे सरवण सुणन कोए ना पाईआ। किरपा अन्दर देवणहार नजात, एथे ओथे होए सहाईआ। किरपा अन्दर जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर इक्को इक समझाईआ। किरपा अन्दर वखाए घर, सच दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। किरपा अन्दर चुक्के डर, भय भउ ना कोए जणाईआ। किरपा अन्दर लाए लड़, पल्लू आपणे नाल बंधाईआ। किरपा अन्दर लए वर, हरि कन्त सच्चा शहिनशाहीआ। किरपा अन्दर नुहाए साचे सर, दुरमति मैल धवाईआ। किरपा अन्दर सच दुआरे जाए खड़, सच सरूपी नज़री आईआ। किरपा अन्दर साचा राग सुणाए पढ़, सोहँ ढोला इक्को गाईआ। किरपा अन्दर तूं मेरा मैं तेरा जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप जणाईआ। किरपा अन्दर मिले जगदीश, जगदीशर आपणी दया कमाईआ। किरपा अन्दर दए हदीस, साचा कलमा नबी पढ़ाईआ। किरपा अन्दर छत्र झुलाए सीस, राज राजान शाह सुल्तान वेख वखाईआ। किरपा अन्दर भेव चुकाए तीस बतीस, राग छत्तीस करे जणाईआ। किरपा अन्दर ख़ाली करे खीस, दर दर घर घर मांगत मंगण वाहो दाहीआ। किरपा अन्दर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक समझाईआ। किरपा अन्दर भगत भगवान, हरि जू साचा रंग रंगाईआ। किरपा अन्दर दे

दे दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। किरपा अन्दर आत्म परमात्म मेले आण, ब्रह्म पारब्रह्म अंग लगाईआ। किरपा अन्दर करे प्रकाश कोटन भान, कोटन कोटि रवि ससि नैण शरमाईआ। किरपा अन्दर सुणाए आपणा गान, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। किरपा अन्दर घट दर्शन देवे आण, दरसी आपणा दरस कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस मेहर नज़र उठाईआ। किरपा अन्दर होए प्रतख, प्रभ आपणा वेस वटाईआ। किरपा अन्दर मार्ग देवे दस्स, सच साचा बूझ बुझाईआ। किरपा अन्दर अमृत आत्म देवे रस, निझर झिरना इक झिराईआ। किरपा अन्दर शब्द नाम बोल अलख, सच जैकारा इक अलाईआ। किरपा अन्दर धीरज जत वखाए हठ, सति सन्तोख इक दृढ़ाईआ। किरपा अन्दर बहत्तर नाड़ ना उबले रत, रती रत दए सुकाईआ। किरपा अन्दर देवे ब्रह्म मति, चौदां विद्या ना कोए पढ़ाईआ। किरपा अन्दर मिले आण हस्स हस्स, हँसमुख सच्चा शहिनशाहीआ। किरपा अन्दर जन भगतां होवे सदा वस, वास्ता भगतां नाल पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। किरपा अन्दर खेल समरथ, सो करता आप कराईआ। किरपा अन्दर जुग चौकड़ी चलाए रथ, हरि पुरख निरँजण बेपरवाहीआ। किरपा अन्दर वसे घट घट, एकँकार निरगुण नूर रूप धराईआ। किरपा अन्दर साची जोत करे प्रकाश, आदि निरँजण वेस वटाईआ। किरपा अन्दर गुर अवतारां पीर पैगम्बरां देवे साथ, श्री भगवान सगला संग निभाईआ। किरपा अन्दर शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी बणाए गाथ, अबिनाशी करता इक्को करे पढ़ाईआ। किरपा अन्दर आत्म परमात्म मण्डल मण्डप गोपी काहन पवाए रास, पारब्रह्म प्रभ आपणा नाच नचाईआ। किरपा अन्दर जन भगतां पूरी करे आस, आसा तृष्ना मेट मिटाईआ। किरपा अन्दर साचे सन्त वेखे अनाथां नाथ, नाथ अनाथी फेरा पाईआ। किरपा अन्दर गुरमुखां इक खुलाए आख, निज नेत्र कर रुशनाईआ। हुक्मे अन्दर गुरमुख सज्जण लए राख, रक्षया करे थाउँ थाईंआ। हुक्मे अन्दर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग आपणी कार कमाईआ। किरपा अन्दर खेल स्वामी, सर्ब गुण दाता आप कराइंदा। किरपा अन्दर अन्तरजामी, हरि घट घट वेख वखाइंदा। किरपा अन्दर बोध अगाध सुणाए बाणी, गुर अवतार पीर पैगम्बर आप जणाइंदा। किरपा अन्दर जुग चौकड़ी देंदा रिहा निशानी, साचा राह इक वखाइंदा। किरपा अन्दर करदा रिहा खेल सुल्तानी, शाह पातशाह शहिनशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। किरपा अन्दर बणदा रिहा ब्रह्म ज्ञानी, पारब्रह्म प्रभ आपणा वेस वटाइंदा। किरपा अन्दर आत्म परमात्म लेख चुकाए दो जहानी, निरगुण सरगुण आपणे लेखे पाइंदा। किरपा अन्दर जन भगतां बिरहों मारे तीर कानी, सच निशाना आप लगाइंदा। किरपा अन्दर लेखा जाणे चार खाणी, ख़ाना सब दा फोल

फुलाइंदा। किरपा अन्दर बणया रहे वड्डा विद्वानी, पंडत इक्को नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि जू साचा वेस वटाइंदा। किरपा अन्दर होए मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। नव नौ चार वेखे विच जहान, जुग चौकड़ी अक्ख खुल्हाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार देंदा रिहा ज्ञान, पीर पैगम्बर कलमा नबी पढ़ाईआ। सजदा सीस झुकाउणा दस्सदा रिहा सलाम, इस्म आअज़म इक वखाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ जपाउँदा रिहा नाम, गुरुदुआरे गुर गुर भेव जणाईआ। कलयुग अन्तिम सृष्ट सबाई होई बेईमान, बेवा रूप नज़री आईआ। चारों कुण्ट होए हराम, धीरज जत नज़र कोए ना आईआ। कूड़ी क्रिया पीण खाण, अमृत रस रसना जिह्वा ना कोए लगाईआ । नेत्र नैण जगत तकाण, निज अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। अन्तर आत्म कोई ना वेखे मार ध्यान, रसना जिह्वा पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ । अठसठ तीर्थ बाहरों करन अशनान, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। दरस ना पौण श्री भगवान, घर मन्दिर वेखण कोए ना जाईआ। दरोही फिरे कूड़ शैतान, शरअ करदी फिरे लड़ाईआ। साची दिसे ना कोए दुकान, सौदा नाम ना कोए विकाईआ। साध सन्त जीवां जंतां कोलों नाम दा लैंदे लगान, मुफ्त हरि की दात झोली कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल थाउँ थाईंआ। थाउँ थाईं वेखणहारा, इक इकल्ला हरि अख्वाइंदा। जुग चौकड़ी पार किनारा, कलयुग अन्तिम वेला आइंदा। चारों कुण्ट धूंआँधारा, साचा चन्द ना कोए चढ़ाइंदा। सृष्ट सबाई हाहाकारा, जीव जंत सर्ब कुरलाइंदा। साचा इष्ट ना किसे विचारा, दृष्टी आपणी ना कोए खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वेस आप धराइंदा। वेस धर नर निरँकार, नव नौ चार वेख वखाईआ। भरमे भुल्ला सर्ब संसार, वड संसारी समझ कोए ना पाईआ। लभ्भ लभ्भ थक्के जीव गंवार, उच्चे टिल्ले पर्बत जंगल जूह उजाड़ पहाड़, डूंग्घी कन्दर डेरा लाईआ। मक्के काअबे रोवण ज़ारो ज़ार, हू हू नाअरा रहे सुणाईआ। नज़र ना आया परवरदिगार, काया हुजरा वेखण कोए ना आईआ । गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ लभ्भण विच संसार, चारों कुण्ट भज्जण वाहो दाहीआ। अन्दर वड़ के हरि मन्दिर वेख्या ना किसे हरि निरँकार, नौ दुआरे पन्ध ना कोए मुकाईआ। सतिगुर सरन ना कोई विचार, मनमति रही कुरलाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोई ना करे पार, बेड़ा बन्ने कोई ना लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण दाता पुरख बिधाता वेखणहारा खेल तमाशा, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम वेखे भगवान, सचखण्ड निवासी दया कमाईआ। साचे भगत सर्ब कुरलाण, नेत्र रोवण मारन धाहींआ। कर किरपा ठाकर मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। आ के मिल नौजवान, तेरी इक्को ओट तकाईआ। काया मन्दिर सोहे मकान,

आत्म सेजा वज्जे वधाईआ। साचीआं सखीआं मंगल गाण, गीत गोबिन्द अलाईआ। नेत्र नैण दोवे शरमाण, इक्को अक्ख नज़री आईआ। बिन तेरी किरपा किसे ना मिले माण, ममता भरी सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा आपणा घर, जिस घर वज्जे नाम तेरे वधाईआ। किरपा करे आप कृपाल, किरपन लए उठाईआ। सतिगुर पूरा दीन दयाल, दयानिध अख्वाईआ। भगत सन्त लए उठाल, आलस निंद्रा दए गंवाईआ। गुरमुख गुरसिख चलाए आपणे नाल, साचा संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे साचा वर, तिस आपणा पड़दा लाहीआ। किरपा अन्दर गुरमुख जगाए हरि जू आपणे नाल मिलाईआ। हरिसंगत साचा जोड़ जुड़ाए, घर साचे वज्जे वधाईआ। नित उठ वेखण ठाकर आए, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। काया गागर सोभा पाए, घर बैठा बेपरवाहीआ। निर्मल कर्म उजागर आप कराए, दुरमति मैल धवाईआ। जो जन सौदागर बण के आए, तिस नाम वस्त दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आपणे संग रखाईआ। किरपा अन्दर हरि करतार, करनी आप कमाइंदा। गुरमुखां कर सच प्यार, प्रीती आपणे चरण बंधाइंदा। हरिसंगत भुल्लया सर्ब संसार, पुरख अकाल इक्को नज़री आइंदा। जिन्हां दित्ता आप दीदार, तिन्हां दूजा चन्द नज़र कोए ना आइंदा। साचा मार्ग दित्ता वखाल, औझड़ राह ना कोई पाइंदा। इक्को वार किहा गुरसिख तूं मेरा मैं तेरा तेरा मेरा इक्को घर बार, दूजा मन्दिर ना कोए सुहाइंदा। किरपा अन्दर मेल मिलाया मेलणहार, साची मिलणी आप कराइंदा । सुरत सवाणी बणा के नार, सच श्रृंगार इक जणाइंदा। शब्द हाणी ख़बरदार, बेख़बर ख़बर सुणाइंदा। उठ सुहागण चलीए आपणे घर बार, हरि सतिगुर मन्दिर इक बणाइंदा। नाता तुट्टे जगत संसार, आसा तृष्ना मगर ना कोए रखाइंदा। जो जन किरपा मंगे सच सच्चे दरबार, तिस कृपाल आपणे रंग रंगाइंदा। जो वेखण आए जगत विहार, तिस जगत विहारी धार समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणे आप आप उठाइंदा। किरपा अन्दर सहिज सुख, सच सागर आप जणाईआ। किरपा अन्दर उजल मुख, गुरमुख नाम वड्याईआ। किरपा अन्दर मिटे दुःख, सोग रोग रहिण ना पाईआ। किरपा अन्दर पारब्रह्म ब्रह्म मिले विच जून मनुक्ख, माणस आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले आपणी गोदी लए चुक्क, दूजे हथ्थ ना किसे फड़ाईआ।

✪ २८ भाद्रों २०२० बिक्रमी मक्खण सिंघ दे गृह नौरंगाबाद ज़िला अमृतसर ✪

साचा हुक्म देवे हरि प्रभ, प्रभ जोत इक समझाईआ। सतिगुर पूरा लैणा लभ्भ, चार कुण्ट दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। अमृत झिरना झिराउणा नभ्भ, सर अमृत इक अशनान कराईआ। जगत विकारा देवे दब्ब, पंज चोर ना करे लड़ाईआ। नौ दुआर मुकाए हद्द, घर साचा इक वखाईआ। गृह मन्दिर लए सद्द, सच बंक दए वड्याईआ। दरस दिखाए उपर शाह रग, शहिनशाह आपणा पड़दा लाहीआ। त्रैगुण माया बुझे अग्ग, अग्नी तत ना लागे राईआ। हँस बणे कग, माणस जन्म रूप वटाईआ। दीपक दीआ जावे जग, बुझी जोत करे रुशनाईआ। इक्को वस्त इक्को घर लैणी लभ्भ, दूजे दर ना मंगण जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। साची वस्त लभ्भ जन एक, एकँकार मिले वड्याईआ। एथे ओथे मिले टेक, दो जहान होए सहाईआ। जगत माया ना लाए सेक, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। फड़ के बिधना लिखी मेटे रेख, रेखा रेखा विचों बदलाईआ। अगम्म वखाए आपणा देस, सचखण्ड सच दुआर सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची समझ इक समझाईआ। गुरमुख लभ्भो इक स्वामी, शाह पातशाह सद अख्वाइंदा। आदि जुगादि अन्तरजामी, जुग जुग वेख वखाइंदा। नाम निधान जिस दी बोध अगाध बाणी, राग नाद आपणा ताल जणाइंदा। अमृत देवे आत्म ठंडा पाणी, तृष्ना तृखा जगत बुझाइंदा। सुरत मिलाए शब्द हाणी, घर साचा मेल मिलाइंदा। लेखा चुक्के चार खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त लभ्भण वाली इक जणाइंदा। लभ्भो वस्त हरि का नाम, सच वस्तू इक समझाईआ। जिस मिलयां प्रभ मिले राम, रमईया आपणा फेरा पाईआ। घर नज़री आए इक्को शाम, बंसुरी साची सच वजाईआ। भाग लगाए काया नगर खेड़ा ग्राम, भूमका इक्को इक सुहाईआ। सच प्याला प्याए जाम, रस इक्को इक वहाईआ। सच राग सुणाए कान, अनहद नादी धुन शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा इक जणाईआ। साचा लभ्भो इक भगवान, जिस मिलयां दुःख रहिण ना पाईआ। आवण जावण चुक्के काण, लख चुरासी फंद कटाईआ। अन्तर उपजे ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या इक पढ़ाईआ। हथ्थ फड़ाए सच निशान, दो जहान आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त इक लभाईआ। साची वस्त लभ्भो मीत, मीत प्यारा आप जणाइंदा। जिस लभ्भयां पिछली बदल जावे नीत, अग्गे मार्ग इक्को नज़री आइंदा। काया होए ठंडी सीत, सांतक सति सति कराइंदा। आत्म गाए परमात्म गीत, साचा ढोला राग अलाइंदा। नाता तुट्टे मन्दिर मसीत, पुरख अबिनाशी इक्को नज़री आइंदा। बैठा रहे सदा

अतीत, त्रैगुण डेरा ढाइंदा। माणस जन्म लैणा जीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप चुकाइंदा। साची वस्त लभ्भो घर, घर सतिगुर आप टिकाईआ। अन्दर वड़ के खोल्हो दर, बंद कवाड़ी कुण्डा लाहीआ। साचे पौड़े वेखो चढ़, महल अटल होए रुशनाईआ। सतिगुर सच्चा लओ वर, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। ना कोई सीस ना कोई धड़, ततव तत ना कोए रखाईआ। एका अक्खर रिहा पढ़, निष्अक्खर रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त इक दृढ़ाईआ। साची लभ्भो वस्त अपार, सो अपरम्पर स्वामी आप जणाइंदा। जिस दा लेखा रहे सदा जुग चार, चौकड़ी मूल ना कोए मुकाइंदा। जिस दा दर सच्चा दरबार, सचखण्ड साचा सोभा पाइंदा। जिस दा हुक्म सच वरतार, दो जहान ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। जिस दी सेवा करन गुरू अवतार, पीर पैगम्बर बरखुरदार अख्वाइंदा। जिस दा नग़मा सच संसार, बिन रसना जिह्वा राग अल्हाइंदा। जिस दा नूर अपार जोत उज्यार, बेनज़ीर नज़र किसे ना आइंदा। जिस दा रुतबा लासानी दो जहान, फ़ानी रूप ना कोए वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वस्त इक समझाइंदा। साचा मीत लभ्भो भाई, भावी भावना रहिण ना पाईआ। जन्म जन्म दी मिटे जुदाई, जुज़ जुज़ नाल लए मिलाईआ। अगला लहिणा दए चुकाई, लेखा कोई नज़र ना आईआ। घर विच घर करे रुशनाई, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। अट्ठे पहर नाद शब्द धुन शनवाई, अनरागी राग सुणाईआ। लेखा कोए ना जाणे कलम शाही, काग़ज़ बैठे डेरा ढाहीआ। चौदां विद्या रोवे मारे धाहीं, चौदां लोक देण दुहाईआ। चौदां तबक रहे कुरलाई, हाहाकार इक सुणाईआ। जिन्हां लभ्भया सतिगुर पूरा इक गोसाईं, तिन्हां दूजी ओट रही ना राईआ। प्रभ लभ्भण दा सिखो तरीका, हरि साख्यात समझाइंदा। आपणा मनुआ करो नीका, नीकन नीक रूप वखाइंदा। भेव जाणो आपणे जीअ का, जीवत जुगत सर्ब समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त लभ्भो, लब विच किसे ना पाइंदा। सच्ची वासना सतिगुर दर्शन, बिन वासना गुरमुख नज़र कोए ना आईआ। सच्ची वासना सतिगुर नेत्र परसन, बिन वासना नेत्र नैण ना कोए रखाईआ। सच्ची वासना सतिगुर हरसन, बिन हरस बणे ना कोई पांधी राहीआ। सच्ची वासना मिल सतिगुर मेटे धड़कन, मन चिंदया दुःख गंवाईआ। सच्ची वासना अन्दरे अन्दर मेटे अटकन, राह वखाए सच दरगाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख वासना इक्को इक जणाईआ। गुरमुख वासना सदा भरपूर, सतिगुर चरण ध्यान लगाईआ। आ स्वामी नेड़े क्यों वसिउँ दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। दर्शन दे हाज़र हज़ूर, हजरत आपणा फेरा पाईआ। जन्म जन्म दे बख्श कसूर, मेहर नज़र इक उठाईआ। कर किरपा दे चरण धूढ़, मस्तक

टिक्का लावां चाईं चाईंआ। चतुर सुघड़ बणा मूर्ख मूढ़, मति मत विचों बदलाईआ। नाता तुट्टे कूड़ी क्रिया कूड़, सच सुच मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्ची वासना जन भगतां विच सदा रखाईआ। सच्ची वासना सतिगुर आस, गुरमुख इक्को आस रखाइंदा। कवण वेला प्रभ मेटे प्यास, जन्म जन्म दी तृखा बुझाइंदा। कवण वेला प्रभ देवे साथ, सगला संग निभाइंदा। कवण वेला सुणाए गाथ, साचा ढोला राग अलाइंदा। कवण वेला प्रभ लहिणा चुकाए मस्तक माथ, पूरब लेखा झोली पाइंदा। कवण वेला प्रभ खोल्ह वखाए घर विच हाट, नाम ख़ज़ाना इक वरताइंदा। कवण वेला प्रभ देवे दात, दानी हो के दया कमाइंदा। कवण वेला प्रभ मेटे अन्धेरी रात, अन्तर साचा चन्द चमकाइंदा। कवण वेला प्रभ बख्शे मेरी ज़ात, आपणी ज़ात नाल मिलाइंदा। कवण वेला प्रभ प्रगट करे इक प्रभात, संधया रूप नज़र कोए ना आइंदा। कवण वेला प्रभ मेरी पूरी करे ख्वाहिश, रातीं सुत्यां दिने जागदयां हर घट इक्को नज़री आइंदा। बिन वासना गुरसिख गुर दोहां दा कम्म ना आवे रास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची वासना इक उपजाइंदा। गुरमुख वासना सदा अटल, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। काया मन्दिर सोहे सच महल्ल, महिफल इक्को नाम लगाईआ। दीपक जोत जाए बल, सच प्रकाश वखाईआ। शब्द संदेसा दए घल्ल, धुर दी करे पढ़ाईआ। निरगुण सरगुण अन्दर जाए रल, रूप रंग रेख नज़र किसे ना आईआ। सच सिँघासण बहे मल्ल, आत्म सेजा डेरा लाईआ। भाग लगाए काया माटी खल्ल, पंज तत मिले वड्याईआ। लहिणा चुक्के अन्धेरी डूंग्घी डल्ल, टिल्ला पर्बत ऊँचो ऊँच वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी वासना अन्दर गुरसिख मात घल्ल, गुरसिख वासना आपणे नाल मिलाईआ। गुरसिख कहे प्रभ वासना चंगी, चार कुण्ट कुण्ट महकाईआ। सतिगुर कहे गुरसिख वासना चंगी, जिस विचों मेरा नाम नज़री आईआ। गुरसिख कहे सतिगुर वासना चंगी, जो दिवस रैण अट्ठे पहर होए सहाईआ। सतिगुर कहे गुरसिख वासना चंगी, जो मैनूं सद्दा देवे चाईं चाईंआ। बिन वासना सिख गुर गुरसिख इक दूजे दे कदे ना बणन संगी, लोकमात सच्चा संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख तेरी वासना आपणी वासना विच रखाईआ। जे कोई कहे वासना थोड़ी, थोड़ी कम्म किसे ना आईआ। गुरसिख विछोड़े अन्दर करे बौहड़ी बौहड़ी, उच्ची कूके मारे धाहींआ। फेर सतिगुर पूरा आपणे हथ्थ विच पकड़े डोरी, तन्दी तन्द सतार हिलाईआ। गुरसिख तेरे अन्दर वड़े चोरी, जगत नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, तिस थोड़ी वासना बहुती कर वखाईआ। अगली अवस्था आए अग्गे, पिछली जगत झोली पाईआ। जो गुरमुख सतिगुर सरनाई

लग्गे, तिस सतिगुर मार्ग दए वखाईआ। आप फिरे गुरसिख अग्गे, पिच्छे गुरसिख आपणी उँगली लाईआ। दोहां दा ताल इक्को जिहा वज्जे, चेला गुर इक्को रूप वटाईआ। जे चेला बण के गुरसिख पिच्छे भज्जे, सतिगुर पिच्छे मुड़न ना देवे राईआ। कृपानिधान हो के पड़दा कज्जे, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। रातीं सुत्यां अन्दर वड़ के डूंघी कन्दर विचों लभ्भे, फड़ सोई सुरत उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, अग्गे आपणी झोली पाईआ। गुरमुख अग्गा लए जाण, जाणीजाण आप जणाइंदा। जो गुरसिख सतिगुर मिले आण, तिस अग्गे दुःख ना कोए आइंदा। साचा झुलदा जाए निशान, विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान लगाइंदा। धन्नभाग गुरमुख सच्चा वसे सच मकान, जिस दुआरे हरि जू डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, तिस अग्गे जम का डर रहिण कोए ना पाइंदा। गुरमुख अग्गा जाए सौर, माणस जन्म लेखे लाईआ। गहर गम्भीर सतिगुर वेखे कर के ग़ौर, बेनज़ीर आपणी नज़र उठाईआ। चरण ला सरन लगा लग्गी प्रीती कदे ना जाए तोड़, तुट्टी गंढुणहार गोपाल स्वामी आपणी गंढु पवाईआ। गुरसिख चोरी करे जे हो के चोर, चोर ठग्ग कूड़ कुड़यार सतिगुर पूरा पार कराईआ। जिस दा मन्त्र इक्को फोर, पिछले फुरने सारे दए मुकाईआ। फड़ बांहों ला उँगली अग्गे लए तोर, पिच्छे आवे चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा नाम वर, तिस दा अग्गा अग्गे अग्गे अगले घर वखाईआ। दोहां कोलों सो गुरमुख जाए बच, बचपन सतिगुर झोली पाईआ। तिस हिरदे वसे सच, कूड़ी क्रिया नज़र कोए ना आईआ। सतिगुर पूरा साढे तिन्न करोड़ अन्दर जाए रच, रचना आपणी दए समझाईआ। भाग लगाए काया माटी कच्च, कंचन रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख गुरसिख बच्चे बालक आपणी गोद उठाईआ।

✪ २६ भाद्रों २०२० बिक्रमी राधा स्वामी डेरे तरन तारन ✪

आदि जुगादि सतिगुर एक, जुग चौकड़ी खेल खलाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर देवे भेज, धुर दी धार इक समझाइंदा। निरगुण हो के सरगुण लए वेख, सरगुण निरगुण आपणा खेल खलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर सच्चा इक्को नज़री आइंदा। सतिगुर सच्चा सति पुरख सति सतिवाद, सति दुआरे इक्को नज़री आईआ। सो पुरख निरँजण खेल खेले आदि जुगादि, हरि पुरख निरँजण दाता बेपरवाहीआ। एकँकार लेखा जाणे बोध अगाध, आदि

निरँजण जोती जाता नूर रुशनाईआ। अबिनाशी करता देवणहारा साची दाद, वस्त अमोलक आप वरताईआ। श्री भगवान शाहो भूप बण राजन राज, दो जहान श्री भगवान एका हुक्म चलाईआ। पारब्रह्म आप बणाए आपणा सच समाज, सचखण्ड निवासी साची दरगह आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शाह पातशाह सति पुरख सति सतिवादी, खेले खेल बेपरवाहीआ। लेखा जाणे ब्रह्म ब्रह्मादी, पारब्रह्म ब्रह्म एका धार जणाईआ। जुग जुग वेखणहारा मण्डल रासी, गोपी काहन नाच नचाईआ। निरगुण सरगुण बणाए दासी, सेवा सच इक समझाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर निरगुण जोत निरँकार निराकार प्रकाशी, घर सच सच रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर इक्को इक अख्वाईआ। सतिगुर पूरा आदि पुरख, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जुग चौकड़ी निरवैर हो के घट घट देवे दरस, लख चुरासी आसा तृष्ना दए बुझाईआ। अमृत मेघ अन्तर आत्म दए बरस, निझर झिरना इक झिराईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख़, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले जीव जंत श्री भगवन्त सन्त साजण लए परख, नाम कसवटी इक्को हथ्थ उठाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पीर पैगम्बर साध सन्त प्रभ दर्शन नूं रहे तरस, निज नेत्र ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिगुर इक्को वड्डा वड वड्याईआ। सतिगुर सच्चा आदि निरँजण, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी दर्द दुःख भय भंजन, भवसागर पार कराईआ। सच सरोवर कराए इक्को मजन, दुरमति मैल धवाईआ। भाण्डे गढ़ हँकारी भज्जण, दूई द्वैत रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिगुर साचा सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालाहीआ। सिफ्त सालाही परवरदगार, नूरो नूर नूर इलाहीआ। हक़ मुकामे सांझा यार, लाशरीक डेरा लाईआ। बेऐब ख़ुदाई परवरदिगार, जलवा जलवागर इक दरसाईआ। जुग चौकड़ी खेल अपार, हरि करता आप कराईआ। कलयुग वेख सर्ब संसार, जोती नूर करे रुशनाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा साध सन्त उच्ची कूक करन पुकार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी करन पढ़ाईआ। साची मंज़ल अन्दर वड़ के महल्ल चढ़ के कोई ना करे सच दीदार, सति स्वामी नज़र किसे ना आईआ। जगत बाणी कर प्यार, भगत खाणी दे आधार, आत्म राणी रहे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिगुर सच्चा इक्को इक नज़री आईआ। कलयुग अन्तिम खेल अपारा, साहिब सतिगुर वेख वखाईआ। गावत गावत गा गा थक्का सर्ब संसारा, हरि का भेव कोए ना पाईआ। रसना बोलत बोलत बोलण जैकारा, बत्ती दन्द करन पढ़ाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण

हरि जू हरि मिल्या ना कन्त भतारा, नार दुहागण दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर स्वामी साची टेक, मेहर नज़र करे बुध विवेक, मन वासना डेरा ढाहीआ। मन वासना जाए नट्ठ, तन अन्तर रहिण ना पाईआ। जिन्हां सतिगुर मिल्या इक समरथ, दूजी लोड़ रहिण ना पाईआ। अन्दर वड़ के जावे दस्स, साचा मार्ग इक समझाईआ। नौ दुआरे खेड़ा भट्ठ, कूड़ी तृष्ना मेट मिटाईआ। सुखमन टेडी बंक ईड़ा पिंगल दोवें जोड़न हत्थ, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सहँस दल कँवल चरण कँवल रिहा झस्स, आप आपणी सेव कमाईआ। अनहद शब्द आपणा राग रिहा दस्स, बण सेवक सेव कमाईआ। अमृत झिरना रिहा रस, रसक रसक आपणी बूँद टपकाईआ। जोत निरँजण कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर रिहा गंवाईआ। आत्म सेजा खेल तमाश, हरिजन लेखा रिहा चुकाईआ। सुरती शब्दी कर बंद ख़लास, बंदीख़ाना तोड़ तुड़ाईआ। जगत ज्ञान कर के नास, निश्अक्खर अक्खर इक्को इक बुझाईआ। जिस विच खेल कोटन कोटि ब्रह्मण्ड पुरी लोअ आकाश, धरत धवल खेल रिहा खलाईआ। सो सतिगुर स्वामी आदि जुगादि जुग चौकड़ी इक्को इक वसे हर घट पास, बाहर लभ्भण कोए ना पाईआ। सतिगुर पूरा अन्तर आत्म, परमात्म आपणा घर बणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान जिस दा दस्सण महातम, सो महापुरख पुरख अबिनाशी घर मिले चाईं चाईंआ। जगत अन्धेरा मेटे रैण रातन, साचा चन्द निरगुण नूर करे रुशनाईआ। जिस नूं मिलयां लेखा रहे ना कोई पढ़न सुणन गाथन, अन्दर वड़ के ध्यान ना कोए लगाईआ। चारों कुण्ट दहि दिशा उतर पूरब पच्छिम दक्खण अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर नज़री आए पुरख समराथन, हरि दाता वड वड्याईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत जन्म जन्म दी पूरी करे आसन, कर्म कांड डेरा ढाहीआ। आत्म सेजा साचा करे भोग बलासन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा एकँकार, आदि जुगादि करे प्यार, ब्रह्म लेखा पारब्रह्म समझाईआ। रसना जिह्वा गाउँदे गीत, चार कुण्ट दहि दिशा लख चुरासी करन पढ़ाईआ। लभ्भदे फिरदे शिवदुआले मट्ठ मन्दिर मसीत, मसला हक़ समझ कोए ना पाईआ। सतिगुर पूरा आदि जुगादि जुगा जुगन्तर अनडिठड़ी रखे आपणी रीत, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। सब दा सांझा वसणहारा हस्त कीट, ऊँच नीच आपणा डेरा लाईआ। जिस जन बख़्शे अन्तर इक प्रीत, प्रेम प्रीती इक जणाईआ। तिस पंज तत काया करे ठंडी सीत, त्रैगुण अग्नी तत ना लागे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा दीन दयाल, गुरमुख वेखे साचे लाल, लालन आपणी गोद उठाईआ। सतिगुर पूरा गुरमुख सच्चे लए लभ्भ, लख चुरासी फोल फुलाईआ। वेखणहारा नौ दुआरे पार हद्द, दस्म दुआरी आपणा पड़दा लाहीआ। सच सिँघासण बहे सज, सोभावन्त सोभा पाईआ। सेवा लाए शब्द अनहद, धुनी राग सुणाईआ।

खेले खेल सूरा सरबग्ग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जन भगतां पिच्छे सचखण्ड निवासी लोकमात आवे भज्ज, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। बिन मक्के काअबयों साचे हुजरे कराए आपणा हज्ज, मुख नकाब पड़दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा सच्चा ठाकर, भाग लगाए काया गागर, निर्मल कर्म करे उजागर, स्वच्छ सरूपी सति सरूपी निरगुण नूर एका दरस दिखाइंदा। सतिगुर वड्डा वड प्रताप, आदि जुगादी इक अख्वाईआ। बिन रसना जिह्वा जपाए जाप, मन का मणका आप भवाईआ। त्रैगुण माया मेट संताप, संसा रोग मिटाईआ। मेटे रैण अन्धेरी रात, सच नूर इक रुशनाईआ। गुरमुख बणाए आपणी ज़ात, ज़ात आपणी नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा श्री भगवान, आत्म परमात्म देवे दान, पारब्रह्म ब्रह्म वेखे आण, मन वासना मेटे जहान, बुद्धी चले ना कोए चतुराईआ। रसना गा गा खेल तमाशा, जीवण जुगत जगत रहे जणाईआ। नानक कबीर जिस घर वेख्या जा पुरख अबिनाशा, सो घर सच्चा सोभा पाईआ। बाकी सब बैठे रख के आसा, बण बण पांधी राहीआ। शाह पातशाह सतिगुर पूरा घर घर वेखे मण्डल मण्डप पैंदी रासा, निरगुण सरगुण अपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवणहारा नाम वर, बिन सतिगुर पूरे जीव जंत सब रहिण अधूरे, हरि के पौड़े अन्त ना कोए चढ़ाईआ। सतिगुर पूरा होए दयाल, सद दयावान अख्वाइंदा। नाता तोड़ काल महाकाल, मेहरवान आपणे नाल मिलाइंदा। त्रैगुण माया ना रहे जंजाल, पंज तत नाता मूल चुकाइंदा। सच वखाए इक सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्को नज़री आइंदा। जिस घर शब्द अगम्मी वज्जे ताल, ढोलक छैणा ना कोए खड़काइंदा। जिस घर अमृत सरोवर सोहे इक्को ताल, नीर सीर आप भराइंदा। जिस मन्दिर दीपक दीआ एका रिहा बाल, दीआ बाती अवर ना कोए रखाइंदा। जिस घर वसे शाह कंगाल, शहिनशाह आपणा रूप वटाइंदा। सो सतिगुर लैणा भाल, जो घट घट अन्दर निरगुण हो के डेरा लाइंदा। सरगुण मार्ग दए सिखाल, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। सच कुठाली देवे ढाल, कंचन रूप आप वटाइंदा। अन्दर वड़के बणे दलाल, बाहरों नज़र किसे ना आइंदा। गुरमुख लभ्भे आपणे लाल, लख चुरासी फोल फोलाइंदा। आपे सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाइंदा। जन भगतां हल्ल करे स्वाल, पट्टी होर ना कोए पढ़ाइंदा। अन्दर वड़ के काया मन्दिर चढ़ के सच दवारे खड़ के आत्म परमात्म ढोला पढ़ के अन्तिम लै के जाए नाल, अद्धविचकार कोए रहिण ना पाईआ। थिर घर निवासी खेल तमाशी, सचखण्ड दुआरा एकँकारा दे सहारा गुरमुख मीता ठांडा सीता, सति स्वामी अन्तरजामी सदा निहकामी गुरमुख आपणी गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा एको एक,

देवणहारा साची टेक, चरण कँवल कँवल चरण दए सरनाईआ। सतिगुर सच्चा सर्ब गुण दाता, इक इकल्ला वड वड्याईआ। दो जहानां चौदां लोकां चौदां तबकां अवण गवण त्रैभवन होए ब्रह्म ज्ञाता, साची विद्या करे नाम पढ़ाईआ। धुर शब्द नाम संदेस साचा राग सुणाए तराना, तुरिया बैठी मुख शरमाईआ। सच मन्दिर महल अटल इक मकाना, बंक इक्को इक वड्याईआ। साचा नूर जोत प्रकाश करे हो मेहरवाना, मेहरवान आपणी दया कमाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर गुर अवतारां पीर पैगम्बरां साधां सन्तां जीवां जंतां देवे अगम्मी दाना, वस्त अमोलक काया गोलक कर किरपा आप टिकाईआ। गुरमुख तेरा सच निशाना, सतिगुर मिले नौजवान बिरध बाल ना रूप वटाईआ। जन्म मरन विच कदे ना आणा, सचखण्ड लै के जाए सच टिकाणा, शब्द चढ़ाए इक बबाणा, लोआं पुरीआं पार कराना, ब्रह्मण्ड खण्ड चरणां हेठ दबाईआ। सतिगुर पूरे दा सुणो वख्याना, जिस सुणयां गुरमुख होए सतिगुर प्यार परवाना, लेखा चुकाए दो जहानां एथे ओथे ओथे एथे दो जहानां बिन सतिगुर सच्चे सच ना कोए सरनाईआ। किरपा अन्दर इक्को ठाकर, साहिब सतिगुर हरि अख्वाइंदा। भाग लगाए काया गागर, काची गगरीआ वेख वखाइंदा। हरिजन बणाए नाम सौदागर, साचा हट आप वखाइंदा। आदि जुगादि नित नवित्त साध सन्त देवे आदर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति स्वामी साची करनी सद सद कमाइंदा।

४२६ १५

✪ २६ भाद्रों २०२० बिक्रमी इन्द्र सिँघ दे गृह बंडाला ज़िला अमृतसर ✪

मेहर नज़र गुर लए तक्क, हरि सतिगुर दए वड्याईआ। जन भगतां झोली पाए नाम हक़, पूरब लेखा दए मुकाईआ। निज नेत्र खोल्ह अक्ख, अक्खर आपणा दए पढ़ाईआ। सति सरूपी हो प्रतख, घर सच्चे दरस दिखाईआ। लख चुरासी विचों लए रख, जन्म मरन पन्ध मुकाईआ। साचा मार्ग देवे दस्स, आत्म परमात्म बूझ बुझाईआ। निर्मल जोत करे प्रकाश, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। पंच विकारा करे नास, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। फड़ उतारे आपणे घाट, पतण इक्को इक वखाईआ। जन्म जन्म दी मिटे वाट, पांधी नज़र कोए ना आईआ। आत्म सेज सुहाए साची खाट, साचे मन्दिर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस मेहर नज़र उठाईआ। मेहर नज़र करे भगवान, जन भगतां दया कमाईआ। आत्म देवे ब्रह्म ज्ञान, साची सिख्या इक समझाईआ। साचा राग सुणाए कान, अनहद नादी नाद अलाईआ। साचा अमृत देवे पीण खाण, अंमिउँ रस आप चुआईआ। साचा नूर करे प्रकाश कोटन भान, जोती जोत डगमगाईआ। सच सुहञ्जणा

सुहाए मकान, साढे तिन्न हथ्थ डेरा लाईआ। घर घर विच दर्शन देवे आण, गृह मन्दिर ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन उपर मेहर नज़र उठाईआ। सतिगुर पूरा मेहर नज़र करे मेहरवान, दीन दयाल दया कमाईआ । सन्त सुहेले लए पहचान, पड़दा उहला जगत उठाईआ। अन्तर देवे इक ध्यान, प्रभ चरण सच्ची सरनाईआ। साचा राग दस्से गान, आत्म परमात्म ख़ुशी मनाईआ। कूड़ी क्रिया शरअ मेटे शैतान, पंज तत ना कोए लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन मेहर नज़र उठाईआ। मेहर नज़र करे भगवन्त, श्री भगवान दया कमाइंदा। गुरमुख वेखे साचे सन्त, हरि सज्जण आप जगाइंदा। शब्द मिलावा मणीआ मंत, सुरती डोरी बंध बंधाइंदा। नज़री आए इक्को कन्त, हरि सुहागी रूप वटाइंदा। चाढ़े चोली रंग बसन्त, रंग इक्को इक रंगाइंदा। महिमा सुणाए आपणी अगणत, बोध अगाधा हुक्म वरताइंदा। गढ़ तोड़ हउमें हंगत, हँ ब्रह्म भेव चुकाइंदा। जिस जन मेले साची संगत, सो गुरमुख गुर गुर अंग लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची मेहर नज़र उठाइंदा। मेहर नज़र करे बेनज़ीर, नज़र नज़र नाल मिलाईआ। मुरीद मुर्शद बदल देवे तकदीर, तदबीर आपणी इक समझाईआ। हकीकत सच वखाए तस्वीर, नूर ज़हूर इक रुशनाईआ। कट शरअ तोड़ ज़ंजीर, सति सरूप इक समझाईआ। चोटी चाढ़ फड़ अख़ीर, नौबत आपणे नाम सुणाईआ । नज़री आए वड पीरन पीर, दस्तगीर इक अख्वाईआ। जिस मिलयां दूजी मिटे लकीर, दूआ कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। मेहर नज़र कर देवे तार, सतिगुर पूरे वड वड्याईआ। भव सागर जुग करे पार, शहु दरया ना कोए रुढ़ाईआ। साचा मन्दिर दए वखाल, जिस घर वसे शहिनशाहीआ। दीपक दीआ देवे बाल, घर इक्को नूर रुशनाईआ । सुहञ्जणी सोहे सच धर्मसाल, धर्म दुआरे दए वड्याईआ। लेखा चुक्के शाह कंगाल, ऊँच नीच नज़र कोए ना आईआ। सतिगुर जलवा इक जलाल, सति सतिवादी दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची नज़र आप तकाईआ। मेहर नज़र तक्के गोबिन्द, गहर गम्भीर दया कमाईआ। गुरमुख बणाए धुर दी बिंद, सुत अनादी वड वड्याईआ। दाता दानी गुणी गहिंद, गहर गवर वेख वखाईआ। लोकमात बण बख़्शिंद, कोट जन्म दे पाप दए गंवाईआ। लेखा जाण जीउ पिण्ड, ब्रह्मण्ड वेखे चाईं चाईंआ । अमृत धार वहाए सागर सिन्ध, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन उपर आपणी नज़र रखाईआ। मेहर नज़र रखे करतार, हरि करता वड वड्याईआ। डुब्बदे पाथर लाए पार, अद्धविचकार ना कोए रखाईआ। माणस जन्म पैज दए स्वार, जूनी जून ना कोए भवाईआ । कर किरपा मेल मिलाए मेलणहार, मिलणी

साचे घर कराईआ। सुरती शब्दी दए आधार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। साची सखी मंगलाचार, गीत इक्को इक समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा साची गौणी नाम वार, वारता इक्को इक जणाईआ। सतिगुर पूरा जिस मेहर नज़र कर देवे दीदार, दीद ईद चन्द चमकाईआ। सो गुरमुख गुरसिख गुर पूरे करे निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। दूजा कोई ना पावे सार, भरमे भुल्ले सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र इक तकाईआ। मेहर नज़र तारे प्रभ आप, तारनहार अख्वाईआ। जन भगतां बण के माई बाप, गुरमुख साची गोद बहाईआ। इक जणाए अजपा जाप, करे सच पढ़ाईआ। गृह मन्दिर नूर धर प्रकाश, जोत नूर इलाहीआ। लेखा जाण पवण स्वास, स्वास स्वास रिहा समाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत हरि सतिगुर जुग जुग पूरी करे आस, अन्तिम लहिणा देणा दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिन्हां गुरमुखां वसया साथ, तिन्हां अन्त जम नेड़ कोए ना आईआ।

✪ २६ भाद्रों २०२० बिक्रमी शिव सिँघ दे गृह बंडाला ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर मेहर गुरसिख जागा, जागरत जोत होए रुशनाईआ। दुरमति मैल धोवे दाग़ा, कोट जन्म दे पाप लुहाईआ। अन्तर उपजाए इक वैरागा, वैरागी रूप बणाईआ। नाम सुणाए साचा नादा, धुर दी आवाज़ अलाईआ। सुरती शब्दी रचे काजा, घर मंगल इक वखाईआ। खेल कराए भूपत राजा, शहिनशाह वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण, अभिमान कोए रहिण ना पाईआ। मेहर अन्दर देवे दात, नाम वस्त वरताईआ। मनमति मेटे नार कमज़ात, गुरमति इक्को इक बुझाईआ। साची सच जणाए गाथ, अक्खर पट्टी नाम पढ़ाईआ। सगल वसूरे जाइण लाथ, जो गुरमुख गुर गुर दर्शन पाईआ। पूरब जन्म पूरी होए आस, माणस जन्म तृखा रहिण ना पाईआ। लेखे लग्गे पवण स्वास, स्वास स्वासां लेखे लाईआ। अग्गे कोई ना रहे ख्वाहिश, हरस हवस दए मिटाईआ। सतिगुर पूरा सदा वसे पास, विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र तकाईआ। मेहर नज़र करे गोपाल, गोबिन्द आपणी दया कमाईआ। गुरमुख वेखे साचे लाल, हरि सज्जण भेव मिटाईआ। पुच्छे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। कूड़ी क्रिया तोड़े जंजाल, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। फल लगावे काया डाल, पत डाली नाल महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाईआ। साचा

खेल वेख गुरसिख, हरि सतिगुर आप जणाईआ। अगला लेखा देवे लिख, पिछला आपणी झोली पाईआ। निरगुण हो के सरगुण करे हित, सच प्रीती इक जणाईआ। दूर दुराडा नेड़े हो के पए दिस, घर घर विच नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मार्ग इक समझाईआ। मेहर अन्दर दस्से राह, मार्ग इक समझाईआ। सतिगुर हो के बणे मलाह, बेड़ा मात चलाईआ। गुर गुर हो के पकड़े बांह, फड़ बाहों गले लगाईआ। गुरमुख कदे ना करे नांह, निउँ निउँ लागे पाईंआ दोहां मेला सहिज सुभा, घर साचे वज्जे वधाईआ। नाता जुड़े पुत्तर माँ, पिता इक्को नज़री आईआ। फड़ के हँस बणाए काँ, काग हँस रूप वटाईआ। साचा अक्खर दए पढ़ा, जिस अक्खर विच वसे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। साची सिख्या देवे भूप, हरि सतिगुर दया कमाइंदा। गुरमुख वेख हरि का रूप, जोती जोत जोत रुशनाइंदा। वसणहारा चारे कूट, दहि दिशा डेरा लाइंदा। नाता तोड़े जूठ झूठ, सच सुच इक समझाइंदा। पकड़ उठाए गुरमुख पूत, सपूत आपणी गोद बहाइंदा। आवण जावण चुकाए चूक, चुक्क सचखण्ड दुआरे आप लै जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चरण धूढ़ी देवे सच भबूत, माटी ख़ाक तन ना कोए रमाइंदा। मेहर अन्दर देवे गुर मंत, मन्त्र इक्को नाम पढ़ाईआ। मिले वड्याई विच जीव जंत, जीवण जुगत सच समझाईआ। होए मिलावा नार विछुंनी कन्त, आत्म परमात्म कन्त सुहाग वखाईआ। माणस माणस बणे बणत, मानुख आपणा अंग रखाईआ। भेव खुल्हाए बोध अगाधा पंडत, साचो सच करे पढ़ाईआ। लेखा चुकाए जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज पन्ध मुकाईआ। हरिजन मिलाए धुर दी संगत, हरिसंगत हरि जू आपणा रूप वखाईआ। गुरमुख कोई ना होवे मंगत, दर दर फेरा कोई ना पाईआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान जिस आपणे लाए अंगत, अंगीकार आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जगत रंडेपा दए कटाईआ। मेहरवान हो वेखे ब्रह्मण्ड, मेहर नज़र उठाईआ। जुग चौकड़ी आपे वंड, जुग जुग वेस वटाईआ। साचे सन्तां सदा संग, सगला संग निभाईआ। नाम अमोला चाढ़े रंग, उतर कदे ना जाईआ। दिवस रैण वज्जे मृदंग, अनहद नाद सुणाईआ। नौ दुआरे वेखे लँघ, दसवें आपणा आसण लाईआ। भरम भुलेखा दूई द्वैती ढाह कंध, कूड़ी क्रिया मेट मिटाईआ। सोहँ ढोला सुणावे छन्द, तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म इक्को खुशी मनाईआ। जुग जन्म दी टुट्टी गंढ, कर्म कांड दा डेरा ढाहीआ। जिन्हां गुरमुखां मिल्या सतिगुर शब्द सूरा सरबँग, सतिगुर दाता बेपरवाहीआ। सो सवाणी आदि जुगादि कदे ना कटे रंड, कन्त कन्तूहल साचा सेज सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक

नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जो गुरमुख लाए आपणे अंग, तिन्हां अन्त कन्त भगवन्त बणा साचे सन्त सचखण्ड दुआरे आपणे चरण रखाईआ।

✪ २६ भाद्रों २०२० बिक्रमी बुढ्ढा सिँघ दे गृह बंडाला ज़िला अमृतसर ✪

मेहर अन्दर तारे प्रभ, जग जीवण जुगत जगत जणाईआ। मेहर अन्दर सतिगुर बन्ने शब्द तग, नाम डोरी तन्द रखाईआ। मेहर अन्दर कूड़ी माया लग्गी बुझाए अग्ग, अमृत मेघ बरसाईआ। मेहर अन्दर नव दुआरे चुकाए हद्द, घर साचा इक समझाईआ। मेहर अन्दर नाद धुन वज्जे अनहद, अनरागी राग गाईआ। मेहर अन्दर पड़दा देवे कज्ज, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। मेहर अन्दर सच दुआरे बहे गज्ज, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। मेहर अन्दर साचा कराए हज्ज, हज़रत इक्को नज़री आईआ। मेहर अन्दर निर्मल जोत जाए जग, प्रकाशवान प्रकाश रूप वटाईआ। मेहर अन्दर जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख एका दए बुझाईआ। मेहर अन्दर सतिगुर स्वामी देव, देव आत्मा वेख वखाइंदा। मेहर अन्दर रस देवे मेव, अनरस लेखा आप चुकाइंदा। मेहर अन्दर किरपा करे अलख अभेव, अगोचर आपणा राह जणाइंदा। मेहर अन्दर गुरमुख लग्गे सेव, सतिगुर सेवा सच दृढ़ाइंदा। मेहर अन्दर घर वखाए इक नेहकेव, निहचल आपणा डेरा लाइंदा। मेहर अन्दर सिफ्त कराए रसना जिह्व, बत्ती दन्द नाल मिलाइंदा। मेहर अन्दर जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अपणा पड़दा आप उठाइंदा। मेहर अन्दर तोल तोले, नाम कंडा हत्थ उठाईआ। मेहर अन्दर तू ही तू धारन बोले, एका एक एक सुणाईआ। मेहर अन्दर वेख वखाए काया चोले, चोला काया आप हंढाईआ। मेहर अन्दर गुरमुख वखाए भाले भोले, भोले भाओ आपणा दरस दिखाईआ। मेहर अन्दर निरगुण हो के वसे कोले, सरगुण दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। मेहर अन्दर काया तत आप वरोले, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। मेहर अन्दर गुरसिख कर प्रगट, प्रगट आपणा नाम जपाइंदा। मेहर अन्दर खोल्हे हट्ट, सच वणजारा वेस वटाइंदा। मेहर अन्दर मार्ग दस्स, रहबर साचा राह वखाइंदा। मेहर अन्दर मेला हस्स हस्स, खुशी ग़मी ना कोए जणाइंदा। मेहर अन्दर होवे वस, आप आपणा माण मिटाइंदा। मेहर अन्दर जन भगत सेज चढ़े नस्स, साचे तख्त डेरा लाइंदा। मेहर अन्दर लेखा चुकाए तत अट्ठ, अप तेज वाए पृथमी आकाश मनमति बुध डेरा ढाइंदा। मेहर अन्दर खेल वखाए घट घट, लख चुरासी रूप धराइंदा। मेहर अन्दर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा राग नाम अलाइंदा। मेहर

अन्दर राग नाम, धुन आत्मक आप जणाईआ। मेहर अन्दर प्याए जाम, अमृत रस इक वखाईआ। मेहर अन्दर मेले राम, सीता सुरती लए प्रनाईआ। मेहर अन्दर घनईया शाम, नाम बंसुरी इक सुणाईआ। मेहर अन्दर ईसा मूसा मुहम्मद दए पैग़ाम, कलमा इक्को इक जणाईआ । मेहर अन्दर नानक निरगुण सरगुण बोले सतिनाम, नाम सति करे पड़्हाईआ। मेहर अन्दर गोबिन्द गुर पुरख अकाल करे प्रणाम, सीस जगदीश इक झुकाईआ। मेहर अन्दर फ़तह डंका बोल जैकार, जै जैकार गया सुणाईआ। मेहर अन्दर निरगुण सरगुण लै अवतार, जुग जुग वेस वटाईआ। मेहर अन्दर गुरमुख गुर सतिगुर जाए तार, तारानहारा दया कमाइंदा। मेहर अन्दर साचे सन्त लए उठाल, आलस निंद्रा दए मिटाईआ। मेहर अन्दर गुरमुख करे साचे भाल, घट घट अन्दर फोल फोलाईआ। मेहर अन्दर गुरसिखां चले नाल, सज्जण सच्चा मीत बण जाईआ। मेहर अन्दर सदा सदा नित नवित्त करे प्रितपाल, हितकारी आपणी दया कमाईआ। मेहर अन्दर सुरती सुरत लए संभाल, मन वासना भज्जे ना उठ उठ वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जिस जन देवे आपणा दान, तिस सच्ची मेहर समझो भगवान, कर मेहर मुहब्बत आपणे नाल रखाईआ।

४३४
१५

२६ भाद्रों २०२० बिक्रमी पाल सिँघ दे गृह बंडाला जिला अमृतसर

जन्म कर्म प्रभ कटे रोग, सतिगुर पूरे वड वड्याईआ। दुःख गंवाए हउमे रोग, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। नाम चुगाए साची चोग, सोहँ हँसा माणक मोती मुख लगाईआ। सच सुणाए इक श्लोक, धुर दा नाम करे पढ़ाईआ। भाग लगाए काया कोट, साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाईआ। शब्द नगारे लाए चोट, धुन अनादी नाद सुणाईआ। पूरब जन्म दा मिटे विजोग, विछोड़ा कोए रहिण ना पाईआ। आत्म परमात्म होवे धुर संजोग, घर मेला सहिज सुभाईआ। पैज स्वारे लोक परलोक, दो जहानां होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा दया कमाईआ। रोग सोग कटे संताप, चिन्ता ग़म रहिण ना पाईआ। जन्म जन्म दे उतारे पाप, पतित पुनीत कराईआ। आत्म परमात्म देवे जाप, साचा सच पढ़ाईआ। बंद कवाड़ी खोल्हे ताक, पड़दा आप उठाईआ। जिउँ भावे तिउँ लवे राख, मेहर नज़र उठाईआ। निज नेत्र खोल्हे इक्को आंख, दोए लोचण बंद रखाईआ। नजरी आए घर प्रतख, स्वच्छ सरूपी रूप वखाईआ । बोले नाम शब्द अलख, इक जैकार लगाईआ। लख चुरासी नालों कर के वक्ख, गुरमुख आपणे रंग रंगाईआ। लहिणा देणा देवे हथ्थो हथ्थ, माणस जन्म मिले वड्याईआ। खेले खेल पुरख समरथ, समरथ आपणा राह वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, हरिजन लेखा दए चुकाईआ। दु:ख रोग जाए नट्ठ, तन माटी रहिण ना पाईआ। सगल विसूरा जाए लथ्थ, चिन्ता ग़म ना कोए सताईआ। काया तपे ना अग्नी मट्ठ, पंज तत लम्बू कोए ना लाईआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत, अमृत मेघ इक बरसाईआ। निझर झिरना देवे रस, बूँद स्वांती आप चुआईआ। मेल मिलाए हरिजन हस्स, घर साचे खुशी वखाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां जगत नताणयां पूरी करे आस, तृष्ना पिछली दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घर निरगुण जोत कर प्रकाश, पुरख अकाल आपणा डेरा लाईआ। साचा डेरा पुरख अकाल, घर मन्दिर आप सुहाइंदा। दीनां बंधप दीन दयाल, दीनन आपणे रंग रंगाइंदा। साचा मार्ग इक सिखाल, राह इक्को इक समझाइंदा। सचखण्ड वेख सच्ची धर्मसाल, गुरसिख तेरा पड़दा लाहइंदा। निरगुण दीप जगे बेमिसाल, नूरो नूर नूर रुशनाइंदा। जिस घर वसण शाह कंगाल, सो दर साहिब सतिगुर साचे भाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। सन्त सुहेले लए उठाल, फड़ बाहों नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणी बूझ बुझाइंदा। हरिजन रूप पुरख नार, सतिगुर वंड ना कोए वंडाईआ। दोहां रखे इक प्यार, दूजी धार ना कोए जणाईआ। साचे सुत बणा दुलार, गोद सुहञ्जणी आप उठाईआ। आपणे रंग रंगे करतार, रंग मजीठी इक चढ़ाईआ। जन्म मरन दा दु:ख नवार, लख चुरासी फंद कटाईआ। लै के जाए धुर दरबार, सचखण्ड दुआरे सच्चा माहीआ। अन्तिम मेला जोती नाल, जोती जोत जोत समाईआ। गुरसिख गुर दोवें मिल के बैठण सच्ची धर्मसाल, जिस दुआरे सूरज चन्द करे ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन साचे लए वर, गुरसिख गुरमुख आपणे घर वसाईआ।

✪ २६ भाद्रों २०२० बिक्रमी तरलोक सिंघ अजमेर कौर दे गृह बंडाला ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर पूरा किरपा कर, जग देवे नाम वड्याईआ। बंद कवाड़ी खोल्ह दर, घर पड़दा दए उठाईआ। निरभउ चुकाए भय डर, पंच विकार ना करे लड़ाईआ। साचे मन्दिर वेखे चढ़, घर घर विच फेरा पाईआ। सुरती शब्दी बन्न्हे लड़, इक्को तन्द रखाईआ। साचा ढोला लए पढ़, मेरा तेरा राग अलाईआ। खेले खेल नरायण नर, नर हरि वड्डा बेपरवाहीआ। हरिजन नुहाए साचे सर, अमृत सरोवर ताल सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख लेखा लेखे पाईआ। सतिगुर सच्चा साचा दीन, इक्को इक जणाइंदा। लेखा चुके लोक तीन, त्रैगुण डेरा ढाइंदा। भेव खुल्हाए

जिउँ जल मीन, जल मछली रूप वटाइंदा। लख चुरासी नालों वक्ख कीन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख आपणी बूझ बुझाइंदा। सतिगुर पूरा धोवे दाग़, दुरमति मैल धवाईआ। घर दीपक जोत जगे चिराग़, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। आत्म परमात्म उपजाए इक वैराग, बिरहों चोट लगाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म बणाए सचा साक, सज्जण इक्को नज़री आईआ। मेल मिलाए अगम्मे घाट, पत्तण बहे सचा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख आपणा नैण खुल्हाईआ। गुरसिख नैण खोल्हे अक्ख, निज नेत्र करे रुशनाईआ। नजरी आए घट घट, घर घर बैठा डेरा लाईआ। स्वांगी हो के स्वांग लए पलट, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। नाम भण्डारा खोल्हे हट्ट, जन भगतां दए वरताईआ। साचे सन्तां देवे निझर रस, घर अमृत मुख चुआईआ। गुरमुखां मेला नट्ठ नट्ठ, दो जहानां वाली दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। गुरसिखां एका देवे नाम वथ, वस्त अमोलक झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे मात जगाईआ। हरिजन साचे जगाए मात, मता आपणे नाल पकाईआ। मेटे रैण अन्धेरी रात, कूड़ अमावस दए गंवाईआ। चरण कँवल बंधाए नात, नाता बिधाता इक समझाईआ। नाम ख़ज़ाना घर वखाए डूंघा खात, काया कवरी भँवरी फोल फोलाईआ। बिन सतिगुर पूरे किसे ना आए हाथ, लभ्भ लभ्भ थक्की सर्ब लोकाईआ। पूरब लहिणा देवे मस्तक माथ, ललाटी हिस्सा आप वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख आपणे रंग रंगाईआ। गुरसिख रखे सतिगुर संग, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग साथ निभाईआ। अंगीकार लाए अंग, आप आपणे अंगण लए बहाईआ। प्रेम प्रीती नाम वजाए सच मृदंग, सच सितार इक हिलाईआ। गुरसिख गीत गौण दा लहिणा चुक्के बत्ती दन्द, रसना जिह्वा नाल ना कोए मिलाईआ। अन्दरे अन्दर आवे परमानंद, निज आत्म करे रसाईआ। जो जन गाए सोहँ ढोला साचा छन्द, तिस शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान, अञ्जील कुरान खाणी बाणी बैठे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख मेला मेले अन्त, अन्तष्करन आपणे लेखे लाईआ।

✪ पहली अस्सू २०२० बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ✪

पुरख अकाल अगम्मी नूर, परवरदिगार तेरी वड्याईआ। समरथ स्वामी सर्ब कल भरपूर, शाह पातशाह सच्ची तेरी शहिनशाहीआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी हाज़र हज़ूर, दो जहान तेरी सरनाईआ। नित नवित्त गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरे मज़दूर, बण सेवक सेव कमाईआ। बोध अगाध नाम निधान मन्त्र सति तेरी तूर, नाद अनाद तेरी शनवाईआ। लख

४३६
१५

चुरासी जीव जंत साध सन्त चरण रेण तेरी धूढ़, ख़ाकी ख़ाक नज़री आईआ। सृष्ट सबाई चार कुण्ट दिसे कूड़, थिर कोए रहिण ना पाईआ। दीन दयाल ठाकर स्वामी तेरा भेव दस्स के गए ज़रूर, ज़ाहर तेरा नाउँ जणाईआ। कलयुग अन्त आए भगवन्त भगवन साचे भगत करे मंज़ूर, मंज़ूरी इक्को घर रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल सच वरताईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे दस्सण, धुर संदेसा हाल जणाईआ। प्रभ सरनाई सारे वसण, सीस सके ना कोए उठाईआ। हुक्मे अन्दर जुग चार नस्सण, चौकड़ी आपणा पन्ध मुकाईआ। नाम निधान सतिगुर स्वामी निरवैर इक्को रटण, सच सच सच दृढ़ाईआ। लोक परलोक वेखण खोल्ह हट्टण, मात पाताल आकाश ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, सच तेरी सरनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे आखण, आख़र आपणा हुक्म जणाईआ। लोकमात सेवा कीती बण बण दासी दासन, शाह पातशाह इक मनाईआ। मण्डल मण्डप पाई रासन, गोपी काहन नाच नचाईआ। निरगुण सरगुण कीता भोग बिलासन, सेज सुहञ्जणी इक हंढाईआ। करदे रहे आपणी पूरी आसण, आसा जगत नाल मिलाईआ। वेख्या खेल पृथ्मी आकासन, गगन मण्डल ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, सच तेरी सरनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर पए बोल, एका नाअरा हक़ लगाईआ। कोई ना तुले तेरे तोल, कंडा तराज़ू हथ्थ किसे ना आईआ। तेरा नाम वजाउँदे गए ढोल, जुग जुग बण के डूम नाईआ। मात दुआर दस्सदे रहे खोल्ह, जीव जुगत जगत कर पढ़ाईआ। तेरे प्रेम अन्दर गए मौल, मौला तेरे विच समाईआ। अन्तिम करके गए कौल, इकरार इक्को इक जणाईआ। प्रगट होवे उपर धौल, सब दा दाता वड वड्याईआ। लख चुरासी लए विरोल, लुक्या कोई रहिण ना पाईआ। हर घट अन्दर सद वसे कोल, विछड़ कदे ना जाईआ। आपणा नाम समझाए इक अनमोल, करता कीमत कोए ना लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव इक चुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे जपदे, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर रहे खपदे, नित नित भज्जण वाहो दाहीआ। बिरहों वैराग अन्दर रहे तपदे, तीर कानी इक लगाईआ। जीव जंत मार्ग रहे दस्सदे, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। आत्म परमात्म नाल गए हस्सदे, घर घर विच ख़ुशी मनाईआ। कूड़ी क्रिया कोलों गए नस्सदे, आपणा पल्लू छुडाईआ। भगत दुआरे गए ढट्ठदे, गुरसिख आपणी गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे सच वर, सच तेरी सरनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे कहिण, नाअरा इक्को इक लगाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सर्ब सुखदाता जन भगतां आए लैण, निरवैर आपणा फेरा पाईआ। चार युग दा चुकावे लहिण देण, सतिजुग

त्रेता द्वापर कलयुग लुक्या कोए रहिण ना पाईआ। अन्तर बाहर बणे साक सैण, सज्जण इक्को नज़री आईआ। मेटे कूड़ी क्रिया अन्धेरी रैण, साचा चन्न इक चमकाईआ। लाड़ी मौत ना खाए डैण, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। डूंघे वहण ना रोड़े वहण, फड़ बाहों बाहर कढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर गए भाख, भाख्या अन्तिम इक सुणाईआ। लिख लिख लेखा गए आख, आख़र इक्को गल्ल जणाईआ। प्रगट होवे सरबगुणतास, दाता दानी वड्डी वड्याईआ। लेखा जाणे पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल खोज खुजाईआ। निरगुण सरगुण पावे रास, घर घर गोपी काहन नचाईआ। साचा नूर करे प्रकाश, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। जन भगतां पूरी करे आस, गुरमुख सज्जण संग रखाईआ। गुरसिखां सुणे दुराडी आवाज़, नेरन नेरा नज़री आईआ। लेखा जाणे ग़रीब निवाज़, ग़रीब निमाणयां होए सहाईआ। लोकमात रखे लाज, अग्गे मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर होए इकट्ठे, दर इक ध्यान लगाईआ। चार कुण्ट कोई ना नट्ठे, दहि दिशा फेरा कोई ना पाईआ। इक्को वार पकाओ साचे मते, मतलब इक्को हल्ल कराईआ। दीन मज़्ह़ब बणाओ भाई भाई सके, ज़ात पात ना कोए लड़ाईआ। खान पान अमृत रूप ऊँच नीच छके, भेव अभेद नजर कोए ना आईआ। पुरख अकाल आत्म परमात्म इक्को रंग रते, दूजा रूप नज़र कोए ना आईआ। वेखो खेल तत अट्ठे, नौ दुआरे डेरा ढाहीआ। दसवें मेल पुरख समरथे, जोती जोत जोत रुशनाईआ। कलयुग जीव रहिण हक़े बक्के, भेव अभेद सके कोए ना पाईआ। शाह सुल्तानां राज राजानां नकेल पाए नक्के, चारों कुण्ट भज्जण वाहो दाहीआ। वरन बरन बिन पुरख अकाल पत कोई ना रखे, गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे रहे सुणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण कलयुग जीवां कोलों सारे अक्के, आपणा पल्लू रहे छुडाईआ । मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ मिलण धक्के, पंडत पांधे बैठे मुख भवाईआ। हरि के नाम पिच्छे मंगदे दाणे फक्के, पैसा पैसा रहे उगराहीआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मिले सच तेरी सरनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कर भरवासा, इक्को इक ओट तकाईआ। तेरा खेल पुरख अबिनाशा, चार युग वेख वखाईआ। हुक्मे अन्दर हो के दासी दासा, बण सेवक सेव कमाईआ। गोपी काहन रचाई रासा, सीता सुरती राम प्रनाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण सुणाई गाथा, अक्खर अक्खर नाल मिलाईआ। भेव चकाउँदे रहे त्रिलोकी नाथा, नाथ अनाथां पड़दा लाहीआ। खेल खलाउँदे रहे काया कासा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा इक जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दोए रहे जोड़, हरि चरण ध्यान लगाईआ। कलयुग अन्तिम ठाकर बौहड़,

ठोकर लग्गे सर्ब लोकाईआ । लग्गी प्रीत निभा तोड़, अद्धविचकार ना कोए तुड़ाईआ। नेत्र खोल्ह वेख ग़ौर, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। कूड़ी क्रिया पावे शोर, वरन बरन करे लड़ाईआ। दहि दिशा दिसे अन्धेरा घोर, तेरा नूर नज़र कोए ना आईआ। लेखा चुके ना मोर तोर, मैं ममता ना कोए गंवाईआ। काम क्रोध देवे ना कोई होड़, लोभ मोह हँकार ना कोए मिटाईआ। तेरा दरस कोए ना पाए बंदी छोड़, लिव छुटकी सर्ब लोकाईआ। साचे भगत तेरी भगती करन बण के चोर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, घर साचे वज्जे वधाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन सलाह, इक्को मता पकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल दा वेला गया आ, अन्तिम लेखा लेखे पाईआ। बीस बीसा नैण रिहा उठा, सदी चौधवीं पड़दा आप चुकाईआ। चार युग दे वेखणहार गवाह, चौकड़ी आपणे विच छुपाईआ। पीर पैगम्बर गुर अवतार जिस हुक्मे अन्दर लए चला, सो चार कुण्ट आपणा फेरा पाईआ। रहबर बण के आए नूरी खुदा, इक ज़हूर करे रुशनाईआ। जोती जामा वेस लए वटा, पंज तत ख़ाक ना कोए हंढ्ढाईआ। शब्दी नाद दए सुणा, ढोला इक्को इक अलाईआ। धुर दा लेखा दए जणा, बोध अगाधा कर पढ़ाईआ। भगत भगवान लए समझा, साची सिख्या इक दरसाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा मार्ग लए चला, चाल निराली इक जणाईआ। दो जहानां पन्ध दए मुका, बण के पांधी फेरा पाईआ। साचा खेल दए वरता, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां सारयां नूं इक्को वार बणाए गवाह, शहादत साचे घर भुगताईआ। अगों कर सके ना कोई नांह, भय सब दे सिर उते छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म इक जणाईआ। गुर अवतार पीर पैग़बर सारे डरदे, सीस सके ना कोए उठाईआ । रसना कहिण प्रभ तेरे बरदे, दर दरवेश अलख जगाईआ। चार युग दी कीती हरदे, अग्गे तेरे हथ्थ फड़ाईआ। जींदे तेरे मरदे, तेरे जीवण मरन विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, सद चलीए सच रज़ाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर डावां डोल, धीरज धीर ना कोए धराईआ। लख चुरासी वेखी फोल, क़ालब सिदक नज़र कोए ना आईआ। साची आवाज़ किसे ना सुणी कान खोल, हँस रूप ना कोए वटाईआ। दीन मज़्हब दी बोली रहे बोल, पुरख अकाल हिरदे ना कोए वसाईआ। बण के चोर डाकू आपणी सुरत सवाणी घर किलीउँ रहे टोल, बाहर जंगल जूह उजाड़ पहाड़ विच धक्का लाईआ। उच्ची कूक कूक रहे बोल, रसना जिह्वा देण दुहाईआ। दरोही खुदाए साडे नहीं कुछ कोल, तेरा तेरी झोली पाईआ। कलयुग जीव होए अनभोल, सुत्यां रैण रही विहाईआ। ना कोई जाणे पंडत पांधा रौल, मुल्लां शेख़ मुसायक कूड़ी तसबी मणका रहे भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे

साचा वर, साहिब आपणा दरस दिखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर हो डरपोक, प्रभ अग्गे वास्ता पाईआ। गिरजिआं विच नज़र ना आए कोई पोप, मस्जिद अमाम रूप ना कोए वटाईआ। शिवदुआले मट्ठ प्या सोग, चिन्ता आपणा रंग रंगाईआ। गुरुदुआर गुर का शब्द गाए ना कोई श्लोक, सोहला हरि ना कोए समझाईआ। दीन दयाल रखे ना कोई ओट, कलम शाही बैठे ध्यान लगाईआ। किसे दर प्रगट दिसे ना निर्मल जोत, जोती नूर ना कोए रुशनाईआ। आपणी आपणी मनसा चुगदे चोग, साचा रस रसन ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मारन आह, नाअरा इक सुणाईआउ। सच महिबूब क्यों बैठा मुख छुपा, नक़ाब पड़दा इक रखाईआ। पारब्रह्म प्रभ क्यों पड़दा रिहा पा, ओढण आपणा दे उठाईआ। सारे निउँ निउँ तक्कण तेरा राह, चरण कँवल ध्यान लगाईआ। कवण वेला प्रभ आए इक मलाह, बेड़ा साचा लए चलाईआ। चार वरनां देवे सच सलाह, शब्दी ढोला इक पढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सब नूं दए समझा, बचया कोए रहिण ना पाईआ। रल मिल सारे बणीए असीं गवाह, ब्यान कलमबंद कराईआ। बिन तेरे भगतां साडी मन्नी ना किसे रज़ा, हुक्म सीस ना कोए रखाईआ। पंज तत काया भरी गुनाह, पतित रूप सर्ब वटाईआ। अन्तिम होए मात फ़नाह, ना सके कोए बचाईआ। साचे गुरमुखां जपया तेरा नाँ, इष्ट इक्को इक रखाईआ। गुरमुख तेरा मंगण चरण ध्यां, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। गुरसिख तैनूं बणाउँदे पिता माँ, बण बालक तेरी गोद सुहाईआ। कर किरपा ठाकर साहिब सतिगुर आ पकड़ सब दी बांह, फड़ बाहों गले लगाईआ। वेला छुपण दा रिहा ना, बीस बीसा रिहा सुणाईआ। सदी चौधवीं नेत्र नैण रही उठा, अक्ख अक्ख नाल मिलाईआ। कवण कूटे मेरा परवरदिगार बेनज़ीर सच तस्वीर लए प्रगटा, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरे दर अलख जगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बोल अलख, अलख अलखना रहे ध्याईआ। अगम्म अथाह हो प्रतख, बेपरवाह रूप वटाईआ। साचा साडा दे हक़, हकीकत वेख थाउँ थाईंआ। भगत भगवान साचे रख, जो तेरे तैनूं रहे ध्याईआ। लख चुरासी जीव जंत राए धर्म अग्गे हक़, होका इक्को वार सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बरो, प्रभ मैं साचा दया कमावांगा। निरगुण हो के सरगुण मूल चुकावांगा। बन्न्ह के सच असूल, पिछला मसूल सर्ब मिटावांगा। नार मिले हरि कन्त कन्तूहल, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ावांगा। धुर दा नाम इक माअकूल, मुहब्बतख़ाने विच रखावांगा। जिस गृह मन्दिर वड़ के कोई ना जाए भूल, सो घर इक्को इक जणावांगा। जिथ्थे ब्रह्मा विष्न शिव धुर फ़रमाना करन क़बूल,

४४०
१५

साचा हुक्म इक वरतावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी कर वखावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बरो करो ध्यान, पुरख अकाल रिहा जणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवान, साचा खेल ख़ालक ख़लक कराईआ। सदी बीसवीं हो प्रधान, सच प्रधानगी इक कमाईआ। गुरमुख गुरसिख सन्त सुहेले भगत भगवन्त कट्ठे करे आण, धुर दा लहिणा झोली पाईआ। चार वरन दी चुक्के आण, अठारां बरन दी लहे मकाण, ज़ात पात मक़बरयां विच दबाईआ। सब दा नग़मा इक्को दस्से कलाम, साचा नाम शब्द बोल बेज़बान, जाबर जबर एका हुक्म जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल आप रचाईआ। साचा खेल करे भगवान, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बरो तुसीं दस्स के आए मेरा निक्का जिहा निशान, अन्त कोई कहिण ना पाईआ। अन्तिम सारे छड्ड के आए मैदान, चरण कँवल लई सरनाईआ। रसना जिह्वा दे के आए ब्यान, कलम शाही लिख के आए निशान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। परम पुरख पतिपरमेश्वर प्रगट होवे निहकलंक बली बलवान, बलधारी आपणा फेरा पाईआ। जिस दे अन्दर हुक्म बाहर चले फ़रमान, फुरो मन्त्र सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी सच कमावांगा। सूरा सरबग्ग नाम अख्वावांगा। दो जहान हो प्रगट, प्रगट आपणी धार वखावांगा। कलयुग कूड़ पसारा मेट हट्ट, सतिजुग साचा राह वखावांगा। जो लेखा साचे ताज उते दित्ता दस्स, तिन्नां चौंहां माण दिवावांगा। माझा मालवा दुआबा जम्मू नहीं एह श्री भगवान दा सच्चा इकट्ठ, जिस अन्दर वड़ के आपणा खेल रचावांगा। इक्की अस्सू पिछला लेखा आवां दस्स, अगला हाल फेर प्रगटावांगा। पट्टेदारी दा सब नूं देवां हक़, जो गुरमुख आपणी चरणीं लावांगा। कर के कौल ना जावां नट्ठ, सचखण्ड दवारिओं मुड़ के आ के आपणी धार वखावांगा। जिस पन्द्रां कत्तक दा दो जहान राह रहे दस्स, तिस पन्द्रां कत्तक नूं गुरमुखो तुहाडी गोद सुहावांगा। हरि का भेव सदा अकथ, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां तुहाडे साह्मणे ब्यान समझावांगा। कोई चुक्क ना सके अगों अक्ख, आख़र आपणा हुक्म वरतावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा लहिणा आप मुकावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सीस झुकाउँदे, बेअन्त तेरी वड्याईआ। मस्कीन अधीन तेरा ढोला गाउँदे, यकीन तेरे चरण रखाईआ। यामबीन तेरा मसला इक पकौंदे, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। दर दरवेश तेरी सेव कमाउँदे, हुक्मरान तेरी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे अग्गे सीस निवाईआ। सीस निवौण दी रहे ना बाकी, हरि बकता आप जणाइंदा। तुहाडी मंज़ूर कीती अन्त आखी, आख़र आपणी कार कराइंदा। पन्द्रां कत्तक नूं

इक्को वार मरावे झाकी, दूजा दर गुर पीर पैगम्बर नज़र कोए ना आइंदा। इक्की अस्सू साचा अवस पावे काठी, कठोर खेल इक कराइंदा। जिस दी किसे ना लभ्भी साची साखी, सो साख्यात वेस वटाइंदा। निक्का स्नेहड़ा देंदा रिहा खाणी बाणी पाती, शास्त्र सिमरत वेद पुराण आपणी मात्र नालों संख असंख हिस्सा आप वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा सब दा वेख वखाइंदा। लेख वखाए लिखणहारा, लिख्त दए जणाईआ। जिस ने कीआ आदि पसारा, सो अन्तिम वेखे बेपरवाहीआ। काग़ज़ कलम शाही दा चुक्के उधारा, उजरत सब दी दए मुकाईआ। जांदी वार निउँ निउँ सारे करन निमस्कारा, सजदा सीस इक्को इक झुकाईआ। तेरा खेल तू ही परवरदिगारा, तेरा ऐब बेऐब नज़र किसे ना आईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर लाशरीक सांझे यारा, सच तौफ़ीक तेरे विच समाईआ। जुग चौकड़ी सब नूं देंदा रिहों लारा, इशारयां नाल हुक्म मनाईआ। सब ने तक्कया सब ने वेख्या पारब्रह्म नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग तूं बणया रिहों कुआरा, आपणा अंग ना किसे छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा दए समझाईआ। कुआरा रिहा मैं चार युग, भेव किसे ना आया। अन्तिम औध गई पुग, लेखा लिख्त लेख जो समझाया। साची धारों आपे उठ, आप आपणा वेस वटाया। प्रेम प्रीती अन्दर तुट्ठ, गोबिन्द इक्को वेख वखाया। जिस नूं मेहरवान हो बणाया पुत्त, सो सपूत गोद टिकाया। अन्तिम उहदे नालों रुस्स, जग मार्ग खेल रचाया। सच सुहाए आपणी रुत्त, रुत्त रुतड़ी आप महकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा खुल्हाया। खोल्हे भेव श्री भगवन्त, गुर अवतारां दए जणाईआ। पिता पूत इक्को मंत, सोहँ राग राग अलाईआ। अंगीकार कर के लाया अंग बण के कन्त, नार इक्को इक वड्याईआ। जिस दी आप बणाई बणत, मात पिता नज़र कोए ना आईआ। जिस दी महिमां कर के गए साध सन्त, पीर पैगम्बर सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा पड़दा दए उठाईआ। कुआरपन दित्ता छड्ड, करया खेल अपार। निरगुण हो के निरगुण ल्या लभ्भ, गोबिन्द मेला मीत मुरार। ना कोई मास नाड़ी हड्ड, ना कोई रक्त बूँद आधार। इक्को नूर जोत प्रकाश, जोती जोत सच प्यार। अन्तिम पुन्नी पूरी आस, आसा विच आप निरँकार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्ची सरकार। बण सुहागी हरि करतार, आपणा भेव जणाईआ। जोती शब्दी सच विहार, घर सच वज्जी वधाईआ। एका मन्दिर पुरख नार, बैठे सेज सुहाईआ। एका गीत रहे उच्चार, मंगल इक्को इक सुणाईआ। एक नाद धुन करन पुकार, इक्को कूक आवाज़ रहे लगाईआ। इक्को मीत मित्र प्यार, इक्को सज्जण नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर

संजोगी खेल कराईआ। धुर संजोगी हो बणया सुहाग, हरि सुहागी सर्ब समझाइंदा। सब दे नालों कीता आप त्याग, बिन गोबिन्द दूजा नज़र कोए ना आइंदा। घर मन्दिर बहि के साचा दीप जगाया चिराग़, तेल बाती संग ना कोए रखाइंदा। इक्को कहिणी गई भाख, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नाम ना कोए जणाइंदा। नाता जुड़या पिता पूत मात, बालक बाला रूप वेख वखाइंदा। दूजी धार पुरख समराथ, नारी कन्त रूप वटाइंदा। तीजी धार खेल तमाश, निरगुण सरगुण आप समझाइंदा। सम्बल नगर वेखो ख़ास, ख़ालस आपणा नूर प्रगटाइंदा। मेटे रैण अन्धेरी रात, साचा सति चन्द चमकाइंदा। पारब्रह्म दी नज़र ना आए ज़ात, वरन बरन ना कोए समझाइंदा। सच सुणाए इक्को गाथ, सोहँ ढोला आप पढ़ाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर लहिणा देणा वेखो मस्तक माथ, पूरब पड़दा आप चुकाइंदा। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त दी करो जाच, पड़ताल साचा हुक्म सुणाइंदा। हिरदे हरि जू कवण रिहा वाच, वास्ता पुरख अकाल नाल रखाइंदा। पीर पैगम्बर गुर अवतार चारों कुण्ट फिर फिर अन्तिम देण आख, आख़र सच सच सुणाईआ। प्रभू किसे दा खुलया नहीं वेख्या ताक, कलयुग सन्त देण दुहाईआ। बाहरों काया माटी लए पोच पाच, अन्दरों नार कमजात रूप वटाईआ। अट्ठे पहर रहिण उदास, काम वासना हवस वधाईआ। अन्त कहिण साडे अन्दर जोत प्रकाश, सति पुरख साडे अन्दर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा घर घर, घर घर लेखा रिहा चुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन हाए, हौका तेरा नाम लगाईआ। बौहड़ी बौहड़ी मार्ग गए भुलाए, दुहाई दुहाई तेरे नाम खुदाईआ। साचा नूर किसे नज़र ना आए, निज मन्दिर चढ़ के दरस कोए ना पाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान गुर गुर बाणी पढ़ पढ़ रहे सुणाए, बाण निराला तीर ना कोए लगाईआ । बिन करनीउँ बिन तरनीउँ बिन प्रभ दी सरनीउँ आपणी जड़ रहे उखड़ाए, बूटा फेर कोई ना लाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सन्त सुहेले इक्को पुरख अकाल रहे मनाए, दूजा नज़र कोए ना आईआ। कर किरपा जिन्हां आपणा भेव खुल्हाए, पड़दा दूई द्वैत रहिण ना पाईआ। तिन्हां अक्खर इक समझाए, निंमां निंमां मेघ बरसाए, प्रेम प्रीती इक्को इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सब दा लहिणा आप मुकाईआ। सब दा लहिणा मुक्के मुक्के कलेश, कलकाती रहिण ना पाईआ। सब दा देणा देवे दर दर वेखे दरवेश, घर घर अलख जगाईआ। नेत्र रोवे सहँसर मुख बोले शेश, शहिनशाह तेरी इक सरनाईआ। तुध बिन कोए ना माणे मेरी सेज, सुंञीं दिसे जगत लोकाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा कोई ना दिसे तेज, तिक्खी धार ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे सच वर, सच तेरी सरनाईआ। जिस सरनाई तक्की एक, एकँकार आप जणाइंदा।

तिस दो जहानां देवां टेक, एथे ओथे आप बचाइंदा। त्रैगुण ना लावे सेक, अग्नी हवन ना कोए तपाइंदा। कूड़ा करे ना कोई भेख, मार्ग सच सच समझाइंदा । अन्त वखावे आपणा देस, जिस घर साचा आसण लाइंदा। जुग चौकड़ी सदा रहे हमेश, शाह पातशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म आपणे हथ्थ रखाइंदा। साचा हुक्म रखे हथ्थ, दूसर डोर ना कोए फड़ाईआ । प्रगट हो पुरख समरथ, अगम्मड़ी कार कमाईआ। पिछला लहिणा देणा करे भट्ठ, अग्गे मार्ग इक समझाईआ। कूड़ी क्रिया बुरज जावे ढट्ठ, माया ममता हउमें हंगता गढ़ नज़र कोए ना आईआ। सति सरूप शाहो भूप इक्को देवे ब्रह्म मत्त, पारब्रह्म करे नाम पढ़ाईआ। बीज बीजे आपणे वत, बण किरसाणा हल्ल चलाईआ। अन्तिम वेखे पत फुल डाली रंगे आपणी रत, रती रत नाल रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा आप जणाईआ। साचा लेखा जाणे बेपरवाह, बेपरवाही विच समाइंदा। शाह भबीखण लहिणा देवे चुका, पिछला मूल मूल मुकाइंदा। आपणी हथ्थीं आपणी वस्त देवे आ, निउँ निउँ सीस जगदीश झुकाइंदा। एथे ओथे दो जहान तेरा संदेसा प्रभ सतिगुर दित्ता सुणा, बण सेवक सेव कमाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण तेरे दर ते वेख चढ़े चा, चाउ घनेरा इक जणाइंदा। कलयुग अन्त बणिउँ आप मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा। फोल फोलाए थल अस्गाह, उच्चे टिल्ले पर्बत खोज खोजाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी दात पुरख समराथ, तेरी भेंटा अन्त चढ़ाइंदा। तेरी भेंटा अन्त चढ़ावांगा । आपणा लेखा तेरे कोलों मुकावांगा। त्रेता युग दा चेता फेर करावांगा। नेता इक्को राम समझावांगा। अगेता पछेता सब दा मेल मिलावांगा । जो नेत्र आ के पेखा, सो बिन रसना बोल समझावांगा। पुरख अकाल दीन दयाल कलयुग अन्तिम सब तों खोह ल्या आपणा ठेका, बोली उते गुरमुख किसे हट्ट ना कदी विकावांगा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां विष्न ब्रह्मा शिव लख चुरासी जीव जंत साध सन्त इक्को नज़री आए नेता, हुक्म इक्को इक दृढ़ावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सद वसीए ठाकर तेरे घर, घर मिले इक वड्याईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सब दी कीती करनी लए हर, अन्तिम पूरा कर वर, प्रगट हो नरायण नर, निरभउ चुका भय डर, भाउ इक्को इक सर्ब जणाईआ।

४४४ १५

✪ २ अस्सू २०२० बिक्रमी हरि भगत दुआर जेठूवाल ✪

श्री भगवान सच भगत, धुर संदेस जणाईआ। अन्तर आत्म ब्रह्ममत्त, पारब्रह्म इक पढ़ाईआ। सच प्रीती साचा नत, बिधाता आप बंधाईआ। लख चुरासी विचों कर के वक्ख, भेव अभेद खुल्हाईआ। सन्त सुहेले खोल्ह अक्ख, निज नेत्र करे रुशनाईआ। धीरज सन्तोख देवे जत, मेहर नज़र उठाईआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत्त, रत्ती रत्त आपणे रंग रंगाईआ। नाम जणाए इक अलख, इक्को नाद सुणाईआ। जुग जुग देवे सब दा हक़, हरि हकीकत वेख वखाईआ। पुरख अगम्मा मार्ग दस्स, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। परमात्म हो के आत्म वस, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत दए वड्याईआ। श्री भगवान सच उपदेश, जन भगतां आप जणाइंदा। निज घर वासी निज गृह लए वेख, निज नेत्र पड़दा लाहइंदा। सति सरूपी सच जणाए आपणा भेख, भेव अभेद खुल्हाइंदा । लेखा जाणे पूरब मस्तक लेख, जन्म अजन्म खोज खोजाइंदा। सतिगुर हो के करे हेत, सति स्वामी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाइंदा। भगत भगवान साची रीत, जुग चौकड़ी आप चलाईआ। करे खेल साहिब अनडीठ, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। लेखा तोड़ मन्दिर मसीत, काया काअबा इक समझाईआ। जिस घर वसे प्रभू अतीत, त्रैगुण देवे डेरा ढाहीआ । दिवस रैण परखे नीत, नीतीवान इक अख्वाईआ। कर किरपा काया करे ठंडी सीत, अमृत मेघ इक बरसाईआ। सदा सुहेला वसे चीत, इक इकेला बेपरवाहीआ। आत्म परमात्म सच सुणाए गीत, सोहँ ढोला राग अलाईआ। माणस जन्म जाणा जीत, साची सिख्या करे पढ़ाईआ । अन्तिम निभे इक प्रीत, दूजा संग ना कोए जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन देवे हरि वड्याईआ। श्री भगवान भगतां जोग, हरी हरि नाम इक जणाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म देवे साची चोग, रस इक्को इक वखाइंदा। सुरती शब्दी धुर संजोग, हरि संजोगी मेल मिलाइंदा। जन्म जन्म दा कट रोग, दुरमति मैल धवाइंदा। गृह मन्दिर देवे दरस अमोघ, हरिजन हरस आप मिटाइंदा। नाम सुणाए अगम्म श्लोक, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। जिस दर्शन नूं गुरमुख रहे लोच, सो लोचण आप खुल्हाइंदा। पुरख अकाल बख्शे इक्को ओट, चरण कँवल समझाइंदा। हरिजन तेरे अन्दर पुरख स्वामी रखी जोत, नर निरँकार डगमगाइंदा। ना कोई वरन ना कोई गोत, ज़ात पात ना कोए समझाइंदा। बैठा रहे सदा ख़ामोश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाइंदा। जन भगतां खेल दस्से भगवान, धुर दी धार आप समझाईआ। निरगुण सरगुण मेले आण, लोकमात खुशी मनाईआ। आत्म परमात्म कर परवान, धुर दा लेखा झोली पाईआ । सच वखाए इक मकान,

मन्दिर इक्को इक वड्याईआ। जिस गृह साचा नाद वज्जे सच्ची धुन्कान, आत्मक राग इक सुणाईआ। लिव छुटके ना दो जहान, नेत्र लोचण नैण इष्ट गुरदेव इक्को नज़री आईआ। तिस गुरमुख मिले माण, अभिमान रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख आपणा नाम बुझाईआ। गुरमुख भगत जन इक्को रंग, हरि करता आप रंगाइंदा। आत्म सेज सुहा सच पलँघ, सच सिँघासण डेरा लाइंदा। अनहद नाद वजाए अगम्मी मृदंग, ताल तलवाड़ा नज़र किसे ना आइंदा। निरगुण जोत चाढ़े चन्द, सच प्रकाश इक वखाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा घर घर विच गाए छन्द, साचा सोहला इक समझाइंदा। गुरमुख वेख अन्दर लँघ, श्री भगवान तेरा राह तकाइंदा। साचे मन्दिर वेख अनन्द, अनन्द अनन्द विचों प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। गुरमुख वेख आत्म रस, घर साचे खुशी मनाईआ। पारब्रह्म मैं तेरे वस, प्रभ तेरी ओट रखाईआ। साचा मार्ग जगत दस्स, जीवण जुगत जणाईआ। लख चुरासी गए फस, बंदी छोड़ नज़र कोए ना आईआ। जन्म जन्म पन्ध मुकया ना नट्ठ नट्ठ, बणे रहे पांधी राहीआ। साचा मिल्या ना कोई हट्ट, वस्त अमोलक झोली कोए ना पाईआ। दूई द्वैती कोई ना मेटे फट्ट, पट्टी नाम ना कोए बंधाईआ। तेरा भेव ना जाणे मित गत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची बख्शे इक सरनाईआ। साचे भगत सुण कर ध्यान, सो साहिब आप जणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग देवणहार ज्ञान, बोध अगाध अक्खर इक पढ़ाइंदा। वखावणहारा सच निशान, सचखण्ड दुआर एकँकार धर्म निशान इक झुलाइंदा। पावणहारा जन्म कर्म दी सारा, निहकर्मी आपणा कर्म कमाइंदा। गुरमुख वेखे सच दुलारा, मेहर नज़र नज़र उठाइंदा। लख चुरासी विचों कर प्यारा, आप आपणा भेव खुल्हाइंदा। घर दीआ बाती कमलापाती कर उज्यारा, महल अटल इक रुशनाइंदा। अमृत आत्म ठंडी ठारा, बूँद स्वांती मुख चुआइंदा। शब्द अनाद सच्ची धुनकारा, धुन आत्मक राग अल्हाइंदा। चरण कँवल देवे सहारा, चरण चरणोदक मुख चुआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान आपणे घर मिलाइंदा। भगत भगवान घर मिलाप, मेला हरि समझाईआ। पूरब मेट रोग संताप, अग्गे चिन्ता ग़म रहिण ना पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा सच्चा जाप, सोहँ ढोला इक सुणाईआ। नाता जुड़े पिता बाप, पूत सपूता गोद उठाईआ। जिउँ भावे तिउँ लए राख, हरि बख्शे चरण सरनाईआ। आपणे वेखण दी खोल्हे अक्ख, दोए लोचण बंद कराईआ। घर वखाए हस्स हस्स, हरि मन्दिर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग देवे दस्स, भगत भगतां नाल मिलाईआ। साचे भगत तेरा भगत प्यार, हरि भगवन आप जणाईआ। हर घट वेख रूप निराकार, निरगुण बैठा आसण

लाईआ। अट्ठे पहर दिवस रैण घड़ी पल करे पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। कवण वेला प्रभ मिले मीत मुरार, जगत विछोड़ा दए कटाईआ। अबिनाशी करता दए सहार, साची सिख्या इक समझाईआ। तेरा मेला विच संसार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। आत्म परमात्म मेल अगम्म, हरि करता आप कराइंदा। करे कराए आपणा कम्म, दूजा संग ना कोए रखाइंदा। जुग चौकड़ी बेड़ा बन्न्ह, जन भगतां माण दिवाइंदा। वस्त अमोलक नाम धन, सच ख़ज़ीना झोली पाइंदा। एका राग सुणाए कन्न, नाम निधान इक दृढ़ाइंदा। मन वासना मेटे मन, मन का मणका आप भवाइंदा। साचा बेड़ा देवे बन्न्ह, शौह दरया ना कोए रुढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगती जोड़ जुड़ाइंदा। भगत भगत प्रभ जोड़ी जोड़, जुगती जगत जणाईआ। प्रभ बिन नज़र ना आए कोई होर, दूसर ध्यान ना कोए रखाईआ। जगत विकार ना पावे शोर, शरअ करे ना कोए लड़ाईआ। पुरख अकाल हथ्थ सब दी डोर, तन्दी तन्द आप हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। साचा खेल करे करतार, करता आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख्या जगत संसार, वरन बरन खोज खुजाईआ। रहबर बण गुर अवतार, पीर पैगम्बर मार्ग गए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा रिहा मुकाईआ। सब दा लेखा जाणे जाणीजाण, जानणहारा आप अख्वाइंदा। कलयुग अन्त मार ध्यान, दो जहान वेख वखाइंदा। चार कुण्ट दहि दिशा खेल महान, ख़ालक ख़लक रूप दरसाइंदा। वरन बरन ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक नेत्र नैण सर्ब कुरलाण, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। श्री भगवान हो मेहरवान, अबिनाशी करता आपणी दया कमाइंदा। साची सिख्या देवे आण, चार वरन आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्दर बाहर जगत प्यार, साची धार वखाइंदा। आत्म परमात्म अन्तर प्यार, घट घट आप जणाईआ। जगत लेखा विच संसार, जगजीवण दाता दए जणाईआ। नारी पुरख तत आधार, पंज तत कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप रचाईआ। पंज तत नाता जगत जोत, हरि सतिगुर खेल रचाइंदा। लेखा जाण काया कोट, बंक दुआर गढ़ सुहाइंदा। सच जणाई इक श्लोक, साचा राग अल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप प्रगटाइंदा। आपणा भेव दस्से भगवान, प्रभ आपणी दया कमाईआ। जो जन गुरमुख मेले आण, तिन्हां आपणा रंग रंगाईआ। दूजा नाम दे ज्ञान, सिख्या सच करे पढ़ाईआ। जीव आत्म आत्म जीव जगदीश ब्रह्म पारब्रह्म प्रभ देवे इक निशान, सच निशाना इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, ततव तत करे कुड़माईआ।

ततव तत कर कुड़माई, जग रचना रूप जणाइंदा। गुरमुख गुरमुख मेला चाईं चाईं, चाउ घनेरा इक समझाइंदा। प्रेम प्रीती अन्दर पकड़े बांहीं, गुर शब्द विचोला वेख वखाइंदा। ना कोई झीवर छींबा नाई, डूम मरासी नज़र कोए ना आइंदा। सचखण्ड दुआरे मेल मिलावा सहिज सुभाई, करता कीमत कोए ना लाइंदा। दोहां घरां वज्जे वधाई, घर सज्जण इक्को नज़री आइंदा। मेल मिलावा चाईं चाईं, चाउ घनेरा इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगत नाल रलाइंदा। भगत भगतां कर प्यार, हरि भगवन बूझ बुझाईआ। सच प्रीती अन्दर सच संसार, साची रीती इक दृढ़ाईआ। जोड़ी जोड़ अगम्म अपार, कुदरत कादर दए समझाईआ। नार कन्त इक आधार, जीव जंत मिले वड्याईआ। गुर अवतार गए पुकार, साध सन्त देण दुहाईआ। जिन्हां मिले पहलों आप निरँकार, सो सुहागण रूप वटाईआ। तिस दा लेखा चुक्के लांव चार, जो गुरमुख चौथे पद समाईआ। तिन्हां मेला हरि करतार, करता आपणे अंग लगाईआ। गुरमुख सखीआँ मिल मिल गावण मंगलाचार, गीत गोबिन्द इक अलाईआ। गुरमुख गुरमुख जोड़ी सदा रहे जुग चार, सतिगुर आपणे संग रखाईआ। एथे ओथे दो जहानां लग्गी प्रीती निभे नाल, अद्धविचकार ना कोए तुड़ाईआ। सतिगुरू दुआरे ना कोई शाह ना कंगाल, इक्को रूप सर्ब समझाईआ। शब्द विचोला बण दलाल, सौहरे पेईए सब दे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तिन्हां गुरमुखां उते होए आप दयाल, जिन्हां आपणे दर करे कुड़माईआ।

✪ ३ अस्सू २०२० बिक्रमी फ़ौजा सिँघ दे गृह सिरहाली ज़िला अमृतसर ✪

सतिगुर पूरा सदा दयाल, जुग जुग दया कमाइंदा। सन्त सुहेले गुरमुख लाल, गुरसिख गुर गुर गोद उठाइंदा। त्रैगुण माया कूड़ी क्रिया तोड़ जंजाल, जीवण जुगत इक जणाइंदा। साचा मन्दिर काया बंक सच्ची धर्मसाल, घर घर विच पड़दा लाहइंदा। दीआ बाती कमलापाती जोत जगाए बेमिसाल, नूर नुराना डगमगाइंदा। शब्द सरूपी बण दलाल, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। लहिणा देणा चुकाए काल महाकाल, मेहरवान आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, सतिगुर साहिब इक अख्वाइंदा। सतिगुर पूरा हरि सच्चा ठाकर, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। पार कराए डूंघे सागर, शहु दरया ना कोए रुढ़ाईआ। दर घर साचे देवे आदर, दरगाह साची होए सहाईआ। खेले खेल करीम कादर, करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर,

तिस अन्तर आत्म बूझ बुझाईआ। अन्तर आत्म खोल्हे भेत, अनभव आपणी दया कमाइंदा। आत्म परमात्म कर कर हेत, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रंग चढ़ाइंदा। नज़री आए नेतन नेत, निज नेत्र नैण अक्ख खुल्हाइंदा। निरगुण सरगुण आप जणाए आपणी खेड, बण खिलाड़ी वेख वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर नित नवित्त लोकमात भेज, नाम संदेसा इक सुणाइंदा। हर घट अन्दर बण स्वामी माणे सेज, सच सिँघासण डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, गुरमुख गुर गुर बूझ बुझाइंदा। गुरसिख मेला सच दुआर, दर घर साचे वज्जे वधाईआ। किरपा करे गुर करतार, करता कीमत आपे पाईआ। जन्म जन्म दा लहिणा पूरब देणा देवे विच संसार, लेखा लेखे विच लगाईआ। जिउँ भावे तिउँ लए तार, तारनहार वड वड्याईआ। गुरसिख गुरमुख हरिजन हरिभगत सोहण इक दुआर, सच दुआरे वज्जे नाम वधाईआ। अन्तर बाहर गुप्त ज़ाहर इक प्यार, दूजी धार नज़र कोए ना आईआ । साहिब सतिगुर शब्द गुरदेव आदि जुगादि सांझा यार, वरन गोत ज़ात पात दीन मज़्हब विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सन्त सुहेले गुर चेले मेल मिलाईआ। सन्त सुहेला अन्तर मेला, परम पुरख प्रभ भेव चुकाईआ। घर ठाकर मिले सज्जण सुहेला, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। आप सुहाए आपणा वेला, वार थित घड़ी पल वंड ना कोए वंडाईआ। वसणहारा धाम नवेला, निरगुण सरगुण पड़दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख गुरसिख गुर मन्त्र बूझ बुझाईआ।

३ अस्सू २०२० बिक्रमी गुरबचन सिँघ, गुरदीप सिँघ दे गृह सरहाली ज़िला अमृतसर

नैण प्राण दोवें होण परवान, परवानगी इक्को घर वखाईआ। काया सीतल विच जहान, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। सतिगुर पूरा होवे मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। मन आत्मा देवे इक ज्ञान, दोहां सच समझाईआ। चरण कँवल रखणा हरि ध्यान, दूजी ओट ना कोए सरनाईआ। जन्म मरन चुक्के काण, लख चुरासी फंद कटाईआ। देवे दरस अन्तिम आण, अन्तर आत्मा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, नेत्र नैण नैण करे रुशनाईआ। नेत्र नैण प्राण सतिगुर लेखे, पुराणी वस्त नज़र कोए ना आईआ। माणस जन्म जो जन रहे भरम भुलेखे, तिन्हां राए धर्म दए सज़ाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल हर घट अन्दर बैठा वेखे, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। जिन्हां श्री भगवान रख्या चेते, तिन्हां सुरती चेतन दए कराईआ। अन्तिम काया लाए आपणे लेखे, पंज तत डेरा झूठा ढाहीआ। आत्म

आपणा परमात्म वेखे, ब्रह्म पारब्रह्म समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, अन्तिम लहिणा दए चुकाईआ। अन्तिम लहिणा चुक्के मात, जगत तत नज़र ना आईआ। मेल मिलाए इक इकांत, इक इकल्ला फेरा पाईआ। पिछली मेटे अन्धेरी रात, अग्गे निरगुण नूर जोत चन्द चमकाईआ। वस्त अमोलक देवे दात, नाम भण्डारा झोली पाईआ। चरण प्रीती बंधे नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। सज्जण सुहेला बणे साक, साचा संग निभाईआ। बजर कपाटी खोल्हे ताक, दूई द्वैत पड़दा दए उठाईआ। जो गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत साचे सन्त प्रभ मिलण दी रख के बैठे आस, तिन्हां सास ग्रास नैण प्राण काया तत निशान जीव आत्म परमात्म पारब्रह्म प्रभ आपणे लेखे लाईआ।

✪ ३ अस्सू २०२० बिक्रमी मग्घर सिँघ, गुरदास सिँघ दे गृह पिण्ड शाहवाला ज़िला फिरोज़पुर ✪

सतिगुर करता आदि जुगादि, जुग चौकड़ी दया कमाइंदा। सन्त सुहेले सज्जण लाध, गुरमुख आपणा मेल मिलाइंदा। भेव चुकाए ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड आपणा रंग रंगाइंदा। शब्द अगम्म वजाए नाद, धुन आत्मक राग सुणाइंदा। अन्तर बाहर रखे लाज, दो जहानां वेख वखाइंदा। सुरती शब्दी रच रच काज, अनन्द इक्को घर समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। सतिगुर पूरा दो जहान, निरगुण सरगुण दया कमाईआ। आत्म अन्तर देवणहारा ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या करे नाम पढ़ाईआ। सच दुआरे वखाए इक निशान, धर्म निशाना इक झुलाईआ। काया मन्दिर अन्दर खेल करे महान, पंज तत देवणहार वड्याईआ। सच दुआरा खोल्ह दुकान, नाम वणजारा इक बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। सतिगुर पूरा दीन दयाल, दयानिध वड वड्याईआ। सन्त सुहेले वेखे लाल, लालन आपणे रंग रंगाईआ। जोती जलवा नूर जलाल, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। अमृत आत्म जाम प्याल, तृष्णा भुक्ख मिटाईआ। कर प्रकाश काया माटी खाल, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जीवण जुगत दए समझाईआ। सदा सुहेला वसे नाल, विछड़ कदे ना जाईआ। सुणनहार मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। लख चुरासी विचों भाल, गुरमुख गुर गुर लए जगाईआ। शब्द अगम्म वजाए ताल, तन्दी तन्द सतार हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणा भेव चुकाईआ। सतिगुर पूरा गहर गम्भीर, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। अमृत बख्शे एका नीर, अमृत झिरना सच झिराईआ। बजर कपाटी देवे चीर, पड़दा दूई द्वैत उठाईआ। बदलणहार सदा तकदीर, तदबीर आपणी दए समझाईआ। तोड़नहारा शरअ ज़ंजीर, शरीअत

इक्को इक वखाईआ। करे खेल बेनज़ीर, नज़र नज़र नाल मिलाईआ। सति सरूप जणाए इक तस्वीर, नूर ज़हूर करे रुशनाईआ। हउमे हंगता कढ्ढे पीड़, माया ममता डेरा ढाहीआ। चोटी चाढ़े फड़ अख़ीर, आखर आपणा मेल मिलाईआ। शाहो भूप राज राजान वड पीरन पीर, शाह पातशाह आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सतिगुर वड्डा वड वड्याईआ। सतिगुर पूरा सच्चा ठाकर, हरि करता आपणी खेल कराइंदा। भाग लगाए काया गागर, ततव तत आपणा नूर चमकाइंदा। लेखा जाणे डूंग्घे सागर, गहर गम्भीर फोल फुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर मन्दिर इक वखाइंदा। सतिगुर पूरा दर्द दुःख भय भंजन, भव सागर पार कराईआ। नेत्र पाए नाम निधान अंजन, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। दाता दानी निरवैर सृष्ट सबाई बण के सज्जण, लख चुरासी वेखे थाउँ थाईंआ। गुरमुख विरले सन्त सुहेले अन्तर आत्म कराए आपणा मजन, दुरमति मैल धवाईआ। काया माटी करे कंचन, सोइना आपणा रंग चढ़ाईआ। बोध अगाध सुणाए बचन, शब्दी शब्द राग अलाईआ। हर घट वासी हरिजन मन्दिर आए वसण, बंक दुआरा इक्को सोभा पाईआ। साचा मार्ग आए दस्सण, दहि दिशा हुक्म वरताईआ। आत्म परमात्म मिल के आए हस्सण, हँसमुख आपणी खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिगुर दाता बेपरवाहीआ। सतिगुर दाता हरि गोबिन्द, बेपरवाह नज़री आइंदा। आदि जुगादि ना कोई चिन्द, चिन्ता चिखा ना कोए तपाइंदा। वेखणहारा सागर सिन्ध, दो जहान अन्दर बाहर भेव चुकाइंदा। हरि सन्त बणाए आपणी बिंद, गुरमुख गुर गुर गोद उठाइंदा। दीन दयाल बण बख्शिंद, मेहर नज़र नज़र तकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि का नाउँ इक प्रगटाइंदा। सतिगुर पूरा बोध अगाध, देवणहार नाम वड्याईआ। वसणहार ब्रह्म ब्रह्माद, लख चुरासी रिहा समाईआ। वजावणहारा अगम्मी नाद, धुनी धुन करे शनवाईआ। निरगुण सरगुण रच रच काज, जुग जुग वेखे चाईं चाईंआ। आत्म परमात्म इक समाज, सच सृष्टी विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नित नवित्त सदा रहे विस्माद, बिस्मिल आपणा रूप वटाईआ। सतिगुर पूरा सर्ब गुणवन्त, हरि करता इक अख्वाइंदा। खेले खेल जुगा जगंत, जुग चौकड़ी वेख वखाइंदा। हरिजन मेला नार कन्त, सेज सुहञ्जणी सोभा पाइंदा। नाम निरवैर मणीआ मंत, नमो सति आप समझाइंदा। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक समझाइंदा। हरि का भेव ना जाणे कोई पंडत, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान सिफ्त सालाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन आपणा मेल मिलाइंदा।

सतिगुर पूरा मेले मेल, मिलणी जगदीश आप कराईआ। दीआ बाती डगमगाए बिन बाती तेल, घर साचे करे रुशनाईआ। नज़री आए इक सुहेल, अगम्म अगम्मड़ा नूर खुदाईआ। आपे जाणे आपणा सुहञ्जणा वेल, वार थित समझ सके कोए ना राईआ। भेव चुकाए गुरु गुर चेल, चेला गुर इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची वस्त आप वरताईआ। सतिगुर पूरा देवे दात, नाम भण्डारा इक वरताइंदा। चरण प्रीती बंधे नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। मेटे रैण अन्धेरी रात, अन्तर साचा चन्द नूर चमकाइंदा। शब्दी शब्द सुणाए गाथ, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। लहिणा देणा चुकाए पूरब मस्तक माथ, मेहरवान मेहर नज़र उठाइंदा। करे खेल पुरख समराथ, समरथ स्वामी आपणी कार कमाइंदा। होए सहाई अनाथां नाथ, दीनन आपणे गले लगाइंदा। आत्म परमात्म साची दस्से पूजा पाठ, सिमरन इक्को इक समझाइंदा। बिन रसना जिह्वा श्री भगवान लओ रट, रट्टा बत्ती दन्द चुकाइंदा। हरि जू हिरदे जाए वस, हरि मन्दिर आप सुहाइंदा। करे प्रकाश कोटन रवि ससि, सूरज चन्द नज़र कोए ना आइंदा। साचा मार्ग इक्को देवे दस्स, रहबर इक्को नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। सतिगुर पूरा नेत्र पेख, गुरमुख देवणहार वड्याईआ। आत्म परमात्म करे हेत, प्रेम प्रीती इक समझाईआ। रुत्त सुहञ्जणी रहे सदा चेत, खिज़ां रूप ना कोए वटाईआ। सच सुनेहड़ा देवे भेज, नाउँ निरँकारा आप सुणाईआ। आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म माणे साची सेज, सेज सुहञ्जणी इक्को सोभा पाईआ। जोती नूर चमके तेज, दमक इक्को इक रुशनाईआ। सति सरूपी धारे भेख, भेखाधारी वेस वटाईआ। रूप रंग ना कोए रेख, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। जन भगतां नाल रिहा खेड, साची खेल आप समझाईआ। निझर झिरना अमिउँ रस बरखे मेघ, अग्नी तत गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिगुर पूरा शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। सतिगुर पूरा शहिनशाह, दीन दयाल हरि अख्वाइंदा। भगत भगवन्त लए जगा, जागरत जोत डगमगाइंदा। सन्त सुहेले लए उठा, शब्द हुलारा इक वखाइंदा। गुरमुख गोझ दए खुल्हा, दूई द्वैती पढ़दा लाहइंदा। गुरसिख नाम निधान झोली पा, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। मेल मिलावा सहिज सुभा, औझड़ राह ना कोए वखाइंदा। मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र आप उठा, निज नेत्र नैण खुलाइंदा। जन्म कर्म दे विछड़े लए मिला, पूरब लहिणा झोली पाइंदा। माणस जन्म लेखे लए लगा, मानुख आपणे रंग रंगाइंदा। राए धर्म दा कटे फाह, चित्रगुप्त लेख ना कोए जणाइंदा। लाड़ी मौत ना लए प्रना, दो जहानां पन्ध मुकाइंदा। अन्तिम मेला लए करा, जोती जोत जोत समाइंदा। सचखण्ड दुआरे लै के जाए आ, आप आपणा घर

सुहाइंदा। भगत भगवान वसण इक्को थाँ, थान थनंतर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, जन भगतां बणे पिता माँ, आदि जुगादि जुग चौकड़ी हरिजन हरि जू हरि हरि आपणी गोद उठाइंदा।

३ अस्सू २०२० बिक्रमी करनैल सिंघ नछत्तर सिंघ दे गृह शाह वाला ज़िला फ़िरोज़पुर

तख्त निवासी सच दरबार, शाह पातशाह तेरी वड्याईआ। सचखण्ड सोभे बंक दुआर, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। सो पुरख निरँजण खेल करे ठांडे दरबार, हरि पुरख निरँजण दाता वड वड्याईआ। एकँकारा खोल्ह किवाड़, आदि निरँजण निरगुण जोत करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता पावे सार, श्री भगवान वेखे चाईं चाईंआ। पारब्रह्म प्रभ ख़बरदार, बेख़बर ख़बर आप सुणाईआ। खेले खेल परवरदिगार, बेपरवाह अगम्म अथाहीआ। मुकामे हक़ नूर उज्यार, जलवा इक्को इक रुशनाईआ। करे कराए करनेहार, हरि करता वड वड्याईआ। जोती जाता पुरख बिधाता इक इकल्ला एकँकार, अक्ल कलधारी आपणा हुक्म वरताईआ। भूपत भूप राज राजान शाह सुल्तान, दर दरवेश दर घर साचे सोभा पाईआ। अगम्म अगोचर अलख अथाह बोल जैकार, नाउँ निरँकारा इक दृढ़ाईआ। साचा हुक्म धुर संदेसा देवे एका वार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी वड वड्याईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अकाल, इक इकल्ला खेल खलाइंदा। शाह पातशाह दीन दयाल, दयानिध ठाकर स्वामी निहकर्मी आपणा कर्म कमाइंदा। जुग चौकड़ी खेले खेल आप कमाल, दो जहान श्री भगवान ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी धार चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा इक सुहाइंदा। सच दुआरा सोभावन्त, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। पुरख अबिनाशी महिमा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आईआ। करे खेल आदि अन्त जुगा जुगन्त, जुग चौकड़ी आपणा बन्धन पाईआ। नाम निधान मणीआ मंत, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, मध आपणा वेस वटाईआ। सेज हंढ्राए नार कन्त, लख चुरासी डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी दरगाह साची सोभा पाईआ। दरगाह साची सच अस्थान, सति स्वामी आप सुहाइंदा। सो पुरख निरँजण मेहरवान, मेहर नज़र बेनज़ीर आप उठाइंदा । देवणहारा धुर फ़रमाण, सति संदेसा कलमा कायनात सुणाइंदा। योद्धा सूर बण बलवान, हुक्म हाकम आप समझाइंदा। धर्म वखाए इक निशान, दो जहानां आप झुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआर इक्को इक वडियाइंदा। सचखण्ड दुआर सच्चा धाम, भूमिका नज़र कोए ना

आईआ। सदा सुहेला वसे इक्को राम, रमईया आपणा आसण लाईआ। निहचल धाम करे सच काम, निहकर्मी आपणा कर्म कमाईआ। देवे वड्याई नगर खेड़ा ग्राम, छप्पर छन्न सूरज चन्न ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड देवणहार वड्याईआ। सचखण्ड दुआर हरि का दर, दर दरवाज़ा इक जणाईआ। निरगुण निरवैर दीन दयाल अन्दर बैठा वड़, रूप रंग रेख नज़र किसे ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव घाड़न घड़, लख चुरासी भाण्डे लए बणाईआ। बोध अगाध निरगुण सरगुण अक्खर लए पढ़, निष्अक्खर करे सच पढ़ाईआ। त्रैगुण मेला पंज तत चेला खेले खेल घर घर, गृह गृह आपणा हुक्म वरताईआ। महल अटल उच्चे मन्दिर सच दुआरे आपे खड़, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। कर प्रकाश बहत्तर नड़, जोती जाता डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी आपणी खेल रचाईआ । सचखण्ड निवासी खेल अवल्ला, आलमीन आप रचाइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटला, दरगाह साची सोभा पाइंदा। पावे सार जला थला, महीअल आपणा भेव चुकाइंदा। जोती शब्दी धार आपे रला, निरवैर आपणा खेल कराइंदा। सच संदेस नर नरेश निरगुण सरगुण आपे घल्ला, गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात पढ़ाइंदा। शब्द सरूपी शाहो भूपी बिन रंग रूपी आपणा फड़ाए पल्ला, नाम पल्ला इक समझाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी धुर दी धार आप जणाइंदा। धुर दी धार दस्से भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज वेखे मार ध्यान, पुरी लोअ आकाश प्रकाश इक्को नूर वखाईआ। जीव जंत साध सन्त देवणहार ज्ञान, आत्म परमात्म बोध अगाध इक्को इक पढ़ाईआ। सच धर्म वखावणहारा सच निशान, सति दुआरे आप झुलाईआ। कागद कलम ना देवे कोई ब्यान, कलम शाही बैठी मुख शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरा हरि निरँकारा एकँकारा इक दरबारा सच सच लगाईआ। सच दरबार गया लग्ग, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। करे खेल सूरा सरबग्ग, शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। सच सिँघासण बहे सज, दूजा नज़र कोए ना आईआ। नाम नगारा जाए वज्ज, दो जहानां करे शनवाईआ। कूड़ी क्रिया भाण्डा भरम भउ जाए भज्ज, माया ममता मेटे थाउँ थाईंआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सच दुआरे लए सद्द, सद्दा आपणा नाम सुणाईआ। कट के आओ आपणा पन्ध, बणो पांधी राहीआ। गीत गोबिन्द गाओ छन्द, सोहला ढोला इक जणाईआ। लेखा चुक्के बत्ती दन्द, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। सच दुआरे माणो इक अनन्द, अनन्द अनन्द विचों दरसाईआ। शरअ शरीअत रहे कोए ना कंध, मज़्हब दीन कोए रहिण ना पाईआ।

साहिब सुल्तान श्री भगवान नज़री आए इक्को अखण्ड, खण्ड खण्ड ना कोए कराईआ। फिरी दरोही विच वरभण्ड, चार कुण्ट रही कुरलाईआ। दहि दिशा होई नेत्र अन्ध, निज नेत्र नूर ना कोए चमकाईआ। बंदीख़ाना कोई ना तोड़े बंद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड बैठा सच्चा माहीआ। सचखण्ड बैठा सच सुल्तान, सति सतिवादी दया कमाइंदा। धुर संदेसा देवे इक आण, भय भउ सर्ब जणाइंदा। नित नवित्त जुग चौकड़ी खेले खेल श्री भगवान, भगवन आपणी कार कमाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर देवणहारा नाम निधान, पंज तत काया चोले सोभा पाइंदा। सति सरूपी इक ज्ञान, शब्दी शब्दी ढोला राग अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेसा एकँकारा आप सुणाइंदा। सति संदेसा देवे आप, प्रभ आपणी दया कमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर पारब्रह्म प्रभ वेखो इक्को बाप, पिता इक्को नज़री आईआ। आदि अन्त जुगा जुगन्त नित नवित्त साध सन्त जिस दा करदे जाप, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। अनमंगयां देवे सब नूं दात, अनडिठी वस्त आप वरताईआ। बैठा रहे सदा इकांत, सच दुआर सोभा पाईआ। नेत्र खोलो मारो झाक, झाकी आपणी दए जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी खोलणहारा खात, खाता सब दा वेख वखाईआ। सृष्ट सबाई दिसे ख़ाली हाथ, नाम धन दौलत घर नज़र किसे ना आईआ। पार ना उतरे कोई घाट, तीर्थ तट देण दुहाईआ। अठसठ तीर्थ बणी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश कोई ना वेखे साचे मण्डल रास, गोपी काहन नाच ना कोए नचाईआ। सीता सुरती वसे ना राम पास, राम रमईया निज घर फेरा कोए ना पाईआ। पीर पैगम्बर वेखे ना कोई तमाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर दरवाज़ा इक दरसाईआ। दर दरवाज़ा इक खोल, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर आओ कोल, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। शब्द अगम्मी वज्जे ढोल, ढोलक छैणा सारंग सरंगा ना कोए सुणाइंदा। एका कंडे तोले तोल, नाम तराज़ू हथ्थ उठाइंदा। बैठा रहे सदा अडोल, अडुल आपणा हुक्म वरताइंदा। हर घट अन्दर रिहा मौल, मौला आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, घर मन्दिर इक सुहाइंदा। घर मन्दिर सोहे बंक, बंक दुआरी सोभा पाईआ। जिस दा खेल आदि अन्त, सो साहिब ख़ुशी मनाईआ। जिस दा नाम अगम्मी मंत, मन्त्र सति करे पढ़ाईआ। जिस दा राग लख चुरसी जीव जंत, घर घर नाद सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दरगाह साची इक सुहाईआ। दरगाह साची धाम अनडिठ, जग नेत्र नज़र किसे नाँ आइंदा। पुरख अकाल दीन दयाल पारब्रह्म परमेश्वर

सुत्ता दे कर पिठ, आपणी करवट ना कोए बदलाइंदा। गुरमुख विरले सन्त सुहेले गुर चेले करे हित, भगत भगवन्त आपणे रंग रंगाइंदा। आवे जावे नित नवित्त, निरगुण सरगुण खेल खलाइंदा। धुर दी बाणी धुर फ़रमाण देवे लिख, लेखा लेख ना कोए सुणाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां साधां सन्तां पावे भिख, भिच्छया आपणी इक समझाइंदा। चार कुण्ट दहि दिशा निज नेत्र आए दिस, लोचण इक्को इक खुलाइंदा। जन्म कर्म दी लाहे विस, अमृत आत्म जाम प्याइंदा। लेखा जाणे हस्त कीट, कीट कीटां विच समाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी चलावे आपणी रीत, मन्दिर मसीत सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरे बहि इक्को हुक्म वरताइंदा। सचखण्ड दुआरे सच्चा हुक्म, सो साहिब आप जणाईआ। भगत भगवान कढ्ढे उत्तम, लख चुरासी खोज खोजाईआ। लेखा जाणे धुर दे पुत्तर, पिता पूत दए वड्याईआ। सचखण्ड दवारिओं आए उतर, मात पिता जन्मे ना कोई माईआ। बालक बण चढ़े ना किसे कुच्छड़, मुख सीर मंमां नज़र कोए ना आईआ। हरख सोग ना कोए दुखड़, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। जन भगतां करे मुख उजल, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त ढोला इक्को गाईआ। काया मन्दिर डूंघी कन्दर आपणी खोल्हे फड़ के गुंझल, टेडी बंक मार्ग इक समझाईआ। लख चुरासी जीव जंत जो नारी कन्त कोलों होई उधल, ऊधा कँवल कर झिरना दए झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। लेखा जाणे थान थनंतर, दो जहानां खोज खुजाइंदा। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्तर, घट घट वेख वखाइंदा। नाम निधान साहिब गुर मन्त्र, नमो सति सति समझाइंदा। लख चुरासी बणावणहारा बणतर, घड़न भंनणहार समरथ, महिमा अकथ इक समझाइंदा। सदा सदा सद चलावणहारा रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी मार्ग जाए दस्स, रहबर इक्को फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दरगाह साची सच महिबूब इक्को नज़री आइंदा। दरगाह साची सच महिबूब, यामबीन इक्को नूर इलाहीआ। आदि जुगादि जिस दा इक अरूज, अर्श फर्श वेखे थाउँ थाईंआ। तिस दा सिफ्ती देवण सर्ब सबूत, साख्यात बिन मुरीद मुर्शद नज़र किसे ना आईआ। देवणहारा आबेहयात, सच प्याला मधुर रस इक वखाईआ। खेलणहारा खेल कायनात, कलमा नबी रसूल करे पढ़ाईआ। जिस दा नूर आफ्ताब, सच अहिबाब इक्को नज़री आईआ। चौदां लोक जिस दी वज्जे रबाब, तार सतार रिहा हिलाईआ। सो साहिब हक़ जनाब, हकीकत वेखे थाउँ थाईंआ। लेखा जाणे दो दो आब, बेपरवाह बेपरवाहीआ। जिस दा सच महिराबे वज्जे नाद, धुन इक्को इक शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल

सच्चा हरि, हज़रत वड्डा वड्डी वड वड्याईआ। हज़रत हरि जू हाज़र हज़ूर, शाह पातशाह इक अख्वाईआ। मुकामे हक़ जिस दा नूर, जलवागर ज़हूर इक दरसाईआ। तिस दा हुक्म सब करना पए मंज़ूर, पीर पैगम्बर ईसा मूसा मुहम्मद बैठण सीस झुकाईआ। अल्ला राणी चरण कँवल धूढ़ी मस्तक टिक्का लाए ज़रूर, ज़रूरत आपणी पूर कराईआ। चौदां सदीआं मेरा भण्डारा भरपूर, वेला अन्त दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण निरगुण निरवैर आपणी धार चलाईआ। निरगुण निरवैर परवरदिगार, बेपरवाह खेल खलाइंदा। मुकामे हक़ सांझा यार, लाशरीक वेस वटाइंदा। लोकमात कर प्यार, धुर दी धार आप समझाइंदा। मुरीद मुर्शद कर दीदार, ईद दीद चन्द चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरा इक्को इक सुहाइंदा। सचखण्ड दुआरे साचा काहन, नर नरायण नज़री आईआ। जिस दा खेल दो जहान, दोए दोए आपणा रूप वटाईआ। जिस दा हुक्म इक फ़रमान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सो साहिब साचा राम, रहमत आपणी रिहा कमाईआ। सच दुआरे देवणहारा पैग़ाम, सुनेहड़ा इक्को इक घलाईआ। कलयुग अन्तिम खेल करे महान, महाबली आपणी खेल रचाईआ। धर्म वखावे इक निशान, निशाना इक्को नज़री आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे वेखो आण, अणयाला आपणा राह जणाईआ। दर दरवेश बरदे बणो ग़ुलाम, ग़ुरबत कोई रहिण ना पाईआ। सजदा सीस करो सलाम, सही सलामत साख्यात इक्को नूर दरसाईआ। दोए जोड़ करो प्रणाम, बन्दना डण्डोत साची रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी घट घट वासी घर घर लेखा खोज खुजाईआ। घर घर खेले खेल समरथ, सर्ब घट वासी आपणी खेल रचाइंदा। जुग चौकड़ी रिहा नट्ठ, बण पांधी फेरा पाइंदा। भगत भगवान मार्ग दस्स, साचे राह आप चलाइंदा। हिरदे अन्तर आपे वस, वास्ता आपणे नाल जुड़ाइंदा । अमृत देवे सच्चा रस, निझर झिरना आप वहाइंदा। तीर अणयाला मारे कस, तिक्खी मुखी आप जणाइंदा । सच दुआरा खोल्ह हट्ट, वणज वणजारा इक्को नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। हरिजन वेखे आप प्रभ, आपणी दया कमाईआ। जुग चौकड़ी लए लभ्भ, निरगुण सरगुण होए सहाईआ। जगत दुआरा पार हद्द, घर मन्दिर इक वड्याईआ। शब्द वजाए साचा नद, अनहद राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच्चा सज्जण इक अख्वाईआ। सच्चा सज्जण पारब्रह्म, पतिपरमेश्वर आप अख्वाइंदा। ना मरे ना पए जम्म, मात गर्भ ना डेरा लाइंदा। पंज तत ना कोए तन, माया बन्धन ना कोए रखाइंदा। हथ्थ मूँह नक्क

ना कोए कन्न, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोए वखाइंदा। ना छप्पर ना कोई छन्न, मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मट्ठ ना कोए बणाइंदा। ना जननी कोई जणे जन, गोदी गोद ना कोए सुहाइंदा। ना घड़े ना देवे भन्न, माटी ख़ाक ना कोए रलाइंदा। ना कोई अन्धेर होवे अन्न्ह, डूंघी धार ना कोए डुबाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म वरते मात, सो साहिब आप वरताईआ। सचखण्ड निवासी खेल तमाश, ख़ालक ख़लक दए जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दर दरवेश बण के रखदे गए आस, प्रभ चरण ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर गाउँदे गए स्वास स्वास, पवण उणंजा सिफ्त सालाहीआ। गोपी काहन पाउँदे गए रास, मण्डल मण्डप नाच नचाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण लेखा लिखदे गए खास, कलम शाही वंड वंडाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण जोत करे प्रकाश, निहकलंक नाउँ रखाईआ। सचखण्ड दुआरे जिस दा वास, दो जहानां आपणा हुक्म वरताईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड करे निवास, उत्भुज सेत्ज डेरा लाईआ। जन भगतां वसे सदा साथ, भगवन आपणा संग निभाईआ। सन्तां देवे नाम रास, साची पूंजी इक समझाईआ। गुरमुखां सगल विसूरे जाइण लाथ, जिस जन आपणा दरस वखाईआ। गुरसिख मस्तक धूढ़ी टिक्का लाए ख़ाक, दुरमति मैल धवाईआ। चार वरन बणाए इक जमात, चारों कुण्ट वज्जे वधाईआ। दहि दिशा खेलणहारा खेल तमाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम आपणी धार जणाईआ। साची धार दस्से भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। कलयुग मिटे कूड़ निशान, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर होण हैरान, हरि का भेव समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। कलयुग अन्तिम मिटे कूड़, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। जन भगतां मिले साची धूढ़, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। चतुर सुघड़ बणे मूर्ख मूढ़, मनमति दए तजाईआ। अन्तर उपजे साचा नूर, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। अमृत आत्म देवे सच सरूर, मधुरा जाम ना कोए प्याईआ। जन्म जन्म दा कटे कसूर, पिछला लेखा दए मुकाईआ। सर्ब कला आपे भरपूर, पूर रिहा सर्ब थाईंआ। गुरमुखां मिले आप ज़रूर, हरिजन साचे लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। कलयुग मिटे अन्धेरा अन्ध, रैण अन्धेरी नज़र ना आईआ। जुग जुग मुकावे सब दा पन्ध, थिर नज़र कोए ना आईआ। सतिजुग साचे होए आप बख़्शंद, बख़्शिश आपणी आप कमाईआ। इक्को ढोला सुणाए अगम्मी छन्द, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोई ना आईआ। आत्म होए ना किसे रंड, परमात्म कन्त लए प्रनाईआ। पंच विकार ना पाए डण्ड, नाम खण्डा इक चमकाईआ।

४५६ ४५६

१५ १५

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। कलयुग मिटे कूड़ निशान, चारों कुण्ट वज्जे वधाईआ। नज़री आए इक भगवान, नूरो नूर नूर खुदाईआ। जिस दा सच्चा सच इस्लाम, इस्म आअज़म दए दरसाईआ। जिस दा कलमा इक कलाम, किबल करे इक पढ़ाईआ। जिस दा संदेसा सच पैग़ाम, पीर पैगम्बर ध्यान लगाईआ। जिस दा इक्को इक ईमान, अमल करे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो साहिब खेल रचाईआ। कलयुग अन्तिम जाए दौड़, लोकमात रहिण ना पाईआ। फल ना दिसे कोई कौड़, रीठा मीठा करे बेपरवाहीआ। सचखण्ड दुआरे लाए इक्को पौड़, महल अटल इक्को इक समझाईआ। जिस नूं वेद व्यासा कह के गया पूत सपूता प्रगट होवे ब्रह्मण गौड़, उच्चे टिल्ले पर्बत फेरा पाईआ। जिस नूं ईसा मूसा मुहम्मद तक्कदे गए नाल ग़ौर, नेत्र नैण नैण उठाईआ। जिस ने गुर अवतार पीर पैगम्बर बणाए आपणे कौर, पिता पूत वेख वखाईआ। तिस साहिब सुल्तान श्री भगवान सीस जगदीश इक्को झुल्ले चौर, दो जहान वज्जे नाम वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, कूड़ा लेखा दए मुकाईआ। कलयुग कूड़ मिटे कुड़यार, कूड़ी नईया दए डुबाईआ। जूठा झूठा दिसे ना कोए यार, यारड़ा सत्थर इक विछाईआ। मुरीद मुर्शद दए दीदार, नेत्र खोल्ह अक्ख चमकाईआ। नज़री आए इक दातार, दाता दानी वड्डी वड्याईआ। जन भगतां खोल्हे बंद कवाड़, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। त्रैगुण माया पंज तत अग्नी ना देवे साड़, अमृत मेघ इक बरसाईआ। सुरती शब्दी मेला कन्त भतार, घर मंगल गीत गोबिन्द इक अलाईआ। आत्म सेजा पावे सार, सेज सुहञ्जणी दए वड्याईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मेला इक दुआर, एका दूजा भउ चुकाईआ। आत्म परमात्म होए खुशहाल, खुशी आपणे घर वखाईआ। श्री भगवन्त होए दयाल, दीन दयाल मेहर नज़र उठाईआ। गुरमुख गुरसिख नाता तोड़ काल महाकाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग लहिणा दए मुकाईआ। कलयुग लहिणा मुक्के जग्ग, लोकमात रहिण ना पाईआ। नौ खण्ड पृथमी लग्गे अग्ग, सत्त दीप देण दुहाईआ। मनमुख जीवां लेखा चुक्के हक़ो हक़, सब दी झोली आपे पाईआ। गुरमुख हरिजन हरिभगत जो प्रभ दर्शन रहे तक्क, तिन्हां तख्ता दए उलटाईआ। अन्दर वड़ के आवे दस्स, आप आपणा भेव खुल्हाईआ। जिस साहिब नूं रहे लभ्भ, सो सतिगुर घर घर विच डेरा लाईआ। गुरसिखो गुरमुखो हरीजन हरिजन हरि का दरस करो रज्ज रज्ज, बिन जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूंग्घी कन्दर दए कराईआ। जिस दा लम्मां उच्चा ना कोई कद्द, नौ दुआरी पार कर के बैठा हद्द, दस्म दुआरी जोत निक्की निक्की करे रुशनाईआ। जिस दी लख चुरासी विश्व यद, बंस सरबंस इक वखाईआ। जिस नूं आपणे नालों समझदे अड्ड,

सो प्रभ तुहाढ्ढे विच रिहा समाईआ। काया कोठा बणाया हड्ड मास नाड़ी हड्ड, आप आपणा भेव छुपाईआ। तिस साहिब सतिगुर चरणी जाओ ढट्ठ, जो रुठयां लए मिलाईआ। लहिणा मुकाए तत अट्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध आपणे लेखे लाईआ। सो सर्ब स्वामी समझाए इक्को मति, आत्म परमात्म मिल मिल खुशी मनाईआ। सेज सुहञ्जणी चढ़ो नस्स नस्स, कन्त कतूहल बैठा राह तकाईआ। कूड़ कुड़यारा काम क्रोध लोभ मोह हँकारा चरणां हेठां दयो झस्स, सिर सतिगुर हथ्थ टिकाईआ। धर्म दुआरे करो इक इकट्ठ, नज़री आए इक्को माहीआ। जिस भेज्या राम बेटा दसरथ, सो राम हर घट रिहा समाईआ। जिस काहन बण चलाया रथ, साचे भगत सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पीर पैगम्बर गुरू अवतार इक वखाए सच दरबार, जिस दुआरे हरि जू डेरा लाईआ। पीर अवतार पैगम्बर गुरु गुरदेव सारे कहिण, वाहवा प्रभू तेरी वड्याईआ। तेरा नूर नेत्र वेख्या नैण, नाम निधान वज्जे इक वधाईआ। सदा सदा सद साक सज्जण सैण, सगला संग निभाईआ। कोट ब्रह्मण्ड तेरे चरणां हेठ बहिण, विष्न ब्रह्मा शिव बैठे ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी मिले चरण सरनाईआ। चरण चरणोदक मिले सच, सच तेरी वडयाया। लूं लूं अन्दर जाणा रच, आप आपणा रंग रंगाया। मार्ग अगम्म अथाह देणा दस्स, दस्तगीर तेरी सरनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, हउँ बालक तेरे वस, तूं पिता सहिज सुखदाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, करे खेल पुरख समरथ, जन भगतां देवे सच्चा साथ, अद्धविचकार सके ना कोए डुबाया।

✪ ४ अस्सू २०२० बिक्रमी करतार सिँघ दे गृह शाह वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

गुरमुख सदा रखे आस, अन्तर इक ध्यान लगाईआ। कवण वेला जग बुझे प्यास, प्रभ नेत्र दर्शन पाईआ। लेखे लग्गे पवण स्वास, साह साह ध्याईआ। घर मण्डल वेखे रास, गृह वज्जे नाम वधाईआ। मिटे रैण अन्धेरी रात, रुतड़ी चन्द नूर रुशनाईआ। नाम जणाए आपणी गाथ, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। जन्म कर्म दुःख देवे काट, मरन डरन रहिण ना पाईआ। सच प्रीत बंधाए नात, बख्शे चरण सरन सरनाईआ। पूरा करे पिछला घाट, अग्गे झोली इक भराईआ। आत्म सेज सुहाए खाट, सच सिँघासण डेरा लाईआ। दूर दुराडी मिटे वाट, पांधी नेरन नेरा नज़री आईआ। सगल विसूरे जाइण लाथ, दुःख रोग रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे सच वर,

घर सच मिले वड्याईआ। गुरमुख सच्चा तक्के राह, नेत्र नैण नैण उठाईआ। कवण वेला प्रभ मिले मलाह, पत्तण बैठा सच्चा माहीआ। शब्दी देवे सच सलाह, मार्ग इक समझाईआ। रहबर बणे बेपरवाह, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। साची सिख्या दए दृढ़ा, अक्खर वक्खर कर पढ़ाईआ। सृष्ट सबाई मिथ्या दए जणा, थिर रहिण कोए ना पाईआ। बिधना लिख्या दए मिटा, लेखा लेख विचों प्रगटाईआ। चरण ढढ्ढयां लए उठा, फड़ बांहों गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर मिले सच्ची सरनाईआ। गुरमुख सच्चा रिहा उडीक, निज नेत्र ध्यान लगाईआ। कवण वेला प्रभ बख्शे धार इक बारीक, धार धार विचों प्रगटाईआ। नज़री आए लाशरीक, शहिनशाह आपणा दरस वखाईआ। दूर दुराडा पन्ध मुक्के घर दिसे इक नज़दीक, नेरन नेरा पर्दा दए उठाईआ। मेल मिलाए आपणा ठीक, ठीकर कूड़ा भन्न वखाईआ। लग्गी तोड़ निभे प्रीत, प्रीतीवान खुशी वखाईआ। माणस जन्म लए जीत, जीवण जुगत मिले वड्याईआ। लेखा चुक्के हस्त कीट, ऊँच नीच भेव रहे ना राईआ। शाह सुल्तान पाए भीख, भिच्छया आपणी आप वरताईआ। चारों कुण्ट नज़री आए मीत, मित्र प्यारा दया कमाईआ। ढोला दस्से आपणा गीत, सोहँ राग अलाईआ। लेखा चुक्के मन्दिर मसीत, काया काअबा होए रुशनाईआ। नज़री आए इक अतीत, त्रैगुण डेरा देवे ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र नैण उठाईआ। गुरसिख सच्चा रखे ओट, ओट इक अकाल जणाईआ। कवण वेला घर लग्गे चोट, नाम नगारा इक शनवाईआ। प्रकाश होवे निर्मल जोत, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। संसा चुक्के हरख सोग, चिन्ता ग़म ना कोए सताईआ। सतिगुरू दुआरे मिले मौज, मजलस इक्को नज़री आईआ। दूजी रहे ना कोई सोच, साची सूझ इक समझाईआ। जिस दर्शन नैण रहे लोच, सो लोचा पूर कराईआ। जिस मिलयां माण टुट्टे मुक्ती मोख, मुफ्त आपणे नाल लै जाईआ। तिस दुआरे दूसर कोई ना सके पहुंच, पांधी पन्ध ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, दर पड़दा दए उठाईआ। गुरमुख सच्चा खोल्हे अक्ख, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। कवण कूट प्रभ होए प्रतख, दहि दिशा फोल फोलाईआ। धर्म दुआरा खोल्हे हट्ट, नाम वस्त विच टिकाईआ। सन्त सुहेले साचे सद्द, आपणा भेव चुकाईआ। नाम सुणाए इक्को छन्द, सोहँ ढोला गाईआ। बंदीख़ाना कटे बंद, जम की फाँसी दए तुड़ाईआ। लेखे लाए बत्ती दन्द, रसना जिह्वा आपणे रंग रंगाईआ। दूई द्वैती ढाह कंध, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। मन हँकार ना कोए घमण्ड, कूड़ी क्रिया ना कोए हल्काईआ। सच प्रकाश चाढ़े चन्द, जलवा नूर इक दरसाईआ। आत्म सेजा वेख पलँघ, सोभावन्त डेरा लाईआ। अनहद नाद वज्जे मृदंग, धुनी धुन नाद शनवाईआ। गुरमुख गुरसिख गुर पूरी करे मंग, देवणहार

इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस रूप बणाया हँ, सो ब्रह्म पारब्रह्म आपणे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख मेटे तृष्ना तम, तामस कोए रहिण ना पाईआ। गुरसिख सच्चा तक्के राह, तक्कवा इक रखाईआ। कवण वेला प्रभ पड़दा दए उठा, घर मन्दिर करे रुशनाईआ। माया सड़दा लए बचा, अमृत मेघ बरसाईआ। सच दुआरे आ के खड़दा, घर दर्शन देवे सच्चा माहीआ। पंच विकारे नाल लड़दा, नाम खण्डा खड़ग चमकाईआ। सच महल्ले आपे चढ़दा, दस्म दुआरी डेरा लाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला इक्को पढ़दा, तेरा मेरा भेव रहे ना राईआ। धुर संदेस इक्को घल्लदा, नाम निधान करे शनवाईआ। लेखा जाणे धुर दरबार दा, दरगाह साची खुशी मनाईआ। जींवदयां जग आपे मरदा, मरयां जागरत जोत करे रुशनाईआ। भगत दुआरे सेवा करदा, जन भगतां होए सहाईआ। गुरमुख सज्जण आपे फड़दा, फड़ बांहों गले लगाईआ। कृपानिधान किरपा करदा, करनी सब दी वेख वखाईआ। लेखा जाणे घर घर दा, लुक्या कोए रहिण ना पाईआ । रूप वखाए नर हरि नरायण नर दा, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शाह सुल्तान इक्को नज़री आईआ।

४६२ १५

४ अस्सू २०२० बिक्रमी जरनैल सिँघ दे गृह शाह वाला ज़िला फिरोज़पुर

गुरमुख सच्चा करे ख़िआल, घर घर विच ध्यान लगाईआ। कवण वेला प्रभ मिले दयाल, दीनन होए सहाईआ। कूड़ी क्रिया मिटे जंजाल, जीवण जुगत दए जणाईआ। सच मन्दिर वखाए धर्मसाल, धर्म दुआरा इक प्रगटाईआ। दीपक दीवा देवे बाल, जोती नूर इक रुशनाईआ। अमृत सुहाए सच्चा ताल, सरोवर इक्को इक वखाईआ। फड़ बांहों दए नुहाल, काग हँस रूप वटाईआ। गुरमुख बणाए आपणा लाल, गुर गुर गोदी सच उठाईआ। अट्ठे पहर चले नाल, दिवस रैण संग निभाईआ। देवे नाम सच्चा धन माल, सच ख़ज़ीना झोली पाईआ । माणक मोती दए उछाल, नाम हुलारा इक लगाईआ। लेखे लाए कीती घाल, पूरब लहिणा दए मुकाईआ। फल लगाए साचे डाल, पत टहिणी आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद मेहर नज़र उठाईआ। गुरमुख सच्चा करे विचार, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। कवण वेला प्रभ करे प्यार, प्रेम प्रीती दए जणाईआ। जन्म जन्म दा दुखड़ा दए नवार, कर्म कांड रहिण ना पाईआ । सच वखाए इक दरबार, जिस घर वसे सच्चा माहीआ। दीआ जोती जोत जगे अगम्म अपार, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, आप आपणा रंग रंगाईआ। गुरसिख सच्चा करे दलील, अन्तर

आत्म ध्यान लगाईआ। कवण वेला प्रभ मिले वकील, जगत विचोला बेपरवाहीआ। नज़री आए छैल छबील, शहिनशाह इक्को दरस दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे दर कीती अपील, दूजा नज़र कोए ना आईआ। गुरसिख सच्चा दोए जोड़, नमो नमो नमो निमस्कारया। पारब्रह्म प्रभ घर सज्जण आए दौड़, दूर दुराडा पन्ध निवारया। मिठ्ठा करे रीठा कौड़, अमृत फल इक वखा रिहा। माणस जन्म जाए सौर, लख चुरासी फंद कटा रिहा। आपणे हथ्थ पकड़े डोर, शब्दी डोरी बन्धन पा रिहा। मेट मिटाए पंज चोर, कूड़ी क्रिया डेरा ढाह रिहा। तिस सतिगुर सच्चे साहिब दी पई लोड़, गुरसिख इक ध्यान लगा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सुनेहड़ा इक सुणा रिहा। सच सुनेहड़ा देवे भगवान, प्रभ आपणी दया कमाईआ। गुरमुख गुरसिख कर ध्यान, वड ध्यानी दए जणाईआ। प्रगट होया नौजवान, योद्धा सूरबीर बली बलवान अख्वाईआ। नाम खण्डा चण्ड प्रचण्ड तीर कमान, शस्त्रधारी नर निरँकारी इक्को फेरा पाईआ। हथ्थ उठाए तेज़ किरपान, कर्म कांड डेरा देवे ढाहीआ। सच वखाए इक निशान, निशाना दो जहानां नज़री आईआ। आत्म परमात्म करे परवान, परम पुरख प्रभ आपणा मेल मिलाईआ। वस्त अमोलक देवे दान, घर झोली इक भराईआ। नज़री आए इक्को काहन, घनईया बंसुरी नाम वजाईआ। सच पैगम्बर दए कलाम, कलमा इक्को इक पढ़ाईआ। खेले खेल वाली दो जहान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, गुरमुख आसा पूर कराईआ। गुरसिख सज्जण साचे मीत, सो साहिब आप जणाईआ। प्रभ स्वामी वेख ठीक, निज नेत्र नज़री आईआ। काया करे ठांडी सीत, अग्नी तत ना लागे राईआ। पिछला लेखा गया बीत, अग्गे होए आप सहाईआ। प्रेम प्रीती गंढु गई पीच, लोकमात सके ना कोए खुल्हाईआ। दूर दुराडा आया नज़दीक, नेरन नेरा पड़दा दए उठाईआ। साचा नाम पाए भीख, भिच्छया इक्को इक वरताईआ। साची सिख्या लैणी सीख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख देवे माण वड्याईआ। गुरमुख गुरसिख रखणा याद, सो साहिब आप जणाईआ। अबिनाशी करता सुणे फ़रयाद, पारब्रह्म प्रभ फेरा पाईआ। सरन सरनाई जाणा लाग, दर इक्को इक बुझाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काग, कागों हँस उडाईआ। मन उपजे इक वैराग, वैरागी रूप दरसाईआ। घर मेला कन्त सुहाग, सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। सच प्रेम प्रीती मार आवाज़, अनहद नादी नाद सुणाईआ। मिल सखीआँ रचे काज, घर सुअम्बर इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख कूड़ा अडम्बर दए मिटाईआ। साहिब सतिगुर ठाकर एक, एकँकारा दए वड्याईआ। गुरमुख

साची रख टेक, टिक्का मस्तक देवे लाईआ। करे कराए बुध विवेक, विवेकी आपणी कार कमाईआ। बदलणहारा लिख्या लेख, लेखा आपणा दए जणाईआ। आत्म परमात्म इक्को हेत, हितकारी इक अख्वाईआ। बिन हरि नामे सुंञां दिसे खेत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन भेव अभेद खुलाईआ। सतिगुर पूरा चाढ़े रंग, गुरमुख देवणहार वड्याईआ। सुरती शब्द मेला डोर पतंग, आकाश आकाश रिहा उडाईआ। बण सुहेला वसे संग, साथी इक्को इक नज़री आईआ। बिन रसना जिह्वा देवे इक अनन्द, अनन्द अनन्द विचों प्रगटाईआ। बिन सूरज चन्द चाढ़े चन्द, साचा नूर करे रुशनाईआ। बिन पैरां लत्तां मुकावे पन्ध, घर आवे वाहो दाहीआ। बिन रसना जिह्वा गाए छन्द, साचा ढोला राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख इक्को राह वखाईआ। गुरमुख सच्चे तेरा साचा जोग, सो सतिगुर आप जणाईआ। आत्म रस साचा भोग, मिले माण वड्याईआ। कटणहारा हउमैंरोग, चिन्ता सोग रिहा गंवाईआ। मेलणहारा धुर संजोग, साचे घर करे कुड़माईआ। जिस दर्शन लोचण रहे लोच, सो आसा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुरमुख मेला सहिज सुभाईआ।

४६४ गुरमुख साचे तेरा प्रेम, परम पुरख आप निभाइंदा। सतिगुर हो के चुक्के नेम, सुगंध आपणा नाम पाइंदा। लेखा जाण कुण्ट हेम, हरि का पौड़ा इक्को इक वडियाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर देणा आवे देण, लहिणा आपणे हथ्थ रखाइंदा। ४६४

१५ सच संदेसा आवे कहिण, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। गुरमुख गुरसिख तेरी काया कन्दर आवे रहिण, मन्दिर इक्को इक वडियाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणा संग वखाइंदा। गुरमुख तेरा खेल अनोखा, गुर सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। माणस जन्म लख चुरासी विचों मौका, गया वेला हथ्थ फेर ना आईआ। पूरा सतिगुर कदे ना करे धोखा, डुब्बदे पाथर लए तराईआ। श्री भगवान रुस्सयां नाल ना करे कदे रोसा, रुस्सयां आपणे गले लगाईआ। ठाकर हो के कदे ना बणे होछा, होछापन ना कोए वखाईआ। फड़ के मारे ना कदे बेदोषा, बेमुखां दए सज़ाईआ। गुरमुख उठ वेख प्रभ दा झरोखा, जिस घर बैठा ताड़ी लाईआ। जिस दे पिच्छे पीर पैगम्बर रख दे गए रोज़ा, निमाज़ निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। सो साहिब बैठा आप ख़ामोशा, उच्ची कूक ना कोए जणाईआ। हरिजन तेरी करे पूरी लोचा, लोचण आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन इक्को घर वसाईआ। सतिगुर पूरा बोले बोल, शब्दी नाद वजाइंदा। गुरमुख वेख हरि सज्जण तेरे कोल, घर घर नज़री आइंदा। दिवस रैण वजाए ढोल, नाम डंका इक लगाइंदा। दर दरवाज़ा आपणा खोल्ह, साची सेवा इक समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, १५

आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणा राह वखाइंदा। गुरमुख खोल्ह आपणी खिड़की, हरि सतिगुर सच बुझाईआ। तेरी प्रीत लग्गी चिर की, जन्म जन्म दा लहिणा दए मुकाईआ। एह रीत साचे पिर की, पीआ प्रीतम वेखे चाईं चाईंआ। जानणहारा अन्दर बाहर बिरती, सुरती शब्दी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुरमुख इक्को घर समझाईआ। गुरमुख खोल्ह बंद कवाड़, हरि करता आप जणाइंदा। घर वसे तेरा मीत मुरार, सज्जण सच्चा राह तकाइंदा। कवण वेला मिले यार, यारी यारां नाल निभाइंदा। सज्जण सुहेला बणे आप करतार, करता आपणी कार कमाइंदा। सेवा करे बण सेवादार, चाकर ख़ाक आपणा रूप वटाइंदा। ठाकर हो के दए आधार, सागर हो के गहर गम्भीर आपणी धार चलाइंदा। सौदागर हो के करे वणज व्यपार, गुरमुख आपणे हट्ट विकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन पर्दा आप चुकाइंदा। गुरमुख साचे पड़दा चुक्क, दूई द्वैत रहिण ना पाईआ। अन्दर वेख सतिगुर मुख, जोती जोत नूर नूर रुशनाईआ। लेखा चुक्के लोक परलोक, परम पुरख दए वड्याईआ। साचा गा इक श्लोक, सोहँ राग अलाईआ। मेल मिलावा जोती जोत, जोती जोत जोत समाईआ। आदि अन्त भगत भगवान इक्को गोत, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, देवणहार दरस अमोघ, आमद आपणी इक बुझाईआ।

४६५ १५

✪ ४ अस्सू २०२० बिक्रमी बलवन्त सिंघ दे गृह तलवंडी ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सतिगुर पूरा सदा मेहरवान, हरि मेहर नज़र उठाइंदा। जन भगतां देवे भगती दान, भगवन आपणी दया कमाइंदा। सन्तां देवे चरण धूढ़ अशनान, सति सरोवर इक नुहाइंदा। गुरमुखां बख्शे चरण कँवल ध्यान, अन्तर आत्म बूझ बुझाइंदा। गुरसिखां एका नाम सुणाए कान, साचा नाद आप वजाइंदा। जुग चौकड़ी वेख जहान, लख चुरासी खोज खोजाइंदा। कर किरपा मेले आण, निरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। धर्म दुआरे देवे माण, दर घर साचे आप वडियाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा । गुरमुख सच्चा करे पुकार, दिवस रैण ध्यान लगाईआ। कवण वेला प्रभ देवे दीदार, निज नेत्र नैण खुल्हाईआ। अमृत जाम दए प्याल, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। मन्दिर अन्दर काया वखाए सच्ची धर्मसाल, दुआरा इक्को नज़री आईआ। दीआ दीपक जोती देवे बाल, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। मार्ग दस्से इक सुखाल, रहबर बणे आप गोसाईंआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जीवण जुगत दए जणाईआ। साची सेजा दए बहाल, सेज सुहञ्जणी

सोभा पाईआ। नज़री आए दीन दयाल, दीनां नाथ पड़दा दए चुकाईआ। लेखे लाए कीती घाल, घाली घाल लेखे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद मेहर नज़र उठाईआ। सतिगुर पूरा देवणहारा नाम, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। प्यावणहारा अमृत जाम, भर प्याला हथ्थ फड़ाइंदा। झुलावणहारा सच निशान, धर्म निशाना इक वखाइंदा। देवणहारा इक ज्ञान, सोहँ ढोला आप सुणाइंदा। तोड़नहारा माण अभिमान, चरण प्रीती जोड़ जुड़ाइंदा। झोली पावणहारा दान, वस्त अमोलक आप वरताइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहर नज़र इक उठाइंदा। गुरमुख सच्चा सच प्रीत, मंगे चरण सरन सरनाईआ। भावे साहिब तेरी रीत, दूजा मार्ग नज़र कोए ना आईआ। अन्दर बाहर गावां गीत, तू ही तू ही राग अलाईआ। काया काअबा दस्से मन्दिर मसीत, गुरुदुआर इक्को नज़री आईआ। जिस घर बैठा सदा अतीत, त्रैगुण माया डेरा ढाहीआ। बणया रिहा सच्चा मीत, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। आदि जगादि जुग चौकड़ी कदे ना होए पलीत, दुरमति मैल ना लागे राईआ। लेखा जाणे हस्त कीट, लख चुरासी रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। सतिगुर पूरा सद प्रतख, पारब्रह्म प्रभ आपणा रूप वटाइंदा। गुरमुख गुर गुर लए रख, सतिगुर आपणा मेल मिलाइंदा। निज नेत्र खोल्हणहारा अक्ख, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। आत्म परमात्म मार्ग दस्स, मस्ती इक्को नाम चढ़ाइंदा। निझर झिरना देवे रस, रस रसईया मुख चुआइंदा। तीर निराला मारे कस, अणयाला हथ्थ रखाइंदा। कूड़ी क्रिया बुरज जाए ढट्ठ, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाइंदा। निरगुण जोत कर प्रगट, नूरो नूर डगमगाइंदा। कर खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी धार चलाइंदा। गुरमुख देवे इक्को वथ, साची वस्त झोली पाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा दोहां इक्को जिहा जस, जस वेद पुराण सिफ्त सालाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साजण साची दया आप कमाइंदा। गुरसिख कहे प्रभ तेरी सरन, सरनगति इक रखाईआ। नेत्र खोल्ह हरन फरन, पड़दा कोए रहिण ना पाईआ। गुरमुख तेरे तेरे पौड़े चढ़न, मंज़ल मंज़ल पन्ध ना कोए वखाईआ। सच दुआरे इक्को खड़न, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। नित नवित्त दर्शन तेरा करन, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला राग इक्को पढ़न, दूजी होर ना कोए पढ़ाईआ। निरभउ भय तेरा रख डरन, दूजा सके ना कोए डराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच देणी इक सरनाईआ । सतिगुर पूरा रिहा आख, आख़र इक्को हुक्म सुणाइंदा। हरिजन हरि हरि होणा दास, दासी दास रूप वटाइंदा। गुर गुर किरपा पूरी करे आस, आसा मनसा पूर कराइंदा। जगत तृष्ना मेट प्यास, दर्दी दर्दीआं

दर्द वंडाइंदा। सफल कराए कुक्ख मात, जन जननी वेख वखाइंदा। मेटणहार अन्धेरी रात, साचा सच चन्द चमकाइंदा। खेले खेल पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर खोज खोजाइंदा। गृह मन्दिर पावे रास, घर गोपी काहन नचाइंदा। निज आत्म कर के वास, वसल आपणा इक वखाइंदा। लेखा जाणे बातन बात, बैतल धाम इक सुहाइंदा। गुरमुख देवणहारा नजात, निज नेत्र वेख वखाइंदा। अट्ठे पहर रहे प्रभात, संधया रूप ना कोए वटाइंदा। सच्ची देवे इक्को दात, अतोट अतुट झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे भेव चुकाइंदा। गुरमुख कहे प्रभ मेरे ठाकर, साहिब तेरे हथ्थ वड्याईआ। हउँ बाला नढ्ढा ना कोए चातर, जीवण जुगत नज़र कोए ना आईआ। माणस जन्म पाया तेरे मिलण दी ख़ातर, तेरा तेरे विच समाईआ। दरस दे ज़ाहर बातन, गुप्त तेरी वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी कदे ना होवे मातम, परमात्म आत्म तेरी अंस अख्वाईआ। तेरा नाउँ साची गाथन, ढोला गावां चाईं चाईंआ। तूं बाप पुरख समराथन, समरथ तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे खुशी मनाईआ। गुरमुख साचे होणा खुश, हरि खुशीआं विच रखाइंदा। मेटे रैण अन्धेरा घुप्प, चन्द चांदना इक चमकाइंदा। जो बैठा अन्दर चुप्प, सो साहिब आपणा बोल सुणाइंदा। तेरा दुःख दर्द लए पुच्छ, दुखियां दुःख वेख वखाइंदा। जे तेरी झोली नहीं कुछ, ख़ाली झोली आप भराइंदा। लोकमात सुहाए सुहञ्जणी रुत्त, रुत्त रुतड़ी आप महकाइंदा। साचा लाल छोटा पुत्त, पिता पूत गोद उठाइंदा। करनहारा उजल मुख, मुख मुखड़ा आप वडियाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दूर दुराडा नेड़े वेखे झुक, बण पांधी पन्ध मुकाइंदा। गुरसिख कहे प्रभ बेपरवाह, तेरा अन्त कोए ना पाईआ। जुग चौकड़ी कोटन कोटि दित्ते लँघा, आपणा भेव ना किसे जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर इशारयां नाल दित्ते समझा, साचा हुक्म इक वरताईआ। लोकमात खण्ड ब्रह्मण्ड दित्ते तजा, बण नटुआ स्वांग वरताईआ। सच संदेसे दित्ते घला, ढोला शब्द नाद सुणाईआ। मन्दिर मसीत शिवदुआले मट्ठ दित्ते बणा, जीवण जुगत जगत बणाईआ। आप बैठा रिहों बेपरवाह, पर्दानशीं मुख नक़ाब ना कोए उठाईआ। पारब्रह्म परवरदिगार तेरी मन्नीए सदा रज़ा, बे-यकीन तेरा यकीन कोए ना आईआ। मेहर नज़र बेनज़ीर आपणी लै उठा, तकदीर तकबीर देणी बदलाईआ। रहमत कर इक खुदा, खुदग़रजी दे गंवाईआ। तेरे उत्तों होए फ़िदा, फ़ितरत कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक वर, वर दाते तेरी वड्याईआ। सतिगुर पूरा गुर गोपाल, गोपालन आपणी दया कमाइंदा। उठ गुरमुख मुख वेख दीन दयाल, मुख मुखड़ा आप सुहाइंदा। जिस नीहां हेठां दित्ते बाल, सो बाले बाल्यां झोली पाइंदा। आ के सुणे

मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा वेस वटाइंदा। निरगुण हो के सरगुण बणे दलाल, सच दलाली इक कमाइंदा। वेखणहारा हक़ हलाल, हकीकत घर घर खोज खोजाइंदा। भज्जा फिरे मशरक मग़रब जनूब समाल, शमूलीअत आपणी ना किसे समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मार्ग इक समझाइंदा। सच्चा मार्ग प्रभ सिक्दार, तेरा इक्को इक नज़री आईआ। जन भगत बणे रहे सदा हक़दार, हक़ आपणा तेरे घर रखाईआ। तूं देवणहार दातार, जुग जुग तेरी सरनाईआ। आपणा खोल्ह बंद कवाड़, बंद ताकी क्यों कराईआ। कर प्रकाश बहत्तर नाड़, निज नूर मिले रुशनाईआ। बिरहों विछोड़े तेरे दित्ता साड़, अग्नी अग्ग रही तपाईआ। आ सतिगुर प्रभ मेरे कर प्यार, तेरी प्रीती इक्को भाईआ। लारयां विच लँघे जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बैठे पन्ध मुकाईआ। अन्तिम वेख आपणी धार, धार धार विचों प्रगटाईआ। बख्शणहार साहिब दातार, बख्शीश आपणी दे वरताईआ। तेरा नाउँ सदा निरँकार, निरवैर रूप आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, दर दरवेश मंगण चाईं चाईंआ। दर दरवेश मंगो मंग, मांगत सच रूप जणाईआ। श्री भगवान सूरा सरबँग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। आत्म देवे इक अनन्द, अनन्द आत्म विच वखाईआ। भेव चुकाए परमानंद, परम पुरख हथ्थ वड्याईआ। गीत सुणाए आपणा छन्द, सोहँ ढोला इक अलाईआ। दूई द्वैती ढाहे कंध, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। सुरत सवाणी ना होवे रंड, शब्दी कन्त इक मिलाईआ। घर प्रकाश करे चन्द, जोती जोत नूर रुशनाईआ। लेखा चुक्के बत्ती दन्द, रसना जिह्वा सिफ्त ना कोए सालाहीआ। काया चोली चढ़े रंग, रंग रंगीला इक्को रंग दए रंगाईआ। माणस जन्म ना होवे भंग, लख चुरासी फंद कटाईआ। लेखा चुके विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड चरणां हेठ दबाईआ। अन्तर अन्तिम आत्म परमात्म पिता पूत लै के जाए सचखण्ड, जिस खण्ड वेखण कोए ना जाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि सदा बख्शंद, बख्शश रहमत रहीम रहमान राम आपणी आप वरताईआ।

कष्ट रोग ना रहे तन, काया कपड़ मिले वड्याईआ। मन वासना पूरी होए मन, ममता माँ पुत जणाईआ। वस्त अमोलक मिले धन, ख़ज़ाना इक वखाईआ। जगत विकार देवे डंन, खण्डा हथ्थ चमकाईआ। कर्म कांड डेरा देवे भन्न, धर्म दुआरा इक वखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, घर अन्धेरे चाढ़े चन्द, इक्को नूर तेज चमकाईआ।

✪ ४ अस्सू २०२० बिक्रमी सरदारा सिँघ दे गृह पिण्ड मनावां ज़िला फिरोज़पुर ✪

सो पुरख निरँजण सर्ब गुणतास, शाह पातशाह तेरी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण प्रभ तेरी इक्को आस, बेअन्त बेपरवाह सच्ची सरनाईआ। एकँकार सच दुआर तेरा खेल तमाश, बेनज़ीर नज़री आईआ। आदि निरँजण तेरा नूर जोत प्रकाश, निरवैर पुरख डगमगाईआ। श्री भगवान दो जहान तेरे दास, सेवक रूप वटाईआ। अबिनाशी करते तेरा डूंग्घा खात, नेत्र नैण नज़र किसे ना आईआ। पारब्रह्म तेरी साची रास, निरगुण निरगुण गोपी काहन नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे ओट तकाईआ। तेरी ओट श्री भगवान, पारब्रह्म सच्ची सरनाईआ। चरण कँवल बख्श इक ध्यान, मेहर नज़र नैण उठाईआ। सति सतिवादी सच दे ज्ञान, निअक्खर कर पढ़ाईआ। महल अटल सोहे इक मकान, सचखण्ड वज्जे सच वधाईआ। नज़री आए शाह पातशाह नौजवान, नर निरँकार बेपरवाहीआ। भूपत भूप बण राज राजान, तख्त निवासी साचे तख्त सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। तेरे दर इक अलख, साचा नाअरा कूक सुणाईआ। सच स्वामी हो प्रतख, सति सतिवादी आपणी धार प्रगटाईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा रख, मेहरवान तेरी सरनाईआ। जुग चौकड़ी मार्ग रहे दस्स, गुर अवतार पीर पैगम्बर ढोला गाईआ। निरगुण सरगुण आदि जुगादि लए तक्क, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। तुध बिन दूजा नज़र ना को, दो जहान दिस कोए ना आइंदा। सो पुरख निरँजण सुण आपणी सो, सति सतिवादी तेरी आस रखाइंदा। सच प्रकाश कर लो, पुरी लोअ खण्ड ब्रह्मण्ड तेरा राह तकाइंदा। धुर दा ढोआ मिले ढो, नाम फ़रमान हरि तेरा इक्को नज़री आइंदा। नेत्र नैण कोई ना सके रो, हँस-मुख तेरा राग अलाइंदा। साचा अमृत झिरना चो, निझर इक्को रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरा सोभा पाइंदा। दर तेरा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण वड्डी वड्याईआ। अलख अगोचर अगम्म अथाह तेरी महिमा बेअन्त, रसना जिह्वा सिफ्ती सिफ्त ना कोए सालाहीआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी खेल करे अनन्त, अक्ल कलधारी आपणी कल प्रगटाईआ। वेस वटाए नार कन्त, सेज सुहञ्जणी आप हंढाईआ। नाम निधान मणीआ मंत, दो जहान शब्द शनवाईआ। बोध अगाधा बण बण पंडत, भेव अभेदा दए खुलाईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, मध आपणी कार कमाईआ। लख चुरासी जीव जंत, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दीन दयाल तेरी सरनाईआ। दीन दयाल सतिगुर ठाकर, साहिब तेरी ओट

तकाईआ। गहर गम्भीर डूंघे सागर, भेव अभेद दे जणाईआ। करीम करते रहीम कादर, बेऐब नूर खुदाईआ। एका हुक्म दे सादर, शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, निउँ निउँ लागां तेरी पाईंआ। साचा हुक्म परवरदिगार, एका एक एक जणाईआ। मुकामे हक़ सांझा यार, नूर नुराना नज़री आईआ। आदि जुगादी मददगार, पुश्त दर पुश्त आपणा हथ्थ टिकाईआ। लेखा जाणे शाह पातशाह सच्ची सरकार, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस झुकाईआ। दर तेरे प्रभ झुके सीस, जगदीश तेरी सरनाईआ। तेरा कलमा इक हदीस, हज़रत तेरी सच पढ़ाईआ। दोए जोड़ कहीए असीस, सही सलामत तेरा नूर नज़री आईआ। सच खुदाए कर बख्शीश, बख्शश रहमत इक वरताईआ। दूर दुराडे नज़री आ नज़दीक, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। तेरा दिसे ना कोए शरीक, शिरकत रूप ना कोए वखाईआ। तेरी इक्को इक तौफ़ीक, मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला इलाही नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंगण आईआ। दर दुआर तेरे प्रभ मीत, भिक्खक आपणी झोली डाहीआ। साची दस्स सुहञ्जणी रीत, आदि निरँजण नूर रुशनाईआ। तेरा ढोला रल मिल गाईए गीत, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। लहिणा देणा चुक्के ठाकर दुआरा मन्दिर मसीत, काया काअबा इक्को नज़री आईआ। आत्म परमात्म पढ़े सच हदीस, पारब्रह्म ब्रह्म वेता दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मिले वड्याईआ। तेरे दर मिले वड्याई, दो जहान दूजा नज़र कोए ना आइंदा। पारब्रह्म बेअन्त स्वामी तेरी ओट इक तकाई, तक़वा इक्को इक जणाइंदा। घर घर विच कर सच्ची कुड़माई, साक सज्जण आपणा मेल मिलाइंदा। एका मन्दिर वसे धी जवाई, बंक दुआरा इक सुहाइंदा। अट्ठे पहर गीत गोबिन्द ढोला गाई, राग अनादी नाद सुणाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण भेव कहिण कोए ना पाई, अनभव आपणी खेल रचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरा इक्को नज़री आइंदा। पारब्रह्म परम पुरख सुल्तान, शाह पातशाह तेरी वड्याईआ। सचखण्ड निवासी मर्द मर्दान, बलधारी नौजवान, तेरे घर वज्जे वधाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी दाता दानी देवणहारा दान, वस्त अमोलक आप वरताईआ। खेले खेल दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा हुक्म वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बाल अञ्याण, फड़ उँगली रिहा चलाईआ। देवणहारा धुर फ़रमान, सच संदेसा नाम सुणाईआ । सच संदेसा इक ज्ञान, निष्अक्खर करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, करनी आपणी रिहा समझाईआ। साचा साहिब सतिगुर देव, देव आत्मा इक वड्याईआ। पारब्रह्म

अलख अभेद, अगम्म अथाह तेरी सरनाईआ। सरगुण निरगुण लोचे तेरी सेव, सेवा इक्को इक सच्ची भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर वखाउणा सदा निहकेव, निहचल आपणा धाम जणाईआ। निहचल धाम तेरा अटल, सचखण्ड निवासी सच दुआरा सोभा पाइंदा। निरगुण हो के बैठों मल्ल, सरगुण नज़र किसे ना आइंदा। जुग चौकड़ी गुर अवतार पीर पैगम्बर हुक्मे अन्दर दित्ते घल्ल, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा। पावे सार जल थल, समुंद सागर डूंघी गार फोल फोलाइंदा। लख चुरासी जीव जंत अन्दर रल, जोती शब्दी रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन देवणहारा नज़र कोए ना आइंदा। श्री भगवान तेरे अग्गे अरदास, चारे जुग सीस झुकाईआ। तेई अवतार रख के आए आस, आसा आसा नाल मिलाईआ। भगत अठारां तेरे चरणां मंगदे आए निवास, कँवल चरण मिले सरनाईआ। जुग चौकड़ी खेलया खेल ख़लक तमाश, ख़ालक आपणा वेस वटाईआ। मण्डल मण्डप पाई रास, गोपी काहन नाच नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप रचाईआ। साची खेल परवरदिगार, यामबीन रचन रचाईआ। मूसा ईसा मुहम्मद कर ख़बरदार, बेख़बर ख़बर सुणाईआ। साचा कलमा हक़ हकीकत बोल जैकार, नाअरा इक्को इक दृढ़ाईआ। कायनात पाए सार, तुलबा करे जगत पढ़ाईआ। चौदां तबकां खोल्ह कवाड़, भेव अभेदा आप समझाईआ। चौधवीं चन्द नूर उज्यार, चौदस आपणा रंग वखाईआ। लेखा लिखे कातब बण के सांझा यार, अलिफ़ ये सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनी इक्को इक जणाईआ। करनी करे आप करतार, करता पुरख वड्डी वड्याईआ। निरगुण सरगुण लै अवतार, गुर गुर आपणी बूझ बुझाईआ। शब्दी ढोला बोल जैकार, शब्दी शब्द नाम शनवाईआ। शब्दी गुर करे सच प्यार, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल धुरदरगाहीआ। धुरदरगाही खेल अवल्ला, एकँकारा आप कराइंदा। वसणहारा निहचल धाम अटला, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण जोती शब्दी आपे रला, रल मिल आपणा खेल रचाइंदा। नाम संदेस इक्को घल्ला, जुग चौकड़ी वंड वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर आपणा मेल मिलाइंदा। गुर गुर खेल पुरख समरथ, सतिगुर आपणी धार चलाईआ। पंज तत काया चोले पा वथ, वस्त अमोलक विच टिकाईआ। आत्म परमात्म चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। आपणा मार्ग आपे दस्स, अन्तर आपणा मेल मिलाईआ। आपणा नूर कर प्रगट, जोती जोत जोत रुशनाईआ। सच दुआरा खोल्ह हट्ट, बण वणजारा सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर इक्को रंग वखाईआ। गुर गुर वखाए साचा रंग, रंग रंगीला हरि अख्वाइंदा।

४७१ १५

आत्म सेजा बैठ पलँघ, सेज सुहञ्जणी सोभा पाइंदा । अनहद नाद वज्जे मृदंग, धुन आत्मक राग अलाइंदा। अमृत धारा साची गंग, निझर झिरना आप झिराइंदा। निरगुण जोत चाढ़ चन्द, सूरज चन्द नज़र कोए ना आइंदा। तूं मेरा मैं तेरा सच सुणाए आपणा छन्द, सोहँ ढोला राग अलाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म देवे परमानंद, निजानंद रस चखाइंदा। करवट लै बदले कंड, सनमुख इक्को नज़री आइंदा। भाण्डा भरम भउ कूड़ी क्रिया देवे भन्न, साख्यात सति सरूप आपणा दरस कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर गुर इक्को इक वडियाइंदा। गुर गुर सतिगुर वड स्वामी, सो साहिब आप जणाईआ। सर्ब जीआं घट अन्तरजामी, लख चुरासी वेख वखाईआ। बोध अगाध सुणाए बाणी, नानक गुर गुरु गुरदेव मिली वड्याईआ । दूसर कोई दिसे ना सानी, लासानी आपणा खेल कराईआ। निरगुण जोत नूर नुरानी, निरवैर पुरख आप प्रगटाईआ। चार युग जिस दी गौण कहाणी, सो करता आपणा हुक्म वरताईआ। देवणहारा पद निरबाणी, निरबाण पद इक्को इक जणाईआ। धुर वखाए धुर निशानी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर इक्को नज़री आईआ। सतिगुर इक्को शब्द गुर दाता, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। जुग चौकड़ी वेखे खेल तमाशा, निरगुण सरगुण रूप वटाइंदा। सर्ब जीआं करे पूरी आसा, जो जन चरण ध्यान रखाइंदा। निर्भय हो के बणे राखा, भय भउ सिर नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका गुरु गुरदेव स्वामी, आदि जुगादि सदा निहकामी, निहकर्मी आपणी कार कमाइंदा। निहकर्मी हरि बेपरवाह, सतिगुर शब्दी धार चलाईआ। बोध अगाधा भेव खुल्हा, बाणी बोध बोध वड्याईआ । एका जोती जोत रुशना, दहि दिशा वेख वखाईआ। दस्म दुआरी कुण्डा लाह, पड़दा इक्को वार उठाईआ। सन्त सुहेले लए जगा, गुर चेले मेल मिलाईआ। भगत भगवान नैण खुल्हा, निज नेत्र करे रुशनाईआ। गुरसिख गुर गुर गोद उठा, गुर गोबिन्द गंढु पवाईआ। अमृत जाम इक प्या, सच प्याला हथ्थ वखाईआ। नाम खण्डा इक चमका, चण्ड प्रचण्ड दरसाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खोजा, जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज डेरा ढाहीआ। नाम रंग इक रंगा, दुरमति मैल धवाईआ। ज़ात पात वरन गोत कूड़ी क्रिया डेरा ढाह, साचा मार्ग इक लगाईआ । क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश नाता जोड़ भैण भ्रा, पिता पूत इक्को नज़री आईआ। सच सरोवर गुर चरण धूढ़ी दए नुहा, मल विखेप रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरी सेव कमाईआ। तेरी सेव ईसा मूसा मुहम्मद चार यार, यारी यारां नाल निभाईआ। अल्ला राणी कूक करे पुकार, खुल्ही मींढी भज्जे वाहो दाहीआ। दहि दिशा वेखे नैण उग्घाड़, साचा मीआं नज़र कोए ना आईआ। नेत्र रोवे ज़ारो ज़ार, उच्ची कूक कूक कुरलाईआ। गल

अल्फ़ी दिसे ना कोए श्रृंगार, सूसी तन ना कोए छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे इक ध्यान लगाईआ। दर तेरे लग्गा ध्यान, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। गुर अवतार दे के गए ब्यान, रसना जिह्वा ढोला सर्ब गाइंदा। कलयुग अन्त श्री भगवन्त प्रगट होवे आण, जोती जाता वेस वटाइंदा। योद्धा सूर बली बलवान, बलधारी आपणा खेल कराइंदा। लेखा जाणे दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड चरणां हेठ दबाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर कट्ठे करे आण, चार युग दे विछड़े मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप समझाइंदा। साची करनी सुणो कर विचार, सो साहिब आप जणाईआ। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, थिर कोए रहिण ना पाईआ। सेवा करन गुरू अवतार, पीर पैगम्बर चल्लण हुक्म रज़ाईआ। आवण जावण वारो वार, नित नवित्त फेरा पाईआ। ढोला गावण विच संसार, धुर दी बाणी बोल जणाईआ। कलम शाही कागद बण लिखार, जगत शहादत दए बणाईआ। मार्ग दस्स जीव गंवार, सच सुच करे पढ़ाईआ। मिले एक एका एकँकार, जो आदि जुगादि रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। साची सिख्या दृढ़ाए एक, हरि सतिगुर दया कमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दी रखदे टेक, सो पुरख अकाल सच्चा शहिनशाहीआ। जुग चौकड़ी जन भगतां करे सदा हेत, हितकारी आपणा फेरा पाईआ। अन्दर वड़ के दस्से भेत, बाहरों नज़र किसे ना आईआ। बण प्रीतम करे हेत, सच प्रीती आप जणाईआ। निरगुण हो के खेले खेड, सरगुण मार्ग इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। धुर संदेसा सुणो कन्न ला, हरि करता आप जणाइंदा। सो पुरख निरँजण बेपरवाह, हरि पुरख निरँजण खेल कराइंदा। एकँकारा अगम्म अथाह, अलख अगोचर नज़र किसे ना आइंदा। आदि निरँजण करे रुशना, जोत निरँजण डगमगाइंदा। अबिनाशी करता बणे मलाह, खेवट खेटा बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा। श्री भगवान चप्पू दए लगा, नाम वञ्झ मुहाणा इक बणाइंदा। पारब्रह्म प्रभ पतण मल्ले आ, माही इक्को इक नज़री आइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी लेखा दए मुका, लेखा सब दा आपणी झोली पाइंदा। पीर पैगम्बर करदे गए दुआ, सजदा सीस सर्ब झुकाइंदा। गुर अवतार मंगदे गए पनाह, चरण कँवल ध्यान सर्ब लगाइंदा। कलयुग अन्तिम वेला पारब्रह्म प्रभ जाए आ, अलख निरँजण आपणा वेस वटाइंदा। पूरब लेखा सब दा दए मुका, बचया कोई रहिण ना पाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर भगत भगवान इक्को दर लए बहा, दर दरवाज़ा इक खुलाइंदा। कलयुग अन्तिम नेत्र नैण सब नूं दए वखा, चार कुण्ट पड़दा लाहइंदा। उठो

वेखो करो ध्यां, हरि ध्यानी आप जणाइंदा। जीव जंत सब भुल्ले हरि का नाँ, हिरदे हरि ना कोए वसाइंदा। हँस रूप होए काँ, सोहँ माणक मोती चोग ना कोए चुगाइंदा। खा खा थक्के सूर गां, आत्म परमात्म रस नज़र किसे ना आइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर अन्त कोई ना पकड़े बांह, जो जन सतिगुर पूरे कोलों मुख भवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नेत्र नैणां नाल वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर आओ नेड़े, पुरख अकाल रिहा जणाईआ। उठो वेखो आपणे खेड़े, कलयुग घर घर डौरु डंका रिहा वजाईआ। दीन मज़्ब पए झेड़े, झगड़ा ज़ात पात लड़ाईआ। कोटन कोटि बण गए गुरू गुरु गुर चेरे, पुरख अकाल सच्चा सतिगुर बैठे सर्ब भुलाईआ। चारों कुण्ट लग्गे डेरे, हरि का डेरा नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखण खोल्ह अक्ख, लोकमात ध्यान लगाईआ। चारों कुण्ट लाउँदे भक्ख, भाख्या हरि की समझ किसे ना आईआ। जो मार्ग लोकमात आए दस्स, कलयुग जीव गए भुलाईआ। साधां सन्तां रिहा ना धीरज जत, सति सन्तोख नज़र कोए ना आईआ। कूड़ी माया समझण हक़, जूठ झूठ करन कुड़माईआ। धीआं भैणां रहे तक्क, मन्दिर मस्जिद बैठे डेरे लाईआ। निज नेत्र कोई ना खोल्हे अक्ख, अन्तर आत्म हरि का दरस कोए ना पाईआ। फल दिसे ना डाली पत्त,
४७४ सिंमल रुख रहे लहराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेख जणाए थाउँ थाईंआ। पीर पैगम्बर ४७४
१५ होए हैरान, प्रभू तेरी वड वड्याईआ। शरअ दस्स के आए अञ्जील कुरान, काया कुरा खोज खुजाईआ। मक्का काअबा १५
इक ईमान, अमल इक्को इक समझाईआ। इक्को रोज़ा हक़ रहमान, इक्को नमाज़ निउँ निउँ गए समझाईआ। इक्को महिबूब मिले आण, मुहब्बत इक्को इक कराईआ। इक्को बणया रहे महमान, महिफ़लखाने डेरा लाईआ। इक्को देवणहार पैग़ाम, साचा कलमा नबी करे पढ़ाईआ। सो साहिब सच्चा सुल्तान, दरगाह साची बैठा आसण लाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होवे आण, अमाम अमामां नाउँ रखाईआ। तिस दी मुल्लां शेख़ मसायक गौंस कुतब कोई ना करे पहचान, रूप रेख रंग नज़र किसे ना आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मेटे दुकान, सतिजुग साचा हट्ट खुल्हाईआ। मुरीद मुर्शद देवे सच्चा दान, दौलतमंद दए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, घर आपणा भेव खुल्हाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे दस्सण, निरगुण निरगुण हाल सुणाईआ। कलयुग अन्तिम रैण अन्धेरी मस्सण, मस्त सुत्ती जगत लोकाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार अन्दर वसण, सच दुआरा नज़र किसे ना आईआ। साधां सन्तां चरण उठ उठ ढढ्ढण, सतिगुर पूरे सीस ना कोए झुकाईआ। श्री भगवान लख चुरासी छाछ वरोलणहारा मक्खण, कलयुग अन्तिम नाम मधाणा

पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे तक, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मार्ग दस्स दस्स गए थक्क, धुर संदेसा हुक्म सुणाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा चारों कुण्ट लाए फट्ट, पट्टी हक़ ना कोए बंधाईआ। कूड़ी क्रिया सत्थर बैठी घत्त, सथर यारड़ा ना कोए हंढ्ढाईआ। माया ममता होवे वस, मन वासना फिरे हल्काईआ। मनमति रही नस्स, गुरमति बैठी मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा आपणा वर, प्रभ तेरे तेरे अग्गे वास्ता पाईआ। तेरे अग्गे वास्ता पाउँदे आं। दोए जोड़ सीस झुकाउँदे आं। तेरा नाम इक ध्याउँदे आं। दूजी ओट ना कोई तकाउँदे आं। तेरे अग्गे साहिब शरमाउँदे आं। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच्चा घर, जिस घर बहि के तेरा दर्शन पाउँदे आं। साचा घर इक वखावांगा। सचखण्ड दुआर वसावांगा। कर प्यार कोल बहावांगा। बहि अडोल अडोल करावांगा। जो दस्स के आए बोल, सो मातलोक पूर करावांगा। लख चुरासी वज्जे इक्को ढोल, डंका नाम निधान जणावांगा। सच दुआरा सच्चा खोल्ह, भगत दुआर वड वडयावांगा। लेखा चुक्के पड़दा ओहल, दूई द्वैत मेट मिटावांगा। गोबिन्द कीता सच्चा कौल, इकरार अन्तिम आपणे लेखे पावांगा। मिले वड्याई धरनी धरत धौल, धवला हौला भार करावांगा। हरि का भेव कोई ना जाणे पंडत पांधा रौल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त आप वरतावांगा। साची वस्त प्रभू वरताएगा। लख चुरासी बूझ बुझाएगा। भेव अभेदा गोझ खुल्हाएगा। एका दूज भउ चुकाएगा। तीजा नैण गुरमुखां आप प्रगटाएगा। सच दुआरे दस्से बहिण, घर मन्दिर इक सुहाएगा। तूं मेरा मैं तेरा रसना जिह्वा सारे कहिण, सोहँ नाम इक जणाएगा। कूड़ी क्रिया कोए ना वहे वहण, भव सागर पार तराएगा। नाता जोड़े भाई भैण, चार वरन इक्को घर वसाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धर्म दुआरा इक प्रगटाएगा। धर्म दुआर प्रभू प्रगटावेगा। नानक गोबिन्द धार चलावेगा। चार वरन लेख चुकावेगा। पुरख अकाल सर्ब सृष्ट मनावेगा। जन भगतां दृष्ट अन्तर आप खुलावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मार्ग इक लगावेगा। साचा मार्ग आप लगाएगा। प्रभ ठाकर दया कमाएगा। रहबर इक्को नज़री आएगा। गुरमुख गुरसिख सज्जण आप जगाएगा। सन्त सुहेले नाल मिलाएगा। गुर चेले अंग लगाएगा। भगत नवेले आप उठाएगा। जो प्रभ सिमरन तों हो गए वेहले, तिन्हां राए धर्म हथ्थ फड़ाएगा। लख चुरासी घल्ले आपणी जेले, गेड़ा गेड़े विच भवाएगा। बिन सतिगुर पूरे आत्म परमात्म कोई ना मेले, सुरती शब्द ना कोई जुड़ाएगा। अन्तिम कलयुग खेल प्रभू कल खेले, समझ विच किसे ना आएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे आप रलाएगा। हरिजन साचे आप उठावेगा। प्रभ आपणी दया कमावेगा। अन्दर वड़ के कुण्डा लाहवेगा। साचे मन्दिर चढ़ के भेव चुकावेगा। नाम निधान ढोला पढ़ के, अनरागी राग सुणावेगा। सच सिँघासण आपे खड़ के, ख़ालस आपणा रूप दरसावेगा। गुरमुख सवाणी सतिगुर वर के, शब्द हाणी जोड़ जुड़ावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान रंग रंगावेगा। भगत भगवान रंग रंगावेगा। अंगीकार अंग लगावेगा। सूरा सरबँग वेख वखावेगा। नाम मृदंग इक सुणावेगा। निरगुण जोत चन्द चमकावेगा। नौ दुआरे पार करावेगा। कूड़ी क्रिया मेट मिटावेगा। अमृत धार रस चुआवेगा। सुखमन टेडी बंक ईड़ा पिंगल, नेत्र नैण शरमावेगा। नाम नधाना अन्दरे अन्दर दे के सिगनल, सिध्धा राह इक वखावेगा। सो गुरमुख बजर कपाटी पाड़ उते पर्बत चढ़े पिंगल, पिंगले आपणे नाल मिलावेगा। जिस दा लेखा कदे ना जाए बदल, सो बदला सर्ब चुकावेगा। सचखण्ड निवासी साचा करे अदल, अदालत इक्को इक समझांवेगा। लेखा चुके मक़तूल कातिल, कतलगाह आपणा डेरा ढावेगा। धाम वखाए इक्को बैतुल, मुक्दस इक्को घर सुहावेगा। गुरमुख विरला चढ़ के वेखे आपणी मंज़ल, सतिगुर पूरा पैंडा आप मुकावेगा। जो कलयुग अन्तिम बैठे रहे बण के बुज़दिल, तिन्हां दर दर आप फिरावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, किरपा करे साचा हरि, भगत भगवान जोत रुशनावेगा। जन भगतां जोत जगाएगा। निर्मल नूर इक चमकाएगा। काया कोट आप वसाएगा। शब्द चोट नाम लगाएगा। कूड़ी क्रिया खोट कढ्ढाएगा। आहलणिउँ डिगे बोट उठाएगा। पूरब जन्म दे मेटे रोस, रुस्सयां आप मनाएगा। जन्म जन्म दी देवे होश, पड़दा माया आप चुकाएगा। जो अन्दर बैठा रहे ख़ामोश, सो सतिगुर सच कहाणी आप सुणाएगा। भगत भगवान इक दूजे दा दर्शन सदा रहे लोच, लोचा इक्को वार पूर कराएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सचखण्ड दुआरे हरि निरँकारे माणे इक्को मौज, मौजूदा हाल अहिवाल हरि हरि जू वेख वखावेगा।

४७६ १५

✪ ५ अस्सू २०२० बिक्रमी इन्द्र सिँघ दे गृह पिण्ड खोसे ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

चौथा युग रिहा कूक, दहि दिशा दए दुहाईआ। त्रैगुण अग्नी रही फ़ूक, पंज तत करे लड़ाईआ। घर घर वसे जूठ झूठ, सच सुच्च नज़र कोए ना आईआ। फिरी दरोही चारे कूट, मन वासना होई हल्काईआ। सच बणे ना कोए सपूत, पिता पुरख ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, हरि सरन सच्ची

सरनाईआ। कलयुग कूक करे पुकार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। चारों कुण्ट हाहाकार, नवखण्ड धीर ना कोए धराईआ। दीप सत्त ना कोए प्यार, ब्रह्मण्ड खण्ड शब्दी नाद ना कोए वजाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर उच्चे टिल्ले बैठे करन ध्यान, निज नेत्र नैण उठाईआ। लख चुरासी भुल्ली तत ज्ञान, गुरमति संग ना कोए रखाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार होया शैतान, शरअ घर घर रिहा जणाईआ। सिदक सबूरी साचा दिसे ना कोई ईमान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, दर घर साचे मिले वड्याईआ। कलयुग रोवे मारे धाह, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर पल्लू गए छुडा, दस्तगीर नजर कोए ना आईआ। रहमत कर सच खुदा, बेऐब तेरी सरनाईआ। श्री भगवान फेरा पा, पारब्रह्म प्रभ तेरी ओट तकाईआ। गुर शब्दी डंक वजा, नाउँ निरँकारा इक दृढ़ाईआ। सोई सुरती दे जगा, पंज तत काया फोल फोलाईआ। सच मूर्ती दे वखा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। नाद तूरती दे सुणा, धुन आत्मक राग अलाईआ। मन मूर्खी दे गंवा, बुध विवेक आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, साची सिख्या इक समझाईआ। कलयुग रोवे नेत्र खोल्ह अक्ख, दो जहानां वेख वखाईआ। नव नौ चार होई सख, साची वस्त ना कोए विकाईआ। साहिब सतिगुर पुरख स्वामी प्रगट दिसे ना किसे प्रतख, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। विशा विकार तीर्थ अठसठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती धीरज धीर ना कोए धराईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले रोवण मट्ठ, साचा नाउँ हरि हरि ना कोए ध्याईआ। नाड़ बहत्तर उबले रत, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। कलयुग उठ करे विचार, आप आपणा वेख वखाईआ। चारों कुण्ट दिसे हार, साचा संग ना कोए निभाईआ। नाता तुटा मीत मुरार, सज्जण सैण साक ना कोए पिता माईआ। अन्तर आत्म करे ना कोए प्यार, परमात्म नज़र किसे ना आईआ। ब्रह्म मेला पारब्रह्म ना कोए आधार, गुर चेला रंग ना कोए रंगाईआ। चार वरन धूंआँधार, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश संसा रोग ना कोए चुकाईआ। अठारां बरन ना कोए प्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मिले सच सची सरनाईआ। कलयुग कहे प्रभ बेपरवाह, बेअन्त तेरी सरनाईआ। निरगुण सरगुण बण मलाह, लोकमात वेस वटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा ध्यान गए लगा, चरण कँवल कँवल सरनाईआ। सच संदेसा गए सुणा, धुर दी बाणी राग अलाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होवे नर निरँकार सच्चा शहिनशाह, कल कल्की फेरा पाईआ। दो जहानां देवे इक सलाह, विष्न ब्रह्मा शिव करे पढ़ाईआ। तेई अवतार लए समझा, भगत अठारां बूझ बुझाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद दए पनाह,

समरथ सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुर गुर धार दए वखा, नानक गोबिन्द रंग रंगाईआ। साचा मन्त्र इक दृढ़ा, सृष्ट सबाई करे पढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया दए गंवा, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र लए उठा, बेनज़ीर आपणी नजर तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। कलयुग मंगे इक्को मंग, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सच दुआरा वेख लँघ, कूड़े मन्दिर डेरा ढाहीआ। सुंञी दिसे तेरी सेज पलँघ, सुहञ्जणी सेज ना कोए सुहाईआ। कलयुग जीव आत्म माणे ना कोए अनन्द, निजानंद रस ना कोए चखाईआ। साचा ढोला गाए ना कोई छन्द, तेरा मेरा भेव ना कोए मिटाईआ। दूई ढाहे ना कोए कंध, भाण्डा भरम ना कोए भंनाईआ। सुरत सवाणी होई रंड, शब्दी कन्त ना कोए हंढ़ाईआ। हाहाकार वेख वरभण्ड, भंडी घर घर कूड़ी क्रिया पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, लोकमात नेत्र नैण नैण उठाईआ। कलयुग कहे मेरे साहिब सुल्तान, शाह पातशाह तेरी वड्याईआ। किरपा कर वाली दो जहान, पुरख अकाल समरथ तेरी सरनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर भगत भगवान मंगण दान, सन्त सज्जण बैठे झोली डाहीआ। गुरमुख बणे बाल अञ्याण, बाली बुध इक रखाईआ। गुरसिख चरण धूढ़ी करन अशनान, दुरमति मैल धवाईआ। निगहबान हो निगहबान, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ । कागद कलम लिख लिख होए हैरान, तेरा अन्त कहिण कोई ना पाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी दए ब्यान, सच शहादत इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। कलयुग कहे मेरे भगवन्त, प्रभ तेरी ओट तकाईआ। मेरा लेखा चुक्के अन्त, लोकमात रहिण ना पाईआ। गढ़ तुटे हउमे हंगत, हँ ब्रह्म पारब्रह्म दे समझाईआ। दर दरवेश खलोता मंगत, भिखक भिख्या झोली दे पाईआ। भरमे भुल्ला तेरा लख चुरासी जीव जंत, साध सन्त अन्तर आत्म ध्यान ना कोए लगाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द गाउँदे मंत, मन्त्र फुरना ना कोए वखाईआ। फिरे दुहागण नार बिन कन्त, सुहागी रूप ना कोए वटाईआ। काया चोली चढ़े ना रंग बसन्त, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। भेव ना पाए कोई पंडत, बोध अगाध तेरी समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, तुध बिन सहायक कोई नज़र ना आईआ। कलयुग कहे मेरे भगवान, तेरे हथ्थ मेरी वड्याईआ। तेरे दर तों मिल्या दान, झोली ख़ाली आप भराईआ। अन्त दर तेरे डिगा आण, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। कूड़ी क्रिया मेट निशान, निशाना इक्को इक वखाईआ। लेखा चुक्के शरअ बेईमान, ईमान इक्को इक समझाईआ। नज़री आए इक नौजवान, नर निरँकार सच्चा शहिनशाहीआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी

जिस दा नाम सदा प्रधान, सो प्रधानगी इक कमाईआ। सृष्ट सबाई आत्म परमात्म देवे सच ज्ञान, ब्रह्म विद्या करे पढ़ाईआ। नाता तुटे कूड़ी क्रिया जीव जंत जहान, जागरत जोत करे रुशनाईआ। काया मन्दिर अन्दर नज़री आए तेरा नूर महान, महिमा अकथ कथ सुणाईआ। राग अनादी सुणे सची धुन्कान, बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द ढोला गाईआ। सो भूमका सोहे मकान, घर घर विच वज्जे वधाईआ। सतिगुर स्वामी दर्शन देवे आण, आवण जावण चुके सर्ब जुदाईआ। भगत भगवान कर पहचान, पड़दा दूई द्वैत उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे वास्ता पाईआ। कलयुग कहे मेरे पुरख निरँजण, हरि वड्डे वड वड्याईआ। नेत्र दे नाम अंजन, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। दीनां नाथां बण साचा सज्जण, दु:ख भंजन तेरी सरनाईआ। चरण धूढ़ करा मजन, माया ममता दे गंवाईआ। काया माटी कर कंचन, सोना आपणा रंग वखाईआ। धुरदरगाही बेपरवाही पुरख अकाल तेरा शब्द अगम्मी सच्चा बचन, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। गुरमुख गुरसिख सन्त सुहेले साचे मंगण, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। किरपा निधान लख चुरासी तोड़ फंदन, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। कलयुग सच सुच्च कीती नंगन, पड़दा सके ना कोए पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साचा मार्ग दे समझाईआ । कलयुग कहे मेरे पुरख अबिनास, अबिनाशी तेरी इक सरनाईआ। हउँ बालक छोटा तेरा दास, बण सेवक सेव कमाईआ। चौदां सदीआं मुहम्मद पूरी करे आस, आसा आसा नाल मिलाईआ। बीस बीसा खेल तमाश, जगत जगदीशा भेव चुकाईआ। मण्डल मण्डप गोपी काहन पाई रास, निरगुण सरगुण नाच नचाईआ। खेलया खेल पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर वेख वखाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत जो रखण तेरी आस, निज नेत्र ध्यान लगाईआ। कर किरपा कर प्रकाश, प्रकाशवान तेरी रुशनाईआ। मन वासना तन रहे ना बदमुआश, बुद्धी विवेक दे कराईआ। पार उतार आपणे घाट, पूरब घाटा पूर कराईआ। नाम वस्त दे दात, अमोलक आप वरताईआ। उत्तम वखा आपणी ज़ात, वरन बरन नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरा तेरे विच समाईआ ।

✪ ५ अस्सू २०२० बिक्रमी केहर सिँघ दे गृह रजीवाला ज़िला फिरोज़पुर ✪

शाह पातशाह गुरू महाराज, कर किरपा तेरी वड्याईआ। सीस जगदीश तेरे ताज, राजन राज तेरी सरनाईआ। दो जहान तेरा काज, ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी रचन नज़री आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा समाज, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ।

सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मारदे रहे आवाज़, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त बेड़ा बन्न् चलाउँदे रहे जहाज़, खेवट खेटा रूप वटाईआ। बोध अगाध नाम निधाना सुणाउँदे रहे नाद, धुन आत्मक राग अलाईआ। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द अमृत रस वेखदे रहे स्वाद, रस इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर तेरे मिले वड्याईआ। तेरे घर मिले वड्याई, वड वडा नज़री आइंदा। आदि जुगादि ना होए जुदाई, जुग चौकड़ी विछोड़ा कोए ना पाइंदा। एका मंग रहे मंगाई, दूजी आस ना कोए वखाइंदा। किरपा कर सच गोसाईं, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर इक्को सोभा पाइंदा। गुरू महाराज वड पीरन पीर, बेऐब नूर खुदाईआ। तुध बिन होए सदा दिलगीर, धीरज धीर ना कोए धराईआ। कलयुग वेख अन्त अखीर, चारों कुण्ट नैण उठाईआ। शरअ मज़ब वज्झा ज़ंजीर, लोकमात सके ना कोए तुड़ाईआ। लख चुरासी पई पीड़, हौला भार ना कोए वखाईआ। नेत्र रोवण हस्त कीट, ऊँच नीच रोवण मारन धाहींआ। साची दिसे ना कोए प्रीत, प्रीतीवान नज़र कोए ना आईआ। सतिगुर भुले तेरा गीत, हरि का नाम ना कोए दृढ़ाईआ। फिरी दरोही मन्दिर मसीत, मुल्लां शेख़ बैठे मुख भवाईआ। माणस जन्म कोई ना लए जीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, घर साचे वज्जे वधाईआ। शाह पातशाह राज राजान, हरि तेरी ओट तकाईआ। तख्त निवासी नौजवान, श्री भगवान तेरी सरनाईआ। दर दरवेश खड़े मंगण दान, किरपा कर मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। पंज इक बाल अञ्याण, पूरब लेखा वेख मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। चौथा युग दिसे वैरान, घर घर वड़या कूड़ शैतान, साची धार नज़र कोए ना आईआ । नाता तुटा शास्त्र सिमरत वेद पुराण, साचा ज्ञान ना कोए दृढ़ाईआ। अञ्जील कुरान नैण शरमाण, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। बाणी मारे ना कोई बाण, अणयाला तीर ना कोए चलाईआ। सतिगुर करे ना कोए ध्यान, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। साचा खण्डा नज़र ना आए विच म्यान, खड़ग रूप सति सरूप ना कोए प्रगटाईआ। लेखा लिख लिख दे के आए ब्यान, जीव जंत जगत समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, घर तेरे मंगल गाईआ। किरपा कर ठाकर स्वामी, समरथ तेरी वड्याईआ। पछोतावे तेरी बाणी चार युग दी राणी, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। पावे सार ना कोई खाणी, चारे पड़दा सके ना कोए उठाईआ। लोकमात आई हानी, नेत्र अक्ख अक्ख अक्ख शरमाईआ। पारब्रह्म प्रभ भुली तेरी सच कहाणी, जूठी झूठी जगत पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा नाम ढोला इक्को गाईआ। चारे बाणी रोवे मारे धाह, चार कुण्ट दए दुहाईआ।

४८०
१५

चार वरन गए भुला, चार यार सार ना पाईआ। चौथा युग होया बेवफ़ा, सच्चा संग ना कोए निभाईआ। आ वेख मेरे खुदा, अञ्जील कुरान वास्ता पाईआ। तेरा नूर तेरे नालों होया जुदा, जुज़ बैठा वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान आपणा भेव खुल्हाईआ। नेत्र रोवण वेद पुराण शास्त्र, शहिनशाह तेरे अग्गे अरजोईआ। साडी किसे कम्म ना आए लग मात्र, ममता कूड़ी क्रिया जगत वधाईआ। लोकमात आए प्रभ तेरा नाउँ गावण ख़ातर, दूजी अवर ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर तेरे इक्को नाद सुणाईआ। बाणी कहे सुण मेरे भगवान, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। गुरु गुरदेव स्वामी दित्ता दान, धुर संदेसा हुक्म जणाईआ। चार वरन दे ज्ञान, साची सरन इक समझाईआ। लेखा लिख्त लेख महान, अक्खर अक्खर जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर तेरे बहि के आसण लाईआ। चारे बाणी उच्ची बोल, प्रभ नाअरा हक़ जणाईआ। सानूं लै जा आपणे कोल, लोकमात लोड़ रही ना राईआ। कूड़ी क्रिया चारों कुण्ट वज्जे ढोल, साचा नाम तेरा हिरदे सके ना कोए वसाईआ। अन्तिम तोल आपणे तोल, तोलणहारे तेरी मंगी इक सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। बाणी कहे मेरे भगवन्त, मैं सच दयां सुणाईआ। तेरा भुल्लया सब नूं मंत, मन्त्र हरि ना कोए दृढ़ाईआ। मैं रोवां विछुनी हरि साचे कन्त, बण वैरागण फिरां वाहो दाहीआ। मेहरवान मेरी मन्न मिन्नत, निउँ निउँ बैठी सीस झुकाईआ। कलयुग जीव मेरे नाल करन इलत, पड़दा मेरा रहे उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा आपणे लेखे पाईआ। बाणी कहे मेरे बोध अगाध, बाबल तेरी ओट रखाईआ। अन्तिम वेला रख साडी लाज, मेहरवान फेरा पाईआ। चारों कुण्ट थक्की भाज, भज्जयां पन्ध ना कोए मुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात दे के गए तेरा नाम दाज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर साचे लै बुलाईआ। घर साचे प्रभ लै सद्द, सद्दा इक्को वार दिवाईआ। अन्तिम साडी मुक्की हद्द, हदूद तेरा दुआरा नज़री आईआ। तेरा नूर उपजी तेरी यद, तेरा बंस रूप अख्वाईआ। कूड़ी क्रिया विचों कढ्ढ, आप आपणे घर बहाईआ। प्रेम प्रीती कर लड, साची रीती इक जणाईआ। धर्म निशाना दे गड्ड, दो जहानां आप झुलाईआ। साडे बुढ्ढे होए हड्ड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, तेरे मन्दिर सोभा पाईआ। तेरा मन्दिर लग्गे सोहणा चंगा, तख्त निवासी इक्को नज़री आईआ। चार युग लोकमात वजाया मृदंगा, तेरा डंका नाम सुणाईआ। कलयुग जीव अन्तर होया अन्धा, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। जगत वासना फिरे मंदा, सतिगुर शब्द ना कोए कमाईआ। पंज

तत अँगयार कोई ना करे ठंडा, त्रैगुण अग्नी रही तपाईआ। आत्म बिन परमात्म होया रंडा, जगत दुहागण रूप वटाईआ। बिन ओढण फिरे नंगा, पड़दा उपर ना कोए रखाईआ। नेत्र रोवे तीर्थ तट गंगा, गोदावरी नैणां नीर वहाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ होए भंगा, भगती रूप करन कोए ना आईआ। चार कुण्ट कूड़ी क्रिया दिसे दंगा, दहि दिशा होए लड़ाईआ। किसे हथ्थ ना आए परमानंदा, निजानंद ना कोए रसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम लै जा आपणे दर, दर दरवाज़ा इक खुल्हाईआ। दर दरवाज़ा खोल्ह प्रभ, दर तेरे इक अरजोईआ। कलयुग अन्तिम सच दुआरा जाए लभ्भ, दूजी आस ना कोए रखाईआ। तेरे नालों होईए ना फेर अलग्ग, सद तेरे विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, वड वड्डे वड वड्याईआ। सो पुरख दयाल ठाकर, एकँकार आप जणाइंदा। चारे बाणी निक्की बूँद प्रभ वखाए वड्डा सागर, गहर गम्भीर भेव चुकाइंदा। कलयुग अन्तिम सब नूं देवे आदर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। खेले खेल करीम कादर, करता आपणी कार कमाइंदा। योद्धा सूरबीर बहादर, बलधारी बल प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा वेख वखाइंदा। सब दा लेखा वेखे आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। चार युग दा लेखे लाए जाप, चारे बाणी रिहा समझाईआ। लोकमात जिस बणाया तुहाड्डा प्रताप, सो प्रतापी आपणे विच छुपाईआ। जिस दा नूर इक्को पाक, सो पाक रसूल वेख वखाईआ। सच दुआरे खोल्हे ताक, नाम इशारे नाल समझाईआ। नेत्र खोल्ह लवो झाक, झाकी इक्को वार जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दीनां नाथां होए सहाईआ। दीनां नाथां दयावान, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। अन्तिम लेखा वेखे जहान, दो जहानां वाली फेरा पाइंदा। सच फ़रियाद सुणे आण, निरगुण निरगुण वेस वटाइंदा। आपणा आपणा देणा ब्यान, धुर फ़रमाणा आप जणाइंदा। चौथे युग खेल करे भगवान, भगवन आपणी सेवा आप लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आपणे लेखे पाइंदा। अन्तिम लेखा लेख मुकावांगा। साची सिख्या सर्ब दृढ़ावांगा। पिछला लेखा झोली पावांगा। जीव जहान वेखो मिथ्या, लख चुरासी भाण्डा भन्न वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पावणहारा साची भिच्छया, झोली सब दी आप भरावांगा। सब दी झोली आप भरावांगा। हौली हौली वेख वखावांगा। जुग चौकड़ी जो दस्सदा रिहा बोली, सो गुर अवतारां पीर पैगम्बरां नाल मिलावांगा। रल मिल सारे चुक्कण डोली, चौथे युग चारे कहार रूप वखावांगा। लोकमात जो प्रभ दी बण के रही गोली, तिस अन्तिम लेखे लावांगा। साधां सन्तां जो बणदी रही विचोली, तिस आपणे कोल बहावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर

मन्दिर इक वसावांगा। घर मन्दिर इक वसावांगा। पिछला लेखा पूर करावांगा। चारे बाणी रंग रंगावांगा। शब्द हाणी संग वखावांगा। अकथ कहाणी इक दृढ़ावांगा। धुर फ़रमान हुक्म जणावांगा। सच निशान लोकमात वखावांगा। लख चुरासी भेव चुकावांगा। वड देवी देव रूप वखावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर हुक्म आप सुणावांगा। सतिजुग रच के सच सुअम्बर, साचा काज आप वखावांगा। सर्ब कला हो भरतम्बर, सच स्वामी नाम धरावांगा। पिछला मेट सर्ब अडम्बर, आदत इक्को इक समझावांगा। मन वासना दहि दिशा ना भवे बन्दर, मन का मणका आप भवावांगा। भाग लग्गे काया डूंघी कन्दर, निरगुण नूर जोत चमकावांगा। सच सुणावां इक्को छन्दन, सोहँ ढोला राग अलावांगा। तूं मेरा मैं तेरा भगत भगवान दोहां मेटे बन्धन, बंदगी आपणा नाम समझावांगा। चरण प्रीती धूढ़ी मस्तक लावां चन्दन, टिक्का इक्को इक जणावांगा। वेखां खेल खण्ड ब्रह्मण्डन, ब्रह्मांड आपणा हुक्म वरतावांगा। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त इक्को नाम मंगण, दूजी वंड ना कोई रखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल आप रचावांगा। साचा खेल आप रचावेगा। प्रभ साजण वेस वटावेगा। चढ़ अस्व ताजन फेरा पावेगा। गुरू महाराजन राग अलावेगा। बण सुहागी, सुहागण रूप वखावेगा। बण वैरागी, वैराग इक उपजावेगा। बण त्यागी, त्याग इक समझावेगा। चारे बाणी होए वडभागी, वडभागी भागां भरया घर इक वखावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा मार्ग इक जणावेगा। आपणा मार्ग इक लगाएगा। प्रभ स्वामी दया कमाएगा। चारे खाणी आप समझाएगा। साची बाणी नाम जणाएगा। शब्द हाणी मेल मिलाएगा। तूं मेरा मैं तेरा बोल इक्को इक प्रगटाएगा। घर घर चढ़े चाउ घनेरा, दुखिया रूप ना कोए वखाएगा। काया मन्दिर वसे खेड़ा, बंद खिड़की आप खुल्हाएगा। नौ दवारे ढाहे डेरा, दस्म दुआरी बूझ बुझाएगा। चार युग दा चुक्के झेड़ा, छत्ती छत्ती पन्ध मुकाएगा। सच दुआर वखाए खुल्ह्हा वेहड़ा, भगत भगवान पड़दा लाहेगा। उच्चा टिल्ला पर्बत दिसे नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाएगा। आवण जावण लख चुरासी चुक्के गेड़ा, जम की फाँसी तोड़ तुड़ाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मार्ग इक चलाएगा। साचा मार्ग इक चलावेगा। श्री भगवान दया कमावेगा। धर्म निशान इक उठावेगा। दो जहान आप वखावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकावेगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर ओट तकावेगा। चारे खाणी बोझ हौला भार करावेगा। जिस दी किसे ना आई सोच, सो साची समझ समझावेगा। जन भगतां पूरी करे लोच, आसा आपणे नाल मिलावेगा। फड़ उठाए आहलणिउँ डिगे बोट, हरि जू गोदी आप बहावेगा। नौ खण्ड पृथ्मी नाम नगारा इक्को वज्जे चोट, घर घर डंका आप

४८३ १५

सुणावेगा। कूड़ी क्रिया माया ममता हउमे हंगता कढ्ढे खोट, भाण्डा भरम भउ भंनावेगा। करे प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अन्धेरा मेट मिटावेगा। आत्म परमात्म बूझ बुझाए इक्को सच्ची गोत, दूजी वंड ना कोए वंडावेगा। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ शब्द आदि जुगादि सदा बहुत, दूजा अक्खर ना कोए पढ़ावेगा। भगत भगवान रल के दोवें मानण सच्ची मौज, मजलस आपणे घर लगावेगा। जिस दुआरे कोई ना सके पहुंच, तिस मन्दिर सोभा पावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, साचा सगन इक मनावेगा। प्रभ साचा सगन मनाएगा। भगत भगवान अंग लगाएगा। सूरा सरबँग वेख वखाएगा। नाम मृदंग इक वजाएगा। सच दुआरे आपे लँघ, महल अटल डेरा लाएगा। दूजी दिसे ना कोई वंड, परमात्म आत्म आप समझाएगा। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी ढोला सच्चा छन्द, निरगुण निरगुण निरगुण निरगुण नाम इक समझाएगा। सिफ्ती नाम मुक्के पन्ध, सालाहण योग आप अख्वाएगा। दीन दयाल हो बख्शंद, बख्शश रहमत आप कमाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, अनन्द इक अनेक घर वखाएगा।

✪ ५ अस्सू २०२० बिक्रमी मल सिँघ दे गृह रजी वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

नाम अन्दर बाणी बणत, बाणी शब्द गुरू वड्याईआ। मात प्रगटाए सतिगुर सन्त, हरि सज्जण दया कमाईआ। महिमा जणाए सदा बेअन्त, बेअन्त बेपरवाहीआ। देवे वड्याई जीव जंत, जगदीश होए सहाईआ। कूड़ी क्रिया गढ़ तोड़े हंगत, हँ ब्रह्म भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए जणाईआ। गुर शब्द धार जगत बाणी, अक्खर अक्खर अक्खर बन्धन पाईआ। हरि की धार बेपहचानी, रूप रंग रेख नज़र कोए ना आईआ। आप टिकाए महल अटल उच्च मकानी, थिर घर साचे देवे वड्याईआ। जुग चौकड़ी कर प्रधानी, हुक्मी रूप हाकम समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक समझाईआ। सतिगुर बोल जगत बाणी, लोकमात मिले वड्याईआ। हरि की महिमा सिफ्त कहाणी, साची सच सच पढ़ाईआ। दर दरवेश भरे पाणी, बीस बीस सेव कमाईआ। मुख कहे मैं बाल अञ्याणी, प्रभ तेरी समझ कोए ना आईआ। तेरे हुक्मे अन्दर खेलया खेल दो जहानी, निरगुण सरगुण तेरा राग अलाईआ। लेखा कोई ना जाणे चार खाणी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक

सुणाईआ। सतिगुर नाम बाणी ढोला, जुग चौकड़ी राग अलाईआ , बेपरवाह अगम्म अतोला, तोल विच कदे ना आईआ। सच दुआरा जिस ने खोल्ह्, बण वणजारा हट्ट चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा नाउँ इक दरसाईआ। चारे बाणी सिफ्ती धार, रसना जिह्वा नाल मिलाईआ। बत्ती दन्द कर प्यार, मुखबंद छन्द सुणाईआ। अन्तर कोई ना पावे सार, भेव अभेद ना कोए खुल्हाईआ। बाहरों कूक करे पुकार, रौला पावे वाहो दाहीआ। उठो वेखो हरि करतार, करता कुदरत खेल रचाईआ। सर्ब जीअ दा सांझा यार, साचे तख्त सोभा पाईआ। लेखा जाणे धुर दरबार, दरगाह साची वेख वखाईआ। कागद कलम दए अधार, शहिनशाह शाही टिक्का आप लगाईआ। जो सिफ्त करे हरि मीत मुरार, सो बाणी चारे खाणी देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेख दए जणाईआ। हरि का नाउँ बाणी ओट, नित नवित्त दया कमाइंदा। कर प्रकाश निर्मल जोत, शब्दी धार वहाइंदा। शब्द जैकारा सुणाए साचे कोट, किला बंक आप वडियाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा आप दृढ़ाइंदा। धुर दा लेखा सच पैग़ाम, गुर अवतार पीर पैगम्बर करे पढ़ाईआ। हुक्म देवे धुर फ़रमान, धुर दा लेखा आप जणाईआ। अन्तर आत्म करे परवान, परवाना इक्को इक जणाईआ। नाल मिलाए रसना जिह्वा ज़बान, साची सिख्या इक सिखाईआ। उच्ची कूक करे कल्याण, कलमा नबी रूप वटाईआ। नबी रसूल मन्ने ईमान, अमल इक्को इक समझाईआ। अमल आमल विच जहान, कामल मुर्शद वेख वखाईआ। कातब लेखा लिखे कलाम, अक्खर अक्खर जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, एका शब्द दए वड्याईआ। शब्द संदेसा नाम रंग, हरि करता आप चढ़ाइंदा। धुर दी खेल सूरा सरबँग, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी थिर घर साचे आप वखाइंदा। सच मृदंगा वजाए मृदंग, मर्द मर्दाना आपणी कार कमाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर साची सेज माण पलँघ, सोभावन्त सोभा पाइंदा। देवणहार इक अनन्द, साचा रस आप चखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे मार्ग आपे लाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर मार्ग लाए, राह इक्को इक जणाईआ। साचा नाम इक समझाए, सिख्या सच करे पढ़ाईआ। दोए जोड़ मंगो इक सरनाए, सरनगति इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करे सच पढ़ाईआ। सच पढ़ाई कराए आप, हरि आपणी दया कमाइंदा। धुर दा बोल शब्दी जाप, साचा ढोला राग अल्हाइंदा। मिले वड्याई लोकमात, निरगुण सरगुण खेल वखाइंदा। वस्त अमोलक दे दात, साची सेवा आप समझाइंदा। रसना जिह्वा गायण गाथ, अन्तर संदेसा इक सुणाइंदा। कलम शाही लिख दवात, काग़ज़

४८५
१५

कलमबंद कराइंदा। भेव ना जाणे कोई अर्थात, अथवा आपणा हुक्म सुणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लोकमात खोल्हे जमात, साची पट्टी इक पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। साचा नाउँ कर प्रकाश, प्रकाशवान समझाईआ। रसना गाओ स्वास स्वास, गुर अवतार पीर पैगम्बर धंदे लाईआ। अन्तर बाहर रखो इक्को आस, पुरख अकाल मनाईआ। लेखा लिखो विच कायनात, कलमा नबी रसूल पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिफ्ती ढोला इक समझाईआ। साचे नाम सारे करो सिफ्त, शाह पातशाह आप जणाईआ। हुक्मे अन्दर होवो गरिफ्त, बन्धन आपणा आप बंधाईआ। नाम बाणी जणाओ दोज़ख़ बहिश्त, स्वर्ग नरक वंड वंडाईआ। हरि का सब तों बाहर इष्ट, ईश्वर आपणी धार समझाईआ। जुग चौकड़ी बिन बाणी खोल्हे भगतां दृष्ट, दृष्टी आपणी उपर पाईआ। आपणे दुआरे रखे साची फ़रिसत, दूजे हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। चार युग कोई लभ्भ ना सके लिस्ट, अगला हुक्म ना कोए जणाईआ। जो कोई आया सो इशारा दे के गया भविक्ख्त, पारब्रह्म प्रभ आपणी धार जणाईआ। शहादत देवे बाणी लिख्त, मुजरम करे सर्ब लोकाईआ। लख चुरासी कोई ना बणया जिगर लख़त, सच रूप ना कोए समाईआ। अन्तिम सब नूं पैणा वखत, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। हरि का भाणा जुग जुग सख्त, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां लोकमात पंज तत काया देंदा रिहा सज़ाईआ। धुर दा कोई ना जाणे अन्तिम वक्त, वेला सच ना कोए दृढ़ाईआ। थोड़ा लेखा गोबिन्द लिख्या फ़कत, फ़िकरा इक्को नाम समझाईआ। जिस आदि उपाया जगत, जुगत आपणे हथ्थ रखाईआ। सो तारनहारा भगत, जन भगत देवे वड्याईआ। तिस दुआरे सच नाम दी इक्को बरकत, दूजी वस्त मंगण कोए ना आईआ। तिस साहिब दी नज़र किसे ना आए हरकत, दो जहानां खेल करे चाईं चाईआ। निरवैर पुरख अजूनी रहित आपे होवे प्रगट, मात पित जननी जन कुक्ख ना कोए रखाईआ। सच दुआरा खोल्हे हट्ट, नाम भण्डारा इक वरताईआ। बाणी कहे मैं तेरा गावां जस, बण सेवक सेव कमाईआ। बिन तेरे दवारिओं प्रभ मेरी पूरी करे ना कोए आस, ख़ाली झोली रही वखाईआ। कलयुग अन्त मेरे नक्क नथ्थ तुट्टा बलाक, मींढी सीस ना कोए गुंदाईआ। सच्चा सज्जण रिहा ना कोई साक, नाता तुटा भैण भाईआ। घर घर दर दर जा के कलयुग जीवां रही आख, सुत्यां मात जगाईआ। जो गोबिन्द गया भाख, सो साहिब फेरा पाईआ। उठो छेती खोल्हो आपणा ताक, बंद कवाड़ी कुण्डा लाहीआ। नेत्र पेखो आदि जुगादी सचा बाप, पिता पुरख इक्को नज़री आईआ। जिस ने शब्द बाणी अक्खर दस्सया जाप, सो बिन अक्खरां अक्ख रिहा मिलाईआ। कोट जन्म दे उतारे पाप, पंज तत करे सफाईआ। अन्त कन्त भगवन्त लए राख, मेहर नज़र इक उठाईआ। जिस दा सिमरन पूजा

इक्को पाठ, आत्म परमात्म राग इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सो सोहँ देवणहारा साची दात, दर घर घर साचे झोली पाईआ।

५ अस्सू २०२० बिक्रमी सुरैण सिँघ दे गृह निधां वाली ज़िला फ़िरोज़पुर

पुरख अकाल किरपा कर, गुर अवतार बैठे ध्यान लगाईआ। परवरदिगार दे वर, पीर पैगम्बर वास्ता पाईआ। दर दरवेश भगत रहे खड़, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। सन्त सुहेले तेरा नाउँ रहे पढ़, अन्तर आत्म ध्यान लगाईआ। गुरमुख तोड़ हँकारी गढ़, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। गुरसिख चरणी डिगण दड़, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। निरगुण दाते वड मेहरवान, तेरी ओट इक तकाईआ। गुर अवतार मंगण दान, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। पीर पैगम्बर करन सलाम, सजदा सीस झुकाईआ। भगत भगवान मंगण दान, चरण चरणोदक एका मुख चुआईआ। सन्त सुहेले मन्नण आण, ओट इक्को इक तकाईआ। गुरमुख तेरा ढोला गाण, गीत गोबिन्द अलाईआ। गुरसिख चरण कँवल कँवल चरण करन ध्यान, निज नेत्र नैण खुल्लाईआ। कर किरपा श्री भगवान, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। सो पुरख निरँजण हो प्रधान, हरि पुरख निरँजण आपणा रूप प्रगटाईआ। एकँकार बण बलवान, बलधारी क्यों बैठा मुख छुपाईआ। आदि निरँजण जोती नूर खेल महान, दो जहान होवे रुशनाईआ। अबिनाशी करते खोल्ह दुकान, चौदां लोक हट्ट चलाईआ। श्री भगवान सच जणा इक ईमान, सिदक सबूरी इक वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ बोध अगाधा दे ज्ञान, अक्खर अक्खर इक पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा साचा घर, जिस घर वज्जे नाम वधाईआ। कर किरपा प्रभ साचे ठाकर, चरण कँवल तेरे वड्याईआ। आदि जुगादी भेव निराला डूंघा सागर, गहर गम्भीर समझ कोए ना पाईआ। मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र कर करते कादर, कुदरत तेरा राह तकाईआ। योद्धा सूरबीर बण बहादर, बल आपणा इक वखाईआ। निर्मल कर्म कर उजागर, दुरमति मैल धवाईआ। साचा वणज मिले हट्ट सौदागर, सौदा इक्को नाम विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखा साचा घर, जिस घर नूर नूर रुशनाईआ। किरपा कर सतिगुर गोपाल, प्रभ तेरी इक सरनाईआ। आदि जुगादी दीन दयाल, जुग करता वड वड्याईआ। निर्धन सरधन करे प्रितपाल, बण प्रितपालक सेव कमाईआ। कूड़ी क्रिया तोड़ जंजाल, त्रैगुण बन्धन दे कटाईआ। दीआ बाती दीपक जोती दे बाल, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। सच दुआर वखा सची धर्मसाल, जिस घर सूरज

चन्द ना कोए रुशनाईआ। शब्द अगम्मी वज्जे ताल, ताल तलवाड़ा नज़र कोए ना आईआ। अमृत जाम दे प्याल, साचा सीर मुख चुआईआ। नाता तोड़ कूड़े काल, महाकाल मुख भवाईआ। अन्दर बाहर वस नाल, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। गुरमुख गुरसिख तेरे लभ्भण तैनूं नादी लाल, निज नेत्र नैण उठाईआ। लख चुरासी चार कुण्ट दहि दिशा थक्के भाल, समुंद सागर उच्चे टिल्ले पर्बत नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखा आपणा घर, जिस घर वज्जे नाम वधाईआ। गुर अवतार सारे गाउँदे, नाअरा इक्को इक जणाईआ। पीर पैगम्बर कलमा हक़ सुणाउँदे, कायनात कर पढ़ाईआ। भगत भगवन्त इक मनाउँदे, दूजा इष्ट ना कोए बणाईआ। सन्त सरन सरनाई ढह ढह सीस निवाउँदे, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। गुरमुख गुर गुर मुख सलौंदे, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालाहीआ। गुरसिख साचे सेव कमाउँदे, चाकर पाख़ाक रूप वटाईआ। दोए जोड़ वास्ता पाउँदे, दर इक्को मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, कलयुग अन्धेरा रिहा छाईआ। कलयुग अन्धेरा गया छा, चारों कुण्ट साचा चन्द नज़र ना आईआ। रहबर दिसे ना कोए मलाह, बेड़ा नईया पार ना कोए कराईआ। नाम देवे ना कोई सलाह, पैग़ाम सच ना कोए सुणाईआ। राम कृष्न गए भुला, इष्ट देव सीस जगदीश ना कोए झुकाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद पकड़े कोई ना बांह, पल्लू छड्डुया सर्ब लोकाईआ। चौदां लोक चौदां तबक रोवण मारन धाह, साचा सबक ना कोए समझाईआ। फिरी दरोही थाँ थाँ, सच तदबीर ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखा साचा घर, जिस घर तेरा रूप नज़री आईआ। गुर अवतार मंगण मंग, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। पीर पैगम्बर बण मलंग, नटूए नाच रहे वखाईआ। भगत भगवान दे अनन्द, अनन्द आत्म इक जणाईआ। साचे सन्त कहिण दूई द्वैती ढाह कंध, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। गुरमुख कहिण तेरा नाउँ छन्द, दूजा गीत ना कोए अल़ाईआ। गुरसिख कहिण आवण जावण मुक्के पन्ध, मिले प्रभ चरण सची सरनाईआ। जगत रंडेपा चुक्के रंड, दुहागण रूप नज़र ना आईआ। मिले ठाकर साहिब बख़्शंद, मेहर नज़र इक उठाईआ। घर प्रकाश करे चन्द, जोती नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, दर तेरे बहि बहि ख़ुशी मनाईआ। गुर अवतार पीर पैग़बर बोल जैकार, जै जैकार सुणाईआ। सो पुरख निरँजण किरपा धार, हरि पुरख निरँजण वेस वटाईआ। एकँकार कर शृंगार, शहिनशाह आपणा रंग रंगाईआ। आदि निरँजण दे दीदार, जोती जोत जोत रुशनाईआ। अबिनाशी करते खोल़ कवाड़, बंद कवाड़ी कुण्डा लाहीआ। श्री भगवान कर प्यार, आप आपणा मेल मिलाईआ। पारब्रह्म प्रभ दे आधार, ब्रह्म तेरी ओट तकाईआ। भगत सुहेले रोवण ज़ारो ज़ार,

गुर चेले देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा साचा घर, जिस घर तू ही नज़री आईआ। पीर पैगम्बर गुर अवतार रहे उडीक, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। कलयुग वेला आया अन्त नज़ीक, लिख्त भविक्ख्त रिहा समझाईआ। प्रगट होवे लाशरीक, शहिनशाह आपणा वेस वटाईआ। जोती जामा पाए ठीक, मात पित ना कोए बणाईआ। सच जणाए इक प्रीत, प्रीतीवान वेस वटाईआ। आत्म परमात्म लख चुरासी जीव जंत साध सन्त ढोला दस्से इक्को गीत, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। काया काअबा मन्दिर मसीत, शिवदुआला मट्ठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा साचा घर, दर तेरे सोभा पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे बोल, नाअरा तेरा नाम लगाईआ। पारब्रह्म प्रभ पड़दा खोल्ह, ख़ालक ख़लक रूप जणाईआ। निरपक्ख हो के तोल तोल, चार वरन रहे ना कोए लड़ाईआ। साचे भगत सद्द कोल, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। अमृत जाम प्या पौहल, रस इक्को इक वखाईआ। मिले वड्याई उपर धौल, धरनी धरत सोभा पाईआ। पूरा कर आपणा कौल, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग जुग लेखा गया लिखाईआ। ठाकर हो के सतिगुर बौहड़, स्वामी हो के वेख वखाईआ। जन्म कर्म दी लग्गी औड़, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। लख चुरासी बूटा होया कौड़, मिट्ठा रूप ना कोए वखाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा मन वासना सृष्ट सबाई रही दौड़, अन्तर आत्म ध्यान ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा साचा घर, जिस घर वसे सचा माहीआ। साचा माही एकँकार, दरगाह साची सोभा पाइंदा। सचखण्ड दुआरा खोल्ह किवाड़, गृह मन्दिर डेरा लाइंदा। जोती दीपक इक्को बाल, नूर नुराना डगमगाइंदा। तख्त निवासी शाह पातशाह नौजवान, निरवैर पुरख आपणा खेल कराइंदा। लेखा जाणे दो जहान, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खुजाइंदा। झुलावणहारा सच निशान, धर्म निशाना इक उठाइंदा। देवणहारा सर्ब ज्ञान, गुर अवतार पीर पैगम्बर निश्अक्खर आप पढ़ाइंदा। थिर घर वासी खोल्ह दुकान, साचा रहबर इक्को हट्ट चलाइंदा। विष्न ब्रह्मा विश्व कर परवान, सच परवाना इक फड़ाइंदा। त्रैगुण माया दे दे दान, धन दौलत झोली पाइंदा। पंज तत खेल महान, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश आपणी गंढु वखाइंदा। लख चुरासी कर प्रधान, घर घर निर्मल जोत जगाइंदा। शब्द नाद सच्ची धुन्कान, अनहद नादी नाद वजाइंदा। अमृत आत्म पीण खाण, सर सरोवर इक प्रगटाइंदा। करे खेल श्री भगवान, भगवन आपणी कार कमाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म देवे दान, दाता दानी आप हो जाइंदा। सुरती शब्दी खेल गोपी काहन, मण्डल रास आप रचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जोत धर, करे खेल साचा हरि, साचा मन्दिर इक समझाइंदा। साचा मन्दिर सचखण्ड, आदि जुगादि वज्जे वधाईआ।

ना कोई सूरज ना कोई चन्द, तारा मण्डल ना कोए वखाईआ। ना कोई गीत ना कोई छन्द, शब्दी ढोला राग ना कोए सुणाईआ। ना कोई रसना जिह्वा बत्ती दन्द, पंज तत ना कोए वड्याईआ। ना कोई खड़ग खण्डा चण्ड प्रचण्ड, शस्त्र वस्त्र नज़र कोए ना आईआ। ना कोई अन्दर बाहर जाए लँघ, पलँघ रंगीला सेज ना कोए हंढाईआ। ना कोई नार कन्त अनन्द, पिता पूत ना रूप वटाईआ। ना कोई रूप ना कोई रंग, रेख नज़र कोए ना आईआ। ना कोई साथी ना कोई संग, ना कोई बेड़ा रिहा चलाईआ। ना कोई जीउ ना कोई पिण्ड, ब्रह्मण्ड धार ना कोए बंधाईआ। करे खेल सूरा सरबँग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दुआरा इक समझाईआ। सचखण्ड सच दुआर, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। जिस घर वसे सदा निरँकार, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। शब्द सुत कर तैयार, थिर घर साचे दए बहाईआ। हुक्मे अन्दर कर प्यार, धुर दी धार आप जणाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड रच संसार, पुरी लोअ आकाश प्रकाश निरगुण नूर चन्द रुशनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर कर सेवादार, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। जुग चौकड़ी खोलू किवाड़, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बन्धन पाईआ। प्रगट कर गुरू अवतार, पीर पैगम्बर नाल मिलाईआ। धुर संदेसा एका वार, इक इकल्ला आप जणाईआ। करे खेल अगम्म अपार, अगोचर भेव कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मन्दिर रिहा समझाईआ। सच दुआरा इक्को मन्दिर, सचखण्ड निवासी आप जणाइंदा। श्री भगवान वसे अन्दर, निरगुण आपणा नूर प्रगटाइंदा। ना कोई बाहर लाए ताला जन्दर, बंद कवाड़ी ना कोए वखाइंदा। ना कोई पाए सार डूंघा खण्डर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच महल्ल इक सुहाइंदा। सचखण्ड दुआर उच्च महल्ला, सो साहिब आप बणाईआ। जिस घर वसे इक इकल्ला, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जुग जुग सच संदेस लोकमात घल्ला, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान करी पढ़ाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सति सरूप फड़ाया पल्ला, पल्लू शब्दी गंढु पवाईआ। भगत भगवान जोती धार आपे रला, शब्दी नाद धुन शनवाईआ। सन्त सुहेले सच दुआरे निरवैर हो के खला, रूप अनूप आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलयुग अन्त अन्त समझाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवान, साहिब सतिगुर आप जणाईआ। गुर अवतार करो ध्यान, पीर पैगम्बर अक्ख खुलाईआ। साचे भगत करो पहचान, भगवन आपणा पड़दा लाहीआ। सन्त सुहेले मंगो दान, दर भिखारी वेस वटाईआ। गुरमुख गुर गुर दर्शन करो श्री भगवान, पुरख अकाल इक्को नज़री आईआ। गुरसिख रसना बोलो सच ज़बान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव दए जणाईआ।

साचा भेव खोल्हे भगवन्त, धर्म दुआरा इक जणाइंदा। आदि जुगादि महिमा अगणत, शास्त्र सिमरत वेद भेव कोए ना पाइंदा। जुग चौकड़ी सुणावणहारा साचा मंत, बोध अगाध नाम समझाइंदा। लख चुरासी बण बण कन्त, घर सुहञ्जणी सेज हंढाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप बणाए बणत, घड़न भंनणहार आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर संदेसा इक अल्हाइंदा। धुर संदेसा सुणो सज्जण, सो सतिगुर आप जणाईआ। कलयुग अन्त खेल सूरा सरबँगन, शाह पातशाह आप समझाईआ। चार वरन कराए इक्को मजन, सति सरोवर नाम नुहाईआ। कूड़ी क्रिया भाण्डे भज्जण, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन सन्त सुहेले आवे सद्दण, सद्दा इक्को नाम सुणाईआ। शब्द नगारा हो के आए वज्जण, दो जहानां नाद अलाईआ। जन भगतां अन्दर वड़ के वसण आए हो के मघन, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। त्रैगुण बुझावण आए अग्न, अमृत मेघ इक बरसाईआ। नौ दुआरे पार करे हद्दन, दसम दुआरी डेरा लाईआ। स्वामी ठाकर मिले सज्जण, सहिज सुभाओ मेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा इक दृढ़ाईआ। सच दुआरा काया गढ़, घर घर विच आप सुहाया। गुरमुख वेख अन्दर वड़, सतिगुर पूरा रिहा समझाया। नौ दुआरे पार कर, आसा तृष्ना मेट मिटाया। सुखमन टेडी बंक चुक्के डर, ईड़ा पिंगल मुख शरमाया। निरभउ चुकाए भय डर, भ्यानक नज़र कोए ना आया। अमृत नुहाए साचे सर, दुरमति मैल धवाया। एका अक्खर लैणा पढ़, ढोला राग जणाया। अनहद ताल वज्जे तड़ तड़, काया धड़ भाग वखाया। बंद कवाड़ी खुल्हे ताल, बजर कपाटी डेरा ढाहया। आत्म सेजा जाणा चढ़, सेज सुहञ्जणी सोभा पाया। इक्को नरेशा दर, नरायण नज़री आया। तूं मेरा मैं तेरा दोहां पल्लू लैणा फड़, फड़या पल्लू छुट ना जाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआर इक दरसाया। सच दुआर काया बंक, साढे तिन्न हथ्थ मिले वड्याईआ। जिस विच वसे राउ रंक, साध सन्त बैठे डेरा लाईआ। जिस घर वसे श्री भगवन्त, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जिस घर खेल करे बण नारी कन्त, कन्त कन्तूहल वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा इक बुझाईआ। सच दुआरा काया काअबा, हड्ड मास नाड़ी जोड़ जुड़ाईआ। अन्दरे अन्दर हक़ महिराबा, महिबूब बैठा आसण लाईआ। नित नवित्त वजाए रबाबा, बिन तन्दी तन्द सितार हिलाईआ। नज़री आए इक्को काअबा, कायनात रिहा समझाईआ। जाम प्याए हयाते आबा, रस इक्को इक वखाईआ। नज़री आए शाह नवाबा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा इक बुझाईआ। सच दुआरा साचा घर, सो साहिब आप बणाईआ। जिस गृह वसे नरायण नर, निरगुण बैठा मुख छुपाईआ।

गुरमुख गुरसिख सच प्रीती कर, प्रीतीवान आप जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ सरनी पड़, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। कर किरपा लै जा आपणे घर, मेरा घर तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया चारों कुण्ट वैहन्दा हड़, माया ममता रही रुढ़ाईआ। त्रैगुण अग्नी जीव जंत गए सड़, सच मेघ ना कोए बरसाईआ। कोटन कोटि उच्चे टिल्ले पर्बत जीव जंत तेरा नाउँ रहे पढ़, पढ़यां हथ्थ किसे ना आईआ। कोटन कोटि डूंग्घी कन्दर बैठे वड़, नैण मूंद नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। कोटन कोटि जलधारा रहे ठर, सीतल सांतक सति ना कोए वरताईआ। कोटन कोटि अग्नी रहे सड़, तन भबूती ख़ाक रमाईआ। कोटन कोटि अठसठ तीर्थ पाणी रहे वड़, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी मिले सच सरनाईआ। सच दुआरा खोल्हे एक, एकँकार दया कमाइंदा। कलयुग अन्तिम बख़्शे टेक, टेक रघुनाथ इक समझाइंदा। गुर शब्दी करे बुध विवेक, दुरमति मैल धवाइंदा। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अग्नी अग्ग ना कोए तपाइंदा। मिट्ठा करनहारा कौड़ा रेठ, मेहर नज़र इक रखाइंदा। चार वरन रल मिल गाओ इक्को गीत, सोहँ ढोला आप पढ़ाइंदा। नाता तुटे मन्दिर मसीत, घर मक्का काअबा शिवदुआला मट्ठ इक्को नज़री आइंदा। जिस घर वसे साहिब अतीत, त्रैभवन धनी आपणा आसण लाइंदा। सच स्वामी करो प्रीत, अन्तरजामी घट घट वेख वखाइंदा। चरण प्रीती करे बख़्शीश, बख़्शश इक्को वार वरताइंदा। चौथे युग कूड़ी किरआ मेटे लीक, चौथा बुरज अन्तिम ढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा इक प्रगटाइंदा। सच दुआरा भगत भगवान, इक्को इक समझाईआ। जिस घर वसे श्री भगवान, सो मन्दिर सोभा पाईआ। लख चुरासी जीव जंत करो पहचान, बेपहचान रिहा समझाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे वेखण आण, मौका सब नूं रिहा वखाईआ। सच भूमका सोहे अस्थान, धरनी मिले माण वड्याईआ। जिस गृह इक्को उपजे नाम, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। नज़री आए सच्चा राम, घनईया इक्को नूर रुशनाईआ। इक्को पीर दए पैग़ाम, पैगम्बर इक्को करे पढ़ाईआ। इक्को बोले सतिनाम, इक्को डंका फ़तह वजाईआ। इक्को बरदा बणे गुलाम, इक्को सेवक सेवा सच कमाईआ। इक्को सजदा करे सच सलाम, इक्को बन्दना डण्डोत रिहा जणाईआ। इक्को कलमा दए कलाम, इक्को नाम दए दृढ़ाईआ। इक्को सूरबीर अमाम, इक्को निहकलंक कल कल्की अख्वाईआ। इक्को दो जहानां हुक्मरान, शाह पातशाह इक्को नज़री आईआ। जिस दा आदि जुगादि सच दुआर सच्चा मकान, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। चार दीवार ना दिसे निशान, बाढी बणत ना कोए बणाईआ। आपणी इच्छया प्रगट करे श्री भगवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर आप दरसाईआ। मन्दिर वेखो गुरू अवतार, पीर पैगम्बर

४६२ १५

नाल रलाईआ। सोहे बंक इक दुआर, घर वज्जे नाम वधाईआ। सम्बल होया मात उज्यार, जागरत जोत करे रुशनाईआ। डंका वज्जे अगम्म अपार, समझ सके कोई ना राईआ। रसना बोलण सर्ब जैकार, तू ही तू ही राग अलाईआ। तेरा खेल परवरदिगार, बेपरवाह तेरी वड्याईआ। सदी चौधवीं गए हार, बलहीण रूप वटाईआ। बीस बीसा कोई ना दए आधार, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। चारों कुण्ट धूंआँधार, दहि दिशा चन्द ना कोए चमकाईआ। तेरी ओट कल्की अवतार, गुर अवतार पीर पैगम्बर गावण चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक देणा साचा वर, दर तेरे सोभा पाईआ । साचा दर वेखो दरबार, धुरदरगाही आप जणाइंदा। सचखण्ड निवासी खोल्ह किवाड़, हरि करता भेव चुकाइंदा। दर खलोते गुरू अवतार, पीर पैगम्बर सीस झुकाइंदा। तेरा जलवा नूर अपार, नेत्र नैण ना कोए टिकाइंदा। तेरा साहिब सच दीदार, साचा नूर चन्द चमकाइंदा। साडी इक्को सुण पुकार, नमो नमो सीस सर्ब झुकाइंदा। कलयुग अन्त लै अवतार, कल कल्की नाउँ वखाइंदा। तेरा सम्बल धाम न्यार, जग भेव कोए ना पाइंदा। मदन मूर्त सच गोपाल, गोबिन्द आपणी खेल कराइंदा। नाम खण्डा तेज कटार, चण्ड प्रचण्ड आप चमकाइंदा। दो जहानां कर ख़बरदार, विष्न ब्रह्मा शिव नैण उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच महल्ल इक वडियाइंदा। सच महल्ल सचखण्ड दुआरा उह, जिस घर जोत जोत रुशनाईआ। सति सरूपी साची करे लोअ, दीआ बाती ना कोए टिकाईआ। आपणा नाउँ प्रगटाए निरगुण सो, सो पुरख निरँजण बेपरवाहीआ। हँ ब्रह्म आपे हो, लख चुरासी वंड वंडाईआ। चारे खाणी निरगुण सरगुण हो के रिहा छोह, अण्डज जेरज उतभुज सेत्ज आपणा बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अन्तिम आपे सब किछ लवे खोह, ख़ाली हथ्थ सर्ब वखाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां अन्दर आपे हो, धुर दा मन्दिर इक वखाईआ।

✪ ६ अस्सू २०२० बिक्रमी मेला सिँघ दे गृह पिण्ड डगरू ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

हरि करता करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। लख चुरासी पावे सार, जीव जंत भेव चुकाईआ। सच प्रीती दस्से इक प्यार, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। चार वरन दए अधार, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश सची सरनाईआ। अमृत जाम दए प्याल, रस इक्को इक वखाईआ । निर्मल दीआ देवे बाल, जोती जोत जोत रुशनाईआ। सच वखाए सच्ची धर्मसाल, काया बंक इक प्रगटाईआ। दीनां बंधप हो दयाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ।

करता पुरख हरि निरँकारा, निरगुण सरगुण भेव चुकाइंदा। कलयुग मेटे अन्ध अँध्यारा, सतिजुग साचा नूर चमकाइंदा। शब्द अगम्म बोल जैकार, साचा ढोला राग सुणाइंदा। तेरा मेरा इक किनारा, नईया नौका नाम चढ़ाइंदा। पावे सार धुर दरबारा, दरगाह साची वेख वखाइंदा। कलयुग अन्तिम लै अवतारा, वड अवतारी फेरा पाइंदा। भगत वछल बण गिरधारा, गिरवर आपणी सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। हरि करता खेल करे गोबिन्द, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। वेखणहारा संसार सागर डूंग्घा सिन्ध, गहर गम्भीर खोज खुजाईआ। लख चुरासी जीव जंत कलयुग अन्तिम लग्गी चिन्द, चिन्ता सके ना कोए मिटाईआ। नगर खेड़ा कोई ना वसे पिण्ड, सुंञीं नगरी नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा लेखा आप जणाईआ। हरि करता करनेहारा, इक इकल्ला खेल खलाइंदा। कल कल्की लै अवतारा, निरगुण निरवैर जोत धराइंदा। दो जहानां पावे सारा, लख चुरासी खोज खोजाइंदा। जीव जंत दए अधारा, साध सन्त आप समझाइंदा। अन्तर आत्म कर प्यारा, परमात्म आपणा बन्धन पाइंदा। सच खोल्ह इक दुआरा, दर दरवाज़ा कुण्डा लाहइंदा। नज़री आए एकँकारा, अक्ल कलधारी वेस वटाइंदा। महल अटल उच्च मनारा, ऊँचो ऊँच सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाइंदा। हरि करता पुरख सुल्तान, साहिब सतिगुर वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी देवणहारा दान, वस्त अमोलक दात वरताईआ। खेले खेल दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड वरभण्ड आपणा हुक्म वरताईआ। सन्त सुहेले करे पहचान, भगत भगवान भेव चुकाईआ। गुरमुख गुर गुर मेले आण, घर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लेखा जाणे हर घट थाईंआ। करता पुरख प्रभ सतिगुर मीत, आदि जुगादी दया कमाइंदा। कलयुग सतिजुग धारा जाणे आपणी रीत, रीतीवान वेख वखाइंदा। वसणहार मन्दिर मसीत, शिवदुआले मढ्ढ खोज खोजाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गावणहारा गीत, सोहला ढोला साचा राग अल्हाइंदा। लख चुरासी परखणहारा नीत, घर घर आपणा आसण लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आप खुलाइंदा। श्री भगवान चार युग मीता, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। आदि जुगादी ठांडा सीता, अग्नी तत ना कोए रखाईआ। खेले खेल सदा अनडीठा, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। भगत भगवान जणाए साची रीता, काया मन्दिर अन्दर आपणा पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि सज्जण आप जगाईआ। हरि सज्जण साचा खोल्हे जाग, निज नेत्र कर रुशनाईआ। हँस बणाए फड़ फड़ काग, बुद्धि काग ना कोए

कुरलाईआ। त्रैगुण मेटे लग्गी आग, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। दुरमति मैल धोवे दाग़, स्वच्छ सरूपी रूप धराईआ। मेल मिलाए कन्त सुहाग, हरि शब्दी शब्द कुड़माईआ। धुरदरगाही मार अवाज़, एका नाम जणाईआ। करता पुरख रच रच काज, करनी करतार दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम वेस वटाईआ । कलयुग अन्तिम वेस अपारा, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। चार कुण्ट दहि दिशा पावे सारा, नव सत फोल फोलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लेखा मंगे वारो वारा, पूरब लहिणा फोल फोलाईआ। तख्त निवासी साचे तख्त बैठ सच्ची सरकारा, शाह पातशाह हुक्म मनाईआ। कूड़ कुड़यार झगड़ा चुक्के जीव संसारा, जूठ झूठ रहिण कोए ना पाईआ। रसना जिह्वा बोले इक्को इक जैकारा, पारब्रह्म ब्रह्म करे सच पढ़ाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कराईआ। साची करनी करे अन्त, अन्तष्करन वेख वखाइंदा । चार वरनां देवे इक्को मंत, सोहँ ढोला राग सुणाइंदा। सुरती शब्दी मेल मिलाए नार कन्त, रुत सुहञ्जणी आप वडियाइंदा। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, रंग रंगीला इक अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। हरिजन वेखे चार वरन, बरन अठारां खोज खोजाईआ। सच प्रीती देवे सरन, सरनगति इक समझाईआ।
४६५ नेत्र खोल्ह हरन फरन, निज नैण करे रुशनाईआ । लेखा चुक्के मरन डरन, लख चुरासी पन्ध मुकाईआ। गुरमुख साचे ४६५
१५ पौड़े चढ़न, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। धर्म दुआरे आ के खड़न, अबिनाशी करता दर्शन पाईआ। सोहँ ढोला सारे पढ़न, १५
धुर दा रागी राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बख्शे इक सच्ची सरनाईआ। सच सरनाई साहिब सतिगुर, गुरमती आप जणाइंदा। लेखा लेखे लाए लिख्या धुर, धुर लेखा मस्तक वेख वखाइंदा। सच प्रीती गुरमुख विरले जाए जुड़, मनमुख नेड़ कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वरन बरन सरन इक रखाइंदा। साची सरन स्वामी एक, एकँकार आप जणाईआ। कलयुग अन्तिम बख्शे टेक, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। दूर दुराडा नेरन नेरा निज घर बैठा लए वेख, अन्तर आत्म भेव चुकाईआ। जन्म कर्म दी मेटे रेख, लेखा कोए रहिण ना पाईआ। जिन्हां अन्तर वड़ के दस्से आपणा भेत, सोहँ मन्त्र नाम पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां करे साचा हेत, हितकारी आपणा रंग रंगाईआ। साचा रंग चाढ़े मजीठ, सतिगुर पूरा दया कमाईआ। मिट्ठा करे कौड़ा रीठ, रस इक्को नाम भराईआ। नाम सुणाए साचा गीत, तूं मेरा मैं तेरा सच्चा माहीआ। कलयुग बदले सतिजुग रीत, साची सिख्या इक समझाईआ। नज़री आए प्रभ अतीत, त्रैगुण

देवे डेरा ढाहीआ। वेख वखाए हस्त कीट, ऊँच नीच इक सरनाईआ। सज्जण बणे साचा मीत, साक सैण आप हो आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां देवे इक्को दान धाम अनडीठ, अनडिठड़ा मेल कराईआ।

✪ ६ अस्सू २०२० बिक्रमी धन्ना सिँघ दे गृह डगरू ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सर्ब जीआं प्रभ एका राम, घट निवासी डेरा लाईआ। सर्ब जीआं प्रभ एका नाम, नाउँ निरँकार इक दृढ़ाईआ। सर्ब जीआं प्रभ एका भान, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। सर्ब जीआं प्रभ एका माण, दर घर साचे देवे वड्याईआ। सर्ब जीआं प्रभ एका गान, आत्म परमात्म भेव चुकाईआ। सर्ब जीआं प्रभ इक ज्ञान, धुर संदेसा दए सुणाईआ। सर्ब जीआं प्रभ इक निशान, धर्म निशाना दए वखाईआ। सर्ब जीआं प्रभ इक ध्यान, बख्शे चरण कँवल सरनाईआ। सर्ब जीआं प्रभ इक धुन्कान, अनहद नादी नाद सुणाईआ। सर्ब जीआं प्रभ इक मकान, काया मन्दिर दए वखाईआ। सर्ब जीआं प्रभ इक भगवान, आदि जुगादि सहिज सुखदाईआ। सर्ब जीआं प्रभ वेखे आण, जग करता फेरी पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा कर्म आप कमाईआ। सर्ब जीआ प्रभ इक्को दाता, दयावान हरि अख्वाइंदा। सर्ब जीआं प्रभ इक्को ज़ाता, ब्रह्म पारब्रह्म समझाइंदा। सर्ब जीआं प्रभ इक्को साका, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। सर्ब जीआं प्रभ इक्को नाता, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाइंदा। सर्ब जीआं प्रभ इक्को गाथा, सोहँ ढोला राग अलाइंदा। सर्ब जीआं प्रभ वेखे खेल तमाशा, घर गोपी काहन नचाइंदा। सर्ब जीआं प्रभ पूरी करे आसा, जो जन एका ओट रखाइंदा। सर्ब जीआं देवे भरवासा, सच दुआर इक समझाइंदा। सर्ब जीआं जोत प्रकाशा, घट घट अन्दर आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, साची करनी आप कमाइंदा। सर्ब जीआं एको दातार, दयावान आप अख्वाईआ। सर्ब जीआ इक प्यार, प्रेम प्रीती तोड़ निभाईआ। सर्ब जीआं इक विहार, ब्रह्म पारब्रह्म समझाईआ। सर्ब जीआं इक गुफ़तार, अन्तर आत्म बूझ बुझाईआ। सर्ब जीआं प्रभ सांझा यार, आदि जुगादि सगला संग निभाईआ। सर्ब जीआं प्रभ खोलणहारा कवाड़, बजर कपाटी तोड़ तड़ाईआ। सर्ब जीआं प्रभ निरगुण जोत करे उज्यार, जोती जाता नूर धराईआ। सर्ब जीआं प्रभ वेखे विगसे वेखणहार, वेखणहारा नज़र किसे ना आईआ। सर्ब जीआं प्रभ सुणे पुकार, सचखण्ड बैठा सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। सर्ब जीआं एक वस्त, सो सतिगुर आप वरताईआ। सर्ब जीआं

रखे मस्त, नाम खुमारी सच चढ़ाईआ। सर्ब जीआं भेव चुकाए कीट हसत, ऊँच नीच एका घर बहाईआ। सर्ब जीआं देवे दरस, जो जन बैठे ध्यान लगाईआ। सर्ब जीआं मेटे हरस, हवस कोई रहिण ना पाईआ। सर्ब जीआं करे तरस, दयावान बेपरवाहीआ। सर्ब जीआं पूरब लहिणा वेखे कर्ज़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल धुरदरगाहीआ। सर्ब जीआं प्रभ करे बोध, नाम मन्त्र इक दृढ़ाइंदा। सर्ब जीआं प्रभ हिरदा सोध, हिरदे हरि हरि रूप धराइंदा। सर्ब जीआं प्रभ भाग लगाए काया कोट, बंक दुआर इक सुहाइंदा। सर्ब जीआं लेखा चुकाए वरन गोत, ज़ात पात बन्धन नज़र कोए ना आइंदा। सर्ब जीआं प्रभ निर्मल रखे जोत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाइंदा। सर्ब जीआं घर शब्द धुनकार, अनरागी राग सुणाईआ। सर्ब जीआं घर बोले जैकार, उच्ची कूक कूक अलाईआ। सर्ब जीआं प्रभ करे ख़बरदार, सोई सुरती आप उठाईआ। सर्ब जीआं प्रभ देवे पैज स्वार, जो मंगण चरण सरन सच्ची सरनाईआ। सर्ब जीआं प्रभ भव सागर लाए पार, मँझधार बेड़ा ना कोए रुढ़ाईआ। सर्ब जीआं लेखा जाणे वारो वार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र आप उठाईआ। सर्ब जीआं भेव खोले गुज्झ, पड़दा दूई द्वैत उठाइंदा। सर्ब जीआं निर्मल करे बुध, विवेकी अपणी धार समझाइंदा। सर्ब जीआं उजल करे मुख, मुख दुरमति मैल धवाइंदा। सर्ब जीआं आवण जावण मेटे तृष्ना भुक्ख, सांतक सति सति वरताइंदा। सर्ब जीआं जन्म कर्म गंवाए दुःख, रोग संताप नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। सर्ब जीआं तोले तोल, तोलणहार वड वड्याईआ। नाम कंडा रखे कोल, दो जहानां फेरा पाईआ। सन्त सुहेले लख चुरासी विचों वरोल, आदि जुगादि बाहर कढ्ढाईआ। सच सुणाए अगम्मी ढोल, राग नाद करे शनवाईआ। बजर कपाटी पड़दा खोल्ह, भेव अभेदा दए समझाईआ। सुरती शब्दी जाए मौल, मौला आपणा रंग रंगाईआ। जन्म जन्म दा पूरा करे कौल, कीता कौल भुल ना जाईआ। जन भगतां देवे वड्याई उपर धौल, धरनी धरत खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, वड दाता दानी सद मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ।

✪ ६ अस्सू २०२० बिक्रमी सीतल सिँघ दे गृह डगरू ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

पारब्रह्म प्रभ बेपरवाह, हरि बेअन्त तेरी वड्याईआ। सो पुरख निरँजण सच्चे शहिनशाह, शाह पातशाह तेरी शहिनशाहीआ।

हरि पुरख निरँजण बण मलाह, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। एकँकार दे सलाह, साची सिख्या सिख दृढ़ाईआ। आदि निरँजण कर रुशना, जोती नूर डगमगाईआ। श्री भगवान दे समझा, साची समझ इक समझाईआ। अबिनाशी करते पड़दा दे उठा, दूई द्वैत रहिण ना पाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म आपणा लै मिला, भगत विछोड़ा नज़र ना आईआ। लेखा जाण दो जहां, निरगुण सरगुण आपणी कार कमाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड रोवन मारन धाह, ज़िमीं असमान रहे कुरलाईआ। रवि ससि सूरज चन्न सीस रहे झुका, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव धूढ़ी टिक्का मस्तक लए ला, ख़ाकी ख़ाक रूप वटाईआ। बेऐब ख़ुदाई बेऐब परवरदिगार ख़ुदा, मुकामे हक़ हक़ हकीकत दे जणाईआ। लाशरीक इक ख़ुदा, ख़ुदी सब दी दे मिटाईआ। मार्ग दस्स इक सिध्धा, लख चुरासी जीव जंत पढ़ाईआ। आपणे मिलण दी दे इक्को बिधा, दूजा राह नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। शाह पातशाह साहिब सुल्तान, दर तेरे इक अरजोईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगण दान, झोली ख़ाली रहे वखाईआ। जुग चौकड़ी तेरा गाउँदे रहे नाम, निधान रसना जिह्वा ढोला सिफ्त सालाहीआ। वसदे रहे काया साढे तिन्न हथ्थ अन्दर मकान, पंज तत चोला जगत हंढ्ढाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान देंदे रहे ब्यान, धुर दी बाणी नाम जणाईआ। अन्तिम कह के आए सर्ब जीआं दा दाता इक भगवान, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी सचखण्ड वसे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर ठांडा इक वखाईआ। दर ठांडा खोल्ह दरबार, धुर दरबारी तेरी वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दर रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। दहि दिशा सुणे ना कोए पुकार, चार कुण्ट धीर ना कोए धराईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मच्च हाहाकार, गुरुदुआर अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। तीर्थ तट होए ख्वार, अठसठ बैठे डेरा ढाहीआ। दीन मज़्हब ना कोए प्यार, ज़ात पात करे लड़ाईआ। साहिब सतिगुर मिले ना दीन दयाल, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। बिन हरि नामे सारे होए कंगाल, ख़ाली हट्ट रहे वखाईआ। धुर दरबारी मिले ना कोए दलाल, साचा वणज ना कोए कराईआ। हकीकत दस्से ना कोए हलाल, हक़ देवे ना थाउँ थाईंआ। त्रैगुण माया प्या जंजाल, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। आ के सुणे ना कोई मुरीदां हाल, मुर्शद फेरा कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, श्री भगवान तेरी सरनाईआ। श्री भगवान तेरी ओट, चार वरन ध्यान लगाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश भरया खोट, बुध विवेक ना कोए वखाईआ। निर्मल नज़र ना आए जोत, काम क्रोध लोभ मोह हँकार हल्काईआ। सुरती शब्द ना कोए सोत, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ।

नाद धुन शब्द नगारे लाए ना कोए चोट, अनरागी राग ना कोए सुणाईआ। तेरा नाउँ किसे ना आवे सोच, सोच सोच थक्की सर्ब लोकाईआ। जगत विभचार माणे मौज, आत्म रस हथ्थ किसे ना आईआ। गुरमुख विरला कोटन विचों करे तेरी खोज, खोजत खोजत आपणा माण गंवाईआ। निज नेत्र निज लोचण निज मन्दिर तेरा दरस रहे लोच, आसा तृष्ना अवर ना कोए वधाईआ। ठाकर स्वामी पतिपरमेश्वर अन्तिम पहुंच, बेपरवाह तेरे अग्गे वास्ता पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर मिले सच वड्याईआ। सतिगुर स्वामी वेख ठाकर, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। कलयुग दिसे डूंघा सागर, भँवरी पार ना कोए कराईआ। साचे मन्दिर देवे ना कोई आदर, आदर्श सच ना कोए वखाईआ। भुल्ला इक करीम कादर, करता नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, लख चुरासी कूक सुणाईआ। लख चुरासी मारे कूक, जीव जंत रिहा कुरलाईआ। त्रैगुण माया रही फूक, सांतक सति ना कोए कराईआ। नौ खण्ड पृथ्मी दिसे झूठ, सत्त दीप डंका कूड़ वजाईआ। नज़र ना आए कोई पूत, सपूत रूप ना कोए वटाईआ। ख़ाली दिसे पंज तत काया भूत, काम क्रोध लोभ मोह हँकार करे लड़ाईआ। नाता तुटा ताणा पेटा सूत, सूत्रधारी बैठा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम ख़ाली वेख जगत कलबूत, साचा हुजरा हक़ ना कोए सुहाईआ। साचे हुजरे ना दिसे महिबूब, ख़ालक नज़र किसे ना आइंदा। ख़ाली दिसे जगत अरूज, अर्श फर्श नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। ख़ाली दिसे सारा कूट, जोती नूर ना कोए चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरा इक्को नज़री आइंदा। पीर पैगम्बर तक्कण आस, आसा इक्को इक रखाईआ। परवरदिगार तेरा खेल तमाश, ख़ालक ख़लक तेरी झोली पाईआ। चौदां तबक होए निरास, नबी रसूल देण दुहाईआ। साचा सबक ना किसे पास, अलिफ़ ये ना कोए कुड़माईआ। कल्मयों आकी होए गुसताख़, कलाम इलाही ढोला कोई ना गाईआ। सदी चौधवीं कोई ना करे मुआफ़, परवरदिगार देवणहार सज़ाईआ। मूसा ईसा मुहम्मद एका कलमा गए आख, आख़र आवे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, जिस दी कोई ना बुज्झे ज़ात, अजाति आपणी खेल कराईआ। साचा खेल कर समरथ, समरथ तेरे हथ्थ वड्याईआ। गुर अवतार तेरा मार्ग गए दस्स, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी लग्गी अग्ग, सत्त दीप मट्ठ दित्ता तपाईआ। अमृत मिले ना किसे रस, रसना जिह्वा होई हल्काईआ। लख चुरासी कामना वस, गुर का शब्द ना कोए कमाईआ। सब दा तुटा धीरज जत, सति सन्तोख नज़र कोए ना आईआ। नाड़ बहत्तर उबले रत, तिन्न सौ सट्ठ हाडी दए दुहाईआ। नेत्र रोवण तत अट्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति

बुध मारे धाहींआ। वस्त अमोलक किसे ना दिसे पास, काया गोलक ख़ाली नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरी मिले सच सरनाईआ। सच सरनाई दे ख़ालक, बेपरवाह दया कमाईआ। आदि जुगादी बण बण पालक, जुग जुग सेव कमाईआ। तेरा कोई ना निंद्रा आलस, चिन्ता ग़म ना कोए वखाईआ। तेरा रूप सच्चा ख़ालस, ख़ालस रूप दे प्रगटाईआ। निरगुण हो के बण सालस, सरगुण सच सच जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा साचा घर, जिस घर वज्जे तेरे नाम वधाईआ। कर किरपा एकँकार, अक्ल कल तेरी सरनाईआ। सो पुरख निरँजण लै अवतार, वड अवतारी फेरा पाईआ। हरि पुरख निरँजण खोल्ह कवाड़, दर दरवाज़ा दे समझाईआ। आदि निरँजण दीपक बाल, इक्को जोत होए रुशनाईआ। श्री भगवान प्रगट कर सच्ची धर्मसाल, चार वरन मिले सरनाईआ। अबिनाशी करते हो दयाल, दीनन आपणी गोद बहाईआ। पारब्रह्म आपणा जलवा दे जलाल, ब्रह्म पड़दा दे उठाईआ। शब्द गुर वजा ताल, अनादी नाद सुणाईआ। आ के वेख मुरीदां हाल, मुर्शद तेरा राह तकाईआ। फल दिसे ना किसे डाल्ह, ख़ाली पत्त रहे लहराईआ। अमृत भर सरोवर ताल, अमृत मेघ इक बरसाईआ। नाता तोड़ काल महाकाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, निरगुण सरगुण सारे रहे ध्याईआ। विष्नूं कहे प्रभ आ मेहरवान, तेरी ओट तकाईआ। ब्रह्मा कहे दे दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। शंकर कहे कर परवान, बेनन्ती तेरे अग्गे अरजोईआ। त्रैगुण माया कहे मेरा तुटा माण, अभिमान नज़र कोए ना आईआ। पंज तत कहे मैं तेरा दरबान, दर घर साचे अलख जगाईआ। नेत्र रोवे पंज शैतान, उच्ची कूके वाहो दाहीआ। मन मति बुध होई हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। लख चुरासी नाता तुटे बेईमान, कूड़ी शरअ ना कोए वखाईआ। सर्ब जीआं दे इक ज्ञान, बोध अगाध कर पढ़ाईआ। आत्म परमात्म सारे लैण पहिचाण, घर घर विच वेख वखाईआ। नज़री आए तेरा नूर महान, जोती जोत डगमगाईआ। काया तत सोहे मकान, अठसठ तीर्थ इक्को सरोवर रूप वखाईआ। किरपा कर श्री भगवान, भगवन आपणा फेरा पाईआ। कलयुग अन्तिम वेला पहुँचया आण, तेई अवतार भगत अठारां गुर दस ईसा मूसा मुहम्मद लेखा लिख्त गए लिखाईआ। बेपरवाह बेऐब परवरदिगार नूर इलाही तेरा नूर सके ना कोए पहचान, बेपहचान तेरी सरनाईआ। लाशरीक तोहे तौफ़ीक मिहबान बीदो नौजवान, रहमत आपणी आप जणाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी श्री भगवान, भगत तेरी ओट तकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी मिटे रैण अन्धेरी रात, कलयुग अमावस लोकमात नज़र ना आईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां नाम सुगंधी दे दात, वस्त अनमंगी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को

देणा साचा वर, दर तेरा इक्को नज़री आईआ। किरपा कर सच भगवन्त, भगवन तेरे हथ्थ वड्याईआ। नेत्र रोवण गुरमुख सन्त, अन्तर आत्म ध्यान लगाईआ। होया विछोड़ा नार कन्त, सुरत सवाणी भज्जे वाहो दाहीआ। काया चोली चढ़े ना रंग बसन्त, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। मिले नाम ना मणीआ मंत, मन का मणका ना कोए भवाईआ। तेरा भेव ना जाणे कोई पंडत, चौदां विद्या होई हल्काईआ। दर दरवेश कोटन कोटि गुर अवतार बैठे मंगत, पीर पैगम्बर निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम मन्न मिन्नत, दर तेरे इक अरजोईआ। दर तेरे इक अरदास, दोए जोड़ सर्ब निमस्कारया। ठाकर स्वामी वस पास, जगत विछोड़ा पन्ध निवारया। घर नूर कर प्रकाश, दीवा बाती इक उज्यारया। जन्म जन्म दी पूरी कर आस, सोहे भगत सच दलारया। लेखा चुक्के मात गर्भ दस दस मास, उलटा रुख़ ना दूजी वारया। लेखा चुक्के पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर डेरा ढाह रिहा। तेरे मन्दिर वेखां रास, गोपी काहन नाच नचा रिहा। तेरा सोहला सास सास, तेरा ढोला राग अला रिहा। तेरा सेवक बण के दास, सच साची सेव कमा रिहा। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरे चरण करे निवास, दूजी भूमिका भाग ना कोए लगा रिहा। कलयुग अन्तिम मालक आप आया ख़ास, ख्वाहिश सब दी मेट मिटा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सुनेहड़ा इक घला रिहा। सच सुनेहड़ा घल्ले सज्जण, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। कलयुग अन्त करा इक्को मजन, हरि पुरख निरँजण वेस वटाईआ। सन्त सुहेले गुरू अवतार पीर पैगम्बर भगत भगवान आए सद्दण, एकँकार सद्दा नाम दिवाईआ। सच प्रकाश निर्मल जोत चाढ़े साचा चन्दन, आदि निरँजण नूर रुशनाईआ। अबिनाशी करता तोड़े बन्धन, बंदगी इक्को इक समझाईआ। श्री भगवान देवे परमानंदन, निज आत्म रस वखाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म चाढ़े आपणी रंगण, रंग इक्को इक वखाईआ। घर साचे वज्जे मृदंगन, नाम नगारा इक सुणाईआ। दूजे घर ना जाए मंगण, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। बीस बीसा हरि जगदीशा धुर दी दात आए वंडण, नाम निधाना झोली पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया करे खण्डण, खण्डा खड़ग नाम चमकाईआ। बल धारे योद्धा सूरबीर सरबँगन, निरगुण निरवैर आपणा फेरा पाईआ। नौ दुआरे आवे पार लँघण, गुरमुख तेरा घर इक सुहाईआ। दस्म दुआरी वड़ के उच्चे टिल्ले चढ़ के मस्तक टिक्का लाए चन्दन, जोत ललाटी नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सब दी आसा पूर कराईआ। सब दी आसा करे पूर, प्रभ वड्डा वड वड्याईआ। प्रगट हो के वेस वटाए हाज़र हज़ूर, हज़रत आपणा फेरा पाईआ। जोती नाल मिला के जोती नूर, जोती जोत जोत रुशनाईआ। कोटन कोटि जन्म दे बख्शे आप कसूर, मेहर

नज़र बेनज़ीर आप उठाईआ। पन्ध मुकाए दूरन दूर, नेरन नेर आपणा डेरा लाईआ। नाता तोड़ कूड़ो कूड़, सच सुच्च बूझ बुझाईआ। जिस घर विचों होया रिहा मफ़रूर, अन्तिम ओसे घर विच फेरा पाईआ। जन भगतां मेला मेले अन्त ज़रूर, ज़रूरत सब दी वेख वखाईआ। सर्ब कला स्वामी भरपूर, ख़ाली भाण्डे दए भराईआ। जिस जन मस्तक टिक्का बख्शे धूढ़, नूरी नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लेखा सब दा दए मुकाईआ। सब दा लेखा लाए लेखे, लिखणहार गोपाल वड्डी वड्याईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त कोई ना रहे भुलेखे, भाण्डा भरम सर्ब भंनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग विछड़े रखे चेते, चेतन सुरती आप जणाईआ। जन भगतां करे साचा हेते, हितकारी वेस वटाईआ। निरगुण हो के सरगुण नाल खेडे, जगत खिलाड़ी खेड वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्दर वड़ के देवे भेते, बाहरों नज़र किसे ना आईआ। बाहरों नज़र ना आए मीत, कलयुग लभ्भे सर्ब लोकाईआ। रसना जिह्वा ढोला गाउँदे गीत, मन का मणका ना कोए भवाईआ। फिर फिर थक्के मन्दिर मसीत, शिवदुआले नैण उठाईआ। साहिब सतिगुर काया मन्दिर अन्दर वसे धाम अनडीठ, घर घर विच बैठा आसण लाईआ। आत्म परमात्म जो जन कमाए सच प्रीत, तिस मेला लए मिलाईआ। करे कराए काया ठांडी सीत, अमृत मेघ इक बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आसा तृष्ना दए मिटाईआ। आस तृष्ना मेटे सब, जो जन बैठे ध्यान लगाईआ। लख चुरासी विचों लभ्भ, चार कुण्ट मेल मिलाईआ । अमृत झिरना झिराए कँवल नभ, उलटा मुख आप भवाईआ। कूड़ी क्रिया पार कराए हद्द, मन्दिर साचा इक वखाईआ। सन्त सुहेले सज्जण सद्द, चरण कँवल दए सरनाईआ। लख चुरासी नालों कर के अड्ड, मार्ग इक्को इक वखाईआ। विश्व बणाए साची यद, विष्न ब्रह्मा शिव सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अन्तिम इक्को नाम दृढ़ाईआ। अन्त दृढ़ाए नाम एक, एकँकार दया कमाइंदा। आदि जुगादि जिस दी टेक, जुग चौकड़ी भेव खुलाइंदा। सो साहिब सतिगुर धारे भेख, रूप रंग रेख नज़र कोए ना आइंदा। घट घट अन्दर रिहा वेख, लख चुरासी डेरा लाइंदा। कलयुग अन्तिम कूड़ी क्रिया अग्नी तपे रेत, बालू रूप सर्ब वटाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा खेल कराइंदा। निरगुण खेल करे करतार, हरि करता वड वड्याईआ। सब दा लहिणा देणा कर्ज दए उतार, मकरूज आपणा फ़र्ज अदा कराईआ। अग्गे मार्ग दस्से सच संसार, सृष्ट सबाई करे पढ़ाईआ। ज़ात पात वरन बरन ऊँच नीच झगड़ा दए नवार, झंजट कोए रहिण ना पाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, पुरख अकाल दए समझाईआ। रसना गावो मीत मुरार, बत्ती दन्द सिफ्त

सालाहीआ। आत्म करो परमात्म प्यार, ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। गुर चेला सोहे इक दुआर, नानक गोबिन्द इक पढ़ाईआ। घर मन्दिर खोलू दुकान, सौदा हट्ट दए विकाईआ। धर्म झुलाए इक निशान, दो जहाना हथ्थ उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला सारे गाण, इक्को राग नाद शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। साची सिख्या देवे आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। लख चुरासी माई बाप, पिता पूत गोद सुहाईआ । सतिजुग तेरा सच्चा जाप, आत्म परमात्म करे कुड़माईआ। पारब्रह्म ब्रह्म दस्से पूजा पाठ, सिमरन इक्को इक समझाईआ। सच सरोवर दस्से तीर्थ ताट, तट किनारा इक्को दए वखाईआ। इष्ट गुरदेव स्वामी नज़री आए पुरख समरथ, साख्यात साबत सूरत दए प्रगटाईआ । लहिणा देणा जीव जंत साध सन्त चुकाए हथ्थो हथ्थ, लेखा सब दा पूर कराईआ। कूड़ कुड़यारा देवे मथ, नाम मधाणा अन्तिम पाईआ। जन भगतां हिरदे अन्दर वस, वसल आपणा इक कराईआ। सच प्रीती देवे रस, निझर झिरना नाम झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम हो निरपक्ख, सरगुण मार्ग देवे दस्स, साची सिख्या इक्को नाम समझाईआ। साचा नाउँ हरि का रूप, सतिगुर स्वामी शब्द जणाइंदा। सद वसे चारे कूट, दहि दिशा आसण लाइंदा। जग तोड़े नाता जूठ झूठ, सच सुच्च इक दृढ़ाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी गुर अवतार पीर पैगम्बर पारब्रह्म दा सारे देण सबूत, शहादत इक्को वार भुगताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, साचा मार्ग इक लगाइंदा। साचा मार्ग लग्गे जग्ग, जग जीवण दाता आप लगाईआ। सृष्ट सबाई त्रैगुण लग्गी बुझाए अग्ग, अग्नी तत ना कोए वखाईआ। किरपा करे सूरा सरबग्ग, गुरमुख गुर गुर लए जगाईआ। दरस दिखाए उपर शाह रग, नौ दुआरे डेरा ढाहीआ। हँस बणाए फड़ के कग्ग, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। अनहद नाद जाए वज्ज, धुन राग करे शनवाईआ। बजर कपाटी डेरा जाए ढट्ठ, पड़दा रहिण कोए ना पाईआ। आत्म सेजा चढ़ भज्ज, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। गुरमुख आत्म परमात्म लए सद्द, आप आपणा हुक्म मनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा तेरी मेरी इक्को यद, हँ ब्रह्म पारब्रह्म दए समझाईआ। दो जहान ढोला इक्को छन्द, संसा कोई नज़र ना आईआ। ना कोई बंदीख़ाना बंद, बन्धन सके ना कोए पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, साचा मन्त्र इक उपाईआ। साचा मन्त्र अगम्मा जाप, सो सतिगुर आप उपाईआ। सतिजुग देवे साची दात, वस्त अमोलक आप वरताईआ। चार वरन बणाए सज्जण साक, नाता भैण भाई जुड़ाईआ। अन्दर बाहर रखे इतफ़ाक, दूई द्वैत ना कोए रखाईआ। बंद

कवाड़ी खोल्ह ताक, जलवा नूर करे रुशनाईआ। लेखा चुक्के जगत आफ्ताब, नूर ज़हूर इक रुशनाईआ। मुख पढ़दा लाहे नक़ाब, महिबूब आपणी दया कमाईआ। साचे तख्त बहे हक़ जनाब, जगत शरीअत दए मिटाईआ। पीर पैगम्बर दर सारे करन आदाब, निउँ निउँ लागण पाईंआ। तेरा कोई ना जाणे भविक्ख्त वाक, इशारा इशारे नाल समझाईआ। कलयुग अन्तिम वेख आप हालात, हालत सब दी दए बदलाईआ। सुरत सवाणी पंज तत काया अन्दर गरिफ्त होई हवालात, बंदीख़ाना दे तुड़ाईआ। तेरे भगतां दिसे इक जमात, पट्टी इक्को नाम पढ़ाईआ। लख चुरासी तेरा बाग़ीचा वड बाग़ात, माली बण के फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, तेरे अग्गे सर्ब लाजवाब, बोल सके कोई ना राईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरगुण निरवैर पुरख अकाल सचखण्ड दुआरे तेरा ख़िताब, ख़ता सब दी मुआफ़ कराईआ।

✪ ६ अस्सू २०२० बिक्रमी गुरबचन सिँघ दे गृह पिण्ड सद्दे वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सच्च दरबार इक्को लग्गा, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। तख्त निवासी सूरा सरबग्गा, शाह पातशाह आसण लाईआ। जोती नूर दीपक जगा, निरगुण निरवैर करे रुशनाईआ। नाम डंका हो के वज्जा, दो जहान करे रुशनाईआ। विष्नूं उठ के फिरे भज्जा, चारों कुण्ट वाहो दाहीआ। ब्रह्मा कहे प्रभ मेरा वेख अग्गा, दोए जोड़ जोड़ सरनाईआ। शंकर दोए जोड़ हथ्थ बद्धा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। त्रैगुण माया कहे मैं छड्डां अड्डा, लोकमात रहिण ना पाईआ। पंज तत कहे मेरे ख़ाली हड्डा, वस्त नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार कहे हउँ बालक नढ्ढा, बलधारी तेरी वड्याईआ। पीर पैगम्बर कहे तेरा करदे रहे सजदा, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। भगत कहे मैं तेरा बरदा, भगवन तेरी ओट रखाईआ। सन्त कहे मैं तैथों डरदा, निर्भय तेरी इक सरनाईआ। गुरमुख कहे मैं तेरा नाउँ पढ़दा, नित नवित्त ध्यान लगाईआ। गुरसिख कहे मैं सरन सरनाई डिगदा, माण अभिमान नज़र कोए ना आईआ। सतिजुग कहे मैं राह तक्कां चिरदा, नेत्र नैण नैण उठाईआ। त्रेता कहे मैं वेखां खेल साचे पिर दा, हरि प्रीतम वेस वटाईआ। द्वापर कहे मैं प्रेम प्रीती अन्दर खिड़दा, साची पंखड़ी मुख खुल्हाईआ। कलयुग कहे मैं तेरे नाउँ तों चिढ़दा, दुखी हो के दयां दुहाईआ। चौदां लोक कहे मेरे घर कोई ना फिरदा, साहिब सुल्तान नज़र कोए ना आईआ। चौदां तबक कहे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरा इक रखाईआ। सच दरबार सचखण्ड निवासी, एकँकारा आप लगाईआ। उपर बैठ पुरख अबिनाशी,

करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। दो जहानां मण्डल रासी, गोपी काहन नाच नचाईआ। शब्द सुत दुलारे देवे हुलासी, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। विष्नूं तेरी लाहे उदासी, ब्रह्मा धीरज आप धराईआ। शंकर तेरी करे बंद ख़लासी, बन्दना इक्को इक समझाईआ। त्रैगुण कटे तेरी फाँसी, पंज तत डेरा देवे ढाहीआ। गुर अवतार बणाए दासी, पीर पैगम्बर सेव लगाईआ। जुग चौकड़ी पूरी करे आसी, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। साचे तख्त हरि जू चढ़या, सो पुरख निरँजण वड्डी वड्याईआ। महल अटल आपे खड़या, जोती नूर नूर रुशनाईआ । नाउँ निरँकारा एका पढ़या, दो जहान करे शनवाईआ। लख चुरासी घाड़न घड़या, घड़ भाण्डे वेख वखाईआ। निरगुण नूर हर घट धरया, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। अमृत सरोवर घर घर भरया, कँवल नाभी मुख भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। तख्त निवासी तेरा तक्कण राह, नेत्र नैण नैण उठाईआ। कवण वेला प्रभ मिले मलाह, बेपरवाह फेरा पाईआ। प्रगट होवे सच ख़ुदा, दस्तगीर पल्लू दए फड़ाईआ। लेखा जाणे दो जहां, ब्रह्मण्ड खोज खोजाईआ। जुग चौकड़ी लहिणा देणा दए चुका, लेखा सब दा आप मुकाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां जुग विछड़यां लए मिला, सद्दा इक्को नाम सुणाईआ। दर घर साचे कट्ठे होवो आ, हरि मन्दिर वज्जे वधाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चौथा युग रिहा विहा, अन्तिम वेला नेड़े आईआ। जिस साहिब दा गीत गोबिन्द गए गा, ढोला राग नाद सुणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद गए बणा, लेखा जाण काग़ज़ कलम शाहीआ। अलिफ़ ये नुक्ता नून गए समझा, तीस बतीसा रसना जिह्वा सिफ्त सालाहीआ। कलमा नबी रसूल गए पढ़ा, कायनात कर शनवाईआ। नाम सति गए दृढ़ा, डंका इक्को नाम वजाईआ। पुरख अकाल गए मना, इष्ट देव स्वामी बेपरवाहीआ। वाक भविक्ख्त गए जणा, भेव अभेदा खोल्ह जणाईआ। सो साहिब सुल्तान तख्त निवासी शाह पातशाह पतिपरमेश्वर फेरा पाए आ, परवरदिगार जलवा नूर इलाहीआ। सचखण्ड दुआरा हरि निरँकारा एकँकारा निरवैर पुरख रिहा वसा, महल अटल करे रुशनाईआ। निरगुण नूर साचा नूर रिहा चमका, सूरज चन्द ना कोए वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दर बैठे सीस झुका, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा इक्को हुक्म समझाईआ। सच दरबार सच सुल्ताना, सो पुरख निरँजण सोभा पाईआ। हरि पुरख निरँजण नौजवाना, मर्द मर्दाना भेव खुल्हाईआ। एकँकारा वड बलवाना, बलधारी हुक्म वरताईआ । आदि निरँजण नूर महाना, जोती जाता जोत करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता बन्न्हे गाना, घर साचा सगन मनाईआ। श्री भगवान झुलाए निशाना, धर्म निशाना इक उठाईआ। पारब्रह्म प्रभ करे

परवाना, सच परवानगी इक रखाईआ। परवरदिगार वसणहारा साचे धाम हक़ मुकामा, मुकामे हक़ डेरा लाईआ। आदि जुगादी इक अमामा, बेऐब नूर खुदाईआ। पीर पैगम्बर सजदा करे सलामा, चरण कँवल मंगे सरनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे दाना, वस्त अमोलक आप वरताईआ। शब्दी धार बणे काहना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरा इक वड्याईआ। सच दरबारा सचखण्ड, सति सतिवादी आप लगाइंदा। थिर घर वंडे आपणी वंड, सुंन अगम्म भेव चुकाइंदा। लख चुरासी बंदीख़ाना बंद, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज आपणा हुक्म वरताइंदा। निरगुण सरगुण गीत सुणाए छन्द, साचा ढोला राग अलाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात कट के गए पन्ध, पांधी रूप सर्ब वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेशा एकँकारा हरि निरँकारा निरगुण धारा आप जणाइंदा। सच संदेसा देवे भगवान, हरि भगवन दया कमाईआ। सचखण्ड निवासी हो मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। विष्नूं तेरा विश्व भण्डारा वेखे आण, निरवैर पुरख फेरा पाईआ। ब्रह्मे तेरा ब्रह्म करे पहचान, लख चुरासी खोज खोजाईआ। शंकर तेरा बल वेखे विच जहान, त्रिसूल तेरी भेव चुकाईआ। त्रैगुण माया तेरा तोड़े माण, अभिमान रहिण कोए ना पाईआ। पंज तत तेरी करे कल्याण, हरि करता वड वड्याईआ। गुर अवतार वेखे मार ध्यान, पीर पैगम्बर पड़दा आप चुकाईआ। शास्त्र सिमरत वेखे पुराण, गीता ज्ञान भेव खुलाईआ। पड़दा लाह अञ्जील कुरान, खाणी बाणी हुक्म वरताईआ। लेखा जाणे दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा वेस वटाईआ। फिरे दरोही ज़िमीं असमान, गगन गगनंतर हाहाकार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लहिणा सब दा झोली पाईआ। सचखण्ड दुआरे हरि दरबारा, आदि जुगादी इक लगाइंदा। जुग चौकड़ी करे सच विहारा, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। निरगुण सरगुण लै अवतारा, लख चुरासी जीव जंत समझाइंदा। शब्द अनादी बोध अगाधी बोल जैकारा, नाउँ निरँकारा आप दृढ़ाइंदा। कागज़ कलम शाही कातब बण लिखारा, सरगुण निरगुण आपणी धार वखाइंदा। रसना जिह्वा बत्ती दन्द बोल नाअरा, हक़ हकीकत पड़दा लाहइंदा। मार्ग दस्से सर्ब संसारा, संसार सागर खोज खोजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुलाइंदा। भेव अभेदा खोले आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जुग चौकड़ी सज्जण साक, पतिपरमेश्वर इक अख्वाईआ। कलयुग अन्तिम पूरा करे भविक्ख्त वाक, वाक्य वेखे चाईं चाईंआ। सच दुआरे खोल ताक, पड़दा दूई दए उठाईआ। सच संदेसा नर नरेशा विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार पीर पैगम्बर सब नूं देवे आख, आखर आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग मिटे अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चमकाईआ। खेले खेल

पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता आपणा हुक्म वरताईआ। जो उपजे सो होवे नास, थिर कोए रहिण ना पाईआ। माया ममता नाता तुटे कूड़ी रास, कलयुग पूंजी नज़र कोए ना आईआ। श्री भगवान सुट्टे डूंघे खात, शौह दरया आप रुढ़ाईआ। लहिणा देणा चुकाए ज़ात पात, दीन मज़्हब झगड़ा रहिण कोए ना पाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश बणाए इक जमात, इक्को अक्खर करे पढ़ाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आ के वेखण जगत हालात, निरगुण निरगुण आपणे नाल लिआईआ। बिन पुरख अकाल किसे कोई ना पुछे वात, चार वरन रोवण मारन धाहींआ। कलयुग चोला अन्तिम जाणा पाट, काला सूसा तन रहिण ना पाईआ। बीस बीसा उतारे आपणे घाट, सदी चौधवीं लेखा लेखे लाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद तोबा तोबा कह सुणावण गाथ, नेत्र रो रो नैणां नीर वहाईआ। उम्मत उम्मती असीं गए आख, आख़र इक्को हुक्म जणाईआ। कलयुग अन्तिम सांझा पीर प्रगट होवे साख्यात, वड अमाम आपणा फेरा पाईआ। लेखा जाणे सृष्ट सबाई कायनात, कलमा इक्को नाम पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा लेखे पाईआ। विष्नूं लेखा लेखे जाए लग्ग, लगावणहार आप लगाईआ। ब्रह्मे नेत्र नैण तक्क, दर मन्दिर दए खुल्हाईआ। शंकर वेख ख़ाली हथ्थ, त्रिसूल नज़र कोए ना आईआ। भोले नाथ उठ नट्ठ, बाशक तशका गलों लाहीआ। रजो तमो सतो नेत्र नीर नैणां घत्त, उच्ची कूके दए दुहाईआ। पंज तत कोई ना मेटे फट्ट, पट्टी नाम ना कोए बंधाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मनमुखां कोलों पिच्छे गए हट, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। दूर दुराडे गए नट्ठ, पल्लू आपणा मात छुडाईआ। जिन्हां भुल्ली गुर की मति, मन मति बैठे जगत प्रनाईआ। सो ख़ाली दिसण हथ्थ, साची वस्त नज़र कोए ना आईआ। नाड़ बहत्तर उबले रत, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। अन्तिम खेड़ा होणा भट्ठ, कलयुग भठियाला अग्नी रिहा तपाईआ। जो गुरमुख गुरसिख हरिसन्त अन्तर आत्म रहे रट, प्रभ चरण ध्यान लगाईआ। तिन्हां वेखे पुरख समरथ, निरगुण सरगुण फोल फोलाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जोती जाता हो प्रगट, पुरख बिधाता दए वड्याईआ। चरण कँवल बंधाए नत, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। लख चुरासी विचों लए रख, रक्षया करे सभनीं थाईंआ। आपणे वेखण दी खोल्हे तीजी अक्ख, दोए लोचण बंद कराईआ। साचा मार्ग देवे दस्स, आत्म परमात्म बूझ बुझाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म देवे आपणा रस, रस रसया मुख चुआईआ। करे प्रकाश कोटन रवि ससि, जोती नूर डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा सब दा लेखे पाईआ। विष्नूं उठ कर ध्यान, सो सतिगुर आप जणाईआ। कलयुग वेख जीव जहान, ग़रीब निमाणे रोवण मारन धाहींआ। साचा मिले ना किसे पकवान, अमृत रस ना कोए चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, लेखा मंगे थाउँ थाईंआ। उठ ब्रह्मे ब्रह्म विचार, पारब्रह्म समझाइंदा। भरमे भुल्ला सर्ब संसार, तेरा नूर नज़र किसे ना आइंदा। कूड़ी क्रिया कीता पसार, साचा नाद नाम ना कोए सुणाइंदा। घर मन्दिर होया अँध्यार, प्रकाश रूप ना कोए वटाइंदा। सृष्ट सबाई धूंआँधार, जोती चन्द ना कोए चमकाइंदा। लेखा दे सच दरबार, श्री भगवान मंग मंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक अलाइंदा। शंकर उठ वेख त्रिसूल, त्रैगुण अतीता आप जणाईआ। तेरा चुक्कया अन्तिम मूल, कीमत करता देवे पाईआ। अग्गे बदलणहार असूल, असलीअत सब दी वेख वखाईआ। धुर दा लेखा करना पए क़बूल, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा रचाईआ। त्रैगुण माया खोल अक्ख, हरि आखर आप जणाइंदा। तेरा खेड़ा दिसे भट्ठ, महल अटल नज़र कोए ना आइंदा। कलयुग अन्तिम पंज तत खुले ना कोई हट्ट, हटवाणा रूप ना कोए वटाइंदा। घर घर लग्गी दिसे अग्ग, सांतक सति रूप ना कोए धराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी करनी आप समझाइंदा। उठो वेखो तेई अवतार, हरि तरा तरा समझाईआ। कलयुग जीव होए गंवार, मूर्ख मुग्ध हरि का भेव कोए ना पाईआ। घर घर वड़या जगत विभचार, कूड़ी सेजा रहे हंढ्ढाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार, तन माटी नाच नचाईआ। आसा तृष्ना करे प्यार, हउमे हंगता खुशी मनाईआ। सज्जण मिल्या ना मीत मुरार, घर कन्त ना कोए हंढ्ढाईआ। सुरत सवाणी रोवे ज़ारो ज़ार, शब्द हाणी नज़र कोए ना आईआ। आत्म सेजा सुंञी दिसे बिन मीत मुरार, मित्र प्यारा सोभा कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पड़दा सब दा रिहा उठाईआ। पीर पैगम्बर मुख लाहो नक़ाब, पड़दा आप चुकाईआ। चारों कुण्ट साची करे ना कोई आदाब, सच इस्लाम सीस ना कोए झुकाईआ। मन मनुआ बण नवाब, हुक्म आपणा रिहा वरताईआ। उम्मत उम्मती कूड़ा दिसे खवाब, साचा नूर ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा रिहा समझाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण तक्को आपणा राह, हरि रहबर रिहा जणाईआ। पढ़ पढ़ जीव जंत सारे गए भुला, भुल्लयां मार्ग कोए ना पाईआ। हिरदे हरि सके ना कोए वसा, हरिमन्दिर वड़ के दरस कोए ना पाईआ। निज नेत्र पड़दा सके ना कोए उठा, दोए लोचण नैण शरमाईआ। धुन आत्मक राग कोई ना सके गा, रसना पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। अमृत आत्म जाम सके ना कोई प्या, रस अनरस भेव ना कोए मिटाईआ। दीपक दीआ जोत सके ना कोए जगा, घर घर दीवा बत्ती करन रुशनाईआ। आत्म परमात्म सके ना कोई मिला, मिलणी जगदीश ना कोए कराईआ। आवण जावण पन्ध सके ना कोए मुका, लख चुरासी फंद ना कोए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सब दा लेखा रिहा जणाईआ । विष्न ब्रह्मा शिव तिन्ने कर इकट्ठ, दोए जोड़ पए सरनाईआ। श्री भगवान साडे नहीं किछ वस, तेरी कीती करनी तोहे भाईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा रख, रक्षया करें बेपरवाहीआ। गुर अवतार चरण डिगे ढट्ठ, आपणा आप मिटाईआ। जो कुछ साडा सो तेरे हथ्थ, डोरी तेरे हथ्थ फड़ाईआ। तेरा लेखा लिख लिख आए दस्स, काग़ज़ कलम शाही नाल रलाईआ। अन्तिम हो के तेरे वस, लोकमात नाता दित्ता तुड़ाईआ। पीर पैगम्बर कोई ना पुट्टे अक्ख, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। परवरदिगार बेपरवाह साडी नथ्थ तेरे हथ्थ, नक्क नकेल तेरी डोरी पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी मन्नीए इक रज़ाईआ। सारे उठो वेखो एक, एकँकारा आप जणाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस ने दिती टेक, सो टिक्का मस्तक सब दे लाईआ। पारब्रह्म प्रभ ठाकर स्वामी खोलणहार आपणा भेत, अभेव दए जणाईआ । लख चुरासी नालों सब दा छुट्टा हेत, गुरू पीर अवतार लोकमात होए ना कोए सहाईआ। कलयुग अन्तिम लख चुरासी सुंञा होया खेत, राखे बैठे मुख छुपाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सर्ब स्वामी खेले आपणी खेड, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। अग्नी तपदी वेखे महीना जेठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सब दा लेखा लेख मुकाईआ। उठो वेखो पीर पैगम्बर, पारब्रह्म प्रभ आप जणाइंदा। कलयुग रचया इक सुअम्बर, साहिब सुल्तान वंड वंडाइंदा। प्रगट हो सर्ब कला भरतम्बर, भेव अभेदा आप खुलाइंदा। कूड़ी क्रिया मेटे अडम्बर, जूठा झूठा डेरा ढाइंदा। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त धर्म दुआर इक्को दस्से मन्दिर, काया काअबा पड़दा आप चुकाइंदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी हर घट वसे अन्दर, निरगुण आपणा डेरा लाइंदा। भाग लगाए डूंघे खण्डर, जोती जोत जोत रुशनाइंदा । आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक दूजे दा प्यार सांझा मंगण, भगत भगवान आपणा रंग वखाइंदा। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले आपे रखे आपणे अंगण, अंगीकार आप हो जाइंदा। दूजे दर कोई ना जाए मंगण, देवणहारा दाता पुरख अकाल इक्को दया कमाइंदा। नाम निधान श्री भगवान सूरा सरबँग वजाए मृदंगन, डंका इक्को हथ्थ उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे सर्ब वरभण्डन, कलयुग भंडी आप मुकाइंदा। कलयुग भंडी वेखे आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सृष्ट सबाई देवे इक्को जाप, सिख्या सच सच पढ़ाईआ । आत्म परमात्म वड प्रताप, घर साचे खुशी वखाईआ। मेल मिलावा रसूल पाक, पाकीजा आपणा राह जणाईआ। लेखा चुक्के तन माटी कूड़ी ख़ाक, ख़ाकसार लए उठाईआ। जन भगतां खोल्हे अन्तर ताक, बंद कवाड़ी कुण्डा लाहीआ। मेटे रैण अन्धेरी रात, साचा चन्द नूर चमकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सुणावे गाथ, सोहँ ढोला इक

पढ़ाईआ। वरन बरन मेट बणाए सच जमात, चार वरन हरि सरनाईआ। नज़री आए इक इकांत, इक इकल्ला सच्चा माहीआ। जिस दी गुर अवतार पीर पैगम्बर रखण आस, भगत सन्त बैठे ध्यान लगाईआ। गुरमुख गुरसिख मिल बुझावण तृष्ना प्यास, भुक्ख कोए रहिण ना पाईआ। सो साहिब निरगुण जोत करे प्रकाश, प्रकाशवान हर घट थाईंआ। सतिजुग साचे तेरा खोल्हे भेव खुलास, खुलासा इक्को वार जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, सृष्ट सबाई आत्म परमात्म देवणहार ज्ञान, बोध अगाधा बण के पंडत, ब्रह्म विद्या पारब्रह्म जणाईआ।

७ अस्सू २०२० बिक्रमी ज़ोरा सिंघ दे गृह सद्दे वाला ज़िला फ़िरोजपुर

साचा नाम धुर श्लोक, धर्म दुआर दए वखाईआ। लेखा चुक्के हरख सोग, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। नाता तुट्टे लोक परलोक, दो जहान पन्ध मुकाईआ। माण गंवा के मुक्ती मोख, मेहरवान नज़र उठाईआ। लोड़ रहे ना कोई सोच, सोच समझ दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम दए पढ़ाईआ। हरि का नाम सतिगुर जाम, मस्त प्याला इक प्याइंदा। अन्तर आत्म दिसे इक्को राम, दूजा नूर ना कोए वखाइंदा। जन्म जन्म दा पूरा करे काम, पूरन इच्छया आप वखाइंदा। भाग लगाए नगर खेड़ा ग्राम, जीउ पिण्ड वेख वखाइंदा। कर प्रकाश आपणे भान, जोती जोत जोत जगाइंदा। साचा चरण धूढ़ अशनान, दुरमति मैल मैल धवाइंदा। घर नज़री आए गोपी काहन, इष्ट गुरदेव स्वामी ठाकर आपणा पड़दा लाहइंदा। बोध अगाध शब्द धुन नाद सुणाए बाणी, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोए हिलाइंदा। लहिणा देण चुकाए चार खाणी, ख़ालस आपणा मेल मिलाइंदा। सच सरोवर देवे अमृत पाणी, ठंडा जल धार मुख चुआइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाइंदा। सतिगुर नाउँ शब्द विचोला, दो जहानां होए सहाईआ। निरगुण सरगुण बण के तोला, नाम कंडे तोल तुलाईआ। आत्म परमात्म सच सुणाए बोला, सोहँ ढोला इक पढ़ाईआ। जन्म जन्म दा भार करे हौला, कूड़ी गठड़ी सीस ना कोए टिकाईआ। उलटा करे नाभ कौला, धार अमृत मुख चुआईआ। देवे वड्याई उपर धौला, धरनी धरत सोभा पाईआ । नूर वखाए इक्को अवल्ला, जोती जोत कर रुशनाईआ। रंग जणाए साँवल सँवला, सुन्दर मुख पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दए संदेसा पवण पवणा, नाम हुलारा इक लगाईआ। हरि का नाउँ सतिगुर मीत, प्रभ ठाकर इक सुणाईआ। शब्द अनादी

धुर दा गीत, गुर अवतार पीर पैगम्बर राग अलाईआ। घट स्वामी वसे चीत, चेतन आपणा भेव खुलाईआ। साचा चाढ़े रंग मजीठ, चोली कपड़ आप रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर नाम दए वड्याईआ। नाम अगम्म डूंग्घा सागर, गहर गम्भीर इक्को इक वखाइंदा। आप टिकाए काया गागर, पंज तत अन्दर डेरा सच कराइंदा। लख चुरासी विचों गुरमुख विरला बणे सौदागर, सौदा आपणे हट्ट घर घर विच वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक समझाइंदा। सतिगुर नाम शब्द स्वामी, सोभावन्त वड्डी वड्याईआ। निरगुण सरगुण अन्तरजामी अन्तर आत्म बूझ बुझाईआ। सचखण्ड दी साची बाणी, सति सतिवादी आप सुणाईआ। दो जहानां खेल महानी, महाबली वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा इक दृढ़ाईआ। शब्द गुरदेव पारब्रह्म, पतिपरमेश्वर खेल कराइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी साचा धर्म, धर्म आत्मा आप जणाइंदा। निहकर्मी रखे ना कोए कर्म, कर्म कांड नज़र कोए ना आइंदा। ज़ात पात ना कोए वरन, बरन वंड ना कोए वंडाइंदा। सच जणाए इक्को सरन, सरनगति घर साचे इक समझाइंदा। गुरमुख विरले सच दुआरे वड़न, घर मन्दिर इक्को नज़री आइंदा। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ शब्द इक्को पढ़न, दूजा राग ना कोए अलाइंदा। ना जीवण ना जीवत मरन, मरन जन्म दोहां तों पार कराइंदा। अन्तिम लै के जाए आपणी सरन, घर साचे सच बहाइंदा। नित नवित्त बिन अक्खां दर्शन करन, जोती नूर नूर रुशनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणा नाम बुझाइंदा। नाम सतिगुर शब्द बाणी, गुर गोझ ज्ञान दिवाईआ। अक्खर अक्खर जगत कहाणी, सिफ्ती सिफ्त समझाईआ। रसना जिह्वा बोले चारे खाणी, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। गुरमुख विरला पाए पद निरबाणी, जिस आपणा निरबाण पद समझाईआ। लै के जाए शाह सुल्तानी, शहिनशाह आपणा हुक्म मनाईआ। मन्दिर वखाए इक सुल्तानी, सूरज चन्द ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। नाम शब्द गीत गोबिन्द, सहिज सुख दाता इक्को इक समझाईआ। मेट मिटाए सगली चिन्द, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। ठाकर हो बणे बख्शिंद, सागर हो अमृत मेघ बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, इक अक्खर बूझ बुझाईआ। इक्को अक्खर इक्को घर, एकँकार इक जणाइंदा। इक्को पत्थर तोड़े गढ़, इक्को नाम चोट नगारे लाइंदा। इक्को मन्दिर इक्को दुआर वेखणा चढ़, इक महल्ल सोभा पाइंदा। इक्को नार इक्को कन्त लैणा वर, इक्को सीस हत्थ टिकाइंदा। इक्को सरन सरनाई जाणा पड़, इक्को चरण कँवल ध्यान जणाइंदा। इक्को पल्लू लैणा फड़, इक्को आपणे नाल गंढ पवाइंदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मन्त्र इक समझाइंदा। इक्को मन्त्र नाम आदि, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। इक्को रूप हँ ब्रह्माद, ब्रह्मांड करे रुशनाईआ। दोहां मिल के वज्जे नाद, घर सच खुशी वखाईआ। बिन परमात्म आत्म कोई ना आए स्वाद, रस रूप ना कोए वटाईआ। बिन आत्म परमात्म कोई करे ना राज, रयत्त रूप ना कोए वखाईआ। बिन परमात्म आत्म पूरा करे ना कोई काज, मेहर नज़र ना कोए उठाईआ। बिन आत्म परमात्म साजण कोई ना लए साज, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा नाम आपे आप जणाईआ। सोहँ हरि का नाउँ, आदि जुगादि इक रुशनाईआ। सोहँ हरि का गाउँ, घर वसे बेपरवाहीआ। सोहँ हरि का थाउँ, थान थनंतर दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, आदि पुरख अपरम्पर स्वामी शब्द गुरदेव सदा निहकामी, अनभव प्रकाश अन्तरजामी, अन्तर आत्म परमात्म इक्को घर समझाईआ।

✪ ७ अस्सू २०२० बिक्रमी सद्दे वाला ज़िला फिरोजपुर ✪

५१२ शब्द नाम सतिगुर किरपा, पारब्रह्म दए वड्याईआ। बाकी जीव कटदे बिपता, लख चुरासी गेड़ वखाईआ। बिन श्री भगवान जन्म जाए बिरथा, लेखा लग्गे कोई ना राईआ। गुरमुख जाणे भेव पिर का, प्रीती प्रीतम इक जणाईआ। मेल मिलाए हरि सतिगुर जन्म जन्म चिर का, विछड़े आपणे नाल जुड़ाईआ। विरला पड़दा लाहे घर थिर का, धुर दरबार दए वखाईआ। दीन मज़्हब कोई ना रहे फ़िरका, ज़ात पात डेरा ढाहीआ। दुरमति धो साफ़ कराए हिरदा, स्वच्छ सरूप आप समझाईआ। जन्म जन्म जीव भाउँदा रहे फिरदा, बिन सतिगुर पूरे पन्ध ना कोए मुकाईआ। आवण जावण गेड़ा रहे गिढ़दा, हरि करता आप गिढ़ाईआ। गुंचा फुल्ल रहे खिड़दा, पंखड़ी पत डाली महकाईआ। बिन निरँकार लेखा ना मुकाए कोई सिर धड़ दा, पंज तत चोली कोए ना पाईआ। वेखणहारा खेल चोटी जड़्दा, मध आपणी धार वहाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी साहिब सतिगुर अग्गे कोई ना अड़दा, जो अड़या भन्न वखाईआ। गुरमुख विरला साचे पौड़े चढ़दा, जिस आपणा भेव चुकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा ढोला इक्को नाम पढ़दा, दूजा अक्खर ना कोए सुणाईआ। रूप नजरी आए हरी हरि हरि दा, हरि मन्दिर इक्को सोभा पाईआ। पड़दा चुक्के आपणे घर दा, घर घर विच होए रुशनाईआ। जिस मन कोलों सद रिहा डरदा, सो मन डेरा बहे ढाहीआ। दोए जोड़ निमख निमख वास्ता करदा, माण अभिमाण दए मिटाईआ। सतिगुर सरनाई सच दुआरे पड़दा, साचे घर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मन्त्र इक्को ५१२

इक समझाईआ। नाम शब्द कहे मोहे हरि की ओट, आसा इक्को इक रखाईआ। जुग चौकड़ी लाए चोट, सच नगारा नौबत इक वजाईआ। लोकमात भेजे नाल शौक, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। भगत सन्त कोई ना जाए औंत, साचा बन्धन दए बंधाईआ। गुरमुख नारी रंडी रहे ना बिना खौंत, गुर शब्द लए प्रनाईआ। गुरसिख गुरुदुआर आपे जाए पहुंच, घर मन्दिर इक्को नज़री आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पीर पैगम्बर दस्स के गए धुर दी रौंस, रहबर बण के राह वखाईआ। पीर पैगम्बर कहिन्दे गए परवरदिगार साचा गौंस, कुतब वेखे थाउँ थाईंआ। दो जहान मन्नण जिस दी धौंस, भय भउ सर्ब जणाईआ। सो साहिब सर्ब स्वामी इक्को दिसे खौंत, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा नाम इक दृढ़ाईआ। नाम शब्द कहे प्रभ तेरी सरन, तुध बिन सार कोए ना पाईआ। बिन तेरी किरपा अन्दर कोई ना देवे वड़न, बाहरों कुण्डे सारे बैठे लाईआ। मेरे कोलों कलयुग जीव डरन, दूर दुराडे नट्ठण वाहो दाहीआ। कूड़ी क्रिया ढोले पढ़न, तेरा नाउँ ना कोए ध्याईआ। माया ममता अग्नी सड़न, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। नेत्र खोल्ले ना कोई हरन फरन, दोवें अक्खां वेखण जगत लोकाईआ। सतिगुर मिले ना सच्ची सरन, सोच समझ किसे ना आईआ। आपणे पौड़े मूल ना चढ़न, गुरदर मन्दिर मस्जिद लभ्भण थाउँ थाईंआ। मन वासना सारे अड़न, मनसा पूर ना कोए कराईआ। कच्चे बिरहों अन्तिम झड़न, फल नज़र कोए ना आईआ। गेड़ा बणया जन्म मरन, लख चुरासी भौंण चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। नाम शब्द कहे प्रभ सच स्वामी, सतिगुर तेरी इक सरनाईआ। तेरी सिफ्त अगम्मी बाणी, साडा नाउँ तेरी वड्याईआ। तेरा हुक्म अकथ कहाणी, हउँ चाकर सेवक सेव कमाईआ। तेरा खेल सदा लासानी, लाशरीक नज़र ना आईआ। तोहे तौफ़ीक इक दो जहानी, निरगुण सरगुण आपणी धार चलाईआ। कलयुग अन्तिम नाम शब्द कहे सानूं होई हैरानी, हरि जू तेरा भेव कोए ना आईआ। चारों कुण्ट घर घर वड़ी शैतानी, शरअ शरीअत करे लड़ाईआ। भरमे भुल्ले वड विद्वानी, ज्ञानी ध्यानी ध्यान ना कोए लगाईआ। साचा मिले ना कोए अशनानी, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। रसना जिह्वा पढ़दे अक्खर बाणी, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। भरमे भुली चारे खाणी, चारों कुण्ट रही कुरलाईआ। सुरत सवाणी बणी ना साची राणी, नंद नज़र कोए ना आईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ फिरे बण अञ्याणी, बाली बुध समझ कोए ना पाईआ। अठसठ तीर्थ लभ्भदी फिरे ठंडा पाणी, बिन सतिगुर पूरे अमृत जाम ना कोए प्याईआ। किरपा कर शाह सुल्तानी, शहिनशाह तेरी इक सरनाईआ। गुरमुखां गुरसिखां साची दस्स नाम निशानी, निशाना इक्को इक लगाईआ। कूड़ी

भुल्ले जगत कहाणी, तेरा नाम इक ध्याईआ। चरण कँवल करन ध्यानी, नेत्र नैण नैण शरमाईआ। बख्श दर इक्को पद निरबाणी, दूजी मंज़ल रहिण कोए ना पाईआ। सृष्ट सबाई दिसे फ़ानी, अन्त रहिण कोए ना पाईआ। तेरा नूर तेरी जोत नुरानी, तेरी अंस तेरा बंस, भगत भगवान सदा अख्वाईआ। साचे सन्तां दर साचे दे माणी, सीस जगदीश हथ्थ टिकाईआ। गुरमुखां दस्स सच कहाणी, भरम भुलेखा दे गंवाईआ। गुरसिख जाइण तैंथों कुरबानी, मन वासना भेंट चढ़ाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सच प्रीत इक लगानी, लग्गी प्रीती तोड़ निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा आपणा वर, वर सच्चा नाम वरताईआ। शब्द कहे मैं दस्सां तेरा नाम, नाम तेरा सति वड्याईआ। सति कहे मैं करां सलाम, सीस जगदीश झुकाईआ। जगदीश कहे मैं तेरा काम, बण करता कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी देवे इक्को वर, आत्म परमात्म परमात्म आत्म आदि जुगादी दो जहानां खेल, निरगुण निरगुण अन्तिम मेल, दो जहानां सज्जण सुहेल, सोहँ रूप सति सरूप महिमा अनूप वसे चार कूट, नाता तुटे जूठ झूठ, सच सुच इक्को इक हरि का नाम जणाईआ।

✪ ७ अस्सू २०२० बिक्रमी हाकम सिँघ दे गृह
भाई की डरोली ज़िला फिरोज़ पुर ✪

शाह पातशाह सच सुल्तान, शहिनशाह वड्डी वड्याईआ। तख्त निवासी नौजवान, बलधारी बेपरवाहीआ। सचखण्ड दुआर खेल महान, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। हरि पुरख निरँजण बण प्रधान, एकँकार हुक्म जणाईआ। आदि निरँजण जोत महान, जोती जाता पुरख बिधाता करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता देवणहारा दान, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। श्री भगवान हुक्मरान, सच संदेसा इक समझाईआ। पारब्रह्म प्रभ वेखे मार ध्यान, निरगुण निरगुण आपणी अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। साचा खेल करे भगवान, भगवन आपणी दया कमाइंदा। सचखण्ड दवारा सच मकान, सो साहिब आप सुहाइंदा। दीवा बाती कमलापाती इक जगाए महान, मेहरवान मेहर नज़र उठाइंदा। भूपत भूप बण राज राजान, शाह पातशाह आपणी कार कमाइंदा। धुर संदेसा सुणो फ़रमान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म हरि निरँकार, निरगुण दाता आप जणाईआ। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, धुर फ़रमाना इक समझाईआ। विष्न

ब्रह्मा शिव रहिणा ख़बरदार, नैतर नैण अक्ख खुल्हाईआ। त्रैगुण माया पंज तत नेत्र खोल्ह उग्घाड़, सो साहिब पड़दा देणा खुल्हाईआ। गुर अवतार आउणा दर दरबार, दर दरवाजा रिहा जणाईआ। पीर पैगम्बर सजदा करन परवरदिगार, सीस जगदीश इक समझाईआ। भगत भगवान लए उठाल, जागरत जोत इक जगाईआ। सन्त सज्जण मेले नाल, गुर चेले रंग रंगाईआ। गुरमुख खोल्हे बंद कवाड़, पड़दा उहला आप चुकाईआ। गुरसिख करे प्रकाश बहत्तर नाड़, अज्ञान अन्धेर नज़र कोए ना आईआ। लख चुरासी जीव जंत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताईआ। साचा हुक्म देवे भगवान, भगवन आपणी दया कमाइंदा। सचखण्ड निवासी हो मेहरवान, थिर घर शब्दी सुत उठाइंदा। उठ दुलारे नौजवान, तेरी नौबत नाम वजाइंदा। दो जहानां मार ध्यान, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड तेरा राह तकाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव बाल अञ्याण, सिख्या तेरी वड वडियाइंदा। गुर अवतार कर कल्याण, पीर पैग़म्बर राह जणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी देंदा रिहा पैग़ाम, नव नौ चार हुक्म वरताइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी मात निशान, अक्खर अक्खर बन्धन पाइंदा। निष्अक्खर सके ना कोए पहचान, लेखा जाणे श्री भगवान, भगवन आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दरगाह साची सोभा पाइंदा। दरगाह साची परवरदिगार, नूर नुराना नूर इलाहीआ। करे खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर वड वड्याईआ। साचे तख्त बैठ आप करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। हुक्म देवे एका वार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत दीप चौदां लोक वेखे वारो वार, चौदां तबकां कुण्डा लाहीआ। लख चुरासी जीव जंत नेत्र रोवण ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोए धराईआ। हरि का शब्द सृष्ट सबाई गई विसार, गुर मन्त्र पढ़े ना कोए लोकाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द करे पुकार, परमात्म आत्म मेल ना कोए मिलाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर गए हार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सेव कमाईआ। अन्तिम दोए जोड़ मंगदे रहे बण भिखार, पुरख अकाल अग्गे झोली डाहीआ। तूं दाता दानी वड वड्डा सिरजणहार, बेअन्त तेरी वड्याईआ। हउँ बालक बाल अञ्याण, तेरी समझ कोए ना पाईआ। तेरा नाम शब्द सुनेहड़ा दो जहान, इक्को धार वखाईआ। कागद कलम लिख लिख थक्के तेरा अन्त ना पारावार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा आप जणाईआ। साचा लेखा दस्से आप करतार, हरि करता आप जणाईआ। सच दुआरे बैठ सच्ची सरकार, सति सतिवादी हुक्म वरताईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी वेखणहार, निरगुण वड्डा वड वड्याईआ। सरगुण देवणहार शब्द आधार, नाम निधान झोली पाईआ। सेवा ला गुरू अवतार, पीर पैगम्बर हुक्म मनाईआ । जन भगतां

जुग जुग पैज स्वार, सन्तन इक्को नाम समझाईआ। गुरमुख रंग चाढ़ अपार, गुरसिख पड़दा दूई उठाईआ। खेले खेल अगम्म अपार, ख़ालक ख़लक विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबार इक सुहाईआ। सच दरबार ला भगवन्त, भगवन आपणी दया कमाईआ। कलयुग वेखो सारे अन्त, चार कुण्ट अन्धेरा छाईआ। घर घर गढ़ हउमे हंगत, कूड़ी क्रिया वज्जे वधाईआ। कोई ना बणे साची संगत, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। भेव अभेदा खोल्हे कोई ना पंडत, चौदां विद्या होई हल्काईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। धुर संदेसा गुर अवतार, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बीते अन्तिम वार, अन्तष्करन सब दा वेख वखाईआ। नेत्र वेखो करो दीदार, जलवागर ज़ाहर ज़हूर वेस वटाईआ। बेऐब खुदाई परवरदिगार, हक़ मुकाम इक्को इक समझाईआ। लाशरीक सांझा यार, सच तौफ़ीक इक करतार, दो जहानां पड़दा रिहा उठाईआ। एथे ओथे दो जहानां मददगार, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जुग चौकड़ी जिस दी करदे गए पुकार, उच्ची कूक वाज मार, ढोला सिफ्त सालाही नाम गाईआ। सो करता कुदरत कादर वेखणहार, निरगुण निरवैर पुरख अकाल, जोती जाता पुरख बिधाता अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह आपणा वेस वटाईआ। सति सतिवादी बणे सच मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। मार्ग इक्को देवे ला, रहबर इक्को इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबार इक समझाईआ। सच दरबार वेखो हरि, नर हरि नरायण आप लगाइंदा। जिस दा खुल्ल्हा रहे दर, दरवाजा बंद ना कोए कराइंदा। निरभउ चुकाए भय डर, भ्यानक रूप सर्ब गवाइंदा। भगत भगवान लए फड़, अन्तर अन्तर मेल मिलाइंदा। साचे सन्तां मन्दिर जाए चढ़, साचा पौड़ा इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप जणाइंदा। भेव अभेदा खोल्हे मात, हरि करता वड वड्याईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होया पुरख अबिनाश, निरगुण नर हरि आपणा वेस धराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बणाए इक जमात, साची पट्टी इक समझाईआ। पूरब लहिणा चार युग दा वेखे आप हालात, पर्दा सब दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि पुरख अकाल, अक्ल-कल-धारी वड वड्याईआ। जुग जुग होए सदा दयाल, नित नवित्त आपणी सेव कमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर साचे लाल, सुत दुलारे मात घलाईआ। शब्दी शब्द बण दलाल, सच दलाली इक वखाईआ। हकीकत वेखे हक़ हलाल, लाशरीक पड़दा लाहीआ। भगत भगवन्त लए भाल, साचे सन्त सन्त जगाईआ। सुरत सवाणी शब्दी कन्त मिले आण, आवण जावण गेड़ा दए चुकाईआ। आपे सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद दाता

५१७ १५

बेपरवाहीआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत दीप धर्म दुआर वखाए इक्को सच्ची धर्मसाल, जिस घर वज्जे नाम वधाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर नेत्र नैणां नाल करन वसाल, वसल आपणा इक्को इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दरबार इक्को इक सुहाईआ। सच दरबार सोभावन्त, सचखण्ड मिले वड्याईआ। करे खेल प्रभ जुगा जुगन्त, जुग जुग हुक्म वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे नाम महिमा अगणत, सिफ्ती सिफ्त राग सुणाईआ। गुर अवतार धार मंत, मन्त्र इक्को इक दृढ़ाईआ। पावे सार जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज आप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। लेखा जाणे थान थनंतर, दो जहानां खोज खुजाइंदा। आदि जुगादि बणाए बणतर, घाड़त घड़त वेख वखाइंदा। नाम सुणाए इक्को मन्त्र, आत्म परमात्म आप पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। साची सिख्या सतिगुर सति, सति सतिवादी आप जणाईआ। कलयुग अन्तिम छड्डो मनमति, मनमति अन्त रहिण ना पाईआ। चार वरन बुझाए इक्को तत्त, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश समझाईआ। निरगुण जोत घर घर कर प्रगट, अज्ञान अन्धेर दए मिटाईआ। काया अन्दर खोल्ह हट्ट, साचा वणज नाम विकाईआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। नज़री आए पुरख समरथ, वड दाता बेपरवाहीआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी चलाउँदा रिहा रथ, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बण रथवाहीआ। सो मार्ग इक्को देवे दस्स, गुर अवतार पीर पैगम्बर नाल रलाईआ। पिछला लेखा होवे बस, बसते सब दे बन्न्ह वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार आप जणाईआ। धुर दी धार दस्से आप, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। आदि जुगादी इक्को जाप, दो जहानां सर्ब समझाइंदा। पिता पुरख माई बाप, पुरख अकाल इक्को नज़री आइंदा। निरगुण सरगुण देवे दात, दाता दानी झोली आप भराइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर अन्तिम सारे गए आख, उच्ची कूक ढोला राग सुणाइंदा। कलयुग अन्तिम प्रगट होवे परम पुरख आप समराथ, सर्ब कलधारी वेस वटाइंदा। होए सहाई दीनां नाथ, अनाथ ग़रीब निमाणयां गले लगाईआ। नानक गोबिन्द पूरा करे भविक्ख्त वाक, वाक्य वेखे चाईं चाईंआ। गोबिन्द बन्न्हे साचा नात, नाता बिधाता वेख वखाईआ। लेखा चुकाए ज़ात पात, वरन गोत रहिण कोए ना पाईआ। साचा मन्त्र पूजा पाठ, शब्द गुर इष्ट देव स्वामी इक्को इक नज़री आईआ। लेखा जाणे तीर्थ ताट, सर सरोवर अमृत आत्म सच अशनान कराईआ। कूड़ी क्रिया माया ममता हउमे हंगता करे घात, नाम खण्डा इक चमकाईआ। योद्धा सूर महाबली उतरे आपणे घाट, पतण नज़र किसे ना आईआ। गुरमुखां गुरसिखां पुछे आपे वात, वातावरन आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, सृष्ट सबाई दए जणाईआ। सृष्ट सबाई सांझा यार, सो पुरख निरँजण इक अख्वाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण खेल अपार, हरि करता कार कमाइंदा। शब्दी योद्धा सूरबीर बलकार, सतिगुर इक्को इक फेरा पाइंदा। दूजा ना कोए मीत मुरार, संगी साथी संग ना कोए निभाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लो आकाश पाताल ज़िमीं असमान पड़दा देवे पाड़, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ समुंद सागर फोल फोलाइंदा। लेखा जाणे तेई अवतार, भेव अभेद आप खुलाइंदा। भगत अठारां नेत्र नैणां दए वखाल, शब्द इशारे नाल जणाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद जलवा वखाए आप जलाल, ज़ाहर ज़हूर बेनज़ीर लाशरीक सच तस्वीर आप प्रगटाइंदा। नानक गोबिन्द मेला दीन दयाल, पुरख अकाल इक्को मन्दिर सच सुहाइंदा। जिस गृह नेड़ ना आए काल महाकाल, त्रैगुण तुटे कूड़ जंजाल, पंज तत मार्ग दए सिखाल, आत्म परमात्म बोध अगाध इक्को नाम जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआर सर्ब बुलाइंदा। सच दुआर सच निरँकार, सच हुक्म सुणाईआ। विष्नूं रहिणा ख़बरदार, ख़बर नाम इक जणाईआ। ब्रह्मे उठ नैण उग्घाड़, शंकर भोला भाउ गंवाईआ। त्रैगुण माया पैणी मार, पंज तत नठ्ठे वाहो दाहीआ। ब्रह्मे सुत हो उज्यार, धुर दी धार आप जणाईआ। यगै पुरुष हो बेदार, बराह आपणा पड़दा लाहीआ। हाव ग़रीव खेल वेख करतार, नर नरायण रिहा जणाईआ। कपलमुन हो हुशियार, दत्ता त्रै समझ समझाईआ। रिखप देव वेख आर पार, पिरथू भज्जणा वाहो दाहीआ। मत्तस तेरी पावे सार, कछप हौला भार कराईआ। धनंतर तेरा लहिणा दए नवार, मोहन मोहणी रूप वटाईआ। बावन वेख सच्चा दरबार, बलधारी आप लगाईआ। हँसा मोती चोग चुग अपार, सोहँ सति सरूप जणाईआ। नर सिँघ आपणा पड़दा वेख उतार, पारब्रह्म प्रभ भेव अभेद खुल्हाईआ। नर नरायण ख़बरदार, बेख़बर ख़बर सुणाईआ। हरी हरि कर विचार, हरि करता वेखणहारा थाउँ थाईंआ। ब्रह्मण ब्रह्म भेव चुकाए आप निरँकार, पारस परस नज़र ना आईआ। राम रामे दसरथ बेटे अजुध्या नगरी पुरख अबिनाशी, धुर दी धार इक्को इक जणाईआ। वेद व्यासा वेख तमाशा पुराण अठारां तेरा रिहा पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। काहन घनईया वेख नईया साचा सईया बंसुरी इक्को नाम निधान रिहा वजाईआ। मूसा वेख नैण उग्घाड़, जलवागर करे प्यार, कोहतूर नूर ज़हूर लेखा रिहा चुकाईआ। मूसे सजदा कर परवरदिगार, ईसा होवे ख़बरदार, पिता पूत करे प्यार, बरखुरदार तेरा लहिणा झोली पाईआ। मुहम्मद मंगे मदद, मदद करे मददगार, प्रगट होए वड अमाम सांझा यार, सही सलामत साख्यात आपणा खेल वखाईआ। निरगुण नानक सचखण्ड वसे एकँकार, जोती जोत जगे अपार, मिल्या मेल पुरख अकाल, दूजा नज़र कोए ना आईआ। गोबिन्द सूरा सुत दुलार, मिल्या मेल सच्ची सरकार, योद्धा सूर बली

बलकार, नाम खण्डा तेज कटार, चण्ड प्रचण्ड इक चमकाईआ। शब्दी रूप अगम्म अपार, दो जहानां पावे सार, ब्रह्मण्ड खण्ड करे ख़बरदार, जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज रिहा समाईआ। सारे इकट्ठे आओ सच्चे दरबार, सो साहिब पुरख अकाल आप जणाईआ। लेखा सब दा चुक्के इक्को वार, बाकी कोई रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। सारे कहिण असीं आवांगे। प्रभ तेरा दर्शन पावांगे। सचखण्ड दुआर तेरे चरणी सीस झुकावांगे। दोए जोड़ वास्ता पावांगे। तेरी प्रेम प्रीत दी बज्झी डोर, पतंग तेरे नाम उडावांगे। लोकमात आए जोड़, अग्गा पिच्छा तेरी झोली पावांगे। तूं वेख कर के गौर, गहर गम्भीर तेरे सदा अख्वावांगे। नाता रिहा ना पंज तत सरीर, शरीकत विच कदे ना आवांगे। तेरी धारों उपजे गुरू अवतार पैगम्बर पीर, पारब्रह्म तेरा बंस इक सुहावांगे। तूं आपे पाए शरअ ज़ंजीर, अन्तिम तेरे कोलों कटावांगे। नानक खिच के आया लकीर, चार वरन लेखा सर्ब मुकावांगे। गोबिन्द बण के आया फ़कीर, पिता पूत मात संग ना कोई ल्यावांगे। अन्तिम तेरा मेला मिले अख़ीर, दूजी ओट ना कोई रखावांगे। कलयुग सब दी मिटे पीड़, कूड़ी क्रिया शौह दरिया रुढ़ावांगे। तेरे नाल मिल के सब दी बदल जाए तकदीर, तदबीर सब नूं इक समझावांगे। जिस दी नज़र ना आए तस्वीर, लाशरीक इक्को नूर जणावांगे। शाह पातशाह बेनज़ीर, तख्त निवासी राजन राज इक वडयावांगे। जिस दा लेखा शाह हकीर, ऊँच नीच ना कोए रखावांगे। तिस साहिब पुरख अकाल दी इक्को नाम सच हदीस, कलमा इक्को इक वखावांगे। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग हुक्मे अन्दर पीसण ल्या पीस, बण चाकर याचक सेवा सेव वखावांगे। तेरा खेल बीस बीस, बेपरवाह इक्को दर जणावांगे। श्री भगवान सच स्वामी सिर छत्र झुल्ले सीस, राज राजानां ख़ाक मिलावांगे। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग तेरी रखदे गए उडीक, नित तेरा राह तकावांगे। तुध बिन दूजी कोई ना रहे प्रीत, प्रीतम इक्को इक मनावांगे। तेरे मिलयां होए ठांडे सीत, अग्नी तत सर्ब बुझावांगे। सतिजुग तेरे नाम दी चले रीत, तेरा नाउँ इक्को इक ध्यावांगे। हर घट वसें ठाकर ठाकरदुआरे मन्दिर मसीत, शिवदुआले मट्ठ तेरा नाद सुणावांगे। तेरा खेल सदा अनडीठ, नेत्र पेख खुशी मनावांगे। सदी चौधवी जाए बीत, बीती कहाणी ना कोए सुणावांगे। अन्तिम वेला सद वसीए तेरे नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध मुकावांगे। तेरे दर तों मंगीए भीख, भिच्छया इक्को झोली नाम भरावांगे। तेरी कोई ना जाणे रीत, रीतीवान तेरे हुक्मे अन्दर सीस निवावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगावांगे। श्री भगवान दया कमाएगा। पारब्रह्म प्रभ वेख वखाएगा। अबिनाशी करता कर्म कमाएगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर मेल मिलाएगा। सच सुअम्बर इक रचाएगा। कूड़ा अडम्बर जगत मिटाएगा। सर्ब कला

बण भरतम्बर, भरम भुलेखा दूर कराएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मार्ग इक्को इक लगाएगा। तेरा मार्ग इक प्रनावांगे। दोए जोड़ सीस निवावांगे। पुरख अकाल इक मनावांगे। धर्म दुआरा इक समझावांगे। नाम ढोला इक्को इक गावांगे। शब्द विचोला मात बणावांगे। पंज तत पड़दा उहला अन्त चुकावांगे। लख चुरासी प्या रौला, भरम भुलेखा सर्ब मिटावांगे। गोबिन्द कर के आया कौला, कीता कौल तोड़ निभावांगे। धरनी होवे भार हौला, धरत धवल साचा संग निभावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा इक्को राग अलावांगे। प्रभ इक्को राग अलाएगा। कन्त सुहाग मेल मिलाएगा। साचे सन्त आप जगाएगा। काया चोली रंग बसन्त चढ़ाएगा। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म भेव चुकाएगा। चार वरन अठारां बरन बणाए इक्को संगत, साचा संग आप रखाएगा। दूजे दर कोई ना जाए मंगत, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश सब दा दाता इक्को नज़री आएगा। जीव जंत लख चुरासी फंद कटाएगा। लहिणा देणा चुक्के जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज आपणे लेखे पाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग इक्को नाम दवावेगा। सतिजुग दिवाए इक्को नाम, एकँकार दया कमाईआ। सर्ब जीआं घट वसे राम, राम रमईया बेपरवाहीआ। नज़री आए साचा शाम, घनईया बंसुरी सच वजाईआ। सच पैगम्बर दए पैग़ाम, कलमा कायनात पढ़ाईआ। साचा इष्ट इक ईमान, इस्म आअज़म इक दरसाईआ। मन्त्र सच्चा सति नाम, नाम सति सति जणाईआ। फ़तह डंका शब्द दो जहान, जुग चौकड़ी आप वजाईआ। गोबिन्द गुर करे परवान, परवाना सब नूं दए वखाईआ। योद्धा सूरबीर बलवान, महाबली वेख वखाईआ। कूड़ी क्रिया मेट निशान, सच सुच्च करे रुशनाईआ। सतिजुग बणे इक विधान, साचा मार्ग आपे लाईआ। पंचम मीता बण प्रधान, पंचम देवे माण वड्याईआ। पंचे सोहण इक दर दरबान, दरगाह साची लोकमात खुशी वखाईआ। करे खेल आप भगवान, भगवन आपणी कार कमाईआ। दो जहान विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीस सुरप्त इन्द गण गंधर्ब सब नूं मन्नणी पए आण, सीस सके ना कोए उठाईआ। लख चुरासी जीव जंत सारे करन परवान, बेवफ़ा रूप ना कोए वटाईआ। परम पुरख पतिपरमेश्वर चरण कँवल लग्गे सर्ब ध्यान, ध्यानी इक्को ध्यान जणाईआ। आत्म परमात्म देवे नाम ज्ञान, शब्द निधान दए समझाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सारे मन्नण जीव जहान, मुख सके ना कोए भवाईआ। सतिजुग साचे चले सति दुकान, कूड़ा हट्ट रहिण ना पाईआ। भगत भगवन्त वेखे आण, निरगुण वक्खरी धार चलाईआ। साचे सन्तां देवे दान, दर्दी दर्दीआं दर्द वंडाईआ। गुरमुखां वखाए धर्म निशान, काया अन्दर आप उठाईआ। गुरसिखां धूढ़ी चरण कराए अशनान, दुरमति मैल धवाईआ। चार वरनां इक वखाए मकान, सच दुआरा आप प्रगटाईआ। छप्पर

छन्न ना कोई सके पहचान, चार दीवार नज़र कोए ना आईआ। सूरज चन्द ना कोए भान, चन्द चांदना ना कोए चमकाईआ। मण्डल मण्डप ना कोए निशान, खेले खेल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, साचा मन्त्र इक सुणाईआ। साचा मन्त्र नाम गोबिन्द, गीत इक्को इक समझाइंदा। अन्तर बाहर मिटे चिन्द, चिन्ता रोग ना कोए वखाइंदा। दाता दानी गुणी गहिंद, गहर गम्भीर दया कमाइंदा। जन भगत बणाए नादी बिंद, सुत दुलारे आप उठाइंदा। घर मृदंग वजाए किंग, धुन आत्मक राग सुणाइंदा। अमृत धार वहाए सिन्ध, कूड़ी क्रिया आप रुढ़ाइंदा। वासा करे आत्म निज, निज आत्म वेख वखाइंदा। आपणी मिलण दी दस्से बिध, मकतब इक्को इक खुल्हाइंदा। डेरा ढाहे अठारां सिध नौ निध, नौ अठारां मूल चुकाइंदा। भेव चुकाए काया पिण्ड जीउ इंड, ब्रह्मण्ड वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा शब्द ज्ञान, चार वरनां इक निशान, सच दुआरे आप जणाइंदा। सच दुआरा सतिगुर घर, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस गृह मिले इक्को जिहा वर, वंडण वंड ना कोए वंडाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दर दरवेश खड़े दर, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मेहरवान प्रभ किरपा कर, कृपानिध तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक सुणाईआ। कलयुग सुण बात अख़ीर, सो साहिब आप जणाईआ। तेरा लेखा लिख गए गुर अवतार पीर, पैगम्बर शहादत नाल रलाईआ। कलयुग अन्त तुटे शरअ ज़ंजीर, शरीअत मात रहिण ना पाईआ। हउमे हंगता निकले पीड़, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। अठसठ तीर्थ वरोले नीर, सरोवर इक्को नज़री आईआ। भगत कोई ना रहे दिलगीर, भगवन मेले चाईं चाईंआ। आपणे नक्क नाल कढु लकीर, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। प्रभ बदल देवे तकदीर, तदबीर आपणी दए समझाईआ। लेखा चुक्के हस्त कीड़, कीट कीटां वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा रिहा जणाईआ। कलयुग रोवे मारे धाह, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। दरोही दरोही मेरे खुदा, खुदी मेरी ना मेरी मिटाईआ। उठ वेख मैं तेरे तेरे नालों कीते जुदा, आपणी पट्टी इक पढ़ाईआ। गुर का शब्द सारे गए भुला, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। काम क्रोध लेभ मोह हँकार मनमती दिती चला, चलाएवान सर्ब लोकाईआ। धीआं भैणां गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मडु रहे तका, नेत्र नैण नैण उठाईआ। मुल्लां शेख़ मुसायक पंडत पांधे होए बेवफ़ा, तेरा संगी नज़र कोई ना आईआ। रसना जिह्वा पढ़ पढ़ तैनूं बाहरों रहे गा, अन्तर धुन तेरा नाद ना कोए वजाईआ। किरपा कर बेपरवाह, मेरा वेला अन्त मेरे नाल रखाईआ। नौ खण्ड पृथमी मैं भज्जां वाहो दाह, दिवस रैण सेव कमाईआ। ज्ञानी ध्यानी वड विद्वानी धर्म कर्म तों दित्ते डुला, धीरज

५२१
१५

जत सति सन्तोख रहिण किसे ना पाईआ। उठ वेख मुहम्मद मेरा बणया गवाह, जिस शरीअत मेरे नाल रलाईआ। पुरख अकाल कहे तैनूं देवां सच सुणा, सच सच दृढ़ाईआ। तेरी गुर गोबिन्द जड़ दिती उखड़ा, ना कोई सके मात लगाईआ। चार लख बत्ती हज़ार दा लेखा रहे कोई ना, चन्द पूरब लेखा रिहा मुकाईआ। तेई अवतार बणे गवाह, भज्जे आवण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक सुणाईआ। कलयुग रोवे नेत्र नीर, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। मेरी प्रभू वेख अन्त अख़ीर, आख़र तेरा हुक्म सीस टिकाईआ। लख चुरासी पावां भीड़, इक इशारा दयां जणाईआ। शाह सुल्तानां करां फ़कीर, राज राजानां दर दर घर घर भिख्या जगत मंगाईआ। चारों कुण्ट पए वहीर, भज्जण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, अन्त तेरी ओट रखाईआ। कलयुग सुण छोटे पुत्त, चौथे युग दयां समझाईआ। तेरी वेखां अन्तिम रुत्त, रुत्त रुतड़ी जगत महकाईआ। प्रगट हो अबिनाशी अचुत, तेरी सार आपे पाईआ। निरगुण धारों निरवैर पुरख उठ, जोती जामा वेस वटाईआ। शब्दी नाल रला मात सुत, गोबिन्द नज़र किसे ना आईआ। हुण गोबिन्द कोलों पुच्छ, तेरा लेखा किवें मुकाईआ। जे तेरे उते जावे तुठ, रहमत इक्को इक दरसाईआ। तेरी बची रहिण देवे भगतां वाली गुट्ठ, दूजा नज़र कोई ना आईआ। जिन्हां अमृत जाम पीता घुट्ट, तिन्हां देवे माण वड्याईआ। निरगुण हो के सरगुण वल बदले आपणा रुख, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। गुरसिख गुरमुख सन्त सुहेले गुर गोबिन्द गोदी लए चुक्क, बंस सरबंस आपणा लए सुहाईआ। मात गर्भ नाता तोड़े उलटा रुख़, कूड़ी क्रिया फंद कटाईआ। अग्गे हो के वेखे तैनूं ढुक, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। तूं सीस नवाउणा झुक, कलयुग पैणा इक सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक समझाईआ। कलयुग कूड़ा करे मंज़ूर, प्रभ तेरी वड वड्याईआ। साची सिख्या दए हज़ूर, हज़रत इक पढ़ाईआ। गोबिन्द खेड़े दे केहड़े नेड़े दूर, दूर दुराडा पन्ध कवण मुकाईआ। किरपा कर सर्ब कला भरपूर, बेपरवाह रहमत इक कमाईआ। पुरख अकाल कहे गोबिन्द तैनूं मिले ज़रूर, तेरी ज़रूरत पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर दए जणाईआ। साचा मन्दिर गोबिन्द खेड़ा, पुरख अकाल आप जणाईआ। जिस दा खुल्ल्हा रहे वेहड़ा, भेव कोए ना पाईआ। ओथे शब्दी गुर दा वसे डेरा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जुग चौकड़ी होवे हक़ नबेड़ा, हकीकत सब दी वेख वखाईआ। कलयुग जा के वेख सम्बल खेड़ा, जिस घर वसे सच्चा माहीआ। मेहरवान करे आपणी मेहरा, मेहर नज़र इक उठाईआ। तेरा चाहे तारे चाहे डोबे बेड़ा, उस दे हथ्थ वडी वड्याईआ। अन्तिम वेला आया नेड़ा, मंज़ल मंज़ल बैठा पन्ध मुकाईआ। जिस

दुआरे गुर अवतारां पीर पैगम्बरां साचे भगतां पाया घेरा, चारों कुण्ट बहि बहि खुशी मनाईआ। रसना बोलण साचा तोल तोलण इक्को कहिण तूं मेरा मैं तेरा, दूजा नाम ना कोए जणाईआ। सो साहिब सतिगुर पुरख अकाल दीन दयाल गोबिन्द नाल मिल के चौथे युग पाया फेरा, हेरा फेरी सब दी रिहा मुकाईआ। इक्को वार देवे आपणा गेड़ा, लड्ड गेड़े जगत लोकाईआ। मनमुख गुरमुख दोवें करे नखेड़ा, साची धार विच प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक सिखाईआ। साची सिख्या सुण करतार, कलयुग लए अन्त अंगड़ाईआ। कवण मिले मेरा गोबिन्द यार, यारी यार नाल निभाईआ। जिस सत्थर हंढ्ाया नाल प्यार, सूलां सेज सोभा पाईआ। सो सतिगुर कदे ना होए दुखियां विच दुख्यार, दुःख दर्दीआं दर्द लए वंडाईआ। मैं दर जा के करां निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। मैंनूं बख्श बख्शणहार, बख्शिश तेरे हथ्थ फड़ाईआ। तूं साहिब अभुल्ल गुरू करतार, मैं भुलणहार तेरा सेवक नज़री आईआ। गुण अवगुण ना कोए विचार, अवगुण भरी मेरी लोकाईआ। औह वेख अल्ला राणी नेत्र नैणां नीर वहाए अगम्मी धार, खुलड़े केस भज्जी फिरे वाहो दाहीआ। अल्ला मीआं मिल्या ना साचा यार, साचा खौंत नज़र कोए ना आईआ। लाल मैंहदी कर बैठी श्रृंगार, हथ्थीं रंग इक चढ़ाईआ। चौदां तबकां फिर आई मुटयार, जोबन घर घर रही वखाईआ। प्रीतम मिले ना एकँकार, परवरदिगार देवे ना कोए सरनाईआ। बिन गोबिन्द तेरा विचोला बणे ना कोई संसार, साचा मेल ना कोए मिलाईआ। तूं अन्तिम ढोला गाया सोहँ रूप आप करतार, तीर भथ्था कमान शस्त्र वस्त्र अस्त्र इक्को इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करे करतार, हरि करता वड वड्याईआ। सब दा लहिणा देणा पूरब कर्ज़ रिहा उतार, मकरूज आपणा हौला भार कराईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण हो के दस्से आत्म परमात्म सच प्यार, ब्रह्म पारब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। कूड़ी क्रिया नाता तोड़ो सर्ब संसार, माया ममता हउमे हंगता काम कोध लोभ मोह हँकार रहिण ना पाईआ। चार वरन अठारां बरन साची संगत इक्को इष्ट मनाओ पुरख अकाल, दाता दृष्ट दए खुल्हाईआ। सर्ब जीआं दा सगला यार, हर घट बैठा डेरा लाईआ। अन्दर वड़ के काया मन्दिर चढ़ के शब्दी डोरी फड़ के आत्म सेजा खड़्ह के निरगुण सरूप करो दीदार, दीद ईद चन्द इक्को इक रुशनाईआ। जिस मिलयां विसर जाए संसार, नज़री आए नानक गोबिन्द गोबिन्द नानक इक निरँकार, दूजा रूप पेख कोई ना पाईआ। तिस साहिब दा हुक्म चले जुग चार, चौकड़ी बैठी सीस निवाईआ। जिस कलयुग मात दित्ता अवतार, सो अन्तिम आपणे लेखे लाईआ। सतिजुग सोया लए उठाल, आलस निंद्रा दए गंवाईआ। उठ दुलारे साचे लाल, लालन आपणे रंग रंगाईआ।

लोकमात नौ खण्ड पृथ्मी सत दीप चार कुण्ट दहि दिशा धर्म बणा सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्को नज़री आईआ। जिस दुआरे मिले वड्याई शाह कंगाल, ऊँच नीच रहिण कोए ना पाईआ। सब दा शब्द गुरू दलाल, पंज तत आवे जावे फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, लेखा जाणे दो जहान, सर्ब सृष्ट देवणहार इक ज्ञान, आत्म परमात्म परमात्म आत्म सोहँ रूप सति सरूप सति सतिवादी आप समझाईआ।

✪ ७ अस्सू २०२० बिक्रमी संपूरन सिँघ दे गृह फ़िरोज़ शाह ज़िला फिरोज़पुर ✪

साचा राम सर्ब से न्यारा, निरगुण निरवैर बेपरवाहीआ। आदि जुगादि वसे सचखण्ड सच दुआरा, दरगाह साची धाम सुहाईआ। जोती जोत जोत उज्यारा, नूर नुराना डगमगाईआ। सो पुरख निरँजण वसे ठांडे दरबारा, हरि पुरख निरँजण आपणा रूप धराईआ। एकँकार खेल अपारा, आदि निरँजण वेस वटाईआ। अबिनाशी करता खोल्ह कवाड़ा, श्री भगवान धार चलाईआ। पारब्रह्म प्रभ कर पसारा, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। विष्न ब्रह्मा शिव दे इशारा, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। त्रैगुण माया भर भण्डारा, पंज तत करे कुड़माईआ। करे खेल राम प्यारा, अपरम्पर आपणी कार कमाईआ। घट घट अन्दर कर पसारा, सच सिँघासण सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद दए खुल्हाईआ। साचा राम हर घट वास्सया, वसणहार वड्डी वड्याईआ। निरगुण नूर जोत परकास्सया, प्रकाशवान बेपरवाहीआ। लख चुरासी वेखे खेल तमाश्या, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज डेरा लाईआ। निरगुण सरगुण बण के दासी दास्सया, साची सेव कमाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म देवणहारा धुर भरवास्सया, साचा सबक इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। साचा राम राम बेटा, राम राम घर डेरा लाईआ। निरगुण राम राम घर लेटा, नेत्र नैण जग नज़र किसे ना आईआ। जुग चौकड़ी बण बण खेवट खेटा, दो जहान बेड़ा आप चलाईआ। सति सरूपी नज़री आए इक्को नेता, नर निरँकार वड्डी वड्याईआ। सदा सदा सद करे हेता, हितकारी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल दए समझाईआ। साचा खेल आदि पुरख, प्रभ एकँकार आप जणाईआ। जिस राम दा मनावे ना कोई पुरब, जन्म मरन समझ किसे ना आईआ। सो राम वसे सरब, घट घट डेरा लाईआ। तिस लेखा कोई ना अरब खरब, गणती गणत ना कोए गिणाईआ। ना उह नारी ना उह मर्द, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। दु:ख दर्द ना कोई मर्ज़, रोग सोग ना कोए सताईआ। राज जोग ना कोए हर्ज, जुग चौकड़ी बन्धन कोए ना पाईआ। करे

खेल आप असचरज, अचरज लीला आपणी आप रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, राम राम दए बुझाईआ। राम बुझाए साचा राम, रमया राम राम दृढ़ाईआ। राम प्रगटाए राम नाम, राम नाम शब्द शनवाईआ। राम नाम सुणाए सच पैग़ाम, धुर दी बाणी आप अलाईआ। राम करे साचा काम, करनी करता आप कमाईआ। वसे नगर खेड़े सच ग्राम, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। चार दीवार ना कोए निशान, सूरज चन्द ना कोए चमकाईआ। पिता पूत ना कोए आधार, माता गोद ना कोए बिठाईआ। सखीआँ मिल ना मंगलाचार, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ढोला राग ना कोए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुलाईआ। साचा राम एको एक, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। दूजा राम देवे टेक, मेहर नज़र उठाईआ। तीजा राम हर घट रिहा वेख, निरगुण आपणा आसण लाईआ। चौथे राम दा दस्से भेत, वड वड्डा वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लहिणा दए जणाईआ। साचे राम बणाया इक्को राम, शब्दी पूत पूत उपजाईआ। शब्दी पूत कराए काम, विष्न ब्रह्मा शिव प्रगटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे दान, त्रैगुण माया झोली पाईआ। त्रैगुण माया कर प्रधान, पंज तत करे कुड़माईआ। पंज तत खेल महान, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड वंडाईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज देवे माण, चारे खाणी वेख वखाईआ। चारे खाणी देवे ज्ञान, धुर दी बाण जणाईआ। परा पसन्ती मद्धम बैखरी कर वख्यान, भेव अभेदा आप खुलाईआ। ब्रह्मा सुत कर परवान, सन्त कुमार दए वड्याईआ। सन्त कुमार दे आधार, बराह रूप आप प्रगटाईआ। बराह रूप कर पसार, यगै पुरुष खेल खलाईआ। यगै पुरस खोल किवाड़, हाव ग़रीव पड़दा लाहीआ। हाव ग़रीब दे सहार, नर नरायण नूर धराईआ। नर नरायण खेल करतार, कपल मुन सोभा पाईआ। कपल मुन कर प्यार, दत्ता त्रै लए उठाईआ। दत्ता त्रै कर विचार, रिखप देव आप समझाईआ। पिरथू खेल करे संसार, हँस जल जल धार वखाईआ। कछप भार चुक्के अपार, पिट्ठ आपणी हेठां डाहीआ। धनंतर वैद दे सिख्या अपर अपार, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। हँसा बोल इक जैकार, सोहँ ढोला राग सुणाईआ। बावन लेखा विच संसार, बलकारी आप वखाईआ। नर सिँघ लेखा जाणे धुर दरबार, धुर दी धार मात प्रगटाईआ। नरायण नर खेल अपार, हरी हरि आपणी कार कमाईआ। सतिजुग करदा रिहा प्यार, नित नवित्त आपणा वेस वटाईआ। सतिजुग अन्तिम उतरया पार, द्वापर एका रंग रंगाईआ। द्वापर खेल करे करतार, त्रेता फड़ के उँगली लए लगाईआ। लोकमात करे पसार, पसर पसारी वड वड्याईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश कर विचार, परवरदिगार भेव खुलाईआ। परस राम दे आधार, चारों कुण्ट आप दृढ़ाईआ। साचा राम राम करे प्यार, राम राम लए उठाईआ। उठ राम वेख संसार, त्रैगुण

मेला पंज तत चेला चारों कुण्ट डेरा लाईआ। सज्जण सुहेला खेल करतार, इक इकल्ला आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा राम राम विचों प्रगटाईआ। राम विचों राम होया प्रगट, प्रभ नूरी नूर धराया। तिस राम नूं कहिन्दे बेटा दसरथ, माता कुशल्लया जाया। जिस दा नज़र आए नक्क मूँह सिर हथ्थ, कन्न सरवण पंज तत चोला जगत पाया। तिस राम अन्दर राम आपणा रूप रख, राम राम राम प्रगटाया। तिस राम कोल राम अक्ख, निज नेत्र पड़दा लाहया। तिस राम मार्ग राम दस्स, लोकमात हुक्म वरताया। राम अन्दर राम होया वस, वास्ता राम नाल जुड़ाया। सच राम दी प्रीती अन्दर फस, लोकमात वेखे चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, राम रूप होए राम, राम रूप चन्द लोकमात चमकाया। हरि का नाम सचा प्रताप, चार जुग वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे गए आख, आख़र धुर संदेस सुणाईआ। हिरदे हरि हरि लैणा जाप, अजपा जाप इक समझाईआ। त्रैगुण माया मिटे संताप, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। कोट जन्म दा मिटे पाप, पूरब लेखा रहे ना राईआ। घर प्रगट स्वामी होवे आप, दूई द्वैती पड़दा लाहीआ। निरगुण जोत करे प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। घर सज्जण मिले साक, परम पुरख प्रभ आपणा मेल मिलाईआ। बजर कपाटी खोल्हे ताक, जो जन हरि हरि नाम ध्याईआ। शब्द घोड़े चढ़ाए राक, वाग आपणे हथ्थ रखाईआ। लहिणा चुक्के तत आठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध लेखा दए चुकाईआ। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर मिटे अन्धेरी रात, साचा नूर करे रुशनाईआ। सुरत सवाणी शब्द हाणी पुछे वात, घर घर विच खोज खोजाईआ। सतिगुर नाम सदा साथ, एथे ओथे विछड़ कदे ना जाईआ। ढोला गाओ गहर गम्भीर गोबिन्द तूं मेरा मैं तेरा निरगुण नाल निरगुण जुड़या नात, सरगुण अन्तिम संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे नाम वड प्रताप दए जणाईआ। वड प्रताप हरि का नाउँ, दो जहान दए वड्याईआ। जन भगतां पकड़े आपे बाहौं, सोए मात लए जगाईआ। मेहरवान हो के सिर रखे ठंडी छाउँ, अग्नी तत ना लागे राईआ। फड़ के हँस बणाए काउँ, कागों हँस रूप वटाईआ। करे प्यार जिउँ पुत्रां माउँ, पिता पूत गोद सुहाईआ। तिस साहिब दा सिमरो नाउँ, आदि जुगादि जुग चौकड़ी जो सचखण्ड साचे बैठा आसण लाईआ। एथे ओथे दो जहान करे हक़ नयाउँ, हकीकत साची वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा नाम इक दृढ़ाईआ। वड प्रतापी नाम अगम्म, गुर सतिगुर आप जणाइंदा। गुरमुख गुरसिख सतिगुरू दुआरे पैणा जम्म, लेखा जन्म जन्म विचों बदलाइंदा। निहकर्मी कमाए आपणा कर्म, कर्म कांड डेरा ढाइंदा। लहिणा देणा मुके ज़ात पात वरन, गोत दीन

५२७ १५

मज़्ब नज़र कोए ना आइंदा। साचा नाम सदा सदा तरनी तरन, तारनहार इक अख्वाइंदा। गुरमुखां खोल्हे नेत्र हरन फरन, निज नेत्र दया कमाइंदा । सन्त सुहेले विरले लोकमात पढ़न, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोए हिलाइंदा। साचे मार्ग घर साचे जा के वड़न, सुखमन टेडी बंक ईड़ा पिंगल तत विकार राह विच ना कोए अटकाइंदा। सच स्वामी सरनी पड़न, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि का नाम वड प्रताप, आदि जुगादी साचा जाप, जुग जुग संग निभाइंदा। सो नाम कहे जो सतिगुर दीना, तिस विच वड्डी वड्याईआ। साचा नाम गुरमुख चीना, गुर गुर इक्को बूझ बुझाईआ। लेखा चुक्के ग़रीब दीना, दीन दुनी इक्को रंग वखाईआ। मन हँकारी तोड़े बीना, सच सुच इक समझाईआ। अमृत रस निज घर सच सरोवर विचों पीणा, साढे तिन्न हथ्थ अन्दर दित्ता टिकाईआ। सुरती शब्द विछोड़ा चुक्के जल मीना, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम भीन्ना इक्को इक वखाईआ। सच प्रताप नाम प्रभ एक, दूजी अवर ना कोए चतुराईआ। सदा सदा जन राखो टेक, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पुरख अकाल हर घट वासी लख चुरासी रिहा वेख, बचया कोए रहिण ना पाईआ। जन भगतां किरपा कर के दस्से आपणा भेत, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। निरगुण हो के सरगुण नाल करे हेत, सरगुण अन्दर निरगुण आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम दसाए नेतन नेत, दूर दुराडा पन्ध ना कोए जणाईआ। नाम प्रतापी जीव जप, जग जीवण दाता इक समझाईआ। लेखा चुक्के कूड़ी मत्त, मन मति डेरा देवे ढाहीआ। अन्तिम पत लए रख, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। चित्रगुप्त दा लेखा सख, लाड़ी मौत खौंत ना कोए प्रनाईआ। साचा नाउँ रखे सिर दे कर हथ्थ, समरथ पुरख नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, तिस बिन अक्खां अक्ख दए वखाईआ।

✪ ७ अस्सू २०२० बिक्रमी सुन्दर सिँघ दे गृह फेरू शहर ज़िला फिरोज़पुर ✪

सतिगुर मिलयां सच सुख, काया रोग रहिण ना पाईआ। उजल करे मात मुख, माणस जन्म देवे वड्याईआ। जन्म कर्म दी मेटे भुक्ख, तृष्ना तृखा बुझाईआ। सफल कराए मात कुक्ख, जन जननी वेख वखाईआ। उलटा होवे ना मात रुख, आवण जावण पन्ध मुकाईआ । सतिगुर गोदी लए चुक्क, बाल अंञाणे आप उठाईआ। सब दी अन्तर रिहा बुझ, घट घट वेख वखाईआ। जो चरण प्रीती रहे लुझ, तिन्हां लहिणा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर्दी दर्दीआं दर्द वंडाईआ। सतिगुर पूरा देवे रंग, रंगण नाम इक रंगाईआ। कूड़ी कटे भुक्ख नंग, आसा

मनसा पूर कराईआ। जन्म कर्म दी टुट्टी देवे गंढु, गंढुणहार दया कमाईआ। भाण्डा भरम ढाहे द्वैती कंध, साचा मन्दिर इक वखाईआ। अन्तर देवे निजानंद, साचा रस दए वखाईआ। सोहँ ढोला धुर दा छन्द, आत्म परमात्म बूझ बुझाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगां गए मंग, जुग जुग आपणी झोली डाहीआ। कलयुग अन्तिम खेल करे सूरा सरबँग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। ग़रीब निमाणयां दुखड़ा कटे भुक्ख नंग, रोगीआं रोग दए गंवाईआ। जो हिरदे ध्याए तिस रहे ताप ना खंग, दर्द जोड़ नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा बेपरवाहीआ। दुखी जीव रहे कुरला, चारों कुण्ट पई दुहाईआ। मिले सच ना कोई मलाह, बेड़ा डुब्बदा पार कराईआ। कूड़ी क्रिया रही सता, सति सतिवादी रूप ना कोए दसाईआ। तिन्न सौ सट्ठ हाडी बहत्तर नाड़ी अग्नी रही लगा, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। नेत्र रोवण मारन धाह, धीरज धीर ना कोए धराईआ। रोगीआं रोग रिहा सता, दुखियां दुःख ना कोए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेट मिटाए दुःख दलिद्र, काया कंचन गढ़ वेख वखाइंदा। लहिणा चुक्के टूणा जादू छिद्र, छल रूप नज़र ना आइंदा। रखे लाज जिउँ भगत सुदामे बिदर, बिध आपणी इक समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सदा रखे फिकर, नित नवित्त ध्यान लगाइंदा। रोग सोग चिन्ता लग्गा संताप, दुखियां दुःख रिहा तपाईआ। किसे ना सुझे आपा आप, आपणा पड़दा सके ना कोए उठाईआ। नाता तुटा माँ बाप, पिता पूत प्यार ना कोए जणाईआ। चारों कुण्ट दिसे अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। किनारा पार ना कराए कोई घाट, मझधार रुढ़दी दिसे लोकाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोई ना पुछे वात, लहिणा देणा झोली कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर आयां दुखियां दुःख रिहा वंडाईआ। जो जन आए चल दुआर, तिन्हां देवे माण वड्याईआ। दुखियां दुःख दए नवार, सुखीआं सुख नाम उपजाईआ। जो जन मंगण दरस दीदार, तिन्हां रातीं सुत्यां नज़री आईआ। जो जन मंगण चरण धूढ़ी छार, तिन्हां मस्तक टिक्का इक लगाईआ। जो जन मंगण जन्म मरन गेड़ दे निवार, तिन्हां लख चुरासी फंद कटाईआ। जो जन मंगण कर किरपा आप निरँकार, निरगुण मेले सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर आयां लेखे लाईआ। जो जन आए दर दरवाज़े, आपणा पन्ध मुकाईआ। तिन्हां वेखे ग़रीब निवाज़े, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। अन्तिम पूरे करे काजे, करता करनी आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर आई संगत आसा सब दी पूर करे जो हिरदयों होए मंगत, वस्त अमोलक एको झोली पाईआ। दुःख रोग

५२८
१५

सब दे करे खण्डत, खण्डा खड़ग इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिनां बेनन्ती सब दी सुणे मिन्नत, जीव दुखिया रिहा कुरलाईआ।

७ अस्सू २०२० बिक्रमी अर्जण सिंघ महिन्दर सिंघ दे गृह बस्ती खलील ज़िला फ़िरोजपुर

सचखण्ड वेख सच्चा दरबार, गुर अवतार मंग मंगाईआ। चारे युग बणे भिखार, चार कुण्ट सीस निवाईआ। चारे खाणी रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। चारे बाणी उच्ची कूक गाए हरि निरँकार, बेअन्त तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेहर नज़र कर भगवान, बेअन्त तेरी सरनाईआ। गुर अवतार मंगण दान, पीर पैगम्बर झोली डाहीआ। वास्ता पाए अञ्जील कुरान, सजदा सीस सर्ब झुकाईआ। परा पसन्ती मद्धम बैखरी दोए जोड़ करे प्रणाम, निउँ निउँ लागे पाईंआ। तेरा लेखा जाणे कोई ना दो जहान, निरगुण सरगुण भेव कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे ओट रखाईआ। सचखण्ड निवासी तेरा खेल अकथ, गुर अवतार भेव कोए ना पाईआ। चारे बाणी कहे साडी होई बस्स, बसते सारे बन्नृ वखाईआ। कलयुग अन्तिम ख़ाली होए हथ्थ, साची वस्त संग ना कोए रखाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत दीप कूड़ कुड़यारा घर घर गया वस, सतिगुर शब्द ना कोए कमाईआ। निर्मल जोत करे ना कोई प्रकाश, अन्ध अन्धेर ना कोए मिटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर किसे ना दिसे साथ, सगला संग गए तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर मिले इक सरनाईआ। चारे बाणी मारे धाह, साचा नाअरा इक लगाईआ। पुरख अबिनाशी वेखे आ, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। कलयुग जीव तैनूं गए भुला, तेरा गीत ना कोए गाईआ। वरन बरन मेल सके ना कोए मिला, ज़ात पात पई लड़ाईआ। दूई द्वैती पड़दा सके ना कोई उठा, अन्तर आत्म बूझ ना कोए बुझाईआ। काग़ज़ कलम शाही उच्ची कूक रही जणा, अक्खर अक्खर नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच मार्ग इक समझाईआ। चारे बाणी कहे निरँकार, प्रभ तेरी ओट तकाईआ। सेवा करी सदा जुग चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा हुक्म सुणाईआ। लेखा लिख के गए गुर अवतार, पीर पैगम्बर सिफ्त सालाहीआ। होका देंदी रही विच संसार, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ढोला गाईआ। साचा करो इक प्यार, परम पुरख इक मनाईआ। हर घट वसे वसणहार, लख चुरासी रिहा समाईआ। लेखा जाणे धुर दरबार, धुर दी कार आप कमाईआ। नेत्र लोचण नैण दरस करो दीदार, ईद

दीद चन्द चमकाईआ। दोए जोड़ करो निमस्कार, माया ममता मोह हँकार मिटाईआ। काया मन्दिर अन्दर वेखो सच मनार, महल अटल इक्को रिहा सुहाईआ। जोती जलवा नूर उज्यार, जोती जाता डगमगाईआ। शब्दी नाद सच्ची धुनकार, आत्मक राग सुणाईआ। अमृत आत्म दए प्याल, ठंडा सीर इक वखाईआ। त्रैगुण माया तोड़े जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। आप सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। बिन हरि नामे कोई ना रहे कंगाल, जीवां जंतां रही जणाईआ। कलयुग अन्तिम वेख असाडा हाल, साडी चले ना कोए वड्याईआ। चारे खाणी प्रभ नेत्र खोल्ह, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। साडा सुणे ना कोई बोल, बहरी होई सर्ब लोकाईआ। निरगुण हो के सरगुण कंडे तोल, सच तराजू हथ्थ उठाईआ। तेरे भगतां सन्तां कलयुग जीव करन मखौल, मुख सिफ्त ना कोए सालाहीआ। उठ वेख प्रभ नेत्र रोवे धरनी धौल, खुलड़े केस रही वखाईआ। मेरा कोई ना करे भार हौल, पापां दब्बी दए दुहाईआ। कूड़ कुड़यारा वज्जे ढोल, मृदंगा नाम ना कोए सुणाईआ। काम क्रोध रचया घोल, लख चुरासी ख़लक अखाड़े आईआ। साचा नूर दिसे ना कोए नरोल, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। लख चुरासी गठड़ी वेख फोल, पंज तत पड़दा आप उठाईआ। अन्दर सब दे खोटा पोल, पारब्रह्म ब्रह्म रूप ना कोए प्रगटाईआ। मात गर्भ दा भुल्ले सारे कौल, कीती तेरी याद किसे ना आईआ। पंडत पांधे मुल्लां शेख़ ग्रंथी मेरे नाल मारन रोल, सच सुच ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखा आपणा घर, जिस घर विचों दित्ता आप प्रगटाईआ। चारे बाणी कहे मेरे गोबिन्द, हरि गोबिन्द तेरी सरनाईआ। तुध बिन मेटे कोई ना चिन्द, चिन्ता चिखा ना कोए गंवाईआ। साहिब सुल्तान गुणी गहीर गहर गहिंद, बेपरवाह तेरी वड्याईआ। जिध्धर वेखां तेरी करन निन्द, मुख निन्दक खुशी रखाईआ। गुरमुख विरला दिसे तेरी बिंद, सुत अनादी रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे आपणा वर, दर घर साचे लै मिलाईआ। चारे बाणी कहे मेरे भगवन्त, बेपरवाह तेरी सरनाईआ। मैं होई दुहागण बिन पुरख अकाल कन्त, लोकमात सके ना कोए प्रनाईआ। चारों कुण्ट गढ़ बणया हउमे हंगत, साचा घर नज़र कोए ना आईआ। बोध अगाधा दिसे ना कोई पंडत, चौदां विद्या करन पढ़ाईआ। तेरा नाम जाणे ना कोई मंत, मंतव आपणा हल्ल कराईआ। भरमे भुल्ले कलयुग सन्त, सच्ची साधना हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखा आपणा दर, जिस दर मिले वड्याईआ। चारे बाणी कहे मेरे मेहरवान, मिहबान बीदो तेरी सच सरनाईआ। परवरदिगार वेख मार ध्यान लाशरीक, तेरी सरन नज़र किसे ना आईआ। तेरे विच इक तौफ़ीक, बेअन्त तेरी वड्याईआ। वेला अन्त वेख नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। मैं लिख लिख लेखा

दस्सया सब नूं ठीक, जो गुर अवतार पीर पैगम्बर गए सुणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जोती धारों प्रगट होवे आप बारीक, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। आत्म परमात्म भगत भगवान साची दस्से इक प्रीत, प्रीतीवान दया कमाईआ। रल मिल सारे ढोला गाओ गीत, राग इक्को इक जणाईआ। काया मन्दिर अन्दर वेखो काअबा सच मसीत, शिवदुआला मट्ठ इक्को नज़री आईआ। जिस गृह वसे साहिब अतीत, त्रैगुण देवे डेरा ढाहीआ। सो धाम सदा अनडीठ, बिन सतिगुर पूरे नज़र किसे ना आईआ। मैं बाली बुद्धि जुग जुग गावां उहदे गीत, जिस मेरी बणत बणाईआ। दर दरवेश बण के मंगां भीख, भिखक झोली दए भराईआ। हथ्थ रखे मेरे सीस, जगदीश होए सहाईआ। मेरी सिफ्त करदे राग छतीस, दिवस रैण ढोले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा आपणा वर, तेरे नाम मिले वड्याईआ। चारे बाणी कहे मेरे दीन दयाल, दयानिध वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी घाली घाल, बण सेवक सेव कमाईआ। लेखा लिख्या तेरा नाउँ शब्द बण दलाल, जगत विचोला रूप वटाईआ। सच दुआरा दस्सदी रही इक्को इक धर्मसाल, पुरख अकाल सच्ची सरनाईआ। दो जहानां सुणाउँदी रही हाल, दे ब्यान जगत वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक दे साचा वर, तेरा विछोड़ा रहिण कोए ना पाईआ। किरपा कर गहर गम्भीर, बेअन्त बेपरवाहया। कलयुग अन्तिम मेरे लथ्थे चीर, ओढन सीस नज़र कोए ना आया। चौथा युग होए दिलगीर, चारों कुण्ट अन्धेरा छाया। नाता छड्ड गए पीर फ़कीर, ईसा मूसा मुहम्मद संग नज़र कोए ना आया। गुर अवतार घत्त के गए वहीर, लोकमात पन्ध मुकाया। सारे लेखा लिख के गए अख़ीर, आख़र तेरी ओट तकाया। कर किरपा मेरे तोड़ शरअ ज़ंजीर, ज़रा ज़रा आपणी मेहर नज़र उठाया। तुध बिन मेरा दिसे ना कोई पीर, पारब्रह्म तेरी इक्को ओट रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साचा लेखा लेखे लए लगाया। चारे बाणी रही कूक, नेत्र रोवे दए दुहाईआ। कलयुग माया कलयुग जीवां रही फूक, कूड़ी क्रिया इक फुंकारा लाईआ। फिरी दरोही चारे कूट, दहि दिशा होई हल्काईआ। जिध्धर वेखां जूठ झूठ, तेरा नाउँ ना कोए पढ़ाईआ । कूड़ी क्रिया कीते कपूत, साचा पूत नज़र कोए ना आईआ। पंज तत काया चोला दिसे ख़ाली भूत, भविक्ख्त समझे कोए ना राईआ। नानक गोबिन्द ईसा मूसा मुहम्मद पुरख अकाल दा दे के गए सबूत, शहादत मेरी लिख्त नाल पाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होवे निहकलंक बिन काया कच्च कलबूत, महाबली आपणा फेरा पाईआ। जिस दा उच्च दुआरा सच अरूज, अर्श फर्श वेखे थाउँ थाईंआ। जिस नूं ईसा मूसा मुहम्मद मन्नदे गए सच महिबूब, सो मुहब्बत करे बेपरवाहीआ। तिस दा डंका वज्जे चार कूट, दो जहानां करे नाम शनवाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। चारे बाणी बोले अलख, अलख अलखने तेरी सरनाईआ। निरगुण रूप हो प्रतख, सरगुण बैठा पन्ध मुकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान गुरू ग्रंथ लिख लिख लेखा मैं गई थक्क, बलहीण रही कुरलाईआ। कलयुग जीव कूड़ी क्रिया घर आपणे लई घत्त, डेरा जूठ झूठ लगाईआ। एसे कर के पारब्रह्म प्रभ मैं सब दा खैहड़ा दित्ता छड्ड, इक्को तेरी ओट रखाईआ। कलयुग जीवां ख़ाली दिसण हड्ड, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। किरपा कर आपणे भगत कर विचों अड्ड, आप आपणा हुक्म वरताईआ। मैं ओन्हां दी जा के वेखां हद्द, जिन्हां अन्दर वसे आप गुसाईआ। तेरे नाम दा सुणावां साचा छन्द, सोहँ ढोला राग अलाईआ। निरगुण निरगुण लाउणा अंग, अंगीकार आप हो जाईआ। तेरा मन्दिर वेखां लँघ, जिस दुआरे सोभा पाईआ। मैनूं आवे इक अनन्द, रस इक्को इक चखाईआ। मेरा ख़ुशी होए बंद बंद, बन्दना करां दोए जोड़ सरनाईआ। चार युग दी विछड़ी पवे ठंड, सीतल तेरी धार मुख चुआईआ। मेरी टुट्टी लैणी गंढ, गंढणहार दर तेरे मंग मंगाईआ। कलयुग मेट भेख पखण्ड, जूठ झूठ डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा साचा घर, जिस घर इक्को नूर रुशनाईआ। चारे बाणी कहे प्रभ दीन दयाल, दयानिध दया कमाईआ। कलयुग वेख मेरा हाल, बिहबल हो के दयां दुहाईआ। जगत अखाड़ा बणया धर्मसाल, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मड्ड होए लड़ाईआ। धीरज जत दिसे ना किसे दुआर, नेत्र नैणां धीआं भैणां सर्ब तकाईआ। गुर का शब्द सके ना कोए विचार, तेरा नाउँ खोजण कोए ना आईआ। चारों कुण्ट जीव जंत भरया हँकार, हउमे गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। सारी सृष्ट करे विभचार, नर हरि नरायण कन्त ना कोए हंढाईआ। मेरी सुणे ना कोई पुकार, उच्ची कूकां दयां दुहाईआ। चारों कुण्ट आई हार, चौथे युग मुख छुपाईआ। ना कोई सज्जण मीत मुरार, साचा संग ना कोए रखाईआ। नेत्र रोवां तेरे दरबार, सचखण्ड निवासी तेरी इक सरनाईआ। मेरा दुखड़ा दे निवार, जुग जुग दर्दीआं दर्द वंडाईआ। जीवां ख़ातर निरगुण सरगुण लैंदा रिहों अवतार, पंज तत चोला जगत हंढाईआ। मैं तेरी धार शब्द बाणी करां पुकार, नाअरा इक्को इक जणाईआ। निरगुण निरगुण हो के पा मेरी सार, सरगुण समझ कोए ना आईआ। तेरा दर मिले दरबार, दरगाह साची ख़ुशी मनाईआ। निरगुण नूर होए उज्यार, अन्धेरा रहिण कोए ना पाईआ। नित करां तेरा दीदार, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। दोए जोड़ करां निमस्कार, प्रभ चरण सीस झुकाईआ। मैं सेवा कीती जुग चार, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग पन्ध मुकाईआ। अन्तिम सोहां तेरे बंक दुआर, दर दरवाज़ा दे खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दे वड्याईआ। मेहरवान

हरि सतिगुर पूरा, शाह पातशाह सच जणाईआ। तेरा लेखा जाणे हो के हाज़र हज़ूरा, हज़रत आपणा वेस वटाईआ। मस्तक टिक्का लावे साची धूढ़ा, चरण चरणोदक इक प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। चारे बाणी सच जणावांगा। निरगुण हो के वेस वटावांगा। कल कल्की नाउँ रखावांगा। डुबदी डुबदी फेर तरावांगा। मरदी मरदी आप जवावांगा। रुढ़दी रुढ़दी फड़ बचावांगा। सड़दी सड़दी आप ठरावांगा। हाढ़े कढ्ढणी आपणे चरण लगावांगा। साचे घर दी बणे बरदी, बंदीख़ाना तोड़ तुड़ावांगा। वेख खेल नरायण नर दी, नाम इक्को इक सुणावांगा। जुग चौकड़ी जिस दा पाणी भरदी, गुर अवतार पीर पैगम्बर सर्ब उठावांगा। निरगुण हो के बणां दर्दी, दर्दवंद आप अख्वावांगा। तूं पूरा कीता आपणा फ़र्ज़ी, फ़र्ज तेरा तेरी झोली पावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र टिकावांगा। मेहर नज़र इक टिकावांगा। तेरे सुतड़े भाग उठावांगा। तेरे रुठड़े वीर मनावांगा। गुरमुख गुरसिख तेरे नाल रलावांगा। उह वेखण तेरा दुःख, दुःख ओनां दा तेरी झोली पावांगा। दोहां उपजे इक्को सुख, सुखसागर रूप जणावांगा। निरगुण हो के लवां पुच्छ, जग नेत्र नज़र किसे ना आवांगा। दोहां रखां आपणी कुक्ख, बण जननी रूप वटावांगा। मेरी धार शब्द साचा सुत, तेरे नाल अन्त मिलावांगा। खुल्ली मींढी रहे ना गुत्त, सच्चा कन्त सुहागी इक जणावांगा। सतिजुग तेरी मौले रुत्त, कलयुग ख़िज़ा रूप गंवावांगा। तेरे नाल रलावां सच सुच्च, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहवांगा। जो तेरे नालों गए रुट्ठ, अन्दर वड़ के ओनां मनावांगा। अमृत जाम प्यावां घुट्ट, पड़दा दूई द्वैत चुकावांगा। कर प्रकाश निर्मल जोत, नूर नुराना नूर वखावांगा। जिनां तेरे नाल मिल के तेरे पढ़न दा होवे शौक, तिनां आपणी शकल समझावांगा। जो मैनूं भुले तिनां धर्म राए पाए मुफ्त तौक, लख चुरासी जून फेर फिरावांगा। आहलणयों डिगे कोई ना चुक्के बोट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तेरा लेखा वेखण आवांगा। तेरा लेखा वेख वखावांगा। कलयुग अन्तिम फेरा पावांगा। निहकलंक नाम धरावांगा। नाम डंक इक वजावांगा। राउ रंक आप समझावांगा। शाह सुल्ताना हुक्म मनावांगा। बेईमानां अन्त मिटावांगा। सच निशाना इक लगावांगा। दो जहानां पार करावांगा। नाम निधाना इक समझावांगा। श्री भगवाना हो के दरस दिखावांगा। तेरा तुट्टया माण फेर वधावांगा। घर साचा सच झुल्ले निशान, सत रंग तेरा रूप रंगावांगा। तूं भगतां घर आवीं बण के अन्त महमान, प्रेम प्रीती महमानी तैनूं इक खवावांगा। भगत दुआरयों लै के जावीं दान, तेरी झोली फेर भरावांगा। तैनूं नज़री आए तेरा काहन, गोपी सखी रूप वटावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा भेव आप चुकावांगा। प्रभ

मैं दर तेरे ते आवांगी। निउँ निउँ के सीस झुकावांगी। दोए जोड़ वास्ता पावांगी। तेरे भगतां राह तकावांगी। चारे कूटां वेख वखावांगी। नेत्र नैण इक खुल्हावांगी। जो दर तेरे ते कहिण, सो ढोला मैं पकावांगी। करां सेवा बण के नाइण, लागी आपणा रूप वखावांगी। तूं मेरा देणा देण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा साचा घर, जिस घर बहि के तेरा शुकर मनावांगी। घर साचा तैनूं समझावांगा। धुर संदेस इक सुणावांगा। नर नरेश हो के आसण लावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव महेष चरणां विच बहावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर निरगुण रूप धर के भेख, जोती जोत जोत रुशनावांगा। चरण कँवल देवां टेक, टिक्का मस्तक इक लगावांगा। तूं प्रेम प्रीती नाल गाउणा ला के हेक, सोहँ ढोला तैनूं समझावांगा। जिस दे अग्गे किसे दी चले कोई ना पेश, सो तेरी पुश्त आपे आपणा हथ्थ रखावांगा। जे भुल्लण लग्गों तैनूं इशारा देवे गुरू दस्मेस, दहि दिशा तेरा राह वखावांगा। मेरी महिमा करीं हमेश, सदा सदा सद तेरा रंग रंगावांगा। उठ वेख मेरे भगतां दा सच्चा देस, जिस घर आपणा आसण लावांगा। सब नूं रखां साया हेठ, अग्नी तत ना कोए तपावांगा। ओन्हां कोलों पुच्छ प्रभू दा भेत, जिन्हां अन्दर वड़ के आपणा हाल सुणावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर इक्को इक जणावांगा। मैं दर तेरे ते आवांगी। प्रभ बन्दना कर के सीस झुकावांगी। धूढ़ी चन्दना टिक्का इक लगावांगी। जो कुछ मंगणा सो तेरे अग्गे हाल सुणावांगी। मैंनूं चाढ़ अगम्मी रंगणा, रंग इक्को इक झोली पावांगी। सद वसां तेरे अंगना, दूजे दर कदी ना जावांगी। भगतां कोलों कदी नहीं संगणा, मुख तों पड़दा आप उठावांगी। जिन्हां आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरे नाल हंढुणा, तिन्हां नाल नाता आप जुड़ावांगी। लेखा चुक्के जेरज अंडना, उत्भुज सेत्ज मूल मुकावांगी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरा इक्को मंग के खुशी मनावांगी। जो दर मेरे मंगण आएगा। प्रभ झोली इक भराएगा। हौली हौली भेव खुल्हाएगा। बोली इक्को अगम्म सुणाएगा। चार युग भेव ना आएगा। गुर अवतार ध्यान लगाएगा। पीर पैगम्बर नैण उठाएगा। विष्न ब्रह्मा शिव दोए जोड़ वास्ता पाएगा। करोड़ तेतीसा नेत्र नैणां नीर वहाएगा। श्री भगवान हो मेहरवान, जन भगतां आपणा भेव चुकाएगा। अन्दर वड़ के दए ज्ञान, बाहरों अक्खर ना कोए समझाएगा। जिध्धर तक्कण ओधर नज़री आए श्री भगवान, विष्नूं रूप सेव कमाएगा। सो पुरख निरँजण मिले आण, हँ ब्रह्म आपणे अंग लगाएगा। महाराज बण सूरबीर बलवान, शेर इक्को भब्बक सुणाएगा। सिँघ बुक्के दो जहान, नौबत नाम इक वजाएगा। विष्नूं करे सर्ब परवान, दोए जोड़ वास्ता पाएगा। श्री भगवान तेरा सच मकान, जै जैकार इक्को इक सुणाएगा। चारे बाणी कर ध्यान, हरि जू बाण निराला तीर चलाएगा। लख चुरासी विचों

भगत भगवन्त लए पहचान, भेव अभेदा आप खुल्हाएगा। साचे सन्तां दे ज्ञान, अज्ञान अन्धेर मिटाएगा। गुरमुख दीपक जोत जगाए महान, नूरो नूर डगमगाएगा। गुरसिखां घर घर मिले आण, काया मन्दिर अन्दर सोभा पाएगा। तेरी सेवा लाए वाली दो जहान, दो अक्खर इक समझाएगा। तूं मेरा मैं तेरा नौ खण्ड पृथ्मी सत दीप लख चुरासी जीव जंत अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज सारे गाण, सोहँ ढोला वज्जे नाम वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, शाह पातशाह शहिनशाह इक्को एक हुक्म वरताईआ।

✪ ८ अस्सू २०२० बिक्रमी हरी सिंघ दे गृह बस्ती ख़लील ज़िला फ़िरोजपुर ✪

साहिब सतिगुर चरण प्रीत, भगवन तेरी सरन सरनाईआ। मेरी सेवा तेरा गाउणा गीत, दूजी कार ना कोए कमाईआ। लख चुरासी जीव जंत समझाउणा हस्त कीट, नाम निधान इक पढ़ाईआ। जुग चौकड़ी बदलणी मात रीत, सब दी नीती वेख वखाईआ। पुरख अकाल दस्सणा सचा मीत, सति सतिवादी इक्को इक दरसाईआ। भेव खलाउणा धाम अनडीठ, अनडिठड़ा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सद लागां तेरे पाईंआ। मेरी सेवा ठाकर बोल, अनबोलत तेरा राग अलाईआ। तेरी वड्याई तोलें तोल, साचा कंडा हथ्थ उठाईआ। जुग चौकड़ी दर दरवाज़ा मेरा खोल्ह, लोकमात हुक्म वरताईआ। नित नवित्त वसां तेरे कोल, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। तेरा प्रेम सदा अनमोल, कीमत करते कोए ना पाईआ। कलयुग अन्तिम मैं होई डावां डोल, धीरज नज़र कोए ना आईआ। सति धर्म दिसे ना किसे कोल, सच सुच्च नज़र कोए ना आईआ। चारों कुण्ट रोवे धौल, धरनी दए दुहाईआ। जिन्हां लई अमृत पौहल, सो भुल्ले सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एको देणा साचा वर, दर तेरे मिले वड्याईआ। मेरी कार तेरी सेवा, जुग चौकड़ी मात कमाईआ। तेरा प्यार देणा मेवा, अमृत रूप दरसाईआ। ठाकर मेर तूं साहिब वड्ड देवी देवा, देव आत्म तेरी सरनाईआ। अलख निरँजण अलख अभेवा, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। रसना गावे तैनूं जिह्वा, बत्ती दन्द सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। मेरी सेवा तेरा नाउँ गाउणा, अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर पढ़ाईआ। तेरा विहार मैनूं लोकमात वसाउणा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। मेरा प्यार तेरा राग अलाउणा, नाद धुन शनवाईआ। तेरा विचार धुर दा हुक्म सुणाउणा, संदेसा इक्को इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे वास्ता पाईआ।

साचा वर श्री भगवान, सो साहिब सतिगुर आप सुणाईआ। जुग चौकड़ी दे ज्ञान, सृष्ट सबाई बोध कराईआ। मेरा दस्स इक निशान, धर्म निशाना इक वड्याईआ । हुक्मे अन्दर दे फ़रमान, धुर फ़रमाना आप जणाईआ। रसना जिह्वा बोल ज़बान, बाहरों कर पढ़ाईआ। कंठ वेख मार ध्यान, अन्तर अन्तर मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। रसना बोले बोल जैकार, तेरा नाम सुणाईआ। कोटन कोटि सिफ्ती नाअरा लए मार, तेरी सिफ्त सिफ्ती दस्सण विच कदे ना आईआ। चारों कुण्ट दहि दिशा वेख विचार, नव नौ फेरा पाईआ। मैं कूक कूक थक्की हार, अन्तिम बैठी पन्ध मुकाईआ। सज्जण बणे ना कोए यार, यारी ला के सारे दगा कमाईआ। घर घर विसरया करतार, करता नज़र किसे ना आईआ। दुक्खां भरी तेरे अग्गे करां फ़रियाद, शाह पातशाह बेपरवाहीआ। तूं मेरी रचना रची आदि, आदि पुरख वड्डी वड्याईआ। मैं वजाउँदी रही तेरा नाद, नाम संदेसा इक सुणाईआ। अन्तिम मेरा खेड़ा हुन्दा दिसे बरबाद, माली बूटा सच ना कोए लगाईआ। जुग चौकड़ी मैं करदी रही राज, सिर तेरा ताज टिकाईआ। वेले अन्त रख लाज, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे दर मिले वड्याईआ। मेरी सेवा तेरा नाउँ निधान, निष्अक्खर अक्खर रूप बणाईआ। जुग चौकड़ी दे ज्ञान, जीव जंत साध सन्त समझाईआ। घर घर सुणाया सच फ़रमान, फ़रमाबरदार हो के सेव कमाईआ । गुरमुख गुरसिख सुत्ते जगाए आण, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। उठो दरस करो श्री भगवान, भगवन मेला सहिज सुभाईआ। आवण जावण चुक्के काण, जम का फास रहिण ना पाईआ। भाग लग्गे काया सच मकान, मन्दिर इक्को इक सुहाईआ। किरपा करे आप मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। घर घर फिरदी रही बण रकान, दर दर तेरा ढोला गाईआ। गुरमुख विरला सूरा उठे जवान, बल आपणा आप धराईआ। बाकी लेखा वेखे शरअ शैतान, शिरकत बैठी करे लड़ाईआ। तेरा भुल्लया नाउँ श्री भगवान, तेरी ओट ना कोए तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सोभा पाईआ। मेरी सेवा तेरा रंग, सच रंग इक रंगाईआ। एथे ओथे निभे संग, नाता बिधाता ना कोए तुड़ाईआ। ढोला गावां वजावां तेरा मृदंग, नाउँ निरँकारा इक समझाईआ। दो जहानां आर पार वेखां लँघ, मध आपणी कार कमाईआ। सर्ब समझावां सृष्ट सबाई रूप हँ, ब्रह्म अंस अंस वटाईआ। पारब्रह्म सूरा सरबँग, सर्ब जीआं पिता माईआ। नाम सुणो ओस दा कन्न, सरवण आपणे ध्यान लगाईआ। डुबदा बेड़ा लओ बन्ह, शौह दरया ना कोए रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सच जगदीश तेरी सरनाईआ। किरपा कर प्रभू जगदीश, जगदीशर तेरे चरण ध्यान

लगाया। रख हथ्थ मेरे सीस, जगत रंडेपा दूर कराया। वेख वेला बीस बीस, वास्ता तेरे अग्गे पाया। मेरी मुक्कदी दिसे हदीस, हासल नज़र कोए ना आया। ख़ाली दिसे काया बुत्त खीस, नाम ख़ज़ाना विच ना किसे टिकाया। ग्रंथी पन्थी मुला शेख़ पंडत पांधे गुरुदुआर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ तेरे नाम दी मंगदे फ़ीस, साचा नाउँ झोली सच ना कोए भराया। पारब्रह्म तेरा ब्रह्म सरूप कूड़ी क्रिया मन वासना कीता नीच, नीचों नीच कलयुग जीव कुकर्म कमाया। मेरे उते जाए ना कोए पतीज, तैनूं मिलण कोए ना आया। मैं खलोती सदा तेरी दहिलीज़, बण दरवेश दरबान सेव कमाया। जीव जंत दिसे मरीज़, तेरा नाम दारू हथ्थ किसे ना आया। साची करे ना कोई दीद, दाअवा झूठा रहे बंधाया। कूड़ी क्रिया बीज रहे बीज, साचा बूटा नाम ना किसे लगाया। माया राणी मंगदे भीख, सतिगुर चरण धूढ़ी वस्त अमोलक झोली कोए ना पाया। काम क्रोध लोभ मोह हँकार लग्गी प्रीत, पारब्रह्म तेरा प्यार नज़र किसे ना आया। जगत विकारा कूड़ी रीझ, अन्तर आत्म सच श्रृंगार ना कोए कराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, साहिब सतिगुर सद तेरा राग अलाया। मेरी सेवा कर मंज़ूर, मुश्कल अन्तिम हल्ल कराईआ। बिरहों विछुनी होई मजबूर, मजबूरी आपणी रही सुणाईआ। तुध बिन बख्शे ना कोई कसूर, मुआफ़ी दे ना कोए समझाईआ। आदि जुगादि तेरा खेल सच्चा दस्तूर, दो जहान हुक्म वरताईआ। कलयुग बेड़ा वेख भरया पूर, रुढ़दी जाए लोकाईआ। जीव जंत होए मूर्ख मूढ़, मुग्ध अज्ञान भेव कोए ना पाईआ। श्री भगवान आपणे भगत एनां विचों लभ्भ ज़रूर, ज़रूरत मेरी पूर कराईआ। मैं दर्शन वेखां तेरे हज़ूर, हरि जू हरी दुआर सोभा पाईआ। तूं दाता सर्ब कला भरपूर, तेरे हथ्थ प्रभू वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्णूं भगवान, एका बख्श चरण धूढ़, धूढ़ लुड़ंदड़ी घर आवां जावां चाईं चाईंआ।

८ अस्सू २०२० बिक्रमी रखा सिँघ दे गृह फ़िरोजपुर

सचखण्ड सोहे सच दरबारा, सति सतिवादी आप सुहाइंदा। निरवैर पुरख एकँकारा, शाह सुल्तान डेरा लाइंदा। तख्त निवासी हुक्मराना, धुर फ़रमाना इक जणाइंदा। निरगुण रूप नौजवाना, रेख रंग नज़र किसे ना आइंदा। भूपत भूप राज राजाना, सीस जगदीश ताज सुहाइंदा। जोती जोत जोत मर्दाना, नूरो नूर नूर धराइंदा। परवरदिगार सद मेहरवाना, मेहरवान इक अख्वाइंदा। मुकामे हक़ सच मकाना, लाशरीक सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर,

दर घर साचा इक वडियाइंदा। सचखण्ड दुआरा सोहे सच, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। खेले खेल हरि समरथ, हरि पुरख निरँजण वड वड्याईआ। निरगुण निरवैर निराकार चलाए रथ, एकँकार सेवा सच कमाईआ। जोती धार कर प्रकाश, आदि निरँजण करे रुशनाईआ। श्री भगवान बण के दासी दास, अबिनाशी करता आपणी धार जणाईआ। पारब्रह्म प्रभ खेल तमाश, पतिपरमेश्वर वेख वखाईआ। आपणे मण्डल आपे पावे रास, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड साचे रंग रंगाईआ। सचखण्ड दुआर सच महल्ला, सो साहिब आप बणाईआ। पारब्रह्म प्रभ इक इकल्ला, अबिनाशी करता डेरा लाईआ। श्री भगवान जोती शब्दी धार आपे रला, आदि निरँजण एका नूरो नूर नूर रुशनाईआ। एकँकार अक्ल कलधारी पकड़े आपणा पल्ला, हरि पुरख निरँजण मेला सहिज सुभाईआ। सो पुरख निरँजण धाम वसाए निहचल इक अटला, अटल आपणा आप रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म पुरख अबिनाश, एकँकार आप जणाइंदा। वेखणहारा आपणा नूर जोत प्रकाश, नूर नुराना आपणे विचों आप प्रगटाइंदा। दूसर ना कोई दिसे साथ, संगी संग ना कोए निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआर सच दरबार इक सुहाइंदा। सच दरबार लगाए एक, एकँकार वड्डी वड्याईआ। सुत दुलारे शब्दी टेक, श्री भगवान सच समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव लैणा वेख, नेत्र नैण नैण खुल्हाईआ। त्रैगुण माया चुक्के भेत, पंज तत पड़दा दए उठाईआ। गुर अवतारां करनेहारा हेत, पीर पैगम्बरां रंग रंगाईआ। जुग चौकड़ी खेलणहारा खेड, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेस वटाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त बणावणहारा लेख, कातब इक्को नज़री आईआ। निरगुण सरगुण आदि जुगादि जुगा जुगन्तर शब्द स्वामी करे हेत, पारब्रह्म ब्रह्म वेखे थाउँ थाईंआ। परमात्म आत्म नज़री आए नेतन नेत, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। दो जहानां खेवट खेट, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड पार कराईआ। भगत भगवान पिता पूत साचा बेट, साचा बन्धन इक वखाईआ। साचे सन्तन निज नेत्र लए पेख, सति सरूपी दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड बैठा डेरा लाईआ। सचखण्ड बैठा बेपरवाह, जग नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। धुरदरगाही इक मलाह, आदि जुगादि बेड़ा आप चलाइंदा। शब्दी शब्द देवणहार सलाह, सलाहगीर आप हो आइंदा। विष्नूं विश्व धार दए समझा, वास्ता आपणे नाल रखाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म मार्ग दए लगा, लख चुरासी वंड वंडाइंदा। शंकर संसा रोग चुका, सच त्रिसूल हथ्थ चमकाइंदा। त्रैगुण माया बणत बणा, साची खेल आप वखाइंदा। पंज तत काया खेल खला, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश साचा मन्दिर इक बणाइंदा। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरे आपणा आसण लाइंदा। सचखण्ड दुआरे आसण जाए लग्ग, सो साहिब आप लगाईआ। करे खेल सूरा सरबग्ग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आदि जुगादि खेल करे अलग्ग, अगला पिछला लेखा आपणे विच रखाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मार्ग दस्स, साची करे सच पढ़ाईआ। प्रगट हो पुरख समरथ, समरथ आपणी धार जणाईआ। नाम निधान महिमा अकथ, बोध अगाध दए समझाईआ। अन्तर आत्म देवे वथ, वस्त अमोलक इक वरताईआ। आपे जाणे मित गत, गति मित आपणे हथ्थ रखाईआ। वसणहारा घट घट, घट मन्त्र रिहा दृढ़ाईआ। निरगुण नूर जोत प्रकाश, जोत निरँजण सेवा लाईआ। खेले खेल पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी इच्छया पूरी करे आपणी आस, आसा आसा विच मिलाईआ। साची आस पुरख अकाल, अक्ल कलधारी इक उपाइंदा। सचखण्ड निवासी हो दयाल, दीन दयाल दया कमाइंदा। घर विच घर खेल करे कमाल, सचखण्ड अन्दर सच दवारा इक प्रगटाइंदा। धर्म दुआरा खोल्ह दुआर, थिर घर नाउँ आप वडियाइंदा। शब्दी सुत दए बिठाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नव नौ चार चले नाल, सदा सुहेला आपणा संग निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी कार कमाइंदा। सचखण्ड दुआर सच सुल्तान, श्री भगवान इक अख्वाईआ। जुग चौकड़ी वेखे मार ध्यान, निरगुण आपणी अक्ख खुल्हाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दे ज्ञान, निष्अक्खर अक्खर बाणी रूप प्रगटाईआ। लोकमात कर प्रधान, नौ खण्ड पृथ्मी सत दीप करे रुशनाईआ। जीव आत्म दए माण, परमात्म आपणा भेव चुकाईआ। ब्रह्म देवे पारब्रह्म पहचान, निज नेत्र नैण खुल्हाईआ। मन वासना खोल्हे दुकान, नौ दुआरे वंड वंडाईआ। मति मतिवाली फिरे बाल अञ्याण, चारों कुण्ट वाहो दाहीआ। बुद्धि वेखे खेल महान, घर आपणा डेरा लाईआ। पंज तत तत्त शैतान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार संग निभाईआ। आसा तृष्ना वड बलवान, ममता मोह गढ़ वखाईआ। किरपा कर आप मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। घर घर विच खेल करे भगवान, भगवन आपणी कार कमाईआ। मन्दिर अन्दर सोहणा सच मकान, सति सतिवादी आप सुहाईआ। निर्मल दीआ दीपक जोती बाल, नूरो नूर करे रुशनाईआ। नाम निधान सच्ची धुन्कान, शब्द अनादी नाद सुणाईआ। अमृत सरोवर पीण खाण, घर झिरना दए झिराईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म सेज सुहञ्जणी मिले आण, सोभावन्त वड्डी वड्याईआ। सतिगुर नूर शब्द ज्ञान, शाहो भूप हो प्रधान, जुग चौकड़ी भेव खुल्हाईआ। तेई अवतार विच जहान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग एका ढोला नाम सुणाईआ। भगत अठारां

देण ब्यान, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद लेखा लिख के गए अञ्जील कुरान, काया कुरा सर्ब समझाईआ। मक्का काअबा दो दो आबा मेल सच पीर शाह सुल्तान, परवरदिगार इक्को नूर ज़हूर नज़री आईआ। साचे हुजरे काया मन्दिर वेखो आण, हक़ महिबूब बैठा डेरा लाईआ। जिस नूं झुकदे ज़िमीं असमान, चौदां तबक सीस झुकाईआ। तिस दा कलमा इक ईमान, नबी रसूल रहे जस गाईआ। सो साहिब सतिगुर दाता दानी श्री भगवान, भगवन इक्को इक नज़री आईआ। हर घट वसया वेखो राम, सच्चे तख़्त आसण लाईआ। घनईया काहना वेखो शाम, निरगुण बंसुरी नाम वजाईआ। चार युग दे दे गए ज्ञान, अक्खर अक्खर नाल मिलाईआ। शास्त्र सिमरत लिख लिख वेद पुराण, गीता ज्ञान अट्ठ दस कर पढ़ाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद शरअ दस्स के गए कुरान, अञ्जील आयत शरायत नाल मिलाईआ। गुरू दस खोल्ह दुकान, नानक गोबिन्द राह गए वखाईआ। सर्ब जीआं दा इक भगवान, दूजा नज़र कोए ना आईआ। अन्तर आत्म वेखो सारे मार ध्यान, घर बैठा बेपरवाहीआ। अट्ठे पहर राह तक्के कवण वेला गुरमुख मिले आण, भगत भगवान आपणे अंग लगाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द जीव जंत सारे गाण, अन्दर वड़ के दरस कोए ना पाईआ। लभ्भदे फिरदे चारों कुण्ट दहि दिशा जंगल जूह उजाड़ पहाड़ बियाबान, उच्चे टिल्ले पर्बत समुंद सागर डूंघी खाई डेरा लाईआ। साहिब सतिगुर दीन दयाल ठाकर स्वामी नज़र किसे ना आए काया साढे तिन्न हथ्थ मकान, मकबरा बैठे तन बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरा इक्को इक समझाईआ। सचखण्ड दुआरा हरि का सति, आदि जुगादि बणाइंदा। जुग चौकड़ी खेल तमाश, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर जोती जोत कर प्रकाश, शब्दी शब्द नाद वजाइंदा। सृष्ट सबाई बण के दास, बण सेवक सेव कमाइंदा। जन भगतां पूरी करे आस, आसा तृष्ना मेट मिटाइंदा। निज घर साचे करे वास, दूई द्वैती पड़दा आप उठाइंदा। अन्दर वड़ के साचे पौड़े चढ़ के करे पाठ, गुरसिख काया पाठशाला इक बणाइंदा। घर तीर्थ सरोवर मारे ठाठ, अमृत इक्को इक दृढ़ाइंदा। लहिणा चुक्के तत आठ, मन मति बुध अप तेज वाए पृथ्मी आकाश डेरा ढाइंदा। सच दुआर वखाए हाट, चौदां लोक कुण्डा लाहइंदा। निरगुण जोत करे प्रकाश, अज्ञान अन्धेर गवाइंदा। गुरमुख हरिजन हरिभगत जिध्धर वेखे हरि जू वसे पास, ख़ाली दुआरा नज़र कोए ना आइंदा। सुरती शब्द मिल के पाए रास, गोपी काहन रूप वटाइंदा। साचा राम देवे साथ, सीता सईया आपणे अंग लगाइंदा। तिस साहिब दा इक्को पूजा पाठ, सिमरन आपणा नाम समझाइंदा। पीर पैगम्बर सारे उस दी गाउँदे गाथ, सोहला ढोला इक्को इक दृढ़ाइंदा। जुग चौकड़ी वेखणहारा लख चुरासी आपणी रास, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे

खेल साचा हरि, सच दुआरा इक बुझाइंदा। सच दुआरा दस्से एक, एकँकार वड्डी वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आए अनेक, नित नवित्त आपणा वेस वटाईआ। पंज तत काया चोला धरदे रहे भेख, निरगुण सरगुण कार कमाईआ। परम पुरख परमात्मा नाल करदे गए हेत, जीवां जंतां सर्ब समझाईआ। निज घर निज गृह निज आत्म परमात्म लैणा वेख, बाहरों लभ्भण कोए ना जाईआ। तुहाढ्ढे अन्दर वड़ के रिहा खेड, लुकण मीची खेल समझ किसे ना पाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोई ना देवे भेत, सुखमन टेडी बंक नौ दुआरे पार ना कोए कराईआ। रसना जिह्वा गा गा सारे दस्सण चारे वेद, पुराण अठारां करन पढ़ाईआ। छे शास्त्र दस्सण नेतन नेत, नेरन नेर सर्ब समझाईआ। गीता ज्ञान कराए हेत, साची सिख्या इक दरसाईआ। अञ्जील कुरान कहिण लओ पेख, साचा पीर बेपरवाहीआ। साची बाणी गुरु गुर कहे मिटाओ आपणी रेख, पिछला लेखा रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी साची दया आप कमाईआ। सचखण्ड दुआरे साचे तख्त चढ़, सो सतिगुर सोभा पाईआ। जुग चौकड़ी घाड़न घड़, लख चुरासी वंड वंडाईआ। सरगुण अन्दर निरगुण वड़, नित नित वेखे थाउँ थाईंआ। आदि जुगादी खेल कर, हरि करता ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। निरभउ भय चुकाए सर्ब डर, भ्यानक आपणा खेल कराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर अन्तर नाम रहे पढ़, बाहर सृष्ट सबाई गए जणाईआ। सर्ब जीआं दा इक्को घर, दूजा मन्दिर नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। भेव अभेदा खोल्हे सृष्ट, साहिब सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। नौ खण्ड पृथ्मी दस्से इक्को इष्ट, ईश जीव बूझ बुझाईआ। किरपा निधान ठाकर सतिगुर खोल्हे सब दी दृष्ट, दिशा कूट इक्को नज़री आईआ। मन वासना दूर करे भृष्ट, भृष्टाचार कोए रहिण ना पाईआ। लख चुरासी विचों जन भगतां दी आपणे हथ्थ विच रखे लिस्ट, बाकी लेखा लेखे कोए ना लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा एकँकारा इक सुणाईआ। सच संदेसा सुणो मीत, सो साहिब आप सुणाईआ। जुग चौकड़ी गए बीत, कोटन कोटि काल विहाईआ। कलयुग सारे वेखो रीत, गुरू अवतार पीर पैगम्बर ध्यान लगाईआ। गुरुदुआरे शिवदुआले मट्ठ फिरी दरोही मन्दिर मसीत, साचा धर्म नज़र किते ना आईआ। पंडत पांधे ग्रंथी पन्थी मुल्लां शेख़ मसायक बदली नीत, हरि मन्दिर बैठे धीआं भैणां रहे तकाईआ। काया किसे ना दिसे ठंडी सीत, त्रैगुण अग्नी अग्ग रही मचाईआ। लेखा चुक्कया ना हस्त कीट, ऊँच नीच डेरा कोए ना ढाहीआ। आत्म करे ना कोई परमात्म प्रीत, कूड़ी यारी सर्ब लगाईआ। साची सिख्या कोई ना लए सीख, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान

खाणी बाणी बैठी गुर का शब्द भुलाईआ। साहिब सतिगुर किसे ना वसे चीत, चतुर्भुज नज़र किसे ना आईआ। रामा कृष्ना सारे गाउँदे गीत, अग्गे हो के चरणी सीस ना कोए झुकाईआ। नज़र ना आए किसे धाम अनडीठ, निरगुण नूर नूर ना कोए रुशनाईआ। अन्तिम सब दी नंगी होई पीठ, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। कलयुग जीव कौड़े रीठ, अमृत रस नज़र कोए ना आईआ। सदी बीसवीं रही बीत, बीती कहाणी गुर अवतार पीर पैगम्बर नेत्र वेखण चाईं चाईंआ। चारों कुण्ट साचा कलमा पढ़े ना कोए हदीस, हिरदे राम ना कोए ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नेत्र नैणां सर्ब वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर नैणां वेख, दोए नैण रहे शरमाईआ। कलयुग कूड़ा चारों कुण्ट दिसे भेख, हरि का भेत कोए ना पाईआ। माया ममता खेलां रिहा खेड, साचा खेल समझ किसे ना आईआ। रुत्त सुहञ्जणी रहे ना कोई चेत, ख़िज़ां चारों तरफ़ छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, प्रभ तेरे अग्गे चले ना कोए चतुराईआ। श्री भगवान दस्से आप, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां रिहा वखाईआ। उठ के वेखो कोई ना जपे अन्तर जाप, तुट्टी लिव ना कोए लगाईआ। दिने राती करन पाप, अमृत वेले उठ के रसना जिह्वा प्रभ नूं शर्मिन्दा रहे कराईआ। रसना कहिण तूं पाकी पाक, अन्दरों पलीती बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। बाहरों गुरू दे बणदे सारे साक, अन्दरों ठग्गी रहे कमाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी अन्दर वड़ के सब नूं रिहा झाक, घर घर बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, चौथे युग लेखा रिहा मुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर हो इकट्ठे, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। तेरी सरनाई साहिब ढट्ठे, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। साचे नाम जीव कोई ना रते, रती रत ना कोए सुकाईआ। सदी वीहवीं असीं वेख के रहि गए हक्के बक्के, हरि का मन्दिर सोभा कोए ना पाईआ। लिख लिख लेख दे के आए सच्चे पते, पतिपरमेश्वर मिलो इक्को माहीआ। जो वेले अन्तिम पड़दा ढके, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। लख चुरासी विचों फड़ के रखे, जूनी जून ना कोए भवाईआ। राए धर्म ना मारे धक्के, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। लाड़ी मौत कोल ना रखे, दुहागण नार ना कोए प्रनाईआ। अन्तिम आपणी गोदी सट्टे, दूजे हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। आवण जावण पैंडे मुक्के, पांधी रूप ना कोए वटाईआ। प्रभ सरनाई फेर कोई ना पुच्छे, अन्तिम जोती जोत मेल मिलाईआ। जो साहिब सतिगुर कोलों बैठे रुस्से, तिन्नां देवे अन्त सज़ाईआ। ओस प्रीतम नाल काहदे गुस्से, जो सब दा पिता माईआ। सौंदयां जागदयां उठदयां बहिंदयां माता गर्भ अन्दर पुच्छे, निरगुण हो को निरगुण वेख वखाईआ। चौकीदार हो के पंच विकार तुहाड्ढे मोड़े कुत्ते, बण सेवक सेव कमाईआ। दीन दयाल हो के आपणी गोदी चुक्के, फड़ बाहों

गले लगाईआ। दस दस मास फेर ना तपे पुट्ठे, हवन कुण्ड ना कोए तपाईआ। उह सतिगुर तुहाढ्ढे अन्दर बैठा छुपे, चुप चुपीता बैठा डेरा लाईआ। जे कोई गुरमुख नीवां हो के उस नूं पुछे, अन्दरे अन्दर दए समझाईआ। आ लाडले मेरे पुते, पिता पूत मेल मिलाईआ। उत्तों आ के नेड़े हो के चुक्के, चुक्क के उपर आप लै जाईआ। उजल करे मात मुखे, दुरमति मैल धवाईआ। जो जीव सतिगुर मिलण निशान्यौं उके, तिन्हां देवे ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सर्ब जीआं रिहा जणाईआ। सर्ब जीआं प्रभ देवे नाम निधान, निरगुण सरगुण बूझ बुझाइंदा। शब्द गुरदेव स्वामी सदा मेहरवान, नमो नमो निमस्कार सीस जगदीश इक झुकाइंदा। बोध अगाध बण के पंडत देवे धुर फ़रमान, साची सिख्या साख्यात समझाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मुकया विच जहान, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे उठ के देण इक ब्यान, ब्याना सब दे कोलों आपणा नाम रखाइंदा। चारों कुण्ट सृष्ट सबाई सच दिसे ना कोए निशान, धर्म निशाना हथ्थ ना कोए झुलाइंदा। साबत रिहा ना किसे ईमान, सिदक सबूरी तोड़ ना कोए निभाइंदा। बग़ले मार अञ्जील कुरान, मसला हक़ ना कोए समझाइंदा। बिस्मिल रूप ना कोए दिसे विच जहान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण भगवान, प्रभू तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग जीव भुल्ले तेरा सच निशान, नूर नज़र किसे ना आईआ। साडा चले ना कोई ज्ञान, अज्ञान बैठा डेरा लाईआ। घर घर वड़या इक अभिमान, हँकारी गढ़ रहे बणाईआ। अन्दर वड़ के नच्चे शैतान, कूड़ी क्रिया डौरु डंक वजाईआ। चारों कुण्ट दिसे बेईमान, बैवा रूप सर्ब खुदाईआ। आ के वेख आपणा जहान, जीव जंत साध सन्त करन लड़ाईआ। शरअ मज़्हब दीन इस्लाम होए हैरान, हरि जू हरि नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान तेरे दर इक सलाम, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। श्री भगवान कहे मैं आवांगा। निरगुण नूर जोत प्रगटावांगा। लोकमात वेख वखावांगा। चार कुण्ट दहि दिशा फोल फोलावांगा। नौ खण्ड पृथ्मी पड़दा लाहवांगा। सत दीप भेव चुकावांगा। कलयुग कूड़ी रीत मेट मिटावांगा। शिवदुआला मठ मन्दिर मसीत वेख वखावांगा। लख चुरासी परखां नीत, नीतीवान विचों बाहर कढ्ढावांगा। जो प्रभ दा गाउँदे गीत, तिन्हां आपणे नाल मिलावांगा। वखावां खेल इक अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमावांगा। लेखा चुक्के हस्त कीट, ऊँच नीच इक्को रंग रंगावांगा। आत्म नाल करां सच प्रीत, परमात्म आपणा रूप वखावांगा। कर काया ठंडी सीत, अमृत मेघ बरसावांगा। निरगुण हो के वसां चीत, मन चिंदया फल खवावांगा। ताज रख के साचा सीस, दो जहानां राज कमावांगा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश

देवां इक्को नाम हदीस, कलमा राग नाम पढ़ावांगा। माया राणी ख़ाली करां खीस, शाह सुल्तानां राज राजानां तख़्तों अन्तिम लाहवांगा । लख चुरासी लवां जीत, जित आपणे हथ्थ वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार साचा वर, सच दुआरा इक वडयावांगा। सच दुआरा इक बणाएगा। प्रभ आपणी दया कमाएगा। जन भगतां मेल मिलाएगा। साचे सन्तां अंग लगाएगा। गुरमुख गुर गुर गोद बहाएगा। गुरसिख धुर संजोग मिलाएगा। लेखा जाणे माणस मनुक्ख, मनुष आपणा रंग चढ़ाएगा। सन्त सुहेले जननी बण के रखे कुक्ख, धन्न जणेंदी बण के माउँ एका सेव कमाएगा। जन्म कर्म दा मेटे दुःख, कर्म कांड नेड़ कोए ना आएगा। आत्म परमात्म देवे इक्को सुख, सुख सागर रूप जणाएगा। कूड़ी क्रिया अन्दरों बूटा देवे पुट, सच सुच्च इक्को राह वखाएगा। काम क्रोध लोभ मोह हँकार गुरमुख तेरा घर लैण ना लुट्ट, फड़ के डण्डा शब्द बाहर कढ्ढाएगा। तेरे अन्दरों इक्को आवाज़ आवे शब्द नाद नाम निधान लैणा पुच्छ, दूजा राग ना कोए अल्हाएगा। बिन पढ़यां बिन पाणी ठरयां बिन अग्नी सड़यां तैनूं आपणा आप जाए बुझ, जिस वेले सतिगुर पूरा दया कमाएगा। सुरत सवाणी निक्की बाली नढ्ढी आए सुझ, घर पड़दा आप उठाएगा। साची सेजा बहे कुद्द, पलँघ रंगीला इक विछाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक समझाएगा। साची सिख्या चार वरन, चारे खाणी चारे बाणी आप जणाईआ। नेत्र खोल्हे हरन फरन, निज नेत्र पड़दा लाहीआ। लहिणा चुक्के रसना पढ़न, अजपा जाप इक जपाईआ। लेखा चुक्के जन्म मरन, आवण जावण रहिण ना पाईआ। किरपा करे करनी करन, करता पुरख वड्डी वड्याईआ। पंज विकार मूल ना लड़न, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। शब्द गुरू कोलों सारे डरन, सिर सके ना कोए उठाईआ। सरन सरनाई निउँ निउँ पड़न, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। प्रभ मिलयां लेखा चुक्के वरन बरन, ज़ात पात नज़र कोए ना आईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां मिले सच्ची सरन, सरनगति इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम वेखे आप, प्रभ आपणा फेरा पाईआ । पुरख अबिनाशी वड प्रताप, चारों कुण्ट भेव चुकाईआ। जन भगतां देवे अगम्मी जाप, धुन अनादी राग सुणाईआ। लेखा जाणे पंज तत माटी ख़ाक, बंद ताकी खोल्ह वखाईआ। अन्दर वड़ के मारे झात, नेत्र नैण नैण नाल मिलाईआ। सैनत नाल गुरमुखां जाए आख, इक्को नाम जपो प्रभ सच्चे सच गोसाईंआ। त्रैगुण माया मिटे ताप, तीनों ताप दए मिटाईआ। कोट जन्म उतारे पाप, पतित पुनीत आप कराईआ। घर सज्जण मिले आप, पतिपरमेश्वर दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरा इक जणाईआ । सच दुआरा काया मठ,

हरि मन्दिर आप सुहाया। अन्दर वड़ पुरख समरथ, निरगुण साचा डेरा लाया। देवणहारा साची वथ, वस्त अमोलक नाम वरताया। गुरमुख सज्जण सन्त सुहेले भगत भगवान लए रख, लख चुरासी विचों बाहर कढ्ढाया। तीजी खोल्हे आपणी अक्ख, दोए लोचण बंद कराया। साचा नाम जणाए छन्द, सोहँ ढोला राग अल्हाया। जुग जन्म दी टुट्टी गंढ्ढ, प्रभू आपणा बन्धन पाया। नार दुहागण होए ना रंड, हरि कन्त सुहागी इक मिलाया। भरम भुलेखा ढाह कंध, साचा मन्दिर इक रुशनाया। सति स्वामी वेखे अन्दर लँघ, अन्तरजामी आपणा फेरा पाया। इक्को देवे नाम अनन्द, अनन्द अनन्द विचों प्रगटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निरगुण दाता पुरख बिधाता बिध आपणी दए समझाया। साची बिध दस्से भगवान, जन भगतां करे जणाईआ। निरगुण नूर जोत महान, सति सरूप दए वखाईआ। शब्द नाद सच्ची धुन्कान, धुन आत्मक राग सुणाईआ। अमृत बख्शे पीण खाण, मेघ इक्को वार बरसाईआ। रातीं सुत्यां मिले आण, दिने जागदयां आपणा रंग रंगाईआ। जे कोई गुरमुख कोलों पुछे रसनी दे सके ना कोई ब्यान, हरि का भेव समझा सके ना कोई राईआ। बाहरों दस्सदे सर्ब निशान, रसना जिह्वा नाल रलाईआ। जिन्ना चिर किरपा करे ना आप मेहरवान, मेहर नज़र नैण उठाईआ। ओनां चिर संसा कदे ना चुक्के विच जहान, सतिगुर पूरा साख्यात नज़र किसे ना आईआ। जुग चौकड़ी लोकमात धरत धवल उते आउँदे सर्ब महिमान, आवण जावण फेरीआं पाईआ। जिस जन साहिब सतिगुर सच्चा साक सैण मिले आण, फड़ बाहों आपणे घर लै जाईआ। जा के बिठाए ओस मकान, जिस मकान विचों दित्ता घलाईआ। दरस दिखाए इक्को इक साहिब सुल्तान, सति सरूप नज़री आईआ। भगत भगवान वेख होए हैरान, चारों कुण्ट दहि दिशा बिन निर्मल जोत दूजा रूप कोई नज़र ना आईआ। ओस वेले भगत भगवान दोवें कहिण, तूं मैंनूं मिल्या आण, तूं मेरा मैं तेरा मैं तेरा तूं मेरा सोहँ रूप समाईआ। सतिजुग सच्चे इक एहो बणे विधान, पुरख बिधाता आप बणाईआ। सृष्ट सबाई कर शब्द कुड़माई देवे नाम ज्ञान, आत्म परमात्म बूझ बुझाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब दा दाता विष्नूं भगवान, गुर शब्द शब्द गुर दो जहान खेल रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, हौली हौली करे आपणा काम, किसे कोलों सिख्या लैण कदी ना जाईआ।

८ अस्सू २०२० बिक्रमी राम सिँघ दे गृह फिरोज़पुर छौणी

सो साहिब पुरख सुल्ताना, सति सतिवादी खेल कराइंदा। सचखण्ड निवासी नौजवाना, बल आपणा आप प्रगटाइंदा। योद्धा सूरबीर मर्द मर्दाना, निरवैर आपणा भेव चुकाइंदा। वसणहारा निहचल धाम सच मकाना, दरगाह साची सोभा पाइंदा। जोती जोत नूर महाना, आदि निरँजण डगमगाइंदा। देवणहारा धुर फ़रमाना, सच संदेसा इक सुणाइंदा। भूपत भूप राज राजाना, शाह सुल्ताना आपणा हुक्म वरताइंदा। खेले खेल श्री भगवाना, पुरख अकाल नज़र किसे ना आइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव देवे ज्ञाना, बोध अगाधा मन्त्र इक पढ़ाइंदा। त्रैगुण माया लेखा जाणे जाणी जाणा, अन्तरजामी भेव चुकाइंदा। पंज तत वेखणहार दुकाना, नव नौ चार फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी साहिब सतिगुर, आदि जुगादी आप कराईआ। लेखा जाणे धुरदरगाही धुर, परवरदिगार वड्डी वड्याईआ। सच दुआरे निरगुण धारे निरवैर निराकरा निरँकार आपे जाए बौहड़, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह हरि खेल अगम्म, अलख अगोचर भेव कोए ना आइंदा। सो पुरख निरँजण करे आपणा कम्म, हरि करता कार कमाइंदा। हरि पुरख निरँजण सुत दुलारा एका जम्म, जन जननी रूप वटाइंदा। एकँकारा बेड़ा बन्न्, खेवट खेटा आप अख्वाइंदा। आदि निरँजण चाढ़े चन्न, जोती जोत जोत रुशनाइंदा। श्री भगवान देवे दान, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। अबिनाशी करता बण के काहन, रूप अनूप आप प्रगटाइंदा। पारब्रह्म प्रभ हो प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाइंदा। लेखा जाणे सच दुआरे गुण निधान, गुणवन्ता आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी साहिब स्वामी, एकँकार आप जणाईआ। इक इकल्ला अन्तरजामी, दरगाह साची सोभा पाईआ। निरवैर पुरख शाह सुल्तानी, शाह पातशाह शहिनशाह वड वड्याईआ। बोध अगाध शब्द अनाद जाणे जणाए आपणी कहाणी, धुर फ़रमाना इक सुणाईआ। वेखे विगसे दो जहानी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप वखाईआ। साचा खेल करे करतार, हरि करता भेव चुकाइंदा। सचखण्ड निवासी हो तैयार, निरगुण आपणा वेस वटाइंदा। जुग चौकड़ी वेखणहार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाइंदा। लख चुरासी खोल्ह कवाड़, घर घर गृह गृह मन्दिर अन्दर फेरा पाइंदा। वेखणहारा जंगल जूह उजाड़ पहाड़, समुंद सागर खोज खोजाइंदा। लेखा जाण सच्ची सरकार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल आप जणाइंदा। साचा खेल करे भगवान, भगवन हथ्थ वड्डी वड्याईआ। योद्धा सूरबीर बण बलवान, बल आपणा

रिहा जणाईआ। सचखण्ड दुआरे साची खेल करे महान, लेखा लेख ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी धार आप बंधाईआ। धुर दी धार बन्ने भगवन्त, मेहरवान वड अख्वाइंदा। आदि जुगादी खेल अगणत, बेअन्त आपणी कार कमाइंदा। जुग चौकड़ी मणीआ मंत, मन्त्र शब्द नाम समझाइंदा। लख चुरासी बण बण कन्त, नर हरि नरायण साची सेज सुहाइंदा। बोध अगाधा बण बण पंडत, धुर दी बाणी राग अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आप वखाइंदा। साचा लेखा दए वखाल, प्रभ दाता बेपरवाहीआ। प्रगट हो दीन दयाल, दयानिध दया कमाईआ। सचखण्ड दुआरा सच सच्ची धर्मसाल, दरगाह साची इक वखाईआ। जुग चौकड़ी हुक्मे अन्दर खेल करे करतार, करता आपणी करनी कार कमाईआ। निरगुण सरगुण लै अवतार, गुर गुर शब्दी धार जणाईआ। साचा कलमा बोल जैकार, पीर पैगम्बर दए वड्याईआ। नाम निधाना इक आधार, भगत भगवान करे पढ़ाईआ। साचे सन्तां दरस दीदार, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। गुरमुखां खोल्ह बंद कवाड़, घर मन्दिर दए वखाईआ। गुरसिखां मस्तक टिक्का धूढ़ी लाए छार, दुरमति मैल गंवाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे वारो वार, नव नौ चार आपणा पन्ध मुकाईआ। धुर संदेसा दे विच संसार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण करे पढ़ाईआ। गीता ज्ञान कर प्यार, भगत भगवान मीता इक्को बूझ बुझाईआ। हक़ हकीकत बोल नाअर, लाशरीक कलमा कायनात समझाईआ। बाणी बाण निराला देवे मार, गुर अणयाला तीर चलाईआ। पंज तत काया कर प्यार, वेख वखाए थाउँ थाईंआ। ब्रह्म मति सच्ची सरकार, साची विद्या करे पढ़ाईआ। चौदां विद्या जगत विहार, चारों कुण्ट नाता जोड़ जुड़ाईआ। चौदां लोक खेल करे करतार, चौदस चन्द नूर रुशनाईआ। चौदां तबकां दए दीदार, मुख नक़ाब पड़दा आप उठाईआ। लेखा जाण धुर दरबार, धुर दा लेखा दए समझाईआ। अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह परवरदिगार, सांझा यार इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेसा नर नरेसा एकँकारा हरि करतारा कलयुग अन्तिम वारा दो जहान रिहा सुणाईआ। दो जहान रहिणा ख़बरदार, बेख़बर ख़बर जणाइंदा। पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड पड़दा दए उतार, भेव अभेदा आप जणाइंदा। धरनी धरत धवल पावे सार, आकाश प्रकाश खोज खोजाइंदा। रवि ससि सूरज चन्न मण्डल मण्डप नेत्र नैण दए उग्घाड़, सोया कोए रहिण ना पाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर गूढ़ी नींद सुत्ते दए उठाल, शब्द इशारे नाल जगाइंदा। जन भगतां. मेल मिलाए निरगुण सरगुण आप दलाल, सच दलाली आप कमाइंदा। सूफ़ीआं देवे जलवा नूर जलाल, सन्तां साची बूझ बुझाइंदा। गुरमुखां नाता तोड़ काल महाकाल, महिबूब आपणा दरस दिखाइंदा। गुरसिखां चरण प्रीत निभाए नाल, अद्धविचकार ना

कोए तुड़ाइंदा। चारे वेद कराए ध्यान, चारों कुण्ट अक्ख खुलाइंदा। पुराण अठारां लए संभाल, पुराण प्राणी बूझ बुझाइंदा। शास्त्र छे वेखणहार वेखे आप भगवान, श्री भगवान भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरा इक वडियाइंदा। सच दुआरे चढ़े सति सतिवाद, सति पुरख निरँजण वड्डी वड्याईआ। वेख वखाए ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड खोज खोजाईआ। जिस रचना रची आदि, सो अन्तिम वेखे बेपरवाहीआ। जिस दा शब्द अगम्म धुन नाद, राग रागनी ढोला गाईआ। जिस दा रूप सदा विस्माद, बिस्मिल आपणी धार जणाईआ। जिस दा गुर अवतार पीर पैगम्बर सच समाज, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। जिस दा दो जहान काज, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा बन्धन पाईआ। जिस दी धुर दी इक्को आवाज़, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोए हिलाईआ। जो घट घट अन्दर करे निवास, लख चुरासी रिहा समाईआ। जिस दा नूर सर्ब प्रकाश, जीव जंत दीपक दीआ डगमगाईआ। जिस दा लहिणा देणा पवण स्वास, पवण पवणां मेल मिलाईआ। जिस दा पंज तत बणया साथ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बन्धन पाईआ। जिस दी त्रैगुण माया दास, रजो तमो सतो बैठी सीस झुकाईआ। जिस दी विष्न ब्रह्मा शिव रखदे आस, नेत्र नैण नैण उठाईआ। जिस दा खेल पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर वेखे चाईं चाईंआ। जिस दा सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चले राथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। जिस दा गुर अवतार पीर पैगम्बर करदे गए पूजा पाठ, सिमरन राम नाम ढोला गाईआ। जिस दी सेवा करन दिवस रात, सूरज चन्द भज्जण वाहो दाहीआ। जिस दा खेल दो जहान, निरगुण सरगुण गोपी काहन रिहा नचाईआ। जिस दी पीर पैगम्बर पढ़न निमाज़, सजदा परवरदिगार सीस झुकाईआ। जिस दा दरगाह साची सच्चा राज, तख्त निवासी साचे तख्त सोभा पाईआ। जिस दा कोई ना जाणे वड्डा भाग, निक्का निक्का भाग सब नूं रिहा वखाईआ। सो साहिब पुरख समराथ, निरगुण इक्को इक अख्वाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतारां पीर पैगम्बरां देंदा रिहा दात, नाम भण्डार आप वरताईआ। आत्म मेल परमात्म खेल दस्सदा रिहा करामात, साची करनी आप जणाईआ। प्रगटाउँदा रिहा लोकमात आपणी शाख़, शख्सीयत विच साख्यात आपणा नूर धराईआ। लेखा लिखदा रिहा नाल कलम शाही दवात, काग़ज़ देवणहार वड्याईआ। भेव खुलाउँदा रिहा दस्स के आप, हालात हालत आपणी दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो साहिब हुक्म वरताईआ। सो साहिब सच सुल्तान, हरि वड्डा वड्ड वड्याईआ। शब्द सुत वड बलवान, पूत सपूता आप उठाईआ। विष्नूं विश्व करे परवान, वास्ता इक्को नाल रखाईआ। ब्रह्मा ब्रह्म करे प्रधान, ब्रह्म विद्या इक पढ़ाईआ। शंकर हथ्थ त्रिसूल निशान, धूंआँधार लए उठाईआ। बाशक तशका कर पहचान, कंठ माला सोभा

पाईआ। एका जोत बण बलवान, सीस जगदीश इक निवाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दोए जोड़ करन सलाम, नमो नमो नमो आख सुणाईआ। तेरे बरदे रहे गुलाम, चाकर पाख़ाक रूप वटाईआ। तेरा मन्नदे रहे ईमान, धर्म दुआरे तेरा धर्म कमाईआ। तेरा सुणाउँदे रहे पैग़ाम, तेरे नाम करी शनवाईआ। तेरा रूप दस्सदे रहे श्री भगवान, भगवन तेरी सिफ्त सिफ्त सालाहीआ। जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण हो के दे के आए ब्यान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच महल्ल करे रुशनाईआ। सच महल्ल रुशनाई रोशन ज़मीर, ज़ाहर ज़हूर खेल कराइंदा। जिस दी नज़र ना आए किसे तस्वीर, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। सो दाता गहर गम्भीर, गुणवन्ता आपणी कार कमाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग करनहार अन्त अख़ीर, आख़र आपणा हुक्म वरताइंदा। शब्दी डोरी पा ज़ंजीर, लख चुरासी बन्धन इक रखाइंदा। लेखा जाणे शाह हकीर, राज राजानां वेख वखाइंदा। बदलणहार सर्ब तकदीर, तदबीर आपणी आप बणाइंदा। कटणहारा कूड़ी क्रिया भीड़, रोग सोग चिन्ता आप मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरा इक सुहाइंदा। सच दुआरे साहिब समरथ, श्री भगवान दया कमाईआ। निरगुण नूर जोत कर प्रगट, प्रगट आपणी खेल वखाईआ। धुर संदेसा नर नरेशा देवे आपणे हथ्थ, दूजा नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर प्रभ सरनाई सारे आओ नठ्ठ, दूर दुराडे पन्ध मुकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बण वणजारे जो खोलया हट्ट, सो साहिब सतिगुर वेख्या थाउँ थाईंआ। नौ खण्ड पृथमी सत दीप चार कुण्ट दहि दिशा घर घर माया रही नच्च, हरि का रूप नज़र किते ना आईआ। हथ्थ ना आया कोई सच, कूड़ कुड़यारा डंका रिहा वजाईआ। लख चुरासी विचों गुरमुख विरला रिहा बच, जिस प्रभ आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेसा इक अलाईआ। धुर संदेसा सुणो कन्न, सो साहिब आप जणाइंदा। आदि जुगादि जो बेड़ा रिहा बन्न, दो जहानां निरगुण सरगुण आप चलाइंदा। तिस दा कहिणा लैणा मन्न, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर चोला छड्ड के गए पंज तत तन, काया रूप नज़र कोए ना आइंदा। कूड़ा ठीकर गए भन्न, ठोकर नाम इक लगाइंदा। कलयुग जीव नेत्र अन्न, ज्ञान नेत्र ना कोए खुल्हाइंदा। पंज चोर घर घर लौण संन्ह, सोइआं अक्ख ना कोए खुल्हाइंदा। जगत विकारा देवे डंन, अग्गे हो ना कोए बचाइंदा। फिरी दरोही वासना मन, मन का मणका ना कोए भवाइंदा। हरि का नाम ना सच्चा धन, कूड़ी माया भार सर्ब उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म इक वरताइंदा। साचा हुक्म देवे संदेस, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। सारे उठ के वेखो इक नरेश,

नर निरँकार नज़री आईआ। दर खलोते विष्न ब्रह्मा शिव महेष, मैखासुर बैठा सीस झुकाईआ। तेई अवतार बदल के भेस, भेव साचा गए जणाईआ। भगत अठारां कर कर गए आदेस, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद दस्स के गए भेत, परवरदिगार बेपरवाहीआ। नानक गोबिन्द लिख के गया लेख, धुर दा लेखा इक समझाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग श्री भगवान नित नवित्त मेटे रेख, थिर रहिण कोए ना पाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होवे , जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा हरि नरेशा निरगुण धारा एकँकारा सृष्ट सबाई आप जणाईआ। सृष्ट सबाई जाणा जाग, जगजीवण दाता आप जगाइंदा । गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे करन वैराग, नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। दरोही खुदाए चारों कुण्ट दहि दिशा कूड़ी लग्गी आग, अमृत मेघ ना कोए बरसाइंदा। जीव जंत नार दुहागण हरि कन्त ना मिले किसे सुहाग, सुहञ्जणी सेज डेरा कोई ना लाइंदा। काया मन्दिर अन्दर दीपक जोत जगे ना किसे चिराग, घर घर दीवा बाती जीव जगत जहान सर्ब टिकाइंदा। कक्खां कुली लग्गे किसे ना भाग, अनमुल्ली दौलत नाम ना कोए वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे करतार, हरि करता वड वड्याईआ। कलयुग अन्तिम पावे सार, बेअन्त बेपरवाहीआ। सचखण्ड दुआरा खोल्ह कवाड़, साचा मन्दिर दए सुहाईआ। जन भगतां करे इक प्यार, प्रीतम सच प्रीती दए जणाईआ। नेत्र लोचण आपणी अक्ख दए उग्घाड़, पड़दा दूई द्वैत लाहीआ। सोई सुरती दए उठाल, शब्द हुलारा इक लगाईआ। अमृत आत्म जाम दए प्याल, निझर झिरना इक झिराईआ। ठाकर दुआरा मन्दिर वखाए सच्ची धर्मसाल, गुरदुआर काया अन्दर इक्को नज़री आईआ। जिस गृह वसे दीन दयाल, पुरख अबिनाशी डेरा लाईआ। दिवस रैण दए जलाल, जलवा ज़ाहर ज़हूर वखाईआ। नाता तोड़ काल महाकाल, मेहरवान आपणी गोद उठाईआ। साचा मार्ग दए सिखाल, सिख्या इक्को इक समझाईआ । लेखा चुक्के शाह कंगाल, ऊँच नीच नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा लेखा आप जणाईआ। साचा लेखा जाणे भगवान, लिख्त विच कदे ना आइंदा। कलयुग अन्त हो प्रधान, नाम प्रधानगी इक कमाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर होण हैरान, हरि का खेल समझ कोए ना पाइंदा। जुग चौकड़ी देंदे आए ज्ञान, कोटन कोटि नाम सिफ्त सालाहइंदा। दीन मज़्हब खोल्ह के आए दुकान, जगत वणजारा हट चलाइंदा। झगड़ा पाए दीन इस्लाम, इस्म आअज़म भेव अभेद ना कोए खुल्हाइंदा। कलमा नबी रसूल कर के आए कलाम, रसना जिह्वा नाअरा इक लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, अन्तिम लेखा वेख वखाइंदा। अन्तिम लेखा वेखे आप,

प्रभ वड्डा वड वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जिस दा करदे जाप, दिवस रैण ध्यान लगाईआ। शास्त्र सिमरत जिस दा करदे पाठ, वेद पुराण जिस दा ढोला गाईआ। अञ्जील कुरान जिस दा मंगण साथ, तीस बतीस पए सरनाईआ। नानक गोबिद जिस दी पाई रास, भेव अभेदा मात खुल्लाईआ। सो साहिब पुरख समराथ, लिखण पढ़न विच कदे ना आईआ। जिस दा खेल कोई ना समझे कोटन कोटि आकाशां आकाश, मण्डल मण्डप बैठे ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण निरवैर निरँकार कला धार आपणा नूर करे रुशनाईआ। आपणा नूर करे रुशना, बेपरवाह खेल खलाईआ। परवरदिगार वेस वटा, सच अमाम फेरा पाईआ। पीर पैगम्बर चार यारी वेखे थाउँ थाँ, कायनात खोज खोजाईआ। निरगुण निरगुण नालों होया जुदा, सरगुण अन्दर बैठा मुख छुपाईआ। सच इशारे नाल लए हिला, तार सितार आप हिलाईआ। महल अटल दए वसा, घर महिफ़ल इक वखाईआ। ऊँची बोल दए जणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम वेस वटाईआ। कलयुग अन्तिम वेस निरँकार, जोती जामा रूप रंग ना कोए रखाईआ। निरगुण सरगुण पावे सार, लख चुरासी खोज खोजाईआ। नव नौ वेखे वेखणहार, भज्जा फिरे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सुनेहड़ा इक्को इक दृढ़ाईआ। सच सुनेहड़ा देवे भगवन्त, भगवन आपणी दया कमाईआ। कलयुग लेखा चुक्के जीव जंत, पांधी आपणा पन्ध मुकाईआ। सतिजुग साचा बणाए बणत, साची सिख्या इक समझाईआ। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक समझाईआ। चार वरन बणाए संगत, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश मेल मिलाईआ। सर्ब जीआं प्रभ इक्को बण पंडत, ब्रह्म विद्या दए समझाईआ। वेख वखाए जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज फोल फोलाईआ। नाम अगम्मी चाढ़े रंगत, रंग रंगीला दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा रहबर इक्को नज़री आईआ। साचा रहबर बणे परवरदिगार, बेवफ़ाई रूप ना कोए वखाइंदा। सृष्ट सबाई सांझा यार, दर दर घर घर नर हरि आपणा मेल मिलाइंदा। पर्दा खोल्ह बंद कवाड़, बजर कपाटी कुण्डा लाहइंदा। साचा मन्दिर दए वखाल, शिवदुआला मट्ठ मन्दिर मस्जिद इक्को नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग मार्ग आप लगाइंदा। सतिजुग मार्ग लाए जग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। कलयुग अग्नी मेटे अग्ग, तत्ती वा रहिण ना पाईआ। कूड़ी क्रिया भाण्डा जाए भज्ज, शौह दरयाए दए रुढ़ाईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां पड़दा लए कज्ज, हँकारीआं गढ़ दए तुड़ाईआ। भगत भगवान मेले भज्ज भज्ज, काया मन्दिर अन्दर वेख वखाईआ। साची सेजा बहे सज, सुहञ्जणी

रुत्त आप महकाईआ। दरस दिखाए रज्ज रज्ज, पड़दा उहला नज़र कोए ना आईआ। उच्ची कूक बोले गज्ज, नाअरा इक्को इक सुणाईआ। आत्म परमात्म मेला सच, काया कच भाग लगाईआ। लूं लूं अन्दर जाए रच, साढे तिन्न करोड़ वज्जे वधाईआ। अमृत झिरना देवे रस, रसक बूँद इक टपकाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर हो के वस, जन भगतां सेवा आप कमाईआ। साचा नूर कर प्रकाश, अन्ध अन्धेर दए गंवाईआ। आपणा घर वखाए ख़ास, ख्वाहिश गुरमुखां पूर कराईआ। जुग जन्म जो रख के बैठे आस, तिन्नां आपणा रंग रंगाईआ। भगत भगवान दोवें कदी ना होण निरास, विछोड़ा कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग साचे भगती मार्ग इक लगाईआ। सतिजुग साचे तेरा मार्ग भगत, श्री भगवान आप जणाईआ। मिले वड्याई विच जगत, जागरत जोत होए रुशनाईआ। निरवैर पुरख निरगुण धार पुरख अकाल आया परत, जिस दा पिता ना कोए माईआ। वेद व्यास ईसा मूसा मुहम्मद नानक गोबिन्द ला के गए शर्त, धुर संदेसा इक सुणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवान होवे प्रगट, जोती जोत जोत रुशनाईआ। नाम भण्डारा खोल्हे हट्ट, दो जहान दए वरताईआ। चार वरनां देवे इक्को मत्त, ऊँच नीच नज़र कोए ना आईआ। वेखणहारा घट घट, लख चुरासी खोज खोजाईआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत, जिस आपणा अमृत जाम प्याईआ। काया खेड़ा ना होवे भट्ठ, भठ खेड़ा खेड़यां आप वसाईआ। अन्तर मेला नट्ठ नट्ठ, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोत जगाए लट लट, जगत दीवाली नैण शरमाईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा रख, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जन भगतां जुग जुग करदा पक्ख, सदा सुहेला सच्चा माहीआ। अन्दर वेखण दी खोल्हे अक्ख, दोए लोचण बंद कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच वड्याईआ। सतिजुग तेरा सज्जण सन्त, सति सतिवादी आप बणाइंदा। जिस दी महिमा सदा अगणत, लेखा लिख्त विच ना आइंदा। जिस दा आदि जुगादी इक्को कन्त, बण नारी सेव कमाइंदा। जिस दा जुग चौकड़ी साचा मंत, मन्त्र सच्चा नाम आप दृढ़ाइंदा। जिस दा नित नवित्त इक्को रंग बसन्त, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आपणी खेल कराइंदा। नर हरि खेल करे वड्ड ख़ालक, ख़लक ख़ुदाई दए जणाईआ। पुरख अबिनाशी बण के आवे सालस, दो जहानां वेख वखाईआ। लख चुरासी विचों भगत भगवान कढ्ढे ख़ालस, ख़ालस आपणा रूप समझाईआ। कूड़ी क्रिया रहिण ना देवे निंद्रा आलस, माया ममता मोह ना कोए वधाईआ। जूठ झूठ रहे ना लालच, सांतक सति दए वरताईआ। गुरमुख गुरसिख वेखे निक्के नढ्ढे बालक, बाली बुध दए समझाईआ। दिवस रैण रैण दिवस घड़ी पल रहे प्रितपालक, बण सेवक सेव कमाईआ। साची

करे इक अदालत, हुक्म साचा इक सुणाईआ। जिस दी कोई ना करे दो जहान मुख़ालफ़त, मुख़बर नज़र कोए ना आईआ। अवतार गुर पीर पैगम्बर सारे करन सफ़ारश, निउँ निउँ सीस जगदीश झुकाईआ। तेरा करदे आए तुआरफ़, तरफ़ चार कुण्ट जणाईआ। तेरी लिख के आए इबारत, कलम दवात कागज़ शाहीआ। तेरा हुक्म सुणाया तेरी माअरफ़त, महिबूब तेरी इक सरनाईआ। कलयुग दिसे ना कोई आरफ़, उल्मा करे ना कोए पढ़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी कलयुग अन्त भाग लग्गे विच भारत, भाण्डा भरम सर्ब भंनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। निरगुण दाता अगम्म अथाह, अलख अगोचर इक अख्वाइंदा। अन्तिम वेला गया आ, वेला वक्त वार थित घड़ी पल समझ कोए ना पाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी पढ़ पढ़ रहे सुणा, अन्दर वड़ के मेल ना कोए मिलाइंदा। वाक भविक्खत गुर की लिख्त सके ना कोए जणा, भेव अभेद खोल्ह ना कोए वखाइंदा। कोई कहे ब्रह्मण गौड़ा उच्चे टिल्ले पर्बत जाणा आ, पूत सपूता रूप वटाइंदा। कोई कहे ईसा कह के गया मेरा आए खुदा, मेरे पिच्छे पिच्छे फेरा पाइंदा। कोई कहे मुहम्मद गया गा, वड अमाम मैंहदी वेस वटाइंदा। कोई कहे नानक गया लिखा, कल कल्की फेरा पाइंदा। कोई कहे गुरू ग्रन्थ बणे गवाह, शास्त्र सिमरत वेद पुराण नाल रलाइंदा। श्री भगवान कहे मेरा भेव सके कोई ना पा, आदि अन्त नज़र किसे ना आइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर निक्का जिहा इशारा गए लगा, आशक हो माअशूक राह नेत्र नैण नैण तकाइंदा। आपणी खेल करे पुरख अगम्म नूर खुदा, खुदी सब दी मेट मिटाइंदा। चार वरन नव खण्ड आत्म परमात्म राह दस्से इक सिध्धा, सिधांत इक्को इक जणाइंदा। प्रभ मिलण दी निक्की जिही बिधा, पड़दा विचों द्वैत चुकाइंदा। सुरती शब्दी मिल के खुशी मनावण पावण गिध्धा, ढोलक छैणा ताल ना कोए वजाइंदा। सच प्रीती अन्दर श्री भगवान भिज्जा, भगतां इक्को भेव खुलाइंदा। लोकमात तुहाढ्ढे पिच्छे आवे भज्जा, शरम हय्या ना कोए रखाइंदा। लाह के जाए लोक लज्जा, लाअनत तबक गल नज़र ना आइंदा। जिस दुआरे साहिब सतिगुर आ के सजा, सो सज्जण गुरमुख हरि के रंग समाइंदा। पुरख पुरखोतम अन्तिम पड़दा कज्जा, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, सतिजुग साचे साची धार, लेखा लिखे आप निरँकार, लोकमात तेरा राह वखाइंदा। लोकमात तेरा राह, सो सतिगुर आप जणाईआ। शब्द गुरू स्वामी बण मलाह, बेड़ा साचा सच चलाईआ। लेखा जाणे अन्तरजामी थाँ थाँ, घट घट वेखे चाईं चाईंआ। जो जन हरि हरि जपदे नाँ, तिन्हां साचे बेड़े लए चढ़ाईआ। जो मनमुख जीव हँस होए काँ, काग वांग रहे कुरलाईआ। तिन्हां

एथे ओथे मिले कोई ना थाँ, गुर अवतार पीर पैगम्बर दिसे ना कोए सहाईआ। अन्तिम नाता तुटे पिता माँ, भाई भैण साक सज्जण सैण नार कन्त संग कोए ना जाईआ। बिन सतिगुर पूरे पकड़े कोई ना बांह, मँझधार पार ना कोए कराईआ। राए धर्म कोलों सके ना कोए छुडा, कुम्भी नरक लेख ना कोए मुकाईआ। चित्रगुप्त लहिणा सके ना कोए मुका, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। लाड़ी मौत कोलों सके ना कोई छुडा, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। काल सब नूं जाए चबा, दाढ़ां आपणीआं हेठ रखाईआ। महाकाल रोवे मारे धाह, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। लख चुरासी जीव जंत पुरख अबिनाशी घट घट वासी इक्को लओ मना, जिस मिलयां दु:ख कोए रहिण ना पाईआ। कोट जन्म दे बख्शणहार गुनाह, पतित पापी लए तराईआ। डुब्बदे पाथर पार दए करा, पाहन आपणा चरण छुहाईआ। तिस दी मन्नो सदा रज़ा, सो रहीम रहमान रहमत दए कमाईआ। साचा राम नज़री जावे आ, काहना इक्को बंसुरी नाम सुणाईआ। मोर मुक्ट सीस जगदीश लए टिका, कँवल नैण नैण मटकाईआ। सुरती शब्दी मेला लए मिला, जोड़ी जोड़े एका थाईंआ। पारब्रह्म ब्रह्म लहिणा देणा दए चुका, बाकी रहिण किछ ना पाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक दूजे विच जाए समा, जोती जोत जोत समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग मार्ग इक जणाईआ। सतिजुग मार्ग लग्गे मात, मात्र भूमी मिले वड्याईआ। चार वरन बणे इक जमात, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश खुशी मनाईआ। कलयुग मिटे अन्धेरी रात, साचा नूर करे रुशनाईआ। श्री भगवान देवे आपणी दात, नाम निधान झोली पाईआ। नेत्र खोल्ह के वेखो आंख, आख़र आपणा पड़दा लाहीआ। नज़री आए घर प्रतख, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। भगत भगवान मेल मिला पुरख समरथ, समरथ आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, देवणहारा साचा वर, चार वरन इक्को सरन, लेखा चुक्के मरन डरन, भय भ्यानक कूड़ा भउ ना कोए वखाईआ। कूड़ा भउ जाए चुक, सतिगुर पूरा दया कमाईआ। आवण जावण पैंडा जाए मुक, लख चुरासी फंद कटाईआ। हरि का बूटा कदे ना जाए सुक्क, अमृत सिंच हरा कराईआ। मात गर्भ होए ना उलटा रुख़, दस दस मास ना अग्न तपाईआ। जन्म कर्म दी लाहे तृष्ना भुक्ख, अमृत आत्म जाम प्याईआ। मेहरवान हो के आपणी गोदी लए चुक, बाल अञ्याणा आप उठाईआ। पारब्रह्म कहे ब्रह्म आ मेरे साचे सुत, मिल मिल आपणी ख़ुशी मनाईआ। सच दुआरे सोहे साची रुत्त, रुत्त रुतड़ी नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे देवणहार वड्याईआ। देवे वड्याई आप प्रभ, मेहरवान दया कमाइंदा। सन्त सुहेले साचे लभ्भ, दर घर साचे आप बहाइंदा। इक वखाए विशव यद, विष्नूं सच्ची सेव कमाइंदा।

जगत दुआरा पार हद्द, गृह मन्दिर इक सुहाइंदा। शब्द अगम्मी नाद रिहा वज्ज, अनहद रागी राग सुणाइंदा। बिन मक्के काअब्यो कराए साचा हज्ज, हज़रत हुजरा इक्को इक सुहाइंदा। अमृत जाम प्याए मध, मधुर रस इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान आपणे घर सद्द, सदके वारी घोली घोल घुमाइंदा। घोली घोल घुमाई जाए घुल, प्रभ आपणा आप लैणा मनाईआ। भगत भगवान प्रगटाए सच फुल्ल, पत डाल्ही पंखड़ी आप महकाईआ। लख चुरासी विचों उत्तम कुल्ल, हरिजन साचे लए बणाईआ। करता कीमत पावे मुल, दूजे हट्ट ना कोए विकाईआ। साचे कंडे जाइण तुल, तोला इक्को नज़री आईआ। माणस जूए ना जावण हुल्ल, जिन्हां मिल्या बेपरवाहीआ। पिछले जन्म जो रहे भुल्ल, कलयुग अन्तिम आपणा रंग रंगाईआ। सच दुआर गया खुल्ह, ख़ालक ख़लक दए समझाईआ। कलयुग जीव माया कूड़ी विच ना रुल, अनमुलड़ा लाल माटी ख़ाक ना दे रुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, श्री भगवान सदा सुल्हाकुल, गुस्सा गिला कदे ना किसे रखाईआ। गुस्सा गिला कोए ना रोसा, होछा रूप ना हरि रखाइंदा। सोचयां किसे विच ना आवे सोचा, सोच समझ तों बाहर डेरा लाइंदा। जुग चौकड़ी गुर अवतार बण के माणस जन्म देवे सब नूं मौका, मुकम्मल आपणा हाल सुणाइंदा। सतिगुर पूरा किसे ना देवे कदे धोखा, जगत फ़रेब ना कोए जणाइंदा। प्रेम प्रीती अन्दर राह मार्ग दस्से सौखा, घाट इक्को इक जणाइंदा। जो जन कूड़ी नींद गूढ़ी सुते बेमुख हो के लावण ढौंका, तिन्हां नेत्र नैण अक्ख ना कोए खुल्हाइंदा। सो प्राणी जाए अन्तिम औंता, पुत्त पोतरा संग ना कोए निभाइंदा। श्री भगवान वड मेहरवान सदा निगहबान जिस राव्या नाल शौका, तिन्हां साख्यात नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सन्त सुहेले साचे फड़, जन भगतां अन्दर आपे वड़, साचे मन्दिर सतिगुर खड़, नाम निधाना इक्को पढ़, साचा ढोला सुणाए राग, आत्म परमात्म खोल्हे जाग, इक उपजाए सच वैराग, मेल मिलावे कन्त सुहाग, घर वड्याई वड्डा भाग, विछड़यां मिल्या प्रभ ग़रीब निवाज़, एथे ओथे रखे लाज, दो जहानां दुःख नज़र कोए ना आईआ।

✪ ६ अस्सू २०२० बिक्रमी आज्ञा सिंघ दे गृह फ़िरोजपुर ✪

सतिगुर मेला सुफल जन्म, कर्म कांड दुःख रोग रहिण ना पाइंदा। माणस देही मिटे भरम, भाण्डा भरम भउ भंनाइंदा। निरगुण नूर जोत देवे अगम्मी किरन, अज्ञान अन्धेरा अन्ध मिटाइंदा। सच सरनाई देवे सरन, सरनगति इक समझाइंदा।

भय चुकाए मरन डरन, भउ आपणा इक वखाइंदा। लेखा चुकाए वरन बरन, आत्म ब्रह्म सर्ब वखाइंदा। देवे वड्याई उपर धरन, धरनी धरत धवल सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आपणे रंग रंगाइंदा। सतिगुर मिलयां सति सन्तोख, चिन्ता ग़म रहिण ना पाइंदा। जन्म कर्म दा मिटे विजोग, दूई द्वैत डेरा ढाइंदा। मेल मिलाए धुर संजोग, कूड़ विछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। हउमे हंगता कटे रोग, हँ ब्रह्म इक समझाइंदा। तन नगारे लाए चोट, अनहद नादी नाद सुणाइंदा। कर प्रकाश निर्मल जोत, घर घर विच दीवा बाती आप टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, तिस भेव अभेद खुलाइंदा। सतिगुर मिलयां आत्म सुख, घर वज्जे नाम वधाईआ। जगत तृष्ना मिटे भुक्ख, आसा मनसा पूर कराईआ। मात गर्भ दा लेखा चुक्के उलटा रुख, आवण जावण फंद दए कटाईआ। साची गोदी दीन दयाल चुक्क, घर साचे दए बहाईआ। लख चुरासी विचों उजल मुख, दुरमति मैल मैल धवाईआ। लोकमात दा बूटा पुट, सचखण्ड दवारे दए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, तिस एथे ओथे होए सहाईआ। सतिगुर मिलयां मिटे संताप, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। नज़री आए आपा आप, आप आपणा वेख वखाईआ। गीत गोबिन्द जणाए सच्चा जाप, सोहला ढोला राग अलाईआ। मेट मिटाए तीनों ताप, त्रैगुण डेरा देवे ढाहीआ। नज़री आए साख्यात, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। अन्तर आत्म परमात्म पूरी करे ख्वाहिश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, तिस अन्तर आत्म वेख वखाईआ। सतिगुर मिलयां मिले सांत, अग्नी तत रहिण ना पाईआ। नज़री आए इक इकांत, अक्ल कलधारी बेपरवाहीआ। अन्दर वड़ के काया मन्दिर पौड़े चढ़ सुणाए बात, शब्द अनादी धुन शनवाईआ। कूड़ी क्रिया मेट मिटाए अन्धेरी रात, निरगुण नूर दीपक जोत साचा चन्द करे रुशनाईआ। पार उतारे आपणे घाट, पत्तण बैठा बेपरवाह इक्को माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देवे नाम वर, हरिजन लेखा आप जणाईआ। सतिगुर मिलयां सच्चा मीत, मित्र प्यारा दए वड्याईआ। घर स्वामी आए ठीक, ठाकर ठोकर नाम लगाईआ। मन वासना लए जीत, मति बुध ना कोए चतुराईआ। काया करे ठंढी सीत, अमृत मेघ इक बरसाईआ। चरण प्रीती देवे सच प्रीत, परम पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मिल गुरमुख गुर गुर खुशी मनाईआ। सतिगुर मिलयां आत्म रंग, रंग रंगीला इक चढ़ाईआ। दिवस रैण अट्ठे पहर वज्जे मृदंग, नाद अनादी आप सुणाईआ। नौ दुआरे वेखे लँघ, घर दसवें बूझ बुझाईआ । होए प्रकाश बिन सूरज चन्द, जोती जोत डगमगाईआ। निज आत्म आवे इक अनन्द, सुख सागर रूप समाईआ। गीत सुहागी गाए

५५६
१५

छन्द, सोहँ राग अलाईआ। सेज सुहञ्जणी सुहाए पलँघ, पावा चूल नज़र कोए ना आईआ। मेल मिलाए सूरा सरबँग, सतिगुर दाता बेपरवाहीआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत हरि स्वामी लाए अंग, अंगीकार आप अख्वाईआ। जन्म कर्म दी टुट्टी देवे गंढु, बन्धन इक्को इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे लए जगाईआ। सतिगुर मिलयां खुल्हे सुरती, आलस निंद्रा दए मिटाईआ। नज़र आए अकाल मूर्ती, मूर्त अकाल आप दरसाईआ। नाम निधान वज्जे नाद तूरती, तुरिया सेवा लाईआ। सदा सदा सद आसा पूरती, आसा पूरन हरि अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन लेखा लेखे लाईआ । सतिगुर मिलयां अन्तर ठंढ, बाहर अग्न ना कोए तपाईआ। भरम भुलेखा दूई द्वैती ढाहे कंध, घर इक्को नज़री आईआ। सति सरूपी रंगे रंग, जोती जलवा नूर रुशनाईआ। धुरदरगाही वज्जे मृदंग, तन्दी तन्द सतार नज़र कोए ना आईआ। आत्म मंगे इक्को मंग, परमात्म मेल मिलाईआ। परमात्म सुणावे आपणा छन्द, साचा भेव चुकाईआ। तूं मेरे मैं तेरा सोहँ नाउँ इक अनन्द, अनन्द अनन्द विचों प्रगटाईआ । माणस जन्म ना होवे भंग, अन्तिम आपणे लेखे पाईआ। धर्म दुआर गुरमुख वेखणा लँघ, गृह मन्दिर डेरा लाईआ। नज़री आए साहिब सरबँग, भूपत भूप सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा नाम वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, गुरमुख जुग जन्म दे विछड़े मेले आण, विछोड़ा आपणी झोली पाईआ।

✪ ६ अस्सू २०२० बिक्रमी धर्म सिँघ दे गृह बस्ती हबीब ज़िला फिरोज़पुर ✪

सतिगुर सरनाई जो जन लग्गा, हरि सतिगुर तोड़ निभाइंदा। मानस जन्म सौरे पिच्छा अग्गा, दो जहानां दया कमाइंदा। धर्म दुआरे नाद इक्को वज्जा, सति सतिवादी आप सुणाइंदा। श्री भगवान फिरे भज्जा, सन्त सुहेले वेख वखाइंदा। निरगुण हौ के रखे लज्जा, सरगुण मेहर नज़र उठाइंदा। अन्दर वड़ के देवे नाम सद्दा, बाहरों आवाज़ ना कोए लगाइंदा। सच कराए इक्को हज्जा, मक्का काअबा भेव चुकाइंदा। पंज तत काया चोला पड़दा कज्जा, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जगत दुआर पार कराए हद्दा, कूड़ी क्रिया डेरा ढाइंदा। नाम चढ़ाए इक्को रंगा, रंग चलूल इक वखाइंदा। पंज विकार ना करे जंगा, मृदंगा आपणा नाम सुणाइंदा। लेखा जाणे हँ ब्रह्मा, पारब्रह्म प्रभ आपणा पड़दा लाहइंदा। चार वरन सच जणाए धर्मा, ऊँच नीच राउ रंक भेव मिटाइंदा। निहकर्मी करे आपणा कर्मा, कर्म कांड सर्ब गवाइंदा । भाण्डा भरम भउ भंनाए

भरमा, जूठा झूठा डेरा ढाइंदा। लोक लाज ना कोई शरमा, जिस सतिगुर पूरा नज़री आइंदा। लहिणा देणा चुकाए मरना डरना, जीवण मुक्त आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे नाम वर, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। सतिगुर चरण जो रखे ओट, नेत्र नैण ध्यान लगाईआ। सतिगुर पूरा पंज तत काया कढ्ढे खोट, अज्ञान अन्धेर दए चुकाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, साचा नूर करे रुशनाईआ। आसा पूरी करे लोचण लोच, तृष्ना तृखा दए गंवाईआ। लेखा चुक्के हरख सोग, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। आत्म परमात्म दे इक्को जोग, साची सिख्या सिख समझाईआ। आत्म रस लैणा भोग, हरि भोगी आपणा भेव चुकाईआ। जन्म कर्म दा चुकाए विजोग, बण संजोगी मेल मिलाईआ। भाग लगाए काया कोट, साढे तिन्न हथ्थ सोभा पाईआ। नाम निधाना वज्जे चोट, सच नगारा इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त नाम वरताईआ। सतिगुर सरन जो करे ध्यान, निज नेत्र नैण ध्यान लगाईआ। साहिब सतिगुर हो मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। धुर दा मन्त्र देवे इक ज्ञान, साचा नाम करे पढ़ाईआ। अन्तर आत्म सच अशनान, सच सरोवर इक नुहाईआ। काग हँस रूप बण जाण, बुध बबेक आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन वेखे थाउँ थाईंआ। सतिगुर चरण सच सहारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दए वड्याईआ। तक्कदे रहे गुरू अवतारा, पीर पैगम्बर ध्यान लगाईआ। भगत मंगदे रहे सदा दुआरा, नित नित ख़ाली झोली रहे वखाईआ। सन्त सज्जण करदे रहे पुकारा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। गुरमुख दोए दोए जोड़ करदे रहे निमस्कारा, चरण कँवल सीस झुकाईआ। गुरसिख धूढ़ी टिक्का मस्तक लाउँदे रहे छारा, साची ख़ाक ख़ाक रमाईआ। नेत्र रोंदे रहे ज़ारो ज़ारा, नैणां नैणां नीर वहाईआ। किरपा कर बेऐब परवरदिगारा, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। तुध बिन नज़र ना आए कोई किनारा, नईया डोले जगत लोकाईआ। डूंग्घा सागर वहिंदी धारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, तिस लेखा लए मुकाईआ। सतिगुर चरण सच प्रीत, बिन सतिगुर सति नज़र किसे ना आईआ। आदि जुगादी धुर दी रीत, भगत भगवान दए वरताईआ। आत्म परमात्म सुणावे साचा गीत, सति सतिवादी आपणी बूझ बुझाईआ। काया काअबा शिवदुआला मठ्ठ वखाए मसीत, गुरुदुआरा इक्को नज़री आईआ। जिस घर निरगुण रूप हरि वसे आप अनडीठ, निरगुण नज़र किसे ना आईआ। सो सतिगुर पूरा मन वासना लए जीत, बुध विवेक इक कराईआ। गुरमुखां चलाए आपणी रीत, साचा मार्ग इक समझाईआ। गुरमुख गुरसिख ढोले गाओ हरि गोबिन्द गीत, लोक लज्जया कम्म किसे ना आईआ। धुर दरबार दी मिले साची भीख, भिच्छया हरि जू आप

वरताईआ। करे खेल बैठ अतीत, त्रैगुण डेरा रिहा ढाहीआ। लेखा जाणे हस्त कीट, ऊँच नीच वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा नाम वर, साची वस्त झोली पाईआ। सतिगुर सरन चरण गुरदेव, दो जहान मिले वड्याईआ। धाम वखाए इक निहकेव, निहचल आपणा पड़दा लाहीआ। अमृत आत्म देवे मेव, रस सच्चा इक चखाईआ। रसना जिह्वा आत्म परमात्म ढोला गाए जिह्व, बत्ती दन्द नाल रलाईआ। सतिगुर पूरा लेखे लाए गुरमुख कीती सेव, सेवक सेवा विच समाईआ। अन्दर वड़ के दस्से भेव, सच प्रीती इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा नाम वर, सच संदेसा इक सुणाईआ। सतिगुर चरण साची धूढ़, दुरमति मैल धवाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, माया ममता मोह चुकाईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़, साची सिख्या इक समझाईआ। हउमे हंगता गढ़ तोड़े ग़रूर, निवण-सो-अक्खर इक पढ़ाईआ। अमृत आत्म देवे सति सरूर, साची मध नाम जाम प्याईआ। पंच विकारा करे चूर, खण्डा खड़ग खड़ग चमकाईआ। नज़री आए हाज़र हज़ूर, हरि जू आपणा वेस वटाईआ। पूरब जन्म सतिगुर लहिणा दए ज़रूर, लेखा सब दा रिहा चुकाईआ। कलयुग जीवां नहीं कसूर, श्री भगवान नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जन भगतां आसा मनसा करे पूर, जन्म जन्म दी तृष्ना मेट मिटाईआ। पन्ध मुका के नेड़ा दूर, ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सतिगुर सरनाई वड प्रताप, निरगुण सरगुण आप जणाइंदा। परम पुरख प्रभ साचा बाप, भगत भगवान वेख वखाइंदा। आत्म परमात्म दस्से सच्चा जाप, निरगुण सरगुण आप पढ़ाइंदा। कोट जन्म उतारे पाप, दुरमत मैल धवाइंदा। चरण कँवल बंधाए नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। चार वरन बणाए इक जमात, साची पट्टी नाम समझाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रसना जिह्वा बोल गए आख, आखर आपणा भेव खुल्हाइंदा। निरगुण निरवैर पुरख अकाल दीन दयाल प्रगट हो के साख्यात, गुरमुख सज्जण आप जगाइंदा। कलयुग मेट अन्धेरी रात, घर साचा नूर चन्द चमकाइंदा। दिवस रैण पुछे वात, आलस निंद्रा डेरा ढाइंदा;। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे साचा वर, तिस आपणा रंग रंगाइंदा। सतिगुर चरण मिले गोबिन्द, ठाकर इक्को नज़री आईआ। गुरसिख मिटे कूड़ी चिन्द, चिन्ता चिखा रहिण कोए ना पाईआ। अमृत धार वहे सागर सिन्ध, हरिजन सज्जण तारीआं लाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी मनमुख करदे सदा निन्द, निन्दया निन्दक झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। साची सिख्या सतिगुर सज्जण, हरि करता आप जणाईआ। चरण धूढ़ी प्रभ करो मजन,

दुरमति मैल रहिण ना पाईआ। दूजे दर ना जाओ लभ्भण, घर घर विच वसे बेपरवाहीआ। नित नवित्त जन भगतां आवे सद्दण, अन्दर वड़ के होका देवे वाहो दाहीआ। रूप धराए अकाल मूर्ती मदन, मोहण माधव आपणी खेल कराईआ। दीपक जोती निरगुण जगण, नूरो नूर करे रुशनाईआ। अनहद अनादी नाद ताल वज्जण, शब्द धुन सच्ची शनवाईआ। गुरमुख अमृत पी पी रज्जण, सतिगुर नाम प्याला हथ्थ फड़ाईआ। कूड़ी क्रिया कूड़ कुड़यारे मच्चण, त्रैगुण अग्नी इक लगाईआ। पंच विकारे अन्दर नच्चण, डौरु डंका जूठ झूठ वजाईआ। माया ममता नाल हस्सण, आसा तृष्ना नाल रखाईआ। गुरमुख विरले प्रभ सरनाई साची वसण, जिन्हां मिल्या बेपरवाहीआ। सच दुआरे उठ उठ नट्ठण, भज्जण वाहो दाहीआ। लख चुरासी विचों सतिगुर छाछ वरोले मक्खण, नाम मधाणा इक्को पाईआ। मेहरवान हो के जगत किनारा वेखे पत्तण, दरया कन्ढा फोल फुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। मझधार ना कोई दरया, पाणी जल ना कोए रुढ़ाइंदा। अग्नी तत ना कोए तपा, माया मोह ना कोए वखाइंदा। हउमे हंगता गढ़ ना कोए सुहा, बंक दुआरा नज़र कोए ना आइंदा। साहिब सतिगुर शब्द स्वामी जिस आत्म परमात्म मिल्या आ, तिस मातम रूप ना कोए वटाइंदा। डुबदे पाहन लए तरा, पाथर आपणा चरण छुहाइंदा। उच्चे टिल्ले पर्बत वेख वखा, डूंग्घी कन्दर खोज खोजाइंदा। साचे बेड़े लए चढ़ा, नईया इक्को नाम वखाइंदा। चप्पू अगम्मी दए लगा, सच सहारा इक बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। हरिजन साचे वेखे नेत्र खोल्ह, ख़ालक ख़लक विच समाईआ। तोलणहारा साचा तोल, नाम तराज़ू कंडा हथ्थ उठाईआ। आत्म परमात्म सब दी लए फोल, पारब्रह्म ब्रह्म पड़दा भेव उठाईआ। साचे भगतां वसे सदा कोल, अन्दर वड़ के बैठा डेरा लाईआ। साचा नाम सुणाए बोल, नाउँ निरँकारा इक जणाईआ। लख चुरासी जीव जंत रहे अनभोल, बिन हरिजन नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बख्शे सरन इक सरनाईआ। सच सरनाई सतिगुर देव स्वामी, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। बेपरवाह अगम्म अथाह दीन दयाल अन्तरजामी, हर घट वेखे थाउँ थाईंआ। बोध अगाध शब्द नाद धुन आत्मक सुणाए सच्ची बाणी, सोहँ ढोला राग अल्हाईआ। लेखा जाणे चार खाणी, चारों कुण्ट भेव चुकाईआ। चार युग दी साची राणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी हुक्मे अन्दर आप फिराईआ। अठसठ वेखे तीर्थ पाणी, जल सरोवर फोल फुलाईआ। लेखा जाणे शास्त्र सिमरत वेद पुराणी, अञ्जील कुरानी लेखा रिहा चुकाईआ। बोध अगाधा शब्द अनादा ब्रह्म ब्रह्मादा सतिगुर पूरा पंडत वड विद्वानी, चौदां विद्या लेखा रिहा चुकाईआ। धुर संदेसा नर नरेशा

नर निरँकार सुणाए आपणी अकथ कहाणी, रसना जिह्वा कोई कह सके ना राईआ। धर्म दुआर हरि करतार जोत उज्यार देवे इक निशानी, सच निशाना धर्म वखाईआ। चरण कँवल उपर धवल देवणहारा पद निरबाणी, घर मन्दिर इक्को इक वखाईआ । गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत गुर सतिगुर सद विटुह कुरबानी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दरगाह साची धाम सुहाईआ। डूंग्घा सागर नदी नाला, दरया घाट वेख वखाइंदा। आदि जुगादी हरि प्रितपाला, प्रितपालक आपणी सेव कमाइंदा । जन भगतां अन्तर आत्म साची पाए अगम्मी माला, मन का मणका आप भवाइंदा। बजर कपाटी खोल्ले ताला, दूई द्वैत मेट मिटाइंदा। मेटे रैण अन्धेरा काला, जोती चन्द नूर चमकाइंदा। साचा मार्ग दस्स सुखाला, फड़ राहे आपे पाइंदा। अन्दर वड़ के चले नाला, डूंग्घी भँवरी पार कराइंदा। घर विच घर वखाए सच्ची धर्मसाला, दस्म दुआरी आसण लाइंदा। ओथे लेखा चुक्के शाह कंगाला, ऊँच नीच नज़र कोए ना आइंदा। मुरीद मुर्शद पुछे हाला, मुर्शद मुरीद दया कमाइंदा। करे खेल हरि गोपाला, गोबिन्द आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा बेड़ा पार कराइंदा। सतिगुर सरनाई डुब्बे ना बेड़ा, मँझधार नज़र कोए ना आईआ। सद वसदा रहे मन्दिर खेड़ा, घर वज्जे नाम वधाईआ। जन भगतां चुक्के जगत झेड़ा, झूठी करे ना कोए लड़ाईआ। इक्को ढोला गाए तूं मेरा मैं तेरा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। पुरख अबिनाशी करे मेहरा, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नैण उठाईआ। हकीकत करे हक़ नबेड़ा, लाशरीक नूर खुदाईआ। सीस जगदीश बन्न्हे सेहरा, साचा सगन इक मनाईआ। अन्तिम लै के जाए आपणे वेहड़ा, सचखण्ड साचे दए बहाईआ। जन्म कर्म आवण जावण लख चुरासी जम की फाँसी चुक्के झेड़ा, मात गर्भ लेखा रहिण कोए ना पाईआ। प्रभ चरण सरन लग्गे सच्चा डेरा, घर इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सदा सदा होए सहाईआ। चरण प्रीती लग्गे जन, जन जननी मिले वड्याईआ। लेखे लग्गे पंज तत तन, तन माटी अग्नी खाक ना कोए रलाईआ। साचा राग सुणे कन्न, सो सतिगुर आप सुणाईआ। मन का मणका फेरे मन, मन वासना दए खपाईआ। घर प्रकाश चाढ़े चन्न, चन्द नूर रुशनाईआ। भेव खुल्लाए नेत्र अन्न्हे, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। पंच विकारा देवे डंन, डंका इक्को नाम सुणाईआ। कर किरपा ठाकर गुरमुख पाए ठंढ, ठोकर आपणा नाम लगाईआ। लेखा चुकाए सृष्ट सबाई कोट ब्रह्मण्ड, पारब्रह्म प्रभ बख्शे इक सरनाईआ। निज आत्म परमात्म गुरमुख लैणा अनन्द, दूजी वासना नेड़ कोए ना आईआ। जगत दरिया पार किनारा जाणा लँघ, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। सतिगुर पूरा जिस दे संग, तिस नईया सके ना कोए डुबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच मार्ग इक दृढ़ाईआ। चरण गुरु गुर साचा बन्धन, हरि बंदगी नाम जणाइंदा। मस्तक टिक्का लाए चन्दन, दुरमति मैल धवाइंदा। कूड़ी क्रिया करे खण्डन, खण्डा नाम उठाइंदा। सुरत सवाणी ना होए रंडन, शब्द स्वामी कन्त मिलाइंदा। देवे ओढन होए ना नंगन, नाम दोशाला हथ्थ उठाइंदा। गुरमुख गुरसिख भगत आदि जुगादि कदे ना संगण, लोक लज्जया विच कदे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुखां गुर गुर इक बुझाइंदा। गुरमुख साची सिख्या सच विचार, श्री भगवान आप जणाईआ। सांझा सब नाल करो प्यार, दूई द्वैत ना कोए रखाईआ । हिरदा सीतल सति शांत करो वसाल, गहर गम्भीर रूप वटाईआ। जे कोई चंगा मंदा बोले कढ्ढे गाल, तिस आखो वाहवा मेरे भाईआ। तेरे उपर जिस वेले मेरा साहिब होए दयाल, तेरी होछी मति दए गंवाईआ। उठ के वेख आपणी काया मन्दिर अन्दर धर्मसाल, तेरा सतिगुर तैथों बैठा मुख छुपाईआ। कूड़ी क्रिया होइउँ क्यों बेहाल, बेहबल हो के मारें धाहीआ। पारब्रह्म दा ब्रह्म सरूप तूं निक्का छोटा लाल, मूर्ख तैनूं आपणी सुरत समझ ना आईआ। मन वासना पाया जाल, त्रैगुण घेरा रही पाईआ। उठ वेख सब दे सिर ते कूके काल, जिस प्यो दादा रहिण दित्ता कोई ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुखां साची सिख्या इक समझाईआ । चरण कँवल प्रभ साचा रंग, रंग राता आप रंगाईआ। आत्म सेजा दए पलँघ, बसन्ती रुत्त सुहाईआ। उठ सखी गुरमुख गा छन्द, तेरा प्रीतम वेखण आईआ। जगत रंडेपा चुक्के रंड, कन्त सुहागी सुहागण रूप वखाईआ। निज आत्म वेख अनन्द, जग रसना रस दे तजाईआ। तेरे अन्दर सचखण्ड, सतिगुर बैठा सोभा पाईआ। उच्ची कूक पा डण्ड, प्रभ मिल्या बेपरवाहीआ। पिछली भरम भुलेखे गई हंढु, अगली लेखे आपणी लाईआ। रसना जिह्वा कूड़ी क्रिया तज गंद, सच सुगंधी तेरे विच दए भराईआ। घर सज्जण मिल के गाउणा छन्द, बाहरों करे ना कोए पढ़ाईआ। किरपा करे सूरा सरबँग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जो कन्ढुा कन्ढी दर दरया अन्दर आया लँघ, सो मलाह बेड़ा खेड़ा पार कराईआ। खुशीआं नाल माणो अनन्द, अनन्द सतिगुर चरण सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच प्रीती सृष्ट सबाई रिहा जणाईआ।

✪ ६ अस्सू २०२० बिक्रमी सुरजण सिँघ दे गृह फ़िरोज़पुर ✪

सो पुरख निरँजण कहे सुण शब्द सुत दुलार, बेपरवाह हुक्म जणाइंदा। हरि पुरख निरँजण कहे मेरे लाडले लाल,

५६२
१५

तेरा खेल इक वखाइंदा। एकँकार कर सच प्यार, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। आदि निरँजण कर उज्यार, सच प्रकाश इक वखाइंदा। श्री भगवान कर ख़बरदार, सच संदेसा इक सुणाइंदा। अबिनाशी करता हो मेहरवान, मेहर नज़र आप उठाइंदा। पारब्रह्म प्रभ कर ध्यान, सच ध्यान इक बुझाइंदा। सचखण्ड निवासी खेल करे महान, महिमा अकथ कथ जणाइंदा। थिर घर मन्दिर खोल्ह दुकान, सच दरवाज़ा आप जणाइंदा। उठ नढ्ढे नौजवान, बल तेरा तेरे विच रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे सुत शब्द हुक्म सुणाइंदा। शब्द सुत कहे मेरे भगवान, प्रभ तेरी ओट तकाईआ। हउँ बालक बाली बुध अंजाण, तेरा भेव कोई ना आईआ। तेरे चरण कँवल रखां इक ध्यान, मंगां सच्ची सरनाईआ। सदा सदा सद रहिणा निगहबान, मेहर नज़र उठाईआ। देवणहारे धुर फ़रमान, तेरा हुक्म मोहे भाईआ। सेवा करां सच महान, बण सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। शब्द दुलारे साचा सुत, सो साहिब आप जणाईआ। वेखे खेल अबिनाशी अचुत, तेरी धार धार प्रगटाईआ। सच सुहञ्जणी सुहाए रुत्त, रुतड़ी आपणे नाल महकाईआ। थिर घर दुआरयों पैणा उठ, साचा मन्दिर इक सुहाईआ। ठाकर दयाल स्वामी रिहा तुठ, सिर तेरे हथ्थ रखाईआ। सति दुआरे ना बहिणा लुक, प्रगट हो नाद वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक सुणाईआ। सुत दुलारा करे निमस्कार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। हउँ बाला तेरा बरखुरदार, सद साची सेव कमाईआ। हुक्म कर एका वार, एकँकार तेरी सरनाईआ। शाह पातशाह सच्ची सरकार, राज राजान तेरी वड वड्याईआ। मैं होवां ख़बरदार, आलस निंद्रा नज़र कोए ना आईआ। नेत्र नैण लवां उग्घाड़, अक्ख प्रतख इक खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी ओट रखाईआ। श्री भगवान कहे सुण साचे बाल, सो सतिगुर आप जणाईआ। नेत्र खोल्ह मार ध्यान, दो जहान रिहा वखाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां कर पहचान, आप आपणा फेरा पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दे ज्ञान, धुर संदेसा इक सुणाईआ। त्रैगुण माया होई नादान, फड़ बाहों दे हिलाईआ। पंज तत होया शैतान, शरअ करे जगत लड़ाईआ। लख चुरासी कूड़ी क्रिया होई दुकान, साचा हट्ट ना कोए खुल्हाईआ। तेई अवतार मंगण दान, ख़ाली झोली रहे वखाईआ। भगत अठारां सर्ब कुरलाण, उच्ची कूकण मारन धाहींआ। ईसा मूसा मुहम्मद होए हैरान, धीरज धीर नज़र कोए ना आईआ। नानक गोबिन्द दोए जोड़ करे प्रणाम, सीस जगदीश इक झुकाईआ। जीव जंत भरमे भुल्ला सर्ब जहान, नौ खण्ड पई दुहाईआ। सत दीप फिरे शैतान, काम क्रोध लोभ मोह हँकार होए हल्काईआ। माण तुटा शास्त्र सिमरत वेद

पुराण, साचा भय सिर ना कोए रखाईआ। गीता ज्ञान सके ना कोए पहचान, अट्ठ दस पड़दा कोए ना लाहीआ। अञ्जील कुरान नैण शरमाण, कलमा हक़ ना कोए पढ़ाईआ। खाणी बाणी चारों कुण्ट दहि दिशा वेखे मार ध्यान, सांझा यार नज़र कोए ना आईआ। दीन मज़्ह़ब ज़ात पात चार वरन हुन्दे दिसण वैरान, वैरी घर घर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक सुणाईआ। सुत दुलारा दोए जोड़, प्रभ चरण सीस झुकाइंदा। साहिब स्वामी तेरी लोड़, दूजी ओट ना कोए रखाइंदा। साचे चढ़ां अगम्मी घोड़, वागां आपणे हथ्थ रखाइंदा। दो जहान वेखां दौड़, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल, ज़िमीं असमान खोज खोजाइंदा। लख चुरासी रीठा वेखां मिट्ठा कौड़, घर घर अन्दर फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस निवाइंदा। शब्द सुत उठ बल धार, प्रभ अबिनाशी आप जणाईआ। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, कलयुग अन्तिम वेला आईआ। नौ खण्ड पृथ्मी धूंआँधार, सत सति करे ना कोए रुशनाईआ। जूठ झूठ चार कुण्ट भरे भण्डार, सच सुच वस्त नज़र कोए ना आईआ। जीव जंत साध सन्त घर घर करन विभचार, धीरज जत ना कोए रखाईआ। गुर का शब्द सके ना कोए विचार, हिरदे हरि ना कोए ध्याईआ। आदि अन्त नूर ना कोए उज्यार, चतुर्भुज सीस ना कोए झुकाईआ। राम करे ना कोए प्यार, साची बंसुरी नाम ना कोए वजाईआ। काहना नज़र ना आए विच संसार, मोर मुक्ट नेत्र नैण पेख कोए ना पाईआ। मूसा करे ना कोई गुफ़तार, गुफ़त शुनीद भेव ना कोए चुकाईआ। ईसा कहे ना कोई पुकार, जलवा नूर ना कोए खुदाईआ। मुहम्मद रोवे धाहां मार, चार यारी पल्लू गई छुडाईआ। नानक निरगुण करे पुकार, सोहला ढोला राग सुणाईआ। गोबिन्द मंग के गया मंग इक्को वार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। चार लख लहिणा चुक्कणा बत्ती हज़ार, कर्म कांड गेड़ा देणा गंवाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान कोई ना पावे सार, महासार्थी नज़र कोए ना आईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ धूंआँधार, निरगुण नूर जोत ना कोए रुशनाईआ। अठसठ तीर्थ सोहे ना कोए ताल, अमृत रस नज़र कोए ना आईआ। त्रैगुण माया तोड़ ना सके कोई जंजाल, पंज तत करे ना कोए रुशनाईआ। सृष्ट सबाई होई अन्त बेहाल, साचा रूप नज़र कोए ना आईआ। सब नूं भुल्लया दीन दयाल, दीनां नाथ साचा संग ना कोए रखाईआ। उठ जवान वेख कलू काल, कलकाती रूप कसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द सुत इक जणाईआ। शब्द सुत झुकाए सीस, प्रभू तेरी इक सरनाईआ। किरपा कर सच्चे जगदीश, जगदीशर तेरी ओट रखाईआ। तेरे छत्र सोहे सीस, दो जहान वज्जे वधाईआ। मैं वेखां जा के कलयुग

रीत, दो जहानां फेरा पाईआ। चारों कुण्ट फोल फोलावां सच हदीस, कलमा नबी रसूल कवण पढ़ाईआ। लख चुरासी परखां जा के नीत, घट घट अन्दर आपणा डेरा लाईआ। भेव चुकावां ठाकरदवारा मन्दिर मसीत, गुरुदुआर बचया रहिण कोए ना पाईआ। जिस घर जिस गृह जिस मन्दिर दिसे पलीत, तिस पाकी पाक रूप वटाईआ। सेवा करां जा के ठीक, ठाकर तेरे नाम दयां दुहाईआ। तेरे हुक्म अन्दर कलयुग अन्तिम भुगतण जावां इक तरीक, सच अदालत इक लगाईआ। कूड़ी क्रिया रहिण ना देवां तेरा कोई शरीक, जूठा झूठा डेरा देवां ढाहीआ। मेरी धार नज़र ना आए किसे बारीक, जगत नेत्र पेखण कोए ना पाईआ। साची दस्सां इक प्रीत, प्रीतम इक्को इक समझाईआ। तेरा नाउँ सुणावां ढोला गीत, गोबिन्द तेरी सिफ्त सालाहीआ। तेरे दर तों लै के जावां भीख, साची भिच्छया झोली आप भराईआ। तूं बैठा वेखें अतीत, त्रैगुण तेरी तेरी रचन रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। उठ सुत छेती जा, सो साहिब आप जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे पल्लू रहे छुडा, संगी नज़र कोए ना आईआ। कलयुग जीव हरि का नाउँ चार वरन गए भुला, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाईआ। जलवा नूर ज़हूर हज़ूर दए ना कोए दरसा, पड़दा चुक्क मुख नक़ाब, साबत सूरत सच ना कोए जणाईआ। साचा सजदा सीस जगदीश करे ना कोए आदाब, परवरदिगार सच सलाम ना कोए बुलाईआ। ख़ाली दिसे मक्का काअब, हुजरा हक़ ना कोए समझाईआ। कूड़ी क्रिया दिसे राज, राज भूप शाह सुल्तान देवे ना कोए वड्याईआ। लख चुरासी विगड़या समाज, साची समग्री हथ्थ ना कोए रखाईआ। धुर दी बाणी भुल्ले सच आवाज़, श्री भगवान भय ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एको देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। पहलां मेरी मंग कर मंज़ूर, शब्द सुत सच जणाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सद हज़ूर, हरि जू दर तेरे वेखण पाइंदा। सारे कहिण शब्द गुरु गुरदेव जा ज़रूर, ज़रूरत सब दी तोहे पूर कराइंदा। मैं प्रगट होवां जा के तेरा नूर, मात पित ना कोए बणाइंदा। दो जहानां जणावां इक दस्तूर, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाइंदा। लख चुरासी करां मजबूर, मुजरम सब नूं आप बणाइंदा। जिन्हां तेरा नाम भुलाया तिन्हां उते लावां इक्को कसूर, फ़तवा सादर इक कराइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत दीप कूड़ी क्रिया उडदी वेखां धूढ़, दहि दिशा फेरी पाइंदा। जीव जंत पड़दा लाहवां मूर्ख मुग्ध मूढ़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरा इक्को नज़री आइंदा। सुत दुलारे उठ बलवान, प्रभ देवणहार वड्याईआ। तेरे हथ्थ फड़ाए धर्म निशान, दो जहानां दे झुलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन परवान, सीस सके ना कोए उठाईआ। करोड़ तेतीस करे प्रणाम, देवत सुर खुशी मनाईआ। गण

गंधर्ब राग गाण, गावत गावत राग अलाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखण मार ध्यान, निज नेत्र नैण खुलाईआ। लख चुरासी वेख जीव जंत जहान, जागरत जोत कर रुशनाईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारी रैण अन्धेरी मिटे मिटी घट्टया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर फ़रमाना इक समझाईआ। शब्द सुत कहे मैं जावांगा। प्रभ तेरा हुक्म सीस टिकावांगा। निरगुण सरगुण वेख वखावांगा। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त उठावांगा। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक समझावांगा। चार वरनां बण के साचा पंडत, बोध अगाध इक दृढ़ावांगा। दूजे दर कदी ना जावां मंगत, तेरी भिच्छया इक्को इक वरतावांगा। काया चोली चाढ़ के रंगत, रंग रंगीला मोहण माधव इक्को इक वखावांगा। मेल मिला के शब्दी संगत, गुर शब्दी धार बंधावांगा। नाता तोड़ जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज पन्ध मुकावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरी सेवा सच कमावांगा। शब्द सुत तूं जाएगा। प्रभ साचा वेख वखाएगा। मेहरवान मेहर नज़र टिकाएगा। तेरा लहिणा तेरी झोली पाएगा। तेरे नैणां सर्ब वखाएगा। कोट कूड़ी क्रिया बुरज ढहिणा, धक्का तेरे कोलों लवाएगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर पंज तत चोला लोकमात थिर नहीं रहिणा, जो आया सो उठ उठ जाएगा। शब्दी नाद नाद गुरदेव सच स्वामी आदि जुगादि थिर घर साचे बहिणा, ना कोई मेटे मेट मिटाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सुनेहड़ा इक जणाएगा। सच सुनेहड़ा लै के जावांगा। प्रभ तेरा खेल रचावांगा। दो जहानां वेख वखावांगा। शब्द निशाना इक झुलावांगा। राउ रंक आप उठावांगा। दुआर बंक वड वडयावांगा। लख चुरासी फोल फोलावांगा। जन भगत सुहेले विचों कढु वरोल, आपणी झोली पावांगा। अन्दर वड़ के दस्सां आपणा बोल, साचा राग इक समझावांगा। बंद खिड़की कुण्डा खोलू, बजर कपाटी तोड़ तुड़ावांगा। अमृत आत्म दे के पौहल, साचा जाम आप प्यावांगा। इक इकल्ला निरगुण हो के वसां कोल, सरगुण आपणा मेल मिलावांगा। अनहद नादी वज्जे ढोल, सोई सुरती आप उठावांगा। साचे कंडे देवां तोल, तराजू इक्को तेरा नाम धरावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो तेरे नाल कर के आए कौल, तिन्नां अन्तिम पूर करावांगा। धरती करे भार हौल, हौली हौली आपणा हुक्म वरतावांगा। सच दुआरा देवां खोलू, ख़ालक ख़लक आप समझावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरा डंका नाम सुणावांगा। श्री भगवान कर के मेहर, मेहरवान खुशी मनाईआ। उठ लाडले बण दलेर, तेरी दलेरी मोहे भाईआ। शब्दी सुत तेरा दो जहानां रखां नाउँ शेर, सिंघ तेरी भबक ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ दए हिलाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरे ज़ेर, ज़ेर ज़बर रूप समझाईआ। तूं जाणा बण के वड्डा केहर, बलधारी आपणा

नाउँ धराईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग करदा रिहों हक़ नबेड़, नबेड़ा इक्को इक जणाईआ। दीन मज़्हब दा झगड़ा रहे ना कोई झेड़, झंजट अवर ना कोए पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दी धार आप जणाईआ। सुत दुलारा कहे प्रभ ठाकर, हरि जू तेरी वड वड्याईआ। निमस्कार करां प्रभ करते कादर, तेरी कुदरत वेखां चाईं चाईंआ। लोकमात भँवरी वेखां डूंग्घा सागर, गहर गम्भीर खोज खोजाईआ। लख चुरासी विचों गुरमुख विरले देवां आदर, आदर्श आपणा इक बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे नाम वज्जे वधाईआ। उठ दुलारे साचे लाल, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। कलयुग अन्तिम बण दलाल, धर्म दलाली इक कराईआ। हकीकत दस्स हक़ हलाल, हज़रत रूप वखाईआ। सच दुआर खोल्ह धर्मसाल, धर्म आत्मा इक समझाईआ। दे वड्याई शाह कंगाल, ऊँच नीच वंड ना कोए रखाईआ। मुरीदां जा के पुछ हाल, मुर्शद आपणा रूप वटाईआ। सब दे सिर ते कूके काल, चारों कुण्ट डौरु डंक सुणाईआ। सुरती करे ना कोए संभाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। सुत कहे मेरे साहिब सुल्तान, चरण सरन तेरी सरनाईआ। मैं बण के जावां साचा काहन, वाली दो जहान अख्वाईआ। नज़री आवां इक्को राम, हर घट रमया रूप वटाईआ। देवां संदेसा सच पैग़ाम, साचा पीर नूर रुशनाईआ। परवरदिगार हो के पढ़ां कलाम, कलमा कायनात जणाईआ। नज़री आवां इक अमाम, नौबत तेरे नाम सुणाईआ। पीर पैगम्बर बरदे करां गुलाम, साची डोरी तन्द बंधाईआ। लेखा जाणां सति इस्लाम, इस्म आअज़म इक दरसाईआ। वेख वखावां सति नाम, नाम सति भेव चुकाईआ। नानक गोबिन्द दे के गए ज्ञान, चार वरन इक पढ़ाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वसण इक मकान, दूजा मकबरा नज़र कोए ना आईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त भगत भगवन्त इक्को इक श्री भगवान, दूजा इष्ट वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एको देणा नाम वर, तेरी साची सेव कमाईआ। सच दुलारे तेरी वड्याई, प्रभ तेरे हथ्थ फड़ाइंदा। लोकमात कर रुशनाई, कलयुग अन्ध अन्धेरा छाइंदा। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत लै जगाई, नाम डंका तेरे हथ्थ फड़ाइंदा। जन्म कर्म दी मेट जुदाई, धुर संजोग तेरे नाल कराइंदा। निर्मल नूर कर रुशनाई, अन्ध अन्धेर सर्ब गवाइंदा । अमृत आत्म जाम प्याई, सच प्याला तेरे हथ्थ फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा लेखा आप जणाइंदा। प्रभ ठाकर मेरे निरँकार, मैं निरगुण हो के जांदा। सरगुण पावां सार, सच सुनेहड़ा जा सुणांदा। कलयुग जीवो होवो ख़बरदार, सोइआं अक्ख इक खुल्हांदा। प्रगट होवे पारब्रह्म बेअन्त बेऐब

परवरदिगार, तेरा हुक्म इक जणांदा। चारों कुण्ट पावे सार, दहि दित्ता भेव चुकांदा। तेरा बरदा बण के बरखुरदार, साची सेवा सच कमांदा। जो जन ग़ाफ़ल रिहा अन्तिम वार, तिन्हां राए धर्म हथ्थ फड़ांदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगांदा। सुत दुलारे जा के कहिणा, लोकमात नाद धुन वजाईआ। सब ने भाणा सिर ते कहिणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। बिन परमात्म आदि अन्त किसे ना रहिणा, जो घड़या भन्न वखाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोई ना सज्जण सैणा, सगला संग ना कोए निभाईआ। कूड़ी क्रिया बुरज ढहिणा, ढाह ढाह ख़ाकी ख़ाक मिलाईआ। जूठ झूठ आपणे वहण वहणा, शौह दरया दए रुढ़ाईआ। साचे तख्त बैठ पलँघ रंगील किसे ना सौणा, सेज सुहञ्जणी नज़र कोए ना आईआ। बिन हरि नामे अन्तिम सब ने रोणा, नेत्र रोवण मारन धाहींआ। वेला गया हथ्थ नहीं आउणा, भरमे भुली सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक बुझाईआ। शब्द गुर सच्चा वजाए ढोल, लोकमात करे शनवाईआ। कलयुग जीव पड़दा खोल्ह, क्यों बैठा मुख भवाईआ। आत्म परमात्म वसे तेरे कोल, निज घर बैठा ताड़ी लाईआ। दिवस रैण अट्ठे पहर रिहा बोल, अन्तर आत्म धुन आत्मक राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, साचे भगतां लवां उठाईआ। श्री भगवान मैं सेव कमावांगा। कल लोकमात वेख वखावांगा। नेत्र पेख खुशी मनावांगा। कर के साचा हेत, हरिजन साचे आप जगावांगा। भगतां रखां साया हेठ, अग्नी तत ना कोए तपावांगा। डूंघी कन्दर काया मन्दिर चढ़ के दस्सां भेत, आपणा भेव आप जणावांगा। पूरब जन्म दी मेट के रेख, रेखा आपणे विच मिलावांगा। सेज सुहञ्जणी माणे गुरमुख विरला जिस जन नज़री आए नेतन नेत, निज नेत्र नैण खुल्हावांगा। जिन्हां तेरे उते रखी टेक, प्रभ तेरे नाल मिलावांगा। जो धर के बैठे कूड़ा भेख, तिन्हां कूड़ी ख़ाक रलावांगा। कलयुग उजड़े अन्तिम खेत, सुंञा जगत जहान करावांगा। नौ खण्ड पृथ्मी तपे बालू रेत, अग्नी जोत इक लगावांगा। भेव पाए ना कोई मुल्लां शेख़, पंडत पांधे अन्त ना किसे वखावांगा। जन भगतां कर के साचा हेत, हितकारी बण के आपणे घर वसावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे तेरा हुक्म सीस रखावांगा। सच दुलारे तेरा बल, तेरे उते वड्याईआ। कलयुग अन्तिम बिन पंज तत चोले तैंनूं रिहा घल्ल, गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा नाउँ ना कोए रखाईआ। तूं मेरा मैं तेरे वल, पिता पूत नाता जुड़या सहिज सुखदाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नव नौ चार मैं करदा रिहा वल छल, वल छल धारी बण के आपणी खेल रचाईआ। दूई द्वैती ज़ात मज़्हब दीन ला के सल, लोकमात वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि का रूप इक दरसाईआ। शब्द कहे मैं करां परवान, तेरा परवाना मोहे भाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख्या मार ध्यान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण साची कार कमाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होए विच जहान, सृष्ट सबाई दयां जणाईआ। सति सतिवादी इक्को काहन, राम रमईया इक अख्वाईआ । इक पैगम्बर करो सलाम, इक्को मन्त्र नाम पढ़ाईआ। इक्को डंका वज्जे जहान, दो जहानां वाली आप सुणाईआ। सन्त सुहेले सुणो ला कर कान, गुर चेले नेत्र नैण अक्ख खुलाईआ। गुरमुख दर दरवेश हो के मंगो दान, दर भिखारी झोली वस्त नाम भराईआ। गुरसिख सच सरनाई मंगो आण, अनडिठी दौलत रिहा वरताईआ। देवणहारा सच फ़रमाण, धुर संदेसा इक सुणाईआ। कलयुग कूड़ा मेटां अन्त निशान, लोकमात रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचा धर्म होवे बलवान, बलधारी आप प्रगटाईआ। चार वरनां मिले आण, ऊँच नीच राउ रंक सारे ढोला इक्को गाण, सोहँ राग शब्द शनवाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मन्नण आण, सिर सके ना कोए उठाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी सच बणाए इक विधान, वाधा आपणे नाम कराईआ। राज राजान शाह सुल्तान सारे तख्तों डिगण आण, तख्त निवासी नज़र कोए ना आईआ। फिरे दरोही जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत बियाबान, मण्डल मण्डप देण दुहाईआ। रवसस सूरज चन्न वेख वेख सर्ब कुरलाण, हाए हाए ख़लक खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द सुत तेरा इक्को हुक्म वरताईआ। शब्द सुत कहे मैं चरण बलिहार, सद घोली घोल घुमाईआ। किरपा कर मेरे निरँकार, शाह पातशाह तेरी सरनाईआ। मैं तेरा फ़रमबरादार, सेवक साची सेव कमाईआ। साचा हुक्म कर अगम्म अपार, अलख अगोचर आपणी धार चलाईआ। इकट्ठे कर गुर अवतार, पीर पैगम्बर कोल मंगाईआ। सब तों लेखा मंग लै आपणे सच्चे दरबार, शहादत आपणी इक्को पाईआ। रसना बोल सारे कहिण असां खैहड़ा छड्डया जीव जगत संसार, लोकमात संग ना कोए निभाईआ। तेई अवतार तेरे दर करन पुकार, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। भगत अठारां बणन भिखार, भिच्छया मंगण वाहो दाहीआ। ईसा मूसा मुहम्मद नेत्र नीर वहावण ज़ारो ज़ार, माण अभिमान रहिण कोए ना पाईआ। नानक गोबिन्द मिले तेरी धार, आपणा हुक्म ना कोए वरताईआ। सारे कहिण तूं करता पुरख करतार, अग्गे तेरी वड वड्याईआ। वीहवीं सदी साडा सब दा मुकया कर्ज़ उधार, लहिणा लैणा कोई नज़र ना आईआ। असीं छड्ड के आए तेरा संसार, प्रभ तेरी झोली पाईआ। जिउँ भावे तिउँ कर विचार, तेरी समझ साडी समझ समझ सके ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सुत शब्द दोए जोड़ चरण धूढ़ी टिक्का लाईआ। सुत शब्द तेरी वड्याई वाह,

वाहवा गुरू गुरू जणाइंदा। चौथे युग सब दा लेखा दयां मुका, लेखा आपणी झोली पाइंदा। सच सुनेहड़ा दयां घला, संदेसा इक्को इक समझाइंदा। साची थित दयां समझा, साचा वक्त वंड वंडाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां आउणा वाहो दाह, रहबर इक्को राह वखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव नाल लिआउणा उठा, सोया रहिण कोए ना पाइंदा। पुरख अबिनाशी पारब्रह्म करे सच न्यॉं, शाह पातशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। सुणो संदेसा भुले कोई ना, अभुल्ल आप जणाइंदा। वीह सौ वीह बिक्रमी पन्द्रां कत्तक साढे दस वक्त दए सुहा, थित वार आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रैण भिन्नड़ी देवे रंग रंगा, रंग रतड़ा आपणी दया कमाइंदा। सुत शब्द कहे प्रभ तेरा लेखा लिख बिन कलम दवात, काग़ज़ शाही तेरे कम्म किसे ना आईआ। सति सरूपी सब दा वेख हालात, अन्दर वड़ के फोल फोलाईआ। दीन मज़्ब ज़ात पात झगड़ा प्या कायनात, तेरा नूर तेरा ज़हूर तेरा रूप सति सरूप नज़र किसे ना आईआ। पहलों गुर अवतार पीर पैगम्बर सचखण्ड दुआरे बणा इक जमात, साचा हुक्म आप मनाईआ। फिर लोकमात सब दा बदले हालात, बचया कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। सुत दुलारे मैं आपणी दया कमावांगा। साची रुत्तड़ी रुत्त सुहावांगा। पन्द्रां कत्तक कन्त इक अख्वावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे करन आ के मिन्नत, मेहर नज़र आप उठावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ावांगा। साची सिख्या इक दृढ़ावांगा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां आप समझावांगा। निरगुण निरवैर पुरख अकाल जोती नूर बेमिसाल, परवरदिगार मुकामे हक़ डेरा लावांगा। जलवा नूर इक जलाल, जोती जोत दीपक बाल, बिन तेल बाती डगमगावांगा। साची सिख्या इक सिखाल, साख्यात आपणा हुक्म मनावांगा। कलयुग अन्तिम चौथे युग करे खेल दीन दयाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा भेव आप चुकावांगा। साचा भेव प्रभू चुकाएगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर आप समझाएगा। सच सुअम्बर इक रचाएगा। दीन मज़्ब दा पिछला अडम्बर, मेट मिटाएगा। सरबकला बण भरतम्बर, भरम भुलेखा दूर कराएगा। सच वखाए सचखण्ड मन्दिर, जिस घर आपणा आसण लाएगा। जो निरगुण नानक वेख्या वड़ के अन्दर, सो गुर अवतारां पीर पैगम्बरां एका नूर चमकाएगा। कर प्रकाश साचे खण्डर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाएगा। मेहर नज़र आप उठावेगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर इक्को रंग रंगावेगा। निरगुण निरगुण हो के संग, सगला संग निभावेगा। इक्को सेज इक पलँघ, इक्को साहिब स्वामी आसण लावेगा। इक्को नाम इक मृदंग, इक्को राग नाद सुणावेगा। इक्को सूरबीर सरबँग, शहिनशाह इक्को

५७०
१५

इक अख्खावेगा। इक्को दूई द्वैती बणावणहारा कंध, इक्को एक अन्तिम ढाहवेगा। इक्को इक सिफ्ती सिफ्त कोटन कोटि नाम सुणाए छन्द, इक्को दीन मज़्ब इस्लाम ज़ात पात वंड वंडावेगा। इक्को अग्गे सब दा लेखा करे बंद, बिन कलम दवात आपणा हुक्म नाम वरतावेगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर रल मिल सारे ढोला गावण छन्द, तूं मेरा मैं तेरा सोहँ रूप सर्ब समझावेगा। नाता छुटया विच वरभण्ड, भंडी अन्त कोए ना पावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमावेगा। गुर अवतार ढोला इक्को गाउणगे। पुरख अकाल परवरदिगार सच मनाउणगे। रल मिल सख़ीआँ रूप बण के कन्त सुहाग हंढ्ढाउणगे। सच्चे प्रीतम नाल ला के अक्खीआं, लग्गी अक्ख ना फेर भवाउणगे। जिन्हां भाणा मन्नया रेतां तत्तीआं, लोहां तत्तीआं सीत कराउणगे। जिन्हां खल्ल लुहाई नाल पत्तीआं, सो पतिपरमेश्वर इक्को इक ध्याउणगे। जिन्हां मुल पवाया अट्टीआं, सो साचा हट्ट वेखण आउणगे। जिन्हां ख़ून डुलाया रत रतीआं, पुत्त नीहां हेठ दबाउणगे। तिन्हां श्री भगवान दे के घल्ले संदेसे पत्तीआं, चिट्ठीआं घर घर आप पुचाउणगे। कलयुग अन्तिम प्रभ दी कोई ना मेटे लिखीआं, लेखा लेख सर्ब वखाउणगे। माण टुट्टे मुन ऋषीआं, लेखा लेखे विच जणाउणगे। जिन्हां भगतां गुरमुखां साचे सन्तां प्रभू नाल प्रीतां लग्गीआं सिधीआं, तिन्हां वेख खुशी मनाउणगे। किसे कम्म नहीं ओणीआं रिद्धिआं सिद्धिआं, मन्त्र जंतर सारे ख़ाक विच आपणा आप गवाउणगे। बिन पुरख अकाल सतिगुर पूरे लख चुरासी रूहां फिरन रंडीआं, हरि घर कन्त ना कोई मनाउणगे। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दीन मज़्ब जो पाईआं डण्डीआं, गुर अवतार पीर पैगम्बर पारब्रह्म दे नाल मिल के अन्तिम सारे ढाउणगे। जो बैठे सच किनारे कन्ढ्ढीआं, तिन्हां बेड़े नाम चढ़ाउणगे। अग्गे कोई ना पावे वंडीआं, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश प्रभ चरण दुआरे सारे इक्को तारी लाउणगे। जगत दुहागण नारां सतिगुर दुआरे कदे फिरन ना नंगीआं, पड़दा ओढण नाम दुशाला इक्को तन रखाउणगे। किसे कम्म नहीं औणीआं वाहीआं पट्टीआं कंघीआं, जिन्ना चिर श्री भगवान आत्म सेज ना आप बहाउणगे। कर किरपा लेखे लाए चंगीआं मंदीआं, जो दर दुआरे सीस झुकाउणगे। पिच्छे सब दीआं मनमति नाल हंढ्ढीआं, अग्गे गुरमुख गुर नाल प्रीत निभाउणगे। शब्द गुर साचा गाना बन्न्ह चढ़ाए वंगीआं, दरगाह साची साचे सगन मनाउणगे। प्रेम प्रीती पाए अंगीआं, अंगीकार पुरख अकाल कराउणगे। जिन्हां जगत चुबारे डाहीआं मंजीआं, सो अन्तिम ख़ाक विच समाउणगे। जिन्हां सतिगुर सरनाईआं मंगीआं, दरगाह साची सचखण्ड दुआरे सोभा पाउणगे। शब्द गुरु गुरदेव सतिगुर पूरीआं करे मंगां मंगीआं, मांगत भिखक सतिगुर दुआरे सारे खुशी मनाउणगे। जन भगतां तुटण अन्तिम बंदीआं, बंदीख़ाने विच कदे ना आउणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, शब्द

गुर तेरा बणे साचा संगीआ, दो जहान वेख पेख प्रभ सारे खुशी मनाउणगे। आपणी मर्ज़ी कोई ना आए, हुक्मे अन्दर सर्ब भुआईआ। पुरख अकाल खेल रचाए, जूनी जून वंड वंडाईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज रचन रचाए, लख चुरासी रंग रंगाईआ। लख चुरासी विचों माणस मनुक्ख वडयाए, मानव भेव खुल्हाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जिस दी सेवा लाए, त्रै पंज करी कुड़माईआ। आसा तृष्ना हउमे हंगता गढ़ बणाए, माया ममता नाल रलाईआ। नौ दुआरे दर खुल्हाए, नौ रस जगत भराईआ। सुखमन टेडी बंक लगाए, ईड़ा पिंगल सेवादार बणाईआ। अमृत आत्म जल भराए, सरोवर इक्को इक प्रगटाईआ। नाद धुन राग सुणाए, शब्दी ताल वजाईआ। बजर कपाटी कुण्डा लाहे, आपणा पड़दा लाहीआ। आप आपणी वंड वंडाए, पारब्रह्म ब्रह्म अंस रूप वटाईआ। बुध बबेकी विच धराए, मति मतिवाली कर कुड़माईआ। मन वासना खेल रचाए, हुक्मी हुक्म समझाईआ। परमात्म परम पुरख आपणा खेल रचाए, आत्म आपणा दर खुल्हाईआ। दस्म दुआरी रंग वखाए, घर घर विच सोभा पाईआ। दीवा बाती कमलापाती इक रुशनाए, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। सतिगुर पूरा वेख वखाए, वेखणहारा नज़र किसे ना आईआ। जिस गुरमुख दित्ता तन सो सतिगुर तेरे पिच्छे वेखण आए, तेरा तन पुश्त पनाह आपणा हथ्थ टिकाईआ। गुरमुख करे ना कोई गुनाह, कूड़ी क्रिया हूंझ वखाईआ। अट्ठे पहर बणया रहे मलाह, फड़ उँगली रिहा चलाईआ। अन्दरों देवे आत्म सलाह, बाहरों मन दए समझा, समझ समझ विच रखाईआ। इशारयों रमज़ दए लगा, रहमत आपणी आप कमाईआ। मातलोक दित्ता प्रगटा, पंज तत काया जगत वखाईआ। जगत नाता दित्ता जुड़ा, नार कन्त रुप वटाईआ। दोहां मेला मिल्या सहिज सुभा, साची जोड़ी इक बणाईआ। द्वापर तेरी औरत बणी बेवफ़ा, तेरे नाल धरोह कमाईआ। कृष्न दुआरे सीस दित्ता झुका, दुआरका वज्जी वधाईआ। पतिपरमेश्वर बख्श गुनाह, तेरी इक सरनाईआ। सहिज सुभा मुकन्द मनोहर हुक्म दित्ता सुणा, तेरा लेखा लेखा लेखे पाईआ। निरगुण निरवैर निरँकार तेरा लहिणा दए चुका, कलयुग अन्तिम होए सहाईआ। उस दे अग्गे करीं दुआ, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। तेरे पिच्छे पिच्छे एसे कारण धक्का रिहा लगा, गुरमुख भुल्ल कदे ना जाईआ। जिस वेले सतिगुर पूरा मिले मलाह, साचे बेड़े लए चढ़ाईआ। नाम चप्पू दए लगा, डूंघे सागर पार कराईआ। लोक देवे माण वडया, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आपणा सुत आप बणा, पिता पूत वेख वखाईआ। जननी जन गोद सुहा, लहिणा लैणा झोली पाईआ। परलोक सुहेला बणे आ, गुर चेला आपणी गोद बिठाईआ। शब्द विचोला बेपरवाह, भुल्ल कदे ना जाईआ। सुल्हाकुल्ह सदा खुदा, पारब्रह्म बख्शणहार सच सरनाईआ। जिस दे नालों होए रहे जुदा, अन्तिम ओसे नाल मिलाईआ। आसा मनसा पूरी दए करा, किरपा कर मेहरवान मेहरवान

मेहर नज़र उठाईआ। लोक परलोक परलोक लोक दोहां बणे मलाह, खेवट खेटा आपणी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पूरब लेखा लहिणा दए मुकाईआ।

✪ १० अस्सू २०२० बिक्रमी तारा सिँघ दे गृह फ़िरोज़पुर ✪

सतिगुर शब्द सहिज सुखदाई, बण सज्जण दया कमाइंदा। भगत भगवान सहिजे लए जगाई, निज नेत्र नैण खुलाइंदा। सन्त कन्त दर लए मिलाई, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। गुरमुख साचे भेव खुलाई, अनभव आपणी धार जणाइंदा। गुरसिख वेखे थाउँ थाईं, चार कुण्ट दहि दिशा फोल फोलाइंदा। निरगुण हो के फिरे वाहो दाही, सरगुण नज़र किसे ना आइंदा। सेवा करे बण बण बेपरवाही, बेपरवाह आपणा खेल खलाइंदा। सच संदेसा रिहा सुणाई, नाम निधान आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर तेरे सेव इक वखाइंदा। साचे सुत सर्ब जग मीत, मित्र प्यारे तेरी वड वड्याईआ। तेरा नाउँ अगम्मा साचा गीत, जुग जुग रहे जस गाईआ। खाणी बाणी तेरी दस्से हदीस, गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा नाम पढ़ाईआ। दो जहान सिर तेरे झुल्ले छत्र सीस, जगदीश देवणहार वड्याईआ। तेरी सिफ्त करे राग छतीस, तीस बतीस रहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सुनेहड़ा इक जणाईआ । साचे भगतां खोल्हां अक्ख, प्रभ मेरे विच वड्याईआ । साचे सन्तां नज़र आवां प्रतख, साख्यात वेस वटाईआ । साचे गुरमुखां मार्ग देवां दस्स, दहि दिशा नज़री आईआ। साचे गुरसिखां अमृत आत्म देवां रस, निझर झिरना इक झिराईआ। हिरदे अन्दर जावां वस, घर घर आपणा डेरा लाईआ। साचा नाद सुणावां नद, अनहद अनादी नाद वजाईआ। निर्मल जोत करां प्रकाश, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। मण्डल पावां रास, गोपी काहन नचाईआ। वेखां खेल पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर सोभा पाईआ। फड़ फड़ तेरे करां दास, बण विचोला सेव कमाईआ। तूं साहिब सहाई अनाथां नाथ, दीनन देवणहार वड्याईआ। मैं चलावां तेरा मात जहाज़, खेवट खेटा रूप वटाईआ । साचे सज्जण लै के साथ, साचा बेड़ा देवां बंधाईआ। इक्को तेरा नाम संदेसा देवां आख, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। लहिणा देणा सब दा चुक्के पूरब माथ, मस्तक रेखा रेख नाल बदलाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म गाओ सारे गाथ, गहर गम्भीर दया कमाईआ। कूड़ी मिटे अन्धेरी रात, साचा चन्द दयां चमकाईआ। माणस मनुक्ख मानुष इक्को नज़र आए जमात, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। तेरा नाउँ सच्चा सच्चा अखण्ड पाठ, कीर्तन तेरा रहे जस गाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण प्रभू

तेरा जाप, तेरी सिफ्त रहे सुणाईआ। मैं सेवक तेरा वेखां वड प्रताप, शब्दी गुर सीस झुकाईआ। दो जहान तेरा खेल तमाश, ब्रह्मण्ड तेरी वड्याईआ। जुगा जुगन्तर जन भगतां मिले प्रभू आप, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सोभा पाईआ। भगत भगवान एका रंग, सो सतिगुर आप सुणाईआ। शब्द विचोले तेरी मंग, जुग चौकड़ी पूर कराईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आवां लँघ, राह विच ना कोए अटकाईआ। करां खेल सूरा सरबँग, शाह पातशाह आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच निशान इक वखाईआ। सच निशान श्री भगवान, इष्ट देव गुर इक्को इक समझाइंदा। भगत सुहेला भगतां मिले आण, मिलणी जगदीश आप कराइंदा। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर बातन देवणहार जमाल, जलवा नूर ज़हूर दरसाइंदा। शब्द सरूपी शाहो भूपी सति सतिवादी बण दलाल, सच दलाली इक कमाइंदा। हरि नालों विछड़े हरिजन मेले लाल, मेल मिलावा इक्को घर जणाइंदा। काया मन्दिर अन्दर साचा खोल्ह हट्ट दुकान, चौदां लोक सच श्लोक साचा सोहला इक सुणाइंदा। निरगुण रूप श्री भगवान, जन भगत दुआरे होए प्रगट पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणा पड़दा आप उठाइंदा। किरपा करे आप समरथ, देवे नाम अगम्मी वथ, वस्त अमोलक काया गोलक घर मन्दिर आप टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। हरिजन वेखे पारब्रह्म, प्रभ वड्डा वड वड्याईआ। निहकर्मी जाणे आपणा कर्म, कर्म कांड रहिण कोए ना पाईआ। जिस बख्शे आपणी साची सरन, तिस मिले माण वड्याईआ। भय चुकाए मरन डरन, भउ अवर ना कोए वखाईआ। करता पुरख करनी करन, हरि कीमत आपे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रंग रंगाईआ। हरिजन रंग चढ़े चलूल, सतिगुर पूरा आप चढ़ाईआ। दूर दुराडा नेरन नेरा आदि जुगादि ना जाए भूल, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। सदा सुहेला कन्त कतूहल, रंग नवेला इक्को घर वेखे चाईं चाईंआ। लेखा जाणे गुरु गुर चेला, सज्जण सुहेला फेरा पाईआ। आत्म विछड़ी करे मेला, बन्धन डोरी तन्द बंधाईआ। आप सुहाए सच्चा वेला, जिस वेले गुरमुख आपणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन पड़दा दए उठाईआ। जिस वेले किरपा करे सतिगुर, गुर दीनन दया कमाइंदा। लेखा जाणे लिख्या धुर, धुर मस्तक वेख वखाइंदा। सच प्रीती जाए जुड़, जोड़ी सुरत शब्द बणाइंदा। काया मन्दिर अन्दर वेखे दौड़, दहि दिशा फोल फोलाइंदा। कूड़ी क्रिया कढ्ढे कौड़, रस अमृत मिट्ठा इक भराइंदा। भाग लगाए डूंग्घी भँवरी गोर, सच प्रकाश इक कराइंदा। कूड़ी क्रिया भाण्डा देवे फोड़, नाम खण्डा इक खड़काइंदा। आत्म

परमात्म सच दरवाज़ा देवे खोल्ह, दस्म दुआरी खेल रचाइंदा। गुरमुख आत्म सद्दे कोल, सच सुनेहड़ा इक सुणाइंदा। आ सखी वेख साचा ढोल, माही इक्को नज़री आइंदा। जिस दा बिन रसना जिह्वा सच्चा बोल, अनबोलत राग सुणाइंदा। धर्म दुआरे तोले तोल, सच्चा कंडा नाम तराज़ू नाम उठाइंदा। ओथे कोई ना वज्जे रोल, सच सुच्च आप समझाइंदा। उठ नेत्र नैण अक्ख खोल्ह, निज नेत्र भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख गुर गुर वेख वखाइंदा। गुरमुख उठ उठ उठ वेख, हरि सतिगुर आप जणाईआ। साहिब स्वामी धारे भेख, भेखाधारी रूप वटाईआ। आदि जुगादि जो लिखणहारा लेख, लेखा सब दा रिहा चुकाईआ। जिन्हां अन्दर वड़ के दस्से भेत, तिन्हां जगत ठगौरी कोए ना पाईआ। पारब्रह्म प्रभ खेले आपणी खेड, खेलणहारा नज़र किसे ना आईआ। सद नज़री आए नेतन नेत, निज नेत्र कर रुशनाईआ। प्रीतम बण के करे हेत, परम पुरख फेरा पाईआ। रल मिल आत्म परमात्म सोहँ ढोला गाउणा गीत, लेखा चुक्के मन्दिर मसीत, घर काया काअबा ठाकर इक्को नूर नज़री आईआ। सति सतिवादी दस्से साची रीत, रीतीवान दया कमाईआ। मिले माण हस्त कीट, ऊँच नीच होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए मिलाईआ। हरिजन मिलयां चाउ घनेरा, वज्जे नाम वधाईआ। नज़री आए इक्को रंग सञ्झ सवेरा, संधया रूप ना कोए वटाईआ। लेखा चुक्के तेरा मेरा, मेरा तेरा इक्को नूर रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया ढहे ढेरा, ढाह ढाह ख़ाक मिलाईआ। काया मन्दिर वसे सच्चा खेड़ा, शब्द गुर खिड़की बंद खुल्हाईआ। मेहरवान हो करे मेहरा, मेहर नज़र आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरसिख गुर गुर नाल मिलाईआ। गुरसिख कहे मेरे सतिगुर स्वामी, तेरे चरण मिले सरनाईआ। तूं आदि जुगादि अन्तरजामी, बेअन्त तेरी वड्याईआ। शास्त्र सिमरत तेरी अकथ कहाणी, जुग जुग राग रागनी गए गाईआ। गुरसिख कहे प्रभ मैं तेरी धुन आत्मक सुणनी बाणी, अनहद नाद वज्जे बेपरवाहीआ। अमृत आत्म बणया सरोवर ठंडा पाणी, सांतक सति सति कराईआ। आत्म मिले परमात्म हाणी, मिल आपणा आप तजाईआ। महल अटल मिले पद निरबाणी, निरबाण पद इक्को रंग रंगाईआ। तूं मेरा मैं तेरा मैनूं दे इक निशानी, सच निशान झोली पाईआ। एथे ओथे दो जहान तेरी गावां अकथ कहाणी, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। किरपा कर शाह सुल्तानी, शहिनशाह तेरी सरन तकाईआ। सतिगुर पूरा सदा करे मेहरवानी, मेहर नज़र नैण उठाईआ। उठ गुरमुख गुरसिख बण सच दुआर दी साची राणी, हरि कन्त बेअन्त बेपरवाह बिन कीमत करता आपे लए प्रनाईआ।

५७६

१५

✪ १० अस्सू २०२० बिक्रमी हरजीत सिँघ दे गृह बस्ती तेगा सिँघ ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

हरि शब्द योद्धा सूरबीर बलकार, दो जहानां हुक्म वरताइंदा। निरगुण सरगुण पावे सार, निरवैर आपणी कार कमाइंदा। जुग चौकड़ी वेखे वारो वार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग फेरा पाइंदा। नाम संदेसा देवे गुर अवतार, पीर पैगम्बर ढोला राग जणाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ खोल्ह कवाड़, रहबर साचा राह समझाइंदा। लख चुरासी देवणहारा आत्म परमात्म जोत आधार, घर घर दीपक नूर टिकाइंदा। जीव जंत साध सन्त करे प्यार, गुरमुख आपणा भेव चुकाइंदा। साचे भगतां दए दीदार, नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सतिगुर शब्द इक्को इक वडियाइंदा। सतिगुर शब्द वड बलवान, बलधारी आप प्रगटाईआ। जुग चौकड़ी मंगदे गए दान, प्रभ अग्गे झोली डाहीआ। किरपा कर श्री भगवान, गुर अवतार पीर पैगम्बर ध्यान लगाईआ। पुरख अकाल तेरा निशान, तुध बिन सके ना कोए झुलाईआ। बालक बाली बुध नादान, तेरा अन्त कोए कहिण ना पाईआ। सेवा करीए विच जहान, बण सेवक रूप वटाईआ। शास्त्र सिमरत लेखा लिख लिख वेद पुराण, गीता ज्ञान बोध अगाध करे पढ़ाईआ। हकीकत हक़ मसला लिख अञ्जील कुरान, तीस बतीस समझाईआ। चारे बाणी बोल ज़बान, चारे खाणी बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। शब्द गुरू वड योद्धा सूर, सूरबीर अख्वाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी आसा मनसा सब दी पूर, तृष्ना भुक्ख मेट मिटाइंदा। मेटणहारा नाता कूड़ो कूड़, सच सुच मार्ग इक लगाइंदा। कलयुग नौ खण्ड सत दीप दहि दिशा वेखणहार ज़रूर, जीव जंत साढे तिन्न हथ्थ काया बंक फोल फोलाइंदा। माया ममता हउमे हंगता जूठ झूठ भरया तन ग़रूर, गुरबत डेरा घर घर नज़री आइंदा। सतिगुर शब्द स्वामी कोलों होए दूर, घर ठाकर नेत्र नैण नज़र किसे ना आइंदा। सच प्रीती मस्तक टिक्का नाम ना लाए कोई धूढ़, दुरमति मैल ना कोए धवाइंदा। मन वासना मूर्ख मुग्ध होए मूढ़, बुध विवेक ना कोए कराइंदा। साचा नज़र ना आए नूर, घर घर विच पड़दा द्वैत ना कोए चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द गुरू इक प्रगटाइंदा। शब्द गुरू हरि सच स्वामी, साहिब सुल्तान आप प्रगटाईआ। दो जहानां अन्तरजामी, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीस लख चुरासी जीव जंत साध सन्त अन्तर आत्म वेख वखाईआ। शब्द सुणाए बोध अगाध अगम्मी बाणी, कलम शाही वंड ना कोए वंडाईआ। अमृत आत्म सति दुआर देवे ठंडा पाणी, अठसठ तीर्थ डेरा ढाहीआ। निर्मल जोत जोत जगाए महानी, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। धुर दी देवे इक निशानी, धर्म दुआरा सच वखाईआ। बोध

अगाधा पंडत बण ज्ञानी, साचा कलमा नबी रसूल पढ़ाईआ। लेखा जाणे दो जहानी, दोए दोए धार आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द गुर इक्को इक प्रगटाईआ। शब्द गुरु गुर प्रगटाए एक, एकँकारा आप प्रगटाइंदा। कलयुग कूड़ी क्रिया लख चुरासी लए वेख, सत दीप नौ खण्ड घर घर फोल फोलाइंदा। चार वरन अठारां बरन दहि दिशा होया भेख, सति सरूप सच ना कोए समाइंदा। फिरी दरोही चारे कूट, कलयुग डंका कूड़ा इक वजाइंदा। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ अन्दर वड़ के सारे बोलण झूठ, हरि का भय सिर ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द गुरु गुरदेव इक समझाइंदा। शब्द गुरु गुर सच मलाह, आदि जुगादि वेस वटाईआ। जुग चौकड़ी देवे पन्ध मुका, थिर कोए रहिण ना पाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां नाम निधान देवे इक सलाह, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। वाक भविक्ख्त धुर दा लेखा दए जणा, भेव अभेदा इक खुल्हाईआ। तेई अवतार नेत्र नैण गए उठा, भगत अठारां चरण कँवल कँवल सरनाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद उच्ची कूक कह के गए सच खुदा, लाशरीक परवरदिगार नूर इलाहीआ। नानक गोबिन्द धुर दा लेखा लिख लिख गए वखा, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरवैर पुरख जोती जोत करे रुशना, निहकलंक नाउँ रखाईआ। नाम डंका दए वजा, दो जहान करे शनवाईआ। चार कुण्ट कूड़ा बुरज देवे ढाह, उच्चा टिल्ला पर्बत रहिण कोए ना पाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां देवे ख़ाक मिला, सीस ताज ना कोए टिकाईआ। वरन बरन ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक एका घर दए बहा, दीन मज़्ह्ब करे ना कोए लड़ाईआ। साचा कलमा नबी रसूल राम रहीम दए पढ़ा, श्री भगवान इक्को नाम दए वड्याईआ। साचा ढोला धुर दा दए सुणा, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आपणा भेव खुल्हाईआ। अनडिठड़ा मार्ग दए लगा, जग नेत्र लोचण नज़र किसे ना आईआ। भगत भगवान गुरमुख विरला लख चुरासी विच्चों लए जगा, जिस अन्तर आत्म आपणी बूझ बुझाईआ। नाम निशाना तीर अणयाला दए लगा, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। साची हाटी काया मन्दिर दए खुल्हा, दसम दुआरी पड़दा आप उठाईआ। सेज सुहञ्जणी दए सुहा, आत्म सेजा डेरा लाईआ। आदि निरँजण जोत निरँजण दए जगा, दीआ बाती कमलपाती इक्को इक प्रगटाईआ। धुर दी गाथी शब्द निधाना दए सुणा, सुरती शब्दी इक्को राग अल्हाईआ। गृह मन्दिर घर घर विच मेला दए मिला, सच दुआरा इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द गुरु गुर इक नज़री आईआ। शब्द गुरू हर घट वासा, गृह गृह खोज खोजाईआ। लेखा जाण पृथ्मी आकासा, गगन मण्डल चरणां हेठ दबाईआ। गोपी काहन पावे रासा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण नाच नचाईआ। जन

भगतां जुग जुग पूरी करे आसा, आसा तृष्ना मेट मिटाईआ। सेवा करे बण बण दासी दासा, सेवक साची कार कमाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण जोत सति सरूप करे प्रकाशा, कल कल्की वेस वटाईआ। नानक गोबिन्द पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सच स्वामी दे के गया भरवासा, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निरगुण निरवैर अजूनी रहित अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह अक्ल कलधारी आपणी कल वरताईआ। आपणी कल वरते भगवान, भेव अभेदा आप जणाईआ। शब्द सुत सूरा बलवान, दो जहानां हुक्म मनाईआ। कलयुग मेटे कूड़ निशान, लोकमात रहिण ना पाईआ। सतिजुग लाए हो मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। साचा मन्दिर इक मकान, हरी दुआर इक वखाईआ। प्रगट होवे इक्को राम, इक्को काहन रूप धराईआ। इक्को पैगम्बर करे ब्यान, इक्को कलमा रिहा जणाईआ। इक्को बोले सतिनाम, इक्को वाहिगुरू फ़तहि सुणाईआ। इक्को बदले कूड़ नज़ाम, इक्को सच सुच करे जणाईआ। इक्को लेखा जाणे दो जहान, जीव जंत वेखे थाउँ थाईंआ। इक्को सतिजुग सच करे प्रधान, धरत मात मिले वड्याईआ। इक्को शब्द देवे ज्ञान, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। इक झुलाए धुर निशान, सच निशाना इक वखाईआ। इक्को राग सुणाए कान, धुन आत्मक नाद वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिगुर इक्को नज़री आईआ। सतिगुर नज़री आए आदि, आदि वड्डी वड्याईआ। सतिगुर खेल सदा ब्रह्माद, ब्रह्मांड आप उपाईआ। सतिगुर नाउँ अगम्मी नाद, दो जहानां आप सुणाईआ। सतिगुर सज्जण सच्चा साक, सैण इक्को इक अख्वाईआ। सतिगुर साहिब पाकी पाक, पतित पुनीत रूप वखाईआ। सतिगुर साहिब उत्तम ज़ात, वरन बरन गोत विच कदे ना आईआ। सतिगुर सिफ्त लिख सके ना कोई कलम दवात, कागज़ शाही सार कोए ना पाईआ। सतिगुर सच्ची आत्म परमात्म बणाए इक जमात, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। सतिगुर पारब्रह्म ब्रह्म बन्ने सच्चा नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। सतिगुर सच्चा मेट मिटाए अन्धेरी रात, कूड़ अमावस रहिण ना पाईआ। सतिगुर सच्चा जन भगतां पूरी करे ख्वाहिश, जो जन बैठे ध्यान लगाईआ। सतिगुर सच्चा सद सन्तां वसे पास, सति सतिवादी आपणी दया कमाईआ। सतिगुर सच्चा गुरमुखां करे बंद ख़लास, बंदीख़ाना कोए रहिण ना पाईआ। सतिगुर सच्चा गुरसिखां चरण कँवल देवे निवास, बख्शे इक्को इक सरनाईआ। सतिगुर सच्चा सर्ब गुणां गुणतास, वड्डा वड वड्याईआ। सतिगुर सच्चा जुग चौकड़ी करनहारा नास, कलयुग अन्तिम लेखा दए मुकाईआ। सतिगुर सच्चा वेखणहारा जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत वड प्रभास, समुंद सागर वेख वखाईआ। सतिगुर साचा लहिणा देणा चुकाए पृथ्मी आकास, गगन मण्डल खोजे थाउँ थाईंआ। सतिगुर सच्चा सुरप्त इन्द करोड़ तेतीसा करे दासी

५७८
१५

दास, धुर फ़रमाणा हुक्म जणाईआ। सतिगुर सच्चा विष्न ब्रह्मा शिव बख्शे इक्को इक निवास, निज घर भूमका इक जणाईआ। सतिगुर सच्चा दो जहानां इक्को जोत करे प्रकाश, दूजा दीवा बत्ती नज़र कोए ना आईआ। सतिगुर सच्चा सचखण्ड दुआरे करे खेल तमाश, ख़ालक ख़लक आपणा राह जणाईआ। सतिगुर सच्चा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा हरि, शब्द गुरू सतिगुरू इक उपाईआ। सतिगुरू सच्चा शब्द गुरमीत, गुर दाता इक अख्वाइंदा। कलयुग अन्तिम बदले रीत, रीतीवान वेस वटाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो लेखा लिख के गए ठीक, सो अन्तिम पूर कराइंदा। भेव चुकाए बीस बीस, सच हदीस इक पढ़ाइंदा। लेखा जाणे राग छतीस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण सर्ब जीआं दा सांझा यार, हर घट बैठा आसण लाईआ। मुरीद मुर्शद देवे दरस दीदार, निज नेत्र लोचण नैण करे रुशनाईआ। गृह मन्दिर सच दुआरा दए वखाल, गुरुदुआरा इक्को नज़री आईआ। साचा हुजरा बणाए सच्ची धर्मसाल, धर्म जैकारा इक लगाईआ। कलयुग कूड़ा नाता तुटे विच संसार, माया ममता हउमे हंगता लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द गुरू सच सिख्या इक दृढ़ाईआ। शब्द गुरु गुर देवे सिख्या, साख्यात इक्को नाम जणाइंदा। धुरदरगाही नाम भिच्छया, घर घर आप वरताइंदा। ना कोई मेटे हरि का लिख्या, गुर अवतार पीर पैगम्बर शहादत सब दी इक्को वार भुगताइंदा। बिन सतिगुर शब्द निरवैर पुरख किसे ना दिस्सया, जगत अन्धेरा चारों कुण्ट छाइंदा। भगत भगवान लोकमात पेख्या, पेख पेख आपणी ख़ुशी मनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिगुर साची दया कमाइंदा। सतिगुर दयावान दयानिध ठाकर, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढ्ढाईआ। वेखणहारा गहर गम्भीर डूंघा सागर, लख चुरासी भँवरी फोल फोलाईआ। शब्द विचोला बण दलाल होका देवे इक सौदागर, वणज वणजारा वेस वटाईआ। भेव चुकाए करीम करता कादर, कुदरत कादर कायनात वेखे थाउँ थाईंआ। आत्म परमात्म मन मति बुध ब्रह्म पारब्रह्म ईश जीव जाणे सर्ब हालात, हालत सब दी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम वेखण आईआ। कलयुग अन्तिम वेखण आए आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जिस नूं ईसा मूसा कह के गया बाप, पिता इक्को नूर खुदाईआ। जिस दी मुहम्मद उपज्या शाख़, नूर नूर विचों धराईआ। जिस दा नानक निरगुण करे जाप, सोहँ ढोला गया गाईआ। जिस नूं गोबिन्द पुरख अबिनाशी गया आख, अक्ल कलधारी बेपरवाहीआ। सो साहिब सुल्ताना कलयुग अन्तिम वेखे खेल तमाश,

जोती जामा वेस वटाईआ। सच समग्री साची नगरी सति सतिवादी थापण थाप, सम्बल साचा डेरा लाईआ। साचे अस्व घोड़े राकी चढ़े ताज, दो जहानां आप दौड़ाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण वेखणहारा रच रच काज, करनी करता आपणे हथ्थ रखाईआ। कलयुग अन्त गुरमुख विरले साचे सन्त मारे शब्द आवाज़, सोई सुरती अकाल मूर्त आप जगाईआ। लेख चुकाए कलमा नबी रसूल वेला पंज सजदा निमाज़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शब्द गुरू इक्को फेरा पाईआ। शब्द गुरु गुर आए जग, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जन भगतां मार्ग देवे दस्स, साची सिख्या इक समझाईआ। दरस दिखाए उपर शाह रग, नौ दुआरे पन्ध मुकाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए कग, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। सच नगारा जावे वज्ज, नौबत इक्को नाम सुणाईआ। धर्म दुआरे कराए हज्ज, मक्का काअबा डेरा ढाहीआ। सच महल्ले आपे सद्द, महिफ़ल आपणे नाल लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सूरा सरबग्ग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। शाह पातशाह हरि सुल्ताना, सति सतिवादी इक अख्वाइंदा। कलयुग अन्तिम प्रगटे योद्धा सूरबीर मर्द मर्दाना, मर्द मरदन इक जणाइंदा। सति सरूपी शाहो भूपी बन्ने इक्को गाना, दरगाह साची सगन मनाइंदा। नाम खण्डा शब्दी चिल्ला तीर कमाना, उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फोलाइंदा। शब्द गुरु गुरदेव गोबिन्द रूप नौजवाना, बिरध बाल नज़र किसे ना आइंदा। लेखा जाणे दो जहानां, दोहरी धार ताल वजाइंदा। कलयुग उठ उठ वेखे होए हैराना, हरि जू की खेल वरताइंदा। चारों कुण्ट दिसे बियाबाना, साचा मन्दिर सोभा कोए ना पाइंदा। पीर पैगम्बर नज़र ना आए कोई सुल्ताना, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। प्रगट होए इक अमामा, बेऐब ख़ुदाई आपणा डेरा लाइंदा। साचा देवे धुर फ़रमाना, धुर दी धार आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नर हरि आपणा वेस वटाइंदा। वेस वटाए शब्द गुर सूरा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया हूंझे कूड़ा, शौह दरयाए दए सुटाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी कौल इकरार कीता करे पूरा, बेमुख हो ना मुख भवाईआ। सर्ब कला आपे भरपूरा, भरपूर रिहा सर्ब ठाईआ लेखा जाणे नेर दूरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां इक्को नाम दृढ़ाईआ। जन भगत संदेसा इक्को नाम, हरि नाम मिले वड्याईआ। अमृत आत्म पीणा जाम, चार कुण्ट ना दहि दिश उठ उठ धाईआ। अन्दर मन्दिर मिले भगवान, काया बंक वेखे चाईं चाईंआ। कलयुग मिटे रैण अन्धेरी शाम, साचा नूर भान चन्द चमकाईआ। प्रगट होवे अगम्मी राम, घनईया बंसुरी नाम वजाईआ। सच पैगम्बर दे पैग़ाम, चारे बाणी दए समझाईआ। परा पसन्ती मद्धम बैखरी रल मिल करन कल्याण,

कलमा इक्को ढोला गाईआ। गुरु गुरदेव देण ब्यान, प्रभ वड्डा वड वड्याईआ। जिस दी सिफ्त करे शास्त्र सिमरत वेद पुराण, गीता ज्ञान जगत समझाईआ। जिस दा लेखा दो जहान, पीर पैगम्बर सीस झुकाईआ। जिस दी नानक गोबिन्द मन्ने आण, दोए दोए बैठा ध्यान लगाईआ। सो साहिब सच्चा सुल्तान, सचखण्ड निवासी आप अख्वाईआ। कलयुग अंतम उस दा धुर फ़रमान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। कलयुग मेटे झूठ निशान, सतिजुग साचा मार्ग लाईआ। धरनी धरत धवल देवे माण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। भगत खुशीआं मंगल इक्को गाण, तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला नाद सुणाईआ। साचे सन्त करन प्रणाम, पुनह पुनह सीस झुकाईआ। गुरमुख गोदी बहिण आण, पिता पूत लए उठाईआ। गुरसिख तोड़ माण अभिमाण, चरण धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। किरपा कर श्री भगवान, तेरी सरन इक तकाईआ। सतिगुर पूरा सदा मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। गुरसिख देवे सच ज्ञान, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। नौ दर पैंडा मुके विच जहान, सुखमन टेडी बंक ईड़ा पिंगल बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। शब्द नाद सच्ची धुन्कान, अमृत आत्म पीण खाण, नाम सरोता सुरत सवाणी लए जगाईआ। आत्म सेजा कर परवान, किरपा करे श्री भगवान, दीवा दीपक जोत जगाए महान, कमलापाती वेखे आण, घर मन्दिर अन्दर सोभा पाईआ। उठ गुरमुख नौजवान, तेरा रखे होर निशान, सुन्न अगम्म खेल महान, अलख अगोचर इक मकान, सति सतिवादी साची बूझ बुझाईआ। सचखण्ड दुआर हरि निरँकार तख्त निवासी साचे तख्त बैठा इक सुल्तान, धुर दी धार हुक्म वरताईआ। थिर घर जा वेख बेपरवाह शब्दी गुर देवे सलाह, दोए जोड़ कर प्रणाम, सीस जगदीश बिन पंज तत ब्रह्म पारब्रह्म निवाईआ। जन भगतां मुक्ती होए दासी, दर आ के सेव कमाईआ। जिन्हां सतिगुर मिल्या पूरा साथी, फड़ बेड़ा पार कराईआ। मन हँकारी ढाहवे हाथी, नाम नेज़ा इक रखाईआ। अन्दर वड़ के करे राखी, ठग्ग चोर यार लुट्ट कोए ना जाईआ। मेटे रैण अन्धेरी राती, घर दीप जोत रुशनाईआ। शब्द सुणाए सच्ची साखी, इक्को नाम पढ़ाईआ। साचा घोड़ा नाम जणाए वड्डा राकी, सोलां कलीआं आसण पाईआ। गुरमुख मारे इक पलाकी, शाह सवारा रूप वटाईआ। वाहो दाही भज्जे किसे नज़र ना आए दो जहान निक्की ताकी, सतिगुर दर दरवाज़ा इक खुल्हाईआ। जन भगत तेरे अग्गे मुक्ती जुगती भुगती कोई रहे ना आकी, जिस जन सुरती शब्द मिलाईआ। सतिगुर पूरा सचखण्ड दुआरे बिन जन्म मरन तों देवे तन्दरुस्ती, जोती जोत नाल मिलाईआ। जो मौका वेख बेनन्ती कर लए नाल चुस्ती, तिस चार कुण्ट भय ना कोए आईआ। हरि की किरपा सदा मुफ्तो मुफ्ती, सौदा दमां चमां नाल ना कोए विकाईआ। एहो खेल सच्चे गुर की, गुरमुख गुरसिख मूर्ख मूढ़े दए बणाईआ। देवे दात धुर की, धुर वस्त झोली पाईआ। बिन पैसिउँ बिन

धेलिउँ बिन पूजा बिन पाठ बिन सिमरन बिन जोग बिन अभ्यास बिन तप बिन जप बिन हठ कर किरपा मेहर नज़र नाल तेरे चरणां हेठ रखाए मुक्ती, मुफ्त आपणे नाल मिलाईआ ।

✪ १० अस्सू २०२० बिक्रमी दिलबाग़ सिँघ दे गृह अटारी ज़िला फिरोज़पुर ✪

सचखण्ड दुआरे इक इकट्ठ, गुर अवतार पैगम्बर बैठे ध्यान लगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दोए दोए जोड़ हथ्थ, निउँ निउँ सीस रहे झुकाईआ। पुरख अबिनाशी साचा मार्ग दस्स, बेपरवाह तेरी सरनाईआ। कलयुग अन्तिम साडा चले कोई ना वस, दो जहान रहे कुरलाईआ । सृष्ट सबाई खेड़ा हुन्दा दिसे भट्ठ, चारों कुण्ट अग्नी अग तपाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, बेपरवाह तेरी सरनाईआ। जीव जंत हरि के नाम बिनां ख़ाली कर के बैठे हथ्थ, भरमे भुली सर्ब लोकाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार साधां सन्तां पाई नथ्थ, बचया कोए नज़र ना आईआ। मन वासना भज्जे तत अट्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन बुध मति ना कोए चतुराईआ। नाड़ बहत्तर उबले रत्त, सांतक सति ना कोए वखाईआ। तेरी जाणे ना कोई गति मित मित गत, तेरी समझ किसे ना आईआ। नौ खण्ड पृथ्मी दहि दिशा धीरज दिसे ना किसे हठ, सति सन्तोख रूप ना कोए वटाईआ। कूड़ कुड़यार कलयुग तेरी चुक्के मति, मति नव नौ चार रही चलाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान कोए ना सके रख, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। अञ्जील कुरान तीस बतीस नेत्र नैण रोवे अक्ख, हन्झू हार रही बणाईआ। चारे बाणी बंद कर के बैठी हट्ट, वणजारा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सब मंगण वाहो दाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सचखण्ड दुआर, निरगुण निरगुण अग्गे सीस झुकाईआ। किरपा कर प्रभ सिरजणहार, शाह पातशाह तेरी सरनाईआ। दर दरवेश खड़े भिखार, भिच्छया झोली दे पाईआ। चार युग दी सिख्या कलयुग जीव सके ना कोए विचार, गुर का शब्द समझ कोए ना पाईआ। हिरदे हरि करे ना कोए प्यार, प्रेम प्रीती नज़र किसे ना आईआ। घर घर दिसे भेख पखण्ड कूड़ विभचार, साची नार हरि कन्त ना कोए हंढ्ढाईआ। सृष्ट दृष्ट इष्ट होया धूंआँधार, साचा नूर चन्द ना कोए चमकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण सारे रोवण ज़ारो ज़ार, उच्ची कूकण देण दुहाईआ। साडी कोई ना पावे सार, कलयुग जीव तेरा नाउँ गए भुलाईआ। कर किरपा गिरवर गिरधार, मेहरवान लाशरीक सच तौफ़ीक तोहे इक खुदाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर तेरी कलयुग अन्तिम रखदे गए उडीक, नौ सौ चुरानवें चौकड़ी युग पन्ध मुकाईआ। सो वेला वक्त आया तेरा नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ।

लेखा लिख के आए ठीक, शहादत आपणी आप पाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होवे लाशरीक, बेपरवाह नूर इलाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका वेख आपणा घर, दो जहान दए दुहाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मिल के मंगण, प्रभ सीस जगदीश झुकाईआ। साहिब सुल्तान चाढ़ साची रंगण, रंग इक्को इक वखाईआ। तेरे दर खलोते सारे मंगण, नेत्र नैण नैण शरमाईआ। कलयुग अन्तिम खेड़ा हुन्दा दिसे भंगण, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, हरि तेरी सच सरनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे रहे सोच, हरि सरन ध्यान लगाईआ। अबिनाशी करते तेरी कोई ना करे सोच, सोच समझ समझ ना सके राईआ। चार युग तेरा कढ्डुणे गए खोज, खोजत खोजत तेरा अन्त कोए ना पाईआ। तेरा नाम निधाना इक्को बोध, नित नवित्त करे पढ़ाईआ। तेरा भेव ना जाणे कोई गोझ, डूंघा सागर तरन कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को वेख आपणा दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। श्री भगवान खोल्ह दरवाज़ा, लाशरीक तेरी सरनाईआ। कलयुग चार कुण्ट कूड़ी क्रिया वज्जे वाजा, साचा नाद शब्द धुन राग ना कोए सुणाईआ । आत्म परमात्म रचे ना कोई काजा, लख चुरासी घर घर होवे कुड़माईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मारे ना कोए आवाज़ा, मात पित पिता पूत सोए सर्ब जगाईआ। तेरे चरण जोड़े ना कोए नाता, साक सज्जण कोटन कोटि रूप वटाईआ। अन्तर आत्म तेरी कोई ना गाए गाथा, रसना जिह्वा बत्ती दन्द करन पढ़ाईआ। चरण सरन सरनाई सच कोई ना टेके आपणा माथा, मस्तक टिक्का धूढ़ ना कोए लगाईआ। श्री भगवान तेरे भगतां करन हासा, तेरी भगती मनमुख जीव कोए ना भाईआ । अन्तिम वेख आप तमाशा, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा नूर कर रुशनाईआ । उच्चे मण्डल वेख पैंदी रासा, कूड़ कुड़यार करे नाच वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक सुणाईआ। सच संदेसा सुणो पैगम्बर गुरू पीर अवतार, श्री भगवान आप जणाईआ। चार युग दा लेखा अन्तिम दयां निवार, बलधारी रूप वटाईआ। दोए जोड़ सरन सरनाई सारे करो निमस्कार, गल पल्लू वास्ता पाईआ। प्रभ स्वामी साडी करनी गई हार, करते तेरी ओट तकाईआ। असीं कर के आए पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। बिन पुरख अकाल अन्तिम कोई ना पावे सार, महासार्थी इक्को फेरा पाईआ । कल कल्की लै अवतार, निहकलंक निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। डंका वज्जे अगम्म अपार, दो जहान करे शनवाईआ। कूड़ी क्रिया मिटे अन्ध अँध्यार, चन्द चांदना इक रुशनाईआ। तूं साहिब दयाल ठाकर बख्शणहार, बेअन्त बेपरवाह अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त इक वरताईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर

दोए जोड़, सजदा सीस जगदीश झुकाईआ। सदी चौधवीं तेरी लोड़, बीस बीसा नैण उठाईआ। कलयुग हँकारी पावे शोर, डंका आपणा नाम लगाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मढ्ढ सारे दित्ते होड़, होका आपणा इक सुणाईआ। मुल्लां शेख़ मुसायक पंडत पांधे आपणे अग्गे लए तोर, ग्रंथी पन्थी बचया नज़र कोई ना आईआ। सब दे अन्दर वड़या काम क्रोध लोभ मोह हँकार झूठा चोर, शब्द डोरी तन्द ना कोए बंधाईआ। हरिमन्दिर बहि के कोई ना चुकाए मोर तोर, तेरा मेरा भेव ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे दयो ब्यान, पुरख अबिनाशी आप जणाईआ। कलयुग अन्तिम असीं सारे होए हैरान, कूड़ी क्रिया वेख वखाईआ। सिदक सबूरी दिसे ना कोए ईमान, कलमा हक़ ना कोए सुणाईआ। मन्त्र सति ना कोए नाम, डंका फ़तहि ना कोए वजाईआ। नज़री आए ना किसे राम, काहना रूप ना कोए वटाईआ। ईसा मूसा दए ना कोई पैग़ाम, मुहम्मद आयत शरायत ना कोए समझाईआ। कायनात दिसे वैरान, चौदां तबक रहे कुरलाईआ। चौदां लोक करन ध्यान, नेत्र नैण नैण उठाईआ। रल मिल मंगो इक दान, दोए जोड़ जोड़ सरनाईआ। किरपा करे श्री भगवान, कलयुग अन्तिम लेखा लहिणे लए पाईआ। प्रगट होवे वाली दो जहान, दो जहानां वाली आपणा वेस वटाईआ। हुक्म देवे हुक्मरान, धुर संदेसा आप सुणाईआ। शब्द गुरू वड बलवान, लोकमात सेव लगाईआ। सृष्ट सबाई करे पहचान, लुक्या कोए रहिण ना पाईआ। फड़ फड़ मेटे जीव शैतान, बेईमान रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, सच सुनेहड़ा इक समझाईआ। सच सुनेहड़ा सुण लओ बात, हरि बातन ज़ाहर आप जणाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर इकावन बावन बणो इक जमात, साची पट्टी इक पढ़ाइंदा। लेखा लिखे बिन कलम दवात, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। नेत्र खोल्ह लोकमात मारो झात, झाकी सब नूं आप जणाइंदा। दीन मज़्हब ज़ात पात कोई करे ना सच्ची बात, सच सुनेहड़ा हाल ना कोए सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सुच इक समझाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर गए मन्न, मनसा आपणी देण जणाईआ। तेरा हुक्म श्री भगवान मन्नीए कर के धन्न धन्न, धन्न धन्न तेरी वड्याईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी गुर अवतार तेरा चन्न, जोती किरन किरन रुशनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरे हुक्मे अन्दर बेड़ा बन्न्ह, निरगुण सरगुण आए चलाईआ। कलयुग अन्तिम जीव जहान नेत्र होए अन्न्ह, लोचण सके ना कोए खुल्हाईआ। मन वासना हल्काई होई मन, मनमन्त्र बूझ ना कोए बुझाईआ। पंच विकारा देवे डंन, डौरु डंका इक वखाईआ। घर सवाणी होई रंड, कन्त सुहागी नज़र कोए ना आईआ। चारों कुण्ट भेख पखण्ड,

सति सरूप ना कोए दरसाईआ। आत्म मिले ना किसे अनन्द, परमानंद ना कोए समाईआ। साचा ढोला गाए ना कोई छन्द, रसना जिह्वा सारे रहे कुरलाईआ। नाता तोड़े ना कोई ख़ानाबंदी बंद, बंदी छोड़ नज़र कोए ना आईआ। सच दुआरयों इक्को मंग रहे मंग, प्रभ तेरे अग्गे झोली डाहीआ। साडी पिछली कीती अन्तिम गई हंढु, बीस बीसा राह तकाईआ। तेरी ओट सूरे सरबँग, अग्गे इक्को इक नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, लोकमात वेख आपणा फेरा पाईआ। श्री भगवान सच समझाउँदा ए। गुर अवतारां भेव चुकाउँदा ए। पीर पैगम्बरां आख सुणाउँदा ए। नेत्र लोचण सर्ब खुलाउँदा ए। शब्द इशारे नाल जणाउँदा ए। लोकमात धार वखाउँदा ए। कलयुग भुल्ले जीव गंवार, माया ममता पड़दा लाउँदा ए। नेत्र वेखो करो दीदार, गुर का शब्द ना कोए कमाउँदा ए। कलमा नबी ना कोए सहार, रोज़ा निमाज़ सच सुच विच ना कोए समाउँदा ए। साची करे ना कोई गुफ़तार, आशक माअशूक मिसल सच ना कोए बणाउँदा ए। गुर अवतार पीर पैगम्बर नेत्र वेख रोवण ज़ारो ज़ार, दरोही साडी कीती कलयुग जीव अन्त भुलाउँदा ए। असीं दस्सदे आए जुग चार, चारों कुण्ट कूड़ी क्रिया डंक वजाउँदा ए। प्रभ किरपा करे करतार, करता आपणी मेहर नज़र उठाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नेत्र नैणां सर्ब वखाउँदा ए। नेत्र वेख नैणां हाल, गुर अवतार पीर पैगम्बर पए सरनाईआ। साची कोई ना घाले घाल, सेवा सच ना कोए कमाईआ। नज़र ना आए कोई पूत सपूता लाल, मुर्शद मुरीद ध्यान ना कोए लगाईआ। हकीकत मिले ना हक़ हलाल, सच सुच ना कोए दरसाईआ। चारों कुण्ट वज्जे ताल, डौरु डंका कलयुग हथ्थ उठाईआ। ना कोई सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद संग ना कोए निभाईआ। असीं वेख होए बेहाल, बिहबल हो के रहे सुणाईआ। बिन साहिब सतिगुर दीन दयाल करे ना कोई संभाल, सुबह शाम भेव ना कोए चुकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण, गीता ज्ञान अञ्जील कुरान गुरू ग्रंथ पढ़ पढ़ होए कंगाल, हरि का नाउँ काया झोली ना कोए भराईआ। साचे मन्दिर अन्दर दीपक लए ना कोई बाल, जोत निरँजण ना कोए रुशनाईआ। अन्तर आत्म जाम सके ना कोए प्याल, झिरना रस ना कोए झिराईआ। साढे तिन्न हथ्थ अन्दर घर विच घर वखाए ना कोई सच्ची धर्मसाल, शिवदुआले मठ्ठ मन्दिर मस्जिद सारे फेरीआं पाईआ। अनहद शब्द वजाए ना कोई ताल, साध सन्त जीव जंत ढोलक छैणे रहे खड़काईआ। सोई सुरती लए ना कोई उठाल, शब्दी मेल ना कोए मिलाईआ। त्रैगुण तोड़े ना कोए जंजाल, जागरत जोत ना करे रुशनाईआ। श्री भगवान हो मेहरवान आपणी सृष्टी वेख जा के हाल, अन्ध अन्धेरा रिहा छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरी आस रखाईआ।

श्री भगवान कहे मैं जावांगा। निरगुण जोती जोत रुप वटावांगा। मात पिता ना कोए बणावांगा। लोक परलोक वेख वखावांगा। सच श्लोक इक सुणावांगा। जो रख के बैठे ओट, तिन्हां आपणा मेल मिलावांगा। नाम नगारे लावां चोट, साचा डंका हथ्थ उठावांगा। लख चुरासी कढ्ढां खोट, साची सिख्या इक दृढ़ावांगा। लहिणा देणा चुक्के वरन गोत, दीन मज़्हब ज़ात पात मेट मिटावांगा। पुरख अकाल सच प्रीती नाता जुड़े नात, सरन सरनाई इक्को इक वखावांगा । क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश बणावां इक जमात, कलमा नबी रसूल नाम सति सति समझावांगा। वेखां सब दा जा के हालात, हालत वेख रहम कमावांगा। जो गुरमुख गुरसिख कलयुग विच बैठे बंद हवालात, तिन्हां बंदीख़ाना तोड़ तुड़ावांगा। लहिणा देणा चुकावां पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल डेरा ढाहवांगा। निरवैर हो के देवां साथ, निरगुण आपणा राह चलावांगा। चार युग दा वेखां पूजा पाठ, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी फोल फोलावांगा। कलयुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग साचा चन्द चमकावांगा। दो जहानां मण्डल रास, गोपी काहन आप नचावांगा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां पूरी करां आस, आसा तृष्ना नाल रलावांगा। निहकलंक निरगुण नूर जोत कर प्रकाश, प्रकाशवान इक्को इक अख्वावांगा। जन भगतां लेखे लावां स्वास स्वास, पवण उणंजा खोज खुजावांगा। साचे सन्तां वसां पास, काया मन्दिर अन्दर उच्चे पौड़े चढ़ के आपणा डेरा लावांगा। गुरमुखां सुणावां आपणी गाथ, आत्म परमात्म राग अलावांगा। गुरसिखां चरण प्रीती जोड़ नात, कूड़ा नाता तोड़ तुड़ावांगा। सचखण्ड दुआर खेल करतार, करता पुरख हो के हुक्म मनावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, लहिणा देणा सब दी झोली पावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर खुशी नाल करन निमस्कार, वाहवा तेरी वड वड्याईआ। आदि जुगादी तेरी धार, धुर दी धार समझ किसे ना आईआ। हउँ बालक बाले बाल अञ्याण, पिता पूत तेरी ओट तकाईआ। तेरा चरण कँवल सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्को नज़री आईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण हो बण दलाल, सच दलाली नाम कमाईआ । तेरी दे के आए अक्खरां नाल मिसाल, तेरी मिसल सके ना कोए बणाईआ। तेरी किरपा अन्दर रहीए खुशहाल, खुशी खुशी तेरा ढोला नाउँ गाईआ । तूं ठाकर दाता सदा दयाल, दयानिध तेरी सरनाईआ। जुग चौकड़ी चलें अवल्लड़ी चाल, चाल निराली आपणे हथ्थ रखाईआ। हुक्मे अन्दर लोकमात तेरी घालण आए घाल, कीती घाल लेखे पाईआ। तेरे अग्गे साडा प्रभू इक स्वाल, हरिजन हरि भगत गुरमुख गुरसिख लख चुरासी विचों लैणे उठाईआ। साचा मार्ग देणा सिखाल, एका पट्टी नाम पढ़ाईआ। नेड़ ना आए काल महाकाल, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। चित्रगुप्त लेख ना सके वखाल, लाड़ी मौत ना अन्त प्रनाईआ। आपणी गोदी लैणा उठाल, फड़ बाहों गले लगाईआ। रसना कहिणा उठ

मेरे लाडले लाल, लालन तेरा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर सचखण्ड दुआर तेरी सरनाईआ। मैं निरगुण हो के जावांगा। पुरख अकाल रूप वटावांगा। दीन दयाल नाम धरावांगा। भगत भगवान बण उठावांगा। सन्त निशान इक झुलावांगा। गुरमुख गुर माण दिवावांगा। गुरसिख मिले आण, बण पांधी पन्ध मुकावांगा। सच संदेसा दे फ़रमान, धुर दा लेखा आप समझावांगा। एथे ओथे मिले माण, दो जहानां संग निभावांगा। अन्त वखावां तुहानूं आण, अन्त तुहाडे नाल मिलावागा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, चेला गुरू इक्को घर वसावांगा। चेला गुर इक्को घर वसेगा। गुर गोबिन्द सूरा हस्सेगा। साचा मार्ग इक्को दस्सेगा। शाह सवार हो के नस्सेगा। तीर निराला इक्को कसेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान पिच्छे कदे ना हटेगा। मेहरवान दया कमाएगा। निरगुण निरवैर धार चलाएगा। सच सुच मात प्रगटाएगा। वस्त अमोलक देवे झुक, जन भगतां झोली पाएगा। कलयुग पैंडा जाए मुक्क, सतिजुग राही उठ के आएगा। किरपा करे जो बैठा लुक, अबिनाशी करता पड़दा लाहेगा। जन भगतां उजल करे मुख, मुख दुरमति मैल धवाएगा। जिस दी जुग चौकड़ी सुखणा रहे सुख, सो पुरख निरँजण वेख वखाएगा। हरि पुरख निरँजण ना माणस ना दिसे मनुख, निरगुण नूर जोत रुशनाएगा। सन्त सुहेले गोदी चुक्क, घर आपणे खुशी मनाएगा। शब्द अगम्मी धारों उठ, धुर फ़रमाणा हुक्म सुणाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाएगा। मेहरवान प्रभ आवेगा। दीनन साची दया कमावेगा। गुरमुख सोए आप जगावेगा। फड़ मार्ग इक वखावेगा। नाद धुन आप सुणावेगा। रिख मुन भेव चुकावेगा। लख चुरासी विचों चुण, चुण आपणा रंग चढ़ावेगा। आपे दस्से आपणे गुण, गुणवन्ता आपणा खेल समझावेगा। गुर अवतारो पीर पैगम्बरो तुहाडी पुकार लए सुण, सुण आपणे विच रखावेगा। लख चुरासी छाण पुण, नाम निधाना इक टिकावेगा। जन भगतां लाए आत्म तुन, तन्दी तन्द सितार हलावेगा। हरि का भेव जाणे कौण, लेखा लिख्त विच ना आवेगा। बिरहों विछोड़े अन्दर जो सन्त सुहेले रोण, तिन्हां धीरज आप धरावेगा। बिरहों वैरागी हो जो रात दिन ना सौण, तिन्हां साची गोद बहा के गूढ़ी नींद सुआवेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर साचा मन्त्र नाम इक्को दृढ़ावेगा। प्रभ मन्त्र नाम आप दृढ़ावेगा। गगन गगनंतर खोज खोजावेगा। कलयुग लग्गी बसन्तर आप बुझावेगा। लख चुरासी उच्च महल्ला, साचा मन्दिर इक वखावेगा। जिस घर वसे इक इकल्ला, सो धाम भुमका आप सुहावेगा। जो निरगुण शब्दी धार रला, रूप रंग रेख ना कोए रखावेगा। सच

संदेसा इक्को घल्ला, धुर दा नाद आप वजावेगा। निरवैर हो फड़ावे पल्ला, शब्दी आपणी गंढु पुआवेगा। प्रभ कलयुग अन्तिम वेख वखावेगा। सर्ब जीव आप समझावेगा। अन्तरीव भेव खुल्ह्रावेगा। साढे तिन्न हथ्थ सीं आप सुहावेगा। ईश जीव आप जगावेगा। सच प्रीत इक लगावेगा। आत्म परमात्म ठांडा सीत, सीतल धार इक बरसावेगा। पारब्रह्म ब्रह्म नज़री आए अतीत, त्रैगुण डेरा आपे ढाहवेगा। हर घट वसया हस्त कीट, इक्को नूर ज़हूर चमकावेगा। कलयुग मिट्ठा करे कौड़ा रीठ, अमृत रस इक भरावेगा। लख चुरासी लए जीत, जित आपणे हथ्थ रखावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बीसण बीस, बिस्मिल आपणी खेल वखावेगा। साचा खेल करे करतार, हरि करता वड वड्याईआ। आसा मनसा पूरी करे विच संसार, ममता रोग चुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर नेत्र नैणां दए वखाल, सच वसाल आप कराईआ। आपणा अक्खीं वेखो दीन मज़्हब दा हाल, हालत सब दी दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, पूरा सब दा करे हल्ल स्वाल, अंकड़ा अंक बचया कोए रहिण ना पाईआ। ना कोई होए अंक अगणत, गिणन विच सर्ब रखाइंदा। जिस दे अग्गे गुर अवतार पीर पैगम्बर करन मिन्नत, सो मेहरवान आपणी खेल रचाइंदा। जिन आदि जुगादि जुग चौकड़ी बोदी टिक्का धार चलाई सुन्नत, सीस जगदीश वेख वखाइंदा। सो लेखा जाणे पंडत पांधे क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश दीन इस्लाम उम्मत, उम्मत उम्मती फेरा पाइंदा। सर्ब गुण भरपूर स्वामी सदा सदा परफुल्लत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा आप चुकाइंदा। साचा लेखा चुक्के कलयुग, कल काती मेट मिटाईआ। धर्म दुआर वेखे सतिजुग, सति सतिवादी दया कमाईआ। नित नित सब दा पैंडा जाए मुक्क, थिर कोए रहिण ना पाईआ। प्रभू दी धारों सतिजुग धार पए उठ, उठ उठ लए अंगड़ाईआ। लोकमात विचों प्रभ दी धार विच कलयुग जाए लुक, आप आपणा मुख छुपाईआ। दोहां विचों सब नूं देवे आत्म सुख, सुख आत्म इक वखाईआ। लख चुरासी विचों जो माणस बणे मनुक्ख, तिन्ह्रां मोह मुहब्बत इक वखाईआ। जन भगत कर तैयार करे प्यार जिउँ मावां पुत्त, पिता पूत गोद उठाईआ। वेख वखावे सुहञ्जणी रुत्त, रुत्त रुतड़ी आप महकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर प्रभ कोलों सारे रहे पुच्छ, साहिब सतिगुर दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, करे खेल सच्चा हरि, नव नौ चार लेखा दए मुकाईआ।

✪ १० अस्सू २०२० बिक्रमी सुलखण सिँघ दे गृह रुकना मूंगला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

शाह पातशाह तेरा खेल महाना, सच सुल्तान तेरी वड्याईआ। गुर अवतार मन्नण तेरा भाणा, जुग चौकड़ी सके ना कोए उलटाईआ । पीर पैगम्बर दर दरवेश गायण गाणा, तू ही तू ही राग अलाईआ। निरवैर पुरख तेरा खेल दो जहानां, श्री भगवान समझ सके कोई ना राईआ। विष्न ब्रह्मा शिव देवे ज्ञाना, निष्अक्खर इक पढ़ाईआ। निरगुण सरगुण पहरें बाणा, वेस अनेका रूप वटाईआ। शब्द अनादी गाए तराना, धुरदरगाही आप सुणाईआ। लख चुरासी अन्दर वड़ के करें खेल महाना, ख़ालक ख़लक तेरी वड्याईआ। तेरा नाउँ योद्धा सूरबीर मर्द मर्दाना, वड मर्दानगी इक कमाईआ। दो जहानां बणया हुक्मराना, तख्त निवासी साचे तख्त सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर मंगण सारे आईआ। सो पुरख निरँजण तेरा ज़ोर, जाबर जबर तेरी सरनाईआ। दूजा दिसे ना कोई होर, नव नौ वेखया थाउँ थाईंआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर देवें तोर, सच संदेसा इक सुणाईआ। आपणे हथ्थ रखें अगम्मी डोर, शब्द शब्दी तन्द बंधाईआ। नाम निधान मचाएं शोर, डंका इक्को इक लगाईआ। कर प्रकाश अन्धेरे घोर, साचा चन्द नूर चमकाईआ । चढ़ के वेखें आपणे घोड़, अस्व नज़र किसे ना आईआ। एकँकार मारें धुर दा पौड़, ज़िमीं असमान दएं हिलाईआ। नेत्र खोल्ह वेखे धरनी धौल, धरत बैठी ध्यान लगाईआ। आदि जुगादि पूरा करें कौल, कीता कौल भुल ना जाईआ। सच सुणावें आपणा बोल, अनबोलत राग अल्हाईआ । वड भण्डार देवें खोल्ह, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाईआ। साचे कंडे तोलें तोल, नाम तराज़ू हथ्थ उठाईआ। आप बैठा रहें अडोल, लख चुरासी रही डुलाईआ। त्रैगुण माया पंज तत घर घर करे घोल, चार कुण्ट दहि दिशा पई लड़ाईआ। आत्म परमात्म करे ना कोई चोहल, सच प्रीती तोड़ ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दो जहान तेरी सरनाईआ। शाह पातशाह वड सच भूप, राजन राज तेरी ओट तकाईआ। आदि जुगादी सति सरूप, सति सतिवादी तेरी सच्ची इक सरनाईआ। तेरा लेखा चारे कूट, दो जहान तेरा हुक्म इक्को नज़री आईआ। कलयुग अन्तिम वेख जूठ झूठ, जगत अन्धेरा गया छाईआ। साचा दिसे ना कोए पूत, बेमुख होई सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, प्रभ तेरे जिहा दूजा नज़र कोए ना आईआ। साहिब सज्जण बेपरवाह, दो जहान वाली इक अख्वाईआ। निरगुण हो के बण मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरे चरण कँवल मंगण पनाह, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। साडा लेखा अन्त मुका, अग्गे बाकी रहिण कोए ना पाईआ। पूरब लेखा झोली पा, ख़ाली झोली दे भराईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा सच वर, वर इक्को मंग मंगाईआ। शाह पातशाह साचा राणा, आदि जुगादी इक अख्वाइंदा। जुग चौकड़ी तेरा भाणा, श्री भगवान ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। कलयुग अन्तिम खेल करें महाना, महिमा कथ ना कोए सुणाइंदा। तख्तों लाहें राजा राणा, रयत्त लख चुरासी वेख वखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा सुरप्त इन्द दर भिखारी मंगे दाना, दोए जोड़ वास्ता पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर इक्को आस तकाइंदा। दर आस इक्को रहे तक्क, चरण कँवल मंगण सरनाईआ। अगला पिछला दे हक़, प्रभ वड्डे तेरी वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी दे संदेसा गए थक्क, नर नरेशा नज़र किसे ना आईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त सिम्मल रुक्ख हल्ले पत, साचा फल नजर कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एको देणा साचा वर, तेरे तेरा ध्यान लगाईआ। तेरे लगावण तेरा ध्यान, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। साचा देणा शब्द ज्ञान, नाम निधान बूझ बुझाईआ। राग सुणाउणा इक्को कान, धुन आत्मक आप उपजाईआ। मन्दिर वखाउणा सच मकान, सच दुआरा सोभा पाईआ। दीवा जोती जगे महान, बाती तेल नज़र कोए ना आईआ। अमृत सरोवर पीण खाण, जग तृष्ना भुक्ख रहे ना राईआ । सच प्रीती मिले बबाण, दो जहानां पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा आपणा घर, घर साचा सोभा पाईआ। साचा घर खोल्ह दुआर, ख़ालक ख़लक तेरे हथ्थ वड्याईआ। मांगत भिखक मंगण वारो वार, दर दरवेश बैठे अलख जगाईआ। जुग चौकड़ी गई हार, चार कुण्ट अन्धेरा छाईआ। नाता तोड़ गुरू अवतार, पीर पैगम्बर पल्लू गए छुडाईआ। चारों कुण्ट हाहाकार, हरि का नाम ना कोए बुझाईआ। नेत्र खोल्ह करे ना कोई दीदार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, घर साचे वज्जे वधाईआ । वज्जे वधाई तेरे घर, दूजा मन्दिर नज़र कोए ना आईआ। साहिब सुल्तान किरपा कर, पारब्रह्म हथ्थ तेरे वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरे हुक्म कोलों रहे डर, अग्गे सीस ना कोए उठाईआ। चरण कँवल बैठे दड़, नेत्र नैणां नीर नीर वहाईआ। कलयुग अन्तिम चार कुण्ट दहि दिशा ना कोई सर, सरोवर रूप ना कोए वटाईआ। लख चुरासी जीव जंत त्रैगुण अग्नी रहे सड़, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ । पंज तत विकारा रिहा लड़, खण्डा खड़ग नाम ना कोए चमकाईआ। सुरत शब्दी कोई ना सके फड़, भरमे भुल्ले पांधी राहीआ। तोड़ ना सके कोई हँकारी गढ़, कूड़ी क्रिया डेरा कोए ना ढाहीआ। साचे मन्दिर कोई ना सके चढ़, जगत दुआरे पार कराईआ। जींवदयां कोई ना सके मर, मरना समझ किसे ना आईआ। तेरा मिले ना साचा दर, नौ दर भज्जण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, क्यों बैठा मुख

छुपाईआ। पुरख अकाल क्यों बैठा छुप, आप आपणा भेव छुपाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी रिहों लुक, निरगुण तेरा पड़दा सके ना कोए उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर होए क्यों बुक्क, नाम संदेसा इक सुणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती जोत जोत रुशनाईआ। सचखण्ड दुआर खोल्ह इक्को कोट, कोटन कोटी बैठे ध्यान लगाईआ। आदि जुगादि तेरा लेखा किसे ना आवे सोच, सोच समझ सके ना कोई राईआ। तेरे दर्शन हरिजन साचे रहे लोच, लोचण लोचण नैण खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, रहमत आपणी आप कमाईआ। रहमत कर वड मेहरवान, दर तेरे अलख जगाईआ। कलयुग अन्तिम मार ध्यान, ध्यान ध्यान विचों प्रगटाईआ। सृष्ट सबाई भुल्ला तेरा आत्म परमात्म ज्ञान, पारब्रह्म ब्रह्म नज़र किसे ना आईआ। ईश जीव ना कोई कल्याण, जगदीश लेखा सके ना कोए मुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सुणे ना कोए कान, धुन अनादी राग ना कोए अल्हाईआ । शब्द निराला तीर मारे ना कोए बाण, तिक्खी मुखी धार ना कोए जणाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द चारों कुण्ट करन कल्याण, कलमा हक़ ना कोए दृढ़ाईआ। तेरा दिसे ना सच निशान, जगत निशाने रहे झुलाईआ। प्रगट हो श्री भगवान, भगवन आपणी कार कमाईआ। काग़ज़ कलम शाही कूकण उच्ची कूक करन पुकार, नेत्र रोवण ज़ारो ज़ार, होका देवण वाहो दाहीआ। तुध बिन कोई ना सुणे पुकार, नाता छुटा जीव संसार, मिले कोई ना मीत मुरार, सज्जण संग ना कोए निभाईआ। चारों कुण्ट धूंआँधार, दहि दिशा ना कोई उज्यार, ज़िमीं असमान गए हार, हरि का रूप नज़र कोए ना आईआ। धरत धवल ना चुक्के भार, अमृत कँवल खिले ना कोई गुलज़ार, साँवल सवल मिले ना मीत मुरार, नैण मूंद नैतर नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। राम रूप नज़र ना आवे तेरा करतार, साचा दीआ करे ना कोए उज्यार, दहि दिशा दिसे आई हार, जित रूप ना कोए वटाईआ। लेखा छड्ड के गए गुरू अवतार, पीर पैगम्बर तेरे दरबार, इक्को बोलण इक जैकार, तेरा ढोला सोहला राग अल्हाईआ। तूं साहिब परवरदिगार, आदि जुगादी सांझा यार, मुरीद मुर्शद वेखें आपणी वार, साची धार मात प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को वेख आपणा घर, जिस घर वसे जगत लोकाईआ। उठ प्रभ वेख आपणा जगत, नेत्र जाग आप खुल्हाईआ । लख चुरासी उबले रक्त, बूँद बूँद रही तपाईआ। आसा तृष्ना मन वासना रहे भटक, भटकना इक्को नज़री आईआ। पंच विकारा चढ़या कटक, बल आपणा आप प्रगटाईआ। अन्दर वड़ के कोई. ना सके पिच्छे हटक, भय नाल ना कोए डराईआ। कलयुग साध सन्त डूंघी भँवरी रहे लटक, बण पांधी पन्ध ना कोए मुकाईआ। तेरे औण दा इक्को वक्त, नानक गोबिन्द गया समझाईआ। खेले खेल प्रभ आदि शक्ति, शक्ति भवानी लेखे लाईआ। निरवैर

५६१ १५

हो के आवे परत, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। खेले खेल अर्श फ़र्श, कुर्श वेखे थाउँ थाईंआ। मेट मिटाए सब दी हरस, हवस सब दी आपणी झोली पाईआ। जन भगतां उते करे तरस, मेहर नज़र नैण उठाईआ। अमृत मेघ इक्को बरस, सृष्ट सबाई अग्नी तत बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। आ ठाकर प्रभ सच स्वामी, दो जहान रहे कुरलाईआ। वास्ता पाए चारे बाणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी नेत्र नैणां नीर वहाईआ। दोए जोड़े हथ्थ चारे खाणी, सजदा सीस जगदीश झुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन ध्यानी, ध्यान ध्यान विच रखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण तेरी आई अन्त निशानी, निशाना आपणा दे लगाईआ। चार युग तेरी गाई कहाणी, अक्खर अक्खर जोड़ जुड़ाईआ। अठसठ तेरा खेल रचाया पाणी, बोध अगाध बाणी नाल रलाईआ। सुरती शब्द जणाया हाणी, घर साचे भेव चुकाईआ। किरपा कर शाह सुल्तानी, शाह पातशाह तेरी सरनाईआ। कलयुग बीती बाल अवस्था औध जवानी, बुड़ेपा अन्तिम गया आईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां चारों कुण्ट आवे हानी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण अपणा वेस वटाईआ। निरगुण उठ शाह सुल्तान, क्यों बैठा मुख छुपाईआ। तेरा तेरे अग्गे मंगे दान, तेरी इक्को ओट तकाईआ। शब्द सुत तेरा बलवाल, बलधारी इक अख्वाईआ। आदि जुगादी बण गुरू मेहरवान, सतिगुर आपणा रूप समझाईआ। दो जहान लेख चुकाए आण, चौदां लोक चौदां तबक पड़दा दए उठाईआ। लेखा जाण ज़िमीं असमान, ज़ेर ज़बर दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा सच्चा घर, जिस घर बैठा रहें बेपरवाहीआ। बेपरवाह प्रभ सच्चा कहिन्दा, धुर फ़रमाण जणाईआ। सचखण्ड दुआर हरि निरँकार इक्को रहिंदा, महल अटल डेरा लाईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतार पीर पैगम्बर वस्त अमोलक नाम देंदा, दाता दानी बण वरताईआ। दो जहान निरगुण हो के सदा वेंहदा, वेखणहारा नज़र किसे ना आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी वेंते वेंतां, सच पैमाना आपणे हथ्थ उठाईआ। आदि जुगादि किसे ना देवे भेता, गहर गम्भीर आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ । लख चुरासी जानणहारा साचा लेखा, लेखा लिख्त आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हुक्मी हुक्म इक वरताईआ । साचा हुक्म कर निरँकार, क्यों सुन्न समाध लगाईआ। कलयुग चारों कुण्ट जीव जंत होया दुख्यार, दुक्खां भरी रोवे सर्ब लोकाईआ। नाता तुटा पिता पूत प्यार, मात साची गोद ना कोए सुहाईआ। नार कन्त करे विभचार, बसन्त रूप रंग ना कोए रंगाईआ। चारों कुण्ट धूंआँधार, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। क्यों छुपिउँ परवरदिगार, बेऐब ऐब वेख के खुशी मनाईआ। वेला नहीं होण दा ग़ाइब, ज़ाहर ज़हूर रूप वटाईआ। जन भगतां उते

कर अनाइत, मेहर नज़र उठाईआ। अग्गे करन नहीं देणी तैनूं कोई किफ़ायत, बेपरवाह तेरी आस रखाईआ। पिछली छड्ड शरअ शरायत, शरीअत रहिण कोए ना पाईआ। उठ के सतिगुर दे इक हदाइत, हद्द हदूद दे तुड़ाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सद तेरे मातहित, तूं सब दा आका इक्को नज़री आईआ। तेरे हुक्मे अन्दर शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान लिख के गए शरायत, शर्त इक्को तेरे नाम पाईआ। अन्तिम आ के सब दी कर हमायत, हमला करे ना कूड़ी क्रिया जगत लोकाईआ। तेरे अग्गे इक्को इक सच वज़ाहत, वाज़िह कीता बेपरवाहीआ। आपणा सोच ना कोई मुफ़ाइद, मुफ़लस रोवण मारन धाहीआ। आपणा बदल प्रभू कवाइद, क़ानून काइदा अग्गे इक बणाईआ। साचा हुक्म कर आइद, अदालत इक्को इक लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान फेरा पाईआ। मेहरवान प्रभ छेती आ, सरगुण निरगुण तेरा ध्यान लगाईआ। तुध बिन दिसे ना कोई मलाह, दो जहान बेड़ा पार कराईआ। गुर अवतार दे के गए सलाह, पुरख अकाल इक्को मन्नो दाता वड वड्याईआ। जिस दे नालों होए जुदा, अन्तिम आपणे विच मिलाईआ। उस दे कदमां उत्तों हो फ़िदा, चरण कँवल धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। कर किरपा मार्ग दस्से इक्को सिध्धा, चार वरन रहे ना कोए लड़ाईआ। मिल सखीआँ पाए गिद्धा, गीत गोबिन्द इक सुणाईआ। तन मन जाए विधा, तीर निशाना इक चलाईआ। आपणे मिलण दी दस्से निक्की बिधा, बहुती करे ना कोए पढ़ाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल श्री भगवान सब दा पिता, लख चुरासी आपणी गोद उठाईआ। जो गुरमुख लख चुरासी विचों करदे साचा हिता, तिन्हां आपणी उँगली लए लगाईआ। ना वेखे कोई वड्डा निक्का, बाल अञ्याणे सुघड़ स्याणे दए बणाईआ। हर घट अन्दर वड़ के करे प्रेमी हिता, हितकारी रूप वटाईआ। खेले खेल नित नवित्ता, जुग चौकड़ी फेरा पाईआ। नाम निधान चलाए आपणा सिक्का, मोहर इक्को इक लगाईआ। दूजे हट्ट कदी ना विका, कीमत सके ना कोए चुकाईआ। रस देवे कदे ना फिक्का, अमृत धार इक वहाईआ। घर वखाए आपणा अनडिठा, निज नैतर नैण खुल्हाईआ। चार युग जिस दा गाउँदे सारे कहाणी किस्सा, सो किस्मत सब दी दए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेख आ के साचा घर, नौ खण्ड पृथ्मी रही कुरलाईआ। पारब्रह्म प्रभ आ नेड़े, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। चार युग दे पए झेड़े, अन्तिम लेखे लाईआ। सुंञें होए बिन तेरे खेड़े, दीआ बाती नज़र कोए ना आईआ। चारों कुण्ट नज़र ना औण धुर दे डेरे, डंका नाम ना कोए वजाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर पा के गए फेरे, आप आपणा वेला वक्त लँघाईआ। अन्तिम कह के गए श्री भगवान सब दा दाता करे मेहरे, मेहर नज़र इक उठाईआ। साहिब सतिगुर कलयुग अन्त आए कूड़ी क्रिया घेरे, गढ़ सके ना कोए

तुड़ाईआ। बिन तेरे पुरख अकाल दीन दयाल सुरत सवाणी नाल चौथी लांव कोई ना लवे फेरे, कूड़े कन्त घर घर बैठे कर कुड़माईआ। आ प्रभू प्रभ मेरे वड़ जा वेहड़े, आपणा चरण कँवल टिकाईआ। चार युग बैठे रहे कर के जेरे, इक तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आ वेख धुर दा दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। पारब्रह्म प्रभ खोल्ह दरवाज़ा, बंद ताकी कुण्डा लाहीआ। किरपा कर ग़रीब निवाज़ा, ग़रीब निमाणे मंग मंगाईआ। अन्त कन्त भगवन्त रख लाजा, लाजावन्त तेरी सरनाईआ। तेरा धाम सम्बल किसे ना लभ्भा देस माझा, मजलस घर घर करे लोकाईआ। रातीं सुत्यां लैण खुआबा, ख़ालक ख़लक नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर आपणे फेरा पाईआ। घर आपणे फेरा पावांगा। महल अटल इक रुशनावांगा। निहचल धाम बणावांगा। साचा राम रूप प्रगटावांगा। काहन बण के इक्को आवांगा। सच अमाम इक अख्वावांगा। पुरख अकाल नाम धरावांगा। निहकलंक निशान झुलावांगा। कल कल्की वेस वटावांगा। धुर दी वंनगी नाम ल्यावांगा। सृष्ट सबाई मरदी मरदी आप बचावांगा। त्रैगुण माया सड़दी सड़दी, सीतल धार मेघ बरसावांगा। माणस जन्म मरदी मरदी, हरि के पौड़े आप चढ़ावागा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र इक उठावांगा। मेहर नज़र इक उठाएगा। पुरख अबिनाशी दया कमाएगा। निरगुण निरवैर धार चलाएगा। कलयुग कूड़ी क्रिया कहर मिटाएगा। भगत दुआर इक सुहाएगा। चार वरन रंग रंगाएगा। साची सरन इक रखाएगा। दूजा वड़न कोए ना पाएगा। ऐर ग़ैर मुख भवाएगा। गुरमुख गुरसिख हरिमन्दिर वड़ के करन सैर, सैरगाह इक बणाएगा। सचखण्ड दुआरा वसे सच्चा शहर, छप्पर छन्न ना कोए छुहाएगा। ज़ात पात दीन मज़्हब पंज तत कोई ना करे वैर, काया रूप नज़र कोए ना आएगा। खेले खेल गम्भीर गहर, गहर गवरा एका रंग रंगाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हक़ नबेड़ा दए नबेड़, हकीकत सब दी वेख वखाएगा। प्रभ हक़ हकीकत वेख वखाएगा। जगत शरीकत ना कोए रखाएगा। सच तौफ़ीक इक जणाएगा। चार वरन रफ़ीक बणाएगा। अहिबाब नाम रबाब सुणाएगा। पुन्न सवाब ना कोए जणाएगा। काया काअबा इक्को घर वखाएगा। आबे हयाता जाम प्याएगा। साख्यात नज़री आएगा। कायनात वेख वखाएगा। वड अमाम फेरा पाएगा। सच सलाम इक समझाएगा। कलमा नज़ाम इक बणाएगा। पिछला लेखा मेट तमाम, तमां सब दी झोली पाएगा। अग्गे करे ना कोई हराम, हरामज़ादा नज़र कोए ना आएगा। सारे गायण सच खुदाए तेरा पैग़ाम, हज़ारा दरूद ना कोए पढ़ाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला इलाही नूर इक

५६५ १५

दरसाएगा। साचा नूर दए दरसा, मुख नक़ाब पड़दा लाहीआ। पारब्रह्म प्रभ भेव चुका, चारों कुण्ट करे रुशनाईआ। दो जहानां वेखे थाउँ थाँ, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी कार कमाईआ। सन्त सुहेले लए जगा, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। भगत भगवान लए मना, मेहर नज़र नैण उठाईआ। गुरमुख गोदी लए बहा, गुरसिख उँगली ला फिराईआ। बण विचोला सच मलाह, नौका नईया बेड़ा पार कराईआ। साची देवे सच सलाह, करे इक पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि इक्को इक अख्वाईआ। नर हरि नरायण सच प्रभ एक, एकँकारा हरि अख्वाइंदा। आदि जुगादी जिस दी टेक, दो जहान सीस निवाइंदा। नित नवित्त लए वेख, नेत्र लोचण नैण ना कोए खुल्हाइंदा। जुग चौकड़ी वटाए भेस, वेस अवल्ला आप कराइंदा। जन भगतां करे साचा हेत, प्रेम प्रीती इक लगाइंदा। सन्त सुहेले दस्से आपणी खेड, बण खिलाड़ी खेल समझाइंदा। गुरमुख देवे अन्तर आत्म भेत, अनभव आपणा आप जणाइंदा। गुरसिख सुरती शब्दी करे चेतन चेत, मन चित ठगौरी कोए ना पाइंदा। धुर दा लिखे मस्तक लेख, पूरब लहिणा आप मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे अपणे अंग लगाइंदा। हरिजन साचे लाए अंग, अंगीकार इक अख्वाईआ। किरपा करे सूरा सरबँग, शाह पातशाह बेपरवाहीआ। नाम निधान वजाए मृदंग, तन नगारे चोट लगाईआ। भेव खुल्हाए हँ ब्रह्म, पारब्रह्म दए समझाईआ। आत्म परमात्म नाल जाए मन्न, मन मनसा रहिण कोए ना पाईआ। भाग लग्गे साचे तन, ततव तत करे कुड़माईआ। साचा नूर चढ़े चन्न, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया भाण्डा भरम देवे भन्न, ठोकर इक्को नाम लगाईआ। भेव खुल्हाए चार वरन, अठारां बरन दए सरनाईआ। कलयुग अन्तिम तरनी तरन, तारनहारा इक्को फेरा पाईआ। दो जहान जिस दा ढोला पढ़न, विष्न ब्रह्मा शिव रहे जस गाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दुआरे खड़्न, बण बरदे गुलाम रूप दरसाईआ। सो साहिब सतिगुर करता पुरख करनी करन, कुदरत कादर वेख वखाईआ। तिस स्वामी पकड़ो चरण, चरण कँवल मिले वड्याईआ। आवण जावण चुक्के मरन डरन, लख चुरासी रहिण ना पाईआ। जिस मन्दिर चढ़ के जिस घर वड़ के जिस दर्शन कर के गुर अवतार पीर पैगम्बर भगत सन्त गुरमुख गुरसिख इक्को नाउँ पढ़न, तूं मेरा मैं तेरा सोहँ सति सरूप तेरा रूप नज़री आईआ।

तेरा रूप सो भगवान, भगवन तेरे विच समाईआ। हँ ब्रह्म तेरा निशान, लोकमात करे रुशनाईआ। बिन हँ तेरा कोई ना करे माण, तेरा नाम ना कोई गाईआ। सच बोल कहे भगवान, वाहवा ब्रह्म तेरी चतुराईआ। तेरे बिनां मेरा सुंञा रहे जहान, लख चुरासी बणत ना कोए बणाईआ। बिन तेरे मैं किस दा बणां काहन, गोपी कवण कवण प्रनाईआ। हँ कहे

प्रभ मैं तेरे चरण कँवल कुरबान, तूं आपणा अंस बंस दित्ता बणाईआ। नित नवित्त आपणा नाम संदेसा देवें धुर फ़रमाण, नाउँ निरँकारा इक दृढ़ाईआ। मैं डूम हो के करदा रहां कल्याण, चार युग तेरा होका दे सुणाईआ। अन्त दस्सां औह वेखो भगवान, श्री भगवान हर घट बैठा डेरा लाईआ। जिस दा उच्चा उच्च मकान, ऊँचो ऊँच बेपरवाहीआ। जिस भगत मिलणा आण, तिस मिलण दी बिध दयां समझाईआ। चरण कँवल करो प्रणाम, सच प्रीती इक रखाईआ। पूरा सतिगुर पुरख अकाल मिले आण, रहम आपणा आप कमाईआ। कलयुग जीव ना भुल्ल अन्जाण, बाली बुध ना वक्त गंवाईआ। बीस बीसा खेल महान, हरि जगदीशा रिहा कराईआ। सदी चौधवीं होए हैरान, चौदां तबक देण दुहाईआ। तेई अवतार करन ध्यान, नेत्र नैण नैण उठाईआ। भगत अठारां चरणी डिगण आण, चरण कँवल कँवल सरनाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद अन्त कहिण सच तौफ़ीक तैनूं मेहरवान, ताअरीफ़ तेरी कर कर जस गाईआ। नानक गोबिन्द उच्ची कूक कहे पुरख अकाल, अक्ल कलधारी वेस वटाईआ। जिस जीव तैनूं दित्ता जीआं दान, क्यों बैठा प्रभू भुलाईआ। अन्दर वड़ के आपणे मन्दिर मार ध्यान, बजर कपाटी पड़दा लाहीआ। अग्गे दिसे तेरा महमान, जो चोरी चोरी अन्दर वड़ के तेरी सेज हंढाईआ। जे ब्रह्म तूं आपणा आप लएं पछाण, पारब्रह्म तेरे कोल भज्जा आवे वाहो दाहीआ। फेर दोहां नूं इक्को जिहा माण, तूं कहीं तूं मेरा, उह कहे तूं मेरा रूप बण जाए गुरू चेला, साचे घर होए मेला, मिले कन्त सज्जण सुहेला, नारी चुक्के तेरा वक्त दुहेला, अचरज खेल प्रभू प्रभ खेला, ख़ालक ख़लक सति सरूप सो पुरख निरँजण वेखणहारा दहि दिशा चार कूट, नव नौ आपणा फेरा पाईआ। हँ ब्रह्म प्रभ दा दए सबूत, प्रतक्ख पारब्रह्म जणाईआ। वड़या रहे पंज तत काया कलबूत, साढे तिन्न हथ्थ आपणा बंक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, घर आ के मिले महिबूब, मुहब्बत आपणे नाल रखाईआ।

११ अस्सू २०२० बिक्रमी जागीर सिँघ दे गृह पिण्ड तूत ज़िला फ़िरोज़पुर

सचखण्ड निवासी शाह सुल्तान, मेहरवान तेरी सरनाईआ। पुरख अबिनाशी नौजवान, बेअन्त तेरी वड्याईआ। सो पुरख निरँजण गुण निधान, गहर गम्भीर तेरा भेव कोए ना आईआ। हरि पुरख निरँजण राज राजान, भूपत भूप नाउँ धराईआ। एकँकार खेल महान, निरगुण सरगुण धार बंधाईआ। आदि निरँजण तेरा दीप महान, जोती जोत जोत रुशनाईआ। अबिनाशी करते तेरा वेस दो जहान, निरवैर दाते बेपरवाहीआ। श्री भगवान तेरा सच निशान, ब्रह्मण्ड खण्ड इक्को नज़री आईआ।

पारब्रह्म तेरा नाम प्रधान, नाउँ निरँकारा सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे मिले वड्याईआ। शाह पातशाह श्री भगवन्त, बेऐब नूर खुदाया। आदि जुगादि तेरी महिमा अगणत, भेव भेत किसे ना पाया। खेलें खेल जुगा जुगन्त, जुग चौकड़ी राह चलाया। शबत अनादी साचा मंत, मन्त्र इक्को इक दृढ़ाया। लख चुरासी बण बण कन्त, सेज सुहञ्जणी आप हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाया। दर तेरे अलख श्री भगवान, नाअरा इक्को इक लगाईआ। तख्त निवासी नौजवान, मर्द मर्दाने तेरी वड वड्याईआ। सदा सदा सद तेरा फ़रमान, धुर फ़रमाना इक्को नज़री आईआ। दएं संदेसा दो जहान, रसना जिह्वा हुक्म मनाईआ। जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज चारे खाणी कर परवान, चारे बाणी दएं जणाईआ। चारे कुंट हो प्रधान, चारे युग वेख वखाईआ। चार यारी खेल महान, ख़ालक ख़लक दएं समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे वास्ता पाईआ। दर तेरे वास्ता रहे पा, हरि बेअन्त बेपरवाहया। गुर अवतार पीर पैगम्बर बैठे सीस झुका, सजदा इक्को इक रखाया। निरगुण निरगुण मेरे खुदा, बी पिहरबान मिहबान बीदो नूरी नूर नूर रुशनाया। सति सतिवादी हो निगहबान, मेहरवान मेहर नज़र उठाया। सचखण्ड दुआरे हरि निरँकारे तेरे चरण कँवल ध्यान, दूजा इष्ट होर ना कोए मनाया। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी करें सच न्याँ, सज्जण तेरी ओट तकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर साचे मंगण आया। साचे घर आए मंगण, गुर अवतार सीस निवाईआ। साची चोली चाढ़ रंगण, पीर पैगम्बर वास्ता दोए जोड़ पाईआ। तेरा नाम निधान वज्जे इक मृदंगन, कायनात कलमा इक शनवाईआ। किरपा कर रख आपणे अंगन, अंगीकार इक हो जाईआ। तेरा खेल सूरे सरबँगन, समझ कोए ना पाईआ। सेवा करे सूरज चन्दन, भज्जा फिरे वाहो दाहीआ। नेत्र रोवे खण्ड ब्रह्मण्ड वरभण्डन, जेरज अंड रिहा कुरलाईआ। सच मिले ना किसे परमानंदन, निजानंद रस ना कोए वखाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा दूई द्वैती कोई ना ढाहे कंधन, भाण्डा भरम ना कोए भंनाईआ। नाम टिक्का कोई ना लाए चन्दन, जोत ललाट ना कोए रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया कोई ना करे खण्डन, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए गंवाईआ। ग़रीब निमाणयां घर कोई ना चब्बे तन्दन, भगवन रूप नज़र कोए ना आईआ। लख चुरासी कोई ना कटे फंदन, फाँसी गलों ना कोए लुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आए घर, प्रभ चरण तेरे वड्याईआ। निरभउ चुका भय डर, भ्यानक रूप ना कोए वखाईआ। दर दरवेश खलोते खड़, पल्लू गल विच रहे पाईआ। श्री भगवान

नरायण नर, शाह पातशाह नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरे कोलों लै के गए वर, वर तेरी दात झोली पाईआ। लोकमात तेरा संदेसा लिख लिख आए धर, धुर दी धार जणाईआ। होका दित्ता नारी नर, रसना जिह्वा बत्ती दन्द सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर आपणा वेख वखाईआ। वेख प्रभू प्रभ खोल्ह अक्ख, आख़र तेरे अग्गे अरजोईआ। सच कहाणी तैनूं रहे दस्स, गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे सुणाईआ। कलयुग अन्तिम साडी होई बस्स, बसता सारे बन्न्ह वखाईआ। लख चुरासी जीव जंत लिख लिख लेखा आए दस्स, तेरा संदेसा नाम सुणाईआ। कलयुग अन्तिम पारब्रह्म पतिपरमेश्वर होए प्रगट, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। धर्म दुआर खोल्हे इक्को हट्ट, सच समग्री विच टिकाईआ। खेले खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी कार कमाईआ। लहिणा देणा चुकाए तीर्थ तट, अठसठ गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती आपणी झोली पाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म सर्ब जीवां देवे इक्को मत्त, दूजी करे ना कोए पढ़ाईआ। लेखा जाणे पंज तत्त, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खोज खोजाईआ। निझर झिरना देवे रस, अमृत जाम इक प्याईआ। साची जोत करे प्रकाश, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। घर गोपी काहन पवाए रास, सुरती शब्दी नाच नचाईआ। लेखा जाणे पवण स्वास, पवण पवणां सोभा पाईआ। जुग चौकड़ी विछड़े जन भगतां पूरी करे आस, भगवन आपणा भेव खुल्हाईआ। सच प्रीती पुरख अकाल दस्से इक्को नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। चार वरन अठारां बरन धर्म बणाए इक जमात, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश नज़र कोए ना आईआ। नानक गोबिन्द लेखा लिख्या नाल कलम दवात, शाही काग़ज़ शहादत देण गवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवे साचा वर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। मेहरवान प्रभ पारब्रह्म, दर तेरी ओट रखाईआ। निहकर्मी कर आपणा कर्म, कर्म कांड दे मिटाईआ। कलयुग नईया डोले धर्म, सच सुच नज़र कोए ना आईआ। नेत्र रोवे वरन बरन, धीरज धीर ना कोए धराईआ। नेत्र खुल्हे किसे ना हरन फरन, साध सन्त जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत डूंघी कन्दर, बैठे ध्यान लगाईआ। आपणे मन्दिर मूल ना चढ़न, दर दर घर घर भज्जण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एको दे साचा वर, राह तक्के तेरा सर्ब लोकाईआ। जगत लोकाई तक्के राह, नेत्र नैण नैण उठाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण बणे गवाह, सच शहादत इक रखाईआ। वेद व्यास ईसा मूसा मुहम्मद नानक गोबिन्द गए सुणा, धुर दा लेखा लेख जणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त प्रगट होवे बेपरवाह, जिस दा ना कोई पिता ना कोई माईआ। साचा मन्दिर दए सुहा, सम्बल आपणा डेरा लाईआ। गोबिन्द सूरा लए जगा, जागरत जोत जोत रुशनाईआ। नाम खण्डा

खड़ग लए चमका, चण्ड प्रचण्ड रूप वटाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड दो जहान वेखे थाउँ थाँ, विष्न ब्रह्मा शिव सोया कोए रहिण ना पाईआ। सच संदेसा निरगुण निरवैर पुरख अकाल देवे आ, दो जहानां इक्को वार सुणाईआ। पारब्रह्म प्रभ सब दा सच मलाह, परवरदिगार बेड़ा इक वखाईआ। राम रमईया हर घट नज़री जाए आ, साचा काहन बणे शहिनशाहीआ। इक्को नौबत नाम दए वजा, डंका आपणे हथ्थ रखाईआ। कूड़ी क्रिया चार कुण्ट दहि दिशा जूठ झूठ डेरा देवे ढाह, माया ममता हउमे हंगता मेट मिटाईआ। साचा मन्त्र इक्को इक दए दृढ़ा, साचा सोहला राग सुणाईआ। बणे विचोला आप खुदा, खुदग़रज़ी सब दी दए गंवाईआ। मार्ग दस्से इक्को सिध्धा, कलमा इक्को इक पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक सुणाईआ। सच संदेस देवे भगवान, शब्दी शब्दी ढोला गाइंदा। पतिपरमेश्वर हो मेहरवान, मेहर नज़र नैण उठाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे रखो इक ध्यान, वड ध्यानी आप जणाइंदा। प्रगट होवे नौजवान, योद्धा सूरबीर बल आपणा आप रखाइंदा। जोती जोत जोत जगे महान, पंज तत नज़र कोए ना आइंदा। मन मति बुध सके ना कोए पहचान, अनभव आपणा खेल खलाइंदा। शाहो भूप बण राजान, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा। सच दुआर खोल्ह दुकान, चौदां हट्ट फोल फोलाइंदा। चौदां तबकां वेखे आण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर दोए जोड़ करन अरदास, अरदासा इक्को इक सुधाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाश, अबिनाशी तेरी ओट रखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कीता नास, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जुग चौकड़ी तेरा कम्म इक्को ख़ास, ख्वाहिश आपणी पूर कराईआ। कलयुग अन्तिम सब दा दे साथ, इकावन बावन तेरी ओट रखाईआ। सत्तर मंगण दोए दोए जोड़ हाथ, बहत्तर तेरी ओट तकाईआ। चुहत्तर कहिण दीनां नाथ, अनाथां तेरी सच सरनाईआ। चार चार कहिण प्रगट हो पुरख समराथ, समरथ दाते बेपरवाहीआ। पंज पंज कहिण तेरा वेखीए खेल तमाश, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे आपणा वर, दूजे दर मंगण ना जाईआ। देवणहारा एको एक, एकँकारा आप जणाइंदा। निरगुण रखो निरगुण टेक, सरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। जोती जामा धरे भेख, साचा रामा, रूप रंग रेख ना कोए बणाइंदा। निरवैर हो के पहरे जामा, निराकार आपणी कार कमाइंदा। सेवादार हो के बणे कामा, सेवक आपणा रूप वटाइंदा। सर्ब जीआं होवे अन्तरजामा, घट घट वेख वखाइंदा। लख चुरासी देवणहारा ब्रह्म ज्ञाना, ब्रह्म विद्या आप पढ़ाइंदा। धर्म वखाए इक निशाना, दो जहानां आप झुलाइंदा। कलयुग कूड़ा मिटे जहाना, लोकमात रहिण ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा

साचा वर, साचा खेल आप समझाइंदा। साचा खेल समझाए पुरख समरथ, बेपरवाह आप जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नव नौ चार चलावणहारा रथ, महासार्थी फेरा पाईआ। बोध अगाध शब्द नाद बाणी गुरू सुणाए अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। लहिणा देणा चुकाए हथ्थो हथ्थ, अन्त उधार ना कोए जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जूठ झूठ माया ममता हउमे हंगता आपणे खाते लए घत्त, जिस खातिउँ बाहर कढ्ढाईआ। सब दी मेटे मन मति, मन का मणका आप भवाईआ। इक जणाए सच्ची गुरमति, गुर शब्दी बूझ बुझाईआ। बिन सतिगुर शब्द दूजा नहीं कोई समरथ, पंज तत कम्म किसे ना आईआ। पुरख अकाल दीन दयाल अग्गे जोड़ो हथ्थ, दाता दानी इक्को इक अख्वाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात जिस दा नाम चलाउँदे हट्ट, बण वणजारे सेव कमाईआ। अन्तिम सारे उच्ची कूक पुकार गए दस्स, सोहला ढोला राग सुणाईआ। हउँ बालक सारे निरगुण सरगुण दे वस, उह साहिब सच पिता माईआ। जिउँ भावे तिउँ लए रख, सद भाणे विच समाईआ। जन भगतां नेत्र खोल्ह देवे अक्ख, पड़दा दूई द्वैत उठाईआ। निरगुण प्रगट होवे प्रतख, पारब्रह्म प्रभ आपणा वेस वटाईआ। कलयुग अन्तिम सब दी लज्जया लए रख, जो जन बैठण ध्यान लगाईआ। वसणहारा घट घट, अन्तरजामी फेरा पाईआ। साचा मार्ग देवे दस्स, दहि दिशा हुक्म वरताईआ। कलयुग कूड़ा खेड़ा करे भट्ठ, अग्नी जोत लम्बू लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा लेखा आप जणाईआ। धुर दा लेखा दस्से आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। कलयुग अन्तिम वेखे सृष्ट सबाई पाप, दो जहानां पड़दा लाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो रसना जिह्वा गए आख, आखर लेखा सब दा दए मुकाईआ। दो जहान श्री भगवान बंद कवाड़ी खोल्ह ताक, सचखण्ड निवासी थिर घर दुआरे हरि निरँकारे शब्दी सुत अबिनाशी अचुत आपणा दीपक लए जगाईआ। उठ लाडले मेरे पुत्त, तेरा वेला वक्त गया आईआ। जा के वेख सुहञ्जणी रुत्त, चारों कुण्ट कर रुशनाईआ। जो तेरे नालों गए रुट्ठ, तिन्हां रुस्सयां लै मनाईआ। बचया रहे ना कोई किसे गुट्ठ, नौ खण्ड पृथमी सत दीप नाम सुनेहड़ा देणा चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म इक समझाईआ। साचा हुक्म सुण गीत, शब्द दुलारे हरि जणाइंदा। जा के दस्स मन्दिर मसीत, शिवदुआले मट्ठ तेरी सेव लगाइंदा। कलयुग जीवो बदलो आपणी नीत, साहिब स्वामी दूर दुराडा वेख वखाइंदा। वुज़ू कर कर क्यों होए पलीत, पाक रसूल नज़र क्यों नहीं आइंदा। परवरदिगार सदा अतीत, त्रैगुण विच न कदे समाइंदा। सदी चौधवीं रही बीत, वेला गया हथ्थ ना आइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद नेत्र रोवण खड़े नज़दीक, उम्मत उम्मती सार कोए ना पाइंदा। अल्ला राणी कहे मेरे चार यार शरीक, शिरकत

मात ना कोए गवाइंदा। चारों कुण्ट अन्धेरा तारीक, नूरी चन्द नज़र कोए ना आइंदा। सच महिबूब करे ना कोए प्रीत, कलमा नबी ना कोए पढ़ाइंदा । तेरा मिले ना कोए सबूत, साबत सूरत नेत्र नैण ना कोए वखाइंदा। बिन तेरे कलमे पंज तत ख़ाली दिसे कलबूत, मक्का काअबा साचा हुजरा उच्च महिराब डेरा कोई ना लाइंदा। बिन तेरे कोई ना करे महिफ़ूज़, झूठी मजलस मुल्लां शेख़ सर्ब वखाइंदा। प्रभ जी तेरा शब्द इक जासूस, दो जहानां घर घर वेख वखाइंदा। कलयुग अन्त सच्चे कृपानिधान ना बणीं कंजूस, गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरे कोलों इक्को मंग मंगाइंदा । कूड़ी क्रिया कर माकूफ़, धुर दा हुक्म तेरा इक्को नज़री आइंदा। तेरे ध्यान अन्दर सर्ब मसरूफ़, नेत्र नैण सर्ब उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एको भेज देणा दूत, दूती दुष्ट सर्ब मुकाइंदा। श्री भगवान प्या हस्स, सचखण्ड निवासी खुशी मनाईआ । सारे कहो साडी होई बस्स, प्रभ तेरी ओट तकाईआ। मैं संदेसा देवां इक्को सच, सच सुनेहड़ा दयां जणाईआ। लोकमात निरगुण धार वेखां जा के नट्ठ, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। सृष्ट सबाई तपदा खेड़ा ठंडा होए भट्ठ, अग्नी अग्ग रूप रहिण ना पाईआ। चार वरनां देवां इक्को मति, दीन मज़्ब लाईन रहिण कोए ना पाईआ। दुआर खोल्हां इक्को हट्ट, साचा सौदा नाम विकाईआ। चारों कुण्ट नज़री आए इक पुरख समरथ, इष्ट देव स्वामी दृष्ट सब दी आप खुल्हाईआ। बीस बीसा हो प्रतख, प्रतख आपणा राह चलाईआ। जन भगतां खोल्ह अन्तर अक्ख, आत्म परमात्म दे बुझाईआ। शब्द नाअरा बोल अलख, सच जैकारा इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलयुग लेखा दए चुकाईआ। कलयुग लेखा जाए चुक्क, लोकमात रहिण ना पाईआ। कूड़ी क्रिया पैंडा जाए मुक्क, पांधी रूप ना कोए वटाईआ। पुरख अकाल जाए तुठ, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सतिजुग साचा पए उठ, गूढ़ी नींद पड़दा लाहीआ। तिन्न युग जो बैठा रिहा चुप्प, अन्त आपणी लए अंगड़ाईआ। उच्ची कूक कहे मुख, प्रभू तेरी इक सरनाईआ। मैंनूं कोई ना आवे दुःख, दर्द लग्गे कोई ना राईआ । मैं सीस निवावां झुक, हँकार विकार मेरे विच ना कोए दसाईआ। मैं तेरा लाडला पुत्त, तूं मेरा पिता माईआ। सच सुहौणी सच्ची रुत्त, रत आपणे नाम रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सीस जगदीश असीस इक रखाईआ। उठ सुत प्यारे लाल, श्री भगवान दया कमाइंदा। साचा मार्ग दए सिखाल, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। इक्को इष्ट जणाउणा पुरख अकाल, दूजा देव नज़र कोए ना आइंदा। लोकमात सच बणौणी धर्मसाल, भगत भगवान मेल मिलाइंदा। जा के वेख मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा हुक्म सुणाइंदा। जो पारब्रह्म दी घालण रहे घाल, तिन्हां तेरे नाल रलाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत इक

वखाइंदा। लेखा मुका शाह कंगाल, चार वरन इक्को घर बहाइंदा। शब्द गुरु गुरदेव बण दलाल, सतिगुर साची सेव कमाइंदा। दीपक दीआ इक्को बाल, जोती जाता डगमगाइंदा। अमृत आत्म जाम दए प्याल, निझर झिरना आप झिराइंदा। साचा मन्दिर दए वखाल, धर्म दुआरे कुण्डा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचे आप समझाइंदा। सतिजुग साचे जाणा उठ, सो साहिब आप जणाईआ। पुरख अकाल गया तुठ, मेहर नज़र उठाईआ। तेरी सुहाए सुहञ्जणी रुत्त, रुत्त आपणे नाल महकाईआ। तेरा मालक अबिनाशी अचुत, दूजा नजर कोई ना आईआ। तेरा ख़ालक तेरी ख़लक वेखे अन्दर बाहर मुख, मुख मुखड़ा आप धवाईआ। लोकमात ना बहिणा चुप्प, जा के होका दे वाहो दाहीआ। श्री भगवान जो सब दे अन्दर बैठा छुप, सो पुरख निरँजण निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक समझाईआ। साची सिख्या सति धर्म, धर्म आत्मा आप जणाइंदा। सतिजुग तेरा इक्को कर्म, हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। सतिजुग तेरा इक्को वरन, वरन आत्म नज़र कोए ना आइंदा। सतिजुग तेरा इक्को अक्खर पढ़न, ढोला इक्को इक सुणाइंदा। सतिजुग तेरा इक्को मार्ग सारे चढ़न, रहबर इक्को इक समझाइंदा। सतिजुग तेरा दुआरा इक्को मंगण सरन, सरनगति इक समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति सतिवादी साची कार कमाइंदा। सतिजुग मिलदा वेख वर, कलयुग नैण उठाईआ। दोए जोड़ डिगा सरनाई दड़, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। किरपा निधान की रिहा कर, तेरा भेव कोए ना आईआ। मैं तेरी सेवा कीती घर घर, धुर दा हुक्म सीस झुकाईआ। तेरा भउ चुकाया सब तों डर, भरम भुलाई सर्ब लोकाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार बणाया गढ़, कूड़ी क्रिया नाल रलाईआ। त्रैगुण अग्नी वेख सृष्टी रही सड़, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। तेरे दुआरे कोई ना सके वड़, नौ दुआरे पन्ध ना कोए मुकाईआ। सुरती शब्दी फड़े ना कोई लड़, सब दे पल्लू दित्ते छुडाईआ। करे विभचारी नारी नर, हरि कन्त नज़र किसे ना आईआ। कच्चे बिरहों रहे झड़, बेपरवाह तेरा हुक्म समझ कोए ना पाईआ। किरपा कर मेरे मेहरवान, मैं इक्को मंगा वर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा आपणा वर, मेरा लेखा पूर कराईआ। कलयुग कहे मेरा पूरा लेखा, प्रभ अन्त अन्त कराईआ। किसे ना रहे कोई भुलेखा, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। बचया रहे ना कोई मुल्ला शेख़ा, मुसायक नजर कोए ना आईआ। पंडत पांधा कोई ना जाणे लेखा, रेखा सब दी दे समझाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा शाह पातशाह नज़र कोई ना आवे नेता, राज राजानां ख़ाक दे मिलाईआ। फिरे दरोही देस परदेसा, नव नौ रोवे मारे धाहीआ। पिता पुत रहे ना हेता, मात

गोद ना कोए सुहाईआ। प्रभ ओस वेले दा कर लै चेता, जिस वेले लोकमात मेरा जन्म दिवाईआ। तेरे हुक्म अन्दर खेडी आण के खेडा, कूड़ा नाता जोड़या भैण भाईआ। साचा रिहा ना किसे हेता, सज्जण सज्जण ठग्गीआं रहे कमाईआ। बिन हरि नामे कलयुग सुंञा दिसे खेता, गुर अवतार पीर पैगम्बर राखा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, मैं तेरा छोटा बाला निक्का, चौथा युग सीस झुकाईआ। छोटे बाले सुण बात, सो साहिब आप जणाईआ। कलयुग तेरा लेखा लिख्या कलम दवात, शाही कागज़ नज़र कोए ना आईआ। तेरा खेल वेख्या खूब तमाश, नव नौ तेरा रंग नज़री आईआ। कूड़ी क्रिया घर घर पाई ख्वाहिश, खालस कोई ना हट्ट वखाईआ। चार वरन अठारां बरन कीते फ़ाश फ़ाश, तिरछा तीर इक चलाईआ। संगी साथी कोई ना देवे साथ, गुरमुख गुर गुर तोड़ ना कोए निभाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द दिवस रैण करदे सारे पाठ, अन्तर आत्म हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। चरण प्रीती कोई ना बन्ने नात, साचा जोड़ जोड़ ना कोए वखाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी रात, वाहवा तेरी वड्डी वड्याईआ। तेरा नाता जुड़या इक्को इक पुरख समराथ, समरथ पुरख दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा भरम रिहा चुकाईआ। कलयुग वेख मार ध्यान, धुर दी धार आप जणाईआ। करे खेल श्री भगवान, भगवन आपणी कार कमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे मंगण दान, दर बैठे सीस झुकाईआ। गोबिन्द सूरा नौजवान, कल्गी तोड़ा सीस टिकाईआ। योद्धा सूरबीर बलवान, खड़ग खण्डा इक चमकाईआ। किरपा कर श्री भगवान, तेरे अग्गे इक अरजोईआ। जिस छोटे बाल नींहां थल्ले दब्बे अञ्याण, तिस दा लेखा दयां मुकाईआ। बिन चार लख बत्ती हज़ार तेरी जड़ उखड़े जहान, सतिगुर गोबिन्द रिहा उखड़ाईआ। उहदा खण्डा मुड़ के कदी ना आवे विच म्यान, फ़ैसला हक़ हक़ कराईआ। उस दे अग्गे जा के दे ब्यान, आप आपणा हाल सुणाईआ। कर रहम जे तेरी करे कल्याण, कायर तेरा लेखा दए मुकाईआ। कलयुग रोवे नैतर नीर वहाए नैण बाली बुध अञ्याण, मेरी समझ कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा लेखा दए समझाईआ। कलयुग उठ वेख गोबिन्द, सूरा सतिगुर इक्को नज़री आईआ। पुरख अकाल दी बणया बिंद, अन्त गुरदेव इक मनाईआ। तेरी मेटे ओहो चिन्द, दूजा नज़र कोए ना आईआ। गहर गम्भीर सागर सिन्ध, दयावान दयावान दयावान अख्वाईआ। जे बख्शे तेरी जिंद, ज़िंदगी तेरी आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। कलयुग कहे मैंनूं आवे डर, भय भ्यानक नज़री आईआ। किस बिध गोबिन्द खेड़े जावां वड़, मेरा नेत्र नैण शरमाईआ।

सूरबीर किस बिध मेरी करनी लए फड़, फड़ के दए सज़ाईआ। मेरी अन्त उखड़े जड़, बूटा फेर ना कोए लगाईआ। मेरे पिच्छे मेरी ख्वाहिश जाए मर, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक्को इक समझाईआ। साची सिख्या देवे भगवान, दो जहानां वाली आप जणाइंदा। चरण कँवल कर ध्यान, निवण सो अक्खर इक समझाइंदा। दोए जोड़ कर प्रणाम, सजदा इक्को इक वखाइंदा। मूँहों बोल कहिणा मैं बरदा ग़ुलाम, ग़ुरबत रूप ना कोए वटाइंदा। तूं साहिब सतिगुर मेहरवान, तेरी सरन सरनाई इक तकाइंदा। हउँ भुल्ला बाली बुध अञ्याण, दर तेरे अलख जगाइंदा। तूं योद्धा सूरबीर नौजवान, तेरा भय भउ मैथों झल्लया ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, साचा पड़दा आप उठाइंदा। कलयुग दूर दुराडा जाए डरदा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। गोबिन्द गोबिन्द गोबिन्द पढ़दा, अन्तर आत्म इक आवाज़ सुणाईआ। दरोही दरोही मैं तेरा बरदा, तूही तूही नज़री आईआ। बिन तेरे मेरा लड़ कोई ना फड़दा, रुढ़दी जाए जगत लोकाईआ। पीर पैगम्बर गुर अवतार सब तैनूं वेख पिच्छे हटदा, तेरा तेज झल्लया ना जाईआ। दो जहान तेरा इक्को झटका, तेरा वार झल्ले ना कोई तेरा खण्डा सके ना अटकाईआ। मैनूं इक्को दिसे खटका, तूं मेरी जड़ देणी उखड़ाईआ। तूं आपणे कमरकसे बद्धा आपणा पटका, साढे तिन्न हथ्थ वंड वंडाईआ। तेरा मेल पुरख करता, करता पुरख तेरा पिता अख्वाईआ। मैं जींवदयां जींवदयां तेरे अग्गे मरदा, मर्द मर्दाने तेरी सच सरनाईआ। दोए जोड़ वास्ता करदा, निउँ निउँ लागां पाईंआ। इक्को मंग हो मंगता मंगदा, मंगण आया बण के पांधी राहीआ। तेरे चरण कँवल कदे ना संगदा, शरम हया दिती गंवाईआ। तेरा दुआर तेरी मेहर नज़र नाल लँघदा, कदम कदम तेरे कदमां उते टिकाईआ। तूं वेख हाल मेरे ग़रीब घर दा, चार कुण्ट दहि दिशा चार वरन अठारां बरन सारे तैथों दित्ते भुलाईआ। तेरे हुक्मे अन्दर मैं खेल करदा, नाल मुहम्मद दए गवाहीआ। अल्ला राणी खुल्ली मींढी कोई ना वरदा, बण रकान नैतर नैण रोवे मारे धाहींआ। सदी वीहवीं मैं पल्लू तेरा फड़दा, लेखा छुटे सर्ब लोकाईआ। गोबिन्द सूरा इशारा इक्को करदा, शब्द इशारे नाल समझाईआ। पारब्रह्म परमेश्वर मैनूं मर्द बणाया विचों मरदां, मर्द मर्दानगी मेरे हथ्थ रखाईआ। अग्गे फेर दस्सूं खेल तेरे घर दा, पन्द्रां कत्तक रुत्त लँघाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नर हरि नरायण इक्को जाता, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण धार चलाईआ।

६०४
१५

✪ ११ अस्सू २०२० बिक्रमी गुरदीप सिँघ दे गृह पिण्ड तूत ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सतिगुर पूरा दया कमाइंदा। मेहरवान मेहर नज़र उठाइंदा। ज्ञानवन्त साचा ज्ञान, नाम निधान बूझ बुझाइंदा। जोबनवन्ता नौजवान, नौबत इक्को नाम सुणाइंदा। घर मन्दिर कर पहचान, गृह आपणा आसण लाइंदा। गुरमुख सज्जण सुहेले चतुर सुघड़ सुजान, सोझी आत्म परमात्म आप समझाइंदा। कूड़ी क्रिया मेट निशान, निशाना इक्को इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणा मेल मिलाइंदा। हरिजन मेला गोबिन्द धार, हरि करता आप कराइंदा। जुग चौकड़ी वेख विचार, जीव जहानी खोज खोजाइंदा। सन्त सुहेले सति उठाल, आप आपणा भेव चुकाइंदा। जन्म जन्म दी वेखे कीती घाल, कीती घाल लेखे लाइंदा। सतिगुर हो के बणे दलाल, सच दलाली आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुलाइंदा। खोल्हे भेव पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता वड वड्याईआ । हरिजन हरिजन पूरी करे आस, आसा मनसा मेल मिलाईआ। लेखा जाणे सर्ब गुणतास, गुणवन्ता वड वड्याईआ। जन भगतां ख़ातर आए ख़ास, ख़ालस आपणा नाम जपाईआ। साढे तिन्न हथ्थ वेखे जंगल जूह प्रभास, डूंघी भँवरी फोल फोलाईआ। लेख चुकाए पवण स्वास, स्वास स्वासां नाल रलाईआ। अन्दर बाहर बाहर अन्दर देवे साथ, सच्चा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, कर किरपा देवे आपणा ज्ञान, ध्यान इक्को चरण रखाईआ।

✪ ११ अस्सू २०२० बिक्रमी गुरदेव कौर दे गृह पिण्ड गोले वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सतिजुग कहे पुरख अबिनाश, प्रभ तेरी ओट तकाईआ। वस्त अमोलक दे दात, सच ख़ज़ीना झोली पाईआ। चरण कँवल बख्श साचा नात, चरणोदक इक्को मुख चुआईआ। शब्द अनाद सुणा गाथ, ढोला सोहला इक पढ़ाईआ। अन्दर बाहर रहिणा साथ, विछड़ कदे ना जाईआ। मण्डल मण्डप पौणी रास, गोपी काहन नाच नचाईआ। निरगुण नूर कर प्रकाश, जोती जोत जोत रुशनाईआ। लेखा जाण पवण स्वास, घट घट मेल मिलाईआ । कीता खेल पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल फेरा पाईआ। मेरी ठाकर पूरी करनी आस, मेहर नज़र इक उठाईआ। दाते दानी वड गुणतास, गहर गम्भीर तेरी सरनाईआ। साची करनी पूरी खाहश, ख्वाहिश इक्को इक रखाईआ। मैं रहां तेरा दास, बण सेवक सेव कमाईआ। मैनूं दस्सणा इक्को गुरू महाराज, बहुते गुरू कम्म किसे ना आईआ। जो जुग चौकड़ी करे काज, करता आपणी कार कमाईआ। जिस दा

दो जहान साजण साज, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड रचन रचाईआ। जिस दी नाद शब्द धुन सच्ची आवाज़, दरगह साचा राग अल्हाईआ। जो गुर अवतारां पीर पैगम्बरां रखदा लाज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जो भगतां देवे सच्ची दात, नाम अमोलक आप वरताईआ। जो सन्तां मेटे अन्धेरी रात, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। जो गुरमुखां करे उत्तम ज़ात, अजाति रूप ना कोए वटाईआ। जो गुरसिखां उपजाए आपणी शाख़, शनाख़त आपणी दए जणाईआ। सो सतिगुर मेरे वसे पास, सति सति मेरा संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस झुकाईआ। सतिजुग कहे प्रभ मेरे दीन दयाल, तेरी इक्को ओट तकाईआ। मैं छोटा सच्चा तेरा लाल, बाली बुध रिहा कुरलाईआ। करया खेल वड मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। मैं इक्को वेखां सच्चा काहन, दूजा नज़र कोए ना आईआ। चार कुण्ट दिसे नूरी जलवा साचे राम, हर घट रमया बेपरवाहीआ। नेत्र खोल्ह ताक सुनेहड़ा देवे सच पैगम्बर आप पैग़ाम, कलमा इक्को इक सुणाईआ। मन्त्र जणाए धुर दा सतिनाम, नाम सति इक्को राग अल्हाईआ। जिस दा डंका फ़तहि वज्जे दो जहान, जुग चौकड़ी ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जिस दा नित नवित्त सच्चा इक इस्लाम, इस्म आअज़म दए वखाईआ। जिस नूं मिहबान बीदो या इलाही बी ख़ैर या अल्ला कह कह करदे सलाम, सजदा सीस सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे झोली डाहीआ। सतिजुग कहे प्रभ मेरे मीत, वड वड्डे तेरी सरनाईआ। आदि जुगादि बैठा रहें अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आदि जुगादी आपणी दस्स साची रीत, रीतीवान तेरी वड्याईआ। मैं तेरा गावां इक्को गीत, ध्यान इक्को इक रखाईआ। जिध्धर वेखां चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड सत दीप नज़री आए शिवदुआला मड्ड मसीत, गुरुदुआरा इक्को आप दरसाईआ। जिस घर वसे हस्त कीट, ऊँच नीच बैठण डेरा लाईआ। जिस मन्दिर तेरी दिसे प्रीत, दूजा साक सैण नज़र कोए ना आईआ। इक्को छत्र झुल्ले सीस, जगदीश साचे तख्त सोभा पाईआ। मैं बाला निक्का वड पापी नीचन नीच, बिन तेरे तर ना सकां राईआ। मेरी काया रखणी ठांडी सीत, अमृत मेघ इक बरसाईआ। दिवस रैण वसणा चीत, दूजी ठगौरी कोई ना पाईआ। करवट दे ना देणी पीठ, सनमुख आपणा मुख वखाईआ। साची किरपा कर बख्शीश, बख्शश रहमत तेरे हथ्थ नज़री आईआ। साचा कलमा दस्स हदीस, हज़रत इक्को कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग बैठा झोली डाहीआ। सतिजुग झोली बैठा डाह, दोए जोड़ ध्यान लगाईआ। किरपा कर बेपरवाह, बेअन्त तेरी सरनाईआ। तेरे दुआरे तेरा सद्दया गया आ, दर बैठा अलख जगाईआ। परवरदिगार रहमत कर सच खुदा, बेनज़ीर तेरी

मिली सच सरनाईआ। सच तासीर दे समझा, अकसीर आपणे हथ्थ रखाईआ। साची तकदीर तकबीर दे पढ़ा, ताअलीम तेरी इक्को भाईआ। शरअ ज़ंजीर दे कटा, शरीअत रूप नज़र कोए ना आईआ। असलीअत आपणी दे समझा, वसल इक्को सच्चे माहीआ। रहमत रहमान दे कमा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। हउँ बरदा तेरा ग़ुलाम, बण दरवेश सेव कमाईआ। तूं साहिब वड अमाम, शाह पातशाह तेरी शहिनशाहीआ। आदि जुगादी भूपत भूप राज राजान, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। सो पुरख निरँजण दे दान, हरि पुरख निरँजण तेरे अग्गे इक्को मंग मंगाईआ। एकँकार कर कल्याण, आदि निरँजण निरगुण नूरी जोत जोत रुशनाईआ। श्री भगवान कर परवान, धुर फ़रमाना दे सुणाईआ । अबिनाशी करते तेरे चरण कँवल लग्गा ध्यान, नेतर नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। पारब्रह्म प्रभ सच प्रधान, तेरी प्रधानगी मोहे भाईआ। सचखण्ड निवासी नौजवान, तेरा भय रिहा डराईआ। थिर घर तेरे खेल महान, तेरा सुत दुलारा शब्द भज्जा फिरे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सतिजुग बैठा ध्यान लगाईआ। सतिजुग कहे दोवें हथ्थ जोड़, चरण कँवल तेरी सरनाईआ । साहिब स्वामी सतिगुर सच्चे मोहे इक्को तेरी लोड़, दूजा संग ना कोए रखाईआ। शाह सवारे चढ़ के वेखणा अगम्मी घोड़, अस्व इक्को इक दौड़ाईआ । एथे ओथे दो जहानां लाउणा सच्चा पौड़, नाम डण्डा हथ्थ रखाईआ। चक्र लाउणा विच अन्ध घोर, अन्ध अन्धेरा डेरा ढाहीआ। बेपरवाह हो के जाणा बौहड़, बौहड़ी कूकां दयां दुहाईआ। तुध बिन मीत नहीं कोई और, अवरा संग ना कोए रखाईआ। नेत्र खोल्ह वेख कर के ग़ौर, गहर गम्भीर आपणी अक्ख बदलाईआ। मेरी तेरे हथ्थ डोर, जिउँ भावें तिउँ चढ़ाईआ। वेखीं दर तों देवीं ना होड़, दर ठांडे बैठा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एको देणा साचा वर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। सतिजुग कहे मेरे दातार, दीनां नाथ तेरी सरनाईआ। प्रेम प्रीती दस्स प्यार, साची सिख्या इक समझाईआ। मैं सेवा करां विच संसार, लोकमात फेरा पाईआ। धरनी धरत धवल उते देणा बहाल, मेहर नज़र नैण उठाईआ। साचे भगतां देणा नाल, भगती मार्ग इक समझाईआ। सतिगुर हो के बणीं दलाल, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ । हकीकत वेखें हक़ हलाल, हालत सब दी फोल फोलाईआ। मैं तेरा निक्का बाल, सच सची मंग मंगाईआ। तेरी चले अवल्लड़ी चाल, दो जहान समझ कोए ना पाईआ। मैं दिवस रैण तेरे हुक्म करां प्रितपाल, धुर दा हुक्म इक्को नज़री आईआ। सच दुआरे घालण लवां घाल, कीती घाल तेरी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा एकँकारा हरि निरँकारा करता पुरख ना कोई सोग ना कोई हरख, सच सुच अबिनाशी अचुत इक्को इक जणाईआ। सुण सतिजुग

मेरे सच्चे लाल, सो साहिब आप जणाईआ। सति दुआरा तेरा सच्ची धर्मसाल, सचखण्ड निवासी दए बणाईआ। सो पुरख निरँजण चले तेरे नाल, हरि पुरख निरँजण राह वखाईआ। एकँकार करे तेरी प्रितपाल, आदि निरँजण जोती नूर करे रुशनाईआ। श्री भगवान तेरा बणे दलाल, अबिनाशी करता विछड़े मेल मिलाईआ। पारब्रह्म प्रभ खेले खेल कमाल, ख़ालक ख़लक दए समझाईआ। सति धर्म दी चले अवल्लड़ी चाल, ब्रह्म मति इक दृढ़ाईआ। बुध मति लए संभाल, मन वासना डेरा ढाहीआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत दीप साचा वज्जे इक्को ताल, धुन आत्मक राग सुणाईआ। अमृत रस प्याला दए प्याल, निझर झिरना आप झिराईआ। घर वखाए इक्को, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुरती सब दी लए संभाल, सम्बल आपणा चरण टिकाईआ। सतिजुग सुण दस्से भगवन्त, प्रभ आपणी दया कमाईआ। आदि जुगादी सतिगुर सच्चा इक्को कन्त, नर नरायण हरि अख्वाईआ। दो जहानां देवे मणीआ मंत, मन्त्र नाम सति पढ़ाईआ। वेस वटाए जुगा जुगन्त, जुग चौकड़ी फेरा पाईआ। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए वड्याईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, जीव आत्म परमात्म दए समझाईआ। मेल मिलावा साची संगत, गुर अवतार पीर पैगम्बर इक जमात जणाईआ। दूजे दर कदे ना जाए मंगत, देवणहार सर्ब अख्वाईआ। सो सतिगुर सूरा सदा सदा सूरा सरबँगत, हर घट रमया बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिगुर सच्चा इक समझाईआ। सतिगुर सच्चा सो पुरख निरँजण, हरि वड्डा वड वड्याईआ। आदि जुगादि दर्द दुःख भय भंजन, भव सागर पार कराईआ। नेत्र नाम निधान पाए अंजन, निज नेत्र करे रुशनाईआ। चरण धूढ़ कराए साचा मजन, दुरमति मैल धवाईआ। घर प्रकाश दीपक जगण, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। सुरती शब्द लगाए इक्को लग्न, दूजी तृखा ना कोए रखाईआ। त्रैगुण लग्गी बुझाए अग्न, अमृत मेघ इक बरसाईआ। नज़री आए मूर्त अकाल मदन, मोहणी आपणी धार रखाईआ। धुन अनादी नाद साचे वज्जण, अनहद नादी राग अलाईआ। ईड़ा पिंगल दोए जोड़ दर ते मंगण, सुखमन टेडी बंक नैण शरमाईआ। नौ दुआरे दूर दुराडे संगण, आप आपणा मुख भवाईआ। सो सतिगुर पूरा इक्को सतिजुग तेरी चाढ़े रंगण, रंग आपणा आप जणाईआ। खेले खेल विच वरभण्डण, ब्रह्मण्डी ख़ुशी कराईआ। जन भगतां पाए आपणा सगन, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर इक्को रूप समझाईआ। सतिगुर पूरा हरि पुरख, रूप रंग रेख नज़र कोए ना आईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। जीव जंत साध सन्त कोई ना सके परख, सारे बैठे सीस झुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगण दरस, नेत्र नैण नैण उठाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब दी मेट हरस, हवस सब दी

पूर कराईआ। करे खेल अर्श फ़र्श, कुर्श आपणा रंग रंगाईआ। अमृत मेघ देवे बरस, साची धारा इक प्रगटाईआ। साचा दस्से नेम आत्म परमात्म इक्को बरत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा इक अख्वाईआ। सतिगुर सच्चा एकँकार, एको एक वड्डी वड्याईआ। अलख अगोचर अगम्म अथाह बेऐब परवरदिगार, मुकामे हक़ सोभा पाईआ। सचखण्ड सुहाए सच दुआर, निरगुण निरवैर जोती जोत कर रुशनाईआ। शब्दी सुत उठाए इक दुलार, पिता पूत दए वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर तैयार, साची सेवा इक समझाईआ। त्रैगुण माया भर भण्डार, पंज तत करे कुड़माईआ। साची वस्त खोल्ह भण्डार, अतोट अतुट आप वरताईआ। करे खेल सिरजणहार, सति सतिवादी इक अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सतिजुग वर, सतिगुर सच्चा सच समझाईआ। सतिगुर सच्चा आदि निरँजण जोत, जोती जोत डगमगाईआ। वसणहार अगम्मी कोट, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। जिस दी कोई ना सोचे सोच, सोच विच कदे ना आईआ। जिस दर्शन नूं सारे रहे लोच, लोचा सब दी पूर कराईआ। निरगुण हो के बैठा रहे ख़ामोश, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। जिस दे मन्दिर कोई ना सके पहुंच, पांधी भुल्ले भुल्ले राहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग सतिगुर इक्को इक दृढ़ाईआ। सतिगुर सच्चा पुरख अबिनाश, अबिनाशी आपणी खेल कराइंदा। खेले खेल सर्ब गुणतास, गुणवन्ता कार कमाइंदा। आदि जुगादि दो जहान जिस दा प्रकाश, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। ना कोई पवण ना स्वास, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। ना कोई हड्ड नाड़ी दिसे मास, पंज तत रूप ना कोए जणाइंदा। खेले खेल पृथ्मी आकाश, धरनी धरत धवल सोभा पाइंदा। जल थल महीअल पूरी करे आस, आसा तृष्ना मेट मिटाइंदा। जो आदि अन्त सब नूं कहे शाबाश, मेहर नज़र इक उठाइंदा। सो साहिब माही साचे पत्तण मिले घाट, नईया नौका नाम चलाइंदा। जिस दे हुक्मे अन्दर दिवस रात, सूरज चन्द वाहो दाही पन्ध मुकाइंदा। जिस दी ब्रह्मा विष्न शिव गाउँदे गाथ, गुर अवतार पीर पैगम्बर सिफ्त सालाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिगुर इक्को इक दृढ़ाइंदा। सतिगुर सच्चा श्री भगवान, रूप रंग रेख नज़र कोए ना आईआ। वसणहारा सचखण्ड सच्चे मकान, साचे तख्त सोभा पाईआ। भूपत भुप राज राजान, सीस जगदीश ताज टिकाईआ। निरगुण निरवैर हुक्मरान, अजूनी रहित आपणी कार कमाईआ। अनभव प्रकाश खेल करे महान, महिमा अकथ कथ समझाईआ। निरगुण सरगुण वेखे आण, अक्ल कलधारी वेस वटाईआ। नित नवित्त देवणहारा दान, दाता दानी बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिगुर सच्चा दए बुझाईआ।

सतिगुर सच्चा पारब्रह्म, प्रभ वड्डा वड वड्याईआ। ना मरे ना पए जम्म, जननी कुक्ख ना कोए सुहाईआ। पंज तत ना कोए तन, त्रैगुण बन्धन ना कोए रखाईआ। बुध मति ना कोए मन, आसा तृष्ना ना कोए वधाईआ। प्रकाश नूर ना कोई सूरज चन्न, किरन किरन ना कोए चमकाईआ। ज़िमीं असमान ना कोई थम्म, गगन मण्डल रूप ना कोए वखाईआ। सब दा बेड़ा आपे बन्नृ, सति सतिवादी आप चलाईआ। जिस नूं कहिन्दे धन्न धन्न, धन्न धन्न तेरी वड्याईआ। सो सतिगुरू पूरा सद मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। सतिजुग सुण ला कर कन्न, हरि इक इकल्ला आप जणाईआ। जिस कलयुग अन्तिम दित्ता डंन, सो तेरा डंका दए वजाईआ। जिस कूड़ी क्रिया ठीकर दित्ता भन्न, सो तेरा मार्ग दए वखाईआ। जिस दा खेल लख चुरासी हँ ब्रह्म, सो पुरख निरँजण बेपरवाहीआ। जिस दा नाम निधान दो जहान, लोक परलोक रहे जस गाईआ। जिस नूं चौदां लोक कहिण श्री भगवन, बेअन्त बेपरवाहीआ। जिस नूं चौदां तबक कहिण करे प्रकाश अगम्मी चन्न, रुतड़ी रुत आपणे नाल रलाईआ। सो सतिगुर सच्चा दीन दयाल इक्को लैणा मन्न, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिगुर सच्चा इक वखाईआ। सतिगुर सच्चा साचा सुत, लोकमात दए जणाईआ। जिस नूं कुक्ख उठाए अबिनाशी अचुत, आप आपणी गोद सुहाईआ। शब्द दुलारा बणे पुत्त, पारब्रह्म प्रभ धन जणेंदी माईआ। आपणे कुच्छड़ वेखे चुक्क, सचखण्ड साचे खुशी मनाईआ। उठ लाडले लाल क्यों बैठां लुक, तेरा वेला गया आईआ। कलयुग अन्त छुपावें मुख, गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे आए पल्लू छुडाईआ। तेरे उते रख के ओट, रसना जिह्वा ढोला गए सुणाईआ। राह तक्के तेरा लोक परलोक, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। कवण वेला सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा दो जहान सुणाए इक श्लोक, साचा सोहला दए समझाईआ। जिस नूं पढ़यां जिस नूं सुणयां जिस नूं गायां चरणां हेठां दब्बी होवे मुक्ती मोख, नेत्र नैण ना सके उठाईआ। घर ठाकर नज़री आए जिस दी लोचा रहे लोच, निज लोचण दए खुल्हाईआ। नित उठ दर्शन करीए रोज़, चारों कुण्ट जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत शिवदुआले मट्ठ मन्दिर मसीत लभ्भण कोए ना जाईआ। सो सतिगुर पूरा आपे करे आपणी खोज, भेव अभेदा दए जणाईआ। सतिगुर नाल मिल के माणीएं अगम्मी मौज, मजलस इक्को घर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिगुर सच्चा इक्को इक फेरा पाईआ। सतिजुग सतिगुर इक्को आवेगा। पुरख अकाल वेस वटावेगा। नर नरेश नूर धरावेगा। सच संदेसा इक सुणावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव महेष जगावेगा। चौथे युग दा मेट के लेख, नव नौ चार पन्ध मुकावेगा। सति सतिवादी करे साचा हेत, सच मार्ग इक रखावेगा। नज़री आए नेतन नेत, दूर दुराडा

पन्ध मुकावेगा। बण खेवट सच्चा खेट, बेड़ा दो जहान चलावेगा। सतिगुर पूरा वेखे सच्चा बेट, पिता पूत गोद सुहावेगा। लेखा चुक्के औलीआ पीर शेख़, पैगम्बर नज़र कोए ना आवेगा। पिछली लेखा मुक्के रेख, अगला देस आप वसावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर सच्चा पुरख अकाल इक बणावेगा। पुरख अकाल प्रभ इक आएगा। निरगुण जोती जोत रुशनाएगा। किला कोट बंक सुहाएगा। लोक परलोक डंक वजाएगा। जीव जंत सर्ब उठाएगा। नार कन्त वेख वखाएगा। साचा मंत इक दृढ़ाएगा। गढ़ हउमे तोड़ हंगत, हँ ब्रह्म इक समझाएगा। चार वरन बणाए साची संगत, क्षत्री ब्रह्मण शुदर वैश इक्को घर बहाएगा । नाम मजीठी चाढ़ रंगत, दुरमति मैल धवाएगा। सतिजुग तेरी बणाए साची बणत, घड़न भंनणहार समरथ स्वामी आपणा खेल रचाएगा। गुरमुख उपजण साचे सन्त, श्री भगवन्त भगवन भगत आप प्रगटाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल आप वखाएगा। सतिगुर सच्चा आवे सो, सो साहिब वड्डी वड्याईआ। आत्म ब्रह्म कर लो, प्रकाश प्रकाश नाल मिलाईआ। जन्म कर्म दी मैल देवे धो, अमृत मेघ नीर सीर बरसाईआ। साचा ढोआ धुर दा देवे ढो, वस्त अमोलक आप वरताईआ। लख चुरासी अन्दर वड़ के काया पौड़े चढ़ के आत्म सेजा खड़ के सब नूं लवे टोह, बचया कोई रहिण ना पाईआ। जो कहे प्रभ असीं तेरे गए हो, दूजा नज़र कोई ना आईआ । तिन्हां सतिगुर सच्चा नाम दस्से सोहँ सो, तूं मेरा मैं तेरा तेरा मेरा भेव रिहा ना राईआ। बाकी वस्त सब तों लवे खोह, साध सन्त नेत्र रोवण उच्ची कूकण मारन धाहींआ। अमृत झिरना किसे घर ना जावे चो, कँवल नाभी मुख बंद कराईआ। जिन्ना चिर जीव प्राणी पुरख अकाल शब्द धार निरगुण जोत ना जावे छोह, छोहरा बांका रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग सच्चे तेरा मार्ग रहबर राह इक वखाईआ । सतिजुग सच्चे तेरा राह, हरि इक्को इक जणाईआ। सतिजुग सच्चे तेरा मलाह, हरि इक्को इक अख्वाईआ । सतिजुग सच्चे तेरा सच्चा नाँ, हरि निरँकारा आप पढ़ाईआ। सतिजुग सच्चे तेरा साचा थाँ, धर्म दुआरा आप सुहाईआ। सतिजुग सच्चे तेरा सच्चा पिता माँ, पुरख अकाल इक अख्वाईआ। सतिजुग सच्चे तेरी निरगुण हो के पकड़े बांह, फड़ बाहों गले लगाईआ। सतिजुग सच्चे तेरा करे सच न्याँ, सच अदालत इक्को इक वखाईआ। सतिजुग सच्चे तेरा इक मकां, इष्ट गुरदेव स्वामी इक्को इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार आप कमाईआ। सतिजुग सच्चे तेरा इक्को नाअरा, हरि मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। सतिजुग सच्चे तेरा इक्को जैकारा, जै जैकार करे लोकाईआ। सतिजुग सच्चे तेरा इक्को प्यारा, परम पुरख प्रीतम प्रभ दाता बेपरवाहीआ। सतिजुग सच्चे तेरा

इक्को किनारा, घाट पत्तण वंड ना कोए वंडाईआ। सतिजुग सच्चे तेरा इक्को अखाड़ा, सुरती शब्दी गोपी काहन नाच नचाईआ। सतिजुग सच्चे तेरा इक्को राम पसारा, हर घट रमया बेपरवाहीआ। सतिजुग सच्चे तेरा इक्को परवरदिगारा, बेऐब नूर खुदाईआ। सतिजुग सच्चे तेरा इक आधारा, नानक गोबिन्द गोबिन्द नानक तेरी धार बंधाईआ। सतिजुग सच्चे तेरा इक्को मित्र होए उज्यारा, निरगुण निरवैर रूप वटाईआ। सतिजुग सच्चे तेरा खेल करे निहकलंक नरायण नर अवतारा, ख़ालक ख़लक दए समझाईआ। सतिजुग सच्चे तेरा सम्बल वसे धाम अपारा, जिस घर बैठे डेरा लाईआ। सतिजुग सच्चे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक समझाईआ। सतिजुग सच्चे तेरा साचा जोग, हरि जोगीशर रूप जणाइंदा। सतिजुग सच्चे तेरा सच संजोग, धुर करता मेल मिलाइंदा। सतिजुग सच्चे तेरा सच दरस अमोघ, निराकार निरवैर आप कराइंदा । सतिजुग सच्चे तेरा वसे सच्चा लोक, जिस गृह पारब्रह्म प्रभ आपणा चरण छुहाइंदा। सतिजुग सच्चे तेरा सच श्लोक, सोहँ ढोला इक्को राग अलाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची बूझ आप बुझाइंदा। सतिजुग सच्चे तेरा सच्चा धर्म, धर्म आत्म दए जणाईआ। सतिजुग सच्चे तेरा सच्चा कर्म, नेहकर्मी वेख वखाईआ। सतिजुग सच्चे तेरा सच्चा वरन, आत्म जोत बूझ बुझाईआ। सतिजुग सच्चे तेरा सच्चा बरन, पारब्रह्म इक सरनाईआ। सतिजुग सच्चे तेरा सच्चा पढ़न, आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को राग अलाईआ। सतिजुग सच्चे तेरा सच्चा खड़न, प्रभ सरन मिले सरनाईआ। सतिजुग सच्चे तेरा घाड़न घड़न, गुरमुख गुरसिख घाड़त लए बणाईआ। सतिजुग सच्चे तेरा नेत्र इक्को हरन फरन, निज नेत्र नूर रुशनाईआ। सतिजुग सच्चे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मार्ग लाए मलाह, देवणहारा सच सालाह, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त समझाईआ। सतिजुग सच्चे तेरी एका ओट, ओट पुरख अकाल रखाईआ। सतिजुग सच्चे तेरी इक्को चोट, सतिगुर शब्द नगारा नाम वजाईआ। सतिजुग सच्चे तेरी प्रीती कूड़ी क्रिया कढ्ढे खोट, साचा पतण दए जणाईआ। सतिजुग सच्चे तेरी धार आलणयो डिगे उठाए बोट, जो गुरमुख मेरा नाम ध्याईआ। सतिजुग सच्चे तेरा इष्ट पुरख अकाल निर्मल जोत, दूजा रूप ना कोए दरसाईआ। सतिजुग सच्चे तेरा इक्को ढोला राग श्लोक, तूं मेरा मैं तेरा राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र आप उठाईआ। सतिजुग सच्चे तेरा इक दरवाज़ा, हरि दर्दी आप खुलाइंदा। किरपा करे ग़रीब निवाज़ा, ग़रीब निमाणे वेख वखाइंदा। अस्व घोड़े चढ़ के ताजा, लोकमात फेरा पाइंदा। सतिगुर हो के मारे वाजां, शब्दी नाअरा इक सुणाइंदा। नेत्र खोलो अन्तर आत्म बोलो दर्शन पाओ वड राजन राजा, शाहो भूप सति सरूप

सच साची कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक्को इक सुणाइंदा। सच संदेसा सुण के एक, सतिजुग ढह प्या सरनाईआ। श्री भगवान तेरी सच्ची टेक, इक ओट ओट रखाईआ। नित नवित्त करना हेत, हितकारी फेरा पाईआ। फुल फुलवाड़ी रुत्त मौले बसन्ती चेत, गुलशन सच इक महकाईआ। निज नेत्र निज नैण निज कवाड़ी खोल्ह लैणा वेख, सच ताकी कुण्डा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा दित्ता सच वर, सच्चे सच तेरी वड्याईआ। सतिजुग कहे मोहे भरवासा, प्रभ सरन तेरी सरनाईआ। पहलों दित्ता इक दिलासा, मेरी धीरज धीर धराईआ। मैं लोकमात तेरे हुक्म अन्दर जा के करां वासा, बीस बीसा राह तकाईआ। गहर गम्भीर वड सूरबीर गुर गोबिन्द लिख के आया खुलासा, ख़ालक ख़लक सर्ब समझाईआ। कल कल्की प्रगट होवे निरगुण नूर जोत प्रकाशा, प्रकाशवान इक अख्वाईआ। जिस दी नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग सारे रखदे गए आसा, नेत्र नैण नैण उठाईआ। सो साहिब सतिगुर दीन दयाल सतिजुग कलयुग दोहां दी पूरी करे ख्वाहिशा, ख़ालस आपणा रूप जणाईआ। कलयुग रोवे सतिजुग करे हासा, दोहां वेख प्रभ ख़ुशी ग़मी देवे रलाईआ। मनमुख गुरमुख दोहां दा एहो तमाशा, मनमुखां राए धर्म पकड़े गुरमुख सतिगुर पौड़ी चढ़ के दोवें आपणा आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आपणी धार आपणे हथ्थ रखाईआ। सतिजुग कहे प्रभ देवीं ना कोई लालच, बिन तेरे नाम ललचा कोए मोहे ना भाईआ। मैं तेरे भगत सन्त वेखां तेरे ख़ालस, ख़ालस तेरा रूप नज़री आईआ। कोई ना दिसे निंद्रा आलस, कूड़ी क्रिया संग ना कोए निभाईआ। निरवैर पुरख सतिगुर पूरे बणना आप सालस, सति सतिवादी आपणा फेरा पाईआ। मेरे विच कलयुग दी वड़ ना जाए आदत, दूर दुराडा धक्का देणा लाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दी इक इबादत, नाम इक्को इक गाईआ। मैं तेरे भगतां करां तुआरफ़, तूं मेरी सफ़ारश कर के आपणे भगतां नाल मिलाईआ। मैं तेरे चरणां ढारस बैठा बन्ह के, इक्को ओट ध्यान रखाईआ। भगत दुआर कर प्यार आपणे गुरमुखां नाल रलाईं फड़ के, शब्द डोरी तन्द बंधाईआ। मैं वेखां तेरा उच्च दुआरा मन्दिर वड़ के, जिस घर बहि के करें सच नयाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच वर, दूजी लोड़ रहे ना राईआ। सतिजुग तैनूं भगतां नाल मिलावांगा। साचे सन्तां नाल रलावांगा। गुरमुखां रंग चढ़ावांगा। गरसिखां अंग वखावांगा। एन्हां अन्दर वड़ के, चार खाणी चार बाणी दा इक मृदंग वजावांगा। धर्म दुआरे खड़ के, उच्ची कूक कूक सुणावांगा। साचा ढोला धुरदरगाही पढ़ के, तेरा राग बणावांगा। एह खेल ख़ालक आप कर के, करनी करता रूप वखावांगा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, देवणहारा साचा वर, सच सुल्तान इक्को नज़री आवांगा। सच सुल्तान नज़री आए इक महिबूब, मुहब्बत भगतां नाल रखाईआ। आलम उल्मा वेखे उच्च अरूज, कोटन कोटि अर्श बैठे सीस निवाईआ। जिस दा पीर पैगम्बर इशारयां नाल देंदे गए सबूत, सुल्हाकुल सर्ब समझाईआ। सो सतिगुर सच स्वामी तेरा भगतां नाल कराए सलूक, मेल मिलाए सहिज सुभाईआ। जिन्हां तों मार्ग लए मख़लूक, सृष्ट सबाई पिच्छे भज्जे वाहो दाहीआ। एन्हां दा पारब्रह्म प्रभ दए आप सबूत, लेखा लिख्त विच रखाईआ। बेशक पंज तत किसे ना रहे कलबूत, भगत भगवान दोहां दा नाम मिट कदे ना जाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी दोवें सदा मौजूद, जिन्हां दे लख चुरासी जीव जंत साध सन्त पिछों ढोले पढ़ पढ़ गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निहकलंक नरायण नर, साचा मन्त्र आत्म परमात्म परमात्म आत्म निष्अक्खर अक्खरां नाल पढ़ाईआ।

✪ १२ अस्सू २०२० बिक्रमी बीबी निहाल कौर दे गृह गोले वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सति धर्म सच विहार, सति सतिवादी बूझ बुझाइंदा। सति कर्म सति आधार, सति सतिवादी राह चलाइंदा। सति पुरख सति करतार, हरि करता खेल वखाइंदा। सतिगुर सच्चा हो उज्यार, निरगुण निरवैर वेस वटाइंदा। सतिजुग बख़्शे सच प्यार, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। साचा लेखा पुरख नार, नारी नर वंड ना कोए वंडाइंदा। साचा शब्द सच जैकार, साचा नाअरा इक सुणाइंदा। साचा गुरू सच अवतार, साचा गीत इक समझाइंदा। साचा मन्दिर कर उज्यार, सचखण्ड सोभा पाइंदा। साचा दीपक अगम्म अपार, साचा नूर जोत डगमगाइंदा। साचा अमृत ठंडा ठार, सच स्वामी आप प्याइंदा। सच शब्द नाद धुनकार, सच रागी राग सुणाइंदा। सच वेखे विगसे वेखणहार, सच आपणा हुक्म वरताइंदा। सच बणा दो जहान, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड काज रचाइंदा। सच धर्म उठाए निशान, सच साचा रंग रंगाइंदा। सच वेखे खेल ज़िमी असमान, समुंद सागर सच आपणी रचन वखाइंदा। सच लेखा श्री भगवान, जुग चौकड़ी समझ कोए ना पाइंदा। सच देवणहारा नाम ज्ञान, जन भगतां अन्तर आत्म बूझ बुझाइंदा। सच साचे सन्तां करे पहचान, साचा भेव आप खुल्हाइंदा। साचे गुरमुख कर परवान, धुर फ़रमाना आप जणाइंदा। साचे गुरसिख राग सुणाए कान, साचा नाद आप वजाइंदा। साचा खेल विच जहान, लोकमात आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग सिर तेरे हथ्थ टिकाइंदा। साची धार साचा गोबिन्द, गुर सतिगुर आप जणाईआ। साचा अमृत गहर गम्भीर सागर सिन्ध,

डूंग्घी धार आप वखाईआ। साचा दाता गुणी गहिंद, वड वड्डा वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सच्चा सतिगुर सच्चा मीत, मित्र प्यारा सच अख्वाइंदा। सच्चा नाम सच्चा गीत, सतिगुर सच्चा आप सुणाइंदा। सच्चा मार्ग साची रीत, साचा राह आप वखाइंदा। साचा खेल हस्त कीट, साचा इष्ट ऊँच नीच आप बुझाइंदा। सच्चा धाम इक अनडीठ, सच्ची काया मन्दिर अन्दर सोभा पाइंदा। सच्चा करे सच प्रीत, साचा मेला मेल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराइंदा। साची खेल करे करतार, सच कुदरत रूप वखाईआ। सच मेल सिरजणहार, निरगुण सरगुण बन्धन पाईआ। सच रंग अपर अपार, लाल गुलाला दए चढ़ाईआ। सच कपड़ करे तन श्रृंगार, सच चोली इक हंढुाईआ। सच मन्दिर खोलू कवाड़, सच पड़दा दए उठाईआ। सच मेला पुरख नार, घर साचे वज्जे वधाईआ। सच बणे विचोला सिरजणहार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणा रंग रंगाईआ। साचा रंग श्री भगवन्त, घर साचे आप चढ़ाइंदा। साचा नाम सतिगुर मंत, सति सतिवादी सच समझाइंदा। साचा मीता नर हरि कन्त, सच दुआरे सोभा पाइंदा। साचा जोड़ा हरि हरिसंगत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा राह इक रखाइंदा। साचा नाम शब्द ज्ञान। साचा कर्म धर्म निशान। साचा जन्म कर्म परवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवान। साचा खेल श्री भगवाना। साचा मेल पुरख सुल्ताना। साचा सुहेल नौजवाना। साचा चेल बाल अञ्याणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे धुर फ़रमाना। साचा हुक्म धुर फ़रमान। साचा तुख्म भगत भगवान। साचा सुख गुर चरण ध्यान। साचा मुख गोबिन्द गाए गान। साची कुक्ख गुरमुख जम्मे नौजवान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मार्ग दस्से श्री भगवान । साचा मार्ग पुरख अकाल। साचा सालस दीन दयाल। साचा ख़ालस गुर गोपाल। साचा बालक गुरसिख लाल। साचा ख़ालक वड मेहरवान । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि जुगादी वड मेहरवान। साचा नाउँ आदि जुगादि। साचा थाउँ ब्रह्म ब्रह्माद। साचा गाउँ साढे तिन्न तिन्न हाथ। साचा पीण खाण अमृत रास। साचा पिता पूत माउँ पुरख अबिनाश। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वसणहार सद पास। सच्चा सतिगुर साची टेक। साचा गुरमुख बुध बबेक। सच्चा सतिगुर मेटे रेख । सच्चा गुरमुख नेत्र लए पेख। सच्चा सतिगुर करे हेत। सच्चा गुरमुख दर्शन पाए निज नेत्र नेत नेत। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साहिब सच एक। सच्चा गुर सच दीबाण। सच्चा गुरमुख करे पहचान। सच्चा सतिगुर देवे माण।

सच्चा गुरमुख करे ध्यान। सच्चा सतिगुर हो मेहरवान। सच्चा गुरमुख चरण धूढ़ी मस्तक टिक्का लाए आण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवान। सच्चा खेल श्री भगवान, हरि सज्जण सच कराईआ। साचा मेल दो जहान, निरगुण सरगुण गंढु पवाईआ। साचा हुक्म धुर फ़रमान, धुर संदेसा नाम समझाईआ। सच्चा लेखा विच जहान, भगत भगवान दए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। साची सिख्या देवे आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सतिजुग तेरा सच्चा जाप, दोए अक्खर रूप वटाईआ। सोहँ रूप वड प्रताप, करनी करता दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन हरिभगत गुरमुख गुरसिख कर किरपा लए राख, रक्षया करे थाउँ थाईंआ।

✪ १२ अस्सू २०२० बिक्रमी कृपाल सिँघ दे गृह गोले वाला ज़िला फिरोज़पुर ✪

सतिजुग तेरे सच्चे भगत, सो सतिगुर आप प्रगटाईआ। लख चुरासी विचों वेखे जगत, निरगुण सरगुण भेव चुकाईआ। निरवैर हो के आया परत, बेपरवाह फेरा पाईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिंता ग़म ना कोए जणाईआ। सज्जण साचे लए परख, नाम कसवटी उपर लाईआ। अन्दर वड़ के देवे दरस, बाहरों नज़र किसे ना आईआ। नाम धन पल्ले बन्ने खर्च, दु:ख भुक्ख दए गंवाईआ। अग्गे होण ना देवे हर्ज़, पूरब लेखा झोली पाईआ। जन्म मरन दी रहिण ना देवे मर्ज़, लख चुरासी पन्ध मुकाईआ। शब्द ताल सुणाए तर्ज़, राग इक्को इक गाईआ। करे खेल आप असचरज, अचरज लीला आप वरताईआ। बण के आया योद्धा मर्द, सच मर्दानगी रिहा कमाईआ। ग़रीब निमाणयां वंडे दर्द, दर्द दु:ख भय भंजन इक अख्वाईआ। नाम खण्डा तिक्खी करद, छुरी फड़े जगत कसाईआ। कूड़ी क्रिया देवे झटक, झटका इक्को नाम लगाईआ। सतिगुर पूरा करे आपणा फ़र्ज़, फ़र्ज़ी कार ना कोए कमाईआ। जीव जंत साध सन्त सब दी वेखे फोल के फ़रद, पड़दा सके ना कोए पाईआ। प्रभ दा लाहे कोई ना कर्ज़, स्वास स्वास ना कोए ध्याईआ। अन्तिम पुठी दिसे नरद, नटीख़ाने दए दुहाईआ। चार कुण्ट इक्को शेर रिहा कड़क, गूंज इक्को रिहा सुणाईआ। सब दी भंने आकड़ मटक, सिर सके ना कोए उठाईआ। शब्द खण्डे देवे झटक, सीस धड़ लेख मुकाईआ। करे खेल इक्को फ़कत, फ़िकरा हक़ रिहा सुणाईआ। ना कोई नेम ना कोई बरत, संधया पूजा पाठ ना कोए कराईआ। तूं मेरा मैं तेरा इक्को नाम पढ़न दी रखी शर्त, दूजी शरअ ना कोए जणाईआ। अमृत मेघ देवे बरस, बरखा आपणे नाम लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे भगत लए उठाईआ। सतिजुग तेरे थोड़े सन्त, सो साहिब आप बणाईआ। नारी मेला विछड़े कन्त, घर सज्जण नज़री आईआ। काया चाढ़ रंग बसन्त, धूढ़ी मस्तक टिक्का लाईआ। महिमा सुणा आप अगणत, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। माणस देह बणा बणत, पंज तत वेखे चाईं चाईंआ। तोड़ गढ़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक दरसाईआ। मेल मिलावा साची संगत, संग आपणा आप रखाईआ। कोई भेव ना पावे पंडत, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। अन्तिम सारे करे खण्डत, खण्डा खड़ग नाम चमकाईआ। लख चुरासी दिसे रंडत, रंडेपा घर घर नज़री आईआ। दहि दिशा होए मंगत, ख़ाली झोली इक उठाईआ। मिले किसे ना बहिश्त जन्नत, स्वर्ग धार ना कोए जणाईआ। नरक स्वर्ग खेल जाणे ना कोई जन्नत, दोज़ख़ बहिश्त वंड ना कोए वंडाईआ। लख चुरासी जीव जंत सारे बैठे विच शंकत, संसा रोग ना कोए गंवाईआ। हरि का लेख करे ना कोई अंकत, अंकड़ा सके ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म इक वरताईआ। सतिजुग तेरे उजल गुरमुख, हरि सतिगुर दए वड्याईआ। जन्म कर्म दा मेटे दुःख, दीनां अनाथां दर्द वंडाईआ। घर आत्म देवे सच्चा सुख, परमात्म ख़ुशी वखाईआ। साचा गोदी लए चुक्क, गोद सुहञ्जणी इक सहाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, नूर नुराना नूर चमकाईआ। पिछला कढ्ढे

६१७ अन्दर खोट, मनमति दए बदलाईआ। टिकाणे ल्याए फड़ के होश, होछापन दए गंवाईआ। नेत्र खोल्हएका लोच, लोचण आपणे नाल मिलाईआ। साची दस्से सज्जण सोच, प्रभ सरन सच्ची सरनाईआ। आदि जुगादी वखावणहारा कौतक कौत, करनी आपणी रिहा कमाईआ। गुरमुख कोई ना जाए औंत, औंतरा जगत नज़री आईआ। लाड़ी मौत ना मारे मौत, मलकउल देवे ना कोए सजाईआ। जिन्हां आप उठाए आपणे शौक, शहिनशाह आपणे रंग रंगाईआ। सच जणाए धुर दी ओट, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। धर्म दुआरा वसाए किला कोट, बंक इक्को इक सुहाईआ। वेले अन्त ना होवे फ़ौत, फ़तवा सादर ना कोए कराईआ। भेव ना जाणे कोई पीर कुतब गौंस, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचा संग रखाईआ। सतिजुग तेरे साचे सिख, सच स्वामी आप बणाइंदा। धुर दरबारी लेखा लिख, नर निरँकारी वेख वखाइंदा। आत्म प्यारी करे हित, परमात्म साचा मेल मिलाइंदा। निरगुण हो के वसे चित, चेतन आपणा खेल समझाइंदा। नाड़ बहत्तर ना उबले रित, रत आपणे रंग रंगाइंदा। सतिगुर सच्चा बण के पित, घर परमेश्वर फेरा पाइंदा। आपणे मिलण दी साची बिध, बिध नाता जोड़ जुड़ाइंदा। करे वसेरा घर निज, निज महल्ल डेरा लाइंदा। रूप धारे अगम्म निक्क, वड्डा घर आप सुहाइंदा। बिन किरपा किसे ना पए दिस, जग नेत्र कम्म

किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, करे खेल सदा अनडिठ, अनडिठड़ी कार आप कमाइंदा। सतिजुग तेरी साची सिक्खी, साख्यात साहिब प्रगटाईआ । दो जहानां बणे निक्की, निक्की निक्की करे पढ़ाईआ। साची धार रखे तिक्खी, दो धारा खण्डा बैठा मुख भवाईआ। कोई भेव ना जाणे मुनी ऋषी, वड मुनीशर नैण शरमाईआ। सृष्ट सबाई जिन्हां जिती, लख चुरासी डेरा ढाहीआ। जोत अकालण इक्को डिठी, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। नेत्र लोचण आपणे पेखी, दूजे कोलों पुछण कोए ना जाईआ। आत्म परमात्म कर के वेखी हेती, हितकारी आपणी दया कमाईआ। जन्म मरन दी रही ना केती, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा नेत्र आप जणाईआ। सतिजुग तेरा सच असूल, हरि असलीयत विच समझाइंदा। धुर दा हुक्म करना क़बूल, कामल पुरख आप समझाइंदा। भेव कोई ना जाणे कातिल मकतूल, कतलगाह रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मार्ग इक्को लाइंदा। सतिजुग तेरा सच स्वामी, साहिब सतिगुर आप जणाईआ। घट घट वेखे अन्तरजामी, अन्तरगत फोल फोलाईआ। नेहकर्मी दाता वड नेहकामी, कर्म कांड भेव चुकाईआ। सतिजुग सच्ची चले बाणी, बाण निराला तीर लगाईआ। रसना बोले चारे खाणी, चारे बाणी सिफ्त सालाहीआ। शब्द गुरु गुर मिल्या हाणी, हौका भरे इक लोकाईआ। घर अमृत प्याए ठंडा पाणी, सर सरोवर इक नुहाईआ। आवण जावण चुक्के कानी, जगत गेड़ा दए मुकाईआ। सच बणाए धुर दी राणी, नाम मस्तक टिक्का लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा रहबर रिहा समझाईआ। सतिजुग तेरा सुहावे पलँघ, सेज इक्को इक वड्याईआ। करे खेल सूरा सरबँग, शाह पातशाह आसण लाईआ। दो जहानां दए अनन्द, अनन्द अनन्द विचों प्रगटाईआ। लख चुरासी सुणाए छन्द, सोहँ साचा नाम अल्हाईआ। निरगुण सरगुण ढाहे कंध, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। कूड़ी क्रिया देवे दंड, डंका इक्को नाम सुणाईआ। लेखा जाणे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज डेरा ढाहीआ। कूड़ी क्रिया कलयुग मेटे पन्ध, सतिजुग भज्जे वाहौ दाहीआ। करे खेल सूरा सरबँग, दूजा समझ सके कोए ना राईआ। कूड़ी क्रिया मूर्ख मुग्ध कल अञ्याण पावण डण्ड, रसना जिह्वा बत्ती दन्द कूक कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग तेरा घर वसाईआ । सतिजुग तेरा वसे खेड़ा, हरि साचा आप वसाइंदा। दूर दुराडा नज़री आए नेरन नेरा, नेरन नेरा हो वखाइंदा। भेव खुल्हाए मेरा तेरा, सोहँ साचा नाउँ दृढ़ाइंदा। इक्को दर वसे गुरु गुर चेरा, चेला गुर इक्को घर सोभा पाइंदा। कूड़ी क्रिया करे नखेड़ा, दो धारा खण्डा आप चमकाइंदा । धरत मात दा खुल्ल्हा वेहड़ा, ख़ालक ख़लक

वेख वखाइंदा। सन्त सुहेले भगत भगवान करे मेहरा, मेहर नज़र नैण उठाइंदा। गुरमुख गुरसिख हक़ कराए नबेड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा राह इक वखाइंदा। सतिजुग वेख सच मकान, हरि साचा सच जणाईआ। जिस घर भगत भगवान इकट्ठे होए आण, वज्जे इक वधाईआ। जिस दुआरे सन्त सज्जण निउँ निउँ मंगण दान, बैठे सीस झुकाईआ। जिस गृह गुरमुख गुर गुर करन पहचान, पड़दा दूई द्वैत मिटाईआ। जिस महल्ल गुरसिख चरणी डिगण आण, धूढ़ी मस्तक टिक्का लाईआ। जिस मन्दिर गुर अवतार पीर पैगम्बर बहि के गाण, वाहवा कहिण तेरी वड्याईआ। जिस दुआरे विष्न ब्रह्मा शिव करन कल्याण, बण बण बैठे डूम मरासी नाईआ। जिस चुबारे सोहे सच्चा भगवान, निरगुण जोत जोत रुशनाईआ। सो घर होवे परवान, प्रभ दाता वेखे चाईं चाईंआ। कलयुग अन्तिम खेल करे महान, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। भगत दवारा खोल्ह् दुकान, साचा राह दए वखाईआ। हट्ट खोल्हे इक महान, सौदा सच सच विकाईआ। जिस दी इक्को शरअ इक ईमान, धर्म इक्को इक समझाईआ। इक्को ज़ात इक्को पात इक्को दीन मज़्हब इस्लाम, इक्को पैगम्बर नज़री आईआ। जिस दा इक्को कलमा इक कलाम, इक्को मन्त्र सतिनाम, इक्को डंका फ़तहि वजाईआ। जिस दा इक्को रूप राम, इक्को नूर काहन, इक्को सूरबीर उठाए निशान, शब्दी योद्धा वड बलवान, सो पुरख निरँजण किरपा करे महान, सच दुआर खोल्हे विच जहान, जहालत पिछली दए गंवाईआ। ख़ालस ख़ालसा करे परवान, चार वरनां इक ज्ञान, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ख़ुशी मनाण, हरख सोग चिन्ता ग़म जन्म मरन भय ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच महल्ला उच्च अटला इक्को इक समझाईआ। सतिजुग तेरा सच मकान, श्री भगवान आप बणाईआ। जिस घर कदी ना आवे तूफ़ान, वरखा देवे ना कोए लाईआ। जिस दा मेटे ना कोई निशान, माटी ख़ाक ना कोए मिलाईआ। जिस दा होए ना कोई लासान, सानी नजर कोए ना आईआ। जिस दे अन्दर थोड़े भगत रहिण महमान, दूजा वड़न कोई ना पाईआ। जिस घर अमृत पीण खाण, दूजी वस्त ना कोए वरताईआ। जिस दर सतिगुर मिले आण, पुरख अबिनाशी फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा राह रिहा जणाईआ। सतिजुग तेरा सोहणा महल्ला, श्री भगवान सच बणाया। जिथ्थे वसे इक इकल्ला, सच दुआरा रिहा सुहाया। निरगुण हो फड़ाया पल्ला, सरगुण आपणा जोड़ जुड़ाया। सच सद्देशा इक्को घल्ला, सोहँ नाम जपाया। जोती शब्दी धार रला, रूप रंग रेख ना कोए रखाया। वेखणहारा राणी अल्ला, आलमीन वेस वटाया। लख चुरासी दिसे झल्ला, झलक आपणी ना किसे जणाया। सच मन्दिर बहि के बोले इक्को हल्ला, हालत सब दी दए

बदलाया। पंज तत काया माटी वेखे खल्ला, ख़ालक ख़लक वेख वखाया। हथ्थ उठाए तिक्खा भल्ला, नाम निशाना तीर चलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा दए दृढ़ाया। सतिजुग तेरा सच मनारा, मुनी ऋषी नज़र किसे ना आईआ। झुकदे रहिण गुरू अवतारा, विष्न ब्रह्मा शिव सीस निवाईआ। मंगदे रहिण दर भिखारा, भगत आपणी झोली डाहीआ। बोलदे रहिण इक जैकारा, जै जैकार राग अलाईआ। गाउँदे रहिण जुग जुग वारा, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालाहीआ। कागद कलम बणदे रहे लिखारा, बण कातब लेखा लिख्या नाल शाहीआ। निरगुण सरगुण बणदे रहे वणजारा, लोकमात हट्ट चलाईआ। जीव जंतां देंदे रहे सहारा, साची सिख्या धुर समझाईआ। अन्तिम गए आपणी धारा, जिस धार विचों नूर प्रगटाईआ। सो नूरी शहिनशाह इक्को एकँकारा, अक्ल कला अख्वाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस दा दिसे पसारा, पसर पसारी इक्को नज़री आईआ। सो सतिजुग तेरा खोल्हे इक दुआरा, कोटन कोटि दुआरका बैठी सीस झुकाईआ। कोटन राम करे निमस्कारा, कोटन गुर अवतार दर दरवेश सेव कमाईआ। कोटन विष्न ब्रह्मा शिव धूढ़ी मस्तक लावण छारा, टिक्का इक्को इक रखाईआ। कोटन जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग फिर फिर थक्के वारो वारा, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। तिस साहिब दा अन्त ना पारावारा, जिस आपणी खेल रचाईआ। सो कलयुग अन्तिम निरगुण निरवैर लै अवतारा, वड अवतारी फेरा पाईआ। जिस दा दो जहानां मन्नणा पए जैकारा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। उहदा इक्को सच इशारा, कूड़ी ऐशो इशर्त दए गंवाईआ। नव नौ चार हाहाकारा, हकीर फ़कीर दए रुलाईआ। करे खेल आप न्यारा, मज़्हब शरअ दीन दए तुड़ाईआ। वेखे विगसे परवरदिगारा, बेपरवाह फेरा पाईआ। नईया डोबे विच मँझधारा, कूड़ा लेखा दए मुकाईआ। निरवैर होए सांझा यारा, अगला खेल दए समझाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर भगत भगवान सन्त सुजान गुरमुख जवान गुरसिख अञ्याण सारे मिल के पुरख अकाल दीन दयाल दर वेखो इक अपारा, जिस घर इक्को शहिनशाह नज़री आईआ। झुक झुक उठ उठ करो करो करो निमस्कारा, निमख निमख निमख आपणा आप कटाईआ। कोई ना दिसे हुक्मे बाहरा, हुक्मे अन्दर खेल रचाईआ। साचा तुख्म हरि शब्द पूत सपूत दुलारा, तासीर भगतां विच रखाईआ। मेल मिलाए इक दुआरा, सच दरबार वज्जे वधाईआ। साची सखीआँ मंगलाचारा, गीत इक्को इक सुणाईआ। घर मिले प्रीतम प्यारा, पीआ विछड़ कदे ना जाईआ। जिस दा आदि जुगादि पसारा, सो सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगतां सन्तां गुरमुखां गुरसिखां करे पार किनारा, नईया आपणे पत्तण लाईआ। फड़ बाहों लै के जाए सच दरबारा, जिस घर बैठा आसण लाईआ। जोती जलवा जोत उज्यारा, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। ओस

मन्दिर वड़ के पुरख अबिनाशी दर्शन कर के भगत सन्त गुरमुख गुरसिख कोई ना कहे मैं एथों जावां बाहरा, सारे मंगण इक्को तेरा नूर तेरी रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एथे ओथे दो जहान करे सच्चा सच प्यारा, झूठी यारी ना कदे लगाईआ।

✪ १२ अस्सू २०२० बिक्रमी गोलेवाला ✪

रसना जिह्वा बत्ती दन्द बोल कीती कल्याण, शास्त्र वेद सिमरत ज्ञान पाठ पूरब जणाईआ। बोध अगाध शब्द अनाद धुन दस्सी ना वज्जे किस मकान, तार सुर ताल कवण रखाईआ। कवण कूट कवण दुआर मिले पतिपरमेश्वर श्री भगवान, बेपरवाह वड्डी वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा गाउँदे गए गान, सिफ्ती सिफ्त सालाहीआ। तिस साहिब दी निरगुण रूप दस्सो पहचान, निरवैर कवण कूटे आसण लाईआ। कवण संदेसा तुहानूं देवे आण, अन्तर आत्म बूझ बुझाईआ। ब्रह्म कवण करे पहिचाण, ब्रह्म पारब्रह्म पड़दा आप उठाईआ। कवण शब्द वज्जे धुन्कान, तुरिया बैठी नैण शरमाईआ। कवण मन्दिर जोत जगे महान, दीवा बाती किस बिध रिहा टिकाईआ। आपणा लेखा खोल्ह करो ब्यान, साढे तिन्न हथ्थ काया बंक कवण घर होए रुशनाईआ। नौ दुआरे कूड़ी क्रिया सारे कहिण प्रधान, सुखमन टेडी बंक फिर फिर थक्कण वाहो दाहीआ। ईड़ा पिंगल रखण माण, सहँस दल देण जणाईआ। सच दस्सो किस रूप अमृत आत्म कीता पान, निझर झिरना उलटा कँवल उलटाईआ। किस घर किस मन्दिर किस गृह स्वामी सच सतिगुर मिले आण, सति सतिवादी आपणा पन्ध मुकाईआ। सोई सुरती अकाल मूर्ती नाद तूरती आसा पूरती शब्द गुरदेव लए उठाल, शब्द इशारे नाल बुलाईआ। उस दा नूर कवण करे जुमाल, बेनज़ीर नज़र नज़र वखाईआ। परवरदिगार बेपरवाह सति सरूप शाहो भूप श्री भगवान करो ब्यान, बेज़बान जो सब नूं रिहा पढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी चार युग चार वरन जिस दी मन्नण आण, बैठे दर दरवेश सीस झुकाईआ। उस प्रभू दा भेव दस्सो आण, अनडिठड़ी बूझ बुझाईआ। जिस दर्शन नूं दरस मंगण विच जहान, तृष्ना इक्को भुक्ख रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बख्शणहारा घर विच घर, कवण कूटे बैठा डेरा लाईआ। चार युग दा चुक्के झेड़ा, पिछली कथा सारे रहे सुणाईआ। आपणा दस्सो किस बिध वसया खेड़ा, मिली माण तन वड्याईआ। मन मन्दिर किस दुआरे ढाहया डेरा, मनसा मनसा विच खपाईआ। बुद्धि वेख्या केहड़ा वेहड़ा, घर आपणे फेरा पाईआ। किस मंज़ल होवे हक़ नबेड़ा, हकीकत लेखा दए चुकाईआ। साहिब

६२२

१५

सतिगुर हरि सुल्तान दूर दुराडा नज़री आए नेरन नेरा, घर मिले सच्चा माहीआ। साचे सन्त बणाओ बणत, मिलाओ कन्त, लेखा चुक्के जीव जंत, साधना इक्को इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुछणहारा साचा घर, घर आपणा दयो समझाईआ। आपणा घर दस्सो बोल, अनबोलत आप जणाइंदा। जिस घर अन्दर इक वज्जे ढोल, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोए हिलाइंदा। साची वस्त किस गृह रखी कोल, खोल्ह अक्ख क्यों मुख छुपाइंदा। पूरे कंडे तोलो तोल, तोलणहारा बूझ बुझाइंदा। मारन नहीं देणा कोई रोल, उहला पड़दा सर्ब चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुछणहारा इक्को घर, जिस घर हरि हरि नज़री आइंदा। हरि का दस्सो सच दुआर, दुआरका मिले ना वड्याईआ। जिस घर वसे इक्को निरँकार, एकँकार बैठा आसण लाईआ। निर्मल दीआ बाती जगे अगम्म अपार, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। ओथे शास्त्र सिमरत वेद पुराण कोई ना करे विचार, गीता ज्ञान ना कोए दृढ़ाईआ। ना कोई जनक दिसे दरबार, ना कोई अष्टाबकर बूझ रिहा बुझाईआ। सो साहिब खेल करे करतार, करता पुरख वड्डी वड्याईआ। जुग जुग जन भगतां खोल्हे बंद कवाड़, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। साचा दरस देवे इक वसाल, वसल आपणे नाल कराईआ। शास्त्र सिमरत जिस दा दस्सण हाल, सो हालत सब दी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुछणहारा साचा घर, जिस घर मिले इक्को दरस, अगली पिछली रहे ना कोई हरस, हवस नज़र कोए ना आईआ। किरपा करो जगत ठाकर, हरि ठाकर मंग मंगाइंदा। गहर गम्भीर डूंग्घा सागर, काया कवरी फोल फोलाइंदा। जिस अन्दर जगत वासना मन सौदागर, आत्मा परमात्मा भेव ना कोए खुल्हाइंदा। सृष्ट सबाई सतिगुर सच्चा निर्मल कर्म करे उजागर, जिस उपर आपणी मेहर नज़र उठाइंदा। दर आयां घर आयां एथे ओथे दो जहानां देवे आदर, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणे नाल रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को मंगे सच्चा दरस, जिस दरस कीत्यां दर्द ना कोए रखाइंदा। साचा दरस दयो दीदार, आत्म अन्तर बूझ बुझाईआ। जिस दी समझ ना सके कोए विचार, विचार विच कदे ना आईआ। जिस दी नाद शब्द धुनकार, धुन आत्मक राग सुणाईआ। जिस दा मेला सच दरबार, जिथ्थे दूजा नज़र कोए ना आईआ। ओस प्रीतम दा प्यार दस्सो कर प्यार, प्यार नाल प्यार लैणा वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को मंगे सच दरस, जिस नाल लेखा चुके अर्श फ़र्श, काया काअबा दो दो आबा सच्चा हुजरा इक्को नज़री आईआ। नूर नुराना नौजवाना मर्द मर्दाना शब्द तराना राग नाद ब्रह्म ब्रह्माद शब्द घोरी, आदि गुरदेव स्वामी इक्को नज़री आईआ। तन काया माटी उते बोरी, तप्पड़ जगत जुगत वखाईआ। बाहर अन्दर बिन सतिगुर पूरे समझ ना

सके कोई चोरी, चोरी यारी ठग्गी बिन साचे सन्त नज़र किसे ना आईआ। अन्दर वस्त जेहड़ी लोड़ी, सो लोहड़ा पैणी हथ्थ अजे ना आईआ। पढ़ पढ़ विद्या चौदां करन बौहड़ी बौहड़ी, चौदां लोक देण दुहाईआ। चौदां तबक उते काग़ज़ लिख्त दिसी कोरी, निष्अक्खर अक्खर रूप ना कोए वटाईआ। प्रभ मिलण नूं जन भगतां विद्या मंगी थोड़ी, थोड़ीउँ बहुती देवे आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मंगणहारा साचा दर, सर्ब साध संगत अग्गे इक्को वार सुणाईआ। तन कहे मेरे उते तप्पड़, जगत ओढण नज़री आईआ। पता नहीं ओस थाँ केहड़े वेले जाए अप्पड़, भज्जे फिरदे वाहो दाहीआ। जिस वेले पारब्रह्म दा नज़री आए छप्पर, चार दीवार रहिण कोए ना पाईआ। ओथे जा के आसा तृष्ना हउमे हंगता माया ममता जूठ झूठ जगत नाता तुटे इक्को आवे सबर, सबर सबूरी साचे नाल हंढाईआ। होए प्रकाश मिले अबिनाशी नाता चुक्के काया कबर, गहर गम्भीर देवे माण वड्याईआ। आत्म परमात्म तख्त निवासी सच्चा शहिनशाह इक्को करे अदल, अदालत इक्को घर वखाईआ। जिस वेले अन्दरों अन्दरे अन्दर जन भगतां आदत देवे बदल, बाहरों रूप ना कोए वखाईआ। हरिभगत बिन कतलों होए कतल, कातिल मकतूल भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे सन्तां कोलों मंगे इक्को मंग, जिस मिलयां दो जहान श्री भगवान इक्को रूप नजरी आईआ।

✪ १२ अस्सू २०२० बिक्रमी इन्द्र कौर दे गृह कोट कपूरा ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सतिजुग तेरा सच्चा नाम, सो पुरख निरँजण इक प्रगटाईआ। अमृत आत्म लख चुरासी देवे जाम, निझर झिरना इक झिराईआ। आसा तृष्ना माया ममता हउमे हंगता कूड़ी क्रिया मेटे काम, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी देवे दान, वस्त अमोलक नज़री आईआ। पारब्रह्म ब्रह्म देवे सच्चा माण, अभिमान रूप ना कोए वटाईआ। गृह मन्दिर अन्दर घर नज़री आऐ इक्को काहन, साची बंसुरी राग सुणाईआ। सच पैगम्बर देवे इक पैग़ाम, नाअरा हक़ हकीकत दए जणाईआ। लाशरीक वाली दो जहान, सच तौफ़ीक इक्को इक खुदाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर पारब्रह्म प्रभ रखण चरण ध्यान, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। ना कोई दिसे दीन मज़्हब इस्लाम, सही सलामत साबत सूरत इक्को इक बुझाईआ। नव नौ सत्त जो करे सलाम, इक्को कलमा गाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सुरप्त तेरा ढोला गाण, गण गंधर्ब इक्को राग अलाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ तूही तूही करन उच्ची उच्ची इक ज्ञान, जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग सच्चे तेरा मार्ग इक समझाईआ। सतिजुग सच्चे तेरा सच्चा गीत, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। हरि पुरख निरँजण वसणहारा घर ठांडे सीत, एकँकार दए समझाईआ। आदि निरँजण जोत निरँजण जणाए साची रीत, अबिनाशी करता इक्को बूझ बुझाईआ। श्री भगवान वसणहारा धाम अनडीठ, महल अटल इक्को इक सुहाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म जणाए सच प्रीत, प्रीतीवान आपणी दया कमाईआ। लेखा जाणे हस्त कीट, ऊँच नीच राउ रंक वेख वखाईआ। लहिणा देणा चुकाए मन्दिर मसीत, काया काअबा सच महिराब इक्को इक सुहाईआ। शाहो भूप वड राजन राज शहिनशाह शाह पातशाह हक़ तौफ़ीक, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाईआ। सति सतिवादी सति पुरख निरँजण तेरी करे आप तस्दीक, दूजा सानी नज़र कोए ना आईआ। दूर दुराडा नेरन नेरा नज़री आए नज़ीक, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। सदी वीहवीं रही बीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा एकँकारा इक इकल्ला धुदरगाही दए समझाईआ। सतिजुग सच्चे तेरा सच्चा संग, सो सतिगुर आप बणाईआ। जुग चौकड़ी चाढ़े रंग, रंग मजीठी इक रंगाईआ। शब्द नाद वजाए मृदंग, अनहद रागी राग सुणाईआ। आत्म अन्तर सच महल्ले वेखे लँघ, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। सेज सुहञ्जणी सुहाए पलँघ, पावा चूल ना कोए बणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया काम क्रोध लोभ मोह हँकार करे खण्ड खण्ड, खड़ग इक चमकाईआ। सुरत सवाणी बिन शब्द हाणी रहे ना रंड, कन्त मिलावा सहिज सुभाईआ। वेख वखाए सृष्ट सबाई नौ खण्ड, सत दीप आपणा पड़दा लाहीआ। करे प्रकाश बिन सूरज चन्द, जोती जोत जोत रुशनाईआ। अमृत धार वहाए गहर गम्भीर सागर सिन्ध बिन गंग, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती बैठी नैण शरमाईआ। साहिब सतिगुर पूरा सूरा सरबँग, कलयुग अन्त साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। जन्म कर्म रोग सोग चिन्ता दुःख भरम भउ लेखा चुकाए भुक्ख नंग, वस्त अमोलक नाम दान श्री भगवान हो मेहरवान इक्को झोली पाईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले गुरमुख गुरसिख अंगीकार लाए अंग, आप आपणी गोद बहाईआ। एथे ओथे दो जहान निरवैर पुरख निराकार देवे सच्चा संग, मँझधार ना कोए रुढ़ाईआ। नाता तोड़ जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज लख चुरासी जम की फाँसी आवण जावण देवे पन्ध मुकाईआ। वेखे खेल दो जहान, मण्डल रासी गोपी काहन, सुरती शब्दी इक ध्यान, साचा मेला मेल मिलाईआ। कलयुग तेरा हुक्म होवे परवान, अन्तिम लेखा चुक्के विच जहान, सतिजुग उठे नौजवान, लोकमात लए अंगड़ाईआ। सतिजुग साचे तेरा खेल भगवन्त, निरगुण निरवैर आप कराईआ। लख चुरासी विचों गुरमुख उठाए साचे सन्त, सति सतिवादी इक्को बूझ बुझाईआ। आत्म परमात्म बोध ज्ञान देवे बण के अगम्मी पंडत, पंज तत रूप रंग रेख नज़र कोए ना आईआ। आपणी

महिमा जणाए बेअन्त, लेखा लिख सके ना कोए राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त आप वरताईआ। सतिजुग तेरी वस्त अपार, सो करता आप जणाईआ। घर मन्दिर खोल्ह कवाड़, गृह वज्जे नाम वधाईआ। साची सखीआँ मंगलाचार, गीत गोबिन्द इक अल्लाईआ। महल अटल उच्च मनार, सोभा साचे घर वखाईआ। दीआ बाती कमलापाती इक्को कर उज्यार, जोत निरँजण करे रुशनाईआ। बूँद स्वांती इक इकांती ठंडी ठार, बहुभांती दए पिलाईआ। मेटे कलयुग रैण अन्धेरी राती, सतिजुग तेरी खोल्हे ताकी, सब दा लहिणा देणा चुक्के बाकी, बाकीनवीस आपणा फेरा आपे पाईआ। वेख वखाए लख चुरासी पंज तत ख़ाकी, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध पड़दा देवे पाईआ। सच्चे घोड़े अस्व चढ़े राकी, शाह सवारा हरि निरँकारा दो जहानां भज्जा फिरे वाहो दाहीआ। करे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर सुणाए जैकारा, शहिनशाह सच्ची सरकारा, शाह सुल्तान वड मेहरवान, मेहर नज़र इक्को इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचे देवे माण वड्याईआ। सतिजुग साचे तेरा मेला गोबिन्द, गुर गुर शब्दी मेल मिलाईआ। पूरब पूरब मेटे चिन्द, चिन्ता दु:ख नज़र कोए ना आईआ। दीन दयाल बण बख़्शिंद, बख़्शिश रहमत आपणी दए वरताईआ। धार वखाए घर अन्तर निज, निज आत्म बूझ बुझाईआ। काया चोली देवे सिंज, सिंच हरी आप कराईआ। आपणे मिलण दी जन भगतां दस्से बिध, अन्तर आत्म परमात्म पड़दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। सतिजुग साचे जाणा उठ, सो स्वामी आप उठाइंदा। पुरख अकाल गया तुठ, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा। तिन्न युग सुत्ता रिहा चुप्प, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाइंदा। उठ वेख कलयुग अन्धेरा घुप्प, चारों कुण्ट साचा चन्द ना कोए चमकाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां पैंडा गया मुक्क, पांधी नज़र कोए ना आइंदा। सचखण्ड दुआरे साचे बैठे लुक, लोकमात रूप अनूप ना कोए वटाइंदा। सारे सुखणा रहे सुख, दोए जोड़ ध्यान लगाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर पुरख अकाल दीन दयाल गोबिन्द बणाया इक सुत, सुत शब्दी नाउँ धराइंदा। जो लोकमात कलयुग अन्त करे आपणा रुख़, चरण चरण आप उठाइंदा। सो वेला वक्त सदी वीहवीं रिहा ढुक, दो जहान नेत्र नैण उठाइंदा। चार वरन अठारां बरन सृष्ट सबाई अन्तर आत्म नाम निधान वस्त दिसे ना कोल कुछ, ख़ाली झोली सारे रहे वखाईआ। धुर दा बूटा बिन सतिगुर पूरे रिहा सुक्क, साचा माली नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कूड़ कुड़यार जड़्ह रिहा पुट्ट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा निरगुण दाता पुरख बिधाता परम पुरख प्रीतम पारब्रह्म पतिपरमेश्वर इक्को इक जणाईआ। सतिजुग

सच्चे मेरे लाल, सो साहिब दए समझाईआ। तेरे नाल निरगुण रूप बणे दलाल, शब्दी रूप इक वटाईआ। जा के वेखे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। त्रैगुण माया तोड़े जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। पंज तत तत्त मार्ग दए सिखाल, ब्रह्म मति इक पढ़ाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वखाए इक्को धर्मसाल, धर्म दुआर सच्चा नज़री आईआ। जिस दुआरे पोह ना सके काल, राए धर्म ना दए सजाईआ। चित्रगुप्त लेख ना सके वखाल, लाड़ी मौत अन्त ना लए प्रनाईआ। सो मन्दिर सोहे सच दुआर, जिस गृह वसे पुरख अकाल, अक्ल कलधारी बैठा डेरा लाईआ। जलवा नूर इक जलाल, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। बेवफ़ाई सांझा यार, लाशरीक शिरकत रूप ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक समझाईआ। सतिजुग सच्चा सुण संदेस, प्रभ चरण ध्यान लगाईआ। किरपा करी वड नरेश, मेहरवान तेरी वड्याईआ। मैं बालक बण के खेडां खेड, लोकमात खेल रचाईआ। तेरे भगतां देवां भेत, अन्दर वड़ के भेव समझाईआ। सतिगुर पूरा निज नेत्र लैणा पेख, दोए लोचण कम्म किसे ना आईआ। जन्म कर्म दी बदले रेख, लेखा आपणे घर वखाईआ। आत्म परमात्म करे हेत, हितकारी वड्डी वड वड्याईआ। रुत्त सुहञ्जणी मौले चेत, पत डाल्ही फुल फलवाड़ी आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सद तेरी मिले सरनाईआ। सतिजुग सच्चा चढ़या चाअ, चाउ घनेरा इक रखाईआ। वडभागी प्रभ मिल्या मलाह, बेड़ा लोकमात चलाईआ। शब्दी शब्द देवे सलाह, साची सिख्या इक समझाईआ। सोहँ ढोला लैणा गा, तूं मेरा मैं तेरा तेरी मेरी होए ना कदे जुदाईआ। साचा खेड़ा देणा वसा, लोकमात वज्जे वधाईआ। झूठा झेड़ा देणा मुका, झगड़ा आत्म परमात्म कोए रहिण ना पाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म नज़री जाए आ, नेत्र लोचण नैण इक खुल्हाईआ। गीत गोबिन्द डूंघा सागर गम्भीर गहर इक्को लैणा गा, दूजा राग ना कोए अल्हाईआ। हरि रुठड़ा कन्त लैणा मना, घर घर विच वास्ता पाईआ। मेहरवान मेहर नज़र लए उठा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग सच सच दृढ़ाईआ। सतिजुग मिलदी वेखे दात, कलयुग रोवे मारे धाहींआ। उच्ची कूक करे फ़रयाद, प्रभ अग्गे रिहा सुणाईआ। पारब्रह्म प्रभ चौदां सदीआं दिती दाद, मुहम्मद इशारे नाल जणाईआ। बीसवीं सदी मारे आवाज़, बीस बीसा नाउँ धराईआ। मेरा अजे पूरा नहीं होया काज, करते मेरी इक अरजोईआ। मैं लख चुरासी घर घर वेखणा नाच, कूड़ी क्रिया नाल रलाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात झगड़ा करन दी दस्सी जाच, जीवां जंतां साधां सन्तां माया ममता हउमे हंगता गढ़ बणाईआ। तेरा नूर नज़र नहीं आउणा रसूल पाक, पाकीज़ा रूप ना कोए वटाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड पृथमी सत दीप कोई गोपी

काहन ना पाए रास, साचा नाच ना कोए नचाईआ। सतिगुर पूरा हाज़र हज़ूरा नानक गोबिन्द किसे वसे ना पास, मन वासना चारों कुण्ट होए हल्काईआ। फिरे दरोही पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर नेत्र नैणां नीर वहाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण साडे कुछ नहीं पास, ख़ाली हथ्थ देण वखाईआ। तेरे भगत होण उदास, सांतक सति ना कोए वरताईआ। पारब्रह्म प्रभ मेरे सतिगुर ओस वेले मैंनूं कहीं शाबाश, कलयुग मेरे छोटे पुत्त वाहवा तेरी वड्डी वड्याईआ। तेरी लख चुरासी कर्मां नाल करां नास, कर्मां लेखा लेखे पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका मन्न मेरी अरदास, दर तेरे सीस झुकाईआ। प्रभ मेरी अर्ज़ कर मंज़ूर, दर इक्को मंग मंगाइंदा। तूं सब दी आसा मनसा करें पूर, पूरन इच्छया तेरे कोल कराइंदा। मैं चार कुण्ट मचाउणा फ़तूर, फ़तवे सब दे उते लाइंदा। सन्तां साधां अन्दर वाड़ना कूड़ो कूड़, पीर पैगम्बर बचया कोए रहिण ना पाइंदा। इक्को मार शरअ ज़ंज़ीर, कुंजी आपणे हथ्थ रखाइंदा। बदल सके ना कोए तकदीर, तेरी तदबीर हथ्थ ना किसे फड़ाइंदा। तूं मेरा वेख अन्त अख़ीर, घर घर सृष्ट सबाई नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दीन दयाल ठाकर मेरे मेहरवान तुध बिन नज़र कोए ना आइंदा। पुरख अबिनाशी बोले सच, सति सतिवादी आप जणाइंदा। कलयुग चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड सत्त दीप अन्दर रिहा नच्च, मुख घूँगट नज़र कोए ना आइंदा। अन्तिम भाण्डा भज्जणा कूड़ी कच्च, काया गगरीआ डेरा ढाइंदा। प्रगट होया पुरख समरथ, महिमा अकथ आप सुणाइंदा। जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर जो कलयुग चलाए तेरा रथ, बण रथवाही वेस वटाइंदा। अन्तिम मार्ग इक्को देवे दस्स, सच सुनेहड़ा इक समझाइंदा। तेरा खेड़ा होणा भट्ठ, त्रैगुण अग्नी अग्ग लगाइंदा। बिन गुरमुख सच्चे कोई ना सके बच, गुर अवतार पीर पैगम्बर अग्गे हो ना कोए छुडाइंदा। नेत्र खोल्ह उठ वेख नट्ठ, पारब्रह्म पतिपरमेश्वर शब्द हल्कारा इक्को इक दौड़ाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत दीप वेख वखाए चौदां लोक हट्ट, चौदां तबक पड़दा आप चुकाइंदा। सतिजुग सच्चा धरत मात दी गोदी जाए वस, श्री भगवान वास्ता आपणे नाल रखाइंदा। करे खेल आप अकथ, कथनी कथ ना कोए समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादि जुग चौकड़ी चार युग पांधी सब दा पन्ध मुकाइंदा।

✪ १२ अस्सू २०२० बिक्रमी तेजा सिँघ दे गृह पिण्ड सादक ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सतिजुग सच्चे तेरा सच्चा नाम, सो पुरख निरँजण आप प्रगटाईआ। हँ ब्रह्म सच देवे दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। शब्द गुर बण के आवे सच्चा राम, हर घट रमया बेपरवाहीआ। सति सतिवादी वेस वटाए अगम्मी काहन, गोपी काहन रास रचाईआ। बेपरवाह खेले खेल वाली दो जहान, निरगुण सरगुण धार समझाईआ। परवरदिगार होए प्रधान, सच प्रधानगी इक कमाईआ। लाशरीक उठाए सच निशान, शिरकत कोए नज़र ना आईआ। सच पैगम्बर देवे इक पैग़ाम, कलमा इक्को इक सुणाईआ। लख चुरासी बख्शे इक ध्यान, पुरख अकाल सरन सरनाईआ। बोध अगाधा दए ज्ञान, निष्अक्खर अक्खर रूप वटाईआ। आत्म अन्तर निर्मल जोत जगाए महान, जोती जोत जोत रुशनाईआ। सच दुआरा खोल्ह दुकान, चौदां लोक दए समझाईआ। सर्ब जीआं दा इक भगवान, पारब्रह्म ब्रह्म पड़दा दए उठाईआ। ईश जीव करे पहचान, जगदीश भेव चुकाईआ। साचा मन्दिर वखाए मकान, महल अटल इक रुशनाईआ। सचखण्ड निवासी वसे नौजवान, पुरख अबिनाशी ना मरे ना जाईआ। सच संदेसा देवे धुर फ़रमान, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव चरण कँवल सीस झुकाण, दर बैठे अलख जगाईआ। तेरा खेल वड मिहबान, बी ख़ैर या अल्ला सके ना कोए समझाईआ। सच तौफ़ीक दे वड मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग सच्चे रिहा दृढ़ाईआ। सतिजुग सच्चे वेख लाल, सो साहिब सच जणाईआ। सच दुआर खोल्हे तेरी धर्मसाल, धर्म वंड ना कोए वखाईआ। ठाकर स्वामी होए दयाल, दीनन आपणी दया कमाईआ। साचा मार्ग दए सिखाल, सति सतिवादी करे पढ़ाईआ। चार वरन देवे इक ज्ञान, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश दूई द्वैती रहिण कोए ना पाईआ। बोध अगाधा नाम जैकारा सुणाए आप भगवान, भगवन आपणा भेव खुल्हाईआ। तूं मेरा मैं तेरा नाता जुड़े विच जहान, आत्म परमात्म बन्धन इक वखाईआ। जीव जंत सृष्ट सबाई लख चुरासी चारे खाणी बाणी सारे गाण, गा गा आपणी खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल दए समझाईआ। सतिजुग सच्चे तेरा राह, सो स्वामी आप जणाइंदा। निरवैर पुरख निराकार निरँकार बणे मलाह, खेवट खेटा आपणी सेव कमाइंदा। साचा नाउँ नर निरँकारा इक्को दए सलाह, सलाहगीर नज़र किसे ना आइंदा। नव नौ चार सुहाए थाँ, थान थनंतर सोभा पाइंदा। जीव जंत हँस बणाए काँ, कागों हँस रूप वटाइंदा। निर्धन सरधन पकड़े बांह, फड़ बाहों गले लगाइंदा। घट स्वामी बहि के करे न्याँ, सच अदालत इक लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग तेरा राह वखाइंदा। सतिजुग तेरा खुल्हा वेहड़ा, हरि करता आप कराईआ। दीन मज़्हब

दा चुक्के झेड़ा, ज़ात पात नज़र ना आईआ। कूड़ी क्रिया ढाहे डेरा, ढाह ढाह ख़ाक मिलाईआ। इक्को रंग रंगाए सञ्झ सवेरा, साचा चन्द नूर कर रुशनाईआ। धरत धवल दा वसे खेड़ा, ज़िमीं असमान ख़ुशी मनाईआ। पारब्रह्म प्रभ करे आपणी मेहरा, मेहर नज़र बेनज़ीर आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक सुणाईआ। सतिजुग कहे मेरे निरँकार, तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। तूं आदि जुगादी दाता सिरजणहार, देवणहार सच्चा शहिनशाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चारे युग तेरे भिखार, बैठे दर अलख जगाईआ। निउँ निउँ सजदा सीस करन निमस्कार, जगदीश तेरी ओट तकाईआ। कर किरपा सिरजणहार, चरण कँवल दे समझाईआ । मैं सेवक बणां बरखुरदार, माण अभिमाण नज़र कोए ना आईआ। तेरा हुक्म मन्नां सरकार, शरअ सके ना कोए बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। दर तेरे प्रभ मंगां मंग, ख़ाली झोली आपणी डाहीआ। किरपा कर सूरे सरबँग, शाह सुल्तान तेरी सरनाईआ। इक्को दे सच अनन्द, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। लेखा चुक्के भेख पखण्ड, सच सुच्च दे समझाईआ। मेरा प्रेम ना होवे रंड, प्रीती प्रीतीवान तेरे नाल लगाईआ। दूई द्वैती ढाह कंध, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। दयाल हो को सुणा छन्द, ढोला इक्को राग अल्लाईआ। खुशी करा बंद बंद, बंदीखाना तोड़ तुड़ाईआ। साचा चाढ़ निरगुण चन्द, सूरज चन्द नैण शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, धुर दी वस्त झोली पाईआ। सतिजुग कहे मेरे भगवान, भगवन तेरी इक सरनाईआ। धुर दा दे इक निशान, सच निशाना हथ्थ फड़ाईआ। नाम शब्द दे ज्ञान, चौदां विद्या ना कोए पढ़ाईआ। चौदां लोक सुञ मसाण, बिन तेरे सोभा कोए ना पाईआ। चौदां तबक ना कोए कल्याण, कलमा नबी रसूल ना कोए समझाईआ। किरपा कर नौजवान, नौबत आपणे नाम वजाईआ। आदि जुगादि हुक्मरान, तेरा हुक्म ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचे रिहा समझाईआ। सतिजुग साचे सुण बाल निधान, सो सतिगुर आप जणाईआ। कलयुग कूड़ी मिटे दुकान, लोकमात रहिण ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणा जारी करन फ़रमान, धुर संदेसा देण सुणाईआ। चार वरन अठारां बरन कोई ना करे कल्याण, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। सिदक सबूरी साबत रिहा ना कोए ईमान, सति सन्तोख धीरज जत नज़र कोए ना आईआ। रसना जिह्वा जीव जंत साध सन्त करन कल्याण, अन्तर आत्म गुर का शब्द ना कोए वसाईआ। बाहरों रसना जिह्वा बत्ती दन्द बोलण ज़बान, प्रेम प्रीती परम पुरख ना कोए निभाईआ। दूर दुराडे वेखण दीन मज़्हब ईमान, साचा इस्म नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग देवे माण वड्याईआ। सतिजुग अग्गों प्या हस्स, प्रभ तेरे चरण मिले सरनाईआ। ठाकर स्वामी मार्ग आपणा दस्स, मैं पांधी चलां वाहो दाहीआ। साचा नूर कर प्रकाश, मोहे मार्ग देणा लाईआ। मैनूं इक्को तेरी आस, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सदा वसां तेरे पास, दर तेरे अलख जगाईआ। तेरा खेल पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल तेरा नूर रुशनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा प्रकाश, दो जहान तेरा नूर डगमगाईआ। मेरी पूरी करनी आस, निरासा रूप ना कोए वखाईआ। मैनूं इक्को सच्ची ख्वाहिश, तेरा नाम दयां दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, घर साचे खुशी मनाईआ। सतिगुर सच्चा पुरख अकाल, प्रभ अबिनाशी आप जणाइंदा। किरपा करे दीन दयाल, दीनन तेरा रंग रंगाइंदा। धर्म बणाए तेरी सच्ची धर्मसाल, नौ खण्ड पृथ्मी इक्को घर वखाइंदा। दीपक जोती दीआ देवे बाल, तेल बाती ना कोए टिकाइंदा। शब्द अगम्मी वज्जे ताल, अनहद नादी नाद सुणाइंदा। अमृत जाम दए प्याल, रस इक्को इक वखाइंदा। मार्ग दस्से इक सुखाल, रहबर आपणा रूप वटाइंदा। निरगुण हो के बणे दलाल, सरगुण साचा वणज कराइंदा। करे खेल आप भगवान, भगवन आपणी कार कमाइंदा। जन भगतां देवे दान, दाता दानी झोली सच भराइंदा। इक्को नाम करे प्रधान, दो जहानां हुक्म वरताइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे खुशी मनाण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा भेव आप खुलाइंदा। सतिजुग कहे प्रभ कर मेहर, मेहरवान तेरी सरनाईआ। दूर दुराडे नज़री आउणा नेरन नेर, सति पुरख निरँजण बण के पांधी राहीआ। पतिपरमेश्वर ना लाईं देर, तेरे दर मेरी अरजोईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। सतिजुग सच्चे तेरी इक उडीक, उतर पूरब पच्छिम दक्खण चारों दिशा ध्यान लगाईआ। साहिब सतिगुर पुरख अकाल महाबली आए आपणी तरीक, तारीख सके ना कोए बदलाईआ। दूर दुराडा वसे सदा नज़दीक, नेरन नेरा होए सहाईआ। साचा मार्ग लाए ठीक, कूड़ा ठीकर भन्न वखाईआ। राह दस्से इक बारीक, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। साची मारे नाम लीक, कलम शाही हथ्थ ना कोए उठाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आपणी करे आप तस्दीक, दूजे हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। श्री भगवान बदले आपणी पीठ, करवट लै लए अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर तेरा दए सुहाईआ। तेरा दर होए सुहञ्जणा, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। करे खेल आदि निरँजणा, नर नरायण बेपरवाहीआ। वेखे विगसे दर्द दु:ख भय भंजना, भव सागर डूंग्घी कन्दर फोल फोलाईआ। साचा मार्ग इक्को दस्सणा, दहि दिशा दए समझाईआ। हिरदे निरगुण हो के वसणा,

सरगुण सुरती शब्द करे कुड़माईआ। पंज तत काया खेड़ा ना होवे भड्डणा, त्रैगुण अग्नी बंद कराईआ। साची जोत करे प्रकाशा, प्रकाशवान इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा लेखा आप जणाईआ। धुर दा लेखा अगम्मी जाप, श्री भगवान आप जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस थापण दित्ता थाप, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सेवा लाईआ। अन्तिम लै के गया आपणे घाट, साचे मन्दिर दित्ते बिठाईआ। लोकमात आवण जावण मुकी वाट, पिछला लेखा कोई रहिण ना पाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी लिख के गए कलम दवात, धुर दी धार आप समझाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द उच्ची कूक गए आख, सच संदेसा इक सुणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल पतिपरमेश्वर परवरदिगार सब दा माई बाप, लख चुरासी भगवन्त आपणी गोद उठाईआ। सो साहिब दा करो पाठ, जिस दी सिफ्त करे सर्ब लोकाईआ। चरण कँवल कँवल चरण बंधाए इक्को नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। रल मिल सारे पट्टी पढ़ो इक जमात, साची सिख्या दए दृढ़ाईआ। जिस दा कलमा आदि जुगादी चले कायनात, पीर पैगम्बर बैठे ध्यान लगाईआ। सो साहिब सतिगुर कदे ना पाए वफ़ात, मरघट विच कदे ना जाईआ। नित नवित्त देवणहारा दात, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सब दी झोली आप भराईआ। कलयुग अन्तिम मिटे अन्धेरी रात, कूड़ी रैण अमावस रहिण ना पाईआ। चार युग दे गुर अवतार सारे गए आख, आख़र प्रगटे बेपरवाहीआ। जिस दी भाख्या कोई ना सके भाख, भेख रेख अवल्लड़ा समझ किसे ना आईआ। जिस दा लेखा जाणे इक्को गुर दस्मेस, दूजा समझ कोए ना पाईआ। सच सपूता करे हेत, साचा नेता इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग तेरा साचा बन्धन इक्को नाम रखाईआ। सच प्रभ नाम दस्स उह, जिस विच तेरी वड्याईआ। जिस मिलयां तेरे जिहा जाए हो, फ़र्क कोई रहिण ना पाईआ। जिस नाल प्रेम प्रीती कर के जाए छोह, छुरी करद खड़ग खण्डा तलवार चमकाईआ। कूड़ी क्रिया जगत विकारा देवे कोह, कातिल मकतूल रूप वटाईआ। मेहरवान हो के देवे सच्ची लो, प्रकाश इक्को इक वखाईआ। आपणा नाम रखाए सो, हं ब्रह्म लख चुरासी जीव आत्म आपणे नाल मिलाईआ। दुरमति मैल कलेवर देवे धो, पतित पुनीत दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा नाम वर, जिस दा लेखा तेरे विच समाईआ। सो पुरख कहे मेरा आदी जाप, जगजीवण दाता आप जणाईआ। नाता जुड़या पुत्त बाप, पिता पूत मेल मिलाईआ। सचखण्ड दुआरे बहि के थिर घर दिती दात, शब्दी साची वंड वंडाईआ। निरगुण हो के निरगुण बद्धा नात, नाता मिल्या बेपरवाहीआ। बेपरवाह हो के दस्स गाथ, साची सिख्या इक पढ़ाईआ। भेव

खुल्लाया बण पुरख समराथ, समरथ आपणी कार कमाईआ। मेहरवान हो के पाई नथ्थ, डोरी तन्द हथ्थ उठाईआ। बेनज़ीर हो के दस्सी गाथ, नर निरँकार करी पढ़ाईआ। शब्द सुत थिर घर दुआरे उच्ची कूक दित्ता आख, तूं मेरा मैं तेरा सोहँ रूप प्रभ तेरा नूर नूर रुशनाईआ। सतिजुग सच्चे तेरा रूप सोहँ सो, स्वामी आप जणाइंदा। हँ ब्रह्म कर निरमोह, कूड़ी मुहब्बत नाता तोड़ तुड़ाइंदा। धुर दा ढोआ देणा ढो, अन्तर आत्म अनहद नादी नाद सुणाइंदा। सुरत सवाणी शब्द हाणी मिल के खुशी जाए हो, चिन्ता ग़म रहिण कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग तेरा सच्चा इक्को नाम समझाइंदा। सतिजुग तेरा नाम सच, सोहँ रूप सच समाईआ। करे खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी धार जणाईआ। महिमा सुणाए आप अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। निरवैर हो चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। हर घट हिरदे जाए वस, काया मन्दिर अन्दर डेरा लाईआ। अमृत आत्म झिरना निझर देवे रस, कँवल कँवला दए उलटाईआ। साचा नूर कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर दए मिटाईआ। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर सद वसणहारा साथ, सगला संग निभाईआ। होए सहाई अनाथां नाथ, दीनन आपणे गले लगाईआ। फड़ उतारे आपणे घाट, पतण बैठा बेपरवाहीआ। जन्म जन्म दी मेटे वाट, पांधी नज़र कोए ना आईआ। प्रभ मिलण दी दस्से जाच, औझड़ राह कोए ना पाईआ। जो निरगुण ढोला निरगुण हो के जाए आख, सो सरगुण सोहँ रूप समाईआ। नेड़ ना आए तीनों ताप, त्रैगुण बन्धन दए कटाईआ। कलयुग क्रिया मेटे संताप, संसा रोग दए चुकाईआ। नज़री आए इक्को बाप, जिस नूं मूसा रिहा जणाईआ। जिस नूं ईसा किहा पाक, सो परवरदिगार करे रुशनाईआ। जिस तों मुहम्मद मंगी दात, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। जिस नूं गुर अवतार सारे कहिन्दे सब दा मालक पुरख अबिनाश, ख़ालक ख़लक विच समाईआ। सो साहिब जाणे आपणी रास, गोपी काहन रिहा नचाईआ। जिस दे नामां विचों कोटन नाम उपजण शाख़, सिफ्ती सिफ्त रूप वटाईआ। शब्द गुरु गुर कहे आदि जुगादी सोहँ सति सरूपी इक्को जाप, आत्म परमात्म परमात्म आत्म नाता जोड़ जुड़ाईआ। साची पूजा साचा पाठ, साचा सिमरन इक रखाईआ। साचा तीर्थ साचा घाट, साचा पतण इक समझाईआ। साचा मन्दिर मस्जिद शिवदुआला माठ, सच मसीत साचा हुजरा इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे तत आठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध खोज खोजाईआ। सतिजुग तेरा सच श्लोक, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। जिस नूं कोई ना सके रोक, दो जहान रहे जस गाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रखण ओट, नेत्र नैण उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर ढोला गौण लोक परलोक, दो जहानां राग सुणाईआ। जिस दा बंस सरबंस हँ ब्रह्म ओत पोत,

सो पुरख पुरखोतम वेख वखाईआ। ना कोई वरन ना कोई गोत, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। ना कोई दीन मज़्हब लाए चोट, डौरु डंक ना कोए वजाईआ। इक्को धार निर्मल जोत, जोती जोत जोत रुशनाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सतिगुर सच्चा इक्को बहुत, जिस हथ्थ वड्डी वड्याईआ। जिस दा मन्दिर सचखण्ड दुआरा किला कोट, अनभव प्रकाश करे रुशनाईआ। जिस नूं भगत भगवान कहिन्दे गए रहे अलोप, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग तेरा सच्चा नाम, आप प्रगटाए अगम्मी राम, राम रामा झोली पाईआ। सतिजुग कहे मैनूं मिल्या मीत, प्रभ तेरे शब्द वज्जे वधाईआ। मैं घर घर सुणावां सच्चा गीत, दर दर फेरा पाईआ। चार वरन अठारां बरन प्रभ दी वेखो सच्ची रीत, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म देवे इक प्रीत, प्रीतीवान वेख वखाईआ। एका रंग रंगे हस्त कीट, ऊँच नीच नज़र कोए ना आईआ। जिस मिलयां माणस जन्म लवो जीत, लख चुरासी बन्धन दए कटाईआ। सो साहिब कोलों मंगो भीख, जो आदि जुगादि जुगा जुगन्तर देवणहार इक वड्याईआ। जिस दा निशाना सारे दस्स के गए ठीक, उस दी मंज़ल चढ़ के वेखो चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, इक्को नाम दए वड्याईआ। इक्को नाम शब्द ज्ञान, एकँकारा आप जणाइंदा। इक महल अटल मकान, इक इकल्ला सोभा पाइंदा। एका नूरी जोत महान, आदि निरँजण नूर रुशनाइंदा। एका हुक्म धुर फ़रमान, अबिनाशी करता आप सुणाइंदा । एका दो जहानां वेखे मार ध्यान, श्री भगवान पड़दा लाहइंदा। एका देवणहारा ब्रह्म ज्ञान, पारब्रह्म ब्रह्म आप पढ़ाइंदा। एका जुग चौकड़ी करनहारा कल्याण, जुग जुग आपणा खेल कराइंदा। एका कलयुग मेटे कूड़ निशान, जूठ झूठ जड़ उखड़ाइंदा। एका सतिजुग सच करे प्रधान, नाम प्रधानगी हथ्थ फड़ाइंदा। इक्को सर्ब जीआं दा सांझा भगवान, दूजी वंड ना कोए वंडाइंदा। इक्को नज़रीं आए काहन, साची बंसुरी नाम सुणाइंदा। इक्को प्रगटे रमईया राम, सतिजुग सच्चा राह वखाइंदा। इक्को कलमा दे कलाम, इक्को आपणा हुक्म वरताइंदा। इक्को बोले सतिनाम, नानक निरगुण सरगुण खेल कराइंदा। इक्को फ़तहि डंका बोल जैकार, जैकार दो जहान सुणाइंदा। इक्को मंगे मंग वारो वार, जुग जुग आपणी झोली डाहइंदा। इक्को दाता देवणहार, नित नवित्त आपणी वस्त वरताइंदा। इक्को वेखे विगसे वेखणहार, रूप रंग रेख नज़र किसे ना आइंदा । इक्को जुग चौकड़ी लै अवतार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मात हंढाइंदा। एका उच्ची कूक करे पुकार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान रसना जिह्वा तीस बतीसा राग सुणाइंदा। एका एक कल कल्की लै अवतार, अक्ल कलधारी आपणी खेल कराइंदा। एका डंका वजाए विच संसार, नाम डंका हथ्थ उठाइंदा। एका खण्डा

चमके विच ब्रह्मण्डां शब्द सार, सार शब्द भेव कोए ना पाइंदा। पारब्रह्म प्रभ कलयुग अन्तिम सब कुछ आपणे लै इखतैयार, दूजा राज राजान शाह सुल्तान नज़र कोए ना आइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सचखण्ड दुआरे देण ब्यान, कलमबंद सर्ब ब्यान कराइंदा। पारब्रह्म प्रभ साडा खैहड़ा छुटया जीव जहान, लख चुरासी नाता नज़र कोए ना आइंदा। अन्तिम तेरा दस्स के आए निशान, सो निशाना तेरे हथ्थ सोभा पाइंदा। जिउँ भावे तिउँ कर कल्याण, करते तेरी कीमत हट्ट ना कोए विकाइंदा। हउँ बाले नढ्ढे तेरे अञ्याण, तूं पिता पूत सब दी लाज रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग मार्ग इक लगाइंदा। सतिजुग मार्ग दए ला। रहमत कर आप खुदा। भेव अभेदा दए खुल्हा। चार वरन सुल्हा दए करा। अठारां बरन पन्ध दए मुका। आत्म परमात्म ढोला दए सुणा। शब्द विचोला सतिगुर इक्को दए बणा। निरवैर पुरख पड़दा उहला दए उठा। सच घर साचे मन्दिर प्रेम प्यार दा होला इक्को रंगण दए रंगा। काया चोला बदले चोला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा ढोला इक्को दए समझा। साचा ढोला गाउणा गोबिन्द, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। सर्ब जीआं दी मेटे चिन्द, चिन्ता चिखा ना कोए सताईआ। पुरख अकाल दी सारे बिंद, लख चुरासी जीव जंत दरसाईआ। ओस साहिब दी रसना जिह्वा कोई ना करे निन्द, निन्दया साहिब सतिगुर कदे ना भाईआ। प्रभ ठाकर दीन दयाल सदा बख्शिंद, बख्शिश इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलयुग सतिजुग सतिजुग कलयुग दोहां लहिणा देणा देवे थाउँ थाईंआ।

✪ १३ अस्सू २०२० बिक्रमी अजैब सिँघ राज सिँघ दे गृह फ़रीदकोट ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सतिजुग साचे रखणा चित्त, सो साहिब आप जणाईआ। भगत भगवान सच्चा मित्त, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। ग़रीब निमाणे वेखे नित्त, नवित्त आपणा फेरा पाईआ। आत्म प्रीती करे हित्त, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। धुर दा लेखा देवे लिख, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। साची वस्त पाए भिख, भिच्छया आपणा नाम वरताईआ। घर मन्दिर आवे दिस, गँहि नूर जोत रुशनाईआ। सुरती शब्द लाए खिच, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। खेल खलाए घर घर विच, वज्जे इक्को नाम वधाईआ। शब्द पढ़ाए अक्खर निश, निष्अक्खर रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार तोहे वड्याईआ। भगत भगवान सच्चा संग, सतिजुग साचे सच जणाईआ। दीन दयाल लाए अंग, अंगीकार इक अख्वाईआ । आत्म देवे

सच अनन्द, सीतल धार अमृत मेघ बरसाईआ। कूड़ी क्रिया करे खण्ड, खण्डा खड़ग नाम चमकाईआ। गीत सुणाए अगम्मी छन्द, धुन आत्मक राग अलाईआ। खुशी कराए बंद बंद, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। काया चोली देवे रंग, साची रंगण इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या दए दृढ़ाईआ। भगत भगवान सगला साथ, आदि जुगादी आप निभाइंदा। निरगुण सरगुण चलाए राथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म देवे आपणी गाथ, मन्त्र ढोला इक्को राग सुणाइंदा। चरण कँवल उपर धवल सच प्रीती बन्ने नात, नाता आपणे नाल जुड़ाइंदा। कूड़ी क्रिया रैण अन्धेरी मेटे रात, निरगुण जोती चन्द इक चमकाइंदा। उत्तम करे हरिजन ज़ात, दीन मज़्ब वंड ना कोए वंडाइंदा। सज्जण सुहेला बणे साक, सगला संगी आप अख्वाइंदा। बंद कवाड़ी खोल्ह ताक, घर एका दरस कराइंदा। करे प्यार जिउँ पिता पूत बाप, जन जननी गोद सुहाइंदा। सच सुनेहड़ा जाए आख, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आइंदा। पतण लाए आपणे घाट, किनारा इक्को इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दया कमाइंदा। सतिजुग सुण खोल्ह अक्ख, सतिगुर सच्चा सच जणाईआ। निरगुण सरगुण दरस दिखाए हो प्रतख, पारब्रह्म प्रभ आपणा वेस वटाईआ। सन्त सुहेले लख चुरासी विचों लए रख, रक्षया करे थाउँ थाईंआ। मेहरवान पुरख समरथ, मेहर नज़र इक उठाईआ। लेखा जाणे तत अट्ठ, नौ दुआर खोज खोजाईआ। दस्म दुआरी आपे वस, आप आपणा भेव चुकाईआ। निर्मल जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। साची सेजा भोग बलास, रस इक्को इक वखाईआ। जन्म जन्म दी मेटे आप प्यास, तृष्ना भुक्ख रहिण ना पाईआ। लेखा लाए पवण स्वास, जो जन रसना जिह्वा गाईआ। माणस जन्म पूरी करे आस, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। साचे मण्डल वखाए रास, सुरती शब्दी गोपी काहन नचाईआ। अन्दर वड़ के साचे मन्दिर चढ़ के आपे लए झाक, ताकी खिड़की कुण्डा आपे लाहीआ। मन मनुआ ना रहे आक, मति बुध चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां सिफ्त सालाहीआ। नेतन नेता एकँकार, इक इकल्ला दया कमाइंदा। जुग चौकड़ी वेखणहार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढाइंदा। देवणहारा शब्द भण्डार, नाम ख़ज़ाना आप वरताइंदा। बख्शणहारा चरण आधार, चरण चरणोधक मुख चुआइंदा। देवणहारा जोत उज्यार, साचा नूर चन्द चमकाइंदा। वेखणहारा सच दरबार, महल अटल सोभा पाइंदा। रखणहारा दो जहान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा हुक्म वरताइंदा। झुलावणहारा सच निशान, धर्म निशाना इक झुलाइंदा। गावणहारा सच्चा नाम, सच सच जणाइंदा। करनेहारा आपणा काम, करता पुरख नाम धराइंदा।

सुणावणहारा सच पैग़ाम, साचा कलमा आप पढ़ाइंदा। वसावणहारा हक़ मुकाम, परवरदिगार डेरा लाइंदा। बणावणहारा सच नज़ाम, कूड़ी क्रिया मेट मिटाइंदा। मारनहारा अणयाला बाण, तिक्खी मुखी धार वखाइंदा। खेलणहार श्री भगवान, ख़ालक ख़लक वेख वखाइंदा। आवण जावण रखे दो जहान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। भगत भगवान प्रेम अतुट्ट, तरुटी नज़र कोए ना आईआ। लग्गी प्रीत ना जाए छुट, डोरी तन्द ना कोए कटाईआ। बण विचोला कोई ना पाए फुट्ट, दूई द्वैत नेड़ ना आईआ। जगत विहार ना जाए रुस, भगत प्यार मिले वड्याईआ। अन्दर वड़ के लए पुच्छ, सोई सुरती आप उठाईआ। उजल वखाए आपणा मुख, जोती नूर नूर रुशनाईआ। जन्म कर्म दा मेट दुःख, सुख आत्म घर पुचाईआ। मात गर्भ ना उलटा रुख, दस दस मास ना अग्न तपाईआ। साची गोदी लए चुक्क, हुलारा दो जहान वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सद वड्याईआ। देवणहारा वड्याई साहिब सतिगुर अजीब, अचरज लीला आप रचाइंदा। दूर दुराडा वसे सदा क़रीब, नेरन नेरा नज़री आइंदा। साची वस्त अमोलक पावे भीख, भिच्छया इक्को इक वरताइंदा। बदलणहारा कूड़ी नीत, साचा मार्ग इक लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लहिणा देणा धुर दा झोली पाइंदा। सतिजुग कहे मेरे महिबूब, वाहवा वड तेरी वड्याईआ। किस बिध आए मोहे सबूत, तूं भगतां मीता सहिज सुखदाईआ। अबिनाशी करते उठ वेख पंज तत कलबूत, कलयुग अन्तिम दयां वखाईआ। सतिजुग कहे मैनूं नज़र ना आए कोई अरूज, अर्श कुर्श बैठा डेरा ढाहीआ। पुरख अकाल कहे मैं रख्या आप महिफ़ूज़, हिफ़ाज़त करां थाउँ थाईंआ। सतिजुग कहे मैनूं घर घर दिसे दूज, एका रंग ना कोए रंगाईआ। श्री भगवान कहे मैं पिछला लेखा सब दा कीता मौकूफ़, अग्गे आपणा हुक्म वरताईआ। शब्द सूरा भेज दूत, धुर दा हुक्म इक सुणाईआ। सो भगत मेरे जो इक्को करन मेरी पूज, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। तिन्हां अन्तर आत्म दिती सूझ, मन वासना रहिण कोए ना पाईआ। भेव खुलाया बिन पढ़यां गूझ, गुरदेव स्वामी हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या रिहा दृढ़ाईआ। सतिजुग कहे प्रभ दरस उह धाम, जिस घर वज्जे वधाईआ। जिस मन्दिर इक्को नज़री आए राम, दूजा रूप ना कोए धराईआ। जिस गृह इक्को वसे शाम, बंसुरी आपणा नाम सुणाईआ। जिस दर इक्को पैगम्बर दए पैग़ाम, कलमा हक़ हकीकत करे पढ़ाईआ। जिस दुआरे इक्को मन्त्र सतिनाम, सति सतिवादी दए समझाईआ। जिस महल अटल उच्च मनारे इक्को फ़तहि डंक जैकार, जै जैकार रिहा जणाईआ। जिस गृह वसे आप निरँकार, निरगुण आपणा आसण लाईआ। सो पुरख अबिनाशी मैनूं मन्दिर

दे वखाल, मैं वेखां चाईं चाईंआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सारे करदे गए स्वाल, दोए जोड़ जोड़ वास्ता पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या रिहा समझाईआ। उठ सतिजुग वेख सच्ची धर्मसाल, श्री भगवान धर्म दुआरा इक जणाइंदा। जिस गृह सिमरन इक्को नाम, नाउँ निरँकारा आप वखाइंदा। सो दर होए परवान, सो घर सोभा पाइंदा। सो मन्दिर सच निशान, सो शिवदुआला रंग रंगाइंदा। सो गुरुदुआर करे प्रणाम, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। जिस अन्दर वसे श्री भगवान, सो तन मन्दिर वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा भेव आप चुकाइंदा। सतिजुग वेख भगवान भगत, श्री भगवन रिहा जणाईआ। जिस दी चाल निराली सदा जगत, जुग चौकड़ी समझ कोए ना पाईआ। कोई ना जाणे वेला वक्त, थित वार सके ना कोए समझाईआ। भगतां विच सब नालों इक्को फ़र्क, साचे भगत पुरख अकाल इक्को ओट रखाईआ। सृष्ट सबाई बाकी पिच्छे लग्गी लिख्त पढ़त, कागज़ कलम शाही वेख वेख खुशी मनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मुड़ के कोई ना आवे परत, प्रतिनिध इक्को इक अख्वाईआ। जिस नूं भेजे आप उते धरत, सो धरन धरत धवल सेवा जाए कमाईआ। अन्तिम सारे ला के जावण शर्त, पुरख अकाल दीन दयाल साहिब सुल्तान मन्नो सृष्ट सबाईआ। जिस दर ना कोई सोग रोग हरख, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर निहचल धाम बैठा रहे बेधड़क, ख़तरा ख़ौफ़ सर्ब जणाईआ। सो साहिब सतिगुर कलयुग अन्तिम आवे परत, निरगुण निरगुण फेरा पाईआ। निरवैर पुरख निराकार आदि निरँजण जोत सरूप देवे दरस, पंज तत वंड ना कोए वंडाईआ। अमृत मेघ अन्तर आत्म देवे बरस, अग्नी तत दए बुझाईआ। सो वेखणहारा साचे भगत, भगतां अन्दर आपणा डेरा लाईआ। लेखा जाणे बूँद रक्त, रती रत सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा पड़दा आप उठाईआ। सतिजुग कहे प्रभ की भगतां रीत, मोहे साची दे समझाईआ। कवण ढोला गावण गीत, जुग जुग मन्त्र नाम ध्याईआ। कवण बिध रखण उडीक, नित नेत्र नैण उठाईआ। कवण वेला आइें नज़दीक, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। कवण दुआर करें प्रीत, सच प्रीती तोड़ निभाईआ। कवण भण्डारा पाएं भीख, भिच्छया इक वरताईआ। कवण जैकारा सुणाएं साची सिख्या सीख, कूक कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। सतिजुग सुण धुर दी बात, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। जुग चौकड़ी जन भगतां पुच्छां वात, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। नाम अगम्मी देवां दात, वस्त अमोलक झोली पाईआ। अन्दर वड़ सुणावां गाथ, सोहँ ढोला राग अलाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां जुड़या सच्चा नात, नाता

सके ना कोए तुड़ाईआ। आत्म परमात्म मिल के बणे सच्ची जमात, पट्टी इक्को अक्खर दए पढ़ाईआ। नज़री आए साख्यात, शाह पातशाह सच सरूप रूप वटाईआ। नाम प्याला देवे आबेहयात, हयाती हयाती विचों बदलाईआ। पिछली ख़ता करे मुआफ़, ख़ताब आपणा दए जणाईआ। बिन रसना जिह्वा बत्ती दन्द दए स्वाद, अनरस रस आपणा रस वखाईआ। लख चुरासी विचों काढ, निरगुण आपणा मेल मिलाईआ। सति सतिवादी मार आवाज़, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। जन्म कर्म दा मेट पाप, दुरमति मैल धवाईआ। साचा मन्त्र दस्से जाप, सोहँ सो सच पढ़ाईआ। सतिजुग साचा थापण जाए थाप, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। दूर दुराडा चल के जन भगतां मिले आप, भगत जन लभ्भण किसे दुआर ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। तेरी आसा करे पूर, श्री भगवान सच समझाइंदा। भगतां दिसे सदा हज़ूर, हरि जू आपणा रूप वखाइंदा। पन्ध ना रखे नेड़ा दूर, दूर दुराडा नेरन नेरा आपणा घर वखाइंदा। जन्म कर्म दा कट कसूर, साची सूरत सच दृढ़ाइंदा। नाम भण्डारा दे भरपूर, नव सत्त अन्त वखाइंदा। चतुर सुघड़ बणा मूर्ख मूढ़, साचे धंदे नाम लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। हरिजन भगत खेल अगम्म, बेपरवाह दए जणाईआ। अन्तर आत्म बिन दमां दम, नित बैठा ध्यान लगाईआ। प्यार कोई ना माटी चम्म, जगत श्रृंगार ना कोए वड्याईआ। निज नेत्र रोवे छम्म छम्म, दोए लोचण समझ सके ना राईआ। हरख़ सोग ना तृष्ना ग़म, चिन्ता दुःख ना कोए वखाईआ। इक ध्यान श्री भगवन, दूजी सरन ना कोए तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो भगत दए वड्याईआ। सो प्रभू उह भगत केहड़ा, जिस देवें माण वड्याईआ। श्री भगवान कहे वेख वसदा खेड़ा, सतिजुग आपणा नैण उठाईआ। जिन्हां घर प्रभ दा डेरा, सो घर साचे वज्जे वधाईआ। सृष्ट सबाई विचों कर नखेड़ा, खेड़ा इक्को दित्ता वखाईआ। जो रसना जिह्वा अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर कहे तूं मेरा मैं तेरा, सोहँ ढोला रहे गाईआ। तिन्हां एथे ओथे दो जहान खुल्ल्हा रहे वेहड़ा, चारे युग बैठे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा लेखा दए समझाईआ। सतिजुग कहे वाहवा वड्डे भगवान, वड्डी तेरी वड्याईआ। ग़रीब निमाणयां देवें दान, कोझे कमले गले लगाईआ। जग रुलयां देवें माण, मेहर नज़र उठाईआ। जुग जन्म दे विछड़े मेलें आण, मिलणी आपणे नाल कराईआ। इक्को दे के सोहँ दान, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। ना कोई संधया पूजा ना अमृत अशनान, अमृत आत्म सर सरोवर इक्को वार नुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। सतिजुग, जो जन मेरा नाउँ ध्याउँदे, प्रभ इक्को

६३८
१५

ओट तकाईआ। सो भगत भगवान रल मिल खुशी मनाउँदे, घर साचे वज्जे वधाईआ। साचा मन्दिर इक सुहाउँदे, जिस घर दूजा लँघ कोए ना पाईआ। निरगुण हो के निरगुण दर्शन पाउँदे, सरगुण खैहड़ा दित्ता तजाईआ। गोपी काहन बण के ढोला गाउँदे, सोहँ राग अल्हाईआ। लोक लज्जया तों ना कदे शरमाउँदे, जिन्हां प्रभ मिल्या बेपरवाहीआ। गली कूचे आप जणाउँदे, रसना जिह्वा करन हाल दुहाईआ। जिस पिच्छे जीव जंत साध सन्त घर बार तजाउँदे, जंगल जूह पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत डूंघी गार समुंद सागर खाई बैठे ध्यान लगाईआ। सो भगत सच्चा भगवान घर आपणे अन्दर पाउँदे, गृह वज्जे इक वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा भरम दए मिटाईआ। साचा भरम ना रिहा भुलेखा, सति सतिजुग आख सुणाया। तेरे हथ्थ प्रभ सब दा लेखा, जिउँ भावें लएं चलाया। कर किरपा जिस नाल करें हेता, तिस आपणी बूझ बुझाया। तूं स्वामी साहिब सतिगुर सच्चा नेता, दो जहान तेरा हुक्म सीस टिकाया। मेहरवान हो के दस्सें आपणा भेता, अन्दर वड़ के आपणा हाल जणाया। निरगुण हो के खेलें खेडां, सरगुण आपणे धंदे लाया। तुध बिन दूजा कोई ना वेखा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा दित्ता इक वर, मेरी झोली अन्त भराया। सतिजुग कहे मेरी बदली दलील, दुरमति विच रही ना राईआ। जिन्हां साहिब सतिगुर पुरख अकाल मिले छैल छबील, शहिनशाह आपणा घर वखाईआ। तिन्हां शास्त्र सिमरत वेद पुराण कोई ग्रंथ बणाउणा ना पए वकील, शहादत गवाह नज़र कोए ना आईआ। सो गुरमुख जगत समाज तोड़ फ़सील, फ़ैसला पन्ध आपणा लैण मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन वेखे थाउँ थाईंआ। भगत कहे प्रभ मेरे भगवान, तेरा तेरी ओट तकाईआ। दर्शन देणा दर घर आण, दर दरवेश अलख जगाईआ। हउँ बालक बाली बुध मंगां मंग अञ्याण, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। समरथ स्वामी किरपा कर महान, मेहर नज़र नैण उठाईआ। लोकमात देणा माण, अभिमाण रहिण कोए ना पाईआ। अग्गे बख्शें चरण ध्यान, सच मिले सरन सरनाईआ। कूड़ी क्रिया दिसे ना कोए निशान, सच दुआरा तेरा इक्को नज़री आईआ। मैं दर्शन करां आण, तूं आपणा दीदार देणा वखाईआ। संसा कोई ना रहे जहान, शक शकूक नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा देणा मोहे हकूक, मेरी वस्त मेरी झोली पाईआ। भगवान कहे भगत सुत, प्रभ देवणहार वड्याईआ। जुग चौकड़ी वेखे रुत्त, रुत सुहञ्जणी सोभा पाईआ। अगम्मी धारों आपे उठ, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। सच प्यारों पए तुठ, प्रेम प्रीती आप लगाईआ। उजल कर मात मुख, मुख मुखड़ा सिफ्त सालाहीआ। जन्म कर्म दा मेट दुःख, दुखियां दर्द वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा नाम झोली पाईआ। सतिजुग भगत सन्त भगवान, रल मिल खुशी मनाईआ। त्रैगुण माया रोवे बण नादान, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। त्रैलोक होए हैरान, हरि जू की खेल वरताईआ। त्रिकुटी सके ना कोए पहचान, साध सन्त बैठे नैण उठाईआ। त्रै धातू कुफ़ल कोई ना खोल्हे आण, विष्न ब्रह्मा शिव तिन्ने वेखण दूर दुराडे चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। भगत भगवान सतिजुग मिल के हस्सण, घर साचे वज्जे वधाईआ। इक्को घर इकट्ठे वसण, दूजा शरीक ना कोए बणाईआ। प्रेम प्रीती दे गीत दस्सण, खुशीआं नाल खुशी खुशी मनाईआ। चारों कुण्ट उठ उठ नट्ठण, भज्जण वाहो दाहीआ। भगत कहे प्रभ मिल्या पुरख समरथन, सच स्वामी बेपरवाहीआ। सतिजुग कहे मैनूं साची सिख्या आया दस्सण, इक्को करे सच पढ़ाईआ। भगवान कहे मैं भगतां आया रखण, बण रखवाला सेव कमाईआ। तिन्ने इक दूजे तों नीवें हो के नच्चण, उच्चा सीस ना कोए रखाईआ। सतिजुग कहे प्रभ कलयुग पैंडा आया मुक्कण, भगत कहे हां हां श्री भगवान रिहा मुकाईआ। भगवान कहे मैं गुरमुखां गोदी आया चुक्कण, निरवैर हो के वेस वटाईआ। सतिजुग कहे श्री भगवान कूड़ी क्रिया आया लुट्टण, चोरी चोरी लोकमात फिरे वाहो दाहीआ। भगत कहे भगवान ग़रीब निमाणयां आया पुच्छण, दुखियां दर्द दर्द वंडाईआ। श्री भगवान कहे मैं उजल करन आया मुखन, जो जन इक्को मेरा नाम ध्याईआ। दर आ के फेर कदे ना रुस्सण, जिन्हां रुस्सयां लवां मनाईआ। शेर हो के गुरमुख बुक्कण, शेर शेर भबक जणाईआ। आपणे निशान्यौं कदे ना उकण, जिन्हां हथ्थ सोहँ चिला तीर कमान उठाईआ। जोड़ी जोड़ जुड़ कदे ना टुट्टण, सुरती शब्दी गंढु पवाईआ। प्रेम प्रीती प्यार अन्दर बल धार उठण, निरबल नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल इक्को झुकण, दूजा सीस ना किसे निवाईआ। सतिजुग सच्चे तेरा सारे करन शुकर, दुखीए जीव खुशी मनाईआ। जन भगतां कोलों उह मार्ग पुच्छण, किस बिध मिले सच्चा गोसाईंआ। भगत कहिण सच दुआरे पई लुट्टण, उठो लुट्टो रल मिल मेरे भाईआ। पारब्रह्म दा भण्डार कदे ना आया उते मुक्कण, कोटन कोटि जुग चौकड़ी गुर अवतार पीर पैगम्बर भर झोलीआं लोकमात गए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, करे खेल अबिनाशी अचुतन, चेतन आपणी धार रखाईआ।

✪ १३ अस्सू २०२० बिक्रमी बूड़ सिंघ दे गृह नाथेवाल ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सो पुरख निरँजण शाह सुल्ताना, शाह पातशाह वड्डी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण मर्द मर्दाना, सूरबीर बेपरवाहीआ।

६४१

१५

एकँकारा नौजवाना, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। आदि निरँजण नूर महाना, जोती जोत जोत रुशनाईआ। अबिनाशी करता साचा खेल करे महल अटल उच्च मकाना, महल्ल इक्को इक रुशनाईआ। श्री भगवान झुलाए धुर निशाना, बेपहचान नज़र किसे ना आईआ। पारब्रह्म प्रभ खेल वखाना, खेले खेल अगम्म अथाहीआ। साचा मन्दिर कर प्रधाना, सचखण्ड देवे माण वड्याईआ। भूपत भूप राज राजाना, निरगुण निरवैर निरँकार आसण लाईआ। शब्द अगम्म इक तराना, बिन सुर ताल वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। सचखण्ड निवासी बेपरवाह, इक इकल्ला खेल खलाइंदा। भगत भगवान नौजवान, मर्द मर्दान हुक्म मनाइंदा। नूर खुदाई मेहरवान, मेहर नज़र बेनज़ीर इक उठाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, निरगुण सरगुण आपणी कार कमाइंदा। अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह, पर्दानशीं मुख नक़ाब ना कोए जणाइंदा। धुर दा लेखा दए समझा, निराकार निरवैर आपणा हुक्म वरताइंदा। सति दुआरा बंक खुल्हा, नाम हुलारा इक लगाइंदा। थिर घर पड़दा दए उठा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, दरगाह साची सोभा पाइंदा। दरगाह साची सोभनीक, निरवैर पुरख वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादी लाशरीक, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। दो जहानां पावे सार ठीक, दरगाह साची दए वड्याईआ। मुकामे हक़ बैठा रहे अतीत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दुआरा इक सुहाईआ। सच दुआर सो पुरख निरँजण, सति सतिवादी आप सुहाइंदा। दाता दानी दर्द दुःख भय भंजन, बेअन्त बेपरवाह निरगुण आपणा आसण लाइंदा। जुग चौकड़ी बणनहारा साचा सज्जण, दो जहानां वाली सगला संग आप बणाइंदा। सदा सदा नित नवित्त नेत्र नैण पावणहारा अंजन, नाम निरँकारा इक्को इक समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर संदेसा नर नरेशा एकँकारा हरि करतारा करता पुरख दीन दयाल दो जहानां आप सुणाइंदा। दो जहान खोल्हो अक्ख, सो साहिब आप जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव वेखो प्रतख, पारब्रह्म प्रभ आपणी खेल समझाईआ। गुर अवतार दूर दराडे आओ नट्ठ, हरि सद्दा नाम सुणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी खोल्हो गठड़ी गट्ठ, पड़दा उहला रिहा उठाईआ। दूर दुराडे नेरन नेरे सर सरोवर वेखणहारा तीर्थ अठसठ, जल थल महीअल आपणा हुक्म वरताईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चारे खाणी अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज चारे बाणी परा पसन्ती मद्धम बैखरी रसना लैणा रट, रट्टा वेखे बेपरवाहीआ। सति स्वामी अन्तरजामी हर घट वासी पुरख अबिनाशी प्रगट होया नट, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ अकाश प्रकाश इक्को जोत नूर करे रुशनाईआ। भगत भगवान सन्त सुजान गुरमुख सज्जण

पूरी करे आस, निरासा रूप रहिण कोए ना पाईआ। गुरसिख गुरसिख देवणहार सच भरवास, शब्द अनाद रिहा सुणाईआ। खेले खेल पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खोजाईआ। गोपी काहन पावणहारा रास, साचा नाच दो जहान वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दो जहानां रिहा समझाईआ। दो जहान जाणा जाग, निरगुण सरगुण भेव चुकाइंदा। आदि जुगादि ब्रह्म ब्रह्माद शब्द अनाद पकड़नहार आपणे हथ्थ वाग, दूजा संग ना कोए बणाइंदा। लख चुरासी घट घट मन्दिर जगावणहारा दीप चिराग़, जोती जाता पुरख बिधाता जोती जलवा नूर जगाइंदा। मेटणहार अन्धेरी राता, देवणहार अगम्मी दाता, नाम अमोलक काया गोलक हर घट अन्दर आप टिकाइंदा। खेले खेल पुरख अबिनाशा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप जणाइंदा। साची करनी श्री भगवान, हरि करता आप जणाईआ। दो जहान देवे ज्ञान, ब्रह्मण्ड खण्ड करे पढ़ाईआ। चार युग बणन नादान, चारों कुण्ट नैण खुल्लाईआ। चारे खाणी करे परवान, चारे बाणी बूझ बुझाईआ। चारे यारी करे कल्याण, चौथा पद इक वखाईआ। जिस घर वसे मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। जिस दे गीत गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे गाण, सरगुण निरगुण अग्गे सीस झुकाईआ। सो साहिब सच्चा सुल्तान, दो जहानां वाली इक्को हुक्म वरताईआ। कलयुग मेटे अन्त कूड़ा निशान, नौ खण्ड पृथ्मी सत दीप कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। माया ममता गढ़ हँकारी तोड़े आण, शब्द खण्डा तेज़ प्रचण्डा चण्डका रूप आप वखाईआ। योद्धा सूर बली बलवान, बलधारी इक्को फेरा पाईआ। चारों कुण्ट वेखे मार ध्यान, नेत्र नैण अक्ख खुल्लाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव नेत्र रोवण उच्ची कूक कूक कुरलाण, दोए जोड़ देण दुहाईआ। करोड़ तेतीसा होए हैरान, सुरप्त इन्द सार ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सजदा निउँ निउँ सीस झुकाण, वाहवा प्रभ तेरी वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी असीं मंगदे आए दान, दर तेरे अलख जगाईआ। धुर दा लेखा लिखदे आए महान, शहादत तेरा नाम रखाईआ। सर्ब जीआं दा इक भगवान, दूजा नज़र कोए ना आईआ। कलयुग अन्तिम प्रगटे वाली दो जहान, महाबली निरवैर पुरख आपणा फेरा पाईआ। असीं तेरा दस्स के आए निक्का निक्का निशान, तेरी महिमा अकथ दस सके ना कोए राईआ। बेऐब खुदाई नूर महान, जलवागर जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। दर तेरे इक्को मंग, दो जहान ख़ाली झोली रहे वखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड होया नंग, लोकमात लख चुरासी हरि का नाउँ गई भुलाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आत्म परमात्म सब नूं दस्स के आए अनन्द, सच्चा रस इक चखाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा कूड़ी क्रिया होया भेख पखण्ड, भाण्डा भरम भउ ना कोए

भंनाईआ । पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरा गाए ना कोई छन्द, गीत गोबिन्द ना कोए अलाईआ। सुरत सवाणी बिन शब्द हाणी होई रंड, हरि कन्त नज़र किसे ना आईआ। रसना जिह्वा बाहरों गाउँदे दन्द, अन्दर वड़ के सतिगुर पूरे दरस कोए ना पाईआ। निरगुण जोत किसे घर ना दिसे चन्द, जगत अन्धेरा इक्को छाईआ। किरपा कर सूरे सरबँग, शाह पातशाह तेरी सरनाईआ। कलयुग अन्त लख चुरासी जीव जंत साध सन्त भागां मंद, मंद वासना सर्ब लोकाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म ब्रह्म पारब्रह्म कोई ना दूई द्वैती ढाहे कंध, साचा रंग ना कोए रंगाईआ। अमृत आत्म सच सरोवर कोई ना नहाए साची गंग, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती भज्जे फिरन वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दो जहान दोए जोड़ वास्ता पाईआ। दो जहान मंगण दर दरवेश, प्रभ साचे घर तेरे अलख जगाईआ। निरवैर पुरख अन्तिम लैणा वेख, बेपरवाह फेरा पाईआ। सच धर्म दी मिटी रेख, धीरज जत सति सन्तोख नज़र कोई ना आईआ। तेरी उडीक लाशरीक कर के गया गुर दस्मेश, दहि दिशा गया जणाईआ। मेरा पिता पुरख अकाल आदि जुगादि रहे हमेश, ना मरे ना जाईआ। जिस दी सेवा कोटन कोटि ब्रह्मा विष्न महेष, गणपति गणेश बैठे सीस झुकाईआ। सो साहिब स्वामी वसे सचखण्ड साचे देस, सच सिँघासण सोभा पाईआ। शाह पातशाह प्रभ इक्को नर नरेश, दो जहान आपणा हुक्म वरताईआ। जिस दर गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे करन आदेस, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। सो जुग चौकड़ी देवणहारा नाम संदेस, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। मुच्छ दाढ़ी ना कोई केस, ना कोई मूंड मुंडाईआ। रूप रंग ना कोई रेख, वरन बरन ज़ात पात दीन मज़्ब वंड ना कोए वंडाईआ। सदा सदा सद वसे नेतन नेत, दूरन दूर आपणा घर जणाईआ। जो जन करे साचा हेत, तिस अन्तर आत्म आपणा मेल मिलाईआ। सो साहिब सुल्तान वाली दो जहान खेले खेड, ख़ालक ख़लक दए समझाईआ। बिन भगत आपणा किसे ना देवे भेत, भरमे भुले सर्ब लोकाईआ। घट स्वामी निरगुण निरवैर हो के लए वेख, वेखणहारा बेपरवाहीआ। दो जहान तेरा जाणे धुर दा लेख, लेखा लेखे दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक्को इक जणाईआ । दो जहान सुण लै मीत, सो साहिब आप जणाईआ। सो पुरख निरँजण बदले तेरी रीत, रीतीवान इक अख्वाईआ। चौदां लोक जिस दी करन उडीक, नेत्र नैण नैण उठाईआ। चौदां तबक भिख्या मंगण भीख, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर चिट्टे उते पा के गए लीक, लकीर सके ना कोए मिटाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त मेहरवान बेपरवाह दूर दुराडा आए नज़दीक, लोकमात वेस वटाईआ। खेले खेल लाशरीक, शिरकत सब दी दए गंवाईआ। आपणे हत्थ रखे इक तौफ़ीक, तोहफ़ा घर

घर दए पुचाईआ। सदी चौदवीं जाए बीत, बीती कहाणी समझ कोए ना पाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां ख़ाली करे खीस, दर दर भिच्छया दए मंगाईआ। मुरीद मुर्शद मिट्ठे करे कौड़े रीठ, आबेहयात मुख चुआईआ। जो कल्मयों होए पलीत, तिन्हां पाक रसूल असल असूल दए समझाईआ। परवरदिगार बेपरवाह करे खेल आप अनडीठ, श्री भगवान अनडिठड़ी कार कमाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर धुर दा ढोला सुणाए गीत, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोई ना आईआ। झगड़ा चुक्के मन्दिर मसीत, शिवदुआला मट्ठ गुरुदुआरा इक्को नज़री आईआ। सब दी बदल देवे प्रभ नीत, मन वासना दए गंवाईआ। लेखा जाणे हस्त कीट, ऊँच नीच पड़दा लाहीआ। सृष्ट सबाई आपे जीत, हार सब दी झोली पाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे अन्धेरा तारीक, साचा नूर करे रुशनाईआ। नाम निधान श्री भगवान इक्को इक करे बख़्शीश, बख़्शश सब दी झोली पाईआ। जे को परीख्या करे परीख, पारब्रह्म प्रभ परीक्षा विच कदे ना आईआ । साची सिख्या देवे सीख, विद्या अक्खर इक पढ़ाईआ। चौदां विद्या मारे चीक, नेत्र रोवे दए दुहाईआ। पारब्रह्म प्रभ तुध बिन झूठी सर्ब प्रीत, अन्त संग कोए ना जाईआ। मैं बण निमाणी दर ते कोझी कमली मंगां भीख, दरवेश आपणा रूप वटाईआ। चरण कँवल उपर धवल दर तेरे झुके सीस, जगदीश तेरी इक सरनाईआ। साचा कलमा दे हदीस, कायनात सच पढ़ाईआ। तूं नज़री आएं इक अतीत, त्रैगुण डेरा बैठा ढाहीआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर दो जहानां बणें मीत, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। हउँ बाली बुध बाल अञ्याणी नीचन नीच, ऊँचो ऊँच तेरी वड्याईआ। मैं दर खलोती तेरी दहलीज़, बिन किरपा अग्गे लँघण ना पाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक समझाईआ। दो जहान रखणा याद, सतिगुर सच्चा आप जणाईआ। जुग चौकड़ी सुणां फ़रयाद, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। नित नवित्त देवां दाद, वस्त अमोलक नाम वरताईआ। नाम जैकारा बोध अगाध, शब्दी राग अल्हाईआ। भेव खुल्हावां ब्रह्म ब्रह्माद, नाद धुन शनवाईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, लख चुरासी दीप रुशनाईआ। लेखा जाणां धुर दा ख़ास, ख़ालस आपणा भेव खुल्हाईआ। सब दी पूरी करां आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। वेखे खेल सर्ब गुणतास, गुणवन्ता वड वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दी शाख़, बांके छोहरे आपणी सेवा लाईआ। लोकमात होए ना कोए गुसताख़, सारे बैठण सीस झुकाईआ। अन्तिम लेखा लिख के गए आख, आख़र इक संदेस सुणाईआ। जीवो जंतो साधो सन्तो कलयुग अन्तिम प्रगट होवे इक पुरख अबिनाश, जिस दा ना कोए पिता ना कोए माईआ । हर घट अन्दर रखणहारा वास, वसल आपणा दए कराईआ। लोकमात रहिण ना देवे कोई बदमुआश, बदमुआशी सब दी दए मिटाईआ। चार वरन अठारां बरन इक बणाए जमात, नानक

निरगुण सरगुण गया समझाईआ। गोबिन्द लेखा लिख्या नाल कलम दवात, ऊँच नीच कोई रहिण ना पाईआ। सब दा वेखे आप हालात, कलयुग हालत दए बदलाईआ। सतिजुग पूरी करे ख्वाहिश, सोए सन्त आप जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा भेव आप जणाईआ। दो जहान सुण के बोल, घर आपणे खुशी मनाइंदा। धन्नभाग प्रभ तोलें तोल, सच तराज़ू कंडा नाम हथ्थ उठाइंदा। मैं तेरी धारन बोलां बोल, उच्ची कूक मारां धौल, सोया कोए रहिण ना पाइंदा। मेरे स्वामी जिस वेले मेरे आवें कोल, कर दर्शन आपणा आप बिगसाइंदा। आपणा दुखड़ा तेरे अग्गे देवां फोल, सच कहाणी इक जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरी ओट तकाइंदा। श्री भगवान प्रभ मोहे तेरी आस, अमका रूप नज़र कोए ना आईआ । नित नवित्त वसें पास, करवट आपणी ना कदे बदलाईआ। तेरा प्रेम प्यार मेरा सच धरवास, धीरज इक्को नज़री आईआ। तेरा खेल मेरा तमाश, मैं वेखां चाईं चाईंआ। तेरी सोहे मण्डल रास, गोपी काहन बण नटुआ नाच नचाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश, गगन मण्डल तेरा वेख प्रकाश, नूरो नूर खुशी मनाईआ। लख चुरासी तेरी आत्म ज़ात, चारे खाणी तेरा रूप नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, आपणा नाम देणा जणाईआ। साचा नाम दस्स भगवान, भगवन तेरी आस तकाईआ। जिस नूं गुर अवतार पीर पैगम्बर गाण, गा गा शुकर मनाईआ। जिस दे विचों साची बाणी निकले बिनां ज़बान, निष्अक्खर विचों अक्खर रूप वटाईआ। जिस विचों प्रगट होवे साचा हुक्म कलाम, कलमा हक़ दए जणाईआ। सो स्वामी दे पैग़ाम, जिस नाल विछड़े मिलण आण, विछोड़ा कोई रहिण ना पाईआ। कलयुग अन्त सारे भुल्ले पिछला राम, नज़र ना आए कोए काहन, ईसा मूसा मुहम्मद ना कोए ध्यान, नानक गोबिन्द शब्द कोई ना करे परवान, माया ममता हउमे हंगता घर घर डेरा लाईआ। गुरदर मन्दिर मट्ठ शिवदुआले सारे कुरलाण, इष्ट देव साचा नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे साचा वर, लख चुरासी इक्को तेरे नाम वज्जे वधाईआ। दो जहानां तैनूं समझावांगा। निरगुण निरवैर हो के आवांगा। मेहरवान हो के वेख वखावांगा। नौजवान नौबत नाम वजावांगा। धर्म निशान इक उठावांगा। हुक्मरान फ़रमान अलावांगा । ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखावांगा। पुरी लोअ रंग रंगावांगा। निरगुण हो के सरगुण वसां संग, सगला संग निभावांगा। शब्द अगम्मी दौड़े तुरंग, अस्व इक्को इक भजावांगा। पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड लँघ, लोकमात वेख वखावांगा। कलयुग मेटां कूड़ा झूठ पखण्ड, सतिजुग साचा नाम निशान झुलावांगा। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त आत्म परमात्म इक्को गावण छन्द, सच्चा नाम इक दृढ़ावांगा।

दूई द्वैती ढाह के कंध, साफ़ मैदान इक बणावांगा। नाम जैकारा सच मृदंग, मर्द मर्दाना हो सुणावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच्ची सिख्या इक समझावांगा। साची सिख्या इक समझावांगा। पिछला लेखा मेट मिटावांगा। अगली भिच्छया झोली पावांगा। दहि दिश्या वेख वखावांगा। बण मितया हित कमावांगा। अनडिठया खेल रचावांगा। जग जितया आपणा हुक्म वरतावांगा। सर्ब जीआं दा बण के माई पितया, पिता पूत गोद उठावांगा। सृष्ट सबाई दस्स के मिथ्या, लख चुरासी ख़ाक मिलावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा रहबर इक अख्वावांगा। साचा रहबर इक अख्वाएगा। पीर पैगम्बर नाल मिलाएगा। गुर अवतार अंग लगाएगा। सच सरकार इक बणाएगा। सच जैकार आप सुणाएगा। पंच प्यार मेल मिलाएगा। शब्दी धार वंड वंडाएगा। अमृत जाम इक प्याएगा। पूरा राम खेल कराएगा। साचा काहन वेस वटाएगा। शब्द निशान इक झुलाएगा। दो जहान वेख वखाएगा। चौदां लोक कुण्डा लाहेगा। चौदां तबक पड़दा उठाएगा। सच्चा सबक इक पढ़ाएगा। धुर दा लेख आप दृढ़ाएगा। साची मस्तक मेख टिकाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मार्ग इक रखाएगा। साचा मार्ग इक रखावेगा। पुरख अबिनाशी दया कमावेगा। सृष्ट सबाई आप समझावेगा। दृष्टी सब दी खोल्ह वखावेगा। इष्टी इक्को नज़री आवेगा। दोज़ख़ बहिश्ती वेख वखावेगा। नरक स्वर्ग डेरा ढाहवेगा। पिछली कीती करे तरक, अग्गे तुरत हुक्म मनावेगा। चार युग जो रिहा फ़र्क, पिछला लेखा पूर करावेगा। नाम फड़ के सच्ची खड़ग, खण्डा इक्को इक चमकावेगा। मेटणहारा लिख्त पढ़त, साचा हुक्म आप वरतावेगा। निरवैर हो के पुरख अकाल आया परत, प्रतिनिध इक्को इक अख्वावेगा। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्ता ग़म ना कोए जणावेगा। जन भगतां देवे अन्तर दरस, आत्म ताकी कुण्डा लाहवेगा। लख चुरासी रही भटक, अमृत मेघ हथ्थ किसे ना आवेगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर गुर बाणी शब्द ला के गए शर्त, साख्यात पुरख अकाल आपणा वेस वटावेगा। उस नूं कोई ना सके हटक, सब दा लेखा पूर करावेगा। उहदी चाल अगम्मी मटक, दो जहानां चरणां हेठ दबावेगा। एथे ओथे रखे सिधी सड़क, मार्ग सिध्धा इक समाझावेगा। अमृत मेघ अगम्मी बरस, कलयुग अग्नी अग्ग बुझावेगा। ग़रीब निमाणयां उपर कर के तरस, तृष्ना तामस मेट मिटावेगा। भगत सुहेले साचे परख, नाम कसवट्टी रगढ़ लगावेगा। पुट्टी करनहारा नरद, नरद सिधी नट्टी आप रखावेगा। बण कसाई फड़नहारा करद, तिक्खी धार आप जणावेगा। मेहरवान हो के वंडणहारा दर्द, दुखियां दर्द झोली पावेगा। अन्तिम आपणा पूर करे फ़र्ज़, बण सेवक सेव कमावेगा। किसे दा होण ना देवे हर्ज, गुरमुख बहाए सचखण्ड मनमुख शौह दरया रुढ़ावेगा।

६४६
१५

६४७

१५

प्रभ का खेल एहो अचरज, कलयुग जीव समझ कोए ना पावेगा। जिस दे कोल आदि जुगादी फ़रद, सो फ़रद ज़ुल्म सब दे उते लगावेगा। राज राजान शाह सुल्तान कोई कर ना सके अर्ज़, अरज़ोई सुणन कोए ना आवेगा। जिन्हां नूं प्रभ विछोड़े दी लग्गी मर्ज़, तिन्हां तबीब ना कोए बचावेगा। मात गर्भ दा लथ्थे सिरों ना कर्ज़, अगला पन्ध ना कोए चुकावेगा। जूनी जून भवाए गर्भ, लख चुरासी वंड वंडावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी खेल आप रचावेगा। हरि साचा खेल रचावेगा। निरवैर हो के वेख वखावेगा। कलयुग कूड़ा कूड़ कुड़यार डुबावेगा। सतिजुग बख्श चरण धूढ़ा, मस्तक टिक्का इक लगावेगा। दो जहानां कर के बचन पूरा, पूरी सिख्या इक समझावेगा। ब्रह्मण्ड खण्ड नाद वजाए अनादी तूरा, सुर ताल आपणे हथ्थ रखावेगा। लख चुरासी तोड़ माण ग़रूरा, ग़ुरबत सब दी मेट मिटावेगा। निरगुण सरगुण दिसे हाज़र हज़ूरा, हज़रत आपणा वेस वटावेगा। जन भगतां करे सदा मशकूरा, शुक्रिया अदा आख सुणावेगा। जिस दे पिच्छे सूली चढ़या मनसूरा, सो मुफ्त जन भगतां सेव कमावेगा। जिस दे पिच्छे ऐनलहक़ बोलया अगम्मी तूरा, सो तुरत आपणा मेल मिलावेगा। जिस दे पिच्छे लोहां तत्तीआं उते तपे वांग तन्दूरा, सो हिरदे तपदे शांत करावेगा। जिस दे पिच्छे सीस कटा के मिल्या जोती नूरा, सो जोती जोत डगमगावेगा। जिस दे पिच्छे गोबिन्द बणया सूरा, सूरबीर हुक्म वरतावेगा। जिस दे पिच्छे छोटे बाले नीहां हेठां कीते चूरा, सो कलयुग अन्तिम जड़ उखड़ावेगा। जिस ने तिक्खी धार नाल बचन कीता पूरा, सो पुरी अनन्द अनन्द घर घर आप वखावेगा। कलयुग कूड़ी क्रिया हूंझ के कूड़ा, सतिजुग साचा इक लगावेगा। मूर्ख मुग्ध अज्ञाण चतुर सुघड़ बणाए मूढ़ा, सच उपदेश इक सुणावेगा। किरपा निधान हो के मस्तक देवे चरण धूढ़ा, टिक्का जोत ललाट इक चमकावेगा। दो जहान तेरे अन्दर मचाए फ़तूरा, फ़ातया सब दा अन्त पढ़ाएगा। हुक्मे अन्दर सब नूं होणा पए मजबूरा, प्रभ का हुक्म ना कोई उलटाएगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर जुग जुग सारे उस नूं कहिन्दे जी हज़ूरा, दोए जोड़ सर्ब वास्ता पाएगा। सर्ब कला प्रभ इक्को भरपूरा, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी एकँकार आप अख्वाएगा। जन भगतां चाढ़े रंग गूढ़ा, लाल गुलाला उतर कदे ना जाएगा। गुरमुख नार सवाणी बणाए चाढ़े अगम्मी चूड़ा, थिर घर साचा सगन मनाएगा। अन्दर वड़ के महल्ले चढ़ के अनहद नाद सुणाए साची तूरा, तुरिया राग आप अलाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाएगा। साची करनी करने योग, हरि करता पुरख जणाईआ। जिस दे हथ्थ संजोग विजोग, दोवें राह वखाईआ। कलयुग अन्तिम कट के हउमे रोग, चिन्ता सोग दए मिटाईआ। सतिजुग साचा देवे जोग, साची सिख्या इक समझाईआ। कलयुग तेरी रहिण ना देवे

झूठी सोच, सोच समझ दए मिटाईआ। सतिजुग जिस दर्शन नूं रिहा लोच, तेरी लोचा पूर कराईआ। दोहां देवे आपणी ओट, सिर समरथ हथ्थ टिकाईआ। सतिजुग कलयुग दोवें मेरी निर्मल जोत, मेरे हुक्मे अन्दर सेव कमाईआ। नेत्र खोल्ह करो होश, हुशियारी नाल रिहा समझाईआ। किसे नूं कोई ना देणा दोष, दोषी इक्को पारब्रह्म अख्वाईआ। जो सब दे अन्दर बैठा रहे ख़ामोश, आपणा भेव ना किसे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर अदला बदली करे सच अदालत, ना कोई दूजा करे वकालत, सही सलामत आपणा हुक्म वरताईआ। आपणा हुक्म देवे हक़, हकीकत सब दी वेख वखाइंदा। कलयुग तेरा पिछला करे रहिण फ़क्क, फ़िकर सब दा आप मिटाइंदा । सतिजुग नेत्र खोल्ह राह रिहा तक्क, कवण वेला प्रभ साचा हुक्म सुणाइंदा। मैं लोकमात जावां नट्ठ, बण सेवक सेव कमाइंदा। पुरख अकाल दी चरणी जावां ढट्ठ, धूढ़ी मस्तक टिक्का लाइंदा। प्रभ मेरा मैनूं मिले हस्स, मेरी खुशी खुशी नाल मिलाइंदा। मैं उस दे हुक्मे अन्दर जावां वस, वास्ता इक्को इक पाइंदा। जो मार्ग देवे दस्स, उस मार्ग उते सेव कमाइंदा। जो खोल्हे मेरा हट्ट, सौदा उस दा नाम विकाइंदा। जे मंगे मेरी रत, मैं घोली घोल घुमाइंदा। जे पुछे साची मत्त, गुरमति इक्को इक दृढ़ाइंदा। सच कहां तूं मेरा मैं तेरे वस, सोहँ तेरा राग अल्हाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, करता पुरख आपणी कार कमाइंदा। करता पुरख करे कार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। नव नौ चार उतरे पार, जुग चौकड़ी लेखा रिहा मुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखण खुशीआं नाल, दर घर साचे मंगल गाईआ। भगत गौण वाह वा परवरदिगार, बेपरवाह तेरी वड्याईआ। ख़ालक ख़लक तूं सब दा सांझा यार, लाशरीक तेरे विच शिरकत नज़र कोए ना आईआ। सच प्रीती सच दरबार, पारब्रह्म ब्रह्म आपणे नाल मिलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया दे निवार, सतिजुग साचा पन्ध वखाईआ । चार वरनां इक प्यार, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश गंढु पवाईआ। दीन मज़्ह्ब ज़ात पात कोई ना मारे धाड़, धाड़वी नज़र कोए ना आईआ। ना कोई दिसे ठग्ग चोर यार, ठगौरी जगत कोए ना पाईआ। नाम संदेसे करदे सब नूं ख़बरदार, बेख़बर ख़बर सुणाईआ। कलयुग जीव उठो नेत्र अक्ख लओ उग्घाड़, गूढ़ी नींद रहिण कोए ना पाईआ। जिस नूं उच्चे टिल्ले पर्बत लभ्भदे जंगल जूह उजाड़ पहाड़, सो सतिगुर तुहाढे अन्दर बैठा डेरा लाईआ। सतिगुर पूरा कर किरपा दए वखाल, बिन अक्खां अक्ख खुल्हाईआ। शब्द गुरू बणाओ दलाल, सच दलाली लए कमाईआ। हथ्थ विच फड़ के जोत अगम्मी मसाल, काया मन्दिर अन्दर डूंघी कन्दर सुखमन टेडी बंक अन्धेरी कन्दर पार कराईआ। अग्गे पिच्छे करन जोगा रहे ना कोई स्वाल, सब दा लेखा हल्ल दए कराईआ। नाता तोड़ काल

महाकाल, सुरत शब्द नाल मिलाईआ। लेखा चुक्के जगत जंजाल, त्रैगुण डेरा देवे ढाहीआ। शब्द अनाद वजाए ताल, डंका इक्को इक सुणाईआ। आत्म सेजा दए बहाल, पलँघ रंगीला इक वड्याईआ। भाग लगाए सच सच्ची धर्मसाल, हरिमन्दिर आपणी खुशी वखाईआ। ओथे ना कोई शाह ना कंगाल, सतिगुर मीता ठांडा सीता त्रैगुण अतीता इक्को देवणहार वड्याईआ। आ के सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद वड्डा बेपरवाहीआ। नाल इशारे लै जाए नाल, सुन्न अगम्म डेरा ढाहीआ। थिर घर साचा दए वखाल, जिस घर इक्को नाम सालाहीआ। किरपा करे हो कृपाल, कृपानिध मेहर नज़र उठाईआ। थिर घर विचों लै जाए आपणे नाल, जोती जोत जोत रूप वखाईआ। सचखण्ड दुआरे दए स्वाल, जिथ्थे पुरख अकाल आपणा चरण टिकाईआ। नेत्र पेखे चार कुण्ट दहि दिशा इक्को जलवा जोत नूर जलाल, तत ततव नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर निरगुण रूप सारे करन अरदास, नाना परकार सीस झुकाईआ । ना कोई पवण ना स्वास, बत्ती दन्द ढोला कोई ना गाईआ। इक्को नाद इक्को राग इक्को स्वाद इक्को कन्त सुहाग, जिस विच सारे होए विस्माद, बिस्मिल रूप वटाईआ। जिस रचना रची आदि, मध देवणहारा दाद, जुगादि आपणे विच छुपाईआ। सो साहिब करता करता पुरख आपणा खेल करे तमाश, जुग चौकड़ी पूरी करनहारा आस, दो जहान पावणहारा रास, लख चुरासी बणनहारा दास, दस्त बदस्त दस्तगीर आपणा दामन रिहा फड़ाईआ। सच दुआर भगत प्यार सन्त हुदार गुरमुख विचार गुरसिख पैज स्वार, मेहरवान मेहर नज़र एकँकार इक इकल्ला इक्को वार उठाईआ। सो साहिब सतिगुर कलयुग अन्त श्री भगवन्त पिछला लेखा दए निवार, सतिजुग साचे बन्ने तेरी धार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण कोई ना पावे सार, अगम्म अथाह बेपरवाह अकथ कहाणी बेमुहाणी जोत नुरानी शाह सुल्तानी दो जहान इक्को इक एक हुक्म वरताईआ।

✪ १४ अस्सू २०२० बिक्रमी सौदागर सिँघ दे गृह नाथेवाल ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

दो जहान प्रभू मैनूं क्यों कहिन्दे, चार युग भेव ना किसे जणाया। कवण धाम मेरे रहिंदे, घर साचे डेरा लाया। कवण वस्त पींदे खांदे, कवण धरवास जणाया। कवण गीत ढोला गांदे, कवण राग अल्लाया। कवण सेज सुहञ्जणी हंढ्ढांदे, कवण आसण सोभा पाया। कवण रंग रंगील चढ़ांदे, कवण नूर नूर रुशनाया। कवण तृष्ना आस तकांदे, कवण बैठे ध्यान धराया। कवण वेख वेख बिगसांदे, कवण खुशी खुशीआं नाल रलाया। कवण बैठे थक्के मांदे, बण पांधी फेरा पाया। कवण वेखण दरबार ठांडे, सीतल धारा इक वहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे साचा वर, मेरा भेव

दए खुल्हाया। मैनूं दो जहान क्यों कहिण, की मेरी वड्याईआ। मैं वेखां आपणे नैण, साहिब सतिगुर दे वखाईआ। कवण मेरा साक सज्जण सैण, बंधप कवण नज़री आईआ। कवण बंस सरबंस सच्चा हैन, कवण खेड़ा रिहा वसाईआ। कवण आए घर साचे लैण, कवण मेला लए मिलाईआ। कवण रूप दिवस रैण, कवण चन्द सूरज रुशनाईआ। कवण अक्खर अलिफ़ ये ऐन ग़ैन, नुक़ता नून कवण मिटाईआ। कवण नाता जगत भराता, भाई भैण पिता पूत कवण अख्वाईआ। कवण खेले खेल तमाशा, कवण वेखण दर घर आईआ। कवण करे हास बलासा, कवण रोग सोग समझाईआ। कवण नूर जोत प्रकाशा, कवण अन्ध अन्धेर वखाईआ। कवण पृथमी कवण आकाशा, कवण गगन मण्डल रुशनाईआ। कवण सज्जण देवे साथा, कवण संग निभाईआ। कवण पूजा कवण पाठा, कवण मन्त्र नाम दृढ़ाईआ। कवण तीर्थ कवण ताटा, कवण सरोवर दए नुहाईआ। कवण वणजारा कवण हाटा, कवण पड़दा दए उठाईआ। कवण रखे उत्तम ज़ाता, आप आपणा रूप वटाईआ। कवण दो जहान बणाए गाए गाथा, करे सच पढ़ाईआ। कवण चलाए मेरा राथा, बण रथवाही फेरा पाईआ। कवण होए नाथ अनाथा, दीनन वेखे थाउँ थाईंआ। कवण भरे वस्त अमोलक साचे कासा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, मेरा लेखा दे जणाईआ। मेरा लेखा दस्स भगवान, प्रभ तेरे अग्गे अरजोईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सारे गाण, दो जहानां मेरा नाम सुणाईआ। अन्दर वड़ के पौड़े चढ़ के कोई ना आया समझाण, पड़दा सके ना कोए उठाईआ। साची सिख्या दे मेहरवान, इक्को अक्खर दे समझाईआ। जिस विच नज़री आए मैनूं मेरा मकान, हद्द हदूद समझ मेरी विच पाईआ। मैं उठ उठ वेखां चारों कुण्ट कवण झुले निशान, निशाना कवण रिहा उठाईआ। मेरी बाली बुध अञ्याण, तुध बिन समझ कोए ना आईआ। किरपा कर मेरे भगवान, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर मंगी इक सरनाईआ। मेरे विच प्रभू की गुण, गुणवन्ते दे समझाईआ। मैं आपणा नाम गुर अवतारां कोलों लैणा सुण, मैनूं आपणी समझ कोई ना आईआ। सारे मेरे नाम दी वजाउँदे गए धुन, राग रागनी नाल मिलाईआ। मेरा भेव ना चुकाया फुन, फ़ुरना मेरा पूर ना कोए कराईआ। कर किरपा प्रभ आएयों हुण, हुनर आपणा दे समझाईआ। जिस हुनर नाल मेरी नींह दिती चुण, मेरी रचना रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, मेरा लेखा दे जणाईआ। सुण सुण थक्के मेरे कन्न, नेत्र नैण नैण उठाईआ। भाण्डा भरम कोई ना सक्या भन्न, भुलेखा निकलया मूल ना राईआ। जुग चौकड़ी मैं बणया रिहा अन्न्, साचा रोशन ना कोए जणाईआ। किरपा कर मेरे भगवन, प्रभ तेरी ओट तकाईआ। मेहरवान हो के दे दान, साची भिच्छया झोली पाईआ।

मैं आपणा आप लवां पछाण, मेरी समझ नाल मिलाईआ। मैं नहीं जाणां मैं बेईमान कि शैतान, की मेरे विच वड्याईआ। जिन्ना चिर ना देवें आपणा इक ज्ञान, भेव अभेद खुल्हाईआ। ओनां चिर मैं बणया रहां बाल अञ्याण, बुध सुध नज़र कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक दे साचा वर, जिस मिलयां लेखा रहिण ना पाईआ। सुण बाले दो जहां, दूजा तैनूं दए जणाईआ। तेरा नाउँ रख वड मेहरवां, मेहर नज़र उठाईआ। दो जहां वसण तिस करे इक न्याँ, न्याँकारी हरि दृढ़ाईआ। निरगुण सरगुण मेरा खेल महा, भेव अभेद दयां जणाईआ। सचखण्ड रूप रंग रेख कोई ना, लोकमात सरगुण सति सरूप वखाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण दो जहान आपणे चरण रिहा वखा, जिस चरणां विच कोटन कोटि ब्रह्मण्ड रिहा छुपाईआ। आपणी धार तेरा नाउँ दए वखा, सार शब्द तेरी चार दीवार बणाईआ। निर्मल जोत तेरे विच टिका, हर घट करे रुशनाईआ। एथे ओथे जो मैनूं समझे पिता माँ, सो दो जहानां बूझ बुझाईआ। मेरा खेल तेरा नाँ, दूजी हद्द नज़र कोए ना आईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी बिन भगतां किसे वेख्या ना, शास्त्र सिमरत वेद पुराण सारे ढोले गाईआ। कर किरपा जिस आपणे नाल लए मिला, सो तेरा रूप हर घट नज़री आईआ। उठ वेख पारब्रह्म वखावे तैनूं तेरा थाँ, सचखण्ड छड्ड ब्रह्मण्ड लोकमात इक्को नूर रुशनाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण बणया बेपरवाह, बेपरवाही भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा लेखा कढ्ढ के भरम भुलेखा, साचा नेता निरवैर दए जणाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान आदि जुगादी एको एका, बिन एक्यों आपणा अंकम दए जणाईआ।

६५१

१५

१४ अस्सू २०२० बिक्रमी जसवन्त सिँघ दे गृह पिण्ड राजेआणा ज़िला फिरोज़पुर

सो पुरख निरँजण शाह सुल्ताना, सचखण्ड निवासी दया कमाइंदा। हरि पुरख निरँजण योद्धा सूरबीर बलवाना, बेपरवाह आपणी धार समझाइंदा। एकँकार भूपत भूप नौजवाना, धुर संदेसा इक अल्हाइंदा। आदि निरँजण जोती नूर नूर महाना, अन्ध अन्धेरा सर्ब गवाइंदा। पारब्रह्म प्रभ हो प्रधाना, अबिनाशी करता खेल वखाइंदा। श्री भगवान झुलाए धर्म निशाना, दो जहानां आप उठाइंदा। पारब्रह्म प्रभ देवे ब्रह्म ज्ञाना, ब्रह्म विद्या सर्ब पढ़ाइंदा। सचखण्ड सुहाए सच मकाना, दर घर साचे सोभा पाइंदा। आपणी इच्छया कर परवाना, साची भिच्छया झोली पाइंदा। थिर घर वेखे मार ध्याना, शब्दी सुत आप जगाइंदा। उठ पूत नौजवाना, पारब्रह्म प्रभ भेव खुल्हाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव नेत्र नैण नैण खुलाना, अक्ख प्रतख आप

दृढ़ाइंदा। पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। साचा खेल करे करतार, हरि करता वड वड्याईआ। लेखा जाण धुर दरबार, धुर दी धार आप समझाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण ख़ालक ख़लक खेल करे अपार, भेव अभेद आपणे विच छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भरम भुलेखा भेव जणाईआ। भरम भुलेखा करे दूर, हरि सतिगुर वड वड्याईआ। आदि जुगादी सब दी आसा मनसा पूर, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। वसणहारा नेड़े दूर, हर घट बैठा डेरा लाईआ। अर्ज़ आरज़ू करे मंज़ूर, जो जन अन्तर आत्म ध्यान लगाईआ। जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग निरवैर हो के वेखे आप ज़रूर, निरभउ भय सर्ब जणाईआ। नाता तोड़ कूड़ो कूड़, सच सुच दए समझाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूढ़, शब्द बाणी इक दृढ़ाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां करे चूरो चूर, नाम खण्डा चण्ड प्रचण्ड हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अवल्ला, आदि जुगादी आप कराइंदा। वसणहारा सचखण्ड महल्ला, दर घर साचा सोभा पाइंदा। निरगुण निरवैर पुरख अकाल दीन दयाल निरगुण सरगुण फड़ाए पल्ला, पल्लू इक्को गंढु पवाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर नित नवित्त मात घल्ला, धुर संदेसा आप सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। जुग चौकड़ी खेलया खेल महान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढ्ढाईआ। शब्द संदेसा दित्ता शास्त्र सिमरत वेद पुराण, गीता ज्ञान जगत समझाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद पीर पैगम्बर कर के हुक्मरान, लोकमात इक्को धार जणाईआ । साचा कलमा नबी रसूल दे पैग़ाम, कायनात करी पढ़ाईआ। भेव खुलाया दीन इस्लाम, इस्म आअज़म इक समझाईआ। परवरदिगार लाशरीक वेखणहारा मार ध्यान, सच तौफ़ीक आपणे हथ्थ रखाईआ। नानक निरगुण कर प्रधान, लोकमात दए वड्याईआ। नाम सति अगम्मी दान, शब्द अनादी झोली पाईआ। सृष्ट सबाई दे ज्ञान, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश समझाईआ। आत्म अन्तर कर पहचान, जगत बसन्तर दए बुझाईआ । अमृत आत्म दे पीण खाण, निझर झिरना इक झिराईआ। घर विच घर वखाउणा सच मकान, जिस घर वसे बेपरवाहीआ। इक्को वज्जे शब्द नाद सच्ची धुन्कान, अनहद नादी नाद अलाईआ। जिस दी खाणी बाणी सिफ्त करे दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज सारे बैठे ध्यान लगाईआ। ओस साहिब दा इक अनन्द, सद अनन्द चित वखाईआ। करे प्रकाश निरगुण चन्द, जोत निरँजण कर रुशनाईआ। लख चुरासी जीव आत्म नाता लैणा गंढु, ना कोई तोड़े तोड़ तुड़ाईआ। ढोला गाउणा इक्को छन्द, साहिब स्वामी दए समझाईआ। खुशी कराउणा

बंद बंद, बंदीख़ाना तोड़ तुड़ाईआ। काया चोली चाढ़े रंग, रंग मजीठी इक वखाईआ। भाण्डा भरम दूई द्वैत हउमे हंगता ढाहे कंध, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या शब्द ज्ञान, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी निरगुण सरगुण गया समझाईआ। निरगुण दाता पुरख अकाल, अक्ल कलधारी खेल खलाइंदा। गोबिन्द सूरा इक्को लाल, दो जहानां वाली आप प्रगटाइंदा। साची सिख्या दिती सिखाल, अमृत जाम हथ्थ फड़ाइंदा। चार वरनां करे प्यार, ऊँच नीच भेव मिटाइंदा। आपे वेखे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा वेस वटाइंदा। जन भगतां मार्ग दस्स सुखाल, गुरमुख आपणे राहे पाइंदा। नाता तोड़ काल महाकाल, राए धर्म भय चुकाइंदा। चित्रगुप्त लेखा ना सके वखाल, लाड़ी मौत डेरा ढाइंदा। उच्ची कूक कर के गया पुकार, जीव जंत साध सन्त सर्ब समझाइंदा। कलयुग रैण अन्धेरी आवे रात, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। प्रभ दी भुल्लण सारे गाथ, हिरदे हरि ना कोए वसाइंदा। झगड़ा पवे दीन मज़्हब ज़ात पात, आत्म परमात्म भेव ना कोए जणाइंदा। फिरे दरोही पृथ्मी आकाश, चौदां लोक चौदां तबक सर्ब कुरलाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर कलयुग अन्तिम सारे छड्ड जाण साथ, सगला संग ना कोए निभाइंदा। किसे नज़र ना आए तरलोकी नाथ, रमया रूप राम ना कोए जणाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद कोई ना चढ़ावे राथ, रथ रथवाही नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच ज्ञान आप जणाइंदा। शाह पातशाह शहिनशाह जुग चौकड़ी वेखणहारा, दो जहानां निरगुण सरगुण आपणी सेव लगाईआ। धुर संदेसा देंदा रिहा गुर अवतारां, पीर पैगम्बरां राज राजानां इक्को हुक्म समझाईआ। नौ खण्ड सत दीप सदी वीहवीं साचा दिसे ना कोई मन्दिर मकाना, शिवदुआले मट्ठ मसीत गुरुदुआरे सारे देण दुहाईआ। साचा नज़र ना आए निशाना, जगत सियासत करे लड़ाईआ। गुर का शब्द ना किसे सुहाना, नानक गोबिन्द सीस ना कोए झुकाईआ। करे खेल मर्द मर्दाना, सच मर्दानगी आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा गया जणाईआ। कलयुग अन्तिम आवे मात, नौ खण्ड पए दुहाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लेखा लिख के गए कलम दवात, काग़ज़ शाही नाल मिलाईआ। ना कोई रहे सज्जण साक, सगला बंधप संग ना कोए निभाईआ। आत्म नज़र ना आए पाक, पवित रूप ना कोए वटाईआ। कूड़ी क्रिया घर घर उडे ख़ाक, जगत विभचार रूप वटाईआ। साध सन्त बंद कवाड़ी कोए ना खोल्हे ताक, बजर कपाटी कुण्डा कोए ना लाहीआ। साचा नाम मिले ना किसे हाट, शास्त्र सिमरत वेद पुराण नेत्र नैण रोवण मारन धाहींआ। प्रभ की कोई ना बुज्झे ज़ात, मन्दिर अन्दर वड़ वेखण कोए ना जाईआ। कलयुग जीव बणे नार कमज़ात, हरि कन्त सच ना कोए हंढुाईआ। आत्म

६५३
१५

सेजा सुहञ्जणी मिले किसे ना खाट, भोग बलास भरमे सर्ब लोकाईआ। चार वरन दहि दिशा अठारां बरन कोई ना बन्ने नात, नाता बिधाता जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। सृष्ट सबाई डुब्बे डूंग्घे खात, खाता नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताईआ। जुग चौकड़ी वरते हुक्म जग, जगजीवण दाता आप वरताइंदा। कलयुग अन्त सदी वीहवीं नव नौ लग्गी अग्ग, अमृत मेघ ना कोए बरसाइंदा। कलयुग जीव हँस बणे कग, काग रूप सर्ब कुरलाइंदा। प्रभ का दर्शन कोई ना करे उपर शाह रग, सच्चा शहिनशाह नज़र किसे ना आइंदा। मक्का काअबा करदे फिरदे हज्ज, सच महिराब अन्दर वड़ इक महिबूब दरस कोए ना पाइंदा। उच्चे टिल्ले पर्बत जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूंग्घे सागर गहरी कन्दर रहे लभ्भ, साढे तिन्न हथ्थ अन्दर फेरा कोई ना पाइंदा। राज राजान शाह सुल्तान जगत जागीर वंडदे फिरदे अद्ध, आपणी हदूद समझ कोए ना पाइंदा। कूड़ खुमारी शरअ शरीअती पीती मध, आत्म रस हथ्थ किसे ना आइंदा। श्री भगवान नालों हो गए अड्ड, साचा नाता जोड़ ना कोए जुड़ाइंदा। बिन हरि नामे ख़ाली दिसण हड्ड, सांतक सति धीर ना कोए धराइंदा। आपणी करनी कर्मी डिघे डूंग्घी खड्ड, बिन सतिगुर पूरे बाहर ना कोए कढ्ढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग करता वेख वखाइंदा। जुग करता वेखे अन्तिम कल, कलकाती फेरा पाईआ। जगत अन्धेरा रिहा चल, कूड़ी आंधी दए वगाईआ। भूपत भूप दूई द्वैती लग्गा सल, सीतल धार ना कोए वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्वामी अन्तरजामी घट घट वासी पुरख अबिनाशी निरगुण निरवैर निराकार एकँकार इक इकल्ला आपणा हुक्म वरताईआ। साचा हुक्म वरते भगवन्त, साहिब सतिगुर दया कमाईआ। वेखणहारा जुगा जुगन्त, जुग चौकड़ी पन्ध मुकाईआ। कलयुग अन्तिम आए आप महिमा जणाए अगणत, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। नेत्र खोल्हो साचे सन्त, सति सतिवादी आप समझाईआ। अन्तर आत्म नाम गाओ इक्को मंत, मन वासना दए गंवाईआ। अन्दरों बाहरों रोवे जीव जंत, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। लख चुरासी गढ़ बणया हउमे हंगत, हँ ब्रह्म नज़र किसे ना आईआ। चार वरन मिल के बणी ना कोई पंगत, पंडत पांधे मुल्लां शेख़ मसायक उच्ची कूकण देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल इक अखण्डत, ख़ालस आपणी धार जणाईआ। साची धार जणाए आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। कलयुग वेखे सृष्ट सबाई लग्गा संताप, दुःख रोग सके ना कोए मिटाईआ। जगत भुक्ख रोग लग्गा नाता तुटा माई बाप, पिता पूत गोद ना कोए बहाईआ। साची सच कहाणी कोई ना कहे आख, जूठ झूठ मिले वड्याईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी रात,

साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। गुर शब्द दी कोई ना गावे गाथ, मजलस कूड़ी रहे लगाईआ। जिस घर गुरू ग्रन्थ दा होवे पाठ, उह गुरसिख मध प्याले मुख लगाईआ। वेखणहारा पुरख अबिनाश, कलयुग बदमुआशी घर घर बैठी डेरा लाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे कहिण प्रभ साडी पूरी कर आस, तेरे अग्गे वास्ता पाईआ। जो तैनूं भुल्ले सारे करदे नास, साचे भगतां लै उठाईआ। खेले खेल पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। कलयुग जीव लग्गा दुःख रोग, कर्म कांड रहे सताईआ। बिन पारब्रह्म ब्रह्म होया इक विजोग, संसा सके ना कोए मिटाईआ। नाम नगारे लग्गी ना तन चोट, सोई सुरत ना कोए जगाईआ। बिन सतिगुर शब्द आलणयो डिगे बोट, फड़ बाहों ना कोए उठाईआ। जीव जंत करो अन्तिम होश, मनमति दयो तजाईआ। प्रभ मिलण दी सोचो सोच, जिस मिलयां दुःख रहे ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, संसा सारा दए गंवाईआ । रोग सोग ना रहे भुक्ख, तृष्ना वासना मेट मिटाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जन भगतां गोदी लए चुक्क, दो जहानां खुशी मनाईआ। नेत्र खोलृ दरस दिखाए उठ, स्वच्छ सरूपी रूप वटाईआ। नाम निधान लओ लुट्ट, साचा वणज इक वखाईआ। कलयुग विच सतिजुग सोहे रुत्त, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। काया अन्दर वड़ के आपणे साहिब कोलों लओ पुच्छ, क्यों रुस के बैठा मुख भवाईआ। जे दीन दयाल तुहाढ्ढे उते जावे तुठ, जगत संताप रहिण कोए ना पाईआ। जे हरि के नाम तों लुक के बैठे रहे गुठ, फेर बन्धन सके ना कोए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सृष्ट सबाई शब्द ज्ञान, आत्म परमात्म इक ध्यान, बोध अगाधा बण के पंडत, साची सिख्या इक समझाईआ। साची सिख्या लैणी जाण, अन्जाणत आप जणाइंदा। संसे रोग सर्ब मिट जाण, शाह सुल्तान भय भउ ना कोए जणाइंदा। मन वासना होए ना बेईमान, पंज शैतान ना संग रखाइंदा। साबत करे आप ईमान, सिदक सबूरी इक जणाइंदा। नज़री आए साहिब भगवान, भगवन मेला आप कराइंदा। काया मन्दिर वसे मकान, भगत दुआरा इक सुहाइंदा। राजा प्रजा प्रजा राजा दोहां दा इक्को जिहा निगहबान, मेहर नज़र इक उठाइंदा। कलयुग अन्तिम कूड़ कुड़यारा बदल देवे विधान, साचा मार्ग इक वखाइंदा। वीह सौ वीह बिक्रमी कर परवान, सच परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर पन्द्रां कत्तक सारे इकट्ठे होण आण, भगत दुआरे सोभा पाइंदा। शब्द संदेसा देवे इक फ़रमान, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। जा के हुक्म देवो जीव जहान, लख चुरासी आप जणाइंदा। कोई ना रहे बाल अञ्याण, बोध अगाध सर्ब दृढ़ाइंदा। अन्तिम भाणा वरते नौजवान, नव नौ आपणी खेल कराइंदा। गोबिन्द योद्धा सूर वड बलवान, शब्द खण्डा तीर चिला हथ्थ उठाइंदा।

६५५
१५

लेखा जाणे ज़िमीं असमान, ज़ालम ज़ुल्म मेट मिटाइंदा। सब नूं देवे सच ज्ञान, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। राज राजानां शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाए आण, सीस ताज ना कोए टिकाइंदा। अग्गे लेखा करे प्रधान, भरम भुलेखा आप चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, जगत दुःख रोग दलिद्र दीनां नाथ आप मिटाइंदा। कलयुग दुखड़ा जावे नट्ठ, लोकमात रहिण ना पाईआ। त्रैगुण अग्नी लग्गी बुझे मट्ठ, काया तन ना कोए तपाईआ। बहत्तर नाड़ ना उबले रत, रती रत वेख वखाईआ। सर्ब जीआं प्रभ जाणे मित गत, घट घट बैठा बेपरवाहीआ। जिउँ भावे तिउँ लए रख, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। पिछली धार देवे पलट, प्रगट आपणी कार कमाईआ। सतिजुग सरोवर खोल्ह हट्ट, हट्ट हटवाणा इक्को नज़री आईआ। दुःख दर्द ज़ुल्म ज़ालम कोई ना मारे सट्ट, ठोकर सके ना कोए लगाईआ। सब नूं देवे इक्को जिहा हक़, ऊँच नीच रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, दुखियां दीनां नाथ अनाथां बण के दर्दी सब दा दर्द वंडाईआ। ग़रीब निमाणे ना मारो धाह, सो साहिब सच जणाईआ। पुरख अबिनाशी अन्तिम आए बण मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। जगत हँकारीआं देवे ख़ाक मिला, गढ़ हँकारी तोड़ तुड़ाईआ। कोझे कमले गले लए लगा, फड़ बाहों नाल मिलाईआ। साचे तख्त दए बहा, तख्त निवासी जिस घर वसे बेपरवाहीआ। इक्को हुक्म सख्त दए समझा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जिस ने जिगरे लख़त नीहां हेठां दित्ते दबा, सो कलयुग कूड़ी क्रिया जड़ दए उखड़ाईआ। अट्ठे पहर गुरमुखो ओनूं लओ ध्या, चरण कँवल ध्यान लगाईआ। सब दा सांझा इक खुदा, खुदी तकब्बर दए मिटाईआ। साची बख्शे चरण पनाह, सिर समरथ हथ्थ रखाईआ। कलयुग रहिण ना देवे अन्त गुनाह, फ़नाह सब नूं दए कराईआ। दीनां मज़लूमां ज़ुल्म बन्धन दए कटा, बंदश कोए नज़र ना आईआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र देवे पा, पुरख अकाल दीन दयाल सब दा पिता माईआ। छेती छेती लहिणा देणा रिहा मुका, हिसाब किताब सब दा झोली पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे बणन गवाह, सच अदालत शहादत इक्को दिन एकँकार एको एक भुगताईआ। जिस घड़या सो दए भना, घड़न भंनणहार पुरख समरथ इक अख्वाईआ। कलयुग बदले सतिजुग देवे ला, लाअ कानून इक्को इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग कूड़ा ज़ुल्म नाल ज़ालमां दए खपाईआ। सतिगुर सच्चा एकँकार, आदि जुगादि दया कमाइंदा। गुर अवतार करदे गए निमस्कार, पीर पैगम्बर सजदा सीस झुकाइंदा। धुर संदेसा देवे वारो वार, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। शब्द निधाना बोल जैकार, खाणी बाणी राह वखाइंदा। हुक्मे अन्दर जुग चौकड़ी चार, बन्धन इक्को इक वखाइंदा। विष्न

६५६
१५

ब्रह्मा शिव बन्न धार, देवत सुर नाल रलाइंदा। लख चुरासी कर तैयार, त्रै पंज मेला मेल मिलाइंदा। अठ्ठ तत दे आधार, नौ दर साचे खोल्ह् खुल्हाइंदा। मन्दिर अगम्म कर तैयार, पवण दम नाल रलाइंदा। रक्त बूँद कर गार, हड्ड मास नाड़ी जोड़ जुड़ाइंदा। घर विच घर महल्ल उसार, बंक इक्को इक सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा इक अल्हाइंदा। सच संदेसा श्री भगवान, इक्को इक समझाईआ। लख चुरासी जीव जंत जहान, चारे खाणी वंड वंडाईआ। चारे बाणी बोले बेज़बान, ज़बान समझ नाल समझाईआ। अन्तर आत्म परमात्म देवे इक ज्ञान, निःअक्खर अक्खर रूप समझाईआ। अनादी नाद सुणाए सच्ची धुन्कान, तन्दी तन्द सतार नज़र किसे ना आईआ। उच्ची कूक करे पुकार, देवणहार सर्ब वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चार युग चार वरन अठारां बरन जिस दा चरण ध्यान, सो धरनी धरत धवल आकाश पाताल इक्को नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा इष्ट इक समझाईआ। आदि जुगादी साचा इष्ट, निरगुण निरवैर आप जणाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस ने रखे आपणी लिस्ट, लेखा आपणा आप समझाइंदा। सो साहिब सतिगुर स्वामी घट अन्दर खोल्हणहारा दृष्ट, दृष्टवेता आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सुनेहड़ा इक समझाइंदा। सच सुनेहड़ा लैणा बुज्झ, सो सतिगुर आप जणाईआ। सच प्रीती जाणा लुझ, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। सतिगुर सरनाई जाणा झूझ, आप आपणा मेट मिटाईआ। लेखा चुकाउणा एको दूज, वरन बरन ज़ात पात नज़र कोए ना आईआ। कँवल उलटाउणा आपणा मूंध, नाभी भेव आप चुकाईआ। आपणा आप जाए सूझ, बजर कपाटी पड़दा लैणा उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सर्ब जीआं इक्को करे पढ़ाईआ। सर्ब जीआं घट अन्तर राम, निरगुण बैठा आसण लाईआ। सर्ब जीआं घट एका शाम, घनईया बंसुरी नाम सुणाईआ। सर्ब जीआं घट इक पैग़ाम, वड पैगम्बर आप सुणाईआ। सर्ब जीआं घट इक्को मन्त्र सतिनाम, नानक निरगुण सरगुण गया पढ़ाईआ। सर्ब जीआं घट इक निशान, गोबिन्द सूरा गया वखाईआ। सर्ब जीआं घट इक मकान, काया मन्दिर अन्दर दए वड्याईआ। सर्ब जीआं घट इक्को हरी नाम, मन्त्र राम नाम दृढ़ाईआ। सर्ब जीआं घट इक भगवान, भरमे भुल्ले ना कोए राईआ। सर्ब जीआं घट इक्को दान, दानी दाता आप वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, देवणहारा साचा वर, साचा नाम इक्को इक समझाईआ। साचा नाम आदि जुगादि, जुग चौकड़ी खेल कराइंदा। साचा नाम ब्रह्म ब्रह्माद, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड आसण लाइंदा। साचा नाम धुर दी आवाज़, नाद धुन भेव कोए ना पाइंदा। साचा नाम दो जहानां

राज, लख चुरासी रय्यत वेख वखाइंदा। साचा नाम साचा काज, करनी करता आप कराइंदा। साचा नाम लख चुरासी जीव जंत साध सन्त देवे दात, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। साचा नाम इक जमात, दूजी वंड ना कोए वंडाइंदा। साचा नाम बिन सतिगुर पूरे किसे ना सके भाख, जो गाए सो सिफ्ती नाम वडियाइंदा। सच्चा नाम अलखणा अलाख, अलख अगोचर भेव कोए ना आइंदा। सच्चा नाम सब दी पत लए राख, जो जन साची ओट तकाइंदा। सच्चा नाम गुर अवतार पीर पैगम्बर रल मिल लोकमात बण जमात नित नवित्त जुग चौकड़ी सारे गए आख, हरि की सिफ्त नाम नामा नाउँ समझाइंदा। दीन मज़्ब ज़ात पात विच कोई कर ना सके गरिफ्त, गरिफ्तारी विच बंदीख़ाना ना कोए जणाइंदा। साचा नाम जन भगतो साचे सन्तो गुरमुखो गुरसिखो तुहाढ्े चरणां हेठ रखाए स्वर्ग बहिश्त, उपर आपणा घर वखाइंदा। जिस गुरमुख दा पुरख अकाल इक्को इष्ट, तिस आसा मनसा आपणे विच मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सृष्ट सबाई वखाए इक्को घर, चार वरन खुल्हाए इक्को दर, दर दरवाज़ा ग़रीब निवाज़ा आत्म परमात्म परमात्म आत्म ब्रह्म पारब्रह्म ईश जीव जगदीश जागरत जोत बिन वरन गोत सचखण्ड दुआरे साचे कोट, बंक दुआरी आपणे चरण रखाइंदा।

✪ १४ अस्सू २०२० बिक्रमी पिण्ड कोटला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

साचा खेल करे निरँकार, सचखण्ड निवासी आपणी दया कमाइंदा। तख्त निवासी हो तैयार, शाह पातशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। धुर फ़रमाना देवे एका वार, दो जहानां वाली आप सुणाइंदा। जुग चौकड़ी लोकमात बीते विच संसार, कलयुग अन्त अन्धेरा छाइंदा। कट्ठे करे गुरू अवतार, पीर पैगम्बर साचे दर बुलाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करे ख़बरदार, आलस निंद्रा सर्ब चुकाइंदा। दर दुआरे आउणा सचखण्ड सच्चे दरबार, धुर दरबारी आप समझाइंदा। नेत्र खोल्ह् वेखो होवे ख़बरदार, बेख़बर आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची थित इक वडियाइंदा। साची थित श्री भगवान, आदि जुगादी दए जणाईआ। लेखा जाण दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम कूड़ निशान, राज राजान रहे झुलाईआ। सति दिसे ना धर्म ईमान, सिदक सबूरी नज़र कोए ना आईआ। सतिगुर शब्द सके ना कोए पहचान, रसना जिह्वा बत्ती दन्द साचा राग ना कोए अल्हाईआ। घर घर नच्चदा फिरे शैतान, कलयुग कूड़ी क्रिया करे लड़ाईआ। सतिगुर पूरा सति स्वामी पारब्रह्म पुरख अकाल वेखे मार ध्यान, लोकमात नैण उठाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चार युग जो निरगुण सरगुण देंदे रहे ज्ञान, सो ज्ञान नज़र किसे दर ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा लेखा आप समझाईआ। धुर दा लेखा दस्से करतार, हरि करता वेख वखाईआ। दर आओ वेखो गुरू अवतार, पीर पैगम्बर आपणे नाल मिलाईआ। कलयुग जीव जंत साध सन्त आपणी करनी गए हार, काम क्रोध लोभ मोह हँकार घर घर बैठा डेरा लाईआ। भगत भगवान प्रभ अग्गे दोए जोड़ करन निमस्कार, निज नेत्र नैणां नीर वहाईआ। कर किरपा सच्ची सरकार, शाह पातशाह शहिनशाह तेरी इक सरनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया दे निवार, चारों कुण्ट विभचार बैठा डेरा लाईआ। साचा करे ना कोए प्यार, फिरी दरोही सर्ब लोकाईआ। धीआं भैणां तक्के जीव जंत नेत्र अक्ख रहे उठाल, शरम हया ना कोए रखाईआ। बिन तेरे नाम सारे होए कंगाल, कंगाली घर घर बैठी अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। पन्द्रां कत्तक श्री भगवान दया कमावेगा। सचखण्ड इक दरबार लगावेगा। शाहो भूप राज राजान, सच सिँघसण सोभा पावेगा। दो जहान वाली हो मेहरवान, मेहर नज़र उठावेगा। धुर संदेसा इक फ़रमान, शब्द अगम्मी आप अलावेगा। गुर अवतार इकट्ठे हो आण, पीर पैगम्बर पन्ध मुकावेका। चार युग जो कलमा देंदे रहे ब्यान, राम नाम सब नूं आप वखावेगा। सृष्ट सबाई भुल्ली बण नादान, मनमति हर घट रूप जणावेगा। अन्त किसे दिसे ना श्री भगवान, पारब्रह्म ब्रह्म लेखा आप चुकावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर संदेसा इक दृढ़ावेगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर आवणगे। पुरख अबिनाशी सीस झुकावणगे। दोए जोड़ वास्ता पावणगे। साची बोल अलख, अलख जैकारा इक सुणावणगे। तेरे नालों हो को वक्ख, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण तेरा अंक बणावेंगे। जो मार्ग दित्ता दस्स, सो लोकमात समझावेंगे। कलयुग अन्तिम सारे आए आख, उच्ची कूक कूक जणावेंगे। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अबिनाशी करता होए प्रतख, जो निरगुण नूर नूर रुशनावेंगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरा दर्शन पावांगे। गुर अवतार पीर पैगम्बरो, जिस वेले दर ते आओगे। पुरख अबिनाशी घट घट वासी रचाए इक सुअम्बर, सच सुअम्बर वेख वखाओगे। कलयुग कूड़ा मिटे अडम्बर, साचा मार्ग इक जणाओगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड साचे सोभा पाओगे। प्रभ सचखण्ड साचा आप सुहाएगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सब दा लेखा मंग मंगाएगा। चार युग दा पिछला अनभव प्रकाश चेता आप कराएगा। लख चुरासी वेखो आपणा खेता, नेत्र नैणां नाल दरसाएगा। कोई नज़र ना आवे खेवट खेटा, मलाह रूप ना कोए वटाएगा। गोबिन्द इक्को पुरख अकाल बणाया बेटा, जिस बिन बेड़ा पार ना कोए कराएगा। सचखण्ड दुआर एकँकार इक्को बणे सब दा नेता, राज राजान कोए रहिण ना पावेगा। आपणी

हथ्थीं खोल्ह वखाओ सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वाला लेखा, लिख्या लेख ना कोए मिटावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक्को इक सुणावेगा। पारब्रह्म दर तेरे उते आवांगे। तेरा लख लख शुकर मनावांगे। दर ठांडे सीस झुकावांगे। थक्के मांदे सुख पावांगे। तेरी निर्मल जोत जोत विच रल जावांगे। तेरा वेख सचखण्ड साचा किला कोट, घर साचे आसण लावांगे। लोकमात जो बणा के आए वरन गोत, ज़ात पात सब तेरी झोली पावांगे। जो दस्सें सच श्लोक, सो तेरा राग अलावांगे। तेरा खेल वेखे चौदां लोक, चौदां तबक तेरा हुक्म वरतावांगे। विष्न ब्रह्मा शिव कोई बैठा रहे ना ख़ामोश, सुरती सब दी अन्त हिलावांगे। साडे उते कोई ना देणा दोष, पिछला लेखा आप जणावांगे। तेरे दर्शन नूं भगत भगवान सन्त गुरमुख सज्जण श्री भगवान नेत्र लोचण रहे लोच, सो लोचा तेरे कोलों पूर करावांगे। तेरी खेल पारब्रह्म प्रभ कोई ना सके सोच, बिन सोच समझ तेरे अग्गे झोली डाहवांगे। युग चौकड़ी तेरे नाम दा दस्स के आए खोज, खोजत खोजत तेरा घर वखावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साचा इक सुहावांगे। गुर अवतार दर आउणगे। धुर फ़रमाना हुक्म झोली पाउणगे। कलयुग अन्तिम आपणा लेखा आप मुकाउणगे। धुर दा भेता धुरदरगाही कोलों मंग मंगाउणगे। सारे मन्नण तूं पुरख अकाल इक्को नेता, निज नेत्र दर्शन पाउणगे। पन्द्रां कत्तक सचखण्ड दुआरे सब दा होए लेखा, जीव जंत समझ समझ कोई ना पाउणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरे एकँकारे गुर अवतार पीर पैगम्बर रल मिल सारे साचा मता इक पकाउणगे। गुर अवतार पीर पैगम्बर पकावण मता, सचखण्ड वज्जे वधाईआ। करे खेल पुरख समरथा, समरथ पुरख बेपरवाहीआ। परवरदिगार जुग चौकड़ी चलावणहारा रथा, कलयुग अन्तिम आपे वेखे चाईं चाईंआ। लख चुरासी चारे खाणी पाए नथ्था, नाम डोरी तन्द हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कत्तक पन्द्रां लेखा जाणे महल अटल उच्चे मन्दिरां, महिफ़ल इक्को इक लगाईआ। गुरमुख रहे सदा निहाल, जिस अन्दर सतिगुर दया कमाईआ। गुरसिख रहे सदा निहाल, जिस गुर पूरा सूरा मिल्या बेपरवाहीआ। सन्त सज्जण सदा रहे निहाल, जिस आत्म अन्तर निर्मल जोत जगे रुशनाईआ। भगत दर घर साचे सदा रहे निहाल, जिस भगवन आपणा रंग दए चढ़ाईआ। हरिसंगत रहे सदा निहाल, जो बैठी सच सच्ची धर्मसाल, सतिगुर घर मन्दिर अन्दर इक्को वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, सो जन ग़मी चिन्ता रोग सोग विच कदे ना आईआ। गुरमुख निहाल सदा सति संग, गुर शब्दी राग अल्हाईआ। घर नाम वज्जे मृदंग, अनहद नादी ताल सुणाईआ।

अमृत धारा वहे गंग, निझर झिरना दए झिराईआ। जगत दुआरा वेखे लँघ, नौ दुआरे पन्ध चुकाईआ। बजर कपाटी तोड़े जंद, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ । दस्म दुआरी वेखे साहिब सतिगुर दा इक पलँघ, बिन पावा चूल टिकाईआ। उते बहे सूरा सरबँग, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। सुरती शब्द देवणहारा अनन्द, अनन्द अनन्द विचों प्रगटाईआ। साचा नूर चढ़ाए चन्द, सूरज चन्द नैण शरमाईआ। जिन्हां उपर सतिगुर पूरा होए आप बख्शंद, सो गुरमुख सदा निहाल, ओन्हां पोह ना सके काल, गुर शब्दी बणे दलाल, एथे ओथे दो जहान इक्को रंग वखाईआ। होए निहाल सतिगुर पाया, मन मनसा मेट मिटाईआ। दीन दयाल दया कमाया, घर ठाकर वेखण आईआ। भेव अभेदा दए जणाया, अनभव प्रकाश कराईआ। जन्म कर्म दा लेखा दए चुकाया, पूरब लहिणा झोली पाईआ। साची सरन दए समझाया, पुरख अकाल इक्को सरनाईआ। जिस मिलयां दुःख रहे ना राया, जम की फाँसी फंद कटाईआ। गुरमुख सदा ओस पारब्रह्म निहाल कराया, जो ना जन्मे ना मरे मात गर्भ कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रखे निहाल, नाता तोड़ काल महाकाल, इक्को शब्द गुरू बण दलाल, दलाली सच्चो सच कमाईआ। निहाल रहे सदा गुर संगत, हरि सतिगुर विच समाईआ। नाता तुटे जेरज अंडत, उत्भुज सेत्ज पन्ध मुकाईआ। मानस जन्म ना होवे भंगत, लख चुरासी डेरा ढाहीआ।
६६१ जिन्हां स्वामी ठाकर चाढ़े आपणी रंगत, दुरमति मैल दए धवाईआ। सो गुरसिख किसे दर ना जाए मंगत, जिस गुर गोबिन्द ६६१
१५ मिल्या सच्चा माहीआ। सतिगुर भेव कोई ना जाणे पंडत, लेखा लिखण पढ़न विच ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, १५
आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे नाम वर, बंक दुआरी खोल्ह दर, दर सच्चा इक वखाईआ। ऐसे पन्द्रां कत्तक गल्ल होवे उह, ओड़क अन्त जिस दा कहिण कोए ना पाईआ। जिस दुआरे कोई ना सके पोह, नेत्र नैण वेखण कोई ना पाईआ। जो निरगुण धार गुरू अवतार निरगुण सरगुण गई हो, उह आपणी धार वहाईआ। जिस दा बल आदि जुगादि जुग चौकड़ी कोई ना सक्या टोह, हुक्मे अन्दर दो जहान गेड़ रहे गिढ़ाईआ। उस दी उस दा शब्द सुणावे सो, मनमति बुध समझ कोए ना पाईआ। कर किरपा जिस नूं देवे आपणी लो, सो थोड़ा थोड़ा लेखा दए जणाईआ। आपणे जिहा उह आपे हो, आपणी खेल रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बेअन्त बेपरवाह जलवा नूर नुराना खुदा, सचखण्ड वसे इक मकान, बेपहचान मेहरवान आपणा हुक्म आप वरताईआ।

✪ १४ अस्सू २०२० बिक्रमी कपूर सिंघ दे गृह चनूं वाला ज़िला फिरोज़पुर ✪

सच्च दरबार लग्गा सचखण्ड, सच दुआर वज्जे वधाईआ। तख्त निवासी सूरा सरबँग, शाह पातशाह शहिनशाह आसण लाईआ। निरगुण जोत चढ़े चन्द, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। हुक्म संदेसा देवे सूरा सरबँग, धुर फ़रमाना इक्को नाम जणाईआ। जुग चौकड़ी रही लँघ, कलयुग वेला अन्तिम आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सच दवारे आओ लँघ, श्री भगवान रिहा समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दोए जोड़ मंगण मंग, नेत्र नैण नैण झुकाईआ। त्रैगुण माया कहे मैं होई रंड, जगत अन्धेर इक्को छाईआ। पंज तत कहे मेरा दुखे बंद बंद, बंदीख़ाना तोड़ ना कोए तुड़ाईआ। लख चुरासी होई आत्म अन्ध, अज्ञान अन्धेर ना कोए मिटाईआ। दूई द्वैती ढाहे कोई ना कंध, भाण्डा भरम ना कोए भंनाईआ । नौ खण्ड सत्त दीप चार कुण्ट दहि दिशा भेख पखण्ड, कलयुग आपणा वेस वटाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द कूक पुकारन पावण डण्ड, साची डण्डौत ना कोए समझाईआ। धुर दा सोहला साचा ढोला शब्द वचोला कोई ना गाए छन्द, आत्म परमात्म नाद ना कोए सुणाईआ। काया चोली चढ़या दिसे कोई ना रंग, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। सच दरबार इक्को ला, दरगाह साची धाम सुहाइंदा। गुर अवतार गए आ, पीर पैगम्बर सीस झुकाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुका, नेत्र नैण ना कोए उठाइंदा। त्रै पंज रोवे मारे धाह, धीरज धीर ना कोए वखाइंदा। भगत भगवान रहे सुणा, उच्ची कूक सर्ब अलाइंदा। चारों कुण्ट अन्धेरा गया छा, तेरा नूर नज़र कोए ना आइंदा। सृष्ट सबाई गई भुला, बेपरवाह तेरा भेव कोए ना पाइंदा। मुरीद मुर्शद नालों होए बेवफ़ा, साचा संग ना कोए निभाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म आप वरताइंदा। गुर अवतार आओ नेड़े, सो साहिब आप जणाईआ। लोकमात क्यों पए झेड़े, झगड़ा करे क्यों लोकाईआ। कूड़ी क्रिया क्यों लाए डेरे, घर घर बैठी आसण लाईआ। जूठ झूठ क्यों वढ़या खेड़े, आप आपणा फेरा पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेई अवतार भगत अठारां ईसा मूसा मुहम्मद गुरू दस पा के आए फेरे, नित नवित्त आपणा वेस वटाईआ। पारब्रह्म पुरख अकाल दे बण के आए चेरे, चेला गुरू धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुछणहारा साचा हरि, हालत सब दी वेख वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बिन रसना जिह्वा बोल दयो ब्यान, बेपरवाह हुक्म वरताईआ। नेत्र खोलो वेखो दो जहान, लोक परलोक रिहा कुरलाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड धर्म दिसे ना कोए निशान, पुरी लोअ साचा रंग ना कोए रंगाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान सके ना कोए पहचान, नेत्र नैण अक्ख ना कोए खुलाईआ। अञ्जील कुरान साचा दिसे ना कोए ईमान,

हज़रत हाज़र हज़ूर फेरा कोई ना पाईआ। नानक गोबिन्द सार शब्द अगम्मी धार कोई ना सके पहचान, पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। तीर्थ अठसठ गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ सारे जाण, दुरमति मैल ना किसे धवाईआ। काया मन्दिर दिसे सुंञ वैरान, हरि मन्दिर कुण्डा कोए ना लाहीआ। अन्तर आत्म कोई ना सके पहचान, पारब्रह्म ब्रह्म लेखा ना कोए मुकाईआ। दीआ दीपक जोती कोई ना लए बाल, घर घर ना कोए रुशनाईआ। साचा शब्द अनाद सुणे ना कोई धुन्कान, अनहद रागी राग ना कोए अलाईआ। अमृत आत्म किसे ना मिले पीण खाण, निझर झिरना सके ना कोए झिराईआ। घर घर नच्चे काम क्रोध लोभ मोह हँकार पंज शैतान, आसा तृष्ना मुख घूँगट रही उठाईआ। धुर दा लेखा दस्सो अहिवाल, हालत सब दी वेख वखाईआ। सब दे सिर उते कूके काल, चारों कुण्ट डौरु डंक वजाईआ। कवण मिले अन्त दलाल, सच दलाली नाम वखाईआ। पुछणहारा इक अकाल, धुर फ़रमाना रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा लेखा मंग मंगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दोए जोड़, प्रभ चरण कँवल ध्यान लगाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त चार युग असीं आए होड़, चारे खाणी चारे बाणी ढोला राग सुणाईआ। सुरती शब्दी अन्तर आत्म आए जोड़, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। आत्म परमात्म बन्न्ह के आए डोर, बन्धन इक्को इक वखाईआ। लेखा चुका के आए पंज चोर, तेरा नाम दस्स वड्याईआ। होका दे के आए होड़, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगण भीख, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। साहिब सुल्तान मेहरवान निरगुण निरवैर तेरी इक उडीक, चारे युग बैठे ध्यान लगाईआ। पीर पैगम्बर आपणी वेखण नेड़े आई तरीक, कवण तारीख़ दए बदलाईआ। जिस दे हथ्थ आदि जुगादी जीत, जितणहारा सर्ब लोकाईआ। सद वसणहारा धाम अनडीठ, सचखण्ड बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर साचे मंग मंगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रोवन मारन धाह, अन्त लेखा देण जणाईआ। तेरा लेखा बेपरवाह, रसना जिह्वा कहिण कोए ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बणे गवाह, धुर दा भेव देण खुल्हाईआ। विष्नूं कहे मैं इक्को दोए जोड़ मंगां सरना, सरनगति इक हो जाईआ। ब्रह्मा कहे मैं सीस रिहा झुका, तेरा हुक्म बेपरवाहीआ। शंकर कहे मैं हथ्थ त्रिसूल देवां सुटा, माण अभिमान कोए रहिण ना पाईआ। धुर दा लेखा दे जणा, जागरत जोत कर रुशनाईआ। तुध बिन दिसे ना कोई मलाह, बेड़ा पार ना कोए लँघाईआ। चौथा युग वेला अन्तिम गया आ, आज्ञाकार कोई रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे साचा वर, लेखा वेख थाउँ थाईंआ।

लेखा वेख प्रभू प्रभ ठाकर, तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। कलयुग दिसे डूंग्घा सागर, भव पार ना कोए कराईआ। साचा बणे ना कोई सौदागर, सौदा हट्ट ना कोए विकाईआ। नज़र ना आए करता कादर, मेहर नज़र ना कोए उठाईआ। निर्मल कर्म ना करे कोए उजागर, कूड़ी क्रिया दए दुहाईआ। बिन तेरे दूजा बणे ना कोए बहादर, गुर अवतार पीर पैगम्बर पल्लू गए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। तुध बिन दूजा नज़र ना आए, शाह पातशाह तेरी सरनाईआ। दो जहान बैठे तेरा ध्यान लगाए, निज नेत्र नैण उठाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड रहे जस गाए, ढोला इक्को नाम अलाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर गए सुणाए, धुर संदेसा इक सुणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त फेरा पाए, कल कल्की नाउँ धराईआ। साचे नगर डेरा लाए, सम्बल आपणी रुत्त सुहाईआ। हक़ नबेड़ा दए कराए, हकीकत वेखे थाउँ थाईंआ। पीर पैगम्बर लए जगाए, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आप आपणा वेस वटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगण दात, पुरख अकाल अग्गे अरज़ोईआ। किरपा कर पुरख अबिनाश, बेपरवाह दे ढोईआ। नेत्र रोवे पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर नैणां नीर वहाईआ। कलयुग अन्तिम कोई ना देवे साथ, सगला संग ना कोए निभाईआ। वरन बरन ज़ात पात दीन मज़्ब कर कर थक्के पूजा पाठ, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। ना कोई होए सहाई अनाथां नाथ, दीनन दीन गले ना कोए लगाईआ। ग़रीब निमाणयां पत सके ना कोई राख, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर प्रगट हो साख्यात, साहिब सुल्तान फेरा पाईआ। लख चुरासी वेख हालात, हालत सब दी दे बदलाईआ। धुर दा लेखा लिख बिन कलम दवात, काग़ज़ शाही कम्म किसे ना आईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत दीप इक बणा जमात, इक्को अक्खर दे पढ़ाईआ। तेरा कलमा पढ़े कायनात, सोहला ढोला इक्को गाईआ। गुर अवतार सारे गए आख, आख़र आवे बेपरवाहीआ। खेल करे बहु बिध भांत, अनक कलधारी आपणी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, सच तेरी ओट रखाईआ। तेरी ओट रखी प्रभ एक, एकँकार तेरी सरनाईआ। कलयुग अन्तिम साची टेक, बिन पुरख अकाल नज़र कोए ना आईआ। किरपा निधान आ के कर बुध विवेक, सृष्ट सबाई दे समझाईआ। कूड़े कर्म लेखा दे मेट, सच्चा मार्ग इक दरसाईआ। आत्म परमात्म दस्स हेत, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। उजड़या वसे सुंञा खेत, पत डाली फुल महकाईआ। रुत्त मौले बसन्ती चेत, चेतन सुरती दे कराईआ। नज़री आवें नेतन नेत, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। निरवैर पुरख धार आपणा भेख, कलयुग

भेख दे गंवाईआ। नेत्र रोवे विष्नूं बैठा बाशक शेश, सीस जगदीश रिहा झुकाईआ। ब्रह्मा कहे मेरा कोई ना करे हेत, ब्रह्म विद्या समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सब दी आसा मनसा पूर कराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बरो मैं निरगुण हो के आवांगा। निरवैर पुरख अख्वावांगा। लोकमात वेस वटावांगा। सच श्लोक इक दृढ़ावांगा। ओट इक्को इक जणावांगा। लोक परलोक वेख वखावांगा। किला बंक कोट, फोल फोलावांगा। शब्द नगारे ला के चोट, दो जहान आप उठावांगा। लख चुरासी अन्दरों कढ्ढ के खोट, सच सुच्च वस्त वरतावांगा। कर प्रकाश निर्मल जोत, अज्ञान अन्धेर मिटावांगा । क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक बणा के गोत, इष्ट इक्को इक वखावांगा । रसना जिह्वा पुरख अकाल सब गाए रसना होंट, साचा नाम इक दृढ़ावांगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप रचावांगा। साचा खेल आप रचावांगा। कल अन्तिम वेस वटावांगा। निहकलंक नाउँ धरावांगा। कल कल्की फेरा पावांगा। धुर दी वंनगी इक ल्यावांगा। सृष्ट सबाई मरदी मरदी फेर बचावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ावांगा। साची सिख्या इक प्रभ दृढ़ाएगा। धुर दा लेखा आप समझाएगा। दहि दिशा पाए भिच्छया, चार कुण्ट नाम वरताएगा। आत्म परमात्म कदे ना जाए भिटया, छूत छात झगड़ा आप चुकाएगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच मार्ग इक लगाएगा। सच मार्ग इक लगावेगा। चार वरन गंढु पवावेगा। बरन अठारां ठंड पावेगा। नार दुहागण रंड, सुरत शब्द मिलावेगा। भरमां ढाह के द्वैती कंध, घर इक्को इक वखावेगा। निज आत्म दे अनन्द, परमानंद समावेगा। साचा ढोला गाए छन्द, संसा रोग चुकावेगा। बंदीखाना तोड़ के बंद, बंदगी इक्को इक दरसावेगा। कूड़ी क्रिया कढ्ढ के गंद, सच सुच आपणा नाम विच टिकावेगा। भेव खुल्हाए ब्रह्म हँ, हँ ब्रह्म आपणा आप जणावेगा। सो सूरा बण सरबँग, सोहँ शब्द इक प्रगटावेगा । गुर अवतार पीर पैगम्बर नानक गोबिन्द अन्तिम मंग के गए मंग, सब दा लेखा लेखे विच लगावेगा। निरगुण निरवैर पुरख अकाल नूर इलाही चढ़े चन्द, चन्द नूर इक चमकावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दी आसा पूर करावेगा। सब दी आसा पूर करावेगा। कलयुग लेखा लेख मुकावेगा। भरम भुलेखा आप कढ्ढावेगा। देस परदेसां सोभा पावेगा। नर नरेश भेव चुकावेगा। विष्न ब्रह्मा शिव सुरत खुलावेगा। अकाल मूर्त नज़री आवेगा। नाद तूरत इक सुणावेगा। मूर्ख मूढ़त आप समझावेगा। रंग गूढ़त इक चढ़ावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग सच सच वरतावेगा। सतिजुग साचा प्रभू लगाएगा। मेहरवान मेहर नज़र उठाएगा। चार वरन इक्को सरन रखाएगा। नेत्र हरन फरन खुल्हाएगा। श्री

६६५
१५

भगवान भेव चुकाएगा। काया मन्दिर अन्दर वड़न, आप समझाएगा। साचे पौड़े चढ़न, गुरमुख इशारा इक रखाएगा। साहिब सतिगुर दर्शन करन, घर स्वामी नज़री आएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल आप वरताएगा। साचा खेल हरि जू वरतावेगा। सो पुरख निरँजण हुक्म चलावेगा। हरि पुरख निरँजण वेख वखावेगा। एकँकार ताल वजावेगा। आदि निरँजण जोत रुशनावेगा। श्री भगवान सर्ब समझावेगा। अबिनाशी करता बोल अलावेगा। पारब्रह्म ब्रह्म पड़दा आप चुकावेगा। निहकर्मी कर्म कांड पन्ध मुकावेगा। साची सरनी सरनगति इक दरसावेगा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर आपणी करे करनी, करता पुरख कार कमावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग सतिजुग धारा आप बदलावेगा। पंज साल नाता पंज तत्त, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश खेल खलाईआ। हड्ड मास नाड़ी तपे रत, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। पूरब जन्मां लग्गी सट्ट, दुखियां दर्द ना कोए वंडाईआ। कोए तबीब कोए हकीम कोए ना सके रख, नाड़ बहत्तर भेव किसे ना आईआ। जिस मन मति बुध आत्म अन्दर दिती रख, सो परमात्म वेख वखाईआ। पूरब लेखा जे उस दा देईए दस्स, जगत शरम हया संग विच रहिण ना देवे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी नरायण नर, लहिणा देणा सब दा रिहा भुगताईआ। पूरब जन्म लहिणा देणा जरमां, जन्म अजन्म विच भवाईआ। पंज तत भुगते काया कर्मां, बिन सतिगुर सके ना कोए बचाईआ। जो जन मांगे साची सरना, तिस देवे माण वड्याईआ। जन्म नालों पहलों देवे मरना, मर के जन्म दए समझाईआ। आपणा लेख किसे ना पढ़ना, दोष दूज्जयां उते लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा लेखा रिहा जणाईआ। धुर दा लेखा हथ्थ करतार, मेटणहार नज़र कोई ना आईआ। तीजे जामे दी सज़ा मिले विच संसार, प्राणी क्यों रोवें मारें धाहींआ। अन्दर वड़ के वेख कर विचार, विभचार पिछला नज़र नज़र विच आईआ। जिस गुरू घर खा के कसम किहा नौ वार, नौ दर दित्ता माण तजाईआ। जे तेरे दर तों जावां हार, मैनूं देणी मात सजाईआ। साचा सन्त बोले इक ज़बान, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। गुरुदुआर बणना ना कदे शैतान, ठग्गी चोरी सतिगुर कदे ना भाईआ। अन्दर वड़ ना करना हराम, नीत अनीत ना कोए बदलाईआ। सन्त कर्म सिँघ दा लग्गा बाण, सो बाण लग्गा बिरथा कदे ना जाईआ। जे रसना जिह्वा जपो साढे तिन्न महीने इक भगवान, दोए जोड़ घर साचे वास्ता पाईआ। किरपा करे प्रभ फेर आण, दुखियां दुःख दए गंवाईआ। काया गठड़ी फेर दए उठाल, सुरती सुरत नाल जगाईआ। जगत दारू किसे ना मिले शाह कंगाल, बिन सतिगुर साचा ख़ैर झोली कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, देवणहारा सच्चा वर, लेखा लहिणा देणा पूर कराईआ। चरण कँवल मिले सरनाई, सतिगुर पूरा दया कमाइंदा। चरण कँवल मिले वड्याई, हरि दाता वेख वखाइंदा। चरण कँवल वज्जे वधाई, आत्म परमात्म राग सुणाइंदा। चरण कँवल होए कुड़माई, भगत भगवान मेल मिलाइंदा। चरण कँवल गुरमुख मिले चाईं चाईं, चाउ घनेरा इक समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी इक्को चरण पतिपरमेश्वर सर्ब समझाइंदा। चरण कँवल नाता अगम्म, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। सतिगुर चरण हड्ड मास नाड़ी ना कोए चम्म, तत रूप ना कोए वटाईआ। सो चरण दो जहानां बेड़ा देवण बन्न्, फड़ के बेड़ा पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच प्रीती ठांडी सीती त्रैगुण अतीती हरि बख्शे इक सरनाईआ। सतिगुर चरण ठांडा दरबार, घर इक्को नज़री आइंदा। गुरसिख विरला करे प्यार, जिस आपणी बूझ बुझाइंदा। गुरमुख सच्चा करे दीदार, निज नेत्र लोचण खुल्हाइंदा। साचा सन्त पावे सार, जिस भाण्डा भरम भउ भंनाइंदा। साचा भगत वेखे आ के धुर दरबार, जिस मन्दिर अन्दर सतिगुर आपणे चरण रखाइंदा। सो महल्ला अपर अपार, सूरज चन्द नज़र कोए ना आइंदा। छप्पर छन्न ना कोए दीवार, ना कोई बाढी बणत बणाइंदा। कर किरपा हरि करतार, प्रेम प्रीती आपणे नाल जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, इक्को चरण कँवल वड्याई देवे उपर धवल, माणस मानुख मानुष आपणे लेखे लाइंदा। सतिगुर चरण बुझाए अग्ग, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। सतिगुर चरण हँस बणाए कग्ग, काग हँस रूप वटाईआ। सतिगुर चरण नज़री आयण उपर शाह रग, नौ दुआरे सार कोए ना पाईआ। सतिगुर चरण दो जहानां सच्चा हज्ज, काया काअबा इक सुहाईआ। सतिगुर चरण साचे मन्दिर लैण सद्द, सद्दा इक्को नाम सुणाईआ। सतिगुर चरण आवण जावण मुकावण हद्द, लेखा कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, चरण चरणोदक जिस जन अमृत जाम मुख चुआईआ।

✪ १४ अस्सू २०२० बिक्रमी भाग सिँघ नाज़र सिँघ जागीर सिँघ दे गृह
माड़ी मुसतफ़ा ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

धुर दी धार जोत निरँकारी, शब्द संदेसा नाम सुणाईआ। सचखण्ड दुआर बैठा एकँकारी, इक इकल्ला हुक्म वरताईआ। शाहो भूप हरि वड बलकारी, शाह पातशाह आप अख्वाईआ। ठांडा खोल्ह सच्च दरबारी, दरगाह साची सोभा पाईआ। दीप

जगे अगम्म अपारी, नूर नुराना डगमगाईआ। जुग चौकड़ी खेल करे न्यारी, हरि करता करनी आप कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर पार उतारी, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। दो जहानां पावे सारी, पर्दा उहला आप उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करे ख़बरदारी, धुर संदेसा इक सुणाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ वेखे नाल होशियारी, श्री भगवान दए जणाईआ। त्रैगुण माया उठ सवाणी विभचारन नारी, नर नरायण रिहा जगाईआ। पंज तत नेत्र खोल्ह लाओ ताड़ी, सच ध्यान इक दृढ़ाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर घर आओ वारी वारी, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण करो पुकारी, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। अञ्जील कुरान दस्सो आपणी यारी, चार यारी नाल मिलाईआ। खाणी बाणी वेखो आपणी पूज पुजारी, पूंजी सब दी वेख वखाईआ। कातब चल के आओ लिखारी, कुतब साहिब सतिगुर रिहा वखाईआ। लख चुरासी नैण खोल्हो अक्ख अपारी, पुरख अकाल रिहा खुल्हाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत दीप आपणा आप रही हारी, हार जित कोई समझ सके ना राईआ। लख चुरासी जीव जंत होए ख्वारी, धीरज धीर ना कोए धराईआ। कूड़ी रस सब नूं लग्गे प्यारी, सच्चा नाम ना कोए ध्याईआ। वेखणहारा पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सचखण्ड बैठा सरदारी, निरवैर पुरख बेपरवाहीआ। करे खेल अक्ल कलधारी, कल आपणी आप प्रगटाईआ। संदेसा देवे वड संसारी, संसार सागर दए समझाईआ। लेखा सब दा चुक्के आपणी वारी, बचया कोए रहिण ना पाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल सच्चा नाम सुणाए इक जैकारी, जै जैकार करे लोकाईआ। करे प्रकाश बहत्तर नाड़ी, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। लेखा जाणे जिन्हां चरण छुहाई दाढ़ी, सच प्रीती वेखे थाउँ थाईंआ। निरवैर हो के बणया मात व्यपारी, वणज इक्को इक समझाईआ। खोल्हे हट्ट वड भण्डारी, नाम भण्डार विच रखाईआ। होका देवे चार कुण्ट दहि दिशा रसना बोले आपणी धारी, धार धार विचों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सब दा लेखा वेख वखाईआ। सब दा लेखा वेखण आए, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव आपणा हाल सुणाए, हालत सब दी वेखे बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर देण दुहाए, उच्ची कूक कूक अल्हाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान नेत्र नैणां नीर वहाए, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। चारे खाणी वास्ता पाए, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। चारे बाणी कहे मेरे बेपरवाहे, तुध बिन मेरी सार कोए ना पाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरा छाए, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। रसना जिह्वा मैनूं सारे रहे गाए, अन्तर आत्म मेल ना कोए मिलाईआ। ढोलक छैणे रहे वजाए, अनहद नादी राग ना कोए सुणाईआ। काया गोलक रहे भराए, माया ममता नाल मिलाईआ। तेरा नाम अमोलक साची वस्त दस्त हथ्थ ना कोए फड़ाए, ख़ाली हथ्थ वेखी सर्ब लोकाईआ। महिमा तेरी अकथ पुरख समरथ

सच भगवान ना कोए दृढ़ाए, भगवन रूप ना कोए वखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी दए दुहाए, सत्त दीप रहे कुरलाईआ। चौदां लोक कोई ना पकड़े बाहें, बौहड़ी बौहड़ी रहे सुणाईआ। चौदां तबक ना कोए सहाए, दस्तगीर नज़र कोए ना आईआ। अन्तिम लेखा सके ना कोए मुकाए, सिर हत्थ ना कोए टिकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे गए गाए, गा गा आपणा शुकर मनाईआ। कलयुग अन्तिम श्री भगवान पुरख अकाल दीन दयाल निहकलंक इक्को प्रभ आए, दूजा संग ना कोए रखाईआ। नाम निधाना दो जहानां शब्द अगम्मी डंक वजाए, सोई सृष्ट लए उठाईआ। धर्म दुआरा एकँकारा इक्को बंक सुहाए, जिस मन्दिर अन्दर आपणा आसण लाईआ। राउ रंक दए हिलाए, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप वखाईआ। आपणा खेल करे करतार, हरि करता वड वड्याईआ। विष्नूं सद्दे इक दरबार, पड़दा उहला परे हटाईआ। आ दस्स मेरे सच्चे यार, सच कहाणी दे सुणाईआ। तेरे हत्थ दित्ता भण्डार, वस्त अमोलक झोली पाईआ। कलयुग अन्तिम वेख ग़रीब निमाणे रोवण ज़ारो ज़ार, भुख्यां भुक्ख ना कोए गंवाईआ। उच्ची कूकण सारे करन पुकार, प्रभ साचे हो सहाईआ। मेरा खेल सदा निरगुण धार, सरगुण देवणहार वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लै अवतार, निरगुण सरगुण साची बूझ बुझाईआ। कागद कलम शाही बण लिखार, कातब इक्को लेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुछणहारा साचा घर, धुर दा हुक्म सुणाईआ। विष्नूं कहे मेरे भगवान, प्रभ तेरी वड वड्याईआ। तूं दाते दित्ता सच्चा दान, हउँ सेवक रूप अख्वाईआ। मैं लख चुरासी करां पहिचाण, वेखां थाउँ थाईंआ। जो गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत रसना जिह्वा तैनूं गाण, तिन्हां लेखा देवां थाउँ थाईंआ। पूरब जन्म दा लहिणा झोली पावां आण, सच भण्डारा इक वखाईआ। तिन्हां सिदक सबूरी देवां सच ईमान, मन डोले ना अडुल दयां वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरे हुक्मे अन्दर सेव कमाईआ। ब्रह्मे आ जा लँघ के अन्दर खेड़े, हरि खिड़की आप खुल्हाईआ। चारों कुण्ट सृष्ट सबाई वेख तेरा ब्रह्म लग्गे कोई ना नेड़े, दूर दुराडा बैठा पल्लू छुडाईआ। घर घर मन वासना कूड़ी क्रिया पाए झेड़े, झगड़ा सके ना कोए मिटाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार घर घर अन्दर लाए डेरे, बाहर सके ना कोए कढ्ढाईआ। मैं वेंहदा रिहा कर के वड्डे जेरे, सचखण्ड बहि के ध्यान लगाईआ। कवण करे हक़ निबेड़े, सच हकीकत दए समझाईआ। मेरे नालों विछड़े तेरे, तेरे तेरे नाल संग ना कोए निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुछणहारा बेपरवाहीआ। ब्रह्मा नेत्र रो करे अरदास, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। शाह पातशाह शहिनशाह मेरे शाबास, बेपरवाह तेरी सरनाईआ। मैं लख चुरासी घट घट अन्दर आत्म जोत दित्ता प्रकाश, जोत निरँजण

डगमगाईआ। पवण स्वामी नाल चलाया स्वास, साह साह इक्को हुक्म सुणाईआ। परम पुरख दे सारे रहो दास, मात गर्भ सिख्या इक समझाईआ। जिस दे विचों उपजी तुहाढ्ढी शाख, सो शहिनशाह भुल्ल कदे ना जाईआ। अग्नी हवन कुण्ड अन्दर मात गर्भ सारे आए आख, बिन रसना जिह्वा कूक सुणाईआ। पारब्रह्म दे वसीए सदा साथ, विछड़ कदे ना जाईआ। बाहर आ के भुल्ली तेरी गाथ, प्रभू मैं की जाणां तेरी वड्याईआ। त्रैगुण माया तेरी पाए रास, आप आपणा रूप वखाईआ। पंज तत जिस दी रखदे आस, सो आसा आसा नाल मिलाईआ। रल के कूड़ी क्रिया करदे भोग बलास, आत्म सेज ना कोए हंढ्ढाईआ। साचे मन्दिर किसे ना दिसे प्रकाश, एका नूर जोत करे ना कोए रुशनाईआ। कलयुग अन्तिम सदी वीहवीं मैं वी होया निरास, निरासा हो के तेरे अग्गे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सद मिले तेरी वड्याईआ। शंकर अन्दर आउणा लँघ, भोले नाथ प्रभू जणाईआ। जटा जूट तेरा वज्जे ना कोए मृदंग, वड अवधूत तेरा नाद ना कोए सुणाईआ। कवण दुआरे त्रिसूल दिती टंग, त्रैगुण पन्ध सके ना कोए मुकाईआ। ढोला कोई ना गाए सच्चा छन्द, साचा राग ना कोए अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची सिख्या इक जणाईआ। भोला नाथ तन भबूत, ख़ाकी ख़ाक रमाईआ। पारब्रह्म मैं वेखां चारे कूट, दहि दिशा नैण उठाईआ। सृष्ट सबाई जूठ झूठ, तेरा मेरा भय ना कोए रखाईआ। सच दिसे ना कोए कलबूत, कलमा नबी ना कोए अलाईआ। नज़र ना आए हक़ महिबूब, मुहब्बत करे ना कोए बेपरवाहीआ। मिले माण ना किसे अरूज, महिफ़ूज वेख कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, बिन तेरी किरपा मेरी त्रिसूल कम्म किसे ना आईआ। मेरी त्रिसूल दा कोई ना डर, कलयुग अन्तिम बल वधाईआ। घर घर अन्दर गया वड़, आपणा राह वखाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार बणाए गढ़, पंज तत काया डेरा बैठा लाईआ। आसा तृष्ना माया ममता इक्को राग रिहा पढ़, तेरा नाउँ सके ना कोए ध्याईआ। अबिनाशी करते तेरे कोलों लै के वर, तेरा हुक्म सीस टिकाईआ। खेले खेल विच नारी नर, बचया कोई रहिण ना पाईआ। अग्नी लम्बू सारे रहे सड़, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरा लेखा बिन तेरे पूर ना कोए कराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर अन्दर आओ लैणा वेख, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। लोकमात वेखो कूड़ा भेख, नाउँ सति रिहा कुरलाईआ। कोई ना वसे सच्चा देस, सुहञ्जणी रुत्त नज़र ना आईआ। भरमे भुल्ला मुसायक मुल्लां शेख़, कुतब गौंस धीर ना कोए धराईआ। पंडत पांधा कूड़ी माया करे हेत, ब्रह्म विद्या दए ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, नेत्र नैणां नाल वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर नेत्र पेख, प्रभ साचे अग्गे देण सुणाईआ। पुरख अकाल असीं सारे तेरी दस्स के आए टेक, धुर दा हुक्म मात जणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान चारे खाणी बाणी लिख के आए लेख, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म काया मन्दिर अन्दर साचा करना हेत, हितकारी इक्को इक समझाईआ। निज नेत्र लोचण नैण पारब्रह्म पतिपरमेश्वर हरि सन्त स्वामी लैणा वेख, आत्म सेजा सोभावन्त बैठा डेरा लाईआ। नाम निधान श्री भगवान तेरा धुर दी मस्तक लाई मेख, जोत ललाटी नूर कर रुशनाईआ। शब्दी सुरती दस्स के आए अगम्मी खेड, हाणी हाणीआं नाल मिलाईआ। जुग चौकड़ी साहिब स्वामी तूं आपणे हुक्मे अन्दर दित्ता भेज, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा हुक्म वरताईआ। तेरा जोती नूर जलवा दस्स के आए तेज, नूर नुराना इक्को बेपरवाहीआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी लख चुरासी अन्दर वड़ के माणे सेज, सच सिँघासण आसण लाईआ। उस दा दे के आए आप संदेस, धुर सुनेहड़ा इक सुणाईआ। जिस दे हुक्मे अन्दर विष्न ब्रह्मा महेष, शिव शंकर बण सेवक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे इक्को ओट तकाईआ। त्रैगुण माया वेख झाकी, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। लहिणा देणा प्रभ जो बाकी बाकी-नवीस, वही खाता रिहा वखाईआ। तेरी अन्तिम नेड़े आई तरीक, तहकीकात करे नूर खुदाईआ। कवण दुआरे लग्गी तेरी प्रीत, दर आ के सच दे समझाईआ। त्रैगुण माया नेत्र रो कहे प्रभू मैं दस्सां ठीक, सच सच जणाईआ। कूड़ी क्रिया नाल रल के मैं सब नूं ल्या जीत, हार सब दी झोली पाईआ। मुल्लां शेख़ मुसायक कीते पलीत, पतित बैठे रूप वटाईआ। अन्दर वड़ के बदली नीत, साबत सूरत नज़र कोए ना आईआ। काम क्रोध दी पाई भीख, आसा तृष्ना नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरे हुक्मे अन्दर सेव कमाईआ। पंज तत अन्दर आओ लँघ, सो सतिगुर आप लँघाईआ। पारब्रह्म कोलों ना जाणा संग, जिस तुहाढ्ढी बणत बणाईआ। रक्त बूँद हड्ड मास नाड़ी बणाया अंग, नव दुआर खोल्ह वखाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण कीता खेल सूरे सरबँग, धुर दी धार आप बंधाईआ। निरगुण नूर अन्दर चाड़्ह्या चन्द, जोती जोत कर रुशनाईआ। आत्म सेज सुहाया सच पलँघ, पावा चूल ना कोए बणाईआ। अमृत धार वहा के पाई ठंड, सच सरोवर ताल सुहाईआ। इक सुणाया आत्म परमात्म सोहँ सच्चा छन्द, जिस वेले पंज तत तेरी बणत बणाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म दित्ता इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच रखाईआ। खेल वेखण दे कारण विच रखाई अगम्मी कंध, पड़दा नज़र किसे ना आईआ। आ के हाल दस्स मेरे लाडले चन्द, क्यों बैठा प्रभू भुलाईआ। की तेरे वंडे सति धर्म ना आई वंड, जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सब दा लेखा मंग मंगाईआ। पंज तत अग्गों कर पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। वाह वा दाते मेरे सिरजणहार, सच सुल्तान तेरी वड्डी वड्याईआ। तेरे हुक्मे अन्दर कीता आकार, निराकार साकार रूप वखाईआ। मिल के पंजां बद्धी तेरी धार, जोड़ी जोड़ जोड़ जोड़ाईआ। दोए जोड़ कीती निमस्कार, दर तेरे वास्ता पाईआ। किरपा कर सच्ची सरकार, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। हउँ सेवक बरखुरदार, साची सेव कमाईआ। सानूं दस्स जगत विहार, किस बिध तेरा राह चलाईआ। तूं किरपा कर निरँकार, नौ दुआरे दर खुल्हाईआ। आसा तृष्ना अन्दर डाल, माया ममता गंढु पुआईआ। काम क्रोध लोभ माह हँकार साडे अन्दर दित्ता स्वाल, उपर आपणी थपकी लाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द जगत हरस हवस दित्ता स्वाद, साधना आपणी नाल मिलाईआ। कर के चोरी अन्ध घोरी, काया अन्दर पड़दे निक्की मोरी आपणे हथ्थ रखाईआ। कोई ना जाणे खेल तोरी मेरी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरे हुक्मे अन्दर जुग जुग सेव कमाईआ। पंज तत सुण कर ख्याल, ख़ालक ख़लक वासी आप जणाईआ। तेरे अन्दर रख्या इक दलाल, वड दाता बेपरवाहीआ। पड़दे अन्दर दित्ता बिठाल, बंद दरवाज़ा आप कराईआ। साचा हुक्म दित्ता इक्को नाल, धुर संदेसा आप अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सब दा लेखा रिहा वखाईआ। पंज तत कहिण मेहरवान, प्रभ तेरी वड्डी वड्याईआ। तेरा सुणदे रहे फ़रमान, घर बैठे ताड़ी लाईआ। जुग चौकड़ी बीते विच जहान, कोटन कोटि नाल लँघाईआ। साडी किसे ना कीती पड़ताल, पड़ताली फेरा कोए ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो मन्त्र गए सिखाल, सो रसना जिह्वा दिती समझाईआ। बेपरवाह तेरी समझ ना आई चाल, चाल निराली इक रखाईआ। कलयुग अन्तिम लेखा मंगे हक़ हलाल, हकीकत वेखे थाउँ थाईंआ। हउँ बालक बाल अञ्याण, ढह पए तेरी सरनाईआ। तूं सब दा श्री भगवान, बेअन्त तेरी वड्याईआ। तेरे हुक्मे अन्दर खेल कीता महान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण रूप वटाईआ। धन्न भाग परमात्म आपणी आत्म मिलें आण, साडा खैहड़ा दएं छुडाईआ। जन भगत करें परवान, साचे सन्तां आपणी गोद बिठाईआ। अन्तिम जोती मेलें आण, साडा पंज तत चोला आपणे चरणां विच रखाईआ। मुड़ के फिर नाता जुड़े ना विच जहान, कूड़ा बन्धन ना कोए रखाईआ। तेरे हुक्मे अन्दर बणे मात महमान, जगत महमानी गए खाईआ। अग्गे वासते साडा खाणा पीणा कर दे हराम, इक्को आपणा अमृत नाम जाम प्याईआ। प्रभ तेरे विच मिलीए आण, साडा निशान कोई नज़र ना आईआ। तूं दाता सच्चा राम, रहमत रहीम रिहा कमाईआ। तेरा कलमा पढ़दे रहे कलाम, इक्को आस बैठे राह तकाईआ। कलयुग अन्तिम मिल्यों आप अमाम, परवरदिगार

फेरा पाईआ। तेरे लेखे लग्गे हड्ड मास नाड़ी चाम, रक्त बूँद तेरी झोली पाईआ। साडी सेवा ला लेखे निष्काम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। पंज तत मैं दया कमावांगा। तेरा लहिणा मूल चुकावांगा। साचा हुक्म इक वरतावांगा। गुरमुख गुरसिख आप उठावांगा। सन्त सुहेला मेल मिलावांगा। गुर चेला रंग रंगावांगा। भगत भगवान गोद बहावांगा। धर्म निशान इक झुलावांगा। मेहरवान दया कमावांगा। तेरा लेखा वेख वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लहिणा देणा आपणे हथ्थ वखावांगा। पंज तत तेरा लेखा अन्त मुकाएगा। प्रभू हो मेहरवान दया कमाएगा। साची सिख्या इक दृढ़ाएगा। भरम भुलेखा दूर कराएगा। पिछला लेखा लेखे लाएगा। अग्गे साचा देस इक वखाएगा। जिस घर रहिणा सदा हमेश, आवण जावण पन्ध मुकाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाएगा। साची सिख्या इक दृढ़ावेगा। पंज तत तैनूं समझावेगा। ब्रह्म मति इक्को रखावेगा। चरण कँवल नत आप बंधावेगा। आप आपा कर के वस, वसीकार आप अख्वावेगा। तेरे अन्दर दे के रस, रस आपणा आप प्रगटावेगा। साचा मार्ग देवे दस्स, दहि दिशा हुक्म वरतावेगा। कर खेल पुरख समरथ, लेखा हथ्थो हथ्थीं चुकावेगा। जो तेरे अन्दर वड़ के मेरी आत्मा सोहँ ढोला गाए जस, तिस दा पंज तत आपणी झोली पावांगा। वेले अन्त पत लए रख, रक्षया कर के आप वखावांगा। साचे पड़दे अन्दर लवां ढक, आपणे हुक्म विच समावांगा। सब दा लहिणा देणा देवां हक़, ठग्गी नाल ना किसे कमावांगा। जो मेरा नाम लैण तों गए अक्क, तिन्हां जुग जुग तेरे अन्दर जून भवावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा वेख वखावांगा। पंज तत कहे मैं रौला पावांगा। उच्ची कूक कूक सुणावांगा। नौ दुआरे आपणे बंद करावांगा। आसा तृष्ना मेट मिटावांगा। हउमे हंगता बुरज ढाहवांगा। भुक्खा नंगा हो के इक्को सेव कमावांगा। दर तेरे बहि के मंगां, झोली ख़ाली आप भरावांगा। दोए जोड़ कहां तूं वजा अगम्म मृदंगा, धुन राग इक सुणावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगावांगा। दर तेरे मंग मंगांगा। प्रभ साचे कदे ना संगागां। प्रेम प्रीती आपणी चोली रंगांगा। नीवां हो के दर तेरे ते मंगांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सद तेरे चरणां हेठां रहि के वसांगा। जो मेरे चरण ध्यान लगाएगा। नेत्र नैण निज खुल्हाएगा। जगत अन्धेर मिटाएगा। सञ्झ सवेर इक्को नज़री आएगा। कूड़ी क्रिया होवे ढेर, भाण्डा भरम भउ भंनाएगा। सुत गोबिन्द नज़री आए शेर, भबक दो जहान सुणाएगा। मेहरवान कर के मेहर, मेहर नज़र इक उठाएगा। तेरा कट

चुरासी गेड़, झेड़ा अगला पिछला आपणी झोली पाएगा। नज़री आए नेरन नेर, दूर दुराडा पन्ध मुकाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा नाम इक सुणाएगा। साचा नाम इक सुणावेगा। सो पुरख निरँजण दया कमावेगा। हँ ब्रह्म भेव खुलावेगा। निरगुण निरगुण वेख वखावेगा। सोहँ आपणा रूप जणावेगा। शाहो भूप हुक्म मनावेगा। चारे कूट वेख वखावेगा। ख़ाली ठूठ भन्न वखावेगा। जन भगतां अन्तर तुठ, मेहर नज़र नैण तकावेगा। अमृत जाम प्याए घुट्ट, अंमिउँ रस इक्को रस चखावेगा। निरगुण प्रकाश कर जोत, जोती जोत डगमगावेगा। नाम सुणा अगम्मी श्लोक, साचा नाद धुन उपजावेगा। अन्तिम ढाह के काया बुरज, सचखण्ड दुआरे आप बहावेगा। ओथे देवे साची मौज, मौजूद हो के आपणा दरस दखावेगा। बेशक पंज तत तैनूं जगत सनबंधी सारे कर देण फ़ौत, अग्नी भेंट फड़ चढ़ावेगा। तेरा साहिब पुरख अकाल दीन दयाल बण के धुर दा खौंत, तेरे अन्दरों तेरे मन्दिरों आपणी नार कन्त भगवन्त प्रनावेगा। सचखण्ड लै के जाए नाल शौक, विष्न ब्रह्मा शिव राह विच बैठा सीस झुकावेगा। ओथे कोई ना सके पहुंच, जिस घर भगवन आसण लावेगा। एह भगतां चलाई रौंस, रहबर इक्को इक अख्वावेगा। पुरख अकाल सब दा दाता इक्को बहुत, देंदयां थक्क कदे ना जावेगा। तेरी आसा मनसा पूरी करे लोच, तृष्ना तृखा मेट मिटावेगा। अग्गे रहिण ना देवे कोई सोच, सोच आपणी इक समझावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत भगवान हो मेहरवान, पंज तत कर कल्याण, कर्म कांड डेरा अन्तिम ढाहवेगा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, आदि जुगादि सदा मेहरवान, लेखा जाणे दो जहान, जीव जंत लख चुरासी जून अजून चारे खाणी लेखा पूर करावेगा।

✪ १५ अस्सू २०२० बिक्रमी रामू वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

श्री भगवान किरपा करे प्रभ आप, जुग जुग आपणी दया कमाइंदा। जन भगतां बणे माई बाप, पिता पूत गोद उठाइंदा। धुर दा देवे सच्चा जाप, नाम अनमुल्ला झोली पाइंदा। सच प्रीती बन्ने नात, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाइंदा। धुर दी बाणी सुणाए गाथ, अक्खर वक्खर आप दृढ़ाइंदा। साचे शब्द चढ़ाए राथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। मेटे रैण अन्धेरी रात, नूरी साचा चन्द चमकाइंदा। साचे घर बैठा रहे इक इकांत, अक्ल कलधारी पड़दा लाहइंदा। नाता तोड़ ज़ात पात, आत्म ब्रह्म इक समझाइंदा। साची सिख्या देवे सच्चो साच, कूड़ी क्रिया डेरा ढाइंदा। भाग लगाए काया माटी पंज तत काच, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश सोभा पाइंदा। सदा सहाई होए अनाथां नाथ, ग़रीब निमाणे गले लगाइंदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। भगतन मीता एकँकार, हरि करता वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी वेखे चार, चारों कुण्ट फोल फोलाईआ। चारे दिशा खोल्ह किवाड़, चौथे पद दए मिलाईआ। चारे बाणी बोल जैकार, चारे खाणी डेरा ढाहीआ। चार यारी कर प्यार, प्रीतम प्रीत इक निभाईआ। देवणहार शब्द आधार, नाम सति आप वरताईआ। मेट मिटाए अन्ध अँध्यार, कूड़ कुड़यार रहिण ना पाईआ। घर दीपक कर उज्यार, जोती जोत करे रुशनाईआ। धुर दी बाणी सुणाए अगम्मी धार, अनहद नादी नाद राग अल्हाईआ। अंमिउँ रस अमृत आत्म दए प्याल, निझर झिरना इक झिराईआ। भाग लगाए काया मन्दिर सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेखे चाईं चाईंआ। भगत जनां प्रभ सच्चा ठाकर, हरि करता आप अख्वाइंदा। भाग लगाए काया गागर, गहर गम्भीर डूंघा सागर फोल फोलाइंदा। नाम अपार कराए वणज इक सौदागर, सौदा साचे हट्ट विकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग हरिजन आप उठाइंदा। भगत जनां हरि बण के मीता, मित्र प्यारा आप अख्वाईआ। आपणे मिलण दी दस्से रीता, दूजी करे ना कोए पढ़ाईआ। निरगुण हो के वसे चीता, सरगुण बूझ दए बुझाईआ। मिट्ठा कर के कौड़ा रीठा, रस अमृत दए भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन लेखा दए मुकाईआ। भगत जनां प्रभ साचा संग, हरि करता आप रखाइंदा। अन्दर वड़ वजाए मृदंग, तन्द सितार आप हिलाइंदा। काया चोली चाढ़ रंग, दुरमति कूड़ी मैल धवाइंदा। गीत सुणा सुहागी छन्द, आत्म परमात्म राग अल्हाइंदा। भरम भुलेखा दूई द्वैती ढाह कंध, साचा मन्दिर इक सुहाइंदा। कर प्रकाश बिन सूरज चन्द, जोती नूर डगमगाइंदा। पड़दा लाह हँ ब्रह्म, पारब्रह्म आपणा राह वखाइंदा। जिस धारों आत्म पए जम्म, सो परमात्म आपणा भेव चुकाइंदा। निरगुण हो के निरगुण बेड़ा देवे बन्न्ह, सरगुण सगला भार उठाइंदा। आत्म परमात्म परमात्म आत्म मिल के कहे धन्न धन्न, दूजा शब्द ना कोए अल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे पैज रखाइंदा। जन भगतां मेला करे मिलाप, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। जन्म कर्म दा मेटे संताप, रोग सोग चिन्ता हरख दए गंवाईआ। सति सतिवादी दस्स आपणा जाप, रसना जिह्वा बत्ती दन्द सेवा लाईआ। काया मन्दिर अन्दर दिवस रैण रहे पाठ, अट्ठे पहर ढोला सोहला रिहा गाईआ। कोट जन्म दे उतार पाप, पतित पुनीत दए वखाईआ। प्रगट होए साख्यात, निरवैर पुरख आपणा दरस दिखाईआ। बंद कवाड़ी खोल्ह ताक, पड़दा दूई दए चुकाईआ। अन्दर वड़ के जाए आख, उठ भगत श्री भगवान मेला रिहा मिलाईआ। आदि तेरी मेरी इक ज़ात, मध रंग रिहा चढ़ाईआ। अन्तिम देवे साचा साथ, हरि सतिगुर वड वड्याईआ। इक्को ढोला

रसना जिह्वा बोल आख, तूं मेरा मैं तेरा दूजा अवर ना कोए गोसाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत दए वड्याईआ। जन भगतां मीता मित्र स्वामी, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी अन्तरजामी, लख चुरासी घट घट अन्दर वेख वखाईआ। बोध अगाध शब्द धुन नाद सुणाए बाणी, अणयाला तीर इक लगाईआ। सर सरोवर अमृत आत्म ठंडा पाणी, सर इक्को इक वखाईआ। लहिणा देणा चुकाए चार खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज नाता दए तुड़ाईआ। शब्द मिलावा साचा हाणी, घर सुरती खुशी मनाईआ। आत्म परमात्म देवे पद निरबाणी, निरबाण पद इक वखाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मिल के गाए सच कहाणी, रसना जिह्वा कथनी कथ ना सके राईआ। भगत भगवान दोहां मिल के दो जहान दिसे इक निशानी, दूजी रंगत नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन लेखा दए चुकाईआ। भगत जनां प्रभ सज्जण एक, सो पुरख निरँजण आप अख्वाइंदा। एथे ओथे दो जहानां देवे टेक, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। कर किरपा करे बुध विवेक, विवेकी आपणे नाल रलाइंदा। त्रैगुण माया ना लाए सेक, अग्नी तत तत्त ना कोए जलाइंदा। कूड़ी क्रिया मेटे रेख, रेखा आपणी आप समझाइंदा। अन्दर वड़ के देवे भेत, बाहरों नज़र किसे ना आइंदा। धुर मस्तक लाए मेख, नाम निधाना सच निशाना इक जणाइंदा। आत्म परमात्म कर के हेत, सच प्रीती आप लगाइंदा। निज नेत्र लए पेख, दोए लोचन बंद वखाइंदा। बिन कलम शाही लिख के लेख, लेखा आपणे विच छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सद वडियाइंदा। जन भगत वड्याई चार जुग, जुग चौकड़ी रहे जस गाईआ। जिन्हां सुहाए प्रभ आप रुत्त, रुत्त रुतड़ी नाल महकाईआ। कर किरपा बणावे आपणे सुत, पिता पूत गोद उठाईआ। दो जहान एथे ओथे अद्धविचकार कोई ना लए पुच्छ, विष्न ब्रह्मा शिव सारे बैठण सीस निवाईआ। सतिकार वासते गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे जाण उठ, उठ उठ आपणी खुशी मनाईआ। श्री भगवान नौजवान मर्द मर्दान शाह सुल्तान एका जाए तुठ, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। लोकमात दा बूटा पुट, सचखण्ड दुआरे पत डाली फुल महकाईआ। नित नवित्त कदे ना जाए सुक्क, ख़िज़ां रूप ना कोए वखाईआ। प्रेम प्रीती सच प्यार नाल जाए झुक, आपणा सीस ना कोए रखाईआ। प्रभ सरनाई चरण कँवल हेठां जाए लुक, निवण-सो-अक्खर आपणी धार समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां दए वड्याईआ। जन भगत वड्याई अन्तिम कलयुग, हरि करता आप जणाइंदा। लख चुरासी विच्चों थोड़े भगत चुग, निरगुण निरवैर आपणा मेल मिलाइंदा। निर्मल कर के साची बुध, सूझ बूझ इक समझाइंदा। माणस जन्म लख चुरासी विच्चों निक्का हिस्सा मिल्या

६७६ ੧੫

तुछ, बिन श्री भगवान अन्तिम कम्म किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे आपणी सुध, सिध्धा राह इक वखाइंदा। सिध्धा राह देवे दस्स, सो सतिगुर दया कमाईआ। हिरदे अन्दर आप वस, हर हरि का रूप जणाईआ। सच सुच्च कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। जन्म कर्म दी पूरी कर आस, आसा मनसा लेखे लाईआ। निरगुण हो के आवे पास, सरगुण सोया लए उठाईआ। भगत भगवान रल मिल इक्को मण्डल पावण रास, गोपी काहन रूप वटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला गावण ख़ास, ख्वाहिश अवर ना कोए रखाईआ। साचा पढ़न इक्को जाप, जग जीवण दाता दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगतन मेला सहिज सुभाईआ। कलयुग अन्तिम भगतन मेला, निरगुण निरवैर नर हरि नरायण आप कराइंदा। एका धाम सुहाए गुरु गुर चेला, चेला गुर आपणे रंग रंगाइंदा। परम पुरख हरि करता बण के सज्जण सुहेला, सतिगुर साचा संग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगतन मीता इक्को नज़री आइंदा। भगतन मीता इक अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। वसणहारा दरबार ठांडे सीत, सचखण्ड बैठा आसण लाईआ। नित नवित्त सुणाए आपणा गीत, सोहला सच्चा राग जणाईआ। लेखा जाण हस्त कीट, ऊँच नीच डेरा ढाहीआ। जिस जन बख्शे चरण कँवल सच प्रीत, प्रीतीवान दया कमाईआ। तिस भगत भगवान मिले ठीक, ठाकर आपणा फेरा पाईआ। प्रभ मिलयां नाता छुट्टे मन्दिर मसीत, घर अन्दर काया मन्दिर पुरख अकाल निरगुण नूर जोत नज़री आईआ। जन्म कर्म दी पूरी होए घाल, कीती घाल लेखे पाईआ। पढ़न लिखण दा कोई ना रहे स्वाल, जिस पारब्रह्म प्रभ मिल्या बेपरवाहीआ। दो जहानां बणे दलाल, एथे ओथे होए सहाईआ। नेड़ ना आए अन्तिम काल, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। साचे मन्दिर दरगाह साची दए बहाल, थान थनंतर इक वखाईआ । अन्त कन्त भगवन्त जोती जोत मिलाए आण, आप आपणे विच समाईआ। भगत भगवान दोवें वसण इक मकान, सचखण्ड साचे साची वज्जी वधाईआ । कलयुग अन्त जिन्हां प्रभ कीता आप परवान, तिन्हां परमगत मिले सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत तारनहारा थाउँ थाईंआ।

६७८ ६७८

१५ १५

✪ १५ अस्सू २०२० बिक्रमी सुहावा सिँघ मुख़तार सिँघ शेर सिँघ दे गृह पंज गराईं ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सतिगुर पूरा सदा मेहरवान, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादी साचा काहन, दो जहानां होए सहाईआ। देवणहारा नाम निधान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। शब्द अगम्मी धुर फ़रमान, सच संदेसा इक सुणाईआ। आत्म अन्तर देवे ब्रह्म ज्ञान, साचा करे नाद धुन शनवाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे कूड़ निशान, धर्म निशाना दए वखाईआ। भाग लगाए काया मन्दिर सच मकान, घर घर विच सोभा पाईआ। अमृत आत्म बख़्शे पीण खाण, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे पंज शैतान, शरअ करे ना कोए लड़ाईआ। दीपक जोत जगाए महान, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। आत्म सेजा कर परवान, सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। तख़्त निवासी नौजवान, नर हरि नरायण आपणा भेख वटाईआ। दरस देवे निज घर आण, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे वेख वखाईआ। सतिगुर पूरा दीन दयाल, दयानिध अख्वाइंदा। जुग चौकड़ी करे सदा प्रितपाल, बण प्रितपालक सेव कमाइंदा। गुरमुख उठाए आपणे लाल, निरगुण सरगुण आपणा रंग चढ़ाइंदा। नाता तोड़ काल महाकाल, मेहरवान आपणी नज़र टिकाइंदा। फल लगा साचे डाल, पत डाली फुल फल आप महकाइंदा। देवणहारा जन्म कर्म पूरब दी घाली घाल, लहिणा देणा झोली पाइंदा। आपे सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जग जीवण दाता आपणी बूझ बुझाइंदा। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर चले नाल, जगत नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत आप जणाए सच सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्को इक वडियाइंदा। जिस गृह मन्दिर वसे एकँकार, इक इकल्ला सोभा पाइंदा। सो साहिब सतिगुर सज्जण मीत मुरार, निरगुण सरगुण विछड़ कदे ना जाइंदा। माणस जन्म पैज दए स्वार, मानव मानुख आपणे लेखे लाइंदा। सच प्रीती दए चरण प्यार, चरण चरणोदक अमृत आत्म जाम मुख चुआइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाइंदा। सतिगुर पूरा गहर गम्भीर वड गुण सागर, बेअन्त भेव कोए ना पाईआ। जन भगतां निर्मल कर्म करे उजागर, दुरमति मैल देवे लाहीआ। साचा वणज कराए नाम सौदागर, हट्ट इक्को इक खुल्हाईआ। मेहरवान हरि करता कादर, करीम रहमत आपणी आप दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे दर घर साचे आदर, आदर्श आपणा इक्को इक रखाईआ। सतिगुर पूरा साहिब स्वामी, शाह पातशाह इक अख्वाइंदा। सर्ब जीआं घट अन्तरजामी, लख चुरासी वेख वखाइंदा। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर बोध अगाध शब्द अगम्म सुणाए बाणी, भेव अभेदा आप खुल्हाइंदा। अमृत ठांडा घर देवे इक्को पाणी, सर सरोवर इक्को इक

वखाइंदा। सुरती शब्दी मेल मिलावा साचे हाणी, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, ब्रह्म वेता ठांडा सीता, त्रैगुण अतीता अग्नी तत लोकमात बुझाइंदा। सतिगुर पूरा पारब्रह्म, प्रभ वड्डा वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी निहकर्मी करे आपणा कर्म, गुरमुखां कर्म कांड डेरा ढाहीआ। सच सुच्च सच वेखणहारा धर्म, धुर दी धार जणाईआ। जिस जन बख्शे आपणी सरन, तिस जम पोह ना सके राईआ। लेख चुकाए मरन डरन, डरन मरन आपणी झोली पाईआ। करता पुरख करतार हरि करनी करन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन आपणे लेखे पाईआ। सतिगुर पूरा पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता आपणा खेल कराइंदा। जुग चौकड़ी जन भगतां होए दास, बण सेवक सेव कमाइंदा। आदि अन्त श्री भगवन्त कटणहारा जम का फास, फाँसी जम तोड़ तुड़ाइंदा। निर्धन सरधन पूरी करनहारा आस, आसा तृष्ना आपणे लेखे लाइंदा। जो जन रसना गाउँदे स्वास स्वास, बत्ती दन्द ढोला राग अला़इंदा। तिन्हां साहिब सतिगुर सदा सदा सद वसे पास, पुरख अकाल दीन दयाल विछड़ कदे ना जाइंदा। वेख वखाए पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल पुरी लोअ अकाश ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सर्ब गुण तास, गुणवन्त श्री भगवन्त हरिजन साचे दया कमाइंदा। सतिगुर पूरा चाकर ख़ाक, वड सेवक रूप वटाईआ। जन भगतां देवे सदा साथ, सगला संग आप निभाईआ। होए सहाई अनाथां नाथ, दीनन आपणे गले लगाईआ। सच चढ़ाए अगम्मी राथ, बण रथवाही आप चलाईआ। आत्म परमात्म तूं मेरा मैं तेरा जिन्हां सोहँ जणाए गाथ, तिन्हां एका रंग दए रंगाईआ। पूरब लहिणा देणा चुके मस्तक माथ, अगला लेखा सतिगुर साहिब सुल्तान दए समझाईआ। प्रभ सरनाई इक्को घाट, शौह दरया सके ना कोए रुढ़ाईआ। अन्तिम वेले रखे पात, पतिपरमेश्वर होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिगुर सच्चा सदा सुहेला जन भगतां रखे आपणा मेला, दूसर नज़र किसे ना आईआ। सतिगुर पूरा गहर गम्भीर, गुण सागर खेल खलाइंदा। आदि जुगादी वड पीरन पीर, बेनज़ीर नज़र आप उठाइंदा। बदलणहार जगत तकदीर, तदबीर आपणी आप समझाइंदा। कटणहारा शरअ ज़ंजीर, नाम शमशीर हथ्थ उठाइंदा। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत होण ना दए दिलगीर, नाम दलासा इक रखाइंदा । कूड़ी क्रिया कटे भीड़, रोग सोग चिन्ता दु:ख गवाइंदा। सच अमृत प्याए आपणा सीर, सीतल धारा इक वहाइंदा। वेखणहारा शाह हकीर, राज राजान शाह सुल्तान आपणे हुक्म चलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम लेखा आपणे हथ्थ रखे अख़ीर, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ाइंदा। सतिगुर पूरा श्री भगवन्त, भगवन इक्को इक अख्वाईआ।

लख चुरासी जीव जंत, चारे खाणी फोल फोलाईआ। लख चुरासी बण सुहागी कन्त, निरवैर पुरख इक इकल्ला हर घट सेज रिहा हंढाईआ। पंज तत काया त्रैगुण मेला बणाए बणत, घाड़त घड़े बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन वेखे वेखणहारा बेपरवाहीआ। सतिगुर पूरा श्री भगवान, भगवन इक्को इक अख्वाईआ। होए सहाई जगत जहान, जागरत जोत कर रुशनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी एका नाम करे प्रधान, सच प्रधानगी आप समझाईआ। सर्ब जीआं दा बण के काहन, लोकमात मण्डल मण्डप आपणी रास रचाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी देवे इक ज्ञान, अनरागी आपणा राग सुणाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म वखाए इक निशान, घर घर विच रिहा उठाईआ। सच सरोवर अमृत देवे पीण खाण, तृष्ना भुक्ख जगत रहे ना राईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां दर घर साचे देवे माण, डुब्बदे पाथर लए तराईआ। सच संदेसा नर नरेशा सतिगुर पूरा देवे आण, धुर दा कलमा इक्को हुक्म आप जणाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिगुर वड्डा वड वड्याईआ। सतिगुर वड्डा वड वड्याई, शास्त्र सिमरत वेद पुराण जुग चौकड़ी ध्यान लगाइंदा। नित नवित्त गुर अवतार पीर पैगम्बर साध सन्त भगत भगवन्त करे कुड़माई, घर साचे सगन मनाइंदा । काया मन्दिर अन्दर इक्को घर वखाए धी जवाई, सुरती शब्दी आपणी गंढु पवाइंदा। करे खेल वड दाता बेपरवाही, बेअन्त अथाह आपणा हुक्म वरताइंदा। हरिजन बख्शे इक सरनाई, सरनगति इक्को इक दृढ़ाइंदा। दरस वखावे निरगुण नूर जोत कर रुशनाई, स्वच्छ सरूपी रूप वटाइंदा। पकड़ उठाए फड़ फड़ बांहीं, फड़ बाहों गले लगाइंदा। देवणहारा ठंडी छाईं, समरथ पुरख सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। सतिगुर पूरे सद बलि बलि जाईं, जो दो जहान आपणा हुक्म इक वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। सतिगुर पूरा सच्चा सज्जण, ठाकर इक्को नज़री आईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी दर्द दु:ख भय भंजन, भव सागर पार कराईआ। जन भगतां नेत्र नाम निधान पाए अंजन, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। चरण धूढ़ कराए साचा मजन, पंज तत दुरमति मैल रहिण ना पाईआ। शब्द अनादी ताल अनहद वज्जण, घर घर विच राग अलाईआ। निरगुण नूर दीपक जोती जगण, दीवा बाती तेल ना कोए रखाईआ। नज़री आए पुरख अकाल मूर्त मदन, मध सूदन आपणा भेव चुकाईआ। आत्म परमात्म सच प्रीती लाए इक्को लग्न, लग्गी प्रीती तोड़े कोए ना राईआ। कलयुग कूड़ी आप मिटाए अग्न, त्रैगुण माया डेरा ढाहीआ। जिन्हां कर किरपा मुख सोहँ लगाया सगन, साचा नाता ल्या जुड़ाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर अन्तर आत्म एहो करदे रहे भजन, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ । लख

चुरासी काया भाण्डे ठीकर सब दे भज्जण, थिर कोए रहिण ना पाईआ। जन भगतां साचे सन्तां श्री भगवान अन्तिम आपे आवे सद्दण, शब्द बबाणा नाल लिआईआ। लख चुरासी विच्चों आवे कढ्ढण, अगला पिछला ठेका दए मुकाईआ। दरगाह साची आवे छड्डण, खैहड़ा छुट्टे सर्ब लोकाईआ। धुर दा बेड़ा आवे बन्धन, बंदीख़ाना तोड़ तोड़ाईआ। मस्तक टिक्का लाए चरण धूढ़ी चन्दन, जोत ललाट कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी साचा हरि, हरिजन साचे लए तराईआ। हरिजन तारे सतिगुर आप, आपणी दया कमाईआ । निरगुण सरगुण बणे माई बाप, पिता पूत गोद उठाईआ। चरण कँवल उपर धवल इक जणाए सच्चा नात, नाता आपणे नाल रखाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ शब्द अगम्मी जाप, बिन आत्म परमात्म दूजा संग ना कोए वखाईआ। मेट मिटाए तीनों ताप, त्रैगुण डेरा देवे ढाहीआ । मेट मिटाए जगत संताप, संसा रोग दए गंवाईआ। सदा सुहेला देवे सच्चा साथ, सतिगुर शब्द वड्डी वड्याईआ। बिन सतिगुर शब्द कोए ना मेटे अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, जन भगतां देवे इक्को वर, आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को रंग समाईआ। दुनिया दा मालक दीन दयाल, लख चुरासी गेड़ा ल्या भवाईआ। जुग चौकड़ी खेल करे कमाल, करते कीमत किसे ना पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात भेजे बणा सच सची धर्मसाल, जीव जंत करन पढ़ाईआ । शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी बोल जैकार, धुर दा नाअरा गए सुणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नूर इलाही करो इक प्यार, साची सिख्या सिख समझाईआ। मन वासना जगत तृष्ना हउमे हंगता कूड़ी क्रिया दयो निवार, बुध विवेकी रूप वटाईआ। दिवस रैण अट्ठे पहर घड़ी पल साहिब सतिगुर चरण कँवल कँवल चरण धरो ध्यान, अन्तर आत्म इक लिव लाईआ। लख चुरासी विच्चों जो गुरमुख आपणा आप लए स्वार, तिस सारी सृष्टी इक्को रूप नज़री आईआ। कोई गुंजाइश ना रहे अग्गे पुच्छण दा कोई स्वाल, मसला हल घर विच दए कराईआ। जो उपज्या जो जन्मया तिस दे सिर ते कूके काल, बिन गुरमुखां रहित नज़र कोए ना आईआ। ओस सतिगुर नूं लओ भाल, जिस गुरमुखो तुहाढ्ढी बणत बणाईआ। रोग सोग चिन्ता सर्ब मिट जाण, दुःख पोह ना सके राईआ। लेखा जगत जाणे शाह कंगाल, ऊँच नीच ज़ात पात झगड़ा नज़र कोए ना आईआ। पुरख पुरखोतम साहिब स्वामी तुहाढ्ढी करे आप प्रितपाल, कलयुग अन्तिम तत्ती वा ना लग्गे राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, थोड़यां अक्खरां विच बहुता माण रखाईआ। दुनिया दा मालक दुनीदार, हरि साचा इक अख्वाईआ। सो साहिब सब दा सांझा यार, सगला संग निभाईआ। सचखण्ड निवासी

एकँकार, अक्ल कलधारी आपणी खेल रचाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जुग चौकड़ी आउँदे रहे गुर अवतार, पीर पैगम्बर आपणा राह जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बीते विच संसार, कोटी कोट जीव जंत साध सन्त गए फेरा पाईआ। बिन गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत किसे पाई ना हरि की सार, सति सच संग ना कोए रखाईआ। कलयुग अन्त सब नूं दिसे अन्धेरी रात, चार कुण्ट दहि दिशा अन्धेरा छाईआ। दोए जोड़ प्रभ अग्गे करो निमस्कार, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। कृपानिध तुहाढे अन्दर कर किरपा देवे दीदार, बजर कपाटी खोल्ह वखाईआ। तिस वेले दुःख कोई ना रहे विच संसार, सुख आत्म आत्म विच्चों दए दरसाईआ। मन वासना ढह ढेरी होवे ख़ाक, अन्दर शैतान करे ना कोए लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां सदा इक्को रंग रंगाईआ। भगतां रंग चाढ़े गूढ़, उतर कदे ना जाईआ। जिस जन बख्शे आपणी धूढ़, दुःख दर्द संसा रोग दए चुकाईआ। चतुर सुघड़ बणा मूर्ख मूढ़, आपणे धंदे लाईआ। अन्तर दे जोती नूर, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। शब्द अनाद सुणा तूर, तुरिया माण मिटाईआ। नजरी आवे हाज़र हज़ूर, हरि मन्दिर बैठा बेपरवाहीआ। कोट जन्म दे बख्शणहार कसूर, कसर अशारीए विच सब कुछ दए उडाईआ। जो हिरदिउँ हरि दे अग्गे करे बेनन्ती सो आदि जुगादि होए मंज़ूर, बिरथी अरदास गुरमुख कदे ना जाईआ। साहिब सतिगुर सर्ब कला भरपूर, समरथ दाता वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर विच घर वेखो निज नेत्र नैण दए खुल्हाईआ।

✪ १५ अस्सू २०२० बिक्रमी गुलज़ार सिँघ दे गृह पिण्ड शाहो ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

श्री भगवान किरपा कर, गुर अवतार मंग मंगाईआ। परवरदिगार दे वर, पीर पैगम्बर सीस झुकाईआ। कूड़ी क्रिया उखेड़ जड़्ह, लोकमात रहिण ना पाईआ। त्रैगुण अग्नी रही सड़, जीव जंत जगत कुरलाईआ। कोटन कोटि सिफ्ती नाउँ तेरा रहे पढ़, रसना जिह्वा बत्ती दन्द हिलाईआ। ज़ात पात ऊँच नीच कोई ना सके हर, हरि का भेव कोए ना पाईआ। राउ रंक चुके कोए ना डर, भय सके ना कोए मिटाईआ। भरमे भुले नारी नर, हरि नरायण नज़र किसे ना आईआ। बिन हरि नामे ख़ाली दिसण सीस धड़, साची वस्त नज़र कोए ना आईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत दीप लख चुरासी वेख्या घर घर, सुंञे मन्दिर देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, साहिब सतिगुर तेरी सरनाईआ। साहिब सतिगुर हरि स्वामी, वड वड्डे तेरी वड वड्याईआ। आदि जुगादी निरगुण निरवैर अन्तरजामी, बेपरवाह

तेरी सरनाईआ। जुग चौकड़ दी शास्त्र सिमरत गाउँदे तेरी कहाणी, गुर अवतार तेरा नाउँ ध्याईआ। पीर पैगम्बर तेरा रस मंगदे अमृत पाणी, ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। तेरा नाउँ निरँकारा सारे कहिन्दे शाह सुल्तानी, शाह पातशाह इक्को इक अख्वाईआ। तेरा हुक्म आदि जुगादि दो जहानी, ब्रह्मण्ड खण्ड इक्को कार जणाईआ। रूप रंग रेख तेरी नज़र ना आए कोए निशानी, जगत नेत्र दरस कोए ना पाईआ। कलयुग अन्तिम भरमे भुली चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज साचा भेव ना कोए जणाईआ। सार ना पाए चारे बाणी, चारों कुण्ट धीर ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, वर दाते तेरी वड्याईआ। गुर अवतार कहिण बोल, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। पीर पैगम्बर आपणा पड़दा रहे फोल, सच संदेसा इक जणाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा कल अन्त होई अनभोल, तेरी सार कोए ना पाईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात ऊँच नीच प्या घोल, लोकमात झगड़ा सके ना कोए चुकाईआ। भेख पखण्ड हउमे हंगता माया ममता वज्जे ढोल, चारों कुण्ट करे शनवाईआ। साहिब सतिगुर शाह पातशाह सति दुआरा इक्को खोल्ह, दर दरवाज़ा दे लाहीआ। साचे कंडे तोल अगम्मी तोल, धारन आपणी दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक देणा साचा वर, तेरे दर सच्ची अरजोईआ। साची अर्ज़ तेरे दरबार, दरगाह साची सच जणाईआ। सच दरवाज़ा खोल्ह विच संसार, महासार्थी आपणा फेरा पाईआ। साचा मन्दिर चार वरन दे वखाल, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश घर इक्को नज़री आईआ। प्रगट कर धुर दी धर्म सच्ची धर्मसाल, दीपक दीआ निरगुण जोत कर रुशनाईआ। आ के वेख मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। नेत्र रोवण ग़रीब निमाणे जगत कंगाल, अन्दरे अन्दर मारन धाहींआ। हल होवे ना किसे स्वाल, दर्दीआं दर्द ना कोए वंडाईआ। कलयुग कूड़ा डौरु डंका वज्जे ताल, नव नौ नाच रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे सच्चा वर, कल कालख दे मिटाईआ। साहिब सतिगुर हो दयाल, दोए जोड़ चरण निमस्कारया। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण हउँ तेरे बाल, तेरा भेव कोए ना आ रिहा। जुग चौकड़ी सेवा कर के आए विच जहान, बण सेवक रूप वटा ल्या। धुर संदेसा तेरा देंदे रहे श्री भगवान, शब्दी ढोला राग सुणा ल्या। निरवैर निरँकार निराकार लओ पछाण, हर घट अन्दर सोभा पा रिहा। काया मन्दिर अन्दर वड़ के साचे पौड़े चढ़ के वेखो आप महान, बंद कवाड़ कुण्डा लाह रिहा। दीआ निर्मल जोती जोत जगे महान, महल अटल इक रुशना रिहा। साची सेजा आत्म अन्तर तख्त निवासी नज़री आए इक भगवान, भगवन आपणा भेव चुका रिहा। सतिगुर सच्चा बणे इक्को काहन, बंसुरी साची नाम सुणा रिहा। देवणहार इलाही पैग़ाम, साचा कलमा आप पढ़ा रिहा। जणावणहारा धुर इस्लाम,

इस्म आअज़म इक जणा रिहा। बणावणहारा सर्ब गुलाम, धुर दा हुक्म इक वरता रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तुध बिन नज़र कोए ना आ रिहा। किरपा कर सच भगवन्त, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। नेत्र रोवण कलयुग सन्त, भगत बैठे राह तकाईआ। त्रैगुण माया पई बेअन्त, पड़दा सके ना कोए उठाईआ। चारों कुण्ट गढ़ बणया हउमे हंगत, हँ ब्रह्म ना कोए समझाईआ। तेरा भेव ना पावे कोई पंडत, बोध अगाध समझ किसे ना आईआ। कट विछोड़ा नार कन्त, सुरत सवाणी शब्द हाणी मिले चाईं चाईंआ। काया चोली चाढ़ रंग बसन्त, प्रभ आपणी दया कमाईआ। साचा दस्से इक्को मंत, मंतव आपणा दे समझाईआ। चार वरन बणा इक्को बणत, ऊँच नीच ज़ात पात रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, पिछला लेखा दे मुकाईआ। किरपा करे श्री भगवान, भगवन आपणी दया कमाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे करो ध्यान, दो जहानां वाली आप समझाइंदा। कलयुग अन्तिम प्रगट होया आण, निहकलंक कल कल्की फेरा पाइंदा। जिस दा शब्द निशाना झुल्ले दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश प्रकाश आप सुहाइंदा। तिस दा सच संदेसा इक फ़रमान, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। फिरे दरोही ज़िमीं असमान, ज़ाबर ज़बर आपणा ज़ोर जणाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चारे खाणी वेखे आण, चारे बाणी भेव चुकाइंदा। सन्त सुहेले गुरमुख गुरसिख लए पहचान, बेपहचान आपणा कर्म कमाइंदा। कर किरपा देवे साचा नाम पैग़ाम, धुर संदेसा इक सुणाइंदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को वेखो हर घट राम, निरगुण निरगुण खेल खलाइंदा। नाम अगम्मी बंसुरी शब्द सुणाए सच्चा काहन, सुर ताल इक्को इक समझाइंदा। सच पैगम्बर धुर पैग़ाम देवे आण, कलमा कायनात दृढ़ाइंदा। साचा सतिगुर मन्त्र देवणहारा सति नाम, सति सतिवादी आप समझाइंदा। कलयुग अन्तिम कूड़ी क्रिया मेटे निशान, हउमे हंगता बुरज ढाइंदा। सतिजुग सच्चा मार्ग दस्से आण, चार वरनां इक्को राह वखाइंदा। आत्म देवे इक ज्ञान, ब्रह्म विद्या आप पढ़ाइंदा। ऊँच नीच राउ रंक हरि का नाउँ अन्दर बाहर सारे गाण, गहर गम्भीर आपणा भेव खुल्हाइंदा। भाग लगाए काया साढे तिन्न हथ्थ मकान, मन्दिर इक्को इक वडियाइंदा। जिस घर घर विच वसे भगवान, सो भगतां पड़दा आप उठाइंदा। किरपा कर वड मेहरवान, मेहर नज़र आप तकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लेखा अन्त मुकाइंदा। पिछला लेखा जाए मुक्क, लोकमात रहिण ना पाईआ। कलयुग झूठा बूटा जाए सुक्क, अमृत सिंच हरा ना कोए कराईआ। कूड़ी क्रिया शौह दरियाए देवे सुट्ट, अग्गे हो ना कोए बचाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार जड़्ह देवे पुट्ट, बलधारी आपणा बल प्रगटाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक बणाए मुट्ठ, चार वरन नाता जोड़े भैणां भाईआ। सतिजुग

६८५ ६८५

१५ १५

सुहाए साची रुत्त, अबिनाशी अचुत खुशी मनाईआ। करे प्रकाश जो निरगुण धार बैठा लुक, निरवैर आपणा दरस कराईआ। भगत भगवान बणाए साचे पुत्त, पिता पूत खुशी वखाईआ। साची गोदी लए चुक्क, शब्द हुलारा इक लगाईआ। मेहरवान हो के जाए तुठ, अमृत आत्म जाम मुख चुआईआ। दूर दुराडा नेरन नेरा आ के लए पुच्छ, मुरीद मुर्शद वेखे चाईं चाईंआ। जन्म कर्म दा मिटे दुःख, दुखियां दर्द लए वंडाईआ। सफल कराए धरत मात दी कुख्ख, मनमुख जीवां दए सज़ाईआ । गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे सुखणा रहे सुख, कवण वेला पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कलयुग अन्तिम आपणा खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करे हरि करतार, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। ऊँच नीच झगड़ा दए निवार, दीन मज़्हब लोकमात रहिण कोए ना पाईआ। माणस माणस करे प्यार, मानुक्ख मानुक्ख आपणी गंढु पवाईआ। मानुष मानुष दए अधार, मनुखता इक्को रूप वखाईआ। साची सिख्या देवे एका वार, एकँकार करे पढ़ाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत दीप हरि का ढोला शब्द गाओ जैकार, सच जैकारा इक्को इक सुणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां बणया सच प्यार, बण प्यार सोहँ रूप समाईआ। तेरा शब्द अगम्मी धार, मेरी ख्वाहिश रोवे ज़ारो ज़ार, बिन मिलयां चैन कोए ना आईआ। जगत विछोड़ा कट सिरजणहार, सुरती रोवे बांह हुलार, साचा कन्त इक्को इक नज़री आईआ। चार वरन अठारां बरन खोल्ह देवे किवाड़, नाता तोड़ कूड़ी क्रिया पंचम धाड़, सच सुच हरि का नाम आप समझाईआ। सच दुआरे देवे वाड़, कर प्रकाश बहत्तर नाड़, त्रैगुण माया देवे साड़, अमृत मेघ इक बरसाईआ। साचा मार्ग दए वखाल, नज़री आए दीन दयाल, नाता तुटे काल महाकाल, भय भ्यानक रूप नज़र कोए ना आईआ। सच वखाए सच्ची धर्मसाल, जिस गृह वसे हरि गोपाल, जोती जलवा नूर जलाल, निरगुण नूरो नूर नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सब दा लेखा लेखे लए लाईआ। चार वरन तेरा लग्गे लेखा, सो साहिब आप लगाईआ। सदी वीहवीं सब दा निकले भुलेखा, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ । पारब्रह्म ब्रह्म जणाए लख चुरासी जीव जंत सब दा इक्को नेता, घर घर बैठा हुक्म वरताईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दीन मज़्हब जिस खेडी खेडा, अन्तिम आपणी ढेरी देवे ढाहीआ। सर्ब जीआं प्रभ इक्को जिहा करे हेता, वड्डा छोटा नज़र कोए ना आईआ। जन भगत कहे मेरा पुत्त जेठा, जो मेरा इक्को इक इष्ट मनाईआ। सर्ब जीआं तों उत्तम ओहो देवता, जिस दी करोड़ तेतीसा लागे पाईंआ। जिस दी सिफ्त करे राग छतीसा, अक्खर अक्खर नाल मिलाईआ। जिस दी महिमा गाए दन्द बतीसा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जिस आदि जुगादि धुर दी धार इक हदीसा, हज़रत सच सच समझाईआ। सो

पुरख अबिनाशी शाह सुल्तान वड जगदीशा, जगदीशर आपणा हुक्म वरताईआ। साचा छत्र झुले प्रभ दे सीसा, दो जहान दर बैठे अलख जगाईआ। उह किरपा निधान जन भगतां दस्सणहारा इक प्रीता, प्रीतीवान प्रीती आपणे नाल लगाईआ। लख चुरासी बदलणहारा नीता, नीतीवान आपे वेख वखाईआ। पावे सार हस्त कीटा, ऊँचां नीचां थाउँ थाईंआ। कलयुग अन्तिम खेल करे अनडीठा, अनडिठड़ी कार कमाईआ। राज राजानां शाह सुल्तानां ख़ाली करे ख़ीसा, ख़लक ख़ुदाई वेखे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, ऊँच नीच ज़ात पात लेखा दए मुकाईआ। ज़ात पात ऊँच नीच नाता जाए तुट, अन्तिम अन्त रहिण ना पाईआ। कूड़ी क्रिया पल्लू जाए छुट्ट, अग्गे संग ना कोए रखाईआ। सतिजुग मौले इक्को रुत्त, हरि रुतड़ी नाल मिलाईआ। श्री भगवान साहिब सतिगुर पए उठ, उठ उठ आपणा हुक्म सुणाईआ। चार वरन अठारां बरन एका तागा एका सूत, ताणा पेटा आपणा नाम रखाईआ। आत्म ब्रह्म सब दे वसे पंज तत कलबूत, काया अन्दर मन्दिर डेरा लाईआ। सब दा नाता जुड़या पंज भूत, त्रैगुण बैठी बन्धन पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, चार वरन इक्को सरन दए समझाईआ। चार वरन जणाए इक्को सरन, सरनगति इक समझाइंदा। करता पुरख करनी करन, हरि कादर खेल कराइंदा। निरभउ भय चुकाए मरन डरन, जीवण जुगत आप जणाइंदा। कलयुग अन्त प्रगट होया हरि निरँकारा उपर धरन, धरनी धरत धवल सोभा आप पाइंदा। जन भगतां नेत्र खोल्ह हरन फरन, निज नेत्र दरस इक कराइंदा। पुरख अकाल सृष्ट सबाई इष्ट देवे इक्को चरण, दूजा घर नज़र कोए ना आइंदा। सच दुआरे गुरमुख विरले वड़न, कर किरपा जिन्हां आपणा मेल मिलाइंदा। अन्दर वड़ के साचा नाम इक्को पढ़न, सोहँ ढोला इक समझाइंदा। आत्म परमात्म परमात्म आत्म नेड़े हो के पल्लू फड़न, फड़या पल्लू ना कोए छुडाइंदा। दरगाह साची सचखण्ड दुआर सब दा लेखा चुक्के वरन बरन, ज़ात पात राउ रंक नज़र कोए ना आइंदा। सो पुरख अकाल दीन दयाल लोकमात आया तरनी तरन, तारनहारा फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सन्त सुहेले भगत भगवान, गुरसिख चेले गुरमुख कर परवान, सच परवाना धुर फ़रमाना नाम संदेसा नर नरेशा सृष्ट सबाई इक्को वार इक वारा इक निरँकार झोली आप भराइंदा।

✪ १६ अस्सू २०२० बिक्रमी साहो ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

आपणी रक्षया केवें लैणी रख, रक्षया करे कवण थाईंआ। ठग्ग चोर यार अन्दर वेखण दी केहड़ी खुल्ह्ली अक्ख, अड्डे

पहर ध्यान लगाईआ। कवण कूड़ी क्रिया नालों करे वक्ख, घर विच वक्खरा धाम वखाईआ। प्रेम प्यार पा के सद वसे साथ, तेरा संग निभाईआ। भय भउ चुकौण दी दस्से जाच, साची सिख्या इक समझाईआ। अन्दर बाहर दोवें फ़ुरने लए वाच, वाचक मिल्या बेपरवाहीआ। दूर दुराडा नेरन नेरा रखवाला वेखे मार झात, कवण बंद ताकी कुण्डा लाहीआ। अन्तर वड़ के काया पौड़े चढ़ के आत्म सेजा खड़ के केहड़ी गल्ल जाए आख, जिस नाल बचया रहिणा जगत लोकाईआ। कवण पूंजी राखी कर के मिले रास, वस्त झोली कवण भराईआ। राखी करें केहड़ी रख के आस, आसा कवण ध्यान मिलाईआ। कलयुग चार कुण्ट जीव जंत सारे दिसण निरास, ख़ाली हथ्थ रहे वखाईआ। नाम पूंजी किसे ना पास, रसना जिह्वा होई हल्काईआ। बिन सतिगुर पूरे राखा बण के कोई ना पार लँघाए कलयुग घाट, डूंघी धार वैंहदी दिसे जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुछणहारा इक्को गल्ल, राखा किस घर हो के वेख वखाईआ। की राखा बण के उडाएं तोते काँ, चिड़ीआं हाकर रिहा लगाईआ। की राखा बण के अन्दर मारें ध्यान, मेरी लुट्टी ना जाए वस्त पराईआ। की राखा बण के लोकां रौला रिहा सुणा, उच्ची कूक कूक अलाईआ। की राखा बण के पुरख अबिनाशी मंगें इक सरना, मिले सच सरन सरनाईआ। साचा राखा दोहां वेखे थाउँ थाँ, मन ब्रह्म कवण सेव कमाईआ। जीव ब्रह्म दी होए ना लखता, कोटन कोटि बैठे ध्यान लगाईआ। रसना जिह्वा बणे वड वड बकता, शास्त्र सिमरत वेद पुराण रहे सुणाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोई भेव ना पाए हरि दा, हरि मन्दिर पड़दा सके ना कोए उठाईआ। इक्को खेल नरायण नर दा, जन भगतां आपणी बूझ बुझाईआ। ब्रह्म ब्रह्म ब्रह्म कह कह सारा जहान फिरदा, ब्रह्म पारब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। आपणी इच्छया अन्दर हरि कोई अड़दा, साचे पौड़े फड़ ना कोए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे घर घर दा, वेखणहारा थाउँ थाईंआ। पूरी लखता दी जे लोड़, लोड़ पूरी दए कराईआ। अन्दर सुरती दए जोड़, शब्दी तन्द बंधाईआ। जगत वासना देवे होड़, रस इक्को इक वखाईआ। लेखा चुका तोर मोर, मुहब्बत इक्को नाल बंधाईआ। पंच विकार ना पावे शोर, शोरश सब दी दए गंवाईआ। जो जन मंगे दो कर बेनन्ती दोए जोड़, निरगुण सरगुण दोहां मेला दए मिलाईआ। कर प्रकाश अन्ध घोर, काया मन्दिर दीपक जोत करे रुशनाईआ। अग्गे आपणे लए तोर, तुरत आपणा हुक्म मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दर आयां लेखा लेखे विच रखाईआ। दर आयां लेखा जाए लग्ग, सच्ची लग्न लगाईआ। अन्दर बुझाए कूड़ी अग्ग, अमृत मेघ बरसाईआ। लेखे लाए बुढ्ढे हड्ड, नढ्ढा रूप वटाईआ। जिस घर नूं सारे आए छड्ड, ओस घर विच दए मिलाईआ। जिस दी किसे ना पाई हद्द, बेअन्त बेपरवाह

अख्वाईआ। सो कर किरपा आपणे दर लए सद्द, सद्दा इक्को नाम सुणाईआ। बिन मक्कयों काअब्यो काया हुजरे अन्दर कराए हज्ज, सच महिराबे महिबूब इक्को नज़री आईआ। धुन आत्मक नाद अगम्मी जाए वज्ज, तन्द सतार ना कोए हिलाईआ। दर्शन देवे उपर शाह रग, नौ दुआरे डेरा ढाहीआ। फड़ के हँस बणाए कग, काग हँस रूप वटाईआ। नेत्र दरस कराए रज्ज, अन्तर आत्म जोत रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया भाण्डा भरम जाए भज्ज, साची सिख्या इक समझाईआ। हरि सतिगुर सरनाई बहिणा सज, मजलस दूजी ना कोए वखाईआ। अन्त कन्त भगवन्त दो जहान पड़दा देवे कज्ज, नाम दोशाला इक्को उपर रखाईआ। आए दुआर कर के जाणा सच्चा हज्ज, बिन हाजीउँ हाजी रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मन मनसा मनसा विच खपाईआ।

✪ १६ अस्सू २०२० बिक्रमी बुगर सिँघ दे गृह बरगाड़ी ✪

हरि का नाम चले सच एक, दो जहान ढोला जस गाईआ। हरि का मकान वसे सच एक, निरगुण सरगुण सोभा पाईआ। हरि का निशान झुल्ले सच एक, ब्रह्मण्ड खण्ड सीस निवाईआ। हरि का नाम चले सच एक, लख चुरासी जीव जंत सर्ब पढ़ाईआ। हरि का नाम बाण चले सच एक, जन भगतां बजर कपाटी चीर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। हरि का नाम चले प्रभ दात, देवणहार वड्डी वड्याईआ। कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी रात, साचा नूर करे रुशनाईआ। आत्म परमात्म सुणाए साची गाथ, सतिजुग ढोला राग अलाईआ। अन्दर बाहर देवे साथ, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। हरि का नाम चले जुग चार, चौकड़ आपणा बन्धन पाईआ। हरि का नाम सिमरन सिमरत गुर अवतार, पीर पैगम्बर रहे जस गाईआ। हरि का नाम दो जहान करे जैकार, विष्न ब्रह्मा शिव दए उठाईआ। हरि का नाम ब्रह्मण्ड खण्ड पावे सार, पुरी लोअ भेव चुकाईआ। हरि का नाम सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग शास्त्र सिमरत गाउँदे रहे वार, राग रागनी नाल रलाईआ। हरि का नाम लख चुरासी हर घट अन्दर करे पसार, घर घर बैठा डेरा लाईआ। हरि का नाम शब्द अगम्म सच्ची धुनकार, अनहद नादी राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। हरि का नाम सच सुहेला, आदि जुगादि दया कमाइंदा। निरगुण सरगुण कराए मेला, घर मिलणी मेल मिलाइंदा। वेस वटाए गुरु गुर चेला, चेला गुर गंढु पवाइंदा। नित नवित्त जाणे सच्चा वेला, वार थित आपणे हथ्थ रखाइंदा। जुग चौकड़ी अचरज खेल

पारब्रह्म प्रभ खेला, भेव अभेदा आप खुल्ह्राइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्त्र इक समझाइंदा। साचा मन्त्र नाम सति, सति नाम वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी देवणहारा ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या करे पढ़ाईआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत, रती रत्त दए सुकाईआ। डेरा ढाहे मनमति, गुरमति इक्को इक जणाईआ। अनहद नाद धुन सुणाए अनहद, धुर दी बाणी बाण अल्ह्राईआ। निरगुण नूर कर प्रकाश, जोती जोत करे रुशनाईआ। सोवत जागत मार आवाज़, सोई सुरती आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि इक्को नाम वरताईआ। आदि जुगादि नाम इक, एकँकारा आप प्रगटाइंदा। जिस दी महिमा शास्त्र सिमरत वेद पुराण गए लिख, लिख लिख लेख ना कोए मुकाइंदा। जिस दुआर गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगण भिख, पंज तत दोए जोड़ वास्ता पाइंदा। जिस दा राह तक्कण मुन रिख, नेत्र नैण सर्ब उठाइंदा। सो नाम निरँकार जग नेत्र किसे ना आए दिस, अक्खर रूप ना कोए वटाइंदा। वसे धाम सदा अनडिठ, अनडिठड़ी कार कमाइंदा। नित नवित्त कर के हित, श्री भगवान आपणी वस्त आप वरताइंदा। जन भगत बणाए मित, मित्र प्यारा इक्को नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक प्रगटाइंदा। साचा नाम अलख अगम्म, बेअन्त वड वड्याईआ। ना मरे ना पए जम्म, हट्टो हट्ट ना किसे विकाईआ। पवण स्वास ना कोए दम, रसना जिह्वा ना सिफ्त सालाहीआ। निरवैर हो के करे आपणा कम्म, ज़ात पात वंड ना कोए वंडाईआ। ना घड़े ना देवे भन्न, भंनणहारा नज़र कोए ना आईआ। ना सूरज ना कोई चन्न, मण्डल मण्डप रूप ना कोए वटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सारे कहिण धन्न धन्न, धन्न धन्न तेरी वड्याईआ। सच्चा नाम पुरख अकाल दीन दयाल थिर घर साचे आपे ल्या जण, बण के धन्न जणेंदी माईआ। ना कोई दिसे पंज तत तन, काया कपड़ नज़र कोए ना आईआ। निरवैर निरँकार आपणा बेड़ा आपे बन्न्ह, आपणे कंध उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, इक्को नाम सिफ्त सालाहीआ। इक्को नाम दस्से सो, सो पुरख निरँजण वड्डी वड्याईआ। इक्को नाम देवे लो, सच प्रकाश करे रुशनाईआ। इक्को नाम दुरमति मैल देवे धो, पतित पुनीत पवित दए कराईआ। इक्को नाम वखाए साचा ढोआ ढो, वस्त अमोलक इक जणाईआ। इक्को नाम जोती, जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दो जहानां रिहा जणाईआ। एका नाम प्रभ दी धार, धार धार विच्चों प्रगटाईआ। एका नाम शब्द सार, सार सब दी रिहा पाईआ। एका नाम हरि करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। एका नाम रहे जुग चार, जुग चौकड़ी हुक्म वरताईआ। एका नाम गुर अवतार, पीर पैगम्बर ढोला गाईआ। एका नाम भगत भण्डार, अबिनाशी करता आप वरताईआ।

एका नाम सन्त भिखार, दर दरवेश बैठे अलख जगाईआ। एका नाम भगतां देवे पैज स्वार, मेहर मेहर नज़र उठाईआ। एका नाम गुरमुखां बेड़ा देवे तार, शौह दरया ना कोए रुढ़ाईआ। एका नाम गुरसिखां अन्तर आत्म करे प्यार, बाहरों नज़र किसे ना आईआ। एका नाम क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश चारे वरनां दए आधार, बरन अठारां इक्को रंग रंगाईआ। एका नाम मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ गावण वारो वार, गीत गोबिन्द इक अल्लाईआ। एका नाम शब्द जैकार, जै जैकार करे लोकाईआ। एका नाम सब दा सांझा यार, दूई द्वैत वंड ना कोए वंडाईआ। एका नाम सुरती करे सच प्यार, आत्म परमात्म दे आधार, ब्रह्म पारब्रह्म मिलाईआ। एका नाम काया मन्दिर वसे सच्चे दरबार, साढे तिन्न हथ्थ अन्दर बैठा डेरा लाईआ। एका नाम लुक्या रहे डूंघी गार, काया कवरी डूंघी भँवरी नज़र किसे ना आईआ। एका नाम सतिगुर पूरा कर किरपा दए वखाल, निज नेत्र नैण खुल्लाईआ। एका नाम देवे जलवा नूर जलाल, ज़ाहर ज़हूर कर रुशनाईआ। एका नाम दो जहानां बणे दलाल, सच दलाली इक कमाईआ। एका नाम हकीकत वेखे हक़ हलाल, लाशरीक हुक्म वरताईआ। एका नाम सचखण्ड दुआर वखाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्को इक प्रगटाईआ। एका नाम लेखा चुकाए शाह कंगाल, ऊँचां नीचां राउ रंकां इक्को माण दिवाईआ। एका नाम लहिणा देणा तोड़े काल महाकाल, राए धर्म लेखा दए गंवाईआ। एका नाम दरगाह साची सचखण्ड प्रभ चरण दुआर दए बहाल, आवण जावण तोड़े जम की फाहीआ। एका नाम नित नवित्त चले नाल, अन्दर बाहर सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच्चा नाम इक्को इक समझाईआ। एका नाम सच्चा गीत, हरि करता आप जणाइंदा। किसे हथ्थ ना आए मन्दिर मसीत, शिवदुआले मट्ठ नेत्र नैण नीर सर्ब वहाइंदा। आदि जुगादी जन भगतां देवे ठांडा सीत, साहिब सतिगुर झोली आपे पाइंदा। चरण कँवल दस्से इक प्रीत, प्रीतीवान भेव चुकाइंदा। लहिणा देणा मुक्के हस्त कीट, राउ रंक वेख वखाइंदा। लख चुरासी परखणहारा नीत, नीतीवान मेहर नज़र नैण उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा नाम इक उपाइंदा। साचा नाम उपमा योग, योग युगीशर रहे गाईआ। साचा नाम करे धुर संजोग, धुर दा मेला दए मिलाईआ। साचा नाम सचखण्ड दुआर बख्शे सच्ची ओट, ओट इक अकाल रखाईआ। साचा नाम करे प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। साचा नाम जपया जाए बिन रसना जिह्वा होंट, बत्ती दन्द ना कोए वड्याईआ। साचा नाम बिन सतिगुर पूरे कोई ना सके खोज, खोज खोज थक्की सर्ब लोकाईआ। साचा नाम किसे ना आवे सोच, सोच समझ समझ कोए ना पाईआ। साचा नाम बैठा रहे ख़ामोश, घर घर विच डेरा लाईआ। साचा नाम आदि जुगादि जुग चौकड़ी भण्डारा रहे अतोट, निखुट रूप

ना कोए वटाईआ। साचा नाम दीन दुनी दो जहान कढ्ढे हउमे रोग, चिन्ता सोग दए गंवाईआ। साचा नाम वरते चौदां लोक, चौदां तबक बैठे ध्यान लगाईआ। साचा नाम नित नवित्त देवे साची मोख, मुक्त दुआरा इक वखाईआ। साचा नाम धुर दा इक श्लोक, सो पुरख निरँजण आपे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, नाम सच्चा सच सच समझाईआ। नाम सच्चा सतिगुर उपदेश, सतिगुर पूरा पुरख अकाल इक जणाईआ। जिस दे हुक्मे अन्दर कोटन कोटि ब्रह्मा विष्न महेष गणपति गणेश, बैठे सीस झुकाईआ। जिस दे हुक्मे अन्दर गुर अवतार पीर पैगम्बर नित नवित्त जुग जुग बदल के भेख, निरगुण सरगुण फेरा पाईआ। जिस दे हुक्म अन्दर आत्म परमात्म करे सच्चा हेत, घर घर विच मेल मिलावा सहिज सुभाईआ। सो साहिब सतिगुर साचा नाम जणाए नेतन नेत, निज घर वस्तू दए वखाईआ। गुरमुख विरला सन्त सुहेला हरि सरनाई लग्ग के लए पेख, पेखत पेखत आपणी खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका नाम हरिजन साचे दए जणाईआ। एका नाम जन भगत प्यार, सच प्रीती आप जणाइंदा। एका नाम सन्त आधार, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। एका नाम गुरमुख श्रृंगार, सीस जगदीश आप सुहाइंदा। एका नाम गुरसिख बेड़ा लावे पार, फड़ बाहों पार कराइंदा। एका नाम प्रगट करे आप निरँकार, निरगुण आपणा हुक्म वरताइंदा। कलयुग अन्त लै अवतार, निरवैर आपणी खेल समझाइंदा। आत्म ब्रह्म खोल्ह किवाड़, पड़दा दूई द्वैत उठाइंदा। सर्ब जीआं दा सांझा यार, सगला संग निभाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर आप उठाल, धुर दा लेखा सच जणाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चार कुण्ट दहि दिशा होए ख्वार, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। दीन मज़्हब ज़ात पात ऊँच नीच करे हाहाकार, हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई आपणा डंक वजाइंदा। पुरख अकाल दीन दयाल साचा करे इक प्यार, धुर प्रीती इक जणाइंदा। रल मिल सारे एका नाउँ लाओ जैकार, इकावन बावन आपणी गंढु पवाइंदा। लख चुरासी अन्दर निरगुण नूर निरगुण धार, हँ ब्रह्म सर्ब समझाइंदा। सो पुरख निरँजण सब दा शाह सुल्तान, शहिनशाह इक अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आत्म परमात्म इक्को घर वखाइंदा। आत्म परमात्म नाम एक, एकँकार दए जणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा भेख, दूजा नज़र कोए ना आईआ। इक दूजे नूं लईए वेख, पड़दा उहला विच्चों उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची वड्याईआ। सो कहे मेरा नाम अपार, अपरम्पर आप जणाईआ। हँ कहे मेरा प्रेम अपार, सच प्रीती इक लगाईआ। सो कहे मैं सिरजणहार, साहिब सतिगुर नाउँ धराईआ। हँ कहे मैं बालक नढ्ढा सेवादार, साची सेव कमाईआ। सो कहे मेरा ठांडा दरबार, सचखण्ड साचे वज्जे

वधाईआ। हँ कहे मैं तेरा नूर पसार, लख चुरासी रिहा समाईआ। सो कहे मेरा इक जैकार, हँ कहे मैं ढोला गावां चाईं चाईंआ। दोहां मिल के परम पुरख दी सच्ची बणे धार, धार धार नाल मिलाईआ। सोहँ नाम शब्द जैकार, सच मन्त्र इक दृढ़ाईआ। जिस बिन प्रभ दा चले ना कोई विहार, दो जहान देण दुहाईआ। सोहँ रूप सर्ब संसार, विष्न ब्रह्मा शिव सोहँ धार अख्वाईआ। सोहँ धार गुर अवतार, पीर पैगम्बर सोहँ रूप वटाईआ। सोहँ रूप प्रभ निरँकार, निरगुण निरगुण वेख वखाईआ। आदि जुगादि जिस दा मन्त्र फुरना रहे सच्चे दरबार, दो जहानां वज्जे वधाईआ। सो करता कादर कुदरत दए सिखाल, साची सिख्या करे पढ़ाईआ। काया मन्दिर अन्दर सच्ची धर्मसाल, आत्म परमात्म बैठा डेरा लाईआ। दोहां मिल के होए सच वसाल, वसल इक्को नजरी आईआ। परम पुरख दा सच्चा नाम इक्को असल दए वखाल, बिन अक्खरां ढोला गाईआ। जिस विच दख़ल देवे ना कोई दूजी सरकार, बिन परमात्म आत्म रय्यत राउ नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, दो जहान देवे वर, नाम इक्को घर वखाईआ।

✪ १६ अस्सू २०२० बिक्रमी भाग सिँघ दे गृह दबड़ी ख़ाना ज़िला बठिंडा ✪

शाह पातशाह सच सुल्तान, दर तेरे इक अरज़ोईआ। गुर अवतार मंगण दान, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। पीर पैगम्बर चरण कँवल करन ध्यान, नेत्र नैण नैण शरमाईआ। किरपा कर श्री भगवान, बेअन्त तेरी सरनाईआ। दो जहान नेत्र नीर वहाण, धीरज धीर ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, मेहरवान आपणा फेरा पाईआ। दो जहान करन पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। विष्नूं विश्व वेखे कर विचार, अनदृष्टी आपणी दृष्ट खुल्हाईआ। ब्रह्मा ब्रह्म-वेता चारों कुण्ट रिहा नैण उग्घाड़, आपणी अक्ख खुल्हाईआ। शंकर पावणहारा सार, धूंआँधार सुन अगम्म खोजे थाउँ थाईंआ। मीत नज़र ना आए कोई मुरार, सज्जण रूप ना कोए वखाईआ । कर किरपा प्रभ सिरजणहार, निरगुण निरवैर पुरख अकाल तेरी वड्याईआ। हउँ ठाकर सेवक मंगां धूढ़ी छार, तेरे चरण ओट तकाईआ। तूं करनी करता करनेहार, तुध बिन कीमत कोए ना पाईआ। इक्को दर तेरा ठांडा दरबार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, निरगुण निरगुण हो सहाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दोए जोड़, दर घर साचे वास्ता पाईआ। श्री भगवान पतिपरमेश्वर पुरख अकाल तेरी लोड़, निरवैर तेरी इक्को ओट रखाईआ। धुरदरगाही बेपरवाही शब्द अगम्मी चढ़ घोड़, दो जहानां वेख वखाईआ। लोक परलोक रस दिसे मिट्ठा कौड़, अमृत मेघ दे बरसाईआ।

चारों कुण्ट अन्धेरा घोर, नौ खण्ड साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। पंच विकारा देवे कोई ना होड़, शास्त्र सिमरत वेद पुराण उच्ची कूकण देण दुहाईआ। गीता ज्ञान चले कोई ना ज़ोर, बारां अक्षर सिफ्त ना कोई सालाहीआ। अञ्जील कुरान नेत्र रोवण ज़ारो ज़ार, हन्झूआं हार इक परोईआ। पीर पैगम्बर वाजां रहे मार, दरोही तेरे नाम खुदाईआ। चारे खाणी रोवे धाहां मार, धरनी धरत धवल रही कुरलाईआ। चारे बाणी गई हार, परा पसन्ती मद्धम बैखरी बैठी मुख छुपाईआ। त्रैगुण माया नार होई मटयार, कलयुग आपणा जोबन रही वखाईआ। पंज तत लाड़ा करे ख़बरदार, सच संदेसा इक सुणाईआ। दहि दिशा फिरे वारो वार, चारों कुण्ट आपणा फेरा पाईआ। साध सन्त जीव जंत आत्म परमात्म करे ना कोए प्यार, साचा रंग तन ना कोए रंगाईआ। जूठ झूठ दहि दिशा सर्ब करे ख्वार, डौरु आपणा डंक वजाईआ। कर किरपा सिरजणहार, बेअन्त बेपरवाह दर तेरे अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा एकँकार इक्को इक जणाईआ। सच संदेसा दए पैग़ाम, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां आप जणाइंदा। लेखा जाणे नौजवान, बेपरवाह आपणी धार समझाइंदा। सर्ब जीआं प्रभ देवणहार ज्ञान, बोध अगाधा आत्म भेव खुल्हाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड इक्को राग सुणान, कूड़ी क्रिया करनहार खण्डत, नाम खण्डा तेज़ चण्ड प्रचण्ड इक चमकाइंदा। गढ़ तोड़े हउमें हंगत, हँ ब्रह्म आपणा भेव खुलाइंदा। चार वरन बणा इक्को संगत, आत्म पंगत आप वखाइंदा। लेखा तोड़ कूड़ी धार जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज आपणे लेखे लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर संदेसा इक्को वार जणाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर कर निमस्कार, सच ध्यान इक लगाईआ। तेरी किरपा सिरजणहार, शाह पातशाह तेरी वड्याईआ। जुग चौकड़ी तेरी धार, निरगुण सरगुण खेल कराईआ। तेरा नाम शब्द जैकार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रहे जस गाईआ। हउँ बालक बाली बुध नादान, तेरा अन्त कोए ना पाईआ। नित नवित्त तेरा सुणदे रहे धुर फ़रमान, सच संदेसा इक्को इक अल्हाईआ। सेवा करदे विच जहान, लख चुरासी जीव जंत समझाईआ। तेरा लेखा लिख्त दे के आए महान, महिमा अकथना कथ सुणाईआ। आत्म परमात्म दे के आए ज्ञान, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा भेव खुल्हाईआ। काया मन्दिर वसदे रहे सच मकान, मक्का काअबा शिवदुआला मठ्ठ मन्दिर इक्को इक सुहाईआ। घर घर विच वसे भगवान, बाहर लभ्भण कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरा विछोड़ा रहे ना राईआ। श्री भगवान दस्से मीत, मित्र प्यारा आप जणाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी परम पुरख दा इक्को गीत, साचा सोहला नाम सुणाइंदा। जिस दी महिमा करन बहि बहि मन्दिर मसीत, गुरुदुआर गुर गुर

६६३
१५

भेव खुल्हाइंदा। सो साहिब सतिगुर शब्द स्वामी वसे धाम अनडीठ, घर साचे आपणा आसण इक लगाइंदा। जो सरगुण निरगुण करे सच प्रीत, तिस प्रीतीवान आपणी दया कमाइंदा। काया मन्दिर अन्दर बंद कवाड़ी खोल्हे छोटी झीत, पड़दा उहला आप चुकाइंदा। साचा दरस अगम्मी अतीत, मार्ग आपणा इक जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द गुरु गुरदेव स्वामी सर्ब जीआं घट अन्तरजामी, आत्म आत्म पड़दा आप उठाइंदा। सर्ब जीआं दाता प्रभ एक, एकँकार दए जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दी रखदे टेक, मेहरवान सिर सब दे हथ्थ टिकाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण जिस दा बणया लेख, महिमा कथ कथ जणाईआ। जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण धारनहारा भेख, लोकमात आवे जावे वाहो दाहीआ। कूड़ी क्रिया सदा सुहेला मेटे अन्धेरी रात, साचा सति चन्द करे रुशनाईआ। लख चुरासी विचों जन भगतां करे साचा हेत, हितकारी आपणा पड़दा दए चुकाईआ। नज़री आए नेतन नेत, निज नेत्र लोचण दए खुल्हाईआ। आत्म परमात्म साची दस्से अगम्मी खेड, गोपी काहन सुरती शब्दी घर नाच नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करे करतार, कुदरत कादर वेख वखाइंदा। मुकामे हक़ वस सांझा यार, सच तौफ़ीक इक बणाइंदा। नूर इलाही परवरदिगार, जलवागर इक्को नूर डगमगाइंदा। अबिनाशी करता वसणहारा धाम न्यार, सचखण्ड दुआर सोभा पाइंदा। थिर घर बंद कवाड़, शब्दी सुत सुत दुलारा नाल मिलाइंदा। लेखा जाणे दो जहान, योद्धा सूरबीर बली बलवान, सच उठाए इक निशान, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां इक्को नज़री आइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव देवे इक्को चरण ध्यान, समरथ पुरख वड दाता लेखा जाणे जीव जहान, लख चुरासी जीव जंत साध सन्त गृह मन्दिर अन्दर घर घर वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात साची सेवा आप लगाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे रहे आख, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। पारब्रह्म प्रभ दाता दानी सरब गुण तास, वड वड्डा वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी सब दी पूरी करे आस, आसा आपणे नाल मिलाईआ। घट निवासी निरगुण जोत कर प्रकाश, नूर नुराना बैठा डेरा लाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आदि जुगादी शब्द अनादी सतिगुर पूरा बण के दासी दास, ब्रह्मवेता धुर दा नेता, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा भेव चुकाईआ। मात गर्भ दा सब नूं कराए चेता, जो भुल्ले जीव प्राणीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दी धार आप समझाईआ। धुर दी धार करता पुरख, सो साहिब आप जणाईआ। पुरख अकाल सच्चा दरस, दीद इक्को इक रुशनाईआ। जन्म जन्म दी मेटे हरस, कर्म कर्म दा रोग चुकाईआ।

अमृत मेघ देवे बरस, निझर झिरना इक झिराईआ। त्रैगुण अग्नी बुझे तड़प, सांतक सति सति वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर इक्को मार्ग दए जणाईआ। इक्को मार्ग लैणा सिख, सो सज्जण आप जणाईआ। बिन कलम शाही दरगाह साची लेखा दए लिख, काग़ज़ दवात नज़र कोए ना आईआ। दो जहान नौजवान श्री भगवान साचा करना दस्से हित, हितकारी आपणी बूझ बुझाईआ। आउणा जाणा खेल नित नवित्त, जुग चौकड़ी बन्धन पाईआ। सच भण्डार पावे भिख, वस्त अमोलक आप वरताईआ। निरगुण सरगुण निरवैर हो के आए दिस, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वस्त अमोलक काया गोलक घर घर विच आप रखाईआ। गुर अवतार करन अरदास, प्रभ तेरे चरण मिले वड्याईआ। लोकमात रहिणा सदा पास, बेपरवाह विछड़ कदे ना जाईआ। तेरा मण्डल तेरा मण्डप तेरी पाईए रास, तेरा नूर तेरा रूप गोपी काहन नज़री आईआ। तेरा वेखीए खेल तमाश, सीता सुरती तेरे नाल प्रनाईआ। तेरा नाम जणाईए बोध अगाध, निष्अक्खर अक्खर तेरी पढ़ाईआ। तेरा लेखा विच सदा विस्माद, बिस्मिल तेरी धार नज़री आईआ। मेहरवान हो के दे आपणी दाद, मेहर नज़र इक उठाईआ। सेवा करीए विच ब्रह्माद, ब्रह्मांड तेरा हुक्म सुणाईआ। नाता जोड़ीए जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज बन्धन पाईआ। निरगुण सरगुण देदे गंढु, तेरी गंढु तुध बिन खोल्ह सके ना कोई राईआ। तेरे प्रेम प्यार अन्दर पई सच्ची ठंड, सीतल सांतक सति रूप वटाईआ। तेरा नूर तेरा चन्द, तेरा सूर्या तेरे चरण करे रुशनाईआ। हउँ सेवक दास भिखारी रहे मंग, दर दरवेश अलख जगाईआ। किरपा कर सूरे सरबँग, शाह पातशाह मेहर नज़र उठाईआ। अंगीकार लाउणा अंग, अंग आपणे नाल मिलाईआ। तेरा नाम वजाईए मृदंग, अनहद अनादी सुर ताल रखाईआ। लख चुरासी अन्दर वेखीए लँघ, सुखमन टेडी बंक ईड़ा पिंगल राह विच सके ना कोए अटकाईआ। तेरे मन्दिर वड़ के साचे पौड़े चढ़ के आत्म सेजा खड़ के प्रभू तेरा गाईए छन्द, तूं मेरा मैं तेरा, सोहँ सति सरूप समाईआ। ओथे पिछला कोई रहे ना झेड़ा, खुल्ल्हा दिसे इक्को वेहड़ा, जिथ्थे भगतां लग्गा डेरा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। ना कोई दिसे चुरासी गेड़ा, ना कोई कहे पिता पुत मेरा, ना कोई नारी कन्त पावे घेरा, भैण भाई संग ना कोए बणाईआ। कूड़ी क्रिया मिटे झेड़ा, माया ममता हउमें हंगता उजड़े खेड़ा, इक्को रूप तेरा नज़री आए ना कोई सञ्झ ना सवेरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउँणा साचा घर, जिस घर तेरे नाम वज्जे वधाईआ। पुरख अकाल आख सुणाउँदा ए। धुर दा भेव खुलाउँदा ए। सचखण्ड निवासी आपणा पड़दा लौंहदा ए। मुख नक़ाब ना कोए रखाउँदा ए। जलवा इक्को नूर रशनाउँदा ए। जोती जोत डगमगाउँदा

ए। साचे मन्दिर सोभा पाउँदा ए। छप्पर छन्न ना कोए छुहाउँदा ए। चार दीवार ना कोए बणाउँदा ए। बाढी संग ना कोए रखाउँदा ए। सूरज चन्द ना कोए चमकाउँदा ए। मण्डल मण्डप ना कोए वखाउँदा ए। विष्न ब्रह्मा शिव नज़र कोए ना आउँदा ए। पुरख अकाल दीन दयाल सच दुआरे इक्को सोभा पाउँदा ए। आदि जुगादी नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाउँदा ए। जिध्धर वेखे मार ध्यान, आपणा आप आपे नज़री आउँदा ए। आपे खेल करे महान, आपणी बणत आप बणाउँदा ए। आपणी इच्छया कर प्रधान, आपणे विचों प्रगटाउँदा ए। आपे राजा बण राजान, शहिनशाह आपणा नाउँ धराउँदा ए। आपे बणे हुक्मरान, धुर फ़रमाना आप सुणाउँदा ए। आपे बण के दर दरबान, दरवेश आपणी सेव कमाउँदा ए। आपे खेल करे महान, नारी कन्त रूप वटाउँदा ए। आपे सेजे चढ़े आण, रंग रली आप मनाउँदा ए। आपे बण नार रकान, जोबन नूर विचों प्रगटाउँदा ए। आपे वेखे मार ध्यान, बिन अक्खां वेख वखाउँदा ए। आपे खेल करे भगवान, भगवन आपणी कार कमाउँदा ए। आपे होए मेहरवान, मेहर मुहब्बत आपणी आप समझाउँदा ए। आपे जननी जन बण के जन्मे बाल निधान, बच्चा शब्द इक प्रगटाउँदा ए। साचा सुत कर प्रधान, धुर संदेसा इक सुणाउँदा ए। उठ लाडले मेरे नौजवान, तेरे जिहा दूजा नज़र कोए ना आउँदा ए। तेरी सेवा लावां महान, थिर घर तेरे लीए बणाउँदा ए। तेरा हुक्म बणाए हुक्मरान, सिर तेरे हथ्थ टिकाउँदा ए। तेरा बंस जणाए महान, विष्न ब्रह्मा शिव तेरी गोद बहाउँदा ए। तेरा खेल करे गुण निधान, गुणवन्ता आपणा गुण तेरे विचों बाहर कढ्ढाउँदा ए। त्रैगुण माया पंज तत तेरा अंग कटाउँदा ए। चारे खाणी कर परवान, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज लख चुरासी तेरा बन्धन पाउँदा ए। चारे बाणी दे ज्ञान, परा पसन्ती मद्धम बैखरी तेरे विचों प्रगटाउँदा ए। विष्नूं मंगे तैथों पकवान, ब्रह्मा ब्रह्म तेरा रूप मंग मंगाउँदा ए। शंकर तेरा मंगे बल महान, त्रैगुण माया मेट मिटाउँदा ए। कर किरपा पुत्त सुजान, श्री भगवान सब कुछ तेरे हथ्थ फड़ाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि पुरख आपणी रचना रच शब्दी मार्ग इक चलाउँदा ए। शब्द कहे प्रभ मेरे मीत, साहिब सतिगुर तेरी सरनाईआ। मैं बाला निक्का कीटन कीट, तेरा भेव कोए ना आईआ। मैं नीकन नीक नीचों नीच, बेअन्त तेरी सोभा कहिण ना पाईआ। किरपा कर मोहे बख्श इक प्रीत, दर तेरे मंग मंगाईआ । मैं सदा प्रभू तेरे वसां चरण नज़दीक, दूजा घर नज़र कोए ना आईआ। तूं आदि जुगादी रहिणहारा अतीत, सचखण्ड बैठा डेरा लाईआ। ख़ाली झोली तैथों मंगां भीख, दात अनमुलड़ी दे वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दूजे दर मंगण कदे ना जाईआ। श्री भगवान सच समझाउँदा ए। सिर आपणा हथ्थ टिकाउँदा ए। शब्द सुत आप जगाउँदा ए।

६९६
१५

६६७ ६६७

१५ १५

अबिनाशी अचुत तेरी आसा पूर कराउँदा ए। थिर घर सोहे तेरी रुत्त, कोटन कोटि ब्रह्मण्ड तेरा नूर प्रगटाउँदा ए। तेरी किरन किरन विचों वंड के वंड, सूरज चन्द नूर चमकाउँदा ए। तेरी इच्छया अन्दर खेल करे ब्रह्मण्ड, ब्रह्माद तेरी धार दरसाउँदा ए। त्रैगुण माया पंज तत तेरा बन्धन पाए बंध, डोरी तेरे हथ्थ फड़ाउँदा ए। लख चुरासी खेल करे सूरा सरबँग, सुर ताल तेरे विच रलाउँदा ए। नौ दुआरे वंडे वंड, दस्म दुआरी तेरा घर सुहाउँदा ए। घट घट अन्दर तेरा आप वछाए पलँघ, पावा चूल नज़र किसे ना आउँदा ए। साचा नूर जोत निरँजण चाढ़े चन्द, सूरज चन्द सर्ब शरमाउँदा ए। आदि जुगादि तेरा रखे संग, जगत विछोड़ा नज़र कोए ना आउँदा ए। तेरा चाढ़ अगम्मी रंग, पंज तत चोला आप सुहाउँदा ए। सृष्ट सबाई देवणहार अनन्द, अनन्द तेरे विचों प्रगटाउँदा ए। आपणा नाम सिफ्ती दस्स छन्द, शाह पातशाह हुक्म वरताउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा रूप अनूप इक प्रगटाउँदा ए। तेरा रूप अनूप इक प्रगटावांगा। लख चुरासी विचों तैनूं फेर आप उठावांगा। कर के आपणी साची मेहर, मेहर नज़र इक उठावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मेला मेल मिलावांगा। साचा मेल इक मिलावांगा। तेरा नाम मात प्रगटावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सति सरूप नजरी आवांगा। चारे कूट वेख वखावांगा। जूठ झूठ मेट मिटावांगा। काया कलबूत पड़दा लाहवांगा। सच महिबूब इक्को नज़री आवांगा। धुर दा देवां आण सबूत, सिदक भरोसा नाल निभावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तैनूं शब्द गुरू सब दा सरताज बणावांगा। शब्द सुत देवे वड्याई, सो पुरख निरँजण दया कमाइंदा। हरि पुरख निरँजण मेहर नज़र उठाई, मेहरवान वेख वखाइंदा। एकँकार कहे तेरी मेरी होए ना कदे जुदाई, जुड़या जोड़ ना कोए तुड़ाइंदा। आदि निरँजण कहे मैं तैनूं देवां रुशनाई, आपणा नूर शब्दी सच अलाइंदा। अबिनाशी करता कहे मैं तेरा ढोला देवां गाई, बिन रसना जिह्वा राग अलाइंदा। श्री भगवान कहे मैं तेरा निशान दयां झुलाई, दो जहानां हथ्थ उठाइंदा। पारब्रह्म कहे मैं तेरा लेखा वेखां थाउँ थाईं, थान थनंतर खोज खोजाइंदा। शब्द सुत मेरे सच दुलारे तुध बिन दूजा दिसे कोई नाहीं, जो आदि जुगादि जुग जुग मार्ग लाइंदा। तेरी धार पंज तत अन्दर दयां टिकाई, तिस टिक्का आपणा नाम मस्तक इक वखाइंदा। सो उच्ची कूक पुकारे दोवें बांहीं, पुरख अकाल आदि पुरख करता आपणी खेल रचाइंदा। लख चुरासी जीव जंत जिस बणत बणाई, सो घड़नहार पुरख समरथ सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सुत दुलारे तेरी सेवा इक वखाइंदा। सुत शब्द सेवा जुग चार, सो पुरख निरँजण आप लगाईआ। सुत शब्द तेरा रूप गुर अवतार, बोध

अगाध तेरी पढ़ाईआ। सुत शब्द पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड तेरा पसार, दो जहान तेरी सरनाईआ। सुत शब्द चौदां लोक तेरा आधार, चौदां तबक तेरे अग्गे वास्ता पाईआ। सुत शब्द नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप तेरी गुलज़ार, चारे खाणी फुल फलवाड़ी तेरी महकाईआ। सुत शब्द तेरी आदि अन्त रहे बहार, ख़िज़ां रुत्त रूप ना कोए वटाईआ। सुत शब्द तेरा बणया रहे प्यार, आत्म परमात्म तेरा नाता जोड़ जुड़ाईआ। सुत शब्द तेरा वसदा रहे घर बार, साचे भगतां अन्दर तेरा महल्ल वसाईआ। सुत शब्द तेरा हुन्दा रहे जैकार, साचे सन्त तेरा नाउँ ढोला गाईआ। सुत शब्द तेरा हुन्दा रहे वणजार, गुरमुख तेरा हट्ट लैण चलाईआ। सुत शब्द तेरा वसदा रहे संसार, गुरसिख बैठे तेरा राह तकाईआ। बिन सतिगुर शब्द आदि जुगादि किसे दा बेड़ा ना उतरे पार, मझधार पार ना कोए कराईआ। सतिगुर सच्चा इक्को बहुता विच संसार, बहुते गुरू कम्म किसे ना आईआ। जो जन्म कर्म दे विछड़े मेले आण, अगला पिछला विछोड़ा दए मुकाईआ। जो काया मन्दिर अन्दर वखाए श्री भगवान, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ खोजण कोए ना जाईआ। जो घर सुरती मेला करे साचे राम, जो राम हर घट बैठा डेरा लाईआ । जो साची सखी मेले काहन, अट्ठे पहर बंसुरी नाम रिहा वजाईआ। जो सच्चे पैगम्बर मेले आण, जो घड़ी पल सच पैग़ाम रिहा सुणाईआ। सो सतिगुर सच्चा आदि जुगादि सदा बलवान, बलधारी इक अख्वाईआ। मरे ना जम्मे विच जहान, मात गर्भ ना डेरा लाईआ। पोह सके कदी ना काल, महाकाल ना भय डराईआ। लाड़ी मौत आपणी गोद ना सके स्वाल, जूनी जून ना कोए भवाईआ। उह सतिगुर सच्चा सब दी करे प्रितपाल, लख चुरासी आपणे विचों प्रगटाईआ। सो दाता इक्को इक पुरख अकाल, शब्दी सुत तेरा पिता पुरख अख्वाईआ। लेखा जाण दो जहान, निरगुण सरगुण दोवे धार वखाईआ। जुग चौकड़ी वेखे आण, मेहरवान आपणा फेरा पाईआ। साचा कलमा बोल कलाम, चारों कुण्ट दए समझाईआ। इस्म आअज़म इक मेहरवान, बेऐब नूर खुदाईआ। मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला, बिस्मिल सब नूं दए जणाईआ। सच तौफ़ीक इक रफ़ीक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिगुर सच्चा एको एक, आदि जुगादि सब दी टेक, जुग चौकड़ी करे बुध विवेक, जो जन बैठे ध्यान लगाईआ। सतिगुर सच्चा मानो जग, जगजीवण दाता इक अख्वाइंदा। जो सदा नित नवित्त वसे उपर शाह रग, नौ दुआरे हत्थ किसे ना आइंदा। फड़ फड़ अन्दर वड़ वड़ लेखा चुका सीस धड़ धड़ हँस बणा कग्ग, कागों हँस रूप वखाइंदा । बिन सद्दे पैगम्बर शब्द संदेसे नाल सद्द, सद्दा भगत भगवन्त शब्द इक सुणाइंदा। आपणी महिमा दस्से बोध अगाध अकथ, रसना जिह्वा कथनी कथ अन्त कोए ना पाइंदा। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत फड़ के चाढ़े नाम रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। कर

किरपा कृपानिधान ठाकर स्वामी काया मन्दिर अन्दर खोल्ह वखाए हट्ट, नाम हीरा रतन अमोलक घर घर विचों झोली पाइंदा। एहो खेल पुरख समरथ, जन भगतां एका राह देवे दस्स, औझड़ राह कोए ना पाइंदा। शब्द गुर गुरमुखां देवे गुरमति, मनमति डेरा ढाइंदा। लेखा चुक्के तत अट्ठ, नौ दर पन्ध कोई रहिण ना पाइंदा। सतिगुर नानक मार्ग इक्को गया दस्स, ज़ात पात वरन गोत ना कोए जणाइंदा। गोबिन्द गुर अमृत आत्म दित्ता इक्को रस, दूजा प्याला हत्थ ना कोए फड़ाइंदा। कर प्रकाश कोटन रवि ससि, अज्ञान अन्धेर चुकाइंदा। अन्तिम कह के गया गुरसिख तूं मेरा मैं तेरे वस, वास्ता तेरे नाल रखाइंदा। गुर का शब्द इक्को लओ रस, दूजा पार ना कोए लगाइंदा। पंज तत वेख किसे दे चरणी ना जाणा ढट्ठ, सतिगुर शब्द शब्द दयाल गुर गुरदेव स्वामी आदि जुगादि नमो नमो तिस नूं सर्ब सीस झुकाइंदा। गुरमुखो तुसीं ओस पुरख अकाल दी यद्द, जिस विच मिल के फेर मुड़ कोई ना आइंदा। शब्द घोड़े उपर शाह सवारा, अस्व आपणा आप दौड़ाईआ। फिरनहारा जंगल जूह उजाड़ पहाड़ा, समुंद सागर वेख वखाईआ। चिट्टी चादर वेखणहारा, गुरमुख सदा चिट्टी धार दस्स दुआरी विच समाईआ। थल्ले आसण सिँघासण उह न्यारा, जो समझ कोए ना पाईआ। जो गुरमुख चरण कँवल गुरू करे प्यारा, तिस थल्ले उते इक्को ध्यान वखाईआ। उह मोघा पाणी जल ठंडा ठारा, गुरमुखां अन्दर रिहा वहाईआ। जिस अमृत नूं लभ्भदा फिरे संसारा, गुरसिख अन्दर सरोवर इक्को वार भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घोड़े चढ़े शब्द अस्वारा, रूप अनूप वटाईआ। शब्द गुर दा रूप अनेक, अक्ल कलधारी खेल खलाईआ। जेही वासना तेहा धारे भेख, भेखी आपणा रूप वटाईआ। जे कोई लभ्भे किसे हत्थ ना आए रूप रेख, दे दरस आपणा आप बुझाईआ। जे किरपा कर के दे जावे इक संदेस, उठ गुरसिख वेख तेरा आया सच्चा माहीआ। एह भाई का वाड़ा, जित्थे तिन्न साल पहले दित्ता वर, जित्थे फिरे गुर दस्मेश, दहि दिशा आपणा चक्र लगाईआ। चार कुण्ट नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप सब नाल करे हेत, जो बैठा ध्यान लगाईआ। सनमुख साम्हणे आपणे नेत्र लए पेख, जिस उते मेहर नज़र उठाईआ। गुरमुखो गुरू नाल जोड़ो हेत, दूजा साक सज्जण सैण कम्म कोए ना आईआ। माणस जन्म लख चुरासी विचों उत्तम मिली खेड, मिल सतिगुर आपणी होली लओ मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साध संगत तेरा नाता सदा सतिगुर नाल जुड़ाईआ। गुरसिख निमाणा सब तों उच्चा, ऊँच अगम्म अथाह जिस दए वड्याईआ। हीरा नग सब तों सुच्चा, जिस दी कीमत बिन सतिगुर किसे ना पाईआ। सतिगुरू सदा गुरसिख तेरे प्यार दा भुक्खा, दूजी आस ना कोए रखाईआ। तूं आपणा प्रेम प्रीती भोजन रख अग्गे रुक्खा, नाल खुशीआं लवे खाईआ। गुरसिख कहे मेरा सतिगुर

मेरे उते तुट्टा, जिस आपणी बूझ बुझाईआ। मैं लोकमात डूंग्घी कवरी विचों बाहर आया गुट्टा, आपणा पड़दा दित्ता चुकाईआ। मैं नहीं जाणदा की कोट जन्म रिहा रुस्सा, आपणी आप सार कोए ना पाईआ। कर किरपा शब्द गुर किहा आ मेरे लाडलया पुत्ता, तैनूं आपणी गोद लवां बिठाईआ। तूं ओस लड़ी दा वड्डा गुच्छा, जिस विच पुरख अकाल भगतां डोरी तन्द बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सदा वर, बिन गुरसिखां गुरू कम्म किसे ना आईआ।

७०० ७००

१५ १५

✪ १७ अस्सू २०२० बिक्रमी हरचन्द सिंघ दे गृह हरराए पुर ज़िला बठिंडा ✪

किरपा कर हरि निरँकार, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। सुत शब्द तेरा लेख रहे जुग चार, जुग चौकड़ी मेट ना कोए मिटाईआ। पंज तत तेरा खेल अपार, देवणहार बेपरवाहीआ। तेरा रूप गुरू अवतार, पीर पैगम्बर वेस वटाईआ। तेरा नाम सच जैकार, दो जहान ढोला गाईआ। लख चुरासी तेरा भण्डार, घर घर वस्त अमोलक इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। सुत दुलारा झुका सीस, प्रभ अग्गे अरदास सुणाईआ। ठाकर स्वामी मेरे जगदीश, बेअन्त तेरी सरनाईआ। तेरा फ़रमान मेरी हदीस, तेरा कलमा मेरी पढ़ाईआ। जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लख चुरासी पढ़ावां ठीक, नाम संदेसा इक सुणाईआ। मार्ग दस्सां दो जहान बारीक, जग नेत्र नज़र किसे ना आईआ। अन्तिम प्रभू दस्स आपणी इक तरीक, जिस वेले निरगुण निरगुण मेल मिलाईआ। दूजा दिसे ना कोई शरीक, लाशरीक शिरकत करे ना कोए नूर खुदाईआ। सद वेखां तेरा नाम अनडीठ, सचखण्ड दुआरे इक ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सुत दुलारे छोटे बाल, सो सतिगुर आप जणाईआ। हरि पुरख निरँजण तेरे नाल, एकँकार आपणी गंढु पवाईआ। आदि निरँजण निरवैर दीपक सच्चा देवे बाल, जोती जोत जोत रुशनाईआ। अबिनाशी करता तेरी सुहाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक बणाईआ। श्री भगवान सति झुलाए निशान, रूप रंग रेख नज़र किसे ना आईआ। पारब्रह्म प्रभ देवणहारा माण, मेहर नज़र इक उठाईआ। ब्रह्म पारब्रह्म आत्म परमात्म देवे सच ज्ञान, तेरा भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त चार खाणी चार बाणी वस्त अमोलक देवे दान, दाता दानी आप वरताईआ। तेरा रूप प्रगटाए सति सरूपी सच्चा काहन, राम रमईया तेरी धार जणाईआ। तेरा नूर उपजाए सच पैगम्बर इक्को निशान, शहिनशाह आपणा खेल वखाईआ। तेरा वेस वटाए गुर गुर रूप नौजवान, बिरध बाल नज़र कोए ना आईआ। तेरा नाम सुणाए धुर फ़रमान, शब्दी शब्द राग अल्हाईआ। सतिजुग

त्रेता द्वापर कलयुग निरगुण सरगुण तेरी चलाए दुकान, दो जहानां हट्ट खुल्हाईआ। चौदां लोक तेरी करन कल्याण, चौदां तबक तेरा ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, चौदां विद्या तेरी सिफ्ती सिफ्त लगाईआ। शब्द कहे प्रभ सच्चे सज्जण, तेरी इक्को ओट तकाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी देणा मजन, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। दो जहान तेरे हुक्मे अन्दर नाद अगम्मी वज्जण, सुर ताल आपणे हथ्थ रखाईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले भगत भगवान रखणे मग्न, आप आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, घर मिले सच्चे ढोई आ। ठाकर स्वामी हो दयाल, शब्दी शब्द शब्द जणाइंदा। नित नवित्त बणां तेरा दलाल, बण सेवक सेव कमाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर रखां तेरे नाल, सगला संग निभाइंदा। धुर संदेसा साचा मन्त्र इक्को वार दयां सिखाल, साची सिख्या इक समझाइंदा। दीआ बाती कमलापाती जोती नूर देवां बाल, तेल बाती नज़र कोए ना आइंदा। काया मन्दिर अन्दर वखा सच्ची धर्मसाल, सच दवारा इक जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तेरा मन्दिर इक सुहाइंदा। शब्द सुत तेरा मन्दिर अनडिठ, लख चुरासी अन्दर घर घर विच आप बणाईआ। निरवैर हो के करे हित, पुरख अकाल बेपरवाहीआ। चार कुण्ट दहि दिशा अनभव प्रकाश पए दिस, नूरी जलवा इक रुशनाईआ। साचा लेखा बिन कलम दवात देवे लिख, कलम शाही कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तेरा खेड़ा दए वसाईआ। सच खेड़ा दस्स भगवान, जिस घर देवें वड्याईआ। घर मेल मिलाएं आण, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। नज़री आएं नौजवान, बलधारी बख्शें इक सरनाईआ। साचा मन्दिर सोहे मकान, महिफ़ल जिस घर आपणी लाईआ। संदेसा देवे धुर फ़रमान, साचा राग नाद अल्हाईआ। विष्न ब्रह्मा महेष चरणी डिगण आण, सुरप्त सीस ना कोए उठाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान जिस दा ढोला गाण, सो निष्अक्खर अक्खर देणा समझाईआ। जिस दी आस गुर अवतार पीर पैगम्बर आदि जुगादि नित नवित्त सदा तकाण, निज नेत्र बैठे नैण उठाईआ। जिस दा शब्द ताल राग नाद अनहद धुन गायण गान, गण गंधर्ब आपणा ताल वजाईआ। सो खेल दस्स पुरख समरथ मेहरवान, बेनज़ीर नज़र आपणी इक उठाईआ। जुग चौकड़ी थिर रहे ना कोई विच जहान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग टुट्टे माण, अभिमान रूप ना कोए वटाईआ। कोटन कोटि राज राजान शाह सुल्तान झुलाउँदे गए निशान, अन्त निशाना नज़र कोए ना आईआ। जुग चौकड़ी कोटन कोटि तेरे हक़ मुकाम दस्सदे रहे ज्ञान, अन्तर आत्म अज्ञान अन्धेर ना कोए मिटाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द करदे रहे वख्यान, व्याख्या तेरी कोई ना सक्या

समझाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत डूंग्घी कन्दर तेरी करदे रहे पछाण, बेपहचान तेरा नूर नज़र किसे ना आईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चार कुण्ट दहि दिशा तेरी करदे रहे भाल, जीव जंत साध सन्त भज्जण वाहो दाहीआ। बिन सतिगुर पूरे तेरा दरस कोए ना पाण, गृह मन्दिर चढ़ के दरस कोए ना पाईआ। किरपा कर श्री भगवान, इक्को देणा साचा सच्चा दान, देवणहार तेरी सरनाईआ। लख चुरासी आत्म परमात्म जगत विछोड़ा मिटे जहान, दूई द्वैती कोई रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, शब्द सुत मंग मंगाईआ। सुत शब्द सुण मेरे दुलारे, प्रभ अबिनाशी आप जणाईआ। दो जहान खेल न्यारे, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी कार कमाईआ। रवि ससि बणे पनहारे, विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बोलण सच जैकारे, धुर दा नादी नाद सुणाईआ। कातब बण के गए लिखारे, लिख लेखा जगत समझाईआ। चारे खाणी बण वणजारे, चारे बाणी भेव चुकाईआ। चारे युग दे हुलारे, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गए हंढ्ढाईआ। चारे पद पावण सारे, पद निरबाण इक दरसाईआ। अन्तिम सारे गए हारे, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर पुरख अकाल इक करतारे, कुदरत कादर खेल रचाईआ। कलयुग अन्तिम होवे रैण अँध्यारे, नौ सत्त चन्द नज़र कोए ना आईआ। हरि का नाम करे ना कोए प्यारे, गुर का शब्द ना कोए कमाईआ। सृष्ट सबाई होए विभचारे, साचा कन्त नार ना कोए हंढ्ढाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दूर दुराडे वेखण सारे, अग्गे हो सार कोए ना पाईआ। दीन मज़्ह़ब ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक राज राजान शाह सुल्तान नेत्र रोवण ज़ारो ज़ारे, धीरज धीर सांतक सति ना कोए वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक सुणाईआ। शब्द सुत सुण साचे लाल, सो सतिगुर आप जणाईआ। जुग चौकड़ी बीते काल, थिर कोए रहिण ना पाईआ। करे खेल श्री भगवान, हरि करता आपणी कार कमाईआ। दर दरवेश नर नरेश सारे मंगण दान, ख़ाली झोली रहे वखाईआ। कलयुग अन्त कूड़ होए प्रधान, चारों कुण्ट डंक वजाईआ। घर घर शरअ फिरे शैतान, शरीअत करे जगत लड़ाईआ। सच दिसे ना कोए निशान, धर्म निशाना नज़र कोए ना आईआ। नौ खण्ड पृथ्मी चारों कुण्ट दिसे वैरान, बिन हरि नामे ख़ाली दिसे लोकाईआ। गुरमुख विरले सन्त सुहेले अन्दर वड़ के राह तकाण, बाहरों नज़र कोए ना आईआ। दोए जोड़ कहिण किरपा कर श्री भगवान, पुरख अबिनाशी तेरी ओट तकाईआ। अमृत आत्म दे पीण खाण, रस इक्को इक वखाईआ। शब्द अनाद अन्तर वज्जे शब्दी धुन्कान, अनहद नादी ढोला गाईआ। दीपक जोत जगे महान, घर घर विच होए रुशनाईआ। सुरती शब्दी मिले आण, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। साचा मन्दिर सोहे मकान, धर्म दुआरा

इक्को नज़री आईआ। नज़री आए भूपत भूप नौजवान, शाह पातशाह इक वड्याईआ। लेखा चुक्के जगत जहान, लख चुरासी रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एको देणा साचा वर, तेरे शब्द नाम मिले वड्याईआ। पुरख अकाल दीन दयाल, दयानिध आप जणाइंदा। कलयुग मेटे कूड़ा काल, चारों कुण्ट वेख वखाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी बणाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक जणाइंदा। लेखा चुक्के शाह कंगाल, ऊँच नीच रहिण कोए ना पाइंदा। सतिगुर शब्द बणे दलाल, सच दलाली आप कमाइंदा। वेख वखाए हकीकत हक़ हलाल, नव नौ चार खोज खोजाइंदा। जन भगतां देवे नाम सच्चा धन माल, ठग्ग चोर यार लुट्ट कोए ना जाइंदा। आत्म परमात्म वसे सदा नाल, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। दीआ दीपक जोती जोत देवे बाल, नूरी नूर नूर धराइंदा। अमृत आत्म ठांडा सीत जाम दए प्याल, सच प्याला कासा हथ्थ फड़ाइंदा। शब्द अनाद सच्ची धुन वज्जे नाद महान, अनहद अनरागी राग सुणाइंदा। साहिब सतिगुर मित्र प्यारा घर सज्जण मिले आण, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाइंदा। महल अटल उच्च मनार नज़री आए इक्को काहन, साची बंसुरी राग सुणाइंदा। लेख चुकाए दो जहान, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण एका मेल मिलाइंदा। एथे ओथे दो जहानां देवे माण, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। भगत भगवान रल के ढोला इक्को गाण, तूं मेरा मैं तेरा दूजा संग ना कोए रखाइंदा। तेरा मेरा इक निशान, आत्म परमात्म भेव चुकाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म तेरा करे ध्यान, नित नवित्त आपणा नैण उठाइंदा। ईश जीव कर परवान, जगदीशर तेरी आस रखाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरा नाम बली बलवान, बलधारी इक अख्वाइंदा। दो जहान तेरा निशान, सति सरूप इक्को नज़री आइंदा। तेरा शब्द रूप महान, निरगुण नज़र किसे ना आइंदा। सो पुरख निरँजण खेल करें महान, महिमा अकथ कथ समझाइंदा। सोहँ आदि जुगादि जुग चौकड़ी आत्म परमात्म चलाए दुकान, दो जहानां हट्ट आप खुल्ाइंदा। साचा मन्त्र देवणहार श्री भगवान, भगवन मीता आपणा भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, देवणहारा अगम्म वर, बोध अगाध अगाध बोध आत्म बोध आप कराइंदा।

✪ १७ अस्सू २०२० बिक्रमी जागीर दास दे गृह ख़िआली वाला ज़िला बठिंडा ✪

पुरख अकाल वड पालक, मेहरवान हुक्म जणाईआ। शब्द दुलारे साचे बालक, निरगुण तेरी सेव समझाईआ। रूप धर सृष्ट सबाई ख़ालक, मख़लूक तेरी सरनाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी ना कोई निंद्रा ना कोई आलस, दलिद्र रूप

ना कोए वटाईआ। दो जहानां बण सालस, सच सालसी मात कमाईआ। आत्म परमात्म भेव खुलाउणा ख़ालस, ख्वाहिश आपणी मेरे नाल रलाईआ। गुर अवतार तेरी अमानत, पीर पैगम्बर तेरी झोली पाईआ। तूं बणना साहिब सदा सलामत, दो जहान वज्जे तेरी वधाईआ। तेरे नाम कदे ना आए कोई अलामत, रूप रंग ना कोए चढ़ाईआ। लख चुरासी जीव जंत कूड़ी क्रिया करनी इक ममानत, धुर संदेसा इक सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लेख चुकाउणा रूप भ्यानक, भय भउ देणा गंवाईआ। तेरा खेल समझ ना सके कोई अचानक, अचनचेत तेरी सार कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। साची सिख्या साहिब गुणवन्त, हरि करता आप जणाइंदा। आदि जुगादि तेरी महिमा अगणत, सिफ्ती ढोला तेरा नाद वजाइंदा। नित नवित्त तेरा मंत, निरअक्खर अक्खर समझाइंदा। नाल लाए गुर अवतार पीर पैगम्बर साचे भगत, साचे सन्त तेरा संग रखाइंदा। गुरमुख गुरसिख दर बणन मंगत, घर साचा इक्को इक जणाइंदा। तेरा नूर अगम्मी चढ़े रंगत, सो साहिब आप चढ़ाइंदा। तेरा भेव कोई ना पाए पंडत, लेखा लिख ना कोए समझाइंदा। तेरा वास निवासा जेरज अण्डज, तेरा प्रकाश उत्भुज सेत्ज आप जणाइंदा। तेरा भरवासा सर्ब ब्रह्मण्डप, पुरी लोअ आकाश तेरा ध्यान लगाइंदा। नव नौ चार तेरे दुआरे मंगत, भिखारी रूप सर्ब वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दी धार आप समझाइंदा। शब्द गुरू दर हो अधीन, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। हउँ बालक बाला दर मस्कीन, मुश्कल मेरी हल कराईआ। परवरदिगार तेरे उते मोहे इक यकीन, यकलख़त आपणा हुक्म दे समझाईआ। साची कर तलकीन, ताकत आपणी दे समझाईआ। मैं दो जहान जा के करां ताअमील, घर घर संदेसा इक सुणाईआ। सब दी बदल देवां दलील, निरगुण निरगुण तेरा भेव चुकाईआ। कूड़ी क्रिया मन्नां ना कोई अपील, ख़ारज सब दा लेखा दयां मुकाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड सत्त दीप, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरा नाम दयां सुणाईआ। साचा नाम जा के दस्स, आदि जुगादी तेरी सेवा लाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड वेख नट्ठ, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। लख चुरासी जीव जंत अन्तर दे रस, रस इक्को इक वखाईआ। आत्म परमात्म कर वस, ब्रह्म पारब्रह्म पड़दा दे उठाईआ। सच प्रीती डोरी पा नथ्थ, फंदन इक्को इक रखाईआ। ढोला अगम्म सुणा गाथ, साची सच सच पढ़ाईआ। दो जहान गा जस, गा गा ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। साची सिख्या दे भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। शब्द सुत उठ नौजवान, निरगुण निरगुण लै अंगड़ाईआ। धर्म उठा इक निशान, दो जहान दे वखाईआ। चार वरन दे

ज्ञान, आत्म बोध पढ़ाईआ। सच वखा मन्दिर मकान, काया काअबा खोल्ह खुल्हाईआ। नाम सुणा सच्ची धुन्कान, अनहद नादी नाद अल्हाईआ। अमृत दे पीण खाण, निझर धारा इक वहाईआ। साचा दस्स धुर दा गान, सो पुरख निरँजण रिहा समझाईआ। हँ ब्रह्म मिले आण, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। सोहँ नाम होए प्रधान, दो जहानां वज्जे वधाईआ। गुरमुख गुरसिख सारे गाण, सन्त सुहेले ध्यान लगाईआ। भगत भगवान करन परवान, परमानंद विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा इक जणाईआ। शब्द सुत कहे मैं सेव कमावांगा । साचा मन्त्र इक दृढ़ावांगा। अन्तर आत्म बूझ बुझावांगा। जगत बसन्तर मेट मिटावांगा। गगन गगनंतर वेख वखावांगा। साचा मन्त्र इक दृढ़ावांगा। सो पुरख निरँजण तेरा राह वखावांगा। हँ ब्रह्म बणा के सज्जण, सगला संग इक दरसावांगा। आत्म परमात्म करा मजन, दुबिधा दुरमति मैल धवावांगा। सोहँ सति सरूप दस्स के भजन, भाण्डा भरम भउ भंनावांगा। तेरे तेरे नाल होवण मग्न, दूजा इष्ट ना कोए वखावांगा । निरगुण हो के निरगुण मुख लगावां सगन, साचा रस इक चुआवांगा। जुग चौकड़ी जिस दे मिलण नूं करदे रहे यतन, सो यथा योग जन भगतां सेवा आप कमावांगा। जो छड्ड के आए आपणा पिछला वतन, तिन्हां ओसे घर मोड़ लै जावांगा। इक्को संदेसा लोकमात आवां आखण, बिन रसना जिह्वा बोल सुणावांगा। लख चुरासी वरोल माखण, सन्त सुहेले बाहर कढ्ढावांगा। सेवा करां बण के दासी दासन, सेवक आपणा नाम जणावांगा। तेरा मेला पुरख अबिनाशन, अबिनाशी तेरा घर वखावांगा। निरवैर हो के बणना साथन, सगला संग इक जणावांगा। उच्ची कूक तेरा नाम जैकारा सोहँ सारे आखण, तूं मेरा मैं तेरा दूजा बन्धन सर्ब कटावांगा। अन्तिम उतरन आपणे घाटन, घाटा सब दा पूर करावांगा । जन्म मरन दी चुक्के वाटन, लख चुरासी पन्ध मुकावांगा। जिस घर पुरख अकाल तेरा आसण, तेरे भगत ओसे घर बहावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, शब्द सुत मंगे वर, तेरा रूप तेरे विच मिलावांगा।

✪ १७ अस्सू २०२० बिक्रमी बख़तार सिँघ दे गृह खिआली वाला ज़िला बठिंडा ✪

गुर अवतार पीर पैगम्बर राह तक्कण लोक परलोका, पुरख अकाल दीन दयाल इक्को ओट तकाईआ। दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल मार्ग दिसे ना कोए सौखा, रहबर नज़र कोए ना आईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप चार वरन अठारां बरन लख चुरासी करे धोखा, साची सच ना कोए पढ़ाईआ। मन वासना जीव जंत साध सन्त कल होया होछा,

सति सन्तोख नज़र कोए ना आईआ। बिन हरि नाम श्री भगवान काया मन्दिर ख़ाली दिसे कोठा, वस्त अमोलक हथ्थ किसे ना आईआ। आत्म परमात्म जगत विछोड़े होया थोथा, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। धुर दी बाणी शब्द अगम्म सच सुणाए ना कोए श्लोका, रसना जिह्वा बत्ती दन्द रहे कुरलाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान देवे होका, अञ्जील कुरान नाअरा रही लगाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार वेख अक्खां मौका, निरगुण निरवैर आपणा फेरा पाईआ। कलयुग तेरा राह तक्के पुत्त छोटा, सुत गोबिन्द नाल मिलाईआ। बेपरवाह बेऐब परवरदिगार नूर इलाही क्यों मेरे नाल करें रोसा, करवट आपणी लै बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेख आ के आपणा घर, ब्रह्मण्ड खण्ड बैठा नैण उठाईआ। गुर अवतार मंगण मंग, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। पीर पैगम्बर कहिण प्रभ हो संग, परवरदिगार तेरी सरनाईआ। लोक परलोक तेरा मंगण इक अनन्द, अनन्द अनन्द विचों प्रगटाईआ। राह तक्कण सूरज चन्द, किरन किरन कर रुशनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सच दुआर वेखण लँघ, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। नेत्र रोवे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज रही कुरलाईआ। त्रैगुण माया भेख पखण्ड, दर दर घर घर नच्चे वाहो दाहीआ। पंज तत तत्तव कोई ना गाए छन्द, साचा राग नाद कोए ना गाईआ। नव नौ चार लग्गी अग्ग, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। ना कोई मक्का काअबा दिसे हज्ज, हुजरा हक़ नज़र कोए ना आईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले नीर वहावण मट्ठ, मस्तक रेख सारे बैठे ढाहीआ। खाणी बाणी झोली ख़ाली रही अड्ड, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तुध बिन ख़ाली दिसण हड्ड, हरि का नाम नज़र कोए ना आईआ। दरोही ख़ुदाए बी मेहरवान मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला इलाही नूर चौदां तबक क्यों गिउँ पिच्छे छड्ड, खैहड़ा आपणा गिउँ छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तुध बिन मंग ना कोए मंगाईआ। चौदां लोक मारन धाह, चौदां तबक रहे कुरलाईआ। चौदा विद्या भेव कोई ना आ, ख़ाली हथ्थ रही वखाईआ। चौदस चन्द ना सके कोए चमका, कलयुग अन्धेरा छाईआ। साचा मार्ग दिसे ना राह, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। चार कुण्ट होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। दहि दिशा कूड़ तूफ़ान, जीव जंत रिहा रुढ़ाईआ। काम क्रोध होया बलवान, घर घर आपणा ज़ोर वधाईआ। माया ममता मोह सके ना कोए मिटा, मिटी ख़ाक दिसे सर्ब लोकाईआ। मन वासना सके ना कोई गंवा, मनमति फिरे हल्काईआ। गुर का शब्द सके ना कोई कमा, रसना जिह्वा होई हल्काईआ। अमृत आत्म जाम सके ना कोए प्या, अठसठ तीर्थ फिर फिर थक्के पांधी रहीआ। साचा मन्दिर कोई ना सके सुहा, दीवा बाती बिन कमलापाती जोत निरँजण करे ना कोए रुशनाईआ। सच संदेसा देवे ना कोए सुणा,

अनहद अनादी राग अल्लाईआ। बजर कपाटी पड़दा सके ना कोए तुड़ा, घर घर विच मेल ना कोए मिलाईआ। साध सन्त कलयुग अन्त श्री भगवन्त कन्त सके ना कोए हंढा, नार दुहागण भज्जी फिरे वाहो दाहीआ। साचे घर सुहागण रूप ना सके वटा, लाल गुलाला रंग ना कोए चढ़ाईआ। मेहरवान प्रभ ठाकर स्वामी मेहर नज़र इक उठा, दो जहान तेरी ओट तकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सजदा कर बैठे सीस झुका, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। प्रगट हो नूरी खुदा, इस्म इक्को इक दे समझाईआ। मूसा ईसा मुहम्मद तेरी कसम खा के गए सुणा, अन्तिम आवे बेपरवाहीआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी चल्ले आपणी सदा रज़ा, राज़क रिज़क रहीम इक अख्वाईआ। दो जहानां वेखे थाउँ थाँ, लोक परलोक पड़दा दए उठाईआ। चौदां तबक साचा सबक दे सुणा, कलमा कायनात सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे बैठे अलख जगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे उडीक, प्रभ तेरा ध्यान लगाईआ। मेहरवान बेनज़ीर दर पा भीख, भिक्खक स्वाली बैठे अलख जगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरे चरण कँवल मंगण प्रीत, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण तेरी काली धार वेखण चिट्टे उते लीक, लकीर बेनज़ीर तेरी समझ किसे ना

आईआ। तेरा निशाना कोई ना जाणे ठीक, काया ठीकर भन्न ना कोए तेरा नूर नज़री पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नव नौ चार तेरी रखदे गए उडीक, अन्तिम वेला गया आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे आसा इक रखाईआ। पीर पैगम्बर कर कर सजदा, सीस जगदीश रहे झुकाईआ। तूं साहिब ठाकर हउँ तेरा बरदा, महिबूब तेरी इक सरनाईआ। दो जहान तैथों डरदा, भय भउ इक्को नज़री आईआ। चार युग तेरा कलमा पढ़दा, बिन कलमिउँ काम रूप वटाईआ। तूं वेख खेल साचे घर दा, घर घर विच पड़दा लाहीआ। दीन इस्लाम उम्मत नबी रसूल पल्लू कोई ना फड़दा, चारे कन्नीआं ख़ाली रहे वखाईआ। मुहम्मद तेरे वल इशारा करदा, सैनत नाल रिहा समझाईआ। मैं सदी चौधवीं उहदे कोलों डरदा, जिस मेरी बणत बणाईआ। उह आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सब दा घाड़न घड़दा, घाड़त घड़े बेपरवाहीआ। उहदे अग्गे कोई ना अड़दा, जो घड़या भन्न वखाईआ। बिन पौड़ी डण्डे दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड सब दे उपर चढ़दा, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। अग्नी हवन कदे ना सड़दा, शब्द धार कदे ना खरदा, डूंघी भँवरी समुंद सागर सके ना कोए रुढ़ाईआ। जो करना सो आपे करदा, ना जीउदा ना दिसे मरदा, मर्द मर्दानगी आपणे हथ्थ वखाईआ। हउँ सेवक हो के हाढ़े कढ्ढणा, वेखां खेल नरायण नर दा, नर हरि आपणी दया आप कमाईआ। कलयुग अन्तिम भाणा जरदा, तू ही तू ही राग पढ़दा, मैं मेरा नज़र कुछ ना आईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे भीख मंगण आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर गए झुक, झुक झुक सीस निवाया। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर पुरख अकाल दीन दयाल साडा पैंडा गया मुक्क, कलयुग वेला अन्त रिहा समझाया। सचखण्ड दुआरे हरि निरँकारे तेरे चरण बलिहारे तेरी शरनाई बैठे लुक, दूजा धाम नज़र कोए ना आया। कृपानिधान नौजवान वड मेहरवान लख चुरासी जीव जंत जा के पुच्छ, क्यों बैठे तेरा नाम भुलाया। निर्भय निरवैर निराकार इक्को शेर हो के बुक्क, भबक दो जहान सुणाया। लख चुरासी आत्म सुत्ती जाए उठ, शब्द हलूणा इक लगाया। जन भगतां दे इक्को सुख, सुख आत्म घर वखाया। उजल कर मात मुख, मुखड़ा आपणे रंग रंगाया। आपणी गोदी लै चुक्क, निरगुण सरगुण सेव कमाया। बिरहों वैरागण हो के जा के पुच्छ, दर दर घर घर फेरी पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को वेख आपणा घर, जिस घर विच कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड वसाया। वेख प्रभू जग्ग आ के हाल, तेरे अग्गे इक अरज़ोईआ। चारों कुण्ट होई बेहाल, दहि दिशा सार कोए ना पाईआ। ग़रीब निमाणे रोवण कंगाल, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। साचा दिसे ना कोए दलाल, सौदा हट्ट ना कोए विकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ सारे थक्के भाल, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। कर किरपा मन्न इक स्वाल, सति सतिवादी आपणा वेस वटाईआ। लख चुरासी बिन पत फुल फुलवाड़ी दिसे डाल, खिज़ां रूप रुत्त वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। श्री भगवान दया कमाउँदा ए। बेपरवाह आख समझाउँदा ए। सचखण्ड निवासी नैण उठाउँदा ए। पुरख अबिनाशी पड़दा लौंहदा ए। गुर अवतार पीर पैगम्बर आख सुणाउँदा ए। विष्न ब्रह्मा शिव नाल रलाउँदा ए। आसा सब दी पूर कराउँदा ए। शब्दी आपणी धार चलाउँदा ए। बोध अगाध मृदंग अलाउँदा ए। दो जहानां ख़बर सुणाउँदा ए। ब्रह्मण्ड खण्ड उठाउँदा ए। पुरी लोअ हिलाउँदा ए। त्रैगुण माया डेरा ढाउँदा ए। पंज तत खेड़ा वेख वखाउँदा ए। नौ दर आपणा रंग चढ़ाउँदा ए। दस्म दुआरी कुण्डा लौंहदा ए। आत्म सेजा सोभा पाउँदा ए। शब्द सुहागी गीत अलाउँदा ए। बण वैरागी राग सुणाउँदा ए। सच त्यागी रूप वटाउँदा ए। कन्त सुहागी मेल मिलाउँदा ए। बण स्वांगी वेस वटाउँदा ए। कलयुग कूड़ी क्रिया आंधी डेरा ढाउँदा ए। सच सुणाए शब्द छाँदी, शहिनशाह आपणा नाम दृढ़ाउँदा ए। चार युग दी थक्की मांदी, सुरत सवाणी आपणी गोद बहाउँदा ए। तू ही तू ढोला गांदी, साचा राग समझाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आसा मनसा सब दी लेखे लाउँदा ए। आसा मनसा पूर करावांगा। निरवैर हो के रूप वटावांगा। दो जहान वेख वखावांगा। लख चुरासी फोल फोलावांगा।

जम की फाँसी आप तुड़ावांगा। जन भगत बणा के साथी, सगला संग निभावांगा। आत्म परमात्म बणा के पाठी, पूजा पाठ इक दरसावांगा। कलयुग मेट अन्धेरी राती, सतिजुग सच्चा चन्द चमकावांगा। ना कोई दिसे मुल्लां काज़ी, पंडत पांधा ख़ाक रलावांगा। ना कोई दिसे शाह नवाब ग़ाज़ी, राज राजानां ख़ाक मिलावांगा। चढ़ के शब्द घोड़े सच्चे राकी, रकबा दो जहान चरणां हेठ रखावांगा। आदि पुरख जिस साजण साजी, सो अन्तिम वेखण आवांगा। सोहँ शब्द धुर दी दात सतिजुग देवां इक्को भाजी, वस्त अमोलक आप वरतावांगा। निरगुण निरवैर हो के जन भगतां अन्दर करां हज्ज बण के हाजी, हज़रत आपणी धार वखावांगा। बरदा गुलाम हो के बणां निमाज़ी, सच मुसल्ला इक वछावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा लेखा आपणे हथ्थ रखावांगा। धुर दा लेखा हथ्थ रखावांगा। समरथ हो के आवांगा। महिमा अकथ जणावांगा। धुर दा रथ आप चलावांगा। लख चुरासी जीव जंत इक्को मार्ग दस्स, चार वरन रहबर इक अख्वावांगा। सब दा वेख धीरज जत सति तप हठ, तप तपीशर पड़दा आप उठावांगा। सन्त सुहेले विचों रख, आपणा रंग रंगावांगा। भगतां दरस दयां प्रतख, सनमुख आपणा मुख वखावांगा। गुरमुखां बुझावां अग्नी अग्ग, अमृत मेघ इक बरसावांगा। गुरसिखां शब्दी बन्नू तग, साचा सगन इक मनावांगा। हिरदे अन्तर आत्म रच, साढे तिन्न करोड़ लूं लूं आपणा नाम जपावांगा। इक्को धार वखावां सच, कूड़ कुड़यारा डेरा ढाहवांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द अगम्मी बोल अलख, नाअरा इक्को इक सुणावांगा। नाअरा इक्को इक सुणाएगा। प्रभ आपणी दया कमाएगा। कलयुग पिछला पन्ध मुकाएगा। सतिजुग सच्चा धरत मात गोद टिकाएगा। नाता जोड़े जन भगतां नाल पक्का, सगला संग इक वखाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सब दा लेखा वेख वखाएगा। प्रभ लेखा वेखण आवेगा। जोती नूर नूर प्रगटावेगा। ज़ाहर ज़हूर वेस वटावेगा। शब्द नाद तूर सुणावेगा। सर्ब कला भरपूर, भरपूर आपणी कल वरतावेगा। पन्ध मुका नेड़ दूर, दूर दुराडा नेरन नेरा नज़री आवेगा। कलयुग कूड़ी क्रिया नाता तोड़े कूड़, सच सुच इक समझावेगा। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे भरया पूर, शौह दरया आप रुढ़ावेगा। गुरमुख विरला होए मंज़ूर, जिस आपणा भेव चुकावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सब दा लेखा लेखे लावेगा। गुर अवतार सुण के पए हस्स, सचखण्ड साचे ख़ुशी मनाईआ। पीर पैगम्बर कहिण प्रभू तेरे सब वस, बेअन्त तेरी वड्याईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग असीं मार्ग आए दस्स, लोकमात शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान लेखा लिख समझाईआ। तेरा नाम निधान अमृत आत्म दे के आए रस,

रस इक्को इक समझाईआ। तेरा नूर निरगुण जोत कर के आए प्रकाश, दीवा बाती कमलापाती इक वखाईआ। तेरे मिलण दी दस के आए आस, साची सिख्या कर पढ़ाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब दा दाता पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता इक अख्वाईआ। जुग चौकड़ी पुरी लोअ मण्डल मण्डप जो पाउँदा रहे रास, गोपी काहन रूप वटाईआ। नित नवित्त देवे साथ, सगला संग आप हो जाईआ। असीं सारे गुर अवतार पीर पैगम्बर ओसे नाम दा करदे पाठ, पूजा जगत जुगत जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेख वेख प्रभ सच्चा घर, जिस घर तेरे नाम वज्जे वधाईआ। श्री भगवान हो दयाल, दो जहानां वाली आप जणाइंदा। भगत सुहेले मेरे लाल, गुर चेले वेख वखाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी विचों लवां भाल, लख चुरासी खोज खोजाइंदा। काया पड़दा लाह सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्को सोभा पाइंदा। दीवा बाती निरगुण जोत देवां बाल, अज्ञान अन्धेरे मिटाइंदा। अनहद राग सुणावां अगम्मी ताल, ढोलक छैणा ना कोए वजाइंदा। अमृत आत्म प्यावां जल सुहावां ठंडा ताल, घर सरोवर इक प्रगटाइंदा। आ के वेख मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाइंदा। नाता तोड़ काल महाकाल, पुरख अकाल गंढु पवाइंदा। साचा मार्ग दयां सिखाल, सोहँ अक्खर इक समझाइंदा। एथे ओथे दो जहानां बणे दलाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मार्ग इक्को इक दरसाइंदा। मार्ग इक्को इक लगावांगा। दो जहान अन्त समझवांगा। सतिजुग बणा के बणत, घड़न भंनणहार खेल खलावांगा। गुरमुख सज्जण मेल सन्त, सतिगुर आपणा रूप वटावांगा। विछोड़ा नार रहे ना कन्त, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ावांगा। गढ़ तोड़ हउमें हंगत, हँ ब्रह्म इक समझवांगा। दूजा दर कोई ना जाए मंगत, भिच्छया इक्को घरों वरतावांगा। चार वरनां नज़री आए सच्चा पंडत, बोध अगाधा राग सुणावांगा। चौदां विद्या कर के खण्डत, ख़ालस इक्को नाम समझावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक सिखावांगा। साची सिख्या प्रभू सिखाएगा। जीव जंत आप समझाएगा। साध सन्त फड़ उठाएगा। त्रैगुण माया डेरा ढाहेगा। उलटा गेड़ा पन्ध मुकाएगा। पंचम झेड़ा रहिण ना पाएगा। काया खेड़ा आप वसाएगा। मेरा तेरा रंग रंगाएगा। नेरन नेरा नज़री आएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची रुतड़ी आप महकाएगा। साची रुतड़ी आप महकावेगा। फुल फुलवाड़ी वेख वखावेगा। सच बाग़ीचा इक प्रगटावेगा। नीचां ऊँचां इक्को रंग रंगावेगा। सच दुआरा सब नूं सच्चा सूझा, सूझ आत्म परमात्म आप बुझावेगा। अगला भेव खुल्हाए गूझा, पड़दा दूई द्वैत चुकावेगा। लेखा रहे ना एका दूजा, दूजा एका इक्को घर वसावेगा। नेत्र खोल्ह इक्को तीजा, त्रैभवण पन्ध मुकावेगा। चौथे घर आप पतीजा, परम प्रीती इक सिखावेगा।

७१०
१५

७११
१५

पंचम खेल करे अनडीठा, घर घर विच राग अलावेगा। छेवें छप्पर छन्न वसे ना सज्जण मीता, महल अटल इक रुशनावेगा। सत्तवें सति सतिवादी बैठा रहे अतीता, त्रैगुण डेरा ढाहवेगा। अट्ठवें अट्ठां तत्तां ना तपे अंगीठा, कूड़ी अग्नी आप बुझावेगा। नौ दर रहे ना कोई पलीता, पतित पापी पुनीत रूप वटावेगा। दस्म दुआरी करे आप बख़्शीशा, बख़्शश इक्को इक वखावेगा। जन्म कर्म दा साम्हणे रखे शीशा, पूरब लेखा नाल रलावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल आप समझावेगा। साचा खेल प्रभू करावेगा। कलयुग लेखा अन्त मुकावेगा। सतिजुग साची धार बंधाएगा। चार वरन इक्को घर वसाएगा। अठारां बरन रहिण ना पाएगा। तरनी तरन तारनहार दया कमाएगा। साची सरन इक रखाएगा। मरनी डरनी भउ मिटाएगा। साची पौड़ी चढ़ना आप समझाएगा। सुरत शब्द फड़नी, फड़ पल्लू गंढु बन्न्हाएगा। पुरख अकाल आपणी करनी करनी, करता आपणा खेल रचाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर सब दी आसा पूर कराएगा। प्रभू आसा पूर करावेगा। मनसा मनसा विच मिलावेगा। कूड़ा संसा रोग चुकावेगा। सतिजुग साचा बंस इक उपजावेगा। सोहँ हँसा रूप वटावेगा। दहि दिशा राग अलावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमावेगा। करनी साची प्रभू कराएगा। मेहरवान वेख वखाएगा। गुर अवतार नाल रलाएगा। पीर पैगम्बर दर बुलाएगा। भगत अठारां आप उठाएगा। ईसा मूसा मुहम्मद नेत्र नैण अक्ख खुल्हाएगा। नानक गोबिन्द धार जणाएगा। करे खेल सूरा सरबँग, शाह पातशाह आपणा हुक्म वरताएगा। दरवेश बणा सूरज चन्द, साची सिख्या इक दृढ़ाएगा। चौथे जुग मुकया पन्ध, सफ़रनामा सब दा वेख वखाएगा। उठ के वेखो लख चुरासी अन्दर दिसे ना कोई अनन्द, साचा चन्द ना कोए चमकाएगा। सब दी ख़ाली कन्नी खुल्ही दिसे गंढु, पल्लू बंध ना कोए वखाएगा। बिन हरि नामे जगत सवाणी होई रंड, जगत रंडेपा कम्म किसे ना आएगा। सिर चुक्की कूड़ी क्रिया झूठी पंड, किसे भार ना कोए वंडाएगा। भाण्डा भरम भउ दूई द्वैत ना ढाही कंध, खुल्ल्हा वेहड़ा नज़र कोए ना आएगा। आत्म परमात्म नाल मिल के गाया ना इक्को छन्द, जिस गायां प्रभ विछड़ कदे ना जाएगा। किसे कम्म नहीं औणे बत्ती दन्द, रसना जिह्वा लेखा लेखे कोई ना पाएगा। जिन्हां नाल कूड़ी क्रिया खादा गंद, सो गंदगी विश्टा कीड़ा रूप वटाएगा। बिन सतिगुर दुआरे गुरमुख तेरा नूर ना चमके चन्द, तेरा ज़हूर नज़र किसे ना आएगा। बिन पुरख अकाल दीन दयाल दिसे ना कोए बख़्शंद, बख़्शश हत्थ ना कोए फड़ाएगा। सच दुआरा इक्को इक जन भगतो लैणा मंग, पुरख अकाल साची भिच्छया झोली पाएगा। नाम चाढ़े साचा रंग, अनडिठड़ी चोली आप रंगाएगा। नाता तोड़े जेरज अंड, उत्भुज

सेत्ज चारे खाणी पन्ध मुकाएगा। देवे इक्को निजानंद, निज अमृत रस चखाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सृष्ट सबाई दए ज्ञान, गुर अवतार धरो ध्यान, पीर पैगम्बर सच निशान इक वखाएगा। पारब्रह्म तेरी धन्न वड्याई, पुरख अकाल तेरा अन्त कोए ना पाईआ। गुर अवतार रहे जस गाई, पीर पैगम्बर ढोला रहे सुणाईआ। लोक परलोक तेरे नाम वज्जे वधाई, ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी शनवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरा राग रहे अलाई, गण गंधर्ब आपणा नाद जणाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त तेरी सिखण सच पढ़ाई, साचा अक्षर इक्को दे जणाईआ। आवण जावण जन्म मरन चुक्के जगत जुदाई, लेखा लेख कोए रहिण ना पाईआ। आत्म परमात्म कर इक कुड़माई, घर मेला गुरू चेला रूप वटाए धी जवाई आ। तूं साहिब सतिगुर सज्जण सुहेला, कलयुग अन्तिम दिसे वेला, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, वस्त अमोलक झोली पाईआ। देवे वर हरि निरँकार, निरवैर दया कमाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, बेपरवाह इक अख्वाईआ। धुर दा लेखा जाण गुरू अवतार, पीर पैगम्बर रिहा जणाईआ। सारे रल मिल बोलो इक जैकार, धुर दा ढोला राग सुणाईआ । आपस विच करो प्यार, दीन मज़्ब ज़ात पात नज़र कोए ना आईआ। इक्को वसो सच मकान, सचखण्ड दुआरा रिहा वखाईआ। इक्को चरण करो निमस्कार, प्रभ सरन मिले सरनाईआ। इक्को नाअरा देवो मार, दो जहान शनवाईआ। इक्को अक्खर करो दरकार, अलिफ़ ये ना कोए पढ़ाईआ । सारे हल्फ़ चुक्को दर घर सच्चे दरबार, गल पल्लू वास्ता पाईआ। पिछला खैहड़ा छड्डया सर्ब संसार, नाता छड्डया जगत लोकाईआ। किरपा कर इक निरँकार, निरगुण तेरी ओट रखाईआ। जुग जुग बण के आए सेवादार, सेवक चाकर रूप वटाईआ। पंज तत नाता छुट्टया अन्तिम वार, तन माटी खेह कम्म किसे ना आईआ। किसे ख़ाक दब्बी किसे कीता ससकार, साची सार समझ कोए ना पाईआ। प्रभ तेरी जोत तेरे नाल मिली आण, बेपहचान तेरे विच समाईआ। तेरे अग्गे दोए जोड़ वास्ता सारे पाण, नेत्र नैण नैण शरमाईआ। कर किरपा श्री भगवान, भगवन तेरे हथ्थ वड्याईआ। लोकमात जा के वेख वड सूरबीर बलवान, बल आपणा आप प्रगटाईआ। जोद्धे सूरबीर मर्द मर्दान, सच मर्दानगी दे वखाईआ। तेरा झुल्ले इक निशान, नाम निशाना दे वखाईआ। तेरा नाउँ गाए दो जहान, निरगुण सरगुण करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे अगम्मी वर, जिस दा भेव कोए ना आईआ। दे वर सच्चे भगवन्त, प्रभ तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग वेख जा के जीव जंत, साध सन्त रिहा कुरलाईआ। कूड़ी क्रिया गढ़ बणया हउमे हंगत, काम क्रोध लोभ मोह हँकार पई लड़ाईआ। चार वरन क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश कोई ना बणे संगत, दीन मज़्ब पड़दा ना कोए चुकाईआ।

खाण पीण प्रेम रस कोई ना जाणे पंगत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे साचा वर, कलयुग लेखा दे मुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर गए अक्क, आख़र तैनूं रहे सुणाईआ। मार्ग दस्स दस्स गए थक्क, लोकमात बण बण पांधी फेरा पाईआ। तेरे नाम दा खोल्ह के आए हट्ट, बण वणजारे सेव कमाईआ । तेरे सरोवर दस्स के आए तट, किनारा इक्को इक दरसाईआ। पांधी बण के फिर फिर आए नट्ठ नट्ठ, कदम कदम तेरे लेखे लाईआ। नाता तोड़ आए तत अट्ठ, अप तेज वाए पृथमी आकाश मन मति बुध ढेरी ख़ाक मिलाईआ। तेरी वस्त तेरे खाते दिती घत्त, आपणे ख़ाली हथ्थ रखाईआ । मेहरवान उठ वेख खोल्ह अक्ख, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। पिता पूत धीआं भैणां रिहा तक्क, लोक लज्जया शरम हय्या ना कोए रखाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नबेड़ा करे ना कोई हक़, हकीकत नज़र कोए ना आईआ। धर्म सति बुरज गया ढट्ठ, दीवार रहिण कोए ना पाईआ। कूड़ी क्रिया सब नूं मारे सट्ट, सिर सके ना कोए उठाईआ। गुरमुख विरले दोए जोड़ वास्ता रहे घत्त, चरण कँवल ध्यान लगाईआ। भगत कहिण भगवन पूरी कर आस, बैठे निरास जगत कुरलाईआ। सन्त कहिण साडा कोई ना देवे साथ, संगी नज़र कोए ना आईआ। गुरसिख कहिण सानूं लभ्भे कोए ना घाट, पतण नज़र ना आवे माहीआ। चार कुण्ट अन्धेरी रात, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। पुरख अकाल आ के पुच्छ वात, क्यों बैठा मुख छुपाईआ। नेत्र खोल्ह मार झात, झाकी आपणी दे जणाईआ। तेरी पिछली मुक्की वाट, अग्गा नेड़े रिहा वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरा लेखा लिख के गए गुर अवतार पीर पैगम्बर नाल कलम दवात, कलमा शहादत रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, हरिजन साचे लै मिलाईआ। हरिजन साचे मेल प्रभ, हथ्थ तेरे वड्याईआ। लख चुरासी विचों लभ्भ, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। दूर करा कूड़ी हद्द, घर आपणा दे वखाईआ। नाम वजा साचा नद, दूजा राग सुणन कोई ना पाईआ। दरस करा आपणा हज्ज, हाजत होर रहे ना राईआ। ढोला सुणा धुर दा छन्द, सच संदेसा इक अल्हाईआ। धाम दे निरबाण पद, घर साचे वज्जे वधाईआ। मिटे विछोड़ा तेरा अड्ड, साचा संग लै निभाईआ। परम पुरख परमात्म पारब्रह्म ब्रह्म तेरी यद, क्यों बैठा मुख भवाईआ। किरपा कर के घर आपणे सद्द, सद्दा इक्को नाम सुणाईआ। मैं तेरे चरण कँवल डिगां भज्ज, पिछला पन्ध मुकाईआ। तूं करीं आपणा लाड, सच गोदी गोद सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, जन भगतां रंग रंगाईआ। जन भगतां रंग चाढ़ गूढ़, वड ललारी तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। किरपा कर बख्श साची धूढ़, धूढ़ी टिक्का मस्तक इक्को लाईआ। चतुर सुघड़ बणा मूर्ख मूढ़, बंदे बंदीख़ाना

दे तुड़ाईआ। निरगुण बख्श आपणा नूर, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। मेरा हो के क्यों बैठा दूर, भगत भगवान तेरा राह तकाईआ। तैनूं मिलणा अन्त ज़रूर, ज़रूरत होर ना कोए रखाईआ। घर आ हाज़र हज़ूर, आपणा फेरा पाईआ। स्वामी सर्ब कला भरपूर, भरपूर रिहा सब ठाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, जन भगतां संग रखाईआ। पारब्रह्म प्रभ हो भगतां संग, सगला संग इक रखाईआ। तेरे नाम वजावण मृदंग, मृदंगा इक्को हथ्थ उठाईआ। तेरा मानण सच अनन्द, अनन्द अनन्द विचों प्रगटाईआ। तेरा गावण धुर दा छन्द, सोहँ राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, जन भगतां पूरी आस कराईआ। जन भगतां पूरी आस करावांगा। आत्म परमात्म मेल मिलावांगा। साचा मार्ग इक रखावांगा। निरगुण सरगुण कारज आप रचावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन जगत विछोड़ा पन्ध कटावांगा। हरिजन जग विछोड़ा चुकेगा। कलयुग अन्तिम वेला मुकेगा। प्रभ नेरन नेरा ढुकेगा। ग़रीब निमाणयां आ के पुछेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां कोलों कदे ना लुकेगा। जन भगतां पड़दा लाहवेगा। आपणा दरस दिखावेगा। साचा मेल मिलावेगा। आत्म परमात्म जोड़ जुड़ावेगा। सोहँ रूप इक समझावेगा। महाराज वेख वखावेगा। शेर भबक इक लगावेगा। सिँघ आपणा भउ रखावेगा। विष्नूं हो के सेव कमावेगा। भगवान हो के गोद उठावेगा। दो जहान जै जैकार करावेगा। सतिजुग साचा राह वखावेगा। मूल मन्त्र इक दृढ़ावेगा। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै, लोक परलोक विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार पीर पैगम्बर बिन रसना जिह्वा सर्ब जस गावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, नर निरँकार इक्को एक आपणा हुक्म वरतावेगा।

✪ १८ अस्सू २०२० बिक्रमी हरनाम कौर दे गृह ख़िआली वाला ज़िला बठिंडा ✪

हरि किरपा जन वसे खेड़ा, काया नगर मिले वड्याईआ। सतिगुर किरपा चुक्के झेड़ा, ततव तत ना कोए लड़ाईआ। गुर किरपा दिसे सञ्झ सवेरा, मिले सच सच्ची सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद लेखा रिहा लिखाईआ। हरि किरपा मिले ब्रह्म ज्ञान, भेव अभेद जणाईआ। सतिगुर किरपा मिले धुर दा दान, नाम अमोलक झोली पाईआ। गुर किरपा अन्तर आत्म होए ध्यान, लिव इक्को इक लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। हरि किरपा प्रभ पाए एक, एकँकार नज़री आईआ। सतिगुर किरपा बख्शे साची टेक,

दूजी अवर ना कोए सरनाईआ। गुर किरपा होए बुध विवेक, निर्मल नूर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या दए समझाईआ। हरि किरपा मिले भगवन्त, भगवन आपणी दया कमाइंदा। सतिगुर किरपा जपे जाप बिन रसना जिह्वा मंत, अजपा जाप इक समझाइंदा। गुर किरपा मिले विछोड़ा नार कन्त, सुरती शब्दी बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप वखाइंदा। हरि किरपा पाए गहर गम्भीर, गुणवन्त वड्डी वड्याईआ। सतिगुर किरपा अमृत आत्म मिले ठांडा सीर, झिरना इक्को इक झिराईआ। गुर किरपा सांतक सति होए सरीर, अग्नी तत रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सद वड्याईआ। गुर किरपा लभ्भे राह, पांधी आपणे पन्ध लगाईआ। सतिगुर किरपा मिले इक मलाह, बेड़ा शौह दरया पार लँघाईआ। हरि किरपा मिले सच्चा थाँ, दरगाह साची खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बख्शे एक टेक सरनाईआ। गुर किरपा बदले नीत, नीतीवान दए बदलाईआ। सतिगुर किरपा होए अतीत, त्रैगुण डेरा देवे ढाहीआ। हरि किरपा सचखण्ड वसे धाम अनडीठ, महल अटल सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची बूझ इक बुझाईआ। गुर किरपा आए जगत जहान, मिले नाम वड्याईआ। सतिगुर किरपा घर दीपक जोत जगे महान, निर्मल नूर करे रुशनाईआ। हरि किरपा मिले मेल श्री भगवान, भगवन आपणे घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। गुर किरपा भेव जाए खुल्ह, पड़दा रहिण कोए ना पाईआ। सतिगुर किरपा अमृत आत्म जाए ना डुल्ह, घर सरोवर दए वखाईआ। हरि किरपा सचखण्ड दुआरा जाए खुल्ह, आवण जावण पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेव अभेद आप जणाईआ। गुर किरपा खुल्हे अक्ख, निज नेत्र दए खुल्हाईआ। सतिगुर किरपा लख चुरासी नालों होवे वक्ख, निरगुण सरगुण आपणा मूल जणाईआ। हरि किरपा सचखण्ड दुआर परम पुरख दरस होए प्रतख, स्वच्छ सरूपी रूप दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा संग रखाईआ। हरि किरपा मिले हरि जू आप, आप आपणे रंग रंगाइंदा। सतिगुर किरपा सति सतिवादी मिले जाप, बिन रसना जिह्वा आप सुणाइंदा। गुर किरपा कोट जन्म दे मिटण पाप, दुरमति मैल सर्ब धवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। गुर किरपा खुल्हे ताक, बंद किवाड़ी दए खुल्हाईआ। सतिगुर किरपा आत्म परमात्म बज्झे नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। हरि किरपा सचखण्ड दुआर होए निवास, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा इक दृढ़ाईआ। हरि किरपा हरि चाढ़े रंग, रंग रंगीला आप रंगाईआ। सतिगुर किरपा दो जहान डूंघी भँवर जाए लँघ, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। गुर किरपा नाम वजाए इक मृदंग, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लहिणा दए चुकाईआ। साचा लहिणा देवे आप, हरि सतिगुर रूप वटाईआ। गुर सतिगुर सज्जण थापण थाप, वेख वखाए चाईं चाईंआ। जुग चौकड़ी बण के पिता बाप, पूत सपूत गोद उठाईआ। जन भगतां दस्से इक्को नात, सन्त साजण लए जगाईआ। गुरमुखां इक्को नाम निधान जाए आख, अन्दर वड़ के दए समझाईआ। गुरसिख गुर मिलण दी दस्से जाच, सिध मार्ग इक जणाईआ। मन मनुआ ना करे नाच, उठ उठ दहि दिशा ना धाईआ। भाग लगाए काया माटी काच, कच कंचन रूप वटाईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। घर मन्दिर कर निवास, आसण सिँघासण सोभा पाईआ। शब्द सरूपी पाए रास, अगम्मी गोपी काहन नचाईआ। खेले खेल पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता आपणी कार कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी जिस कीते नास, कलयुग अन्तिम वेखे बेपरवाहीआ। जिस दा लहिणा देणा कोटन कोटि पृथ्मी आकाश, कोटन कोटि विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान लगाईआ। जिस दा संदेसा कोटन कोटि गुर अवतार पीर पैगम्बर लेखा लिख लिख गए लिखास, लोकमात फेरा पाईआ। जिस दा भेव कोटन कोटि साध सन्त कोई गा ना सके विच गाथ, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोए वड्याईआ। सो साहिब पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता आपणी कार कमाईआ। प्रगट हो पुरख समराथ, समरथ आपणी धार जणाईआ। महिमा सुणाए अकथनी काथ, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। हो सहाई अनाथां नाथ, दीनन आपणी दया कमाईआ। आत्म परमात्म दस्से इक्को पाठ, पूजा सिमरन इक समझाईआ। इक्को तीर्थ इक्को ताट, घर घर सरोवर दए नुहाईआ। इक्को नूर इक्को ज़ात, इक्को मज़्ब दए समझाईआ। इक्को नाम इक्को गाथ, इक्को राग धुन शनवाईआ। इक्को मन्दिर इक्को हाट, इक्को वणज रिहा कराईआ। इक्को पत्तण इक्को घाट, इक्को बैठा सच्चा माहीआ। इक्को चरण इक्को नात, इक्को बिधाता नज़री आईआ। इक्को सज्जण इक्को साक, सगला संग इक निभाईआ। इक्को पड़दा इक्को ताक, इक्को दूई द्वैती दए मिटाईआ। इक्को सज्जण इक्को साक, सैण इक्को इक अख्वाईआ। इक्को खेल इक तमाश, खेलणहार इक हो जाईआ। इक्को वस्त इक्को दात, देवणहार बेपरवाहीआ। इक्को अक्खर इक जमात, इक्को पट्टी दए पढ़ाईआ। इक्को हरि पुरख अबिनाश, इक्को सतिगुर रूप समाईआ। इक्को थापण लए थाप, इक्को गुर गुर बूझ बुझाईआ। इक्को आदि जुगादि जुग चौकड़ी पत लए राख, सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। सो साहिब दा साचा करो जाप, जिस जपयां दुःख रहे

ना राईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस थापण दित्ता थाप, देवणहार तत वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेड़ा गुरमुख लैणा वसाईआ। साचा खेड़ा वसे लोकमात, साढे तिन्न हथ्थ मिले वड्याईआ। घर सज्जण मिले माही साक, प्रभ मित्र प्यारा फेरा पाईआ। चरण प्रीती बन्न्हे नात, नाता जोड़े सहिज सुभाईआ। मेहरवान हो के देवे दात, वस्त अमुलड़ी झोली पाईआ। नाम निधान धुर सोग़ात, बिन कीमत दए चुकाईआ। मेटे रैण अन्धेरी रात, साचा नूर चन्द शब्द चमकाईआ। पत्तण पार उतारे घाट, घाटा सब दा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां इच्छा पूर कराईआ। जन भगतां इच्छया करे पूर, आप आपणी दया कमाईआ। बख्शणहारा साचा नूर, निरगुण नूर दए रुशनाईआ। वजावणहारा साची तूर, अनहद रागी राग अल्लाईआ। तोड़नहारा नाता कूड़, जूठ झूठ दए मिटाईआ। भरनहारा भाण्डे भरपूर, ख़ाली दए भराईआ। गुर का शब्द जो गुरमुख करे मंज़ूर, तिन्नां बिरथी आस कोए ना जाईआ। देवणहार सदा हाज़र हज़ूर, घर बैठा वेखे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साचे खुशी मनाईआ। घर साचे खुशी मनावे गीत, गीत गोबिन्द सुणाइंदा। भगत भगवान धुर दी रीत, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। साहिब सतिगुर काया मन्दिर वखाए वखाए मक्का काअबा मसीत, शिवदुआला मठ्ठ गुरुदुआर इक्को घर जणाइंदा। जिस घर वसे पतित पुनीत, पतित पावन भेव चुकाइंदा। लेखा जाणे हस्त कीट, ऊँच नीच अंग लगाइंदा। धाम वसे इक अनडीठ, जिस घर आपणा डेरा लाइंदा। गुरमुख विरला करे प्रीत, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साची भीख, भिच्छया नाम इक वरताइंदा। भिच्छया नाम झोली पा, पारब्रह्म दए जणाईआ। गुर शब्दी तेरा बणे मलाह, बेड़ा मात चलाईआ। सतिगुर पूरा दए पनाह, चरण कँवल सरनाईआ। हरि करता अन्तिम गोदी लए बहा, घर साचे खुशी मनाईआ। हरिजन हरिभगत लहिणा देणा मुक्के दो जहां, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण इक्को नूर समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, हरिजन हर दर हर घर हरि वस्त इक वरताईआ।

✪ १८ अस्सू २०२० बिक्रमी हरनाम कौर दे गृह ख़िआली वाला ज़िला बठिंडा ✪

जन भगतां दस्से मार्ग एक, हरि सतिगुर दया कमाईआ। अन्तर आत्म करे विवेक, गुर सतिगुर सोझी पाईआ। पूरब वखाए लहिणा लेख, गुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। घर विच घर वखाए साचा देस, गृह मन्दिर खुशी जणाईआ। अन्दर वड़

के देवे आपणा भेत, पड़दा दूई द्वैत चुकाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म दस्से हेत, सच प्रीती इक समझाईआ। नज़री आए नेतन नेत, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। सुरती शब्द जणा के खेड, साची खेल इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत दए समझाईआ। जन भगतां मार्ग देवे दस्स, हरि हरि जू दया कमाइंदा। अन्तर आत्म देवे रस, सतिगुर पूरा बूझ बुझाइंदा। निर्मल जोत कर प्रकाश, गुर नेत्र अक्ख इक खुल्हाइंदा। घर गोपी काहन पवाए रास, मण्डल मण्डप वेख वखाइंदा। कूड़ विकारा कर के नास, साची वस्त इक वरताइंदा। जगत तृष्ना मेट ख़ास, ख्वाहिश आपणे नाल रलाइंदा। लेखे ला पवण स्वास, रसना जिह्वा गुण चखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा भेव आप खुल्हाइंदा। जन भगतां भेव खोल्हे हरि, हरि करता वड्डी वड्याईआ। किरपा कर नरायण नर, नर बूझ इक बुझाईआ। कूड़ी क्रिया तोड़ दर, दरवाज़ा इक्को इक समझाईआ। जिस गृह सज्जण बैठा वड़, सच सिँघासण सोभा पाईआ। निर्मल प्रकाश जोत रिहा कर, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। शब्द अगम्मी रिहा पढ़, इक्को राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत दए समझाईआ। जन भगतां उपर हो दयाल, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। पकड़ उठाए साचे लाल, हरि पुरख निरँजण होए सहाईआ। निरगुण हो के बणे दलाल, एकँकार वेस वटाईआ। साचा दीपक देवे बाल, आदि निरँजण जोत रुशनाईआ। अन्दर बाहर करे संभाल, अबिनाशी करता बेपरवाहीआ। साची धर्मसाल दए वखाल, श्री भगवान पड़दा आप उठाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म मेले आण, घर साचे वज्जे वधाईआ। आत्म सेजा करे परवान, सच सुहञ्जणी इक सुहाईआ। धुर दा देवे सच ज्ञान, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। साचे भगत तेरा धुर दा इक निशान, निशाना अवर ना कोए रखाईआ। लेखा चुक्के दो जहान, दोए दोए रूप ना कोए वटाईआ। साचा मेला श्री भगवान, दूजा इष्ट ना कोए रखाईआ। कागद कलम शाही ना कोए ईमान, चरण कँवल इक सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगतां अक्ख इक खुल्हाईआ। भगतां अक्ख खोल्हे अख़ीर, आख़र आपणा मेल मिलाइंदा। बजर कपाटी देवे चीर, दूई द्वैती डेरा ढाइंदा। अमृत आत्म बख्शे सीर, सच प्याला हत्थ उठाइंदा। जन्म कर्म दी बदल देवे तकदीर, तदबीर इक्को इक समझाइंदा। ज़ात पात ऊँच नीच शरअ कट ज़ंजीर, नाम डोरी तन्द बंधाइंदा। माया ममता कढ्ढे पीड़, हउमें हंगता रोग गवाइंदा। सति सन्तोख देवे धीर, जत सति इक समझाइंदा। साचा नाम शब्द अकसीर, साची सिख्या इक समझाइंदा। जिस नूं लभ्भदे पीर फ़कीर, पैगम्बर जिस दी ओट रखाइंदा। सो सुल्तान खेले खेल शाह हकीर, हज़रत आपणा वेस वटाइंदा। जन भगतां मिले सांझा पीर, परवरदिगार आपणा मेल मिलाइंदा।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल दाता गुणी गहीर, गहर गवर आपणा रंग रंगाइंदा। जन भगतां चाढ़े साची चोटी, चोट नाम नगारे लाईआ। लभ्भदे फिरदे कोटन कोटी, विरले हरिजन बूझ बुझाईआ। कर किरपा कढ्ढे वासना खोटी, दुरमति मैल धवाईआ। सोई सुरत उठाए सोती, चेतन धार दए समझाईआ। आपणी खोल्हे आप ख़ामोशी, साचा नाम दए समझाईआ। दोए लोचन लोच कोए ना लोची, निज नेत्र दए वखाईआ। हरि की खेल किसे ना सोची, सोच समझ विच किसे ना आईआ। करे प्रकाश निर्मल जोती, जोती जोत जोत रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मार्ग दए वखाईआ। जन भगतां मार्ग दस्से सिध्धा, सिध्धी तरा समझाईआ। प्रभ मिलण दी इक्को बिधा, नाता कूड़ा दयो तजाईआ। सरन सरनाई जो सतिगुर स्वामी डिग्गा, तिस बांहों पकड़ लए उठाईआ। आदि जुगादि गहर गम्भीर डूंघा सागर निघा, तामस अग्न ना तत तपाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर भिजा, रंग भिन्नड़ा इक वखाईआ। कबीर जुलाहे नाल मिल के गिझा, साची रीत जगत वखाईआ। कृपानिधान जिस वल कर दए आपणी निगह, सो पाथर पाहन लए तराईआ। जे कोई पुच्छे प्रभू वड्डा किडा, भगत कहिण तेरा अन्त कोए ना पाईआ। जे कोई पुच्छे प्रभ किडा निका, भगत कहिण हर घट बैठा डेरा लाईआ। जे सच्ची पुच्छो पुरख अकाल सब दा पिता, रक्षया करे हर घट थाईंआ। इक एकँकार नाल करो हिता, जो जन्म मरन विच कदे ना आईआ। जिस दी गुर अवतार पीर पैगम्बर लैंदे रहे सिख्या, लै के सिख्या लोकमात करन पढ़ाईआ। सो साहिब सुल्तान सद वसे दहि दिश्या, चार कुण्ट आपणा हुक्म वरताईआ। तिस दा लेख किसे ना लिख्या आदि अन्त कहिण कोए ना पाईआ। जन भगतो पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कदी ना जाए भिटया, ज़ात पात दुःख रोग नज़र कोए ना आईआ। उस नूं मार सके ना नाल कदी वट्टे इटया, तीर निशाना पोह ना सके राईआ। निरवैर निराकार निरँकार दो जहान फिरे नट्ठया, वेस अवेसा रूप वटाईआ। जन भगतां आपणी गोदी सदा चुक्कया, चुक्क चुक्क खुशी मनाईआ। पिछला लेखा ओन्हां मुकया, जिन्हां मिल्या बेपरवाहीआ। अग्गे दो जहान किसे ना पुच्छया, राए धर्म चित्रगुप्त विष्न ब्रह्मा शिव आदक सारे बैठण सीस झुकाईआ। हरिभगत लोकमात कदे ना रहे लुक्या, श्री भगवान आपणी बिध नाल लए प्रगटाईआ। जो साहिब सतिगुर सरनाई सीस झुकया, सो सीस आपणा धड़ नाल लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां देवे इक्को वर, एथे ओथे दो जहान सद आपणे नाल रखाईआ।

✪ १८ अस्सू २०२० बिक्रमी ख़िआली वाला गुरदुआरे विच ज़िला बठिंडा ✪

सतिगुर शब्द करो प्यार, निरगुण सरगुण नानक गया समझाईआ। गुर अंगद मार्ग दित्ता वखाल, अमरदास गुर घाल कीती लेखे लाईआ। रामदास वखा सच्ची धर्मसाल, हरिमन्दिर रूप इक प्रगटाईआ। गुर अर्जन ज्ञान दीपक दित्ता बाल, बोध अगाध करी पढ़ाईआ। गुरू ग्रन्थ गुरदेव स्वामी सब दा बणा प्रितपाल, धुर दी धार इक जणाईआ। दिवस रैण अट्ठे पहर जीव जपो हरि नाम, मन वासना मेट मिटाईआ। चल के आओ साचे धाम, गुरुदुआरा गुर गुर रूप नज़री आईआ। जिस दर आ के इच्छया पूरी होवे काम, काम चेशटा रहे ना राईआ। सोई सुरती मिले राम, रमईया आपणा फेरा पाईआ। दर घर साचे मिले अगम्मी काहन, गुर शब्द नज़री आईआ। जिस दा आदि जुगादि इक्को मन्त्र सतिनाम, नाम सति करे पढ़ाईआ। उस दे चरण करो प्रणाम, अमृत वेले उठ उठ भज्जो वाहो दाहीआ। सफल करो जन्म जहान, माणस बिरथा लोकमात ना जाईआ। गुर चरण धूढ़ करो अशनान, दुरमति मैल लैणी धवाईआ। सतिगुर बचन धुर संदेस मुख वाक सुणो आण, जिस सुणयां मन मति बुध निर्मल रूप वटाईआ। सर्ब जीआं दा इक ज्ञान, गुर बाणी बाणी गुर शब्द भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा गुर संगत वर, हरि संगत बिन सतिगुर पूरे एथे ओथे होए ना कोए सहाईआ।

✪ १८ अस्सू २०२० बिक्रमी चक्क फ़तिह सिंघ लाभ सिंघ दे गृह ज़िला बठिंडा ✪

सतिगुर पूरा सदा दयाल, आदि जुगादि जुग चौकड़ी वेख वखाइंदा। सन्त सुहेले लभ्भे लाल, गुर चेले मेल मिलाइंदा। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत इक जगाइंदा। पंज तत काया तन वखाए सच्ची धर्मसाल, हरि मन्दिर इक्को इक समझाइंदा। शब्द अगम्मी वज्जे ताल, धुन अनादी राग अल्हाइंदा। दीपक दीआ जोती देवे बाल, तेल बाती संग ना कोए रखाइंदा। अमृत आत्म वखाए ताल, सच सरोवर इक नुहाइंदा। लेखा जाणे शाह कंगाल, ऊँच नीच राउ रंक इक्को दर सुहाइंदा। देवणहार नाम निधान, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। कूड़ी क्रिया मेट निशान, सच सुच इक समझाइंदा। आत्म परमात्म देवे हरि ज्ञान, बोध अगाध आप पढ़ाइंदा। सुरती शब्द मेल मिलाए आण, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रंग वखाइंदा। लहिणा देणा चुकाए दो जहान, लख चुरासी फंद कटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिगुर पूरा मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाइंदा। सतिगुर पूरा सर्ब घट मीता, हर घट रिहा

७२१ १५

समाईआ। जन भगतां मार्ग दस्से ठांडा सीता, अग्नी तत ना कोए वखाईआ। जुग चौकड़ी चलाए रीता, देवणहार शब्द
वड्याईआ । घर वखाए इक अनडीठा, जिस घर वसे बेपरवाहीआ। जिस दी सिफ्त शास्त्र सिमरत वेद पुराण करे गीता,
अञ्जील कुरान खाणी बाणी रही जस गाईआ। सो सतिगुर सदा रहे अतीता, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। जिस नूं लभ्भदे
मन्दिर विच मसीता, सो साढे तिन्न हथ्थ अन्दर घर घर विच बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा
कर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सतिगुर इक्को शब्द अख्वाईआ। सतिगुर सच्चा ठांडा दरबार, घर इक्को इक वखाइंदा।
जिथ्थे लेखा चुक्के पुरख नार, नर नरायण इक्को रूप वटाइंदा। जन भगतां खोल्ह बंद कवाड़, आत्म ताकी कुण्डा लाहइंदा।
कर प्रकाश बहत्तर नाड़, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। उच्ची कूक सुणाए पुकार, धुन अनादी नाद अल्हाइंदा । आत्म सेजा
कर प्यार, मेल मिलावा इक्को घर वखाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा प्यार, दूजा रंग ना कोए रंगाइंदा। जन्म मरन रोग दए निवार,
पूरब लेखा झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे आपणे
घर वसाइंदा। सतिगुर पूरा सदा समरथ, एकँकार वड्डी वड्याईआ। जिस जन देवे नाम वथ, तिस मन्त्र इक समझाईआ।
हिरदे वस मार्ग जाए दस्स, बाहरों करे ना कोए पढ़ाईआ। सुरती शब्दी पाए नथ्थ, डोरी तन्द इक जणाईआ। नाम निधाना
महिमा अकथ, सोहला ढोला इक्को गाईआ। जिउँ भावे तिउँ लवे रख, बेपरवाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप
हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे वेख वखाईआ । हरिजन वेखे लोकमात, निरगुण सरगुण
भेव चुकाइंदा। गुरमुखां देवे इक्को दात, गहर गम्भीर आप वरताइंदा। चरण कँवल बंधाए नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा।
धुर दा राग सुणाए साची गाथ, सोहँ ढोला इक समझाइंदा। मेटे रैण अन्धेरी रात, साचा नूर चन्द चमकाइंदा। जन्म जन्म
दी पूरी करे आस, कर्म कर्म दा रोग गवाइंदा। सदा सुहेला अन्तरजामी हर घट वसे पास, जन भगतां आपणा राह जणाइंदा।
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर मण्डल मण्डप आपणी धार चलाइंदा।
सतिगुर सच्चा इक दातार, दाता दानी वड वड्याईआ। ग़रीब निमाणयां कोझयां कमलयां पावे सार, दुखियां दर्द रिहा वंडाईआ।
किरपा करे जिस आप करतार, करता पुरख हो सहाईआ। रोग सोग चिन्ता दु:ख देवे निवार, तन काया माटी सीतल रूप
वखाईआ। बहत्तर नाड़ अग्नी तत ना तपे अँगयार, अमृत मेघ इक बरसाईआ। हउमें हंगता रोग देवे निवार, साची सिख्या
इक पढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया करे ख्वार, देवे नाम सच्ची वड्याईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा
साचा वर, हरिजन पूरब लहिणा वेख वखाईआ। हरिजन मिटे रोग संताप, संसा कोए रहिण ना पाईआ। जन्म जन्म दा

७२२

१५

लेखा चुकाए आप, मेहरवान हो सहाईआ। घर मन्दिर खोल्ह ताक, पड़दा दूई द्वैत उठाईआ। पकड़ चढ़ाए आपणे घाट, पत्तण इक्को इक समझाईआ। नज़री आए पुरख समराथ, समरथ आपणे घर वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन लेखा लेखे लाईआ। हरिजन तेरा मिटे दुःख रोग, संसा मात रहिण ना पाईआ। नाम चुगाए साची चोग, सोहँ हँसा रूप वटाईआ। लहिणा देणा मुक्के लोक परलोक, दो जहानां सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। तूं मेरा मैं तेरा साचा गाउणा इक श्लोक, सो पुरख निरँजण सच समझाईआ। घर दीपक प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। बाकी रहे नहीं किछ खोट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे पार कराईआ। गुरमुख तेरा मिटया दुःख, दर्दी दर्द दर्द वंडाईआ । घर उपजे सच्चा सुख, सतिगुर पूरा होए सहाईआ। उजल करे मात मुख, दुरमति मैल धवाईआ। लेखे लाए जननी कुक्ख, धन्न धन्न जणेंदी माईआ । भाग लगाए अबिनाशी अचुत, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। अग्गे लेखा चुक्के उलटा रुख़, मात गर्भ जूनी फेर ना कोए भुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नाम वस्त इक्को इक वरताईआ। नाम वस्त देवे अतुट्ट, हरि दाता आप वरताइंदा । आवण जावण जाए छुट्ट, लहिणा दो जहान मुकाइंदा। जन्म कर्म ना रहे दुःख, भाण्डा भरम भउ भंनाइंदा। उलटा होए मात गर्भ ना रुख़, दस दस मास ना अग्न तपाइंदा। आपणी गोदी लए चुक्क, सेज सुहञ्जणी आप सुहाइंदा। जन भगतां करे प्यार जिउँ बालक मात पुत्त, पिता पूत आपणा रंग रंगाइंदा। अन्दर वड़ के लए पुच्छ, बाहरों नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन उपर जाए तुठ, तिस सुख सागर रूप वखाइंदा। सुख सागर गहर गम्भीर, घर घर विच दए वखाईआ। तन ठांडा करे सरीर, मन मति बुध ना कोए चतुराईआ। दूई द्वैत कट भीड़, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। शरअ रहे ना कोए ज़ंजीर, शरीअत रूप ना कोए वटाईआ । अमृत देवे इक्को सीर, साचा नीर मुख चुआईआ। मन रहे ना कोई दलगीर, चिन्ता रूप ना कोए वटाईआ। तन माटी रहे ना कोई पीड़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहर नज़र इक उठाईआ। दुःख रोग जाए नट्ठ, जिस घर सतिगुर चरण टिकाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, मेहर नज़र इक उठाईआ। नाम अमोलक दे के जाए वथ, वास्ता आपणे नाल पाईआ। जन भगतां प्रभ तों मंगण दा पूरा हक़, हकीकत सब दे हथ्थ वखाईआ। लख चुरासी जीव जंत भरम भुलेखे रहे शक़, संसा सके ना कोए चुकाईआ। जीव जंत कलयुग अन्तिम सारे गए थक्क, साची मंज़ल हथ्थ किसे ना आईआ। साधां सन्तां कोलों गए अक्क, जो घर घर दर दर फिरदे धूंणीआँ ताईआ । अन्तिम

बहि गए मस्तक रख के हथ्थ, नेत्र नैण नीर वहाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, साची सिख्या दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन लहिणा देणा दए चुकाईआ। हरिजन लहिणा देणा होवे पूर, आसा पूर कराइंदा। रोग सोग चिन्ता दुःख करे दूर, जगत दलिद्दर नेड़ ना आइंदा। कूड़ी क्रिया नाता तोड़े कूड़, कूड़ा रस अमृत रूप वटाइंदा। कर किरपा मस्तक टिक्का लाए धूढ़, चरण चरणोदक अमृत जाम इक प्याइंदा। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत पारब्रह्म दा साचा नूर, नूर नूर नाल मिलाइंदा। दर्शन देवे हाज़र हज़ूर, हज़रत आपणा फेरा पाइंदा। सर्ब कला भरपूर, पारब्रह्म प्रभ आपणा भेव चुकाइंदा। वसणहारा नेड़े दूर, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, गुरसिख गुरमुख बाल अञ्याण, आप उठाए वाली दो जहान, सच वखाए इक निशान, आवण जावण चुकाए काण, मन्दिर सुहाए इक मकान, जिस गृह आपणा चरण छुहाइंदा।

✪ १८ अस्सू २०२० बिक्रमी मुकन्द सिँघ दे गृह पिण्ड मूराज ज़िला बठिंडा ✪

चार युग थक्के मांदे, अन्तिम बैठे पन्ध मुकाईआ। सो पुरख निरँजण तेरा राह तकांदे, निज नेत्र नैण उठाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां नाल मिलांदे, साचा संग निभाईआ। भगत अठारां फड़ उठांदे, सच प्रीत इक लगाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद अक्ख खुल्हांदे, आलस निंद्रा दूर कराईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ वास्ता पांदे, दर तेरे इक अरज़ोईआ। सूरज चन्द नैण शरमांदे, नेत्र अक्ख ना कोए उठाईआ। लख चुरासी जीव जंत कुरलांदे, कूक इक्को इक सुणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण दोए जोड़ वास्ता पांदे, गल पल्लू रहे वखाईआ। अञ्जील कुरान खाणी बाणी नेत्र नैणां नीर वहांदे, धीरज धीर ना कोए धराईआ। चार कुण्ट दहि दिशा अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज साचा संग ना कोई निभांदे, वरन बरन पई लड़ाईआ। गीत गोबिन्द गहर गम्भीर परम पुरख तेरा कोई ना गांदे, रसना जिह्वा बत्ती दन्द होए हल्काईआ। साध सन्त लोकमात अन्तर आत्म होए आंधे, निज नेत्र नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। सच दुआर बेपरवाह कोई ना आवे ठांडे, त्रैगुण अग्नी तत सर्ब तपाईआ। कूड़ी क्रिया रसना जिह्वा पींदे खांदे, ख़ालस तेरा रूप नज़र किसे ना आईआ। चार कुण्ट दहि दिशा उतर पूरब पच्छिम दक्खण उठ उठ धांदे, भज्जण वाहो दाहीआ। तेरा दरस पारब्रह्म पुरख अकाल कोई ना पांदे, स्वच्छ सरूपी नज़र किसे ना आईआ। भरमे भुल्ले पंडत पांधे, मुल्लां शेख़ ग्रन्थी पन्थी समझ कोए ना आईआ। आत्म सरोवर साचे तीर्थ

कोई ना नहांदे, अठसठ बैठे फेरीआं पाईआ। दूई द्वैत पड़दा ना कोई उठांदे, एका दूजा भेव ना कोए चुकाईआ। साचे मन्दिर बहि के तेरा इष्ट ना कोए मनांदे, चार वरन आपणा आपणा ध्यान रहे लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे ओट रखाईआ। चार युग रहे कुरला, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दए दुहाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मारे धाह, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। करोड़ तेतीसा मंगे पनाह, चरण कँवल मिले सरनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन ध्यान, नेत्र नैण अक्ख खुलाईआ। सृष्ट सबाई किसे ना कोई ज्ञान, साचा मन्त्र नाम ना कोए दृढ़ाईआ। सति धर्म झुल्ले ना कोई निशान, कूड़ी क्रिया डंका वज्जे वधाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप घर घर नच्चे शैतान, शरअ बैठी मुख घूँगट लाहीआ। मेहरवान नज़र ना आए नौजवान, नर निरँकार दरस कोए ना पाईआ। शाह पातशाह राज राजान होए बेईमान, बैठे बेवा रूप वटाईआ। साचा मित्र दिसे ना कोए जहान, जगत धरोही बणी लोकाईआ। कागद कलम शाही होई हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। गुर का शब्द कोई ना सके पहचान, चौदां विद्या रही कुरलाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द अमृत वेले उठ के सारे गाण, संधया आपणा सगन मनाईआ। निज नेत्र पारब्रह्म पतिपरमेश्वर दरस कोए ना पाण, बंद कवाड़ी कुण्डा ना कोए खुलाईआ। अनहद नाद सुणे ना कोई धुन्कान, धुन आत्मक राग समझ किसे ना आईआ। दीआ दीपक जोत घर जगे ना किसे महान, अन्ध अन्धेरे बैठी सर्ब लोकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर उठ उठ वेखण मार ध्यान, लोकमात राह तकाईआ। कलयुग नच्चे घर घर वड़ शैतान, आपणा हुक्म रिहा वरताईआ। किसे समझ ना आए शास्त्र सिमरत वेद पुरन, गीता ज्ञान भेव कोए ना पाईआ। सच मसला ना कोए अञ्जील कुरान, काया काअबा नज़र किसे ना आईआ। सिदक सबूरी ना कोए ईमान, साबत सूरत दरस कोए ना पाईआ। मिले मेल ना वड मेहरवान, बी पिहरबान मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला इलाही नूर नज़र किसे ना आईआ। ईसा मूसा मुहम्मद, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। चार युग करन पुकार, पुनह पुनह तेरी सरनाईआ। हउँ बाले नढु बाल अञ्याण, प्रभ तेरा अन्त कोई ना पाईआ। कलयुग अन्तिम सारे होए बेहाल, साचा दर नज़र कोए ना आईआ। अन्तिम शाहों होए कंगाल, ख़ाली हत्थ रहे वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कोई ना निभया नाल, जो आया सो उठ उठ चल जाईआ। धुर दा लेखा लिख के गए जहान, बाणी बोध अगाध समझाईआ। आत्म परमात्म दे के गए ज्ञान, पारब्रह्म ब्रह्म अन्तर भेव चुकाईआ। धर्म वखा के गए निशान, सच निशाना इक झुलाईआ। साची सिख्या दे के गए धुर फ़रमान, नाम संदेसा इक सुणाईआ। दरोही खुदाए कलयुग अन्तिम सारे होए बेईमान, साचा सिदक नज़र कोए

ना आईआउ। मुल्लां शेख़ मसायक बग़ले रख कुरान, कूड़ी कसम लाशरीक तेरी रहे खाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा वेख आपणा इस्लाम, जिस नूं देंदा रिहा पैग़ाम, पीर पैगम्बर सच संदेसा रहबर आपणा इक समझाईआ। गुर अवतार रहे कूक, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। श्री भगवान प्रभ सदी चौधवीं ईसा मूसा मुहम्मद चुकी चूक, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। वीहवीं सदी सब नूं रही फूक, त्रैगुण अग्नी रही लाईआ। माण रिहा ना कोई पंज भूत, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश ततव तत संग ना कोए रखाईआ। होया अन्धेरा चारे कूट, दहि दिशा तेरा चन्द नज़र कोए ना आईआ। कूड़ी क्रिया मौली रुत्त, बसन्ती रंग ना कोए वखाईआ। साचा नज़र ना आए कोई पुत्त, पिता पूत गोद ना कोए सुहाईआ। साची धारों कोई ना पए उठ, जोती नूर ना कोए रुशनाईआ। किसे दर ना दिसे सुच, साचा रूप नज़र कोए ना आईआ। कृपानिधान ठाकर स्वामी मेहरवान सति सरूप आ के पुच्छ, क्यों बैठा मुख छुपाईआ। चौथे युग सब नूं लग्गा दुःख, गुर अवतार देण दुहाईआ। अन्तिम वेला गया ढुक, जिस दा लेखा आए समझाईआ। साडे कोल नहीं कुछ, ख़ाली हथ्थ रहे वखाईआ। तेरे चरणां हेठां बैठे लुक, सिर सके ना कोए उठाईआ। शाह पातशाह इक्को शेर हो के बुक्क, दो जहानां भबक लगाईआ। कूड़ कुड़यारा पैंडा जावे मुक्क, साचा राह दे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कर बेनन्ती, बिनय इक्को इक जणाईआ। वेख खेल प्रभ सम्मत सम्मती, तेरी समझ किसे ना पाईआ। तेरी चाल अगम्म अथाह रमक रमकी, राज राजान शाह सुल्तान तेरा लेखा कहिण कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तुध बिन होए ना कोए सहाईआ। श्री भगवान दया कमाउँदा ए। विष्न ब्रह्मा शिव आप समझाउँदा ए। त्रैगुण तेरा लेख वखाउँदा ए। पंज तत तेरा भेव पाउँदा ए। गुर अवतार लेख लिखाउँदा ए। पीर पैगम्बर वक्त सुहाउँदा ए। दरगाह साची छड्ड के आउँदा ए। मुकामे हक़ नूर चमकाउँदा ए। लाशरीक वेस वटाउँदा ए। सच ताअरीफ़ आप समझाउँदा ए। हकीकत हक़ इक जणाउँदा ए। कूड़ी शरीअत आप मिटाउँदा ए। नाम प्रीत इक बंधाउँदा ए। धुर दा कलमा साचा गीत, ढोला इक्को राग जणाउँदा ए। जिस नूं लभ्भदे विच मसीत, सो मसला हल कराउँदा ए। सदी चौधवीं रही बीत, बीती कहाणी सब दी लेखे लाउँदा ए। चौदां तबक राह रहे उडीक, बण के पांधी पन्ध मुकाउँदा ए। नज़री आए दूर दुराडा हो नज़दीक, निज नेत्र नैण इक खुल्हाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा झोली पाउँदा ए। गुर अवतारां आप जणाया ए। मेहरवान खेल रचाया ए। लेखा सब दा झोली पाया ए। भरम भुलेखा इक मिटाया ए। सच

संदेसा नाम सुणाया ए। नर नरेशा बण के आया ए। जोती वेसा जामा पाया ए। दस दस्मेसा नाल रलाया ए। मिल के एका इक बणाया ए। दूआ रूप ना कोई वखाया ए। तीजा लोचण आप खुल्हाया ए। चौथे पद डेरा लाया ए। पंचम मेला सहिज सुभाया ए। छेवें छप्पर छन्न नज़र किसे ना आया ए। सति सतिवादी नूर रुशनाया ए। अट्ठां तत्तां पन्ध मुकाया ए। नौ दुआरे डेरा ढाया ए। दसवें इक्को नूर चमकाया ए। गीत अनादी छन्द सुणाया ए। सूरे सरबँग रूप वटाया ए। आत्म परमात्म देवे अनन्द, रस इक्को इक वखाया ए। जुग जन्म दी टुट्टी गंढु, गंढुणहार गोपाल स्वामी इक्को डोरी तन्द जणाया ए। जिस दा भेव कोई ना पावे आदि जुगादि कोट ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड बैठा सीस झुकाया ए। सो साहिब स्वामी पुरख अकाल निरगुण खेल करे सूरा सरबँग, सो पुरख निरँजण एका हुक्म वरताया ए। नाम डंका वज्जे इक मृदंग, मर्द मर्दाना हथ्थ उठाया ए। लोआं पुरीआं आए लँघ, दो जहान पन्ध मुकाया ए। कूड़ी क्रिया करे खण्ड खण्ड, जूठ झूठ डेरा ढाहया ए। वस्त अमोलक नाम निधान जन भगतां देवे वंड, साची झोली आप भराया ए। नाता छुट्टे नार दुहागण रंड, हरि जू कन्त इक हंढाया ए। अमृत सरोवर नुहाए गंग, अठसठ तीर्थ डेरा ढाहया ए। काया चोली चाढ़े रंग, रंग बसन्त इक रंगाया ए। माणस जन्म ना होए भंग, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाया ए। डुब्बदा बेड़ा देवे बन्न्ह, शौह दरया ना कोए रुढ़ाया ए। निरगुण सरगुण चुक्के आपणे कंध, फड़ बांहों गले लगाया ए। गुर अवतारो पीर पैगम्बरो कलयुग अन्त सब ने गाउणा इक्को छन्द, सोहँ ढोला इक पढ़ाया ए। आवण जावण पिछला पूरब लहिणा चुक्कया पन्ध, अग्गे पुरख अकाल मार्ग इक्को दए वखाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दी धार आप जणाया ए। सब दा लेखा अन्त चुकावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर नाल मिलावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव सुरप्त इन्द करोड़ तेतीसा नेत्र नैण खुल्हावांगा। त्रैगुण माया पंज तत ब्रह्म मति इक दृढ़ावांगा। नाड़ बहत्तर ना उबले रत्त, रत्ती रत्त वेख वखावांगा। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त जाणां मित गत, हर घट अन्दर वड़ के बैठा पड़दा लाहवांगा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो गुर अवतार पीर पैगम्बर मार्ग गए दस्स, तिन्हां लेखा पूर करावांगा। चार वरन अठारां बरन इक्को राह देवां दस्स, साची सिख्या सिख समझावांगा। अन्तर मिले आत्म रस, बसन्तर बाहरों अग्न बुझावांगा। तीर निराला मारां कस, शब्द अणयाला इक उठावांगा। बुरज हँकारी जाए ढट्ठ, हउमें हंगता गढ़ तुड़ावांगा। करां खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी धार चलावांगा। सतिजुग चले इक्को रथ, बण रथवाही सेव कमावांगा। लख चुरासी विचों भगत सुहेले साचे रख, आख़र आपणा मेल मिलावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कूड़ी क्रिया

लेखा अन्त मुकावांगा। गुर अवतार शुकर मनाउँदे ने। पीर पैगम्बर वास्ता पाउँदे ने। दर तेरे अलख जगाउँदे ने। प्रतख तेरा दर्शन पाउँदे ने। अगला लेखा लिख्या, तेरे अग्गे रख वखाउँदे ने। तेरी लैंदे रहे सिख्या, साची सिख्या इक जणाउँदे ने। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पाई भिच्छया, जीव जंतां आप समझाउँदे ने। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान तेरी सिफ्त अन्दर लिख्या, तेरा अन्त कोई ना पाउँदे ने। जगत जहान वेख्या मिथ्या, अन्तिम सारे छड्ड के तेरे चरण दुआर आउँदे ने। सरन सरनाई तेरे ढठ्ठया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाउँदे ने। तेरे दर अलख जगाई ए। प्रभ साचे वड वड्याई ए। कलयुग रैण अन्धेरी छाई ए। साचा चन्द ना कोए चमकाई ए। इकावन बावन बैठे मुख छुपाई ए। खाणी बाणी रही कुरलाई ए। अमृत पाणी ठंडी धार ना कोए वहाई ए। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती पड़दा उपर ना कोए रखाई ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे साचा वर, तेरा लेखा कोई रहिण ना पाई ए। वेख प्रभू उठ लोकमात, नेत्र खोल्ह लै अंगड़ाईआ। साचा दिसे ना कोए साथ, गुर चेले मुख भवाईआ। नज़र ना आए त्रिलोकी नाथ, नंद चन्द ना कोए रुशनाईआ। संग ना राम बेटा दसराथ, दहि दिशा पई दुहाईआ। ईसा मूसा काला सूसा कोई ना वसे पास, चार यारी यारी ना कोए निभाईआ। मुहम्मद ख़ाली दिसे आस, अल्ला राणी भज्जे वाहो दाहीआ। साची दिसे ना कोई रास, मण्डल मण्डप रहे कुरलाईआ। नानक शब्द ना किसे पास, कलयुग भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। गोबिन्द अमृत हथ्थ किसे ना आवे दात, चारे कुण्ट देण दुहाईआ। नेत्र खोल्ह पारब्रह्म प्रभ आपणी सृष्टी वेख झाक, झाकी आपणी इक लगाईआ। साचे घोड़े अस्व चढ़ राक, सोलां कलीआं आसण पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा लिख के गए भविक्ख्त वाक, सच संदेसा मात जणाईआ। कलयुग अन्तिम आवे पुरख अबिनाश, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। जोती नूर करे प्रकाश, मात पित पंज तत नज़र कोए ना आईआ। इक्को शब्द वजाए नाद, दो जहान दए सुणाईआ। ढोला गाए बोध अगाध, साची करे इक पढ़ाईआ। दो जहान सुणे फ़रयाद, सब दा लेखा दए मुकाईआ। जिस रचना रची आदि, सो अन्तिम वेखण आईआ। सन्त सुहेले विचों काढ, लख चुरासी बाहर कढ्ढाईआ। जो तेरे बण तैनूं रहे आराध, अन्तर आत्म ध्यान लगाईआ। ओन्हां मेट वाद विवाद, रोग सोग रहिण ना पाईआ। निरगुण सरगुण रच काज, सुरती शब्दी मेल मिलाईआ। सच महल्ले चढ़ के मार आवाज़, कूक बांग इक्को वार सुणाईआ। तेरे सीस जगदीश सोहे ताज, तख्त निवासी तेरी इक सरनाईआ। दो जहानां तेरा राज, विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरी रय्यत रूप वटाईआ। सहिब सुल्तान दरगाह साची साजण लै साज, सज्जण आपणा

७२८
१५

खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साडी कर पूरी ख्वाहिश, ख़ालस आपणा रंग वखाईआ। श्री भगवान हो मेहरवान, मेहर नज़र उठाइंदा। उठो वेखो मारो ध्यान, सच स्वामी आप जणाइंदा। प्रगट होया योद्धा सूरबीर नौजवान, दो जहानां आपणा हुक्म वरताइंदा। शब्द संदेसा देवे फ़रमान, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर चरण कँवल करो ध्यान, सच ध्यानी इक समझाइंदा। जिस दा कलमा पढ़ो कुरान, सो काया काअबा कुरा वेख वखाइंदा। जिस पैगम्बर करो सलाम, सो सही सलामत नज़री आइंदा। जिस नूं ईसा मूसा मुहम्मद मन्न के गया अमाम, सो अमाम आपणा वेस वटाइंदा। सारे बरदे करे ग़ुलाम, ग़ुरबत सब दी मेट मिटाइंदा। साचा मार्ग दस्से आसान, एहसान सब दे सिर चढ़ाइंदा। पीर पैगम्बर बाले वेख अञ्याण, बाली बुध आप जणाइंदा। साचा कलमा इकट्ठे हो के पढ़ो आण, बिन कलबूत पंज तत पढ़ाइंदा। नज़री आए इक मेहरवान, नौजवान आपणा नूर चमकाइंदा। चौदां तबक मन्नण आण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच स्नेहड़ा इक्को सति समझाइंदा। सच स्नेहड़ा दस्से गीत, गहर गम्भीर दए समझाईआ। अन्तिम नाता छुट्टणा मसीत, मुसल्ला हेठ ना कोए विछाईआ। सदी चौधवीं चुक्के रीत, वुज़ू बांग ना कोए अलाईआ। चार कूटां होण पलीत, पाक रूप ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा कलमा दए हदीस, हज़रत इक्को करे नाम पढ़ाईआ। गुर अवतार खोल्हो अक्ख, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। श्री भगवान प्रगट होया प्रतख, रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। जिस दे अग्गे चले ना कोए किसे दा वस, जोरू ज़र ज़ेर सर्ब कराइंदा। सब दे ख़ाली कर के हथ्थ, समरथ आपणा हुक्म वरताइंदा। दूर दुराडे नेरन नेर बण दरवेश दर ते आयण नट्ठ, पांधी रहिण कोए ना पाइंदा। रल मिल सारे गुर अवतार पीर पैगम्बर इक्को साचा ढोला गाओ जस, तूं मेरा मैं तेरा दूजा रूप ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। साची सिख्या सुणो बिन कन्न, बिन रसना रिहा जणाईआ। धुर फ़रमाना सब ने लैणा मन्न, मेटणहार नज़र कोए ना आईआ। दर दुआरे बण दरवेश कहिणा धन्न धन्न, इक्को राग सिफ्त सालाहीआ। नर नरेश बेड़ा देवे बन्न्ह आप आपणे कंध उठाईआ। करे खेल श्री भगवन, भगवन आपणी कार कमाईआ। निरगुण निरवैर चाढ़ चन्न, अनभव प्रकाश दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, चार युग दा अन्तिम लेखा सब दी झोली पाईआ। चार युग दा चुक्के लेखा, लिख्त सब दी पूर कराईआ। दो जहानां कोई ना रहे भरम भुलेखा, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दर आ के कहिण तू ही सच्चा नेता, दूजा नज़र कोए ना आईआ। आदि

जुगादी इक्को मीता, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। तेरा मार्ग साचा सिध्धा, चार वरन दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सद मिले तेरी सरनाईआ। सच सरनाई इक रखावांगा। बेपरवाही खेल रचावांगा। दरगाह साची सच वखावांगा। लोकमात राह जणावांगा। सच जमात इक बणावांगा। कल मेट अन्धेरी रात, नूरी चन्द इक चमकावांगा। नाम दस्स धुर दी गाथ, सोहँ साचा राग अलावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा हुक्म इक वरतावांगा। साचा हुक्म प्रभू वरताएगा। धुर संदेसा इक सुणाएगा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां लेखा आपणी झोली पाएगा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सारे वीह सौ वीह पन्द्रां कत्तक रख के बैठे चेता, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाएगा। निरवैर निरँकार निराकार जिस धरया भेखा, सो आपणा खेल रचाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, साची रचना आपणे हथ्थ रखाएगा। आपणे हथ्थ सब किछ रखावेगा। सतिजुग साचा राह चलावेगा। नाम इक्को इक जपावेगा। वरन बरन रूप ना कोए वटावेगा। दीन मज़्ब रहिण कोए ना पावेगा। ज़ेर ज़बर सर्ब उडावेगा। सबर प्याला इक प्यावेगा। ज़ाबर ज़बर ज़ोर इक जणावेगा। बण के शेर बब्बर, भबक इक्को इक सुणावेगा। दो जहानां वेख ग़दर, गदा आपणा नाम उठावेगा। साचा शब्द फेरे चक्र, चक्रवर्ती नज़र किसे ना आवेगा। धुर संदेसा गुर अवतार पीर पैगम्बर देंदे रहे पत्र, सब दी पत्रका वेख के लेखा पूर करावेगा। इक्को गोबिन्द सूरा नाल रखावे पुत्तर, पिता पूत गंढु बन्ावेगा। सचखण्ड दवारिओं निरगुण जोती धार आवे उतर, रूप रेख ना किसे जणावेगा। पन्द्रां कत्तक सारे मिल के कहिण प्रभ तेरा शुकर, शंका सब दा मेट मिटावेगा। भगत भगवान चुक्के कुछड़, आप आपणी गोद सुहावेगा। जो बीसवीं सदी प्रभ साचे तों गए मुकर, तिन्नां राए धर्म हथ्थ फड़ावेगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे मोड़न मुखड़, सनमुख नज़र कोए ना आवेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि का पौड़ा इक जणावेगा। हरि का पौड़ा आप समझावेगा। ब्रह्मण गौड़ा रूप वटावेगा। लम्मां चौड़ा नज़र किसे ना आवेगा। मिठ्ठा कौड़ा रस समझ कोई ना पावेगा। गहर गम्भीर गवरा, नेत्र नैण नैण ना कोए मिलावेगा। शब्द अगम्मी चढ़े साचे घोड़ा, अस्व दो जहान दौड़ावेगा। चार युग गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कोलों जो दीन मज़्ब दा अड़या रिहा रोड़ा, ठोकर मार आप हटावेगा। ज़ात पात ऊँच नीच कोई ना रहे खौरा, दूई द्वैत मेट मिटावेगा। करे खेल अवर का औरा, शास्त्र सिमरत वेद पुराण भेव कोई ना पावेगा। निरगुण निरवैर हो के पुरख अकाल इक्को बौहड़ा, सति सतिवादी साचा संग निभावेगा। बिन भगतां दरगाह साची सब नूं देवे जवाब कोरा, सच महल्ले लँघ कोई ना जावेगा। जो सोहँ

७२६ १५

शब्द सुणन तों होया रिहा डोरा, तिस जून अजून भवावेगा। मरे मर जन्मे मात गर्भ पकदा रहे बौरा, दर्दी दर्द ना कोए वंडावेगा। जिन्हां भेव खुल्हाया तोरा मोरा, तिन्हां आपणे रंग रंगावेगा। जो कहिन्दे पारब्रह्म प्रभ सदा खेल करे वांग चोरा, सो चोरी गुरमुखां इक्को इक जणावेगा। सस्से उपर लाया होड़ा, निरगुण सरगुण वंड वंडावेगा। हँ ब्रह्म पारब्रह्म अन्तर आत्म आपे बौहड़ा, बांहों फड़ आप उठावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख साचे आपणी गोद उठावेगा। प्रभ गुरमुख गुरसिख गोद उठाएगा। गुरमुख लोक परलोक तजाएगा। सन्त सुहेला इक्को श्लोक गाएगा। भगत भगवन्त कन्त नार रूप वटाएगा। नाता तोड़ बहिश्त जंनत, स्वर्ग चरणां हेठ दबाएगा। मुक्ती दर ते कढ्ढे मिन्नत, गुरमुख दूर दुराडा धक्का लाएगा। विष्न ब्रह्मा शिव ना पाइण अन्त, नेत्र नैण सर्ब उठाएगा। जिस पारब्रह्म प्रभ मिल्या अन्त, तिस आपणा रंग रंगाएगा। माणस जन्म बणा बणत, लख चुरासी फंद कटाएगा। आपणे नाम दी दे के सनद, साचा राह इक वखाएगा। जिस दा भेव कोई ना पावे पंडत, पढ़यां हथ्थ किसे ना आएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो साहिब मेहरवान होए उपर संगत, जिस आपणा संग बणाएगा। संग बणाया हरि बनवारी, सो पुरख निरँजण दया कमाईआ। हरि पुरख निरँजण करी खेल न्यारी, एकँकार धारी आप चलाईआ। आदि निरँजण जोत कर उज्यारी, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। अबिनाशी करता बण भण्डारी, साची वस्त आप वरताईआ । श्री भगवान छत्र झुलारी, सेवक सेवा सच कमाईआ। पारब्रह्म बण दातारी, दाता आपणा रूप वटाईआ। ब्रह्म दर बणे पनहारी, चाकर खाक रूप वटाईआ। शब्दी गुर बोल जैकारी, सोहँ ढोला दए सुणाईआ। आत्म प्रीतम लग्गे प्यारी, प्रीतम पारब्रह्म इक अख्वाईआ। लख चुरासी भरम भरम के जन्म जन्म के अन्त फेर रही कुँवारी, बिन सतिगुर कन्त नज़र कोए ना आईआ। उठ दुहागण जगत नारी, साहिब सुल्तान दए समझाईआ। तेरी आई अन्तिम वारी, चौथा युग हरि वेखे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। हरिजन मेला साध संग, हरिसंगत रूप वटाइंदा। जुग चौकड़ी गई लँघ, कलयुग अन्तिम वेला आइंदा । लख चुरासी दिसे नंग, सिर ओढण नज़र कोए ना आइंदा। साचा नाम ना कोए मृदंग, धुन राग ना कोए सुणाइंदा। अमृत पाए ना कोई ठंड, सरोवर नीर ना कोए नुहाइंदा। घर जोत ना चढ़या चन्द, अन्ध अन्धेर ना कोए मिटाइंदा। आत्म गाया ना सच्चा छन्द, परमात्म अंग ना कोए लगाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर एसे कर के मंगां रहे मंग, प्रभ अग्गे वास्ता पाइंदा। किरपा कर सूरे सरबँग, शहिनशाह तेरा दर इक्को नज़री आइंदा। जो तेरा मंगे संग, तिस नाता मात ना कोए तुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, इक्को देणा साचा वर, दर घर तेरा नज़री आइंदा। श्री भगवान कहे मैं दया कमावांगा। जो पुरख अकाल दा हो के रहे, उस दा लेखा लेखे लावांगा। जो हरि सरनाई ढहे, तिस दा आवण जावण पन्ध मुकावांगा। जो सोहँ नाम तेरा मेरा रूप कहे, तिस विछोड़ा दो जहान मिटावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर इक्को रंग रंगावांगा। घर इक्को रंग रंगावेगा। प्रभ साचा संग निभावेगा। जन भगतां अंग लगावेगा। काया मन्दिर अन्दर लँघ, दरस दिखावेगा। चार कुण्ट दहि दिशा दो जहान श्री भगवान निरगुण सरगुण वसे संग, सगला संग निभावेगा। घर विच घर वखाए आपणा अनन्द, अनन्द चित सुख सागर रूप वटावेगा। बंदीख़ाना तोड़ बंद बंद, बन्दना डण्डोत इक्को इक समझावेगा। जुग चौकड़ी कर के पूरी मंग, अग्गे आपणा राह वखावेगा। निरगुण हो के वसे संग, निरवैर हो के सेव कमावेगा। भगत भगवान दोहां मिल के बणे सोहँ छन्द, बिन सोहँ छन्द आत्म परमात्म रूप नज़र कोए ना आईआ। सोहँ रूप आदि जुगादि जुग चौकड़ी मन्नण सर्ब ब्रह्मण्ड, विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार पीर पैगम्बर सोहँ रूप विच समाईआ। सोहँ रूप पुरख अकाल सुत दुलारा शब्दी चन्द, पिता पूत पूत पिता इक्को गंढ पवाईआ। बिन सोहँ आदि जुगादि जुग चौकड़ी प्रभ दा वसे ना कोई ब्रह्मण्ड, लख चुरासी नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा इक ज्ञान, बिन अक्खरां अक्ख दए खुल्हाईआ।

७३१

१५

१५

✪ १६ अस्सू २०२० बिक्रमी रोशन लाल दी दुकान विच रामपुरा फूल ज़िला बठिंडा ✪

सतिगुर पूरा सदा मेहरवान, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। कर किरपा जिस बख्शे चरण ध्यान, देवे सरन सच्ची सरनाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म छिन भंगर मेले आण, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। सुरत शब्द शब्द सुरत घर सज्जण वेखे महमान, आपणा पड़दा दए उठाईआ। जन भगत विचोला इक भगवान, नित नवित्त वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा दरस, आत्म परमात्म आपणे नाल मिलाईआ। सतिगुर पूरा सच्चा ठाकर, दीनन आपणी दया कमाइंदा। काया वेख डूंघा सागर, भँवरी एका धार चलाइंदा। निर्मल कर्म कर उजागर, मेहर नज़र नाल तराइंदा। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर साचा नाम वणज कराए सौदागर, सौदा हट्ट इक्को वार विकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए आपणा घर, तिस अन्तर आत्म आपणा मेल मिलाइंदा। सतिगुर पूरा जाए तुठ, जन भगतां दया कमाईआ। अमृत जाम अन्तर प्याए घुट्ट, रसना जिह्वा बत्ती दन्द रस ना कोए वखाईआ।

कर प्रकाश निर्मल जोत, घर घर विच अन्धेरा दए चुकाईआ। चार कुण्ट भेव खुल्हाए लोक परलोक, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा रंग रंगाईआ। बिन अक्खर निश्अक्खर जणाए सच श्लोक, सोहला इक्को इक पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, तिस पूजा पाठ सिमरन जोग अभ्यास नज़र कोए ना आईआ। जिस उपर होवे खुश, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। तिस अन्दर वड़ के देवे सब कुछ, वस्त अमोलक झोली पाईआ। उच्ची कूक पुकारे जो बैठा चुप्प, बिन रसना जिह्वा दए दुहाईआ। कर प्रकाश अन्धेरे घुप्प, जोती नूर करे रुशनाईआ। घर विचों सतिगुर पूरा पए उठ, शब्दी गुर आपणा राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादी देवणहारा वर, भगत भगवान इक्को रंग वखाईआ। सतिगुर सच्चा पातशाह, दयावान अख्वाइंदा। गुरमुखां देवे इक राह, रहबर इक्को नज़री आइंदा। शब्द सरूपी बण मलाह, बेड़ा जगत जहान पार कराइंदा। सुरत सवाणी मेला दए मिला, जगत विछोड़ा नज़र कोए ना आइंदा। घर विच घर दीपक जोत दए जगा, तेल बाती संग ना कोए रखाइंदा। अनहद नादी धुन दए उपजा, अनरागी राग सुणाइंदा। आत्म अन्तर अमृत आत्म जाम दए प्या, निझर झिरना आप झिराइंदा। आत्म सेजा सोभा पा, सेज सुहञ्जणी आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शाह पातशाह शहिनशाह आपणा रंग रंगाइंदा। हरि का नाम ना कोई शक़, शिकवा कोई रहिण ना पाईआ। जिस वल सतिगुर पूरा मेहर नज़र नाल लए तक्क, तकदीर तदबीर तकसीर सारी दए मिटाईआ। वेखणहारा हकीकत हक़, लाशरीक नूर खुदाईआ। मन वासना दहि दिशा भाउँदी लए बन्न्ह, बन्धन इक्को डोरी नाम पाईआ। नौ दुआर डेरा देवे भन्न, भाण्डा भरम भउ चुकाईआ। कर प्रकाश अन्धेरे अन्ध, आपणा नूर वखाईआ। तिस अग्गे कोटन कोटि शरमावण सूरज चन्द, दोए जोड़ बैठण सीस झुकाईआ। सतिगुर पूरा सदा बख्शंद, बख्शश इक्को नाम वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए आपणा घर, तिस देर ना लागे राईआ। सतिगुर पूरा चौदां विद्या वसया बाहर, चौदां लोक चौदां तबक रहे जस गाईआ। आदि जुगादि गुप्त ज़ाहर, शब्दी रूप वटाईआ। निरगुण सरगुण खेल करे अपार, सरगुण निरगुण आपणा राह जणाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म मेल मिलावा काया पंज तत सच्चे घर बार, गढ़ बंक इक्को इक सुहाईआ। राउ रंक ऊँच नीच ना कोए विचार, ज़ात पात दीन मज़्हब वंड ना कोए वंडाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, परम पुरख परमात्म इक्को इक अख्वाईआ। जो जन करे सच प्यार, तिस प्यार प्यार विचों समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन निज नेत्र दए दीदार, दूजी तृष्ना रहिण कोए ना पाईआ। एह कुटीआ पंज तत्त, जिस मिले माण

वड्याईआ। जिस अन्दर ब्रह्म मति, पारब्रह्म बैठा आसण लाईआ। जिस अन्दर सतिगुर नाल जुड़े नत, नाता इक्को इक वखाईआ। जिस अन्दर अट्ठे पहर वज्जे शब्द अनहद, धुन आत्मक राग सुणाईआ। जिस अन्दर अमृत आत्म सच प्याला मध, नौ रस बैठे मुख छुपाईआ। जिस अन्दर नौ दुआरे पार कर के पहुंचे आपणी हद्द, जिस घर वसे बेपरवाहीआ। सो दुआरा रिहा सज, जिस घर विच गुरमुख बैठे आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवणहार ततव तत वड्याईआ। सतिगुर पूरा दीन दयाल, दयानिध अख्वाईआ। लख चुरासी विचों भाल, गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत लए उठाईआ। जागत सोवत बिन तत दरस दए वखाल, रूप अनूप आपणा इक जणाईआ। घर विच घर दीपक जो जन देवे बाल, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। अमृत आत्म जाम दए प्याल, जगत तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। शब्द बोध अगाध वजाए ताल, अनादी धुन शनवाईआ। दूर दुराडा नेरन नेरा अन्दर वड़ के साचे पौड़े चढ़ के पुच्छे हाल, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा जिध्धर वेखे दिसे नाल, सति सरूपी नज़री आईआ। लेख चुकाए शाह कंगाल, ऊँच नीच डेरा ढाहीआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जीवण जुगत दए समझाईआ। रातीं सुत्तयां मिले आण, दिने जागदयां इशारयां नाल समझाईआ। काया मन्दिर अन्दर वखा सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआर बूझ बुझाईआ। सतिगुर पूरा गुर शब्दी बण दलाल, सुरती शब्दी लए मिलाईआ। तिस सतिगुर दी जगत नेत्र कोई कर ना सके भाल, बिन सतिगुर किरपा गुरसिख बूझ कोई ना पाईआ। गुरसिख उपर होए आप दयाल, दीनन आपणे गले लगाईआ। बण प्रितपालक सच्चा प्रितपाल, फड़ बांहों गोद बहाईआ। गुरमुख पूरब जन्म दे मेरे लाल, जन्म कर्म दा लेखा दयां चुकाईआ। गुरसिख दस्से आपणा हाल, बौहड़ी बौहड़ी रिहा सुणाईआ। त्रैगुण माया कूड़ी क्रिया हउमे हंगता माया ममता प्या जंजाल, बिन सतिगुर पूरे सके ना कोए मिटाईआ। सतिगुर पूरा सुरत ओसे वेले लए संभाल, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। सिर उते हथ्थ रख समरथ घर विच घर दए वखाल, अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह आपणा रंग वखाईआ। गुरसिख कहे सतिगुर मेरी प्रीती निभे तेरे नाल, दूजा नज़र कोए ना आईआ। सतिगुर कहे तेरा मेरा मिल के हल होया स्वाल, अगला लेखा आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दस्सणहारा साचा घर, सतिगुर शब्द शब्द निशानी, कोई ना जाणे जगत विद्वानी, जिस किरपा कर के बख्शे चरण ध्यानी, सो गुरसिख बूझ बुझाईआ। सचखण्ड दुआरे साचा डेरा, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। सूरज चन्द ना कोई सञ्झ सवेरा, ज़िमीं असमान नज़र कोए ना आईआ। मण्डल मण्डप ना कोई खेड़ा, पुरी लोअ आकाश ना कोए रखाईआ। लख चुरासी जीव जंत ना कोई दिसे झेड़ा, झगड़ा रूप ना कोए वटाईआ। पारब्रह्म

दा इक्को खेड़ा, आदि जुगादि सच मन्दिर रिहा सुहाईआ। जिथ्थे लेखा ना कोई तेरा ना कोई मेरा, मेरा तेरा नज़र कोए ना आईआ। ओस धाम लग्गा डेरा, जिस घर इक्को नूर रुशनाईआ। सरीर दा घर गुरमुखां अन्दर, दर दर विच दर वसाईआ। प्रेम प्यार दा बणया मन्दिर, पुरख अकाल नींह धराईआ। सति सन्तोख दा लाया जन्दर, खोल्ह सके कोई ना राईआ। साडा तुहाढ्ढा मन का खेल, आत्म कहिण कुछ ना पाईआ। मुरीद मुर्शद जिस वेले होवे मेल, घर साचे वज्जे वधाईआ। परवरदिगार मिले सज्जण सुहेल, लाशरीक इक्को नज़री आईआ। बेपरवाह आपणा वखाए खेल, तौफ़ीक इक्को नूर खुदाईआ। मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला इलाही नूर वसणहारा धाम नवेल, मुकामे हक़ सोभा पाईआ। पीर पैगम्बर गुर अवतार सारे बण बण चेल, लोकमात कलमा शब्द नाद गए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, तेरा मेरा मेरा तेरा जिस भेव दए समझाईआ। मेरा तेरा चुक्के भेद, भाउ रहिण कोई ना पाईआ। जिस दी महिमा सिफ्त करदे चार वेद, शास्त्र सिमरत गीता ज्ञान रही जस गाईआ। जिस दा लेखा लिखे अञ्जील कुरान, तीस बतीसा सोभा पाईआ। सो साहिब सतिगुर परवरदिगार नूर नुराना किसे ना आए विच दलील, वकील समझ कोए ना पाईआ। उस दे अग्गे झूठी कूड़ी कोई ना चले अपील, बिन कलमे बिन नाम सफ़ारश करन कोए ना जाईआ। उह योद्धा सूरबीर छैल छबील, सब दा शहिनशाह अख्वाईआ। उह वेखे शाह फ़कीर, उह आपणी दस्से सच तस्वीर, रूप रंग रेख समझ कोए ना पाईआ। साची तसबी जिस गल पाए ज़ंजीर, सो शरअ मज़्हब दी कट देवे ज़ंजीर, सच तौफ़ीक खुदाए वखाए इक अख़ीर, अकसीर सब दी आपणी झोली पाईआ। उस दा लेखा बेनज़ीर, कोटन कोटि रही जस गाईआ। जिस मिल्या ज़ाहरा पीर, सो खुशीआं नाल सारे झगढ़े गया मुकाईआ। ताअरीफ अन्दर दस्से ताअरीफ, तुआरफ सब नाल रिहा कराईआ। जिस नूं कहिन्दे खुदावंद शरीफ़, शराफ़त आपणी रिहा जणाईआ। जिस दा कलमा हक़ हकीक, हकीकत वेखे थाउँ थाईंआ। जो जुग जुग मेटणहार तारीक, तरीक अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। सो सब दे नाल सच प्यार करे ठीक, कूड़ा ठीकर भन्न वखाईआ। जिस दी ईसा मूसा मुहम्मद रख के गए उडीक, वाहद लाशरीक आपणा नूर करे रुशनाईआ। जिस दी धार कोई समझ ना सके तबीब, हबीब भेव कोए ना पाईआ। सो मेहरवान आया करीब, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। उस दा खेल सदा अजीब, अजब तर्ह्हा आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आरफ़ तुआरफ़ बिन सफ़ारश दए समझाईआ। मरन बाद जो मरनी मरदा, मुर्दा रूप वटाईआ। मुरीद मुर्शद जो बणया बरदा, बंदीख़ाना दए तुड़ाईआ। जो साहिब सतिगुर कोलों रिहा डरदा, बैठा मुख भवाईआ। तिन्हां खेल आपे

करदा, वेखणहार बेपरवाहीआ। ज़बराईल मेकाईल इज़राईल असराफ़ील हुक्मे अन्दर फिरदा, दो जहान भज्जे वाहो दाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव सेवा करदा, साची सेवा सीस उठाईआ। परवरदिगार घाड़न घड़दा, अबिनाशी करता खेल कराईआ। अन्तिम वेले लेखा मंगदा, चित्रगुप्त इक दरसाईआ। धर्म राए ओहनूं फड़दा, जिस भुल्लया बेपरवाहीआ। जो कलमा नबी रसूल सच आयत पढ़दा, ध्यान इक्को इक रखाईआ। जो काया मन्दिर अन्दर साचे हुजरे विच वड़दा, मक्का काअबा नेड़े नेड़े नज़री आईआ। जो हज़ारा दरूद बिन हथ्थां फड़दा, इस्म आअज़म इक समझाईआ। सो गुरमुख गुरसिख मुरीद साचे पौड़े चढ़दा, जिस वेले मर्द मरद मर्दाना आ के होए सहाईआ। जिस कोलों जम का दूत डरदा, दूर दुराडा नट्ठे वाहो दाहीआ। कर किरपा तिस आत्म तिस रूह बिन कलबूतों फड़दा, सच सबूत आपणा दए वखाईआ। निरगुण निरवैर हो के आपणे घर चढ़दा, जिस मंज़ल कोई समझ ना सके राईआ। जिस नूं ऐनलहक कूक कूक कहे मैं तेरा बरदा, तेरी इक सरनाईआ। जिस पिच्छे शमस तबरेज़ गया सड़दा, पुठी खल्ल लुहाईआ। सो साहिब सद मेहरवान मेहर करदा, कारण आपणा दए जणाईआ। आप आपणे लख चुरासी विचों फड़दा, फड़के के सच दुआरे लै के जाईआ। जिथ्थे ना कोई जींउदा ना कोई मरदा, मढ़ी गोर ना कोए रखाईआ। ना कोई पाणी दिसे रुढ़दा, ढेरी ख़ाक ना कोए जणाईआ। सच प्यारा धुर दुलारा ना जम्मदा ना कदे मरदा, जो आवे सो मार्ग पावे घर साचे मिल वज्जे वधाईआ। बिन सतिगुर, भुल्ले लख चुरासी जीव जंत जहान बिरहो अग्नी सड़दा, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। जून अजूनी सारे फिरदा, भटकना मिटे कोई ना राईआ। एह खेल अगम्मड़े घर दा, जिस घर सहाई ना कोई पिता ना कोई माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जन्म मरन मरन जन्म दए चुकाईआ। परमात्मा विसरया फिरे जूनी, लख चुरासी गेड़ भवाईआ। जे कोई विद्या बणया रहे कानूनी, जगत कानून ना अन्त छुडाईआ। प्रभू भगवान नूं मिले ना कोए कानूनी, बिन सतिगुर सच राह ना कोए वखाईआ। हरि का खेल कोई समझ ना पाए जगत विद्या मज़मूनी, जिस कर किरपा इक्को अक्खर अलिफ़ बहरफ़ दए पढ़ाईआ। उह खेल करे कातिल मकतूल वड महिरूमी, ख़ाली दुआरे वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आवण जावण जावण आवण तिन्हां गेड़ा रिहा भवाईआ। अक्ख नाल मिले अक्ख, आख़र आपणा आप जणाईआ। जिस दर होए प्रतख, तिस प्रतख रूप वखाईआ। जिस नाल मिलाए हथ्थ, तिस हथ्थ मिले वड्याईआ। जिस नाल गाए मिल के जस, तिस जस दो जहान सोभा पाईआ। सो सोहे मजलस साचा सथ, जिस गृह सूफ़ी गुरमुख बैठे डेरा लाईआ। तिन्हां वल पारब्रह्म दी इक्को जेही अक्ख, खुदावंद करीम नैण आपणा ना कोए

बदलाईआ। पीर पैगम्बर गुर अवतार एहो मार्ग गए दस्स, बेपरवाह नूं मिलो चाईं चाईंआ। ओस घर जा के इकट्ठे सारे जाओ वस, दीन मज़्हब ज़ात पात झगड़ा रहिण कोए ना पाईआ। जिन्हां मिल गई उह अक्ख, दोए लोचण बैठे बंद कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल पुरख समरथ, समरथ इक्को रंग रंगाईआ। अमामां सिर वड्डा अमाम, परवरदिगार इक अख्वाइंदा। जिस दा कलमा सच कलाम, कायनात सबक पढ़ाइंदा। जिस दा धाम हक़ मुकाम, मुकामे हक़ सोभा पाइंदा। जिस दा पीर पैगम्बर सारे दस्सदे गए नाम, रसना जिह्वा बत्ती दन्द गाइंदा। जिस ने लोकमात बणाया सति इस्लाम, सलाम इस्लामालैकम आप समझाइंदा। उह सब बरदे वेखे ग़ुलाम, घट घट अन्दर डेरा लाइंदा। ओस पैगम्बर उते रखो ईमान, जो सिदक सबूरी तोड़ निभाइंदा। सजदा सीस झुक करे सलाम, सही सलामत इक्को नज़री आइंदा। ख़ुदा खुद एक नहीं आम, अवाम विच डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच कलाम, कलमा इक्को इक जणाइंदा।

✪ १६ अस्सू २०२० बिक्रमी सुख राम दे गृह पिण्ड चक्र ✪

सो पुरख निरँजण शाह सुल्ताना, शहिनशाह वड्डी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण मर्द मर्दाना, योद्धा सूरबीर इक अख्वाईआ। एकँकारा वाली दो जहानां, निरवैर आपणा खेल वखाईआ। आदि निरँजण नूर महाना, जोती जोत जोत रुशनाईआ। अबिनाशी करता उठाए सच निशाना, सति सतिवादी आप झुलाईआ। श्री भगवान हुक्मराना, शाहो भूप इक हो जाईआ। पारब्रह्म प्रभ खेले खेल महाना, अनभव आपणी धार चलाईआ। साची इच्छया कर बलवाना, भिच्छया इक्को इक वरताईआ। सचखण्ड दुआरा कर प्रधाना, छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। निरगुण निरवैर एकँकार, अक्ल कलधारी खेल कराइंदा । सचखण्ड दुआरा खोल्ह कवाड़, दरगाह साची रूप वटाइंदा। नूर इलाही लाशरीक परवरदिगार, मुकामे हक़ डेरा लाइंदा। महल अटल उच्च मनार, जोती जाता डगमगाइंदा। अगम्म अथाह ऊँच अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सच दुआर इक वडियाइंदा। सच दुआरा एका एक, आदि जुगादि दए वड्याईआ। जिस घर साहिब वसे प्रभ एक, दूजा नजर कोए ना आईआ। जिस घर जोती नूर रखे प्रभ एक, दीवा बाती रूप ना कोए वटाईआ। जिस घर सति सतिवादी आदि जुगादी आपे जाणे आपणा भेख, दूजा संग ना कोए रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा

हरि, सचखण्ड साचे दए वड्याईआ। सचखण्ड साचा सोभावन्त, सो पुरख निरँजण आप सुहाइंदा। हरि पुरख निरँजण खेल बेअन्त, बेऐब आप कराइंदा। एकँकारा सोभावन्त, धाम सुहञ्जणा आप सुहाइंदा। आदि निरँजण जोती नूर कर प्रकाश खेले खेल जुगा जुगन्त, जुग करता आपणी कार कमाइंदा। श्री भगवान देवणहारा शब्द अनाद बोध अगाध मणीआ मंत, नाउँ निरँकारा इक दृढ़ाइंदा। अबिनाशी करता लेखा जाणे बहु बिध अनन्त, भेव अभेदा आपणे हथ्थ रखाइंदा। पारब्रह्म प्रभ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरा इक सुहाइंदा। सचखण्ड दुआर सुहाए आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। निरगुण नूर कर प्रकाश, जोती जाता डगमगाईआ। निरवैर वसे आपणे पास, निरगुण निरगुण बणत बणाईआ। ना कोई माई ना कोई बाप, पिता पूत ना कोए अख्वाईआ। ना कोई पूजा ना कोई पाठ, ना कोई गीत गोबिन्द अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे इक्को इक नज़री आईआ। इक्को एक एकँकारा, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। निरगुण निरवैर निराकार कर अकारा, साकार आपणा राह चलाइंदा। इच्छया भिच्छया भर भण्डारा, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। लेखा जाण पुरख नारा, नार कन्त सेज हंढाइंदा। प्रगट कर सुत दुलारा, शब्दी शब्द आप उठाइंदा। हुक्म देवे धुर दुआरा, आदि पुरख आप समझाइंदा। तेरा मेरा इक उज्यारा, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। तेरी इच्छया खेल करे करतारा, कुदरत कादर रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि पुरख अपरम्पर स्वामी सच संदेसा नर नरेशा एका इक्को वार जणाइंदा। शब्द सुत झुकाए सीस, प्रभ तेरी सच सरनाईआ। शाह पातशाह हरि जगदीश, जगदीशर तेरी ओट रखाईआ। तेरा नाम कलमा मेरी हदीस, हज़रत सच पढ़ाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर एका छत्र झुल्ले तेरे सीस, लाशरीक तेरा सानी नज़र कोए ना आईआ। तेरे हथ्थ दो जहान तौफ़ीक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवणहारा माण वड्याईआ। शब्द सुत सुत साचे लाल, सो पुरख निरँजण आप जणाया। तेरा वसे सच दुआरा सच्ची धर्मसाल, थिर घर साचा आप प्रगटाया। साची वस्त लैणी संभाल, पुरख अबिनाशी झोली पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा आप खुल्हाया। भेव अभेदा देवे खोल्ह, सो पुरख निरँजण वड्डी वड्याईआ। निरगुण तोले अगम्मी तोल, तराज़ू इक्को हथ्थ उठाईआ। बैठा रहे सद अडोल, अडुल्ल कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि संदेसा इक सुणाईआ। आदि संदेसा देवे मीत, सो साहिब वड्डी वड्याईआ। शब्द गुरू तेरी साची रीत, गुर करता आप चलाईआ। खेले खेल इक अनडीठ, नेत्र नज़र किसे ना

आईआ। पहलां नाम सुणाए धुर दा गीत, तूं मेरा मैं तेरा इक्को राग सुणाईआ। अग्गे चलाए मार्ग ठीक, ठाकर आपणा भेव खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची वड्याईआ। शब्द सुत हो तैयार, श्री भगवान रिहा जणाईआ। तेरा खेल करां अपार, अपरम्पर धार वखाईआ। निरगुण सरगुण करां अकार, बण शाह पातशाह हुक्म मनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बणावां तेरी धार, धार धार विचों प्रगटाईआ। त्रैगुण माया दयां आधार, पंज तत करां कुड़माईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज मार्ग दयां वखाल, लख चुरासी वंड वंडाईआ। शब्द अगम्मी वज्जे ताल, परा पसन्ती मद्धम बैखरी रही गाईआ। करे खेल आप करतार, करता आपणा मार्ग दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर संदेसा इक अल्हाईआ। धुर संदेसा दे भगवान, हरि साचे सच जणाया। तेरे हथ्थ इक निशान, धुरदरगही आप फड़ाया। झुलदा रहे दो जहान, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड इक्को नज़री आया। विष्न ब्रह्मा शिव मन्ने आण, सीस सके ना कोए उठाया। पंज तत ना होए प्रधान, सच प्रधानगी इक रखाया। लख चुरासी देवे ज्ञान, आत्म बोध बेपरवाहया। शब्द सुणाए इक धुन्कान, अनरागी राग अल्हाया। काया मन्दिर वेख मकान, घर विच घर दए प्रगटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत तेरा साचा राह वखाया। शब्द सुत चरणी लग्ग, दोए जोड़ प्या सरनाईआ। किरपा कर सूरे सरबग्ग, शाह पातशाह तेरे अग्गे झोली डाहीआ। साचा मार्ग इक दस्स, जिस विच तेरा नाम नज़री आईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरे हुक्मे अन्दर जावां वस, दूजा संग ना कोए निभाईआ। निरवैर हो चलावां रथ, बण सेवक सेव कमाईआ। साची दस्सां नाम गाथ, अक्खर वक्खर कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा सोहला इक्को ढोला शब्द विचोला दे बणाईआ। शब्द सुत सुण साचा ढोला, सो पुरख निरंजन आप जणाईआ। निरगुण निरगुण चुकाए पड़दा उहला, सरगुण सरगुण वेख वखाईआ। आत्म परमात्म इक्को बोला, अनबोलत दए जणाईआ। आदि अन्त ना रहे रौला, जुग चौकड़ी भेव कोई ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द सुत दए सुणाईआ। शब्द सुत सुण सच्चा नाउँ, नर निरँकार आप जणाईआ। नाता जोड़े पिता पूत फड़ के बांहों, आप आपणी गोद बिठाईआ। दरगाह साची चरण कँवल देवे अगम्मा थाउँ, अगम्मड़ी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। शब्द सुत सुण कर ध्यान, सो साहिब आप जणाया। तूं मेरा मैं तेरा दोहां इक मकान, दूजा दर ना कोए रखाया। रल मिल गीत गाईए महान, जिस गायां विछड़ कदे ना जाया। सो अक्खर होए परवान, जो निष्अक्खर

रूप वटाया। सचखण्ड निवासी हो मेहरवान, थिर दुआरे रिहा समझाया। निरगुण निरगुण बण विचोला वड बलवान, साचा मेला रिहा मिलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका नाम रिहा समझाया। सुत शब्द कहे प्रभ साचे सो, साची बूझ दे बुझाईआ। मैं तेरा तेरे जोगा गया हो, दूजी ओट ना कोए रखाईआ। तेरे चरण कँवल पीवां धो, अमृत रस इक्को मोहे भाईआ। सचखण्ड दुआरे जावां सौं, गूढ़ी नींद ना कोए उठाईआ। कर प्रकाश दे निर्मल लो, जोती नूर नूर रुशनाईआ। मैं तेरा तेरा जावां हो, आप आपणा दयां मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देवे साचा वर, आदि आपणा आप दए समझाईआ। सुत शब्द सुण छोटे बाल, श्री भगवान आप जणाईआ। साची सिख्या देवां सिखाल, आदि जुगादि भुल्ल कदे ना जाईआ। तेरा लेखा होवे दो जहान, निरगुण निरगुण खेल वखाईआ। तेरा बोला इक महान, तूं मेरा मैं तेरा सोहँ रूप, पंज तत नज़र कोए ना आईआ। सदा वसेरा दहि दिशा चारे कूट, हर घट इक्को रूप नज़री आईआ। लेखा लेखे लावां पिता पूत, सैण बंधप इक वखाईआ। तूं मालक मेरा पूत, हउँ पिता रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा नाम दए जणाईआ। सोहँ नाम आदि प्रधान, शब्दी सुत हरि जणाया। खेले खेल दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणा हुक्म वरताया। विष्न शिव ब्रह्मा सारे गाण, तूं मेरा दाता बेपरवाहया। त्रैगुण माया पंज तत देवणहारा दान, वस्त अमोलक झोली पाया। चारे खाणी चारे बाणी कर प्रधान, शास्त्र सिमरत वेद पुराण पढ़ाया। चारे युग कर निशान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंड वंडाया। साचा शब्द कर उज्यार, जलवा नूर नूर रुशनाया। पंज तत साचा दे आधार, गुर अवतार पीर पैगम्बर नाल मिलाया। भगत भगवान खोल्ह किवाड़, आत्म अन्तर बूझ बुझाया। साचे सन्तां मार्ग इक सिखाल, रहबर इक्को रूप दरसाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द सुत तेरा सच्चा ढोला, दो जहानां रल मिल सोहला गाया। शब्द सुत सीस नवाउँदा ए। प्रभ अग्गे झोली डौंहदा ए। साचा संग संग जणाउँदा ए। कवण वेला रुत्त सुहाउँदा ए। शब्दी नाद धुन उपजाउँदा ए। ब्रह्म ब्रह्माद आप सुणाउँदा ए। गुर अवतार रूप वटाउँदा ए। जोत निरँकार निराकार इक प्रगटाउँदा ए। पीर पैगम्बर भेव खुलाउँदा ए। औलीआ पीर ग़ौंस नाम धराउँदा ए। निरगुण निरवैर हो के साचा ख़ौंत, बीवी इक्को इक हंढाउँदा ए। सच दुआरे रखे सदा पहुंच, दरगाह साची सोभा पाउँदा ए। खेले खेल लोक परलोक, भेव अभेद आप जणाउँदा ए। शब्दी नाम कोट श्लोक, सलाहगीर नाल रलाउँदा ए। जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण हो के वेखण दा रखे शौक, लोकमात जामा पंज तत हंढाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक वर, शब्द

सुत प्रभ अग्गे वास्ता पाउँदा ए। श्री भगवान सच समझाउँदा ए। मेहरवान दया कमाउँदा ए। सुत शब्द तेरी सेवा इक समझाउँदा ए। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी झोली पाउँदा ए। कोटन कोटि ब्रह्मण्ड खण्ड रूप वटाउँदा ए। सूरज चन्द नूर चमकाउँदा ए। मण्डल मण्डप सोभा पाउँदा ए। निरगुण सरगुण लख चुरासी वंड वंडाउँदा ए। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज खेल खलाउँदा ए। शब्द अनाद धुन अलाउँदा ए। निरगुण जोत नूर रुशनाउँदा ए। अमृत सरोवर धार वहाउँदा ए। घर घर विच आप सोभा पाउँदा ए। आत्म सेजा इक वडयाउँदा ए। सुरती शब्दी रंग रंगाउँदा ए। अकाल मूर्ती नज़र किसे ना आउँदा ए। सब दी आसा पूरती, पूरन आसा आप कराउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि पुरख सुत शब्द आप समझाउँदा ए। सुत शब्द चरण ध्यान लगाउँदा ए। दोए जोड़ वास्ता पाउँदा ए। दर इक अलख जगाउँदा ए। प्रतख तेरा रूप नज़री आउँदा ए। मेरा भण्डार कदे ना होवे सक्ख, अतोट अतुट्ट तेरे कोलों कराउँदा ए। जुग चौकड़ी तेरा नाम प्रगटावां अकथ, महिमा बोध अगाध सुणाउँदा ए। गुर अवतार पीर पैगम्बर कर प्रगट, साचा हट्ट इक चलाउँदा ए। शब्द अगम्मी धार दस्स, तन्द सतार ना कोए हिलाउँदा ए। तीर निराला मारे कस, अणयाला आप चलाउँदा ए। किसे दा कोई ना चले वस, दो जहान सीस झुकाउँदा ए। करे खेल पुरख समरथ, शब्द छन्द इक्को गाउँदा ए। कूड़ी क्रिया पार करे हद्द, साचा मार्ग इक वखाउँदा ए। भगत सुहेले कर के अड्ड, गुर चेले मेल मिलाउँदा ए। सन्त सुहेले साचे मन्दिर सद्द, निरगुण नूर जोत चमकाउँदा ए। जन भगतां गुरमुखां गुरसिखां मुरीद मुर्शद हो कराए हज्ज, काया काअबा इक्को नज़री आउँदा ए। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग शब्द सुत तेरी चले इक्को यद, विश्व आपणी धार वखाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तेरा लेख आप मुकाउँदा ए। तेरा लेखा सच मुकावांगा। निरवैर हो के राह वखावांगा। दो जहानां पन्ध मुकावांगा। सच निशाना इक उठावांगा। सति सतिवादी रूप जणावांगा। ब्रह्म ब्रह्मादी हुक्म वरतावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरे नाल रलावांगा। लोकमात रच सुअम्बर, निरगुण सरगुण सच संजोग बणावांगा। कूड़ी क्रिया मेट अडम्बर, साचा राह इक वखावांगा। मन मनुआ ना भवे बन्दर, सुरती शब्दी डोरी तन्द बंधावांगा। कर प्रकाश अन्धेरे अन्दर, घट निरगुण नूर जोत चमकावांगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द सुत तेरा साचा संग निभावांगा। शब्द सुत ख़ुशी मनाउँदा ए। ऊँची कूक कूक सुणाउँदा ए। तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आउँदा ए। सचखण्ड वसे तेरा धाम, थिर घर मेरा मन्दिर सोभा पाउँदा ए। दोहां मिल के रचणा इक जहान, लख चुरासी रूप वटाउँदा ए। जिस विच धुर दा शब्द झुल्ले निशान,

धुरदरगाही हथ्थ उठाउँदा ए। गुर अवतार करन प्रणाम, पीर पैगम्बर सीस झुकाउँदा ए। शब्दी कलमा इक कलाम, कायनात आप पढ़ाउँदा ए। शब्दी गुर वड वडयाउँदा ए। मन्त्र सति नाम, नाम सति इक वखाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, शब्द सुत तेरा आदि जुगादि जुगा जुगन्तर इक्को राह वखाउँदा ए। तेरा इक्को राह वखौंणा ए। जुग चौकड़ी पन्ध मुकाउणा ए। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढ्ढाउणा ए। तेई अवतार वेख वखाउणा ए। भगत अठारां संग बणाउणा ए। ईसा मूसा मुहम्मद काला सूसा तन छुहाउणा ए। नानक गोबिन्द डंका फ़तहि इक वजाउणा ए। शास्त्र सिमरत वेद पुराण पढ़ौणा ए। गीता ज्ञान अट्ठ दस्स भेव चुकाउणा ए। अञ्जील कुरान तीस बतीस सोहला ढोला इक्को गाउणा ए। खाणी बाणी बोध अगाध, मन्त्र इक्को इक प्रगटाउणा ए। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सब दी रखे याद, अभुल्ल भुल्ल रूप ना कोए वखाउणा ए। करे खेल नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग बाद, बदला सब दा अन्त मुकाउणा ए। जिस रचना रची आदि, सो अन्तिम वेखण आउणा ए। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा वजावण नाद, अनादी इक्को धार समझाउणा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द सुत तेरा इक्को वक्त सुहाउणा ए। तेरा साचा वक्त सुहावांगा। लोकमात वेस वटावांगा। नर नरेश आप अख्वांगा। विष्न ब्रह्म महेष आप जगावांगा। जुग चौकड़ी जाण पिछला लेख, पूरब लेखा सर्ब वखावांगा। निरवैर हो के खेलां खेड, बण खिलाड़ी खेल रचावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द सुत तेरा डंका इक वजावांगा। तेरा डंका इक वजावेगा। प्रभ आपणा खेल रचावेगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर दर मंगावेगा। त्रैगुण माया डेरा ढाहवेगा। पंज तत झेड़ा आप चुकावेगा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप खुल्ल्हा वेहड़ा आप वखावेगा। दीन मज़्हब दा कोई ना रहे झगड़ा, ज़ात पात मेट मिटावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द गुरु गुर इक्को नज़री आवेगा। शब्द गुरू तेरा इक्को नाम प्रगटाएगा। पंज तत चोला नज़र कोए ना आएगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर रल मिल साचा सोहला इक्को गाएगा। दीन मज़्हब दा कोई ना रहे रौला, झगड़ा हरि जू अन्त मुकाएगा। चार वरन अठारां बरन माण देवे उपर धौला, धरनी धरत हौला भार कराएगा। जिस नूं कहिन्दे नूर अवल्ला, आलमीन आपणा वेस धराएगा। जिस नूं कहिन्दे साँवल सँवला, सो मोहण रूप वटाएगा। जिस नूं कहिन्दे नानक यमला, सो चार कुण्ट सति नाम दृढ़ाएगा। जिस नूं कहिन्दे गोबिन्द सिर ते रख्या समला, सो कल्गी वाला कल्गी चमक इक चमकाएगा। दो जहान जिस तों बिनां होए कमला, सो कमली वाला फेरा पाएगा। शब्द सुत तेरा झल्ले कोई ना हमला, दर तेरे सीस झुकाएगा। कलयुग अन्त

७४१ १५

श्री भगवन्त निरगुण हो के देवे ख़बरां, धुर दी ख़बर आप सुणाएगा। साध सन्त होए ना कोई बेसबरा, धीरज धीर सब दी वेख वखाएगा। वेखणहारा मढ़ी गोर कबरां, उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फोलाएगा। शब्द गुरु गुरदेव स्वामी पूरीआं करे सधरां, सिदक सादक इक वखाएगा। लेखा जाणे उपर अम्बरां, गगन मण्डल चरणां हेठ दबाएगा। किसे हथ्थ ना आउणा पारब्रह्म पतिपरमेश्वर सदी वीहवीं मसीत मन्दिरां, शिवदुआले मट्ठ नज़र कोए ना पाएगा। सर्ब जीआं बिध जाणे अन्दरां, घर घर बैठा वेख वखाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द सुत तेरी रुत्त आप सुहाएगा। शब्द सुत तेरी रुत्तड़ी, प्रभ महकावेगा। लख चुरासी श्री भगवान नालों रुट्ठड़ी, तेरे नेत्र नैण जणावेगा। कलयुग वेला आए पिता नैण उठाए वल पुत्री, सति धर्म ना कोए कमावेगा। ओस वेले निरगुण धार निरवैर पुरख अकाल धुरदरगाहों उतरी, मात पित गोद ना कोए बहावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, तेरा इक्को हुक्म समझावेगा। तेरा हुक्म इक वरतावेगा। शाह सुल्तान खेल खलावेगा। मेहरवान डंक वजावेगा। दो जहान डेरा ढावेगा। उलटा गेड़ा आप गड़ाएगा। जूठ झूठ झेड़ा आप मुकावेगा। जन भगतां उपर तुठ, नेरन नेरा नज़री आवेगा। करे खेल अबिनाशी अचुत, चित वित ठगौरी कोए ना पावेगा। साचे सन्तां करे हित, हितकारी इक्को नज़री आएगा। गुरमुखां धुर दा लेखा देवे लिख, लेखा लेख ना कोए मिटाएगा। देवे वड्याई साचे सिख, सिख्या इक्को इक समझाएगा। चार वरन अठारां बरन नौ सत्त इक्को नैण आए दिस, दूजी अक्ख ना कोए तकाएगा। आपणे मिलण दी दस्से बिध, साचा राह इक समझाएगा। गुरमुख किसे कम्म ना आवे नौ निध, अठारां सिध साचा राग इक अलाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम इक्को तेरा नाम प्रगटाएगा। कलयुग अन्तिम प्रगटे नाम एक, श्री भगवान आप प्रगटाईआ। सृष्ट सबाई देवे टेक, लख चुरासी बूझ बुझाईआ। जीवां जंतां करे बुध विवेक, निर्मल अमृत नीर सच प्याईआ। त्रैगुण माया लाए ना सेक, जिस उपर मेहर नज़र उठाईआ। कूड़ा नाता तुट्ट जाए भेख, भेखाधारी कोई रहिण ना पाईआ। लहिणा देणा चुक्के मुल्लां शेख़, मसायक पैगम्बर बैठण मुख छुपाईआ। सदी चौधवीं रही वेख, कवण वेला प्रभ चौधवीं चन्द करे रुशनाईआ। सच अमाम धारे आपणा भेख, आलम उल्मा समझ कोए ना आईआ। जिस दी ईसा मूसा मुहम्मद रख के गए टेक, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। सो साहिब सुल्तान चौदां तबक खेले खेड, सबक इक्को इक पढ़ाईआ। सूफ़ी मुरीद मुर्शद देवे अन्दर वड़ के भेत, बाहरों करे ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द गुरु गुरदेव स्वामी आदि जुगादी अन्तरजामी, बोध अगाधी बोले बाणी,

धुर दा राग सुणाईआ। शब्द कहे प्रभ मेरे ठाकर, तेरे हथ्थ मेरी वड्याईआ। गहर गम्भीर डूंघे सागर, हउँ मछली तरन ना पाईआ। तेरा वणज करां बण सौदागर, दो जहानां हट्ट चलाईआ। तेरा खेल करते कादर, कुदरत रूप दयां दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, अलख निरँजण दर तेरे अलख जगाईआ। सच अलख बोल जैकार, जै जैकार सुणाइंदा। शब्द सुत उठ वेख तेरे दर खड़े गुरू अवतार, तेई अवतार निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। पीर पैगम्बर बणे भिखार, ख़ाली झोली सर्ब वखाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव नेत्र रोवण ज़ारो ज़ार, धीरज धीर ना कोए धराइंदा। करोड़ तेतीसा करे गिरयाज़ार, सुरप्त भेव कोए ना आइंदा। गण गंधर्ब करन पुकार, उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। त्रैगुण माया गई हार, पंज तत आपणा डेरा ढाइंदा। मन कहे मेरा टुट्टा हँकार, जिस घर सतिगुर शब्द फेरा पाइंदा। बुद्धी कहे मैं होई बेकार, बिन हरि नामे मेरी सार कोए ना पाइंदा। मति कहे मैं बणी कमज़ात नार, हरि कन्त नज़र कोए ना आइंदा। शब्द कहे मैं सब नाल करां प्यार, घर घर सोई सुरती आप जगाइंदा। उठ सखी वेख आपणा काहन, नाम निधान बंसुरी नाम वजाइंदा। साचा मेला सीता राम, घर मन्दिर इक सुहाइंदा। प्रिया प्रीतम करे प्यार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द गुरू तेरा राह इक चलाइंदा। शब्द गुरू जग चले राह, कलयुग अन्त मिले वड्याईआ। सतिजुग साचा बणे मलाह, खेवट खेटा सेव कमाईआ। सभनां देवे सच सलाह, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। सर्ब जीआं दा दाता बेपरवाह, पुरख अकाल इक अख्वाईआ। इक्को ओट लओ तका, इष्ट देव इक्को इक समझाईआ। इक्को कलमा लओ गा, इक्को नबी रसूल पढ़ाईआ। इक्को सोहला लओ सुणा, रसना जिह्वा बत्ती दन्द मिलाईआ। इक्को मौला लओ मना, दूसर कोए रहिण ना पाईआ। पड़दा उहला लओ चुका, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। घर विच घर सतिगुर मिले आ, दूजे दर लभ्भण कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द सुत तेरा मार्ग इक लगाईआ। तेरा मार्ग इक लगावांगा। समुंद सागर फोल वखावांगा। लख चुरासी तोलां तोल, नाम खण्डा हथ्थ उठावांगा। दो जहान वजावां ढोल, जीव जंत सर्ब जगावांगा। किसे नाल ना मारां रोल, साची करनी आप कमावांगा। कलयुग लेखा चुक्के उपर धौल, धवला हौला भार करावांगा। ना कोई जाणे पंडत पांधा रौल, बारां रासी विच कदी ना आवांगा। नानक गोबिन्द नाल जो कीता कौल, अन्तिम पूरा कर वखावांगा। सचखण्ड दुआरा लोकमात खोल्, धर्म इक्को इक चलावांगा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण पंज तत खेल चोल, चोला इक्को इक बदलावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ावांगा। साचा लेखा इक समझावांगा।

धुर दा लिख्या नेत्र नैण वखावांगा। धाम जणा इक अनडिठया, दूई द्वैती पड़दा लाहवांगा। सोहँ शब्द आत्म परमात्म पाए भिच्छया, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा रंग रंगावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचा राह चलावांगा। सतिजुग साचा राह चल्लेगा। धर्म दुआर इक्को मल्लेगा। कूड़ कुड़यार अन्तिम हल्लेगा। लख चुरासी जीव उठेगा। पावे सार जले थले आ। दो जहान वेखे आपणे, वसदे उजड़दे लभ्भे आ। पुरख अकाल शब्द सुत दोवें रहिंदे इकल्ले आ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा धाम महल अटल उच्च मनार इक्को इक सुहंदया। शब्द सुत सुण चढ़या चा, थिर घर वज्जी इक वधाईआ। पारब्रह्म प्रभ मिले मलाह, बेड़ा लोकमात चलाईआ। कूड़ी क्रिया देवे मिटा, सच सुच दए वरताईआ। सब दा लेखा झोली पा, भरम भुलेखा दए कढ्ढाईआ। धुर दा नेता बणे आ, पूरब चेता दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, साचा मार्ग इक प्रगटाईआ। साचा मार्ग प्रभू प्रगटावेगा। सृष्ट सबाई हुक्म वरतावेगा। नव नौ ना कोई भुलावेगा। चार चार आप जणावेगा। पंज पंज डंक सुणावेगा। राउ रंक आप उठावेगा। दुआर बंक इक जणावेगा। साध सन्त मेल मिलावेगा। भगत भगवन्त जोड़ जुड़ावेगा। महिमा अगणत आप समझावेगा। धुर दा नाम शब्द इक्को अंक, अंकत आपणे विच करावेगा। आत्म परमात्म साचा मंत, मन्त्र अगम्म आप पढ़ावेगा। नार मिलावा विछड़े कन्त, सेज सुहञ्जणी इक सुहावेगा। चोली चाढ़ रंग बसन्त, गहर गम्भीर वेख वखावेगा। धुर दा बण के आए पंडत, बोध अगाधा आप पढ़ावेगा। चारे खाणी चारे बाणी भेव ना जाणे जेरज अंडत, उत्भुज सेत्ज समझ ना कोई रखावेगा। दूजे दर ना जाए मंगत, सच भण्डार आप खुल्हावेगा। गढ़ तोड़ हउमें हंगत, हँ ब्रह्म इक दरसावेगा। माणस जन्म ना होवे भंगत, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकावेगा। नाता तोड़ बहिशत जंनत, स्वर्ग चरणां हेठ दबावेगा। अन्तिम मेला करे श्री भगवन्त, भगत भगवान आपणी गोद उठावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आत्म सुख इक्को इक रखावेगा। सतिजुग तेरा आत्म सुख, सुख सागर रूप जणाईआ। उजल करे मात मुख, जो जन सोहँ राग अल्हाईआ। सफल कराए मात कुक्ख, दस दस मास अग्न ना कोए तपाईआ। गर्भ ना होवे उलटा रुख, जूनी जून ना कोए भवाईआ। कर किरपा अमृत आत्म देवे घुट्ट, निझर झिरना इक झिराईआ। आवण जावण लख चुरासी नाता जाए छुट्ट, छुट्टकी लिव आपणे नाल लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन्म कर्म दी लाहे भुक्ख, मरन डरन दा तरास मिटाईआ। मरन डरन दा चुक्के झेड़ा, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। आवण जावण चुकाए गेड़ा, लख चुरासी पन्ध मुकाइंदा। वरन बरन

मुकाए हेरा फेरा, ज़ात पात बन्धन ना कोए जणाइंदा। इक्को नाम जणाए तूं मेरा मैं तेरा, सोहँ सति सरूप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन आपणे रंग रंगाइंदा। हरिजन रंगे रंग अगम्म, अगम्मड़ी दया कमाईआ। वेखणहारा काया माटी हड्ड चम्म, ततव तत खोज खोजाईआ। पावे सार पवण स्वास दम, अन्दर बाहर भीतर वेखे थाउँ थाईंआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगतां बेड़ा बन्न्ह, भव सागर पार कराईआ। किरपा कर श्री भगवन, भगवन आपे होए सहाईआ। सतिजुग तेरा इक्को धन्न नाम, सति सतिवादी आप प्रगटाईआ। सर्ब जीआं दा बणे काहन, लख चुरासी नारी लए प्रनाईआ। नव नौ चार नज़री आए राम, रहमत रहीम आप कमाईआ। धुर संदेसा दे पैग़ाम, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। शब्द गुरु गुर सच्चा सच ईमान, धर्म इष्ट विशेष इक्को इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण दो जहान इक प्रधान, नाम निशान निज आत्म परमात्म दए जणाईआ।

✪ २० अस्सू २०२० बिक्रमी दलीप सिँघ दे गृह बधनी ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

आत्मक शांती देवे सति, सति पुरख निरँजण वड्डी वड्याईआ। सतिगुर पूरा आदि जुगादि सदा समरथ, शब्द गुर दाता बेपरवाहीआ। जिस जन देवे ब्रह्म मति, अन्तर आत्म भेव खुल्हाईआ। निर्मल जोत कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेरा दए मिटाईआ। खेल वखाए पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता आपणी धार समझाईआ। मण्डल मण्डप ब्रह्मण्ड खण्ड काया मन्दिर वखाए साची रास, सुरती शब्दी गोपी काहन नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा नाम वर, तिस अग्नी तत ना लागे राईआ। आत्म शांत देवे कर, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ। काया मन्दिर अन्दर वड़, डूंघी भँवरी फोल फोलाईआ। सुरत सवाणी लए फड़, शब्द हाणी मेल मिलाईआ। पंच विकारा तोड़ हँकारी गढ़, काम क्रोध लोभ मोह हँकार डेरा ढाहीआ। दरस दिखाए नरायण नर, नर हरि आपणा पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सांतक सति सति दए समझाईआ। साची शांती सतिगुर चरण, बिन सतिगुर हथ्थ किसे ना आईआ। सतिगुर पूरा नेत्र खोल्हे हरन फरन, दूई द्वैती पड़दा दए चुकाईआ। लहिणा देणा चुकाए मरन डरन, लख चुरासी फंद कटाईआ। मेहरवान हरि दाता करनी करन, करता पुरख इक अख्वाईआ। नाता तोड़ वरन बरन, दीन मज़्हब बन्धन दए गंवाईआ। गीत सुहागी आत्म अन्तर सुणाए धुर दा छन्द, बोध अगाधा करे पढ़ाईआ। रसना

जिह्वा मुख बोले ना बत्ती दन्द, अजपा जाप इक जणाईआ। घर विच घर वखाए परमानंद, निजानंद इक्को रस चखाईआ। लिव छुटकी देवे आपणे नाल बन्न्, बन्धन होर रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच शांती साहिब सतिगुर इक्को इक वखाईआ। शांती देवे सतिगुर पूरा अमृत जाम, निझर झिरना जिस झिराइंदा। कूड़ी क्रिया तृष्ना मेटे ताम, अग्नी अग्ग माया ममता मोह ना कोए वखाइंदा। काया नगर खेड़ा वेखे ग्राम, साढे तिन्न हथ्थ फोल फोलाइंदा। भाग लगाए काया माटी चाम, चम्म दृष्टी दूर कराइंदा। किरपा कर श्री भगवान, मेहरवान मेहर नज़र उठाइंदा। जिस जन आपणा देवे शब्द निशान, सच निशाना इक दरसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सति सति सति इक्को घर वखाइंदा। सति शांती होए दासी, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। किरपा करे पुरख अबिनाशी, पूरब लहिणा झोली पाईआ। कूड़ी क्रिया जाए विनासी, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। हरिजन हरिभगत गुरमुख गुरसिख पूरी करे आसी, आसा आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा नाम वर, अन्तर आत्म परमात्म आपणा रंग रंगाईआ। जगत अशांती होवे दूर, अग्नी तत रहिण ना पाईआ। जिस साहिब सतिगुर मिले हाज़र हज़ूर, वड दाता बेपरवाहीआ। पन्ध मुकाए नेड़ा दूर, दूर दुराडा नेरन नेरा नज़री आईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, साचे धंदे नाम लगाईआ। निरगुण जोती बख्शे नूर, जोत निरँजण कर रुशनाईआ। शब्द अनादी देवे तूर, तुरिया मुख शरमाईआ। आसा मनसा करे पूर, पूरन पुरख बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तिस मन आत्म करे शांत, बुध मति रहे ना कोई भरांत, ततव तत इक्को घर वखाईआ। मन शांती आत्म सुख, सुख परमात्म नाल रखाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म उजल करे मुख, मुख नूर चन्द रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया मिटे दुःख, अग्नी अग्ग ना कोए लगाईआ। प्रगट होवे जो बैठा चुप्प, घर घर विच हुक्म सुणाईआ। साहिब सतिगुर दीन दयाल ठाकर स्वामी जिस उपर जाए तुठ, अमृत मेघ इक बरसाईआ। तिस नालों शांती कदी ना जावे रुठ्ठ, घर आवे जावे चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस घर वसाए सच सुच, तिस घर द्वैत रूप नज़र कोए ना आईआ। सो पुरख निरँजण हरि सुल्ताना, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। हरि पुरख निरँजण वड मेहरवाना, मेहर नज़र नैण उठाईआ। एकँकारा हुक्मराना, जुग चौकड़ी हुक्म मनाईआ। आदि निरँजण नूर महाना, जोती जोत जोत रुशनाईआ। श्री भगवान झुलाए सच निशाना, दरगाह साची इक वखाईआ। अबिनाशी करता मर्द मर्दाना, सति मर्दानगी इक वखाईआ। पारब्रह्म प्रभ खेल महाना, महिमा अकथ कथनी कथ ना सके राईआ। सचखण्ड दुआर सुहाए इक मकाना, छप्पर छन्न

७४६
१५

ना कोए छुहाईआ। शाहो भूप बण राज राजाना, तख्त निवासी साचे तख्त आसण लाईआ। करे खेल श्री भगवाना, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआर दए वड्याईआ। सचखण्ड दुआर सच महल्ला, सो पुरख निरँजण आसण लाइंदा। हरि पुरख निरँजण इक इकल्ला, निरवैर आपणी धार जणाइंदा। एकँकारा दीपक जोती आपे बला, आदि निरँजण नूरो नूर नूर रुशनाइंदा। अबिनाशी करता वसणहारा निहचल धाम उच्च अटला, श्री भगवान गृह मन्दिर अन्दर सोभा पाइंदा। पारब्रह्म प्रभ खेले खेल इक अवल्ला, भेव अभेद समझ कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरे इक्को एक आप आपणा आसण लाइंदा। सचखण्ड दुआरे परवरदिगार, नूर नुराना नूर इलाहीआ। मुकामे हक़ हो तैयार, लाशरीक सोभा पाईआ। जलवा नूर इक उज्यार, जोती जोत जोत रुशनाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी खेल करे अपार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। शब्दी सुत सुत दुलार, वड बलवान आप जगाईआ। धुर संदेसा देवे इक्को वार, नर नरेशा आपणा हुक्म मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, इक इकल्ला आपणा खेल आप रचाईआ। आपणा खेल करे करतार, करता आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। महल अटल उच्च मनार, सचखण्ड बैठा डेरा लाईआ। शब्दी सुत सुत दुलार, हरि साचा आप प्रगटाईआ। थिर घर खोल्हे बंद कवाड़, आपणी हथ्थीं कुण्डा लाहीआ। साचे शब्द दए बहाल, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड लोक परलोक पुरी लोअ आकाश प्रकाश तेरी सच्ची धर्मसाल, सच दुआरा इक्को वार जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव खेल करे करतार, करता आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरे इक्को चढ़, सच सिँघासण सोभा पाईआ। सुत शब्द साचे लाल, प्रभ साचा सच जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरे नाल, वस्त अमोलक इक वरताईआ। त्रैगुण माया कर प्रधान, पंज तत करे कुड़माईआ। लख चुरासी जीव जहान, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज बणत बणाईआ। चारे बाणी बोल बिनां ज़बान, परा पसन्ती मद्धम बैखरी चारे खाणी दए समझाईआ। अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज लख चुरासी घट घट अन्दर दीआ दीपक जोती बाल, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश पंज तत बंक गढ़ इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादि इक्को नर, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। नर नरायण एकँकार, अक्ल कला अख्वाइंदा। वसणहारा धाम न्यार, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। दो जहानां श्री भगवाना वेख वखाए दुआर, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म मनाइंदा। लेखा जाण गुरू अवतार, वेखणहार सर्ब संसार, पंज तत काया चोला आप हंढाइंदा।

शब्द अगम्मी बोल जैकार, शब्द धुन इक अपार, राग अनादी नाद सुणाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण कर तैयार, धुर संदेसा आप जणाइंदा। हुक्मे हुक्म तेई अवतार, भगत अठारां खोल्ह कवाड़, गुर दस कर विचार, ईसा मूसा मुहंमद चारों कुण्ट हुक्म वरताइंदा। आपे जाणे धुर दी धार, खेले खेल आप करतार, वेखे विगसे करे विचार, शब्दी डंका इक वजाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेखे वेखणहार, निरगुण सरगुण लै अवतार, लख चुरासी जीव जंत पावे सार, पड़दा उहला काया चोला आप चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा नर नरेशा इक इकल्ला एकँकार, धुर फ़रमाना आप सुणाइंदा। सच संदेसा गुर अवतार, पीर पैगम्बर आप जणाईआ। जुग चौकड़ी कर तैयार, लोकमात सेव समझाईआ। शब्द अगम्मी दे के धार, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। आत्म परमात्म भेव खुलाए जीव गंवार, अन्तर अन्तर बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या सर्ब करे पढ़ाईआ। साची सिख्या लैणी पढ़, आदि पुरख सर्ब जणाईआ। इक्को मन्दिर जाणा वड़, घर साचे वज्जे वधाईआ। इक सरनाई जाणा पड़, दूजा इष्ट ना कोए रखाईआ। इक्को करनी लैणी कर, हरि, करता पुरख समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर धुर संदेसा इक सुणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात, प्रभ हुक्मी हुक्म आप चलाइंदा। जुग चौकड़ी देवे दात, नाम अमोलक वस्त झोली पाइंदा। नित नवित्त मेटे अन्धेरी रात, साचा चन्द नूर चमकाइंदा। शब्द सुणाए धुर दी गाथ, साचा सोहला राग अल्हाइंदा। सच प्रीत बंधाए नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। अन्दर वड़ के पौड़े चढ़ के घर घर विच पुच्छे वात, नौ दुआरे नज़र किसे ना आइंदा। बंद कवाड़ी खोल्हे ताक, बजर कपाटी कुण्डा आप तुड़ाइंदा। डूंघी भँवरी मारे झात, नेत्र नैण अक्ख खुलाइंदा। बण के आए सज्जण साक, सगला संग आप निभाइंदा। खेले खेल रसूल पाक, पीर दस्तगीर आपणा हुक्म वरताइंदा। साचे अस्व घोड़े चढ़े मार पलाक, दो जहानां आप दौड़ाइंदा। वेखणहारा तत आठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध डेरा ढाइंदा। अनभव अनभव अनभव कर प्रकाश, गुर गुर आपणा भेव खुलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण निरवैर निराकार पुरख अकाल जुग जुग आपणा राह चलाइंदा। जुग चौकड़ी पाए बन्धन, बन्दना एका इक समझाईआ। आत्म परमात्म देवे परमानंदन, निजानंद करे रसाईआ। मस्तक जोत ललाटी लगाए चन्दन, चन्दन इक्को टिक्का धूढ़ दए लगाईआ। करे खेल सूरा सरबँगन, सूरबीर दाता बेपरवाहीआ। दूजे दर कदे ना जाए मंगण, देवणहार आप अख्वाईआ। वेखे खेल सदा ब्रह्मण्डन, ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज आपणी

धार वखाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी लेखा जाणे वरभण्डन, कोटन कोटि त्रिलोकी नाथ बैठे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादि एकँकार, खेले खेल खेलणहार, ख़ालक ख़लक वेखे चाईं चाईंआ। ख़ालक ख़लक वेखे मख़लूक, बेपरवाह जलवा नूर नूर उजियारा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी आपणा नूर रखे महिफ़ूज़, बिन पीर पैगम्बरां नज़र किसे ना आ रिहा। सच महल्ल उच्च अरूज, साचा हुजरा इक्को इक सुहा रिहा। जिस मुरीद मुर्शद मिले इक महिबूब, मुहब्बत साचा जोड़ जुड़ा रिहा। तिस कलमा देवे सच सबूत, सूरत सच इक वखा रिहा। पंज तत खोल्हे भेव कलबूत, काया कपड़ पड़दा लाह रिहा। जो हर घट वसे मौजूद, सो अन्त आपणा दरस करा रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कूड़ी क्रिया कर मौकूफ़, मुकम्मल आपणा राह समझा रिहा। साचा राह दस्से भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। जुग चौकड़ी खेल महान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढ्ढाईआ। गुर अवतार मंगदे गए दान, पीर पैगम्बर अग्गे झोली डाहीआ। लेखा लिख लिख गए ब्यान, कलम शाही नाल रलाईआ। सदी चौधवीं खेल करे महान, मेहरवान आपणा फेरा पाईआ। सदी वीहवीं होए प्रधान, शब्द अगम्मी रूप वटाईआ। जिस दा नज़र ना आए किसे निशान, जगत लोचण पेख कोए ना पाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण जिस दा करन ज्ञान, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। सो साहिब सतिगुर वाली दो जहान, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। प्रगट होवे योद्धा सूरबीर बली बलवान, बल आपणा इक रखाईआ। छत्र झुलाए दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड सीस झुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव मंगण दान, गुर अवतार पीर पैगम्बर ढोला गावण चाईं चाईंआ। सो करता पुरख खेल करे महान, ख़ालक ख़लक समझ कोए ना पाईआ। जिस निज नेत्र खोल्ह देवे ज्ञान, सो अन्तर आत्म बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि जू आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाईआ। आपणा भेव रखे हथ्थ, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। खेले खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी कार कमाईआ। जुग चौकड़ी देवे मथ, कलयुग अन्त रहिण ना पाईआ। कूड़ी क्रिया हउमें हंगता बुरज जाणा ढट्ठ, साचा करे सच पढ़ाईआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत्त, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। घर घर चार वरन अठारां बरन सब नूं देवे इक्को मति, गुरमति सब दी झोली पाईआ। काया मन्दिर अन्दर वखाए गुरुदुआर मन्दिर मस्जिद मट्ठ, हरिमन्दिर इक्को नज़री आईआ। अट्ठे पहर जोत जगे लटा लट, तेल बाती संग ना कोए जणाईआ। शब्द अगम्मी धुन अनाद अनहद वज्जे सट्ट, अनरागी आपणा राग अल्हाईआ। अमृत आत्म सच सरोवर जन भगतां देवे झट्ट, दुरमति मैल रहिण ना पाईआ। घर विच घर खोल्ह वखावे हट्ट, बण वणजारा सौदा इक्को

नाम विकाईआ। लहिणा देणा चुक्के अठसठ, जिस जन मिल्या सतिगुर बेपरवाहीआ। सच्चा मार्ग आत्म परमात्म देवे दस्स, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। आपणे वेखण दी जिस जन देवे अक्ख, अक्खर निश्अक्खर दए समझाईआ। बाहरों किसे ना आवे हथ्थ, लभ्भदी फिरे जगत लोकाईआ। जिस जन देवे धीरज जत, सति सन्तोख इक वखाईआ। तिस शांती शांत रूप हो के अन्दर जाए वस, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। सो गुरमुख गुरसिख नौ दुआरे कोई ना खावे भक्ख, भोजन इक्को नाम नज़री आईआ। अन्दर बाहर रसना जिह्वा बत्ती दन्द कहे प्रभू तेरा नाम सति, कूड़ी दिसे सृष्ट सबाईआ। धन्न भाग जिन्हां शांती नाल शांत हो के आपणी पत्त लई रख, तिन्हां पतिपरमेश्वर मिल्या बेपरवाहीआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर जन भगतां देवणहारा हक़, हक हकीकत झोली पाईआ। गुरसिख मंज़ल चढ़दा कदी ना जावे थक्क, जिन्ना चिर सतिगुर पूरा नज़र घर विच घर ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शांती दस्से सति सरूप, जिस विच मिले हरि जू भूप, अन्ध अन्धेरा चुक्के चारे कूट, इक्को नज़री आए पुरख अकाल दीन दयाल जो हर घट रिहा समाईआ। सतिगुर पूरा करे संसार अमन, आमद आपणी इक रखाईआ। भगत फुलवाड़ी खिल्या रहे चमन, गुलशन गुल सर्ब महकाईआ। हरि का भेव जाणे कवण, लख चुरासी समझ कोए ना पाईआ। जिस दुष्ट सँघारया बण रामा रवण, सो बेपरवाह आपणी दया कमाईआ। करे खेल श्री भगवन, भगवन आपणी दया कमाईआ। लख चुरासी जीव जंत नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप ब्रह्मण्ड खण्ड जिस दा करदे हवन, सच सुगंधी बैठे राह तकाईआ। जिस दे चरण कँवल सेवा करदी उणंजा पवण, बण पखेरू पंख हिलाईआ। सो साहिब लेखा जाणे अवण गवण, लोक परलोक वेखे थाउँ थाईंआ। सो हर घट अन्दर करके गवन, गहर गम्भीर बैठा आसण लाईआ। गुरमुख गुरसिख चिन्ता विच कदे ना सवण, जिन्हां विछड़या वड दाता बेपरवाहीआ। मन वासना सारे भवण, दहि दिशा उठ उठ धाईआ। करे खेल जिउँ बावन बवन, ब्रह्माद नाद इक वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची बिध दए समझाईआ। साचे अमन दा इक्को तरीका, घर घर विच दए जणाईआ। दीन मज़्ब ज़ात पात दा छड्डो शरीका, ऊँच नीच ना कोए राईआ। पतिपरमेश्वर जाणो नीकन नीका, ऊँचो ऊँच इक्को नज़री आईआ। रसना बचन कदे ना बोलो फीका, सतिगुर नानक गया समझाईआ। गोबिन्द चरण रखो प्रीता, दुबिधा मैल रहिण ना पाईआ। जिस दीआं नित नवित्त सारे करन उडीकां, सो सतिगुर राती सुत्तयां दरश वखाईआ। जाणे भेव सर्ब जन जीअ का, हर घट बैठा डेरा लाईआ। सब नूं देवणहारा भीखा, भिखक झोली दए भराईआ। आपणीआं आपणीआं साफ़ कर लओ नीतां, नीतीवान बणो गुरमुख भाईआ। फेर अमन जन भगतो तुहाडे पिच्छे

पिच्छे तुहाढुयां चरणां हेठां कढ्ढे लीकां, आपणा माण ना कोए रखाईआ। मिलण वरतण दा गुर नानक दस्स के गया तरीका, तरा तरा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए आपणा घर, तिस गुरमुख कोई दु:ख लोकमात लग्गे ना राईआ। अमन चमन खिड़े गुलज़ार, कली कली महक महकाईआ। जिस अन्तर आत्म बख्शे इक प्यार, दृष्ट इष्ट इक्को वेख वखाईआ। तिस नाता तुट्टे संसार, कूड़ी दुनिया बन्धन कोए रहिण ना पाईआ। जिध्धर वेखे ओधर नज़र आए निरँकार, निरगुण निरवैर पुरख अकाल हर घट आपणा डेरा लाईआ। सभना नाल करे सच प्यार, सच प्रीती इक समझाईआ। तिन्नां कोल कलयुग कूड़ ना आवे कंगाल, जो गुरमुख बैठे सच सिँघासण आसण लाईआ। अमन सच्चा नहीं बिन सतिगुर दुआर, मन मारयां अमन इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जगत अमन जन भगत भगतां नाल मिलाईआ।

७५१ निहकलंक हरि निरँकार, निरगुण निरवैर इक अख्वाइंदा। कलयुग अन्त लै अवतार, जोती जोत डगमगाइंदा। शब्द डंक वजाए अगम्म अपार, ब्रह्मण्ड खण्ड आप सुणाइंदा। दो जहानां करे ख़बरदार, नेत्र नैण सर्ब खुलाइंदा। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। सम्बल वसे धाम न्यार, बंक दुआर समझ कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आपणा भेव चुकाइंदा। निहकलंक पुरख अगम्म, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। ना मरे ना पए जम्म, मात गर्भ ना डेरा लाईआ। पवण स्वास ना कोए दम, ततव तत ना कोए रखाईआ। निरगुण हो के करे आपणा कम्म, करता कारज आपणे हथ्थ रखाईआ। जन भगतां बेड़ा देवे बन्नू, मनमुखां दए सज़ाईआ। साचा नूर चाढ़ चन्न, निरगुण जोत करे रुशनाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप नज़र ना आए नेत्र अन्नू, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निरगुण दाता वड वड्याईआ। निहकलंक श्री भगवान, बेअन्त बेअन्त बेअन्त अख्वाइंदा। आदि जुगादि जिस दा झुल्लदा रहे निशान, गुर अवतार पीर पैगम्बर सीस झुकाइंदा। सो पुरख अगम्म अथाह बेपरवाह कलयुग अन्त श्री भगवन्त जोत सरूपी वेखे आण, पंज तत रूप रंग रेख ना कोए जणाइंदा। धुर संदेसा देवे वाली दो जहान, चौदां तबक चौदां लोक चौदां विद्या साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। लख चुरासी अन्तर आत्म हो प्रधान, सृष्ट सबाई देवे इक ज्ञान, बोध अगाधा बण के पंडत ब्रह्म पारब्रह्म इक जणाइंदा। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, नर हरि आपणी कार कमाइंदा। निहकलंक नरायण नर एक, कलयुग

अन्तिम वेस वटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दी रखदे गए टेक, साध सन्त सूफ़ी बैठे ध्यान लगाईआ। भगत भगवान रहे वेख, निज नेत्र नैण उठाईआ। सो कलयुग कूड़ी क्रिया बदले रेख, जूठ झूठ मेट मिटाईआ। जिस अन्दर वड़ के देवे आपणा भेत, सो समझो गुरमुख सच्चा, लोकमात तिस मिले वड्याईआ। सतिगुर स्वामी आदि जुगादि सदा नेहकामी निहकर्मी बचन होए ना कच्चा, जो करना सो कर वखाईआ। निहकलंक किसे पंज तत ढले ना सचा, मात पित नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, जोती शब्दी शब्दी जोत, जोत शब्द निहकलंक पुरख अकाल इक अख्वाईआ। निहकलंक शब्द ऐलान, डौरु डंका जगत वजाईआ। करे खेल श्री भगवान, भगवन निहकलंक अख्वाईआ। दूजा अवर ना जाणे जीव अञ्याण, बिन हरि नाम दूजा नज़र कोए ना आईआ। जो जुग चौकड़ी बदले आण, तिस दे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। जे अक्ख है ते लओ पछाण, बिन सतिगुर अक्ख नज़र किसे ना आईआ। कूड़ा झगड़ा रसना जिह्वा ज़बान, मनमति करे लड़ाईआ। शब्द गुरू सदा नौजवान, इक इकल्ला वेस वटाईआ। निहकलंक करे खेल आप महान, कलंकत वेखे सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शब्द ऐलान दो जहान ढोला नाद सुणाईआ। परखण वासते नाम कसवटी, गुरमुखां हथ्थ फड़ाईआ। सतिगुर शब्द तोलया ना जाए तक्कड़ी वट्टी, सेर पसेरी कम्म किसे ना आईआ। जिस ने आपणी आप मिटाई रत्ती, रत्ती रत्त लेखे लाईआ। तिस गुर गुरदेव स्वामी देवे साची मत्ती, मति इक्को इक दृढ़ाईआ। सो गुरमुख वेखे सो गुरमुख परखे जिस सतिगुर दिती निज नेत्र इक्को अक्खी, दो अक्खीआं परख ना सकण राईआ। साचा काहन वेखे प्यारी सखी, बिन सखी काहन दरस कोए ना पाईआ। बिन सीता सुरती राम ना मिले पती, लख चुरासी जगत दुहागण बैठीआं कन्त हंढ्ढाईआ। जिस नानक निरगुण अन्दर आपणी जोत जगाई निक्की जेही बत्ती, सो गुरमुख गुरसिख सतिगुर परखण आईआ। एहो भगतां मिली खट्टी, प्रभ आपणा भेव चुकाईआ। बाकी कलयुगी आपणी भरदे चट्टी, चेतन रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, परख प्रीख्या इक्को नाम रखाईआ। शक्ती समरथा इक अवतार, आदि जुगादि खेल कराइंदा। निरगुण खेल अगम्म अपार दो जहान वेख वखाइंदा। लख चुरासी भाण्डे घड़ बण ठठयार, काया माटी पोच पुचाइंदा। जोती जोती जोती बाल, निक्की निक्की निक्की धर्मसाल, घर घर घर विच वखाइंदा। जिस उपर सतिगुर पूरा होए दयाल, समरथ पुरख बणाए आपणा लाल, लालन इक्को रंग रंगाइंदा। सो गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत करे हरि पहचान, हरि जू हरि मन्दिर नज़री आइंदा। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर,

समरथ पुरख इक करतार, आदि जुगादि जुग जुग अवतार, गुरमुख विरले आपणी बूझ बुझाइंदा। नार को जो पुरख करावे, पुरख नारी रूप वटाईआ। नारी पुरख सतिगुर रूप नज़री आवे, काम चेशटा रहिण कोए ना पाईआ। माणस देह सर्ब समझावे, पंज तत करी कुड़माईआ । हर घट पुरख अकाल डेरा लावे, सच सिँघासण सोभा पाईआ। नारी पुरुष पुरुष नारी सतिगुर पूरा संसा रोग मिटावे, सोग कोए रहिण ना पाईआ । जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिनॢां दित्ता आत्म वर, तिनॢां नारी पुरुष समझ कोई रहिण ना पाईआ ।

✪ २० अस्सू २०२० बिक्रमी गुरचरण सिँघ दे गृह बधनी ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

साहिब सतिगुर सच्चा दरस, दयावान इक वखाइंदा। जन भगतां उपर कर तरस, मेहरवान मेहर नज़र उठाइंदा। अमृत मेघ देवे बरस, जगत तृष्ना इक बुझाइंदा। जन्म कर्म दी मेटे हरस, हवस रोग ना कोए सताइंदा। भेव चुकाए अर्श फ़र्श, काया काअबा पड़दा लाहइंदा। दीनां नाथ दर्दीआं वंडे दर्द, दु:ख दर्द भय भंजन भेव खुलाइंदा। आत्म परमात्म घर घर विच कराए सच्चा मजन, दुरमति मैल धवाइंदा। शब्द अनादी ताल वज्जण, अनहद रागी राग सुणाइंदा। गढ़ हँकारी भाण्डे भज्जण, भाण्डा भरम भउ तुड़ाइंदा। जिस घर सतिगुर स्वामी मिले सज्जण, सो गुरमुख दरस कर तन मन सर्ब तृप्ताइंदा। सतिगुर दर्शन आत्म मंग, घर मन्दिर वज्जे वधाईआ। इक्को ढोला सुणाए छन्द, गीत गोबिन्द अलॢाईआ। नौ दुआर मुक्के पन्ध, घर साचे बूझ बुझाईआ। निर्मल जोत चाढ़ चन्द, निरगुण नूर करे रुशनाईआ। भेव खुलॢाए हँ ब्रह्म, पारब्रह्म दए समझाईआ। जगत तृष्ना मेट तम, कूड़ी क्रिया नाता दए चुकाईआ। हरख सोग ना रहे ग़म, जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन साचा दरस घर मन्दिर इक कराईआ। कर दरस मिटे सोग, चिन्ता रोग रहिण ना पाईआ। आत्म परमात्म मिले सच्चा जोग, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। जगत विछुंने होए संजोग, धुर मेला सहिज सुभाईआ। नाम सुणाए शब्द श्लोक, सोहला इक्को राग अलॢाईआ। भाग लगाए काया कोट, बंक दुआर मिले वड्याईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, आपणा दरस दए समझाईआ। लेखा चुक्के लोक परलोक, अनभव आपणा नूर दरसाईआ। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा दरस अन्तर आत्म बूझ बुझाईआ। साचा दरस सतिगुर नैण, निज नेत्र आप कराइंदा। रसना जिह्वा सके कोई ना कहिण, कथनी कथ ना कोए अलॢाइंदा । जिस मिल्या प्रभ साक सज्जण सच्चा सैण, सो घर साचा सोभा पाइंदा। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा

७५३ १५

साचा वर, दरस दरसी इक्को इक दरसाइंदा। साचा दरस सतिगुर मीत, गुर शब्दी दए वड्याईआ। आदि जुगादी धुर दी रीत, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। शब्द निशान झुलाए ठीक, निरगुण निरवैर हथ्थ उठाईआ। सतिगुर मिलण दी सब दी माणस जन्म इक तरीक, वेला गया हथ्थ ना आईआ। बाल जवानी बिरध अवस्था सब दी रही बीत, घड़ी पल बैठे पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा दरस इक्को घर जणाईआ। साचा दरस सतिगुर घर, जिस गृह मिले वड्याईआ। आवण जावण मरन जन्म भय भउ चुक्के डर, भ्यानक रूप नजर कोए ना आईआ। साहिब स्वामी नित नवित्त सन्त सुहेले गुरु गुर चेले लए फड़, फड़ सज्जण आपणे नाल रलाईआ। काया बंक सच दुआर डूंघी भँवरी उच्च महल्ले जाए चढ़, सच सिँघासण पुरख अबिनाशन डेरा लाईआ। दरस दिखाए किरपा कर, नज़री आए नरायण नर, नर हरि वड्डा वड वड्याईआ। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा दरस दीदार इक्को इक वखाईआ। साचा दरस करो दीदार, दीद ईद चन्द चढ़ाइंदा। घर सज्जण मिले यार, गृह मन्दिर वेख वखाइंदा। सच प्रीती करे निरगुण धार, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाइंदा। नाता जोड़ सर्ब संसार, साक सज्जण सैण इक्को नज़री आइंदा। सच गीत गाए आपणी वार, बोध अगाधा नाम निधान निष्अक्खर अक्खर रूप समझाइंदा। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा इक्को दरस, मेटणहारा पूरब जन्म दी हरस, हासल इक्को इक वखाइंदा। हासल दस्से एक, इक इक इकल्ला वड वड्याईआ। जन भगतां कर बुध विवेक, विवेकी आपणी धार समझाईआ। लेखा जाणे धुर दा लेख, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। नज़री आए नेतन नेत, निज नेत्र करे रुशनाईआ। साचा दरस गुरमुख गुरसिख विरला लए पेख, जिस जन लोकलाज जगत तजाईआ। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवणहारा इक वर, दरस दीदार अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर दर घर साचे दए कराईआ। गुरमुखां कोल सदा जुरअत, सतिगुर शब्द दिती वड्याईआ। जिस नाल खुल्हे बंद सुरत, सुरती बूझ बुझाईआ। नज़री आए अकाल मूर्त, सूरत इक्को इक दरसाईआ। घर सुणे नाद अगम्म तूरत, अनहद नादी नाद अलाईआ। नाता तोड़े कूड़ो कूड़त, सच सुच लए प्रनाईआ। साहिब सतिगुर दीन दयाल ठाकर स्वामी सब दी आसा पूरत, मनसा मनसा नाल मिलाईआ। गुरमुख गुरसिख सदा इक्को इक ज़रूरत, मिले मेल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा घर, जिस काया मन्दिर अन्दर गुरमुख बैठा डेरा लाईआ। गुरमुख तेरा सच महल्ला, महल्ल इक्को नज़री आईआ। शब्द गुरु गुर फड़या पल्ला, दूजा संग ना कोए रखाईआ। तेरे घर प्रकाश दीपक बला, तेल बाती संग

७५४
१५

ना कोए रखाईआ। सो धाम महल अटल बणया महल्ला, जिस गृह हरिजन वसे प्रभ अन्तर ध्यान लगाईआ। जोती शब्दी धार रला, पंज तत अन्दर आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बिन भगतां भगवान कम्म किसे ना आईआ। किरपा अन्दर डूंघा सागर, सतिगुर आपणे विच छुपाईआ। जो कोई पुच्छे फड़ वखावे विच्चों काया गागर, घर घर विच खोज खोजाईआ। निर्मल कर्म करे उजागर, जन्म कर्म दा रोग मिटाईआ। जो हरि का नाम वणज करे बण सौदागर, तिस सच ख़ज़ाना झोली देवे पाईआ। एथे ओथे दो जहान गुरमुखां गुरसिखां हरिजनां हरिभगतां सदा देवे आदर, आदर्श सद आपणा इक्को इक समझाईआ। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल करीम करता कादर, कुदरत वेखे चाईं चाईंआ। मेहर अन्दर मेहरवान, मेहर नज़र नैण उठाईआ। जन भगतां देवे ब्रह्म ज्ञान, ब्रह्म विद्या इक समझाईआ। साचे सन्तां देवे धुर निशान, धर्म दुआरा इक समझाईआ। गुरमुखां दरस देवे दर घर आण, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। गुरसिखां इक्को नाम सुणाए काण, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। साहिब सतिगुर ठाकर जिस जन उपर होए आप मेहरवान, मेहर मुहब्बत कर किरपा आपणे नाल रखाईआ। आवण जावण लख चुरासी नाता छुट्टे जहान, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। चित्रगुप्त लेखा मंगे ना आण, लाड़ी मौत काल नगारा ना कोए वजाईआ।
७५५ महाकाल वेखे मार ध्यान, नेत्र नैण नैण उठाईआ। जिन्हां नाता जुड़या नाल श्री भगवान, सो हरि भगत हरि दुआरे बैठे चाईं चाईंआ। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच संदेसा देवे इक फ़रमान, हरिजन मेला मेल मिलाईआ। सतिगुर किरपा होवण वड भाग, हरि भागी सिफ्त सालाहीआ। सोई सुरती जाए जाग, घर सवाणी अक्ख खुल्हाईआ। अन्तर उपजे इक वैराग, वैरागी रूप वटाईआ। कवण वेला मिले मेरा कन्त सुहाग, चिरी विछुंनी दए दुहाईआ। घर दीपक जगे चिराग़, मेरा अन्ध अन्धेर मिटाईआ। बंद कवाड़ खोल्ह ताक, आपणा दरस दए वखाईआ। मैं घूँगट चुक्क के लवां झाक, नेत्र नैण नैण शरमाईआ। जे सुणाए अगम्मी वाक, बिन सरवणां सुण सुण खुशी मनाईआ। जे इक स्नेहड़ा प्रेम प्रीती नाल जाए आख, मैं मन्नां चाईं चाईंआ। उहदे नाल मिल के मेरी मिट जाए ज़ात, पिछला लेखा रहिण कोई ना पाईआ। प्रभ मिले इक्को कन्त सुहाग, बण नार सुहागण उस दी सेव कमाईआ। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा नाम वर, तिस दूजा लेखा कोए रहिण ना पाईआ। शब्द गुरू सद तोड़े गढ़, गढ़ तोड़नहार इक अख्वाईआ। जो बिन पौड़ीउँ सब दे अन्दर जाए चढ़, महल अटल डेरा लाईआ। अन्दरों हो के लए फड़, बाहरों समझ किसे ना आईआ। जिस दा ना कोई सीस ना कोई धड़, सीस धड़ सारे वेखे थाउँ थाईंआ। धुर दा नाद बोध अगाध शब्द अगम्म लए पढ़,

अक्खर अक्खरां नाल मिलाईआ। अग्नी हवन कदे ना जाए सड़, मढ़ी गोर ना कोए दबाईआ। लेखा जाणे चोटी जड़, मंझ आपणा डेरा लाईआ। सो साहिब सतिगुर शब्द गुरदेव तोड़नहार हँकारी गढ़, आत्म घर घर परमात्म लए मिलाईआ। सतिगुर हथ्थ खुल्ला गफ्फ़ा, जुग चौकड़ी आप वरताइंदा। जे कोई प्रेम प्रीत करके मारे जफ्फा, दूई द्वैत पड़दा विच्चों चुकाइंदा। लूं लूं अन्दर साढे तिन्न करोड़ रचा, रचना आपणी आप समझाइंदा। सतिगुर चरण लग गुरमुख कदी ना रहे कच्चा, सतिगुर चरण शाह रग उपर आप वसाइंदा। जिथ्थे कहे आ गुरमुख मेरे बच्चा, बचपन तेरा आपणी झोली पाइंदा। नौ दुआरे तेरा कोई ना सका, दस्म दुआरी इक्को मित्र संग निभाइंदा। इक दूजे नूं गुरु गुरसिख दोवें मिल के कहिण वाहवा अच्छा, बिनां सिख बिनां गुरू दोहां कम्म रास किसे ना आइंदा। आत्म परमात्म सदा प्यार, निज अन्तर आप जणाईआ। जुग चौकड़ी करे कराए करनेहार, करता पुरख वड्डी वड्याईआ। जग विसरे विसर ना जाए करतार, जो करता कीमत सब दी पाईआ। जन भगतां नित नवित्त वेखण आए सिरजणहार, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। फड़ फड़ लभ्भे लख चुरासी विच्चों लए उठाल, सुरत शब्द ज्ञान दृढ़ाईआ। आपे सुणे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। नाता तोड़ त्रैगुण माया कूड़ जंजाल, पंज तत झूठा डेरा ढाहीआ। आपे चले अन्तर नाल नाल, जगत बसन्तर दए बुझाईआ। दीनां बंधप बण कृपाल, कृपानिध आपणी मेहर नज़र उठाईआ। गुरमुखां घर विच घर वखाए सच्ची धर्मसाल, जिस दुआरे अट्ठे पहर इक्को वज्जे नाम वधाईआ। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन सदा संग समाईआ। सतिगुर किरपा जाए बज्झ, बन्धन नाम रखाईआ। मन मनुआ दहि दिशा ना जाए भज्ज, चार कुण्ट नट्ठे ना वाहो दाहीआ। सतिगुर पूरा इक्को गीत सुणाए छन्द, साचा सोहला दए समझाईआ। जिस विच्चों उपजे परमानंद, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। दूई द्वैती ढाहे कंध, कूड़ी क्रिया मेट मिटाईआ। लेखा चुक्के हँ ब्रह्म, पारब्रह्म इक्को नूर नज़री आईआ। इक्को नाम गुरमुखां दा साचा धन, जो घर घर विच दित्ता रखाईआ। सतिगुर हुक्म जो जन रहे मन्न, तिन्नां मन मनसा रोग ना कोए सताईआ। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखे लाए साचे जन, जन जननी वेख वखाईआ।

७५६ १५

✪ २० अस्सू २०२० बिक्रमी उजागर सिँघ दे गृह नवां रामू वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

देवे नाम शब्द जन सो, सो पुरख निरँजण दया कमाइंदा। जन्म कर्म दुरमति मैल देवे धो, निर्मल निरवैर रूप वटाइंदा। हँ ब्रह्म प्रभ आपे हो, आत्म परमात्म बन्धन पाइंदा। सुरती शब्द जाए छोह, जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा

कर, करे खेल साचा हरि, साचा नाम इक समझाइंदा। साचा नाम सति पुरख निरँजण, सति सतिवादी इक रखाईआ। जन भगतां नेत्र पा अंजन, अज्ञान अन्धेर दए मिटाईआ। नज़री आए सतिगुर सज्जण, साहिब दाता बेपरवाहीआ। चरण धूढ़ कराए मजन, सच सरोवर इक नुहाईआ। किरपा करे दर्द दुःख भय भंजन, भव सागर पार तराईआ। आत्म परमात्म रखे मग्न, लिव अन्तर इक लगाईआ। दरस दिखाए गोपाल मूर्त मदन, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। सन्त सुहेले जुग जुग आवे सद्दण, नित नवित्त आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम इक वखाईआ। साचा नाम सर्ब सुख, आत्म अन्तर दया कमाइंदा। जन्म कर्म दा मेटे दुःख, हउमें हंगता रोग गवाइंदा। घर उपजावे अगम्मी सुख, सुख सागर रूप वटाइंदा। उजल करे हरिजन मुख, दो जहान सोभा पाइंदा। साची गोदी लए चुक्के, पुरख अकाल वेख वखाइंदा। आवण जावण पैंडा जाए मुक्क, जिस जन आपणा नाम इक समझाइंदा। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वस्त अमोलक इक वरताइंदा। आदि जुगादि नाम प्रभ एक, जुग चौकड़ी दए वड्याईआ। जन भगतां बख्शे धुर दी टेक, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। काया अन्दर करे बुध विवेक, सति सतिवादी रूप इक दरसाईआ। मेट मिटाए पूरब लेख, अगला लहिणा लहिणेदार झोली पाईआ। साचे मन्दिर करे हेत, घर घर विच वेख वखाईआ। नज़री आए नेतन नेत, निज नेत्र कर रुशनाईआ। आत्म परमात्म खेले साची खेड, बण खिलाड़ी खेल रचाईआ। हरिजन विरले देवे भेत, जिस जन आपणा पड़दा दए चुकाईआ। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल अछल अछेल, वल छल धारी आपणा भेव आपणे हथ्थ रखाईआ। साचा भेव रखे प्रभ हथ्थ, बिन भगत समझ किसे ना आईआ। देवणहारा वस्त अमोलक नाम वथ, सन्त सुहेले झोली आप भराईआ। निरगुण हो चलाए रथ, सरगुण साचा मार्ग दए समझाईआ। गुरमुख विरले खोल्हे अक्ख, पड़दा दूई द्वैत उठाईआ। गुरसिख सज्जण देवे धुर दा हक़, जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, इक्को नाम साचे धाम दए समझाईआ। हरि का नाम साचे धाम, सो साहिब सतिगुर आप जणाईआ। जुग चौकड़ी करनहारा पूरा काम, पूरन पुरख बेपरवाहीआ। मेटणहार अन्धेरी शाम, निरगुण जोती नूर चन्द रुशनाईआ। भाग लगाए काया नगर खेड़े ग्राम, पंज तत देवे वड्याईआ। अमृत सच प्याए जाम, रस इक्को इक वखाईआ। मार्ग दस्से धुर आसान, रहबर बण बेपरवाहीआ। धर्म वखावे इक निशान, दर घर साचे रिहा झुलाईआ। साचा ढोला गाए गाण, गीत गोबिन्द इक सुणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा सोहँ रूप सर्ब जहान, आत्म परमात्म लख चुरासी जीव जंत बन्धन रिहा पाईआ। खेले खेल श्री भगवान, भगवन आपणा खेल आप रचाईआ।

जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच प्रधानगी इक कमाईआ। सच प्रधानगी नाम अपार, अपरम्पर स्वामी आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी वेखे चार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढ्ढाइंदा। भेव खुल्हाए खाणी चार, बोल सुणाए बाणी चार, लेख लिखाए वेद चार, हुक्म वरताए कुण्ट चार, दहि दिशा इक्को ढोला गाईआ। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम दए दृढ़ाईआ। साचा नाम तेरा मेरा, भगत भगवान आप जणाइंदा। सदा चाउ रहे घनेरा, खुशीआं मंगल इक सुणाइंदा। दूई द्वैत भरमी ढाहे डेरा, सञ्झ सवेरा इक्को रंग रंगाइंदा। मन मनुआ दए गेड़ा, मन का मणका आप भवाइंदा। पंज तत चुक्के झेड़ा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार आसा तृष्ना मेट मिटाइंदा। भाग लगाए काया खेड़ा, खुल्ल्हा करे अन्दर वेहड़ा, महल अटल इक्को इक सोभा पाइंदा। नज़री आए नेरन नेरा, जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा नाम वर, साची वस्त आप वरताइंदा। नाम वस्त अगम्म अथाह, सो सतिगुर आप वरताईआ। हँ ब्रह्म दए समझा, सोहँ रूप इक रखाईआ। एका दूआ वेस वटा, दूआ एका अंक ना कोए बणाईआ। ज़ीरो सिफ़रा नूरी नूर खुदा, ख़ालक ख़लक दए वड्याईआ। लाशरीक बेपरवाह, बेऐब भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नाम साचा कलमा सच कलाम बण अमाम आप दृढ़ाईआ। सच अमाम परवरदिगार, ज़ाहर ज़हूर खेल खलाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा यार, लख चुरासी घट घट वेख वखाईआ। साचा काअबा कर तैयार, साढे तिन्न हथ्थ दए वड्याईआ। साचा नाअरा बोल जैकार, हक़ हकीकत दए सुणाईआ। सच तौफ़ीक परवरदिगार, मेहरवान इक दृढ़ाईआ। एका नाम होए प्रधान, जुग चौकड़ी सिफ्ती नाम लए प्रगटाईआ। जिस साहिब सतिगुर साचा कलमा देवे आण, सो मुरीद मुर्शद सोहँ ढोला इक्को राग अल्हाईआ। भाग लग्गे काया बंक मकान, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। धर्म झुल्ले इक निशान, सति सतिवादी आप उठाईआ। लेखा चुक्के गोपी काहन, सीआपत इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन आत्म अन्तर देवे शब्द ज्ञान, साचे दर करे परवान, पल्लू आपणे नाल बंधाईआ। आदि जुगादी सोहँ रूप, निरगुण निरगुण आप जणाइंदा। आत्म परमात्म सति सरूप, सति सतिवादी खेल खलाइंदा। लख चुरासी वसे हर घट कूट, घर घर डेरा आप लगाइंदा। परब्रह्म दा इक्को पूत, शब्द दुलारा खेल वखाइंदा। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा नाम वर, अक्खर वक्खर वक्खर अक्खर इक्को इक समझाइंदा। साचा अक्खर गुरमुख दात, हरि सतिगुर आप वरताईआ। जगत मेट अन्धेरी रात, साचा चन्द करे रुशनाईआ। बोध अगाधी दस्से गाथ, साचे नाम दए वड्याईआ। मेट मिटाए अन्धेरी रात, साचा

चन्द नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बातन बात, बेपरवाह आपणा हुक्म आप वरताईआ। हुक्मे अन्दर शब्द मृदंग, सो सतिगुर आप वजाइंदा। हुक्मे अन्दर कोट ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड आपणा खेल वखाइंदा। हुक्मे अन्दर गा छन्द, गीत गोबिन्द आप अलाइंदा। हुक्मे अन्दर सच अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाइंदा। हुक्मे अन्दर गुरमुख गुरसिख बेड़ा देवे बन्न, मेहरवान मेहर नज़र उठाइंदा। हुक्मे अन्दर देवे नाम धन, सच वस्त अमोलक आप वरताइंदा। हुक्मे अन्दर लेखे लाए जननी जन, हरिजन आपणा रंग रंगाइंदा। हुक्मे अन्दर राग सुणाए कन्न, अनहद नादी नाद वजाइंदा। हुक्मे अन्दर भाग लगाए काया पंज तत तन, आत्म परमात्म भेव चुकाइंदा। हुक्मे अन्दर मन हँकारी देवे डंन, डंका शब्द नाम वजाइंदा। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हुक्मे अन्दर एका नाम आप वरताइंदा। हुक्मे अन्दर उपजावे नाम, नाम निधान दए समझाईआ। हुक्मे अन्दर देवे पैग़ाम, पीर पैगम्बर रिहा पढ़ाईआ। हुक्मे अन्दर करे सलाम, सजदा सीस जगदीश झुकाईआ। हुक्मे अन्दर दए पैग़ाम, राग सच्चा इक अलाईआ। हुक्मे अन्दर मिले आण, आप आपणा हुक्म मनाईआ। कर खेल श्री भगवान, भगवन आपणी धार चलाईआ। हरिजन देवे सच ज्ञान, साची सिख्या इक पढ़ाईआ। धुर दा शब्द साचा बोला विच जहान, सोहँ सति सरूप समाईआ। बिन चौथे घर गुरमुख मूल ना पाण, पद चौथा सतिगुर आपणी मेहर नज़र जणाईआ। जिस गृह आत्म परमात्म परमात्म आत्म मिले आण, तिस घर वज्जे सच वधाईआ। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, इक्को मन्त्र अन्तर अन्तर रिहा समझाईआ।

✪ २० अस्सू २०२० बिक्रमी गुरदयाल सिँघ दे गृह रामूं वाला ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सच्च संदेसा धुर फ़रमान, हरि करता आप जणाइंदा। जुग चौकड़ी नाम ज्ञान, बोध अगाधा शब्द दृढ़ाइंदा। लेखा जाण जीव जहान, जीवण जुगत सर्ब समझाइंदा। गुर अवतारां देवे दान, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। धर्म वखाए इक निशान, सति सतिवादी आप झुलाइंदा। साचा मन्दिर गृह मकान, घर इक्को इक सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नाम निधान इक्को इक वरताइंदा। साचा नाम सतिगुर मीत, सो पुरख निरँजण आप वरताईआ। जुग चौकड़ी धुर दी रीत, लोकमात दए समझाईआ। आत्म परमात्म साचा गीत, साची करे इक पढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया लए जीत, मन वासना डेरा ढाहीआ। धाम वखाए इक अनडीठ, जिस घर वसे बेपरवाहीआ। लेखा चुक्के

मन्दिर मसीत, काया काअबा दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, तिस भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। सतिगुर पूरा दाता दातार, दयावान वड्डी वड्याईआ। सन्त सुहेले करे प्यार, भगत भगवान लए जगाईआ । निज नेत्र अक्ख दए उग्घाड़, दूई द्वैती पड़दा लाहीआ। अमृत आत्म जाम दए प्याल, निझर धारा मुख चुआईआ। दीपक जोती देवे बाल, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। भाग लगाए काया मन्दिर सच्ची धर्मसाल, दर देवे इक वड्याईआ। लेखा जाणे शाह कंगाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वस्त अमोलक आप वरताईआ। वस्त अमोलक देवे हथ्थ, निरगुण निरवैर दया कमाइंदा । खेले खेल पुरख समरथ, भेव अभेदा आप जणाइंदा। निरवैर हो चलाए रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। शब्द जणाए अकथना अकथ, रसना जिह्वा कह कह अन्त कोए ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नाम निधान इक्को इक दरसाइंदा । सतिगुर पूरा साहिब सुल्तान, हरि वड्डा वड वड्याईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी देवणहारा ब्रह्म ज्ञान, साची विद्या इक समझाईआ । भगत भगवान कर परवान, धुर फ़रमाना दए जणाईआ। साचे सन्तां बख्शे चरण ध्यान, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी बूझ बुझाईआ । गुरमुख वेखे चतुर सुघड़ सुजान, लख चुरासी विच्चों खोज खोजाईआ। गुरसिखां काया मन्दिर अन्दर मिले आण, बाहरों नज़र किसे ना आईआ। जुग चौकड़ी खेले खेल महान, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। कलयुग अन्त हो प्रधान, नाम प्रधानगी इक कमाईआ। शब्द गुरू नौजवान, सूरबीर इक अख्वाईआ। पावे सार दो जहान, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड खोज खोजाईआ। सन्त सुहेले गुर चेले लए पहचान, अन्तर आत्म परमात्म बूझ बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि का नाम इक्को इक दृढ़ाईआ। हरि का नाम इक अगम्म, बोध अगाधा आप जणाइंदा। ना मरे ना पए जम्म, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताइंदा। निरवैर हो के बेड़ा देवे बन्ह, खेवट खेटा आपणा रूप वटाइंदा। साचा राग सुणाए कन्न, धुर दी बाणी आप अलाइंदा। मणका फेरे मनुआ मन, मन वासना मेट मिटाइंदा । भाग लगाए काया तन, काया माटी कंचन रूप वटाइंदा। भाग लगाए साचा छपरी छन्न, जिस गृह आपणा डेरा लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर प्रकाश बिन सूरज चन्न, जोती नूर डगमगाइंदा। जोती नूर दीपक प्रकाश, घर मन्दिर करे रुशनाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता भेव चुकाईआ। गृह मन्दिर साचे मण्डल पावे रास, सुरती शब्दी गोपी काहन नचाईआ। गुरमुखां पूरी करे आस, जगत तृष्ना मेट मिटाईआ। जन्म जन्म दी पूरी करे ख्वाहिश, ख़ालस आपणा दरस वखाईआ। हरिजन हरिभगत होवे ना कदे निरास, निरास्ता विच

कदे ना आईआ। सतिगुर स्वामी सदा सदा सद वसे पास, निज घर बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा नाम वर, वस्त धुर दी इक वरताईआ। धुर दी वस्त नाम निधान, जन भगतां झोली पाइंदा। बिन पढ़यां देवे ज्ञान, अन्तर आत्म बूझ बुझाइंदा। जगत निमाणयां देवे माण, फड़ बांहों गले लगाइंदा। काया मन्दिर वखाए सच मकान, हरि मन्दिर रूप वटाइंदा। धर्म झुलाए इक निशान, दर घर साचे सोभा पाइंदा। दीपक जोत जगे महान, तेल बाती नज़र ना कोए आइंदा। जिस जन उपर किरपा करे श्री भगवान, मेहरवान मेहर नज़र उठाइंदा। सो गुरमुख जुग जन्म दा विछड़या मिले आण, मिलणी हरि जगदीश इक्को घर वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच फ़रमान, अन्तष्करन सब दा वेख वखाइंदा।

✪२० अस्सू २०२० बिक्रमी महिन्दर कौर दे गृह चड़िक ज़िला फिरोज़पुर ✪

सतिगुर पूरा कढ्ढे खोट, गुर शब्द वड्डी वड्याईआ। नाम नगारे लाए चोट, तन रबाब सतार वजाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। पंज तत कोई सोच ना सके सोच, काम क्रोध लोभ मोह हँकार डेरा ढाहीआ। नेत्र खोल्हे लोचण लोच, निज नैण करे रुशनाईआ। धर्म दुआर वखाए साचा कोट, काया बंक सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, तिस कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। काया खोट जगत विकार, माया ममता वेख वखाईआ। वेखणहारा गुर करतार, हर घट बैठा डेरा लाईआ। लख चुरासी पावे सार, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित्त सन्त सुहेले लए उभार, गुर चेले वेख वखाईआ। वस्त अमोलक देवे नाम भण्डार, दर घर साचे आप वरताईआ। कूड़ी क्रिया तोड़ गढ़ हँकार, हउमें हंगता दए मिटाईआ। आसा तृष्ना देवे मार, माया ममता मोह चुकाईआ। साचा बख्शे शब्द प्यार, सुरत सवाणी दए उठाईआ। आत्म परमात्म दे आधार, परम पुरख होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, तिस कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। काया खोट निकले बाहर, पंज तत अन्दर रहिण ना पाईआ। साहिब सतिगुर करे प्यार, सच प्रीती इक रखाईआ। दूई द्वैती देवे मार, शरअ शरायती डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे इक नाम वर, तिस मन्दिर अन्दर करे सफ़ाईआ। काया मन्दिर अन्दर करे साफ़, दुरमति मैल आप धवाईआ। कोट जन्म दे कर्म करे मुआफ़, निहकर्मी आपणा कर्म कमाईआ। जो जन जपे आत्म परमात्म सच्चा जाप, बिन रसना जिह्वा दए समझाईआ।

त्रैगुण मेटे कूड़ा ताप, अग्नी तत ना लागे राईआ। सच प्रीती जोड़े नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। नाम चढ़ाए साचे राथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। सच सरोवर वखाए इक्को ताट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाईआ। कूड़ी क्रिया होवे दूर, घर घर विच रहिण ना पाईआ। जिस स्वामी मिले हाज़र हज़ूर, हज़रत आपणा दरस दिखाईआ। साचा बख्शे जोती नूर, नूरो नूर करे रुशनाईआ। शब्द सुणाए धुर दी तूर, अनरागी राग अलाईआ। नाता तोड़े कूड़ी क्रिया कूड़, जूठ झूठ डेरा ढाहीआ। अन्तर आत्म बख्शे इक सरूर, सच्चा जाम इक्को इक प्याईआ। नज़री आए नेरन नेरा दुराडा दूर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कूड़ी क्रिया जुग जुग मेट मिटाईआ। कूड़ी क्रिया देवे कढ्ढ, तन माटी साफ़ कराईआ। पवित पुनीत करे हड्ड, मास नाड़ी सोभा पाईआ। भेव खुल्हाए विश्व यद्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। काया अन्दर दुरमति मैल देवे धो, सतिगुर पूरे हथ्थ वड्याईआ । निर्मल प्रकाश कर लो, दीआ बाती इक वखाईआ। नाम जणाए साचा आपणा सो, हँ ब्रह्म भेव खुल्हाईआ। आत्म परमात्म आपे हो, घर साचे सोभा पाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म जाए छोह, साचा मेला सहिज सुभाईआ। धुर दा ढोआ वस्त अमोलक देवे ढो, नाम भण्डारा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन वखाए साचा घर, तिस काया कूड़ रहिण ना पाईआ। काया कूड़ तुटे नाता, सच सुच इक्को नज़री आईआ। मिले मेल पुरख बिधाता, बिध आपणी दए समझाईआ। नाम सुणाए बोध अगाधा, शब्द अगम्मी राग अल्हाईआ। उत्तम करे हरिजन ज़ाता, ज़ात पात ना वंड वंडाईआ। मेट मिटाए अन्धेरी राता, जोती नूर चन्द चमकाईआ। इक सुणाए पूजा पाठा, मन्त्र इक्को इक दृढ़ाईआ। इक्को मेल पुरख समराथा, समरथ पुरख दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवणहारा नाम वर, काया दुःख दलिद्दर दूर कराईआ। दुःख दलिद्दर दूर जाए नट्ठ, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। जिस सिर उपर सतिगुर पूरा रखे हथ्थ, मेहर नज़र इक उठाईआ। वस्त अमोलक काया अन्दर देवे घत्त, घर घर विच आप टिकाईआ। बहत्तर नाड़ ना उबले रत्त, रत्ती रत ना कोए सुकाईआ। बिन पढ़यां देवे ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या इक जणाईआ। आत्म परमात्म होवे वस, नाता निरगुण निरगुण नाल रखाईआ। निज नेत्र खोल्हे अक्ख, आख़र आपणा मेल मिलाईआ। साचा मार्ग देवे दस्स, रहबर बण के नूर ख़ुदाईआ। साफ़ करे काया मन्दिर सच्चा हट्ट, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेख मिटाए दुःख कलेश, किरपा कर नर नरेश, नर हरि आपणा रंग रंगाईआ । गोबिन्द लेखा लेख अपार, सिँघ आपणी भबक लगाईआ। धुर दा लेखा कोई समझ ना सके

विच संसार, मन मति बुध रही कुरलाईआ। शब्द संदेसा दे के गया अन्तिम वार, दो जहानां आप सुणाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां कर के गया ख़बरदार, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। कातब बण के लेखा लिख्या इक लिखार, मेल मिलाया कलम शाहीआ। कलयुग आयू वेख वखाए लख चार, बत्ती हज़ार भेव अभेदा आपणे हथ्थ रखाईआ। कर्म कांड दी मारे मार, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। कलयुग कर्म कुकर्म ख़ातर बाले नीहां हेठां दित्ते स्वाल, कूड़ी क्रिया जड़्ह उखड़ाईआ। सच संदेसा दे के गया इक्को वार, इक्को ढय्या पन्ध मुकाईआ। साचा सईया प्रगट होवे एकँकार, अक्ल कल बेपरवाहीआ। जोती जामा लए अवतार, ना कोई पिता ना कोई माईआ। शब्द डंका वजाए अगम्म अपार, अलख अगोचर आपणा हुक्म वरताईआ। सम्बल वसे धाम न्यार, साचे मन्दिर सोभा पाईआ। कल कल्की लै अवतार, नर नरायण आपणा खेल रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वड दाता बेपरवाहीआ। गोबिन्द लेखा खेल अपारा, अपरम्पर दए समझाईआ। कलयुग अन्तिम होवे धुँदूकारा, चारौं कुण्ट अन्धेरा छाईआ। सृष्ट सबाई करे हाहाकारा, धीरज धीर जत सति नज़र कोए ना आईआ। साध सन्त कूड़ी क्रिया करन बिवहारा, माया ममता होए हल्काईआ। धीआं भैणां करन वणज व्यपारा, पिता पूत साचा संग ना कोए रखाईआ। गुर का शब्द करे ना कोई प्यारा, मनमति चले जगत लोकाईआ। दीन मज़्हब उच्ची कूके रोवे ज़ारो ज़ारा, ज़ात पात नेत्र नैणां नीर वहाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ सच करे ना कोए प्यारा, जगत सियासत बैठे डेरा लाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप दोए जोड़ करे निमस्कारा, प्रभ अग्गे वास्ता पाईआ। दर मंगण तेई अवतारा, भगत अठारां सीस झुकाईआ। विष्नूं कहे मेरा ख़ाली दिसे भण्डारा, साची वस्त नज़र कोए ना आईआ। ब्रह्मा कहे मेरा ब्रह्म होया अँध्यारा, जोती जोत ना कोए रुशनाईआ। शंकर कहे मेरी त्रिशूल डिगी मूँह दे भारा, जुलम सके ना कोए मिटाईआ। पुरख अकाल वेखे वेखणहारा, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। सच संदेसा दे के आया गोबिन्द सुत दुलारा, सृष्ट सबाई बोध ज्ञान दृढ़ाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवान लए अवतारा, निहकलंक नाउँ रखाईआ। जोती जोत करे खेल अपर अपारा, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद जिस नूं सजदा दोए जोड़ करदे गए निमस्कारा, कलमा कायनात पढ़ाईआ। सो प्रगट होवे वड अमाम बेऐब सांझा यारा, लोकमात फेरा पाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान नेत्र नीर वहाए उच्ची कूक करे पुकारा, बौहड़ी बौहड़ी दरोही दरोही रही सुणाईआ। पारब्रह्म प्रभ आपणा आप वेख संसारा, सृष्ट सबाई चारों कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। आत्म परमात्म करे ना कोई प्यारा, घर विच घर बंद कवाड़ी कुण्डा कोए ना लाहीआ। निरगुण नूर नज़र ना आए जोत उज्यारा, दीपक सच ना कोए रुशनाईआ। बिन गुर गोबिन्द दिसे ना

७६४

कोए सहारा, शब्द गोबिन्द रूप वटाईआ। हर घट अन्दर वेखणहारा, सो गोबिन्द लख चुरासी रिहा समाईआ। जुग चौकड़ी मेटणहारा, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग देवे पन्ध मुकाईआ। चौदां लोक वेखे अखाड़ा, चौदां तबक नेत्र नैण दए खुल्हाईआ। त्रैगुण माया अग्नी लग्गी तत्ती हाढ़ा, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। गोबिन्द सूरा धुर दा लाड़ा, सच संदेसा इक्को वार गया सुणाईआ। कल कल्की पुरख अकाल लए अवतारा, वड अवतारी आपणा फेरा पाईआ। चार वरनां देवे इक सहारा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश बचया कोए रहिण ना पाईआ। साचा मार्ग दस्से इक अपारा, पूजा पुरख अकाल इक कराईआ। दूजा इष्ट ना कोई मन्ने जीव गंवारा, मन मति बुध इक्को गुण दरसाईआ। महल अटल करे उज्यारा, जोती नूर नूर रुशनाईआ। जोत शब्द पुरख अकाल निरगुण सरूप निहकलंक नरायण नर अवतारा, पंज तत कोई निहकलंक ना मात अख्वाईआ।

पंचम पातशाह सब दा मीत, गुर शब्द रूप जणाईआ। हर घट बैठा रहे अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। जिस दा सिमरन मन्दिर मसीत, शिवदुआले मट्ठ रहे जस गाईआ। सो सतिगुर आदि जुगादि जुग चौकड़ी रहे ठीक, मरन जम्मण विच कदे ना आईआ। लख चुरासी दस्से मार्ग लाशरीक, शिरकत रूप ना कोए वटाईआ। जिस काया मन्दिर अन्दर पंचम गुरू अर्जण आया नज़दीक, घर बहि बहि खुशी वखाईआ। सो गुरमुख सब नाल करे इक प्रीत, द्वैत दूई ना कोए रखाईआ। मिल सतिगुर होवे भय भीत, भीतर आपणा पड़दा लाहीआ। पूरे सतिगुर दी इक्को रीत, निरगुण शब्द सतिगुर दूजा होर ना कोए मनाईआ। पंचम पातशाह कवण रंग, कवण रंग समाईआ। कवण सेज कवण पलँघ, कवण मन्दिर बैठा डेरा लाईआ। कवण नाम कवण मृदंग, कवण राग रिहा अल्हाईआ। कवण गीत कवण छन्द, कवण भेव चुकाईआ। कवण सुरत कवण अनन्द, कवण निजानंद वखाईआ। कवण प्रकाश कवण चन्द, कवण सूर्या करे रुशनाईआ । कवण ब्रह्मण्ड कवण खण्ड, कवण जेरज अंड वेख वखाईआ। कवण रूप ढाहे भरमां कंध, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। कवण सेजा सुत्ता सदा चित अनन्द, सति सरूप आपणा आसण लाईआ। धुर दी कोई ना दिसे चिट्ठी, लेखा हरि ना कोए जणाईआ। प्रभ दी खेल सदा अनडिठी, लिखण पढ़न विच ना आईआ। गुरमुख विरले आपणी क्रिया लोक जिती, सिधी मिली जोत रुशनाईआ। बिन हरि नामे गल्ल जगत फिकी, साचा रस नज़र ना आईआ। कवण धार सतिगुर नानक लेख लिखी, अगम्म अथाह बोध अगाध करे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उह चिट्ठी मंग मंगाईआ। सतिगुर नानक चिट्ठी दयो वखाल, जिस उपर लेख लिखाईआ। दीन दयाल साहिब सतिगुर सदा कृपाल, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। गुरमुख गुरसिख सज्जण लाल, लालन आपणा रंग रंगाईआ। जिस अक्खर दी दो जहान करदे फिरदे भाल, सो निष्अक्खर

साचे घर डेरा लाईआ। गुरमुख गुरमुख इक स्वाल, सनमुख सनमुख भेव चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मंगणहारा उह पाती, जो लिखी जाए बिन कलम दवाती, शांती पुंज सतिगुर नानक आपणे कोल रखाईआ।

✪ २० अस्सू २०२० बिक्रमी करतार सिँघ दे गृह पिण्ड चड़िक ज़िला फ़िरोज़पुर ✪

सो पुरख निरँजण साहिब समराथ, सचखण्ड दरबार लगाईआ। निर्मल नूर जोत कर प्रकाश, दीआ दीपक इक्को डगमगाईआ। खेले खेल पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता आपणी कार कमाईआ। जुग चौकड़ी पावणहारा रास, मण्डल मण्डप वेख वखाईआ। सुणावणहारा शब्द अनादी बोध अगाध, धुर दा रागी राग अल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड दुआर दए वड्याईआ। सचखण्ड दुआर पुरख समरथ, हुक्मी हुक्म इक वरताईआ। गुर अवतारां कर इकट्ठ, पीर पैगम्बरां नाल मिलाईआ। धुर फ़रमाना रिहा दस्स, नाम संदेसा इक सुणाईआ। कलयुग वेखो चारों कुण्ट अन्धेरा मस्स, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। मन वासना जीव जंत रहे नट्ठ, सांतक सति सरूप नज़र कोए ना आईआ। साधां सन्तां तुटा धीरज जत, सति सन्तोख रूप ना कोए वटाईआ। दीन मज़्ह्ब ज़ात पात शरीअत प्या वट्ट, झगड़ा सके ना कोए मुकाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप कूड़ कुड़यार होया हट्ट, नाम वणज ना कोए कराईआ। त्रैगुण माया अग्नी तपया मट्ठ, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। सति सन्तोख ना पंज तत्त, काम क्रोध लोभ मोह हँकार होया हल्काईआ। नाड़ बहत्तर उबली रत्त, तिन्न सौ सट्ठ हाडी रही कुरलाईआ। काया मन्दिर अन्दर हरि का सुणे कोई ना जस, रसना जिह्वा पढ़ पढ़ थक्की सर्ब लोकाईआ। घर सरोवर सार ना पाए कोई साचे तट, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती फिर फिर थक्के पांधी राहीआ। पुरख अकाल दीन दयाल चरण कँवल ना कोई नत, नाता जुड़या जगत लोकाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म सुरती शब्द मिल के कोई ना गाए जस, साचा रस हथ्थ किसे ना आईआ। काम वासना सारे होए वस, चार कुण्ट दहि दिशा भज्जण वाहो दाहीआ। शब्द डोरी कोई ना पाए नथ्थ, मनुआ बंध ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण निरगुण लेखा रिहा वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करो ध्यान, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। सृष्ट सबाई जो दस के आए ज्ञान, शास्त्र सिमरत वेद पुराण उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। चारे खाणी दित्ता हुक्म फ़रमान, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज बचया कोई नज़र ना आइंदा। चारे बाणी बोल ज़बान, परा पसन्ती मद्धम बैखरी राग सुणाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नव नौ चार करके आए खेल महान, ख़ालक ख़लक रूप

वटाइंदा। पीर पैगम्बर कायनात वेखो, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा भेव आप समझाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर कर निमस्कार, पुरख अकाल सीस झुकाईआ। तेरा खेल सिरजणहार, आदि जुगादि तेरी वड्याईआ। जुग चौकड़ी हुक्मरान, धुर संदेसा तेरा इक्को भाईआ। नित नवित्त तेरा संदेसा दे के आए जीव जहान, जीवण जुगत जगत जणाईआ। आत्म परमात्म दस्स के आए ज्ञान, शब्द विचोला रूप वखाईआ। भेव खुलाउँदे आए गोपी काहन, सीता राम रूप वटाईआ। वखाउँदे आए सच मकान, गृह मन्दिर कर रुशनाईआ। जणाउँदे आए धुर पैग़ाम, कलमा नबी रसूल सुणाईआ। तेरा लेखा दस्सदे रहे सच अमाम, बेनज़ीर तेरी तस्वीर सच जणाईआ। कलयुग अन्तिम माणस मानुख साबत रखे ना कोए ईमान, धीरज रूप नज़र कोए ना आईआ। घर घर वड़या दिसे पंज शैतान, नाल शरअ करे लड़ाईआ। चारों कुण्ट झूठ तूफ़ान, रसना जिह्वा रही सुणाईआ। बत्ती दन्द करन कल्याण, कलमा हक़ ना कोए जणाईआ। सच धर्म ना दिसे कोए निशान, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ रहे कुरलाईआ। मुल्लां शेख़ मसायक साचा मसला कोए ना गाण, रसना जिह्वा उच्ची कूक कूक आपणा भेव रहे जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा साचा घर, बिन नैणां रिहा जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर खोल्ह अक्ख, कलयुग अन्तिम नव नौ चार वेख वखाईआ। लख चुरासी भाण्डे सक्ख, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। जो मार्ग निरगुण निरवैर आए दस्स, लोकमात बूझ बुझाईआ। अमृत आत्म दे के आए रस, निझर झिरना इक झिराईआ। साचा नूर कर के आए प्रकाश, घर घर दीवा बत्ती इक टिकाईआ। प्रभ मिलण दी दस्स के आए आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। बिन साहिब सतिगुर दीन दयाल कोई ना करे बंद ख़लास, बंदीख़ाना ना कोए तुड़ाईआ। रसना जिह्वा गाओ पवण स्वास, सिफ्ती सिफ्त सिफ्त सालाहीआ। हुक्म वरते पृथ्मी आकाश, गगन गगनंतर मण्डल मण्डप लेखा दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खुल्हावणहारा साचा दर, गुर अवतार पीर पैगम्बर शब्द इशारा इक जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कलयुग वेख हाल, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। तेरा खेल वड निरँकार, बेअन्त बेपरवाहीआ। सृष्ट सबाई होई ख्वार, चारों कुण्ट रही कुरलाईआ। साचा दिसे ना कोए प्यार, प्रेम प्रीती ना कोए लगाईआ। घर घर वड़या दिसे हँकार, हउमें गढ़ ना कोए तुड़ाईआ। कलयुग जीव रूप धर नार विभचार, कुकर्मी कर्म रहे कमाईआ। गुर का शब्द सके ना कोए विचार, खोजत खोजत भेव कोए ना पाईआ। नव नौ दिसे धूंआँधार, साचा चन्द ना कोए रुशनाईआ। भरमे भुला सर्ब संसार, माया घर घर डेरा लाईआ। जगत काया होई ख्वार, पंज तत मिले ना कोए वड्याईआ। सुरती सके ना कोए संभाल, शब्दी मेल ना कोए मिलाईआ।

लेखा चुक्के ना शाह कंगाल, ऊँच नीच डेरा कोई ना ढाहीआ। साची दिसे ना किसे धर्मसाल, धर्म दुआरा काया मन्दिर नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे साचा वर, तेरे अग्गे इक अरज़ोईआ। तेरे अग्गे अरज़ोई सच्ची अरदास, दोए वास्ता पाईआ । पुरख अकाल तेरा खेल तमाश, परवरदिगार बेनज़ीर समझ कोए ना पाईआ। जुग चौकड़ी तेरी निरगुण सरगुण रख के बैठे आस, आसा आसा विच्चों प्रगटाईआ। निर्मल जोत कर प्रकाश, जोती नूर नूर रुशनाईआ। जन भगतां हिरदे अन्दर कर वास, वसल आपणा दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर सब दा लेखा रिहा जणाईआ। गुर अवतार वेखण नैण, लोकमात ध्यान लगाईआ। रसना जिह्वा कोई ना सके कहिण, कलयुग कुकर्म मिली वड्याईआ। साध सन्त धीआं भैणां तक्कण डुब्बे डुंघे वहण, फड़ बांहों पार ना कोए कराईआ। नाता नज़र ना आवे साक सज्जण सैण, पिता पुत्त करे लड़ाईआ। चारों कुण्ट कूड़ी क्रिया मन वासना फिरे डैण, भज्जी चारे कुण्ट वाहो दाहीआ। गुरमुख विरले सन्त सुहेले हरि का नाउँ लुक लुक लैण, कलयुग क्रिया कोलों बैठे मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उठ वेख आपणा घर, तेरा ब्रह्मण्ड रिहा कुरलाईआ। पारब्रह्म प्रभ वेख ब्रह्मण्ड, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। विष्नूं मंगे इक्को मंग, विश्व आपणी धार दे जणाईआ। ब्रह्मा कहे पारब्रह्म प्रभ चाढ़ रंग, रंग रंगीला इक्को रूप नज़री आईआ। शंकर कहे मेरा त्रिसूल बणा चण्ड प्रचण्ड, कूड़ी क्रिया देवां ढाहीआ। त्रैगुण माया कहे मेरा वेख भेख पखण्ड, मैं चारों कुण्ट नचाईआ। पंज तत कहे मेरा जूठ झूठ जुड़या संग, सच सुच नज़र कोए ना आईआ। निरगुण कहे मैं वजावां मृदंग, कलयुग डंका हथ्थ उठाईआ। बिन हरि नामे कीते सारे नंग, गुर शब्द ओढण हथ्थ किसे ना आईआ। घर घर अन्दर दूई द्वैत रखाई कंध, भाण्डा भरम ना कोए भंनाईआ। सुरत सवाणी फिरे दुहागण रंड, शब्दी कन्त सेज ना कोए हंढाईआ। घर दीपक जोत ना चढ़े चन्द, अज्ञान अन्धेर ना कोए मिटाईआ। सतिगुरू स्वामी किसे ना दिसे संग, सारे पल्लू गए छुडाईआ। करे खेल सूरा सरबँग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सच दुआरा वेखो लँघ, साहिब सुल्तान इक्को घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक अल्हाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आखण प्रभू जा, लोकमात वेस वटाईआ। निरगुण हो के बण मलाह, सरगुण बेड़ा दे तराईआ। धुर दा शब्द दे सलाह, साची सिख्या कर पढ़ाईआ। सर्ब जीआं जणाउणा इक्को नाँ, नाउँ निरँकारा आप दरसाईआ। साचा राम देणा वखा, हर घट रमया बेपरवाहीआ। साचा काहन देणा मिला, नाम बंसुरी नाद धुन शनवाईआ। साचा पैगम्बर

७६७
१५

देणा वखा, मुख नक़ाब नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। कलयुग अन्तिम जा के वेख, प्रभ लोकमात तेरी वड्याईआ। नौ खण्ड पृथमी वध्या भेख, कोटन कोटी बैठे रूप वटाईआ। तेरा साचा देवे ना कोई संदेस, धुर दी धार ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तुध बिन दूजा रहिण कोए ना पाईआ। पुरख अकाल कहे मैं जावांगा। निरगुण निरवैर रूप वटावांगा। कलयुग कूड़ा कहर मेट मिटावांगा। सतिजुग साची करके मेहर, सति सन्तोख इक वरतावांगा। कूड़ी क्रिया करां ढेर, अन्तिम ख़ाकी ख़ाक मिलावांगा। इक्को रंग रंगावां सञ्झ सवेर, जोती नूर इक चमकावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बोध अगाधा भेव खुल्ह्हावांगा। बोध अगाधा भेव खुल्ह्हावांगा। लोकमात वेस वटावांगा। नर नरेश इक हो जावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव महेष नाल मिलावांगा। जा के वसां साचे देस, साचे मन्दिर सोभा पावांगा। धुर दा देवां इक संदेस, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ावांगा। निरगुण सरगुण खेलां खेड, बण खिलाड़ी खेड रचावांगा। जन भगतां दयां आपणा भेत, लख चुरासी भरम भुलावांगा। साचे सन्तां करां हेत, हितकारी आपणा रूप वटावांगा। गुरमुखां नज़री आवां नेतन नेत, निज घर आपणी ताड़ी लावांगा। गुरसिखां रूप वखावां चेतन चेत, चितवित ठगौरी मेट मिटावांगा। कूड़ी क्रिया मेट के रेख, सतिजुग साचा मार्ग लावांगा। पुरख अकाल दीन दयाल सारे करन इक आदेस, सजदा सब नूं इक समझावांगा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अग्गे किसे दी चले ना कोई पेश, गढ़ हँकारी तोड़ तुड़ावांगा। जो वेद व्यासे लिख्या लेख, पूत सपूता ब्रह्मण गौड़ा उच्चे टिल्ले पर्बत सोभा पावांगा। जिस दी ईसा रख के गया टेक, सो नूरी इस्म आअज़म इक जणावांगा। जिस दी नानक गोबिन्द लेखणी लिख के गए लेख, सो लहिणा अन्तिम पूर करावांगा। प्रगट हो के सम्बल देस, देस दसन्तर खोज खोजावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे आखण, वाहवा प्रभू तेरी वड्याईआ। जुग चौकड़ी तेरा खेल तमाशन, नित नवित्त तेरी धार निरगुण सरगुण करे कुड़माईआ। लोक परलोक तेरा ढोला गासण, ब्रह्मण्ड खण्ड तेरा नाम ध्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरे नाम वज्जे वधाईआ। कलयुग अन्तिम दया कमावांगा। साचा नाम इक प्रगटावांगा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश चार वरन आप समझावांगा। अठारां बरन दे संदेस, सच स्नेहड़ा इक उपजावांगा। आत्म परमात्म करना हेत, साची सिख्या इक समझावांगा। अन्दर वड़ के आपणे घर दा लओ भेत, गृह मन्दिर फोल फोलावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा

वर, साचा हुक्म इक वरतावांगा। साचा हुक्म प्रभू वरताएगा। दो जहानां आप सुणाएगा। शब्द निशान इक उठाएगा। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ इक्को आण जणाएगा। धुर दी बाणी देवे साची सो, पुरख अकाल इक्को सोभा पाएगा। पारब्रह्म ब्रह्म घर साचे जाए छोह, साचा मेला आप मिलाएगा। दुरमति मैल देवे धो, निर्मल रूप इक दरसाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर सब दा खेल वेख वखाएगा। तेई अवतार पए हस्स, सन्त कुमार रिहा जणाईआ। बराह कहे मैं तेरा यस, यगै पुरुष कहे मैं नित नवित्त ध्याईआ। हाव ग़रीब कहे मोहे तेरा रस, नर नरायण तेरी सरनाईआ। कपल मुन प्रभ मार्ग दस्स, दर बैठा सोभा पाईआ। रिखप देवे साचा जस, पृथू भेव अभेद खुल्ह्हाईआ। मत्तस वखाए ख़ाली हथ्थ, कछप मिन्दिरा सीस उठाईआ। धनंतर देवे साची वथ, मोहणी रूप अनूप धराईआ। हँसा हो के गावे जस, बावन बल राजा वेख वखाईआ। नरसिँघ हो के ध्रू प्रहलाद लए रख, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। हरीहरि खेल करे समरथ, गज तन्दूआ तार दए कटाईआ। ध्रू देके इक्को मति, हरि नरायण बूझ बुझाईआ। कर खेल पुरख समरथ, जुग चौकड़ी धार चलाईआ। परस राम जाण मित गत, राम चन्द लेखा दित्ता सहिज सुभाईआ। वेद व्यासा पुराण अठारां लेख अकथ, कुँवार कन्या मिली वड्याईआ। काहना कृष्ना हो प्रगट, मुकन्द मनोहर लखमी नरायण भेव अभेद दए खुल्ह्हाईआ। अठ दस मेल साचे पत, गीता ज्ञान शब्द ध्यान चौदां लोक इक श्लोक सच्चा ढोला राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा नाम नाम बोध, हरि हर हिरदा देवे सोध, सुध रूप इक रखाईआ। तेई अवतार बोल जैकार, घर साचे ख़ुशी मनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग निभ गई तेरे नाल, नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। सिख्या दिती विच जहान, समरथ तेरी बूझ बुझाईआ। महिमां अकथ कीती कल्याण, लेखा लिख्या नाल कलम शाहीआ। निरगुण सरगुण हो के तेरा दे के आए ब्यान, शहादत शास्त्र सिमरत वेद पुराण देण गवाहीआ। योद्धा सूरबीर बली बलवान, बलधारी इक्को इक अख्वाईआ। जो वसे सचखण्ड मकान, निरगुण नूर रूप अनूप भेव कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, बेपरवाह तेरी सरनाईआ। ईसा मूसा करन पुकार, उच्ची कूक सुणाईआ। तेरा खेल अपर अपार, परवरदिगार समझ कोए ना आईआ। मुहम्मद रोवे ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। अल्ला राणी वाहो दाही फिरे नार मुटयार, चौदां तबक फेरा पाईआ। सज्जण मिल्या ना सच्चा यार, रहबर नज़र कोए ना आईआ। नव नौ चार दिसे धूंआँधार, साचा कलमा करे ना कोए पढ़ाईआ। आलम उल्मा होए बेईमान, साची शरअ ना करे कोई परवान, शरीअत बैठी डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, लोकमात वेख आपणा घर, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। नानक गोबिन्द रहे सच दस्स, पुरख अकाल तेरे हथ्थ तेरी वड्याईआ। कलयुग वेख अन्धेरा मस, चारों कुण्ट भिन्नड़ी रुत्त ना कोए सुहाईआ। आत्म परमात्म चार वरन मार्ग आए दस्स, ऊँच नीच ज़ात पात नज़र कोई ना आईआ। साचा अमृत आत्म सरोवर लओ रस, निझर झिरना इक झिराईआ। घर विच घर चढ़ के जाओ वस, मन्दिर इक्को मिले बेपरवाहीआ। जिथ्थे अट्ठे पहर दिवस रैण घड़ी पल होए पूजा पाठ, सिमरन इक्को नज़री आईआ। मेले मेल पुरख समराथ, समरथ आपणा मेला दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख आपणा घर, जीव जंत देण दुहाईआ। जीव जंत रहे रो, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। साचा नाता रिहा ना कोई मोह, मुहब्बत रूप ना कोए वटाईआ। राज राजान शाह सुल्तान ग़रीब निमाणयां रहे कोह, छुरी कूड़ी जगत चलाईआ। दुरमति मैल देवे ना कोई धो, जगत संदेसे सारे रहे गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग वेख आपणा दर, दर दरवाज़ा इक खुल्हाईआ। दर दरवाज़ा साहिब खोल्ह, तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। नाम तराज़ू साचे कंडे तोल, धड़ी वट्टा नज़र कोए ना आईआ। नव नौ चार रही डोल, अडोल नज़र कोए ना आईआ। करे पुकार धरनी धौल, धरत ख़ाली झोली रही वखाईआ। मेरे नाल कीता पूरा कर कौल, क्यों बैठा मुख भवाईआ। दुक्खां भरी गठड़ी आ के फोल, वड दाते बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेख घर, नौ दर पई लड़ाईआ। नौ दर रोवण मारन धाह, बौहड़ी बौहड़ी रहे सुणाईआ। कलयुग जीव गुर का शब्द गए भुला, मेरे अन्दर वड़ के खुशी मनाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार होया हल्का, दिवस रैण भज्जे वाहो दाहीआ। सतिगुर पूरे दा अन्दर वड़ के दर्शन सके ना कोई पा, जोती जोत ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, जिस मिलयां मिले तेरी सरनाईआ। पुरख अकाल कहे मैं दया कमावांगा। नईया कलयुग वेख वखावांगा। साचा सईया बण के आवांगा। इक्को ढय्या पन्ध मुकावांगा। धर्म राए कढ्ढे वहीआ, लेखा सब दा वेख वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी इक कमावांगा। साची करनी हरि करावेगा। निरगुण निरवैर फेरा पावेगा। जोत सरूपी भेख वटावेगा। सच श्लोक इक समझावेगा। लोक परलोक आप दृढ़ावेगा। ज़ात पात भेव तुड़ावेगा। साचा नात इक जुड़ावेगा। चार वरन भैण भ्रात बणावेगा। साची पट्टी इक जमात, अक्खर इक्को इक दृढ़ावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम वेखे घर, निरवैर हो के फेरा पावेगा। निरवैर हो के प्रभू आवेगा। त्रैगुण माया भेख चुकावेगा। पंज तत पुतला

पड़दा लाहवेगा। काया मन्दिर अन्दर साचा गुथला, नाम ख़ज़ाना आप खुल्हावेगा। नाड़ी नाड़ी विच्चों कढ्ढ के गुंझला, सुखमन टेडी बंक पार करावेगा। लेखा जाणे डूंग्घी भँवरी कुन्दरा, उच्च महल अटल इक रुशनावेगा। बजर कपाटी तोड़े जन्दरा, नाम हथौड़ा हथ्थ उठावेगा। मन मनुआ दहि दिशा ना भवे बन्दरा, मन वासना बंद करावेगा। सब दा लेखा जाणे काया अन्दरा, अन्दरे अन्दर वेख वखावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मार्ग इक लगावेगा। साचा मार्ग इक लगावेगा। चार वरन रंग चढ़ावेगा । साची सरन इक समझावेगा। तरनी तरन इक अख्वावेगा। पारब्रह्म प्रभ भेव चुकावेगा। आत्म परमात्म जोड़ जुड़ावेगा। सचखण्ड दुआरे साचा सगन मनावेगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर कर के मग्न, जोती नूर नूर रुशनावेगा। कलयुग मेटे अग्नी अग्न, अमृत मेघ इक बरसावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच प्रीती इक दरसावेगा। सच प्रीती माणस ज़ात, हरिजन हरि सतिगुर आप जणाईआ। सृष्ट सबाई बणो इक जमात, दूजी रहे ना कोए लड़ाईआ। श्री भगवान जोड़ो नात, परवरदिगार इक सरनाईआ । आत्म परमात्म देवे साथ, सगला संग निभाईआ। घर विच मेला त्रिलोकी नाथ, त्रैभवण धनी दरस दिखाईआ। चतुर्भुज सुणाए गाथ, आदि शक्ति दए वड्याईआ। विष्नूं वेखे खेल तमाश, ब्रह्मा आपणी धार समझाईआ। शंकर छड्ड के आए कैलाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सृष्ट सबाई इक्को रंग रंगाईआ। सृष्ट सबाई रंग एक, एकँकार आप रंगाइंदा। सृष्ट सबाई टेक एक, श्री भगवान इष्ट मनाइंदा। सृष्ट सबाई भेख एक, वरन बरन ना कोए रखाइंदा। सृष्ट सबाई ज्ञान एक, ध्यान इक्को इक दृढ़ाइंदा। सृष्ट सबाई खाण पीण पत एक, पंज तत काया इक्को रूप जणाइंदा। सृष्ट सबाई निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण साचा करना हेत, हितकारी हुक्म मनाइंदा। बिन साहिब सतिगुर पुरख अकाल पतिपरमेश्वर परवरदिगार काया सुञां दिसे खेत, पत डाली फुल फलवाड़ी नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सर्ब जीआं देवे इक्को वर, चारों कुण्ट इक्को नाम शनवाइंदा । साचा नाम सांझा यार, यारी यारां नाल निभाईआ। साचे भगतां करे आप प्यार, भगती रूप दए समझाईआ। साचे सन्तां दए अधार, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। साचे गुरमुखां खोल्ह कवाड़, नेत्र लोचण दए खुल्हाईआ। साचे गुरसिखां चरण कँवल बख्शे इक प्यार, प्रेम प्रीती इक्को इक बणाईआ। माणस मानुख मानुष लख चुरासी विच्चों तेरा जामा सरदार, सरदारी तेरे हथ्थ फड़ाईआ। ग़फ्लत विच भुल्ल ना जाणा हरि करतार, गूढ़ी नींद अक्ख लैणी खुल्हाईआ। सच दुआर दरगाह साची दोए जोड़ करो निमस्कार, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। किरपा कर सिरजणहार, वड दातार तेरी सरनाईआ। हउँ

७७१ १५

भिक्खक भिखारी खड़े दुआर, ख़ाली झोली रहे डाहीआ। साची वस्त विच डाल, अमृत रस इक भराईआ। सतिगुर शब्द बण दलाल, दलाली दो जहान कमाईआ। हउँ बाले नढ्ढे तेरे बाल, तूं बालक रूप सखाईआ। नाता तोड़ शाह कंगाल, ऊँच नीच आपणी गोद बहाईआ। साचा जलवा नूरी दरस दे जलाल, ज़ाहर ज़हूर कर रुशनाईआ। तेरा नूर बेमिसाल, मिसल सके ना कोए बणाईआ। दो जहान अदल कर इन्साफ़, अदालत इक्को इक लगाईआ। कोट जन्म दे कीते पाप कर मुआफ़, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ । जे भुल्ल के तेरे नाल होए गुसताख़, प्रभू आपणा गुस्सा दे गंवाईआ। आपणे वेखण दी दे सब नूं आंख, अक्ख अक्ख नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा सच घर, जिस घर तेरी वज्जे नाम वधाईआ। नाम वधाई वज्जे घर घर, लख चुरासी गीत सुणाईआ। गुरसिख अन्दर वेख वड़, अनहद नादी धुन रिहा उपजाईआ। जगत दुआर पार कर, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। किला तोड़ हँकारी गढ़, कुफ़ल आपणा लै खुल्हाईआ। साचा मन्दिर वेख चढ़, जिस गृह होए जोत रुशनाईआ। भय भउ भ्यानक चुक्के डर, भावी नेड़ कोए ना आईआ । आत्म परमात्म पल्लू लए फड़, सुरती शब्दी होए कुड़माईआ। तूं मेरा मैं तेरा इक्को ढोला लैणा पढ़, सोहँ रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन आप आपणा लेखा लेखे लओ लगाईआ। लेखे लाओ धुर दा लेखा, प्रभ सरन मिले सरनाईआ। दूई द्वैती कढ्ढो भरम भुलेखा, माया ममता मोह चुकाईआ। ओस प्रभू दा करो चेता, जो मात गर्भ देवे रिज़क सबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, चार वरन सोहे इक दर, जिस गृह वसे सच्चा माहीआ। चार वरन जग साची सिख्या, गुर शब्दी शब्द जणाईआ। नाम अमोलक धुर दी भिच्छया, घर पाओ सज्जण भाईआ। जगत जहान जाणो मिथ्या, थिर कोई रहिण ना पाईआ। वेखो धाम इक अनडिठया, जिस घर वज्जे नाम शनवाईआ। करो प्रेम साचे पितया, पिता परमेश्वर इक्को इक अख्वाईआ। करे प्यार वढ्ढुयां निक्कयां, बुढ्ढुयां बाल्यां आपणे गले लगाईआ। रसना जिह्वा बोल ना बोलो फिकया, फिक्का रस कम्म किसे ना आईआ। जो सतिगुर सच्ची सिख्या सिख्या, सो समझ विच्चों समझ लए प्रगटाईआ। मन वासना जगत पिटया, उच्ची कूके वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, सृष्ट सबाई इक्को नाता जोड़ जुड़ाईआ। इक्को नाता सबाई सृष्ट, आत्म परमात्म हरि जणाइंदा। पुरख अकाल अगम्मी इष्ट, निरगुण निरवैर आप समझाइंदा। सतिगुर पूरा लेखा चुकाए दोज़ख बहिश्त, नरक स्वर्ग दोवें पार कराइंदा। सच दुआरे लै के जाए जिस घर विच्चों आए परत, अन्तिम ओसे दर मेल मिलाइंदा। गुरमुख ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्ता ग़म ना कोए

तपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिसज्जण भगत भगवान घर साचे मेल मिलाइंदा। साचे घर मिलो जगदीश, जगदीशर इक्को नज़री आईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस दा कलमा जगत हदीस, लोकमात करे पढ़ाईआ। सो खेल खेले बीस बीस, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जिस दा हुक्म वरते इक इकीस, एका इक्की देवे पाईआ। तिस साहिब सुल्तान पुरख अकाल छत्र झुले इक्को सीस, राज राजान दूजा नज़र कोए ना आईआ। जगत वासना लए जीत, आप आपणे विच खपाईआ। साचा मार्ग धर्मदुआर सब नूं दस्से ठीक, कूड़ा ठीकर भन्न वखाईआ। हरिसंगत हरिजन हर घट प्रभू वसया वेखो चीत, निरगुण सरगुण अन्दर बैठा डेरा लाईआ। रल मिल सारे करो सच प्रीत, दुबिधा द्वैत दूई कटाकश तीर ना कोए चलाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी गुर अवतार पीर पैगम्बर देंदे गए सच हदाइत, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाईआ। पारब्रह्म पुरख अकाल परवरदिगार सब दे उते करे अनाइत, जो बैठा ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आदि जुगादी इक्को नर, जुग चौकड़ी देवे वर, जन भगत वखाए साचा घर, खुल्ला रहे हमेश दर, धुर दरवाज़ा पुरख अकाल बंद ना कदे कराईआ।

✪ २१ अस्सू २०२० बिक्रमी पक्खोवाल हरिसंगत दा अकट्ठ होया ज़िला लुधियाणा ✪

सो पुरख निरंजन शाह सुल्तान, शहिनशाह तेरी वड्याईआ। हरि पुरख निरंजन वड बलवान, बेअन्त बेपरवाह तेरा अन्त कोए ना आईआ। इक ओंकार नौजवान, मर्द मर्दान तेरी आदि जुगादि सच्ची सरनाईआ। आदि निरंजन नूर महान, जोती जाता इक्को नूर करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता वसणहारा सच मकान, दर घर साचा इक सुहाईआ। श्री भगवान खेल महान, निरगुण निरवैर आप कराईआ। पारब्रह्म प्रभ हो प्रधान, सच प्रधानगी इक जणाईआ। निरगुण सरगुण खेले खेल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, आपणी करनी आप कमाईआ। निरगुण खेल करे करतार, हरि करता वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी पावे सार, नित नवित्त वेस वटाईआ। लख चुरासी दए आधार, जीव जंत भेव खुल्लाईआ। शब्द अनादी बोल जैकार, धुर दी धार दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, वड वड्डा वड वड्याईआ। हरि वड्डा बेअन्त बेपरवाह, आदि जुगादि इक अख्वाइंदा। निरगुण सरगुण बण मलाह, बेड़ा दो जहान चलाइंदा। धुर संदेसा देवे आ, शब्द अनादी नाद अल्लाइंदा। साचा मार्ग दए समझा, धुर दी धारा आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी आपणी कार कमाइंदा।

सचखण्ड निवासी पुरख अकाल, आदि जुगादि खेल कराईआ। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, कोटन कोटि काल बिताईआ। सेवा करदे गए तेई अवतार, भगत अठारां अक्ख खुल्हाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद बोल गए जैकार, नाअरा हक़ हक़ इक जणाईआ। नानक गोबिन्द दस्स के गए सच्चा प्यार, साची रीती चार वरन जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करनेयोग, हरि करता इक अख्वाइंदा। आदि जुगादि लख चुरासी अन्दर भोगे भोग, बण संजोगी मेल मिलाइंदा। नाम सुणाए सच सलोक, धुर दा ढोला राग अल्हाइंदा। निर्मल कर प्रकाश जोत, नूर नुराना डगमगाइंदा। लेख मुकाए हरख़ सोग, चिन्ता ग़म ना कोए जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताइंदा। साचा हुक्म धुर फ़रमान, हरि शब्दी शब्द जणाईआ। शब्दी योद्धा सूरबीर बलवान, बलधारी इक अख्वाईआ। लेखा जाणे दो जहान, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाईआ। हुक्मे अन्दर खेल करे महान, महिमा अकथ कथ सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दए ज्ञान, निष्अक्खर दए समझाईआ। शास्त्र सिमरत वेद लिख पुराण, गीता ज्ञान दए दृढ़ाईआ। ईसा मूसा पीर पैगम्बर दए ज्ञान, काया कुरा दए समझाईआ। धुर संजोगी मिले आण, भगत भगवान अंग लगाईआ। नानक गोबिन्द बोध ज्ञान, लख चुरासी जीव जंत साध सन्त आप समझाईआ। सर्ब जीआं प्रभ इक भगवान, दूजा नज़र कोए ना आईआ। धर्म दुआरे इक निशान, सति पुरख निरँजण आप झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा भेव आप जणाईआ। साचा भेव हरि निरँकार, निरगुण दाता आप जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी हो तैयार, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। दाता दानी देवणहार वड भण्डार, विष्नूं झोली इक भराईआ। ब्रह्मा देवणहारा ब्रह्म विसथार, लख चुरासी निर्मल जोत कर रुशनाईआ। शंकर देवे इक कटार, त्रिसूल हथ्थ भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। करे खेल पुरख अकाल, अक्ल कल वड्डी वड्याईआ। दीना बंधप हो दयाल, दयानिध भेव खुल्हाईआ। सचखण्ड दुआर सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआर इक्को सोभा पाईआ। प्रगट कर जोती नूर इक जलाल, ज़ाहर ज़हूर करे इक रुशनाईआ। बेऐब ख़ुदाई परवरदिगार, हक़ मुकामे डेरा लाईआ। सच तौफ़ीक सांझे यार, लाशरीक नूर इलाहीआ। खेले खेल अगम्म अपार, अलख अगोचर वड्डी वड्याईआ। साची करनी करे करतार, करता पुरख बेपरवाहीआ। आपणी इच्छया कर तैयार, साची भिच्छया झोली पाईआ। आपणा बल आपे धार, बलधारी आप अख्वाईआ। आपणी करनी करे सच विहार, करता पुरख आपणे नाउँ दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। साची सिख्या श्री भगवन्त, सो पुरख निरँजण आप दृढ़ाईआ। हरि पुरख निरँजण महिमा अगणत, सिफ्ती सिफ्त ना कोए सालाहीआ। एकँकारा बणाए बणत, घड़न भंनणहार आप हो जाईआ। आदि निरँजण जोत जगँत, जोती जोत जोत रुशनाईआ। अबिनाशी करता साचा कन्त, कन्त कतूंहल सोभा पाईआ। श्री भगवान साचा धाम सुहंत, सचखण्ड बैठा डेरा लाईआ। पारब्रह्म दर दरवेश बण के करे मन्नत, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। साची सिख्या श्री भगवान, घर साचे आप समझाइंदा। सुत दुलारा इक जवान, शब्दी सुत उठाइंदा। देवणहारा हथ्थ निशान, धर्म निशान इक झुलाइंदा। बणावणहारा हुक्मरान, सीस जगदीश ताज टिकाइंदा। वखावणहारा दो जहान, निरगुण सरगुण रूप वखाइंदा। सुहावणहारा सच मकान, थिर घर साचे आप बहाइंदा। देवणहार अगम्मी दान, वस्त अमोलक इक वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी पुरख अकाल, आदि आदि जणाईआ। सुत दुलारे शब्दी लाल, तेरे हथ्थ वड्याईआ। दो जहान तेरी धर्मसाल, ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी सरनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव तेरी वसण धर्मसाल, घर बैठण डेरा लाईआ। त्रैगुण माया दए भण्डार, पंज तत कर कुड़माईआ। लख चुरासी खोल्ह कवाड़, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज रंग रंगाईआ। साची बाणी बोल जैकार, चारे खाणी दए समझाईआ। सोहला ढोला राग अपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म आप वरताईआ। साचा हुक्म पुरख अबिनाश, हरि करता आप जणाईआ। खेले खेल पुरी लोअ पृथ्मी आकाश, ब्रह्मण्ड खण्ड रचन रचाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर कर दासी दास, सेवक सेवा इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची घाड़न आप समझाईआ। साची घाड़न घड़ पंज तत्त, त्रैगुण बन्धन इक्को पाईआ। नाता जोड़ रक्त बूँद साची रक्त, हड्ड मास नाड़ी जोड़ जुड़ाईआ। अन्दर वड़ पुरख समरथ, साची खेल इक जणाईआ। घर विच घर कर प्रगट, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। नौ दुआरे खोल्ह हट्ट, गुर शब्दी दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। नौ दुआरे खोल्ह कवाड़, गुर शब्द वड्डी वड्याईआ। लख चुरासी कर तैयार, चार खाणी वंड वंडाईआ। चारे बाणी बोल जैकार, धुर दा रागी राग अलाईआ। काया मन्दिर अन्दर सुहाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नौ दुआर आपणा भेव समझाईआ। नौ दर खेल कर जग्ग, जग जीवण दाता आप जणाइंदा। काम क्रोध लोभ मोह

हँकार आसा तृष्ना मेल मिला अग्ग, हउमें हंगता गंढु पवाइंदा। मन मति बुध करा हज्ज, काया काअबा इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सिँघासण इक्को वार सुहाइंदा। सच सिँघासण सज्जण मीत, सो साहिब आप बणाईआ। नौ दर तेरी रीत, नौ खण्ड मिले वड्याईआ। नौ रस जगत नीत, नीती नीती नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। शब्द गुरू सुण धुर संदेस, सचखण्ड साचे सीस निवाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल मैं सेवा करां हमेश, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लवां वेख, निरगुण निरगुण रूप वटाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी खेलां खेड, नौ दर जगत धार वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। दर तेरे प्रभ हो के मंगता, शब्द सुत झोली डाहीआ। नौ दुआरे भरां हंगता, हँ ब्रह्म समझ कोए ना आईआ। भेव ना पाए कोई पंडता, जगत विद्या नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। प्रभू, मैं सेवा सच कमवांगा। लख चुरासी जीव जंत उपजावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव सेव लगावांगा। त्रैगुण माया हुक्म वरतावांगा। पंज तत नाता मेल मिलावांगा। नौ दर दरवाज़ा खोल्ह वखावांगा। कूड़ी क्रिया आसा तृष्ना साजण साजा, सगला संग निभावांगा। तेरा खेल ग़रीब निवाजा, जुग चौकड़ी पूर करावांगा। सच वस्त अमोलक दे दाजा, तेरे अग्गे मंग मंगावांगा। कवण वेला घर साचे बहि के निरगुण निरगुण मारे वाजां, मेरा विछोड़ा पन्ध कटावेंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगावांगा। श्री भगवान दया कमाउँदा ए। आदि पुरख आप समझाउँदा ए। सो पुरख निरँजण हुक्म वरताउँदा ए। हरि पुरख निरँजण इक मनाउँदा ए। एकँकार राह चलाउँदा ए। आदि निरँजण नूर चमकाउँदा ए। अबिनाशी करता वेख वखाउँदा ए। श्री भगवान निशान उठाउँदा ए। पारब्रह्म प्रभ दरस दिखाउँदा ए। लख चुरासी करे खेल, ब्रह्म आपणा रंग रंगाउँदा ए। नौ दर जगत तृष्ना चेत, घर घर विच आपणा खेल रचाउँदा ए। गृह मन्दिर नज़री आए नेतन नेत, दर दसवें सोभा पाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि पुरख सच संदेस इक सुणाउँदा ए। सच संदेस इक सुणाउँदा ए। प्रभ धुर दा हुक्म जणाउँदा ए। शब्द सुत तेरी सेवा इक लगाउँदा ए। जुग चौकड़ी रुत्त सुहाउँदा ए। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरी झोली पाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि पुरख अबिनाशी करता धुर दा भेव आप जणाउँदा ए। शब्द सुत हो तैयार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। मैं सेवा करां प्रभ

७७६
१५

सच निरँकार, निरगुण निरगुण रूप वटाईआ। जुग चौकड़ी वेखां विच संसार, लोकमात फेरा पाईआ। लख चुरासी दयां सति भण्डार, नाम अमोलक इक वरताईआ। साची खेल करां अगम्म अपार, अलख अगोचर समझ कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। दर मंगां मंग श्री भगवान, तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। जुग चौकड़ी बीते विच जहान, थिर कोए रहिण ना पाईआ। साचा खेल करां महान, सति सतिवादी दया कमाईआ। निरगुण सरगुण हो प्रधान, गुर अवतार रूप वटाईआ। सति संदेसा देवां एका वार, एकँकार तेरा नाउँ सिफ्त सालाहीआ। सृष्ट सबाई बंद कवाड़ी खोल्ह नैण उग्घाड़, अक्ख प्रतख दयां वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, मेरा सगला संग निभाईआ। गुर अवतार रूप प्रगटावांगा। निरगुण सरगुण वेस वटावांगा। निरवैर हो के कार कमावांगा। जुग चौकड़ी पन्ध मुकावांगा। धुर दा ढोला छन्द सुणावांगा। सोभावन्त इक अखवावांगा। नूरी चन्द जोत चमकावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, कवण वेले दर तेरे बहि के खुशी मनावांगा। कवण वेला दस्स भगवान, तेरे दर मिले वड्याईआ। सेवा करां नित नवित्त विच जहान, तेई अवतारां हुक्म मनाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद कर कलाम, कलमा नबी रसूल कायनात जणाईआ। भगत अठारां करे ध्यान, निज नेत्र नैण उठाईआ। दस गुर जगत प्रधान, नाम प्रधानगी इक वखाईआ। अन्दर वड़ के देवां नाम ज्ञान, बाहरों समझ कोए ना आईआ। लेखा लिख शास्त्र सिमरत वेद पुराण, गीता ज्ञान करां पढ़ाईआ। भेव अभेदा खोल्ह अञ्जील कुरान, तीस बतीसा मसला हक़ दयां समझाईआ। साची बाणी बोल धुर फ़रमान, धुर दी धार लोकमात समझाईआ। चारे वरनां इक ज्ञान, बरन अठारां बूझ बुझाईआ। ऊँच नीच राउ रंक इक ध्यान, चरण कँवल इक दृढ़ाईआ। नौ दुआर जगत दुकान, नौ खण्ड पृथ्मी दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, जिस वेले तेरा मेला होए सहिज सुभाईआ। श्री भगवान आदि जणाउँदा ए। सुत शब्द तेरी सेवा सच लगाउँदा ए। आदि जुगादी सतिगुर रूप, तेरा इक्को इक वखाउँदा ए। सच निशान चार कूट, दहि दिशा आप वखाउँदा ए। तेरे उपर जाए तुठ, पुरख अकाल मेहर नज़र उठाउँदा ए। जुग चौकड़ी सोहे तेरी रुत्त, फुल फलवाड़ी बसन्त आप महकाउँदा ए। लख चुरासी अन्दर हो के चुप्प, दो जहानां खेल वेख वखाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाउँदा ए। साची सिख्या इक दृढ़ावांगा। धुर दा भेव अभेद खुल्हावांगा। शब्दी सुत तेरा हुक्म वरतावांगा। जुग चौकड़ी रूप धरावांगा। निरगुण सरगुण वंड वंडावांगा। गुर अवतार नाम रखावांगा। पीर पैगम्बर ढोला

गावांगा। शब्द अनाद इक सुणावांगा। ब्रह्म ब्रह्माद खोज खोजावांगा। बण स्वांगी स्वांग रचावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी इक कमावांगा। साची करनी प्रभू कमावेगा। सतिजुग त्रेता द्वापर पार लँघावेगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सेव कमावेगा। सचखण्ड निवासी सच दरगाह लेखा आपणे हथ्थ रखावेगा। शब्द अनाद धुर दी धार इक्को इक कह के, हुक्म वरतावेगा। हर घट अन्दर निरगुण रूप हो के बहि के, सच सिँघासण सोभा पावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म इक सुणावेगा। शब्द सुत समझाउँदा हां। धुर दा अक्खर इक सिखाउँदा हां। पुरख अकाल हो के हुक्म मनाउँदा हां। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी वंड वंडाउँदा हां। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नाल रलाउँदा हां। विष्न ब्रह्मा शिव हुक्म मनाउँदा हां। त्रैगुण माया पंज तत जोड़ जुड़ाउँदा हां। नौ दुआरे खोल्ह दर, दस्म दुआरी सोभा पाउँदा हां। शब्द अनादी नूर इलाही जोती नूर नूर रुशनाउँदा हां। अमृत सरोवर धार इक वहाउँदा हां। दो जहानां वेख वखाउँदा हां। ब्रह्मण्ड खण्ड सोभा पाउँदा हां। जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज डेरा लाउँदा हां। चारे बाणी राग अलाउँदा हां। चारे खाणी बूझ बुझाउँदा हां। सुरती हाणी शब्द मिलाउँदा हां। अमृत बाणी जाप जपाउँदा हां। धुर दी राणी घर वखाउँदा हां। लख चुरासी चुक्के काणी, साची सिख्या इक दृढ़ाउँदा हां। गुर अवतार पीर पैगम्बर धुर संदेस सुणाउँदा हां। आत्म परमात्म रच सुअम्बर, धुर संजोगी मेल मिलाउँदा हां। कूड़ी क्रिया मेट अडम्बर, सच सुच मार्ग इक लगाउँदा हां। भाग लगा अन्धेरी कन्दर, दीपक दीआ इक वखाउँदा हां। मन वासना बन्न्ह के बन्दर, बुध विवेक आप कराउँदा हां। बजर कपाटी तोड़ जन्दर, घर घर विच पड़दा आप उठाउँदा हां। शब्द अनादी गा के मंगल, सोहँ राग अलाउँदा हां। कूड़ी क्रिया तोड़ संगल, नाम डोरी तन्द बंधाउँदा हां। हो सहाई उजाड़ पहाड़ जंगल, उच्चे टिल्ले वेख वखाउँदा हां। मस्तक टिक्का ला के चन्दन, धूढ़ी ख़ाक इक रमाउँदा हां। साची दस्स के सिख्या बन्दन, निरगुण सरगुण हुक्म मनाउँदा हां। जुग चौकड़ी मालक बण के टुट्टी गंढुण, गंढुणहार गोपाल स्वामी दया कमाउँदा हां। साचा नाम आवां वंडण, दर दर इक्को अलख जगाउँदा हां। वेखां खेल विच वरभण्डन, ब्रह्मण्ड फेरा पाउँदा हां। देवां सच इक अनन्दन, निजानंद रस चखाउँदा हां। दूई द्वैती ढाह के कंधन, कन्ढ्ढा पार इक वखाउँदा हां। अमृत सरोवर नुहावां गंगन, दुरमति मैल तन धवाउँदा हां। दूजे दर ना जावां मंगण, घर इके सोभा पाउँदा हां। भगत सुहेले रख के अंगन, अंगीकार अख्वाउँदा हां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक दृढ़ाउँदा हां। सच संदेसा इक दृढ़ाया ए। आदि पुरख हुक्म वरताया ए। शब्द सुत बूझ बुझाया ए। चार

जुग वंड वंडाया ए। चार वेद भेव खुलाया ए। चारे बाणी राग अलाया ए। चारे खाणी वेख वखाया ए। चारों कुण्ट डेरा लाया ए। चौथे पद आप समझाया ए। धुर दा छन्द इक गाया ए। निजानंद इक उपजाया ए। खुशी कर बंद बंद, बंदीख़ाना तोड़ तुड़ाया ए। निरगुण नूर चाढ़ चन्द, जोत उजाला इक कराया ए। सतिजुग त्रेता मिटे पन्ध, द्वापर कलयुग लेखा रहे ना राया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत तेरा इक्को माण वधाया ए। शब्द सुत तेरा सच्चा माण, सो साहिब आप रखाईआ। तेरा हुक्म वरते दो जहान, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाण, नैण सके ना कोए उठाईआ। देवत सुर गण गंधर्ब तैनूं गाण, अट्ठे पहर ध्यान लगाईआ। लख चुरासी तैथों मंगे दान, बैठे ख़ाली झोलीआं डाहीआ। गुर अवतार तेरा निशान, पीर पैगम्बर तेरा नूर रुशनाईआ। आत्म तेरा परमात्म करे पहचान, भेव अभेदा दए खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिगुरू गुरू बलवान, तेरे हथ्थ दए वड्याईआ। शब्द गुरू प्या हस्स, वाह वा पुरख अकाल तेरी वड्याईआ। मैं सेवा करां नस्स नस्स, दो जहान वाहो दाहीआ। तेरा मार्ग देवां दस्स, चारे जुग दयां पढ़ाईआ। लख चुरासी देवां तेरा नाम रस, रस रसीआ रूप वटाईआ। कूड़ी क्रिया पावां नथ्थ, नाम डोरी तन्द बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, कवण वेला आपणा संग मिलाईआ। पुरख अबिनाशी दया कमाउँदा ए। धुर दा भेव आप जणाउँदा ए। नव नौ चार तेरी सेव लगाउँदा ए। इकावन बावन वंड वंडाउँदा ए। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा संग निभाउँदा ए। शास्त्र सिमरत वेद पुराण धुर दा ढोला गाउँदा ए। लेखा जाणे अञ्जील कुरान, कलमा इक्को इक पढ़ाउँदा ए। साची बाणी बोल गुण निधान, गुणवन्ता भेव खुलाउँदा ए। कलयुग अन्तिम आए विच संसार, गुर अवतार पैगम्बर दोए जोड़ सर्ब वास्ता पाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द गुरू तेरा इक्को माण रखाउँदा ए। शब्द गुरू कहे मेरे भगवान, तेरे अग्गे मेरी अरजोईआ। जुग चौकड़ी बीते विच जहान, कलयुग वेला अन्तिम जाए आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दर तेरे मंगण दान, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। सृष्ट सबाई नौ खण्ड सत्त दीप ख़ाली दिसे मैदान, शहिनशाह रूप ना कोए वखाईआ। चारों कुण्ट कूड़ निशान, जूठ झूठ डौरु डंका देवे वजाईआ। राज राजान होण बेईमान, सिदक सबूरी संग ना कोए निभाईआ। साध सन्त खाण हराम, हक़ हकीकत हथ्थ किसे ना आईआ। मुल्लां शेख़ मसायक घर घर नच्चे शैतान, चारों कुण्ट कूड़ दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, निरगुण आपणा मेला लै मिलाईआ। शब्द सुत लाडले मेरे लाल, पुरख अकाल आदि आदि जणाया। कलयुग

अन्तिम वेखां तेरी धर्मसाल, धर्म दुआरा फोल फोलाया। लख चुरासी होए बेहाल, धीरज धीर ना कोए धराया। हरि का नाम देवे ना कोई धन माल, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ढोला सर्ब गाया। दीपक दीआ जोती घर देवे ना कोई बाल, चारों कुण्ट अन्धेरा छाया। अमृत आत्म जाम देवे ना कोई प्याल, बिन गोबिन्द सच प्याला हथ्थ ना किसे उठाया। चारों कुण्ट सिर ते कूके काल, अग्गे हो ना कोए बचाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाया। साची सिख्या सुण लै सुत, पारब्रह्म प्रभ आप जणाईआ। तेरी होए सुहञ्जणी रुत्त, कलयुग वेला अन्तिम आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे करन पुच्छ, अन्दर वड़ वड़ हरि जणाईआ। कवण वेला प्रभ जाए तुठ, आपणी दया कमाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जो रिहा लुक, सचखण्ड दुआर आसण लाईआ। जिस दा रूप निर्मल जोत, शाहो भूप वड वड्याईआ। तिस पुरख अकाल उते गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे रख के गए ओट, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। प्रगट होवे पारब्रह्म आदि जुगादी जो बणया रिहा ख़ामोश, ख़ालस आपणा नूर करे रुशनाईआ। दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड जो होया रिहा रूपोस, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्बत हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। सुत शब्द तेरा लेखा अन्त मुकावांगा। पारब्रह्म रूप वटावांगा। सति धर्म इक जणावांगा। ब्रह्म मति इक समझावांगा। तेरा भेव इक खोल्ह्वावांगा। हो प्रतख दरस दिखावांगा। वसणहारा घट घट, घट घट नज़री आवांगा। तेरा वेखां जगत हट्ट, नौ खण्ड पृथ्मी फोल फोलावांगा। तेरा लेखा होए सति, नौ दर काया पटका लाहवांगा। तेरा वेख चलदा रथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमावांगा। शब्द सुत तूं मंगी भीख, भिख्या प्रभू देवे वरताईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा रूप करन उडीक, निज नेत्र नैण लैण उठाईआ। कलयुग अन्तिम बण के कातब चिट्टे उते काली मार गए लीक, तस्वीर बेनज़ीर ना सके कोए समझाईआ। पारब्रह्म पीर पैगम्बरां सांझा यार प्रगट होवे ठीक, निरवैर पुरख आपणा नूर करे रुशनाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त ब्रह्मण्ड खण्ड देवत सुर सारे लए जीत, विष्न ब्रह्मा शिव सिर सके ना कोए उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर साध सन्त साचे भगत चरण कँवल करन प्रीत, धुर प्रीती इक जणाईआ। निरवैर पुरख नर निरँकार साचा नाम इक्को वार करे बख्शीश, बख्शश आपणी तेरी झोली पाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आदि जुगादी शब्द अनादी इक्को दस्से सच्ची रीत, चार वरन अठारां बरन ज़ात पात दीन मज़्ब कोई समझ ना सके राईआ। लेखा जाणे शिवदुआले गुरुदुआर मट्ठ मन्दिर मसीत, परखणहारा हस्त कीट, ऊँच नीच भेव अभेदा दए खुल्ह्वाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर

७८०
१५

आत्म परमात्म दस्सणहारा सच्चा गीत, गीत गोबिन्द इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलयुग अन्तिम आपणा वेस वटाईआ। शब्द सुत सद कर तैयारी, त्रैगुण अतीता हरि जणाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तेरी वारी, अन्तिम आपणा हुक्म वरताइंदा। चार युग गुर अवतार पीर पैगम्बर बणन खिलाड़ी, साची खेड आप खडाइंदा। धुर दा संदेस नर नरेश लिखावे बण लिखारी, कातब इक्को कलम चलाइंदा। हरि का नाम हट्ट खुल्ला दो जहान बणाए व्यपारी, गुरमुख विरला सौदा लैण आइंदा। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप हउमे भरे नाल बीमारी, कूड़ी यारी नाल लगाइंदा। ओसे घर विच ओसे दर विच ओसे मन्दिर वड़ के निरगुण जोत करे उज्यारी, नूरो नूर डगमगाइंदा। पारब्रह्म दी समझ ना सके कोए होशियारी, मन मति बुध भेव कोए ना आइंदा। लख चुरासी वेखे दर भिखारी, करता आपणी कार कमाइंदा। सुत लाडले शब्द तेरा खेल अपर अपारी, हरि अपरम्पर आप कराइंदा। कलयुग अन्तिम तेरी आसा पूरी करे आप प्रगट होए सिरजणहारी, घट घट अन्दर वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक सुणाइंदा। सच संदेसा सुण लै बाल, प्रभ ठाकर आप जणाईआ। जुग चौकड़ी वेखे तेरा हाल, हालत आपणी झोली पाईआ। गुर अवतार तेरे नाल, पीर पैगम्बर तेरा संग निभाईआ। अन्तिम सारे दोए जोड़ प्रभ अगे मंग के जाण दान, दाता दानी तेरी ओट तकाईआ। कलयुग अन्त होणा प्रधान, आ के वेखणा आपणा जहान, दो जहानां वाली आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सुत शब्द तेरा चौकड़ी जुग ज्ञान, सिमरन पूजा पाठ अभ्यास रूप वखाईआ। जगत सरोवर अठसठ तीर्थ गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती जल पाणी अशनान, जीव जंत मार्ग इक दरसाईआ। सिफ्ती ढोला नाम निधान रसना जिह्वा बत्ती दन्द सारे गाण, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। नौ दुआर हरि करतार जगत वासना खोल्ह दुकान, वस्त अमोलक माया ममता तृष्ना विच समाईआ। नौ खण्ड पृथमी तेरा खेल होए महान, जगत व्यपारी, जीव जंत हट्ट चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, अन्तिम इक्को इक सुणाईआ। अन्तिम सच संदेस सुणाउँदा ए। सुत शब्द तेरी रचना आदि रचाउँदा ए। जुग चौकड़ी खेल कराउँदा ए। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंड वंडाउँदा ए। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां विच्चों अन्तिम आपणा भेव चुकाउँदा ए। शब्दी सुत दुलारे तेरा खेल कर अपार, अपरम्पर धार वखाउँदा ए। सुत दुलारा कहे प्यारा गोबिन्द सूरा इक उठाल, डंका शब्द ताल वजाउँदा ए। खण्डा खण्डग धर कटार, सीस जगदीश सुहाए दस्तार, कल्गी तोड़ा नाल मिलाउँदा ए। साचा घोड़ा अगम्म अपार, लोआं पुरीआं करे ख़बरदार, ब्रह्मण्डां खण्डां

हुक्म वरताउँदा ए। साची सिख्या सिख संसार, अमृत आत्म जाम दए प्याल, वरन बरन ऊँच नीच राउ रंक डेरा ढाउँदा ए। दो जहानां वज्जे ताल, ब्रह्मण्ड खण्ड वसे धर्मसाल, सच्चा मन्दिर इक वखाउँदा ए। सेवा कर जगत कमाल, विद्याले बिनां पुच्छां स्वाल, वरभण्डी भेंट चढ़ाउँदा ए। कलयुग कूड़ी जड़ उखाड़, त्रैगुण अग्नी देवां साड़, कूड़े बिरहों देवां झाड़, धुर दा हुक्मी हुक्म मनाउँदा ए। कलयुग आयू देवां गाल, नाता तुट्टे लख चार, बणया रहे ना बत्ती हज़ार, हज़ारी रूप आप वखाउँदा ए। साचा खेल करां अपार, निरगुण रूप करां उज्यार, कल कल्की लै अवतार, डंका इक्को नाम सुणाउँदा ए। वसां साचे धाम न्यार, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ तों बाहर, ना कोई घाड़त घड़े बण ठठयार, बाढी आपे नज़री आउँदा ए। दीआ बाती जोत जगे निरँकार, शब्द अनाद वज्जे धुनकार, धुर दा राग इक दृढ़ाउँदा ए। तेरा लेखा लवां संभाल, वेख खेल शाह कंगाल, ऊँच नीच राउ रंक आपणा हुक्म वरताउँदा ए। निरगुण हो के आवां दलाल, भगतां लवां भाल, साचे सन्तां चलां नाल, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाउँदा ए। आ के सुणां मुरीदां हाल, मुर्शद हो के बणां दलाल, गहर गम्भीर बेनज़ीर आपणी कार कमाउँदा ए। दो जहानां तोड़ ज़ंजीर, अक्खीं वेखां शाह हकीर, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर संदेसा इक अलाउँदा ए। सुत दुलारा चरण दुआर, घर साचे खुशी मनाईआ। सो पुरख निरँजण तेरा प्यार, हरि पुरख निरँजण भुल्ल कदे ना जाईआ। एकँकार तेरा सहार, दो जहान तेरी शरनाईआ। आदि निरँजण तेरा उज्यार, जुग चौकड़ी नूर वखाईआ। अबिनाशी करता तेरी धार, शब्दी ढोला राग सुणाईआ। श्री भगवान तेरा निशान दए हुलार, ब्रह्मण्ड खण्ड इक्को लहर वखाईआ। पारब्रह्म तेरी साची कार, ब्रह्म तेरी अंस रूप वटाईआ। लख चुरासी तेरा पसार, घट घट नज़री आईआ। कलयुग अन्तिम खेल करे करतार, हरि करता बेपरवाहीआ। लोकमात प्रगट हो निरगुण रूप आप निरँकार, जोती जोत जोत रुशनाईआ। सम्बल धाम बणा के सच्चा दरबार, दर दरवाज़ा आप लगाईआ। सन्त सुहेले विच बठाल, गुर चेले मेल मिलाईआ। भगत सज्जण रख ख्याल, सम्मत इकीसा दे वड्याईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। लख चुरासी विच्चों भाल, आप आपणा मेल मिलाईआ। नाता तोड़ काल महाकाल, शब्दी तन्द डोर बंधाईआ। पूरब जन्म बैठे जो घालण घाल, तिन्हां लेखा लेखे लाईआ। नौ खण्ड पृथमी वखाए इक धर्मसाल, धर्म दुआरा इक वड्याईआ। दो जहानां राउ रंकां फ़कीर हकीरां करे प्रितपाल, प्रितपालक हथ्थ वड्याईआ। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर तेरे दुआर वसण नाल, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। कलयुग अन्तिम तेरी आत्म आ के वेख हाल, हालत सब दी फोल फोलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे इक अरज़ोईआ। प्रभ जिस वेले अन्तिम आवेंगा। मेरा लेखा पूर करावेंगा। पिछला चेता चेते रखावेंगा। नेता इक्को नज़री आवेंगा। लेखा साचा सच कमावेंगा। भेता आपणा आप बुझावेंगा। लेखा लिख्या पूर करावेंगा। सच भिच्छया इक्को पावेंगा। दहि दिशा नज़री आवेंगा। अनडिठया खेल वरतावेंगा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी दो जहान जिस ने जितया, उस दा रूप धरावेंगा। लख चुरासी बण के मात पितया, पिता पूत गोद उठावेंगा। दे वड्याई छोटे पुत बाल निक्कया, गोबिन्द सुत इक जगावेंगा। जिस ने जगत जहान रस जाता फिकया, तिस अमृत हथ्थ फड़ावेंगा। गोबिन्द सूरा सतिगुर स्वामी कदी ना जावे भिटया, भिट जगत विच्चों बाहर कढ्ढावेंगा। ओस लेखा अगम्मी लिख्या, कलयुग अन्तिम पूर करावेंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, कवण वेला आपणा मेल मिलावेंगा। सुत शब्द जिस वेले अन्तिम आवांगा। निरगुण आपणा नूर धरावांगा। जोती जामा पावांगा। शब्दी नाद वजावांगा। ब्रह्म ब्रह्माद वेख वखावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव आप उठावांगा। धुर समाज इक समझावांगा। लख चुरासी वेख पिछला काज, अगला रंग आप रंगावांगा। साचा बेड़ा बन्नृ चलावांगा। सति धर्म दा बख्शां इक्को राज, चारों कुण्ट हुक्म समझावांगा। साचा कलमा सच निमाज़, रोज़ा इक्को इक जणावांगा। साचा नाम सच आवाज़, साचा राग इक सुणावांगा। साचा दे के धुर दाज, वस्त अमोलक झोली पावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निरगुण हो के आपणी खेल रचावांगा। निरगुण हो के खेल रचावांगा। सच साचा मार्ग लावांगा। काया काअबा फोल फोलावांगा। जगत तमाशा इक वखावांगा। निरगुण सरगुण पाए रासा, गोपी काहन नाच नचावांगा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां पूरी कर आसा, आसा आपणे नाल मिलावांगा। करवट लै बदल के पासा, दो जहान शब्द फ़रमान नाल उठावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सुत शब्द तेरी इच्छया पूर वखावांगा। तेरा लेखा इक चुकावांगा। अन्तिम तेरे नैण वखावांगा। साक सैण रूप वटावांगा। लहिण देण ज़रूर चुकावांगा। साक सज्जण सैण बण के साचा संग निभावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त इक समझावांगा। साची वस्त प्रभ समझाउँदा ए। आदि दा लेखा पूर कराउँदा ए। धुर दी धार आप समझाउँदा ए। निरगुण कार निरँकार कमाउँदा ए। लोकमात अगम्मी धार, धुरदरगाही आप वखाउँदा ए। रच के सच सच्चा दरबार, दरगाह साची रूप वटाउँदा ए। तख्त निवासी बण करतार, करता पुरख हुक्म वरताउँदा ए। दर सद्द गुरू अवतार, पीर पैगम्बर कोल बहाउँदा ए। भगत अठारां कर विचार, चरण कँवल इक समझाउँदा ए। कल कल्की लै अवतार, कूड़ी क्रिया डेरा ढाउँदा

७८३ १५

ए। निहकलंक खेल अपार, नाम डंक इक सुणाउँदा ए। सृष्ट सबाई दए आधार, दूई द्वैत डेरा ढाउँदा ए। साची खेल करे विच संसार, सतिजुग साची नींह रखाउँदा ए। वीह सौ वीह बिक्रमी बणी भिखार, ख़ाली झोली आप भराउँदा ए। धरनी रोवे ज़ारो ज़ार, नीर हन्झू साफ़ कराउँदा ए। सूरज चन्द होए शरमसार, सब दी नेत्र अक्ख खुलाउँदा ए। आओ रल मिल सारे दो जहान लोकमात करो दीदार, श्री भगवान रूप वटाउँदा ए। जिस नूं लभ्भदे रहे जुग चार, सो करता खेल रचाउँदा ए। बिन नेत्र दए दीदार, निज नेत्र इक खुल्हाउँदा ए। चौदां कलीआं कर श्रृंगार, साचा आसण इक सुहाउँदा ए। अस्व घोड़े हो अस्वार, लोआं पुरीआं पार कराउँदा ए। पहलों थोड़ा थोड़ा दस्सदा रिहा विहार, हुण आपणा हुक्म वरताउँदा ए। वेखो कलयुग पैंदी सख़्त मार, सतिगुर शब्द खण्डा हथ्थ चमकाउँदा ए। कूड़ी क्रिया लोकमात विच्चों करनी बाहर, जूठ झूठ डेरा ढाउँदा ए। ऊँचां नीचां करे प्यार, नवां कारज इक रचाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप वखाउँदा ए। साची खेल करे समरथ, प्रभ वड्डा वड वड्याईआ। सदी बीसवीं नौ खण्ड पृथ्मी घर घर खोल्हे अक्ख, गूढ़ी नींद ना कोए सवाईआ। उच्ची कूक देवे दस्स, शब्द नगारा रिहा वजाईआ। अग्गे किसे दा रहिणा नहीं कोई वस, करता करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। सच दरबार बैठ बोध अगाध भेव खुल्हाए अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म इक वरताईआ। साचा हुक्म दीन दयाल, दो जहानां आप जणाइंदा। चरण छुहा के पक्खोवाल, ग़रीब निमाणयां पक्ख निभाइंदा। राज राजानां करे कंगाल, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाइंदा। चार वरनां इक वखाए सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा आप उपजाइंदा। सुक्के हरे करे डाल्ह, अमृत रूप आप प्रगटाइंदा। सतिजुग चले अवल्लड़ी चाल, हरि का भेव कोए ना पाइंदा। नौ खण्ड झुल्लदे वेखो निशान, धुर निशाने आप बणाइंदा। नौ दर झूठी लुट्टी दी वेखो दुकान, गुरमुख साचे घर वसाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची नींह इक धराइंदा। साची नींह जाए रख, इक्की अस्सू मिले वड्याईआ। वरन बरन लोकमात विच्चों जाए नट्ठ, प्रभ धक्का देवे लाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर सारे करो इकट्ठ, दूई द्वैती दयो ढाहीआ। अन्तर आत्म लओ सच्चा रस, कूड़ा रस दयो तजाईआ। आत्म करो परमात्म वस, काम क्रोध लोभ मोह हँकार कम्म किसे ना आईआ। घर प्रकाश करो लट लट, कूड़ अन्धेरा लओ गंवाईआ। साहिब सतिगुर कोलों क्यों पिच्छे गए हट, अग्गे हो के मिलो वाहो दाहीआ। सतिगुर पूरा दुरमति मैल देवे कट, अमृत आत्म सीर प्याईआ। नेत्र वेख ना भुल्लो जट्ट, निरगुण दाता अन्तर बेपरवाहीआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस दी इक्को मति, गुर अवतार पीर

पैगम्बर सारे रहे प्रनाईआ। तिस दा लेखा कोई ना सके लख, लिख्त लेख ना कोए समझाईआ। जुग चौकड़ी बैठा रिहा वक्ख, कलयुग अन्तिम अक्ख आप खुल्हाईआ। जन भगत दुआरे गया ढह्, नौ गृह देवणहार वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग तेरा मार्ग घर ग़रीबां दए लगाईआ। जगत ग़रीब निमाणे उठ गए जाग, हरि जागरत जोत जगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे कहिण उच्ची आवाज़, बेअन्त बेअन्त बेअन्त तेरी सरनाईआ। सच समग्री सब नूं दित्ता दाज, आत्म परमात्म वस्त झोली पाईआ । दो जहानां रच के काज, नव खण्ड पृथ्मी मार्ग इक दरसाईआ। नौ दर कूड़ा तोड़ समाज, नव चार पिण्ड ब्रह्मण्ड दए समझाईआ। शब्द गुरू सब दी रखे लाज, अन्तिम अन्त लहिणा देणा झोली देवे पाईआ। सतिजुग सच बणा जहाज़, बेड़े आपणे लए चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची खेल रिहा कराईआ। साची खेल करे करतार, इक्की अस्सू दए वड्याईआ। पक्खोवाल दा पक्ख पाल, पाखर घोड़े ज़ीन रखाईआ। दाते दानी वेख वखाल, जलवा नूर दए जमाल, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सचखण्ड निशाना नौ खण्ड इक्को वार झुलाईआ। नौ खण्ड दे नौ निशान, गुरमुखां हथ्थ वड्याईआ । नौ दर दे नौ मकान, गुरसिखां दए जणाईआ। नौ घर दे हो मेहरवान, हरिजन झोली देवे भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता वड वड्याईआ। हरि करता सतिगुर गहर गम्भीर, गुणवन्त भेव ना आइंदा। कलयुग अन्तिम प्रगट ज़ाहरा पीर, दस्तगीर आपणी कार कमाइंदा। कलयुग कूड़ी माया करे लीर, सतिजुग चन्न चमकाइंदा। शरअ शरीअत कट ज़ंजीर, लाशरीक खोल्ह वखाइंदा। सति धर्म दी इक तदबीर, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। जोती नूर सच तस्वीर, बिन रूप रेख रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। सच दुआरा भगत जन, गुरमुख मिली वड्याईआ। जिन्हां सरसे लग्गा लेखा तन, सो सदी बीसवीं हथ्थ निशान रहे झुलाईआ। दूर दुराडा आया चल, बण माही बेपरवाहीआ। निरगुण हो के गया रल, सरगुण मेल मिलाईआ। कलयुग वड़या डूंग्घी झल्ल, झल आपणी रिहा जणाईआ। जन भगतां मेट सल, पट्टी इक्को नाम बंधाईआ। सृष्ट सबाई जाए हल, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। हरि का भाणा ना जाए टल, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। लेखा मेरा जाण भगवान, तेरे अग्गे अरज़ोईआ। की होया मैं घोड़ा अस्व बणया विच जहान, चार पाउँ मुख मिली वड्याईआ। कर किरपा मेरा पिछला लेखा पछाण, बाल्मीक

रिहा वखाईआ। राम मेरे तेरी निगह वखाए निगहबान, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। रणभूमी कीती इक प्रणाम, निउँ के सीस झुकाईआ। अमृत प्याया इक्को जाम, भर कटोरा हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा देदे मेरे घर, तेरे अग्गे झोली डाहीआ। घोड़ा कहे सुण पुकार, मैं पिछला हाल सुणाईआ। मेरा लहिणा दे विच संसार, क्यों लेखा झोली पाईआ। राम ने किहा जिस वेले मेरा राम लए अवतार, तैनूं आराम देवे पुचाईआ। जो रण भूमी सुत्ते पैर पसार, ऐस वेले तेरे चारों कुण्ट खुशीआं ढोले गीत गाईआ। तूं इक्को कूके हिणकें बोल जैकार, दो जहान वेखण जस खुशी रहे मनाईआ। तेरी वाग पकड़े त्रेते जुग दा कुशू तेरा बाल, जिस दे सिर उते बाल नज़र कोई ना आईआ। जुग चौकड़ी मैं बौहड़ी तेरी करदा रिहा भाल, क्यों मेरे राम सुत्ता मुख छुपाईआ। श्री भगवान कहे मैं नहीं अणजाण, सब कुछ जाणां अभुल्ल भुल्ल कदी ना जाईआ। मैं तैनूं दित्ता दान, दाता हो के तेरी झोली इक भराईआ। ग़रीब निमाणे कोझे कमले तेरे नाल करां परवान, जिन्हां तेरा संग निभाईआ। तूं अन्तिम कलयुग कुद्दणा विच मैदान, सुम्ब पैर इक हिलाईआ। तेरे उपर निरगुण रूप बहे भगवान, जिस दा रूप रंग रेख नज़र कोए ना आईआ। राम हो के हउँ तेरे नाल नाल, अग्गे पिच्छे सज्जे खब्बे सेव कमाईआ । जिस वेले वड़ें विच पंडाल, दो जहानां पैंडा पन्ध मुकाईआ। मैं खुशीआं नाल वजावां ताल, तबला ढोलक हथ्थ ना कोए रखाईआ। वाह वा मेरी मेरे शहिनशाह कीती पूरी घाल, घालण आपणे लेखे लाईआ। अग्गे रिहा ग़रीबां दा स्वाल, स्वाल सुणन धुरदरगाही आईआ। मेरी वेख अगम्मी चाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर खुशीआं रहे मनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण वाह वा बांके घोड़े, तैनूं मिली वड्याईआ। तेरे नाल प्रभू प्रीती जोड़े, जोड़ी आपणे नाल मिलाईआ। बाकी सब नूं दए स्वाल कोरे, चिट्टा काग़ज़ भगत दुआरे नीहां हेठ दबाईआ। दूर दुराडे सस्से उपर लाए होड़े, होके नाल रिहा दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा दए मुकाईआ। साचा लेखा सब दा मुके, मुकावणहार अन्त चुकाईआ। जुग चौकड़ी भगत भगवान गोदी चुक्के, चुक्क चुक्क खुशी मनाईआ। निरगुण निरवैर हो के आपणी धारों उठे, जोती जोत जोत रुशनाईआ। दीन दयाल हो के तुठे, ग़रीब निमाणयां गले लगाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी नौ दुआर नौ रस आपे पुच्छे, पुच्छणहारा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग तेरी सच्ची नींह लोकमात दए धराईआ। रखी नींह चार वरन, ऊँच नीच भेव चुकाईआ। पुरख अकाल दी इक्को सरन, दूजा इष्ट ना कोए मनाया। नाम डोरी सारे फड़न, तन्दी तार इक जणाया। काया मन्दिर साचे चढ़न,

७८६

१५

हौली हौली कदम उठाया। सोहँ ढोला इक्को पढ़न, तूं मेरा मैं तेरा संग रखाया। लेखा चुक्के डरन मरन, आवण जावण पन्ध मुकाया। सच मिले प्रभ की सरन, सरनगति इक समझाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौ खण्ड निशान रिहा वखाया । नौ खण्ड वेख के पए हस्स, वाहवा वज्जी मात वधाईआ। श्री भगवान भगतां होए वस, लोकमात फेरा पाईआ। सम्बल बहि के साचा मार्ग रिहा दस्स, साचा राह रिहा जणाईआ। कूड़ा बुरज रिहा ढट्ठ, हउमें हंगता गढ़ तुड़ाईआ। जन भगतां अन्दर रिहा वस, निज घर बैठा डेरा लाईआ । अमृत देवे सच्चा रस, झिरना निझर इक झिराईआ। कर किरपा खोल्ह अक्ख, आपणा पड़दा दित्ता उठाईआ। कूड़ी क्रिया नालों करे वक्ख, साचा नाता इक जुड़ाईआ। पक्खोवाल चार वरन दा करन आया पक्ख, पुखता आपणा हुक्म मनाईआ। कूड़ी क्रिया जड़ देवे पट्ट, शौह दरिया देवे रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म इक वरताईआ। नौ दुआरे रोवण मारन धाह, बौहड़ी बौहड़ी रहे कुरलाईआ। गुरमुखां कोलों असीं पल्ला गए छुडा, मुख अक्ख नज़र कोए ना आईआ। किरपा कर बेपरवाह, साची बख़्श इक सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक समझाईआ। नौ दुआरे करो झाक, हरि झाकी इक जणाईआ। भगतां नालों तोड़ो साक, आपणी इच्छया आपणे विच छुपाईआ। साहिब सतिगुर खोल्हे ताक, अक्ख इक्को इक जणाईआ । सच सुणाए पूजा पाठ, नाम इक्को इक पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मार्ग इक लगाईआ । साचा मार्ग ला प्रभ, तेरे हथ्थ वड्याईआ। जन भगत दुआरे छड्डी हद्द, अग्गे लँघ कोए ना जाईआ। धुर दरबारा तेरा गया सज, जिथ्थे वज्जे नाम वधाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश आवण भज्ज भज्ज, ऊँच नीच धक्का कोए ना लाईआ। निज नेत्र स्वामी तेरा दर्शन करन रज्ज रज्ज, दोए लोचण बंद कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। ग़रीब निमाणे करन पुकार, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। प्रभ तेरे हथ्थ धुर तलवार, गुरमुख प्रेम भेंट चढ़ाईआ। साडा दुखड़ा दे निवार, दुखियां दर्द वंडाईआ । लोकमात ना आवे हार, माणस जन्म ना मिले सज़ाईआ। अन्तिम मिले सच दीदार, दरस इक्को शहिनशाहीआ। साडा कर्ज़ा दे उधार, दर खलो के मंगां तेरे माहीआ। तेरा नाउँ कल कल्की अवतार, कल कलेश दे गंवाईआ। जे हुण छुपया रिहों विच संसार, तेरा नाम ना कोए ध्याईआ । आपणी लज्जया आपे रख सिरजणहार, तेरी तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे रिहा जणाईआ। हरिजन साचे पड़दा लौंहदा ए। सति सरूप प्रगटाउँदा ए। जोत नूर चमकाउँदा

ए। शब्दी ढोला गाथ सुणाउँदा ए। दो जहान हुक्म वरताउँदा ए। गुर अवतार पीर पैगम्बर आप उठाउँदा ए। विष्न ब्रह्मा शिव अक्ख खुल्हाउँदा ए। शास्त्र सिमरत वेद पुराण फोल फोलाउँदा ए। गीता ज्ञान अञ्जील कुरान भेव मुकाउँदा ए। खाणी बाणी धुर दा सच संदेस, सृष्ट सबाई याद कराउँदा ए। कलयुग अन्तिम प्रगटे इक नरेश, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाउँदा ए। फिरे दरोही देस परदेस, नव नौ आपणा हुक्म वरताउँदा ए। लेखा चुक्के मुल्ला शेख़, मसायक पीर डेरा ढाउँदा ए। चार वरन इक्को टेक, अठारां बरन राह वखाउँदा ए। पुरख अकाल आदि जुगादि इक्को एक, लख चुरासी जीव जंत गेड़ भवाउँदा ए। जन भगतां करे बुध विवेक, अमृत आत्म जाम प्याउँदा ए। त्रैगुण माया ना लाए सेक, पंज तत कूड़ा नाता तुड़ाउँदा ए। जोती जामा धर के भेख, धुर दा हुक्म आप मनाउँदा ए। निरगुण सरगुण कर के हेत, आत्म परमात्म गंढु पवाउँदा ए। कूड़ी क्रिया करे खेत, नाम खण्डा इक चमकाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा हुक्म इक वरताउँदा ए। धुर दा हुक्म इक वरतावेगा। श्री भगवान खेल रचावेगा। कलयुग कूड़ा मेट मिटावेगा। सतिजुग गुरमुखां रंग चढ़ावेगा। जन भगतां धूढ़ी टिक्का मस्तक लावेगा। नूरी नूरा जोत चमकावेगा। हाज़र हज़ूर दरस दिखावेगा। बचन पूरा खेल वरतावेगा। जो ग़रीब निमाणा बण के रहे मज़दूरा, तिन्हां मज़दूरी झोली पावेगा। साचा नाम होए मशहूरा, सोहँ ढोला राग सुणावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नौ खण्ड पृथ्मी इक्को रंग रंगावेगा। नौ खण्ड पृथ्मी रंग रंगाएगा। ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखाएगा। नूरी चन्द इक चमकाएगा। गीत सुहागी छन्द सोहला गाएगा। जन भगतां परमानंद वखाएगा। जन्म कर्म दी टुट्टी गंढु, निरगुण निरगुण जोड़ जुड़ाएगा। नाता तोड़ दुहागण रंड, कन्त सुहागी मेल मिलाएगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे कहिण तू ही बख़्शंद, तुध बिन नज़र कोए ना आएगा। निरगुण सरगुण खेल वखाए विच वरभण्ड, नेत्र नैण आप खुल्हाएगा। उठो वेखो चार कुण्ट दहि दिशा भेख पखण्ड, गुर का शब्द नज़र कोए ना आएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा लेखा आप चुकाएगा। धुर दा लेखा गुर अवतार, पीर पैगम्बरां लए मनाईआ। कलयुग अन्तिम हो तैयार, श्री भगवन्त वेस वटाईआ। जोती जामा विच संसार, साचा रामा रूप वखाईआ। अगम्मी काहना हो तैयार, निरगुण निरगुण नूर धराईआ। शब्द निशाना अपर अपार, दो जहानां इक लगाईआ। राग तराना धुर दी धार, हरि करता आप सुणाईआ। भगत सुहेले लए उठाल, गुर चेले मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साची नींव धराईआ। सतिजुग साची नींव धर, धरत धवल सुहाईआ। चार वरन वखा इक्को घर, देवे माण वड्याईआ।

निरभउ चुका भय डर, धीरज धीर इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा रंग इक वखाईआ। साचा रंग वेख गोपाल, दो जहान खुशी मनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर हो दयाल, फूलन बरखा रहे बरसाईआ। शाह पातशाह तेरा खेल कमाल, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। सब दी विगड़ी सिध्धी करदे चाल, चाल निराली इक समझाईआ। निरगुण हो के बण दलाल, सरगुण साची बूझ बुझाईआ। आपणा जलवा दे जलाल, नूरी नूर कर रुशनाईआ। भगत सन्त घर बहाल, त्रैगुण माया बन्धन कटाईआ। भाग लगा काया साची माटी खाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे साचा वर, दर तेरे इक सरनाईआ। श्री भगवान कहे खेल कराउँदा हां। कूड़ी क्रिया मेट मिटाउँदा हां। धर्म दुआरा इक सुहाउँदा हां। शब्द जैकारा इक अलाउँदा हां। नाम नगारा सच वजाउँदा हां। भेव न्यारा आप खुल्हाउँदा हां। महल मनारा सोभा पाउँदा हां। अगम्म अथाह राग सलौंहदा हां। बण मलाह बेड़ा पार लगाउँदा हां। दे सलाह मार्ग लाउँदा हां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे आपणे कोल मंगाउँदा हां। पीर पैगम्बर आए कोल, दर बैठे सीस झुकाईआ। भाग लग्गा उपर धौल, दो जहान वज्जी वधाईआ। पूरा करन आया कौल, पारब्रह्म प्रभ बेपरवाहीआ। चुकाए पड़दा आपणा उहल, मुख नक़ाब ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव रिहा समझाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर गाउँदे गीत, खुशीआं नाल ढोले गाईआ। वाहवा प्रभ तेरी रीत, पारब्रह्म प्रभ साचे तोहे भाईआ। कलयुग जीव जंत लभ्भदे फिरदे ठाकर दुआरे मन्दिर मसीत, तूं हर घट बैठा डेरा लाईआ। सर्ब जीआं समझावें इक्को गीत, आओ मिलो घर सच्चे मिले माहीआ। सदा सदा सद वसे चीत, घर बैठा सोभा पाईआ। लेखा जाण हस्त कीट, नीच ऊँच भेव चुकाईआ। तेरे छत्र झुल्ले सीस, जगदीश तेरा नूर सोभा पाईआ। तेरी सिफ्त करन राग छतीस, तीस बतीस ढोला गाईआ। भाग लग्गा अस्सू इकीस, अस्सू तेरा आवे वाहो दाहीआ। सदी बीसवीं रही बीत, सृष्ट सबाई नेत्र रही नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां नेत्र नैणां रिहा वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर गावण ढोले, तू ही तू ही राग अलाईआ। जुग चौकड़ी तूं लुक्या रिहों ओहले, आप आपणा मुख छुपाईआ। लोकमात असीं सेवा कर के आए बण के गोले, दर तेरा इक्को वेख वखाईआ। बिन तेरे सारे पोले, तुध बिन वस्त हथ्थ ना कोए फड़ाईआ। तेरे हुक्मे अन्दर बण विचोले, जगत नाता आए जुड़ाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान ग्रन्थ बाणी बोध अगाध भेव खोल्हे, तेरी सिफ्ती सिफ्त सालाहीआ। सेवा कर के आए पंज तत चोले,

अप तेज वाए पृथ्मी आकाश बन्धन पाईआ। अन्तिम बैठे तेरे कोले, चरण कँवल ध्यान रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, पारब्रह्म तेरी वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखो सच्चा दरबार, पक्खोवाल प्रभू लगाईआ। जिस दा लेखा रहे सदा जुग चार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। नेत्र नैणां करो दीदार, अक्ख प्रतख दए समझाईआ। गोबिन्द कहे मैनूं मिली वड्याई प्रभ मेरे विछड़े मेले यार, गुरमुख साचे नज़री आईआ। मुहम्मद कहे मेरे परवरदिगार, चार यारी तेरे दर बैठी सीस झुकाईआ। ईसा मूसा कहे मेरे नूरी सरदार, जलवागर तेरी सरनाईआ। राम कहे मेरे राम प्यार, तेरा प्यार दो जहान इक्को रंग रंगाईआ। अस्सू कहे मैं हो तैयार, वेले सिर ढुका आईआ। जे कोई लभ्भे धुर दी धार, समझ कोए ना पाईआ। तेई अवतार मुखों बोल जैकार, इक्को वार कहिण राम राम तेरी वड्याईआ। ईसा मूसा मुहम्मद कहिण परवरदिगार, लाशरीक तेरी शिरकत रूप ना कोए वटाईआ। नानक गोबिन्द कहे पुरख अकाल, अक्ल कलधारी आदि जुगादि तेरी खेल दो जहान रचन रचाईआ। कलयुग अन्तिम हो दयाल, निरवैर आपणा वेस वटाईआ। सचखण्ड दुआर खोल्ह धर्मसाल, चार वरनां दिती वड्याईआ। कूड़ी क्रिया तोड़ जंजाल, साची सिख्या इक समझाईआ। लख चुरासी विच्चों भाल, गुरमुख गुरसिख लए मिलाईआ। आ के वेख्या मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। नाउँ रखा के सिँघ पाल, सीस धड़ लेखे लाईआ। योद्धा सूरबीर बलवान, पिता पूत नाम रखाईआ। डंका वज्जे दो जहान, दोहरी सट्ट ताल लगाईआ। कलयुग अन्त चुक्के काण, सतिजुग आवे वाहो दाहीआ। अस्सू इक्की तेरा दिवस होए प्रधान, लोकमात मिले वड्याईआ। पन्द्रां कत्तक इकीआं सिखां मिले दान, ब्रह्म ज्ञान झोली पाईआ। साची सीस दस्तार बन्न्हे भगवान, जिस अन्दर लुक्के सर्ब लोकाईआ। एथे ओथे दो जहानां देवे माण, पंच परवान पंच प्रधान अग्गे बैठे राह तकाईआ। कवण वेला पंचां सोहे इक्को दर राजान, शाह पातशाह इक्को नज़री आईआ। जिस दे निरगुण हो के झुकीए आण, सरगुण संदेस इक सुणाईआ। जिस नूं सचखण्ड मन्नीए भगवान, सो मातलोक बेपहचान फेरा पाईआ। चरणी ढह के सारे मंगीए दान, तेरा विछोड़ा दो जहान कदे ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर भेव अभेद दस्स के गए थोड़ा थोड़ा, सदा सदा भेव पाईए दर घर जाईआ। की होया जे कलयुग अन्तिम आया सतिजुग दौड़ा, दो जहान लख चुरासी क्यों प्या लोहड़ा, नेत्र रोवे क्यों जगत लोकाईआ। आत्म परमात्म दा नानक गाया दोहरा, एका दूआ भेव चुकाईआ। गोबिन्द गुरू पुरख अकाल दा बणया बांका छोहरा, सो शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। कलयुग जीव ना हो ढोरा, सरवण कन्न रिहा सुणाईआ। जिस दा आदि जुगादि जुग चौकड़ी ब्रह्मण्डां खण्डां अन्दर फिरे घोड़ा, निरगुण निरगुण रिहा दौड़ाईआ। तिस दा रूप ना

जाणो वांग चोरां, पारब्रह्म कलयुग अन्त चोरी ना कोई कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे घर खुशी मनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर खुशीआं नाल हस्सण, गीत गहर गम्भीर गाईआ। वड वड्याई प्रभ आया मार्ग दस्सण, दहि दिशा दए समझाईआ। सृष्ट सबाई हिरदे आया वसण, घट घट डेरा लाईआ। धुर संदेसा देवण आया लखण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दरबार इक वखाईआ। सच दरबार लग्गा ग़रीबी, पुरख अकाल लगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखण आए खेल अजीबी, दर घर साचे खुशी मनाईआ। कवण बिध प्रभ देवे अग्गे तरतीबी, नौ खण्ड पृथ्मी दए समझाईआ। दूर दुराडा नज़री आए क़रीबी, घर घर फेरा पाईआ। हउमें रोग मिटाए बण तबीबी, नाम दारू साचा जाम प्याईआ। अल्ला राणी ईसा मूसा मुहम्मद संग कोल ना फिरे भतीजी, चारों कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा इक सुहाईआ। सच दरबार वेखण दी ख़ातर, विष्न ब्रह्मा शिव आईआ। वेखो ग़रीब निमणयां प्रभ जू बणया चाकर, लोकमात सेव कमाईआ। जिस दी गुर अवतार पीर पैगम्बर लिख लिख देंदे गए पात्र, सो पतिपरमेश्वर फेरा पाईआ। जिस नूं कहिन्दे जलवा नूर देवे बातन, सो ज़ाहर ज़हूर नज़री आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण जिस नूं निहकलंक आखण, सो निरगुण निरवैर फेरा पाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड लोक परलोक जिस दे चरणां वल झाकण, सो झाकी रिहा जणाईआ। दो जहान जिस दा स्नेहड़ा भाखण, नित बैठे ध्यान लगाईआ। जिस नूं कहिन्दे सच रसूल पाकन, पाकी पाक बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सच दरबार इक सुहाईआ। गुर अवतार कहिण तेरा ठांडा दरबार, श्री भगवान तेरी सरनाईआ। सो पुरख निरँजण तेरी धार, गुर अवतार वेख रहे जस गाईआ। हरि पुरख निरँजण तेरा प्यार, आदि जुगादि जुग चौकड़ी भुल्ल कोए ना जाईआ। एकँकार तेरा सहार, विष्न ब्रह्मा शिव ओट तकाईआ। आदि निरँजण तेरा उज्यार, दो जहान सदा रुशनाईआ। श्री भगवान तेरा निशान, गुर अवतार पीर पैगम्बर ध्यान लगाईआ। पारब्रह्म तेरा नाउँ प्रधान, ब्रह्मण्ड खण्ड हुक्म वरताईआ। लख चुरासी तेरी करे कल्याण, आत्म कूके दए दुहाईआ। धन्न वड्याई प्रभ मिल्या आण, जुग जन्म दी आस मुकाईआ। सच वखाया इक मकान, लाशरीक बेपरवाहीआ। जिस दा नज़र ना आए कोई निशान, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। सो साहिब होया मेहरवान, सच प्रधानगी रिहा कमाईआ। सदी बीसवीं वेखे मार ध्यान, चौदां लोक कुण्डा लाहीआ। चौदां तबक वेखे मकान, निरगुण सौदा हट्ट विकाईआ। अलख अगोचर अगम्म अथाह बेपरवाह करे खेल श्री भगवान, भगवन आपणा हुक्म वरताईआ। भगत दुआर होया प्रधान, जिस घर बैठा बेपरवाहीआ। सतिजुग तेरा

सच विधान, सति सतिवादी दए बणाईआ। पंचम पंच करे परवान, नौ दर दरवेश दरबान दए समझाईआ। सम्मत वीह सौ पन्द्रां नौ दुआरे कीता खेल महान, गुरमुख नौ नौ दए वड्याईआ। तिस दा लेखा वीह सौ वीह पन्द्रां कत्तक चुक्के आण, सतिगुर दाता आप चुकाईआ। सोच समझ ना कोई जाण पछाण, मन मति सार कोए ना आईआ। धुर दा लेखा जाणे नौजवान, नौबत जिस ने हथ्थ उठाईआ। सचखण्ड दुआरे पहलों आपणा पूरा करे विधान, पंचम दे माण वड्याईआ। नौ खण्ड वेखे फेर मार ध्यान, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। सचखण्ड निवासी बण के हुक्मरान, तख्त निवासी साचे तख्त सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे कहिन्दे, इक्की अस्सू मिली वड्याईआ। धन्न गुरमुख जो पक्खोवाल विच रहिंदे, जिन्हां प्रेम प्रीती इक समझाईआ। हरिसंगत विच रल के बहिंदे, पुरख अकाल ध्यान लगाईआ। नींवें हो के सतिगुर सरनाई ढहिंदे, माण अभिमान ना कोए जणाईआ। धुर दा भाणा सिर ते सहिंदे, लख लख शुकर मनाईआ। धूढ़ी मस्तक संगत थींदे, टिक्का नाम लगाईआ। दूई द्वैत नाल कदे ना खहिंदे, जिन्हां सतिगुर मिल्या गोसाईंआ। धन्न परमेश्वर धन्न परमात्म धन्न वाहिगुरू सारे कहिन्दे, धन्न अल्ला धन्न ख़ुदा परवरदिगार तेरी धन्न वड्याईआ। तेरे चरणां हेठां सारे बहिंदे, लख चुरासी जीव जंत तेरी सरनाईआ। तेरा नाम निधान अमृत रस जो जन पींदे, तिन्हां गोबिन्द मिलदा सच्चा माहीआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर गुरमुख सदा जीउदे, जन्म मरन विच ना आईआ। साचा बीज भगती नाम बींदे, फुल फलवाड़ी मात महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण प्रभ तेरा सच जोग, जोग जोगीशर ध्यान लगाईआ। कलयुग अन्तिम किरपा कर के कीता आप संजोग, बण संजोगी मेल मिलाईआ। मेहर नज़र नाल कटया रोग, हउमें ममता डेरा ढाहीआ। आत्म परमात्म दिती चोग, सोहँ हँसा रूप वटाईआ। दर दुआर आ के देवें दरस अमोघ, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। ना कोई हरख़ ना कोई सोग, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। भाग लगाया साचे कोट, नौ दर वज्जे वधाईआ। नौ बंद लग्गे चोट, नौ खण्ड लए अंगड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दित्ता सर्ब वर, जीव जंत जगत समझाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे आखण, वेखो इक्को वज्जे नाम वधाईआ। अग्गे कोई ना देवे दूजा भाषन, भाषा सब नूं इक्को दए समझाईआ। करे खेल सर्ब गुण तासन, गुणवन्ता वड वड्याईआ। लख चुरासी बन्न्हे नातन, नाता बिधाता आप रखाईआ। लेखा चुक्के ज़ात पातन, दीन मज़्हब ना कोए लड़ाईआ। चारे वरन इक्को ढोला आखण, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। आत्म परमात्म बणे साथन,

साचा संग निभाईआ। सोहँ शब्द अगम्मी गाथन, निरगुण सरगुण करे पढ़ाईआ। लख चुरासी वरोले माखण, नाम मधाणा इक्को पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह प्रभ कलयुग आए, एकँकार वड्डी वड्याईआ। निरगुण हो के रूप वटाए, निरवैर बेपरवाहीआ। शब्दी हो के डंक वजाए, दो जहानां रिहा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। विष्न ब्रह्मा शिव हो इकट्ठे, दर आए सीस झुकाईआ। भगत दुआरे वेखो ढट्ठे, मस्तक धूढ़ी टिक्का लाईआ। पारब्रह्म प्रभ किरपा कर चार वरन बणा भाई भैण सके, दूजा रूप ना कोए वखाईआ। इक्को बाटे सब ने अमृत छके, क्यों बैठे मुख भवाईआ। सतिगुर कोलों कलयुग जीव सारे अक्के, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। लोक लज्जया वासते टेकदे मथ्थे, अन्दरों मैल ना कोए धवाईआ। जा जा थक्के मदीने मक्के, काया मकबरा साफ़ ना कोए वखाईआ। मन्दिर शिवदुआले मट्ठ फिरदे नट्ठे, काया मन्दिर सोभा कोए ना पाईआ। पंडत पांधे मुल्ला शेख़ धुरदरगाह दे दस्सदे पते, आपणी समझ किसे ना आईआ। जे कोई गुरुदुआरे माया रखे, ग्रन्थी पन्थी झोलीआं रहे भराईआ। कोई ना जाणे प्रभ दा साचा हक़े, हक़ हकीकत समझ कोए ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जुग चौकड़ी दस्स दस्स थक्के, अन्तिम बैठे मुख भवाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड पृथ्मी सब दे चीथड़ पाटे, काया ओढन नाम नज़र कोए ना आईआ। सदी बीसवीं कोए ना करे पूरे घाटे, साचे कंडे ना कोए तुलाईआ। अल्ला राणी नट्ठी फिरे खुल्हे झाटे, मींढी सीस ना कोए गुंदाईआ। लाल मैंहदी घुली रहि गई बाटे, लाल रंग ना कोए चढ़ाईआ। चौदां तबक ते पुट्टे खाते, प्रभ दा डूंग्घा खाता नज़र किसे ना आईआ। ममता घेरे आ गई खूह निक्के एहाते, जिस घर गुरमुख बैठा डेरा लाईआ। पीर पैगम्बर कटणे पए फाके, पीर फ़कीर देण दुहाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद जिस दे गा के गए साके, सो साख्यात फेरा पाईआ। उस दे अग्गे कोई ना रहे आके, आका सब दा इक अख्वाईआ। पीर पैगम्बर जिस दे निक्के काके, सो पिता बाप वेखे चाईं चाईंआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस दे इशारयां नाल दस्सदे रहे ख़ाके, नक्शा सके ना कोए बणाईआ। सो लहिणा देणा वेखे सब दे बाके, बाकी नवीस बेपरवाहीआ। निरगुण हो के खोल्हे ताके, पड़दा दो जहान उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे कहिण जन भगतो असीं तुहाढे चाचे, पिता पुरख अकाल इक्को इक अख्वाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जो सब दी साजण साजे, साजणहारा इक अख्वाईआ। नित नवित्त असीं आए उहदे निवाजे, उहदी निवाज़श मिले वड्याईआ। लोकमात नाम संदेस दे दे गए भाजे, अन्तिम आपणा पन्ध मुकाईआ। दस्स के गए पुरख अकाल कलयुग अन्तिम आवे ग़रीब निवाजे, ग़रीब निमाणयां होए सहाईआ। सब दे

लई खुल्ले रखे दरवाज़े, बंद कवाड़ ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, विष्न ब्रह्मा शिव तेरा रहे जस गाईआ। त्रैगुण माया पंज तत दर आए नट्ठ, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। किरपा कर पुरख समरथ मिले दर तेरे वड्याईआ। जुग चौकड़ी हो गई अत, कलयुग बैठा भट्ठ तपाईआ। नाड़ बहत्तर उबली रत्त, सीतल धार ना कोए वहाईआ। साधां सन्तां छड्डया धीरज जत, सति धर्म ना कोए रखाईआ। जीव जंत चलाई मनमति, गुरमति हथ्थ ना कोए वखाईआ। कूड़ी क्रिया जूठ झूठ बण सवान भाण्डे रहे लक्क, अमृत रस रसन ना कोए लगाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार ओट लई तक्क, पुरख अकाल तेरा नाउँ गए भुलाईआ। सब दा खेड़ा होया भट्ठ, कलयुग लम्बू रिहा लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा दे हक़, हकीकत सब दी झोली पाईआ। नौ दुआरे पए कूक, नाअरा इक लगाईआ। कूड़ी तृष्ना सानूं दित्ता फूक, ठांडी धार ना कोए वहाईआ। कलयुग अन्तिम साडी चुक्के चूक, प्रभ तेरी ओट तकाईआ। नेत्र खोल्ह वेख चारे कूट, जगत लोकाई मारे धाहींआ। घर घर वड़ी दूख भूख, सुख नज़र कोए ना आईआ। सफल दिसे ना माई कुख्ख, भगत जन ना कोए जाईआ। कर किरपा पतिपरमेश्वर साचे उठ, तेरी इक्को ओट तकाईआ। जो तेरे नालों गए रुट्ठ, तिन्हां कर किरपा लै मिलाईआ। लख चुरासी तेरी दिसे पुत्त, तेरा नूर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, प्रभ तेरी सच सरनाईआ। नौ खण्ड करन पुकार, हाहाकार देण दुहाईआ। किरपा कर आप निरँकार, दर तेरे मिले वड्याईआ। साडे विच भरया हँकार, हउमें हंगता करे लड़ाईआ। सति रिहा ना कोए प्यार, प्रीती सच ना कोए कमाईआ। गुरसिख गुरू गुरु गुरसिख देवे ना कोए आधार, सगला संग ना कोए निभाईआ। चार वरन होए ख्वार, चौथे पद ना कोए समाईआ। चारे खाणी करे गिरयाज़ार, चारे बाणी दए दुहाईआ। कलयुग जीव भुल्ले अन्त गंवार, तेरा नाउँ ना कोए ध्याईआ। कूड़ी क्रिया करन प्यार, माया ममता लई प्रनाईआ। साडा लहिणा देणा क़र्ज़ दे उतार, मक़रूज आपणा लेखा दे मुकाईआ। असीं होए शरमसार, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। जो साडे अन्दर वड़या सो दिसे बेज़ार, सीतल सति ना कोए कराईआ। कर किरपा प्रभ बख्श अवगुणहार, अवगुण तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तेरी इक सरनाईआ। नौवां खण्डां विच्चों नौ पिण्ड, उठ के देण दुहाईआ। प्रभ सुणी ना जाए तेरी निन्द, निन्दक नव खण्ड पृथ्मी बैठे रौला पाईआ। किरपा कर गहर गम्भीर सागर सिन्ध, शाह पातशाह तेरी सरनाईआ। लख चुरासी तेरी बिंद, क्यों बैठी तैथों मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर,

हथ्थ तेरे वड्याईआ। नौ पिण्ड कहिण वेख नव सिख, नावां तेरे घर लगाईआ। जुग चौकड़ी मंगदे भिख, बण स्वाली अलख जगाईआ। बिन कलम दवातों लेखा दे लिख, तेरा लेख ना कोए मिटाईआ। चारों कुण्ट आवें दिस, दहि दिशा रूप वटाईआ। जे कोई सानूं पुच्छे तुहाढ्ढा केहड़ा पित, असीं कहीए पुरख अकाल पिता माईआ। गुर शब्द करीए साचा हित, दूजा संग ना कोए वखाईआ। तूं वसणा घर निज, मन्दिर इक्को डेरा लाईआ। तेरे मिलण दी किथों मिले बिध, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या आप दृढ़ाईआ। सिखां वेखो उठे निशान, नौवें आपणा बल रखाईआ। गुरमुखो गुरसिखो तुहाढ्ढे बिनां ना होए कोई प्रधान, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जिस घर झुल्ले ना सच निशान, सो मन्दिर ना सोभा पाईआ। जिस भगत ना मिले भगवान, सो भगत कम्म किसे ना आईआ। नेत्र खोल्हो वेखो जीव जहान, जागरत जोत इक रुशनाईआ। जिस नूं सारे मन्नदे काहन, शाह सुल्तान वड्डी वड्याईआ। जिस दा महल अटल उच्च मकान, सचखण्ड बैठा डेरा लाईआ। जिस दा सच्चा निशान, नौ निशान रहे जणाईआ। सत्तां दीपां अन्दर इक ज्ञान, सत्ते रंग मंज़ल मक़सूद देण चढ़ाईआ। जिस दा गुर अवतार पीर पैगम्बर भगत भगवान सूफ़ी दे के गए ज्ञान, सिफ्त नाल ढोला जस गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सब दी आसा पूर कराईआ। निशान वेख सिँघासण होया तैयार, कहे मेरी इक वड्याईआ। जिस उपर बहे आप निरँकार, निरगुण निरगुण आसण लाईआ। जिस दा सचखण्ड सोहे दरबार, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। जिस दा नज़र ना आए कोई चोबदार, दर दरबान ना कोए रखाईआ। जिस दा हुक्म समझ ना सके कोई हुक्मरान, भेव अभेद समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सिँघासण वेख वखाईआ। सच सिँघासण वेख पुरख अकाल, सब नूं रिहा जणाईआ। किरपा कर दीन दयाल, दयानिध भेव खुल्हाईआ। सारे वेख मार ध्यान, पुरख पुरखोतम रिहा दृढ़ाईआ। सब नूं इक्को मेरी आण, इक्को हुक्म समझाईआ। सुण तख्त जे तेरे उते बहे ना आप भगवान, तेरी सोभा कोई ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। श्री भगवान दया कमाउँदा ए। निरगुण शाहो शाहो भूप अख्वाउँदा ए। सीस जगदीश ताज सुहाउँदा ए। निरगुण रूप अनूप वटाउँदा ए। सच सिँघासण सोभा पाउँदा ए। साचा आसण इक लगाउँदा ए। दरगाह साची आप वडयाउँदा ए। सचखण्ड दुआर आप बणाउँदा ए। धर्म निशान इक झुलाउँदा ए। हुक्म आप फेर वरताउँदा ए। नौ दुआर खोज खोजाउँदा ए। नौ खण्ड पड़दा लौंहदा ए। नौ दुआर गुरमुख आप उठाउँदा ए। पैज स्वार वक्त

सुहाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा धुर दा वर, आपणे नाल आदि जुगादि सब कुछ श्री भगवान लिआउँदा ए। जे आए श्री भगवान, लोकमात फेरा पाईआ। तिस नाल सिँघासण विच जहान, लोकमात सोभा पाईआ। तिस गृह झुल्ले निशान, सत्त नव रूप वटाईआ। नौ खण्ड होए प्रधान, नौ दर सोझी पाईआ। नौ पुरख कर परवान, पुरख पुरखोतम आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग तेरी धार चलाईआ। सतिजुग तेरी धार चलावेगा। प्रभ सच दरबार लगावेगा। सत्त रंग निशान झुलावेगा। खेल अगम्म वखावेगा। चार वरन मेल मिलावेगा। साची सरन इक समझावेगा। नौ खण्ड रूप प्रगटावेगा। नौ दुआर वेख वखावेगा। नौ घर माण दिवावेगा। जिस घर अन्दर वड़ के आपणा पड़दा लाहवेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी कार कमावेगा। सचखण्ड दुआर सुहाएगा। पुरख अकाल सोभा पाएगा। नौ निशाने नौ खण्ड वखाएगा। नौ दर भगत परवाने, परवाना आपणा नाम फड़ाएगा। नौ गुरमुख खेल महाने, गुर गुर की गोद वखाएगा। लेखा जाण निगहबाने, लोकमात वडयाएगा। बण प्रबंधक बण वड प्रधाने, सच प्रधानगी आप कमाएगा। जिस दे दस्सदे गए निशाने, सो मार्ग इक्को लाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे लेखे आप लिखाएगा। साचे लेखे सच दरबार, हरि साचा सच जणाईआ। वज्जी वधाई विच संसार, दो जहान खुशी मनाईआ। देवत सुर गाउँदे अपार, गीत गोबिन्द ढोले अल्लाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव खुशीआं इज़हार, वाह वा तेरी खेल बेपरवाहीआ। गुर अवतार जाण बलिहार, पीर पैगम्बर सदके घोल घुमाईआ। भगत वेखण नैण उठाल, निज नेत्र नैण खुल्लाईआ। भगत भगवन्त पुरख परमात्म होया दयाल, दीनन आपणे गले लगाईआ। करया खेल इक कमाल, जिस दी समझ कोए ना पाईआ। सच दुआरा खोल्ह सच्ची धर्मसाल, धुर दरबारा दए वड्याईआ। राउ रंक एका धाम बहाल, वरन गोत दए गंवाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को भोजन दए खवाल, जुग जुग सांझी सांझ पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां वेख वखाईआ। साचा पक्ख पक्खोवाल, पारब्रह्म प्रभ आप जणाइंदा। सो नगरी होई निहाल, जिस नगर खेड़े माण दिवाइंदा। जो जन्मया सो उतरे पार, जो इस वेले दर्शन पाइंदा। किरपा करे आप कृपाल, मेहर नज़र उठाइंदा। लेखा जाणे बिरध बाल जवान, वड्डा छोटा भेव ना कोए रखाइंदा। सर्ब जीआं दा इक्को जिहा माण, श्री भगवान सब उते दया कमाइंदा। आवण जावण लख चुरासी चुकाए काण, जो दोवें नेत्र तक्क के खुशी नाल दर्शन पाइंदा। मरन तों पहलों ढाई घड़ी मिले आण, अज दा लिख्या लेखा पूर कराइंदा। गुरमुख मनमुख दोवें होए परवान, जो ग़रीब दुआरे

मेल मिलाइंदा। जे कोई गाली कढ्ढे आण, तिस दी गाली कढ्ढी अग्गे लेखे पाइंदा। ऐस वेले किसे नाल कोई फ़र्क ना रखे भगवान, कोझे कमले पार कराइंदा। झूठ सच दोवें करे परवान, सच झूठ आपणी खेल रचाइंदा। जिन्हां देवे ज्ञान, तिन्हां सच नज़री आइंदा। जिन्हां बख्शे अज्ञान, सो झूठ विच समाइंदा। इक्की अस्सू सारे होए परवान, मेहरवान मेहर नज़र उठाइंदा। जन्म मरन दुःख सब दे मिट जाण, राए धर्म ना लेखा मंग मंगाइंदा। दरगाह साची देवे माण, जीव मरदा मरदा आप बचाइंदा। साचा देवे धुर फ़रमान, गल्लां नाल नहीं भरमाइंदा। भुल्ल ना जाणा जीव अञ्याण, सतिगुर सब दा पिर अख्वाइंदा। जो चरणी डिगे आण, तिस दा बेड़ा पार कराइंदा। आदि जुगादि करनहार कल्याण, कलमा कायनात समझाइंदा। जिस ने गुर अवतार पीर पैगम्बर घल्ले महमान, सो महिमानख़ाना वेखण आइंदा। कवण अन्दर वड़ के मन्दिर चढ़ के मेरा करे ध्यान, कवण गूढ़ी नींद सौ के वक्त लँघाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे पार कराइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण प्रभ वेख आपणे बंदे, तेरी बंदगी गए भुलाईआ। तेरी माया कीते गंदे, तेरी कूड़ी वासना डेरा रही ढाहीआ। असीं दस्स के आए सदी बीसवीं कलयुग आए आपणे कन्ढे, पिछला पन्ध मुकाईआ। गुरमुख विरला जुग जन्म दी टुट्टी गंढे, प्रभ डोरी तन्द बंधाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो तेई अवतारां भगत अठारां ईसा मूसा मुहम्मद नानक गोबिन्द धारा नाल हंढे, सो अन्तिम कट्ठे कीते आईआ। जिन्हां नूं जीव जहान कहिण गंदे, सो प्रभ किरपा कर के कीते चंगे, चंगी तरा आपणे नाल रलाईआ। बण तरखाण सोहँ रंदे रंदे, रंदा मारे वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची मजलस लेखे लाईआ। साची मजलस वेख मख़लूक, ख़ालक ख़लक दया कमाईआ। सारे वेखो आपणा अरूज, घर मुर्शद डेरा लाईआ। चढ़ के भगतां वाली पाओ मंज़ल मकसूद, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। आपणा आप जाए सूझ, कूड़ी सोच रहे ना राईआ। जगत इक्की जाए बुझ, ततव तत ना कोए तपाईआ। सतिगुर प्रीती अन्दर जाओ रुझ, जे गुर मिले दया कमाईआ। कबीर जुलाहे कोलों लओ पुच्छ, जो सब नूं गया समझाईआ। बेशक मैं ताणी विच चलावां कुच, आपणा साढे तिन्न करोड़ रोम साफ़ कराईआ। जीहनूं जगत लोकाई समझे तुछ, मेरा भगवान सद गोदी रिहा उठाईआ। सारे उठ के ओस प्रभू नूं जावो झुक, जो सचखण्ड वसे डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, सच दरबार विच संसार, ग़रीब निमाणयां कर प्यार, देवणहारा सच सहार, सीस जगदीश हथ्थ टिकाईआ। पक्खोवाल कहे क्यों कीता पक्ख, प्रभू मेरा भेव दे समझाईआ। कलयुग अन्त क्यों मेरा होया जस, की मेरी वड्याईआ। मैं आपणा आप वेखां ख़ाली हथ्थ, वस्त

७६७ १५

कोई नज़र ना आईआ। किरपा करके सच दस्स, दर तेरे इक अरज़ोईआ। श्री भगवान कहे मैं देवां मत्त, धुर दा हुक्म इक जणाईआ। त्रेता सतिजुग द्वापर बीते जग, कलयुग अन्तिम आईआ। बल राजा इस धरनी उते आ के ऐस धाम ते गया थक्क, घोड़ा बाहर वार दित्ता बंधाईआ। किहा भगवान तक्क, बेपरवाह तेरी सरनाईआ। मेरे नाल आ के हस्स, खुशी खुशीआं नाल मिलाईआ। थल्लउँ धरनी रोई नेत्र अथ्थ, नैणां नीर वहाईआ। मेरा भगवान किथे रिहा वस, मैनूं दे रिहा जुदाईआ। मैं उहदे अग्गे डाहवां हथ्थ, ख़ाली झोली रही वखाईआ। मेरे नक्क ना सोंहदी नथ्थ, मींढी सीस ना सोभा पाईआ। मेरा नज़र ना आवे जत, मेरी धीर ना कोए धराईआ। जिन्ना चिर प्रभ मेरे उते चरण ना देवे रख, मेरी शांत ना कोए कराईआ। कवण वेला प्रभ देवे मेरा हक़, मैं मंगां वाहो दाहीआ। उह सब दा पिता मात, वड दाता वड्डी वड्याईआ। उस दे कोलों मंग दात, देवणहार सहिज सुखदाईआ। धरत मात दोए जोड़ के हाथ, ढह पई सरनाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाश, आपणी दया कमाईआ। सच स्नेहड़ा जावां आख, जुग चौकड़ी ना देणा भुलाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट हो के आवां पुरख समराथ, निरगुण नूर जोत चमकाईआ। तेरे उते लावां भाग, तेरे आंढ गवांढ गुरमुख देणे जगाईआ। फेर तेरा जगावां चिराग़, आप आपणे हथ्थ टिकाईआ। सदी बीसवीं लावां भाग, भागां भरी दिसे सब दी माईआ। धरत मात तेरी खुल्हे आंख, पड़दा तेरा दए खुल्हाईआ। जिन्ना चिर ना कहें बस, ओनां चिर देवे दरस बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। धरनी कहे प्रभू जिस वेले आवेंगा। आपणी दया कमावेंगा। सन्त सुहेले नाल रलावेंगा। गुर चेले गंढु वखावेंगा। साचे मेलें सत्त रंग, मेला इक बणावेंगा। सज्जण सुहेला नज़री आवेंगा। लख चुरासी नालों हो के वेहला, मेरी तोड़ निभावेंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक्को वर, किस बिध आपणा दरस दिखावेंगा। जिस वेले प्रभ आवेंगा। मेरे उते चरण टिकावेंगा। सज्जा अंगूठा मैनूं लावेंगा। मेरा रुठड़ा भाग मनावेंगा। घर सुखड़ा इक उपजावेंगा। मेरा जग दा दुखड़ा अन्त मिटावेंगा। मेरा मुखड़ा उजल करावेंगा। मैं वेखां तेरयां सोहणयां पुत्रां, जिन्हां नूं आपणे नाल रलावेंगा। एथे कोई ना दिसे नाशुकरा, जो तेरा दर्शन पावेगा। तूं कर के बचन कदे ना मुकरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, किस वेले मेरे सीस हथ्थ टिकावेंगा। जिस वेले दया कमाएगा। पुरख अबिनाशी फेरा पाएगा। तेरे वल ध्यान लगाएगा। पिछला लेखा झोली पाएगा। सिर तेरे हथ्थ टिकाएगा। समरथ वेख वखाएगा। फड़ गोदी आप बहाएगा। तेरा कट के धुर दा मस्तक रोग, धुर संजोगी मेल मिलाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

देवणहारा साचा वर, सच तेरा लेख लिखाएगा। की प्रभू तूं मेरा पक्ख करेंगा। प्रतख रूप धरेंगा। समरथ लोकमात वड़ेंगा। महिमा अकथ ढोला पड़ेंगा। जन भगतां अन्दर साचे मन्दिर चढ़ेंगा। गुर चेले विछड़े फड़ेंगा। चरण कँवल आपणे धरेंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, कवण करनी हरि जू करेंगा। तेरा अन्त करांगा पक्ख, हरि सतिगुर आप जणाईआ। निरगुण धार रूप समरथ, शाह पातशाह वेस वटाईआ। लेख चुका नौ खण्ड, ब्रह्मण्ड खोज खोजाईआ। जन भगत वंडां तेरी वंड, तेरा संग रखाईआ। सदी सदीवी आवां लँघ, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। तैनूं चाढ़ अगम्मा रंग, रंग साचा दयां वखाईआ। तेरी पूरी करां मंग, आसा आसा नाल रलाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नित नवित्त जाए हंढु, प्रभ सब दी औध मुकाईआ। तूं पल्ले बन्न्ह गंढु, तेरा लेखा वेखे बेपरवाहीआ। दर आ के पावे ठंड, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। पक्ख करेंगा बण के वाली, दो जहान तेरी वड्याईआ। मेरी गोद ना रखीं ख़ाली, हरिजन देणे नाल मिलाईआ। कलयुग मेटणी रैण अन्धेरी काली, साचा नूर कर रुशनाईआ। मैं तेरी घाल घाली, बैठी ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरे हथ्थ मेरी वड्याईआ। तेरा पक्ख करां इक्को वार, एकँकार रिहा जणाईआ। प्रगट हो के वाली दो जहान, दोहरी तेरी धार बंधाईआ। गुरमुख गुरसिख कर तैयार, हरिजन हरिभगत दए वड्याईआ। चार कुण्ट वेख विचार, दहि दिशा भेव खुल्ह्लाईआ। हरिसंगत साची कर तैयार, सोहणा इकठु बणाईआ। हुक्म दए आप निरँकार, धुर संदेसा दए समझाईआ। नौ पिण्ड दा इक दुआर, नौ खण्ड दए समझाईआ। नौ खण्ड दा इक निशान, नौ निशान दए झुलाईआ। नौ निशान दा इक हुक्मरान, नौ दुआरे डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवणहार सदा वड्याईआ। सुण धरनी धुर दी बात, सो सतिगुर आप जणाईआ। कलयुग अन्तिम वेखे पुरख अबिनाश, निरगुण आपणी दया कमाईआ। हरिसंगत रखे आपणे साथ, सगला संग निभाईआ। चल के आए तेरी पूरी करे ख्वाहिश, तृष्ना मेटे सहिज सुखदाईआ। तेरे उते बहि के तेरे नाल रहि के तैनूं सच कह के जन भगतां नाल करे सच बलास, सोहला ढोला राग सुणाईआ। गुर अवतार चल के वेखण आवण खेल तमाश, हरि जू की की खेल रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, इक्को करे तेरा पक्ख, निरगुण रूप हो प्रतख, वाली वारस आप हो जाईआ। धरनी तेरा हिस्सा पक्खोवाल, प्रभ पक्ख पालण आईआ। खोल्ह् अक्ख वक्त संभाल, सुहञ्जणी रुत्त वधाईआ। किरपा करी दीन दयाल, दीनन गले लगाईआ। सतिजुग

बणे सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्को नज़री आईआ। एथे चल के औण शाह कंगाल, ऊँच नीच मिल मिल हरि का ढोला गाईआ। बाकी लेखा देवे आप भगवान, भरम भुलेखा कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। धन्न भाग प्रभ आया ठाकुर, मेरे वज्जी घर वधाईआ। मोहे निमाणी दित्ता आदर, मेहर नज़र उठाईआ। बेड़ा करया पार डूंघे सागर, भँवरी भँवर ना कोए रुढ़ाईआ। मैं नेत्र तक्कां भगतां देवे आदर, गुरमुखां माण वड्याईआ। इक्को मौला निरगुण नज़री आए करीम कादर, करता बेपरवाहीआ। पड़दा लाह के वेखां चादर, चारों कुण्ट करे रुशनाईआ। जे अग्गे हो के वेखां नज़री आए बेटा तेग़ बहादुर, जिस दा रूप रंग समझ कोए ना पाईआ। जे नीवीं बहि के वेखां सब रूहां दे उते आशिक, माअशूक वेखे सर्ब लोकाईआ। जे नेत्र उतांह चुक्क के वेखां इस दे हुक्मे अन्दर लग्गी आतश, दो जहान ना कोए बुझाईआ। जे चरणी डिग के वेखां श्री भगवान नज़री आए ख़ालस, दूजा रला ना कोए रलाईआ। जिस मेरी निंद्रा लाही आलस, गुरसिख मेरी छाती बहाईआ। वेखो सिखो आया बण के सालस, प्रभ मेरा सच्चा माहीआ। एथे किसे दी चले ना कोए सफ़ारश, जो सिर निवावे सो पार लँघ लँघ जाईआ। इस दी लिखी कोई ना मेटे इबारत, कलम शाही ना कोए वड्याईआ। आपणा आप करे तुआरफ़, दूजा समझ कोए ना पाईआ। जिस भाग लगाया भारत, सो नौ खण्ड करे रुशनाईआ। इस दी कोई ना करे आड़्हत, नाम सौदे हट्ट ना कोए तुलाईआ। मैं खुशी होई निमाणी मेरी मन्नी जुग जन्म दी ढारस, शरधा पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी लज्जया लई रखाईआ। धरनी तेरी लज्जया नहीं लज्जया भगत, भगत भगवान वड्याईआ। तूं किसे कम्म ना आवें बिन मेरे भगत, बिन भगतां भगवान तेरे उते कदी ना आईआ। जे तूं समझें कम्म मेरा फ़कत, श्री भगवान इक्को हुक्म नाल समझाईआ। बिनां गुरमुखां गुरसिखां धरनी तेरी कोई ना होवे बरकत, तेरी गोद ना कोए सुहाईआ। कलयुग कूड़ी दुनिया करदे ऐशो इशर्त, वेसवा रूप वटाईआ। जिन्हां आपणी मेटी फ़ितरत, तेरा फ़ातया रहे पढ़ाईआ। तूं वेख चोटी चढ़ के सिखर, कलयुग चारों कुण्ट रिहा आपणा पल्लू फैलाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा करदे गए ज़िकर, रसना जिह्वा ढोला गाईआ। सो पुरख अकाल नानक शब्द दा गाया आपणी धारों आया उतर, उतर पूरब दक्खण पच्छिम समझ कोए ना आईआ। नाल लै के आया गोबिन्द पुत्तर, शब्दी रूप अनूप वटाईआ। गोबिन्द पुरख अकाल दोहां कोलों कोई ना जावे मुक्कर, खण्डा नाल रिहा चमकाईआ। कलयुग विच कोई रहिण ना देवे बुच्चढ़, जो जीव हत्या रहे कमाईआ। ग़रीब निमाणयां अग्गे कोई ना जावे नुच्चढ़, शाह सुल्तानां ख़ाक मिलाईआ। कोझयां कमलयां निताणयां निमाणयां

चुक्के कुच्छड़, फड़ बांहों गले लगाईआ। कोई दिसे चार कुण्ट ना भिटड़, आत्म ब्रह्म सर्ब समझाईआ। गल लावे भरीआं चिकड़, दुरमति मैल धो वखाईआ। जन भगतो गुरमुखो प्रभ नूं तुहाड्डा फ़िकर, गूढ़ी नींद डेरे लाईआ। सूरबीर योद्धा बलवान सदी बीसवीं धर्म मुकामे आवे नितर, पड़दा उहला दए उठाईआ। जिस दा किसे ना चित्रया चित्र, सो चित्रकार सब दा लेखा दए वखाईआ। लख चुरासी जीव जंत सारे वेंहदे रहि जाण बिटर बिटर, कलयुग नैण अक्ख वेले अन्त शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चार वरन तेरा धाम वड्याईआ। चार वरन तेरा वज्जणा डंका, प्रभ साचा आप वजाईआ। चार वरन तेरा मुक्कणा शंका, संसा रहे ना राईआ। चार वरन तेरा इक्को पत्तणा, गऊ ग़रीब ऊँच नीच सोभा पाईआ। चार वरन तेरा इक्को कन्ता, पुरख अकाल नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्नेहड़ा इक सुणाईआ। सच स्नेहुणा सुण लै जग, जग जीवण दाता दए सुणाईआ। करे खेल सूरा सरबग्ग, शाह पातशाह वड्डी वड्याईआ। सृष्ट सबाई लग्गी बुझावे अग्ग, अमृत मेघ इक बरसाईआ। जन भगतां बन्ने भगती तग, तन्द नाम बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लोकमात वेख वखाईआ। चार वरन जाणा जाग, हरि जागरत जोत जगाईआ। सतिजुग साचे लग्गणा भाग, कलयुग भज्जणा वाहो दाहीआ। सति धर्म दा दीपक जगे चिराग़, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। चार वरनां बणना सज्जण साक, नाता इक्को इक रखाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी दिसे इक जमात, इक्को पट्टी दए पढ़ाईआ। सर्ब जीआं दा इक्को एक पुरख अबिनाश, दीन दयाल वड्डी वड्याईआ। आत्म परमात्म सब ने गौणी गाथ, आत्म परमात्म मेला सहिज सुभाईआ। कलयुग अन्तिम मेटे अन्धेरी रात, धुर दाता बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, चार वरन रिहा समझाईआ। चार वरन तेरा नाता, दो जहानां वाली आप बंधाइंदा। खुशी मनाए धरती माता, जिस उपर बहि के हुक्म सुणाइंदा। गुर अवतार कहिण शाह पातशाह, पीर पैगम्बर सिफ्त सालाइंदा। भगत भगवान अग्गे करन अरदासा, निउँ निउँ सीस झुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निहकलंक नरायण नर, धरनी तेरा पूरा करे वर, कीता कौल पूरा आप कराइंदा। तेरा कौल पूरा करन आया, हरि सतिगुर फेरा पाईआ। हरिसंगत साचा जोड़ जुड़ाया, वज्जी नाम वधाईआ। माण ताण इक रखाया, चार वरन सरनाईआ। सच निशान जिस धाम झुलाया, सो भूमिका सोभा पाईआ। सतिजुग साचे मिले वडयाया, वड्डी ख़ोर रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लहिणा देणा देवे वर, वर दाता वेस वटाया। लहिणा देणा वर होया पूरा,

मुक्की जगत जुदाईआ। पाया दरस प्रभ हाज़र हज़ूरा, घर मिल्या बेपरवाहीआ। बल वेखे दूर दुराडा सचखण्ड की प्रभ बचन कीता पूरा, जो मेरे नाल कौल गया निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। बल कहे वाहवा मेरे भगवान, वड्डी तेरी वड्याईआ। तूं भूमी लई मैथों दान, आपणी झोली पाईआ। उह भूमी मंगे तैथों दान, आपणी मंग मंगाईआ। मैं वेखां मार ध्यान, नेत्र नैण उठाईआ। प्रभ तूं पूरा बचन कीता आण, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। किरपा कर के मैनूं दरगाह दित्ता माण, सिँघ गुरदयाल मिली वड्याईआ। पन्द्रां कत्तक असीं सारे रल के तेरे अग्गे करना इक स्वाल, चार जुग जो बैठे झोली पाईआ। तूं सानूं खुशीआं नाल देवीं जवाब, असीं मंगणा चाईं चाईंआ। जिस वस्त दा लैंदे रहे ख्वाब, नित नवित्त ध्यान लगाईआ। की उस दा लेखा देवें हिसाब, पिछला खाता फोल फोलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बल सच दए जणाईआ। पंजे मिल के करो बेनन्ती, सचखण्ड निवासी आप जणाईआ। वेखो आपणी बीहवीं सम्मती, सम्मत गया वक्त लँघाईआ। अग्गे बणे अगम्मी बणती, बनावट नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सब दी आसा पूर कराईआ। सब दी आसा पूर करावांगा। निराशा रूप ना कोए वखावांगा। पुरख अबिनाशा धार चलावांगा। राखा बण के निरगुण हो के मात आवांगा। साका धुर दा फोल फोलावांगा। दाता देवणहार आप अख्वावांगा। ख़ाली कोई ना दर तों मुड़दा, जिस नूं आपणे दर बुलावांगा। सच प्रीती नाल जुड़दा, जिस नूं आपणी रीत जणावांगा। सतिगुर दर्शन सौदा नहीं थुड़ दा, थोड़ीउँ बहुती कर वखावांगा। एह रस मिट्ठा नहीं कौड़ दा, अमृत रस चुआवांगा। सतिगुर बंदा नहीं फिरदा तुरदा, निरगुण नूर चमकावांगा। किसे कुक्खों कदे प्रभू नहीं जम्मदा, हरख़ सोग ना कोए रखावांगा। आपणी करनीउँ कदे ना मुड़दा, करनी करता कार कमावांगा। कलयुग वेखो बेड़ा रुढ़दा, जन भगतां पार लँघावांगा। कूड़ी क्रिया वेखो हुन्दी मुर्दा, सच सुच आप प्रगटवांगा। बचन पूरा होवे गोबिन्द गुर का, हरि का नाम इक सालावांगा। लख चुरासी फ़ुरना इक्को फ़ुरदा, आत्म परमात्म बोल पढ़ावांगा। लेखा जाणा अगम्मी धुर दा, धुर मस्तक वेख वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मेल इक मिलावांगा। अचरज खेल वखावांगा। सज्जण सुहेल बण के आवांगा। धाम नवेल डेरा लावांगा। गुर चेल पन्ध मुकावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साचे सोभा पावांगा। प्रभू साचा कवण घर सुहाएंगा। जिस वेले मात आइंगा। निरगुण रूप वटाइंगा। हाज़र हज़ूर नज़री आइंगा। मनसूर वांग फेर ना सूली चढ़ाएंगा। शमस तबरेज़

वांग ना खल्ल लुहाइंगा। कबीर वांग ना जल रुढ़ाइंगा। प्रहिलाद वांग ना थम्म तपाएंगा। ध्रू वांग ना जंगल घलाएंगा। की कर किरपा, आपणी मेहर नज़र नाल तराएंगा। की फेर वी पाएंगा बिपता, कलयुग अन्त अन्त रुलाएंगा। सानूं पूरा करा निश्चा, दर तेरा इक्को नज़री आएगा। जे तेरे हो के जूनी पईए कीट विश्टा, प्रभ तेरा नाम ना कोए ध्याएगा। सानूं नहीं लोड़ स्वर्ग बहिश्ता, बहिश्त स्वर्ग तेरा भगत कदी ना जाएगा। जिन्ह रख्या तेरा इष्टा, सो अन्त तेरी जोत मिल जाएगा। इक्की अस्सू दा सच्चा परविश्टा, पतिपरमेश्वर सब उते दया कमाएगा। एह धुर दी कराए लिख्ता, गुरमुख लेखक कलयुग अन्त वखाएगा। बाणी बोध दा बण के बकता, बख़तावर आपणा हुक्म मनाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मनसा सब दी पूर वखाएगा। धरनी कहे मेरी आसा पूरी, नव नौ चार वज्जी वधाईआ। मैं दोए जोड़ खड़ी हजूरी, हरि दर्शन इक्को पाईआ। प्रभ मेरी कट दिती मज़बूरी, मुश्किल कोई रहिण ना पाईआ। मेरे उते संगत बहि के मैनूं दिती धूढ़ी, मेरी ख़ाक ख़ाक लेखे लाईआ। ना माण रिहा मग़रूरी, अभिमान नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा लेखे पाईआ। मेरा लेखा लेखे लहिणा पा, मेरे मेहरवान मेहरवाना। मैं दर निमाणी बैठी सीस झुका, मेरे सूरबीर मर्द मर्दाना। मेरी देणी तकदीर मिटा, मेरे कातब कलम मारनहार निशाना। मेरा ज़ंजीर देणा तुड़ा, लेखा चुक्का शरअ छुरी ईमाना। मेरा मन्दिर देणा सुहा, चार वरनां मेल मिलाना। मेरा खण्डर देणा वसा, गुरमुख साचे नाल रलाना। मेरा अन्धेरा देणा चुका, निरगुण नूर जोत प्रकाश कर भाना। मैनूं मेरा तेरा भुल्ले ना नाँ, तूं मेरा मैं तेरा नाता जुड़या श्री भगवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर आ के दित्ता वर, मेरी मनसा मिटया निशाना। मनसा पूरी करी धौल, धरनी धरत दए वड्याईआ। नूर इलाही एको अवल्ल, एकँकार फेरा पाईआ। पूरा कीता कौल कँवल, बेपरवाह सहिज सुखदाईआ। जन भगतां अन्दर जाए मवल, मौला रूप वटाईआ। पार करे भवजल, शौह दरया ना कोए रुढ़ाईआ। पावे सार जल थल, महीअल खोज खोजाईआ। घर वखाए अबचल, जिस घर वसे बेपरवाहीआ। गुरमुख वड्याई तेरी बल, बल तेरा इक्को नज़री आईआ। इक्की अस्सू सब दा स्वाल होया हल्ल, जगत चुरासी कटी फाहीआ। प्रभ मिलण दा इक्को फल, आवण जावण रहिण ना पाईआ। रल मिल ढोला गाओ श्री भगवन, धुर दा राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा धुर दा दान, जै जै जैकार दो जहान गुर अवतार पीर पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव दर दुआर आ के जस जस जस नाल मिल के रहे गाईआ।

✪ २२ अस्सू २०२० बिक्रमी मंगल सिँघ दे गृह पक्खोवाल ज़िला लुधियाणा ✪

सतिजुग कहे प्रभ बख्श दात, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। सच प्रीती दे नात, बिधाते आपणी दया कमाईआ। चार वरन बणा सज्जण साक, साचा संग रखाईआ। घट अन्धेरा खोल्ह ताक, मेहर नज़र उठाईआ। पूरा कर भविक्ख्त वाक, भेव अभेद जणाईआ। कलयुग अन्तिम मुक्के वाट, मार्ग साचा इक समझाईआ। सच प्रीती जुड़े साक, सज्जण इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। साचा नाता जोड़ प्रभ, हरि जू तेरे हथ्थ वड्याईआ। चार वरन मेल झब्ब, झगड़ा जगत द्वैत मिटाईआ। अमृत झिरना दे नभ, रस इक्को इक वखाईआ। जगत बन्धन तुट्टे हद्द, घर तेरा नज़री आईआ। आत्म परमात्म काया मन्दिर अन्दर गाए छन्द, अनहद रागी राग अल्ह्लाईआ। सुरती शब्दी मिल के मिले सच्चा अनन्द, रस इक्को झोली पाईआ। करवट लै स्वामी बदल आपणी कंड, बेनज़ीर नज़र नैण उठाईआ। जुग चौकड़ी गई हंढ, तेरा वेला गया आईआ। फिरी दरोही नौ खण्ड, नव नौ चार रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे साचा वर, दर तेरे सीस झुकाईआ। सतिजुग कहे प्रभ दीन दयाल, पतिपरमेश्वर तेरी सरनाईआ। कर किरपा मन्न मेरा स्वाल, ख़ाली झोली रिहा वखाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरी सच सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्को नज़री आईआ। जिस घर मंगण शाह कंगाल, राज राजान ध्यान लगाईआ। सो दर वेख श्री भगवान, निरगुण निरवैर फेरा पाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत नित तेरा राह तकान, निज नेत्र नैण उठाईआ। तूं वेख प्रभ जू आण, मेहरवान दया कमाईआ। साचा दे इक ज्ञान, आत्म अन्तर बूझ बुझाईआ। कूड़ा लहिणा चुक्के जगत जहान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, मेरी साची धार बंधाईआ। सतिजुग कहे मेरी धार बन्न्ह, प्रभ वड्डे तेरी वड वड्याईआ। साचा राग सुणा कन्न, धुर दी बाणी बोध अगाध समझाईआ। कर प्रकाश अन्धेरे अन्न्ह, निज नेत्र दे खुल्ह्लाईआ। आप बणा आपणे जन, सिर समरथ हथ्थ टिकाईआ। तेरे अग्गे मन तन, तन मन तेरा रूप नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, मेरी आसा पूर कराईआ। सतिजुग कहे मैं तेरा बच्चा, प्रभ मिले चरण सरनाईआ। इक्को बचन करना सच्चा, साची सिख्या दे दृढ़ाईआ। हरि भगत तेरा कोई ना रहे कच्चा, जिस मिल्या बेपरवाहीआ। जगत ज़ंजीरी लाह रस्सा, शरअ शरीअती डेरा ढाहीआ। तेरा किला कोट इक्को सस्सा, होड़ा निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। हाहा कहे तैनूं हच्छा, टिप्पी हँ ब्रह्म समझाईआ। दोहां मिल के आत्म परमात्म नाता जुड़े सका, साचा बन्धन इक्को पाईआ। जोती जोत

८०४

१५

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, साची सिख्या इक वखाईआ। साची सिख्या दे ज्ञान, चार वरन मिले वड्याईआ। साचा मन्दिर वखा मकान, दर घर साचे खुशी वखाईआ। साचा नाद शब्द वज्जे धुन्कान, धुन अनादी राग अल्ह़ाईआ। साचा पूजा पाठ दे ईमान, सिमरन सच्चा इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, साचा मार्ग जगत जणाईआ। साचा मार्ग दस्स प्रभ आप, आपणी दया कमाईआ। नित नवित्त रहे तेरा साथ, सगला संग निभाईआ। मिटे रैण अन्धेरी रात, साचा चन्द इक चमकाईआ। तूं मेरा मैं तेरी ज़ात, निरगुण निरगुण अंस बंस सरबंस रूप वटाईआ। मेल मिला कमलापात, नाता साचा संग निभाईआ। सतिजुग साची दे दात, दातार तेरी वड्याईआ। चार वरन बणे इक जमात, चारों कुण्ट खुशी वखाईआ। सृष्ट सबाई नारी पुरुष बन्ह़ नात, नाता तन नाल मिलाईआ। अन्दर खोल्ह़ बंद ताक, दोहां देणा नाम जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। सतिजुग तेरी धार चलावांगा। निरगुण निरवैर रूप वटावांगा। चार वरन गंढ पवावांगा। साचा संग आप निभावांगा। नाम मृदंग शब्द सुणावांगा। कारज अनन्द इक वखावांगा। सुरती शब्दी बेड़ा बन्न, खेवट खेटा रूप वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सृष्ट सबाई देवां इक्को छन्द, सोहला साचा राग अलावांगा। सोहँ साचा राग प्रभ अल्ह़ाएगा। महाराज आपणी दया कमाएगा। शेर सिँघ रूप बण के, दो जहानां भय वखाएगा। विष्नूं विश्व भण्डार भर के, दो जहानां आप वरताएगा। भगवान साचे तख्त चढ़ के, जै जैकार सर्ब कराएगा। सतिजुग तेरा मार्ग धरत उपर धर के, धरनी धवल आप समझाएगा। चार वरन जगत नाता करन सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जै जै कर के, सच विहारा इक वखाईआ। साचा ढोला इक्को पढ़ के, दर तेरे अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग रीती आप चलाए बिन मन्दिर मसीती, आत्म परमात्म साची बूझ बुझाईआ। आत्म परमात्म दस्स के पती, पतिपरमेश्वर दए जणाईआ। सुरत सवाणी जणाए नार सती, धीरज जत इक दृढ़ाईआ। दोहां खेल करे पुरख समर्थी, समरथ आपणी धार चलाईआ। नाम गाना बन्ह़े हथ्थीं, डोरी तन्द ना कोए तुड़ाईआ। पीआ प्रेम मिल के खुशी वखाए सखी, साचा मंगल इक्को गाईआ। दोहां वा लग्गे कदे ना तत्ती, जो पुरख अकाल चरण ध्यान लगाईआ। आदि जुगादि गुर अवतार पीर पैगम्बर साची दे के गए मती, शब्द संदेसे जगत सुणाईआ। घर विच घर मिलाओ अक्खी, आख़र आपणा भेव मिटाईआ। दौलत धन दाज सच्चा लओ नाम हट्टी, दूजी वस्त कम्म कोए ना आईआ। प्रेम प्रीती अन्दर खट्टो खट्टी, खटका मुक्के जगत लोकाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग तेरा मार्ग श्री भगवान आप लगाईआ। तेरा मार्ग लग्गे जग्ग, जग जीवण दाता आप लगाईआ। सृष्ट सबाई इक्को बन्ने तग, तन्दन तन्द इक वखाईआ। चार वरन इक सुणाए छंद, छन्द इक्को इक समझाईआ। चार कुण्ट इक वखाए हद्द, हदूद अवर ना कोए समझाईआ। मेल मिलाए जो पूरब जन्म कर्म होए अड्ड, नाता जगत जोड़ जुड़ाईआ। लेखा जाण रत्ती रत्त, रत्ती रत्त सोभा पाईआ। सतिजुग तेरी ब्रह्म मति, पारब्रह्म दए समझाईआ। चार वरन अठारां बरन चले सच्चा रथ, रथ रथवाही आप आपणी सेव कमाईआ। रल मिल सारे आत्म परमात्म सोहँ ढोला गाउणा गथ, गा गा शुकर मनाईआ। जगत विवहार विच संसार पुरख नार इक्को नाम करे वस, वास्ता पुरख अकाल आपणे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मार्ग लोकमात मार झात शब्द अगम्मी दए दात, दाता दानी आप वखाईआ।

८०६

१५

✪ २२ अस्सू २०२० बिक्रमी नाज़र सिँघ दे गृह पक्खोवाल ज़िला लुधियाणा ✪

सति धर्म होए प्रकाश, सच सुच देवे प्रभ वड्याईआ। कूड़ा अन्ध जाए विनास, अबिनाशी करता डेरा ढाहीआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ पाए साची रास, निरगुण गोपी काहन उपाईआ। जन भगतां वसे सदा पास, निराकार निरवैर आपणा संग रखाईआ। जन्म जन्म कर्म कर्म दी पूरी करे आस, आसा तृष्ना मेट मिटाईआ। आत्म परमात्म देवे साथ, घर सज्जण संग निभाईआ। साची पूजा दस्से इक्को पाठ, मन्त्र अन्तर इक जणाईआ। सरोवर नुहाए साचे ताट, घाट इक्को इक चढ़ाईआ। आवण जावण मुकावे वाट, लख चुरासी पन्ध मुकाईआ। सतिजुग साची देवे दात, वस्त अमोलक आप वरताईआ। सोहँ नाम वड करामात, कर्म कांड डेरा ढाहीआ। चार वरन बणाए इक जमात, इक्को नूर ज़हूर कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मार्ग इक लगाईआ। साचा मार्ग सच सन्तोख, सति सतिवादी आप लगाईआ। जन भगतां मेले धुर संजोग, घर मेला सहिज सुभाईआ। नाम अगम्मी देवे चोग, सोहँ हँसा माणक मोती रूप वटाईआ। जन्म कर्म दा कटे रोग, दुरमति मैल धवाईआ। लेख चुकाए हरख़ सोग, चिन्ता ग़म ना कोए रखाईआ। हो सहाई लोक परलोक, दो जहानां वेख वखाईआ। सच लगाए नगारे चोट, शब्द अनादी धुन उपजाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, कूड़ अँध्यारा दए गंवाईआ। सृष्ट सबाई कढ्ढ खोट, सच सुच इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नाम जणाए धुर श्लोक, धुर दी बाणी बाण निराला तीर लगाईआ। सति धर्म देवे सतिवाद,

सति सतिवादी दया कमाइंदा। वेखे खेल ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड भेव चुकाइंदा। जिस रचना रची आदि, सो जुग चौकड़ी हुक्म वरताइंदा। दो जहान सुणाए धुर दा नाद, शब्द संदेसा राग अलाइंदा। सन्त सुहेले सज्जण काढ, गुरमुख आपणे रंग रंगाइंदा। आत्म परमात्म काया मन्दिर अन्दर करे लाड, प्रेम प्रीती साची रीती इक समझाइंदा। मेट मिटाए वाद विवाद, विख अमृत रूप वटाइंदा। सुरती शब्दी रच के काज, घर सुअम्बर इक वखाइंदा। दोहां मिल के बणे धर्म समाज, साचा मंगल सोहला इक्को राग सुणाइंदा। तेरा मेरा बणया साथ, जगत विछोड़ा पन्ध कटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वस्त अमोलक देवे दात, सतिजुग साची धार आप जणाइंदा। सति सन्तोख धीरज देवे दान, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। धर्म झुलाए इक निशान, बरन वरन सरनाईआ। मन्दिर वखाए धुर मकान, सचखण्ड साचे होए रुशनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे सीस झुकाण, दर बैठे अलख जगाईआ। दरवेश हो के मंगण दान, भगत सन्त ख़ाली झोली अग्गे डाहीआ। दाता दानी वड मेहरवान, देवणहार इक अख्वाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर निरगुण सरगुण खेल कर महान, महिमा अकथ कथ दए प्रगटाईआ। सतिजुग साचे तेरा लेखा देवे आण, अनडिठड़ी आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त मिले सतिगुर मति, मन मति कूड़ी क्रिया दए मिटाईआ। धीरज जत सति धर्म, धर्म आत्मा आप जणाइंदा। निहकर्मी करे आपणा कर्म, काया कपड़ वेख वखाइंदा। जन भगतां खोल्ह हरन फरन, नेत्र नैण अक्ख जणाइंदा। अन्दर वड़ के आए फड़न, बाहरों रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। साहिब सतिगुर तरनी तरन, तारनहारा एकँकारा आपणी दया कमाइंदा। नाता तोड़ बरन वरन, ज़ात पात डेरा ढाइंदा। सर्ब जीवां देवे इक्को सरन, सांझा पीर हरि अख्वाइंदा। मूर्ख मूढ़े झूठे धंदे मरन, गुरमुख गुरसिख इक्को बूझ बुझाइंदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी सद मंगो इक्को सरन, आदि जुगादि जुग चौकड़ी जो जन चरण कँवल कँवल चरण इक्को रंग वखाइंदा।

काया अन्दर ख्वाहिश दो, घर घर विच डेरा लाईआ। इक बन्धन जगत मोह, अट्ठे पहर संग निभाईआ। इक ख्वाहिश बण निरमोह, राह तक्के बेपरवाहीआ। किरपा कर जिस नाल आपणी ख्वाहिश देवे छोह, सो ख्वाहिश ख़ालस रूप वटाईआ। दर आ के सुणन अगम्मी सो, अक्ख प्रतख भेव चुकाईआ। कवण धार काया मन्दिर अन्दर करे टोह, वेखे अनडिठड़ा थाईंआ। जिस प्रेम प्रीती विच मिले लो, लोकाई प्रकाश बैठण सीस झुकाईआ। सो ख्वाहिश वेखे उह, जिस काया अन्दर ख्वाहिश ख्वाहिश विच प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तर इच्छया इक जणाईआ। अन्तर इच्छया मंज़ल महिबूब, महिदूद नज़री आईआ। नज़री आए साबत सबूत, सिदक सबूरी दए निभाईआ। भाग लगाए

काया कलबूत, कलमा इक जणाईआ। नज़री आए नक्शा अरूज, दर घर साचे खुशी मनाईआ। चढ़ के पेखत मंज़ल मकसूद, मक़सद आपणा हल कराईआ। साची ख्वाहिश देवे आपणा इक सबूत, अन्तर अन्तर इक लिव लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा डूंघी भँवरी गहर गवरी खाईआ। अन्तर ख्वाहिश सच पुरख, पेखत जगत लोकाईआ। नेत्र ख्वाहिश हरि दरस, सरवण सुणन जस बेपरवाहीआ। मन ख्वाहिश होए हरन फरन, इक्को इक बुझाईआ। कवण खेल करे करनी करन, करता आपणा भेव चुकाईआ। किस मन्दिर किस दुआर किस घर किस गृह आए वड़न, दरवाज़ा कवण खुल्हाईआ। कवण नाम कवण राम कवण शाम कवण अक्खर वक्खर आए पढ़न, सिफ्ती सिफ्त सालाहीआ। हरिजन आसा लेखा चुक्के मरन डरन, पारब्रह्म प्रभ श्री भगवान इक्को नज़री आईआ। जगत आसा गुरमुख कदे ना सड़न, माया ममता मोह ना कोए रखाईआ। हरिजन आशा खेल वेख करनी करन, कुदरत कादर वेख खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आशा ख्वाहिश ख्वाहिश ख़ालस ख़ालस सालस दए समझाईआ। ख्वाहिश सालस देवे दलील, इशारा इक लगाईआ। चल के वेख कवण वकील, धुर कानून समझाईआ। जिस दी एथे ओथे सदा मंज़ूर अपील, बरीख़ाना दए प्रगटाईआ। उह साँवल सुन्दर छैल छबील, किस ख्वाहिश विच लोकमात फिरे वाहो दाहीआ। ख्वाहिश कहे नज़र नहीं आउँदा वस्त्र नील, नीला नीली धारों पार ना कोए वखाईआ। ख्वाहिश कहे नहीं उह जिस मारे भील, मुक्ट बैण कँवल नैण बेपरवाहीआ। ख्वाहिश कहे नहीं उह जिन रावण मारया नाल सैन, सैनापति राम रूप वटाईआ। सच ख्वाहिश वेखे आपणे नैण, निज नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। भगत आशा सन्त ख्वाहिश रल मिल दर साचे मंगण बहिण, घर बहि के खुशी मनाईआ। अगम्मी ख्वाहिश रसना कोई ना सके कहिण, नकम्मी ख्वाहिश जीव जंत सारे ढोला गाईआ। साची ख्वाहिश चुकावे लहिण देण, पूरब जन्म लेखा झोली पाईआ। जो ख्वाहिश सच वस्त आए लैण, तिस लाल अमोलक लभ्भे नाम निधान, बिन कीमत हथ्थीं आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, अन्तर ख्वाहिश अन्तष्करन शुद्ध विशेष, सति गुण सति मंग मंगाईआ।

✪ २२ अस्सू २०२० बिक्रमी बीबी भगवान कौर दे गृह पक्खोवाल ज़िला लुधियाणा ✪

जन भगतां प्रभ देवे माण, अन्तर आशा पूर कराईआ। अनमंगया देवे धुर दा दान, नाम अमोलक वस्त झोली पाईआ। अनाशक्ति देवे शब्द ज्ञान, निरगुण आपणा भेव चुकाईआ। दर घर साचे कर परवान, मेहर नज़र नैण तकाईआ। जन्म

कर्म कट जहान, जीवण आपणे लेखे पाईआ। सच दुआर सचखण्ड अन्तिम खड़े आण, बण सेवक सेव कमाईआ। जिस जन रसना जिह्वा बत्ती दन्द अन्तर आत्म ध्यान रख गाया सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तिन्हां एथे ओथे वेले अन्त दु:ख ना लागे राईआ।

✪ २२ अस्सू २०२० बिक्रमी साधू सिँघ दे गृह पक्खोवाल ज़िला लुधियाणा ✪

हरिसंगत लेखे लग्गी सेवा, पूरब लेखा नाल मिलाईआ। अमृत फल देवे मेवा, रस मिट्ठा चरण प्रीत जणाईआ। गुरसिख बच्चयां पुच्छे कर के हेवा, गुर दाता आया फेरी पाईआ। जिस सिफ्त करदी रही रसना जिह्वा, जुग चौकड़ी सिफ्त सालाहीआ। प्रगट हो अलख अभेदा, भेव अन्तर रिहा जणाईआ। गुरमुख वड्डा देवी देवा, देवत सुर सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा लेखे विच लगाईआ। हरिसंगत तेरी सेवा अपार, अपर अपारी वेख वखाईआ। जिस दी मिसल ना मिले विच संसार, मिसाल दे सके ना कोए समझाईआ। इक इक सिख विच धुर दा धरया आप प्यार, रोम रोम खुशी मनाईआ। पलक अक्ख प्रतख कर दीदार, दीद ईद खुशी मनाईआ। कट के मंज़ल आया परवरदिगार, हरदिल अज़ीज़ बण के फेरा पाईआ। आउँदे जांदे वेखे गुरसिख मीत मुरार, नट्ठे फिरदे वाहो दाहीआ। इक्को आस प्रभ मिले मीत मुरार, मित्र प्यारा नज़री आईआ। पुरख अकाल कहे मैं दर आयां सब दी करां संभाल, आप आपणी गोद उठाईआ। शाह हो के दर भगतां बणां कंगाल, कंगालों शाह रूप वखाईआ। निरगुण मेला सरगुण कर परवान, नाम परवाना इक जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बिनां अठारां भगत किसे ना मिल्या भगवान, लख चुरासी आई गई उठ उठ लोकमात फेरा पाईआ। जिन्हां मिल्या सो कूक गए पुकार, उच्ची उच्ची राग अलाईआ। कलयुग वेला अन्तिम रखो याद, याददाशत गए समझाईआ। निरगुण हो के निरवैर निरँकार सच सुणे फ़रयाद, अदालत इक्को घर लगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जिन्हां थोड़ी थोड़ी देंदा रिहा दाद, कलयुग अन्तिम सारे भाण्डे पूरे दए कराईआ। लख चुरासी विच्चों काढ, काढ आपणी दए समझाईआ। निर्धन हो के करे लाड, सरधन रूप वखाईआ। खेवट बण चलाए जहाज़, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। सेवक बण मारे आवाज़, गुरमुख आप जगाईआ। आओ वेखो धुर समाज, सच समग्री दए जणाईआ। जिस गृह जिस घर जिस मन्दिर इक्को आत्म परमात्म होवे काज, दूजा सगन ना कोए मनाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जन भगतां नाल इक रवाज, रीती बदल कदे ना जाईआ। सच दुआरा वेखो भाज, बण के सच्चे पांधी राहीआ। जिस गृह मन्दिर अन्दर गुर अवतार

पीर पैगम्बर खुशीआं नाल करन नाच, ढोला गीत अगम्म गाईआ। ओस घर दा साचे दर दा नरायण नर दा लओ स्वाद, अनरस आपणा दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिसंगत लहिणा लैणा लेखे लए लगाईआ। हरिसंगत आसा मनसा पूर, पूरी इच्छा आप कराईआ। जन्म मरन दुःख होया दूर, जम डण्ड सीस ना कोए लगाईआ। प्रभ ठाकर पाया हाज़र हज़ूर, भव सागर लए तराईआ। नाम प्याला दे करे मख़मूर, खुमारी इक्को इक चढ़ाईआ। जन भगतां नाम करे मशहूर, मशहूरी आपणे नाम नाल कराईआ। चार कुण्ट बख़्शे सच्चा नूर, नूर नुराना बेपरवाहीआ। दर आयां पिछले बख़्शे सर्ब कसूर, अग्गे भरम ना कोए भुलाईआ। जन भगतो कलयुग अन्तिम वेला पारब्रह्म प्रभ बणया आप मज़दूर, बण चाकर सेवक सेव कमाईआ। तुहाडे अन्दरों कूड़ा किरकट रिहा हूंझ, नाम बहारा हथ्थ उठाईआ। फड़ फड़ चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़, साची विद्या इक समझाईआ। माया ममता कढे हउमें ग़रूर, नाम सरूर इक चढ़ाईआ। सब दी आसा मनसा करे पूर, दर्दी दर्दीआं दर्द वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिसंगत होए सहाईआ। हरिसंगत तेरी आसा पुन्नी, प्रभ पूरन आशा आप कराईआ। जिस दा कोई भेव ना पावे सुन्न समाधी सुन्नी, अन्दर वड़ नज़र किसे ना आईआ। जीहनूं लभ्भदे फिरदे वड वड गुणी, ज्ञान शास्त्र रहे दृढ़ाईआ। सो गुरमुख दुआरे साफ़ करन आया काया कुंनी, माटी हाण्डी पोच पुचाईआ। मेहरवान हो के सुंञे घर सुणाए धुनी, धुन आपणा नाम जणाईआ। सुरत सवाणी ना रहे बुन्नी, होछी मति दए गंवाईआ। प्रेम पटोला सिर ते देवे चुन्नी, ओढण इक्को इक रखाईआ। गुरमुख गुरसिख तेरी चोटी कदे ना जाए मुंनी, सीस जगदीश आपणा हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिसंगत दए वड्याईआ। हरिसंगत तेरा सोहणा घर, प्रभ साची बणत बणाईआ। जिस गृह आ के जाए वड़, आपणा फेरा पाईआ। प्रेम प्रीती अक्खर लए पढ़, सच्चा नाम जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन तेरा लेखा लेखे पाईआ। लेखा लेखे पाए आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सर्ब जीआं बण माई बाप, पिता पूत गोद सुहाईआ। सच संदेसा इक्को आख, अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। निरगुण नूर कर प्रतख, पारब्रह्म प्रभ भेव खुल्हाईआ। हरिसंगत होया प्रभ वस, गुरमुख गुरसिख बैठे घेरा पाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर बिन ढाहयों गया ढट्ठ, आप आपणा बल गंवाईआ। अन्दर वड़ के सच प्यार दी लाए सट्ट, ठोकर इक्को नाम रखाईआ। सो गुरमुख गुरसिख चरणीं जाए ढट्ठ, जिस अन्दर मन्दिर बहि के आपणा हुक्म जणाईआ। बिन खाध्यां पीत्तयां बिन रसना जिह्वा देवे सच्चा रस, रस अमृत इक चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, जगत विसूरे देवे मथ, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। हरिसंगत सेवा होई क़बूल, सो सतिगुर दया कमाईआ। धूढ़ी टिक्का मस्तक लाए धूल, धुर दी रेख दए वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग करदा आया सूलीउँ सूल, कलयुग अन्तिम सूल कंडा कोए रहिण ना पाईआ। अग्गे राए धर्म मंगे ना कोए मसूल, लेखा लैण कोए ना आईआ। नज़री आए आप महिबूब, मुहब्बत आपणे नाल निभाईआ। पंजां दित्ता आण सबूत, जो सचखण्ड बैठे सोभा पाईआ। बेशक साडा नहीं रिहा कलबूत, काया माटी जगत मिलाईआ। घर मिल्या उच्च अरूज, महल अटल होई रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिसंगत सेवा आपणी झोली पाईआ। हरिसंगत सेवा होई परवान, प्रभ पूरन परमात्मा आप जणाइंदा। हरिसंगत मेला नहीं कोई जगत दीवान, दीवानयां कमलयां रमलयां मिलावा मेल आप मिलाइंदा। आत्म परमात्म दए अहिवाल, हाल आपणा आप समझाइंदा। रल मिल जिन्हां घाली घाल, तिन्हां गुरमुखां उत्तों घोली घोल घुमाइंदा। कर किरपा हल कीता स्वाल, ज़ेर ज़बर रूप ना कोए रखाइंदा। आपे वेख मुरीदां हाल, ख़ुशी ख़ुशी नाल वडियाइंदा। दिवस रैण प्रेम प्रीती वजदा रिहा ताल, डौरु डंका शब्द नाल रखाइंदा। आत्म परमात्म कहिन्दी रही दीन दयाल, वाह वा तेरा भेव समझ कोए ना पाइंदा। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जगत निमाणयां वेख्या हाल, हरिजन आपणे रंग रंगाइंदा। लभ्भयां कोई ना सके भाल, चारों कुण्ट दहि दिशा संग नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुरमुख गुरसिख लाए लड़, चेतन जड़ दोवें फड़ आपणे घर बहाइंदा।

✪ २२ अस्सू २०२० बिक्रमी सुरजण सिँघ दे गृह पक्खोवाल ज़िला लुधियाणा ✪

सतिगुर किरपा गुरमुख तरदा, दो जहान मिले वड्याईआ। लेखा चुक्के जन्म मरन दा, आवण जावण रहिण ना पाईआ। लहिणा देवे पूरब जन्म दा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। एहो फल साची सरन दा, दो जहान होए सहाईआ। माणस जन्म साचा वेला पौड़े चढ़न दा, नाम डण्डा हरि जू हथ्थ फड़ाईआ। वक्त सुहञ्जणा आत्म परमात्म मिलण दा, बिन जगदीश मिलणी ना कोए कराईआ। लेखा चुक्के चुरासी जून फिरन दा, मात गर्भ ना कोए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, बख्शणहार इक सरनाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोई ना मिलदा, मिलणी हरि ना कोए कराईआ। गुर सतिगुर भेव जाणे साचे दिल दा, दिलबर दाता वड वड्याईआ। वरते खेल अगम्मी तिल दा, तिलक इक्को मस्तक लाईआ। गुरमुख प्रीत सिदक सबूरी उत्तों कदे ना हिलदा, लख चुरासी नईया डोले सर्ब लोकाईआ। श्री

भगवान साहिब सुल्तान मेहरवान जिस नूं मिलदा, सो जगत नाता दए तुड़ाईआ। लेखा चुक्के अन्दर लग्गी सिल दा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान दए सरनाईआ। बिन सतिगुर पूरे मिले ना मन्दिर, घर वज्जे ना नाम वधाईआ। अन्धेरा चुक्के ना डूंघे कन्दर, साचा दीप ना कोए रुशनाईआ। भाग लग्गे ना अन्धेरे खण्डर, सति नज़र कोए ना आईआ। मन बन्न्हे ना कोई बन्दर, वासना जगत ना कोए मुकाईआ। नैण शरमाए ना कोए सूर्या चन्द्र, जोती नूर ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिगुर पूरा सदा सहाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोए ना रखे लाज, लाजवन्त ना को अख्वाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोई ना बदले समाज, साची धार ना कोए प्रगटाईआ। बिन सतिगुर पूरे धुर दा कोई ना करे राज, गुरमुख रय्यत ना कोए बणाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोई ना बणे सच्चा साध, सच्ची साधना हथ्थ किसे ना आईआ। बिन सतिगुर पूरे कोई ना करे काज, करनी करता आपणी आपे दए जणाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोई ना मारे आवाज़, पूरब जन्म दे सोए आप उठाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोई ना करे मजन माघ, चरण धूढ़ अशनान वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी हरिजन देवे माण वड्याईआ। बिन सतिगुर पूरे कोई ना करे सेवा, चाकर रूप ना कोए वटाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोई ना लाए मस्तक थेवा, जोत ललाट ना कोए रुशनाईआ। बिन सतिगुर पूरे कोई ना खोल्ले भेद अभेवा, अनभव प्रकाश ना कोए कराईआ। बिन सतिगुर पूरे कोई ना लावे लेखे गाया रसना जिह्वा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, आदि जुगादी इक्को नर, नर नरायण शाह पातशाह शहिनशाह पुरख अकाल अख्वाईआ।

✪ २२ अस्सू २०२० बिक्रमी सरदारा सिँघ दे गृह पक्खोवाल ज़िला लुधियाणा ✪

धर्म समागम प्या भोग, वज्जी जगत वधाईआ। कर्म समागम चुक्कया रोग, दीनन दया कमाईआ। सच समागम दस्सया जोग, चार वरन समझाईआ। हरि समागम धुर संजोग, धुर संजोगी मेल मिलाईआ। नर समागम दरस अमोघ, नर हरि नरायण कराईआ। नाम समागम शब्द चोट, सो सतिगुर आप लगाईआ। मनमुख समागम कूड़ी क्रिया खोट, पंज तत हल्काईआ। गुरसिख समागम लोक परलोक, विष्न ब्रह्मा शिव गण गंधर्ब सुरप्त इन्द रहे जस गाईआ। भगत समागम धुर श्लोक, साचा ढोला नाम सुणाईआ। भगत भगवान समागम जन भगत दुआरे आपे पहुंच, जग विछड़े मेल मिलाईआ। आत्म परमात्म समागम सारे रहे लोच, बिन सतिगुर पूरे लोकमात ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक

नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, भगत समागम कर परवान, मेहरवान दे दान, कर ध्यान हरिसंगत दर आई धुर दे लेखे आपणे घर लगाईआ।

✪ २२ अस्सू २०२० बिक्रमी अदालत सिँघ दे गृह आंडलू ज़िला लुधियाणा ✪

कलयुग कहे प्रभ साचे पिता, सो पुरख निरँजण तेरी सरनाईआ। चौथा जुग मैं बाल निक्का, निउँ निउँ लागां पाईंआ। तेरे हुक्म दा कीता साचा हिता, बण हितकारी सेव कमाईआ। लख चुरासी कूड़ी क्रिया लाया टिक्का, मस्तक आपणा रंग रंगाईआ। तेरा नाम साहिब कीता फिका, कूड़ कुड़यारा रसना नाल लगाईआ। सच सुच नालों सब दा बदलया चिता, आपणी धार दिती वरताईआ। करया खेल इक अनडिठा, अनडिठड़ी कार कमाईआ। जीव जंत रस कोई ना जाणे मिट्ठा, कौड़ा रीठा सर्ब लोकाईआ। मेरा प्रभ जी मैनूं दे दे हिस्सा, तेरे अग्गे मेरी अरज़ोईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, मेरी मनसा पूर कराईआ। साहिब सतिगुर मेरे दीन दयाल, हरि ठाकर तेरी सरनाईआ। मैं छोटा नढ्ढा बाल नादान, बाली बुध अख्वाईआ। तूं शाह पातशाह सच्चा सुल्तान, शहिनशाह इक अख्वाईआ। आदि जुगादी हुक्मरान, दो जहान संदेस सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन ध्यान, नित नवित्त बैठे ध्यान लगाईआ। गुर अवतार देण ज्ञान, जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। लेखा लिख शास्त्र सिमरत वेद पुराण, गीता ज्ञान भेव खुल्हाईआ। खाणी बाणी धुर फ़रमान, सच संदेसा मात सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि जू तेरी ओट रखाईआ। पारब्रह्म प्रभ मैं तेरा सच्चा सेवादार, जग साची सेव कमाईआ। सृष्ट सबाई कीती ख्वार, चारों कुण्ट पए दुहाईआ। नाता तुट्टा मीत मुरार, यारी यार ना कोए निभाईआ। नव नौ चार कीता धूंआँधार, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ, साध सन्त रोवण धाहां मार, साची मंज़ल हथ्थ किसे ना आईआ। घर घर अन्दर वाड़ दित्ता हँकार, काम क्रोध लोभ मोह नाल रलाईआ। आसा तृष्ना कर श्रृंगार, माया ममता करी कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, मैं साची सेव कमाईआ। वेख प्रभ मेरा ज़ोर, तेरे हुक्मे अन्दर खेल कराइंदा। लख चुरासी कीती ठग्ग चोर, घर घर ठग्गी इक वखाइंदा। पंच विकारा पावे शोर, धीरज धीर ना कोए रखाइंदा। भाग ना लग्गे काया गोर, दीपक जोत ना कोए जगाइंदा। तेरे नाल सुरती सके ना कोई जोड़, मैं अद्धविचकार खड़ के सब दा पन्ध मुकाइंदा। साची सिख्या काया घर विच्चों देवां होड़, कूड़ा खेल इक वखाइंदा। आसा तृष्ना बन्न्ह के डोर, साची तन्दी तन्द बंधाइंदा। करया

खेल होर दा होर, हरि जू तेरा हुक्म सीस टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देणा एहो साचा वर, तेरा छोटा पुत्त मंग मंगाइंदा। कलयुग कहे प्रभ वेख मेरी फुलवाड़ी, कलयुग अन्त महकाईआ। धीरज तुटा नर नारी, नर नरायण नज़र किसे ना आईआ। सत दिसे ना जगत कुँवारी, मनमति दए दुहाईआ। जीव जंत होए विभचारी, कूड़ा नाता जोड़ जुड़ाईआ। माया ममता ला उडारी, भज्जण वाहो दाहीआ। जगत विद्या वड ज्ञान बणी संसारी, धुन आत्मक राग ना कोए सुणाईआ। आत्म परमात्म लाए ना कोई यारी, जगत याराने रहे हंढ्ढाईआ। घर दीपक जोत नूर ना कोए उज्यारी, मन्दिर सच ना कोए रुशनाईआ। मिल्या मेल ना हरि निरँकारी, निरगुण सरगुण लेखा पूर ना कोए कराईआ। नौ खण्ड सत्त दीप आप वहाई वैंहदी धारी, भवजल पार ना कोए कराईआ। उठ वेख प्रभ मेरी वड्डी तैयारी, त्रैगुण माया रिहा जणाईआ। पंजां तत्तां लुट्ट दिन दिहाढ़ी, दिवस रैण इक्को रंग वखाईआ। तेरे चरण ना कोई छुहाए दाढ़ी, मस्तक टिक्का धूढ़ ना कोए लाईआ। मनमति सब नूं करे ख्वारी, गुरमति हथ्थ किसे ना आईआ। होए प्रकाश ना बहत्तर नाड़ी, अग्नी अग्ग ना कोए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, मैं तेरा हुक्म संदेसा पूर कराईआ। वेख प्रभ आ के आपणा छोटा पुत्त बलवान, जिस नूं कलयुग कहे लोकाईआ। मैं आपणा झुलाया निशान, लख चुरासी हुक्म मनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो दे के गए ज्ञान, मैं सब नूं दित्ता भुलाईआ। सर सरोवर तीर्थ तट जो कर के औण अशनान, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। चार वरन अठारां बरन तेरा करे ना कोए ध्यान, अन्तर आत्म लिव साची ना कोए लाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी मेरा हुक्म मैं हुक्मरान, तेरे हुक्म नाल सोभा पाईआ। कोई समझ ना सके मसला अञ्जील कुरान, काया काअबा खोज कोए ना पाईआ। उठ वेख मेरे दीन दयाल, साबत रहिण ना दित्ता कोई ईमान, अमल सच ना कोए कमाईआ। घर घर वड़या दिसे हराम, जगत शैतान करे लड़ाईआ। कूड़ी क्रिया कीता नज़ाम, हुक्म इक्को इक वरताईआ। साधां सन्तां दे के मुख लगाम, चारों कुण्ट रिहा भवाईआ। तेरा नूर नज़र किसे ना आए भगवान, भरम भुलाई जगत लोकाईआ। वाहवा मेरे साहिब तूं मैनूं दित्ता दान, मैं जगत जीवां दित्ता वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सतिजुग कहे प्रभ मैनूं तेरी ओट, तेरे सहारे खेल कराईआ। घर घर अन्दर भरया खोट, खोटी बुध सर्ब वखाईआ। किसे तन ना लग्गे नाम चोट, शब्द नगारा नाद ना कोए सुणाईआ। बेशक रसना बाहरों गाउँदे बंती दन्द होंट, अन्तर आत्म राम नज़र किसे ना आईआ। सुंन समाधी ला के बैठे रहिण ख़ामोश, पड़दा दूई ना कोए चुकाईआ। दोए बंद करके वेखण लोच, लोचा पूरी नज़र कोए ना आईआ। सब दे अन्दर साची रहिण

ना दिती सोच, समझ समझ दी दिती गंवाईआ। वेख प्रभ हुण ना रहीं ख़ामोश, तेरे अग्गे फ़रयाद सुणाईआ। उठ के वेख चौदां लोक, सदी चौधवीं दए दुहाईआ। चौदां तबक होणी मौत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरे अग्गे सीस झुकाईआ। साहिब सतिगुर मेरे दीन दयाल, वड वड्डे ठाकर तेरी शरनाईआ। लोकमात वेख जगत धर्मसाल, कूड़ा डंका वज्जे वाहो दाहीआ। नेत्र रोवण शाह कंगाल, ऊँच नीच रहे कुरलाईआ। साचा मित्र मिले ना कोई जहान, जगत चलित्र सोभा पाईआ। चारों कुण्ट दिसे बियाबान, नव नौ वैरानी इक्को छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच्चा वर, मैं तेरा हुक्म पूरा देवां कराईआ। हुक्म दे मेरे भगवान, वड सच्चे भूप सुल्ताना। चारों कुण्ट वेख झुल्ले निशान, कूड़ी क्रिया होई मर्द मर्दाना। सिदक सबूरी सति धर्म रिहा ना कोए ईमान, चारों कुण्ट गृह गृह घर घर होए हरामा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आ के वेख आपणा घर, मैं कीता खेल महाना। खेल महान प्रभ कीता आ, तेरा हुक्म सीस टिकाईआ। नव नौ चार खेड़ा दित्ता ढाह, जत बुरज कोए रहिण ना पाईआ। अन्दरे अन्दर झगड़ा दित्ता वखा, फ़ैसला हक़ ना कोए कराईआ। सब दा बदला दित्ता चुका, चौकन्ना हो के सेव कमाईआ । अक्खां हुंदयां जगत अन्धा दित्ता बणा, तेरा नूर नज़र किसे ना आईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात विच बन्नां दित्ता रखा, हद्द तेरी पार ना कोए कराईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ छप्पर छन्नां हेठ तेरा नाउँ दित्ता धरा, काया मन्दिर अन्दर खोल्ह्ण कोए ना आईआ। साचा डंका कूड़ प्रधान करके दित्ता वजा, नौ खण्ड इक्को हुक्म वरताईआ। धरत धवल बंका दित्ता सुहा, साख्यात तेरी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, मेरा लहिणा मेरी झोली पाईआ। लहिणा दे अबिनाशी अचुत, देवणहार इक अख्वाईआ। उठ वेख मेरी सुहञ्जणी रुत्त, चारों कुण्ट कूड़ी फुल फलवाड़ी रही महकाईआ। शाबाश कहु वाहवा मेरे पुत्त, दे माण वड्याईआ। मैं नेत्र खोल्ह् अक्ख लवां पुट्ट, श्री भगवान तेरा दर्शन पाईआ। अमृत जाम देणा आ के घुट्ट, रस इक्को मंग मंगाईआ। मेरा लेखा जावे लोकमात विच्चों मुक्क, मुक्के खेल पराईआ। आपणी गोदी लैणा चुक्क, घर साचे सगन मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, छोटा बाला सीस झुकाईआ। सुण बाले छोटे लाल, सो साहिब आप जणाईआ। तेरा लेखा वेखे दीन दयाल, दयानिध फेरा पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप चार कुण्ट दहि दिशा लवे भाल, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। त्रैगुण माया वेखणहार जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। तेरी करनी वेख कमाल, सिर थपकी देवे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, अन्तिम

वेखे बेपरवाहीआ। अन्तिम लहिणा तेरा चुकावांगा। नेत्र नैणां आप वखावांगा। धुर दा देणा झोली पावांगा। साचा गीत इक सुणावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलयुग तेरा लेखा आपणी बिध नाल मुकावांगा। तेरा लेखा प्रभ मुकाएगा। हिसाब किताब सब तों मंग मंगाएगा। चार जुग दी धार आपणे हथ्थ रखाएगा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जुग चौकड़ी जो करदे रहे कार, करता कीमत आपे पाएगा। शब्द संदेसा जो सुणाउँदे रहे वारो वार, सो साहिब सतिगुर वेख वखाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमाएगा। साची करनी करे करतार, हरि करता वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, थिर कोए रहिण ना पाईआ। कलयुग तेरी आई अन्तिम वार, हरि जू लेखा दए मुकाईआ। तेरा वेख खेल जगत संसार, देवे वेले अन्त वड्याईआ। पहलों गुर अवतारां पीर पैगम्बरां नेत्र नैणा दए वखाल, वेखो जगत लोकाईआ। साचे नाम करे ना कोई भाल, शब्दी गुरू ना कोए मनाईआ। अन्तर आत्म वज्जे ना कोए ताल, शब्द अनाद ना कोए सुणाईआ। त्रैगुण माया तोड़े ना कोई जंजाल, जागरत जोत ना कोए रुशनाईआ। मुरीदां मुर्शद पुच्छे ना कोई हाल, हालत देवे ना कोए बदलाईआ। सरगुण बणे ना कोए दलाल, निरगुण बैठा मुख छुपाईआ। कलयुग तेरे नाल रल के डौरु डंका वज्जे ताल, हथ्थ नगारा इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर संदेसा नर नरेशा एकँकार इक इकल्ला एका वार जणाईआ। कलयुग तेरी आए वारी, अन्तिम अन्त सच जणाईआ। भेव खुल्हाए गुर अवतारी, पीर पैगम्बर बूझ बुझाईआ। उठो वेखो जगत संसारी, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। साचा मीत ना कोए वणजारी, नाम हट्ट ना कोए खुल्हाईआ। काम क्रोध दे बण व्यपारी, कूड़ी क्रिया रहे कमाईआ। साचे मन्दिर चढ़े ना कोए अटारी, महल अटल सोभा कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलयुग तेरा अन्तिम लेखा गुर अवतारां पीर पैगम्बरां नेत्र नैणां दए वखाईआ। नेत्र नैण वेखण आण, गुर अवतार पन्ध मुकाईआ। चारों कुण्ट दिसे वैरान, सच फुलवाड़ी नज़र कोए ना आईआ। इक दूजे वल करन ध्यान, नेत्र नैण अक्ख मिलाईआ। वेखो मात दिसे ना कोई ज्ञान, साचा ध्यान ना कोए रखाईआ। साचे मन्दिर कोई ना मिले आण, आत्म परमात्म जोड़ ना कोए जुड़ाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सारे गाण गाण, गा गा जीवां जंतां रहे सुणाईआ। साधां सन्तां अन्दर वड़या इक शैतान, अट्ठे पहर करे लड़ाईआ। हउमें हंगता बणी दुकान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलयुग तेरा लहिणा देवे बेपरवाहीआ। कलयुग तेरा अन्त वेखण आउणगे। गुर अवतार पीर पैगम्बर दर सच्चे सोभा पाउणगे। जो लोकमात

दे के गए वर, सो आपणा लेखा अन्त चुकाउणगे। जिन्हां जीवां जंतां दित्ता भउ डर, सो भय भ्यानक आपणे घर वखाउणगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा अन्त चुकाउणगे। लेखा अन्त चुकाए आप, हरि वड्डा वड वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर देवण साथ, बण साथी संग निभाईआ। जो संदेसा प्रभ दित्ता आख, सो कलयुग पूर कराईआ। अन्तिम तुट्टे एस दा नात, लोकमात रहिण ना पाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाश, तेरे हथ्थ वड्याईआ। जुग चौकड़ी तेरी रास, मण्डल मण्डप नाच वखाईआ। सब दी पूरी कर आस, आसावंद तेरी शरनाईआ। जन्म कर्म दी मेट प्यास, तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। दाते दानी सरबगुण तास, शाह पातशाह तेरी ओट रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर इक्को वार सुणाईआ। श्री भगवान कहे करो सलाह, सो साहिब आप जणाईआ। कलयुग छोटा पुत्त झोली रिहा डाह, मंग आपणी रिहा मंगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर हस्स के कहिण पारब्रह्म तेरा छोटा पुत्त गोबिन्द इक मलाह, कलयुग बेड़ा वेख वखाईआ। बाकी सारे कर गए नांह, हां विच हां ना कोए मिलाईआ। योद्धा सूरबीर बलवान पुरख अकाल अग्गे सीस झुका, दोए जोड़ प्या सरनाईआ। तेरा हुक्म सच्चे शहिनशाह, दो जहानां आपणे सीस टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा इक वर, बेपरवाह आपणा हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे रहे आख, प्रभ इक गोबिन्द हथ्थ वड्याईआ। सिँघ रूप साख्यात, लोकमात आया फेरा पाईआ। चार वरन बणा के आया इक जमात, अमृत आत्म जाम प्याईआ। कूड़ी क्रिया करके आया घात, खण्डा खड़ग नाम चमकाईआ। मेट के आया अन्धेरी रात, साचा नूर चन्द वखाईआ। धुर दस्स के आया गाथ, पुरख अकाल तेरी पढ़ाईआ। लेख लिख के आया भविक्ख्त वाक, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। कलयुग अन्तिम उतरे आपणे घाट, पत्तण बैठा बेपरवाहीआ। प्रगट होए पुरख समराथ, निरगुण दाता जोत रुशनाईआ। लख चुरासी जीव जंत वेखणहारा खेल तमाश, ख़ालक ख़लक भेव चुकाईआ। सच रूप बणाए ख़ालस ख़ास, ख़ालसा आपणा नाउँ जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, बिन गोबिन्द योद्धा नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण गोबिन्द सच्चा सूरबीर, पुरख अकाल तेरा पुत्त अख्वाईआ। कलयुग कूड़े एहो कटे जंजीर, एहदे हथ्थ साहिब इक किरपान फड़ाईआ। सब दी बदल देवे तदबीर, तदबीर आपणी दए समझाईआ। एहदी सब तों निराली तस्वीर, मुसवर कोई समझ ना सके राईआ। ओसे वेले उठ खलोते ईसा मूसा मुहम्मद पीर, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। मुहम्मद नेत्र रो होया दलगीर, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। मेरी हड्डीं लग्गी पीड़, मेरा अंग अंग दुःख सहि ना सके राईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरे हथ्थ प्रभ वड्याईआ। मुहम्मद कहे मार धाह, बौहड़ी बौहड़ी मेरे खुदाया। मैं भुल्ला विच जहां, दो जहानां वाली तेरी सरनाया। मैं गोबिन्द अग्गे झोली देवां डाह, ख़ाली पल्लू इक रखाया। मेरी उम्मत ज़ुल्म कहर दित्ता कमा, सितम इक कराया। छोटे बाले नीहां हेठां दित्ते दबा, एसे कारण कलयुग आपणी जड़् रिहा उखड़ाया। मैनूं बिन गोबिन्द कोई ना सके बचा, गुर अवतार पीर पैगम्बर बैठे सीस झुकाया। उच्ची कूकी कहिण वाह वा, गोबिन्द गुरदेव स्वामी इक्को नज़री आया। जो आउँदी वार विच संसार फ़तहि डंका आया वजा, जै जैकार इक कराया। उस दे हथ्थ लेखा देणा फड़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे बैठे सीस झुकाया। श्री भगवान कहे मैं दया कमवांगा। सूरबीर इक उठावांगा। योद्धा दो जहान जणावांगा। इक परलो काल वखावांगा। सच श्लोका इक्को राग सुणावांगा। किसे नाल ना करे धोखा, कूड़ी क्रिया मेट मिटावांगा। कलयुग नूं इक्को देवे आपणा मौका, मुकम्मल हाल सुणावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी इक करावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सुण संदेस, कलयुग उठ के भज्जा वाहो दाहीआ। दोए जोड़ प्रभ अग्गे होया पेश, दूर दुराडा बैठा सीस झुकाईआ। मैनूं डर आवे ओस कोलों जिस दे सिर ते रखे साहिब ने केस, नाम दस्मेश दहि दिशा भय रिहा जणाईआ। जिस दे भय विच फिरदे मुल्लां शेख़, मसायक नज़र कोए ना आईआ। अन्तिम फिरे दरोही चौदां लोक, मसला हक़ ना कोए पढ़ाईआ। उस दा लेखा इक्को ठीक, वध्ध घट्ट ना कोए कराईआ। उह काले उते पा के गया लीक, लेखा लेख ना कोए मिटाईआ। गोबिन्द सब दा सांझा पीर लाशरीक, ज़ात पात भेव ना कोए वखाईआ। इक्को मंगे सच प्रीत, नीचां ऊँचां गया समझाईआ। कलयुग अन्तिम मेरा खेल होए अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गोबिन्द लेखा इक्को हथ्थ फड़ाईआ। कलयुग कहे मेरे प्रभ मीत, पुनह पुनह मेरी निमस्कारया। चार कुण्ट मैं फिर के वेख्या मन्दिर मसीत, शिवदुआले मट्ठ खोज खोजाईआ। बिन गोबिन्द गुरमुख गुरसिख साची दिसी ना किसे नीत, नीतीवान नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल तेरे नाल हरिजन विरला करे प्रीत, बाकी बैठे ढेरीआं ढाहीआ। इक्को साहिब तेरी उडीक, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, वेले अन्त मंग मंगाईआ। कलयुग तेरी आसा मनसा करां पूर, पूरी इच्छया आप कराईआ। जोती जलवा धर के नूर, गोबिन्द शब्द दयां वड्याईआ। शब्द गोबिन्द हाज़र हज़ूर, हज़रत आपणा नाम रखाईआ। तेरा हूंझे कूड़ा किरकट कूड़, चार कुण्ट करे सफ़ाईआ। माण

ताण तोड़े ग़रूर, ग़ुरबत अन्तिम दए खपाईआ। मुहम्मद दा मुआफ़ ना करे कसूर, जिन्ना चिर चौदां तबक नाल लै के चौदां वार ना सीस झुकाईआ। रसना बोल कहे मैं ओहो पढ़ां सबक, जो गोबिन्द दए समझाईआ। उम्मत वल पिच्छा फेर ना वेखां परत, प्रतिनिध नज़र ना आईआ। अग्गे कोई ना रहे फ़र्क, फिरका मेरा सदी चौधवीं लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दी धार आपणे हथ्थ रखाईआ। मुहम्मद कहे सुण परवरदिगार, बेपरवाह तेरी सरनाईआ। तेरे हुक्मे अन्दर खेल कीता करतार, कुदरत चार कुण्ट नचाईआ। कलयुग नाल नाता जोड़ विच संसार, रल मिल आपणी खुशी मनाईआ। सृष्ट सबाई कर के धूंआँधार, दीन इस्लाम इक्को डंक वजाईआ। सारे बरदे कर ग़ुलाम, शरअ ज़ंजीर गल पवाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी नज़री आए इक इस्लाम, राम कृष्न नजर कोए ना आईआ। कलमा पढ़ाओ इक कलाम, कायनात इक्को रंग रंगाईआ। धुर संदेसा दयो पैग़ाम, ज़बराईल मेकाईल असराफ़ील इज़राईल भज्जो वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरे हुक्मे अन्दर जगत सेव कमाईआ। सुण मुहम्मद सच संदेस, सो साहिब आप जणाइंदा। तेरा कीता तेरी करनी लई वेख, तेरा लेखा तेरी झोली पाइंदा। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर पिछला पूरा करे लेख, अग्गे आपणा हुक्म वरताइंदा। निरवैर पुरख पुरख अकाल दीन दयाल निरपक्ष खेले खेड, चार वरन इक्को रंग रंगाइंदा। हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई अन्दर वड़ के देवे आपणा भेत, पड़दा दूई द्वैत चुकाइंदा। जिस ने आपणे लख़ते जिगर कीते भेंट, सो तेरी उम्मत लेखा ना मंग मंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआर एकँकार दरगाह साची ला दरबार, साची करनी आप कमाइंदा। कलयुग कहे प्रभ मेरी नाल मुहम्मद यारी, यारी यारी नाल निभाईआ। एहदी उम्मत लग्गे मैनूं प्यारी, जो छुरी करद हथ्थ उठाईआ। ज़िबह करे तेरे जीव तन मन होए दुख्यारी, दुखी कूक देण दुहाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर क्यों सुत्ता पैर पसारी, तेरी अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे बेनन्ती दोए जोड़ सुणाईआ। श्री भगवान प्या हस्स, ख़ुशी नाल सुणाइंदा। मुहम्मद एथे तेरा मेरा कोई ना चले वस, गोबिन्द लेखा आपणे हथ्थ रखाइंदा। उस दी चरणी जा के ढह्, सनमुख तेरे नज़री आइंदा। जिस ने तेरे पिच्छे बंस सरबंस लाई रत्त, रत्ती रत्त वेख वखाइंदा। उस दे खण्डा खडग चमके हथ्थ, दो जहान सीस ना कोए उठाइंदा। पुरख अकाल पहलों दे लई आपणी वथ, हुण दिती वथ मंगण कदे ना जाइंदा। साचा मार्ग दित्ता दस्स, एकँकारा आप समझाइंदा। कलयुग कूड़ी क्रिया जड़्ह देणी पट्ट, लोकमात खेड़ा झूठा ढाइंदा। जन भगत सुहेले लए रख, गुर चेले मेल मिलाइंदा। दीन दयाल

८१६
१५

हो के खोल्हे अक्ख, नेत्र लोचण पड़दा लाहइंदा । नज़री नूर आए प्रतख, साख्यात भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरे धुर दरबारे साची करनी करता पुरख आपणी कार कमाइंदा। कलयुग कहे मुहम्मद उठ, क्यों बैठा ढेरीआं ढाहीआ। गोबिन्द कोलों जा के पुच्छ, की लेखा तेरा लिखाईआ। जे तेरे उपर जावे तुठ, मेहर नज़र टिकाईआ। तेरा मेरा दोहां दा पैंडा जावे मुक्क, झगड़ा चुक्के जगत लोकाईआ । असीं चरणां हेठां जाईए लुक, जिथ्थे आदि जुगादि मिले सरनाईआ। सानूं कोई ना सके पुच्छ, लेखा मंगण कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा सब नूं रिहा सुणाईआ। कलयुग सुण अन्त संदेसा, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। मुहम्मद तेरा वेखे लेखा, हरि वड्डा वड वड्याईआ। पन्द्रां कत्तक वीह सौ वीह बिक्रमी नूं भगत दुआर कढ्ढे भरम भुलेखा, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। तख्त निवासी पुरख अबिनाशी घट घट वासी जोत प्रकाशी साचे धाम सोहे वड नरेशा, नर नरायण बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर भगत भगवान दर सद्द के करे हेता, हितकारी वेख वखाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग कीता कौल करो चेता, चेतन सब नूं आप कराईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर ठाकर स्वामी परवरदिगार सब दा बणे नेता, दो जहान श्री भगवान शाह सुल्तान राज राजान नौजवान हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा भेव आप खुल्हाईआ। धुर दा भेव खोल्हे भगवान, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। सम्मत सम्मती हो प्रधान, अगम्म अगम्मड़ी कार कमाईआ। लेखा जाण दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ धरनी धरत आकाश प्रकाश वेख वखाईआ। धुर संदेसा नर नरेशा एकँकार एका देवे सो, सो पुरख निरँजण बेपरवाहीआ। आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म ईश जीव हँ ब्रह्म भेव खुल्हाए आपे अन्दर हो, होका इक्को नाम जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, चौथे जुग लहिणा देणा नेत्र नैणां साहिब सतिगुर सच स्वामी आदि जुगादी अन्तरजामी पुरख अकाल आप जणाईआ। सब दा लेखा मुक्के मात, सति सतिवादी आप मुकाईआ। लेखा मंगे हिसाब किताब, वही खाता फोल फोलाईआ। हकीकत जाणे हक़ जनाब, लाशरीक वेस वटाईआ। सब दी वेखे सर्ब आदाब, नमो सीस कवण झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सति सतिवादी हो मेहरवान, लेखा देवे हर घट आण, बचया कोए रहिण ना पाईआ।

✪ २३ अस्सू २०२० बिक्रमी गुलाब कौर दे गृह बुरज हकीमां ज़िला लुधियाणा ✪

शब्द गुरू सदा सच एक, आदि जुगादि खेल खलाइंदा। जुग चौकड़ी बख्शे टेक, दो जहानां ओट जणाइंदा। जन भगतां करे बुध विवेक, दुरमति मैल धवाइंदा। जन सन्तां त्रैगुण माया ना लाए सेक, अग्नी तत ना कोए वखाइंदा। गुरमुखां निज नेत्र लए पेख, पड़दा दूई द्वैत चुकाइंदा। गुरसिखां लहिणा देवे पूरब लेख, जन्म कर्म झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर गुर शब्दी इक्को इक साची सेव कमाइंदा। शब्द गुरू वड बलवान, वड्डा वड वड्याईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त वेखे जीव जहान, आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म पड़दा दए उठाईआ। धुर संदेसा नर नरेशा निरगुण धार देवे आण, सरगुण करे सच पढ़ाईआ। भाग लगाए काया मन्दिर अन्दर काया माटी तत मकान, भगत दुआरे सोभा पाईआ। निर्मल दीआ बाती जोत जगा महान, घट प्रकाश करे रुशनाईआ। शब्द धुन सुणाए सच्ची धुन्कान, अनहद नादी राग अलाईआ। अमृत आत्म देवे पीण खाण, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। सन्त सुहेले लभ्भे आण, गुर चेले मेल मिलाईआ। कर किरपा बख्शे इक ध्यान, इष्ट देव स्वामी इक्को नज़री आईआ। सुरती शब्दी मेला साचे काहन, घर बंसुरी नाम सुणाईआ। सच संदेसा देवे धुर पैग़ाम, कलमा इक्को इक पढ़ाईआ। भेव चुकाए सच अमाम, लाशरीक वड्डी वड्याईआ। मन मति बदल देवे नज़ाम, गुरमति साची दए प्रगटाईआ। लेखा जाणे काया खेड़ा नगर ग्राम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वस्त आप वरताईआ। साची वस्त नाम दात, सतिगुर शब्दी झोली पाइंदा। जन भगतां मेट अन्धेरी रात, निरगुण साचा चन्द चमकाइंदा। अन्तर अन्तर सुणाए गाथ, भेव अभेदा आप खुलाइंदा। किरपा कर पुरख समराथ, साचा मार्ग इक जणाइंदा। बण सहायक अनाथां नाथ, दासी दास रूप वटाइंदा। पार उतारे साचा घाट, पत्तण इक्को इक वखाइंदा। गुरमुखां गुरसिखां चरण प्रीती बंधाए सच्चा नात, सगला संग आप हो जाइंदा। जन्म कर्म दी पूरी करे आस, लेखा धुर दा झोली पाइंदा। आवण जावण लख चुरासी कट फास, फाँसी गल ना कोए लटकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग चौकड़ी हरिजन साचे वेख वखाइंदा। जुग चौकड़ी वेखणहारा, गुर शब्द वड्डी वड्याईआ। नित नवित्त खेले खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर भेव कोए ना आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण सिफ्त करन विच संसारा, गीता ज्ञान अञ्जील कुरान साचा सोहला ढोला खाणी बाणी रही सुणाईआ। भगत भगवान करे प्यारा, अन्तर आत्म देवे सहारा, शब्दी वज्जे इक नगारा, नौबत आपणे नाम सुणाईआ। गृह मन्दिर करे उज्यारा, अमृत बख्शे ठांडा ठारा, कूड़ा मेटे अन्ध अँध्यारा,

दीआ बाती कमलापाती इक्को इक जगाईआ। दरस दिखाए नूरी धारा, नज़री आए एकँकारा, रूप रंग ना कोई दिसे ज़ाहरा, अनभव आपणा भेव चुकाईआ। सतिगुर शब्द समझ ना सके जीव गंवारा, सृष्ट सबाई मन वासना कूड़ी क्रिया होया हँकारा, सच सुच सति सतिवाद नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन वेखे थाउँ थाईंआ। हरिजन वेखे बाल, बिरध जवान अवस्था जोबन इक्को रंग रंगाईआ। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर मेहरवान वसे नाल, निरगुण सरगुण सगला संग निभाईआ। लख चुरासी विच्चों कर कर भाल, हरिजन साचे लए जगाईआ। अमृत आत्म जाम दए प्याल, रस मिट्ठा इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन मेला इक इकेला काया मन्दिर साचे अन्दर हरी दुआर आप कराईआ। हरी दुआर साचा खेड़ा, साढे तिन्न हथ्थ दए वड्याईआ। नज़री आए प्रभ नेरन नेरा, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। कूड़ी क्रिया चुकाए झेड़ा, झगड़ा अन्त रहिण ना पाईआ। आत्म परमात्म खुल्ल्हा वखाए वेहड़ा, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सो गुरमुख कहे पारब्रह्म तूं मेरा मैं तेरा, तेरा मेरा भेव कोए ना आईआ। साचे मन्दिर सच सिँघासण सच स्वामी तेरा डेरा, हउँ चरण कँवल बैठा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन वेखे थाउँ थाईंआ। हरिजन तेरी वड्याई वड, सो सतिगुर आप जणाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी रहे तेरी यद्द, विश्व रूप इक समझाईआ। जगत कूड कुड़यार जूठ झूठ मुक्के हद्द, साचा मार्ग इक्को नज़री आईआ। शब्द अनाद बोध अगाध घर घर विच सुणे नद, बाहर खोजण कोए ना जाईआ। तेरे अन्तर पुरख समरथ, हरि जू डेरा बैठा लाईआ। पूरी करनहारा आस, आसा तृष्ना मेट मिटाईआ। दीपक जोत कर प्रकाश, अन्ध अँध्यार दए गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, गुरमुख साचे लए फड़, काया मन्दिर अन्दर घर पौड़े चढ़, सच सिँघासण पुरख अबिनाशन इक्को एक एकँकार सोभा पाईआ। सतिगुर नानक हर घट प्रगट, खेड़ा ख़ाली नज़र कोए ना आईआ। सतिगुर पूरा कदे ना जाए मरघट, मसाण मढ़ी गोर डेरा नज़र ना आईआ। मनसूर सईयाद नहीं कोट ब्रह्मण्ड सतिगुर हट्ट, बण हटवाणा जगत चलाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, समरथ आपणी धार जणाईआ। नित नवित्त अन्तर आत्म प्रेम प्रीती रंगो रत्त, साची मिले सति वड्याईआ। तिस साहिब अग्गे कर डण्डावत जोड़ो हथ्थ, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। घर बैठयां दूर रहिंदयां ध्यान लगाउँदयां सब दी पूरी करे आस, आसा तृष्ना पूर कराईआ। सतिगुर पूरा मन्नण मनौण दी कोई ना रखे प्यास, आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को प्रीती प्रीतम मंग मंगाईआ। नेत्र खोल्ह गुरमुख वेखो सदा वसे तुहाडे साथ, अन्दर बाहर सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जो गुरमुख हिरदे ध्याए, तिस रातीं सुत्यां जगाए, जागदयां अग्गे हो के फेरा पाए, रूप अनेक वेस अनन्त वटाईआ। साचा चशमा साचे नगर, घर काया आप जणाईआ। साध सन्त जिस दे भज्जे फिरदे मगर, चारों कुण्ट भज्जण वाहो दाहीआ। बिन सतिगुर पूरे दे करिश्मा कोई ना करे पूरी सधर, आसा मनसा पूर ना कोए कराईआ। पिछली कहाणी वेखे ग़रीब निमाणे तारे बिदर, जगत सुदामे दए वड्याईआ। जो गुरमुख चल के आए इधर उधर, बैठयां पूरन कार कराईआ। निरगुण धार निरवैर पुरख अकाल त्रैगुण माया विच्चों बाहर आए नितर, पंज तत भेव अभेद खुल्हाईआ। सर्ब स्वामी सब दा मित्र, सांझा यार वड्डी वड्याईआ। गुरमुख गुरसिख तेरी चोटी चढ़ के बैठा सिखर, घर घर विच डेरा लाईआ। गुरमुखां नालों सतिगुर नूं बहुता फिकर, हर घट हर थाँ तारनहारा आवे जावे वाहो दाहीआ। रसना जिह्वा जिस दा कीता ज़िकर, सो ज़ाहर ज़हूर आपणी दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे धाम साचा चरण साचा कँवल साचा रूप सति सरूप एको एक दए जणाईआ। साचा नगर खेड़ा सच प्यार, प्रेम प्रीती हरि हरि भाईआ। वेखणहारा धुर दी धार, काया मण्डल ब्रह्मण्ड खोज खोजाईआ। सति सतिवादी वजावणहारा अगम्म सतार, सुर ताल आपणे हथ्थ रखाईआ। देवणहारा गोझ ज्ञान, भेव अभेदा आप समझाईआ। जो गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत रखण सच ध्यान, तिन्हां मेला मिले सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, समें अनुसार चरण टिकाए आण, शब्द झुलाए निशान, मृदंग वजाए नाम महान, महिमा अकथ पुरख समरथ दे वथ, लेखा हथ्थो हथ्थ लहिणा देणा सब दा झोली पाईआ। सतिगुर सति पुरख अकाल, एकँकार वड्डी वड्याईआ। गुरू रूप पंज तत जलाल, सतिगुर जिस नूं हुक्मे विच फिराईआ। लोकमात आ के देवे धुर दा इक ज्ञान, सच संदेसा गीत सुणाईआ। निष्अक्खर कर प्रधान, जीवां जंतां दए वखाईआ। मन मनसा गुर गुरू कोए ना होवे प्रधान, पंज तत चोला कम्म किसे ना आईआ। काया माटी जिस दे अन्दर वड़े शैतान, नाल शरअ करे लड़ाईआ। सतिगुर साचा आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सदा मेहरवान, ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश जीव जंत खाणी बाणी इक्को नज़र नैण वेख वखाईआ। सति सरूप सति शब्द, शाह पातशाह हुक्म मनाईआ। जिस पंज तत अन्दर आ के वड़े उस दा होवे अदब, गुरू रूप वटाईआ। शब्द जिस अन्दर रखे कदम, सो तन तत सोभा पाईआ।

८२४

१५

✪ २३ अस्सू २०२० बिक्रमी धन्ना सिँघ दे गृह ढै पई ज़िला लुधियाणा ✪

आदि जोत नुरानी इक, एकँकारा हरि अख्वाइंदा। आदि शाह सुल्तानी इक, शाह पातशाह आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। आदि हुक्मरानी इक, धुर फ़रमाना सच प्रगटाइंदा। आदि सच मकानी इक, सचखण्ड साचे सोभा पाइंदा। आदि शब्द धुन बाणी इक, अनरागी राग सुणाइंदा। आदि विष्न ब्रह्मा शिव दानी इक, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। आदि त्रैगुण माया पंज तत निशानी इक, नर निरँकारा भेव चुकाइंदा। आदि चारे खाणी रचना रचे इक, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज वंड वंडाइंदा। आदि चारों कुण्ट खेल करे प्रभ इक, चारे बाणी राग अल़ाइंदा। आदि रवि ससि सूर्या चन्न करे प्रकाश इक, मण्डल मण्डप सोभा पाइंदा। आदि धरनी धरत धवल ज़िमीं असमान प्रगट करे इक, अक्ल कलधारी आपणी खेल वखाइंदा। आदि लख चुरासी जीव जंत भेस वटाए इक, भेद आपणे हथ्थ रखाईआ। आदि हुक्म संदेस नर नरेश देवे इक, नाम निधाना इक जणाईआ। आदि निरगुण सरगुण लेखा दित्ता लिख, अपरम्पर आपणा खेल कराईआ। आदि त्रैगुण माया पंज तत मन्दिर अन्दर जोती नूर धरया भेख, वेस अवल्लड़ा रूप वटाईआ। आदि निरगुण निरगुण कीता हित, पारब्रह्म ब्रह्म आपणी वंड वंडाईआ। आदि बिन कलम दवात लेखा दित्ता लिख, ईश जीव जोड़ जुड़ाईआ। आदि धुर दा नाम शास्त्र सिमरत वेद पुराण दित्ता लिख, बोध अगाध कर पढ़ाईआ। आदि जुग चौकड़ी करे हित, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंड वंडाईआ। आदि गुर अवतारां पीर पैगम्बरां बणे मित, साचा मित्र इक अख्वाईआ। आदि दो जहानां बण के सच्चा पित, पिता पुरख अकाल आपणा नाउँ दए समझाईआ। आदि निरवैर हो के हर घट वसया चित, दर दर घर घर आपणा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरि करनी आप कमाईआ। आदि खेल वड ब्रह्माद, ब्रह्मांड रूप वटाईआ। आदि हुक्म शब्द नाद, धुन राग इक जणाईआ। आदि रूप सदा विस्माद, बिस्मिल बेपरवाहीआ। आदि नाम बोध अगाध, कलमा सच सच समझाईआ। आदि खेल सन्त साध, सच संदेसा इक अल़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची वंड आप वंडाईआ। आदि पुरख वंडे वंड, वड दाता बेपरवाहीआ। आदि पुरख खेल ब्रह्मण्ड, निरगुण सरगुण धार चलाईआ। आदि पुरख निवासी जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज सोभा पाईआ। आदि पुरख नूर रव चन्द, अन्ध अन्धेर आपणी धार वखाईआ। आदि पुरख सूरा सरबँग, राज राजान बेपरवाहीआ। आदि पुरख धुर दा अनन्द, निज रस रूप जणाईआ। आदि पुरख अगम्मी छन्द, साचा ढोला गाईआ। आदि पुरख दो जहान होए सदा बख्शंद, बख्शश सब दी झोली पाईआ। आदि पुरख रचना रच हँ ब्रह्म, लख चुरासी रंग रंगाईआ।

आदि पुरख निरगुण हो के गुर अवतार पीर पैगम्बर रूप हो के पए जम्म, पंज तत काया चोला जगत हंढाईआ। आदि पुरख शब्द धार देवे बन्न्, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। आदि पुरख सद बलिहारी कहे धन्न धन्न, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि आपणी रचना आप रचाईआ। आदि पुरख सच स्वामी सोभावन्त वड्डी वड्याईआ। आदि पुरख अन्तरयामी, घट घट वेखे बेपरवाहीआ। आदि पुरख अगम्मी बाणी, ढोला सोहला शब्द करे शनवाईआ। आदि पुरख शाह सुल्तानी, शहिनशाह इक्को नज़री आईआ। आदि पुरख नौजवानी, नव जोबन आपणा रूप वटाईआ। आदि पुरख खेल महानी, ख़ालक ख़लक रिहा वखाईआ। आदि पुरख निरगुण नूर जोत नुरानी, साचा चन्द इक चमकाईआ। आदि पुरख लेखा जाणे चारे खाणी, ख़ालस आपणी धार विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहरवान वड्डी वड्याईआ। आदि पुरख पारस रूप, कंचन सोना आप बणाइंदा। आदि पुरख सति सरूप, सतिवादी रंग रंगाइंदा। आदि पुरख बण के भूप, हुक्मरान इक्को हुक्म मनाइंदा। आदि पुरख गृह मन्दिर वेखे दहि दिशा चार कूट, घर अन्धेरा दूर कराइंदा। आदि पुरख नाता तोड़ जूठ झूठ, सच सुच संजम इक्को राह वखाइंदा। आदि पुरख कृपाल हो के जिस उपर जाए तुठ, तिस लोकमात भगत रूप वखाइंदा। अन्दर वड़ के आदि पुरख लए पुच्छ, मंज़ल साची सोभा पाइंदा। जन्म कर्म मेट दुःख, सुख आत्म इक जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान मेहर नज़र उठाइंदा। मेहर नज़र रख करतार, हरि करता वेख वखाईआ। आदि पुरख भेव न्यार, समझ सके ना कोए राईआ। जुग जुग करदे गए सर्ब विचार, ऊँचो ऊँच ध्यान लगाईआ। लेखा लिख के गए बण लिखार, लेख अंक कोई कर ना सके राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल आप कराईआ। आदि पुरख पुरख आदि आदि नाद अनाद, अनहद शब्द धुनी धुन राग इक उपजाइंदा। रसना जिह्वा बिन बत्ती दन्द दए स्वाद, स्वास स्वास आसा मनसा पूर कराइंदा। धर्म दुआर रच रच काज, वेख वखाए धुर समाज, सच समग्री इक जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि आदि अन्त अन्त आपणी खेल आपणे हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे लेखे लाइंदा। आदि पुरख प्रभ बणाए बणत, घड़न भंनणहार वड्डी वड्याईआ। देवे वड्याई साचे सन्त, सति सरूप इक समझाईआ। वज्जे वधाई गुरमुख भगत, भगवन आपणा राग सुणाईआ। नाता तुट्टे कूड़ कुड़यार जगत, जूठ झूठ डेरा ढाहीआ। आसा तृष्ना मिटे हरस, मर्ज़ तबीब दए गंवाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, खेले खेल हरि रघराईआ। खेले खेल हरि करतारा, हरि करता भेव चुकाइंदा। आदि पुरख कर पसारा, जुग चौकड़ी वंड वंडाइंदा। गुर अवतार सेवादारा, पीर पैगम्बर नाल मिलाइंदा। शब्द सरूपी शाहो भूपी छोटा छोटा थोड़ा थोड़ा सब नूं देंदा रिहा लारा, वाक भविक्खत बिन आपणी लिख्त सर्ब जणाइंदा। कलयुग अन्त नव नौ चार होए धूंआँधारा, साचा चन्द ना कोए चमकाइंदा। करे खेल अगम्म अपारा, हरि पुरख अपरम्पर स्वामी आपणी खेल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म वरतावे मात, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जन भगतां देवे साची दात, वस्त अमोलक झोली पाईआ। आत्म परमात्म गौणी गाथ, दरगाह साची सच पढ़ाईआ। नानक गोबिन्द इक्को जोती दा जलवा गए आख, आत्म सोहला ढोला इक्को इक सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जिस जन खोल्हे आपणा ताक, तकवा इक्को इक जणाईआ। बंद कवाड़ी खोल्हे ताक, ताकत गुरमुख दए जणाईआ। कूड़ी क्रिया मिटे हालात, हल आपणा स्वाल कराईआ। गुरमुख गुरसिख प्रभ मिलण नूं रहिण बेताब, प्रेम प्याला जाम प्याईआ। हरिजन गुरू जिन्हां होवे आफ्ताब, सच तलूअ रूप वटाईआ। करे रोशन इक महिराब, जिस हुजरे वसे साईंआ। नजरी आए इक नवाब, शाह पातशाह वड्डी वड्याईआ। जिस नूं सजदा करके पीर पैगम्बर करन आदाब, गुर अवतार नमो नमो सीस झुकाईआ। सो साहिब सब दा आप जनाब, जवाब तलबी सब तों मंग मंगाईआ। आपणा आप लेखा दयो हिसाब, गुर अवतार पीर पैगम्बर आओ चल सरनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बंद कीती खोल्हो किताब, कुतबख़ाना इक्को दए समझाईआ। लिख के दस्सो कलयुग अन्तिम किस किस दी रखो तुसीं लाज, कवण गुरमुख लए प्रनाईआ। देवे हुक्म शाह नवाब, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर फ़रमाना हुक्म जणाईआ। धुर फ़रमाना सुण के इक एक, रूप नज़र ना आईआ। चार कुण्ट दहि दिशा सारे रहे वेख, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। पारब्रह्म प्रभ धरया आपणा भेख, जोती नूर करे रुशनाईआ। कलयुग अन्तिम खेलणहारा खेड, बण खलाड़ी फेरा पाईआ। जन भगतां देवे आपणा भेत, बाकी समझ किसे ना आईआ। कूड़ी क्रिया जगत विकारा दस्से खेत, मन वासना भज्जे वाहो दाहीआ। बिन गुरमुख किसे पत डाल्ही फुल मौले ना बसन्ती चेत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, साहिब साहिब तेरी सरनाईआ। आदि पुरख तेरा खेल अपारा, जुग चौकड़ी नाच नचाईआ। गुर अवतार सेवादारा, पीर पैगम्बर बण मलंग, एका घुमर रहे पाईआ। हथ्थ मतैहरा पीवण भंग, सुनेहड़ा इक्को इक जणाईआ। ग़फ्लत

विच वेखण तारे चन्द, कहिण मिल्या बेपरवाहीआ। मंज़ल चढ़ ना मुकया पन्ध, घर नज़र कोए ना आईआ। जगत वासना होई गंद, सति सरूप ना कोए वखाईआ। बिन वेख्यां बिन पेख्यां ऐवें पाउँदे डण्ड, पुरख अकाल दीन दयाल नज़र किसे ना आईआ। अन्दरों सुरत सवाणी दिसे सब दी रंड, बाहर जगत कन्त सारे रहे हंढ्ढाईआ। बिन सतिगुर पूरे निज आत्म ना देवे कोए अनन्द, सति सरूप विच ना कोए समाईआ। तेरे दर स्वाली इक्को मंग रहे मंग, मांगत बण के झोली डाहीआ। आदि वजाया इक नद, ब्रह्माद करी शनवाईआ। कलयुग अन्तिम वेला रिहा लँघ, भज्जा जाए वाहो दाहीआ। सच लभ्भे ना किसे पलँघ, सुख आसण सोभा कोए ना पाईआ। चारों कुण्ट हँकार विकार दिसे हँ, ब्रह्म रूप नजर कोए ना आईआ। किरपा कर श्री भगवान, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। कलयुग अन्तिम जन भगतां देवां साचा दान, लख चुरासी ख़ाली हथ्थ फिराईआ। जिन्हां अन्तर देवां धुर निशान, सोहँ सति सरूप समझाईआ। सो गुरमुख सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै सारे गाण, तिन्हां सचखण्ड मिले वड्याईआ। खाण पीण भोग पशू पंछी जीव जंत सर्ब करन कमाण, एथे ओथे देवे माण ना कोए वड्याईआ। साहिब सतिगुर तुठ जिस देवे आपणा ज्ञान, सो जीअ होए परवान, जीव साचे लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, जुग जन्म दा लेखा पूरब सर्ब चुकाए आण, अरब खरब जन्म जन्म आत्म आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म वेख वखाईआ।

८२७ १५

✪ २३ अस्सू २०२० बिक्रमी बलवन्त सिँघ दे गृह गुजरवाल ज़िला लुधियाणा ✪

आदि पुरख समरथ इक, हरि करता वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी चलाए रथ, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। नाम निधान दे के वथ, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। धुर दी देवे अगम्मी मति, गुर शब्द करे पढ़ाईआ। निरगुण नूर जोत कर प्रगट, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। अमृत आत्म दे के रस, रसना रस सर्ब तजाईआ। नाद सुणा सच्चा अनहद, साची धुन इक उपजाईआ। जाम प्याए इक्को मध, अठ्ठे पहर खुमार रखाईआ। किरपा कर दे वर पंज तत रूप बणाए भगत, भगवन आपणे रंग रंगाईआ। देवे माण उपर जगत, जागरत जोत करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे चाईं चाईंआ। जन भगत हरि सज्जण एक, एकँकार दया कमाइंदा। नित नवित्त बख्शे साची टेक, चरण प्रीती इक समझाइंदा। आत्म परमात्म करो सच्चा हेत, साचा संग रखाइंदा। निज नेत्र लोचण लए पेख, दोए नैण अक्ख ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि भगत सुहेले

८२८
१५

आप उठाइंदा। हरि भगत सुहेले देवे माण, साहिब सतिगुर वड्डी वड्याईआ। लख चुरासी विच्चों कर पहचान, निरगुण सरगुण लए प्रगटाईआ। अन्तर आत्म दे ज्ञान, ब्रह्म विद्या इक समझाईआ। धर्म वखाए धुर निशान, सचखण्ड निवासी आप झुलाईआ। किरपा कर वड मेहरबान, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां मार्ग इक्को इक वखाईआ। जन भगतां मार्ग देवे सच, सच सुच देवे समझाईआ। भाग लगाए काया माटी कच्च, तन ततव तत वेख वखाईआ। प्रेम प्यार अगम्मी देवे रस, रस इक्को इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन वेखे थाउँ थाईंआ। हरिजन वेखे पारब्रह्म, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। निहकर्मी करे सच कर्म, कूड़ी क्रिया कर्म कांड डेरा ढाइंदा। सच वखाए इक्को धर्म, आत्म परमात्म मेल मिलाइंदा। नाता तोड़ वरन बरन, ज़ात पात ऊँच नीच दीन मज़्ह्ब ना कोए वखाइंदा। सति सतिवादी देवे इक्को साची सरन, सरनगति इक हो जाइंदा। लेख चुकावे आवण जावण मरन डरन, भय भउ सर्ब गवाइंदा। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिसन्त श्री भगवन्त आपे आए वरन, नर नरायण आपणा फेरा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। साची सिख्या श्री भगवन्त, जन भगतां आप जणाईआ। इक्को नाम साचा मंत, मन्त्र इक्को इक दरसाईआ। इक्को साहिब सुल्तान साचा कन्त, लख चुरासी जीव जंत रिहा प्रनाईआ। इक्को धाम सुहाए सोभावन्त, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस दी महिमा अगणत, दो जहान रहे जस गाईआ। सो हरिजन बणाए साची बणत, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा नाम वर, आत्म परमात्म परमात्म आत्म सोहँ रूप सति सरूप साचा भूप इक्को नूर ज़ाहर ज़हूर गहर गम्भीर बेनज़ीर निरगुण निरवैर निराकार निरँकार आपणा रंग वखाईआ।

✪ २३ अस्सू २०२० बिक्रमी हरनाम सिँघ दे गृह मैहमां सिँघ वाला ज़िला लुधियाणा ✪

सतिगुर किरपा गुरसिख माण, दो जहान मिले वड्याईआ। गुर किरपा जग देवे दान, वस्त अमोलक झोली पाईआ। सतिगुर किरपा मिले शब्द निशान, धुर दी धार बूझ बुझाईआ। गुर किरपा आत्म परमात्म लए पहचान, पर्दा दूई द्वैत चुकाईआ। सतिगुर किरपा सति सतिगुर मिले आण, सति सतिवादी फेरा पाईआ। गुर किरपा गुरमुख मिले चरण ध्यान, सरन सच सरनाईआ। निरगुण सरगुण बण विचोला खेल करे मेहरवान, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। गुरसिख गुरमुख कर पहचान, लख

चुरासी विच्चों बाहर कढ्ढाईआ। अन्तर अन्तर दे ज्ञान, सुरती सुरत शब्द मिलाईआ। राग सुणा अगम्मी धुन्कान, धुर दी धार आप प्रगटाईआ। अमृत सच कराए पान, निझर झिरना इक झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरसिख इक्को रंग वखाईआ। सतिगुर किरपा गुरसिख रंग, गुरमुख नाम वज्जे वधाईआ। आत्म सेज सुहाए पलँघ, सुहञ्जणी डेरा लाईआ। अनहद नाद वजाए मृदंग, अनरागी राग अलाईआ। सति सरोवर अमृत धार वखाए गंग, अमृत इक्को इक चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरसिख अन्दर जावे लँघ, जगत दुआर पन्ध मुकाईआ। गुरसिख अन्दर सतिगुर लँघे, आपणा पन्ध मुकाईआ। सच प्रीती इक्को मंगे, प्रेम रीती रिहा जणाईआ। साचा देवे परमानंदे, निजानंद करे रसाईआ। आत्म सुणाए साचा छन्दे, परमात्म सोहँ रूप समझाईआ। जुग जन्म दी टुट्टी गंढे, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। निरगुण निरगुण वसे संगे, सरगुण सरगुण सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कर्महीण करे चंगे, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सतिगुर पूरा गुरसिख मीत, सज्जण इक अख्वाईआ। गुरसिख सच्चा बणाए सतिगुर रीत, साची सेव कमाईआ। दोहां मिल के काया मन्दिर अन्दर काअबा बणे मसीत, गुरुदुआर मन्दिर रूप वटाईआ। गुरसिख गुर दोवें मिल के अन्तर गावण गीत, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोए हिलाईआ। सिफ्त सालाही इक दूजे नूं कहिण ठीक, गुरसिख कहे वाहवा गुरू तेरी वड्याईआ। सतिगुर कहे गुरसिख तेरी प्रीत, प्रेम डोरी तन्द बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख साचे आपणे संग रखाईआ। सतिगुर रखे गुरमुख संग, सद आपणे अंग लगाईआ। गुरसिख मंगे धूढ़ी मंग, घर साचे झोली डाहीआ। सतिगुर देवे शब्द अनन्द, अनरस अगम्म वखाईआ। गुरमुख कहे मेरा मुक्का पन्ध, प्रभ मिल्या बेपरवाहीआ। सतिगुर कहे मेरा चढ़या चन्द, लोकमात करे रुशनाईआ। दोहां मिल के बणे सोहँ छन्द, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। दोहां मिल के सति धर्म दी बज्झे इक्को गंढ, लोकमात सके ना कोए खुलाईआ। गुरसिख कहे प्रभ मेरे सीने पाई ठंड, अमृत मेघ इक बरसाईआ। सतिगुर कहे मेरे अंगीकार होया अंग, अंगण मेरा दित्ता सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आदि जुगादि जुग चौकड़ी भगत भगवान सन्त सज्जण कर परवान, गुरमुख गुरसिख दे दे दान, वस्त अमोलक काया गोलक झोली नाम सदा अनडिठ भराईआ।

✪ २३ अस्सू २०२० बिक्रमी बाबू सिंघ दे गृह पिण्ड डेहलों ज़िला लुधियाणा ✪

गुर अवतार पीर पैगम्बर दे भरवासा, लख चुरासी जीव जंत गए समझाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी दे दिलासा, धुर दी साची सच आवाज़ सुणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त प्रगट होवे पुरख अबिनाशा, अबिनाशी आपणी खेल कराईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ गगन गगनंतर पावे रासा, दो जहान भेव चुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव त्रैगुण माया पंज तत दस्सणहारा भेव खुलासा, अनभव आपणी कार कमाईआ। दो जहान नौजवान मर्द मर्दान साची पावे रासा, निरगुण निरगुण सरगुण सरगुण गोपी काहन नचाईआ। साचा नूरी चन्द जोती जोत करे प्रकाशा, अन्ध अन्धेर मिटाईआ। जन भगत दुआर हरि निरँकार किरपा धार साचे गृह करे वासा, हरि मन्दिर रूप वटाईआ। जुग जन्म कर्म धर्म वरन बरन जो रिहा प्यासा, अमृत मेघ इक बरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि दाता बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सुणाउँदे गए गीत, जीव जंत जगत पढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत दस्सदे रहे रीत, धुर संदेसा इक समझाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश चार कुण्ट दहि दिशा लभ्भदे रहे मन्दिर मसीत, शिवदुआले मट्ठ खोज खोजाईआ। साहिब सतिगुर शब्द स्वामी आदि जुगादि नित नवित्त वसे धाम अनडीठ, महल अटल उच्च मनार इक्को इक जणाईआ। कृपानिधान ठाकर स्वामी हो मेहरबान जन भगत काया करे ठांडी सीत, निझर धार अमृत रस बूँद स्वांती इक चुआईआ। निरगुण सरगुण वसणहारा ऊँच नीच राउ रंक हस्त कीट, चारे खाणी बैठा डेरा लाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित्त लए जीत, शाह पातशाह शहिनशाह धुर दे हुक्म नाल राज राजानां शाह सुल्तानां देवणहारा धुर दी भीख, भिच्छया इच्छया झोली आप भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर गए दस्स, धुर संदेसा इक सुणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त निरगुण रूप आए नस्स, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। करे खेल प्रगट हो समरथ, समरथ आपणी कार कमाईआ। नव नौ चार खेड़ा करे भट्ठ, जोती अग्नी लम्बू एका लाईआ। आत्म परमात्म मार्ग देवे दस्स, दहि दिशा करे सच पढ़ाईआ। जन भगतां अन्दर काया मन्दिर डूंग्घी भँवरी जाए वस, बजर कपाटी कुण्डा तोड़ तुड़ाईआ। साचे सन्तां देवे अमृत रस, बूँद स्वांती जाम प्याईआ। गुरमुखां बख्शे सति धीरज जत, जोग इक जणाईआ । गुरसिखां लेखे लाए रत्त, रत्ती रत आपणी झोली पाईआ। नव नौ चार वरन चार देवे इक्को मति, ब्रह्म विद्या करे पढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया हउमे हंगता माया ममता देवे कढ्ढ, नाम खण्डा हथ्थ उठाईआ। नौ दुआर कर प्यार हरिजन पार कराए हद्द, घर दसवां बूझ बुझाईआ । धुन अनाद बोध अगाध शब्दी

राग सुणाए अनहद, धुन आत्मक इक उपजाईआ। अमृत आत्म सति सरोवर विच्चों प्याए अगम्मी मध, अट्ठे पहर खुमार रखाईआ। मेहरवान मेहर नज़र नाल घर आपणे लए सद्द, गृह मन्दिर खुशी मनाईआ। सुरती शब्दी मेल मिला के इक सुणाए छन्द, सोहँ ढोला नाउँ जणाईआ। निरगुण निरगुण बैठे अंग, अंगीकार इक अख्वाईआ। आत्म परमात्म वसे संग, सगला संग निभाईआ। सच दुआर चरण कँवल हरि सरनाई बहिण सज, घर साचे खुशी मनाईआ। बिन मकक्यों काअब्यो हो जाए हज्ज, बिन मन्दिर मसीत ठाकुर परवरदिगार नज़री आईआ। बिन कपड़ ओढण पड़दा देवे कज्ज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दस्स के गए बोल, दो जहानां नाद सुणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त प्रगट होवे आप अडोल, सृष्ट सबाई दए डुलाईआ। दीन मज़्ह़ब ज़ात पात दा वेखे आण घोल, चार कुण्ट दहि दिशा वेखे लड़ाईआ। नाम निधान श्री भगवान जीव जंत साध सन्त नाम कंडे देवे तोल, जगत तराज़ू नज़र कोए ना आईआ। अन्दर वड़ के पौड़े चढ़ के जन भगतां कुण्डा देवे खोल्ह, बंद दरवाज़ा पड़दा आप उठाईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल दीन दयाल सुरती शब्दी जाए मौल, मौला आपणा रूप वखाईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतारां पीर पैगम्बरां नाल कीता कौल, सो साहिब सतिगुर अन्तिम तोड़ निभाईआ। देवे वड्याई धरनी धरत धौल, चरण कँवल उपर आप टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर गए सुणा, धुर दी धार जगत जणाईआ। कलयुग अन्तिम पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जावे आ, निरवैर पुरख फेरा पाईआ। शब्द सरूपी शाहो भूपी चारों कुण्ट बणे मलाह, दहि दिशा बेड़ा आप तराईआ। जन भगतां साचे सन्तां देवे इक सलाह, ढोला गाओ बेपरवाहीआ। खाणी बाणी धुर संदेसा दए जणा, बोध अगाध इक पढ़ाईआ। कुदरत कादर वेखे वेखणहारा दो जहां, ब्रह्मण्ड खण्ड पड़दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लेखा गए लिख, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। कलयुग अन्तिम पतिपरमेश्वर किसे ना पए दिस, नेत्रहीण होए लोकाईआ। घर घर प्रगट होवे कूड़ी विस, अमृत रस ना कोए चखाईआ। घर विच सुत्ता करवट बदले मुख भवा के आपणी पिठ, नेत्र नैण ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दस्स के गए जोग, जगत जोगीशर इक जणाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल धुर संजोग, परवरदिगार सच्ची सरनाईआ। जिस दा कलमा नबी रसूल गुर अवतार पीर पैगम्बर गायण श्लोक, सोहला ढोला राग अल्हाईआ। सो स्वामी सच तिस साहिब दी

रखो ओट, ओड़क इक्को नज़री आईआ। साचा नाम दो जहान लगाए चोट, नगारा आपणे हथ्थ उठाईआ। राह तक्कण लोक परलोक, कोटन कोटि ब्रह्मण्ड ध्यान लगाईआ। गुरमुख विरले भगत जन प्रभ मिलण दा रखण शौक, कलयुग अन्त जगत लोकाई नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बोल सच, सच साजण गए जणाईआ। कलयुग अन्तिम आवे नट्ठ, सचखण्ड निवासी फेरा पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया वेखे भट्ठ, लख चुरासी ध्यान लगाईआ। फोल फोलाए मन्दिर मट्ठ, गृह गृह आपणा डेरा लाईआ। चौदां लोक वेखे हट्ट, चौदां तबकां पड़दा दए चुकाईआ। चौदां विद्या वेखे नट्ठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण आपणा वेस वटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर अन्तिम दस्सण, दहि दिशा वज्जे वधाईआ। पुरख अकाल जन भगतां आए रखण, निरगुण सरगुण वेस वटाईआ। साचा मार्ग चार वरनां आए दस्सण, बरन अठारां करे पढ़ाईआ। खेले खेल उतर पूरब पच्छिम दक्खण, दहि दिशा आपणा रंग रंगाईआ। लख चुरासी विच्चों वरोले मक्खण, गुरमुख सच्चे बाहर कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण निरवैर आपणी दया कमाईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल, अक्ल कलधारी खेल खलाईआ। रूप धर अकाल दयाल, मेहरवान नज़र इक उठाईआ। शाहो भूप बण सुल्तान, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। दो जहानां पाए आण, सीस सके ना कोए उठाईआ। शब्द संदेसा देवे धुर फ़रमान, नाम निधाना इक जणाईआ। सृष्ट सबाई नज़री आए इक्को काहन, बंसुरी नाम धुन सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। हरि वड्डा सतिगुर पुरख अकाल, दो जहान रहे जस गाईआ। जोती नूर जलवा जलाल, ज़ाहर ज़हूर बेपरवाहीआ। आदि जुगादि बणे दलाल, जुग चौकड़ी शब्दी रूप वटाईआ। जन भगतां वसे सदा नाल, साचे सन्तां विछड़ कदे ना जाईआ। गुरमुखां लेखे लाए कीती घाल, कीती घाल थाएँ पाईआ। गुरसिखां त्रैगुण माया तोड़े जंजाल, जीवण जुगत जगत जणाईआ। काया मन्दिर अन्दर वखाए इक्को इक सच्ची धर्मसाल, जिस घर वसे सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरिजन वेखे थाउँ थाईंआ। हरिजन अन्तिम वेखणहारा, हरि जू वड्डा वड अख्वाइंदा। कलयुग अन्तिम लै अवतारा, वड अवतारी वेस वटाइंदा। शब्द अगम्मी बोल जैकारा, जै जैकार इक्को इक सुणाइंदा। दो जहानां सच भण्डारा, नाम निधान आप वरताइंदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश करे प्यारा, ज़ात पात दीन मज़्हब वंड ना कोए वंडाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो देंदा रिहा लारा, सो अन्तिम

वेख वखाइंदा। लोक परलोक लगावणहारा अखाड़ा, दो जहान नाच नचाइंदा। वेखे खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर आपणी कार कमाइंदा। जन भगतां देवे इक सहारा, चरण कँवल कँवल जणाइंदा। साचे सन्तां देवे इक अधारा, सिदक सबूरी झोली पाइंदा। गुरमुखां खोल्ह बंद कवाड़ा, निज नेत्र दरस कराइंदा। गुरसिखां इक जणाए पार किनारा, मझधार ना कोए रुढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे करतार, कल अन्त दया कमाईआ। लेखा जाण सर्ब संसार, सृष्टी इष्ट फोल फोलाईआ। दृष्ट होई गुनाहगार, विशेष रूप ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण निरवैर निरँकार आपणी कार कमाईआ। आपणी कार करे भगवान, भगवन आपणी दया कमाइंदा। सति धर्म दा सच निशान, साहिब सुल्तान इक झुलाइंदा। बोध अगाध ब्रह्म ज्ञान, बण पंडत आप पढ़ाइंदा। आत्म परमात्म जीआ दान, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलयुग अन्त श्री भगवन्त हरिजन साचे मेल मिलाइंदा। मिलण को गुर एको एक, आदि जुगादि वड्डी वड्याईआ। त्रैगुण माया ना लाए सेक, पंच विकार ना कोए हल्काईआ। निज नेत्र काया अन्तर लए वेख, तन मन्दिर सोभा पाईआ। दो जहानां बण के खेवट खेट, बेड़ा बन्ने दए लगाईआ। नाता जोड़ पिता बेट, पूत सपूता गोद सुहाईआ। सति सतिवादी करे सच्चा हेत, आप आपणे अंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरि जू हरिजन लए तराईआ। तारन को प्रभ ठाकर स्वामी, आदि जुगादी इक अख्वाइंदा। नर निरँकारा अन्तरजामी, अन्तरगत सब दी फोल फोलाइंदा। जुग चौकड़ी शब्द अनाद बोलणहारा बाणी, आदि जुगादि गुर अवतारां पीर पैगम्बरां आप पढ़ाइंदा। सर सरोवर अमृत रस निझर देवणहारा ठंडा पाणी, बूँद स्वांती आप टपकाइंदा। शब्द सुरत नौजवान मेल मिलावे शब्द हाणी, दर घर साचे सगन आप मनाइंदा। आत्म परमात्म पद निरबाणी, आप वखाए सच मकानी, महल अटल इक्को इक रुशनाइंदा। जिस घर वसे शाह सुल्तानी, दो जहानां हुक्मरानी, डंका नौबत नाम इक सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगत बणाए धुर दरगाह दी पटराणी, पारब्रह्म प्रभ आपणा रंग रंगाइंदा। रंग रंगावण को प्रभ एका, दूजा नज़र कोए ना आईआ। अन्दर वड़ के दस्से आपणा भेता, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। मन हँकारी जो लै के बैठा ठेका, तिस दा डेरा देवे ढाहीआ। मात गर्भ दा गुरमुख कराए चेता, पिछला लेखा दए समझाईआ। कर्म कांड दा कढ्ढ भुलेखा, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। आपणे मिलण दी दस्से साची वेंता, बिध इक्को इक जणाईआ। नर नरायण वेखो नेतन आपणा

नेता, घर भूपत रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। भूपत वेखो आपणा राजा, घर मन्दिर सोभा पाईआ। खेले खेल ग़रीब निवाजा, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। अस्व घोड़ा अगम्मी ताजा, शाह सवारा हरि निरँकारा दो जहानां रिहा दौड़ाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण रच के काजा, सच सुअम्बर वड अडम्बर लोकमात आप कराईआ। भूपत बण के शाह नवाबा, वेखणहारा पुन्न सवाबा, जीव जंत काया अन्तर लेखा सब दा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। मेहर नज़र उठाए ठाकर, प्रभ आपणी दया कमाईआ। पार कराए भवजल भव सागर, भय भउ रूप नज़र कोए ना आईआ। जिन्हां देवे दर घर सच्चे आदर, आदत पिछली दए बदलाईआ। सो गुरमुख गुरसिख सूरबीर बहादुर, जिस सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे लए जगाईआ। जगावणहारा आदि पुरख, आलस निंद्रा विच कदे ना आईआ। ना कोई सोग ना जाणे हरख़, दु:ख रोग संताप नेड़ कोए ना आईआ। ना नारी ना दिसे मर्द, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। ना ठंडा ना तत्ता ना होवे सर्द, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। ना खण्डा खड़ग ना रूप वटाए करद, छुरी कंठ ना कोए चलाईआ। प्रभ का खेल सदा असचरज, बिन हरि समझ कोए ना आईआ। साहिब सतिगुर दीन दयाल सृष्ट सबाई गया वर्ज, धुर संदेसा इक सुणाईआ। जीव जंत साध सन्त बिन सतिगुर पूरे जरम कर्म दा लाहे ना कोई कर्ज़, लहिणा सके ना कोए चुकाईआ। जिस वेले प्रभ मिले दोए जोड़ करो अर्ज़, अर्ज़ी आरज़ू अग्गे इक रखाईआ। सदा स्वामी वंडणहारा दर्द, दुखियां दु:ख वेख वखाईआ। नित नवित्त किसे दा होण ना देवे हर्ज, जो जन बैठे ध्यान लगाईआ। जन भगतां मिलण दी प्रभ नूं ग़रज़, नित नित आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची फ़रद फोल फोलाईआ। साची फ़रद फोल के तक्के, बिन अक्खरां अक्खर रिहा पढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम नव खण्ड पृथ्मी जीवां जंतां पैंदे धक्के, सिर हत्थ ना कोए टिकाईआ। कोई रसूल नबी मिले ना मदीने मक्के, मगरों मक़बरयां मुड़ के फेर कोए ना आईआ। कोई ठाकर मन्दिर मसीत लभ्भे, मसला हल ना कोए कराईआ। कोई अठ सठ तीर्थ फिरदे भज्जे, दिवस रैण वाहो दाहीआ। कोई डूंग्घी कन्दर वड़ के सजे, आप आपणा भेख वटाईआ। कोई रसना जिह्वा पढ़ पढ़ उच्ची उच्ची गज्जे, अन्तर समझ कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा घर, नव नौ चार फोल फोलाईआ। नव नौ चार फोलणहारा, एकँकार इक अख्वाइंदा। आदि जुगादि जिस पसारा, जुग चौकड़ी धार बंधाइंदा। लेखा जाणे तेई

अवतारा, भगत अठारां हुक्म वरताइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद खोल्ह कवाड़ा, साचा नग़मा इक जणाइंदा। नानक गोबिन्द बोल जैकारा, शब्दी डंका फ़तहि इक सुणाइंदा। रसना जिह्वा सारे करन तेरा विसथारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणी करनी आप कमाइंदा। करनी करनहार गोबिन्द, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। हरिजन मेटे सगली चिन्द, चिन्ता चिखा ना कोए तपाईआ। वस्त अमोलक देवे गहर गम्भीर गुणी गहिंद, नाम खण्डा झोली पाईआ। माण तुटे सुरप्त इन्द, करोड़ तेतीसा सीस झुकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण प्रभू बख्शंद, बख्शश आपणी इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, तिस भय रहिण कोए ना पाईआ। भय भ्यानक होवे दूर, भावी नेड़ कोए ना आईआ। साहिब सतिगुर जिस नज़र आए हज़ूर, घर विच घर मेल मिलाईआ। सद खुशीआं नाल आखे मेरा पैंडा मुका नेड़े दूर, पांधी रूप ना कोए वटाईआ। चरण कँवल ढह के आखे मेरा मुआफ़ होया कसूर, धर्म राए ना दए सज़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे वेख वखाईआ। वेखण को प्रभ आया ठाकर, निरगुण निरवैर वड्डी वड्याईआ। कलयुग टोहवे डूंघा सागर, जगत खाई फोल फोलाईआ। योद्धा सूरबीर बण बहादर, बलधारी आपणा हुक्म वरताईआ। सिदक सबूरी आप निभा साबर, सच भरोसा इक वखाईआ। धुरदरगाही वड बेपरवाह शब्द अगम्मी बण के जाबर, जगत ज़ुल्म दए मिटाईआ। आदि जुगादि गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस नूं कहिन्दे काबल, काबलीअत सब दी वेख वखाईआ। सरगुण निरगुण निरगुण सरगुण जिस नूं मन्नया बाबल, सो बाबल निरगुण नूर नूर इलाहीआ। बेसमझ मूर्ख मूढ़ मुग्ध अज्याण जिस नूं कहिन्दे पाग़ल, सो सतिगुर सच्चा आपणा खेल रिहा कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन देवे माण वड्याईआ। देवण को हरि एका माण, मेहरवान अख्वाईआ। जन भगतां बख्शे चरण ध्यान, चरण चरणोदक मस्तक टिक्का इक वखाईआ। शब्द अगम्मी दए बबाण, साचे पौड़े लए चढ़ाईआ। काया मन्दिर धुर मकान, मुकामे हक़ दए समझाईआ। जिस गृह मिले मेहरवान, सो मकान सोभा पाईआ। दरस करे सच महिबूब आण, मुहब्बत इक्को इक जणाईआ। नूरी जलवा वेख भगवान, भगत सज्जण लए अंगड़ाईआ। दरगाह साची मिले काहन, बंसुरी आपणा नाम सुणाईआ। विछड़ी सीता मिले राम, सुरती मंगलाचार जणाईआ। साचा झुल्ले छत्र निशान, सति सतिवादी आप वखाईआ। साचा ढोला भगत भगवान दोवें मिल के गाण, सोहँ सो जै जैकार कराईआ। काया मन्दिर अन्दर वड़ के इक दूजे दी करन पहचान, दोवें रल के अक्ख इक्को इक खुल्हाईआ। इक मंगे इक बणे निधान, इक खोल्हे इक देवे ज्ञान, ज्ञान गुरू आपणी दया कमाईआ। इक बोले नाल

ज़बान, इक बोले शब्द नाद धुन्कान, दोहां मिल के घर साचे वज्जे वधाईआ। इक चरणी डिग के मंगे दान, इक देवणहारा नौजवान, दोहां मिल के वस्त अमोलक आपणा रंग वटाईआ। इक कहे तूं श्री भगवान, इक कहे तूं मेरा भगत चतुर सुजान, दोहां मिल के आपणी धार बंधाईआ। इक कहे तूं मेरा मेहरवान, इक कहे तूं मेरा निशान, सन्त कन्त इकट्ठे हो के आपणी खुशी वखाईआ। इक कहे मैनूं तेरा माण, इक कहे तूं मेरी जान, दोहां रल मिल पंज तत काया बुत्त दित्ता बणाईआ। इक कहे मैनूं तेरी आण, इक कहे मैं देवां फ़रमान, दोवें मिल के कहिण आदि जुगादि जुग चौकड़ी भगत भगवान झुलदा रहे निशान, दूजा रहिण ना कोए पाईआ। सो साहिब कलयुग अन्त साचा देवे अगम्मी दान, काया मन्दिर अन्दर आप टिकाईआ। जे कोई लभ्भण जाए विच्चों जहान, नौ खण्ड पृथ्मी हथ्थ किसे ना आईआ। प्रभ का खेल सदा महान, जुग चौकड़ी कार कमाईआ। हरि भगत सुहेले लभ्भे आण, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, जन भगत देवे नाम वर, वस्त अपार किरपा धार एकँकार इक्को इक झोली पाईआ।

✪ २४ अस्सू २०२० बिक्रमी सरवण सिँघ दे गृह पिण्ड राम गढ़ सरदारां ज़िला लुधियाणा ✪

सचखण्ड दुआरे सच सुल्तान, शाह पातशाह आपणा खेल कराईआ। सो पुरख निरँजण हो प्रधान, हरि पुरख निरँजण वेस वटाईआ। एकँकार बण बलवान, आदि निरँजण नूर धराईआ। अबिनाशी करता हुक्मरान, श्री भगवान निशान झुलाईआ। पारब्रह्म प्रभ बण प्रधान, निरगुण निरवैर आपणी कार कमाईआ। महल अटल उच्च मकान, दरगाह साची शोभा पाईआ। शाहो भूप बण राज राजान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि खेल अपारा, सति सतिवादी आप कराइंदा। निरगुण नूर नूर उज्यारा, जोती जोत जोत रुशनाइंदा। खेले खेल उच्च मनारा, मुकामे हक़ डेरा लाइंदा। लाशरीक परवरदिगारा, बेनज़ीर नज़र किसे ना आइंदा। बोलणहार शब्द जैकारा, जै जैकार इक सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआर इक दरबार सो पुरख निरँजण आप लगाइंदा। सचखण्ड लगाए हरि दरबार, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। तख्त निवासी बैठ एकँकार, अक्ल कलधारी आपणा हुक्म वरताईआ। लेखा जाण दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड हुक्म वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव संदेसा देवे धुर ज्ञान, नाम पात्र इक जणाईआ। जुग चौकड़ी वेखे मार ध्यान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी सच सिँघासण

८३७
१५

पुरख अबिनाशन सचखण्ड दुआर इक सुहाईआ। सच दरबार लग्गा अगम्म, नेत्र नज़र कोए ना आईआ। करे खेल श्री भगवन, बेअन्त बेपरवाहीआ। भूपत भूप बण राज राजान, शाह पातशाह आपणा नाउँ रखाईआ। निरगुण निरगुण बण हुक्मरान, सरगुण सरगुण रय्यत वखाईआ। आदि जुगादि बण के काहन, जुग जुगादी वेख वखाईआ। सति सतिवादी सति निशान, सच दुआरे आप झुलाईआ। करे खेल नौजवान मर्द मर्दान, योद्धा सूरबीर वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड धुर दरबारा इक सुहाईआ। धुर दरबारा गया लग्ग, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। तख्त निवासी सूरा सरबग्ग, शहिनशाह सच्चा आसण लाईआ। दो जहान वेखे नट्ठ नट्ठ, निरगुण पांधी पन्ध मुकाईआ। साचा मार्ग जुग चौकड़ी गया दस्स, धुर संदेसा हुक्म मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल अपारा, भेव अभेदा समझ कोए ना पाईआ। शाहो भूप सच्चा सिक्दारा, धुर दी धार आप जणाईआ। शब्द अगम्म बोल जैकारा, साचा नाद इक उपजाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड करे ख़बरदारा, लोक परलोक नैण अक्ख खुल्हाईआ। नव नौ चार देवे इक सहारा, बेपरवाह आपणा भेव रिहा खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, धुर दी धार आप जणाईआ। धुर दी धार जाणे करतार, करता पुरख वड्डी वड्याईआ। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, अन्तिम कोए रहिण ना पाईआ। सेवा कर गुरू अवतार, पीर पैगम्बर हुक्म सीस टिकाईआ। लेखा लिख लिख गए विच संसार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान जगत दृढ़ाईआ। पीर पैगम्बर अञ्जील कुरान दे के गए ब्यान, भेव अभेदा जगत खुल्हाईआ। खाणी बाणी तीर अणयाला मार के गए बाण, आर पार किनारा समझ कोए ना पाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द बोल के गए ज़बान, आत्म परमात्म सच संदेस सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरा सच पसारा, तख्त निवासी एकँकारा, अक्ल कलधारी इक्को सोभा पाईआ। तख्त निवासी साचे तख्त चढ़, सो पुरख निरँजण हुक्म सुणाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सच्चा ढोला नाउँ लैणा पढ़, सो मेरा निष्अक्खर रूप वटाइंदा। उच्च मनार खेल अपार करनी करता रिहा कर, कुदरत कादर आपणा हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मन्दिर इक सुहाइंदा। साचा मन्दिर सोभावन्त, सचखण्ड वज्जे इक वधाईआ। आप सुहाए श्री भगवन्त, भगवन बैठा आसण लाईआ। आदि जुगादी बण के कन्त, सेज सुहञ्जणी इक हंढाईआ। देवणहारा साचा मंत, मन्त्र आपणा नाम जणाईआ। लख चुरासी बणावणहारा बणत, घट घट बैठा सोभा पाईआ। बोध अगाध महिमा अगणत, नित नवित्त करे पढ़ाईआ। देवे माण साचे

भगत सन्त, कन्त लए मिलाईआ। गढ़ तोड़नहारा हउमें हंगत, हँ ब्रह्म दए दरसाईआ। लेखा मुकाए माया ममत, मोह विकार कोए रहिण ना पाईआ। जिस दा भेव ना जाणे कोई आदि अन्त, सो पुरख बिधाता सचखण्ड साचे बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरवैर आपणी धार वखाईआ। निरवैर पुरख सदा निराकार, निरँकार वड्डी वड्याईआ। जुग चौकड़ी खेल करे अपार, करता करनी आपणी दए जणाईआ। निरगुण सरगुण हो उज्यार, जोती जोत जोत रुशनाईआ। शब्द अनाद सच्ची धुनकार, अनादी नाद सुणाईआ। दीआ बाती कमालापाती इक्को बाल, पीर पैगम्बर गुर अवतार दए वड्याईआ। अमृत आत्म सच प्याला देवे प्याल, जाम इक्को इक वखाईआ। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर नित नवित्त चले नाल, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणी खेल खलाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। लेखा जाण सचखण्ड सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक वखाईआ। मेहरवान हो दयाल, एका बख्शणहार सच्ची सरनाईआ। जिस दा खेल बेमिसाल, मिसल सके ना कोए बणाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण तिस दा देण अहिवाल, मार्ग जीव जंत जणाईआ। जिस दे पिच्छे कोटन कोटि गुर अवतार पीर पैगम्बर घालण गए घाल, विष्न ब्रह्म शिव दर सीस झुकाइंदा। सो साहिब सतिगुर पुरख अकाल मर्द मर्दाना खेल करे कमाल, करनी करता आपणे हथ्थ रखाइंदा। सचखण्ड दुआर एकँकार प्रगट हो सच्ची सरकार, धुर फ़रमाणा सच्चा राणा शब्द अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी दो जहानां इक तराना बिन रसना जिह्वा आप सुणाइंदा। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त सृष्ट सबाई दा इक्को कन्त श्री भगवान, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार मूर्त अकाल अक्ल कल आपणी खेल वखाइंदा। अक्ल कलधारी बेऐब नूर, नूर नुराना डगमगाईआ। मुकामे हक़ कर ज़हूर, जलवा इक्को इक वखाईआ। आदि जुगादि साची तूर, कायनात करे पढ़ाईआ। एका नाम रस रहे मख़मूर, मंज़ल मक़सूद इक्को डेरा लाईआ। नित नवित्त मुरीद मुर्शद सदा हज़ूर, हज़रत आपणा नूर रुशनाईआ। सर्ब कला प्रभ भरपूर, दूजे दर मंगण कदे ना जाईआ। सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी साचे तख्त बैठा रहे ज़रूर, ज़रूरत सब दी पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआर खेल अपार, हरि करता आप कराईआ। हरि करता वड मेहरवान, मेहर नज़र नैण उठाइंदा। जुग चौकड़ी हो प्रधान, निरगुण सरगुण साचा राह चलाइंदा। शब्द अगम्मी दे के दान, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। अन्तर आत्म वेखे आण, गृह मन्दिर खोज खोजाइंदा। धर्म वखाए इक निशान, सति निशाना हथ्थ उठाइंदा। सर्ब जीआं प्रभ वखाए इक मकान, काया कपड़ सोभा पाइंदा। जिस

गृह वसे श्री भगवान, निज नेत्र नज़री आइंदा। सृष्ट सबाई इक्को दस्से सच ईमान, आमल सच्चा नाम कराइंदा। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश देवणहारा माण, ज़ात पात ऊँच नीच राउ रंक दीन मज़्ब वंड ना कोए वंडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचे तख्त सोभा पाइंदा। साचे तख्त बैठ श्री भगवान, साची रचना आप रचाईआ। आपणी इच्छया कर बलवान, सुत दुलारा शब्दी जाईआ। इक्को घर खोल्ह अगम्म दुकान, पूत सपूते दए वड्याईआ। पूत सपूता कर प्रधान, सिर समरथ हथ्थ टिकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर परवान, त्रैगुण माया झोली पाईआ। त्रैगुण खेल करे नौजवान, पंज तत करे कुड़माईआ। पंज तत कर प्रधान, चारे खाणी वंड वंडाईआ। चारे खाणी जगत निशान, लख चुरासी रूप धराईआ। लख चुरासी दे ज्ञान, शब्द बोध अगाध धुन आपणी इक समझाईआ। साची धुन धुर फ़रमाण, चारे बाणी रही गाईआ। चारे कुण्ट होए प्रधान, चारे जुग वेख वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर निरगुण सरगुण हो के कर कर गए खेल महान, महिमा अकथ कथ सुणाईआ। अन्तिम कूक पुकार कह के गए सर्ब जीआं दा इक भगवान, पुरख अकाल परवरदिगार बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड वसे साचा मन्दिर सति सतिवादी इक सुहाईआ। सति सतिवादी साचा बंक, बंक दुआरी आप सुहाइंदा। ना कोई राउ ना कोई रंक, राज राजान ना कोई वेस वटाइंदा। ना कोई आदि ना कोई अन्त, भेव अभेद ना कोए जणाइंदा। ना कोई पांधा ना कोई पंडत, लिख लिख लेख ना कोए मुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच दरबार हरि निरँकार, जोती धार नूर नुराना वड मेहरवाना धुर तराना इक्को राग सुणाइंदा। धुर तराना शब्दी राग, अनरागी आप सुणाईआ। दो जहान उपजे सब नूं वैराग, वैरागी रूप लए वटाईआ। सोई सवाणी जाए जाग, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। लोक परलोक बुझावणहारा आग, अमृत मेघ इक बरसाईआ। आत्म परमात्म बणावणहारा साक, सज्जण इक्को इक दरसाईआ। दुरमति मैल धोवणहारा दाग़, सतिगुर पूरा शब्द वड्डी वड्याईआ। घर जोत दीप जलावणहारा चिराग़, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। डूंग्घी भँवरों लए काढ, सुरती शब्द नाल बदलाईआ। आत्म सेजा करनहारा लाड, सेज सुहञ्जणी इक वखाईआ। नित नवित्त सदा सुहेला सब दी रखणहारा याद, अभुल्ल भुल्ल कदे ना जाईआ। जन भगतां सुणनहार फ़रयाद, सच अदालत इक वखाईआ। लेखा जाण ब्रह्म ब्रह्माद, ब्रह्मांड खोज खोजाईआ। जिस रचना रची आदि, सो करता करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। सच सुल्तान वड मेहरवान निरगुण निरवैर स्वांगी वरते आपणा स्वांग, समझ सके ना कोए राईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस दी रखदे गए तांघ, निज नेत्र ध्यान लगाईआ।

नौ खण्ड सत्त दीप सति धर्म सच सच जगाए इक चिराग़, कूड़ अन्धेरा दए गंवाईआ। लहिणा देणा चुकाए वरन बरन गोत ज़ात पात, दीन मज़्हब इक्को रंग वखाईआ। चार वरन अठारां बरन सरन सरनाई बन्ने साचा नात, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। धुर संदेसा नर नरेसा सर्ब जीआं सुणाए इक्को गाथ, हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई करे सच पढ़ाईआ। अन्तर आत्म परमात्म सति गुरदेव देवे शब्दी दात, अन्तरजामी आपणी बूझ बुझाईआ। जिस दा लेखा जुग चौकड़ी लिख के गए नाल कलम दवात, शाही काग़ज़ गंढु पवाईआ । सो साहिब सुल्तान सचखण्ड साचे बैठा खेल करे तमाश, सतिगुर आपणा स्वांग वरताईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पूरी करे आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। भगतां मीता ठांडा सीता सद वसे पास, घर मन्दिर डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआरे आपणा खेल कराईआ। सचखण्ड दुआरे खेल भगवान, हरि करता आप कराइंदा। सति धर्म दा इक निशान सति सतिवादी आप उठाइंदा। धुर संदेसा दए ज्ञान, एकँकार इक्को वार सर्ब समझाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करो ध्यान, वड ध्यानी नैण तकाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर इकट्ठे हो के वेखो आण, पतिपरमेश्वर आपणी धार चलाइंदा। निउँ निउँ सजदा सीस करो सलाम, जगदीश जगदीशर इक्को घर सोभा पाइंदा। जिस नूं कहिन्दे गए वड अमाम, सो मेहरवान आपणी कार कमाइंदा। जिस दा आदि जुगादि मन्त्र सतिनाम, फ़तहि डंका जगत वजाइंदा। जिस दे गृह मन्दिर अन्दर एका नूर जोत चमके भान, सूरज चन्द रूप ना कोए वटाइंदा। जो लख चुरासी सदा सदा बण के रहे सच्चा काहन, बंसुरी आपणे नाम सुणाइंदा। जो हर घट वसया राम, बैठा सच सिँघासण कर बिसराम, आपणी खेल वखाइंदा। जिस नूं नानक निरगुण कहिन्दे सतिगुर प्रधान, सो सतिगुर आपणी कार कमाइंदा। जिस नूं गुर गोबिन्द सिँघ किहा पुरख अकाल, सो जोती शब्दी आपणा तेज वरताइंदा। तिस दा लेखा कोई समझ ना सके विच जहान, कोटन कोटि ध्यानी पढ़ गए वेद पुराण, शास्त्र अञ्जील कुरान खाणी बाणी कहिण कोए ना आइंदा। मति होई हैरान, अन्तर आत्म कुफ़ल तोड़ पड़दा लाह, वेख साचा रंग ना कोए रंगाईआ। मन वासना सारे मारन धाह, ममता रही कुरला, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। नौ दुआरे सत्थर बैठे वछा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार होया हल्का, आसा तृष्ना डैण रही खा, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। आत्म परमात्म मिल के नाता ना ल्या जुड़ा, शब्दी गुर ना बणया मलाह, शहादत देण कोए ना आईआ। सृष्ट सबाई होई बेवफ़ा, जलवा नूर भुल्लया खुदा, रहमत करे ना कोए अदा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच सिँघासण पुरख अबिनाशन, सच दुआर इक इकल्ला आप सुहाईआ। इक इकल्ला सुहाए दुआरे, वज्जे इक्को नाम वधाईआ।

अलख अगोचर अगम्म अथाह हुक्म देवे पुरख अकाल, दो जहान आप सुणाईआ। इकट्ठे हो गुरू अवतार, पीर पैगम्बर नेड़े आओ वाहो दाहीआ। लोकमात नेत्र नैणां कलयुग करनी दयां वखाल, चारों कुण्ट होई बेहाल, सति सन्तोख नज़र कोए ना आईआ। जूठ झूठ शिवदुआले मट्ठ मन्दिर गुरुदुआरे वज्जे ताल, सति धर्म बैठा मुख छुपाईआ। गुर का शब्द किसे ना दिसे नाल, ख़ाली बुत्त रहे कुरलाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द पढ़दे सुणदे दिसण नाम, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। काया खेड़ा बणया काम ग्राम, सति सतिवाद ना कोए सालाहीआ। त्रै पंज नौ दर बदलण वाला नज़ाम, कूड़ राजा कूड़ी प्रजा आसा तृष्ना मन रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुर अवतार पीर पैगम्बरां हुक्म इशारे नाल रिहा जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर खोल्हो अक्ख, श्री भगवान आप जणाइंदा। लोकमात कलयुग जीव वेखो प्रतख, चारों कुण्ट अन्धेरा छाइंदा। पिता पूत तुटा नत्त, भैण भाई संग ना कोए निभाइंदा। चार कुण्ट दहि दिशा सियासत रही नच्च, गुरमुख सच ना कोए प्रनाइंदा। धुर दा नाम बण गुलाम बोल कलाम जो कलयुग जीवां आए दस्स, सो मन चित ध्यान ना कोए लगाइंदा। माया ममता हउमें हंगता घर घर खुल्ल्ह्या हट्ट, बण वणजारा कलयुग आपणी हट्ट चलाइंदा। साची दिसे ना ब्रह्ममत, राजा प्रजा नाता सति ना कोए जणाइंदा। लेखा चुक्कया तीर्थ अठसठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती दूर दुराडी रही नट्ठ, कलयुग जीव नंगा हो के अन्दर तारीआं लाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लोकमात राह इक वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर मारो झात, हरि झाकी आप जणाईआ। नव खण्ड पृथमी वेखो कायनात, कलमा नबी ना कोए ध्याईआ। किसे मिले ना आबेहयात, अमृत रस भर प्याला जाम ना कोए प्याईआ। मन्दिर अन्दर काया अन्धेरी रात, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। साचे पत्तण मिले ना माही घाट, नईया नौका पार ना कोए कराईआ। दुरमति मैल देवे ना कोई काट, निर्मल सीर ना कोए प्याईआ। झगड़ा प्या दीन मज़्हब ज़ात पात, सच्ची ज़ात समझ किसे ना आईआ। मेरा नाउँ लभ्भदे विच्चों अलिफ़ ये लुग़ात, साचा पड़दा खोल्ह, दरस कोए ना पाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द करन बात, बातन नूर ज़हूर समझ कोए ना जाईआ। आओ वेखो नेत्र खोल्ह जगत तमाश, कलयुग आपणा नाच रिहा नचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी, कलयुग रासी रिहा जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेख होए हैरान, नेत्र नैण सर्ब शरमाईआ। सब नूं भुल्लया धुर फ़रमान, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। पढ़ पढ़ थक्के वेद पुराण, प्राणी प्राण ना कोए सालाहीआ। चार वरन होए हैरान, अठ दस पन्ध ना कोए चुकाईआ। आलम उल्मा कर कर थक्के ज्ञान,

काया कुत्रा काअबा सच महल्ला नज़र किसे ना आईआ। बाणी तीर निराला मारे बाण, बजर कपाटी सके ना कोए तुड़ाईआ। काया मन्दिर अन्दर सच्चा हरिमन्दिर सके ना कोए पछाण, चारों कुण्ट भज्जण वाहो दाहीआ। साचा रिहा ना किसे ईमान, सिदक सबूरी धर्म ना कोए रखाईआ। गुरुदुआर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ कूड़ा पीण खाण, ख़ालस रंग ना कोए वखाईआ। अन्तिम भस्म होणा विच जहान, मिट्टी कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लेखा सब नूं रिहा वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण सच सुच, जगत झोली आए पाईआ। कलयुग अन्तिम होई पुछ, करनी करता सारे गए भुलाईआ। धर्म दुआरयों गए रुस्स, कूड़ी क्रिया नाता ल्या जुड़ाईआ। माँ पुत्तर सके ना कोई पुच्छ, विभचार करे लड़ाईआ। अमृत पीवे ना कोई घुट्ट, जाम रस हथ्थ किसे ना आईआ। निर्मल जगे ना कोई जोत, अज्ञान अन्धेर ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरा खेल समझ कोए ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन विचार, दर घर साचे मता पकाईआ। चारों कुण्ट कूड़ होया प्रधान, डौरु डंका आपणा नाम वजाईआ। दर दर घर घर नच्चदा फिरे शैतान, शरअ करे लड़ाईआ। साबत दिसे ना कोए ईमान, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। मसला भुल्लया हक़ कुरान, बाणी गुरू ना कोए प्रनाईआ। आत्म अन्तर ना कोए ज्ञान, चौदां विद्या फिरे वाहो दाहीआ। चौदां तबक सच ना दिसे कोई निशान, चौदां लोक वज्जे ना सच वधाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव नैण ना उपर उठाण, लोचण बैठे बंद कराईआ। तेरा खेल श्री भगवान, तेरे हथ्थ वड्याईआ। विष्न कहे मैं दे दे थक्का दान, ब्रह्मा कहे जुग चौकड़ी तेरा खेल समझ सके ना कोई राईआ। शंकर कहे मैं हथ्थ त्रिसूल लै के सब दी करदा रिहा कल्याण, चारों कुण्ट डौरु वाहीआ। काल कहे मैंनूं तेरा हुक्म परवान, मौत लाड़ी कहे मैं नार रकान, लख चुरासी रही प्रनाईआ। धर्म राज कहे मैं लेखा मंगां आण, बचया कोई रहिण ना पाईआ। चित्रगुप्त कहे मैं वेखदा रिहा दो जहान, दिवस रैण ध्यान लगाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर बिन तेरे भगतां कोई ना मिल्या तैनूं आण, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। कर किरपा वड सतिगुर मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। कलयुग कूड़ी अग्न बले जहान, पंज तत रही जलाईआ। हर घट वासी पुरख अबिनाशी शब्द सरूपी दे इक ज्ञान, रीती सब दी दे बदलाईआ। नीती करा दे चतुर सुघड़ सुजान, काया ठांडी सीती सोभा पाईआ। ऊँच नीच झगड़े सर्ब मिट जाण, आत्म ब्रह्म हर घट नज़री आईआ। निज नेत्र सब नूं दे ध्यान, जगत लोचण लेखा दे मुकाईआ। तेरे अमृत सरोवर घर घर विच करन अशनान, दुरमति मैल धवाईआ। वेस अनेका तेरा गोपी काहन, सीता राम ईसा मूसा मुहम्मद बण पैग़ाम सुणाईआ। नानक गोबिन्द तेरी शान,

साहिब सतिगुर वाली दो जहान, तेरा आदि जुगादी किला इक निशान, दो जहानां दए वड्याईआ। कलयुग लेख मुकाउणा आण, गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत चरण कँवल देणा माण, जूठ झूठ रहे ना कोए अभिमान, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी साहिब स्वामी सर्ब जीआं दा इक भगवान, तुध बिन दूजा नज़र कोए ना आईआ। तेरी ख़लकत तेरी मख़लूक, तेरे हथ्थ सर्ब सलूक, दुविधा रोग दूई द्वैत झगड़ा दे मिटाईआ। आपणे नाम धर्म कर्म दा दे संजोग, कूड़ी क्रिया मिटे विजोग, सुखी होए मातलोक, भूमी धरनी धरत धवल घर साचे खुशी मनाईआ। नित नवित्त तेरे उते सदा माण, पतिपरमेश्वर मेहरवान, जन भगत तैथों मंगदे गए दान, नानक निरगुण सतिगुर कह के गया पंज तत ज़बान, सुरप्त दा पीर बेनज़ीर वेखणहारा शाह हकीर, जिस दी नज़र ना आए किसे तस्वीर, सो तसबी माला नाम निधान काया मन्दिर अन्दर मकान सच शब्द दे ज्ञान, अंकत अंक अंकश अक्षर निष्अक्खर दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लख चुरासी दे वर, सरन सरनाई तेरी सर्ब जाइण पड़, अट्ठे पहर दिवस रैण अन्तर आत्म परमात्म तेरा ध्यान लगाईआ।

✪ २४ अस्सू २०२० बिक्रमी श्री राम दे गृह मकसूदड़ा ज़िला लुधियाणा ✪

सचखण्ड निवासी पुरख समरथ, सो सतिगुर आप जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे लओ तक्क, नेत्र लोचण नैण उठाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान सिख्या दे दे गए थक्क, धुर संदेसा नाम जणाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप कलयुग रैण अन्धेरी मस्स, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। वस्त अमोलक सति सतिवादी चलाए कोई ना हट्ट, धर्म वणजारा नज़र कोए ना आईआ। माणस मानुख मानुष नाड़ बहत्तर उबले रत्त, रत्ती नाम रत्त ना कोए रंगाईआ। आत्म परमात्म किसे नज़र ना आए ब्रह्म मति, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा जगत वासना रही नट्ठ, मनमति दए दुहाईआ। अमृत आत्म घर सरोवर साचा रस देवे ना कोई झट्ट, निझर धार ना कोए वहाईआ। जोत निरँजण सच प्रकाश काया मन्दिर ना जगे लट लट, अज्ञान अन्धेर ना कोए चुकाईआ। सुरती शब्दी बणे ना कोई साथ, सगला संग ना कोए निभाईआ। आवण जावण लख चुरासी किसे ना मुक्के वाट, चल चल थक्के पांधी राहीआ। धर्म किनारा नज़र ना आवे कोई घाट, पत्तण बैठे चारों कुण्ट डेरा लाईआ। गुर का शब्द वसे ना किसे साथ, ख़ाली बुत्त काया दए दुहाईआ। साचे मण्डल नज़र ना आए रास, घर गोपी काहन नाच ना कोए नचाईआ। निज आत्म कोई ना करे वास,

जगत दुआरे ढूंडण नूर खुदाईआ। साची जोत ना नूर कोई आफ्ताब, महिबूब रंग ना कोए रंगाईआ। मध प्याला ना देवे कोई आबेहयात, आबरू सारे बैठे मिटाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद जिस दा लैंदे गए ख्वाब, सो खालस रूप परवरदिगार सांझा यार हथ्थ किसे ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा दो जहान लेखा दस्सदे गए हिसाब, बेअन्त कह के दोए जोड़ पए सरनाईआ। सो दीन दयाल पुरख अकाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआर गुर अवतार पीर पैगम्बर सर्ब उठाल, नेत्र नैणां कलयुग धार वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे करो विचार, श्री भगवान आप जणाइंदा। लख चुरासी अन्दर वेखो मार ध्यान, सच सुच रूप नज़र ना कोए वखाइंदा। गुर का शब्द मिले ना किसे ज्ञान, रसना जिह्वा बत्ती दन्द पढ़ पढ़ हिरदे हरि ना कोए वसाइंदा। सच धर्म महल अटल झुल्ले ना कोए निशान, जगत निशाना चारों कुण्ट नज़री आइंदा। आत्म परमात्म कोई ना मेले आण, दूई द्वैती पड़दा मात ना कोए उठाइंदा। साचा नाद सुणाए ना कोए धुन्कान, धुन आत्मक राग ना कोए अल्लाइंदा। तीर अणयाला मारे ना कोई बाण, साचा चिल्ला हथ्थ ना कोए उठाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप शरअ शरीअत होई शैतान, जीव जंत जगत कुरलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दुआर गुर अवतार पीर पैगम्बर इशारे नाल दए सुणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लओ तक्क, हरि ताकत आप जणाईआ। वेखो भगतां कोई ना देवे हक़, जगत जीव करन लड़ाईआ। मंज़ल चढ़दे गए थक्क, मिले साहिब ना बेपरवाहीआ। उच्ची कूक पुकार करन नाल हथ्थ, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आप खुल्लाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे कहिण, पुरख अकाल तेरी वड्याईआ। तेरे चरण कँवल बहि के वेखीए तेरे नैण, लोकमात ध्यान लगाईआ। चार वरन दिसे ना कोई साक सज्जण सैण, सगला संग ना कोए निभाईआ। नाता तुट्टा भाई भैण, पिता पूत ना कोए वड्याईआ। कूड़ महल अन्दर जूठी झूठी क्रिया विच रहिण, सच सुच संग ना कोए रखाईआ। शौह दरयाए आपणी करनी वहण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक देणा साचा वर, तेरे हथ्थ प्रभू वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर हो हैरान, हरि जू सच सच जणाईआ। लोकमात असीं दस्स के आए शरअ सच ईमान, कलमा नबी रसूल पढ़ाईआ। काग़ज़ कलम शाही लिख के आए ब्यान, शहादत तेरा नाम रखाईआ। बिन साहिब सतिगुर गुर शब्द स्वामी साचे ना कोई कल्याण, कायनात बेड़ा कोए ना पार कराईआ। कलयुग अन्त दिसे कूड़ तूफ़ान, तोहफ़ा घर घर रिहा पुचाईआ। माया ममता हउमें हंगता नाल मिला शैतान, उठ उठ भज्जे वाहो दाहीआ। मन मनुआ बणया बली

बलवान, बल आपणा रिहा वखाईआ। बुद्धी विचारी होई अणजाण, बैठी सीस झुकाईआ। बिन साहिब सतिगुर पारब्रह्म पतिपरमेश्वर तेरी किरपा कोई ना करे ध्यान, अन्तर आत्म लिव कोए ना लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। श्री भगवान रिहा दस्स, गुर अवतार पीर पैगम्बरां आप जणाईआ। वेखो कलयुग जीवां ख़ाली हथ्थ, साची वस्त नज़र कोए ना आईआ। कूड़ी क्रिया हउमे हंगता बुर्ज अन्तिम जाणा ढट्ठ, लोकमात रहिण ना पाईआ। नाता तुट्टे तत अट्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बोल जैकार, नाअरा इक्को इक सुणाईआ। तूं साहिब सतिगुर परवरदिगार, शाह पातशाह तेरी सरनाईआ। हउँ बालक बरखुरदार, सेवादार याचक तेरी सेव कमाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित्त लोकमात लै अवतार, हुक्म संदेसा नाम निधान लख चुरासी जीव जंत समझाईआ। तूं साहिब सुल्ताना वड मेहरवाना हुक्मरान, तेरा हुक्म ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग तेरा खेल महान, ख़ालक ख़लक सद वखाईआ। धुर संदेसा देंदे रहे तेरे नाम भगवान, भगवन तेरी ओट जणाईआ। मुकामे हक़ वसे नौजवान, नौबत आपणे नाम वजाईआ। सचखण्ड वसे वड भूपत भूप राज राजान, सीस जगदीश ताज इक टिकाईआ। जिस दे हुक्मे अन्दर खेल होए महान, शब्दी सुत सुत दुलारा दो जहानां आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरी इक सरनाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल, दर तेरे इक अरज़ोईआ। जुग चौकड़ी तेरा खेल कमाल, समझ समझ विच कदे ना आईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण रहें दलाल, नित नवित्त वेस वटाईआ। भाग लगाउँदा रहें काया धर्मसाल, नाड़ बहत्तर कर रुशनाईआ। आत्म परमात्म बणाए आपणा लाल, लालन साचा रंग चढ़ाईआ। दीपक दीआ बाती जोती इक्को बाल, जोत निरँजण आदि निरँजण नाल मिलाईआ। अमृत आत्म ठांडा सीर दएं प्याल, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, शब्द सरूपी साची सेव कमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे आखण, वाहवा प्रभू तेरी वड्याईआ। तेरे हुक्मे अन्दर तेरा दे के आए भाषण, धुर संदेसा नाम सुणाईआ। भउ जणाया पारब्रह्म पुरख अबिनाशन, देवत देव तेरी महिमा जस सुणाईआ। खेलया खेल पृथ्मी आकाशन, गगन मण्डल तेरा रंग रंगाईआ। लहिणा देणा चुका ज़ात पातन, आत्म परमात्म इक्को नूर समझाईआ। दरस दिखा ज़ाहर बातन, गुफ़त शुनीद धार समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, निरगुण निरवैर पुरख अकाल दीन दयाल लोकमात वेख आपणी

धर्मसाल, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। पुरख अकाल साहिब समरथ, धुर संदेसा इक सुणाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे जोड़ो इक्को अग्गे हथ्थ, साची बन्दना इक समझाइंदा। रसना कहो प्रभू साडा नहीं कोई वस, कलयुग वेला अन्तिम आइंदा। चारों कुण्ट अन्धेरा मस, तेरा नाउँ चन्द ना कोए चमकाइंदा। साधां सन्तां रिहा ना धीरज जत, सति सन्तोख धीर ना कोए धराइंदा। फिरी दरोही तीर्थ तट, अठसठ साचा नीर ना कोए जणाइंदा। नाम ना दिसे कोई हट, कूड़ी क्रिया दुआरा सोभा पाइंदा। सृष्ट सबाई आत्म ज्ञान मिले ना कोई मति, गुर का शब्द अंग संग ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सदा वर, साची खेल आप समझाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण सो, सो पुरख निरँजण तेरी वड वड्याईआ। तुध बिन लोकमात करे ना कोई लो, अन्धेरा अन्ध ना कोए गंवाईआ। सच आत्म परमात्म जाए ना कोई छोह, अंगीकार ना कोए अख्वाईआ। बिन तेरी किरपा दुरमति मैल कोई ना लवे धो, निर्मल रूप ना कोए वखाईआ। तेरी मेहर नज़र साची वस्त अमोलक ढोआ देवे ढो, नाम भण्डार इक वरताईआ। काया मन्दिर अन्दर लख चुरासी लै जोह, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। कूड़ी मति जूठ झूठ माया ममता हउमें हंगता लै खोह, फड़ शौंह दरया दे रुढ़ाईआ। निझर अमृत झिरना साचा रस दे चो, बूँद बूँद आप टपकाईआ। तेरे जोगा तुध बिन कोई ना जाए हो, गुर अवतार गए सुणाईआ। कलयुग अन्तिम उठ ग़रीब निमाणयां कर मोह, जो तेरा ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। पीर पैगम्बर मारन नाअरा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। सच खुदाए परवरदिगारा, लाशरीक तेरी सरनाईआ। मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला तेरा उच्च मनारा, महिफ़ल इक्को नज़री आईआ। सच पैगम्बर नूरी ज़ाहरा, ज़ाहर ज़हूर कर रुशनाईआ। तोबा तोबा करे सर्ब संसारा, ईसा मूसा मुहम्मद सारे बैठे भुलाईआ। शरअ शरीअत जगत ईमान बिन तेरे दिसे कुँवारा, चौदां तबक संग ना कोए निभाईआ। बिन साचे हुक्मे काया तत होया अँध्यारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। साचे भगत रहे कूक, दरगाह साची कूक सुणाईआ। पारब्रह्म क्यों सुत्ता घूक, गूढ़ी नींद अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। कलयुग माया रही फूक, जीवां जंतां रही जलाईआ। फिरे दरोही पंज भूत, घर घर रोवे नेत्र मारन धाहींआ। कोई ना दिसे सच सपूत, पिता गोद ना कोए सुहाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वरती भूख, आसा तृष्ना ना कोए मेट मिटाईआ। हउमे हंगता लग्गा दूख, दुःख भंजन तेरी इक सरनाईआ। साची दिसे ना कोई कुक्ख, जो जननी हरिजन सच्चा जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। साचे

सन्त मारन ताअना, इक्को इक जणाईआ। किथे लुक्यों श्री भगवाना, आपणा मुख छुपाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया होई प्रधाना, चारों कुण्ट आपणा डंक वजाईआ। सति धर्म ना कोई निशाना, परमगत तेरी कोई ना पाईआ। नव नौ चार होया शैताना, चार कुण्ट लड़ाईआ । उठ जोद्धे सूरबीर मर्द मर्दाना, प्रभ तेरी इक्को ओट रखाईआ। तेरा मन्त्र आत्म कोई ना गाए गाणा, अजपा जाप सिमरन सके ना कोए बणाईआ। धुन आत्मक किसे ना उपजे तराना, धुनी नाद ना कोए शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सद तेरा ध्यान लगाईआ। गुरमुख सारे रहे आख, दोए जोड़ तेरी सरनाईआ। प्रभ प्रगट हो साख्यात, नर हरि आपणा फेरा पाईआ। कलयुग अन्तिम वेख अन्धेरी रात, चारों कुण्ट नूर नज़र कोए ना आईआ। दहि दिशा दिसे डूंघा खात, फड़ बांहों बाहर ना कोए कढ्ढाईआ। साची मिले ना कोई जमात, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश पन्ध ना कोए मुकाईआ। सच प्रीती कोई ना बन्न्हे नात, नाता बिधाता तेरा ना कोए जुड़ाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सारे करदे बात, हिरदे हरि जू नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सद तेरी मिले सरनाईआ। गुरसिख साचे मारन धाह, बौहड़ी बौहड़ी रहे कुरलाईआ। क्यों सतिगुर बैठों मुख छुपा, तुध बिन सुख ना कोए वखाईआ। कलयुग अन्त बण मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। चार वरनां दे इक सलाह, साची सिख्या धुर इक समझाईआ। नानक निरगुण तेरा इक्को मन्त्र गया गा, चारों कुण्ट सर्ब समझाईआ। गोबिन्द इक्को फ़तहि डंका गया वजा, दो जहानां हुक्म वरताईआ। कलयुग जीव भुल्ले पुरख अकाल तेरा राह, रहबर बण के फेरा पाईआ। डुब्बदे पाथर दे तरा, पाहन आपणा चरण छुहाईआ । अन्तिम वेला रिहा आ, आत्म परमात्म विछोड़ा दे कटाईआ। सुरती शब्दी जोड़ जुड़ा, तुटी गंढु आप पवाईआ। साचे घोड़े लै चढ़ा, अस्व इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, गुरसिख मंगण तेरी चरण सरनाईआ। मनमुख सारे पावण रौला, नव नौ चार खुशी मनाईआ। जूठ झूठ काम क्रोध कलयुग अन्तिम वेखे होला, रंगण आपणा रंग रंगाईआ। रसना फिक्का बोलण बोला, सतिगुर नाम ना कोए ध्याईआ। कूड़ी क्रिया पंज तत काया जल भरन डोला, सच लुक्या रहे संग ना कोए निभाईआ। नज़र ना आए किसे मौला, बिन मौला खुशी मनाईआ। रसना कहिण चंगा होया प्रभ कीता हरि जू उहला, सानूं समझ दिती ना राईआ। काम क्रोध साडा बणे विचोला, मुड़ मुड़ जूनी जून भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम तेरा नाउँ भुल्ली जगत लोकाईआ। मनमुख बहि खुशी मनौण, रसना जिह्वा आपणा राग अल्हाईआ। अग्गे सानूं पुच्छण वाला कौण, सतिगुर गुरू नज़र कोए ना आईआ। जे कोई सन्त भगत लग्गे

समझौण, अग्गों देण डराईआ। उठ साधा तेरी भंनांगे धौण, प्रभ दित्ता बल बेपरवाहीआ। जगत वासना कूड़ी वगी पौण, सुगंधी सति नज़र कोए ना आईआ। कर किरपा मेहरवान पुरख स्वामी आप आए समझौण, बेसमझां समझ दए पाईआ। जो तेरे नालों भुल्ले अन्तिम तेरे होण, मिले साहिब सच्ची सरनाईआ। सतिगुर गोदी ठांडी नींद सौण, अग्नी तत ना लागे राईआ। मन नूं देण ना भौण, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र दे उठाईआ। जे राम बण के मारया रौण, तेरा घट कुछ ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तूं साहिब सर्ब गोसाईंआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे कर इकट्ठ, प्रभ साचे सच जणाईआ। तेरा खेल पुरख समरथ, प्रभ तेरे हथ्थ वड्याईआ। जिउँ भावे तिउँ लवें रख, लख चुरासी तेरी जगत लोकाईआ। जे तैनूं पिच्छा दे के गए नट्ठ, मुख भवा भज्जण वाहो दाहीआ। तूं मेहरबान हो के एन्हां दे आपणी अक्ख, जो तैनूं रहे भुलाईआ। हिरदे हो के हरि जू वस, हरि मन्दिर दे वखाईआ। अमृत झिरना दे रस, बूँद स्वांती मुख चुआईआ। पारब्रह्म तेरी किरपा उह सारे तेरे चरणी जाण ढट्ठ, हउमें हंगता कोए रहिण ना पाईआ। नानक निरगुण सर्ब जीआं दे के गया इक्को मत्त, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश चार वरन बणो भाई भाईआ। गोबिन्द अमृत आत्म गया झट्ट, दूई द्वैती दूर कराईआ। सर्ब जीआं दी इक्को मति, श्री भगवान मिलो चाईं चाईंआ। दिवस रैण अट्ठे पहर गहर गम्भीर गावो जस, जिस जन तेरी बणत बणाईआ। कर किरपा पुरख समरथ, तेरी अक्ख दए खुल्हाईआ। तेरे नालों ना होवे वक्ख, घर साचे सोभा पाईआ। इके मन्दिर गुरमुख गुरसिख सतिगुर नाल जाणा वस, सतिगुर शब्द दूजा होर ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, चार कुण्ट दहि दिशा सृष्ट सबाई इक्को नाद जणाईआ। सतिगुर शब्द सदा मेहरवान, पंज तत कम्म किसे ना आईआ। बिन सतिगुर शब्द ना दूजा कोई ध्यान, सतिगुर स्वामी इक्को नजरी आईआ। सतिगुर शब्द सहाई होवे दो जहान, एथे ओथे लए तराईआ। लहिणा देणा चुकावे आवण जाण, लख चुरासी फंद कटाईआ। सिमरो सिमरो सिमरन इक भगवान, सिमरत रोग सोग दुःख मिटाईआ। घर ठाकर मिले आण, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। ठाकुर मिलयां रूप भगत बणे भगवान, भगवान भगत इक्को घर बहि के खुशी मनाईआ। दोवें मिल के साचा गीत अगम्मी गाण, सोहला ढोला इक सुणाईआ। तूं मेरा तेरा दूजा दिसे ना कोए निशान, निशाना सोहँ रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सृष्ट सबाई देवणहारा सच्चा वर, गुर का शब्द वसाओ घर विच घर, भय भ्यानक दूजा चुकाओ डर, भ्यानक नज़र कोए ना आईआ।

✪ २४ अस्सू २०२० बिक्रमी बाबू राम दे गृह मकसूदड़ा ज़िला लुधियाणा ✪

जगत विवहार रिहा बीत, माण अभिमान नज़र कोए ना आइंदा। जिन्हां मिले प्रभ सज्जण सतिगुर मीत, श्री भगवान दया कमाइंदा। तिन्हां भगतां अन्तर आत्म होए ठंडा सीत, अग्नी तत ना कोए जलाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त साची रीत, पतिपरमेश्वर दुखियां दर्द दुःख वंडाइंदा। हरिजन काया हरिमन्दिर बहि के गाए गीत, सच मसीत इक्को इक सुहाइंदा। पतिपरमेश्वर तिस बख्शे अगम्मी प्रीत, नाता बिधाता इक जुड़ाइंदा। लेखा चुकाए हस्त कीट, मेहर नज़र नैण उठाइंदा। छत्र झुलाए शब्दी सीस, जगदीश सोभा पाइंदा। पिछला जीवण पिछली आयू जो पिच्छे गई बीत, अग्गे सुख सागर रूप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र इक उठाइंदा।

✪ २४ अस्सू २०२० बिक्रमी बिशन सिँघ दे नाल गुरदुआरा राड़े वाला ज़िला लुधियाणा ✪

अमृत दयो नाम शरदाई, जिस पीत्तयां तृष्ना रहे ना राईआ। आत्म परमात्म विछोड़ा चुक्के जुदाई, घर मेला सहिज सुभाईआ। रस पी वज्जे वधाई, धुन आत्मक अनादी राग अलाईआ। मिले मेल शाह पातशाह सच्चे शहिनशाही, निरगुण निरवैर निराकार जोड़ जुड़ाईआ। माया ममता हउमें हंगता होवे तबाही, पंच विकार रहिण ना पाईआ। दुरमति मैल धुपे छाही, निर्मल सति सरूप नज़री आईआ। सो जाम सन्त सुहेले देणा प्याई, जिस पीत्तयां अन्तर आत्म सुख इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग जुग जन भगतां देंदा नाम शरदाई, ठांडा सीर इक्को इक जाम, प्याइंदा। नाम शरदाई दयो चंगी, वस्त झोली इक पाईआ। पंज तत काया जाए रंगी, रंग चलूल इक्को नज़री आईआ। पारब्रह्म ब्रह्म बणे संगी, घर साचा संग निभाईआ। शब्द अनाद वज्जे मृदंगी, अनहद धुन उपजाईआ। जगत दुआरा पार जाए लँघी, नौ दुआर डेरा ढाहीआ। जोत प्रकाश होवे नंगी, पड़दा कोए रहिण ना पाईआ। अमृत धार मिले अनमंगी, निझर झिरना इक झिराईआ। शब्द सुहेला बणे सच्चा सतिसंगी, सुरती आपणे नाल मिलाईआ। ठांडी धार वहाए अगम्मी गंगी, जगत सुरस्ती नैण शरमाईआ। पी प्याला मन मति बुध रहे ना अन्धी, अज्ञान अन्धेर दूर कराईआ। इक्को सुणे सुणाए साचा छन्दी, ढोला अगम्म इलाहीआ। अग्गे रहे ना कोई पाबंदी, लेखा मंगण कोए ना आईआ। साची मिले इक सुगंधी, दुरमति मैल डेरा ढाहीआ। अमृत जाम सन्त सहेली सज्जण इक पलंदी, सच प्याला हथ्थ उठाईआ। जोती

८४६
१५

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेखणहारा साचा दर, घर सच्चे इक्को आस रखाईआ। नाम शरदाई मिले अतुट, तोट रहिण ना पाईआ। अमृत जाम रस आवे घुट्ट, अनरस आपणा रंग रंगाईआ। कूड़ विकार कढ्ढे कुट्ट, तिक्खी धार इक जणाईआ। सच प्रकाश अन्दरों पए फुट्ट, जोती नूर ज़हूर रुशनाईआ। साहिब सतिगुर वखाए मुख, जो बैठा मुख छुपाईआ। सांतक सति कर मेटे दुःख, दर्द दुःख भय भंजन दया कमाईआ। अमृत जाम पी बोलण सुणन दी हो जाए चुप, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मंगणहारा सच वर, वस्त इक्को इक मंग मंगाईआ। नाम शरदाई दयो दान, वस्त अमोलक इक वखाइंदा। जिस पीत्तयां अन्तर आत्म होए ज्ञान, जगत अन्धेर दूर कराइंदा। सच सरोवर सर अशनान, काग हँस रूप वटाइंदा। निरगुण दीआ बाती जोत जगे महान, घर मन्दिर अन्दर सोभा पाइंदा। तिस गृह अमृत रस मिले महान, सो रस साहिब सतिगुर शहिनशाह हथ्थ फड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सदा मंगो अगम्मी वर, जिस मिलयां सुख सागर रूप वटाइंदा। सच प्रेम सच्ची शरदाई, शरधा पूर इक जणाइंदा। जिस पीत्तयां ना मन रहे शदाई, संसा रोग सर्ब मिटाइंदा। घर विच घर वज्जे वधाई, गृह मन्दिर सोभा पाइंदा। नूर ज़हूर करे रुशनाई, कमलापाती खेल खलाइंदा। सो प्याला सच देणा प्याई, जिस पीत्तयां रस मुक्क कदे ना जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मंगणहारा सच्चा वर, सच प्याला इक्को इक वखाइंदा। नाम शरदाई साची मध, मधुर धुन दए उपजाईआ। कूड़ी क्रिया पार करे हद्द, सच मन्दिर दए वखाईआ। जिथ्थे गुरसिख सतिगुर दोवें रहे सज, खुशीआं गीत गोबिन्द अलाईआ। सो गृह बिन मक्कयों काअब्यो कराए हज्ज, हुजरा इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मंगणहारा इक वर, साचा रस बिन रसना देणा वरताईआ। साचा रस अमृत अपार, हरि सन्तन हथ्थ फड़ाईआ। गहर गम्भीर भर भण्डार, अतोट अतुट वरताईआ। साचे सन्त सदा करन प्यार, मेहर नज़र नैण उठाईआ। भुल्ला भटका जे कोई आए दुआर, तिस आसा मनसा पूर कराईआ। फिरदा तुरदा जोती धारा दर आया भिखार, मंगे मंग बेपरवाहीआ। किरपा कर सन्त प्यार, सज्जण देणी इक वड्याईआ। राड़े वाला गुरू गुरुदुआर, गुर वेखे शहिनशाहीआ। अन्तर अन्तर दयो आधार, मन्त्र मन्त्र शब्द जणाईआ। दूजी रसना करो विचार, बत्ती दन्द नाल मिलाईआ। घरों प्याला अमृत शरदाई देणा प्याल, बाहरों मंगण कोए ना जाईआ। बंक दुआर सोहे सच्ची धर्मसाल, गृह मन्दिर खुशी वखाईआ। दर मांगत फिरे कंगाल, भिखक आपणी झोली डाहीआ। सन्त सतिगुर सदा दयाल, दयावान अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मंगणहारा सच वर, वस्त अमोलक इक्को मंग मंगाईआ।

★ २४ अस्सू २०२० बिक्रमी भजन सिँघ दे गृह पिण्ड जीरख ज़िला लुधियाणा ★

गुर अवतार पीर पैगम्बर आओ नेड़े, सचखण्ड निवासी पुरख अकाल रिहा जणाईआ। लोकमात वेखो झेड़े, धरत धवल दए दुहाईआ। कूड़ी क्रिया वसदे खेड़े, सति धर्म नज़र कोए ना आईआ। कलयुग देवे आपणे गेड़े, चार कुण्ट रिहा भवाईआ। जूठ झूठ लग्गे डेरे, सच सुच नज़र कोए ना आईआ। सृष्ट सबाई त्रैगुण माया आई घेरे, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। सति असति ना कोई नखेड़े, ब्रह्म मति ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना रिहा जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आवो कोल, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। कलयुग वेखो वज्जदा ढोल, डंका डौरु कूड़ सुणाईआ। सच दुआर जो आए खोल्ह, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग फेरा पाईआ। धुर दी बाणी शब्द अगम्म जो आए बोल, शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान गीता ज्ञान शब्दी शब्द लिखाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा सृष्ट सबाई करे ना कोई अडोल, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर संदेसा इक अल्हाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखो आ, निरगुण निरगुण रिहा जणाईआ। नेत्र लोचण नैण लओ खुल्हा, पर्दा रूप ना कोए वखाईआ। कलयुग अन्तिम साचा दिसे ना कोए मलाह, बेड़ा कंध ना कोए उठाईआ। चार कुण्ट अन्धेरा रिहा छा, चन्द नूर ना कोए रुशनाईआ। कोई ना जपे हरि का नाँ, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। कोई खावे सूर कोई खावे गां, ज़िबह छुरी हत्थ उठाईआ। आपणा आप सके ना कोई पछाण, ब्रह्म पारब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। राज राजान शाह सुल्तान सच करे ना कोए न्याँ, अदल हत्थ किसे ना आईआ। मावां पुत्रां प्रीती दिसे कोई ना, झगड़ा प्या जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आप खुल्हाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आओ घर, सो साहिब आप जणाईआ। मन्दिर अन्दर वेखो चढ़, गृह आपणा फेरा पाईआ। साचा नाम बिन जगत तृष्ना कोई ना रिहा पढ़, मन वासना चारों कुण्ट दए दुहाईआ। साध सन्त जीव जंत अद्धविचकारे सारे रहे अड़, पांधी पन्ध ना कोए मुकाईआ। मिले मेल ना कोए नरायण नर, नर हरि अंग ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दी धार आप समझाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर पड़दा लैणा चुक, परवरदिगार बेपरवाह आप जणाईआ। नव नौ चार अन्धेरा घुप्प, सति प्रकाश ना कोए वखाईआ। जगत ज्ञान धर्म निशान सृष्ट सबाई गया छुप, सति सतिवाद नज़र कोए ना आईआ। ग़रीब निमाणयां जगत निताणयां सके ना कोई पुच्छ, शाह सुल्तान सच सुच हत्थ ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सुनेहड़ा इक सुणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखो मीत, सति पुरख निरँजण आप जणाइंदा। लख चुरासी साफ़ दिसे ना कोए नीत, नीतीवान संग ना कोए रखाइंदा। रसना जिह्वा बत्ती दन्द मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ गाउँदे गीत, अन्तर आत्म प्रेम ना कोए लगाइंदा। अमृत रस कौड़ा होया मीठ, दुरमति मैल दूर ना कोए कराइंदा। सति स्वामी अन्तरजामी हरि सतिगुर वसे ना किसे चीत, चित वित ठगौरी सर्ब रखाइंदा। दर दर घर घर जगत भण्डार मंगदे सारे भीख वस्त अमोलक नाम झोली कोए ना पाइंदा। कलयुग अन्तिम सारे वेखो चौथे जुग नेड़े आई तारीख, वार थित सर्ब देण गवाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जिस दी रखदे गए उडीक, सो मेहरवान हुक्म वरताईआ। आपणी हथ्थीं निरवैर पुरख करे आप तस्दीक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे वेखण जग्ग, सदी बीसवीं ध्यान लगाईआ। नव खण्ड पृथ्मी जगत विकार लग्गी अग्ग, सत्त दीप रहे कुरलाईआ। किसे मुर्शद ना मिले मक्के काअबे कराउणा हज्ज, हज़रत नूर ना कोए रुशनाईआ। किसे राम ना मिले मन्दिर शिवदुआले मट्ठ, काहना बंसुरी सच ना कोए वजाईआ। नानक गोबिन्द चार कुण्ट दहि दिशा किसे ना आवे हथ्थ, सनमुख रूप ना कोए वखाईआ। नेत्र रोवण तीर्थ अठ सठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती दए दुहाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव वाहो दाही रहे नट्ठ, आप आपणा पन्ध मुकाईआ। नेत्र रो आपणा हाल रहे दस्स, पारब्रह्म प्रभ सीस झुकाईआ। श्री भगवान साडे कुछ नहीं वस, कलयुग आपणा हुक्म वरताईआ। जगत जीवां कूड़ी पाई नथ्थ, फड़ डोरी तन्द हिलाईआ। अन्तर रहिण ना दित्ता तेरे नाम रस, कूड़ी विख इक भराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो सच्चा मार्ग आए दस्स, जीव जंत गए भुलाईआ। जगत प्रीती करन इकट्ठ, आत्म मेल ना कोए मिलाईआ। बण वणजारे खोल्ण हट्ट, सौदा नाम ना कोए विकाईआ। रसना जिह्वा गा गा गाथ, जगत जीव करन पढ़ाईआ। मिले मेल ना पुरख समराथ, साची समझ ना कोए समझाईआ। सारे होए अन्त बेवस, बेपरवाह तेरी शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, बेअन्त तेरी वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेख जगत विहार, सचखण्ड बैठे सारे देण दुहाईआ। सदी चौधवीं आई हार, हरि हरि हिरदे नाम ना कोए वसाईआ। बीस बीसे होण ख्वार, जगत ख्वारी पिच्छे भज्जे वाहो दाहीआ। साचा मित्र मिले ना मीत मुरार, सज्जण नज़र कोए ना आईआ। आत्म परमात्म दए ना कोए आधार, पारब्रह्म ब्रह्म भेव ना कोए खुल्हाईआ। आत्म बी कोई ना वेखे सच विहार, फुल फलवाड़ी पत डाली साचे नाम ना कोए महकाईआ। गुलशन खिड़े ना कोए गुलज़ार, कली कली ना कोए महकाईआ। नौ खण्ड

पृथमी कूड़ी क्रिया रही झक्ख मार, साचा मन्त्र समझ कोए ना पाईआ। चारों कुण्ट दिसे विभचार, नर हरि कन्त ना कोए हंढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर दर तेरे झोली डाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर झोली रहे अड्ड, सचखण्ड दुआरे सीस झुकाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, शाह पातशाह तेरी सरनाईआ। दरोही खुदाए साडे ख़ाली हथ्थ, वस्त संग ना कोए जणाईआ। कलयुग अन्तिम खेड़ा हुन्दा दिसे भढ्ढ, अग्नी लम्बू पंज तत इक्को लाईआ। साची हथ्थ किसे ना आवे ब्रह्म मति, मनमति रहे प्रनाईआ। नाड़ बहत्तर सब दी उबले रत, अमृत मुख स्वांती बूँद अमिउँ रस ना कोए चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तुध बिन अवर ना कोए सहाईआ। कलयुग वेख प्रभू अन्ध घोर, गुर अवतारां रिहा जणाईआ। उठो वेखो साध सन्त बणे चोर, कलयुग ठग्गी रहे कमाईआ। रसना जिह्वा पा पा शोर, जीवां जंतां रहे जणाईआ। आत्म परमात्म कोई ना सके जोड़, छुटकी लिव ना कोए लगाईआ। पंच विकारा कोई ना सके होड़, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना डेरा ढाहीआ। माणस पंखी पंछी होए ढोर, देवत रूप ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा रिहा जणाईआ। गुर अवतार पैगम्बर वेखो अग्ग लग्गी, त्रैगुण आपणा तत जणाईआ। कूड़ी क्रिया जगत वैरागण फिरे भज्जी, चारों कुण्ट फेरा पाईआ। मन वासना सृष्ट सबाई बद्धी, तृष्ना सके ना कोए बुझाईआ। कोटन कोटि गुरू बण बण कलयुग अन्त हंढ्ढावण गद्दी, शाह पातशाह सच सुल्ताना गद्दीदार नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बरां कलयुग अन्तिम रिहा जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लख चुरासी वेख हालत, होका दे दे गए सुणाईआ। पारब्रह्म तुध बिन कोई ना करे सच अदालत, दो जहान मार्ग कोई ना लाईआ। लोकमात दीन मज़्ह्ब ज़ात पात पाई बग़ावत, झगड़ा करे सर्ब लोकाईआ। तेरा नाम किसे दर ना होए सख़ावत, मेहरवान मेहर नज़र ना कोए उठाईआ। काया अन्तर मन वासना सब नूं लग्गी अलालत, गुर मन्त्र जाप ना कोए जपाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो हरि का नाम दे के आए अमानत, लख चुरासी जीव जंत समझाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कीती विच ख्यानत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, निरवैर आपणी दया कमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर नेत्र खोल्ह वेखो विस्माद, विस्मादी आप जणाईआ। जुग चौकड़ी खेलया खेल विच ब्रह्माद, ब्रह्मांड रिहा जणाईआ। बोध अगाधा शब्द सुणाया विस्माद, खाणी बाणी रूप वखाईआ। आत्म परमात्म साची सिख्या दिती साध, साधना इक्को इक रखाईआ। बिन रसना जिह्वा मार अगम्मी आवाज़, सोई सुरती शब्द उठाईआ।

निरगुण सरगुण रच के काज, करनी करता आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण आपणा वेस वखाईआ। कलयुग वेखो कूड़ मृदंग, डंका इक्को इक वजाईआ। घर घर अन्दर बैठा लँघ, जगत दुआरे सोभा पाईआ। बिन हरि नामे सारे कीते नंग, शब्द दोशाला हथ्थ ना कोए उठाईआ। चारों कुण्ट नंगी दिसे कंड, मेहर नज़र कोए ना पाईआ। बिन हरि कन्त जगत दुहागण नार होई रंड, सुहाग नज़र कोए ना आईआ। नेत्र रोवे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज रही कुरलाईआ। नीर वहाए खण्ड ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड दए दुहाईआ। प्रगट हो सूरे सरबँग, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। बिन तेरे कोई ना देवे अनन्द, अनन्द आत्म ना कोए वखाईआ। जगत जीवां तुटी गंढ, आप आपणा मेल मिलाईआ। लख चुरासी चुक्के पन्ध, आवण जावण रहिण ना पाईआ। धुर दा ढोला सुणा इक्को छन्द, चार वरन मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, साचा रंग इक रंगाईआ। साचा रंग चाढ़ अगम्म, अगम्म अगम्मड़े तेरी सरनाईआ। भाग लग्गे काया माटी चम्म, चम्म दृष्टी दे बदलाईआ। हरख सोग ना रहे ग़म, चिन्ता दुःख ना कोए जणाईआ। भेव खुल्ल्हा हँ ब्रह्म, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। करता पुरख करे आपणा कम्म, करनी करता आपणा फेरा पाईआ। सन्त सुहेले वेख जन, भगत भगवान लए उठाईआ। जो रसना जिह्वा कहिन्दे प्रभू धन्न धन्न, अन्तर आत्म ध्यान लगाईआ। तिन्हां ठाकर हो के बेड़ा बन्न्ह, खेवट खेटा रूप वटाईआ। वेले अन्त देवे ना कोई डंन, लेखा मंगे ना कोई राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सारे बैठे सीस झुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर नेड़े आ के गए झुक, सजदा सीस जगदीश कराईआ। श्री भगवान पुरख अबिनाशी परवरदिगार साडा पैंडा गया मुक्क, वेला अन्तिम नेड़े आईआ। साडे कोलों कुछ ना पुछ, साडी चले ना कोए चतुराईआ। कलयुग जीवां भाग गए निखुट्ट, जो प्रभ तैनूं गए भुलाईआ। इक्को प्रगट कर आपणा सुत, गोबिन्द शब्द रूप वटाईआ। दो जहानां शेर हो के बुक्क, भबक आपणा नाम लगाईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले भगत भगवान गोदी चुक्क, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। कलयुग कूड़ी धारा बदल दे रुख़, सति सतिवादी साचा रुख़ जणाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार त्रैगुण माया दे कुठ, खण्डा खड़ग इक चमकाईआ। गुरमुख गुरसिख जो पूरब जन्म गए रुठ, अन्तिम आपणा मेल मिलाईआ। अमृत जाम दे घुट्ट, निझर झिरना रस वखाईआ। तेरी धारों पैण उठ, नाता तोड़ पिता माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम देणा वर, घर तेरे अलख जगाईआ। श्री भगवान हो दयाल, दयानिध दया कमाईआ। सन्त सुहेले वेखां लाल, गुरमुख गुरसिख गोद उठाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जागरत

जोत करां रुशनाईआ। लेख चुकावां शाह कंगाल, भूपत भूप इक सरनाईआ । गुर शब्द हो के बणां दलाल, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। भय चुकावां अन्तिम काल, महाकाल, ना कोए डराईआ। काया मन्दिर अन्दर घर विच घर वखावां सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक जणाईआ। जिस मन्दिर अट्ठे पहर वज्जे ताल, शब्द अनादी अनहद राग सुणाईआ। साचा अमृत जाम दयां प्याल, रस इक्को इक वखाईआ। दीआ दीपक जोती बाल, घर साचे कर रुशनाईआ। आपे पुच्छे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बरां मन्ने आप स्वाल, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि दाता बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे गए मन्न, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। कलयुग अन्तिम श्री भगवान दे डंन, डंका आपणे हथ्थ उठाईआ। कूड़ी क्रिया भाण्डा दे भन्न, भय भउ इक वखाईआ। साचा राग सुणा कन्न, शब्द अनादी आप प्रगटाईआ । डुब्बदा बेड़ा दे बन्न्ह, साहिब आपणे कंध उठाईआ। नूरी चाढ़ इक्को चन्द, दो जहान करे रुशनाईआ। गीत सुणा अगम्मी छन्द, साचा ढोला इक दृढ़ाईआ। जिस सिमरत आवण जावण मुके पन्ध, लख चुरासी गेड़ रहिण ना पाईआ। प्रेम प्रीती अन्तर आत्म आए अनन्द, रस इक्को इक वखाईआ। सच दुआरे मंगी मंग, ख़ाली झोली दे भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लेखा वेख वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणी वेखो लिख्त, धुर दा लेखा आप जणाईआ। सारे कह के आए वाक भविक्ख्त, भविश समझ कोए ना पाईआ। नौ खण्ड सत्त दीप ब्रह्मण्ड खण्ड उडीकां करे नित, नवित्त बैठा ध्यान लगाईआ। कवण वेला प्रभ प्रगट होए अबिनाशी अचुत, चेतन आपणी धार जणाईआ। आप सुहाए बसन्ती रुत्त, पत डाली सर्ब महकाईआ। जन भगतां आ के लए पुच्छ, दुखियां दुःख लए वंडाईआ। बिरहों वैराग जो गए सुक्क, तिन्हां अमृत मेघ बरसाईआ। जो ध्यान कर के बैठे माता कुक्ख, तिन्ह वेखे चाईं चाईंआ। जो रसना जिह्वा गाउँदे उजल करे मुख, दुरमति मैल दए धवाईआ। सन्त सुहेले गुरमुख गोदी लए चुक्क, आप आपणे अंग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल इक वरताईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लिख के दयो लेख, सो सतिगुर आप जणाईआ। लोकमात साडा सुञां होया देस, सांझीवाल संग ना कोए रखाईआ। किरपा करे नर नरेश, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ । हुक्म सुणाए विष्न ब्रह्म शिव महेष, धुर दी धार आप जणाईआ। दो जहानां लए वेख, पुरी लोअ आकाश धरत धवल फोल फोलाईआ। जन भगतां कर कर साचा हेत, हितकारी दया कमाईआ। नज़री आए नेतन नेत, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। बोध अगाधी शब्द अनादी दस्से अगम्मी खेड, अनभव आपणी कार जणाईआ।

८५५
१५

चार जुग गुर अवतार पीर पैगम्बर जो मात दित्ते भेज, धुर दा ढोला राग सुणाईआ । तिन्हां अन्तर वड़ के माणी सेज, सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। जोती नूर दित्ता तेज, शब्दी धार नाद सुणाईआ । सो साहिब सतिगुर आदि पुरख अपरम्पर स्वामी निरगुण सब नूं रिहा वेख, बिन नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। कलयुग अन्तिम कूड़ा रहिण ना देवे भेख, भेखाधारी दए मिटाईआ। विष्नूं ख़बरदार करे उते सुत्ता बाशक सेज, सांगोपांग दए हिलाईआ। ब्रह्मे अन्दर वड़ के देवे भेत, आपणा ब्रह्म लैणा जगाईआ। शंकर तेरी त्रिसूल करे रण खेत, भूमी बैठी झोली डाहीआ। जोती जोत सरूप हरि आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाह पातशाह सच्ची सरनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दयो ब्यान, पुरख अकाल दीन दयाल आप जणाइंदा। कलयुग लोकमात छड्डी धर्मसाल, पिच्छे ध्यान ना कोए रखाइंदा । अबिनाशी करते आपणी चुरासी आप संभाल, डोरी आपणे हथ्थ उठाईआ। सदी बीसवीं सारे होए कंगाल, ग़रीबी घर घर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा दे वखाल, लेख पेख तेरा सदा गुण गाईआ। श्री भगवान दस्से बोल, अनबोलत राग जणाईआ। सच वस्त ना किसे कोल, ख़ाली भाण्डे नज़री आईआ। पारब्रह्म प्रभ तोलणहारा तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। लख चुरासी विच्चों गुरमुख थोड़े बैठे अडोल, जिन्हां हरि जू रिहा भेव चुकाईआ। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर तूं मेरा मैं तेरा सदा वजाउँदे रहे ढोल, ढोला राग इक्को इक गाईआ। हरि का भेव कोई ना जाणे पंडत पांधा रौल, रासी रुत्त विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवणहारा धुर दा वर, शब्द दिलासा इक जणाईआ। शब्द दिलासा देवे आप, सर्ब रिहा जणाईआ। कलयुग अन्तिम वेख खेल तमाश, निरगुण निरगुण फेरा पाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद जिस दा कलमा पढ़दे रहे जाप, रसना खोल्ह कहिन्दे रहे बाप, पिता नूरो नूर खुदाईआ। सदी चौधवीं सब नूं देवे जवाब, पिछला लेखा लहिणा झोली देवे पाईआ। अग्गे हो करे हिसाब, हासल ज़रब आपणे अंक बणाईआ। निरगुण निरवैर देवणहार सच ख़िताब, शब्द गुरू प्रसिद्ध इक कराईआ। जिस नूं निउँ निउँ सजदा सारे करन आदाब, नेत्र अक्ख सके ना कोए उठाईआ। शब्द अगम्म मारे आवाज़, दो जहानां दए जगाईआ। लख चुरासी वेखे रचया काज, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फोल फोलाईआ। जन भगतां जणाए इक समाज, धुर दी सिख्या सच दृढ़ाईआ। हरि सरनाई डिगणा भाज, कलयुग पैंडा पन्ध मुकाईआ। मिले वड्याई लोकमात, दरगाह साची रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम वेख निरँकार, निरगुण सरगुण रिहा समझाईआ। सृष्ट सबाई करो विचार, बुद्धिवान अक्ख खुल्हाईआ। ग़फ़लत आलस निंद्रा दयो उतार, दूई द्वैती पड़दा लाहीआ। मजलस करो सच

दरबार, दरगाह साची सोभा पाईआ। कूड़ी ख़सलत दयो निवार, असलीअत विच्चों नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा धाम इक समझाईआ। साचा धाम दस्से भगवन्त, कलयुग अन्त अन्त जणाईआ। सृष्ट सबाई इक्को कन्त, नर हरि नरायण अख्वाईआ। जुग चौकड़ी देवे मंत, मन्त्र आपणा नाम समझाईआ। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म मेल मिलाईआ। दूजे दर ना जावे मंगत, देवणहार सदा अख्वाईआ। जिस दा भेव ना पावे कोई मुल्ला पंडत, शेख़ मसायक अन्त कहिण ना आईआ। सो साहिब खेल खलावे जेरज अंडत, उत्भुज सेत्ज ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां वखाए खड़, लोकमात रीती नीती चारों कुण्ट सच सुच नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण प्रभू साडी होई बस्स, इक्को तेरी ओट रखाईआ। आउँदे सारे मार्ग आए दस्स, धुर संदेसा इक सुणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त होए प्रगट, निरगुण निरवैर नूरी जोत करे रुशनाईआ। शब्द अगम्मी गावे गथ, बाणी बोध अगाध जणाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया देवे मथ्थ, माया ममता डेरा ढाहीआ। जन भगतां खोल्ह निरगुण अक्ख, निज नेत्र नूर करे रुशनाईआ। अगला भेत जाए दस्स, पड़दा दूई द्वैत चुकाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर जाओ फस, फ़ैसला करे हक़ ख़ुदाईआ। अमृत आत्म लवो रस, अठ सठ तीर्थ लभ्भण कोए ना जाईआ। घर पीर पैगम्बर वेखो समरथ, निज घर बैठा डेरा लाईआ। लहिणा चुकाओ तत अड्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध संग कदे ना जाईआ। इक्को लओ ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या शब्द पढ़ाईआ। सच प्रीती होणा वस, तूं मेरा मैं तेरा सोहँ ढोला राग सुणाईआ। पतिपरमेश्वर सर्ब स्वामी बन्दन करो दोए जोड़ हथ्थ, माण अभिमान नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण प्रभ वेख हक़, हकीकत तेरी झोली पाईआ। बण पांधी राही मार्ग गए थक्क, सारे कहिण रहबर इक्को बेपरवाहीआ। आदि जुगादि करनी करता रखे आपणे हथ्थ, जुग चौकड़ी गेड़े अन्दर भवाईआ। मेहरवान हो के जन भगतां साचा मार्ग देवे दस्स, डूंग्घी भँवरी काया कवरी पार कराईआ। घर निर्मल जोत कर प्रगट, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। सति सरूपी दे रस, तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। सुरत सवाणी पूरी आस, शब्द हाणी जोड़ जुड़ाईआ। लग्गे भाग काया प्रभास, पत डाली आप महकाईआ। लेखे लाए जन स्वास, जो हरि हरि नाम ध्याईआ। खेले खेल पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल खोज खोजाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस बणाए आपणे दास, दासी दास साची सेव लगाईआ। सो खेले खेल पुरख समराथ, अगम्म अथाह वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्त श्री भगवन्त, गुर अवतार पीर पैगम्बर लेख चुकाए साचे सन्त, गुरमुख गुरसिख निरासा रहिण कोए ना पाईआ।

८५७ १५

✪ २५ अस्सू २०२० बिक्रमी नछत्र सिँघ दे गृह पिण्ड दबुरजी ज़िला लुधियाणा ✪

हरिजन मिले प्रभ सज्जण साक, सचखण्ड निवासी दया कमाइंदा। लोकमात वड्याई वड वड भाग, मेहरवान प्रभ मेहर नज़र उठाइंदा। अन्तर आत्म उपजावे इक वैराग, बिरहों चोट निराली आप लगाइंदा। बंद कवाड़ी खोल्हे ताक, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाइंदा। शब्द सुणाए साचा नाद, धुन अनादी आप उपजाइंदा। निर्मल जोत कर प्रकाश, दीपक दीआ डगमगाइंदा। जुग जन्म जगत पत लए राख, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। निज नेत्र खोल्ह अक्ख, निरगुण आपणा मेल मिलाइंदा। साचा मार्ग धुर दा दस्स, पांधी आपणे घर बणाइंदा। कूड़ी क्रिया खेड़ा करना भट्ठ, सच सुच इक समझाइंदा। आत्म परमात्म मिलाउणा पुरख समरथ, घर साचे खुशी वखाइंदा। इक्को ढोला साचा नाम गौणी गाथ, अक्खर वक्खर आप पढ़ाइंदा। सदा सुहेला बण स्वामी वसे साथ, हरिजन साचा संग निभाइंदा। रैण अन्धेरी मेटे रात, घर साचा चन्द चमकाइंदा। नाम भण्डारा दे दात, माया ममता मोह मिटाइंदा। लेखा चुक्के ज़ात पात, जिस जन आपणा रंग रंगाइंदा। दीन मज़्हब सुट्टे डूंग्घे खात, भेव अभेदा जिस खुलाइंदा। चार वरन जणाए इक जमात, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश घर साचे आप सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि नरायण नर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। भगतां मन्यां एकँकार, अक्ल कल वड्डी वड्याईआ। जुग चौकड़ी बण सेवादार, साची सेवा आप कमाईआ। निरगुण सरगुण लै अवतार, हरिजन मेले सहिज सुभाईआ। नाता तोड़ कूड़ा संसार, बिधाता आपणे नाल जुड़ाईआ। गाण सुणाए अगम्मी धार, साचा ढोला राग अलाईआ। अमृत आत्म जाम प्याल, अग्नी तत दए बुझाईआ। घर दीपक जोती इक्को बाल, अज्ञान अन्धेर दए मिटाईआ। घर विच घर वखा सच्ची धर्मसाल, साचा मन्दिर दए सुहाईआ। लेखा जाण शाह कंगाल, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। सति सरूपी बण दलाल, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे चाईं चाईंआ। भगत जनां हरि सच्चा सज्जण, आदि जुगादी इक अख्वाइंदा। चरण धूढ़ कराए अगम्मी मजन, दुरमति टिक्का मैल धवाइंदा। आत्म परमात्म सोहँ दस्से सच्चा भजन, सुरती शब्द मेल मिलाइंदा। जुग चौकड़ी बेड़ा आए बन्न्हण, मेहरवान मेहर नज़र उठाइंदा। पंच विकारा करन आए खण्डन, खण्डा खड़ग नाम चमकाइंदा। तोड़न आए चुरासी बन्धन, बंदगी इक्को नाम समझाइंदा। देवण आए परमानंदन, निज आत्म रस चखाइंदा। दीन दयाल बण बख्शंदन, बख्शश आपणी आप वखाइंदा। जुग चौकड़ी दूजे दर ना जाए मंगण, शब्द भण्डारी आप अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन साचे भेव चुकाइंदा। हरिजन मेला सच दर, घर साचे वज्जे वधाईआ। किरपा कर नरायण नर, नर हरि

इक्को अक्ख खुलाईआ। साचे मन्दिर आप वड़, घर घर विच बोल बोलाईआ। अगम्मी डण्डे जाए चढ़, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आईआ। सच महल्ले सहिब खड़, स्वच्छ सरूपी दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उपाईआ। हरिजन उपाए विच्चों लख चुरासी, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। जन्म कर्म कट जम दी फाँसी, फ़ैसला इक्को हक़ सुणाईआ। हरिजन हरिभगत सेव करे प्रभ बण के दास दासी, निरगुण निरवैर होए सहाईआ। जन्म जन्म दी पूरी करे आसी, आसा तृष्ना मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। मेहर नज़र उठाए जन भगत, श्री भगवान दए वड्याईआ। लेखे ला बूँद रक्त, जोती नूर करे रुशनाईआ। पूरब लहिणा देवे कर्ज़, लेखा लोकमात चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। देवे वड्याई सदा जुग चार, जुग चौकड़ी खुशी मनाईआ। भगतां भर भगती भण्डार, वस्त अमोलक झोली पाईआ। धुर दा नाम दस्स गुफ़तार, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। रसना जिह्वा बोल जैकार, बत्ती दन्द सिफ्त सालाहीआ। भेव खुलाए तूं मेरा मैं तेरा यार, आत्म परमात्म परमात्म आत्म इक्को रूप वखाईआ। काया मन्दिर अन्दर खोल कवाड़, पड़दा दूई द्वैत चुकाईआ। कर प्रकाश धुर दी धार, बिन तेल बाती दीपक डगमगाईआ। अगम्मी बरखे अमृत धार, झिरना निझर इक झिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत वखाए खुशी बहार, ख़िज़ां रूप ना कोए वटाईआ। भगत जनां प्रभ बेपरवाहया, बेपरवाही विच रखाइंदा। नाता तोड़ त्रैगुण माया, माया ममता मोह मिटाइंदा। समरथ पुरख सिर देवे ठंडी छाया, मेहर हथ्थ उपर टिकाइंदा। जन्म जन्म विच्चों बदले काया, काया कूड़ी कंचन रूप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन आपणा भेव चुकाइंदा। हरिजन भेव खुलाए आप, घर मन्दिर सोभा पाईआ। सति जणाए इक्को जाप, सोहँ ढोला राग सुणाईआ। नाता जुड़े पिता बाप, पूत सपूता गोद सुहाईआ। दोहां मिले इक्को ज़ात, अजाति रूप ना कोए वटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे गए आख, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। बिन श्री भगवान कोई ना चले साथ, सगला संग ना कोए बणाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सर्ब जीआं इक रघनाथ, रघपत इक्को नज़री आईआ। देवणहारा धुर दी दात, नाम ख़ज़ाना झोली पाईआ। सुणावणहार अगम्मी बात, शब्द अनाद धुन करे शनवाईआ। पूरी करनहारा ख्वाहिश, ख़ालस रूप दए वखाईआ। लेखे लाए हड्ड मास, नाड़ी रत आपणी झोली पाईआ। इक जणाए अजपा जाप, बिन स्वास स्वास चलाईआ। साचा थापण जुग जुग थाप, जन भगत दए उठाईआ। कर खेल रसूल पाक, परवरदिगार होए सहाईआ। निरगुण निरवैर बण के सज्जण साक, सगला संग निभाईआ। कर

८६० १५

किरपा जिस दा खोल्हे ताक, तिस आपणी बूझ बुझाईआ। जन भगतां नित नवित्त देवणहारा दात, नाम निधान श्री भगवान साचा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे आप तराईआ। हरिजन तारे दया कर, दयावान वड्डी वड्याईआ। वेख वखाए साचे घर, घर मन्दिर सोभा पाईआ। जन्म कर्म चुकाए डर, वरन बरन डेरा ढाहीआ। लेखे लाए सीस धड़, ततव तत आपणा रंग रंगाईआ। हुक्म सुणाए साचे पौड़े चढ़, चोटी इक्को डेरा लाईआ। हरि सन्त सुहेले गुरु गुर चेले आत्म परमात्म सोहँ शब्द लैणा पढ़, निरगुण सरगुण इक्को रूप नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। हरि का नाम पढ़ना एक, आदि जुगादि हरि रखाइंदा। जुग चौकड़ी करे बुध विवेक, निर्मल रूप अनूप दरसाइंदा। त्रैगुण माया ना लाए सेक, पंज तत अग्न ना कोए तपाइंदा। सुंञां दिसे ना काया खेत, राखा हरि जू नज़री आइंदा। जन भगतां कर के आपणा हेत, प्रीतम प्रीती तोड़ निभाइंदा। कलयुग अन्तिम खेले खेड, ख़ालक ख़लक वेस वटाइंदा। जन भगतां करे साचा हेत, हितकारी फेरा पाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप ब्रह्मण्ड ब्रह्मांड रिहा वेख, नेत्र लोचण नैण इक प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भगत भगवान आप मिलाइंदा। भगत भगवान जाए मिल, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। धर्म दुआरयों ना जाए हिल, लख चुरासी नाता दए तुड़ाईआ। बजर कपाटी तोड़ सिल, सुख सागर रूप विच समाईआ। नज़री आए मस्तक तिल, जोत ललाट करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन मेला लए मिलाईआ। हरिजन मेल मिलाए हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। बंद दुआरा खोल्ह दर, दरवाज़ा इक्को इक सुहाईआ। सन्त सज्जण लए फड़, फड़ बांहों गले लगाईआ। लेखा चुका सीस धड़, निर्मल जोत जोत रुशनाईआ। अन्तिम लै के जाए आपणे घर, गृह मन्दिर सोभा पाईआ। सचखण्ड निवासी सचखण्ड दुआरे जाए वड़, महल अटल सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन हरि जू आपणे रंग रंगाईआ। हरिजन रंग रंगे अनमोला, करता कीमत कोए ना लाइंदा। साहिब सतिगुर सति सतिवादी बण के तोला, साचा कंडा नाम हथ्थ उठाइंदा। निरगुण निरगुण बण विचोला, जोती शब्दी मेल मिलाइंदा। आत्म परमात्म गा ढोला, सोहँ राग सुणाइंदा। पकड़ उठा पड़दा उहला, सनमुख आपणी धार जणाइंदा। प्रेम प्रीती खेले होला, लाल गुलाला रंग रंगाइंदा। देवे वड्याई हरिजन उपर धौला, धरनी धरत धवल आप सुहाइंदा। पंच विकार पाए कोई ना रौला, हाहाकार ना कोए अल्हाइंदा। जन भगतां साहिब स्वामी मिले आप मौला, हर घट मौलया लख चुरासी अन्दर नज़री आइंदा। सन्त सज्जण कदे ना पावण रौला, अन्तर

आत्म सुन्न समाध नैण मूंद सर्ब ध्यान लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन हरिभगत हरीदुआर हरि करतार हरि मन्दिर आप बहाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकर्मी निष्काम आपणा कर्म कमाइंदा।

✪ २५ अस्सू २०२० बिक्रमी पिण्ड पद्दी ज़िला लुधियाणा ✪

सचखण्ड सच दरबार, सो पुरख निरँजण सोभा पाईआ। सच दर गुरू अवतार, चरण कँवल मंगण सरनाईआ। सच दरगाह पीर पैगम्बर करन प्यार, सजदा सीस जगदीश झुकाईआ। उच्ची कूक करन पुकार, बिन रसना जिह्वा रहे सुणाईआ। किरपा कर सिरजणहार, बेअन्त बेपरवाहीआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ तेरा आकार, करनी करते तेरी सच सरनाईआ। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। नित नवित्त करे खेल अपर अपार, अपरम्पर स्वामी आपणी धार चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सचखण्ड दुआरे सारे रहे सुणा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। पुरख अकाल कर ध्यान, बेपरवाह आपणी नज़र उठाईआ। सृष्ट सबाई दिसे ना कोई ज्ञान, हरि का नाम झोली कोई ना पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप होए बेईमान, सिदक सबूरी नज़र कोए ना आईआ। लख चुरासी घट घट अन्दर वड़या कूड़ शैतान, शरअ करे इक लड़ाईआ। तेरा नूर ज़ाहर ज़हूर करे ना कोई पहचान, बेपहचान तेरी समझ किसे ना आईआ। माया ममता हउमे हंगता ढोले सारे गाण, सतिगुर शब्द राग ना कोए अलाईआ। अठसठ तीर्थ नहावण जगत जीव जहान, काया अन्तर सच सरोवर अशनान ना कोए कराईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ लभ्भदे फिरन भगवान, घर विच घर पड़दा चुक्क परमेश्वर दरस कोए ना पाईआ। तेल बाती लै के दीपक जगाउँदे फिरन विच शमशान, काया कवरी डूंघी भँवरी जोत निरँजण ना कोए जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे साचा वर, प्रभ तेरी ओट तकाईआ। पीर पैगम्बर करन सलाम, सुलहकुल तेरी शरनाईआ। शाह पातशाह वड अमाम, बेपरवाह तेरी वड्याईआ। जुग चौकड़ी कलमा तेरा कलाम, नबी रसूल गए जस गाईआ। धुर संदेसा दे अवाम, चार कुण्ट कर जणाईआ। कलयुग अन्त चारों कुण्ट दिसे हराम, सति नज़र कोए ना आईआ। पंच विकार सारे बणे ग़ुलाम, मुल्लां शेख़ साबत नज़र कोए ना आईआ। धुर दा भुल्लया इक पैग़ाम, पैगम्बर भय सिर ना कोए टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। गुर अवतार दर

खलो, दोए जोड़ जोड़ सरनाईआ। श्री भगवान प्रगट हो, प्रभ तेरी ओट तकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी कलयुग साची दिसे ना कोई लो, नव नौ चार अन्धेरा छाईआ । दुरमति मैल सके ना कोई धो, सर सरोवर बैठे मुख भवाईआ। दरस दिखाए ना कोई अग्गे हो, बजर कपाटी पड़दा कोए ना लाहीआ। अमृत धारा निझर देवे ना कोई चो, बूँद स्वांती मुख चुआईआ। आदि निरँजण तेरा नूर साची जोत दसाए ना कोई सो, सोभावन्त तेरा नाद ना कोए वजाईआ। माया ममता हउमें हंगता कूड़ी क्रिया जगत लोकाई मोह, मुहब्बत तेरी तोड़ ना कोए निभाईआ। आत्म परमात्म घर विच घर सके ना छोह, जगत विछोड़ा पा के दए दुहाईआ। श्री भगवान वड मेहरवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां जोगा हो, होका दे के रहे जणाईआ। पीर पैगम्बर सारे कहिण, बिन रसना राग अल्हाईआ। परवरदिगार वेख आपणे नैण बेनज़ीर नज़र उठाईआ । कूड़ी क्रिया कल वैंहदी झूठे वहण, साचा आत्म परमात्म नज़र किसे ना आईआ। अक्ख खुल्हे ना किसे ऐन, नुक़ता नून ना कोए मिटाईआ । हमज़ा सके ना कोए कहिण, अलिफ़ ये मुकी सर्ब पढ़ाईआ। नज़र ना आए कोई साक सैण, सज्जण बैठे मुख भवाईआ। अञ्जील कुरान कूक कूक नैतर नैणां पावे वैण, चारों कुण्ट दए दुहाईआ। नाता तुटा भाई भैण, साचा मीत नजर कोए ना आईआ। माया राणी घर घर वड़ गई डैण, साधां सन्तां रही खाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, मुरीद मुर्शद वेख वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे रहे भाख, भाख्या आपणी रहे जणाईआ। प्रगट हो सर्ब गुणतास, बेअन्त तेरी वड्याईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान सारे रहे आख, आख़र तेरी ओट तकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी निरगुण सरगुण तेरी चलदी रही शाख़, गुर गुर शब्दी रूप वटाईआ। सति मार्ग चलण दी दस्सदे रहे जाच, धुर संदेसा नाम सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे आपणा घर, घर अन्तिम फेरा पाईआ। पीर पैगम्बर कहिण मेरे महिबूब, मुहब्बत तेरी नज़र किसे ना आईआ। चौदां तबकां दे के आए सच सबूत, साहिब सलाम इक्को आप बुलाईआ। उच्च महल्ला तेरा दस्स के आए अरूज, अर्श फर्श डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, निरगुण निरवैर निराकार आपणी लोकमात वेख लोकाईआ। अवतार गुरू सारे कहिन्दे, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। परम पुरख तेरी चरणीं ढैंहदे, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। सच दुआरे कट्ठे हो के बैंहदे, घर इक्को मता पकाईआ। जुग जुग तेरा भाणा आए सहिंदे, लख लख शुकर मनाईआ। अन्तिम वेख कलयुग धार कलयुग जीव डूंग्घी वहण वैंहदे, बिन तेरे सके ना कोए बचाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण पढ़ पढ़ मुल्लां शेख़ मसायक पंडत पांधे कहिन्दे, अन्तर आत्म ज्ञान गोझ ना कोए जणाईआ।

अन्तिम सब दे मुक्कण वाले पैंडे, पांधी रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। गुर अवतारां सुण के बात, पीर पैगम्बर ढोले गाईआ। नाल उठे भगत अठारां इक्को ज़ात, निरगुण नूर रूप प्रगटाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाश, अबिनाशी करते तेरी शरनाईआ। हउँ बालक तेरे दास, बण याचक सेव कमाईआ। सच बेनन्ती इक अरदास, दरगाह साची इक अरज़ोईआ। उठ वेख खेल तमाश, ख़लक खुदाए रही कुरलाईआ। सच वस्त किसे ना पास, ख़ाली हथ्थ दए दुहाईआ। पंज तत ख़ाली पुतला हड्ड नाड़ी मास, नौ दुआरे नौ रस कम्म किसे ना आईआ। साचे मन्दिर साचा दीप करे ना कोए प्रकाश, घट नूर ना कोए वखाईआ। उच्च महल्ल चढ़ के तेरे मन्दिर वड़ के दर्शन कर के सारे आए आख, प्रभ मिले बेपरवाहीआ। उठ मेहरवान मार ध्यान कलयुग झात, बंद ताकी पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, हथ्थ तेरे वड्याईआ। भगतां वेख उठे सन्त, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। पारब्रह्म तूं इक्को कन्त, लख चुरासी रिहा प्रनाईआ। तेरी धार जीव जंत, चारे खाणी वज्जे वधाईआ। चारे बाणी तेरी बणत, परा पसन्ती मद्धम बैखरी राग सुणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर भगत सन्त सारे लिख के गए सनद, धुर दा लेखा लेख जणाईआ। श्री भगवान सब नूं देवे आत्म अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सदा बख्शंद, बख्शश आपणे हथ्थ रखाईआ। दोए जोड़ निमस्कार करे बन्दना बंद, बंदगी डण्डौत इक्को इक जणाईआ। किरपा कर दूई द्वैत ढाह कंध, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। पुरख अकाल इक सुणा साचा छन्द, दो जहान लख चुरासी जीव जंत साध सन्त आत्म परमात्म तेरा राग अलाईआ। सन्तां वेख उठे गुरमुख, आपणा बल प्रगटाईआ। किरपा कर प्रभू असीं तेरे मानुख, मनुष जाति लख चुरासी विच्चों मिली वड्याईआ। लोकमात आ के सानूं पुच्छ, तेरे वैराग अन्दर बैठे ध्यान लगाईआ। भगती गुण नहीं साडे कोल कुछ, वस्त अमोलक हथ्थ ना कोए रखाईआ। मेहरवान श्री भगवान लोकमात साडे नाल ना रुस्स, करवट बदल मुखड़ा दे वखाईआ। निरवैर तेरा उजल वेखीए मुख, सति सरूपी तेरा नूर नज़री आईआ। आवण जावण मिटे दुःख, जन्म कर्म नज़र कोए ना आईआ। फेरा पा अबिनाशी अचुत, चेतन आपणा रूप प्रगटाईआ। दयाल हो के स्वामी तुठ, मेहरवान मेहर नज़र तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे इक अरज़ोईआ। गुरमुखां वेख गुरसिख जागे, जागरत जोत करे रुशनाईआ। हरि सरनाई आवण भागे, मंज़ल मंज़ल पन्ध मुकाईआ। रसना गावण गीत सुहागे, साचा छन्द बंद बणाईआ। पारब्रह्म तुध बिन स्वारे कोई ना काजे, करते कीमत कोई ना पाईआ। ग़रीब निमाणयां तू ही

निवाजें, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जुग चौकड़ी साजण साजें, कलयुग अन्तिम लेखा दे मुकाईआ। कूड़ी क्रिया लग्गे राजन राजे, सच सुल्तान सच धर्म ना कोए वखाईआ। अन्तिम सब दी रखे कोई ना लाजे, शरम हय्या घर घर बैठा डेरा लाईआ। बिन तेरे कोई ना पकड़े वागे, बेमुहारी फिरे लोकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरे नाम दे वजा के गए वाजे, जुग चौकड़ी राग सुणाईआ। नाम निधान दे के गए दाजे, वस्त अमोलक इक वखाईआ। अन्तिम कह के गए कल अन्तिम प्रगट होवे शाह पातशाह वड महाराजे, मिहबान बीदो बी ख़ैर या अल्ला इलाही नूर बेपरवाहीआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जो साजण साजे, शब्दी सुत दए वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव जिस दे हुक्मे अन्दर फिरन भाजे, नित नवित्त सेव कमाईआ। त्रैगुण माया पंज तत जिस बणाए भाण्डे, लख चुरासी घाड़त घड़ वखाईआ। जगत वासना खोल्ह वखाए नौ दरवाज़े, आसा तृष्ना माया ममता हउमें हंगता जगत प्रकृती बन्धन पाईआ। घर विच घर बहि के आपणा खेल करे बोध अगाधे, शब्द अनादी नाद सुणाईआ। निर्मल जोत करे प्रकाशे, दीआ बाती इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे साचा वर, सारे बैठे ध्यान लगाईआ। गुरसिखां वेख उठी धरनी, धरत धवल दए दुहाईआ। तुध बिन मेरी रक्षया किसे ना करनी, चारों कुण्ट होए ना कोए सहाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप कूड़ी क्रिया लड़नी, झगड़ा दीन मज़्ह्ब वखाईआ। तेरी धार बेपरवाह साची सच किसे ना पढ़नी, माया ममता बेड़ा रही डुबाईआ। ग़रीब निवाज़ शाह सुल्तान मैं डिगां तेरे चरणीं, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। आपणयां भगतां खोल्ह अक्ख हरनी फरनी, निज नेत्र कर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, हथ्थ तेरे वड्याईआ। धरनी वेख उठया सागर, साहिब सतिगुर तेरे अग्गे बेनन्ती आ। लख चुरासी तेरा रूप काया गागर, डूंग्घी भँवरी वेख वखाईआ। तेरे अमृत किते ना मिले आदर, तेरा नूर नूर ना कोए प्रगटाईआ। तूं करीम करता सच्चा कादर, कुदरत तेरे हथ्थ नज़री आईआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान कलयुग अन्तिम दे आदर, आदर्श आपणा इक वखाईआ। तूं साहिब सुल्तान योद्धा सूरबीर वड बहादर, शहिनशाह तेरी वड्डी वड्याईआ। निर्मल कर्म कर उजागर, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। सारे रल के तेरे नाम दे बणीए जगत सौदागर, वणज इक्को इक कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दूजी हाजत होर रहिण ना पाईआ। सागर वेख उठे लोक परलोक, दो जहान देण दुहाईआ। श्री भगवान तेरा भाणा सके ना कोई रोक, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर गा के गए श्लोक, सच संदेसा तेरा नाद अल्हाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त करे आपणी मौज, मौजूदा भेव समझ कोए ना पाईआ। शब्द अगम्मी इक उठाए फ़ौज, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां

खण्डां जेरज अंड उत्भुज सेत्ज हुक्म मनाईआ। जिस दुआरे कोई ना सके पहुंच, तिस मन्दिर बहि के आपणा हुक्म जणाईआ। जिस दी कोई सोच ना सके सोच, सो साहिब सतिगुर आपणी कार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, श्री भगवान तेरे चरण मिले सरनाईआ। लोक परलोक वेख, ब्रह्मण्ड खण्ड देण दुहाईआ। पारब्रह्म तेरा वेखीए भेख, नव नौ चार अक्ख खुल्हाईआ। कवण मन्दिर कवण घर कवण गृह कवण नगरी कवण दुआर वसें देस, कवण मंज़ल डेरा लाईआ। कवण शब्द कवण नाद कवण धुन कवण राग कवण कलमा दएं उपदेश, कवण कायनात दएं समझाईआ। कवण अमृत कवण जाम, कवण देवें सच्चा नाम, कवण रूप धुर पैग़ाम, धुर संदेसा इक सुणाईआ। कवण धार प्रगट राम, कवण धार निरगुण शाम, कवण धार नूर इलाही परवरदिगार, कवण धार नानक गोबिन्द कर उज्यार, दो जहानां डंका इक सुणाईआ। कवण धार सांझा यार, कवण करें ख़बरदार, कवण खोल्ह कवाड़, नेत्र नैण अक्ख जणाईआ। कवण तेज़ कटार, कवण लख चुरासी करें सँघार, कवण गुरमुख विच्चों लएं उभार, मेहरवान मेहरवान प्रभ मेहर नज़र उठाईआ। कवण कलयुग कूड़ी क्रिया करें पार, कवण जूठ झूठ मारें मार, कवण हउमे हंगता गढ़ दएं निवार, सच सुच इक्को मन्दिर नज़री आईआ। किरपा कर सिरजणहार, आ के वेख आपणा संसार, चारों कुण्ट हाहाकार, राउ रंक सारे देण दुहाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड वेख विष्न ब्रह्मा शिव खलोते उठ, गल पल्लू वास्ता पाईआ। श्री भगवान ठाकर हो के तुठ, दयावान तेरी ओट तकाईआ। तेरी सृष्टी तेरी दृष्टी तेरी इष्टी तेरे नालों गई रुठ्ठ, साडी चले ना कोए चतुराईआ। योद्धा सूरबीर बण के लोकमात जा के पुच्छ, बलधारी आपणा बल प्रगटाईआ। चारों कुण्ट वेख अन्धेरा होया घुप्प, सूरज चन्द दोवें बैठे मुख शरमाईआ। मण्डल मण्डप सच सतार होए चुप्प, नूर ज़हूर नज़र कोए ना आईआ। सारे करन ध्यान कवण वेला प्रभ लोकमात करे आपणा रुख़, सति सतिवादी फेरा पाईआ। दूर दुराडा नेड़े जाए ढुक, नेरन नेर नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव वेख हाल, शब्द सूरा लए अंगड़ाईआ। इक्को बोले बोल कमाल, बिन रसना जिह्वा गाईआ। दो जहान प्रभू तेरी धर्मसाल, तेरी रचना तोहे भाईआ। मैं बाला नढ्ढा तेरा बाल, सद चलां हुक्म रज़ाईआ। जुग चौकड़ी हुक्मे अन्दर खाए काल, काल ग्रास इक कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, निरगुण निरगुण हो सहाईआ। शब्द सुत कहे मेरे भगवान, पिता पुरख अकाल तूं इक अख्वाइंदा। जुग चौकड़ी झुलाया तेरा निशान, दो जहान हुक्म मनाइंदा। धुर दा बण हुक्मरान, सच संदेसा इक अल्हाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव दे ज्ञान, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। गुर अवातर कर

परवान, नाम परवाना हथ्थ फड़ाइंदा। पीर पैगम्बर दे कलाम, कलमा इक्को इक समझाइंदा। जुग चौकड़ी हो प्रधान, धुर दा लेखा आप वखाइंदा। अक्खर वक्खर कर ज्ञान, शास्त्र सिमरत वेद रूप जणाइंदा। रसना जिह्वा बत्ती दन्द कर कल्याण, सृष्ट सबाई मात पढ़ाइंदा। जुग जुग सब नूं कह के आया विच जहान, पंज तत चोला तेरा हंढाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां भगतां सन्तां दित्ता ब्यान, बचया कोई नज़र ना आइंदा। कलयुग अन्त श्री भगवन्त प्रगट होवे नौजवान, दो जहानां नौबत आपणे नाम वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, गुर शब्दी मंग मंगाइंदा। शब्द कहे मेरे पुरख अकाल, उठ सज्जण सच्चे माहीआ। मैं वी वसां तेरे नाल, नित नवित्त चरण ध्यान लगाईआ। कलयुग अन्तिम तेरा वेखां खेल कमाल, करता पुरख तेरी वड्याईआ। लोकमात बणा सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्को नज़री आईआ। जिस घर वसे शाह कंगाल, ऊँच नीच ज़ात पात कोई रहिण ना पाईआ। इक्को उपजे तेरा नाम, सिमरन अभ्यास सच दे समझाईआ। सब दी इच्छया पूरन काम, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। साचा नूर प्रकाश कर अगम्मी भान, जिस दा रेख रंग नज़र कोए ना आईआ। उठ वेख आपणा जहान, चारों कुण्ट कलयुग अग्न रिहा लाईआ। जूठ झूठ कूड़ी क्रिया चाढ़ तूफ़ान, साधां सन्तां रिहा डुबाईआ। सिदक सबूरी सच रहिण ना दित्ता किसे ईमान, धीरज जत ना कोए जणाईआ। कसमां खा खा बग़ले रख रख शरीअत विच कुरान, बग़लगीर दस्तयाब वस्त ना किसे मिलाईआ। तुध बिन कोए ना तोड़े शरअ ज़ंजीर, नेत्र रोवण शाह हकीर, हकीकत सके ना कोए समझाईआ। मेहरवान आपणी वखा इक तस्वीर, बेनज़ीर आपणा नूर कर रुशनाईआ। जिस दी माला तसबी फेरदे गए पीर फ़कीर, सो मन का मणका दे भवाईआ। चोटी चढ़ के मिल अख़ीर, आख़र आपणा मेल कराईआ। मेहर नज़र नाल बदल दे तकदीर, तदबीर इक्को वार समझाईआ। तेरे हथ्थ नाम शमशीर, जगत विकारा कूड़ा इक्को वार मार मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सब बैठे ध्यान लगाईआ। तेरे चरण ध्यान गया लग्ग, जो उपज्या सो तुझे रिहा ध्याईआ। किरपा कर सूरे सरबग्ग, शहिनशाह तेरी वड्याईआ। कर कर थक्के मक्के काअबे हज्ज, हज़रत नज़र किसे ना आईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले फिर फिर थक्के मट्ठ, अग्नी तत ना कोए बुझाईआ। बिन साहिब सतिगुर कोई ना देवे ब्रह्म मति, चौदां विद्या रही कुरलाईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रगट, प्रगट आपणी धार वखाईआ। सच दुआरा खोल्ह हट्ट, सति सतिवादी आपणा राह जणाईआ। सर्ब जीवां दे इक्को मत्त, बुध मति विवेक कराईआ। आपणे वेखण दी दे अक्ख, निज लोचण कर रुशनाईआ। तेरे नाल मिल के तेरे गावण जस, सिफ्त सालाही ढोला गाईआ। तेरे प्रेम प्यार अन्दर तेरे चरण कँवल जावण वस, घर

मन्दिर इक्को सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, आदि जुगादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी सब तेरे दर बैठे सीस झुकाईआ। ठाकर स्वामी तेरे दर ते बोल अलख, मांगत भिक्खक ख़ाली झोली रहे डाहीआ। वस्त अमोलक दे समरथ, अतोट अतुट इक वरताईआ। जन भगतां लैणा तैथों हक़, पिछली कीती झोली दे भराईआ। तेरा नाम लै के तेरा गाईए जस, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। तेरे नाल मिल के खुशीआं नाल जाईए हस्स, सोहँ हँसा इक्को रूप वटाईआ। तूं मेरा मैं तेरा आत्म परमात्म इक दूजे नूं दईए दस्स, भेव अभेदा रहिण कोए ना पाईआ। तूं मेरा मैं तेरा रस, बिन रस रसीए दोवें कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, देवणहार तेरी सरनाईआ। साची वस्त दे अपार, अपरम्पर तेरी वड्याईआ। इक्को आदि जुगादि सच दुआर, जिस घर बैठे सीस झुकाईआ। बोध अगाध शब्द अनाद धुर दी वस्त दे भण्डार, अट्ठे पहर दिवस रैण नाद धुन वज्जे इक शनवाईआ। महल अटल उच्च मनार दीआ दीपक जोती दे बाल, सोहे तेरी सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्को सोभा पाईआ। सुरती शब्दी करे भाल, मिले सतिगुर दीन दयाल, अन्दर करे सच रखवाल, बण राखा ठग्गां चोरां देवे धक्का लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। श्री भगवान दया कमाउँदा ए। मेहरवान मेहर नज़र उठाउँदा ए। शब्दी सुत आप समझाउँदा ए। विष्न ब्रह्मा शिव अक्ख खुल्ह़ाउँदा ए। त्रैगुण माया पंज तत नाल मिलाउँदा ए। गुर अवतार पीर पैगम्बर आप समझाउँदा ए। चारे खाणी वेख वखाउँदा ए। चारे बाणी फोल फोलाउँदा ए। चारे युग गेड़ चुकाउँदा ए। निरगुण सरगुण वेस वटाउँदा ए। शब्द नाद धुन उपजाउँदा ए। जगत वैराग इक वखाउँदा ए। अन्त त्याग आप कराउँदा ए। बण सुहाग कन्त हंढाउँदा ए। खोल्ह जाग नेत्र आपणे नाल मिलाउँदा ए। जुग चौकड़ी पकड़नहारा वाग, शाहसवार अस्व आपणा इक दौड़ाउँदा ए। कलयुग अन्तिम आवे भाग, निहकलंक रूप वटाउँदा ए। सम्बल नगर बणे इक समाज, जोती शब्दी आप प्रनाउँदा ए। सतिजुग सच बणाए जहाज़, बेड़ा आपणा नाम चलाउँदा ए। जन भगतां मारे आवाज़, लख चुरासी विच्चों आप उठाउँदा ए। किरपा कर ग़रीब निवाज, ग़रीब निमाणे कोझे कमले गले लगाउँदा ए। चार वरन बणा इक जमात, पट्टी साची नाम पढ़ाउँदा ए। लेखा लिखे बिन कलम दवात, शाही काग़ज़ संग ना कोए रखाउँदा ए। कोटन कोटि जुग चौकड़ी जानणवाला हालात, हालत आपणी ना किसे समझाउँदा ए। एथे ओथे कदे ना पाए वफ़ात, फ़तवा सब दे उते लाउँदा ए। पीर पैगम्बरां देवणहारा आबेहयात, साचा रस इक चवाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण निरवैर निराकार निरँकार

८६७
१५

कल अन्तिम वेस वटाउँदा ए। कल अन्तिम वेस वटाया ए। जोती जामा रूप धराया ए। रूप रंग ना कोए वखाया ए। औलीआ पीर शेख़ समझ कोई ना आया ए। निरवैर हो के खेले खेड, ख़ालक ख़लक रिहा समझाया ए। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस ने दित्ते भेज, सो अन्तिम वेखण आया ए। जोती जलवा इक्को तेज, शब्दी नाद धुन शनवाया ए। लख चुरासी घट घट अन्दर माणे सेज, आत्म परमात्म मेल मिलाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण आपणा राह वखाया ए। निरगुण निरवैर राह जणाउँदा ए। दो जहानां आप समझाउँदा ए। धुर दा शब्द इक पढ़ाउँदा ए। लख चुरासी भेव खुल्ाउँदा ए। आत्म रास वंड वंडाउँदा ए। हँ ब्रह्म पड़दा लौंहदा ए। निहकर्मी कर्म कमाउँदा ए। धरनी धरत धवल सोभा पाउँदा ए। अर्श फर्श डेरा लाउँदा ए। मध धार खेल रचाउँदा ए। नेत्र नैण नज़र किसे ना आउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सब दी इच्छया पूर कराउँदा ए। सब दी इच्छया पूर करावेगा। प्रभ दाता इक्को आवेगा। सर्ब ज्ञाता आप अख्वावेगा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी आपणी धार दृढ़ावेगा। सतिजुग देवे सच ज्ञान, सति सतिवादी इक्को हुक्म वरतावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत सुहेले गुरमुख चेले सन्तां मेले गुरसिख आपणे नाल रलाएगा। नाल रला बणाए संग, हरिसंगत रूप वटाईआ। काया चोली चाढ़ अगम्मी रंग, दुरमति मैल दए धवाईआ। रातीं सुत्तयां दिने जागदयां काया मन्दिर अन्दर जाए लँघ, आत्म सेजा चढ़ सोभा पाईआ। अट्ठे पहर वजा मृदंग, सुरती सतिगुर चरण लगाईआ। अमृत धार सरोवर इक्को वार नुहाए गंग, दूजी वार नहावण गुरमुख कोए ना जाईआ। आवण जावण लख चुरासी कटे पन्ध, जम की फाँसी दए तुड़ाईआ। घर आत्म परमात्म देवे इक अनन्द, पारब्रह्म ब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। दोवें मिल के गावण सोहँ छन्द, तूं मेरा मैं तेरा निरगुण निरगुण होए ना कदे जुदाईआ। चार वरन अठारां बरन सतिजुग इक्को पए गंढु, डोरी तन्द नाम बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आदि जुगादि धुर दी आसा, पूरी करे पुरख अबिनासा, निरगुण सरगुण रहे ना कोई निरासा, निरिच्छत इच्छया सब दी पूर कराईआ। जन भगतां दे सच भरवासा, साचा नाता इक जुड़ाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, शब्द सरूपी दासी दासा, बण सेवक पालक दोवें धार विच संसार, गुरमुखां कर प्यार, आत्म परमात्म आपणा मेल मिलाईआ।

✪ २५ अस्सू २०२० बिक्रमी बग्गा सिंँघ दे गृह पिण्ड नत ज़िला लुधियाणा ✪

सचखण्ड निवासी अदल करे करतार, शाह पातशाह इक अख्वाइंदा। जुग चौकड़ी आदि जुगादि जिस दी धार, दो जहानां हुक्म वरताइंदा। निरगुण सरगुण रूप जिस दा आकार, लख चुरासी वंड वंडाइंदा। शब्द नाद बोध अगाध जिस जैकार, धुर दा नाअरा इक प्रगटाइंदा। आत्म परमात्म जिस दा विहार, ततव तत खेल खलाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा रूप संसार, लोकमात रंग रंगाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण जिस दा करन जैकार, सोहला ढोला राग सुणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड साचे आसण लाइंदा। साचा अदल करे निरँकार, निरगुण वड्डा वड वड्याईआ। दो जहानां पावे सार, ब्रह्मण्ड खण्ड खोज खोजाईआ। विष्न ब्रह्मा लए उठाल, लेखा मंगे थाउँ थाईंआ। त्रैगुण वेखे जगत जंजाल, दहि दिशा भेव चुकाईआ। पंज तत वेखे हाल बेहाल, नव नौ चार रिहा कुरलाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखे दलाल, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरे सोभा पाईआ। सच अदालत करे भगवान, हरि वड्डा वड वड्याईआ। धर्म निशाना वेखे विच जहान, कवण रिहा हथ्थ उठाईआ। सिदक सबूरी वेखे ईमान, धर्म जत कवण दृढ़ाईआ। शब्द धुन नाम बाणी कलमा वेखे कलाम, काया मन्दिर अन्दर बिन रसना जिह्वा कवण गाईआ। चौदां लोक चौदां तबक चौदां विद्या वेखे दुकान, साची वस्त अमोलक नाम कवण वरताईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ वेखे मार ध्यान, रवि ससि सूरज चन्द मण्डल मण्डप देवत सुर कवण बैठे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड साचे सोभा पाईआ। सच अदालत करे भगवन्त, बेअन्त बेपरवाहीआ। लख चुरासी वेखे जीव जंत, साध सन्त पड़दा रिहा उठाईआ। कवण नार बण सुहागण हरि जू हंढ्आए इक्को कन्त, आत्म सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। कवण काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, दुरमति मैल धवाईआ। कवण तोड़े गढ़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म रूप समाईआ। कवण मेल मिलावे साची संगत, चार वरन अठारां बरन डेरा ढाहीआ। कवण बणे बोध अगाधा पंडत, धुर संदेसा दए सुणाईआ। कवण करे कूड़ी क्रिया खण्डत, खण्डा खडग नाम चमकाईआ। कवण नाम चमकाए तेज़ प्रचण्डत, चिल्ला तीर कमान शस्त्र कवण उठाईआ। कवण दर दरवेश भिखारी बणे मंगत, दर दर घर घर अलख जगाईआ। कवण लेखा चुकाए दोज़ख़ बहिश्त जन्नत, नरक स्वर्ग लेखा कोई रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दी करनी फोल फोलाईआ। सच अदालत करे पारब्रह्म, ब्रह्मवेता खेल खलाइंदा। कवण रसना जिह्वा गाए दमां दम,

कवण गूढ़ी नींद आलस निंद्रा विच समाइंदा। कवण शब्द हुलारे चढ़े अगम्मी पींघ, दो जहानां पार कराइंदा। कवण वजाए हँकारी बीन, माया ममता नाल रलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे घर सोभा पाइंदा। सच अदालत करे मेहरवान, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। चार कुण्ट वेखे मार ध्यान, नव सत्त फेरा पाईआ। कलयुग अन्त हो प्रधान, नाम प्रधानगी इक रखाईआ। सृष्ट सबाई अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर करनहारा पछाण, बंद ताकी पड़दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग कूड़ी क्रिया वेख वखाईआ। सच अदालत राजन राजा, भूपत भूप आप कराईआ। खेले खेल ग़रीब निवाज़ा, भेव अभेदा समझ कोए ना पाईआ। शब्द अगम्मी अस्व रखे ताजा, सच सिँघासण आसण लाईआ। दो जहान वजाए आपणा नाम वाजा, धुन राग इक सुणाईआ। निरगुण सरगुण रच रच काजा, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम खेल तमाशा, नर नरायण वेखण आईआ। नौ खण्ड पृथमी कूड़ी पैंदी रासा, जूठ झूठ गोपी काहन नचाईआ। साचा नूर ना कोए प्रकाशा, जोती जोत ना कोए चमकाईआ। निज घर मन्दिर करे कोई ना वासा, नौ दुआरे भज्जण वाहो दाहीआ। करवट लै बदले ना कोई पासा, गूढ़ी नींद सुत्ती सर्ब लोकाईआ। अन्तिम करे ना कोई बंद खुलासा, बंदीख़ाना ना कोए तुड़ाईआ। जगत विभचार बणया हासा, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दी धार आप जणाईआ। सच अदालत करे प्रभ मीता, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। कलयुग कूड़ी वेखे रीता, मन्दिर मसीतां देण दुहाईआ। नाम निधान किसे ना पीता, मध प्याले सारे हथ्थ उठाईआ। हरि जू हरि ना वसया चीता, चेत्र रूप ना कोए वखाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण पढ़दे गीता, अठ दस पन्ध ना कोए मुकाईआ। अञ्जील कुरान कोई ना बदले नीता, आबेहयात मुख ना कोए चुआईआ। खाणी बाणी तन मन ठांडा कलयुग जीव कोई ना कीता, त्रैगुण अग्नी पंज तत रही जलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच संदेस इक सुणाईआ। सच अदालत करे गोबिन्द, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। सृष्ट सबाई वेखे सागर सिन्ध, चारों कुण्ट लहर लहराईआ। गुरमुख विरला नज़री आवे शब्द अनादी बिंद, भरमे भुली सर्ब लोकाईआ। जिस माणस हो के प्रभ दी विसरी चिन्द, तिस चिन्ता चिखा दए तपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। सच अदालत करे मर्द, मर्दाना मर्द बेअन्त बेपरवाहीआ। कलयुग अन्तिम कूड़ी क्रिया खोवे कर्द, ख़ाली हथ्थ वखाईआ। ग़रीब निमाणयां जगत नताणयां वंडे दर्द, दुखियां दर्द झोली पाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां चार युग दी खोल्ह वखाए फ़रद, फ़र्ज सब नूं दए लगाईआ। कलयुग नेत्र खोल्ह

वेखो सब दा होया हर्ज, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश सति धर्म ना कोए रखाईआ। बिन हरि नामे कूड़ी क्रिया रहे ग़रक, शौह दरया पार ना कोए कराईआ। दीन मज़्ब ज़ात पात ऊँच नीच प्या फ़र्क, भेव सके ना कोए चुकाईआ। आपणे घर काया मन्दिर अन्दर कोई ना आवे परत, बाहरों लभ्भण नूर खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दी धार आप जणाईआ। सच अदालत करे ठांडे दरबार, धुरदरगाही खेल खलाइंदा। हुक्मी हुक्म वरते वरतार, ना कोई मेटे मेट मिटाइंदा। साचे तख्त बैठ सच्ची सरकार, पुरख अकाल सच सिँघासण सोभा पाइंदा। हुक्म देवे एको वार, एकँकार आप समझाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर कट्ठे होवो आण, गृह मन्दिर इक सुहाइंदा। आपणा आपणा दयो अन्त ब्यान, कलयुग जीव क्यों कुरलाइंदा। साबत रिहा ना मात ईमान, धर्म जत ना कोए रखाइंदा। शब्द नालों वध्ध बल धरया शैतान, दर दर घर घर आपणा फेरा पाइंदा। कलयुग जीवां जंतां गुर अवतारो पीर पैगम्बरो तुहाड्डा भुल्लया ज्ञान, हिरदे इष्ट ना कोए वखाइंदा। जा के आपणे भगतां करो पहचान, गुरमुख केहड़ा नज़री आइंदा। उस दी शहादत दयो आण, श्री भगवान मंग मंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हुक्म हाकम इक समझाइंदा। गुर अवतार कलयुग अन्तिम वेखण आउँदे, निरगुण निरगुण फेरा पाईआ। कूड़ी क्रिया वेख सर्ब पछताउँदे, इक दूजे वल ध्यान लगाईआ। अञ्जील कुरान गीता ज्ञान इक दूजे नाल झगड़ा पाउँदे, ख़ालस रूप ना कोए वखाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच महल्ल सोभा पाईआ। सच अदालत करे गहर गम्भीरा, बेअन्त बेअन्त बेपरवाहीआ। कलयुग कूड़ी क्रिया बदले चीरा, सच दस्तार सीस इक टिकाईआ। भगत भगवान आप प्रगटाए आपणा हीरा, करता कीमत आपे पाईआ। हरिजन हरिजन बदल देवे तकदीरा, तसबी माला नाम गल विच पाईआ। हथ्थ फड़ाए अगम्मी इक शमशीरा, खण्डा खड़ग रूप वटाईआ। इक्को हुक्म वरताए अमीर वज़ीरां, शाह हकीरां इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे इक अदालत बैठा सोभा पाईआ। सच अदालत करे सतिगुर पूरा, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया हूंझे कूड़ा, नाम बहारा इक लगाईआ। पूरब कौल करे पूरा, लिख्त भविक्ख्त लेखे लाईआ। जन भगतां नज़री आए हाज़र हज़ूरा, हज़रत आपणा वेस वटाईआ। साचे सन्तां देवे नाम नाद अगम्मी तूरा, तुरत आपणा राग सुणाईआ। गुरमुखां भाण्डा ख़ाली करे भरपूरा, साची वस्त दए टिकाईआ। गुरसिखां काया चोली चाढ़े रंग गूढ़ा, दो जहान उतर कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताईआ। सच अदालत करे पुरख अबिनाश, अबिनाशी करता वड वड्याईआ। कलयुग

कूड़ कुड़यारा कर के नास, सच सुच मार्ग देवे लाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी इक्को पावे रास, निरगुण निरगुण गोपी काहन नचाईआ। सत्त दीप इक्को वस्त देवे रास, नर हरि आपणा नाम काया मन्दिर विच टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्त सच अदालत इक वखाईआ। सच अदालत लग्गे सचखण्ड, सो पुरख निरँजण आप लगाईआ। हरि पुरख निरँजण वेखे खेल ब्रह्मण्ड, एकँकारा वरभण्ड फोल फोलाईआ। आदि निरँजण चाढ़ नूर अगम्मी चन्द, अबिनाशी करता करे सच रुशनाईआ। श्री भगवान सूरा सरबँग, पारब्रह्म प्रभ आपणा भेव चुकाईआ। ब्रह्म दुआरे मंगे मंग, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। किरपा कर सूरे सरबँग, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। जुग चौकड़ी सारे गए लँघ, अन्तिम कलयुग वेला आईआ। त्रैगुण माया घर घर मारे डंग, डसनी बैठी रूप वटाईआ। सुरत सवाणी बिन शब्द हाणी सब दी होई रंड, सच करे ना कोए कुड़माईआ। फिरी दरोही भेख पखण्ड, अन्ध अन्धेरा इक्को छाईआ। साहिब सतिगुर तेरा कोई ना गावे छन्द, गीत गोबिन्द ना कोए अलाईआ। पांधी बण के किसे ना मुकया पन्ध, भज्जे फिरन वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, साचा तख्त तोहे सुहाईआ। साचे तख्त चढ़ भगवान, चढ़दी कला आप जणाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव त्रैगुण माया पंज तत करो ध्यान, सब दा लेखा लेखे पाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण सुणो फ़रमान, अञ्जील कुरानां हुक्म मनाइंदा। हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश सब नूं मन्नणा पए इक भगवान, इष्ट देव गुरदेव स्वामी परवरदिगार सदा नेहकर्मी इक्को नज़री आइंदा। बोध अगाध पढ़े बाणी, कलमा कलाम दए निशानी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा अदल आप कमाइंदा। श्री भगवान करे प्रभ अदल, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। कूड़ी क्रिया करे कतल, कातिल मकतूल रूप वटाईआ। कलयुग नज़ाम देवे बदल, बदला लवे थाउँ थाईंआ। जन भगत वखाए आपणी मज़ल, जगत दुआर पन्ध मुकाईआ। करे प्यारा हर दिल, अज़ीज़ आपणे रंग रंगाईआ। काया मन्दिर अन्दर जाए मिल, बाहर खोजण कोए ना जाईआ। श्री भगवान आपणे हुक्म विच करे ना ढिल, नाम नगारे साची चोट लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, नव नौ चार करे रुशनाईआ। अदल करे प्रभ शाह नवाब, दस्तगीर वड्डी वड्याईआ। कूड़ी क्रिया दए अज़ाब, फतवा सब दे उते सादर दए कराईआ। गुरमुख विरले मिले खताब, जिस मुख़ातब हो के आपणा भेव चुकाईआ। साचा हुजरा वखाए इक महिराब, काया काअबा खोल्ह वखाईआ। तिस गृह मन्दिर सीस सजदा झुके जनाब, आहला आलीशान बैठा डेरा लाईआ। जुग चौकड़ी जिस दी कोई ना जाणे बुनयाद, मुणयाद समझ कोए ना पाईआ। सो कलयुग अन्तिम

सर्ब सुणे फ़रयाद, जो दीन दुनी बैठ सर्ब रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा हुक्म आप वरताईआ। अदल अदालत करे नेहकाम, निहकर्मी कर्म कमाइंदा। पकड़ पछाड़े जो करन हराम, जगत शैतान रहिण कोए ना पाइंदा। शब्द अगम्मी तीर अणयाला मारे बाण, साचे चिल्ले आप चढ़ाइंदा। कूड़ी क्रिया शौह दरयाए रोड़े तूफ़ान, जूठ झूठ डेरा ढाइंदा। सच सुच करे प्रधान, लोकमात धरत धवल गोद बहाइंदा। साचे भगत कर परवान, भगवन आपणा भेव चुकाइंदा। धुर दा खेल दस्से महान, महिमा अकथ कथ समझाइंदा। जुग जन्म विछड़यां कर किरपा मेले आण, आवण जावण पतित पावण लख चुरासी पन्ध मुकाइंदा। सच अदालत विच किसे दा होण ना देवे नुक़सान, हक़ो हक़ हकीकत सब दी झोली पाइंदा। लुक्या रहे ना कोई बेईमान, जगत शतान सर्ब उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, नर हरि आपणी कार कमाइंदा। सच तख्त अदालत बहि के, बहु भांती हुक्म सुणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो अन्तिम आए कह के, सो लेखा पूर कराईआ। भगत बचण भगवान चरणी ढह के, एथे ओथे होए सहाईआ। लख चुरासी जीव जंत हउमे हौकयां नाल सहके, सति सति नज़र कोए ना आईआ। सतिगुर सतिगुर सतिगुर साची खेल रचाए आप आपणे अग्गे ढह के, माण अभिमान नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, कलयुग तेरी अन्तिम वर, सचखण्ड दुआरे अदालत इक लगाईआ। सचखण्ड दुआरे लग्गी अदालत, आलमीन आप लगाइंदा। कलयुग अन्तिम रहिण ना देवे कोई बग़ावत, झगड़ा जूठ झूठ मिटाइंदा। दीन मज़्ह्ब करे ना कोई अदावत, धुर दी धार आप समझाइंदा। नाम भण्डार करे सख़ावत, सख़ी सरवर इक्को नज़री आइंदा। कूड़ी क्रिया रहिण ना देवे अलामत, सति सति वरताइंदा। इक्को पुरख अकाल परवरदिगार सच्चा राम वखाए सही सलामत, सचखण्ड दुआरे सोभा पाइंदा। भगत सन्त गुरमुख गुरसिख हरिजन लोकमात कर आपणी अमानत, अन्तिम आपणे लेखे लाइंदा। मनमुखता कूड़ी क्रिया राए धर्म राह विच करे ममानत, अग्गे लँघ कोए ना जाइंदा। बिन सतिगुर पूरे शब्द गुर दाते कोई ना करे शांत, अग्नी तत बिरहों रोग जगत वजोग ना कोए मिटाइंदा। कर किरपा जिस जोड़े आपणा नात, समरथ पुरख देवे साथ, नाम जणाए अगम्मी गाथ, अन्तर आत्म पूजा पाठ घर सरोवर नुहाए साचे ताट, आन बाट लेखा कोई रहिण ना पाइंदा।

✪ २५ अस्सू २०२० बिक्रमी हरबंस सिँघ दे गृह पिण्ड अजनौद ज़िला लुधियाणा ✪

पुरख अकाल तेरी ओट, गुर अवतार मंग मंगाईआ। निरवैर पुरख तेरी निर्मल जोत, आदि जुगादि सदा रुशनाईआ। तेरा खेल लोक परलोक, दो जहान तेरा रूप नज़री आईआ। जुग चौकड़ी देवणहारा नाम श्लोक, धुर संदेसा इक समझाईआ। निरगुण सरगुण देवे सरोत, साचा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर आपणा वेस वटाईआ। पीर पैगम्बर कहिण खुदा, ख़ालक तेरा नूर नज़री आईआ। मेहरवान ना हो जुदा, जुज़ वंड ना कोए वंडाईआ। जुग चौकड़ी मार्ग सिध्धा, दो जहान समझाईआ। आपणे मिलण दी दस्स अगम्मी बिधा, जगत रसूल कर पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान फेरा पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर झुकाइण सीस, दर बरदा रूप वटाईआ। किरपा कर शहिनशाह जगदीश, जगत मालक तेरे हथ्थ वड्याईआ। चौथे जुग साडा लेखा गया बीत, बाकी नज़र कोई ना आईआ। ख़ाली होए मन्दिर मसीत, शिवदुआले मठ्ठ ना कोए वड्याईआ। मन वासना होई नीच, सच सुच ना कोए समझाईआ। झगड़ा प्या हस्त कीट, वरन बरन धीर ना कोए धराईआ। सतिगुर शब्द रसना जिह्वा रहे घसीट, साची मंज़ल समझ कोए ना पाईआ। कूड़ी क्रिया लग्गी प्रीत, प्रीतम नाता सके ना कोए जुड़ाईआ। हिरदे वसे किसे ना चीत, चित वित ठगोरी सब नूं पाईआ। दर तेरे मंगदे इक्को भीख, बण भिखारी झोली डाहीआ। सदी चौधवीं तेरी उडीक, परवरदिगार हो सहाईआ। सदी बीसवीं आई तारीख़, गुर अवतार नैण उठाईआ। भेव खोल्ह लाशरीक, शिरकत पिछली दे गंवाईआ। दूर दुराडे नज़री आ नज़दीक, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। पीर पैगम्बर तोबा तोबा करन हाए, हौका इक्को इक रखाईआ। चार कुण्ट रहे कुरलाए, सांतक रूप ना कोए वटाईआ। कलमा नबी गए भुलाए, रसूल समझ कोए ना पाईआ। मुल्ला शेख़ रहे कुरलाए, काया काअबा खोज कोए ना पाईआ। उच्ची कूक अल्ला मीआं रहे बुलाए, नेत्र मूंद ध्यान लगाईआ। सच प्रीती कर कोई ना लागे पाए, हंगता गढ़ ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सच तेरी सरनाईआ। गुर अवतार कहिण वड प्रितपालक, निरगुण आपणी दया कमाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेख ख़ालक, ख़ाली हथ्थ दए दुहाईआ। नज़र ना आवे कोई सालस, सच इन्साफ़ ना कोए कमाईआ। बिन तेरे चार वरन कोई ना करे ख़ालस, ख़ालस रूप ना कोए वटाईआ। कूड़ी क्रिया मगर लग्गी आलस, निंद्रा अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। मन वासना होई जहालत, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। साची करे ना कोई इबादत, नूर नज़र किसे ना आईआ। कलयुग अन्तिम कीमत पाए ना कोई लिखी

इबादत, अञ्जील कुरान देण दुहाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद सारे करन ना कोई सफ़ारश, अग्गे हो ना कोए छुडाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वधी नालश, नाअरा आपणा रही लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान फेरा पाईआ। गुर अवतार कहिण बोल, बोली तेरी समझ किसे ना आईआ। दो जहान वेख तोल, तोला बण के बेपरवाहीआ। सच वस्त ना किसे कोल, ख़ाली काया भाण्डे देण वखाईआ। कूड़ी क्रिया वज्जे ढोल, धुन राग ना कोई सुणाईआ। लख चुरासी काया गठड़ी वेख फोल, माया ममता पंड बंधाईआ। नाम मधाणे वेख वरोल, छाछ रूप नज़री आईआ। पड़दा लाह के वेख ओहल, काम क्रोध लोभ मोह हँकार होए हल्काईआ। प्रेम प्रीती कर के वेख चोलू, मनमुख बैठे मुख भवाईआ। सृष्ट सबाई अन्त होई अनभोल, गफ्लत गूढ़ी नींद सुआईआ। मिले वड्याई किसे ना धौल, धरनी धरत दए दुहाईआ। गुर अवतार आखण प्रभ कर पूरा कोल, जो अन्तिम वेले दित्ता समझाईआ। तेरा भेव कोई ना जाणे पंडत पांधा रौल, अक्षरी भाव ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणा बल धराईआ । निरगुण बल धार, बौहड़ी बौहड़ी रहे कुरलाईआ। ख़ाली हथ्थ फिरन गुरू अवतार, दर तेरे वाहो दाहीआ। पंज तत नाता छुटया जगत संसार, रूप रंग रेख नज़र कोए ना आईआ। अन्तिम लुक्या तेरे चरण दुआर, सच भूमका मिली इक सरनाईआ। निरवैर पुरख हो मददगार, हुक्म आपणा इक वरताईआ। अददां विच गिणती गुरू अवतार, शब्दां विच जगत पढ़ाईआ। मुशक़तां विच साध सन्त छड्डे डाल, धुर संदेसा हुक्म मनाईआ। किरपा कर दीन दयाल, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। कलयुग अन्तिम सब दे सिर ते कूके काल, डौरु डंका रिहा वजाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेख खेल बेपरवाहीआ। ईसा मूसा मुहम्मद करन याद, ज़ाहरा पीर ध्यान लगाईआ। परवरदिगार सुण फ़रयाद, बेनज़ीर तेरी शरनाईआ। साचा कलमा दे दाद, दौलत इक्को वार वरताईआ। कूड़ी क्रिया मिटे वाद विवाद, सच सुच होए रुशनाईआ। निरगुण सरगुण रख लाज, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आत्म परमात्म रच काज, घर साचा सगन मनाईआ। अन्दर वड़ के मार आवाज़, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। तेरे दर ते आईए भाज, बण के पांधी राहीआ। कलयुग बदल दे रवाज, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। सतिजुग रच दे सच्चा साज, साजण बण के हरि रघुराईआ। चार वरनां बणे इक समाज, समझ सब दी दे बदलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, वाह वा हथ्थ तेरे वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे रहे लोच, प्रभू तेरी ओट तकाईआ। सोचयां किसे ना आवे सोच, आपणी सोच साडी झोली पाईआ। नित नवित्त दर्शन मंगीए रोज़, रोज़ा बांग कूक तेरे नाम शनवाईआ। मध प्याला दे कर मदहोश, बण

ख़ामोश सुन्न समाध समाईआ। अन्तिम तेरा वेखीए जोश, बलधारी आपणा बल प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण तेरा खेल तमाशा, ख़ालक ख़लक समझ कोए ना पाईआ। तेरी नज़र ना आवे पैंदी रासा, गोपी काहन नाच ना कोए नचाईआ। गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ साचा दीप ना कोए प्रकाशा, नित नवित्त तेल बाती दीप करन रुशनाईआ। आपणा भेव खोल्ह पुरख समराथा, दर तेरे मंग मंगाईआ। काया मन्दिर बजर कपाटी तोड़ ताका, कुण्डा आपणी हथ्थीं लाहीआ। अमृत जाम प्या इक्को बाटा, जीवण मरन विच मुक कदे ना जाईआ। हो सहाई सगला साथा, एथे ओथे संग निभाईआ। निरगुण निरगुण जुड़े नाता, बिधाता आपणी गंढु पवाईआ। कर किरपा श्री भगवान मन अरज़ोई साडा आखा, आखर तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरे वज्जे नाम वधाईआ। गुर अवतार कहिण अडोल, अडुल तेरी सरनाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप कल सुत्ती पई अनभोल, भोला भाउ ना कोए जणाईआ। कर किरपा सतिगुर स्वामी आपणा दर खोल्ह, मन्दिर सच्चा दे वखाईआ। जिस घर बिन ढोलक छैणे वज्जे ढोल, बिन तन्द तन्दूर राग सुणाईआ। जिथ्थे बिन बाटिउँ मिले अमृत पौहल, रस सच्चा दे चखाईआ। जिस दवारे उलटा होवे नाभ कौल, कौल पूरा कर खुदाईआ। मिले वड्याई उपर धौल, धरनी सच्ची सोभा पाईआ। तेरे बिरहों विछोड़े वज्जण अगम्मे बोल, तिक्खी मुखी धार रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, कल अन्तिम हो सहाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन अरदासे, गल पल्लू लए पाईआ। सजदा सीस झुका पढ़न निमाज़े, दर बरदा रूप वटाईआ। कवण वेला प्रभ संवारें काजे, कर आपणा फेरा पाईआ। कवण देस जिस नगर बहि के साजण साजें, सज्जण आपणा रंग रंगाईआ। कवण कूट फिरीए भाजे, दहि दिशा वेख वखाईआ। कवण मेलें वड वड राजे, बंधप कवण देवें पाईआ। कवण नगर साजण साजें, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, जुग चौकड़ी मंगे तेरी सरनाईआ। जुग चौकड़ी होई मांगत, दर भिखारी रूप वटाईआ। किरपा कर प्रभू अनजानत, अनभव आपणी धार वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लख चुरासी जीव जंत तेरे कोल रख के गए अमानत, दर तेरे ओट रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सही सलामत आपणा फेरा पाईआ। फेरा पा प्रभू प्रभ आप, निरगुण निरवैर वेस वटाईआ। कर कर थक्के पूजा पाठ, सिमरन गायत्री मन्त्र नाल रलाईआ। फिर फिर थक्के आठ साठ, दहि दिशा वाहो दाहीआ। लभ्भ लभ्भ थक्के तेरी जोत ललाट, नूर नज़र कोए

ना आईआ। विक विक थक्के कलयुग हाट, तुध बिन कीमत कोए ना पाईआ। सौं सौं थक्के जगत रात, बिन तेरे शब्द अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। बहि बहि थक्के जगत जमात, साची पट्टी नाम ना कोए पढ़ाईआ। लिख लिख थक्के नाल कलम दवात, आपणा लेखा सके ना कोए गणाईआ। कलयुग अन्तिम साहिब सतिगुर कर इक हमायत, आमल मुर्शद फेरा पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी कर किफ़ायत, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर कलयुग तेरा वेखण सुअम्बर, किस बिध आपणी रास रचाईआ। श्री भगवान बोले एक, एकँकार आप जणाइंदा। सच दुआरे लओ वेख, बेपरवाह पड़दा लाहइंदा। निरगुण हो के धारे भेख, जोती जाता नूर चमकाइंदा। सच दुआरे करे हेत, सच प्रीती इक वखाइंदा। नज़री आए नेतन नेत, दूर दुराडा पन्ध चुकाइंदा। निरवैर पुरख धार भेख, वेस अवल्लड़ा आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर कलयुग अन्त श्री भगवन्त आप बन्न्हे आपणे लड़, कन्नी छुट्ट कदे ना जाईआ। साची बन्न्हे प्रेम कन्नी, किरपा कर बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बणाए आपणी वंनी, नार सुहञ्जणी रूप वखाईआ। सच शृंगार कराए सरवण कन्नी, सो साहिब दए वड्याईआ। नाम ख़ज़ाना देवे वड्डा धनी, धन दौलत झोली पाईआ। निरगुण नूर चाढ़े चन्नी, चन्द सूरज बैठण मुख शरमाईआ। करे प्रकाश नेत्रहीण अन्नी, निरगुण नूर इक चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र उठाईआ। मेहर नज़र प्रभ लए तक्क, तक्कवा इक्को इक जणाइंदा। गुर अवतारो पीर पैगम्बरो सब दा वेखां हक़, नाहक हुक्म ना कोए सुणाइंदा। पुरख अकाल दीन दयाल आदि जुगादि कदे ना जाए थक्क, जुग चौकड़ी आपणा हुक्म वरताइंदा। करे खेल पुरख समरथ, शाह पातशाह आपणा नाउँ प्रगटाइंदा। जुग चौकड़ी जिस चलाया रथ, सो रथवाही आपणी चाल बदलाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो मार्ग गए दस्स, अन्तिम लेखा सब दा पूर कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग तेरी अन्तिम वर, कल काती मेट मिटाइंदा। कलकाती वेख कसाई, कायनात खोज खोजाईआ। कूड़ी क्रिया हथ्थ छुरी रहे उठाई, तिक्खी करद रूप वटाईआ। आत्म परमात्म नालों होई जुदाई, जगत रंडेपा रूप वटाईआ। सज्जण मिले ना सच्चा माही, अंगीकार अंग ना कोए लगाईआ। नेत्र रोवण ज़ारो ज़ार नैण कुरलावण देण दुहाई, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरा इक्को नज़री आईआ। तुहाड्डी अर्ज़ करां मंज़ूर, मेहरवान आप जणाइंदा। कल्लू काल कीता मजबूर, मुश्कल सब दी हल्ल कराइंदा। आपणा बदल देवां दस्तूर, दस्त बदस्त साचा खेल

कराइंदा। कूड़ी क्रिया रहिण ना देवां कोई मग़रूर, मफ़रूर हो के वेख वखाइंदा। नेत्र रोवण ग़रीब निमाणे मज़दूर, तिन्हां मुश्कल हल्ल ना कोए कराइंदा। जगत धनाढ भाण्डे कर भरपूर, घर माया ममता मोह ललचाइंदा। नाता जुड़या कूड़ो कूड़, साचा नाम वणज नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सब दा लेखा वेख वखाइंदा। सब दा लेखा पूर करावांगा। भरम भुलेखा मेट मिटावांगा। साचा नेता बण के आवांगा। देस परदेसा खोज खोजावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव महेष उठावांगा। गणपति गणेश आप समझावांगा। कूड़ी क्रिया नेत्र पेख, लोचण नैण इक दृढ़ावांगा। जूठा झूठा डेरा ढाह के भेख, सच सुच महल्ल बणावांगा। जिस गृह इक्को नाम लैण चेत, चार कुण्ट इक्को राह वखावांगा। हरि सतिगुर करे साचा हेत, स्वामी बण के मेल मिलावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लहिणा देणा सब दा हर घट झोली पावांगा। लहिणा देणा मुकाए प्रभ एक, एकँकार वड्डी वड्याईआ। धुर संदेसा लिख लिख लेख, शब्द तराना दए जणाईआ। उठो वेखो आपणा देश, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर रिहा जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगण सरन, सरनगति तेरी सरनाईआ। साहिब करता तूं करनी करन, बेअन्त तेरी वड्याईआ। कलयुग अन्त सतिजुग घाड़न आएयों घड़न, बण बाढी सेव कमाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया आएयों फड़न, नाम डोरी तन्द हथ्थ उठाईआ। जन भगतां अन्दर साचे पौड़े आएयों चढ़न, पड़दा विच्चों द्वैत उठाईआ। साचा ढोला आएयों पढ़न, सोहँ नाम सुणाईआ। खोल्हण आएयों हरन फरन, निज नेत्र कर रुशनाईआ। बख़्शण आएयों प्रीत चरण, मस्तक टिक्का धूढ़ी लाईआ। हाकम बण के सब दे अग्गे आएयों अड़न, तेरा सीस ना कोए निवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणी माण वड्याईआ। माण वड्याई हरि का नाम, सो सतिगुर आप जणाईआ। इछत करे पूरा काम, मेहर नज़र उठाईआ। साची सिख्या देवे जीव जहान, लख चुरासी कर पढ़ाईआ। धीरज जत सति देवे ईमान, सन्तोख इक्को इक वखाईआ। कलमा नबी रसूल दए कल्याण, कलाम इक्को दए जणाईआ। धुर संदेसा दे पैग़ाम, पीर पैगम्बर हुक्म वरताईआ। कलयुग अन्तिम कवण दर झुक करीए सलाम, सीस जगदीश तेरी झोली पाईआ। तूं सर्ब जीआं दा इक भगवान, जोती जाता नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर कलयुग अन्तिम मंग मंगाईआ। कलयुग अन्तिम सारे मंगदे, प्रभ दर तेरा इक्को नज़री आईआ। बण भिखारी अन्त ना संगदे, संगल शरअ रहे कटाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर चोली रंगदे, रंग चलूल इक चढ़ाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सच सुल्तान तेरा संदेस सच्चा भाईआ। सच संदेस दे प्रभ एक, अक्ल कलधारी आप जणाईआ। सच दुआरे लभ्भीए तेरा भेख, भविश तेरी झोली पाईआ। तेरा नूर मस्तक रेख, तेरा ज़हूर सच रुशनाईआ। तेरा ख़ज़ाना भरपूर सब दी टेक, टिकटिकी सारे बैठे लाईआ। तूं देवणहार वड नरेश, शहिनशाह इक्को इक अख्वाईआ। कर किरपा अन्दर वड़ के जन भगतां दे दे भेत, क्यों बैठा मुख छुपाईआ। आपणी सुहा सुहञ्जणी सेज, आत्म जोती नूर रुशनाईआ। शब्द अगम्मी दे भेज, धुर संदेसा इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर मांगत मंग मंगाईआ। दर मांगत मंगे भिच्छया, भावना अन्दरे अन्दर छुपाईआ। साहिब सतिगुर पूरी करे इच्छया, बिन रसना जिह्वा बोले लेखे लाईआ। शब्द स्वामी धुर दी सिख्या, नाउँ निरँकार इक दृढ़ाईआ। हरि का नाम कदे ना जावे भिटया, ऊँच नीच इक्को रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कूड़ी क्रिया वेख वखाईआ। कूड़ी क्रिया पाया ज़ोर, कलयुग डंका इक वजाईआ। सन्त साध बणे चोर, ठग्गी गुरुदुआर वखाईआ। मुल्लां शेख़ हरामख़ोर, धीआं भैणां नैण तकाईआ। काम क्रोध सब ने रखी लोड़, अन्तर आत्म राम गए भुलाईआ। बाहरों रसना जिह्वा अक्खीं मीट सुरती लैंदे जोड़, काया मन्दिर साचे पौड़े चढ़ के दरस कोए ना पाईआ।
८७६ बत्ती दन्द कहिन्दे शब्द फ़ुरना फुरे फोर, निज नेत्र नैण ना कोए खुल्हाईआ। भेखाधारी सेज बणाउँदे सूलां रोड़, आत्म सेजा ८७६
१५ सेज सुहञ्जणी पुरख अबिनाशी मेल ना कोए मिलाईआ। बण अस्वार चढ़दे घोड़, चक्रवरती रूप वटाईआ। शब्द अगम्मी १५
अस्व चढ़ के कोई ना पए दौड़, दो जहानां मंजल पन्ध मुकाईआ। डूंग्घी कन्दर वड़ वड़ सुत्ते भँवरे भोर, भोरी नाम हथ्थ किसे ना आईआ। मूर्ख सुत्ते अन्ध घोर, मुग्ध अञ्याण समझ ना आईआ। किरपा करे जिस आप लेख चुकाए मोर तोर, तुरत आपणा मेल मिलाईआ। शब्द खण्डे पंच विकारा देवे होड़, नेरन नेर रहिण ना पाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त जन भगतां मिलण दी रखी आपणी लोड़, बाकी छड्डी सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे लए तराईआ। हरिजन तारे आप प्रभ, हरि वड्डा वड वड्याईआ। लख चुरासी विच्चों लभ्भ, गुरसिख आपणी गोद बहाईआ। पूजा पाठ सिमरन मुक्का सब, जिस साबत सतिगुर नज़री आईआ। जगत दुआर मुक्की हद्द, घर इक्को सोभा पाईआ। प्रभ सरनाई बहिणा सज, दरगाह साची देवे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे लए जगाईआ। हरिजन जगाए जागरत जोत, जोती जाता दया कमाईआ। दूई द्वैत दुरमति मैल कढ्ढ खोट, अमृत रस इक भराईआ। आसा मनसा पूरी करे लोच, लोचण नैण अक्ख

खुल्हाईआ। आत्म परमात्म देवे इक्को मौज, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे लए तराईआ। हरिजन तारे आप स्वामी, समरथ पुरख वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादी अन्तरजामी, घट घट वेख वखाईआ। शब्द सुणाए अगम्मी बाणी, शास्त्र सिमरत वेद पुराण करे ना कोए पढ़ाईआ। शब्द मिलावा सुरती हाणी, सुरती शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। अमृत देवे ठंडा पाणी, अठसठ तीर्थ डेरा ढाहीआ। घर दीपक जोत जगाए नूरानी, महल अटल करे रुशनाईआ। देवे सरनाई शाह सुल्तानी, शहिनशाह दर आपणे लए बहाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत तेरी लिखण पढ़न दी मुक्के गुलामी, साहिब सतिगुर आपणा मेल मिलाईआ। अन्दर वड़ के बोले सच्ची बाणी, तूं मेरा मैं तेरा राग अल्हाईआ। दोहां मिली इक निशानी, भगत भगवान भगवान भगत इक्को रूप नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सिर हथ्थ टिकाए नित नवित्त रोज़, राज राजान दया कमाईआ। शब्द अगम्मी आपे करे खोज, आपणी वस्त गुरमुखां झोली पाईआ। जन भगतां मिलण दा प्रभ जी रखे शौक, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। कलयुग अन्तिम दीन दयाल कृपानिधान नगर खेड़े आ अजनौद, हरबंस अंस सरबंस लए प्रनाईआ। जिस दे अन्दर वड़ के माणे आपणी मौज, मुफ्त आपणा घर वसाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे कहिण प्रभ दा खेल कोई ना सके सोच, समझ विच कदे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। शाह पातशाह प्रभ एका ठाकर, ठोकर आपणा नाम लगाइंदा। पार कराए कलयुग सागर, डूंग्घी भँवरी पन्ध मुकाइंदा। एथे ओथे देवे आदर, दो जहान इक्को रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगत भगवान वेख वखाइंदा। भगत भगवान कराए दरस, दीद इक्को इक जणाईआ। जन्म जन्म दी मेट हरस, हवस दए बुझाईआ। कर्म कर्म दा कर तरस, मेहर नज़र उठाईआ। अमृत मेघ देवे बरस, बूँद स्वांती मुख चुआईआ। गुरसिख तेरी मेटे तड़प, जगत विछोड़ा पिछली पीड़ रहिण ना पाईआ। सच प्रीती अन्दर रहिण ना देवे कोई फ़र्क, फ़ैसला इक्को वार सुणाईआ। पिछला लेखा सारा कीता तरक, ताकत इक्को सतिगुरू शब्द समझाईआ। गुरमुख गुरसिख मंज़ल चढ़दा कदी ना जावे अटक, जिस पिठ उते सतिगुर पूरा हथ्थ टिकाईआ। अद्धविचकारों कदी ना आवे परत, अग्गे जाए वाहो दाहीआ। किरपा करे सूरबीर हरि सतिगुर मर्द, मर्दानगी इक्को इक रखाईआ। लोकमात जिस दी मंज़ूर कीती अर्ज़, अग्गे तर्ज़ सके ना कोए बदलाईआ। भगत भगवान दोवें मिल के इक दूजे दी पूरी करन ग़र्ज़, बिन भगत भगवान जगत मार्ग ना कोए समझाईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख तेरा होण ना देवे हर्ज, जन्म जन्म दा हर्जाना दए चुकाईआ। पूरे सतिगुर दा एहो खेल असचर्ज, दीन दुनी दोवें पार कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जिस दित्ता आत्म अन्तर इक्को दान, तिस वस्त ठग्ग चोर यार विच संसार लुट्ट कोई ना जाईआ।

✪ २६ अस्सू २०२० बिक्रमी मदन लाल दे गृह विशकर्मा पुरी लुधियाणा ✪

सतिगुर दाता वड पीरन पीर, श्री भगवान दया कमाईआ। जन भगतां कट शरअ ज़ंजीर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। हउमें हंगता कढु पीड़, सांतक सति सति वरताईआ। अमृत जाम प्याला बख्श नीर, रस इक्को इक चखाईआ। बजर कपाटी पड़दा चीर, घर घर विच मेल मिलाईआ। फड़ के चोटी चाढ़ अख़ीर, आख़र आपणे अंग लगाईआ। एथे ओथे ना होए दिलगीर, सुख सागर रूप समझाईआ। लहिणा देणा चुका शाह हकीर, ऊँच नीच इक्को घर बहाईआ। मेहर नज़र कर बदली तकदीर, दूजी करे ना कोए पढ़ाईआ। आवण जावण कटे भीड़, घर साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगतां मार्ग इक्को दे, सच संदेसा नाम जणाईआ। आत्म परमात्म लगाए नेंह, प्रीती इक्को घर वखाईआ। अमृत बरसे धुर दा मेंह, मेघला बैठा मुख शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। भगतां दस्से इष्ट इक, एकँकार कर पढ़ाईआ। हरिजन सिख्या लए सिख, घर साचे सीस झुकाईआ। निरगुण हो के सरगुण अन्दर वड़े विच, विचला पड़दा दए उठाईआ। धाम वखाए साचा निज, निज दुआरे सोभा पाईआ। प्रेम रस विच जाए भिज, भिनड़ा रूप वटाईआ। जुग चौकड़ी जन भगतां मिलण नूं गया गिझ, आवे जावे वारो वार बेपरवाहीआ। सारे कारज इक्को वार कर दए सिध, लोकमात ना कोए तरसाईआ। आपणी अन्तर दस्स के बिध, शब्द अनाद दए शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे रंग रंगाईआ। भगतां दस्स इक सहारा, चरण कँवल देवे वड्याईआ। जगत जुग पार किनारा, नईया नौका नाम चढ़ाईआ। महल अटल वखाए उच्च मनारा, दरगाह साची आप सुहाईआ। दीवा बाती इक उज्यारा, निर्मल जोत करे रुशनाईआ। सदा वखाए ठांडा दरबारा, अग्नी तत ना लागे राईआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान बण निरँकारा, मेहर नज़र इक उठाईआ। आवण जावण गेड़ निवारा, लख चुरासी फंद कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे

माण वड्याईआ। हरिजन देवे इक्को माण, चरण सरन सच्ची सरनाईआ। दर्शन देवे इक ध्यान, अन्तर आत्म बूझ बुझाईआ। नाम समझाए इक ज्ञान, तूं मेरा मैं तेरा साचा सज्जण इक अख्वाईआ। मन्दिर वखाए इक मकान, जिस घर घर घर विच वसे माहीआ। जुग चौकड़ी नित नवित्त जन भगतां मिले आण, बण पांधी सच्चा राहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। हरिजन देवे निष्अक्खर एक, तन अक्खर रूप वटाईआ। मन तन जणाए जगत टेक, आत्म परमात्म इष्ट इक बणाईआ। निरगुण निरगुण लए वेख, सरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। कर खेल अचन अचेत, चेतन सुरती आप कराईआ। अन्दर वड़ के दस्से भेत, बाहरो बोल ना कोए जणाईआ। पीआ प्रीतम करे प्रेम, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि भगत देवे वड्याईआ। हरि भगत तेरा मित्र मात, श्री भगवान इक अख्वाइंदा। जिस ने दिती धुर दी दात, नाम भण्डारा झोली पाइंदा। कूड़ी क्रिया छड्ड नात, साचा बन्धन इक्को पाइंदा। जन भगतां मिल सच जमात, दूजा पन्थ ना कोए वखाइंदा। होए सहाई अनाथां नाथ, दीनन दीन आपणे गले लगाइंदा। जन्म जन्म दी पूरी करे आस, आसा तृष्ना मेट मिटाइंदा। आत्म सेजा आत्म परमात्म करे भोग बलास, साचा रस इक्को इक जणाइंदा। सर्ब गुणां प्रभ होए तास, गुणवन्ता आपणी कार कमाइंदा। राह तक्कण तेरा पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल ध्यान लगाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे कहिण शाबाश, जिस जन शहिनशाह आपणे रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन आपणी गोद उठाइंदा। हरिजन गोदी लए चुक्क, श्री भगवान वड्डी वड्याईआ। आवण जावण पैंडा जाए मुक्क, पांधी राही रहिण कोए ना पाईआ। घर सज्जण देवे सुख, दुःख दर्द दए गंवाईआ। गुरमुख बाहरों माणस दिसे मनुख, अन्दर आत्म परमात्म रूप समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन भय भउ भरम मिटाईआ। भय भउ होवे दूर, नेरन नेर रहिण ना पाईआ। जिस सतिगुर नज़री आए हाज़र हज़ूर, हज़रत दाता वड वड्याईआ। जन्म कर्म दा नाता तोड़ कूड़, सुच सच घर सच दए प्रनाईआ। प्रेम प्रीती अन्तर नूर, बख्शश बख्शीश विच्चों झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरिजन हरि हरि आपणे घर वसाईआ। हरिजन वसणा घर अगम्म, जिस गृह मिले वड्याईआ। संग ना जाए काया माटी चम्म, ततव तत मेल ना कोए मिलाईआ। पवण स्वास ना कोई दम, रसना जिह्वा रूप ना कोए वखाईआ। हरख़ सोग ना कोई ग़म, चिन्ता चिखा ना कोए जलाईआ। मात पिता ना जननी जन, पुत्तर धी रूप ना कोए वटाईआ। दौलत माल ख़ज़ाना ना कोई धन, जगत जागीर वेख कोए ना पाईआ। महल अटल जगत मनार ना कोई छप्पर छन्न, चार दीवार

बणत ना कोए बणाईआ। बुध मति ना कोई मन, दहि दिशा उठ उठ भज्जे कोई ना वाहो दाहीआ। निर्मल निरवैर जोत प्रकाश श्री भगवन, सच दुआरे बैठा आसण लाईआ। सो पुरख अकाल जन भगत चढ़ाए साचा चन्न, दो जहान करे रुशनाईआ। अन्तिम बेड़ा आपे बन्नू, आपणे कंध उठाईआ। सचखण्ड दुआर बहि कहे धन्न धन्न, धन्न गुरमुख तेरी चतुराईआ। जिस साहिब सतिगुर शब्द स्वामी हर घट अन्तरजामी ल्या मन्न, जग मनसा दूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, हरिजन देवे इक वर, घर घर विच दिवस रैण रैण दिवस इक्को खुशी वखाईआ।

✪ २६ अस्सू २०२० बिक्रमी गुरदेव सिँघ दे गृह लुधियाणा ✪

सतिगुर शब्द सदा मलाह, बेड़ा पतण पार कराइंदा। जुग जन्म दा लहिणा दए चुका, नित नवित्त वेख वखाइंदा। साची सिख्या दए दृढ़ा, नाम निधान बूझ बुझाइंदा। साचे मार्ग देवे पा, राह इक्को इक वखाइंदा। दूई द्वैती पड़दा दए चुका, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाइंदा। साचे मन्दिर दए चढ़ा, जिस घर आपणा आसण लाइंदा। जन्म जन्म दी विछड़ी आत्मा लए मिला, परमात्म आपणा बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल आप वखाइंदा। जन्म कर्म दे विछड़े जग, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। सन्त सुहेले किरपा कर धरनी उते लए लभ्भ, धवल देवे वड्याईआ। संसा रोग मेटे हब्ब, हरि आपणा भेव चुकाईआ। कूड़ कड़यारा मेट हद्द, घर इक्को इक वखाईआ। जिस घर वज्जे नाम नद, राग अनाद अलाईआ। सो महल्ले लए सद्द, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि सच्चा हुक्म वरताईआ। साचा हुक्म धुर दी धार, हरि करता आप जणाइंदा। सब दा लेखा रिहा विचार, बिन हरि नैण नज़र किसे ना आइंदा। कलयुग अन्तिम हो न्यार, निरगुण आपणा खेल खलाइंदा। हरिजन सच्चे पावे सार, पूरब लेख आप वरताइंदा। जगत दलिद्री देवे तार, मेहरवान मेहर नज़र उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी कर गोबिन्द, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन्म जन्म दी मेट चिन्द, कर्म कर्म दा रोग गंवाईआ। अमृत धार दे के सिन्ध, सागर सोभा पाईआ। गुण दे गुणी गहिंद, गहर गम्भीर बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा वेख वखाईआ। पूरब लेख जन्म अवधूत, ख़ाक धूढ़ी तन रमाईआ। लभ्भदा फिरया चार कूट, दहि दिशा वेख वखाईआ। वरोलदा रिहा सच झूठ, घर घर विच खोज खुजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणी कार कमाईआ।

अवधूत भस्मी ला आसण, आस इक रखाईआ। किरपा कर पुरख अबिनाशन, तन माटी लेखे पाईआ। निरगुण सरगुण बण साथन, सगला संग निभाईआ। इक्को टेकां तोहे माथन, दूसर सीस ना कोए निवाईआ। घर मात पिता छड्डे साथण, सुख सेज ना कोए हंढाईआ। आपणा आप कीता घातन, जीवत जन्म सुख ना कोए वखाईआ। इक्को वेखां तेरा पत्तण, जिस घर वसें बेपरवाईआ। किरपा कर आवें रखण, बण के पांधी राहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सिध रिहा समझाईआ। सुण सिध सिदक सच, हरि साबर आप जणाइंदा। काया माटी भाण्डा भंनीए कच्च, अन्त कोए रहिण ना पाइंदा। नानक तपा गल्लीं बातीं गया हस्स, आपणा भेव ना किसे जणाइंदा। चुक्क के भूरी गया नस्स, आप आपणा पन्ध मुकाइंदा। तूं बहिणा कर के हठ, निरगुण इक्को बूझ बुझाइंदा। तेरा जन्म जाए वट, वटा आपणा नाम लगाइंदा। पुरख अकाल कलयुग अन्तिम खोल्हे हट्ट, बण वणजारा सेव कमाइंदा। लोकमात विच्चों तेरी करनी लए लभ्भ, पिछली कीती झोली पाइंदा। पहली वार नानक प्यार अन्दर तैनूं जावे छड्ड, दर तेरे ना चरण टिकाइंदा। दूजी वार कर किरपा आवे भज्ज, श्री भगवान आपणा संग निभाइंदा। जगत भबूत पिछली तज, अग्गे नाम निधान झोली पाइंदा। चरण कँवल बहि के जाणा सज, सजदा इक्को सीस कराइंदा। अलख निरँजण पिच्छे बोलया गज्ज, अलख प्रतख आपणी धार वखाइंदा। मेहरवान हो के पार कराए हद्द, हद्द आत्म पद परमात्म परमात्म आत्म आत्म परमात्म आपणा रूप वखाइंदा। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निरवैर निहकलंक लहिणा देणा पूरब जन्म किसे ना देवे छड्ड, सब दी मनसा आसा पूर कराइंदा।

✪ २६ अस्सू २०२० बिक्रमी निरँजण सिँघ दे गृह उच्ची आबादी लुधियाणा ✪

शाह पातशाह हरि निरँकार, सचखण्ड तेरी वड्याईआ। हुक्मे अन्दर चल आए दरबार, दर तेरे फेरा पाईआ। शब्द सुत उठ कहे मेरे सिरजणहार, मेहरवान तेरी वड वड्याईआ। निरगुण निरगुण कर के सेवा अपर अपार, निरवैर तेरी सरन तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड निवासी मेहर नज़र उठाईआ। विष्नूं आया प्रभ हुक्म दुआर, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। नेत्र नैण रिहा उठाल, दो जहान वेख वखाईआ। चार कुण्ट दिसे कंगाल, साची वस्त हथ्थ ना कोए रखाईआ। नीर वहा होए बेहाल, बिहबल हो रिहा जणाईआ। किरपा कर वड प्रितपाल, इक तेरी ओट रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। ब्रह्मा आए चल दुआर,

निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पारब्रह्म तेरा अन्त ना पारावार, हउँ मूर्ख कहिण किछ ना पाईआ। जुग चौकड़ी बणया रिहा सेवादार, निरगुण सरगुण सेव कमाईआ। रच रच वेख्या जगत संसार, तेरी रचना तेरे विच समाईआ। दहि दिशा दिसे धूंआँधार, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, गृह मिले तेरे नाम वड्याईआ। शंकर कहे प्रभ तेरा कोई ना जाणे मूल, बेअन्त तेरी वड्याईआ। मेरे हथ्थ सोभे त्रिसूल, त्रैलोक भेव कोए ना आईआ। नव नौ चार तेरा बदलया दिसे असूल, असलीअत रूप ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, शाह पातशाह तेरी ओट रखाईआ। त्रैगुण माया आई नेड़े, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। पारब्रह्म प्रभ तुध बिन चुकाए ना कोई झेड़े, झगड़ा प्या सर्ब लोकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सति धर्म ना किसे खेड़े, सत्त दीप रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। पंज तत मारे धाह, दर इक्को कूक सुणाईआ। किरपा कर बेपरवाह, शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहीआ। जुग चौकड़ी गए विहा, तेरी सेवा मात कमाईआ। कलयुग अन्तिम गया आ, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। साचा मिले ना कोए मलाह, खेवट खेटा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। भगत कहिण प्रभ आए पास, दर तेरे अलख जगाईआ। किरपा कर सर्ब गुणतास, गुणवन्त तेरी वड्याईआ। कलयुग अन्तिम सारे होए निरास, निरबल हो के तेरा ध्यान लगाईआ। तुध बिन जोती नूर ना मिले कोई प्रकाश, नव नौ चार अन्धेरा छाईआ। झगड़ा प्या ज़ात पात, दीन मज़्हब करे लड़ाईआ। साची दिसे ना कोई जमात, चार वरन रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर आयां ख़ाली झोली दे भराईआ। सन्त जन दर आ मंगण, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। सृष्ट सबाई होई नंगन, नाम ओढन सीस ना कोए टिकाईआ। काया चोली चढ़े ना रंगण, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। अनहद नाद वज्जे ना कोई मृदंगन, धुन आत्मक राग ना कोए सुणाईआ। गीत गोबिन्द कोई ना गावे छन्दन, आत्म परमात्म ढोला ना कोए सुणाईआ। फिरी दरोही विच वरभण्डन, ब्रह्मण्ड रहे कुरलाईआ। नेत्र रोवे जेरज अंडन, उत्भुज सेत्ज धीर ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, साहिब सुल्तान तेरी आस रखाईआ। गुरमुख कहिण प्रभ तेरी ओट, तेरे दर मिले वड्याईआ। कलयुग अन्तिम लख चुरासी भरया खोट, कूड़ा नाता ना कोए तुड़ाईआ। निर्मल नूर नज़र ना आए निरवैर तेरी जोत, जागरत नूर ना कोए रुशनाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सब दे पढ़दे दिसण होंट, अन्तर आत्म लिव

परमात्म सके ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे मंगण आईआ। गुरसिख कहिण प्रभ सुण पुकार, सतिगुर तेरे हथ्थ वड्याईआ। सृष्ट सबाई धूंआँधार, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। गुर का शब्द सारे गए विसार, विसरया बेपरवाहीआ। पीर पैगम्बर गुर अवतार लेखा लिख के गए बण लिखार, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, घर साचे वज्जे वधाईआ। चल के आए चार वेद, प्रभ रो रो हाल सुणाईआ। साडा कोई ना पावे भेद, पड़दा सके ना कोए उठाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया रहे खेड, काम क्रोध लोभ मोह हँकार होया हल्काईआ। किरपा कर वड नरेश, नर नरायण तेरी सरनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग दे दे थक्के संदेस, कलयुग जीव समझ कोए ना पाईआ। अन्तिम साडी चले कोई ना पेश, दर तेरे आ के अलख जगाईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा वेख, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, मेहर नज़र उठाईआ। शास्त्र सिमरत घत वहीर, दर ठांडे बैठे आईआ। किरपा कर बेनज़ीर, नज़र नैण इक उठाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जगत वज्झा ज़ंजीर, संगल सके ना कोए तुड़ाईआ। पढ़ पढ़ काग़ज़ कलम शाही वरके दित्ते चीर, बजर कपाटी पड़दा सके ना कोए तुड़ाईआ। रसना गा गा पंडत पांधे बाहरों देंदे धीर, अन्दर अमृत सीर ना कोए प्याईआ। कलयुग अन्त होए दिलगीर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सदा सुहेले होणा सहाईआ। वेद पुराण कहे किताब, शास्त्र सिमरत नाल मिलाईआ। तोहे सतिगुर इक आदाब, सजदा सीस झुकाईआ। कलयुग साडा रिहा ना कोए ख़ताब, ख़ालस रूप ना कोए जणाईआ। अहिबाब बण के वजाए ना कोए रबाब, सच सितार ना कोए हिलाईआ। साडा लेखा रख आपणे कोल हिसाब, वही खाता फोल फोलाईआ। असीं कलयुग अन्त सारे देण आए जवाब, साडी चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिउँ भावे तिउँ आपणा खेल खलाईआ। गीता दुआरे आई नट्ठ, अठ दस रही समझाईआ। सृष्ट सबाई तुट्टा धीरज जत, सति नज़र कोए ना आईआ। हो हैरान मेरी मारी गई मति, प्रभू समझ कोई ना पाईआ। तेरा कोई ना गावे जस, तेरा नाम ना कोए ध्याईआ। कूड़ी क्रिया प्रेम लगाया रस, निझर रस झिरना बूँद स्वांती मुख ना कोए चुआईआ। दरोही मेरी होई बस, मेरे राम मेरे काहन आपणे चरण बख्श इक सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची वड्याईआ। अञ्जील कुरान आई दौड़, मसला आपणा रही सुणाईआ। चौदां तबक रस मिट्ठा होया कौड़, चौधवीं चन्द ना कोए चमकाईआ। चोदां विद्या प्रभ तैनूं सकी ना बौहड़, नव नौ चार फिरे वाहो

दाहीआ। कर किरपा अन्तिम वेख कर के ग़ौर, कलयुग जगत अन्धेरा छाईआ। ठग्ग चोर यार मचावण शोर, हरामख़ोर बैठे डेरा लाईआ। सुरती शब्दी कोई ना बन्ने डोर, कलमा हक़ ना कोए दृढ़ाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरा घोर, नूरी नूर ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, आपणा इस्म आअज़म अज़ीम परवरदिगार इक्को दे जणाईआ। शब्द बाणी दर गई आ, आ के हाल सुणाईआ। किरपा कर बेपरवाह, पारब्रह्म तेरी वड्याईआ। मैं सच संदेसा दयां सुणा, लोकमात भेव खुलाईआ। नानक गोबिन्द मात आया टिका, टिक्का मस्तक इक्को लाईआ। सृष्ट सबाई आया समझा, गुर शब्द मन्नो इक्को जिस विच वड्डी वड्याईआ। कलयुग जीव हरि का नाम गए भुला, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। कोटन कोटि मार्ग रहे लगा, बण बण पांधी जगत राहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे साचा वर, घर तेरे मिले वड्याईआ। सच दुआर वेख आए गुर, नमो नमो सीस झुकाईआ। पुरख अकाल तेरा लेखा धुर, दो जहान तेरी वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा वेखे सुर, पत तेरा ध्यान लगाईआ। कलयुग अन्तिम चारों कुण्ट आई थुड़, दहि दिशा नाम भण्डार ना कोए वरताईआ। डूंघे वहण रहे रुढ़, मँझधार किशती पार ना कोए कराईआ। आपणयां कर्मां वल तक्के कोई ना मुड़, नेत्र नैण अक्ख ना कोए खुलाईआ। पंजां तत्ता नाल गए जुड़, पंचम पंच करी कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, साहिब सतिगुर आपणा भेद जणाईआ। दर ठांडे आए अवतार, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग प्रभ वेख्या तेरा संसार, तेरे हुक्मे अन्दर फेरा पाईआ। निरगुण सरगुण करदे रहे प्यार, सच प्रीती इक समझाईआ। तेरा नाम शब्द बोल जैकार, धुर संदेसा आए सुणाईआ। शब्द अगम्मी बोध अगाधी बण लिखार, कातब हो के कलम चलाईआ। शहादत देवे खाणी बाणी अञ्जील कुरान, वेद पुराण गीता ज्ञान जगत दृढ़ाईआ। उच्च अगम्म अथाह बेपरवाह तेरी दस्सदे आए शान, शहिनशाह इक्को इक अख्वाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस दा कलमा सच कलाम, कायनात करे पढ़ाईआ। जिस दा दीन मज़्ब इस्लाम, ज़ात पात खेल महान, ऊँच नीच भेव वखाईआ। तेरे अग्गे करीए इक प्रणाम, पुरख अबिनाशी हो मेहरवान, घट घट वासी घर घर दिसें प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाईआ। सदी बीसवीं सारे होए हैरान, चौदां तबक नैण शरमाण, चौदां लोक तेरा ध्यान, चौदां विद्या लेख लिखे शैतान, शाह पातशाह शहिनशाह तेरी ओट ना कोए तकाईआ। जोद्धे सूरबीर बलवान, निरगुण रूप वाली दो जहान, सति सरूप सदा मेहरवान, मेहर नज़र इक उठाईआ। उठ प्रभ वेख सच्चे दरबार, तेरी रचना रची आई दुआर, निरगुण सरगुण कर विहार, दोए जोड़ करन निमस्कार, मंगण मंग बण भिखार, दर दरवेश

आपणा रूप वटाईआ। श्री भगवान दस्से एक, एकँकार रिहा जणाईआ। शब्द सुत सच साची टेक, विष्न ब्रह्मा शिव दे समझाईआ। त्रै पंज खोल्हां अन्तिम भेत, भेव अभेदा आप समझाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां पूरा करां लेख, लिख्त भविक्ख्त जो गए लिखाईआ। भगत भगवान बण के लवां वेख, लोकमात वेस वटाईआ। साचे सन्तां वखावां अगम्मा देस, जिस घर दीवा बाती इक रुशनाईआ। गुरमुखां करां साचा हेत, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। गुरसिखां नज़री आवां नेतन नेत, निज नेत्र नज़र खुल्हाईआ। सच स्वामी बण के खोल्हां भेत, अनभव आपणा भाव जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमाईआ। शब्द सुत मैं आउँदा हां। निरगुण नूर रूप प्रगटाउँदा हां। महल अटल इक सुहाउँदा हां। साचे मन्दिर डेरा लाउँदा हां। अन्दर दीप इक जगाउँदा हां। बण महीप खेल खलाउँदा हां। जिस दी रख के बैठे उडीक, सो आसा पूर कराउँदा हां। कलयुग अन्तिम आई तारीख़, तरीका सब नूं आप समझाउँदा हां। प्रभ दा मार्ग सदा बारीक, तिक्खी धारों आप प्रगटाउँदा हां। दूजा दिसे ना कोए शरीक, लाशरीक हो के खेल रचाउँदा हां। गुर अवतारां देवां भीख, साची भिच्छया नाम वरताउँदा हां। त्रैगुण पंज तत नाता जोड़ां ठीक, काया ठीकर रूप वखाउँदा हां। जन भगतां आत्म करां अतीत, त्रैगुण डेरा ढाउँदा हां। साचे सन्तां घर मन्दिर वखावां सीत, साचा हुजरा इक सुहाउँदा हां। गुरमुखां कर सच प्रीत, ऊँच नीच भेव चुकाउँदा हां। गुरसिखां काया कर के ठांडी सीत, अग्नी तत बुझाउँदा हां। कलयुग अन्तिम बदलां रीत, रीतीवान आप सदाउँदा हां। किसे दर ना मंगां भीख, आपणी करनी आप कमाउँदा हां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लहिणा देणा सब दी झोली पाउँदा हां। शब्दी सुत सच जणावांगा। विष्नूं लहिणा वेख वखावांगा। ब्रह्मे पड़दा आप चुकावांगा। शंकर हथ्थ त्रिसूल वखावांगा। त्रैगुण माया फोल फोलावांगा। पंज तत आपणा रंग वखावांगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर संग रलावांगा। आदि जुगादि शब्दी ढोला वज्जे मृदंग, नाम निधान इक प्रगटावांगा। जन भगतां ला के अंग, अंगीकार आप हो जावांगा। सन्तां दे के निजानंद, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटावांगा। गुरमुखां आवण जावण चुका पन्ध, साचे मार्ग आप लगावांगा। गुरसिख गायण साचा छन्द, सोहँ राग इक समझावांगा। हुक्म वरतावां विच वरभण्ड, ब्रह्मण्ड खोज खुजावांगा। दो जहानां इक्को छन्द, तेरा मेरा लहिणा देण मुकावांगा। जुग जन्म दी टुट्टी गंढु, गंढुणहार गोपाल स्वामी आप अख्वावांगा। सब दी आसा मनसा पूरी कर के मंग, मंगलाचार इक करावांगा। सचखण्ड दुआर वज्जे धुर मृदंग, ताल बेताल आप वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर आयां लेखे लावांगा। सचखण्ड जो आए दुआर, विष्न ब्रह्मा

शिव गुरू अवतार पीर पैगम्बर नाल मिलाईआ। त्रै पंज देवां इक आधार, भगत भगवन्त पैज स्वार, साचे सन्त पार उतार, गुरमुख मेल विच संसार, गुरसिख आपणे रंग रंगाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर ख्वार, जूठ झूठ देवे मार, हउमे हंगता गढ़ देवे निवार, साची सिख्या देवे आप करतार, करता पुरख आप समझाईआ। जिस दा लेखा सदा रहे जुग चार, गुर अवतार सेवादार, पीर पैगम्बर बरखुरदार, बाले नढे आपणे हुक्म नित नवित्त रिहा घलाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवान करे खेल अगम्म अपार, योद्धा सूरबीर बली बलकार, बल आपणा आप प्रगटाईआ। आसा तृष्ना सब दी दए निवार, अस्व घोड़े चढ़ शाह सवार, दो जहानां श्री भगवाना निरगुण जोत बिन वरन गोत शब्द अनाद विच ब्रह्माद धुन राग दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। दर ठांडे सारे बणो मीत, गुर अवतार पीर पैगम्बर इक्को हुक्म मनाईआ। इक्को वेखो मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मट्ठ मसीत, गुरुदुआर इक्को रूप वखाईआ। बिन रसना शब्दी धार बोलो ठीक, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। दोए जोड़ कहो प्रभ तेरा वेला आया ठीक, कलयुग अन्तिम राह तकाईआ। चार युग एहो मंगदे रहे भीख, बण स्वाली दर करी अरजोईआ। सतिजुग साची दस्सणी इक प्रीत, चार वरन अठारां बरन ऊँच नीच इक्को इक कराईआ। सर्ब जीआं दा सांझा दस्स गीत, जिस विच हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई झगड़ा कोई रहिण ना पाईआ। प्रगट हो लाशरीक, साची शरअ दे दरसाईआ। रल मिल गाईए तेरा गीत, पीर पैगम्बर गुर अवतार इक्को नाम ध्याईआ। लेखा छुट्टे मन्दिर मसीत, काया मन्दिर सोभा पाईआ। जिस दुआरे अट्ठे पहर वसें चीत, सच सिँघासण सोभा पाईआ। घर सज्जण मिल मीत, बाहर खोजण कोए ना जाईआ। जन भगतां दस्स रीत, साचे सन्तां दे समझाईआ। करवट लै बदल ला पीठ, आप आपणा मुख भवाईआ। तेरे दर तों मंगदे भीख, भिच्छया झोली दे पाईआ। प्रभ तेरी भेंटा पंज तत सीस, ततव तत नज़र कोए ना आईआ। निरगुण हो के निरगुण पढ़ीए तेरी हदीस, हज़रत तेरा नाम ध्याईआ। इक्को छत्र झुल्ले तेरे सीस, दूजा सानी नजर कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, शाह पातशाह सच सुल्तान साहिब सतिगुर पुरख अकाल इक्को नज़री आईआ।

✪ २६ अस्सू २०२० बिक्रमी गुरमीत सिँघ दे गृह पिण्ड हरदो फराला ज़िला जलन्धर ✪

आदि जुगादि तेरा खेल निरँकार, निरगुण निरवैर समझ कोए ना पाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड तेरी धार, लोक परलोक तेरा राह तकाइंदा। दो जहान तेरा पसार, धरत धवल आकाश प्रकाश सोभा पाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करन पुकार, देवत

सुर सीस झुकाइंदा। निरगुण सरगुण खेल खेलें गुरू अवतार, पीर पैगम्बर वेस वटाइंदा। भगत भगवान कर प्यार, नित नवित्त फेरा पाइंदा। बोध अगाध शब्द नाद दे दान, सन्त साजण मेल मिलाइंदा। लख चुरासी विच्चों कर पहचान, गुरमुख सज्जण आप उठाइंदा। सच प्रीती इक ज्ञान, गुरसिख सच्चे आप समझाइंदा। चार कुण्ट दहि दिशा वेखे आण, नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। सचखण्ड निवासी सच महल्ला, तेरा इक्को नज़री आइंदा। साहिब सुल्तान वसें सदा इकल्ला, आदि जुगादि सोभा पाइंदा। दीपक जोत धर प्रकाश आपे बला, दीआ बाती नजर कोए ना आइंदा। सच दुआर पुरख अबिनाश सचखण्ड निवासी आपे मल्ला, शाह सुल्तान सच आपणा नाउँ रखाइंदा। धुर संदेस नर निरँकार एकँकार एका घल्ला, दो जहान ब्रह्मण्ड आप सुणाइंदा। जुग चौकड़ी करे खेल अछल अछल्ला, वल छलधारी भेव कोए ना पाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण जोती शब्दी आपे रला, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। कोटन कोटि धर धर रूप फड़ाए आपणा पल्ला, पल्लू आपणी गंढु बंधाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग जुग आपणी धार चलाइंदा। सच सिँघासण एकँकार, पुरख अकाल इक सुहाईआ। तख्त निवासी हो उज्यार, पुरख अबिनाशी सोभा पाईआ। जोत प्रकाशी निरगुण धार, ततव तत ना कोए वड्याईआ। मण्डल रासी खेल अपार, गोपी काहन नाच नचाईआ। शब्द स्वामी पवण हुलार, धुनी नाद सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। साचा खेल करे पुरख अगम्म, हरि अगम्मड़ी कार कमाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बेड़ा देवे बन्नृ, नर हरि आपणे कंध उठाइंदा। धुर फ़रमान सच निशान शब्द ज्ञान देवे मन, मन आत्मा दोवें आप समझाइंदा। जोती नूर ज़ाहर ज़हूर चाढ़े आपणा चन्न, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। शब्द अगाध बोध सुणाए बिन कन्न, घर घर विच राग अल्हाइंदा। भाण्डा भरम दूई द्वैती कूड़ा ठीकर देवे भन्न, नाम खण्डा इक चमकाइंदा। करे प्रकाश नेत्र अन्नृ, वेखणहारा जननी जन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी कर करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। महल अटल उच्च मनार, रोशन ज़मीर इक्को इक दरसाईआ। तख्त निवासी परवरदिगार सांझा यार, लाशरीक बैठा डेरा लाईआ। हक़ हकीकत पावे सार, सच तौफ़ीक धुर दी धार, तुआरफ़ निरगुण निरगुण दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच महल्ला उच्च अटला इक्को इक वखाईआ। साची कार करे भगवन्त, भगवन आपणा खेल कराईआ। प्रगट हो जुगा जुगन्त, जुग करनी दए समझाईआ। सर्ब जीआं दा इक्को मंत, आत्म परमात्म करे पढ़ाईआ। मेल मिलाए

विछुंनी नार कन्त, घर सज्जण नज़री आईआ। काया चोली चाढ़े रंग बसन्त, बसन बनवारी आप रंगाईआ। गढ़ तोड़ हउमे हँ, ब्रह्म दए समझाईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, आत्म विद्या दए समझाईआ। लेखा जाण जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। वड्डा हरि गहर गम्भीर, भेव कोए ना पाइंदा। जुग चौकड़ी चोटी चढ़ कोई ना वेखे अख़ीर, चरण कँवल सर्ब ध्यान लगाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर बण के गए हकीर, शहिनशाह इक्को नज़री आइंदा। जिस दी खिच ना सके कोई तस्वीर, मुसव्वर हथ्थ कोए ना पाइंदा। जिस दी समझ सके ना कोए तदबीर, भेव अभेद ना कोए खुल्हाइंदा। जिस दा जलवा बेनज़ीर, जगत नेत्र नैण दरस कोए ना पाइंदा। जिस दे हथ्थ नाम शमशीर, शाह सुल्तान खण्डा इक चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची दरगाह सोभा पाइंदा। सच महल्ले चढ़ भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। तख्त निवासी नौजवान, भूपत भूप वड्डी वड्याईआ। दो जहानां राज राजान, शहिनशाह इक्को इक अख्वाईआ। सति सतिवादी गुण निधान, धुर संदेसा इक जणाईआ। पुरीआं लोआं वेखे मार ध्यान, ब्रह्मण्ड खण्ड नेत्र रिहा उठाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दए ज्ञान, साची सिख्या इक समझाईआ। जुग चौकड़ी खेल महान, हरि करता आप कराईआ। कुदरत कादर देवे दान, वस्त अमोलक आप वरताईआ। निरगुण बण के सच्चा काहन, लख चुरासी गोपी आप प्रनाईआ। निरवैर मिले सच्चा राम, हर घट सेजा रिहा हंढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आपणे हथ्थ रखाईआ। भेव अभेदा रखे हथ्थ भगवान, शास्त्र सिमरत वेद पुराण समझ कोए ना पाईआ। जुग चौकड़ी नित नवित्त सिफ्ती ढोले सारे गाण, गा गा शुकर मनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर प्रभ चरण करन ध्यान, नेत्र लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। ख़ाली झोली निहकलंक मंगण दान, दर दरवेश अलख जगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग बीतया विच जहान, कलयुग अन्तिम जहालत बैठी डेरा लाईआ। चारों कुण्ट बेईमान, बेवा रूप नज़री आईआ। सिदक सबूरी ना कोए ईमान, सज्जण संग ना कोए निभाईआ। माया ममता हउमे हंगता घर घर चढ़या तूफ़ान, नव नौ चार रिहा रुढ़ाईआ। नेत्र नैण अक्ख नज़र ना आए किसे भगवान, कलयुग गूढ़ी नींद सुआईआ। आत्म परमात्म मिल के कोई ना पए हस्स, सोहँ हँसा रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या धुर दी इक दृढ़ाईआ। साची सिख्या दस्से दस्से गीत, सो पुरख निरँजण दया कमाइंदा। जुग चौकड़ी गई बीत, कलयुग वेला अन्तिम आइंदा। जन भगतां दस्से अगम्मी रीत, रीतीवान खेल खलाइंदा। जिस नूं जीव जंत

साध सन्त लभ्भदे शिवदुआले मट्ठ मन्दिर मसीत, सो सतिगुर सच्चा जन भगतां अन्दर डेरा लाइंदा। हरि प्रभ ठाकर करो इक प्रीत, निरगुण हो के वसे चीत, जगत ठगौरी कोई ना पाइंदा। नज़री आए सदा अतीत, आदि जुगादी ठांडा सीत, अग्नी तत आप बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, दो जहान आप पढ़ाइंदा। दो जहान सो पुरख नाउँ, हरि करता आप जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सारे रल के गाओ, करोड़ तेतीसा सुरप्त इन्द नाल मिलाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर शुकर मनाओ, घर वज्जे सच वधाईआ। लख चुरासी जीव जंत इष्ट गुरदेव स्वामी इक मनाओ, मनसा आसा पूर कराईआ। चार कुण्ट उठ उठ नस्सणा कूड़ी हरस मिटाओ, हवस सब दी दए समझाईआ। अर्श फर्श परम पुरख परमात्म एका पाओ, पारब्रह्म बेपरवाईआ। सर सरोवर तीर्थ चरण धूढ़ी सच नहाओ, दुरमति मैल दए धवाईआ। साचा ढोला रल मिल गृह मन्दिर अन्दर काया गाओ, घर घर वज्जे वधाईआ। नित नवित्त निज नेत्र दर्शन पाओ, दोए लोचण बंद वखाईआ। हँस रूप बणो काउँ, काग हँस रूप वटाईआ। सतिगुर साहिब सुल्तान कलयुग अन्तिम पकड़े बांहों, फड़ बांहों गले लगाईआ। एथे ओथे दो जहान करे सच न्याउँ, धर्म दुआरे अदालत इक लगाईआ। सदा सुहेला इक इकेला देवे ठंडी छाउँ, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। करे प्यार जिउँ पुत्रां माउँ, दरगाह साची देवे थाउँ, सचखण्ड साचे आप बहाईआ। तिस साहिब सतिगुर पुरख अकाल दीन दयाल लागो पाउँ, जिस मिलयां दूजी ओट रहिण कोए ना पाईआ। उठो वेखो छेती वेख, एकँकार रिहा जणाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी प्रभ ने सिधी दिती आपणी लिख्त लेख, दूजा विचोला ना कोए बणाईआ। जिस नूं नव नौ चार लभ्भदे फिरदे कोटन कोटि धर के भेख, चार कुण्ट दहि दिशा फेरा पाईआ। सो साहिब स्वामी कलयुग अन्तिम करन आया हेत, हितकारी निरगुण आपणा नूर कर रुशनाईआ। जन भगतां अन्दर काया मन्दिर सच महल्ले वड़ के रिहा खेड, सुरती शब्दी जोड़ा इक जुड़ाईआ। जोती नूर देवे अगम्मी तेज, रवि ससि नैण शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मार्ग इक दरसाईआ। साचा मार्ग रिहा दस्स, दहि दिशा रिहा समझाईआ। जीव जंत साध सन्त कलयुग अन्तिम खेल पुरख समरथ, चार कुंट समझ कोए ना पाईआ। जुग चौकड़ी चलावणहारा रथ, बण रथवाही फेरा पाईआ। बोध अगाध शब्द अनाद बाणी कहे अकथ, कथनी कथ कोए ना सके राईआ। सृष्ट सबाई वेखणहारा धीरज जत, सति सन्तोख पड़दा रिहा उठाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश साबत रही ना किसे मत्त, मनमति रही हल्काईआ। लग्गी अग्ग पंज तत्त, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। वांग सवान चार कुण्ट दहि दिशा रहे नट्ठ, भज्जण वाहो दाहीआ। अमृत मिले ना किसे रस, बूँद स्वांती मुख ना कोए

८६२
१५

चुआईआ। कूड़ी क्रिया गए फस, जगत जंजाल ना कोए कटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर पल्लू छुडा गए नट्ठ, फड़यां हथ्थ किसे ना आईआ। लहिणा अन्त चुक्कया अठसठ, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती रही मुख छुपाईआ। अल्ला राणी नक्क ना रही नथ्थ, कन्त सुहाग नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा राह इक्को इक समझाईआ। सच्चा राह सुणो जग जगत, जुग करता आप जणाईआ। प्रभ मिलण दा इक्को वक्त, माणस जन्म सोभा पाईआ। श्री भगवान जुग जुग आप उधारे साचे भगत, भगवन आपणा वेस वटाईआ। लेखे लाए बूँद रक्त, नाड़ी हड्ड सोभा पाईआ। निरवैर हो के आवे परत, परम पुरख प्रभ आपणा खेल खलाईआ। अन्तर आत्म देवे दरस, बंद कवाड़ी कुण्डा लाहीआ। पंच विकारा देवे झटक, नाम खण्डा इक चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा रहबर फेरा पाईआ। साचा रहबर गया आ, परवरदिगार नूर इलाहीआ। लोक परलोक दो जहानां बण मलाह, साचा बेड़ा रिहा चलाईआ। लख चुरासी जीव जंत देवे इक सलाह, धुर दा नाम करे पढ़ाईआ। आत्म परमात्म मेला लओ मिला, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाईआ। घर मन्दिर दीपक जोत लओ जगा, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। घर अमृत मेघ लओ बरसा, निझर झिरना इक झिराईआ। घर पड़दा लओ उठा, मुख नक़ाब नज़र कोए ना आईआ। घर सज्जण लओ मना, गुस्सा गिला ना कोए वखाईआ। दोए जोड़ पओ सरना, सरनगति इक समझाईआ। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, बेअन्त वड वड्याईआ। चरणी डिगयां बख्शे सर्ब गुनाह, मेहर नज़र बख्शीश इक्को वार झोली पाईआ। डुबदयां तारे फड़ फड़ बांह, पार किनारे आप लगाईआ। करे कराए सच न्याँ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा राह इक समझाईआ। सतिजुग राह दस्से भगवान, भगवन आपणी दया कमाइंदा। लख चुरासी जीव जंत उठ बाल अञ्याण, बाली बुध आप समझाइंदा। कलयुग कूड़ी क्रिया नाता तुट्टे विच जहान, थिर कोए रहिण ना पाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे मंगण दान, श्री भगवान अग्गे झोली डाहइंदा। पतिपरमेश्वर देवणहारा नौजवान, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। रल मिल सारे सचखण्ड दुआरे गाओ इक भगवान, दूजा नाउँ ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा भेव आप खुल्हाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर गाओ नाम अपार, हरि करता आप जणाईआ। चार जुग दा पिछला लहिणा दयो विसार, अगला देणा दए जणाईआ। रल मिल सारे करो प्यार, दीन मज़्हब ज़ात पात ना कोए रखाईआ। पुरख अकाल परवरदिगार मन्नो सच्चा यार, जुग चौकड़ी यारी इक हंढाईआ। नित नवित्त बणे मददगार, दस्तगीर सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दोए

जोड़ करो निमस्कार, सजदा इक्को पुरख कराईआ। देवे धुर दी अगम्मी सच्ची धार, धार धार विच्चों प्रगटाईआ। एका नाअरा बोल जैकार, जै जैकार दए सुणाईआ। चरण प्रीती सच प्यार, साची रीती इक वखाईआ। खेल अनडीठी दस्से निरँकार, निरगुण आपणा पड़दा लाहीआ। पिछली बीती भुल्लो विच संसार, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सचखण्ड सारे रल मिल के बोलो सोहँ शब्द इक जैकार, लख चुरासी लोकमात आपे सारे गाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि तुहाढ्डे कोलों चलाए विहार, अन्तिम तुहाढ्डी नीती नाल दए बदलाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर इक दूजे वल तक्कण, निउँ निउँ अक्ख उठाईआ। हौली हौली अग्गे पिच्छे भज्जण, भज्जयां राह नज़र कोए ना आईआ। जिध्धर वेखण पुरख अकाल खलोता सज्जण, बांह इक्को इक उठाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग पूरा कौल करे जो कीता बचन, बचपन सब दा वेख वखाईआ। जिस काया पंज तत दिती कंचन, सो गढ़ तोड़नहार बेपरवाहीआ। आपणा आपणा पिछला सारे रल के दस्सो भजन, की गीत गोबिन्द लोकमात सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा मंगे थाउँ थाईंआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर इक दूजे नूं आखण, हौली हौली रहे सुणाईआ। आओ रल मिल सारे बणीए साथन, पिछला लेखा दए मुकाईआ। कोटन कोटि जुग पिच्छों प्रभ निरगुण हो के आया आखण, आखर आपणा हुक्म सुणाईआ। परम पुरख दे सारे बणो दासन, दर दरवेश रूप वटाईआ। दोए जोड़ नमो टेक माथन, मस्तक टिक्का धूढ़ी लाईआ। इक्को नूर इलाही ज़ातन, दूजा रूप ना कोए वखाईआ। जिस दा जलवा वेखो बातन, सो ज़ाहर ज़हूर खुदाईआ। रल मिल सोहँ सति दयो भाषण, सति सतिवादी आप समझाईआ। पिछले चोले सब दे पाटण, कमली गल किसे रहिण ना पाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया खुल्ले झाटन, पट्टी सीस ना कोए गुंदाईआ। मिले मेल ना माही पातण, नेत्र रोवण मारन धाहींआ। साचा वेखो इक्को घाटन, जिस दर बैठा बेपरवाहीआ। पीर पैगम्बरो गुर अवतारो तुहाढ्डे कोलों करावे उद्घाटन, साचा मार्ग नींह रखाईआ। आपणा आपणा देणा भाषण, भाषा इक्को इक समझाईआ। पिछला छड्डणा बोल बलासन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची खेल इक दृढ़ाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे होए हैरान, हरि जू की खेल वरताईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग थोड़ा थोड़ा दस्सदा रिहा निशान, इशारे मात्र इशारा लगाईआ। असीं दस्स के आए इक्को आख़र निहकलंक प्रगट होवे बली बलवान, भेव कहिण कोए ना पाईआ। वेखो सारे निक्के नढ्ढे बाले गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस इकट्ठे कीते आण, हुक्म इक्को इक सुणाईआ। पिछला लेखा जुग चौकड़ी मंगे नौजवान, दो जहान मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा

कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन सलाह, इक्को मता पकाईआ। रल मिल सारे सीस दयो झुका, निउँ निउँ लागो पाईंआ। पारब्रह्म तेरी मन्नीए सदा रज़ा, भाणा इक्को सीस टिकाईआ। जुग चौकड़ी सेवा आए कमा, बण सेवक सेव कमाईआ। तेरा नाम आए जपा, रसना जिह्वा बत्ती दन्द गीत सुणाईआ। अन्त संदेसा आए सुणा, धुर दा ढोला राग अलाईआ। कल कल्की जावे आ, निरगुण निरवैर फेरा पाईआ। निहकलंक नाउँ लए धरा, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। वड अमाम फेरा लए पा, महिफ़ल आपणी आप लगाईआ। पिता पुरख अकाल जोत लए जगा, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। दो जहानां लेखा मंगे आ, लुक्या कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जिस दी धार समझ कोए ना पाईआ। हरि की धार समझ सके ना कोई, काग़ज़ कलम शाही रही कुरलाईआ। जगत जहान मिले ना ढोई, विद्वान रहे रुवाईआ। सोई सुरत उठाए ना कोई, नेत्र अक्ख ना कोए खुलाईआ। दुरमति मैल सके ना कोए धोई, निर्मल रूप अनूप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सिख्या इक दरसाईआ। साची सिख्या देवे भगवान, हरि जू आपणी दया कमाइंदा। कलयुग अन्त हो प्रधान, सच प्रधानगी इक वखाइंदा। सुत शब्द कर बलवान, चारों कुण्ट आप दौड़ाइंदा। हुक्म देवे हुक्मरान, धुर संदेसा इक अलाइंदा। लख चुरासी विच्चों कर पहचान, आत्म परमात्म भेव चुकाइंदा। गुरमुख गुरसिख कर परवान, जगत विछोड़ा दूर कराइंदा। साचे सन्तां दे ज्ञान, अन्तर आत्म बूझ बुझाइंदा। भगत भगवान इक्को मन्दिर बहि खुशी मनाण, दूजा दर ना कोए सुहाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप उठाइंदा। हरिजन उठाए आप प्रभ, ठाकर स्वामी दया कमाईआ। लख चुरासी विच्चों लभ्भ, मतलब आपणा हल कराईआ। मार्ग अगम्मी इक्को दस्स, दस्त आपणा हथ्थ मिलाईआ। हिरदे अन्तर आत्म वस, परमात्म बूझ बुझाईआ। प्रेम प्रीती इक्को रस, झिरना नाम झिराईआ। जगत विकार पिच्छे जाए सट्ट, बैठे मुख भवाईआ। गुरमुख गुर सतिगुर मिल पए हस्स, घर वज्जे नाम वधाईआ। प्रभ वेखण दी खुल्ले अक्ख, दोए लोचण कम्म कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग जीवां नालों कर के अड्ड, हरिजन आपणा रंग रंगाईआ। हरिजन मार्ग दस्सया आप, प्रभ आपणी दया कमाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा इक्को जाप, सोहँ ढोला शब्द सुणाईआ। कोट जन्म दा दिसे ना कोई पाप, पूरब लहिणा दए मुकाईआ। अग्गे पुरख अकाल बणे सज्जण साक, सगला संग निभाईआ। नाता तोड़ काया माटी ख़ाक, ख़ालक आपणे रंग रंगाईआ। बजर कपाटी तोड़ ताक, ताक़त आपणी दए समझाईआ। नज़री आए

साख्यात, सति सरूपी वेस वटाईआ। शब्द अगम्मी करे बात, सच कहाणी इक जणाईआ। मेटे रैण अन्धेरी रात, साचा चन्द करे रुशनाईआ। गुरसिख गुरमुख हरिजन हरिभगत अग्गे रहे ना मात कमज़ात, जगत सुहागण वड भागण आप बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वखाए इक घर, जिस घर वसे बेपरवाहीआ। जन भगत वखाए इक घर, घर घर विच मेल मिलाईआ। भय भउ चुका डर, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। निरगुण सरगुण पल्लू फड़, साचा जोड़ा जोड़ जुड़ाईआ। निराकार निराधार अन्दर जाए वड़, आप आपणा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा राह जन भगतां इक वखाईआ। भगतां वखाए राह उह, जो हथ्थ किसे ना आईआ। कलयुग अन्त बिन श्री भगवान कोई ना सके टोह, काया टोकरी जगत खारी सिर ते सारे रहे उठाईआ। होका देंदे हो हो, हू हू रहे समझाईआ। माया राणी खोह खोह, ख़ालक ख़लक रहे सताईआ। आत्म परमात्म कोई ना जाए छोह, ख़ाली कीती सर्ब लोकाईआ। किरपा करे प्रभ जिस खेल रचाया छब्बी पोह, छहबर आपणे नाम लगाईआ। साधां सन्तां कोलों वस्त सारी लई खोह, ख़ाली हथ्थ रिहा वखाईआ। जन भगत गुरमुख गुरसिख सन्त दे बांह सरहाणे जाण सौं, सुत्तयां मात ना कोए उठाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त पुरख अबिनाशी तुहाढ्ढे जोगा गया हो, आपणा तन तुहाढ्ढी भेंट चढ़ाईआ। धुर दा नाम देवे ढोआ ढो, सति सतिवादी झोली आप भराईआ। इक्को दस्से आत्म परमात्म करना मोह, दूजी होर ना कोए पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए समझाईआ। हरिजन कहिण प्रभ तेरी वड्याई, मेहर नज़र इक उठाईआ। धन्न भाग साडी कटी जुदाई, जुज़ अड्ड कोए रहिण ना पाईआ। चरण कँवल उपर धवल दिती सरनाई, सचखण्ड जोती मेल मिलाईआ। तेरे नाम वज्जे इक वधाई, वाहद इक्को राग अल्लाईआ। तेरे नाल होवे कुड़माई, घर साचे सगन मनाईआ। काया मन्दिर अन्दर इक्को घर वसे धी जवाई, सौहरे पेईए इक्को दर सोभा पाईआ। नित नवित्त प्रभ तेरा दर्शन करीए चाईं चाईं, चाउ घनेरा इक प्रगटाईआ। जे विछड़ें ते निकलण हाईं, धीरज धीर ना कोए धराईआ। तूं पिता तूं सच्ची माई, हउँ बालक सदा गोसाईंआ। सदा सदा सद देवीं ठंडीआं छाईं, शहिनशाह मेहर नज़र उठाईआ। वेला रख याद जिस वेले गोबिन्द बूटा पुटया काही, नाल कलम दिती बणाईआ। धरनी धरत रो के दिती दुहाई, चरण चुम्मे चाईं चाईंआ। धन्न भाग तूं फिरदा आया मेरा माही, महिबूब इक्को नज़री आईआ। कलयुग मेरी दुरमति मैल धोवें छाही, शहिनशाह आपणे नाल लिआईआ। मेरी कट गल विच कूड़ी फाही, नाम खण्डा इक चलाईआ। गोबिन्द कलम फड़ के लिख्या बिन शाही, धरनी उते इक्को लेख पाईआ। तेरी मेटां अन्त जुदाई, ज़ाहर ज़हूर नज़री आईआ।

८६६
१५

तेरे नाल तेरे भगतां देवां सालाही, जो तेरी लज पति रखण थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा राह इक जणाईआ। धरनी कहे मेरा वड भाग, हरि वडभागी पाया। मेरी कोझी कमली दी रखे लाज, सिर मेहर हथ्थ टिकाया। कलयुग अन्तिम साजण लवे साज, शाह पातशाह बेपरवाहया। जन भगतां दे अमोलक दाज, नाम ख़ज़ाना अतुट वरताया। शब्द अगम्मी मार आवाज़, सोए सुत्ते लए जगाया। आपणे मिलण दी दस्से जाच, हिरदे आपणा नूर प्रगटाया। जो गुरमुख गुरसिख गुर का शब्द इक अक्खर लए वाच, तिस साचा वसल दए वखाया। सिख गुरू गुरू सिख दोहां दा इक्को जाप, भगत भगवान मिल के सोहँ रूप बणाया। हँ कहे प्रभ मेरा बाप, सो कहे हँ पूत इक उपजाया। बिनां हँ मेरा कोई ना करे जाप, नाउँ निरँकार ना कोए वडयाया। हँ कहे बिनां बाप मेरी कोई ना रखे पात, लज्यावान सिर हथ्थ ना कोए टिकाया। इक दूजे नूं दोवें देण साथ, इकल्ला कम्म किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करया खेल साचे हरि, साचा मन्त्र इक्को नाम पढ़ाया। सच मन्त्र सुण संदेस, दो जहान नैण अक्ख रहे खुल्हाईआ। राह तक्कण विष्न ब्रह्म महेष, चारों कुण्ट ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण प्रभ दी अगम्मी खेड, समझ कोए ना आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा खोल्ह ना दस्सया भेत, हौली हौली रिहा समझाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट आपणी धारों अचन अचेत, छन्नयां बिनां पिता माईआ। इक गोबिन्द कीता हेत, बाकी छड्डी सर्ब लोकाईआ। सम्बल वड़ के रिहा खेड, साची खेल इक कराईआ। सच सुनेहड़ा रिहा भेज, धुर संदेसा इक अल्हाईआ। जन भगतो सन्तो सुत्यां जागदयां तुहानूं लवां वेख, घट घट अन्दर आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, राह आपणा इक दरसाईआ। जन भगत तेरी करां भाल, भालां सर्ब लोकाईआ। निरगुण हो के बण दलाल, साची सेव कमाईआ। जलवा नूरी दे जलाल, जागरत जोत करां रुशनाईआ। साचा अमल दस्स करावां आअमाल, उल्मा बण के करां हक़ पढ़ाईआ। जुग चौकड़ी पूरा कर स्वाल, फिकरा इक्को नाम प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि भगतां भेव चुकाईआ। हरि भगत कहे मैं तेरा मीत, प्रभ तेरी सरन रखाईआ। श्री भगवान कहे मैं तेरा गुर अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। भगत कहे मैं लभ्भण ना जावां मन्दिर मसीत, शिवदुआले मट्ठ ना फेरा पाईआ। सतिगुर कहे मैं तेरे घर आवां ठीक, दो जहानां बण के पांधी राहीआ। गुरसिख कहे मैं बिन तेरे करां ना कोए प्रीत, नाता तोड़ां सर्ब लोकाईआ। श्री भगवान कहे मैं तेरी चिट्टे उते पावां इक लीक, जुग चौकड़ी सके ना कोए मिटाईआ। भगत कहे प्रभ मैं वेखां तेरी रीत, रीतीवान तेरी ओट

तकाईआ। श्री भगवान कहे जन भगत मैं पहलों तेरा गावां गीत, खुशीआं ढोला इक सुणाईआ। भगत कहे प्रभ तेरे अग्गे मेरा सीस, तत तेरी भेंट चढ़ाईआ। भगवान कहे मैं सच जगदीश, नाता तेरे नाल रखाईआ। भगत भगवान दोवें मिल के बणया दूआ दूइउँ सिफ़र दूआ सिफ़रा मिल के होए बीस, बीस बीस रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि जन भगत देवे वड्याईआ। जन भगत कहे प्रभ मेरा वड्डा, उच्च अगम्म अथाह अख्वाइंदा। श्री भगवान कहे भगत मेरा बच्चा नढ्ढा, जिस बिन मेरा लोकमात राह ना कोए चलाइंदा। भगत कहे मेरा पिता पुरख अकाल सच्चा, सच कहाणी इक सुणाइंदा। श्री भगवान कहे मैं भगतां लूं लूं अन्दर रचा, बिन भगतां मैनूं अन्दर वड़न जाच ना कोए सिखाइंदा। भगत कहे प्रभ मैं तेरा बच्चा, बचपन तेरी झोली पाइंदा। श्री भगवान कहे पुत हच्छा, हच्छी तरा आप समझाइंदा। दोहां दा मिल के बणया सोहँ सच्चा, सति सरूप रूप वटाइंदा। रसना जिह्वा बत्ती दन्द जिस बोलया पुरख समरथा, सो समरथ दया कमाइंदा। कोट जन्म दी लेखे लग्गे पूजा पाठा, जो जन सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान रसना गाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, देवणहार साचा मीत, भगत भगवान दस्से रीत, मेल मिलाए बिन मन्दिर मसीत, जिउँ कच्चे कोठे प्रभू परमात्मा मिल्या गुरमीत, मित्र प्यारा इक्को नज़री आईआ।

८६८ १५

✪ २७ अस्सू २०२० बिक्रमी गुरबचन सिँघ दे गृह हरदो फराला ज़िला जलन्धर ✪

हरिजन चोला पुरख अकाल रंगा, रंग अनडीठ चढ़ाईआ। लख चुरासी विच्चों कर के चंगा, चंगी तरा बणत बणाईआ। पंज तत बणाया सारंग सारंगा, घर नाद धुन उपजाईआ। बोध अगाध सुणाए मृदंगा, सुर ताल आप वजाईआ। आपणे मिलण दा दस्सया ढंगा, अन्तर बूझ इक बुझाईआ। चरण लगाया भुक्खा नंगा, जो चल आवे सरनाईआ। भेव चुकाया हँ ब्रह्मा, ब्रह्म एका वार वखाईआ। हरि सति दित्ता मंमां, रस इक्को मुख चुआईआ। कर प्यार मुखड़ा चुम्मां, मेहर नज़र उठाईआ। मिट्ठा कीता कौड़ा तुंमां, अमृत रूप प्रगटाईआ। दो जहान सब ने सुणा, श्री भगवान खेल रचाईआ। लख चुरासी जीव जंत पुणा, वेखे सर्ब लोकाईआ। जन भगत वड्याई जाणे गुणा, गुणवन्ता बेपरवाहीआ। वेख वखाए विच चोली जना, निरगुण निरगुण पड़दा लाहीआ। नाम सुणाए सच सरवण कन्ना, सोहणी आवाज़ लगाईआ। मन का मणका फेरे मना, मन वासना डेरा ढाहीआ। भाग लगाए पंज तत तना, तन माटी सोभा पाईआ। गढ़ हँकार कूड़ा भंना, सच

देवे वड्याईआ। वेख हैरान होवे धन्ना, ध्रू प्रहिलाद ध्यान लगाईआ। श्री भगवान अछल अछल्ला, की असचरज खेल रचाईआ। कलयुग अन्त ग़रीब निमाणयां देवे भल्लां, भाल कर बेपरवाहीआ। मेल मिलाए कर के आपणा हल्ला, बिध अवर ना कोए समझाईआ। भगवान कदे रहे ना कल्ला, भगतां सदा संग निभाईआ। प्रभ वैरागी बण के फिरे झल्ला, झलक आपणी इक दरसाईआ। सन्त जन फड़ावे पल्ला, पल्लू आपणे गंढु पवाईआ। खज्जल होए विच जलां थलां, उच्चे पर्बत डूंघी खाई वेखण जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। भगवान कहे मेरा रंग अनोखा, बिन भगतां समझ कोए ना पाइंदा। लख चुरासी विच्चों देवां मौका, मेहरवान हो मेहर नज़र उठाइंदा। निर्मल प्रकाश कर जोता, जोती नूर नूर डगमगाइंदा। भाग लगा काया चम्मड़ी पोशा, हड्ड नाड़ी लेखे लाइंदा। अन्दर वड़ के देवां होका, उच्ची कूक कूक सुणाइंदा। जन भगत तेरे नाल प्रभ कदे ना करे धोखा, लख चुरासी भरम भुलाइंदा। इक वखाए आपणी ओटा, इष्ट गुरदेव इक्को नज़री आइंदा। कर किरपा अन्तर रहिण ना देवे कोई खोटा, कूड़ी क्रिया बाहर कढ्ढाइंदा। नाम नगारे लाए चोटा, दोहरा धार वजाइंदा। रूप वखाए माणक मोता, मोती हीरा लाल जवाहर पंना मुख शरमाइंदा। खोल्ह वखाए आपणा गोशा, कुण्ट आपणा पड़दा लाहइंदा। प्रेम प्रीती अन्दर हो मदहोशा, मधुर धुन राग सुणाइंदा। आसा मनसा पूर करे लोच लोचा, लोचण आपणे नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दया कमाइंदा। दया कमा चाढ़े रंग, रंग रत्तड़ा रूप वटाइंदा। अन्दर बाहर वसे संग, सगला संग निभाइंदा। जन्म जन्म दी कट भुक्ख नंग, नाम वस्त झोली पाइंदा। माणस जन्म ना होए भंग, दरगाह साची लेखे लाइंदा। चरण प्रीती इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों समझाइंदा। गीत सुहागी इक्को छन्द, सोहँ ढोला राग अलाइंदा। भगत भगवान दोवें मिल के दो जहान चमके इक्को सीतल चन्द, जिस चन्द विच अमावस रूप नज़र कदे ना आइंदा। महाराज शेर सिंघ विष्णूं भगवान सदा बख्शंद, मेहरवान मेहर नज़र उठाइंदा।

✪ २७ अस्सू २०२० बिक्रमी बीबी चरण कौर दे गृह हरदो फराला ज़िला जलन्धर ✪

भगत कहे प्रभ तेरा सहारा, सच तेरी सरनाईआ। तुध बिन करे ना कोई प्यारा, जगत नाता कूड़ नज़री आईआ। सच दिसे ना कोई किनारा, नईया नौका पार ना कोए लँघाईआ। जगत वासना जगत अखाड़ा, कूड़ी क्रिया नाच नचाईआ। घर घर चोर पंचम धाड़ा, दिवस रैण लुट्टण वाहो दाहीआ। भरम भुलाए पुरख नारा, नार पुरख समझ कोए ना आईआ।

तेरा मंगे ना कोई दरस दीदारा, जगत प्यार पुत्तर धी रखाईआ। जिस किरपा कर जन्म दित्ता संसारा, तिस सतिगुर बैठे सर्ब आपणा मुख भवाईआ। जन भगत इक्को मंगे तेरा दुआरा, दूजी आस ना कोए रखाईआ। तूं साहिब ठाकर मेलणहारा, मेहरवान बेपरवाहीआ। अन्दर बाहर सांझा यारा, सगला संग निभाईआ। कलयुग वेख धूंआँधारा, तेरे चरण मंगी सरनाईआ। हाव भाव दा इक नज़ारा, हरिमन्दिर दे वखाईआ। जिस घर दीवा बाती जगे न्यारा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। अमृत मिले ठंडा ठारा, सांतक सति कराईआ। शब्द अगम्मी दए हुलारा, सच झकोला इक जणाईआ। तेरे चरण कँवल सद बलिहारा, बलिहारी गुर गोसाईंआ। तेरा मेरा मेरा तेरा इक्को रूप अपारा, सति सरूप नज़री आईआ। जिस वेले गावां तेरा नाअरा, अन्तर आत्म धुन उपजाईआ। ओसे वेले तूं कहें तूं मेरा मैं तेरा प्यारा, सोहँ धार इक जणाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान तेरा अन्त ना पारावारा, जिस अन्तष्करन अन्तरगत दित्ता बदलाईआ। सुण भगत एह तेरी वड्याई, प्रभ सेवक रूप वटाईआ। जन्म कर्म दा लहिणा रिहा चुकाई, वस्त पिछली पराई झोली पाईआ। तेरे प्यार अन्दर झल्ली ना जाए जुदाई, दूर दुराडा आवे माहीआ। अन्दर वड़ के वजाए वधाई, वाहद आपणा राग सुणाईआ। खुशी होवे बेपरवाही, पर्दा हरिजन आप उठाईआ। अन्दर वड़ के पौड़े चढ़ के दर खड़ के मुख वेखे चाईं चाईं, नूर नुराना इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि भगत तेरा मन्दिर इक सुहाईआ। भगत कहे प्रभ मन्दिर तेरा, मेरे विच ना कोए चतुराईआ। मैं वेखां ते घुप्प अन्धेरा, तूं वेखें नूर नज़री आईआ। तेरी किरपा मेरा बज्झे बेड़ा, मेरी आसा तेरी सरनाईआ। धन्न भाग मेरा वसाएं खेड़ा, कक्खां कुली सोभा पाईआ। तेरे अग्गे बेनन्ती नहीं कोई झेड़ा, झगड़ा नज़र कोए ना आईआ। तेरा प्यार इक्को मेरा, मेरा प्यार तेरे विच समाईआ। बेपरवाह शहिनशाह तेरा वड जेरा, जुग चौकड़ी झल्लदा रहें जुदाईआ। कर किरपा जिस इक वार ल्याएं आपणे नेड़ा, दूर दुराडा पन्ध चुकाईआ। सो गुरमुख कहे मैं आया विच घेरा, चार कुण्ट राह नज़र कोए ना आईआ। पहरेदार बणया मेरा सिँघ शेरा, शहिनशाह हो के चाकर रूप वखाईआ। जन्म कर्म दा चुकावे फेरा, फेरा कूड़ी क्रिया गुंझल दए कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान कर साची मेहरा, मुहब्बत आपणे नाल रखाईआ। सुण भगत की करां, करता पुरख जणाईआ। तेरे कोलो सदा डरां, डर के तेरी सेव इक कमाईआ। पहलों आपणा आप हरां, हरिजन देवां फेर वड्याईआ। जन भगतां पिच्छे आप मरां, मर के भगतां जीवण दयां बणाईआ। निरगुण हो के अन्दर वड़ां, सरगुण महल्ल सोभा पाईआ। सूरबीर हो के उपर चढ़ां, मंज़ल मंज़ल पन्ध मुकाईआ। प्रेम प्यार अन्दर साचा ढोला पढ़ां, गुरमुख तेरा जस सुणाईआ। जे रुठें

६०० १५

६०१
१५

अग्गों हो के फड़ां, पिच्छा मुख ना कदे भवाईआ। लेख चुका नौ दरां, दर दसवें खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सिख्या इक समझाईआ। भगत कहे सुण भगवान, मैं सच सच जणाईआ। तूं पिता पुरख बलवान, की तेरी वड्याईआ। जे बालां मिलें आण, तेरा एहसान कोए नज़र ना आईआ। तेरा खेल सदा मेहरवान, ग़रीब निमाणयां गले लगाईआ। फड़ गोदी चुकें आण, कोझे कमले लएं उठाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर आपणा देवें ज्ञान, साची रीती इक समझाईआ। धर्म दुआर वखा निशान, सति सतिवादी इक झुलाईआ। जन भगतां नाल मिल के बणें भगवान, भगवान भगत रूप वटाईआ। इक दो इक निशान, सोहँ रूप अनूप नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, खेल करे साचा हरि, आपणी खेल आपणे विच्चों प्रगटाईआ।

✪ २७ अस्सू २०२० बिक्रमी मनसा सिँघ दे गृह हरदो फराला ज़िला जलन्धर ✪

भगवान कहे मैं भगतां वस, आपणा बल ना कोई रखाईआ। भगत कहे प्रभ तेरा रस, सांतक सति सरूप नज़री आईआ। निरगुण निरगुण खेल करे समरथ, बेपरवाह वड्डी वड्याईआ। धुर दा मार्ग इक्को दस्स, दहि दिशा दए समझाईआ। वस्त अमोलक देवे हथ्थ, पारब्रह्म प्रभ दया कमाईआ। कर वसेरा घट घट, नूर जोत कर रुशनाईआ। जन भगतां शब्द डोरी पा नथ्थ, तन्दी डोर आपणे हथ्थ रखाईआ। नाम धुन बोल अलख, अलख निरँजण भेव चुकाईआ। निरगुण नूर कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। जन भगत कहे मेरा लेखे लग्गे स्वास, इक तेरा नाम ध्याईआ। जुग जन्म दी पूरी करनी आस, जगत तृष्ना मेट मिटाईआ। रल मिल करीए बचन बलास, आत्म परमात्म जोड़ जुड़ाईआ। काया चोला पहन लबास, पंज तत बंक दुआर सुहाईआ। जिस अन्दर खेल पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल रूप नज़री आईआ। किरपा कर सर्ब गुणतास, गुणवन्त तेरी सरनाईआ। साचा नूर कर प्रकाश, आप आपणा दे बुझाईआ। मेरे नाल मिल आ पा रास, गोपी काहन रूप धराईआ। सज्जण हो के गा गाथ, साचा ढोला राग अलाईआ। निरगुण निरगुण आवे इक आवाज़, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा भेव चुकाईआ। कर खेल पुरख अबिनाश, अबिनाशी आपणी दया कमाईआ। जन भगत रहे सद तेरे पास, जगत नाता ना कोए जणाईआ। सिमरन जाणे पूजा पाठ, इष्ट गुरदेव तू ही इक नज़री आईआ। तेरे नालों विछड़ी मिले तेरी ज़ात, अजाति रूप ना कोए रखाईआ। तू ही पिता तू ही मात, हउँ बालक मांगों इक सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, हरि जू तेरे चरण मिले सरनाईआ। जन भगतां देवे सच भरवास, भरवासा इक्को

इक जणाइंदा। वेख वखा दूर जंगल जूह उजाड़ पहाड़ विच प्रभात, डूंघी कन्दर फोल फोलाइंदा। लेखे ला पवण स्वास, रसना जिह्वा कीमत पाइंदा। बण सहाई अनाथां नाथ, दीन दयाल दीनन आपणे गले लगाइंदा। जुग चौकड़ी पुच्छणहारा वात, कलयुग अन्तिम फेरा पाइंदा। मेट मिटाए अन्धेरी रात, सति सतिवादी साचा चन्द चमकाइंदा। जन भगत दुआरे होए दास, बण सेवक सेव कमाइंदा। रातीं सुत्तयां जाए आख, बिन रसना जिह्वा कूक बुलाइंदा। गुरमुख उठ वेख खोल्ह ताक, बंद कवाड़ी कुण्डा लाहइंदा। सति सरूप नज़री दिसे साथ, नदर निहाली दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। भगत कहे सुण मेरे भूप, भूपत तेरी वड्याईआ। नित वेखां चारे कूट, दहि दिशा नज़री आईआ। तेरा मेरा ताणां पेटा सूत, सूत्रधारी तेरी शरनाईआ। आप बणा सच सपूत, कपूत रूप ना कोए वखाईआ। मैनूं तेरे मिलण दी भूख, दूजी तृसन ना कोए रखाईआ। घर आ के देवें सुख, निरगुण आपणा पन्ध मुकाईआ। जरम कर्म दा मेटें दुःख, लख चुरासी पन्ध मुकाईआ। आपणी गोदी लएं चुक्क, पिता पूत देणी वड्याईआ। मेरा उजल कर मुख, अमृत सीर इक चुआईआ। दरस दे क्यों बैठा लुक, पड़दा आपणा दे उठाईआ। मेहरवान हो के तुठ, मेहर नज़र नैण अक्ख खुल्हाईआ। अमृत जाम दे घुट्ट, निझर झिरना रस चुआईआ। होए प्रकाश साची जोत, अन्ध अन्धेर रहिण ना पाईआ। तेरे नालों विछड़ी तैनूं मिले जोत, अन्त प्रभ तेरे विच समाईआ। सदा वसीए तेरे सचखण्ड दुआरे कोट, अवण गवण फेरा कोई रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, साडी मनसा पूरी कर लोच, लोचण नेत्र नैण सद तेरा दर्शन पाईआ। भगत जन तेरा सदा दरस, हरि दरसी आप जणाइंदा। कृपानिधान करे तरस, ठाकर स्वामी दया कमाइंदा। परवरदिगार मेटे हरस, हवस होर ना कोए रखाइंदा। इक्को राग सुणाए ताल तर्ज़, नाद धुन इक उपजाइंदा। जन्म मरन दी मेटे हरस, मुर्दा रूप ना कोए वखाइंदा। करे खेल आप असचरज, अचरज लीला आप रचाइंदा। प्रगट हो मर्दाना मर्द, सच मर्दानगी आप कमाइंदा। जन भगतां वंडे दर्द, दर्द दुःख भय भंजन आपणा नाउँ धराइंदा। सब दा लेखा पूरब वेखे खोल्ह फ़रद, फ़रद ज़ुरम सब दे उपर लगाइंदा। जो जन सच दुआर हरि निरँकार अग्गे दोए जोड़ करन अर्ज़, तिन्हां आरज़ू कर मंज़ूर झोली पाइंदा। निरगुण सरगुण मिल के भगत भगवान दोहां पूरा होवे फ़र्ज़, दूर नेड़े फ़ासला विच कोए ना पाइंदा। जन भगतां होण ना देवे कदी हर्ज, हर्जाना आपणे खाते विच्चों पूरा कराइंदा। किसे कोलों लैण ना देवे कर्ज़, घरों भण्डारा नाम वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण भगत भगवान जगत निशान दो जहान मेहरवान रूप वखाइंदा।

६०२
१५

✪ ३० अस्सू २०२० बिक्रमी लक्ष्मण सिंघ (ललीआं वाला) दे गृह सुल्तान विंड किते अमृतसर ✪

सतिगुर दीपक सदा प्रकाश, आदि जुगादि रुशनाईआ। गुरसिख पतंगा सदा साथ, सगला संग निभाईआ। शमअ पतंगा दोवें कदे ना होवण नास, प्रेम प्रीती विच समाईआ। प्रेम प्रीती धुर दी ख़ाश, सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। सतिगुर सरन गुरसिख रहिरास, घर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान सदा सदा सहाईआ। सतिगुर दीपक निर्मल जोत, नूर नुराना इक अख्वाइंदा। गुरसिख मेला साची गोत, वरन बरन ना कोए रखाइंदा। दोहां मिल के बणे काया कोट, घर मन्दिर सोभा पाइंदा। प्रेम प्यार दी वज्जे चोट, शब्द नगारा नाउँ रखाइंदा। लेखा खुल्हे लोक परलोक, भेव अभेद जणाइंदा। सच सुणा अगम्मी श्लोक, आत्म परमात्म बूझ बुझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाइंदा। सतिगुर दीपक एका एक, एकँकार आप प्रगटाईआ। गुरमुख पतंगा सदा टेक, आदि जुगादि शरनाईआ। दोहां मिल के बणे लेख, जगत जुग वड्याईआ। दो जहानां वसे देस, घर साचे खुशी मनाईआ। आत्म परमात्म कहे आदेश, परमात्म आत्म सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सतिगुर किरपा सति प्रकाश, ब्रह्मण्ड खण्ड उज्यारया। गुरमुख सुहेला वेखे खेल तमाश, निरगुण सरगुण रंग रंगा रिहा। दोहां मिल के पए रास, बलास भोग सेज सुहञ्जणी आत्म आप सुहा रिहा। दो जहानां हुक्म ख़ास, ख़ालस आपणा नाम समझा रिहा। जगत विछोड़ा कर नास, धुर दा मेला मेल मिला ल्या। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा नूर डगमगा रिहा। सतिगुर दीपक मिटाए अन्ध, अन्धेर रहिण कोए ना पाईआ। गुरमुख मिल के मुके पन्ध, पांधी रूप ना कोए वखाईआ। दोहां मिल के बणे छन्द, सोहँ रूप वटाईआ। खेले खेल सूरा सरबँग, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। दीपक जोत नूर पतंग, शब्द शमअ बिन हरख़ सोग ग़मा आपणा आप दए तजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेल आपणे नाल रखाईआ। सतिगुर दीपक सदा नरालम, निराकार प्रगटाईआ। गुरमुख खेल वक्खरा आलम, उल्मा भेव कोए ना पाईआ। दोहां मिल के इक्को कामल, जगत विहार दए समझाईआ। नगर खेड़ा वसे ग्रामन, गृह मन्दिर खुशी मनाईआ। सच प्रीती पकड़े दामन, ज़ामन इक अख्वाईआ। रैण अन्धेरा मेट शामन, साचा चन्द नूर चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दीपक इक प्रगटाईआ। सतिगुर दीपक अगम्मी नूर, दीवा बाती नज़र कोए ना आईआ। हरिजन मिल मिल होए भरपूर, आसा तृष्ना

मेट मिटाईआ। दोहां मिल के आए सरूर, रस इक्को इक वखाईआ। पैंडा मुके नेड़ा दूर, घर साचे वज्जे वधाईआ। जिस नूं मूसा लभ्भे उपर कोहतूर, सो गृह मन्दिर अन्दर पड़दा दए उठाईआ। जिस दे पिच्छे ईसा होया मजबूर, चारों कुण्ट भज्जे वाहो दाहीआ। जिस दा लभ्भे मुहम्मद ज़हूर, नेत्र लोचण नैण अक्ख उठाईआ। जिस दे पिच्छे सूली चढ़या मनसूर, शमस तबरेज़ पुट्ठी खल्ल लुहाईआ। जिस दे पिच्छे गुर अवतार आ आ गए पूर, बेड़े लोकमात पार उतार कराईआ। जिस दे पिच्छे गुर गुर आपणा पंज तत नाता तोड़दे रहे कूड़, सच वस्त भेंट कराईआ। जिस दे पिच्छे बणदे रहे मज़दूर, लोकमात सेव कमाईआ। सो साहिब सतिगुर इक इकल्ला हाज़र हज़ूर, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। जन भगतां आसा करे पूर, संसा रोग रिहा गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, घर वज्जे नाम वधाईआ। सतिगुर दीपक बिन बाती तेल, नित नवित्त डगमगाइंदा। गुरसिख विछड़े लए मेल, मेल मिलावा इक्को घर जणाइंदा। दोहां मिल के रंग बणे गुरू चेल, चेला गुरू इक्को धार समाइंदा। मेहरवान सज्जण सुहेल, सगला संग आप हो जाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा नूर इक प्रगटाइंदा। सतिगुर दीपक अगम्म नूर, जुग चौकड़ी आप रखाइंदा। गुरसिख मेला होए ज़रूर, ज़ाहर ज़हूर नज़री आइंदा। दोहां मिल के बेड़ा भरे पूर, दो जहानां इक्को रूप वेस वटाइंदा। सर्ब कला प्रभ भरपूर, ख़ाली भण्डारे आप भराइंदा। चतुर सुघड़ बणा मूर्ख मूढ़, साचे धंदे आपे लाइंदा। नाता तोड़ कूड़ो कूड़, कूड़ी क्रिया शौह दरया सुटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा दीप इक वखाइंदा। साचा दीप कर प्रकाश, सतिगुर वज्जे नाम वधाईआ। कर्म कांड रोग सोग चिन्ता दु:ख जाइण विनास, लेख आत्म इक वड्याईआ। मण्डल मण्डप गोपी काहन पाए रास, नट नटुआ स्वांगी स्वांग इक रचाईआ। शब्द सुरत आत्म परमात्म ब्रह्म पारब्रह्म पूरी करे आस, जगत तृष्ना मेट मिटाईआ। निरगुण सरगुण वसे साथ, नाम जणाए अगम्मी गाथ, शब्दी बोध अगाध पढ़ाईआ। जिउँ भावे तिउँ लए राख, नेत्र खोल्ह वखाए आंख, अमृत देवे साचा रस, निझर झिरना इक झिराईआ। लहिणा देणा हथ्थो हथ्थ, सगल विसूरे जाइण लथ्थ, किरपा करे पुरख समरथ, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। पन्ध मुकाए नट्ठ नट्ठ, वेख वखाए तीर्थ अठ सठ, जगत विकारा करे भट्ठ, दो जहानां वाली चारों कुण्ट वेख वखाईआ। हरिजन लेखे लाए रत, आत्म देवे ब्रह्म मति, सति सन्तोख धीरज जत घर इक्को इक वड्याईआ। बिन रसना देवे रस, हँस मुख पए हस्स, तीर निराला मारे कस, अणयाला आप चलाईआ। दोहां मिल के बणे जस, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। सतिगुर दीपक धुर दी

लो, ब्रह्मण्ड खण्ड करे रुशनाईआ। सतिगुर प्रेम गुरमुख जाए छोह, निरगुण सरगुण मेला सहिज सुभाईआ। दोहां मिल के खेल करे सोहँ सो, निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण आपणा रंग वखाईआ। आपणे जिहा आपे हो, आपे वेखे चाईं चाईंआ। आपणा बीज आपे बो, पत डाली फुल फुलवाड़ी आप महकाईआ। आपे राखा बण के जाए सौं, आलस निंद्रा ग़फ्लत रूप आपे दए गंवाईआ। आपे लख चुरासी जीव जंत साध सन्त लए जोह, बलधारी आप आपणा बल प्रगटाईआ। आपे नव खण्ड पृथ्मी वेखे भौं, धरनी धरत धवल खोज खोजाईआ। आपे हर घट अन्दर आत्म सेजा जाए सौं, करवट सके ना कोए बदलाईआ। आपे जन भगतां जोगा हो, होका आपणा नाम सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दीप इक जगाईआ। साचा दीप जगे जग एक, आदि पुरख दए जगाईआ। आदि जुगादि जिस दी टेक, गुर अवतार पीर पैगम्बर ध्यान लगाईआ। सति नूर ना लाए सेक, अग्नी तत ना कोए जलाईआ। सर्ब करे बुध विवेक, विवेकी रूप धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत आपणे रंग रंगाईआ। गुरसिख दीपक वेख प्रभ, आदि जुगादि रुशनाया। जुग चौकड़ी जिस नूं रहे लभ्भ, दो जहान ध्यान लगाया। गुर अवतार पीर पैगम्बर अग्गे कोई ना जाणे हद्द, हदूद समझ सके ना कोई राया। सारे ढोले गाउँदे छन्द, धुर दा राग अलाया। दर दरवेश मंगां रहे मंग, अलख निरँजण अग्गे अलख जगाया। श्री भगवान चाढ़नहारा रंग, रंग रंगीला बेपरवाहया। कलयुग अन्त खेल सूरा सरबँग, शाह पातशाह आप वखाया। गुरमुखां दे इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाया। लहिणा चुका सूरज चन्द, चन्द नूर इक रुशनाया। भेव खुल्ला हँ ब्रह्म, पारब्रह्म गोद बहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुरसिख इक्को नूर चमकाया। इक्को नूर चमके गुरदेव, हरि स्वामी वड्डी वड वड्याईआ। साहिब सतिगुर अलख अभेव, अनभव प्रकाश इक्को नूर करे रुशनाईआ। सो सतिगुर लेखे लाए सेव, जिस दा लेखा सके ना कोए मिटाईआ। बैठा रहे सदा धाम निहकेव, निहचल आपणा आसण इक सुहाईआ। देवणहारा अगम्मी मेव, फल इक्को इक वरताईआ। जिस खेल कीआ हेम, कुण्ट आपणी धार बंधाईआ। सो चुक के आया धुर दा नेम, गुरमुख विछड़े लए मिलाईआ। पिछला देवे देणा देण, अगला लेखा आपणी गोदी रिहा वखाईआ। दरस दिखाए नेत्र नैण, नैण मतिवाला इक्को इक जणाईआ। आत्म दरसी रसना कुछ ना सके कहिण, कहिण कथन विच सतिगुरू कदी ना आईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सन्त सुहेले सदा संग रहिण, आदि जुगादि विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा दीप करे रुशनाईआ। साचा दीपक

जाए जग, घर वज्जे नाम वधाईआ। जन्म कर्म दी बुझे अग्ग, सांतक सति रूप वखाईआ। हँस रूप वटाए कग्ग, कागों हँस वटाईआ। सोहँ शब्द अगम्मी छन्द, गीत गोबिन्द आप सुणाईआ। बिन आत्म परमात्म दूजा अवर ना कोए अनन्द, अनन्द इक्को घर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दीपक कर रुशनाईआ। सतिगुर दीपक ना होवे अलोप, हवा पवण ना कोए बुझाईआ। चिन्ता रोग ना हरख़ सोग, ग़म विच कदे ना आईआ। इक्को दरस पुरख अकाल ल्या लोच, लोचण नैण ध्यान लगाईआ। इक्को सोचे साची सोच, कवण वेला प्रभ मिले सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान दया कमाईआ। दीपक कहे मैं तेरा दीप, दीआ बाती कम्म कोए ना आईआ। आदि जुगादि तेरी सीख, सिख्या साहिब सतिगुर मोहे भाईआ। तेरे उते मैनूं परतीत, प्रतिनिध इक बणाईआ। तेरा ढोला गावां गीत, मैं मेरा विच्चों चुकाईआ। लेखा चुक्कया मन्दिर मसीत, गुरुदुआर मठ्ठ तेरा घर नज़री आईआ। जिस घर वसें सदा अतीत, त्रैगुण बैठा डेरा ढाहीआ। तेरे छत्र झुल्ले सीस, जगदीश तेरी सरनाईआ। साचा कलमा इक हदीस, हज़रत नाम सिफ्त सालाहीआ। जिस दी करदे सारे उडीक, नित नवित्त ध्यान लगाईआ। सो करन आया प्रीत, प्रीतम आपणा वेस वटाईआ। कोई समझ ना सके निक्की जिही झीत, जिस विच्चों आर पार आपणी धार जणाईआ।

६०६

१५
जो करनी करता सो होवे ठीक, दूजा सके ना कोए उलटाईआ। सच प्रकाश होए दीप, जोती नूर शब्द शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान बेपरवाहीआ। कवण दीपक जगे जग, अन्त अन्धेरा दए चुकाईआ। कवण दरस दिखाए उपर शाह रग, शहिनशाह आपणा पड़दा लाहीआ। कवण किनारा वेखे पार हद्द, कवण ब्रह्मण्ड खण्ड लोक परलोक चरणां हेठ दबाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक समझाईआ। साची सिख्या शब्द गुर स्वामी, जोती जाता आप जणाइंदा। गुर का नाम अगम्मी बाणी, शब्द संदेसा राग अल्लाइंदा। धुर दा रस अमृत ठंडा पाणी, निझर झिरना सर्ब झिराइंदा। सति सतिवादी सति कहाणी, सति पुरख निरँजण आपणे विच छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, साहिब सतिगुर आपणी दया कमाइंदा। साहिब सतिगुर ठांडा ठार, अग्नी तत ना कोए वखाईआ। सर्ब जीआं करे प्यार, प्रीतम प्रीती इक समझाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण पावे सार, सार पाए थाउँ थाईंआ। बीस बीसा हो तैयार, जगत जगदीश वेख वखाईआ। हरिजन साचे लए उभार, प्रेम उछाला इक वखाईआ। गृह मन्दिर घर बंक सोहे दुआर, जिस मन्दिर साहिब सतिगुर देवे चरण छुहाईआ। सो गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत उधरे पार, जिस पारब्रह्म दए समझाईआ।

सतिगुर दीपक सदा उज्यार, दिवस रैण थित वार घड़ी पल वंड ना कोए वंडाईआ। गुरमुख सच दीपक वेख होया निहाल, जिस दा नूर ज़ाहर ज़हूर नज़री आईआ। शब्दी हो के बणे दलाल, घर घर आपणा फेरा पाईआ। कलयुग अन्त अवल्लड़ी चाल, करता पुरख आप रखाईआ। जोत सरूप लभ्भयां कोई ना सके भाल, किरपा अन्दर गुरमुखां नज़री आईआ। पिछली देवे ना कोई मिसाल, मिसल आपणी आपणे हथ्थ रखाईआ। इक्को दीपक दित्ता बाल, चिराग़ चरागाह करे सर्ब रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन भगतां चरण वखाए सच्ची धर्मसाल, जिस दर मस्तक लग्गे नाम टिक्का, दुरमति मैल मिटे छाहीआ।

✪ ३० अस्सू २०२० बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ✪

गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे सोच, दरगाह साची सचखण्ड ध्यान लगाईआ। जुग चौकड़ी खुशीआं विच माणी मौज, मानुष माणस बैठे सीस झुकाईआ। कलयुग अन्तिम बीतदी दिसे औध, वेला वक्त रिहा विहाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जिस दी दस्सदे आए खोज, भेव कहिण कोए ना पाईआ। जिस दा कलमा निमाज़ रोज़ा रखदे रहे रोज़, राज़क रहीम वड्डी वड्याईआ। नित नवित्त जिस दर्शन पाए लोच, लोचण नैण अक्ख खुल्हाईआ। जिस दा मस्त प्याला पी हुन्दे रहे मदहोश, मुफ्त आपणा जाम वखाईआ। जिस दी याद अन्दर बैठे रहे ख़ामोश, आपणी दस्सी ना कोए चतुराईआ। जिस दे हुक्म अन्दर गुण अवगुण दस्स के आए दोष, निर्दोष जीव जंत जगत समझाईआ। जिस नूं कहिन्दे रहे साहिब सुल्तान रूपोश, पेशीनगोई समझ किसे ना आईआ। जिस दा खेल पंज तत काया अन्दर वेखदे रहे पोश, तन ख़ाकी माटी जगत हंढाईआ। जिस दा हुक्म वरतदा रिहा लोक परलोक, तबक सबक इक पढ़ाईआ। जिस दा नाम निधान पढ़दे रहे श्लोक, निष्अक्खर अक्खर रूप वटाईआ। जिस दे दुआरयों मंगदे रहे वस्त अमोलक मुक्ती मोख, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। तिस दे हुक्मे अन्दर शास्त्र सिमरत वेद पुराण लेखा लिख लिख थक्के रिहा ना कोई जोश, जोशीलापन ना कोए जणाईआ। जिस दी धार अन्दर जगत विहार हुन्दा रहे बहुत, लोकमात खेल कराईआ। जिस दी नित नवित्त रखदे रहे ओट, अन्तर बाहर ध्यान लगाईआ। जिस दा नाम नगारा वज्जदी रही चोट, तन रबाब रूप बणाईआ। जिस दा नाम संदेसा देंदे रहे होक, उच्ची कूक कूक अल्हाईआ। जिस दा भण्डारा इक थोक, बण गुर अवतार परचून हट्टी जगत चलाईआ। सो साहिब सच स्वामी सब दे उते लाए दोष, निर्दोष इक्को इक आप अख्वाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण सब दी मारी होश, होशियारी

कोई रहिण ना पाईआ। इक्को प्रकाश पारब्रह्म प्रभ निर्मल जोत, जगत दीवाली डेरा ढाहीआ। राम कहे मेरा राम कोट, घर मन्दिर करे रुशनाईआ। जिस राम बणाया बिन राम सोच, समझ आपणे विच समाईआ। सो पुरख अकाल हो दयाल कलयुग अन्त गुरमुख सन्त वेखे आपणे लोच, बिन नैणां लहिणा देण दए चुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण राम दीवाली, राम नज़र ना आईआ। राम कहे वेख आपणे नैण मेरे हथ्थ ख़ाली, प्रभ आपणी वस्त आपणी झोली पाईआ। अचरज खेल करी निराली, निरँकार साकार दित्ता भुलाईआ। बिन भगत सच दीपक ना कोए दीवाली, दीवा बत्ती तेल कम्म किसे ना आईआ। अन्तिम सब दी होए चाली, चालाण फ़ारम बीस बीसा रिहा भराईआ। पन्द्रां कत्तक चार जुग दे राजे बणन भिखारी, गुर अवतार पेशवा नज़र कोए ना आईआ। सारे कहिण प्रभ इक अवतारी, दो जहान जिस दी दीवाली, बिन प्रकाश ख़ाली रूप नज़र कोए ना आईआ। सो सतिगुर साहिब सर्ब प्रितपाली, प्रितपालक आपणी धार जणाईआ। इक्को नूर जोत जगाए निराली, ज़हूर आपणा आप प्रगटाईआ। हरिजन हरिभगत इक्को वार बण स्वाली, दो जहानां भण्डार आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र नैण उठाईआ। राम कहे मेरा अयुध्या दीप, सतिगुर हथ्थ रुशनाईआ। पिछली कहाणी पिच्छे गई बीत, अग्गे समझ कोए ना आईआ। कवण खेल करे हरि जगदीश, जगदीशर आपणा हुक्म वरताईआ। मन मति बुध लोकमात भरम भुलाई बीस बीस, सब दी मुक्की माण वड्याईआ। साची सिख्या ना दस्से हदीस, हद्द हदूद डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा नूर कर रुशनाईआ। साचा नूर दीप प्रकाश, प्रकाश हर घट नज़री आईआ। भगत भगवान वंडे रास, वस्त अमोलक झोली पाईआ। सच राम जिस वसे पास, सो राम राम लभ्भण कदे ना जाईआ। कर किरपा जिस पूरी करे आस, सो निरासा रूप ना कोए वखाईआ। सतिगुर दीप सदा प्रकाश, अन्ध अन्धेर रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस नाम दीवाली वखाए आप, तिस दीवाने जगत दीवाली मूल ना भाईआ। राम कहे मैं वेखे दीवाने, दीवा बत्ती जिन्हां गुल कराया। इक नाम मस्त मस्ताने, घर आपणे रंग रंगाया। मंगण मंग दर भगवाने, दोए जोड़ वास्ता पाया। शाह पातशाह वाली दो जहाने, दर तेरा इक्को नज़री आया। नाता छुटे जगत याराने, साक सज्जण संग ना कोए निभाया। राग तेरा नाम तराने, तुरिया मुख शरमाया। नैण शरमाइण रवि ससि भाने, सूर्या चन्द मुख भवाया। कर किरपा जिस दित्ता दाने, दाता देव आप वरताया। सो तेरा खेल वेखे भाने, महिमा अकथ कथ दृढ़ाया। तेरा नूर इक पहचाने, बेपहचान नज़री आया। जन भगतां हो मेहरवाने, मेहर नज़र टिकाया। घर मेला शाह

सुल्ताने, शहिनशाह इक्को वेख वखाईआ। तिस गृह हरि दीप जगे महाने, जोती जोत जोत नूर रुशनाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा वर, तिन्हां दीवाली बिन दीपक दीआ काया माटी डगमगाया। जन्म कर्म बेनन्ती मंज़ूर, पूरब लेखा लेखे पाईआ। अग्गे बख्शे धुर दा नूर, घर सरूर खुशी वखाईआ। घाटा कर के आप पूर, पूरी इच्छया पूर वखाईआ। साची भिच्छया दए ज़रूर, जो इच्छया इच्छया विच्चों प्रगटाईआ। साचा लेख धुर दा लिख्या हजूर, धुर दी धार समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर सुहञ्जणी खुशी मनाईआ।

✪ पहली कत्तक २०२० बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ✪

सतिगुर खेल सूरे सरबँग दा, शाहसवार शहिनशाह वड्डी वड्याईआ। आर पार दो जहान जो सतिगुर लँघदा, ब्रह्मण्ड खण्ड आपणी धार चलाईआ। सो मेहरवान धरती उते आ के कदे ना संगदा, दूर नेड़े मुरीद मुर्शद वेखे थाउँ थाईंआ। काया चोली कोटन जोजन दूर रंगदा, निज नेत्र नेरन नेर नज़री आईआ। जो मालक आत्म सेज पलँघ दा, अट्ठे पहर घर बैठा डेरा लाईआ। उह सतिगुर बिआस रावी झनाब पैरां नाल कदे ना लँघदा, सति सरूप रूप अनूप वखाईआ। एहो खेल सच्चे अनन्द दा, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। जिस दा लेख ब्यान कोई बंद ना बणावे छन्द दा, मुशंदगी अवर ना कोए रखाईआ। जुग जन्म कर्म मेहरवान मेहर निगह नाल गंढुदा, हथ्थीं गंढु ना कोए वखाईआ। खेल वखा सुहागी रंड दा, घर खुशी इक प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। गोबिन्द लँघया दो जहान, अद्धविचकार सके ना कोए अटकाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा जो अन्तर आत्म करे ध्यान, तिस मिले सहिज सुभाईआ। शाहसवारा नौजवान, जगत वेस पंज तत वखाईआ। अन्तर सति सरूप मेहरवान, शब्द रूप वटाईआ। दीवा बाती घर घर वेखे जोत जगा महान, नूर ज़हूर कर रुशनाईआ। बेऐब खुदाई बण के परवरदिगार सांझा यार, दूर नेड़े सारे रिहा तराईआ। जगत बिआस ना कोई विचार, जगत सतलुज ना कोई प्यार, जगत रावी ना कोए आधार, सब दी भावी आपणे हथ्थ रखाईआ। जिस दा लेख इक्को वार होए मुसावी, मुसलसल रूप ना कोए वटाईआ। सतिगुर ना लवे ते ना देवे तकावी, तकवा इक्को इक जणाईआ। जिस दा लेख ना कोई लिखे कावी, बेअथाह सिफ्त सालाह बाहरा रूप वटाईआ। सो सतिगुर दूर दुराडा घर विच घर मिले जा, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। अन्दरे

अन्दर आपणा लेखा दए लिखा, लेखा लिखे बिन कलम शाहीआ। सो सतिगुर पार किनारे सारे रिहा करा, तट आपणा इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गोबिन्द गुर गुरसिख गोबिन्द गोबिन्द गुरसिख रूप वटाईआ।

हुक्मरान सच हुक्म करदा, हरि करता वड वड्याईआ। हुक्मे अन्दर नूरी जोत धरदा, जोती जाता बेपरवाहीआ। हुक्मे अन्दर शहिनशाह बणदा, शाह पातशाह आप अख्वाईआ। हुक्मे अन्दर तख्त चढ़दा, सच सिँघासण सोभा पाईआ। हुक्मे अन्दर सीस जगदीश ताज धरदा, तख्त निवासी इक हो जाईआ। हुक्मे अन्दर आदि जुगादि खेल करदा, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। हुक्मे अन्दर गुर अवतार पीर पैगम्बर घल्लदा, विष्न ब्रह्मा शिव समझाईआ। हुक्मे अन्दर लख चुरासी घाड़न घड़दा, त्रै पंज मेला सहिज सुभाईआ। हुक्मे अन्दर लोक परलोक ब्रह्मण्ड खण्ड रचदा, रचना आपणी आप रचाईआ। हुक्मे अन्दर घट घट निरगुण नूर धरदा, जलवागर वड्डी वड्याईआ। हुक्मे अन्दर जुग जुग वेस करे नर हरि दा, हरि करता भेव कोए ना पाईआ। हुक्मे अन्दर गुर अवतार पीर पैगम्बर बणाए बरदा, दर ठांडा इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, हुक्मरान इक्को नज़री आईआ। हुक्मरान दा सुण के हुक्म, चार जुग दे हाकम भय रखाईआ।

जिस दी निरगुण धारों बण के आए तुख्म, सो आपणी तासीर वेखे बेपरवाहीआ। चोला हंढ्ढाउँदे रहे पंज तत भूतन, सरगुण रूप अनूप वटाईआ। फिरदे रहे चार कुण्ट दहि दिश बहुरूपन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच हुक्म इक वरताईआ। हुक्मे अन्दर आए दर, घर बैठे सीस झुकाईआ। हुक्मे अन्दर लए फड़, हुक्म इक्को इक रखाईआ। हुक्मे अन्दर गए मर, हुक्मे अन्दर जीवत रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक वरताईआ। हुक्मे अन्दर आए दरवेश, दर बैठे अलख जगाईआ। हुक्मे अन्दर होए पेश, अदालत साची फेरा पाईआ। हुक्मे अन्दर वेख्या इक नरेश, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। हुक्मे अन्दर आवे डर, भय इक्को नज़री आईआ। हुक्मे अन्दर गुर अवतार पीर पैगम्बर सलाहवां रहे कर, इक दूजे वल ध्यान लगाईआ। धुर दा डाकू चोर वड़या साडे घर, जिस दा खुरा खोज समझ सके ना कोई राईआ। सुत्तयां जागदयां सारे लए फड़, बचया कोए रहिण ना पाईआ। चारों कुण्ट वेखो किधर जाईए चढ़, उपर थल्ले इक्को नज़री आईआ। आपणी करनी करतब सारे गए हर, हरि का भेव समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, आपणी खेल रिहा रचाईआ। भेती हो के आया नेड़े, दुर दुराडा पन्ध मुकाईआ। वसणहारा साचे खेड़े, कुण्डी खिड़की सब दी रिहा खुल्हाईआ। वेखण आया चार जुग दे दुनी झेड़े, शाह पातशाह बेपरवाहीआ। दीन मज़्हब केहड़े केहड़े, कलमा कलाम शब्द नाम कवण जणाईआ। कवण बन्न्ह बन्न्ह बैठे बेड़े, तुला चप्पू कवण हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर इक दूजे वल रहे तक्क, नींवीं नज़र ध्यान लगाईआ। साडा नबेड़ा करना एस ने हक़, हकीकत जिस दी ढोला गाईआ। चार जुग दी करनी कोलों करता पुरख गया अक्क, अक्ल कलधारी आपणी खेल वरताईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी जो आए दस्स, दहि दिशा हुक्म वरताईआ। सो कलयुग अन्त पल्लू छुडा सब तों गई नस्स, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। कलयुग जीव साध सन्त जगत कुकर्म विच गए फस, फ़ैसला हक़ ना कोए कराईआ। माया ममता हउमें हंगता कूड़ी क्रिया पाई नथ्थ, चारों कुण्ट रही भवाईआ। सच सरनाई बेपरवाही हरि रघराई पुरख अकाल दीन दयाल कोई ना जाए ढढ्ठ, मस्तक टिक्का धूढ़ी ख़ाक ना कोए रमाईआ। जगत विचार कूड़ विहार हो के बैठे अड्ड, सांझा रूप नज़र कोए ना आईआ। बण दुहागण कन्त सुहागी बैठे छड्ड, सेज सुहञ्जणी सोभा कोई ना पाईआ। अन्तिम सब दी मुक्की हद्द, हासल नज़र कोए ना आईआ। श्री भगवान नौजवान शब्द निशान पंज तत काया किसे लौण ना देणा अज पज, भेव अभेदा आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल रिहा समझाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर इक दूजे नूं दस्सण, उच्ची कूक ना कोए सुणाईआ। श्री भगवान किसे ना देवे नस्सण, दो जहान बैठा घेरा पाईआ। सब दे ख़ाली कीते हथ्थन, वस्त नज़र कोए ना आईआ। आपणा भाणा आया वरतण, पिछला लेखा लेख चुकाईआ। कलयुग अन्तिम आया परतण, प्रतिनिध इक हो जाईआ। गुरमुख सन्त सुहेले आया परखण, नाम कसवट्टी हथ्थ उठाईआ। जन भगतां देण आया दर्शन, दीद ईद चन्द करे रुशनाईआ। जुग जन्म दी मेटण आया हरसन, हवस होर रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण करो सलाह, वेला अन्तिम गया आईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी जोती जामा ल्या पा, पारब्रह्म प्रभ आपणा नूर धराईआ। रल मिल सारे साचा सोहला गीत अगम्मी लवो गा, बिन रसना जिह्वा उच्ची कूक सुणाईआ। इक्को ढोला गाओ तू ही नूरी इक ख़ुदा, जलवागर बेनज़ीर तेरी सच सरनाईआ। सरन सरनाई लागो पाउँ, पीर पैगम्बर फ़िदा हो कुरबान, जगत करबला जिस दी मिसाल नज़र कोए ना आईआ। दोए जोड़ करो प्रणाम, सजदा इक्को इक सलाम, तेरा हुक्म मेहरवान, महिबूब तेरी ओट तकाईआ।

६११
१५

तेरा कलमा नबी कलाम, तेरा मन्दिर झुल्ले निशान, दो जहान वज्जे तेरी वधाईआ। हउँ बालक बाल अञ्याण, दर मंगीए इक्को दान, किरपा कर श्री भगवान, मेहर नज़र बिन नैण झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, घर सच मिले वड्याईआ। सारे दर ते मंगो मंग, मांगत बण भिखारी। साहिब सुल्तान सूरे सरबँग, तेरे चरण कँवल निमस्कारी। जुग चौकड़ी गई लँघ, आई कलयुग अन्तिम वारी। सृष्ट सबाई होई नंग, चारों कुण्ट कुड़यारी। सच ना वज्जे कोई मृदंग, साचा राग ना कोए धुनकारी। साचा नीर ना धारा गंग, अमृत सीर ना कोए फुहारी। साडी करनी सब दी होई बंद, तेरी जोत होई उज्यारी। तेरे दर गहर गम्भीर तेरा ढोला गाईए छन्द, सोहँ रूप सति जैकारी। निरवैर पुरख दे इक अनन्द, आदि जुगादि जुगा जुगन्तर शाह पातशाह तेरी सरदारी। साडा अगला मुकया पन्ध, पिछली तोड़ निभा यारी। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तेरे चरण कँवल बलिहारी। वर दे श्री भगवान, दर तेरे अलख जगाईआ। तूं करता कादर मेहरवान, बेनज़ीर तेरी शहिनशाहीआ। बण याचक मंगे दान, पीर पैगम्बर गुर अवतार झोली डाहीआ। साडा लेखा मुके दो जहान, पांधी रहिण कोए ना पाईआ। चार जुग दा तेरा ज्ञान, प्रभ ठाकर तेरी झोली पाईआ। तेरी ख़लकत होए परवान, ख़ालक तेरे हथ्थ वड्याईआ। सालस बण आप भगवान, आलस निंद्रा दे मिटाईआ। ख़ालस रूप गुरमुख कर प्रधान, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सति सतिवादी दे निशान, निशाना इक्को नज़री आईआ। दो जहान करन प्रणाम, सजदा सीस इक झुकाईआ। तख़्त निवासी नौजवान, शहिनशाह तेरी ओट तकाईआ। साडा इक्को वार अख़ीरी लै ब्यान, कलम शाही लेखा दे मुकाईआ। तेरी लहर दा चढ़या इक तूफ़ान, तोबा तोबा सारे रहे सुणाईआ। असीं तेरे दर बाले बण के आए महमान, महमान निवाज़ी तेरे घर विच इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, घर साचे मंग मंगाईआ। सब ने रल के मंगी मंग, मांगत रहे कुरलाईआ। लए अंगड़ाई सूरा सरबँग, शाह पातशाह रिहा सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सब ने माणया अनन्द, इष्ट देव जगत मनाईआ। ढोले गा गा धुर दे छन्द, जीव जंत पढ़ाईआ। नाता जोड़ जीउ पिण्ड, पंज तत तन हंढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर संदेस इक सुणाईआ। धुर संदेस सुणो गुर अवतार, पीर पैगम्बर आप जणाईआ। जुग चौकड़ी जिस दी करदे रहे विचार, अन्दर बाहर ध्यान लगाईआ। जिस नूं मन्नदे रहे निरगुण निरवैर निराकार, परवरदिगार बेपरवाहीआ। सो अन्तिम कल सब नूं लए संभाल, आपणी गोदी आप उठाईआ। शाह पातशाह शहिनशाह करे आपणे भाल, हर घट वेखे थाईं थाईंआ। जगत दलाली करे ना कोई दलाल,

६१२
१५

सालस इक्को इक वखाईआ। करे खेल प्रभू कमाल, काबलीअत सब दी आपणी झोली पाईआ। जिस दी अक्खरां नाल दे के आए मिसाल, सो निष्अक्खर आपणी सेवा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। गुर अवतार पैगम्बर कहिण तोहे तौफ़ीक, प्रभ तेरे हथ्थ वड्याईआ। सीस झुल्ले छत्र तेरे जगदीश, जगदीश्र तेरी सरनाईआ। असीं दस्सया निशाना निक्का निक्का बीस बीस, भेव समझ कोए ना आईआ। जे पता हुन्दा तूं साडे ख़ाली करने खीस, लहिणा देणा आपणी झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दरगाह साची सोभा पाईआ। श्री भगवान कहे प्रभ एक, एकँकार आप जणाईआ। धन्न भाग तुहानूं दिती टेक, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। चार जुग नहीं कोटन जुग गुर अवतार पीर पैगम्बर दित्ते भेज, लोकमात सेव लगाईआ। नूरी निरगुण दे के तेज, तेज चमक धार मिलाईआ। घर मन्दिर बहि सुहाई सेज, आत्म परमात्म गंढु रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप रचाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर उठ खलोते, गल पल्लू इक्को पाईआ। प्रभू तेरा भेव ना कोई खोल्ह्ले, गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरे पुत्त पोते, पिता पुरख अकाल तेरी समझ किसे ना आईआ। ना कोई जाणे वड्डे छोटे, चार जुग दी चौकड़ी इक्को वेर नज़री आईआ। तेरे हुक्मे अन्दर बन्न्ह लंगोटे, लोकमात गए वाहो दाहीआ। तेरे नाम दे फड़ के सोटे, जगत जीवां जंतां भय जणाईआ। कूड़ी क्रिया करदे रहे टोटे, नाम खण्डा तेरा चमकाईआ। भाग लगाए पंज तत काया कोठे, घर मन्दिर सोभा पाईआ। तेरे दर्शन जुग चौकड़ी नैण लोचे, लोचण तेरा ध्यान रखाईआ। तेरे औण दे दस्सदे गए मौके, बीस बीसा इक जणाईआ। दो जहान कोई ना रहे विच धोखे, धुखदी कहाणी आए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, शाह पातशाह तेरी सरनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बरो सुणो इक दलील, हरि सतिगुर आप जणाईआ। सदी बीसवीं अन्तिम सब दी इक अपील, अपरम्पर स्वामी वेख वखाईआ। इक्को निरगुण बणे वकील, वुकला नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। श्री भगवान तेरा वेख दरबार, सब बैठे सीस झुकाईआ। पता नहीं की करे करतार, करता पुरख आपणी कल वरताईआ। जिस ने चार जुग दे कड्ढे कर गुर अवतार, इक्को डोरी तन्द बंधाईआ। सिर सके ना कोई उठाल, नेत्र नैण चरण ध्यान रखाईआ। भेस अवल्लड़ा कर गोपाल, बेमिसाल कार कमाईआ। चले अगम्म अवल्लड़ी चाल, समझ सके ना कोई राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर साचे खुशी मनाईआ। दर घर साचे खुशी मनाउँदा ए, परम पुरख प्रभ मेहरवान। धुर दा हुक्म इक सुणाउँदा ए, दो जहानां हुक्मरान।

नव नौ चार पिच्छों फेरा पाउँदा ए, जुग करता हो प्रधान। सब दा लहिणा मूल चुकाउँदा ए, देवणहार नौजवान। अगला मार्ग आप वखाउँदा ए, सृष्ट सबाई दे ज्ञान। धुर दा भाणा आप वरताउँदा ए, ना कोई मेटे विच जहान। गुर अवतार पीर पैगम्बरां आपणी गोद बहाउँदा ए, पिछला लेख चुकाए आण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेस वटाए श्री भगवान। श्री भगवान वेस वटाउँदा ए, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। निरगुण नूर जोत धराउँदा ए, समरथ पुरख नज़र किसे ना आईआ। आपणा हुक्म आप वरताउँदा ए, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। धाम अवल्लड़े सोभा पाउँदा ए, तख्त निवासी इक शहिनशाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दर बुलाउँदा ए, धुर संदेसा देवे आण। कल कल्की आपणा नाउँ धराउँदा ए, योद्धा सूरबीर बलवान। डंका इक्को इक सुणाउँदा ए, सच झुलाए धुर निशान। थित वार इक वखाउँदा ए, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां मंगया पूरा करे दान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, साची कार आप कमाउँदा ए। साची कार कमाए एक, एकँकार वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादि जिस दी टेक, साहिब सुल्तान सच्चा शहिनशाहीआ। कलयुग अन्त अवल्लड़ा भेस, वेस कोई समझ सके ना राईआ। रूप रंग ना कोई रेख, ततव तन ना कोए जणाईआ। निरवैर हो के खेले खेड, ख़ालक ख़लक फेरा पाईआ। गुर अवतार जिस दित्ते भेज, भजन बंदगी कलमा मात समझाईआ । सो आत्म अन्तर लए वेख, निज रूप पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। धुर संदेसा देवण जोग, वड जोगीशर दया कमाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस दा इक्को इक संजोग, दूजा नाता ना कोए बणाइंदा। पर्दानशीं दर बरदा मुख नक़ाब लाह देवे दरस अमोघ, जलवा नूर ज़हूर जोती जाता डगमगाइंदा। लेखा जाण लोक परलोक, नाम सुणा सच श्लोक, सोहला ढोला राग नाद धुन इक्को इक उपजाइंदा। जिस दा खेल कोई ना सके सोच, सोच समझ बाहर गुप्त ज़ाहर आपणी धार चलाइंदा। सो साहिब पुरख अकाल आपे जाणे आपणी मौज, मुफ़लस शाह आपणा खेल खलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर रल के कहिण असीं लाईए ज़ोर, ज़ोरावर अग्गे इक्को अर्ज़ सुणाईआ। असीं उह जिन्हां लोकमात दित्ता तोर, तुरत आपणा हुक्म मनाईआ। कलयुग अन्त नहीं होर, होका दे के दए सुणाईआ। की होया जे तेरी सृष्टी हो गई ठग्ग चोर, प्रभू तैनूं गई भुलाईआ। असीं अन्त एसे कारण तेरे हथ्थ विच दे के आए डोर, आपणे ज़ुमे बात ना कोए रखाईआ। तेरा मन्त्र फुरना दस्स के आए फोर, फ़ौरन तेरा हुक्म सीस जगदीश टिकाईआ। तेरा मन्दिर महल अटल दस्स के आए नाल ग़ौर, गहर गम्भीर अच्छी तरा समझाईआ।

तेरी सृष्टी दी तैनूं लोड़, असीं बैठे पल्लू छुडाईआ। उठ वेख जा चढ़ के घोड़, अस्व आपणा लै दौड़ाईआ। असीं एथे बैठे मार ताड़ी मचाईए शोर, तेरी करनी वेख खुशी मनाईआ। आपणयां भगतां जाईं बौहड़, जो तेरा बैठे ध्यान लगाईआ। कूड़ विकार ओनृां कोलों होड़, जा के सेवादार बण आपणी सेव कमाईआ। सानूं इक्को तेरे मिलण दी लोड़, तूं मिल प्या पिच्छा कोए याद ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे सीस निवाईआ। गुर अवतार किहा तुसां सच, प्रभ सज्जण सच्चे भाया। पहलों वखावां तुहानूं जो मार्ग आए दस्स, लोकमात जीव जंत राह चलाया। किधर गई तुहाढ्ढी पूजा पाठ, सिमरन ध्यान कवण लगाया। कवण कूटे लुक्या तीर्थ ताट, किनारा सरोवर सोभा कवण पाया। किधर गए शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान हट्ट, पंज तत त्रैगुण करके आए पढ़ाया। जे ओस वेले इक्को बेनन्ती करके नाम दस्सदे पुरख समरथ, झगड़ा कोई रहिण ना पाया। मैं आपणी चालाकी अन्दर तुहानूं इशारयां नाल दित्ता दस्स, तुहाढ्ढी समझ विच्चों आपणी समझ बाहर रखाया। हुण कद्दे हो के कहिन्दे प्रभू तेरे वस, इक तेरा ध्यान लगाया। लोकमात वेखो दीन मज़्हब ज़ात पात अद्धविचकार मार के बैठे वट्ट, बन्नां बन्नां वंड वंडाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, अक्खीं वेख्या हाल, अक्खां नाल दए वखाया। प्रभू सानूं वेखण दी नहीं लोड़, सारे कूक कूक सुणाईआ। जिध्धर वेखीए माणस ढोर, चम्म दृष्टी ध्यान लगाईआ। दरोही खुदाए दी होए चोर, ठग्गी तेरे नाल कमाईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ हरामख़ोर, हरि का रूप नज़र किसे ना आईआ। जगत वासना रहे लोड़, आसा तृष्ना नाल मिलाईआ। तेरे नाल प्रीती कोई ना सके जोड़, चरण मंगे ना कोए सरनाईआ। आपणा बेड़ा आपे रहे रोड़, कलयुग पिच्छों धक्के रिहा लगाईआ। असीं नेत्र तक्क के वेख्या नाल ग़ोर, दहि दिशा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तेरी सच मिले सरनाईआ। पुरख अकाल कहे मैं सच सुणावांगा। पहलों करके तुहानूं वस, सब दा वास्ता आपणे नाल रखावांगा। पन्द्रां कत्तक सब ने वखौणे ख़ाली हथ्थ, ताल हथ्थां नाल वजावांगा। चरण कँवल इक्को जाणा ढट्ठ, इष्ट इक्को इक समझावांगा। इक्को नाम लैणा रट, रट्टा दो जहान चुकावांगा। इक्को खोलृ धुर दा हट्ट, बण वणजारा हट्ट वखावांगा। पिछला लहिणा देणा कट, अग्गे मार्ग इक लगावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा खेल इक रचावांगा। साचा खेल इक रचावांगा। दर दरबार इक सुहावांगा। नर निरँकार इक अख्वावांगा। तन श्रृंगार इक जणावांगा। सीस ताज इक टिकावांगा। गुरू महाराज इक अख्वावांगा। रख लाज, पैज धरावांगा। मार आवाज़ भगत उठावांगा। साजण

साज वेख वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साचे सोभा पावांगा। घर साचा इक सुहावांगा। निरगुण नूर प्रगटावांगा। शहिनशाह आपणा रूप वखावांगा। सति सरूप भेव चुकावांगा। चारे कूट फोल फोलावांगा। सब दे ख़ाली कर ठूठ, भण्डारा इक्को इक भरावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दरबार आप सुहावांगा। सच दरबार प्रभ लगाएगा। गुर अवतार पीर पैगम्बर बुलाएगा। पंच धार इक जणाएगा। पंचम मुख आप सालाहेगा। पंचम दुःख आप गंवाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा लहिणा धुर दा आपणी झोली पाएगा। साचा लहिणा धुर दी धार, हरि करता आपणे लेखे लाईआ। पंजां प्यारयां दे प्यार, प्रेम प्रीती इक समझाईआ। सचखण्ड दा सच विहार, लोकमात लए प्रगटाईआ। राष्ट्रपति जो दे के आया तलवार, तरा तरा समझाईआ। सो भगत सुहेला विछड़या यार, घर साचे खुशी मनाईआ। पन्द्रां कत्तक ढह के पए चरण दुआर, मस्तक टिक्का धूढ़ी लाईआ। राजिन्दर प्रशाद कहे पुकार, पुनह पुनह तेरी सरनाईआ। त्रेते जुग दा लथ्था उधार, कलयुग अन्तिम ख़ुशी वखाईआ। किरपा कर हरि करतार, तेरे हथ्थ मेरी वड्याईआ। सच धर्म दा तेरा राज, तेरे चरण मिली सरनाईआ। उच्ची कूक सुणावां आवाज़, प्रेम गीत इक्को गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरा लेखा तेरे चरणां विच टिकाईआ। तेरा लेखा श्री भगवान, तेरे चरण भेंट कराईआ। पन्द्रां कत्तक दिवस महान, तेरा गीत खुशीआं नाल सुणाईआ। दोए जोड़ बन्दना करां आण, निरगुण निरगुण तेरे दर सीस निवाईआ। तेरे अग्गे धरां किरपान, कृपानिध तेरे हथ्थ फड़ाईआ। शाह भबीखण रख्या माण, तीखन तृखा जगत चुकाईआ। इक्को नज़री आएयों राम, राम राम रूप वखाईआ। पंज तत तेरी ना आई पहचान, जगत विहार समझ कोए ना पाईआ। जिस वेले मेरे छुटे प्राण, प्राण आपणी झोली पाईआ। ढाई सकिंट पहलों दित्ता ज्ञान, सूझ समझ इक बुझाईआ। अक्खां मीटीआं मेरी इक्को वार होई तैनूं प्रणाम, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। तूं इशारे नाल किहा बाल अञ्याण, उठ उंगली ल्या लगाईआ। लै के ग्यों सच मकान, सचखण्ड साचे बेपरवाहीआ। ओथे वेखे तेरे परवान, पंच बैठे सोभा पाईआ। मैं जा के करी प्रणाम, वाह वा तेरे नाम वज्जी वधाईआ। ओनां किहा बोल बिनां ज़बान, सच संदेस सुणाईआ। तेरा लेखा मुकया विच जहान, भाईआं नाल रलया भाईआ। पन्द्रां कत्तक असां निरगुण हो के लोकमात वेखण जाणा भगवान, निरवैर कवण धार खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सब दा लहिणा देणा झोली आपे पाईआ। पन्द्रां कत्तक बीस बीसा आवेगा। पुरख अबिनाशी अगला पिछला सब दा हाल

समझावेगा। घट घट वासी, साची मण्डल रासी रास रचावेगा। ब्रह्मण्ड खण्ड कर दासन दासी, हुक्म इक्को इक वरतावेगा। जन भगतां इक वार कर बंद ख़लासी, बंदीख़ाना तोड़ तुड़ावेगा। अग्गे जा कोई ना करे बदमुआशी, नेकी बदी आपणा हुक्म वरतावेगा। निरगुण सरगुण बण के साथी, सगला संग रखावेगा। जिस नूं कोई समझ ना सके पूजा पाठी, सो इक्को नाम दृढ़ावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन हरिभगत लहिणा देणा दो जहान बिन कर्मी इक्को सरनी विच मुकावेगा। सरन विच मुक्के लहिणा, लेखा मंगे कोए ना राईआ। सतिगुर पूरे इक्को कहिणा, दो जहान वज्जे वधाईआ। बिन साकों बणे सज्जण सैणा, सगला संग रखाईआ। जन भगतां भगवान नाल रल के बहिणा, रल मिल इक्को दर सोभा पाईआ। एह वक्त नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग फेर नहीं रहिणा, कलयुग अन्त इक्को एका वार दया कमाईआ। सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान जिस ने कहिणा, तिस देवत सुर विष्न ब्रह्मा शिव सारे लागण पाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची खेल इक रचाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग पिच्छों रयाइत, पुरख अकाल इक रखाईआ। जुग जुग गुर अवतार पीर पैगम्बरां कोलों करके किफ़ायत, जन भगतां झोली रिहा भराईआ। ना कोई शरअ ना शरायत, शरीअत अवर ना कोए वखाईआ। इक्को हुक्म इक्को नाम इक्को कलमा इक्को हदाइत, प्रभ लग्गो इक सरनाईआ। चार वरन अठारां बरन बणो इक जमाइत, ज़ामन होवे बेपरवाहीआ। जन भगतो भगत दुआरे विच तुहाढ्ढे उते करे अनाइत, आलम आलमीन समझ कोए ना आईआ। हरफ़ हरूफ़ तुलबा तालब ना करे कोई तराइफ़, तशरीह दे ना कोए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साहिब मसाहिब इक्को नज़री आईआ। सतिगुर पूरा पुरख अकाल, अकाल पुरख दयावान अख्वाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी दीन दयाल, दीनां निध सुख सागर रूप वटाइंदा। लोकमात सचखण्ड बणा सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक वखाइंदा। भगत भगवान वेख लाल, गुरमुख गुरसिख रंग रंगाइंदा। चौंह जुगां नालों वक्खरी चाल, अवल्लड़ी आप कराइंदा। इक्की अस्सू खेल पक्खोवाल, पक्ख धरती अस्व आप रखाइंदा। तिन्न कत्तक दे दान, पुरख नार भेव चुकाइंदा। नार पुरख इक भगवान, भगवन आपणा पड़दा लाहइंदा। पुरख नार इक ज्ञान, शब्द नाद इक सुणाइंदा। नार पुरख इक निशान, सतिगुर शब्द बिन हत्थां हत्थ वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव आप जणाइंदा। साचा खेल कत्तक तिन्न, त्रै लोक लए जगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दिन रहे गिण, अट्ठे पहर हिसाब लगाईआ। कवण वेला प्रभ प्रगटे आपणा चिन्ह, चानण करे नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार

सच वड्याईआ। सच वड्याई पुरख नार, घर साचे आप रखाइंदा। सतिजुग दा सति विहार, साची धार आप बंधाइंदा। धुर दरगाह दा धर्म निशान, स्त्री पुरख आप फड़ाइंदा। सज्जा खब्बा हथ्थ दोहां कर परवान, महिमां अकथ आप लिखाइंदा। आप रहे विच दरम्यान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, इक चार चार वंड वंडाइंदा। इक अग्गे चार सज्जे चार खब्बे। मेहरवान विच फबे। चार कुण्ट इक्को लभ्भे। दहि दिशा सब नूं सद्दे। दो जहान आपे भज्जे। शब्द रूप निरगुण गज्जे। शाहसवार सतिगुर सजे। कर निमस्कार गुरमुख दोए बद्धे। पंज प्यार प्रेम रस मधे। हरिसंगत प्यार जुग चार हद्दे। कल्गीधर निरगुण निरवैर अवतार, योद्धा सूरबीर साहिब सुल्तान इक्को फबे। गुर अवतार पीर पैगम्बर बण के सेवादार, हुक्मे अन्दर आवण बज्झे। करे खेल आप करतार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, आपणी धार विच्चों आपे अग्गे वधे।

३ कत्तक २०२० बिक्रमी लाल सिँघ दे गृह पिण्ड हेर ज़िला जलन्धर

साहिब सतिगुर वेख रंग, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। लोकमात सूरा सरबँग, शाह पातशाह वेस वटाईआ। जन भगत दुआर आपे लँघ, घर साचे सोभा पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव वेख नच्चण वांग मलंग, आप आपणा ताल उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वजावण मृदंग, सद नाम ढोला गाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप दए अनन्द, अनन्द इक्को इक दरसाईआ। नैण शरमाइण सूरज चन्द, धरत धवल ध्यान लगाईआ। चार जुग कहिण साडी पूरी होई मंग, प्रभ लेखा रिहा लगाईआ। चार वेद कहिण सानूं पाए ठंड, अमृत मेघ बरसाईआ। चार वरन कहिण साडा मुक्के पन्ध, प्रभ मिले बेपरवाहीआ। चार खाणी कहे मेरा मुके रंडेपा रंड, कन्त सुहागी इक हंढाईआ। चार बाणी कहे मेरा सोहे सच्चा छन्द, धुर दी धार बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआर इक सुहाईआ। सच दुआरा वेख मात, दो जहान खुशी मनाइंदा। सचखण्ड दुआरा पड़दा लाह कनात, पड़दा उहला आप चुकाइंदा। थिर घर वेखे इक प्रभात, शब्दी गुर सोभा पाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर उपर उठावण हाथ, बिन हथ्थां हथ्थां नाल समझाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव उच्ची गायण गाथ, तू ही तू ही राग अलाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल रहे भाग, बण बण पांधी पन्ध सर्ब मुकाइंदा। निरगुण निरवैर पुरख अकाल दीन दयाल सति स्वामी जगाए चिराग़, दीवा बाती कमलापाती इक्को नूर वखाइंदा। मेहरवान नौजवान श्री भगवान जन भगतां धोवे दाग़, दुरमति मैल दूर कराइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप ज़िमीं असमान खेल महान, पुरख

६१८
१५

पुरखोतम निरवैर आप कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग आप चढ़ाइंदा। साचा रंग वेख लोक, परलोक रहे जस गाईआ। रल मिल गावण इक सलोक, सोहला इक्को गाईआ। नज़री आए निर्मल जोत, प्रकाशवान बेपरवाहीआ। आदि जुगादि जिस दी इक्को गोत, वरन बरन ना कोए रखाईआ। नित नवित्त ना हरख़ ना कोई सोग, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण भोगे भोग, सच संजोग आपणा इक हंढ्ढाईआ। करे कराए बेपरवाहे देवे दरस अमोघ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सचखण्ड वेख ब्रह्मण्ड, सारे खुशी मनाईआ। नव नौ चार विच संसार अन्तिम वार अन्तिम गए लँघ, चौकड़ आपणा पन्ध मुकाईआ। निरगुण सरगुण लख चुरासी जीव जंत साध सन्त गायण ढोला छन्द, गीत गोबिन्द इक अल्लाईआ। सो प्रगट होया सूरा सरबँग, जिस दा रूप रेख ना कोई रंग, जोती जाता पुरख बिधाता नूर इलाहीआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग खाणी बाणी जिस ने वंडी वंड, धुर दी धार शब्द अनाद आप समझाईआ। सो कलयुग अन्तिम प्रगट हो सूरा सरबँग, वजाए इक नाम मृदंग, दो जहानां सति निशाना वड मेहरवान झुलाईआ।दो जहान हो इकट्ठे, दर इक्को वेख वखाईआ। श्री भगवान खेल कोई ना जाणे समरथे, समरथ पुरख बेपरवाहीआ। आपणी वंड विच ब्रह्मण्ड नव खण्ड आपे रखे, जीव जगत समझ कोए ना आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण अञ्जील कुरान खाणी बाणी चारे कुण्ट रहे हक़े बक्के, हक़ हकीकत नज़र किसे ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर साध सन्त जिस नूं लभ्भ लभ्भ थक्के, सो शाह पातशाह आपणा भेव आपणे विच छुपाईआ। जिस दी पूजा पंज तत काया करे मदीने मक्के, गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ बैठे ध्यान लगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग साहिब सतिगुर जो निरगुण पत रखे, सरगुण सिर आपणा हत्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेव अभेदा इक खुल्लाईआ। लोकमात दा वेख महल्ला, दो जहान खुशी मनाईआ। कलयुग अन्तिम खेल अवल्ला, हरि करता आप कराईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल दीन दयाल प्रेम प्रीती मन्दिर हो के झल्ला, हरिजन साचे वेखे थाउँ थाईंआ। निर्धन सरधन फड़ाए आपणा पल्ला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी वेखो करे करतार, समझ कोए ना आईआ। पहली कत्तक हो तैयार, कदम आपणा इक उठाईआ। दो कत्तक निरगुण सरगुण धार, दो जहानां वेख वखाईआ। चार जुग दा पूरब लहिणा दए उधार, लेखा सब दी झोली पाईआ। सन्त भगत गुरमुख गुरसिख सारे मंगदे गए दीदार, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। कर किरपा प्रभ बख़्शणहार, बख़्शिश तेरे हत्थ वड्याईआ। निज नेत्र दे दीदार,

घर साचे खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक सुणाईआ। सच संदेसा भगत भगवान एकँकार, एका वार जणाईआ। सारे रहिणा ख़बरदार, बेख़बर ख़बर पुचाईआ। धरत होवे शरमसार, धरनी धवल नेत्र अक्ख ना कोए उठाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी धूंआँधार, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे बणन भिखार, दर दरवेश बैठण डेरा लाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त सदी बीसवीं दए दीदार, दीदा दानिस्ता भेव अभेद पर्दानसीं आपणा पर्दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार इक वड्याईआ। देवणहार वड्याई आप, पारब्रह्म प्रभ दया कमाइंदा। सन्त सुहेले रख के साथ, सगला संग निभाइंदा। जो निरगुण हो के चार युग अन्त गया आख, सो परमात्म आपणा भेव चुकाइंदा। कलयुग वेख अन्धेरी रात, पुरख अबिनाशी आपणा फेरा पाइंदा। सच प्रीती बंध नात, बिधाता आपणा जोड़ जुड़ाइंदा। सच धर्म दा डूंग्घा खात, गृह मन्दिर आप वखाइंदा। जिउँ भावे तिउँ लवे राख, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सब दा लेखा आप जणाइंदा। आओ लेखा दस्सां एक, श्री भगवान आप जणाईआ। विष्न रखी पिछली टेक, प्रभ मिले तेरी सरनाईआ। ब्रह्मे मंगया आपणा हेत, ब्रह्म आपणी अंस बणाईआ। शंकर किहा मैं वेखां खेत, तेरा नाम शस्त्र इक चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेद दए जणाईआ। आवो वेखो पंज तत्त, त्रैगुण अतीता आप जणाईआ। जुग चौकड़ी गए लँघ, कलयुग वेला अन्तिम आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आपणी पूरी करो मंग, मांगत बचया कोए नज़र ना आईआ। प्रगट हो सूरा सरबँग, शाह पातशाह रिहा समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरी सरन मिले सरनाईआ। शब्द कहे प्रभ दे दात, तेरे अग्गे इक अरज़ोईआ। मेरी धारों निकली तिन्नां इक जमात, विष्न ब्रह्मा शिव रंग रंगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव त्रैगुण माया दित्ता साथ, रजो तमो सतो मेल मिलाईआ। त्रैगुण कहे त्रैलोकी खेल तमाश, मेहरवान तेरी सरनाईआ। त्रिलोकी कहे निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण तेरी धार इक जमात, घर मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। सारे कह कह गए आख, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। पारब्रह्म तेरा खेल तमाश, समझ किसे ना आईआ। हर घट अन्दर रखें वास, लख चुरासी रिहा समाईआ। जुग चौकड़ी करें नास, हुक्मी हुक्म इक भवाईआ। दो जहान मण्डल मण्डप पृथ्मी आकाश पावें रास, गोपी काहन आप नचाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जन भगतां पूरी कर आस, आसा तेरे अग्गे रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर,

इक्को देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव गुर अवतार सारे बोलण, शब्दी नाअरा इक लगाईआ। पुरख अबिनाशी घट घट वासी कलयुग अन्तिम पूरा तोल आएयों तोलण, बण तोला बेपरवाहीआ। लख चुरासी विच्चों सन्त सुहेले आएयों मात वरोलण, आप आपणी सेव कमाईआ। सच दुआर हरि निरँकार निरगुण धार आएयों खोलण, ख़ालक ख़लक दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, घर साचे ख़ुशी मनाईआ। ख़ुशी करन दा इक्को वक्त, जुग चौकड़ी आप जणाया। मिले वड्याई विच जगत, जगजीवण दाता होए सहाया। कलयुग अन्तिम निरगुण रूप आवे परत, जोती जाता वेस वटाया। करे खेल बीसवें बरस, बरसी आपणे रंग रंगाया। देवे वड्याई उते धरनी माटी फ़र्श, ख़ाक कंचन रूप वटाया। जुग जन्म दी लाहे हरस, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। कत्तक तिन्न कर के तरस, तार सितार इक हलाया। सब दी पूरी करे लिख्त पढ़त, बिन कलम शाही हिसाब जो आपणे हथ्थ रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाया। तिन्न कत्तक प्रभ की कुछ वाधा, गुर अवतार पुछ पुछाईआ। कोई ना दस्स के गया प्यो दादा, शास्त्र सिमरत वेद समझ किसे ना पाईआ। कोई ना गा के गया रागां नादां, रसना जिह्वा वंड ना कोए वंडाईआ। कोई ना सुणाए उच्ची आवाज़ा, रसना जिह्वा बोल अलाईआ। कलयुग अन्तिम किस बिध कत्तक तिन्न होवे दरस वड भागा, वड भागी दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे आस रखाईआ। खाणी बाणी शास्त्र सिमरत वेद पुराण सारे पए बोल, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। साडे नाल क्यों मारया रोल, आपणा पड़दा आप छुपाईआ। असीं सुत्ते रहे अनभोल, चार जुग प्रभ तेरी समझ कोए ना आईआ। असीं काग़ज़ शाही कलम नाल तोलदे रहे तेरा तोल, बौहड़ी ख़ुदाए तेरा तराज़ू हथ्थ किसे ना आईआ। तूं निरगुण निरवैर पुरख अकाल सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी बैठा रिहों अडोल, आपणी करनी आपणे विच छुपाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग शरअ शरीअत दीन मज़्हब ज़ात पात असीं करदे रहे घोल, तेरे चरणां घोली घोल ना कोए घुमाईआ। कलयुग अन्तिम वेख मार झात विच्चों सब दे पोल, आपणा भार ना सके कोए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरे हथ्थ वड्डी वड्याईआ। हथ्थ वड्याई तेरे प्रभ, दर तेरे आस रखाईआ। आपणा भेव दस्स सब, पड़दा उहला रहिण ना पाईआ। कवण कूट कवण किनारा कवण हद्द, कवण मन्दिर कवण दुआर डेरा लाईआ। कवण शब्द कवण नाम कवण नद जाए वज्ज, कवण राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, साची करनी आप कमाईआ। तिन्न कत्तक दा सुणो हाल, सो साहिब आप जणाईआ।

निरगुण सरगुण कीआ प्यार, निरगुण सरगुण आपणी धार वखाईआ। पहली कत्तक एकँकार, दूजे सृष्ट रची संसार, तीजे कर्म कांड कर प्यार, तिन्नां मेला सहिज सुभाईआ। तिन्ने डिगे दर दुआर, बिन अक्खां रोवण ज़ारो ज़ार, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। किरपा कर आप निरँकार, साचा दस्स इक विहार, तेरे नाल होवे प्यार, नाता नज़र कोए ना आईआ। मार्ग इक्को दे सखाल, मेला होए दीन दयाल, झगड़ा चुके काल महाकाल, साची मिले इक सरनाईआ। तूं आपे सानूं लैणा भाल, ना वेखीं शाह कंगाल, ऊँच नीच समझ कोए ना पाईआ। मुर्शद हो के सुणें हाल, सतिगुर हो के बणें दलाल, करता हो के लएं संभाल, तेरे अग्गे इक्को अरदास सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। तिन्नां देवां इक्को रंग, रंग राता दया कमाईआ। जोत शब्द पंज तत देवां नाल संग, सगला संग बणाईआ। निरगुण धार वजा मृदंग, ताल इक्को इक सुणाईआ। सच दुआरा आपे लँघ, नैण इक्को इक खुल्हाईआ। आपणे लोचण दोवें कर के बंद, तीजा लोचण गुरमुखां झोली पाईआ। चार जुग कोई समझ ना सके हरि का अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों रस वखाईआ। आदि पुरख प्रभ वंड के आपणी वंड, झोली आपणी विच छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। जोत शब्द तत कर विचार, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। निंमां निंमां तेरा उज्यार, ईश जीव रूप अख्वाईआ। पारब्रह्म तेरा ब्रह्म पसार, जीव जंत वड्याईआ। परमात्म तेरा आत्म आधार, इक तेरी ओट रखाईआ। कर्म कांड नाल कर तैयार, प्रकृती बन्धन देवें पाईआ। नौ दुआर महल्ल उसार, नौ दर देवें जगत वखाईआ। आसा तृष्ना माया ममता हउमें हंगता काम क्रोध लोभ मोह हँकार अन्दर देवें वाड़, हुक्म हाकम इक मनाईआ। सच दस्स प्रीतम प्यारे सज्जण किस गृह मन्दिर करें सानूं प्यार, आप आपणा दरस दिखाईआ। जिस घर वसण ठग्ग चोर यार, दूजी धार ओथे नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, प्रभ मेहर नज़र उठाईआ। मेहरवान प्रभ पुरख समरथ, दीन दयाल दया कमाइंदा। साची देवे अगम्मी वथ, नज़र किसे ना आइंदा। घर विच घर करां वख, पड़दा उहला आप चुकाइंदा। तिस मन्दिर अन्दर जावां वस, जिस दा दरवाज़ा नज़र किसे ना आइंदा। निरगुण नूर करां प्रकाश, जोती जाता डगमगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। सच दस्स प्रभ केहड़ा घर, जिस घर वेखें चाईं चाईंआ। साडी झोली पा दे वर, वस्त अमुल आप वरताईआ। बाकी सब दा चुक्के डर, भय नज़र कोए ना आईआ। तेरी सरनी जाईए पड़, सरनगति इक रखाईआ। मेहरवान मेहरवान प्रभ किरपा कर, पुरख अबिनाशी तेरे

हथ्थ वड्याईआ। उच्चे टिल्ले वेखीए चढ़, घर दर्शन तेरा इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक समझाईआ। साची सिख्या सुण लओ मीत, हरि सतिगुर आप जणाईआ। निरगुण सरगुण चलावां रीत, रीतीवान आप अख्वाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वंडां वंड ठीक, लख चुरासी नाल मिलाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान नाल देवां भीख, गुर अवतारां पैगम्बरां झोली पाईआ। भगतां सन्तां मेट अन्धेरा तारीक, निंमां नूर दयां चमकाईआ। थोड़ा थोड़ा हो के वेखां नज़दीक, बाकी आपणा आप छुपाईआ। निक्की निक्की दस्स के चरण प्रीत, दूर दुराडा बैठा मुख भवाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ां विच करन मेरी उडीक, लभ्भयां हथ्थ किसे ना आईआ। नक्कां नाल कढुणे फिरन लीक, रो रो मंगण दर ते भीख, भिच्छया झोली ना कोए भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार आप वड्याईआ। सच दस्स प्रभू आपणा भेव, दर बैठे मंग मंगाईआ। चार युग कवण करन तेरी सेव, दर तेरे अलख जगाईआ। तेरा वेखण धाम निहचल निहकेव, महल अटल तेरे खुशी मनाईआ। तेरा नाउँ गावण तेरे नाल मिल के रसना जिह्व, गीत गोबिन्द अल्ह़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सुणो भेव अगम्म अथाह, निरगुण निरगुण आप जणाइंदा। चार जुग दा लेख दयां समझा, बिन समझों समझ कराइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण दयां लिखा, धुर संदेसा इक अल्ह़ाइंदा। अञ्जील कुरान खाणी बाणी मार्ग दयां लगा, लहिणा देणा झोली पाइंदा। लख चुरासी विच्चों चार जुग विच थोड़े लवां उठा, जिन्ह़ां आपणा भेव जणाइंदा। तेई अवतार उंगल लवां ला, भगत अठारां इशारा इक वखाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद जोती नूर दयां चमका, दूर निशाना इक वखाइंदा। नानक निरगुण मेला इक्को सहिज सुभा, गोबिन्द आपणा पूत बणाइंदा। शब्दी धार नाल मिला, इकावन बावन रंग चढ़ाइंदा। चार जुग विच बवन्जा देवां रख हथ्थ अक्ख खुल्ह़ा, बाकी नज़र किसे ना आइंदा। जो आया सो गया गा, गावणहारा रूप ना कोए वखाइंदा। निक्की निक्की सेवा ला, त्रिलोकी नाथ आप बणा, चरणां हेठ आप दबाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान आपणी दया कमाइंदा। हाए प्रभू एह की कीता, दरोही तेरे नाम खुदाईआ। लख चुरासी विच्चों बवन्जा नाल लाई प्रीता, बाकी छड्डी सर्ब लोकाईआ। कोटन कोटि जीव तेरे हस्त कीटा, ऊँच नीच जूनी जून रिहा भवाईआ। कलमा कलाम धुर नाम दे के शब्द हदीसा, हज़रत क्यों बैठा मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, आपणा भेव दे जणाईआ। सुणो भेव श्री भगवान, सो साचा आख जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगण आपणा दान, देवां वस्त झोली पाईआ।

लोकमात बणा के जाण जगत निशान, पंज तत मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी इक्को वंड वंडाईआ। जुग चौकड़ी देवां जोग, साची वंड आप वंडाईआ। ना कोई हरख़ ना कोई सोग, चिन्ता ग़म ना कोए सताईआ। इक्को हुक्म लोक परलोक, दो जहानां आप सुणाईआ। इक्को नाम सच श्लोक, सोहला ढोला राग अल्ह़ाईआ। इक्को नूर इक्को जोत, इक्को दीप करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। मेहर नज़र प्रभ तेरी की, सारे देण दुहाईआ। तुध बिन सके ना कोई जी, जीवण कम्म किसे ना आईआ। तेरे दुआरयों मेटणी असां लीह, लेखा कोई नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे मिले वड्याईआ। दर घर साचे देवां माण, सो साहिब आप जणाया। जुग चौकड़ी बीते विच जहान, नव नौ चार पन्ध मुकाया। गुर अवतार पीर पैगम्बर बण भिखारी मंगण दान, दर दुआरे सीस झुकाया। कलयुग अन्तिम प्रगट हो श्री भगवान, पुरख अबिनासी फेरा पाया। सब दा मंगया करां परवान, मेहर नज़र नैण उठाया। बण के आवां वाली दो जहान, निरगुण नूर करां रुशनाया। बावन बावन कर परवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाया। साची सिख्या समझाए एक, एकँकार मिले वड्याईआ। बवन्जा मिले धुर दी टेक, इकवंजा इकवंजा इक नाल तराईआ। इक इक दा इक्को देस, सचखण्ड साचे बैठा डेरा लाईआ। इक इक दा अवल्लड़ा भेस, समझ सोच सके ना कोई राईआ। इक इक धुर दा खेड, खेले खेल बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मेहर नज़र इक उठावांगा, सो साहिब सच जणाईआ। निरगुण सरगुण दोवें धार तजावांगा, आप आपणा मूल चुकाईआ। अन्तिम इक्को रूप प्रगटावांगा, तीजे नैण करां रुशनाईआ। धुर दा नाम इक सुणावांगा, समझ सके कोई ना राईआ। थित वार इक वडयावांगा, वज्जे लोकमात वधाईआ। दूआ सिफ़रा पन्ध मुकावांगा, ज़ेर ज़बर दिसे कोई नाहींआ। मढ़ी गोर पन्ध मुकावांगा, कर के खेल बेपरवाहीआ। साचा ज़ोर इक जणावांगा, हथ्थ लै के दो जहानां शाहीआ। ठग्ग चोर इक्को मेहर नज़र नाल तरावांगा, जो आए चल सरनाईआ। पूजा पाठ ना कोई करावांगा, मेहर नज़र नाल पार कराईआ। गुरमुख इक्को रूप बणावांगा, साचे घर कर कुड़माईआ। भगत भगवान हो प्रनावांगा, धुर संजोगी मेल मिलाईआ। साची सेज इक हंढावांगा, घर बण के प्रभू माहीआ। निरवैर हो के वेख वखावांगा, पन्ध मुकावां बण के राहीआ। दूर दुराडा चल के आवांगा, सच संदेस सुणावां चाईं चाईंआ। कलयुग सुहञ्जणी रुत्त सुहावांगा, जिस दा लेखा समझ सके कोई नाहींआ। चार जुग

दे विछड़े मेल मिलावांगा, फड़ उठावां आपणी बांहींआ। अमृत जाम इक प्यावांगा, धुर दा बण के सच गोसाईंआ। पूरी इच्छया काम करावांगा, भिच्छया पा अगम्म अथाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र इक उठाईआ। कत्तक तिन्न तक्कण दो जहान, अग्गे पिच्छे ध्यान लगाईआ। दोहां विच वसे श्री भगवान, मेहरवान आपणा डेरा लाईआ। मातलोक विच्चों दोआबा कीता प्रधान, दो जहानां वाली आपणी गोद बहाईआ। सच महिराबा इक मकान, सच महिबूब इक्को रूप वखाईआ। भागा आया श्री भगवान, बिन कदमां पन्ध मुकाईआ। चिराग़ जगाया शमादान, गुरमुख नूर कर रुशनाईआ। ग़रीब निमाणा बण के बणया आप महमान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सुण संदेस प्रभ का सच्चा, सारे खुशी मनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कहिण अच्छा, प्रभ तेरे हथ्थ वड्याईआ। गुर अवतार कहिण प्रभ जन भगत तेरा बच्चा, बचपन तेरी झोली पाईआ। जिन्हां पिच्छे लोकमात जावें भज्जा, निरवैर आपणा वेस वटाईआ। बिन मक्के काअब्यो कराएं हज्जा, करें कबूल हज्ज मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। खेल नहीं एह मेरी रीत, रीतीवान जणाइंदा। गुरमुख वेखो करदे प्रीत, जिन्हां अन्तिम अन्त लैण कोए ना जाइंदा। तुहाड्डी सिख्या गुर अवतारो पीर पैगम्बरो सारे भुल्ल गए हो गए नीच, उत्तम ज़ात ना कोए वखाइंदा। कलयुग अन्तिम जन भगतां मेरे नाल गंढु पीच, पीची गंढु ना कोए खुलाइंदा। चार जुग जो निक्की जिही रहिंदी गई झीत, जिस पिच्छे कबीर जुलाहा कूक सुणाइंदा। इस दे विच प्रभ प्रेम प्यार दी धार रखी अतीत, आर पार ना कोए नज़री आइंदा। सारे कहिण वेख वेख प्रभ जो कुछ किहा ठीक, कूड़ा कुछ नज़र नहीं आइंदा। कलयुग जीव बणे ढीठ, जूठ झूठ घट घट डेरा लाइंदा। सच नाम दी मंगे ना कोई भीख, दर भिखारी नज़र कोए ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग चौकड़ी लहिणा पूर कराइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण वाहवा, वाह वा तेरी वड्याईआ। प्रभ जू साडा चुक्कया दाअवा, दाअवेदार कोई नज़र ना आईआ। चौथे जुग दा कच्चा रहि गया आवा, साची भट्ठी तत ना कोए तपाईआ। नाता तुटा पुत्रां मावां, सच प्रीत ना कोए लगाईआ। कलयुग जीव हँस बुद्धि होई कावां, काग रहे कुरलाईआ। दरगाह साची किसे ना दिसे टिकाणा, चिट्टा काग़ज़ नज़री आईआ। अन्तिम रोवण उते रख के बाहवां, फड़ बांह पार ना कोए लगाईआ। तिन्हां गुरमुखां सद बलि बलि जावां, जो तेरा नाम ध्याईआ। जो रस्ते मल के बैठे राहवां, धर्म निशाने हथ्थ उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। गुर अवतार कहिण जिन्हां उठाए निशान,

निशाना लोकमात जणाईआ। तेरी खेल श्री भगवान, समझ साडी विच ना आईआ। असीं बण के आए काहन, लोकमात फेरा पाईआ। दीन मज़्ब बणा के आए विधान, जगत रीती मात चलाईआ। कलयुग अन्तिम सुण के इक फ़रमान, फ़ुरने सब दे बंद हो जाईआ। पैगम्बरां भुल्लया तेरा कलाम, कलमा याद रिहा ना राईआ। तैनूं वेख वड अमाम, सर सलाम रहे झुकाईआ। तेरा अगम्मी सुण पैग़ाम, पीर पैगम्बर सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करया खेल साचे हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। हथ्थ निशान सत्त रंग, रंग राता खुशी मनाईआ। जुग जन्म जिस नूं गए लँघ, पार किनारा इक्को नज़री आईआ। माणस जन्म ना होया भंग, जित्ती मात लोकाईआ। मिल सतिगुर पाया अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। दरगाह साची चढ़े चन्द, दो जहान होए रुशनाईआ। धरनी धरत धवल पई ठंड, माटी ख़ाक ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह कीती प्रभ तेरी सेवा, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग पिच्छों हथ्थ आईआ। चार युग नज़र ना आएयों वड देवी देवा, देवत सुर सब तेरा ध्यान लगाईआ। तुध बिन कोई ना देवे अगम्मी मेवा, अमृत रस ना कोए चखाईआ। साचा लाए ना मस्तक थेवा, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। किरपा करीं बिन गायां रसना जिह्वा, अन्दर वड़ के पौड़े चढ़ के मन्दिर खड़ के आपणा दरस दिखाईआ। मेहरवान प्रभ अलख अभेवा, अलख अगोचर दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। नौ निशान कहिण प्रभ मेरे मीत, तेरे चरण कँवल सरनाईआ। पंजां बिनां ना सोहे रीत, पंच पंचाइण तेरी वड्याईआ। पंजे मीत मिल गावण गीत, पंजां तत्तां देणा जणाईआ। सच सच वेखण अनडीठ, अनडिठड़ी धार पड़दा लाहीआ। जिन्हां मिल के होए ठंडे सीत, अग्नी तत नज़र ना आईआ। लेखा चुक्के मन्दिर मसीत, घर मन्दिर दर्शन पाईआ। सो देणी इक प्रीत, प्रीतीवान तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान मेहरवान बेपरवाहीआ। जगत निशानिओ रखणा याद, धुरदरगाही आप जणाइंदा। तुहाडे नाल मिल के वज्जे मेरा साज, भगतां ताल आप मिलाइंदा। एथे ओथे खुशीआं नाल भगत भगवान नाल मिल के होया काज, अग्गे विछोड़ा नज़र कोए ना आइंदा। इस तों वड्डा होर ना कोई दुआर, जिस नूं गुर अवतार पीर पैगम्बर नेत्र लोचण नैण उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दा सच विहार, लोकमात आप कराइंदा। सचखण्ड दी प्रभ ने लई सोच, गुरमुख भगत दए जणाईआ। उते चढ़ के कोई ना खोजी खोज, मंज़ल पन्ध ना कोए मुकाईआ। अन्दरों असीं सारे रहे लोच, प्रभ पड़दा दए खुल्हाईआ। निरगुण रूप हो के माणीएं मौज, रोग सोग चिन्त मिटाईआ। श्री भगवान

वड मेहरवान बैठा आप ख़ामोश, सुणी जाए चाईं चाईंआ। पहलों चार जुग दा मेट पिछला रोस, फेर अग्गे झोली दए भराईआ। पहलों आहलणयों डिगे गोदी चुक्के बोट, फिर साची चोग दए चुगाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, शब्द धुन शनवाईआ। प्रभ दा वेखो अक्खां सामृणे चोज, चोजी प्रीतम इक्को इक कराईआ। दर्शन करो नित नवित्त रोज़े विच रोज़, रोज़ा काया काअबा इक वखाईआ। आप बैठे रहो बण निर्दोष, दोषी प्रभ नूं लओ ठहराईआ। जो तुहाढ्ढे पिच्छे होया बेहोश, आप आपणा गया गंवाईआ। होर करो जे होवे रोस, रुस्सयां प्रभ मिले चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान नज़र उठाईआ। नज़र तेरी नहीं मंज़ूर, भगत साजण आख सुणाईआ। जुग चौकड़ी लारे लाउँदा रिहों ज़रूर, धोखेबाज़ रूप वटाईआ। असीं इकट्ठे हो के सारे तेरे उते लाउणा कसूर, फ़तवा इक्को इक जणाईआ। तैनूं लभ्भदे लभ्भदे होए मजबूर, तूं हथ्थ किसे ना आईआ। गल्लां बातां नाल नहीं मंगणी तेरी धूढ़, जिन्ना चिर मस्तक टिक्का आप ना लावें छाहीआ। चार जुग जे बणे रहे मूढ़, हुण मूर्ख मति देणी तेरी झोली पाईआ। जे सर्ब कला प्रभ भरपूर, क्यों बैठा पड़दा पाईआ। पिच्छे वसदा रिहों दूर, हुण अन्दर वाड़ तैनूं कुण्डा लैणा बंद कराईआ। कलयुग मिटे अन्धेरा बख़्शें आपणा नूर, नूर नुराना नूर धराईआ। तैनूं होण नहीं देणा मफ़रूर, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। श्री भगवान कहे बोल सच, आदि जुगादि सच जणाइंदा। कलयुग अन्तिम आया नठ्ठ, निरगुण हो के वेस वटाइंदा। सरगुण नाता दित्ता तज, पंज तत चोला ना कोए रखाइंदा। जन भगतो तुहाढ्ढी सेजा चढ़या सज, बहि आसण सोभा पाइंदा। तुहाढ्ढा दर्शन करां रज्ज, आपणा दरस ख़ुशीआं नाल वखाइंदा। एहो खेल पुरख समरथ, समरथ आपणी कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची इच्छया पूर कराइंदा। इच्छया प्रभ कर दे पूरी, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। सृष्टी नाता तुट्टे कूड़ी, कूड़ कुड़यारा रहिण कोए ना पाईआ। मस्तक टिक्का ला दे धूढ़ी, चरण चरणोदक मुख चुआईआ। माया ममता रहे ना कोई मगरूरी, निवण सो अक्खर दे पढ़ाईआ। आदि जुगादि साहिब दस्तूरी, तेरा हुक्म इक्को इक नज़री आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सब चुकी फिरदे भूरी, सेली टोपी आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान होए सहाईआ। सुणो भगत मेरा भगती रंग, सो सतिगुर आप चढ़ाईआ। सचखण्ड दा सच्चा चन्द, गुरमुख इक्को नज़री आईआ। परम पुरख दा अगम्मी छन्द, सन्त सुहेला गाईआ। जरम कर्म दा चुक्कया रंड, कन्त सुहागी मेल मिलाईआ। जगत दुआर जाणा लँघ, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। आपणा देवे परमानंद, निजानंद आप जणाईआ।

सब दी पूरी करे मंग, मांगत झोली दए भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान सदा सदा सहाईआ। कत्तक तिन्न कहे सुण मेरी करनी, प्रभ तेरे अग्गे जणाईआ। मेरी मंज़ल किसे ना चढ़नी, कलयुग जीव देण दुहाईआ। मेरी विद्या किसे ना पढ़नी, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे सरनाईआ। तिन्न कत्तक कहे मैं बणया कातिल, कूड़ी क्रिया कतल कराईआ। जन भगतां अन्दर धाम बणावां मुकदस्स बातन, बैतल रूप वटाईआ। माही बण के आया पातण, बेड़ा इक उठाईआ। प्रेमी हो के बणया साथन, सगला संग निभाईआ। दरवेश हो के आया आखण, उठो लोक खुदाईआ। जिस दी लभ्भी किसे ना ज़ातन, ज़ात विच किसे ना आईआ। जिस दा रूप अनोखा बातन, सो आपणा नूर करे रुशनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस नूं भाखण, भेव कहिण कोए ना जाईआ। सो प्रगट होया पुरख अबिनाशन, अबिनाशी करता वेस वटाईआ। जन भगत दुआरे पावण आया रासन, गुर अवतार पीर पैगम्बर नाल रलाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सारे जाचण, हरि जू अचरज खेल रचाईआ। जन भगत दुआरे बैठे शास्त्र सिमरत कोई ना वाचण, बिन पढ़यां हरि जू मिल्या बेपरवाहीआ। पंज वक्त ना पढ़न निमाज़न, संधया पूजा पाठ ना कोए कराईआ। गायत्री मन्त्र कोई ना आखण, जप जीव ना कोए जणाईआ। इक्को कहिण प्रभ तूं मेरा मैं तेरा दूजा दिसे जगत विनासन, अबिनाशी इक्को पुरख जणाईआ। जिस दा चढ़या सच्चा घाटन, सो घाटा पूरा दए कराईआ। अगली पिछली मेट के वाटन, आपणे नाल लए मिलाईआ। बंद कवाड़ी खोल्ह के आया झाकण, अन्दर वड़ के दरस दिखाईआ। अमृत हो के मारन आया ठाठन, सरोवर आपणा नाम जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। तिन्न कत्तक कहे मेरे उते सब ने करना गुस्सा, कलयुग गुस्से भरी लोकाईआ। सच दस्सां तां मीटण मुक्का, अग्गों रहे डराईआ। जिस ने सब दा भंनणा टोपी हुक्का, चौदां तबक दए हिलाईआ। जिस ने कलयुग अन्तिम बिन हरि नामे ख़ाली घल्लणा सुक्का, साथी नज़र कोए ना आईआ। सो साहिब शेर हो के इक्को बुक्का, भबक नाम रिहा लगाईआ। जिस ने लख चुरासी जीव जंत हुक्मे अन्दर टंगणा पुट्ठा, राए धर्म सेव लगाईआ। जिस ने लेख चुकाउणा कलयुग खाधा कुट्ठा, सो सूरबीर फेरा पाईआ। जिस ने मेल मिलाउणा गोबिन्द पुरख अकाली पुत्ता, पतिपरमेश्वर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। तिन्न कत्तक कहे मैनूं मारन पत्थर, चार कुण्ट हथ्थ उठाईआ। बौहड़ी किसे नज़र ना आवे जिस सेज वछाई सत्थर, यारड़ा इक्को ध्यान लगाईआ। जिस नूं लभ्भदे फिरदे विच्चों अक्खर, सो अक्खरां विच्चों हथ्थ किसे ना आईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया सब नूं पई कसर,

इशारीए नाल अग्गे बंदे रहे उडाईआ। जिस दे चरण वसेरा करना बसर, विछड़त लए मिलाईआ। उस नूं सारे गए बिसर, बिन भगतां नज़र किसे ना आईआ। जिस नूं कहिन्दे पिदर पिसर, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। सो फिरदा इधर उधर, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। भज्ज के आए गुरमुख वेखे जिध्धर, चारों कुण्ट खोज खोजाईआ। मिले वड्याई सब नूं वड्डी नालों बिदर, ग़रीब निमाणे रिहा तराईआ। जिस ने खेल कराई बाज़ नाल तितर, सो त्रैगुण डेरा देवे ढाहीआ। शब्दी रूप हो के बणया मित्र, जोती नूर कर रुशनाईआ। चोटी चढ़ के बैठा सिख़र, जगत सिख्या हथ्थ किसे ना आईआ। जुग चौकड़ी गुरमुखां करदा रहे फ़िकर, अन्तिम आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहर नज़र उठाईआ। बीस कहे सुण कत्तक तिन्न, डर भय ना कोए जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दे दस्स के गए चिन्नृ, सो चानण रिहा कराईआ। प्रगट होवे घड़ी पल विच छिन्न, छिन्न भंगर आपणी धार जणाईआ। जिस दो जहान चरणां हेठ लए मिण, गिणती विच कदी ना आईआ। जिस खेल रचाया रात दिन, सूरज चन्द हुक्म विच भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा पूर कराईआ। सम्मत बीस कहे ना हो दिलगीर, कत्तक तिन्न तेरी वड्याईआ। उठ वेख ज़ाहरा पीर, शहिनशाह इक्को फेरा पाईआ। जिस शरअ कटणे ज़ंजीर, खण्डा तेज कटार चलाईआ। जिस ने गुरमुख गुरसिख मेलणे अन्त अख़ीर, आपणा घर दए जणाईआ। जिस दा जलवा बेनज़ीर, नज़र नैण ना कोए तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा लहिणा दए मुकाईआ। कत्तक कहे बीस बीस मैं होया खुश, सुणया तैथों अजब हवाला। मेरा उजल करे मुख, प्रगट होया दीन दयाला। जन भगतां मेटे दुःख, घर इक वखाए सच्ची धर्मसाला। उजल करे मात कुक्ख, फड़ उठाए आपणे लाला। अगला लेखा चुक्के उलटा रुख़, दस मास करे प्रितपाला। आपणी गोदी लए चुक्क, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे मार्ग इक सुखाला। कत्तक तिन्न ना सोच विचार, प्रभ देवणहार वड्याईआ। कल कल्की लै अवतार, निरगुण आया वेस वटाईआ। दर घर साचे पावे सार, दर मन्दिर खोज खोजाईआ। जन भगतां देवे कर्ज़ उधार, पूरब लहिणा रिहा मुकाईआ। उठ ख़ुशीआं नाल गाए मंगलाचार, साडी मिल के रुत्त सुहाईआ। औह वेख गुरू अवतार, बैठे ख़ुशी मनाईआ। नेत्र खोलृ कर दीदार, पीर पैगम्बर सीस झुकाईआ। अक्ख आपणी वेख उग्घाड़, विष्न ब्रह्मा शिव झोली डाहीआ। उठ के वेख चारों तरफ़ भगतां नाल करे प्यार, भगवन आपणे रंग रंगाईआ। मिल के साचा गाया मंगलाचार, गीत इक्को इक समझाईआ। तू ही तू ही रहे उच्चार, भावें नज़र कोए ना आईआ। दोहां मिल के बणया इक निरँकार, निरगुण सरगुण दए समझाईआ। सोहँ शब्द

अगम्म अपार, बिन पुरख अकाल जाप ना कोए जपाईआ। कत्तक तिन्न सब दे अन्दर देवे वाड़, दरवाज़ा बाहरों देवे बंद कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप कराईआ। शब्द कहे मैं सुण के गल्ल, होया आप हैराना। बीस बीसा कत्तक तिन्न कर ना वल छल, मेरे नाल विच जहाना। मैं वसणहारा निहचल धाम अटल, योद्धा सूरबीर बलवाना। जुग जुग गुर अवतार पीर पैगम्बरां देवां घल्ल, साचा दे धुर फ़रमाना। कलयुग अन्तिम प्रभ दे हुक्म नाल जन भगतां अन्दर दुआरा लवां मल्ल, पिछला छड्डां आप टिकाणा। हाली बण के वाहवां हल, बीजां बीज बण किरसाणा। अमृत लावां इक्को फल, रस मिले दो जहानां। प्रभ नाल मिलण दा सब नूं दस्सां वल, इक्को मार तीर निशाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल श्री भगवाना। शब्द कहे की मेरे वस, प्रभ वड्डा वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी जो मार्ग देवे दस्स, सच सेवा सद कमाईआ। कलयुग अन्त गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे करदे अग्गे हथ्थ, झोली अग्गे रहे वखाईआ। किरपा कर पुरख समरथ, पारब्रह्म प्रभ वेस वटाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी खेड़ा हुन्दा दिसे भट्ठ, कलयुग भट्ठी अग्न तपाईआ। धीरज रिहा ना कोई जत, सति सन्तोख ना कोए रखाईआ। साधां सन्तां मारी गई मति, मुतलाशी तेरा नज़र कोए ना आईआ। काम क्रोध होए वस, माया ममता अंगन लई लगाईआ। सच दुआरयों रहे नट्ठ, आपणी पिठ वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल कहे मेरे सुत दुलारे, तेरा शब्दी रूप वटाईआ। गोबिन्द रिहा तेरे सहारे, मेरा रूप गोबिन्द आप प्रगटाईआ। पिता पूत वसे इक महल्ल मनारे, घर इक्को वज्जे वधाईआ। उठ लाडले मेरे दुलारे, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। जुग चौकड़ी दित्ते लारे, लोकमात खेल रचाईआ। कलयुग अन्तिम बीस बीसा वाजां मारे, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। वेख प्रभू तेरे भगत लाड़े, तेरा बैठे ध्यान लगाईआ। चार जुग दे रहे कुआरे, कन्त सेज ना कोए हंढाईआ। कर बेनन्ती कढ्ढण हाढ़े, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। कलयुग अन्तिम आउँदे जांदे जाड़े, सर्दी रोग सर्ब सताईआ। जिन्ना चिर ना मिलें प्रीतम प्यारे, सांतक सति ना कोए वरताईआ। आ के वेख घर हमारे, लेफ़ तलाई नज़र कोई ना आईआ। दुःख भुक्ख ने सारे साड़े, रोग सोग रहे जलाईआ। वसदे घर सर्ब उजाड़े, कुल्ली कक्ख सोभा कोए ना पाईआ। नेत्र रोवण पुरख नारे, बिरध बाल देण दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द सुत तेरी सेवा इक लगाईआ। शब्द सुत कहे सुण मेरे बाप, पुरख अक्ल तेरी सरनाया। मैनूं दस्स दे उह जाप, जिस जपयां तेरे नालों विछड़ कोई ना जाया। कोट जन्म दा उतरे पाप, जिस तेरा संदेसा देवां सुणाया। उह होवे पाकी पाक, दुरमति मैल रहे ना राया। तूं

दर्शन देणा साख्यात, निरगुण आपणा वेस वटाया। मैं तेरे नाम दी दस्सां गाथ, सोहँ ढोला इक पढ़ाया। तूं मेरी बणौणी जमात, चार वरन संग रलाया। मैं तेरा दस्सां हालात, धुर दा भेव इक खुल्हाया। श्री भगवान कहे सुण मेरी बात, सच सुनेहड़ा इक जणाया। मैं अमृत देवां आबे हयात, रस इक्को इक चुआया। तूं जा के गुरमुखां गुरसिखां साचे सन्तां भगतां आख, निहकलंक कल निरगुण नूर जोत करे रुशनाया। अन्तिम तुहाढ्ढी पुच्छे वात, अन्तिम आपणा फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, धुर संदेस इक सुणाया। शब्द सुत कहे मैं सुणाउँदा हां। उच्ची कूक कूक अलाउँदा हां। सन्त भगत इकट्ठे आप कराउँदा हां। गुरमुख गुरसिख नाल मिलाउँदा हां। तेरा धर्म निशान इक वखाउँदा हां। नवां खण्डां खोज खोजाउँदा हां। सत्तां दीपां पड़दा लौंहदा हां। गुरमुख साचे फड़ जगाउँदा हां। गोबिन्द मेला सच मिलाउँदा हां। पंचम रंग बसन्त चढ़ाउँदा हां। नारी पुरुष इक्को माण दिवाउँदा हां। सज्जे खब्बे आप रखाउँदा हां। लग्गे बद्धे गुर अवतार बणाउँदा हां। पीर पैगम्बर तेरी सेवा लाउँदा हां। विष्न ब्रह्मा शिव फिरन भज्जे, धुर दा हुक्म आप मनाउँदा हां। शास्त्र सिमरत वेद पुराण होवण नंगे, सब दा पड़दा अन्त उठाउँदा हां। तेरे दर तों सब कोई इक्को वार मंगे, साची सिख्या इक समझाउँदा हां। कत्तक तिन्न वजा मृदंगे, नगारा इक्को राग वखाउँदा हां। पिच्छे जुग चौकड़ी जो लँघे, एन्हां विच्चों गुरमुख आप मिलाउँदा हां। चाहे चंगे चाहे मंदे, प्रभ तेरी झोली पाउँदा हां। तेरे नाल प्रीती हंढ्ढे, दूजा इष्ट ना कोए वखाउँदा हां। तेरा अमृत करे ठंडे, अठसठ नहावण ना कोए नुहाउँदा हां। जो ना तैनूं वेखण उह दो जहानां अन्धे, ओन्हां दोज़ख़ विच भवाउँदा हां। लख चुरासी आंडे गंदे, राए धर्म कोलों भंनाउँदा हां। तुट्टी लोकमात कोई ना गंढ्ढे, जून अजूनी वंड वंडाउँदा हां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरे विछड़े तैनूं मिलाउँदा हां। शब्द सुत तैनूं माण दिवावांगा। तेरे मेले आपणे रंग रंगवांगा। गुर चेले इक्को घर वसावांगा। सज्जण सुहेले सचखण्ड दुआरे लै के जावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आप आपणा लेखा आपे पूर करावांगा। सुण के शब्द श्री भगवान, गुर अवतार लैण अंगड़ाईआ। प्रभ जी इक्को वार क्यों दित्ता सब नूं दान, तेरी भगती करदा नज़र कोई ना आईआ। असीं जो लिखदे आए ज्ञान, साडा ज्ञान कोई समझ सके ना राईआ। तेरा अनोखा वेख्या विधान, वाधा आपणे हथ्थ रखाईआ। साडे नैण वेख शरमाण, पलक सके ना कोए उठाईआ। करें की खेल मेहरवान, करता हुक्म की वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सच रिहा दृढ़ाईआ। तख्त बैठा आप मालक, पुरख अबिनाश वड्डी वड्याईआ। जिस रचन रचाई बण के ख़लक

ख़ालक, सो मख़लूक वेखे बेपरवाहीआ। जिस दे हथ्थ धुर दी अदालत, सो अदल इक्को इक रिहा कमाईआ। आदि जुगादि जो रहे सही सलामत, साहिब सतिगुर सच्चा माहीआ। उह गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दी कोई ना लए ज़मानत, मेहर नज़र कर बरीख़ाने विच्चों बरी आप कराईआ। प्रभ सच्चे नूं नहीं ममानत, जिउँ भावे तिउँ लए चलाईआ। जन भगतां बिन करनीउँ आपणा नाम देवे अमानत, बंद ताकी खोल्ह अन्दर दए टिकाईआ। हुक्म नाल सब नूं करे ममानत, ठग्ग चोर यार अन्दर लँघ कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां रिहा समझाईआ। गुर अवतार पीर पैग़ंम्बरो तुसां मेरी रखी ओट, लोकमात फेरा पाईआ। मेरी धार लै के निरगुण जोत, सरगुण करी रुशनाईआ। शब्द लग्गी अगम्मी चोट, तन नगार रबाब वजाईआ। हथ्थ जोड़ मंगदे रहे मोख, ध्यान इक्को इक लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल दए समझाईआ। गुर अवतार तुसीं मेरे वस, जुग चौकड़ी सेव कमाईआ। जीवां जंतां मार्ग दस्स, मेरा राह वखाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगटे इक पुरख समरथ, प्रभ आपणा फेरा पाईआ। उह कीहदा राह देवे दस्स, सब दा मालक आप अख्वाईआ। किस दे अग्गे डाहवे हथ्थ, मंगण किस दुआरे जाईआ। जिस ने सब दी कराई बस, बसता बन्न्ह के अग्गे पिच्छे लए लाईआ। सो मेहरवान जिस वल मेहर नज़र कर के पए हस्स, तिस दो जहानां पन्ध मुकाईआ। जिस छोहे नाल हथ्थ, तिस मिले माण वड्याईआ। जिस मस्तक चरण कँवल देवे रख, तिस आपणी जोत जोत समाईआ। जिस दे घर दुआरे आवे नठ्ठ, उस दे गुर अवतार पीर पैगम्बर रल के सारे जस लओ गाईआ। एह वेला फेर नहीं आउणा हथ्थ, कठ्ठयां सब नूं दित्ता कराईआ। चार युग दा वारी वारी गाया जस, सो ढोला इक्को वार सुणाईआ। जन भगतां मिल के लओ आपणा रस, रस इक्को इक जणाईआ। बाहर कोई ना जावे नस्स, डोरी आपणे हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लोकमात वेस वटाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण पुरख समरथ, तेरे हथ्थ तेरी वड्याईआ। असीं खुशी होए तेरा सुण के जस, गुरमुख सारे तैनूं रहे ध्याईआ। ना कोई पूजा ना कोई पाठ, ना कोई इष्ट देव मनाईआ। तेरे चरण जोड़ के नात, आपणा साक सज्जण बैठे बणाईआ। एह नहीं सुणदे किसे दी बात, आपणी समझ बैठे गंवाईआ। इक्को तेरा दर्शन रहे झाक, झाकी आपणी बैठे मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तेरा विछोड़ा रहिण ना पाईआ। श्री भगवान कहे मैं की दस्सां, वस मेरे कुछ नज़र ना आईआ। भगतां कोलों किधर नट्ठां, राह खैहड़ा बैठे बंद कराईआ। जे एन्हां तों पिच्छे हटां, मेरी दो जहान वज्जे ना कोए वधाईआ। जे एन्हां दे अन्दर वसां, वेख वेख सड़ के मरे लोकाईआ।

जे भगतां दी चरणीं ढहां, तां आपणी खुशी विच्चों प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पीर पैगम्बरां रिहा समझाईआ। पीर पैगम्बर कहिण प्रभू तेरा खेल अपार, परवरदिगार समझ कोए ना आईआ। असीं मन्नदे रहे तूं साडा यार, दूजी यारी ना किसे लगाईआ। सानूं दस्सदा रिहों गुफ़तार, कलमा कलाम इक पढ़ाईआ। असीं बोलदे रहे नाल ज़बान, काग़ज़ कलम कर लिखाईआ। दरोही कलयुग अन्तिम वेख के होए हैरान, हैरानी सब दे उते छाईआ। बिन भगतां रंड जापे भगवान, भगवन सरन कोई ना जाईआ। सारे ख़ाली दिसदे मसीत मन्दिर मकान, शिवदुआले मढ रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल की वरताईआ। गुर अवतारो की वरते खेल, हरि सतिगुर आप जणाईआ। जन भगतां धक्के नाल मैनूं ल्या मेल, लोकमात आपणा बल प्रगटाईआ। सारे कहिण साथों झल्ली नहीं जांदी कूड़ी जेल, बिन तेरे चैन कोए ना आईआ। दर तों सके ना कोई धकेल, कट्ठे हो के बैठे डेरा लाईआ। चार जुग दी कहाणी कथा वारता थीऊरी होई फ़ेल, फ़ैसला आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा वेस रिहा वटाईआ। प्रभ वेस वटावें क्यों, गुर अवतार रहे जणाईआ। प्रभ सीस निवावें क्यों, बेपरवाह तेरी वड्डी सच्ची शहिनशाहीआ। प्रभू गुरमुखां नाम ध्यावें क्यों, आदि जुगादि सब तेरा ढोला गाईआ। प्रभू साचे सन्तां संग निभावें क्यों, निरगुण सरगुण आपणी प्रीत लगाईआ। प्रभ गुरमुखां मेल मिलावें क्यों, दो जहानां पन्ध मुकाईआ। प्रभ गुरसिखां रंग चढ़ावें क्यों, रंग अगम्मड़ा आप रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा दे सच वर, भेव अभेदा दे खुल्हाईआ। भगतां मेला कारण एस, बिन भगतां मेरी करे ना कोए वधाईआ। सन्तां वसावां इक देस, जिस घर आपणा डेरा लाईआ। गुरमुखां देवां आपणी टेक, बिन गुरमुखां मेरा संग ना कोए निभाईआ। गुरसिखां देवां बुध विवेक, बिन विवेकी बुध मेरी समझ किसे ना पाईआ। एसे कर के धरां भेख, नित नवित्त वेस वटाईआ। जुग चौकड़ी लिखदा रिहा लेख, कलयुग अन्तिम पूर कराईआ। सन्त भगत गुरमुख गुरसिख आपणे नाल भेज, लोकमात जन्म दवाईआ। खुशीआं नाल ओन्हां अन्दर वड़ के हंढावे सेज, कमलापती सोभा पाईआ। गुरमुख नारी ख़ुश होए वेख, चाउ घनेरा इक प्रगटाईआ। एहो प्रभ दा सच्चा हेत, आदि जुगादि जुग चौकड़ी आपणी कार कमाईआ। अग्गे फिर समझ नहीं औणी खेड, पिछला लेखा पढ़ पढ़ सारे सिर लैण हिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल हरि रघुराईआ। तिन्न कत्तक कहे मैं सब नूं वेखां, कवण दुआरे डेरे लाईआ। वीह सौ वीह कहे मैं सब नूं पेखां, नैण अक्ख खुल्हाईआ। शब्द कहे मैं सब नूं करावां चेता, गुर अवतार पीर पैगम्बर भुल कोए ना जाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण साडा पूरा

६३३ १५

करन आया लेखा, जो लिख लिख मात दे के आए गवाहीआ। भगत कहिण प्रभ साडा बण के आया नेता, निरगुण निरवैर फेरा पाईआ। सन्त कहिण साडा विसरया अजे ना एहनूं चेता, पिछली कहाणी याद कराईआ। गुरमुख कहिण सानूं बणावण आया बेटा, पिता गोबिन्द नाल मिलाईआ। गुरसिख कहिण सद बण के आया खेवट खेटा, बेड़ा बन्ने दए लगाईआ। श्री भगवान कहे मेरा अवल्लड़ा वेसा, समझ कोए ना पाईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतार पीर पैगम्बर जो बोली उते मैथों लैंदे रहे ठेका, अन्तिम सब दी मुणयाद पूर कराईआ। बाकी ओट होर कोई नेत्र नैण ना पेखा, ख़ाली दुआरा नज़र कोए ना आईआ। सब दा पूरा कीता हिस्सा, किस्सा कहाणी दिती मुकाईआ। अग्गे चलाए आपणा सिक्का, सिध्धी तरा समझाईआ। जिस नूं कहिन्दे प्रभ जू निक्का, सो वड्डा वडी दए वड्याईआ। अग्गे किसे नूं लभ्भे ना विच्चों पत्थरां इट्टां, जल विच्चों नज़र किसे ना आईआ। जिस मिले तिस काया किता, ख़िता इक्को इक वखाईआ। बाकी रस करे फिका, रस देवे नाम वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वड्याईआ। तिन्न कत्तक कहे वेखो मैं बड़ा दलेर, सारे मैनूं दयो वधाईआ। वीह सौ वीह कहे मैं लयांदा घेर, जेहड़ा काबू किसे ना आईआ। जन भगत कहो असां फड़या शेर, जिस दी भबक कोई झल्ल ना सके राईआ। हरिसंगत कहो भाग लग्गा पिण्ड हेर, जिथ्थे गुरमुख लाल आसण लाईआ।
जिस गज नाल कर के आपणी मेहर, मेल मिलाया सहिज सुभाईआ। दोआबे विच्चों गुरमुखां बांहों फड़ के लहिणा दित्ता निबेड़, देणा कोए रहिण ना पाईआ। अग्गे ना कोई झगड़ा ना झेड़, झंजट धर्म राए ना पाईआ। बांहों फड़ के कड्डे कर के सारे लए नखेड़, आपणे अग्गे लाईआ। एहो प्रभ दा अगम्मी गेड़, समझ सोच सके कोई ना राईआ। लख चुरासी जीव जंत नौ खण्ड पृथ्मी दिसे अन्धेर, गुरमुख घर विच बैठे दीप जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। कत्तक तिन्न नहीं तेरी वड्याई, सो साहिब आप जणाइंदा। जन भगतां लग्ग निउँ निउँ पाई, जिन्हां मिलण हरि जू फेरा पाइंदा। वीह सौ वीह उठ गा वधाई, तेरा लेखा लेखे लाइंदा। करे खेल बेपरवाही, बेपरवाह आपणा वेस वटाइंदा। जन भगतां रंग रिहा रंगाई, बण ललारी साचे चोले आप रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराइंदा। सारे कहिण प्रभ असीं नहीं मन्नदे, सच सच जणाईआ। तेरे खेल वल छल दे, जुग चौकड़ी धार बंधाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो संदेसे घल्लदे, लोकमात नाद सुणाईआ। सो सारे तेरे कोलों डरदे, तेरा भय वखाईआ। की कारण तेरे पिच्छे दीन मज़्हब लड़दे, की तैनूं वंडयां हथ्थ विच आईआ। लख चुरासी जीव जंत तेरे बरदे, क्यों बैठा मुख भवाईआ। आपणी मेहर आपे कर दे, मेहरवान तेरी शरनाईआ।

दोए जोड़ हाढ़े कढ्डुणे, हौका लै लै रहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। मंगी मंग सच दर, सो पुरख निरँजण आप जणाया। गोबिन्द मंगया अन्तिम वर, धुर संदेसा इक अल्ाया। पुरख अकाल तेरा पल्लू ल्या फड़, फड़या पल्लू ना कोए छुडाया। कलयुग अन्तिम आउणा नरायण नर, नर हरि आपणा हुक्म वरताया। सम्बल नगर बहिणा वड़, साचा मन्दिर सोभा पाया। साचा डंक वजाउणा चढ़, शब्दी खण्डा हथ्थ चमकाया। तेरा मेरा इक्को दर, दुआरा इक्को नज़री आया। तूं किरपा देणी कर, मैं खेलां खेल सबाया। सृष्ट सबाई अन्दर वड़, घट घट आपणा आसण लाया। गुरमुख गुरसिख लवां फड़, जग विछड़े जोड़ जुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सच तेरी सरनाया। गोबिन्द तेरे हथ्थ नहीं उह ताकत, गोबिन्द गोबिन्द आप जणाईआ। पंजां प्यारयां कर स्वागत, जो तेरा नूर नज़री आईआ। पहलों एन्ां नाल हो मुख़ातब, तुआरफ़ आपणा दे जणाईआ। फेर कर जगत अदालत, दर साचे नाल बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। पंज प्यारे वेखां रूप, आप आपणा नूर प्रगटाईआ। अन्दर बण के साचा भूप, बाहर जगत खेल वड्याईआ। ताणा पेटा इक्को सूत, इक्को रंग रंगाईआ। डंक वजा चार कूट, दहि दिशा करां शनवाईआ। कूड़ी क्रिया जूठ झूठ, माया ममता डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सच सुनेहड़ा इक सुणाईआ। पंज प्यारे बोलण गुस्से, आपणा बोल जणाईआ। तेरे नालों असीं रुस्से, क्यों ढय्या बैठों मुख भवाईआ। तेरे बिनां सानूं कोई ना पुच्छे, मिले ना माण वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कुट्ठे, पुट्ठी खल्ल लई लुहाईआ। तेरे नालों प्रीती कदे ना तुट्टे, एहो मंग मंगाईआ। साहिब सतिगुर स्वामी तुठे, तेरे अग्गे अरदास सुणाईआ। पंजां नाल पंच विकार कर सुच्चे, सूचम इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरे चरण सीस निवाईआ। चरण सीस निवाया तेरे, प्रभ मंगे मंग एक। साडे मन चाउ घनेरे, मिली साची टेक। दूर दुराडे आए नेरे, गुर सतिगुर लए पेख। भाग लगाया घर दे खेड़े, घर घर विच दित्ता भेत। पंजां उते जो कीती मेहरे, मेहरवान कर किरपा आप वेख। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, आपणे पूरे करदे लेख। लेख पूरे कर करतार, पंचम मंग मंगाईआ। गोबिन्द बणया नाल भिखार, भज्जया इक्को चाईं चाईंआ। जिस वेले लएं कल कल्की अवतार, कल कल्की वेस वटाईआ। शब्दी डंक वजा सतार, दो जहान करें शनवाईआ। चार जुग दे विछड़े देवें तार, फड़ बांहों गले लगाईआ। गोबिन्द कर्ज़ा दएं उतार, धुर दा लहिणा झोली पाईआ। पंजां

देवें इक प्यार, पंजम लेखा दएं समझाईआ। सचखण्ड दा तेरा सच विहार, सति सतिवादी तेरी सच्ची शहिनशाहीआ। सतिजुग तेरी खेल अपर अपार, बिन सति पुरुषां नज़र किसे ना आईआ। तेरा सोहणा लग्गे दरबार, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। जिथ्थे भगत रहिण चोबदार, दूजा नज़र कोए ना आईआ। इकीआं देणा धुर दा माण, माण आपणे नाल बणाईआ। जिन्हां हथ्थ होण निशान, निशाने तेरे नाम झुलाईआ। उपर लेख होवे सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जै जैकार संगत ढोला गाईआ। गोबिन्द सूरा सेवा करे आण, दर साचे अलख जगाईआ। पंज प्यारे फेर खुशी मनाण, इकीआं बेड़ा लएं तराईआ। आपणा बणाएं इक विधान, जिस दी समझ किसे ना आईआ। लिख के सृष्ट सबाई दएं ज्ञान, अक्खर अक्खरां नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा सीस हथ्थ टिकाईआ। साचा सीस बन्ह्रे चीरा, चार जुग तेरी वड्याईआ। लख चुरासी विच्चों उत्तम हीरा, गुरमुख तेरा नज़री आईआ। जिस दी बदली आप तासीरा, माता दुध तासीर रहिण ना पाईआ। की होया जे रविदासे दित्ता इक कसीरा गुरमुख तेरे कोटन कोटि कंगण रहे हंढ्ढाईआ। की होया द्रोपती दित्ता इक लीड़ा, तेरे भगत कोटन कोटि चीर चरणां हेठ दबाईआ। की होया प्रहिलाद कटी भीड़ा, तेरे हरिजन कोटन कोटि जुग जन्म दे लेखे रहे मुकाईआ। की होया कबीर कटया ज़ंजीरा, तेरे गुरमुख शरअ शरायती सारे डेरे रहे ढाहीआ। की होया नामे छप्पर छाया गुणी गहीरा, कलयुग आपणे भगतां भगत दुआर दित्ता बणाईआ। की होया तैनूं मन्नदे रहे पीर फ़कीरा, सयदे कर कर जगत मनाईआ। की होया तेरे पिच्छे कटदे रहे भीड़ा, पुट्ठीआं खल्लां रहे लुहाईआ। की होया तेरे पिच्छे डुब्बदे गए नीरा, उच्चे टिल्ले पर्बत धक्के लाईआ। प्रभ साथों कलयुग अन्तिम सिख्या ना जाए कोई तकबीरा, तसबी माला हथ्थ ना कोए उठाईआ। हो के वड्डा पीर ज़ाहरा, क्यों निक्कीआं निक्कीआं गल्लां विच दएं भवाईआ। जे इक्को तेरा लाए नाअरा, पिच्छे रहि की जाईआ। तूं दो जहानां वसें बाहरा, घर साचे सोभा पाईआ। तेरा महल अटल उच्च मनारा, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। जिस दा बणयो प्रीतम प्यारा, सो प्रीत किस दे नाल होर लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सरन तेरी सरनाईआ। साची सरन इक जणावांगा। इकीआं इक्को माण दिवावांगा। धुर दी लिखीआं पूर करवांगा। निक्कीआं निक्कीआं गल्लां मिटावांगा। संसार सारे दी सखीआं, इक्को सखी विच छुपावांगा। लहिणा चुका मुनीआं ऋषीआं, लेखा आपणा इक दृढ़ावांगा। धुरदरगाहों दे के भेजां चिट्ठीआं, गुर अवतारां सेव लगवांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, रूहां अपणीआं आपे जितीआं, अन्तिम आपणे विच मिलावांगा। सच दस्स की तेरा विहार, हरि जू की तेरी चतुराईआ। इक्कीआं नाल की करें

कार, करते पुरख भेव देणा खुल्हाईआ। दर ते मंगीए बण भिखार, भिखक झोली देणी भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। इक्कीआं दया कमावांगा। चीरे सब दे सीस बन्हावांगा। जुग जन्म दे विछड़े वीरे, आप मिलावांगा। प्रेम प्यार दे बन्ह कलीरे, हथ्थीं मैंहदी रंग चढ़ावांगा। लेखा चुका शाह हकीरे, सच महल्ल आप बिठावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे खेल खलावांगा। प्रभ चीरे कवण बंधावेंगा। की आपणा हुक्म वरतावेंगा। साचा रूप की समझावेंगा। चारों कुण्ट की जणावेंगा। सच बैकुण्ठ की जणावेंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, किस घर आपणा भेव चुकावेंगा। भगत दुआरे भेव चुकावांगा। चीरे सत्त रंग रंगावांगा। तिन्हां इक्को रंग चढ़ावांगा। सत्त लोक दी सत भूमिका, गुरमुखां चरणां हेठ दबावांगा। हुण वेला रिहा नहीं सौण दा, खुशीआं हो के सोहणी वस्त झोली पावांगा। लेखा चुक्कणा वक्त नजूम दा, धुर हुक्म इक सुणावांगा। खैहड़ा छुट्टे कूड़े कानून दा, सच कानून इक बणावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची सिख्या इक दृढ़ावांगा। सत्त रंग दे चीरे इक्की, तिन्न तिन्न मिले वड्याईआ। सत्त दीप दी साची सिक्खी, हरि सतिगुर दए बणाईआ। जिस दा भेव ना जाणे कोई मुनी रिखी, शास्त्र सिमरत वेद पुराण भेव कोए ना पाईआ। एह खेल करे अनडिठी, जो गोबिन्द गया समझाईआ। परवरदिगार हरि की जाणे चिठ्ठी, वाचण वाला वाच सके ना कोई राईआ। एहो धार अगम्मी तिक्खी, चीर फाड़ सर्ब कराईआ। वेख वखाए बिक्रमी मिती, बीस बीस खुशी जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, चार कत्तक साढे नौ वजे अगला देवे फेर ब्यान, कलमबंद दए कराईआ।

✪ ४ कत्तक २०२० बिक्रमी लाल सिँघ दे गृह पिण्ड हेर ज़िला जलन्धर ✪

साचा चीरा रखे सिर, श्री भगवान दए वड्याईआ। भगत भगवान बणाए धिर, धुर दा मेला मेल मिलाईआ। कर के कौल ना जाए फिर, कीता कौल तोड़ निभाईआ। सृष्ट सबाई दिसे होया चिर, प्रभ दा घड़ी पल नज़र कोए ना आईआ। नव नौ चार पिच्छों आया आपणे पिड़, बेपरवाह फेरा पाईआ। चार जुग दी पिछली फुलवाड़ी गई खिड़, पत डाल्ही आप महकाईआ। अमृत मेघ झिरना रिहा किर, बूँद स्वांती इक चुआईआ। हरिजन देवे घर थिर, थिर घर इक्को इक समझाईआ। कूड़ी क्रिया गेड़ा जावे गिढ़, गेड़नहार आप भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ।

साचा चीरा देवे बन्न्, बन्दना इक्को इक समझाईआ। कर प्रकाश नेत्र अन्न्, जोती नूर नूर रुशनाईआ। धर्म दुआर दा सच्चा चन्न, साहिब सतिगुर आप चमकाईआ। कूड़ी क्रिया मेट वासना मन, ममता मोह दए गंवाईआ। नाम अमोलक दे के धन, सच ख़ज़ाना हथ्थ फड़ाईआ। जगत विकारा लाए डंन, इक्को रंग दए चढ़ाईआ। लेखा जाणे जननी जन, भेव अभेद आप खुल्हाईआ। कर वसेरा बिन छप्पर छन्न, साचा मन्दिर दए सुहाईआ। गीत गावण गंधर्ब गण, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, मेहर नज़र उठाईआ। चीरा बन्न्हे सीस समरथ, देवे माण वड्याईआ। महिमा जणाए बोध अगाध अकथ, लेखा लिख्त समझ कोए ना पाईआ। पूरब लहिणा देवे हथ्थ, लेखा सब दा पूर कराईआ। अगला मार्ग इक्को दस्स, दो जहान दए समझाईआ। निरगुण हो के सरगुण वस, सरगुण निरगुण हुक्म चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल सच्चा शहिनशाहीआ। बन्न्हे चीरा दीन दयाल, दयानिध वड्डी वड्याईआ। सच दुआरा सोहे सच्ची धर्मसाल, घर साचे ख़ुशी मनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वजावण ताल, तलवाड़ा वज्जे शहिनशाहीआ। सृष्ट सबाई दो जहान सारे होण खुशहाल, खुशी आपणा रंग रंगाईआ। जगत भुख्यां निकले काल, दुखियां दर्द दए गंवाईआ। मुरीदां पुच्छे आ के हाल, मुर्शद दाता फेरा पाईआ। गुरमुखां वसे आप नाल, सच्चा संग निभाईआ। शब्द बणाए इक दलाल, सौदा आपणे हट्ट विकाईआ। लेखा चुका शाह कंगाल, रंग इक्को इक चढ़ाईआ। हकीकत दे हक़ हलाल, हालत सब दी फोल फोलाईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जीवण जुगत दए जणाईआ। जन्म जन्म दी लेखे लाए घाल, कीती घाल झोली पाईआ। फल लगाए सच्चे डाल, पत डाल्ही सोभा पाईआ। लख चुरासी विच्चों भाल, बवन्जा बवन्जा वेखे सहिज सुभाईआ। दर दुआर खेल कमाल, पंज पंज वेस करे कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार इक वड्याईआ। बन्न्हे के चीरा सिर ते सोहणा, सोहणी बणत बणाईआ। जन भगतां जोगां आपे होणा, होणी भगतां चरणां हेठ रखाईआ। साची सेजा चढ़ के सौणा, गुरमुख अन्तर आत्म डेरा लाईआ। प्रेम प्रीती नाल मोहणा, मोहणी रूप ना कोए वखाईआ। कूड़ी क्रिया फड़ के कोहणा, खण्डा खड़ग नाम चमकाईआ। पंच विकारा नेड़ ना छोहणा, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। गुरमुख गुरसिख अन्त काल कदे ना रोणा, रोंदयां हस्सदयां आपणी गोद बहाईआ। अन्दर वड़ के डूंघी भँवरी सब दी टोहणा, मेटे लग्गी सर्ब छाहीआ। साचा बीज इक्को बोणा, बण किरसाणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान वड्डी वड्याईआ। चीरा बन्न्हे के वेखे लोक परलोक, दो जहानां खेल जणाइंदा। आदि जुगादि जिस दी ओट, ओड़क आपणा पड़दा लाहइंदा। कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती

जाता डगमगाइंदा। भाग लगाए अगम्मी कोट, साचा मन्दिर इक सुहाइंदा। जन भगतां कट संसा रोग, सोग चिन्ता आप मिटाइंदा। धुर दा देवे इक्को जोग, जोगीशर आपणे नाल मिलाइंदा। मेल मिलावा धुर संजोग, जगत विछोड़ा पन्ध मुकाइंदा। अन्तर आत्म दे के चोग, आसा तृष्ना पूर कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे आप वडियाइंदा। चीरा बन्नृ के सिर ताज, तख्त निवासी दया कमाईआ। देवणहारा धुर दा दाज, शाह पातशाह बेपरवाहीआ। पंज तत काया कर के काज, निरगुण निरगुण सोभा पाईआ। सरगुण मार इक आवाज़, शब्दी तार सितार हिलाईआ। करे खेल गुरू महाराज, महिमा अकथ कथी ना जाईआ। ग़रीब निमाणयां लए निवाज़, निवाज़श आपणे हथ्थ रखाईआ। कल्गी तोड़ा सोहवे सिर ताज, दो जहानां हुक्म वरताईआ। शब्द अगम्मी इक्को बाज़, ब्रह्मण्ड खण्ड फिराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल हरि रघुराईआ। बन्नृे चीरा रंग अनोखा, सो साहिब सतिगुर आप रंगाईआ। कलयुग अन्त जन भगतां नाल करे ना धोखा, साची लग्गी तोड़ निभाईआ। जुग चौकड़ी दा लेखा लेख पूरा करके पोथा, पुस्तक आपणी ना कोए बणाईआ। जिस दे नाल चार वरन करे कोई ना रोसा, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। चार दीवारी लभ्भे कोई ना कोठा, घर विच घर एका दर वखाईआ। जिथ्थे साहिब सतिगुर सोता, सोवत जागत आपणी धार वखाईआ। भेव खुल्हाए लोक परलोका, दो जहान पड़दा लाहीआ। नाम सुणाए इक श्लोका, सोहँ ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। सुण के चीरे चढ़या चा, प्रभ देवणहार वड्याईआ। दोए जोड़ प्या सरना, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। प्रभ मेरा लहिणा दे बता, की मेरी चतुराईआ। मैं कच्चा तन्द हथ्थ लग्गा आ, शहिनशाह तेरी सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। मेहरवान श्री भगवाना, भेव अभेद खुल्हाईआ। तेरा खेल जगत महाना, चौकड़ी तेरा राह तकाईआ। आदि पुरख जिस वेले शब्द सुत बद्धा गाना, हरि सच प्रीती डोरी पाईआ। इक तों हो के दो दोहां रूप नौजवाना, ना मरे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरगुण वंड वंडाईआ। निरगुण पिता निरगुण पूत, निरगुण देवणहार वड्याईआ। निरगुण धागा निरगुण सूत, निरगुण ताणा रिहा तणाईआ। निरगुण खेल करे अवधूत, ततव तत ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा लहिणा दए जणाईआ। साचा लेखा दस्स भगवन्त, तेरे अग्गे इक अरदास। किस बिध वड्याई देवें विच जीव जंत, लोकमात करें खेल तमाश। तेरा भेव ना जाणा आदि अन्त, शाह पातशाह पुरख अबिनाश। जोती जोत सरूप हरि,

६३६
१५

६४०

१५

आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, करां बेनन्ती तेरे पास। ठाकर स्वामी बोल एक, एकँकार आप जणाईआ। जिस वेले शब्द सुत बंधाई टेक, थिर घर दिती माण वड्याईआ। निरगुण हो के निरगुण पूत जाया एक, सुत दुलारा रूप वटाईआ। निरवैर हो के खोल्लया भेत, पड़दा आप उठाईआ। तूं मेरा मैं तैनूं लवां वेख, दूजा नज़र कोए ना आईआ। रूप रंग ना कोई रेख, ततव तत ना कोए जणाईआ। प्रेम प्रीती बद्धा हेत, हित आपणा आप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा भेव दए समझाईआ। साचा भेव दस्से निरँकार, निरगुण आपणी दया कमाईआ। सुत शब्द नाल जो होया प्यार, प्रेम प्रीती आप बणाईआ। दोहां विच जो दिसे अगम्मी धार, सो ताणा पेटा सूत्र रूप वटाईआ। बिन शब्द प्रभ किसे ना बद्धी सिर दस्तार, हथ्थ चीरा ना कोए उठाईआ। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, कलयुग अन्तिम वेला आईआ। सो शब्द गुरू कर तैयार, पंज तत चोला नाता दित्ता तजाईआ। प्रगट कर आप करतार, करता पुरख रिहा समझाईआ। जिवें मैं तेरे नाल कीता प्यार, आदि दिती माण वड्याईआ। तूं अन्तिम कलयुग खेल कर निराकार, निरगुण निरवैर रिहा समझाईआ। मेरे भगतां दे दीदार, लोकमात खुशी वखाईआ। सति धर्म दी लै दस्तार, दस्त आपणे हथ्थ उठाईआ। जिस दा जुग चौकड़ी कोई ना जाणे विहार, समझ समझ विच्चों किसे ना आईआ। सो खेल करे अगम्म अपार, अपरम्पर आपणी धार चलाईआ। दो इक दा मेला कर संसार, दूआ एका जोड़ जुड़ाईआ। निरगुण सरगुण हो तैयार, सरगुण निरगुण विच समाईआ। निरगुण विच्चों निरगुण होए बाहर, एका आपणा अंक बणाईआ। दो इक दा सच विहार, सति सतिवादी आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान दया कमाईआ। शब्द सुत फड़ साचा चीरा, पारब्रह्म प्रभ आप जणाईआ। जिस दे नाल बदल जाए सर्ब तासीरा, पिछला लेख रहिण ना पाईआ। नज़री आए वड पीरन पीरा, बेपरवाह मिले सरनाईआ। लेखा चुक्के शाह हकीरा, शहिनशाह इक्को रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल आप कराईआ। साचा खेल करे गोबिन्द, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। चीरे तेरी लाहे चिन्द, चिन्ता नज़र कोए ना आईआ। पुरख अकाल दी इक्को बिंद, शब्दी सुत अख्वाईआ। जिस दा खेल कोट ब्रह्मण्ड, ब्रह्मांड रिहा समाईआ। जिस धार उपाई जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज धार प्रगटाईआ। सो खेल करे सरबँग, सूरबीर सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप जणाईआ। साची करनी गुरदेव स्वामी, हर घट वासी आप जणाइंदा। आदि पुरख प्रभ अन्तरजामी, भेव अभेदा भेव खुलाइंदा। जिस नूं पहुंच ना सके कोई बाणी, कलमा कलाम

समझ कोए ना पाइंदा। सो करे खेल शहिनशाह सुल्तानी, हुक्म हरि जू आप वरताइंदा। देवणहारा धुर फ़रमानी, सच संदेसा इक अलाइंदा। सुत दुलारा नौजवानी, शब्दी पूत उठाइंदा। तेरा लेखा दो जहानी, निरगुण निरवैर आप समझाइंदा। साची सेवा इक समझानी, सिख्या इक्को इक दृढ़ाइंदा। भगतां देणी धुर निशानी, वस्त अमोलक तेरी झोली पाइंदा। मैं तेरे उते करी मेहरवानी, तेरे उत्तों जन भगतां मेहरवान रूप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। शब्द कहे मेरे सतिगुर प्यारे, परम पुरख तेरी सरनाईआ। मैं वेखां तेरे सच विहारे, विवहारी तेरा संग रखाईआ। किरपा कर आप निरँकारे, निरगुण तेरी इक सरनाईआ। गुरमुख दस्स मात प्यारे, जिन्हां मिले माण वड्याईआ। श्री भगवान कहे पुकारे, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। जिन्हां नाम दे लेखे उते चाढ़े, सो इक्को रूप नज़री आईआ। हरिसंगत विच ना कोई चंगे ना कोई माढ़े, उच्ची नीवीं वंड ना कोई वंडाईआ। करे खेल आप करतारे, करता पुरख बेपरवाहीआ। पुरख अकाल जन भगत सदा रखे प्यारे, बण सोतीली माँ वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरी सच सरनाईआ। सुण सुत मेरे लाडले पूत, पिता पुरख आप जणाईआ। मेरा प्रेम धागा सूत, वटणा इक्को नाम चढ़ाईआ। साचा ताणा तणया बिन काया कलबूत, तन्दी डोरी नाल बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या आप समझाईआ। सुत दुलारा कहे प्रभ मेरे ठाकर, तेरी ओट इक तकाईआ। मैं कलयुग वेख्या डूंघा सागर, रुढ़दी जाए सर्ब लोकाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी दिसे ना कोई सौदागर, वणज वणजारा रूप ना कोए वखाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर देवे किसे ना कोई आदर, सारे बैठे मुख भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, जन भगतां भेव चुकाईआ। उठ शब्द मेरे लाल, हरि सतिगुर आप जणाईआ। आ वखावां तैनूं इक धर्मसाल, सच दुआर मात प्रगटाईआ। जिस घर गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, पंज तत खुशीआं रहे जणाईआ। सब तों भय चुक्कया काल महाकाल, पुरख अकाल इक्को ओट तकाईआ। घर दीपक दीआ धुर दा बैठे बाल, जगत अन्धेरा रहे मिटाईआ। रल के आपणा सारयां इक्को कीता स्वाल, स्वाली बण के फेरा पाईआ। जे प्रभू दीन दयाल, दीनन आपणे गले लगाईआ। जुग चौकड़ी तेरे पिच्छे हुन्दे रहे बेहाल, जगत जग दुखड़े मात उठाईआ। अन्त कन्त भगवन्त आपणी गोदी लए स्वाल, सोया फेर ना कोए उठाईआ। मैं इक्को मार्ग आया सिखाल, साचा राह जणाईआ। सुत शब्द उह भगत लैणे भाल, जो सोहँ नाम ध्याईआ। ओन्हां अन्दर वड़ के बैठा आप प्रितपाल, बण प्रितपालक सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। सुत शब्द लई ऊँघ, नेत्र नैण खुल्हाईआ। हे प्रभू मैं रातीं सुत्तयां लोकमात वेखी पैंदी गूंज, तेरा नाउँ रहे ध्याईआ। ठाकर मेरे नेत्र देवीं पूंझ, मेरी निर्मल अक्ख कराईआ। मैनूं देवीं आदि सूझ, जेहड़ी तेरे विच समाईआ। मैनूं दस्स भेव गूझ, जिस दा लेखा हथ्थ किसे ना आईआ। मैं तक्क के वेख्या भगतां अन्दर नहीं दूज, द्वैत नेड़ कोए ना आईआ। प्रेम प्रीती अन्दर गए झूझ, बिन खंडयों तलवारों आपणा सीस कटाईआ। मैं ओन्हां दा वेखां जा अरूज, जिस घर बैठे डेरा लाईआ। बेशक मैं आदी तेरा पूत, बिन भगतां तैनूं मिले ना कोए वड्याईआ। तेरे प्रेम दा सच्चा सूत, जन भगतां सिर चीरे दएं टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। मेरे भगत ना सालाह, सिफ्त विच कदे ना आईआ। जिन्हां दा प्रभू बणया आप मलाह, ओन्हां दी महिमा कहिण कथन विच ना आईआ। उठ जा के ओन्हां दा दर्शन पा, जो बैठे इक ध्यान लगाईआ। तैनूं बणावण अन्त इक गवाह, शहादत तेरी देण भुगताईआ। बाकी सब तों खैहड़ा ल्या छुडा, पल्लू गंढु रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द दुलारे रिहा जणाईआ। शब्द सुत कहे मैं जावां बण के सतिगुर, सति तेरा हुक्म सीस टिकाईआ। मेल मिलावां लेखा धुर, धुर लेखा वेख वखाईआ। जो तेरे नाल गए जुड़, मुड़ ओन्हां तेरे विच मिलाईआ। जिन्हां कोल थोड़ी थुड़, तिन्हां पन्द्रां कत्तक पूरी देवां कराईआ। तेरे चरण लग के मेरा पल्लू फड़ के गुरमुख कोई ना जावे रुढ़, बेड़ा साचा कंध उठाईआ। इक्को वार भरां पूर, हाज़र हज़ूर सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे सरनाईआ। साहिब सतिगुरू मैं जांदा हां। लोकमात फेरा पांदा हां। लख चुरासी वेख वखांदा हां। भगत सुहेले उठांदा हां। नेत्र लोचण पेख पेख, पड़दा उहला दूर करांदा हां। पूरब कर्म दी वेख रेख, कर्म कांड डेरा ढांदा हां। अन्दर वड़ के दस्सां भेत, साचा पड़दा आप खुल्हांदा हां। पुरख अकाल तेरा भेख, जोती नूर इक समझांदा हां। राह दस्सां साचे देस, सचखण्ड मार्ग इक वखांदा हां। मिले सरनाई नर नरेश, नर निरँकार इक्को इक वडयांदा हां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सच तेरी सेव कमांदा हां। सच सेवा की कमाएंगा। जन भगतां की समझाएंगा। साचे सन्तां की जणाएंगा। गुरमुखां की पढ़ाएंगा। गुरसिखां की राह वखाएंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा भेव की दृढ़ाएंगा। प्रभू मैं साची सेव कमावांगा। जन भगतां आप उठावांगा। साचे सन्तां अक्ख खुल्हावांगा। गुरमुखां गोद बहावांगा। गुरसिखां चोग चुगावांगा। तेरा दे के इक्को जोग, साचे मार्ग इक लगावांगा। आत्म रस अगम्मी भोग, रसना निझर झिरना इक

झिरावांगा। तेरा दस्स के इक श्लोक, तेरा गीत गोबिन्द जणावांगा। भाग लगा काया कोट, मन्दिर इक्को इक सुहावांगा। कर प्रकाश निर्मल जोत, जोती नूर डगमगावांगा। साची दस्स के धुर दी ओट, ओट पुरख अकाल समझावांगा। लहिणा चुका हरख़ सोग, सति सरूप विच मिलावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरा इक्को नाम समझावांगा। मेरा नाम की समझाएंगा। की पट्टी मात पढ़ाएंगा। की खाता खत्ती फोल फोलाएंगा। की रत्ती रत्त रंग रंगाएंगा। की दीवा बत्ती जोत जगाएंगा। की बण के कमलापती वेख वखाएंगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुरमुख साचे केवें उठाएंगा। मैं सेवादार बण के जावांगा। जन भगत दुआरे फेरा पावांगा। सोए सुत्ते आप उठावांगा। विछड़े रुस्से आप मिलावांगा। जन्म जन्म दे गुस्से मेट मिटावांगा । बिरहों विछोड़े कुट्ठे, साचे रंग रंगावांगा। जो तेरी धारों तुट्टे, फड़ तेरे नाल मिलावांगा। अमृत जाम प्या के घुट्टे, रस इक्को इक वखावांगा । प्रेम प्रीती विच्चों फुट्टे, जड़ आपणे हथ्थ लगावांगा। तेरे गुरमुख पत डाल होवण उच्चे, ऊँच अगम्म अथाह तेरा भेव जणावांगा। लख चुरासी विच्चों कर के सुच्चे, सोहँ नाम इक पढ़ावांगा। पंच विकार मिटा के कुत्ते, दर साचा साहिब वखावांगा। जिन्हां एथे ओथे दो जहान कोई ना पुच्छे, फड़ के तेरी गोद बहावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सच तेरी सेव कमावांगा। सेवा करनी इक सच, सति सतिगुर आप सुणाइंदा। जन भगतां वेख माटी कच्च, काया कपड़ भेव चुकाइंदा। ओन्हां अन्दर जा के रच, लूं लूं तेरा दरस दिखाइंदा। मेरी प्रीती अन्दर फस, प्रेम प्यार इक समझाइंदा। मन मति बुध कर आपणे वस, जगत विकारा डेरा ढाइंदा। सच मेरा मार्ग दस्स, दहि दिशा इक्को नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। प्रभू मैं जा के दस्सांगा। जन भगतां संग खुशीआं नाल ग़मी रला के हस्सांगा। चारों कुण्ट वाहो दाही उठ उठ नस्सांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरा नाम स्नेहड़ा दस्सांगा। दस्स गीत, पुरख अकाल आप जणाईआ। सतिजुग साची चले रीत, सति सतिवादी करे पढ़ाईआ। काया मन्दिर अन्दर काअबा वखोणा इक मसीत, मसला सब दा हल्ल कराईआ। शिवदुआला मठ्ठ दरस दिखाउणा आप अतीत, त्रैगुण डेरा देणा ढाहीआ। कूड़ी काया मिट्ठा कर रीठ, अमृत रस इक भराईआ। आत्म परमात्म बणाउणा मीत, मित्र प्यारा इक जणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा गाउणा गीत, वाहवा करनी सच पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच स्नेहड़ा इक्को इक सुणाईआ। सच प्रभू तेरा इक संदेसा, मैं आपणी झोली पाईआ। ठाकर स्वामी मिले नरेशा, शहिनशाह तेरी सरनाईआ।

मैं जा के कमावां आपणा पेशा, पेशतर गुरमुखां दया कमाईआ। श्री भगवान तुहाड्डा रख्या चेता, चेतन प्रेम प्रीती अन्दर हितकारी रूप वटाईआ। तुहाढे मिलण लई घल्लया पुत जेठा, शब्दी गोबिन्द गुरू रूप वटाईआ। नाल उतर के आया हेठां, लोकमात डेरा लाईआ। निरगुण हो के खेले खेडा, सरगुण अन्दर धार समझाईआ। हुक्मे अन्दर मैनूं भेजा, धुर फ़ुरमान सुणाईआ। जा भगतां अन्दर वछा मेरी सेजा, मैं आवां चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। मैं सेवा आया करन मात, शब्द गुरू रिहा जणाईआ। जन भगत वेख इक जमात, मेरी ख़ुशी दूण सवाईआ। पिछली मिटी अन्धेरी रात, अग्गे चन्द इक्को नज़री आईआ। तुसां मेरा देणा साथ, मैं साथी बण के सेव कमाईआ। रल के गौणी इक्को गाथ, सोहँ शब्द पढ़ाईआ। आदि पुरख सब तों पहलों मैनूं दस्सी जाच, फिर विष्न ब्रह्मा शिव दित्ता समझाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी पिच्छों मार आवाज़, भगत भगवान रिहा जगाईआ। जिस सोहँ नाल विष्नूं भगवान आपणा आप दित्ता दाज, वाधू वस्त झोली पाईआ। निरवैर हो के करे काज, करता पुरख खेल रचाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। शब्द कहे सुणो जन भगत, श्री भगवान दया कमाईआ। मेरी सेवा इक्को लाई मुफ्त, जन भगतां फिकर दे गंवाईआ। तुहाढे पिच्छे आया परत, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। हुण अग्गे देणा किसे दा रता नहीं धड़त, गुरमुख इक्को कंडे लए तुलाईआ। मेरे नाल करो लिख्त पढ़त, मैं अग्गे लेखा देणा पुचाईआ। आदि जुगादि मेरी धुर दी सच्ची शर्त, शरअ विच कदे ना आईआ। कलयुग विच मैनूं वेख लओ कर के परख, मेरे अन्दर वंड रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरी सेवा इक लगाईआ। भगत जन कहिण शब्द गुरू कन्न सुण, तेरा संदेसा ख़ुशी मनाईआ। बेशक तूं साडे कोल आया तुर, श्री भगवान तेरी सेवा लाईआ। पहलों साडे नाल जुड़, आपणा माण तजाईआ। अन्दर वड़ अन्धेरे घुर, डूंघी भँवरी फेरा पाईआ। आपणा राग सुणा सुर, ताल इक वजाईआ। फेर दस्सीं मैं उह जेहड़ा वासी अनन्द पुर, पुरी लोअ आया तजाईआ। दो जहानां बणया रिहा चोर, ठग्गी सब दे नाल कमाईआ। कलयुग अन्तिम ओनां पकड़ीं डोर, जो सोमां अमृत रहे वहाईआ। जिनां नूं लारा दे के गया छोड़, तिनां अन्तिम मेल मिलाईआ। असीं फेर वेखीए कर के ग़ौर, आपणा ध्यान लगाईआ। की ओहो माही गया बौहड़, जेहड़ा मुखड़ा गया छुपाईआ। जे तैनूं साडी लोड़, साडे अन्दर वड़ के पड़दा दे चुकाईआ। प्रेम प्रीती आपणे नाल जोड़, जोड़ी बण के ख़ुशी मनाईआ। फेर असीं दस्सीए पुरख अकाल तेरे नाल सानूं देवे तोर, तुरत आपणा हुक्म चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शब्दी शब्द गुरू इक्को रूप प्रगटाईआ। शब्द गुरू कहे

मैं रूप वटाउँदा हां। धुर दा लेखा इक जणाउँदा हां। दस दस्मेस दर्द वंडाउँदा हां। नर नरेश इक अख्वाउँदा हां। पंज तत मुच्छ दाढ़ी रला के केस, केसगढ़ गंढु पवाउँदा हां। अन्तिम मेट के आपणी रेख, रेख रेख विच समाउँदा हां। हुण आया साचे देस, साचे नगर डेरा लाउँदा हां। जन भगतो तुहाढ्डे कोल रहां हमेश, आवण जावण पन्ध मुकाउँदा हां। कोई राज राजान शाह सुल्तान मैनूं लए ना वेख, फड़यां हथ्थ किसे ना आउँदा हां। एसे कर के जोती जामा धरया भेख, शाह पातशाह आपणा हुक्म वरताउँदा हां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाउँदा हां। बेशक तूं आपणी कार कमाउँदा ए। निरगुण निरवैर पुरख अकाल अख्वाउँदा ए। गोबिन्द नूर धार जोत प्रगटाउँदा ए। शब्द कटार तेज़ उठाउँदा ए। कल्गीधर फेरा पाउँदा ए। जिन्ना चिर अन्दर ना जाएं वड़, सानूं सबर सन्तोख कोई ना आउँदा ए। किरपा कर ना लएं फड़, पल्लू आपणे नाल बंधाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, बिन देख्यां बिन परख्यां सानूं चैन कोई ना आउँदा ए। जन भगतो तुहानूं दस्सां आपणी परख, पारखू आपे बण के आईआ। अन्दर बाहर मेरा दरस, दीद ईद चन्द चमकाईआ। लख चुरासी विच्चों कर के तरस, गुरमुख थोड़े बाहर कढ्ढाईआ। जन्म जन्म दी मेट हरस, अन्तिम आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साहिब सतिगुर आप समझाईआ। लख चुरासी विच्चों कढ्ढे थोड़े, श्री भगवान दए समझाईआ। शब्दी गोबिन्द नाल जोड़े, निरगुण सरगुण मेल मिलाईआ। अगम्मी चाढ़ आपणे घोड़े, शाहसवार वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। हरिजन माण वड्याई देवे आप, देवणहार हरि रघुराईआ। धुर दा चीरा लै के आवे साथ, बण साथी सगला संग निभाईआ। दो इक चलाए राथ, बण रथवाही वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन देवे माण वड्याईआ। साचा चीरा होवे तैयार, त्रैभवण धनी आप बणाइंदा। त्रिलोकी कर के आपे बाहर, ज़ाहरा धार वेस वटाइंदा। त्रैगुण माया दए पछाड़, डंका इक्को नाम वजाइंदा। सन्त सुहेले गुरू चेले लए उभार, हरिजन मेले मेल मिलाइंदा। सच दुआरे कर प्यार, मेहरवान मेहर नज़र उठाइंदा। सति धर्म दी बन्नू दस्तार, दस्त आपणे नाल मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिंघ विष्नूं भगवान, लेखा जाणे धुर दा काहन, जगत काहन समझ कोए ना पाईआ। धुर दा काहन एकँकार, अक्ल कला अख्वाईआ। आदि जुगादी कर पसार, जुग चौकड़ी वेख वखाईआ। निरगुण सरगुण बन्ने धार, सरगुण निरगुण दए वड्याईआ। जुग चौकड़ी खेल संसार, सतिजुग त्रेता द्वापर

९४६
१५

कलयुग आप हंढाईआ। हुक्मे अन्दर गुर अवतार, पीर पैगम्बर सेवा लाईआ। हुक्मे अन्दर दए दीदार, भगत भगवान लए जगाईआ। जुग चौकड़ी वेखणहार, नेत्र लोचण नैण खुल्हाईआ। कलयुग अन्तिम खेल अपार, अपरम्पर स्वामी आप कराईआ। अन्तरजामी सिरजणहार, हर घट वेखे थाउँ थाईंआ। शब्द दुलारा कर तैयार, पूत सपूता सेव लगाईआ। भगत सुहेले लए उठाल, सोया कोए रहिण ना पाईआ। बीस बीसा सुरत संभाल, आलस निंद्रा दए गंवाईआ। करे खेल गुर गोपाल, गोबिन्द बण के सच्चा माहीआ। हरिजन वेखे आपणे लाल, लालन आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचे चीरे बन्न्हे बण दलाल, धर्म दलाली इक कमाईआ। साचे चीरे बन्न्हे प्रेम, प्रीतम आपणी दया कमाईआ। भगत दुआर चुकाए नेम, कसम इक्को वार खवाईआ। जिस ने ध्यान लगाया कुण्ट हेम, सो आपणा रंग वटाईआ। जिस दी सेवा करे कामधेन, बैठी सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा हरि, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। शाह पातशाह धुर दा सरोपा, प्रितपालक आप दिवाईआ। शब्द गुर बणा ग्वाह, वेला वक्त दए सुहाईआ। सतिजुग मार्ग इक्को ला, रहबर इक्को इक वखाईआ। दो जहानां हुक्म दए सुणा, शब्द संगीत ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लालन आपणे रंग रंगाईआ। साचे रंग रंगे रंगराता, रंगणहारा दया कमाईआ। करे खेल पुरख बिधाता, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। कलयुग अन्त वेखण आया तमाशा, निरगुण निरवैर फेरा पाईआ। जन भगतां देवे इक दलासा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। हर घट अन्दर करे वासा, हरिजन आपणे नाल मिलाईआ। निर्मल नूर जोत प्रकाशा, अज्ञान अन्धेर चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, भगतां मेले आपणे दर, दर दरवाज़ा इक खुल्हाईआ। दर दरवाज़ा देवे खोल्ह, खुल्ही आवाज़ लगाईआ। शब्द अगम्मी इक्को बोल, अनबोलत राग सुणाईआ। सच नगार वजाए ढोल, दो जहान करे शनवाईआ। गुरमुख तोले आपणे तोल, साचा कंडा इक उठाईआ। करे खेल इक अनमोल, अनमुलड़ी वस्त आप वरताईआ। जन भगतां अन्दर जाए मौल, मौला रूप नज़री आईआ। प्रेम प्रीती देवे पौहल, अमृत रस इक खवाईआ। कर प्रकाश उपर धौल, धरनी धरत धवल सोभा पाईआ। कीता करे पूरा कौल, कौल इकरार सब दी झोली भराईआ। गोबिन्द गुर ना जाए डोल, अडुल इक्को इक अख्वाईआ। सरसे नदी दा पूरा करे बोल, ज़बान ज़बान नाल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, देवणहारा साचा वर, इकीआं इक्को रंग वखाईआ। इकीआं रंग रंगे दस्तार, दस्तगीर दया कमाइंदा। हज़रत करे इक प्यार, हज़ूरी आपणी विच वडियाइंदा। विछड़ ना जाए धुर निरँकार, जगत निरँकार नज़र कोए ना आइंदा। सचखण्ड

दा सच प्यार, लोकमात आप प्रगटाइंदा। लोकमात बोल जैकार, जै जैकार दो जहान वखाइंदा। इक्को दिवस होए उज्यार, जिस थित आपणा रंग चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा सच्चा दान, वस्त अपार कर तैयार, गुरमुख प्यार झोली पाइंदा।

मुरीद कहिण मुर्शद आका, अक्ल विच किसे ना आइंदा। निरगुण नूर नूर प्रकाशा, ज़हूर इक प्रगटाइंदा। धुर दा सुणाए अगम्मी साका, पिछली साख़ी आप भुलाइंदा। साचे मन्दिर खोल्हे ताका, बंद कवाड़ी जगत वखाइंदा। योद्धा सूरबीर हो के मारे डाका, बल आपणा आप वखाइंदा। दो जहानां निरवैर हो के खिच्चे ख़ाका, मेहरवान आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आपणे हथ्थ रखाइंदा। मुरीद कहिण मुर्शद वेख, आदि जुगादी नज़री आईआ। परवरदिगार साची टेक, लाशरीक सहाईआ। बातन ज़ाहर लए वेख, दीद ईद चन्द रुशनाईआ। साचे काअबे करे हेत, केवल आपणी धार बंधाईआ। नेत्र वेखे नेतन नेत, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। दरगाह साची खेले खेड, ख़ालक ख़लक दए जणाईआ। सच संदेसा देवे भेज, कलमा नबी रसूल पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। मुरीद कहिण मुर्शद पीर, परम पुरख इक अख्वाइंदा। आदि जुगादी दस्तगीर, दस्तयाब इक हो जाइंदा। लेखा जाणे शाह हकीर, हर घट अन्दर वेख वखाइंदा। साची बणावणहार आप तकदीर, तदबीर आपणे हथ्थ रखाइंदा। लभ्भयां हथ्थ ना आवे किसे तस्वीर, मुसव्वर मुबादल रंग ना कोए चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, करनी इक्को इक कमाइंदा। मुरीद कहिण मुर्शद बेपरवाह, बेपरवाही विच समाईआ। नूरी नूर इक खुदा, खुदी रूप ना कोए वटाईआ। दो जहानां खेल रिहा खला, ख़ालक खलक दए वड्याईआ। रहबर बण के जाए आ, बेऐब फेरा पाईआ। धुर दा लेखा दए समझा, दरगाह साची देवणहार वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र उठाईआ। मुरीद कहे मेरे मुर्शद मीत, तेरे अग्गे इक बेनन्तया। सदी चौधवीं वेखीए तेरी रीत, लोक परलोक सोभावन्तया। नित नवित्त रखदे गए उडीक, अन्तिम आसा पूर करन्तया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, साहिब सुल्तान वड बेअन्तया। मुरीद कहे मेरे मुर्शद अलख, अलख तेरी सरनाईआ। निरगुण हो के मार्ग दस्स, सरगुण सच पढ़ाईआ। तेरे नालों तेरे होए वक्ख, पल्लू हथ्थ ना कोए वखाईआ। सृष्ट सबाई भाण्डे सख, तेरा नूर नज़र कोए ना पाईआ। अन्तर आत्म वस के दस्स, परमात्म भेव

चुकाईआ। कवण कूटे ग्यों नट्ठ, आपणा मुख छुपाईआ। लभ्भ लभ्भ थक्के तीर्थ तट, गुर दर मन्दिर मट्ठ फेरा पाईआ। सौदा विके किसे ना हट्ट, हट्टी नाम ना कोए चलाईआ। तेरे नालों डोर सब दी गई कट, तुटी गंढु ना कोए बंधाईआ। जगत स्वांगी खेल नट, नटुआ आपणा स्वांग वरताईआ। मणका मणका माला मेरी रहे रट, रट्टा मन का सके ना कोए मुकाईआ। धुर दा लाहा सके ना कोई खट्ट, माया ममता होई हल्काईआ। दूई द्वैती मेटे ना कोई फट्ट, पट्टी नाम ना कोए बंधाईआ। तेरे अग्गे वास्ता रहे घत्त, दोए जोड़ प्रभ सरनाईआ। साडी पूरी कर आस, निरासा कोए रहिण ना पाईआ। दर तेरे होए दास, निउँ निउँ सजदा सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, मेहरवान तेरी वड्याईआ। मुर्शद कहे सुण मुरीद, मुर्दा रूह दयां जीवाईआ। आदि जुगादी मेरी इक तौफ़ीक, तोहफ़ा सब दे घर पहुंचाईआ। अन्ध अन्धेरे मेट तारीक, साचा नूर करां रुशनाईआ। मार्ग दस्सां इक बारीक, धार समझ कोए ना पाईआ। जिस दी पीर पैगम्बर करदे गए उडीक, सो मेहरवान वेख वखाईआ। सच बंधाए सच प्रीत, सति सतिवादी जोड़ जुड़ाईआ। कलमा ढोला सोहला दस्से गीत, गहर गम्भीर आप जणाईआ। ततव तत करे ठांडा सीत, अग्नी अग्ग ना कोए तपाईआ। वेख वखाए हस्त कीट, ऊँच नीच डेरा ढाहीआ। करे खेल आप जगदीश, जगदीशर हथ्थ वड्डी वड्याईआ। प्रगट हो बीस बीस, बिस्मिल आपणी धार समझाईआ। साचा कलमा इक हदीस, हज़रत हो के रिहा पढ़ाईआ। बाकी ख़ाली कीते खीस, चारों कुण्ट कुण्ट कुरलाईआ। छत्र झुल्ले ना किसे सीस, शहिनशाह रूप ना कोए वखाईआ। पिछला लेखा रिहा बीत, अग्गे पड़दा दए उठाईआ। करे खेल प्रभ अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाईआ। रल मिल गाउणा सच्चा गीत, साहिब सुल्तान रिहा समझाईआ। लेखा चुक्के जगत मसीत, काअबा इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। मुरीद कहे मेरे मुर्शद संग, साचा बन्धन पाईआ। मेहरवान हो अन्दर लँघ, सच मुसल्ला हेठ विछाईआ। वुज़ू कर के लै अनन्द, दुरमति मैल धवाईआ। प्रेम प्रीती चाढ़ चन्द, जोत नूर रुशनाईआ। उच्ची कूक दे बांग, सदा सदा इक्को नाम रखाईआ। सच मिलण दी रख तांघ, आसा इक प्रगटाईआ। उठण बैठण दा ना कोई रहे स्वांग, उंगली कन्न विच ना कोए रखाईआ। छाती उते हथ्थ कोई ना मांग, घुटने टेक ना कोए मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मुरीदां मुर्शद रिहा समझाईआ। मुर्शद कहे मुरीदां लेख, एका बात समझाईआ। निज महिराबे आपणा माही लैणा वेख, दूजे दर मंगण ना जाईआ। निरवैर निराकार धार आपणा भेख, भेखाधारी फेरा पाईआ। मुच्छ दाढ़ी ना कोई केस, मूंड मुंडाया समझ कोए ना पाईआ। वसणहारा साचे देस, देस सांझा इक्को इक

समझाईआ। जिस दुआरे विष्न ब्रह्मा शिव पीर पैगम्बर करन आदेस, गुर अवतार सीस झुकाईआ। तिस महल्ल बैठा रहे हमेश, सच गिरहा आपणे नाम बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। मुरीद कहे मेरे मुर्शद वड, वड शहिनशाह सुल्ताना। सब दे नालों कर अड्ड, हथ्थीं बन्न्ह अगम्मी गाना। साचा मार्ग इक दस्स, रहबर बण सुणा तराना। पिछली मुक्के जगत हद्द, अग्गे मिले सच मकाना। तेरे प्रेम दे गाईए छन्द, संसा चुक्के विच जहाना। अन्तर उपजे इक अनन्द, रस छुट्टे पीणा खाणा। जगत रंडेपा मुक्के रंड, मिले मेल श्री भगवाना। जुग जन्म दी तुट्टी गंढु, गंढुणहार साहिब सुल्ताना। घर साचे पा ठंड, आबेहयात मुख प्याणा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरे दर सीस झुकाना। दर सीस झुकया तेरे, परवरदिगार तेरी सरनाईआ। आरफ़ बैठे ला के डेरे, सिदक सबूरी नाल रखाईआ। कवण वेला मुकावें झेड़े, झगड़ा कोए रहिण ना पाईआ। फड़ के चाढ़ें आपणे बेड़े, नईया नौका इक्को इक वखाईआ। असीं रल मिल कहीए मुरीद मुर्शद तेरे, मुरदे ज़िंदा देवें कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। मुरदे होए घर ज़िंदा, ज़िंदगी तेरे हथ्थ फड़ाईआ। लेखा चुक्के जीउ पिण्डा, पिण्ड पीड़ रहिण कोए ना पाईआ। इक्को नूर बणीए तेरी बिंदा, सुत अनादी नाउँ धराईआ। आपणा खोल्ह अगम्मी जिंदा, क्यों बैठा ताकी लाईआ। तूं गहर गम्भीर सागर सिन्धा, मछली बिन नीर क्यों रिहा तड़पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सिर साचे हथ्थ टिकाईआ। सुणो मुरीदो साची बात सब, आदि आप इक जणाईआ। जिस नूं कहिन्दे रब्बी उल रब्ब, रहमत सदा कमाईआ। सो मुर्शद तुहानूं रिहा लभ्भ, मुरीद लभ्भण किते ना जाईआ। चौदां लोक चौदां तबक चरणां हेठ दब्ब, आप आपणा खेल रचाईआ। दो जहानां लँघ के हद्द, घर साचे फेरा पाईआ। गुर अवतार पैगम्बर छड्ड, छड्डी सर्ब लोकाईआ। साचे सूफ़ी करे अड्ड, मनसूख़ी पिछली दिती कराईआ। किरपा कर पुरख समरथ, देवे माण वड्याईआ। आपणे मिलण दी खोल्ह के अक्ख, आख़र आपणा दरस दिखाईआ। दे के जावे पूरा हक़, हकीकत सब दी झोली पाईआ। दूजे वल ना लैणा तक्क, नेत्र अक्ख ना कोए उठाईआ। तुहाढे अन्दर निराकार हो के जावे वस, वसल इक्को इक वखाईआ। मेटे रैण अन्धेरी मस, साचा नूर करे रुशनाईआ। बिन कल्मयों बिन कलामों बिन काग़ज़ कलम शाही तुहाढा गावे जस, जस आपणे नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शाह पातशाह दया कमाईआ। मुरीद कहे तूं मुर्शद केहड़ा, कवण सूरत रूप वटाईआ। चार जुग पीर पैगम्बरां चलदा रिहा झेड़ा, झगड़ा सके ना कोए

मुकाईआ। खुल्ल्हा करे कोई ना वेहड़ा, बन्नां हद्द ना कोए जणाईआ। शरअ शरीअत लाया डेरा, लाशरीक समझ कोए ना पाईआ। चारों कुण्ट दिसे अन्धेरा, साचा नूर ना कोए रुशनाईआ। परवरदिगार कहे मैं बन्न्हां इक्को बेड़ा, दो जहानां आप चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। मुरीद कहिण मुर्शद सुण लै साडी गल्ल, एका इक्को वार जणाईआ। वेख्या तूं होया भगतां वल, देवें माण वड्याईआ। जुग चौकड़ी तेरा अछल छल, वल छल धारी तेरी समझ कोई ना पाईआ। कलयुग अन्तिम पूरब जन्म दा देवें फल, लेखा सब दी झोली पाईआ। फोल फुलावें जल थल, महीअल पड़दा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरे हथ्थ वड्याईआ। भगतां तारन वाले भगवान, तेरे अग्गे इक अरज़ोईआ। वेखीं हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई कर के छड्ड ना जाईं विच जहान, जहालत पिछली साडी झोली पाईआ। साडा सब दा तेरे उते ईमान, आमल कामल पीर इक्को नज़री आईआ। दर दरवेश मंगदे दान, बरदे बण सीस झुकाईआ। सुण के प्रभू तेरा फ़रमान, साडी सुरत सुरत रही ना राईआ। पतिपरमेश्वर पुरख स्वामी भगत इकल्ले तार जाए ना आण, अनहोणी कार कमाईआ। असीं सुत्ते ना रहीए बाल अञ्याण, बाली बुध रूप वटाईआ। कर किरपा वड मेहरवान, दर तेरे मंग मंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, लेखा सब दा रिहा जणाईआ। सूफ़ी मुरीद मुर्शद वेखो इक्को रंग, दस्तगीर ज़ाहरा पीर पैगम्बर अन्त अख़ीर आप जणाइंदा। सब दा मेल करे इक्को संग, सगला संग आप रखाइंदा। घट दुआर मन्दिर अन्दर महल अटल जावे लँघ, आउँदा जांदा नज़र किसे ना आइंदा। पूरब कर्म लहिणा वेख मुस्लिम हिंदू सिख ईसाई पाई गंढ, निरवैर आपणा जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, चार यारी आपणे संग रखाइंदा। चार यारी लई जगा, जागरत जोत जणाईआ। भगतां विच लई रला, रला रहिण कोए ना पाईआ। नूरी रूप दस्स के अल्ला, इलाही आलमीन समझाईआ। पन्द्रां कत्तक सब नूं कर देवे तसल्ला, तसल्लीबख़्श जवाब इक्को इक सुणाईआ। सब दा पूरा करे पल्ला, झोली सब दी वेख वखाईआ। चार जुग दा देवणहारा फला, वस्त अमोलक आप वरताईआ। की होया प्रभ वेख इकल्ला, अक्ल कलधारी आपणी कल वरताईआ। हर घट अन्दर बैठा आसण मल्ला, सच सिँघासण सोभा पाईआ। करे खेल जला थला, उच्चे टिल्ले पर्बत जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूंघी कन्दर ज़िमी असमान ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज आपणा रंग वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। बेपरवाही खेल अवल्ला, आदि पुरख अबिनाशी आप कराईआ। जोती धार हर

घट रला, शब्दी नाद धुन शनवाईआ। प्रेम प्रीत फड़ाए पल्ला, पल्लू गंढु आप बंधाईआ। धुर संदेस इक्को घल्ला, नव नौ करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची सिख्या इक समझाईआ। साची सिख्या देवे सांझा पीर, पारब्रह्म प्रभ दया कमाइंदा। जिस ने बन्ह्णे सी अगम्मी चीर, चीरे आपणे आप प्रगटाइंदा। चार वरन बणौणे भैण भाई सके वीर, वारता आपणी आप समझाइंदा। कलयुग बदली जिस तकदीर, तासीर आपणी विच भराइंदा। कूड़ी क्रिया कट ज़ंजीर, शरअ हदीस इक समझाइंदा। चोटी चाढ़ फड़ अख़ीर, आख़र आपणा मेल मिलाइंदा। वेस वटाए बेनज़ीर, नज़र इक्को इक बदलाइंदा। हथ्थ फड़ तेज़ शमशीर, कूड़ी क्रिया पार कराइंदा। वरन बरन होण ना देवे कोई दिलगीर, सांझीवाल इक अख्वाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम कट के कूड़ी भीड़, साचा राह इक वखाइंदा। शाह पातशाह सच्चे आदल शाह, अदालत तेरी इक्को भाईआ। तेरे चरण कँवल मंगीए पनाह, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। चारों कुण्ट जगत वेखीए मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मढ्ढ बणी कतलगाह, छुरी कसाई जूठ झूठ जगत हथ्थ उठाईआ। तेरा हिरदे नाम सके ना कोई वसा, वास्ता सच ना कोए जणाईआ। ठग्ग चोर यार बण के लावण दा, ठग्गी तेरे नाल कमाईआ। तूं क्यों सुत्ता बेगुमराह, तेरी ग़फ़लत मुरीदां मुर्शद कदे मात ना भाईआ। चेतन
 हो के नैण खुल्ह्, अक्ख आपणी पड़दा लाहीआ। सृष्ट सबाई भरी मात गुनाह, सति सरूप ना कोए समाईआ। अन्तिम ६५१
१५ हुन्दी दिसे फ़नाह, पार किनारा नज़र किसे ना आईआ। रहबर बण इक खुदा, ख़ालक ख़लक वेख चाईं चाईंआ। तेरे १५
बरदे तैथों डरदे तेरा राह रहे तका, तक्कवा तेरे उते टिकाईआ। निरवैर हो के फड़ बांह, पकड़ बांहों गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, मेहर नज़र आप उठाईआ। मेहर नज़र आप उठावांगा। निरवैर हो के वेख वखावांगा। कलयुग कूड़ा कहर मिटावांगा। भेव अभेदा आपणा हुक्म वरतावांगा। हो के गम्भीर गहर खेल वखावांगा। जिस नूं कहिन्दे ला होर, तिस आपणा रंग रंगावांगा। जिस दा समझया ना किसे कोई तौर, तबा आपणी आप जणावांगा। जिस मंज़ल सक्या कोई ना बौहड़, तिस मन्दिर सोभा पावांगा। जिस चढ़या ना कोई घोड़, सो अस्व आप दौड़ावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच सुल्तान इक अख्वावांगा। सच सुल्तान इक अख्वावांगा। कलयुग नाम इक प्रगटावांगा। आबेहयात जाम प्यावांगा। साची आदत इक दरसावांगा। इबादत इक्को इक पढ़ावांगा । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सांझा पीर इक अख्वावांगा। सांझा पीर प्रभू अख्वाएगा। गहर गम्भीर वेस वटाएगा। जन सिर सिर हुक्म वरताएगा। बिन ज़ंजीर बन्ह् ल्याएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, साची करनी आप कमाएगा। साची करनी प्रभ कमावेगा। कल अन्तिम वेखण आवेगा। साचा बंक दुआर सुहावेगा। डंक इक्को नाम वजावेगा। राउ रंक मेल मिलावेगा। भगत भगवन्त आप उठावेगा। साचे सन्तां जोड़ जुड़ावेगा। गुरमुखां ला अंग, अंगीकार गोद बहावेगा। गुरसिखां बणा बणत, साची धार इक जणावेगा। लख चुरासी बण के कन्त, कन्त कन्तूहल सोभा पावेगा। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म इक दरसावेगा। बोध अगाधा बण के पंडत, विद्या इक्को नाम पढ़ावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सीस जगदीश हथ्थ टिकावेगा। सीस जगदीश हथ्थ टिकाएगा। खेल वेख बीस बीस, बाहमी तबादला आप कराएगा। कलयुग सतिजुग सतिजुग कलयुग दोवें इक दूजे दी मन्नण हदीस, हज़रत आपणा मेल मिलाएगा। प्रभ मिलण दी अग्गे कोई ना लाए फ़ीस, फ़ैसला इक्को वार कराएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मुरीद मुर्शद आपणे घर बहाएगा। मुरीद मुर्शद भगत भगवान इक्को धार, धरनी धरत धवल दए वड्याईआ। कृपानिध ठाकर स्वामी खेल करे करतार, करता पुरख वड्डी वड्याईआ। सन्त साजण गुरमुख गुरसिख हरिजन साचे लए उभार, भेव अभेदा अछल अछेदा आप खुल्हाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रहिमादी शब्द गुरू आदि जुगादी सीस बन्हे दस्तार, मेहरवान नौजवान सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। धुर दा देवे इक्को दान, सिदक सबूरी सच ईमान, धर्म गंढु आप पवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, इक्की चीरे बेनज़ीरे लातस्वीरे गुणी गहीरे आपणे नाल मिलाईआ। इक्की कहिण उह केहड़ी इकी, इक वार दे समझाईआ। दर तेरे ते मंगी भिछी, भिच्छया देदे माहीआ। तेरी धार सब तों तिक्खी, समझ किसे ना आईआ। बीतदी जाए वीहवीं मिती, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। मेरी इक्की एको इक, दोए धार मात चलाईआ। जिस दा लेखा गोबिन्द गया लिख, लिख्त भविक्ख्त सरसे विच रुढ़ाईआ। तिस दा खेल किसे ना आए दिस, लख चुरासी नेत्र बंद कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान बेपरवाहीआ। साची सिक्खी दस्से आप, प्रभ आपणी दया कमाईआ। जिन्हां पुरख अकाल माई बाप, पिता पूत गोद उठाईआ। जिन्हां इक्को आत्म परमात्म दित्ता जाप, दूजी करी ना कोई पढ़ाईआ। जिन्हां नज़री आया साख्यात, नेत्र नैणां दरस कराईआ। तिन्हां पार कराए जगत जमात, साचा मेला सहिज सुभाईआ। धुरदरगाही देवे दात, वस्त अगम्म आप वरताईआ। मिले वड्याई कायनात, नव नौ चार वज्जे वधाईआ। जुग जन्म दी पूरी आस, तृष्ना मेट मिटाईआ। समरथ हो के देवे साथ, महिमा अकथ पढ़ाईआ। खेवट हो चलाए राथ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर,

६५२ १५

मेहरवान बेपरवाहीआ। मेहरवान करे खेल करतार, हरि करता दया कमाईआ। जुग चौकड़ी दा लाहे उधार, कर्जा मकरूज झोली पाईआ। इकीआं बन्न् सच्ची दस्तार, दस्ता गुरमुख दए बणाईआ। दो इक दा सदा प्यार, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। इक दो दा सांझा घर बार, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। दो इक दा सदा इख्तियार, दो जहानां हुक्म वरताईआ। इक दो दा खेड अपार, निरगुण सरगुण खेल कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, बन्धन इक्को इक रखाईआ। इक्की कहिण प्रभ एकँकार, हथ्थ तेरे वड्याईआ। सारी सिक्खी तेरे चरण दुआर, दूजा धाम ना कोए वखाईआ। प्रेम प्रीती तेरी तिक्खी धार, खण्डा खडग पोह ना सके राईआ। नेत्र पेखी तेरी जोत निराकार, निरवैर रूप नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, मिले तेरी सरनाईआ। साची सिक्खी करां तैयार, ताकत आपणी विच टिकाईआ। चार वरन दा इक प्यार, चार जुग दी गंढु बंधाईआ। चार बाणी दा इक जैकार, चारे खाणी दयां जणाईआ। चार कुण्ट दा इक आधार, चार यारी वेख वखाईआ। चौथे घर देवां वाड़, पहला हुलारा इक जणाईआ। जिस दे पिच्छे रुलदे गए जगत संसार, जुग चौकड़ी ढूंड ढूंड ढूंडयां हथ्थ किसे ना आईआ। सो मेहरवान किरपा कर के देवे एका वार, मेहर नज़र इक टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। सिर रखे हथ्थ पुरख अकाल, अक्ल कलधारी दया कमाईआ। मुरदे मुरीद मुर्शद देवे ज्वाल, जवानी जोबन नाल मिलाईआ। सब दा हल्ल करे स्वाल, स्वालीआं झोली दए भराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान। सचखण्ड निवासी हो आप मेहरवान। जगत उदासी मेट जहान। जम की फाँसी तोड़े काण। गुरमुख स्वासी बचाए आण। मण्डल रासी खेल महान। साची घाटी चाढ़े भगवान। काया बाटी अमृत प्याए आण । आत्म परमात्म बण के साथी, भाग लगाए मन्दिर मकान। निरगुण जोत इक प्रकाशी, प्रकाशवान होवे नौजवान। आलस निंद्रा दर तों नासी, कूड़ी क्रिया मिटे निशान। जन भगतां वखावे इक प्रभाती, प्रभ किरपा करे महान। जिस दी नानक निरगुण गाई आरती, सो आरती गुरमुखां गाए हो मेहरवान। जिस दा इलम कोई ना समझे उर्दू हिंदी गुरमुखी फ़ारसी, इबारती विच लिख्या ना जाए जहान। सुणो तुआरफ़ी, खेल करे भगवान सफ़ारशी, आपणा नाम नाल रखाईआ। भारती बणे इक विधान, महाबली दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मुरीद मुर्शद लए फड़, फड़ आपणे नाल मिलाईआ। मुरीद कहे जे मैनूं फड़ना, तैनूं सच दयां जणाईआ। मैं तेरी छाती उते चढ़ना, बल तेरा

तेरे विच्चों कढ्ढाईआ। आपणे हक़ बदले तेरे अग्गे अड़ना, भय भउ ना कोए रखाईआ। जे प्रभू तूं ग़ुस्सा करना, मैनूं पहलों दे समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरे अग्गे मंग मंगाईआ। मुर्शद कहे मुरीद आ कोल, तेरे नाल मेरी वड्याईआ। मैं तेरा मन्नां बोल, आपणा बोल तेरी झोली पाईआ। दोहां विच प्रेम प्रीती दा मच्चया रहे घोल, कुश्ती हुन्दी रहे वाहो दाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वजावण ढोल, डंका इक्को हथ्थ उठाईआ। सच दुआरा देवां खोल्ह, ख़ालक ख़लक दयां समझाईआ। तेरे नाल कदे ना मारां रोल, रोल देवां सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दी धार दए जणाईआ। जगत रोलें क्यों बण के मौला, मौलवी तेरे तैनूं रहे भुलाईआ। ग़रीबां कोलों क्यों करें उहला, जिन्हां अन्दर तेरी धार धार विच तार ना कोए हिलाईआ। जिन्हां दे हथ्थ अञ्जील कुरान फड़ाया डोला, तेरी डोली चुक्क के भज्जे जांदे वाहो दाहीआ। ओन्हां दे सिर विच मार पौला, पाग़ल तैनूं बैठे भुलाईआ। जेहड़े तेरा गीत गाउँदे ढोला, ढोल बण के मिल माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, मुरीद तेरे अग्गे मंग मंगाईआ। वाह मुरीद मेरे मुर्शद, मुर्शद मुरीदां रिहा बणाईआ। मैं तेरा हिरदा वेख्या शुध, शूद्र वेखी जगत लोकाईआ। तेरे अन्दर वड़ के भेव खुल्हावां गुझ, गुझी रमज़ लगाईआ। तूं मैनूं ल्या बुज्झ, मैं पड़दा दित्ता उठाईआ। जो कुछ सो तेरी झोली पाया तुध, दिती माण वड्याईआ। मुल्लां शेख़ मसायकां औध गई पुग, पुख़ता हुक्म इक सुणाईआ। अग्गे कोई ना सके उठ, सिर सके ना कोई चुकाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर ग़रीब निमाणयां उपर गया तुठ, तुलहा नाम बेड़ी जगत सागर इक्को रिहा चलाईआ। दर दर घर घर जा के ओन्हां लए पुछ, जो बैठे ध्यान लगाईआ। फड़ बांहों कहे उठ लाडले पुत, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ज़ात पात मज़्ह़ब वंड ना कोए वंडाईआ। आपणी गोदी लए चुक्क, चुक्क गोदी खुशी वखाईआ। जन्म कर्म दी मेटे भुक्ख, भुख्यां सुख उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, अग्गे बदले आपणा रुख़, रुख़सत सब दी बंद कराईआ।

✪ ५ कत्तक २०२० बिक्रमी लाल सिँघ दे गृह हेर ज़िला जलन्धर ✪

गुरमुख ख्वाहिश रही कूक, कूक कूक सुणाईआ। तेरे विछोड़े दित्ता फूक, तन माटी भस्म कराईआ। बेपरवाह क्यों सुत्ता घूक, करवट आपणी ना कोई बदलाईआ। लभ्भ लभ्भ थक्के चारे कूट, दहि दिशा भज्जे वाहो दाहीआ। की पिता बण के भुल्ले पूत, पतित उधारी तैनूं रहम कोई ना आईआ। तुध बिन लाहे ना कोई साडी भूख, भुक्ख्यां भुक्ख ना कोए

गंवाईआ। की होया जे तैनूं सुख, साडा दुःख तेरी दर्द नज़री आईआ। मेहरवान हो छुपाया मुख, नेत्र नैण ना कोए उठाईआ। बेशक तूं वड्डा हो के जाएं रुस्स, हउँ बालक निक्के तेरा ध्यान लगाईआ। जिन्ना चिर ना गोदी लएं चुक्क, रोईए पिटीए आखीए सुणीए देईए इक दुहाईआ। गहर गम्भीर बेनज़ीर आपणी ग़फ्लत विच्चों उठ, पर्दा आपणा दे चुकाईआ। ग़रीब निमाणयां आ के पुच्छ, पिछला लेखा तेरी झोली पाईआ। जे तेरे कोल नहीं कुछ, सानूं इक्को वार दे समझाईआ। रसना बोल कह दे नाता तुटा प्यो पुत, पिता पूत गंढु ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। गुरमुख वेख जगत निमाणे, लभ्भ लभ्भ थक्के धरत सबाईआ। तूं सुत्ता बांह दे सिरहाणे, अक्ख पलक ना कोए खुल्हाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग विहाणे, बीती जगत लोकाईआ। लख चुरासी भौं भौं रसना जिह्वा खा के खाणे, खा खा शुकर ना कोए मनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मन्नदे रहे तेरे भाणे, भाणा तेरा सिर टिकाईआ। तूं बणया रिहों बेपहिचाणे, पहिचाण विच किसे ना आईआ। सुणे सुणाए गाउँदे रहे तेरे गाणे, तेरे मुखों सुण के बोल खुशी ना कोए मनाईआ। बणदे रहे नमाण निमाणे, नताण निताणे रूप वटाईआ। कलयुग अन्तिम ठोकरां खा खा निक्के बाले बणे वड्डे स्याणे, समझ तेरे विच्चों पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, घर मिलणा सहिज सुभाईआ। लभ्भ लभ्भ थक्के जंगल जूह, पहाड़ टिल्ले पर्बत फेरा पाईआ। पुट्ठे लटके विच खूह, खलड़ी तन तेरे भेंट चढ़ाईआ। तेरी आवाज़ ना निकली इक हू, अन्ना हू अल्ला हू तेरी समझ किसे ना आईआ। बेपरवाह हुण तूं आएयों साडी जूह, चारों कुण्ट घेरा रहे पाईआ। जिन्ना चिर ना कहें मैं तुहाड्डा रूह, रूह हू बहू तेरा नज़री आईआ। जे सानूं शहादत देवें मेरे दर ते खलोता धरू, ध्रू कोई ना मिली वड्याईआ। तेरे चरण नहीं तक्कणे ना तक्कणा मूँह, मुख चरण इक्को नज़री आईआ। जिन्ना चिर अन्दर वड़ के साडे नाल ना जावें छूह, शहिनशाह सांत कोए ना आईआ। असीं तेरी किसे कोलों नहीं सुणनी सूह, प्रतख हो के दरस देणा दिखाईआ। बालक बण बणे ममनू, मुहब्बत तेरे नाल रखाईआ। तेरा आफ्ताबे नूर सदा तलू, ग़रूब रंग ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा आपणा घर, जिस घर बैठा डेरा लाईआ। लभ्भ लभ्भ थक्के चार जुग, तैनूं लज्जया ज़रा ना आईआ। रोटी काठ खाणा चुग, तृष्ना तृप्त इक कराईआ। लोकमात फिरदे रहे लुक लुक, पड़दा आपणे उपर पाईआ। कलयुग अन्तिम प्रेम प्रीती अन्दर गए उठ, तेरा बल नाल रलाईआ। लुक्या रहिण नहीं देणा अन्दर काया गुठ, पड़दा आपणा दे चुकाईआ। विछड़यां कोलों विछोड़ा पुछ, विछोड़े कोलों पुछ जुदाईआ। सस्से उते होड़ा पुछ, होका देवे लोकाईआ। हाहा कहे मैं गया हुस,

६५५
१५

हरि का भेव कोई ना आईआ। प्रभू हँ तेरा मुढ, ब्रह्म तेरी शाख़ चलाईआ। बिन हँ ब्रह्म तूं रहें टुंड, तेरी शाख़ पत डाली नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक देणा सच्चा वर, जिस घर वज्जे सदा वधाईआ। लभ्भ लभ्भ थक्के आई थकावट, संसा दूर ना कोए कराईआ। निरगुण तेरी सरगुण वेख बनावट, पंज तत नेत्र नैण तकाईआ। जगत प्यार सारे देंदे दावत, परौहणाचारी जगत लोकाईआ। घर कदी किसे ना सद्दया सही सलामत, साहिब सतिगुर बेपरवाहीआ। कलयुग अन्त ग़रीब निमाणयां नूं इक्को लाई अलामत, अवल्लड़ी रीत दिती समझाईआ। जिन्ना चिर बांहों फड़ एथे ओथे ना दएं ज़मानत, सिर हथ्थ रख ना होएं सहाईआ। असीं तेरी झोली पई तेरी अमानत, अमानत विच करें ख्यानत तेरी होवे ना कोए वड्याईआ। मूर्ख मूढ़ मुग्ध ना वेख अज्ञानत, ज्ञान तेरा चरण मिले सरनाईआ। बेशक निरगुण निरवैर तूं बेपहचानत, पहचान आपणी जन भगतां आप दिवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक वखाउणा सच घर, जिस घर बहि के तेरा दर्शन पाईआ। लभ्भ लभ्भ थक्के तैनूं भाल, भालयां हथ्थ किसे ना आईआ। राजे राणे कर कंगाल, दर दरवेश दर दर धक्के खाईआ। बिन तेरे हल्ल ना होया स्वाल, स्वाली बैठे डेरा लाईआ। जुग चौकड़ी बीते काल, काल नगारा सब दे सिर ते गया वजाईआ। सच मिली ना किसे धर्मसाल, गुर अवतार पीर पैगम्बर बैठे ध्यान लगाईआ। गोबिन्द किहा मुरीदां पुछे मुर्शद हाल, वड दाता वड वड्याईआ। सो वेला वक्त सुहञ्जणा होया तेरे नाल, सोभा रुत्त तेरी सुहाईआ। उठ वेख आपणे लाडले लाल, लाली मस्तक रहे चढ़ाईआ। की होया जे जगत कंगाल, कंगाली ग़रीबी तेरी वड्डी वड्याईआ। जे लग्गी प्रीती निभे तेरे नाल, दो जहानां दी शहिनशाही साडे कम्म किसे ना आईआ। तेरा दर सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरे ख़ुशी वखाईआ। आ प्रभ दे आपणा जमाल, नूरी दरस इक दरसाईआ। तन माटी ख़ाकी तेरी झोली दित्ता डाल, तेरी जाति तेरी ज़ात विच छुपाईआ। ना कोई जाणे इलम सफ़ाती, ना कोई भेव चुकाए नबाताती, जे तूं मिल जाएं इक जमाती, अक्खर पढ़न कोई ना जाईआ। लहिणा देणा चुक्के संधया प्रभाती, वाह वड्डे साहिब निक्कयां मन्नें आखी, तेरी खुल्ह जाए अन्दरों ताकी, साकी इक्को नज़री आईआ। लहिणा कोई ना रहे बाकी, तू ही पिता तूं बणें माती, मिटे रैण जगत अन्धेरी राती, चन्द चांदनी इक चमकाईआ। जन भगतां दी एहो ख्वाहिशी, मिले मेल पुरख अबिनाशी, काया मण्डल पवे रासी, जुग जन्म दी मिटे उदासी, साचा साथी इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा धुर दी अगम्मी दाती, दाता दयावान हो मेहरवान मुहब्बत आपणे नाल रखाईआ।

ना बदल ना उह बदली, बदला देवण आप प्रभ आईआ। दो जहानां बण के अदली, अदालत इक समझाईआ। जिथ्थे कतलगाह ना कोई कतली, मकतूल रूप ना कोए वखाईआ। उह धार अगम्मी पतली, पटड़ीदार भेव वखाईआ। भय भ्यानक जणाए ख़तरी, ख़तरा मेटे जगत लोकाईआ। सच दुआरयों आपे उतरी, पच्छिम दिशा फेरी पाईआ। गुरमुख टपका के काया बदली, काया काया विच्चों वखाईआ। नूर नुरानी धार शक्ती, शक्ल अगम्म जणाईआ। जुग जन्म दी जिन्हां लेखे लग्गी भगती, तिन्हां भगौती सेव कमाईआ। एह खेल करे प्रभ अर्शी, अर्शी प्रीतम हथ्थ वड्याईआ। जोती नूर कराए दरसी, अगम्म धार प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गुरमुख रहे अडोल, पटड़ा पटड़ी गेड़ भवाईआ। नावें जन्म ठग्ग चोर, चोरी पिच्छे गया डोल, धीरज धीर धीर ना कोए धराईआ। एसे कारण सतिगुर प्रगट होया कोल, आप आपणा रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन धुर दा लेखा रिहा जणाईआ। प्रगट हो के आए नेड़े, नज़रीं रूप वखाईआ। अन्दर वड़के बन्ने बेड़े, बाहरों खेड़े रिहा ढाहीआ। जिन्हां किहा प्रभ तेरे तेरे, तेरा मेरा भउ चुकाईआ। सिँघ तारा बणया फेर शेरे, जिस वेले शेर सतिगुर नज़री आईआ। औखे घाट आपे बौहड़े, बौहड़ी सुणे दुहाईआ। फड़ चढ़ाए आपणे पौड़े, पौड़ा डण्डा इक लगाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन भगत वैंहदी धार कदे ना रोड़े, डुब्बदे लए तराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। गुरमुख प्यार सतिगुर शृंगार, अठारां भार बनास्पत सेव लगाईआ। हुक्मे अन्दर कर तैयार, तैयारी इक्को रूप समझाईआ। सतिगुर उत्तों आपा वार, आपणी वस्त जाण पराईआ। साहिब सतिगुर आपणी भेंटा लए चाढ़, घर देवे माण वड्याईआ। शब्द शहीद शहादत इक्को वार, दूजी धार तलवार ना कोए उठाईआ। अज़मेर शहर नहीं उह अज्ज दी मेहर, जिस मेहर विच गुरमुख नगरी सोभा पाईआ। थोड़ा जिहा हेर फेर, शब्द विच्चों शब्द लए प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, बिन सतिगुर बिन गुरमुख प्यार दूजा शृंगार आदि जुगादि ना किसे कराईआ।

✪ ५ कत्तक २०२० बिक्रमी ज्ञान सिँघ दे गृह सुरख़पुर ✪

सचखण्ड निवासी धुर फ़रमाण, दो जहान खुशी मनाइंदा। प्रगट होवे शब्द गुरू बलवान, शाह पातशाह आपणा हुक्म वरताइंदा। निरगुण नूर जोती जोत जगे महान, आकाश प्रकाश सोभा पाइंदा। सचखण्ड दुआर सुहाए सच मकान, महल

अटल डेरा लाइंदा। धुर दा देवे इक ज्ञान, पुरी लोअ ब्रह्मण्ड खण्ड आप पढ़ाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव करन ध्यान, नेत्र लोचण नैण सर्ब खुल्ाइंदा। त्रै पंज दर ते मंगे दान, सच भिखारी रूप वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर निउँ निउँ करन सलाम, सजदा सीस झुकाइंदा। परवरदिगार तेरा इलाही पैग़ाम, पैग़ाम इक्को सोभा पाइंदा। निरगुण सरगुण हो प्रधान, साची भिच्छया इक वरताइंदा। जुग चौकड़ी खेल महान, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप कराइंदा। लख चुरासी आत्म परमात्म खोल्ह मकान, पारब्रह्म ब्रह्म आपणा भेव चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, धुर संदेसा इक प्रगटाइंदा। धुर संदेसा हरि निरँकार, सो पुरख निरँजण आप प्रगटाईआ। हरि पुरख निरँजण खेल करे करतार, कुदरत कादर वेख वखाईआ। एकँकारा योद्धा सूरबीर बलकार, बलधारी वेस वटाईआ। आदि निरँजण नूर उज्यार, जोती जोत करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता ठांडा दरबार, दरगाह साची इक सुहाईआ। श्री भगवान सच निशान दए हुलार, धर्म निशान इक उठाईआ। पारब्रह्म प्रभ वेखे खोल्ह कवाड़, लख चुरासी अन्तर आत्म ताकी लाहीआ। पाए सार बहत्तर नाड़, पंज तत पड़दा आप उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। धुर संदेसा कलयुग अन्त, सो सतिगुर आप जणाईआ। खेले खेल श्री भगवन्त, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। लेखा जाणे आदि अन्त, जुग करता भेव चुकाईआ। पकड़ उठाए साचे सन्त, हरिजन मेले सहिज सुभाईआ। नाम जणाए मणीआ मंत, मन का मणका आप भवाईआ। नाता जुड़ाए नार कन्त, आत्म परमात्म सोभा पाईआ। चोली चाढ़े रंग बसन्त, काया उतर कदे ना जाईआ। महिमा जणाए आप अगणत, लेखा लिख्त विच ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर फ़रमाना इक समझाईआ। धुर फ़रमाना देवे आप, प्रभ आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा करदे गए जाप, सो पुरख निरँजण हुक्म वरताईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आत्म परमात्म सच्चा पाठ, पूजा इष्ट देव गुर स्वामी इक्को इक समझाईआ। काया तत सरोवर इक्को तीर्थ ताट, घाट किनारा दए जणाईआ। महल अटल निर्मल नूर जोत प्रकाश, दीवा बाती कमलापाती इक टिकाईआ। सदा सुहेला इक इकेला हरि निरँकार वसे साथ, नित नवित्त आपणा संग निभाईआ। कलयुग अन्त मेटे अन्धेरी रात, पतिपरमेश्वर आपणा फेरा पाईआ। देवे सहारा अनाथां नाथ, दीन दयाल दीनन आपणे गले लगाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप निरगुण सरगुण चलाए राथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच संदेसा इक दृढ़ाईआ। सच संदेसा एकँकार, इक इकल्ला आप जणाइंदा। कलयुग अन्त करे ख़बरदार, बेख़बर ख़बर आप सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव नेत्र अक्ख लओ

उग्घाड़, लोचण सब दे आप खुलाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर चार कुण्ट दहि दिशा करो विचार, सृष्ट सबाई साचा हरि रूप नज़र कोए ना आइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान गई हार, हरि का रूप नेत्र नैण दरस कोए ना पाइंदा। चारे बाणी चारे खाणी कर कर थक्की ज्ञान, आत्म परमात्म मेल ना कोए मिलाइंदा। अठसठ तीर्थ जीव जंत कर कर थक्के अशनान, दुरमति मैल ना कोए धवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर संदेसा नर नरेशा एकँकार इक दृढ़ाइंदा। धुर फ़रमाना सुणो मीत, जुग चौकड़ी रिहा जणाईआ। आदि पुरख दी अगम्मी रीत, कोई समझ सके ना राईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दस्स के गए ठीक, शब्द निशाना इक जणाईआ। सदी चौधवीं जाए बीत, चौदां तबक देण दुहाईआ। चौदां लोक ना रहिण अतीत, सति सरूप ना कोए समाईआ। करे खेल प्रभू अनडीठ, हरि करता वड वड्याईआ। लख चुरासी वेखे कौड़ा रीठ, घट घट अन्दर फोल फोलाईआ। फिरे दरोही मन्दिर मसीत, शिवदुआले मट्ठ गुरुदुआर देण दुहाईआ। साची सिदक सबूरी रहे ना कोई नीत, नीतीवान साचा मार्ग कोए ना लाईआ। माया ममता हउमे हंगता कूड़ी क्रिया मन सब दा करे पलीत, अन्तर आत्म बूझ ना कोए बुझाईआ। झगड़ा पए ऊँच नीच, ज़ात पात करे लड़ाईआ। चार वरन क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश सच कराए ना कोए प्रीत, नाता इक ना कोए जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा लेखा इक समझाईआ। धुर फ़रमाना दस्से बीस बीस, सदी बीसवीं भेव चुकाईआ। साचा कलमा नज़र ना आए कोई हदीस, हज़रत करे ना कोए पढ़ाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा परखणहारा सब दी नीत, गृह मन्दिर खोज खोजाईआ। छत्र झुल्ले ना किसे सीस, राज राजान शाह सुल्तान बैठे ढेरीआं ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर संदेसा इक सुणाईआ। धुर संदेसा अन्तिम कल, हरि करता आप जणाइंदा। करे खेल प्रभ अछल अछल्ल, वल छल धारी खेल खलाइंदा। जोती शब्दी आपे रल, निरगुण निरगुण आपणी कार कमाइंदा। सच सिंघासण बहे मल्ल, सम्बल आपणा डेरा लाइंदा। पावे सार जल थल, उच्चे टिल्ले पर्बत खोज खोजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम भेव चुकाइंदा। कलयुग अन्तिम धुर संदेसा, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे वेसा, कलकाती रहिण ना पाईआ। सति सरूप होए प्रवेशा, धरनी धरत धवल मिले वड्याईआ। चार वरन इक्को इक संदेसा, सति फ़रमाना आप समझाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल नेत्र लोचण हरि भगतां पेखा, निज घर बैठा डेरा लाईआ। अलख अगोचर अगम्म अथाह खेले खेडा, बण खिलाड़ी फेरा पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस नूं मन्नदे

गए आपणा नेता, नर निरँकार सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम आपणा हुक्म जणाईआ। कलयुग हुक्म देवे ठाकर, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। लख चुरासी वेखे डूंग्घे सागर, भँवरी धार पार ना कोए कराईआ। साचे दर मिले ना किसे आदर, चार कुण्ट होए हल्काईआ। सच प्रकाश ना काया गागर, साढे तिन्न हथ्थ अन्धेरा छाईआ। निर्मल कर्म करे ना कोई उजागर, दुरमति मैल ना कोए धवाईआ। सूरबीर दिसे ना कोई बहादर, जो हरि मन्दिर चढ़ के हरि जू दर्शन पाईआ। मन वासना दहि दिशा फिरदे बानर, वृंदावन समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, वेखे ख़लक खुदाईआ। ख़लक खुदाई वेखे मख़लूक, परवरदिगार बेपरवाहीआ। नव नौ चार ना कोए सलूक, वरन बरन पई लड़ाईआ। फिरी दरोही चारे कूट, चौदां तबक रहे कुरलाईआ। नज़र ना आए कोई सच्चा पूत, पिता गोद ना कोए सुहाईआ । घर घर दिसे जूठ झूठ, कूड़ी क्रिया डेरा लाईआ। माया ममता लग्गी भूख, तृष्ना रोग रिहा सताईआ। आत्म परमात्म मिल के पाए कोई ना सूख, सुख आत्म नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हर घट वेखे थाउँ थाईंआ। कलयुग अन्तिम वेखण आया, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। नौ खण्ड पृथ्मी त्रैगुण माया, पंज तत अग्नी रही जलाईआ। साचा मन्दिर ना कोए सुहाईआ। गीत गोबिन्द ना कोए अलाईआ। साचे मन्दिर चढ़ के दरस किसे ना पाया, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ढोले रहे गाईआ। परमानंद ना कोए समाया, निजानंद रस ना कोए चुआईआ। भाण्डा भरम ना कोए भंनाया, दूई द्वैती ना किसे मिटाईआ। धुन आत्मक राग किसे ना गाया, अनहद राग ना कोए सुणाईआ। आत्म जोत ना किसे रुशनाया, दीवा बाती नज़र कोए ना आईआ। कमलापाती सेज ना कोए हंढ्ढाया, लख चुरासी नेत्र रोवे मारे धाहींआ। पुरख अबिनाशी घर दरस किसे ना पाया, निज नेत्र नैण अक्ख खुल्लाईआ । जगत वासना जगत हल्काया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हर घट आपणा फेरा पाईआ। हर घट वेखे हरि गोपाल, बेपरवाह खेल खलाइंदा। लख चुरासी विच्चों गुरमुख मिले लाल, जिस जन आपणा भेव चुकाइंदा। चारे खाणी विच्चों भाल, साचे हाणी शब्द मेल मिलाइंदा। सति सरूपी बण दलाल, दो जहानां वणज कराइंदा। हकीकत जाण हक़ हलाल, लाशरीक खोज खोजाइंदा। काया मन्दिर अन्दर सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलयुग अन्त श्री भगवन्त धुर फ़रमाणा साचा राणा एकँकारा आप जणाइंदा। कलयुग अन्त श्री भगवान, दो जहान शब्द जणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव दए ज्ञान, सुरप्त इन्द करोड़ तेतीस करे पढ़ाईआ।

गुर अवतार करो ध्यान, वड ध्यानी ध्यान वखाईआ। पीर पैगम्बर कलमा दे कलाम, सच पैग़ाम इक समझाईआ। आदि जुगादि ज़ाहर ज़हूर इक अमाम, परवरदिगार नूर इलाहीआ। वसणहारा हक़ मुकाम, मुकामे हक़ डेरा लाईआ। सचखण्ड दुआर सच मकान, सति सतिवादी सोभा पाईआ। थिर घर खोल् इक दुकान, घर घर विच दए वड्याईआ। शब्दी सुत कर बलवान, सच दुआरे दए टिकाईआ। धुर संदेसा नौजवान, सो पुरख निरँजण आप समझाईआ। कलयुग अन्त नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप वेख मार ध्यान, उतर पूरब पच्छिम दक्खण फेरा पाईआ। लेखा जाण ज़िमीं असमान, ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अंड उत्भुज सेत्ज आपणा हुक्म वरताईआ। आत्म परमात्म बण सब दा काहन, गोपी इक्को नूर नज़री आईआ। धर्म वखा धुर निशान, दो जहानां आप झुलाईआ। साचा दस्स इक इस्लाम, मन्त्र सच इक पढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया छड्ड दयो जहान, माया ममता हउमे हंगता कम्म किसे ना आईआ। भुक्खा नंगता करे परवान, ग़रीब निमाणयां मिले माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। कलयुग अन्तिम खेल करतार, करता पुरख आप कराइंदा। जोती जामा लै अवतार, कल कल्की फेरा पाइंदा। सम्बल वसे धाम न्यार, भेव अभेदा समझ कोए ना आइंदा। शब्द संदेसा देवे एका वार, नर नरेशा हुक्म वरताइंदा। देस परदेसां करे ख़बरदार, आलस निंद्रा सर्ब गवाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम वेख वखाइंदा। कलयुग अन्तिम वेखे हाल, जीव जंत रहे कुरलाईआ। सब दे सिर ते कूके काल, काल नगारा डंक वजाईआ। सतिगुर शब्द दिसे ना किसे नाल, काया मन्दिर ख़ाली देण दुहाईआ। वेले अन्त करे ना कोई प्रितपाल, सीस हत्थ ना कोए टिकाईआ। बिन हरि नामे सारे होए कंगाल, ख़ाली झोली रहे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे रिहा उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर उठो खोल्हो अक्ख, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। मातलोक जो मार्ग आए दस्स, जुग चौकड़ी राह जणाइंदा। कलयुग जीव सारे गए नट्ठ, रहबर नज़र कोए ना आइंदा। धीरज जत ना तीर्थ तट, अठसठ नेत्र नैणां नीर वहाइंदा। गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती नेत्र नीर रोवे अथ्थ, सांतक सति ना कोए वरताइंदा। साधां सन्तां रिहा ना धीरज जत, सति सरूप ना कोए समाइंदा। नाड़ बहत्तर घर घर उबली रत्त, अमृत मेघ ना कोए बरसाइंदा। हिरदे प्रभू किसे ना जाए वस, वसल हक़ ना कोए कराइंदा। अमृत आत्म निझर झिरना लए ना कोई रस, मदिरा रस सर्ब पान कराइंदा। श्री भगवान नौजवान मेहरवान सब दे नालों होया वक्ख, घर मेला ना कोए मिलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुर अवतार

९६१
१५

पीर पैगम्बरां कलयुग अन्तिम खेल आप वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखो मार ध्यान, नव नौ चार अन्धेरा छाईआ। सृष्ट सबाई भुल्ला धुर ज्ञान, सिख्या सच ना कोए समझाईआ। चारों कुण्ट कूड़ प्रधान, जूठ झूठ करे लड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, भेव अभेदा आप जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेख लोकमात, इक दूजे वल नैण उठाईआ। सृष्ट सबाई नौ खण्ड पृथमी चार कुण्ट साची दिसे ना कोई जमात, पट्टी नाम ना कोए पढ़ाईआ। लेखा लिख के आए जो कलम दवात, काग़ज़ शाही नाल रलाईआ। मूर्ख मुग्ध अञ्याण धुर दी सुणे ना कोई बात, गुर मन्त्र प्रभ हिरदे शब्द ना कोए वसाईआ। मन वासना नार होई कमज़ात, गुरमति बैठी मुख छुपाईआ। कूड़ी क्रिया डूंग्घा भरया खात, मूर्ख डिगण वाहो दाहीआ। आत्म परमात्म देवे ना कोई साथ, पारब्रह्म ब्रह्म मेल ना कोए मिलाईआ। साचे पत्तण पार उतरे ना कोई घाट, माही मिले ना बेपरवाहीआ। चारों कुण्ट अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। माया ममता भोग बलास, घर सुहागी कन्त ना कोए हंढ्ढाईआ। जगत वासना वेखण रास, सुरती शब्दी गोपी काहन ना कोए नचाईआ। साहिब स्वामी किसे वसे ना पास, घर मीत नज़र कोए ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे होए उदास, हौका लै लै रहे सुणाईआ। तेरा खेल पुरख अबिनाश, पारब्रह्म प्रभ तेरे हथ्थ वड्याईआ। हउँ बालक नढ्ढे तेरे दास, जुग चौकड़ी एका सेव कमाईआ। तेरा संदेसा दे के आए ख़ास, ख्वाहिश आपणी नाल मिलाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होवे शाहो शाबाश, शहिनशाह आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, हरि जू तेरे दर सीस झुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर गए झुक, निमस्कार नमो नमो सजदा सीस झुकाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार साडा पैंडा गया मुक, कलयुग अन्तिम वेला आईआ। मेहरवान श्री भगवान तेरा भाणा कदे ना जाए रुक, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। दो जहान तेरी रख के बैठे ओट, कलयुग अन्त पुरख अकाल आवे फेरा पाईआ। करे प्रकाश निर्मल जोत, जोती जोत नूर रुशनाईआ। धर्म दुआरे वसे इक्को कोट, देवे बंक सच वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। तेरे दर प्रभ अलख, अलख अगोचर अगम्म अथाहीआ। निझर धार प्रगट हो प्रतख, बीस बीसा तेरा राह तकाईआ। निरगुण रूप पुरख समरथ, शाह पातशाह तेरी सरनाईआ। जन भगतां दे आपणी वथ, वस्त अमोलक इक वरताईआ। कलयुग अन्तिम मार्ग दस्स, सतिजुग साचा राह चलाईआ। कूड़ी क्रिया दे मथ, नाम मधाणा इक्को पाईआ। सच दुआर खोल्ह हट्ट, बण वणजारा हट्ट चलाईआ। चार वरनां इक्को नाम दस्स, दहि दिशा कर पढ़ाईआ। हर घट स्वामी हिरदे हर घट वस, हर घट आपणा डेरा लाईआ।

अमृत आत्म दे रस, निझर झिरना इक झिराईआ। निरगुण जोत कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। काया मन्दिर अन्दर कर वास, सुरती शब्दी मेल मिलाईआ। आत्म सेजा कर भोग बलास, आत्म परमात्म आपणी गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर दर बैठे सीस झुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगण दान, सदी बीसवीं ध्यान लगाईआ। चौदां तबक होए हैरान, चौदां लोक रहे कुरलाईआ। चौदां विद्या मिले ना किसे भगवान, चौदस चन्द ना नूर रुशनाईआ। इक चार दा समझे ना कोई ज्ञान, एकँकार तेरा भेव कोए ना पाईआ। चौथे बद्धे ना कोई आण, चारे बाणी चार खाणी संग ना कोए निभाईआ। दाते जोद्धे सूरबीर नौजवान, तख्त निवासी पुरख अबिनाशी तेरी ओट इक रखाईआ। मण्डल रासी तेरा खेल महान, थिर घर वासी तेरी इक सरनाईआ। पुरख अबिनाशी तेरी आण, सचखण्ड निवासी तेरी ओट इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे साचा वर, कलयुग अन्तिम जीव जंत साध सन्त साचे मार्ग दे लगाईआ। कलयुग भुल्ले जीव गंवार, हिरदे हरि ना कोए वसाईआ। चार कुण्ट धूंआँधार, जगत अन्धेरा रिहा छाईआ। गुर के शब्द ना कोए प्यार, इष्ट देव नज़र किसे ना आईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ जगत सियासत करे हाहाकार, भगत विरासत हथ्थ किसे ना आईआ। किरपा कर किरपा धार, कृपानिध तेरी इक सरनाईआ। तेरे विछड़े तैथों यार, आत्म परमात्म गंढ ना कोए पाईआ। किरपा कर ठाकर स्वामी बंद कवाड़ी खोल्ह कवाड़, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। अमृत रस दे ठांडा ठार, निझर झिरना इक झिराईआ। अनहद शब्द वजा सच्ची धुनकार, धुन आत्मक राग सुणाईआ। घर मन्दिर दीवा बाती दे बाल, निरगुण जोती जोत रुशनाईआ। आपणा मुखड़ा निरगुण निरवैर दे वखाल, क्यों बैठा मुख भवाईआ। तुध बिन सोहे ना कोई काया मन्दिर सच्ची धर्मसाल, काअबा हुजरा महिराब तेरा नूर नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे साचा वर, मूर्ख मुग्ध दे पढ़ाईआ। पारब्रह्म की तेरी माया, बेअन्त तेरी वड्याईआ। कलयुग जीव जगत भुलाया, तेरा नाउँ रसना जिह्वा कहिण कोए ना पाईआ। कूड़ी माया ममता विच रुलाया, हउमे हंगता गढ़ तुड़ाईआ। साची संगता दे मेल मिलाया, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। आत्म परमात्म ना किसे समझाया, पारब्रह्म प्रभ आपणा रंग चढ़ाईआ। साचा नाता ना किसे बंधाया, पुरख बिधाता आपणा घर वखाईआ। कूड़ी क्रिया जगत गाया, धन्दा झूठा झोली पाईआ। साचा बंदा ना बंदगी लाया, वन्दना इक ना कोए दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच्चा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। मंगी मंग तेरे दरबार, दोए जोड़ इक अरज़ोईआ। किरपा कर प्रभ सिरजणहार, एथे ओथे

९६३
१५

दो जहान मिले ढोईआ। सृष्ट सबाई कर प्यार, दूई द्वैत डेरा ढाहीआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश इक्को मन्दिर दे वखाल, काअबा इक्को घर नज़री आईआ। सच दुआर सोहे सच्ची धर्मसाल, जिस दुआरे बैठा डेरा लाईआ। दर मंगण शाह कंगाल, ऊँच नीच रहिण कोए ना पाईआ। शब्द गुरू बण दलाल, जगत दलाली आपणे हथ्थ रखाईआ। नाता तोड़ काल महाकाल, जन भगत दे जणाईआ। निरगुण हो के चल नाल, सरगुण आपणी उंगली लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, जीवां भुल्लयां भरम भुलेखा दे कढ्ढाईआ। श्री भगवान पुरख समरथ, शाह पातशाह आप जणाईआ। गुर अवतारो पीर पैगम्बरो जुग चौकड़ी चलाया तुहाड्डा रथ, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढ्ढाईआ। नाम निधान देंदा रिहा वथ, वस्त अमोलक झोली पाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी मार्ग दस्स, दहि दिशा शब्द पढ़ाईआ। अठसठ तीर्थ दित्ता रस, नीर सीर रूप वटाईआ। जुग चौकड़ी गए लँघ, नव नौ चार पन्ध मुकाईआ। कलयुग अन्त अन्धेरा वेख अन्ध, अन्धकार होया सर्ब लोकाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव उच्ची कूक सुणावण आपणा छन्द, ढोला राग इक जणाईआ। किरपा कर प्रभू बख्शंद, बख्शणहार तेरे हथ्थ वड्याईआ। त्रैगुण माया प्या फंद, पंज तत सके ना कोए तुड़ाईआ। आत्म तेरी दिसे रंड, परमात्म कन्त ना कोए हंढ्ढाईआ। तुटी सके ना कोई गंढ्ढ, गंढ्ढणहार क्यों बैठा मुख छुपाईआ। दर दुआरे मंगी इक्को मंग, कलयुग अन्तिम आउणा बेपरवाहीआ। वेस वटाउणा सूरे सरबँग, शहिनशाह आपणी धार जणाईआ। लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां पार लँघ, सच दुआरे डेरा लाईआ। सेज सुहञ्जणी सच वछौणी पलँघ, पावा चूल नज़र कोए ना आईआ। सृष्ट सबाई बेपरवाही अन्तर आत्म गाउणा इक्को छन्द, तूं मेरा मैं तेरा दूजा नज़र कोए ना आईआ। कलयुग कूड़ा गया हंढ्ढ, सतिजुग साचा प्रेम मार्ग इक लगाईआ। कूड़ी क्रिया दूर करना गंद, अमृत रस इक चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, लख चुरासी दे समझाईआ। लख चुरासी अन्त समझावांगा। निरगुण निरवैर वेस वटावांगा। साचे दर सोभा पावांगा। नर नरायण इक अख्वावांगा। विष्न ब्रह्मा शिव महेष नाल मिलावांगा। गुर अवतारां जगावांगा। लहिणा सब दी झोली पावांगा। जन भगतां दस्स आपणा भेत, पड़दा दूई द्वैत उठावांगा। आत्म परमात्म कर के हेत, साचा मार्ग इक चलावांगा। नज़री आवां नेतन नेत, दूर दुराडा पन्ध मुकावांगा। धुर दी अगम्मी खेल, ख़ालक ख़लक आप समझावांगा। शब्द संदेसा इक्को भेज, चारों कुण्ट भरम चुकावांगा। जोती चमके नूरी तेज, साचा दीप इक रुशनावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, कलयुग लेखा पूर करावांगा। कलयुग लेखा अन्त मुकाएगा। प्रभ आपणी दया कमाएगा। कल कल्की वेस वटाएगा।

निहकलंक नाउँ रखाएगा। शब्द डंक इक वजाएगा। दुआर बंक इक सुहाएगा। शब्द जैकार इक लगाएगा। राज राजान शाह सुल्तान आप उठाएगा। जीव जगत जहान आप जगाएगा। धर्म निशान इक झुलाएगा। सत्त रंग रूप इक वखाएगा। एको इक्की मिल के पाएगा। साची सिक्खी सच वखाएगा। धार तिक्खी धार रूप वखाएगा। अनडिठी कार कमाएगा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां जो लिख के दिती चिट्ठी, तिस लेखा लेखे लाएगा। करे खेल बीस बीसी, सदी बीसवीं जाणे आपणी मिती, मित्र प्यारा इक्को नज़री आएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दा हुक्म इक वरताएगा। धुर दा हुक्म वरते जग, जगजीवण दाता आप वरताईआ। कलयुग कूड़ कुड़यारा जाए भज्ज, लोकमात रहिण ना पाईआ। सतिजुग साचा धरत मात दी गोदी जाए सज, बाला निक्का रूप आप वटाईआ। श्री भगवान करे खेल पुरख समरथ, साची खेल आप कराईआ। सति सतिवादी देवे इक्को वथ, सच भण्डारा झोली पाईआ। प्रभ सरनाई जाए ढठ्ठ, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। कलयुग दूर दुराडा जाए नठ्ठ, नेत्र रोवे नीर वहाईआ। श्री भगवान कर किरपा दोहां दा करे इक इकठ्ठ, घर साचे लए मिलाईआ। इक दूजे दी लवो मत्त, मति भेद दए मुकाईआ। चारे जुग मेरी रत्त, रत्ती रत विच्चों प्रगटाईआ। अन्त विछोड़ा बीस बीस कट, चिन्ता सोग ना कोए जणाईआ। प्रभ सरनाई जाणा वस, चरण कँवल डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। कलयुग अन्तिम हो हैरान, प्रभ साचे रिहा जणाईआ। मेरा मुहम्मद नाल निशान, मेहरवान तेरी सरनाईआ। सदी वीहवीं मेला अन्तिम कर जहान, दो जहानां वाली दया कमाईआ। साचे मीआं तेरी रहमत वड रहमान, रहम इक्को मोहे भाईआ। सिदक सबूरी दे ईमान, आलम उल्मा कर इक पढ़ाईआ। तेरा कलमा कायनात कलाम, चौदां तबक शरीअत तेरा नूर नज़री आईआ। तूं साहिब इख़लाकी इक अमाम, इतफ़ाकी मिल्या बेपरवाहीआ। गुस्ताखी वेख ना कोए निशान, मुआफ़ी तेरे दर ते पाईआ। साकी बण के दे जाम, आबेहयात प्याला मुख लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। धुर संदेसा राज राजान, शाह पातशाह आप जणाईआ। सदी बीसवीं खेल महान, बीस बीसा आप कराईआ। लेखा जाणे दो जहान, निरगुण सरगुण दोवें धार वखाईआ। कलयुग लेखा चुक्के आण, चार कुण्ट रहिण ना पाईआ। इक्को वार थित दिवस करे महान, कत्तक पन्द्रां दए वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर इकट्ठे होवण आण, दर घर साचे सोभा पाईआ। सब दे सुणे आप ब्यान, अदालत अदल इक्को लाईआ। चार जुग दा लेखा वेखे आण, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग भुल कोए ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल

साचा हरि, नर निरँकार वड्डी वड्याईआ। नर निरँकार वड्याई वड, हरि करता इक अख्वाइंदा। जुग चौकड़ी आपणी धारों कढ्ढ, धार धार विच्चों प्रगटाइंदा। अन्तिम हुक्मे अन्दर लए सद्द, रूप रंग रेख नज़र किसे ना आइंदा। शब्द सरूपी पार करे हद्द, हदूद आपणी झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग तेरी अन्तिम वर, निहकलंक नरायण नर, पुरख अकाल दीन दयाल इक्को एक हुक्म वरताइंदा। पुरख अकाल हुक्म वरतंत, वारता सब दी वेख वखाईआ। ठाकुर स्वामी साहिब भगवन्त, भगवन आपणा भेव चुकाईआ। गुरमुख वेख साचे सन्त, सति सतिवादी आप जगाईआ। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म करे पढ़ाईआ। चार वरन बणा साची संगत, संग आपणा आप रखाईआ। दूजे दर कोई ना जावे मंगत, जिस जन आपणा नाम दान झोली देवे पाईआ। हरि का भेव ना जाणे कोई पंडत, शास्त्र सिमरत समझ कोए ना पाईआ। आदि जुगादि इक अखण्डत, ब्रह्मण्ड खण्ड वेखे चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन मेला सहिज सुभाईआ। हरि जी मेले गहर गम्भीर, गुणवन्ता वड वड्याईआ। जन भगतां ठांडा करे सरीर, अग्नी तत बुझाईआ। अमृत बख्शे निज नीर, सीर इक्को मुख चुआईआ। लेखा जाणे शाह हकीर, ऊँच नीच रंग रंगाईआ। दरस दिखाए बेनज़ीर, नज़र नज़र नाल मिलाईआ। चोटी चाढ़े फड़ अख़ीर, अद्धविचकार ना कोए रखाईआ। बदल देवे आप तकदीर, तदबीर आपणी दए जणाईआ। दर दरवेश पैगम्बर पीर, हज़रत बैठे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन मेले फड़ फड़ आपणी बांहींआ। हरिजन मेले सच दुआर, दरगाह साची मिले वड्याईआ। पूरब जन्म दा लहिणा देणा दए निवार, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। कलयुग अन्तिम वेखणहार आप करतार, करता पुरख बेपरवाहीआ। भगत भगवान लए उठाल, आलस निंद्रा दए मिटाईआ। सन्त सुहेले रखे नाल, जुग जुग आपणा संग निभाईआ। गुरमुख वेखे धुर दे लाल, लालन इक्को रंग चढ़ाईआ। गुरसिखां करे सदा प्रितपाल, बण प्रितपालक सेव कमाईआ। मुरीदां मुर्शद देवे जलवा नूर जलाल, ज़ाहर ज़हूर नज़री आईआ। कलयुग अन्तिम खेल करे बेमिसाल, बेपरवाह आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जुग चौकड़ी नव नौ चार अन्तिम डेरा रिहा ढाहीआ। नव नौ चार मुक्के पन्ध, लोकमात रहिण ना पाईआ। सति सतिवादी सतिजुग धार बणाए अगम्मी बणत, सतिजुग ढोला इक्को गाईआ। चार वरन पूरी करे मंग, गुर अवतार पीर पैगम्बर आसा मनसा पूर कराईआ। प्रगट हो सूरा सरबँग, शाह पातशाह इक्को मार्ग दए वखाईआ। आत्म ब्रह्म इक अनन्द, पारब्रह्म मेला सहिज सुभाईआ। जुग जन्म दी टुट्टी गंढ, बन्धन

इक्को नाम रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सुहेले लए फड़, काया पौड़े साचे चढ़, महल अटल डेरा लाईआ। महल अटल ठाकर स्वामी, घर घर विच सोभा पाइंदा। बोध अगाध शब्द अनाद सुणाए बाणी, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोए हिलाइंदा। अमृत रस निझर झिरना देवे ठंडा पाणी, सर सरोवर इक नुहाइंदा। आत्म परमात्म परमात्म आत्म देवे धुर निशानी, तीर निराला अणयाला इक चलाइंदा। आवण जावण दो जहान हरिजन चुक्के काणी, लख चुरासी फंद कटाइंदा। देवणहारा पद निरबाणी, निरबाण पद इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग तेरी अन्तिम वर, हरि भगत सुहेले आपणे रंग रंगाइंदा। भगतां रंग चाढ़े अनमोल, अमुल हथ्थ वड्डी वड्याईआ। साचे कंडे देवे तोल, नाम तराज़ू इक्को इक वखाईआ। बंद कवाड़ी ताकी कुण्डा देवे खोल्, दूई द्वैती पड़दा दए उठाईआ। हर घट स्वामी हिरदे अन्तर आत्म जाए मौल, मौला आपणी सेव कमाईआ। पूरब जन्म कर्म लेखा पूरा करे कीता कौल, कौल इकरार कीता भुल्ल कदे ना जाईआ। देवे वड्याई उपर धरनी धरत धवल धौल, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। हरि का भेव कोई ना पावे पंडत पांधा रौल, रौला पावे सर्ब लोकाईआ। गुरमुख विरला जाणे जिस सतिगुर अन्दर वसया कोल, बाहरों नज़र किसे ना आईआ। अमृत धार सच प्याए अगम्मी पौहल, रस मिट्ठा इक वखाईआ। सच प्रीती घोली घोल, घोल घुमाई आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर संदेसा इक दृढ़ाईआ। धुर संदेसा हरि का नाम, हरी हरि नरायण आप जणाइंदा। अमृत आदि जुगादी इक जाम, सच प्याला रस वखाइंदा। निरगुण सरगुण पूरन करे काम, निष्काम आपणी सेव कमाइंदा। आत्म परमात्म देवे इक आराम, सचखण्ड दुआरा आरामगाह इक सुहाइंदा। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत करे परवान, नाम परवाना इक्को इक वखाइंदा। कर किरपा जिस देवे आपणा ज्ञान, सो गुरमुख दूजी कुतब पढ़न किते ना जाइंदा। चौदां विद्या होण हैरान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, चार वरनां देवे इक्को वर, चार कुण्ट इक्को राम इक्को नाम इक्को काम इक्को पैग़ाम मुर्शद मुरीद शुनीद दीद ईद चन्द नूर इक चमकाइंदा।

✪ ७ कत्तक २०२० बिक्रमी अमर सिँघ जेठूवाल दे नवित्त जेठूवाल दरबार विच ✪

भगत सुहेला हरि निरँकार, हरी हरि हरि दुआरे सोभा पाइंदा। नित नवित्त पावे सार, जुग चौकड़ी वेख वखाइंदा। दर्शन दे अगम्म अपार, अलख अगोचर दया कमाइंदा। घर मन्दिर दीपक जोती बाल, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। आत्म परमात्म

वसे नाल, सगला संग जणाइंदा। कूड़ी क्रिया तोड़ जंजाल, जीवण जुगत इक समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। भगत भगवान ठांडा दर, घर घर विच जणाईआ। जिस मन्दिर स्वामी जाए वड़, तिस बंक मिले वड्याईआ। निरगुण नूरी जोत धर, धरनी धरत धवल सुहाईआ। करता पुरख प्रभ करनी कर, अक्ल कल दए जणाईआ। रोग सोग चिन्ता विजोग हर, हरि जू बेड़े नाम चढ़ाईआ। जन्म मरन भय चुक्के डर, भय भ्यानक डेरा ढाहीआ। शब्द अगम्मी बांहों फड़, भव सागर लए तराईआ। लै के जाए साचे दर, दरगाह साची खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। भगतन संग सदा रंग राता, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। चरण कँवल सच बंधे नाता, घर मेला सहिज सुभाईआ। धुर धाम दी सुणाए गाथा, सुख राम रूप जणाईआ। बोध अगाधी दस्से पाठा, पूजा सिमरन इक दृढ़ाईआ। लेखा जाणे अनाथ अनाथा, दीनन दया आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मीता बेपरवाहीआ। भगतन मीता बण के आप, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। धुरदरगाही सच्चा जाप, सो सतिगुर आप जणाइंदा। कोट जन्म दे उतार पाप, दुरमति आप धवाइंदा। कलयुग मेट अन्धेरी रात, घर चन्द नूर चमकाइंदा। पारब्रह्म ब्रह्म बणाए सज्जण साक, सगला संग रखाइंदा। शब्द अगम्मी चाढ़ राथ, बण रथवाही वेख वखाइंदा। पार उतार आपणे घाट, डूंघी भँवरी डेरा ढाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेख वखाइंदा। जन भगतां पेख वेख दयाल, दीख्या आपणी दए जणाईआ। बुध विवेक वसेख घर धर्म सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक जणाईआ। धुर दा लेख जाणे आप प्रितपाल, बण प्रितपालक सेव कमाईआ। जुग चौकड़ी वेस कमाल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन हरि देवे माण वड्याईआ। वडयावण को प्रभ एक स्वामी, हरि वड्डा वड अख्वाइंदा। आदि जुगादि अन्तरजामी, धुर दी बाणी राग अलाइंदा। शब्द अनादी अकथ कहाणी, बुध मति भेव कोए ना आइंदा। सचखण्ड दी सति निशानी, सति सतिवादी आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दया कमाइंदा। जन भगत प्रभ वेखे एक, एकँकार वड्डी वड्याईआ। साची दे के धुर दी टेक, धुर दी धार आप समझाईआ। लेखा जाणे अलखना लेख, अलख अगोचर आपणा भेव चुकाईआ। वसणहारा अनडिठड़े देस, देस दसन्तर सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे मेल मिलाईआ। भगत मिलाए भाउ भगती, भगवन आपणा रंग रंगाइंदा। फड़ उठाए आदि शक्ति, शाह पातशाह हुक्म वरताइंदा। पंज तत चुक्के ना कोई अर्थी, अर्शी प्रीतम खेल खलाइंदा। साहिब सुल्तान परम पुरख जन

भगत जणाए इक बरसी, रुत्त रुतड़ी नाल रलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप वखाइंदा। साची खेल भगतां अन्तर, आत्म परमात्म आप कराईआ। पवण स्वामी साचा मन्त्र, शब्दी शब्द जणाईआ। हर घट खेल करे बिध अन्तर, अन्तर अन्तष्करन वेख वखाईआ। सोभा अनेक गगन गगनंतर, गृह मण्डल गोपी काहन रास वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। करे खेल साहिब सतिगुर, सति सतिवादी वेख वखाइंदा। जन्म कर्म दा लेखा धुर, धुरदरगाही झोली आप भराइंदा। बिन नेत्र लोचण वेखे कर के ग़ौर, गहर गम्भीर खोज खोजाइंदा। कर प्रकाश अन्धेरे घोर, साचा चन्द नूर चमकाइंदा। निरगुण सरगुण पकड़े डोर, डोरी तन्द आपणे हथ्थ उठाइंदा। जुग चौकड़ी जन भगतां वेखे लोड़, लोकमात निरगुण सरगुण हो के आइंदा। जोत सरूपी आए दौड़, जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे वेख वखाइंदा। वेखण को प्रभ आए ठाकुर, शाह पातशाह वड्डी वड्याईआ। जगत जहान डूंघा सागर, वड भँवरी फोल फोलाईआ। लेख चुका काया गागर, पंज तत माटी ख़ाकी सोभा पाईआ। वणज कराए इक सौदागर, वस्त अमोलक नाम वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि होए सहाईआ। आदि जुगादि होए सहायक, साहिब सतिगुर हथ्थ वड्याईआ। पुरख पुरखोतम साचा नायक, नायका वेखे चाईं चाईंआ। शब्द अनादी कर हदाइत, हदीस साची इक जणाईआ। जन भगतां करे सदा हमायत, सच रफ़ीक नज़री आईआ। जोती जोत सरुप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि सतिगुर इक अख्वाईआ। हरि सतिगुर अख्वाए इक प्रभ, भेव कोए ना पाइंदा। आर पार किनारा ना कोई हद्द, वड्डा छोटा समझ किसे ना आइंदा। बिन हरि किरपा कोई ना सके लभ्भ, कोटन कोटि लोकमात बण बण पांधी चारों कुण्ट उठ उठ धाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा भेव आप छुपाइंदा। आपणा भेव रखे ओहले, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। गुरमुख विरले पड़दा खोल्हे, जिस जन साची बूझ बुझाईआ। नाम कंडे साचे तोले, बण के तोला धुरदरगाहीआ। निरगुण हो के आत्म मौले, परमात्म रंग चढ़ाईआ। धुर दुआर साचा खोल्हे, घर वज्जे नाम वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, हरिजन देवणहार वड्याईआ। हरिजन वड्याई मात जन्म, जन्म कर्म प्रभ आपणे हथ्थ रखाइंदा। लेखा चुका वरन बरन, वरन आत्मक इक समझाइंदा। करता पुरख बण के करनी करन, कार्या कर्म आप समझाइंदा। सतिगुर सरनाई साचे चरण, सच चरणोदक अमृत मुख चुआइंदा। नेत्र खुल्हे हरन फरन, दीद ईद इक्को नूर रुशनाइंदा। पंच विकार मूल ना लड़न, कूड़ी क्रिया

डेरा ढाइंदा। गुरमुख पौड़े साचे चढ़न, सतिगुर साचा मेल मिलाइंदा। मिल के ढोला इक्को पढ़न, सोहँ राग अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म कर्म देवणहारा दान, सरन इक्को घर वखाइंदा।

✪ ११ कत्तक २०२० बिक्रमी माहला सिँघ दे नवित्त जेठूवाल दरबार विच ✪

हरि दर्शन तरसण लोक परलोक, दो जहान ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रखण ओट, सीस जगदीश इक झुकाईआ। कवण वेला प्रभ देवे सच श्लोक, धुर फ़रमाना नाम झोली पाईआ। साचा मन्दिर सुहाए किला कोट, बंक मिले इक वड्याईआ। निर्दोषयां उपर कोई ना लावे दोष, मेहर नज़र नैण तकाईआ। नव नौ चार बैठा रिहा ख़ामोश, उच्ची कूक ना कोए अलाईआ। कलयुग अन्तिम आपणी पूरी करे लोच, आसा इक्को इक प्रगटाईआ। जन भगतां देणा धुर जोग, साची सिख्या सच पढ़ाईआ। जन्म कर्म मिलावा धुर संजोग, देवे वजोगी रूप कटाईआ। घर देवे दरस अमोघ, गृह मन्दिर फेरा पाईआ। वस्त अगम्म चुगाए चोग, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। दो जहान रखण आस, आसा आपणी आप प्रगटाईआ। कवण वेला प्रभ किरपा करे अबिनाश, अबिनाशी आपणा भेव चुकाईआ। सच दुआरे आ के पावे रास, घर मन्दिर खुशी मनाईआ। चरण कँवल देवे भरवास, भरवासा आपणा इक बंधाईआ। आदि जुगादि कोई ना होवे निरास, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। कलयुग अन्तिम जन भगतां पूरी करे ख्वाहिश, ख्वाहिश आपणे नाल मिलाईआ। जगत अन्धेर कर प्रकाश, साचा नूर जोत रुशनाईआ। जन भगतां होण ना देवे उदास, ग़मी खुशी नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नज़र इक उठाईआ। लोक परलोक तक्कण राह, नेत्र नैण उठाईआ। कवण वेला प्रभ दर्शन देवे आ, दीद ईद चन्द रुशनाईआ। कवण वक्त प्रभ बणे सच मलाह, साचा बेड़ा कंध उठाईआ। कवण वेला प्रभ नूरी जलवा दए दरसा, अन्ध अन्धेरा दए गंवाईआ। कवण वक्त प्रभ घर मन्दिर बहे डेरा ला, सच सिँघासण सोभा पाईआ। कवण वेला प्रभ आलस निंद्रा दए मिटा, निज नेत्र इक खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाईआ। लोक परलोक रहे झुक, सीस जगदीश चरण रखाईआ। कवण वेला प्रभ पैंडा जावे मुक, साहिब सतिगुर दए समझाईआ। तेरा निशाना ना जावे उक, तीर अंदाज़ तेरी वड्याईआ। सच महल्ले बहे उठ, पड़दा रहिण कोए ना पाईआ। दरस भेव क्यों बैठा

चुप, सुंन समाध ना कोए चतुराईआ। तेरे कोलों रहे पुछ, बेपहचान दे समझाईआ। किस कारण बैठों लुक, निरगुण आपणा मुख भवाईआ। भगत भगवान वेख लाडले सुत, दर तेरे सोभा पाईआ। लोक परलोक होवे उजल मुख, दो जहान मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची सरनाईआ। लोक परलोक कहिण प्रभ एक, एकँकार तेरी सरनाईआ। सन्त सुहेले आ के वेख, बेपरवाह फेरा पाईआ। तेरे नाल करन हेत, नित नवित्त ध्यान लगाईआ। बिरहों वैराग विछोड़े कीता छेक, छलनी आपणा आप कराईआ। आ बौहड़ अगम्मे देस, अगम्म पुरख तेरी वड्याईआ। तेरा मुखड़ा लईए पेख, नेत्र नैण रीझाईआ। तेरी गोदी लईए खेड, बण मालक रूप सखाईआ। तैनूं मिल के खोल्हीए भेत, पड़दा उहला कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, शाह पातशाह तेरी शहिनशाहीआ। शाह पातशाह मेरे सुल्तान, लोक परलोक रहे जस गाईआ। आदि जुगादी निगहबान, निरवैर पुरख तेरी सरनाईआ। सति पुरख निरँजण नौजवान, बेनज़ीर तेरी रुशनाईआ। सचखण्ड निवासी साचे काहन, कँवल नैण सोभा पाईआ। मुकामे हक़ बी पिहर अमाम, आमद तेरी सच्ची भाईआ। वड शाहो भूप विच जहान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, शहिनशाह तेरी वड्याईआ। शहिनशाह मेरे राज राजान। भूपत भूप वड्ड सुल्तान। सति सरूपी मर्द मर्दान। अलख अगोचर नौजवान। तख्त निवासी हुक्मरान। शब्द अनादी तेरा फ़रमाण। दर घर साचे दर्शन देणा आण। निरगुण निरवैर रूप वखाण। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, मिले मेल श्री भगवान। श्री भगवान पुरख अकाल, अक्ल कल तेरी वड्याईआ। लोक परलोक करन स्वाल, दर स्वाली झोली डाहीआ। वेख मुर्शद मुरीदां हाल, महिबूब मुहब्बत आपणी तोड़ निभाईआ। साहिब सतिगुर तेरी घालण रहे घाल, कीती घाल लेखे पाईआ। सति प्रीती निभे नाल, घर मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, शाह पातशाह तेरी वड्याईआ। शाह पातशाह सच भगवान, जन भगतां आप जणाइंदा। लोक परलोक रल मिल ढोला गाण, सिफ्ती सोहला राग समझाइंदा। कलयुग अन्तिम कर पहचान, बेपहचान मेल मिलाइंदा। अनडिठड़ी वस्त दे दान, अमोलक झोली आप भराइंदा। साची गोलक खोल्ह दुकान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। साची सिख्या भगत भगवान गुरसिख, हरि सतिगुर सच जणाईआ। धुर दा लेखा देवे लिख, पूरब लेखा आपणी झोली पाईआ। सर्ब जीआं दा सांझा पित, लख चुरासी वेखे थाउँ थाईंआ। सन्त सुहेले कर के हित, हितकारी मेल मिलाईआ। लख चुरासी सृष्टी जित, हार सब दी झोली पाईआ। जन भगतां

लेख अनोखा लिख, धोखा दग़ा ना कोए कमाईआ। मोछा देवे ना कोई सिख, साहिब सतिगुर अन्तिम आपे होवे सहाईआ। पिछले मित्रां लए पुच्छ, अग्गे पितरां दए वड्याईआ। प्रभू हथ्थ सब कुछ, कमी कोई रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन आपणे लेखे लाईआ। हरिजन लेखे लाए आप, नर आपणे रंग रंगाइंदा। एथे ओथे बण के बाप, पिता पूत गोद सुहाइंदा। सति धर्म दा सच्चा जाप, सति सतिवादी आप जपाइंदा। कोट जन्म उतार पाप, पतित पुनीत आप वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा धुर दा दान, जम फाँस आप कटाइंदा।

१२ कत्तक २०२० बिक्रमी सन्त हरभजन सिँघ खुजाला दे नाल अचल नगर बटाला ज़िला गुरदासपुर

जगत संसारीआं जगत मेला, खेले खेल जगत लोकाईआ। सन्तां संग सन्त सुहेला, सति सतिवादी सति सरूप समाईआ। भगतां मेल भगत सोहे वेला, सुहञ्जणी घड़ी सोभा पाईआ। इष्ट दृष्ट खुल्ला वेला, घड़ी पल ना वंड वंडाईआ। ना कोई गुरू ना कोई चेला, मुरीद मुर्शद रूप ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। सोहणा वेला होए सुहञ्जणा, वज्जे सच वधाईआ। सन्त दुआरे सन्त मजना, दुरमति मैल नज़र कोए ना आईआ। शब्द अनादी ब्रह्म ब्रह्मादी सतिगुर इक्को गज्जणा, नाम निधान धुन राग शनवाईआ। ब्रह्म विष्न खेल सूरा सरबगना, नित नवित्त आप कराईआ। सन्त मिल सन्त बाहर वासना मूल ना भज्जणा, अन्तर आत्म खोज खोजाईआ। अन्तर यामता विच्चों अन्तरजामी लभ्भणा, सतिगुर सूरा बेपरवाहीआ। काया कपड़ ना पड़दा ढकणा, ओढण जगत ना कोए वखाईआ। लाउणा कोई ना अज पज्जणा, भेव अभेदा दयो समझाईआ। किस मन्दिर बहि के सजणा, किस गृह आपणा डेरा लाईआ। कवण कन्त सुहागी घर आपणा सद्दणा, सुत्ती वेख जगत लोकाईआ। बिन मक्के काअब्यो करना हजना, मुर्शद नूर नुराना दर्शन पाईआ। मेल मिलावा उपर शाह रगना, घर साचे खुशी रखाईआ। कवण मंज़ल कवण कूट कवण दिशा कवण मन्दिर कवण दुआर कवण गृह कवण कदम कवण चरण अग्गे लँघणा, कवण ताकी कुण्डा बंद पर्दा इक उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुछणहारा घर विच घर, कवण महल्ल डेरा लाईआ। आपणी दस्सो सच कहाणी, दूसर कहिण कोए ना पाईआ। माणस हो के बणी साची राणी, क्यों भरमे भुली लोकाईआ। अमृत आत्म पीणा ठंडा पाणी, निझर रस झिरना इक झिराईआ। घर में अमरापद महल अटल विच निशानी, दीवा बाती कवण रुशनाईआ। बोध अगाध

कवण सुणी अगम्मी बाणी, रसना जिह्वा बत्ती दन्द राग रागनी नाल ना कोए रलाईआ। कवण पीर मिल्या शाह सुल्तानी, कवण अंगीकार अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुछणहारा आपणा घर, किस घर बहि के आपणा कन्त मनाईआ। सृष्ट सबाई गई सौं, गूढ़ी नींद जगत वखाईआ। सुघड़ सुचज्जी सवाणी कवण दुआरे रही भौं, आप आपणा बल रखाईआ। किस कारण अन्तर आत्म उपज्या गौं, आसा कवण वधाईआ। कवण सुणावे धुर दा नाउँ, नर निरँकार कवण मिलाईआ। कवण फड़े अगम्मी बांहों, पंज तत नज़र कोए ना आईआ। कवण देवे ठंडी छाउँ, सिर मेहर हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सन्त सवाणी दस्स सतिगुर हाणी कवण गृह बैठा सेज वछाईआ। सुघड़ सुचज्जी सवाणी कवण, सज्जण कवण रंग रूप वटाईआ। कवण सहेलीआं आए दस्सण, कन्त मिल्या बेपरवाहीआ। कवण उच्च मनार आए वसण, सच दुआरे सोभा पाईआ। कवण आत्म परमात्म मिल मिल आए हस्सण, हँस मुख आपणी खुशी जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुछणहारा इक वर, किस बिध आपणा कन्त मनाईआ। कवण बिध मनाया कन्त, दस्सो सखी कर प्यार। कवण चढ़या रंग बसन्त, उतर ना जाए विच संसार। कवण महिमा सुणी अगणत, लिखण पढ़न तों बाहर। कवण धाम सोभावन्त, निर्मल दीप जोत उज्यार। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुछणहारा सच्चा घर, जिस घर मिले कन्त भतार। दस्स सखी उह केहड़ा मीत, जो आसा पूर कराईआ। सच सुणावे केहड़ा गीत, कवण राग अलाईआ। इक्को धाम अगम्म अथाह वखाए बिन मन्दिर मसीत, शिवदुआला मठ्ठ गुरदर नज़र कोए ना आईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त निरगुण निरवैर रहे ठंडा सीत, सीतल आपणी धार जणाईआ। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर निरगुण सरगुण बणना सच्चा मीत, मित्र प्यारा इक्को इक नज़री आईआ। उसदे मिलण दी दस्स रीत, कवण गली कवण कूचा कवण महल्ला कवण मंज़ल कवण पौड़ा कवण डण्डा कवण दुआर दए चढ़ाईआ। कवण सिख्या लई सीख, कवण दुआरे मिली भीख, कवण घर मिटी तृष्ना तरीख, अग्नी तत रहिण ना पाईआ। सच कन्त कवण सेजा करे प्रीत, बैठा रहे अतीत, नज़र ना आए हरि अनडीठ, दोए लोचण कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुछणहारा इक दर, किस बिध मिले सच्चा माहीआ। किस बिध पाया सच्चा माही, बण सुघड़ सुचज्जी राणी। कवण बिध मिल्या बेपरवाही, आत्म परमात्म खेले खेल बण बण हाणीआं हाणी। सच धाम दी दस्स निशानी, जिथ्थे वसे पुरख सुल्तानी। बख्शे चरण ध्यानी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुछणहारा इक दर, जिस गृह मिले मर्द मर्दानी। जिस दा कन्त रंगीला शहिनशाह सो पुरख निरँजण अठ्ठे पहर कमलीआं

कोझीआं गले रिहा लगाई, दिवस रैण घड़ी ना वंड वंडाईआ। जागरत जोत वेखे थाउँ थाईं, आलस निंद्रा ना कोए रखाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त विच्चों आप आपणे लए उठाई, जिस नाल आपणा नाता जोड़ जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा घर, तिस आपणे संग रखाईआ। दस्सो कन्त सुहागी रंगला, रंग रलीआं माणे बेपरवाहीआ। वसे काया मन्दिर अन्दर साढे तिन्न हथ्थ बंगला, उच्ची चोटी डेरा लाईआ। अट्ठे पहर गावे चार मंगला, गीत गोबिन्द अलाईआ। शरअ शरीअत रस्सी तन्द ना कोई संगला, डोरी बन्धन ना कोए बंधाईआ। सद समावे परमानन्दना, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाईआ। सच स्वामी सूरा सरबँगना, साहिब सुल्तान हरि रघराईआ। जिस सखी ओस चरण करी बन्दना, बिन बंदगीउँ लेखे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुछणहारा उह घर, जिस घर नारी नर नरायण मिल के खुशी मनाईआ। कवण दुआरे मिले नारी, नाता तोड़ जगत लोकाईआ। बिन नेत्र लोचण नैण करे दीदारी, दरस इक्को इक पाईआ। बिन मध प्याले पीत्तयां चढ़ी रहे खुमारी, रस इक्को नज़री आईआ। जिस मिलयां माया ममता हउमे हंगता जूठ झूठ कूड़ी क्रिया मिटे बीमारी, रोग सोग चिन्ता दुःख कोए रहिण ना पाईआ। सो मंज़ल दस्सो सच अटारी, कवण कुण्डा ताकी बारी खिड़की रिहा लगाईआ। किस बिध निर्मल जोत करे उज्यारी, बिन तेल बाती डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पुछणहारा सच्चा घर, जिस घर मिल के मिलण दी दूजी आस रहे ना राईआ। मथ्था टेकणा इक्को मथ्था, मस्तक सीस झुकाईआ। मिले मेल पुरख समरथा, समरथ पुरख सच्चा शहिनशाहीआ। अन्दर वड़ के साचे पौड़े चढ़ के सुणाए आपणी कथा, अकथ कहाणी आप जणाईआ। अमिउँ रस देवे इक्को रसा, रस रसीया मुख चुआईआ। सोहँ रूप हो के आत्म परमात्म वसा, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। करे प्रकाश कोटन रवि ससा, जोत निरगुण दए वड्याईआ। तीर निराला जिस सतिगुर कस्सा, तिक्खी मुखी धार वखाईआ। जगत विकार तिस चरण दुआरे ढठ्ठा, कूड़ी क्रिया मेट मिटाईआ। सन्त जनां मिल सन्त इक दूजे नूं कहिण अच्छा, अच्छी तरा समझाईआ। जगत बन्धन बन्नू ना कोई रस्सा, प्रेम डोरी तन्द बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आदि जुगादि जुग चौकड़ी सब दी करे रक्षा, रक्षक दयावान दयानिध ठाकर स्वामी अलख अगोचर अगम्म अथाह बेनज़ीर शाह हकीर राउ रंक ऊँच नीच शाह सुल्तान इक्को गीत बिन तकदीर तदबीर लकीर तस्वीर गुणी गहीर आपणी इक जणाईआ।

६७४ १५

✪ १४ कत्तक २०२० बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ✪

सच्च सिँघासण हरि जू सजे, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर फिरन भज्जे, उठ उठ वाहो दाहीआ। पुरख अकाल दीन दयाल एका सद्दे, सच संदेसा नाम जणाईआ। करे खेल सूरा सरबग्गे, शाह पातशाह वड्डी वड्याईआ। सच दुआर आउणा बद्धे, बंदगी इक्को इक दरसाईआ। आपणी वस्त चुक्क लै आउणा कंधे, धुर दा लेखा दए समझाईआ। सच नगारा इक्को वज्जे, तू ही तू ही राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल कराउणा, हरि करता वड वड्याईआ। सच दुआर इक सुहाउणा, साचे धाम सोभा पाईआ। साचा वक्त आप सुहाउणा, देवे वार थित वड्याईआ। रूप अनूप आप प्रगटाउणा, शाहो भूप बण सच्चा शहिनशाहीआ। धुर फ़रमाना इक जणाउणा, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जुग चौकड़ी पन्ध मुकाउणा, कलयुग अन्तिम वेख वखाईआ। धुर दा भेव अभेद खुल्हाउणा, पारब्रह्म प्रभ पड़दा दए उठाईआ। साचा मार्ग इक जणाउणा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी पुरख समरथ, सो साहिब आप कराईआ। निरगुण धार जोत नूर प्रगट, नूर नुराना डगमगाईआ। सच दवारे बहे सज, हरि सज्जण सोभा पाईआ। चार जुग दे विछड़े लए सद्द, सद्दा इक्को नाम सुणाईआ। पार कराए पिछली हद्द, मार्ग इक्को इक दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। साची करनी करे करतार, हरि करता वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी वेखणहार, निरगुण सरगुण खेल कराईआ। लेखा जाण धुर दरबार, दरगाह साची सोभा पाईआ। माण दे गुर अवतार, पीर पैगम्बर बूझ बुझाईआ। सुणाउँदा रिहा सच्ची गुफ़तार, नाम संदेसा इक अलाईआ। जणाउँदा रिहा आपणी वार, गीत गोबिन्द इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची खेल आप जणाईआ। साची खेल पुरख समरथ, हरि करता आप कराइंदा। जुग चौकड़ी चलावणहारा रथ, निरगुण सरगुण वेख वखाइंदा। कलयुग अन्तिम हो प्रगट, जोती जामा रूप धराइंदा। साचा नूर कर प्रकाश, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। दो जहानां इक्को रास, मण्डल मण्डप आप पवाइंदा। खेले खेल पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल सोभा पाइंदा। निरगुण निरगुण देवे साथ, सरगुण सरगुण बूझ बुझाइंदा। मेटे रैण अन्धेरी रात, सति सतिवादी साचा चन्द चढ़ाइंदा। चार वरन बणाए इक जमात, चारे खाणी फोल फोलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करे भगवन्त, हरि वड्डा वड वड्याईआ। खेले खेल जुगा जुगन्त, जुग जुग आपणा वेस वटाईआ। पूरन जोत श्री

भगवन्त, भगवन आपणी धार रखाईआ। आदि जुगादि महिमा अगणत, लेखा लिख सके कोई ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सचा हरि, धुर दी धार आप प्रगटाईआ। धुर दी धार कर प्रगट, प्रगट आपणा खेल खलाइंदा। सच दुआर खोल्ह हट्ट, बण वणजारा वणज वखाइंदा। वेस धर पुरख समरथ, समरथ आपणी कार कमाइंदा। दो जहानां कर के वस, लोआं पुरीआं ब्रह्मण्डां खण्डां हुक्म वरताइंदा। भगत सुहेले मार्ग दस्स, गुर चेले बूझ बुझाइंदा। सन्त सज्जण देवे रस, घर झिरना रस अमृत इक झिराइंदा। गुरमुखां रखे दे कर हथ्थ, मेहर नज़र नैण उठाइंदा। गुरसिखां खोल्हे आपणी अक्ख, निज नेत्र दरस कराइंदा। लहिणे पा नाड़ी रत, रती रत आप महकाइंदा। जानणहारा मित गत, गति मित आपणे हथ्थ वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी पुरख अकाल, अक्ल कल धारी आप कराईआ। करे खेल दीन दयाल, दीनन वेखे चाईं चाईंआ। नाता तोड़ शाह कंगाल, शहिनशाह आपणा रंग रंगाईआ। त्रैगुण माया मेट जंजाल, जागरत जोत करे रुशनाईआ। चार जुग दा हल्ल करे स्वाल, बेपरवाह आपणा फेरा पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो घालण गए घाल, तिन्हां कीती घाल लेखे पाईआ। अन्दर बाहर गुप्त ज़ाहर चले नाल, बण संगी संग निभाईआ। शब्द अनाद वजाए ताल, अनादी राग सुणाईआ। एथे ओथे करे प्रितपाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। शब्द सरूपी बण दलाल, साचा वणज इक्को हट्ट कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, मेहरवान बेपरवाहीआ। मेहरवान हरि करता पुरख, वड पुरखोतम इक अख्वाइंदा। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्ता ग़म ना कोए वखाइंदा। जन भगतां करे सदा तरस, दयावान आप हो जाइंदा। अमृत मेघ देवे बरस, दुरमति मैल धवाइंदा। साची करे लिख्त पढ़त, बिन कलम शाही गंढु पवाइंदा। आपणे मिलण दी दस्से शर्त, लाशरीक आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची धार आप वखाइंदा। साची धार वखाए एक, एकँकार वड्डी वड्याईआ। आत्म परमात्म देवे टेक, पारब्रह्म ब्रह्म वेखे चाईं चाईंआ। निरगुण सरगुण धार भेख, सरगुण निरगुण बूझ बुझाईआ। नज़री आवे नेतन नेत, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। सच महल्ले खेले खेल, ख़ालक ख़लक सच्चा शहिनशाहीआ। शाहो भूप बण नरेश, दहि दिशा हुक्म वरताईआ। जन भगतां करे आपणा हेत, बण हितकारी, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धार आप जणाईआ। साची धार दस्से भगवान, भगवन आपणी दया कमाइंदा। जिस दा मिले ना कोई निशान, सो निशाना इक झुलाइंदा। जिस दा रखदे सारे माण, सो अभिमानी मेट मिटाइंदा। जिस दा गाउँदे सारे गाण, सो गीत गोबिन्द आप अल्हाइंदा। जिस नूं कहिन्दे

मर्द मर्दान, सो मर्दानगी आप कमाइंदा। जिस दा नूर बेपहचान, नेत्र नैण नज़र ना आइंदा। जिस नूं कहिन्दे निरगुण रूप श्री भगवान, सति सरूपी फेरा पाइंदा। सो खेले खेल नौजवान, नर हरि आपणी कार कमाइंदा। जन भगतां देवे धुर दा दान, वस्त अमोलक आप वरताइंदा। अन्तिम औध पुगी आण, लेखा सब दा वेख वखाइंदा। जोती जामा हो प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाइंदा। नव नौ चार वेखे मार ध्यान, दो जहानां खोज खोजाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो दे के गए ब्यान, पूरब लेखा सब दा वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी कमाए एक, अक्ल कलधारी दया कमाईआ। हरिजन साजण लए पेख, नेत्र लोचण नैण इक खुल्हाईआ। पारब्रह्म प्रभ वखाए सुहञ्जणा देस, जिस गृह आपणा चरण टिकाईआ। भूपत भूत बण नरेश, नर निरँकार सोभा पाईआ। धुर दा देवे सच संदेस, सुनेहड़ा इक्को नाम जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दर घर साचे सारे होए पेश, पेशी इक्को घर भुगताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा पड़दा आप उठाईआ। धुर दा पड़दा देवे खोल्ह, ख़ालक ख़लक वड्डी वड्याईआ। शब्द अनादी इक्को बोल, जुग विछड़े लए मिलाईआ। निरगुण सद्दे आपणे कोल, दर दुआरा इक समझाईआ। वेखे आप बैठ अडोल, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी दए संदेसा, हरि सद्दा नाम जणाईआ। पुरख अबिनाशी धरया भेसा, पारब्रह्म रूप अनूप जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आ के वेखो सम्बल देसा, महल अटल करी रुशनाईआ। निरगुण धार दो जहानां नेता, शहिनशाह इक्को इक अख्वाईआ। जिस दा आदि जुगादि कोई ना जाणे पेशा, अन्त कहिण कोए ना आईआ। जिस उपजाए विष्न ब्रह्मा शिव महेषा, गणपति आपणा रंग वखाईआ। जिस प्रगटाए करोड़ तेतीसा, सुरप्त इन्द माण रखाईआ। जिन गुर अवतार पीर पैगम्बर दित्ता नेंदा, सद्दा इक्को घर जणाईआ। सो साहिब सुल्तान पुरख अबिनाश दो जहान वेंहदा, बिन अक्खां वेखे थाउँ थाईंआ। सच महल्ले सच दुआर सच सिँघासण महल अटल अगम्म अथाह बहिंदा, भूमका नज़र किसे ना आईआ। सति संदेस इक्को कहिन्दा, सच साची आप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। साची सिख्या तेरी भगवान, प्रभ साचे सच्ची भाईआ। तेरा सुणया इक फ़रमाण, वज्जी घर वधाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा राह तकाण, बैठे ध्यान लगाईआ। कवण वेला सद्दे आप मेहरवान, मेहर नज़र उठाईआ। जा के सजदा करीए सलाम, सीस जगदीश झुकाईआ। इस नूं मन्नीए इक अमाम, परवरदिगार इक अख्वाईआ।

जिस दा कलमा हक़ कलाम, कायनात करे पढ़ाईआ। जिस दा मन्त्र सतिनाम, नाम सति इक रखाईआ। सो खेल करे विच जहान, दो जहानां वाली फेरा पाईआ। जिस दा झुल्ले इक निशान, सत्त रंग वज्जी वधाईआ। तिस नूं मन्नीए अगम्मी काहन, आदि जुगादि लख चुरासी गोपी रिहा हंढ्ढाईआ। उस दे चरण करीए ध्यान, चित चरण कँवल इक रखाईआ। सो देवे सच्चा माण, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, आदि जुगादि इक अख्वाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे कहिण, प्रभ तेरे अग्गे अरज़ोईआ। जुग चौकड़ी तेरे दर तों लैण, भिखक भिख्या झोली पाईआ। आदि जुगादि भाणा तेरा कहिण, आपणी चले ना कोए चतुराईआ। तेरे हथ्थ लहिणा देण, देवणहार तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। तेरे दर मंग प्रभ, घर सज्जण इक मंगाईआ। सन्त साजण आपणे लै लभ्भ, गुरमुख पड़दा लाहीआ। पार करा जगत हद्द, सच दुआरे सद बहाईआ। नाम वजा अगम्मी नद, सुर ताल ना कोए रखाईआ। लख चुरासी नालों कर अड्ड, अड्डरी आपणी कार कमाईआ। भाग लगा काया माटी हड्ड, मास नाड़ी कर रुशनाईआ। सन्त सुहेले तेरी यद, विश्व तेरी धार नज़री आईआ। साचा जाम प्या मध, अमृत रस इक चखाईआ। तेरे दुआरे बहिण सज, सगला संग रखाईआ। पड़दा एन्नां लैणा कज, जो बैठण सीस निवाईआ। तेरा नाउँ पुरख समरथ, समरथ तेरी शरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहीआ। शाह पातशाह प्रभ दीन दयाल, दर तेरे इक अरज़ोईआ। किरपा कर वड कृपाल, तेरे हथ्थ सर्ब वड्याईआ। हउँ बाली बुध बाल अञ्याण, तूं दाता तेरा अन्त कहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, घर साचे खुशी वखाईआ। तेरा घर सोहणा चंगा, चंगी तरा नज़री आईआ। नाम अगम्मी इक्को रंगा, रंग रंगीले तेरे हथ्थ वड्याईआ। धुर धाम वज्जे उह मृदंगा, जिस दी किल्ली सतार हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। सुण के आवे उह अनन्दा, अनन्द अनन्द विच रखाईआ। मिले मेल सूरे सरबँगा, शाह पातशाह तेरी सरनाईआ। लेखा चुक्के जेरज अंडा, उत्भुज सेत्ज पन्ध मुकाईआ। तूं तुटयां देवें गंढ्ढा, गंढ्ढणहार अख्वाईआ। जुग चौकड़ी भुलणहार बंदा, अभुल तेरे चरण मिले सरनाईआ। तूं दीन दयाल साहिब बख्शंदा, बख्शश इक्को झोली पाईआ। पतित पुनीत कर अवगुण भरया बंदा, कूड़ी क्रिया दुरमति धवाईआ। नाम फेर अगम्मी खण्डा, खड़ग इक्को इक चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, घर साचे खुशी रखाईआ। तेरा घर लग्गे सोहणा, प्रभ अच्छी बणत बणाईआ। ना हस्सणा ना कोई रोणा, दुःख

सुख ना कोए समाईआ। ना आलस निंद्रा ना कोई सौणा, जागरत रूप ना कोए वटाईआ। राग नाद ना कोई गाउणा, सुर ताल ना कोए रखाईआ। ना कोई उणंजा पवण पवणा, ठंडी धार ना कोए रखाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आदि जुगादी शब्द अनादी तेरा रूप इक्को आउणा, जोती जोत जोत रुशनाईआ। साचा दर दो जहान सुहाउणा, घर साचे खुशी वखाईआ। जुग चौकड़ी लहिणा झोली पाउणा, दर तेरे मंग मंगाईआ। साचे सज्जण नाल मिलाउणा, जिन्हां मिलयां विछोड़ा कोए नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। साची सिख्या दे दे मीत, मित्र प्यारे तेरी शरनाईआ। सति सतिवादी तेरी वेखीए रीत, लोकमात वज्जे वधाईआ। रल मिल इक्को गाईए गीत, साचा ढोला साहिब गाईआ। तेरे छत्र झुल्ले सीस, जगदीश तेरा धाम सोभा पाईआ। माण मिले हस्त कीट, ऊँच नीच नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा भेव देणा जणाईआ। साचा भेव दस्से भगवान, भगवन आपणी दया कमाइंदा। पन्द्रां कत्तक दिवस महान, हरि करता आप प्रगटाइंदा। तख्त निवासी खेल करे दो जहान, दो जहानां आपणा हुक्म वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दरबार इक सुहाइंदा। सच दरबार लगाए मात, मात्र भूमी दए वड्याईआ। चार वरन दी इक जमात, सो पुरख निरँजण आप प्रगटाईआ। धुर दी वस्त देवे दात, अनमुलड़ी झोली पाईआ। मेटे कल अन्धेरी रात, साचा चन्द नूर रुशनाईआ। रसना दस्से इक्को गाथ, साचा सोहला ढोला आप पढ़ाईआ। लहिणा देवे मस्तक माथ, पूरब लेखा झोली पाईआ। नाम चढ़ाए साचे राथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। सच नुहाए तीर्थ ताट, सरोवर इक्को इक प्रगटाईआ। भेव चुकाए ज़ात पात, आत्म परमात्म दए समझाईआ। नज़री आए इक इकांत, हर घट बैठा डेरा लाईआ। करे खेल साख्यात, निरवैर पुरख वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करे गोपाल, प्रभ वडा वड वड्याईआ। चार जुग दे विछड़े यार, गुरमुख आपणे नाल मिलाईआ। सब दी सुरत लए संभाल, सुरती शब्दी डोरी तन्द बंधाईआ। साचा खेल करे कमाल, कुदरत कादर दए जणाईआ। वेखो हकीकत हक़ हलाल, लाशरीक दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरे सोभा पाईआ। सच दरबारा मात लग्गे, लगावणहारा आप लगाईआ। हरि भगत लगाए आपणे अग्गे, अग्गा पिच्छा आपणी वंड वंडाईआ। भगत दुआर साची हद्दे, घर साचे सोभा पाईआ। नाम नगारा इक्को वज्जे, दो जहान करे शनवाईआ। साचे तख्त हरि जू सजे, सोभावन्त सोभा पाईआ। गुर अवतार आवण भज्जे, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। दोवें हथ्थ सब ने बद्धे, बन्दना सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप कराईआ। साची खेल करे करतार, हरि करनी आप जणाइंदा। इक पंज दा सच विहार, दूआ सिफ़रा जोड़ जुड़ाइंदा। बीस बीस दा कर्ज उतार, पन्द्रां पन्द्रां रंग रंगाइंदा। पन्द्रां बीस एकँकार, आपणी कल वरताइंदा। दोहां विचोला सिरजणहार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मेला आप मिलाइंदा। साचा मेला वीह सद पन्द्रां, हरि देवणहार वड्याईआ। जिस भेव खुलाया मस्जिद मन्दिरां, शिवदुआले मट्ठ पड़दा लाहीआ। जिस पड़दा लाहया डूंघी कन्दरा, घर घर विच वेख वखाईआ। जन भगतां तोड़या बजर कपाटी जन्दरा, पड़दा दित्ता आप चुकाईआ। सो लेखा रखे ना कोई गंधला, निर्मल सदा दए कराईआ। पुरख अबिनाशी कदे ना होवे अन्धला, जग वेखे थाउँ थाईंआ। भगत दुआर बणा बंगला, घट भीतर डेरा लाईआ। सच प्रकाश कर अगम्मी चन्दना, नूरी जोत डगमगाईआ। जन भगत जणाए इक्को बन्दना, बंदगी धुर दी आप समझाईआ। साचा देवे सति अनन्दना, अनन्द अनन्द विचों रखाईआ। कूड़ विकारा विच्चों कढुणा, जूठ झूठ दए तजाईआ। सो भगत भगवान दर साचे सद्दणा, जिस आपणा रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप रचाईआ। आपणी खेल रच के आप, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। भगत भगवान थापण थाप, देवे माण वड्याईआ। सति सरूपी बख्शे जाप, जीवण जुगत जणाईआ। किनारा वखाए इक्को घाट, पत्तण मेला बेपरवाहीआ। कलयुग मेट अन्धेरी रात, सतिजुग सच्चा चन्द चमकाईआ। सच सुहञ्जणी चढ़े प्रभास, पन्द्रां कत्तक खुशी मनाईआ। प्रभातों आए मुड़ के रात, रैण आपणा रंग वखाईआ। भिन्नड़ी कहे मेरी पूरी ख्वाहिश, प्रभ आसा पूर कराईआ। निरगुण आया बण के साथ, सरगुण संग निभाईआ। मण्डल बहि के पावे रास, गोपी काहन नचाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस अग्गे करन अरदास, सो अदली वेस वटाईआ। जन भगतां पूरी करे ख्वाहिश, ख़ालस आपणी वस्त झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पूरब लेखा लेखे लाईआ। पूरब लेखा लाए लेखे, लेखा लिखणहार करतारा। निरगुण सरगुण आपे वेखे, पड़दा खोल्ह बंद कवाड़ा। जुग चौकड़ी रखे चेते, भुल्ल ना जाए अभुल्ल गुरू करतारा। जन भगतां करे साचा हेते, नाता तोड़ सर्ब संसारा। निरगुण सरगुण खेल खेडे, कल कल्की लै अवतारा। शब्द संदेसा इक्को भेजे, दो जहानां करे ख़बरदारा। प्रभ जू वसे साचे देसे, सम्बल नगर न्यारा। मेल मिलावा दस दशमेशे, जोती शब्दी धारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल आप करतारा। साची खेल खेले करतार, कुदरत वेखे चाईं चाईंआ। सुहञ्जणी रुत्त सोहे साची थित वार, मिले माण वड्याईआ। गुरमुख साचे लए उठाल, सगला संग निभाईआ। किरपा कर दीन दयाल, दयालता इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप

आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची वड्याईआ। देवे माण गुरमुख मीत, गुर सतिगुर दया कमाइंदा। वीह सौ पन्द्रां जिन्हां नाल चलाई रीत, रीतीवान खेल खलाइंदा। साचा नाता बन्ह प्रीत, बिधाता आपणा जोड़ जुड़ाइंदा। रल मिल एन्हां नाल गाया गीत, सांझीवाल आप अख्वाइंदा। भेव चुका मन्दिर मसीत, साचा धाम इक वखाइंदा। जिस घर वसे आप अनडीठ, सो मन्दिर सोभा पाइंदा। तिन्हां देवे नाल वड्याई आप जगदीश, जिन्हां आपणे रंग रंगाइंदा। सच दस्तार बंधाए सीस, सीस आपणी झोली पाइंदा। निरगुण सरगुण बण के दूआ ज़ीरो अंक बणाए बीस, बीस आपणी कार वखाइंदा। सच धर्म जणाए हदीस, धुर संदेसा आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका इक्की आप प्रगटाइंदा। एका इक्की जाए जणा, बल बावन भेव चुकाईआ। साची सिक्खी दए समझा, सिख्या इक्को इक दृढ़ाईआ। धारों तिक्खी दए वखा, आप आपणे मार्ग लाईआ। निक्कीउँ वड्डी दए बणा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। इक्की गुरमुख कर तैयार, त्रैभवन धनी आप जणाइंदा। सति सति दा इक विहार, विवहारी कार कमाइंदा। सति सति दा इक अखाड़, सति सतिवादी आप लगाइंदा। सति सति दा इक यार, सति पुरख निरँजण सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी पावे इक इकीसा, अक्ल कला वड्याईआ। सच सुणाए धर्म हदीसा, हज़रत इक्को बूझ बुझाईआ। अन्दर वड़ के बदले सब दी नीता, नीतीवान आप हो जाईआ। बख्शे चरण कँवल प्रीता, प्रीती इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल नूर खुदाईआ। नूर खुदाई होए बिस्मिल, बिस्मिल आपणी धार चलाइंदा। लेखा जाण इलाही इल, इलाबुत वेख वखाइंदा। जिस नूं सारे मन्नदे तिल, सो तिल आपणा नूर चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, इकीआं सिर श्री दस्तार बंधाइंदा। श्री दस्तार बन्ह्हे चीरा, चीरे जगत लोकाईआ। भगतां देवे साची धीरा, धर्म इक समझाईआ। चार वरन अमृत प्याए इक्को सीरा, ठंडी ठार धार वहाईआ। सति धर्म दा बन्न्हे कलीरा, घर साचे सगन मनाईआ। शरअ शरीअत तोड़ ज़ंजीरा, नव दर करे कुड़माईआ। चोटी चाढ़े फड़ अख़ीरा, आख़र आपणी बूझ बुझाईआ। सोभावन्त सुहाए हस्त कीड़ा, ऊँच नीच नज़र ना आईआ। सतिजुग साची बन्न्हे बीड़ा, निरगुण नींह धराईआ। कलयुग मार्ग चुक्के भीड़ा, गुरमुख बाहर कढ्ढाईआ। तिक्खी रखाए मुखी तीरा, तीर अंदाज़ वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, खेले खेल सच्चा शहिनशाहीआ। इक्की सिख वंड अपार, सत्त सत्त सत्त नाल मिलाइंदा । सज्जे खब्बे एका धार, अग्गे आपणा नूर चमकाइंदा। पिच्छे ना कोई दए उधार, सनमुख आपणा भेव

खुलाइंदा। चीरे बन्नृ सच्ची दस्तार, हीरे गुरमुख आप प्रगटाइंदा। वीरे विछड़े मेले यार, साचा मेला आप कराइंदा। नीले वाला हो अस्वार, साचे दर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग आप चढ़ाइंदा। साची पगड़ी चढ़े रंग, हरि करता आप चढ़ाईआ। चार जुग दी पूरी मंग, अन्तिम दए कराईआ। गोबिन्द रख आपणे संग, लहिणा झोली पाईआ। देवणहारा इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों जणाईआ। मिल के गावे सच्चा छन्द, भगत भगवान राग अलृाईआ। अगला मुक्के सब दा पन्ध, पिच्छा याद कोए ना आईआ। कर किरपा आपणे नाल गंढु, घर मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सदा देवे माण वड्याईआ। गुरमुख इक्की बन्नृण पग्ग, हरिसंगत इक बणाईआ। करे खेल उपर शाह रग, शहिनशाह आपणी दया कमाईआ। भगतां विच जाए सज, हरि सज्जण वड वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर करन आ के हज्ज, घर साचे खुशी मनाईआ। इक्की दरबारी वेखण जगत जहानो कीते अड्ड, प्रभ अड्डरी धार बंधाईआ। धर्म निशाना दित्ता गड्ड, चवी हथ्थ झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। इक्की सिख इक्की दरबारी, सतिजुग तेरी धार जणाइंदा। एका इक्की सच विहारी, साची सिक्खी आप प्रगटाइंदा। शब्द खण्डा तेज कटारी, नाम धारी हथ्थ फड़ाइंदा। खेले खेल अगम्म अपारी, हरि करता कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। सिर ते रंग पगड़ी अनोखा, हरि सतिगुर आप रंगाईआ। जन भगतां नाल ना कीता धोखा, धुर दी वस्त झोली पाईआ। सच सुहञ्जणा सुहावे आप मौका, मुकम्मल आपणी कार कमाईआ। जिस दी रखदे आए ओटा, सो लग्गी तोड़ निभाईआ। मेल मिलाए साची जोता, निरगुण जोत नूर रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची खेल आप वखाईआ। साची खेल करे निरँकार, हरि करता दया कमाइंदा। इकीआं नाल इक विहार, एकँकार आप रचाइंदा। कमरकसा कर तैयार, ढाई गज़ दुपट्टा तन बंधाइंदा। रंग केसरी इक्को चाढृ, केस गढ़ लहिणा तेरा झोली पाइंदा। धुर दी बणे सच सरकार, वड सरकारी हुक्म वरताइंदा। फेर बोले इक जैकार, साचा ढोला आप अलृाइंदा। गुर अवतारो आओ दरबार, पीर पैगम्बर आप मंगाइंदा। पंजे उठो दयो दीदार, पंचम पड़दा आप चुकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप वखाइंदा। साची खेल करे गोबिन्द, गोबिन्द वड वड्याईआ। सब दी मेटे पिछली चिन्द, चिन्ता चिखा रहिण ना पाईआ। दाता दानी गुणी गहिंद, गहर गम्भीर अख्वाईआ। जन भगत बणा आपणी बिंद, बिंदी टिप्पी रंग चढ़ाईआ। जीव जंत करन निन्द, निन्दया निन्दक मुख भराईआ। जोती जोत सरूप हरि,

६८२
१५

आप आपणी किरपा कर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। इकीआं सिर दस्तार बंधावेगा। सति धर्म दी कार कमावेगा। तिन्न तिन्न वंड वंडावेगा। चिन्नु आपणा इक समझावेगा। भिन्न भिन्न खेल खलावेगा। गिण गिण लेखे लावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची कार आप कमावेगा। तिन्न तिन्न दा बणे राग, हरि सतिगुर ढोला गाईआ। तिन्न तिन्न दा बणे सुहाग, हरि सतिगुर जोड़ जुड़ाईआ। तिन्न तिन्न दा खेल आदि, तिन्न तिन्न जुगादि दए शरनाईआ। तिन्न दिन दा खेल तमाश, भय भ्यानक दए सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा रंग आप वखाईआ। तिन्नां रंग चढ़े लाल, हरि लालन आप रंगाइंदा। तिन्नां सोना कंचन ढाले ढाल, पारस रूप वखाइंदा। तिन्नां सूहा वेस कर शाह बणाए कंगाल, कंगालों शाह वखाइंदा। तिन्नां चिट्टा नूर दे जमाल, सति सरूप नज़री आइंदा। तिन्नां पीला वेस बणे दलाल, सच दलाली मात कमाइंदा। तिन्नां नीला रंग वखाए ज़िमीं असमान, साची कार आप समझाइंदा। तिन्नां काला चीर बंधाए श्री भगवान, काली धारों पार लँघाइंदा। काला लाल मिल के चिट्टे नाल देण ब्यान, तिन्नां इक्को गंढु पवाइंदा। चिट्टा कहे मेरा संदेसा करो परवान, धुर दी धार इक जणाइंदा। नीली धारों पार आए भगवान, पड़दा उहला आप चुकाइंदा। काली रैण अन्धेरी मेटे विच जहान, सति सतिवादी चन्द चमकाइंदा। आदि अन्त मध तिन्नां मिल के बणे इक निशान, निशाना इक्को इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे आप समझाइंदा।

१५ कत्तक २०२० बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच

सति पुरख हरि सच सुल्ताना, सति सतिवादी खेल कराइंदा। सति पुरख हरि नूर नुराना, जोती जाता डगमगाइंदा। सति पुरख हरि राज राजाना, शाहो भूप वेस वटाइंदा। सति पुरख हरि मर्द मर्दाना, सच मर्दानगी आप कमाइंदा। सति पुरख हरि सूरबीर बलवाना, योद्धा इक्को इक हो जाइंदा। सति पुरख हरि, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कल आप रखाइंदा। सति पुरख हरि शाह पातशाह, शहिनशाह वड्डी वड्याईआ। सति पुरख हरि बेपरवाह, बेअन्त बेअन्त बेअन्त इक अख्वाईआ। सति पुरख हरि नौजवां, बिरध बाल ना रूप वटाईआ। सति पुरख वसे सच थाँ, सच दुआरे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। सति पुरख हरि शाहो भूप, भूपत भूप वड्डी वड्याईआ। ना कोई रंग ना कोई रूप, रेख नज़र कोए ना आईआ। ना कोई दिशा ना कोई

कूट, हिस्सा वंड ना कोए वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, निरगुण आपणी खेल वरताईआ। सति पुरख हरि निरगुण धार, निरवैर वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादी खेल अपार, हरि करता आप कराईआ। सचखण्ड दुआर खोल्ह कवाड़, दरगाह साची सोभा पाईआ। शाहो भूप सच्चा सिक्दार, सीस जगदीश ताज टिकाईआ। हुक्म देवे एका वार एकँकार, धुरफ़रमाना इक समझाईआ। वेखे विगसे वेखणहार, दूजा संग ना कोए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करदा एक, एकँकार वड्डी वड्याईआ। सचखण्ड दुआरे अवल्लड़ा भेख, भेखाधारी नज़र किसे ना आईआ। वसणहारा अगम्मड़े देस, अलख अगोचर डेरा लाईआ। देवणहारा सच संदेस, धुर फ़रमाना आप जणाईआ। आदि जुगादि रहे हमेश, जुग चौकड़ी सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी कर करतार, आपणा खेल खलाया। जोती जाता हो उज्यार, भेव अभेद आप खुलाया। नार कन्त बण प्यार, सेज सुहञ्जणी आप हंढाया। सचखण्ड दुआरे हो तैयार, सच सिँघासण इक सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साचा मार्ग इक चलाया। साचा मार्ग निरगुण नूर, नूर नुराना आप चलाईआ। परवरदिगार ज़ाहर ज़हूर, बेनज़ीर खेल खलाईआ। दरगाह साची सच दस्तूर, शाह नवाब हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दी धार आप प्रगटाईआ। धुर दी धार पुरख समरथ, आदि पुरख आप प्रगटाईआ। खेले खेल आप अकथ, कथनी कथ सके ना राईआ। निरगुण मार्ग निरगुण दस्स, निरगुण रहबर इक अख्वाईआ। निरगुण खेड़े निरगुण वस, निरगुण बैठा डेरा लाईआ। निरगुण प्रेम प्रीती साचा रस, निरगुण मेला सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, घर साचे खुशी मनाईआ। साचे घर खुशी मना, हरि करता खेल खलाइंदा। बालक सुत इक प्रगटा, शब्दी रूप जणाइंदा। योद्धा सूरबीर आप बणा, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। साची सिख्या इक दृढ़ा, धुर फ़रमाना आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी अबिनाशी अचुत, पारब्रह्म प्रभ आप कराईआ। सुत दुलारा वेख पुत्त, पतिपरमेश्वर आप प्रगटाईआ। सचखण्ड दुआरे सोहे रुत्त, थिर घर साचे वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, धुर दी कार आप जणाईआ। धुर दी कार श्री भगवान, हरि करता आप जणाइंदा। सुत दुलारे बाल नादान, दे सिख्या सच समझाइंदा। तेरा खेल इक महान, पारब्रह्म बेअन्त स्वामी आप कराइंदा। जोती जोत सरूप

हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा पड़दा आप चुकाइंदा। धुर दा पड़दा हरि जू खोल्ह, हरि करता आप जणाईआ। सुत दुलारे आ कोल, हरि सतिगुर दए समझाईआ। सच संदेस वजा ढोल, शब्द अनादी प्रगटाईआ। धर्म दुआर इक्को खोल्ह, मार्ग इक्को लाईआ। साचे कंडे तोल तोल, तराज़ू इक्को हथ्थ उठाईआ। आदि जुगादि रहिणा अडोल, भूमिका इक्को सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देवे साचा वर, धुर दा लेखा आप जणाईआ। धुर दा लेखा सच संदेसा, सो सतिगुर आप जणाइंदा। शब्द सुत रहे हमेशा, जुग चौकड़ी बन्धन पाइंदा। तेरा वसे थिर घर देसा, घर मन्दिर सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी करने योग, हरि करता खेल खलाईआ। निरगुण निरगुण कर संजेग, धुर संजोगी मेल मिलाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, दीपक दीआ इक टिकाईआ। सचखण्ड दुआर सुहा कोट, गृह मन्दिर खुशी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दी धार आप प्रगटाईआ। धुर दी धार शब्दी रंग, हरि करता आप प्रगटाइंदा। करे खेल सूरा सरबँग, शाह पातशाह वेस वटाइंदा। नाम निधान इक मृदंग, नर नरायण आप वजाइंदा। निरगुण निरगुण हो के संग, सगला संग निभाइंदा। अगम्म अथाह देवे अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाइंदा। पूत सपूता साचा चन्द, शब्दी नूर इक चमकाइंदा। सचखण्ड दुआरे वंडे वंड, वंडणहारा नज़र किसे ना आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कराइंदा। साची करनी आदि कर, आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। शब्दी सुत दित्ता वर, वस्त अमोलक झोली पाईआ। निरगुण निरगुण घाड़न घड़, विष्न ब्रह्मा शिव बणत बणाईआ। त्रैगुण माया डोरी फड़, बन्धन इक वखाईआ। पंज तत खेल नरायण नर, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शब्दी सुत इक्को हुक्म सुणाईआ। शब्द सुत सुण लाल, हरि सतिगुर आप जणाईआ। थिर घर तेरी सोहे धर्मसाल, सचखण्ड डेरा इक्को नज़री आईआ। निरगुण रूप तेरा दलाल, सच दलाली इक कमाईआ। बेऐब खुदाई जलवा नूर जलाल, ज़ाहर ज़हूर करे रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप दृढ़ाईआ। साची करनी एका नूर, हरि करता आप जणाईआ। सर्ब कला कर भरपूर, शब्दी सुत दए वड्याईआ। आदि जुगादि बैठा हज़ूर, हज़रत मौला इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दी वस्त इक वरताईआ। धुर दी वस्त दे के आप, प्रभ आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। नाता जोड़ पिता बाप, पूत सपूता गोद उठाईआ। इक्को दस्से सच्चा जाप, करे सति सति

पढ़ाईआ। एथे ओथे पत लए राख, मेहर नज़र नैण उठाईआ। सच दुआरे रहिणा दास, धुर दी सिख्या इक पढ़ाईआ। नेत्र लोचण खोल्ह आंख, अक्ख आपणे नाल मिलाईआ। तेरी झोली पावां तेरा हक़, हकीकत तेरे नाल प्रनाईआ। साचा मार्ग देवां दस्स, दो जहानां वंड वंडाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड तेरा रस, पुरी लोअ तेरा रंग चढ़ाईआ। कर प्रकाश रवि ससि, किरन किरन रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। धुर संदेसा श्री भगवन्त, हरि इक्को इक जणाइंदा। खेल खलाउणा नारी कन्त, नर नरायण आप समझाइंदा। निरगुण सरगुण बणौणी बणत, घाड़त घड़न वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दी धार आप जणाइंदा। धुर दी धार आप जणाउँदा ए। सुत शब्द सेव लगाउँदा ए। विष्न ब्रह्मा शिव रंग रंगाउँदा ए। घर साचे सोभा पाउँदा ए। त्रैगुण माया संग रलाउँदा ए। पंज तत मेला मेल मिलाउँदा ए। लख चुरासी घाड़त घड़, भाण्डे आप बणाउँदा ए। निरगुण सरगुण जड़त जड़, दर साचे आप सुहाउँदा ए। सति सरूपी अन्दर वड़, गृह मन्दिर अन्दर डेरा लाउँदा ए। धुरदरगाही दे के वर, घर इक्को इक वखाउँदा ए। डूंघी भँवरी जाए वड़, महल अटल आप रखाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द धार इक वखाउँदा ए। शब्द धार जणाया ए। प्रभ अपणा खेल रचाया ए। निरगुण सरगुण वंड वंडाया ए। लख चुरासी गोद बहाया ए। कर प्रकाश निर्मल जोत, नूरो नूर डगमगाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मार्ग इक लगाया ए। साचा मार्ग इक लगाउँदा ए। प्रभ साची दया कमाउँदा ए। सचखण्ड निवासी थिर घर दवारे, शब्दी सुत समझाउँदा ए। सुन्न अगम्म तेरे सहारे, मेहर नज़र हरि उठाउँदा ए। विष्न ब्रह्मा शिव तेरे पनहारे, साची सेवा आप लगाउँदा ए। त्रै पंज तेरे अखाड़े, पंज पचीस गंढु पवाउँदा ए। चारे खाणी खोल्ह कवाड़े, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज तेरा राह चलाउँदा ए। चारे बाणी बोल जैकारे, परा पसन्ती मद्धम बैखरी धार सुणाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा हुक्म इक वरताउँदा ए। तेरा हुक्म इक वरतावेगा। निरगुण निरवैर खेल करावेगा। दो जहान वेख वखावेगा। ब्रह्मण्ड खण्ड धरत बणावेगा। निरगुण नूर जोत चमकावेगा। तेरी चोट शब्द लगावेगा। ओट इक्को इक दरसावेगा। लोक परलोक आप सुहावेगा। सच श्लोक इक प्रगटावेगा। धुर दा जोग झोली पावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द सुत इक उठावेगा। शब्द सुत इक उठाया ए। प्रभ साचा राग अल्हाया ए। विष्न ब्रह्मा शिव प्रगटाया ए। त्रैगुण मेल सच समझाया ए। पंज तत आपणी गंढु बंधाया ए। लख चुरासी

घाड़न घड़, घर साचे आप उपजाया ए। निरगुण हो के अन्दर वड़, सरगुण रंग रंगाया ए। शब्द अगम्मी ढोला पढ़, आपणा राग सुणाया ए। लेखा जाण सीस धड़, कंचन रूप वखाया ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, शब्द गुर तेरा इक्को घर सुहाया ए। शब्द गुरू तेरा घर इक सुहावांगा। पारब्रह्म प्रभ आपणा मेल मिलावांगा। दीपक दीआ इक जगावांगा। तेल बाती ना कोई पावांगा। अन्धेरी राती ना कोए रखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा हुक्म इक वरतावांगा। तेरा हुक्म इक वरतावेगा। प्रभ सिर ते हथ्थ टिकावेगा। निरगुण सरगुण खेल खलावेगा। विष्न भण्डार इक वरतावेगा। ब्रह्मा ब्रह्म रूप हो जावेगा। शंकर हथ्थ त्रिसूल उठावेगा। त्रै त्रै आप जणावेगा। साचे देस सोभा पावेगा। नर नरेश इक हो जावेगा। विष्न ब्रह्म शिव सेव लगावेगा। तेरी नज़र ना आवे रेख, रेखा आपणे विच छुपावेगा। धुर दा दे इक संदेस, धुर दी धार आप प्रगटावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, अलख अभेव इक हो जावेगा। अलख अलेख इक अख्वाएगा। नर नरेश दया कमाएगा। साचे देस डेरा लाएगा। सचखण्ड रहे सदा हमेश, आदि जुगादि इक्को अनेक समाएगा। धरत धवल जल बिम्ब खेले खेल, अग्नी तत रूप प्रगटाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाएगा। साची करनी आप कमावेगा। विष्नूं वस्त इक वरतावेगा। ब्रह्मा भेव अभेद खुल्हावेगा। चारे वेद राह वखावेगा। चारे कुण्ट नज़री पावेगा। चौथे घर डेरा लावेगा। साचे मन्दिर चढ़ जोत जगावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शब्द सुत सुत दुलार तेरा अक्खर नाद सुणावेगा। शब्द सुत तेरा नाद वजाएगा। प्रभ आपणा राग अल्हाएगा। बिन तन्दी तन्द सितार, साची खेल वखाएगा। निरगुण निरगुण करे गुफ़तार, गुफ़त शनीद आपणा राह चलाएगा। घर बण के सच्चा यार, यारी आपणी तोड़ निभाएगा। मार्ग दे विच संसार, चार वरन वेख वखाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, चार वरन आप दृढ़ाएगा। चार वरन दस्से भगवान, पहला निरगुण रूप जणाईआ। दूजा शब्द कर प्रधान, आप आपणी खेल वखाईआ। तीजे दोहां इक मकान, घर साचे ख़ुशी मनाईआ। चौथे शाहो भूप बण सुल्तान, शब्दी आपणा हुक्म वरताईआ। चार वरन दा कर ना सक्या कोई ज्ञान, भेव अभेद ना सके कोई जणाईआ। सचखण्ड रहे भगवान, थिर घर सुत शब्द दिती वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप वरताईआ। शब्द सुत किहा झुक, प्रभ अग्गे सीस झुकाईआ। पारब्रह्म तेरा वेखां मुख, विछोड़ा सहि सकां ना राईआ। निरगुण मैं उपज्या तेरी कुक्ख, मात पिता मेरा नज़र कोए ना आईआ। मैनूं तेरे बिनों लग्गे दुःख, तेरे बिनां दुःख ना मेरा कटाईआ। प्रभू

मेरे कर किरपा गोदी चुक्क, बालक गोद सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सचखण्ड निवासी तेरी इक सरनाईआ। सुत दुलारा प्या बोल, बिन रसना जिह्वा मंग मंगाइंदा। पुरख अबिनाशी आदि पुरख मैं वसां तेरे कोल, सद चरण ध्यान रखाइंदा। तेरी प्रीती अन्दर जावां मौल, मौला इक्को नज़री आइंदा। मेरे नाल कर पूरा कौल, दर तेरे झोली डाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे सीस निवाइंदा। साचा वर दे भगवान, दर तेरे मंग मंगाईआ। नित नवित्त पाउणा आपणा दान, झोली मेरी सद भराईआ। तूं बणया रिहा काहन, हउँ गोपी रूप वटाईआ। तूं बणया रहें शाह सुल्तान, हउँ सेवक रूप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। तेरे दर जगाई अलख, अलख अगोचर तेरी सरनाईआ। आपणे नालों करीं ना वक्ख, वक्खरी धार मोहे ना भाईआ। सिर मेरे रखणा हथ्थ, समरथ तेरी वड्याईआ। तेरे चरण कँवल जावां ढह्, सच दुआरे सोभा पाईआ। इक वारी मेहर नज़र मेरे वल तक्क आपणी अक्ख, आख़र आपणा रंग चढ़ाईआ। मेरी झोली पा मेरा हक़, फेर अगला हुक्म देणा सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक समझाईआ। सुण सुत मेरे लाडले मीत, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। हरि पुरख निरँजण चलाए तेरी रीत, रहबर इक्को इक अख्वाईआ। एकँकार तेरा सुहागी गीत, साचा नाद धुन जणाईआ। आदि निरँजण सदा अनडीठ, साचा नूर नूर रुशनाईआ। अबिनाशी करता रखे ठंडा सीत, सीतल धार इक वहाईआ। श्री भगवान लगाए सच प्रीत, लग्गी प्रीत ना कोए तुड़ाईआ। पारब्रह्म तेरी जाणे रीत, रीतीवान आप अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। सुणया संदेसा तेरा प्रभ, मेरे सतिगुर मोहे भाया। चरण दुआरे डिगा झब्ब, दोए जोड़ वास्ता पाया। आपणे नालौं विछोड़ ना देवीं छड्ड, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताया। मैं सद वसां तेरी हद्द, बाहर हदूद ना कोए रखाया। तेरी धारों उपजी तेरी यद्द, विश्व तेरा रंग रंगाया। सद मन्दिर वेखां लँघ, नित तेरा दर्शन पाया। पुरख अकाल दीन दयाल मेरी इक्को मंग, झोली ख़ाली दे भराया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे आस तकाया। तेरी आस होई मंज़ूर, सो सतिगुर आप जणाईआ। शब्द सुत तेरा दस्तूर, दो जहानां हुक्म वरताईआ। पुरख अबिनाशी सद वसे नेड़े दूर, दुराडा पन्ध ना कोए रखाईआ। आदि जुगादि हाज़र हज़ूर घर वसे सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सच संदेसा इक्को वार, बिन कन्नां दए जणाईआ। सच संदेसा आप सुणाउँदा ए। श्री भगवान हुक्म

वरताउँदा ए। शब्द सुत तेरे हथ्थ डोर फड़ाउँदा ए। दो जहानां रचना रच वखाउँदा ए। लख चुरासी काया माटी भाण्डा कच्च, कपड़ अंगन आप बणाउँदा ए। निरगुण धार रख सच, साचा बंक आप वडयाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर घर तेरा नाद अलाउँदा ए। घर घर तेरा नाद अलावेगा। पारब्रह्म प्रभ ब्रह्म ब्रह्माद वेख वखावेगा। बोल अगम्मी इक्को राग, धुर दी धार समझावेगा। घट घट अन्दर हो विस्माद, बिस्मिल आपणी खेल खलावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमावेगा। साची करनी आप कमावेगा। चार जुग वंड वंडावेगा। चारे खाणी आप प्रगटावेगा। चारे बाणी राग अलावेगा। चारे वेद आप समझावेगा। चारे वरन वंड वंडावेगा। चार यारी गंढु रखावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमावेगा। साची करनी प्रभू कमाएगा। मेहरवान मेहर नज़र उठाएगा। निरगुण आपणी वंड वंडाएगा। सरगुण सति सरूप वखाएगा। साची रीत आप चलाएगा। दिशा आपणी आप जणाएगा। नाम तेरा इक सुणाएगा। गुर अवतार नाउँ धराएगा। पीर पैगम्बर आप हो जाएगा। सच सुअम्बर मात रचाएगा। भरतम्बर खेल खलाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द गुरू तोहे इक प्रगटाएगा। शब्द सुत सच तैनूं माण दिवाएगा। श्री भगवान मेहर नज़र उठाएगा। दो जहान तेरा हुक्म

९८९ वरताएगा। योद्धा सूरबीर कर बलवान, बल तेरा इक प्रगटाएगा। तेरे हथ्थ सच निशान, सति सतिवादी आप झुलाएगा। ९८९

१५ ब्रह्ममत तेरा ज्ञान, ब्रह्म विद्या सर्ब दृढ़ाएगा। काया मन्दिर इक मकान, घर घर डेरा इक्को लाएगा। साचे अमृत कर अशनान, १५

सरोवर इक्को इक सुहाएगा। जुग चौकड़ी नाउँ कर प्रधान, गुर अवतार तेरा बंस सुहाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तेरा हुक्म इक वरताएगा। शब्द गुरू तेरा डंका प्रभू वजाएगा। लोकमात खेल खलाएगा। सच श्लोक इक सुणाएगा। लोक परलोक हुक्म वरताएगा। कोटन कोटि ब्रह्मण्ड वेख वखाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, धुर दी धार आप कमाएगा। धुर दी धार प्रभू कमावेगा। जुग चौकड़ी तेरा खेल वेख वखावेगा। तेरा रूप गुर अवतार रूप प्रगटावेगा। पीर पैगम्बर साचा नूर नूर दसावेगा। सतिजुग तेरी वारा कलयुग पैंडा कर के दूर, अन्तिम पांधी पन्ध आप चुकावेगा। प्रगट होए हाज़र हज़ूर, हज़रत आपणा रंग वखावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सिर तेरे हथ्थ रखावेगा। शब्द सुत खुशी मनाउँदा ए। प्रभ अग्गे सीस झुकाउँदा ए। चार जुग जन्म वटाउँदा ए। गुर अवतार आप प्रगटाउँदा ए। पीर पैगम्बर जोत जगाउँदा ए। भगत मीत नाद सुणाउँदा ए। गुरमुख गुरसिख आप उठाउँदा ए। मुरीद मुर्शद दे दीदार, दीद ईद चन्द चमकाउँदा

ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एको देणा साचा वर, दर साचा इक सुहाउँदा ए। शब्द सुत बोल जैकारा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरा खेल करां न्यारा, निरगुण सरगुण वंड वंडाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर हो के ज़ाहरा, ज़ाहरा तेरी कल जणाईआ। तेरे नाम दे अधारा, साची सिख्या करां पढ़ाईआ। साचा वणज इक व्यपारा, साचा हट्ट मात चलाईआ। ऊँचा दरस तेरा दरबारा, जीव जंत दयां समझाईआ। साध सन्त कर प्यारा, प्रेम प्रीती इक वखाईआ। भगत भगवान दे हुलारा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे ओट तकाईआ। चार जुग गुर अवतार पीर पैगम्बर, शब्दी सुत तेरा रूप वखाईआ। निरगुण सरगुण कर कर सुअम्बर, लोकमात गंढु पवाईआ। लख चुरासी वेख अडम्बर, तेरी कुदरत नाच नचाईआ। सर्ब घटां स्वामी हो भरतम्बर, भरपूरी इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, कवण वेला बिन पंज तत काया आपणा हुक्म वरताईआ। साचा वेला दरस भगवान, तेरे अग्गे मंग मंगाईआ। शब्दी सुत तेरा बलवान, चार जुग सेव कमाईआ। नौ नौ खेल करे महान, नव नौ चार वंड वंडाईआ। जुग चौकड़ी हो प्रधान, सच प्रधानगी इक कमाईआ। सृष्ट सबाई दे ज्ञान, अक्खर वक्खर करे पढ़ाईआ। शास्त्र सिमरत लेखा जाण वेद पुराण, अञ्जील कुरान गीता ज्ञान तेरा रंग जणाईआ। खाणी बाणी बोल बेज़बान, रसना जिह्वा दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, जिस वेले आपणा नूर जणाईआ। साचा वेला दरस भगवन्त, सुत दुलारा मंग मंगाईआ। बणे सुहाग साचा कन्त, नारी नर नरायण प्रनाईआ। बिन पंज तत काया चले तेरा मंत, मन्त्र तेरा इक्को नज़री आईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण तेरी महिमा गायण अगणत, सिफ्ती तेरी समझ सके कोई ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, आपणा वेला वक्त दे जणाईआ। साचा वेला दरस करतार, हरि करते तेरी वड वड्याईआ। हउँ भिखक खड़ा तेरे दुआर, जाचक झोली इक वखाईआ। शब्द सुत तेरा दुलार, तूं दाता देवणहार सच्चा शहिनशाहीआ। जुग चौकड़ी खेलां खेल विच संसार, बण खिलाड़ी खेल खलाईआ। पावां सार गुर अवतार, पीर पैगम्बर वेख वखाईआ। धुर दी देवां इक्को धार, सच संदेसा नाम अल्लाईआ। कलम शाही कर तैयार, काग़ज़ बन्धन इक्को पाईआ। घर घर होए उज्यार, निरअक्खर करे रुशनाईआ। लेखा जाण सच्ची सरकार, शहिनशाह तेरा हुक्म इक मनाईआ। बोध अगाधा बण लिखार, कातब इक्को नज़री आईआ। जुग चौकड़ी वेखां चार, कोटन कोटि काया नौ दुआरे खोल कवाड़, चार कुण्ट मिले वड्याईआ। सति पुरख तेरी साची धार, सति सतिवादी सति सरूप नज़र किसे ना आईआ। मैं मंगां एको वार, एकँकार

६६१
१५

तेरी सरनाईआ। साचा दिसे ना मीत मुरार, मित्र रूप ना कोए सखाईआ। तेरा मन्दिर सोहे दरबार, सचखण्ड वज्जे सच वधाईआ। थिर घर बैठा तेरा सुत दुलार, चरण कँवल ध्यान लगाईआ। साचा दस्स प्रभू विहार, कवण वेला लएं कराईआ। निरअक्खर तेरा नाम मेरे नाल होए उज्यार, तत नज़र कोए ना आईआ। पंजां तत्तां कर छुटकार, खैहड़ा छुटे जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, शब्द सुत झोली डाहीआ। शब्द सुत हो निमाणा, प्रभ अग्गे सीस झुकाइंदा। शहिनशाह तूं शाह सुल्ताना, सचखण्ड निवासी इक्को नज़री आइंदा। आदि जुगादि तेरा कोई ना जाणे टिकाणा, तेरा मन्दिर नज़र किसे ना आइंदा। सब मन्नदे तेरा साचा भाणा, बचया कोई रहिण ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाइंदा। दर तेरे मंग मंगी प्रभ एक, एकँकार दे समझाईआ। कवण वेला देवें आपणी टेक, बण जगदीश मेल मिलाईआ। जुग चौकड़ी धर धर वेखां सरगुण भेख, गुर अवतार रूप वटाईआ। अन्तिम मिलां तेरी रेख, बिन तेरी रेख धाम नज़र कोए ना आईआ। नित नवित्त खेलां तेरी खेड, खेल खिलाड़ी तेरी मोहे भाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, निरगुण तेरे अग्गे मंग मंगाईआ। पुरख अबिनाशी इक इकल्ला, आदि दया कमाइंदा। सुत शब्द वेख सच महल्ला, सचखण्ड साचा सोभा पाइंदा। दीपक जोत एको बला, तेल बाती ना विच रखाइंदा। सति सरूप फड़ाए पल्ला, पल्लू आपणी गंढु पवाइंदा। तेरी धार अन्तर रला, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताइंदा। शब्द सुत वेख इक, इक उह वी नज़र किसे ना आईआ। सुत दुलार नेत्र खोलू तक्क इक, उह वी इक अक्ख ना कोए मिलाईआ। साचे सुत कर तैयार वेख इक, उह प्रीतम प्यारा हथ्थ किसे ना आईआ। सच लाडले सुत उस दे उते सब नूं प्या शक़, बिन गोबिन्द शुकर ना कोए मनाईआ। कर किरपा देवां तेरा हक़, आपणा हुक्म तेरी झोली पाईआ। वेखीं सेवा करदा ना जाईं थक्क, अनथक्क रिहा दृढ़ाईआ। आपणे अन्तर तैनूं रखां ढक, बिन हुक्म ना बाहर कढ्ढाईआ। निरगुण धार निरगुण नालों होवे कदी ना वक्ख, वक्खरी आपणी कार जणाईआ। सरगुण मार्ग आवे दस्स, अन्तिम निरगुण विच समाईआ। निरगुण हो के सरगुण गावे जस, बिन सरगुण शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी गुर अवतार पीर पैगम्बर भगत सन्त नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा रिहा दृढ़ाईआ। शब्द सुत अग्गों प्या हस्स, हस्स के खुशी मनाइंदा। मैं इक्को भावां तेरा रस, दूजा रस ना मोहे सुखाइंदा। प्रभ जू वेला उह दस्स, जिस वेले आपणा रंग चढ़ाइंदा। निरगुण हो के देवें साथ, साचा संग

निभाइंदा। निरवैर हो के सिर रखें हथ्थ, नर निरँकार हो के दया कमाइंदा। दीन दयाल हो के खोलें अक्ख, प्रतख नूर नज़री आइंदा। उह प्रभू दे हक़, घर बरदा मंग मंगाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरे बच्चे ना पए तेरे ते शक़, तेरा शक़ लख चुरासी झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे मंग मंगाइंदा। सुत शब्द सुण वेख इक, बिन इक इक नज़री आईआ। इक कोलों सिख्या सिख, दूजी आपणी धार चलाईआ। तीजी देवे अगम्मी भिख, आपणी किरपा झोली पाईआ। चौथी तेरी रेख देवे लिख, लेखा लिख्या बिन कलम शाहीआ। पंजवें धार आपणी पेख, तेरे घर सोभा पाईआ। इक पंज करे हेत, निरगुण निरवैर रूप जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक पंज दए जणाईआ। इक इकल्ला सो पुरख निरँजण, नर निरँकार अख्वाइंदा। दूआ नूर हरि पुरख निरँजण, ज़हूर इक्को इक प्रगटाइंदा। एकँकार तीआ सज्जण, घर साचे संग निभाइंदा। आदि निरँजण निरगुण जोत दीपक जगण, सच महल्ल आप रुशनाइंदा। श्री भगवान पंचम धार बण के सज्जण, शाह पातशाह आप अख्वाइंदा। अबिनाशी करता निउँ निउँ करे मजन, घर साचे सीस झुकाइंदा। पारब्रह्म प्रभ आवे मंगण, दर अलख इक सुणाइंदा। पंचम मीता इक्को सज्जण, धुरदरगाही नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप दृढ़ाइंदा। इक पंज खेल अपार, हरि करता आप जणाईआ। इक इकल्ला एकँकार, दूजे शब्द रूप समझाईआ। तीजा निरगुण सरगुण कर प्यार, चौथे मंज़ल भूमका इक वखाईआ। पंजवें बोल सच जैकार, शब्द नाद धुन शनवाईआ। इक पंज दा सच्चा प्यार, आदि जुगादि दए बंधाईआ। इक विच्चों एकँकार, ओंकार आकार कराईआ। ऐड़ा अक्ख खोलू करतार, प्रतख आपणा दरस वखाईआ। ईड़ी इष्ट अपर अपार, निरगुण निरवैर आप समझाईआ। सस्सा किला कर तैयार, सरगुण अन्दर बंद कराईआ। हाहा हरि का रूप अपार, हरी हरि आपणी धार बंधाईआ। इक्को टिप्पी कर तैयार, साची वंडण वंड वंडाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म कर उज्यार, हँ रूप इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंजां अक्खरां दए अधार, निरअक्खर आपणी कार कमाईआ। पंजां अक्खरां कर परवान, हरि एका दया कमाइंदा। इक्को कक्का कर परवान, दो जहानां कर्म बणाइंदा। इक्को कक्का खेल महान, करता कादर आप वखाइंदा। इक्को कक्का कारण करे ध्यान, हरि करनी झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तिस कक्के माण रखाइंदा। इक पंज दा सुण के गीत, शब्द सुत खुशी मनाईआ। पंजां नाल प्रभ मेरी प्रीत, पंचम तेरा रूप नज़री आईआ। एनूां अन्तर खेल अनडीठ, तेरी धार समाईआ। एनूां बिनां ना बणे गीत, राग नाद ना कोए शनवाईआ। जोती जोत सरूप

६६२ १५

हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, कवण वेला मेरी आसा पूर कराईआ। श्री भगवान कहे सच मीता, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पीर पैगम्बर चले रीता, ऊड़ा ऐड़ा ईड़ी इक्को माण रखाइंदा। एन्हां अन्दर रखे सीता, सुत दुलार बन्धन पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सच्चा हुक्म आप समझाइंदा। सस्सा हाहा रहे दुआर, सस्सा सतिगुर रूप बणाईआ। हाहा हँ ब्रह्म कर प्यार, साहिब वेखे चाईं चाईंआ। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, थिर कोए रहिण ना पाईआ। सेवा कर कर जाण तेई अवतार, भगत अठारां वेस वटाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद बोल जैकार, पीर पैगम्बर ढोला गाईआ। नाद धुन शब्द आधार, गुर गुरदेव स्वामी इक दृढ़ाईआ। शब्द गुरू सर्ब प्यार, सतिगुर इक्को इक दृढ़ाईआ। नानक गोबिन्द धुर दी धार, धरनी धरत धवल मिले वड्याईआ। तेरा रूप अपर अपार, पुरख अबिनाशी आप समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दुआर दा लेख रिहा जणाईआ। आदि जुगादी दस्से लेखा, हरि करता आप जणाइंदा। सस्सा हाहा धुर दा मेला, सच साचा इक वखाइंदा। इक पंज दा निरगुण सरगुण पेशा, लोकमात आप कमाइंदा। पंज इक दा सच्चा देसा, सचखण्ड साचा सोभा पाइंदा। इक पंज दा सच नरेशा, नर निरँकार नजरी आइंदा। पंज इक दा सच्चा हेता, दरगाह साची आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा खेल आप वखाइंदा। इक पंज प्रभ कर परवान, देवे माण वड्याईआ। शब्द सुत तेरा कर्म महान, करनी समझ सके ना राईआ। तेरा मेल श्री भगवान, दूजा नाता ना कोए जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। सुण धुर संदेसा दस्स प्रभ, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। जुग चौकड़ी मुक्के हद्द, सच किनारा आप वखाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जाए लद्द, वेला अन्त आपणे हथ्थ रखाइंदा। निरगुण निरवैर पुरख अकाल प्रगट होवे झब्ब, जोती जाता वेस वटाइंदा। सुत दलारे तैनूं लवे लभ्भ, फड़ आपणा रंग रंगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी सुण भगवान, शब्द सुत अग्गों जणाईआ। साचा दस्स प्रभू निशान, वेला वक्त मिले वड्याईआ। हउँ बाला बाली बुध नादान, तेरी समझ कोए ना आईआ। चार जुग चौकड़ी बीते विच जहान, कोटन काल फेरीआं पाईआ। मैं मंगां इक्को दान, झोली डाहीआ। कवण वेला मिलें आण, फड़ बांहों गले लगाईआ। इक पंज करे परवान, परवाना आपणा हथ्थ फड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। श्री भगवान दस्से भेव, अभेद आप जणाईआ। शब्द सुत सच करनी सेव, सच साहिब आप लगाईआ। करे खेल आप

नेहकेव, नेहचल धाम बैठा बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। देवे वड्याई प्रभू प्रभ ठाकर, हरि स्वामी दया कमाइंदा। जुग चौकड़ी खेल लोकमात डूंघे सागर, गुर अवतार पीर पैगम्बर हुक्म वरताइंदा। पंज तत काया सुहाए जगत सौदागर, सच्चा सौदा हट्ट विकाइंदा। सच दुआरे अन्तिम देवे आदर, सिर आपणा हथ्थ रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, आप आपणा भेव चुकाइंदा। भेव चुकाए श्री भगवान, हरि आपणी दया कमाईआ। निरगुण सरगुण दोवें रूप होण प्रधान, लोकमात वज्जे वधाईआ। कलयुग अन्तिम निरगुण सरगुण दोहां मिटे निशान, सिफ़रा आपणा रूप वखाईआ। दूए अग्गे सिफ़रा कर परवान, बीस जगत दए समझाईआ। जिस जगत दा रूप श्री भगवान, सो आपणी कल वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सुत शब्द दए दरसाईआ। सुण शब्द उह वेला सच, हरि साचा सच जणाइंदा। निरगुण काया जो हंढ्ढावे सरगुण कच्च, सो सरगुण कच्चे भाण्डे भन्न वखाइंदा। सिफ़रा रूप आपणा मात दस्स, दूए नाल जोड़ जुड़ाइंदा। दूए पिच्छे बहे सत्त, सिफ़रा अग्गे हो के खेल खलाइंदा। दोहां मेल मिलाए करे खेल समरथ, बीस आपणा अंक जुड़ाइंदा। सो बीस होवे किसे ना वस, बीस आपणा रंग रंगाइंदा। वीह वीह तेरा खेल रख, हरि करता आप कराइंदा। इक पंज दी देवे

६६४ वथ, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची रुतड़ी ६६४

१५ आप महकाइंदा। साची रुतड़ी सुहाए एक, एकँकार वड्डी वड्याईआ। इक पंज देवे टेक, दोहां मेल पन्द्रां रूप वखाईआ। १५

तेरा कर्म दुआरे लेख, कक्का इक्को सोभा पाईआ। एह कक्का गुर अवतार कत्तक दे लिख के गया लेख, कलयुग जीव समझ किसे ना आईआ। निरगुण निरवैर पुरख अकाल तेरा नेता बणे नेत, निरवैर आपणी खेल वखाईआ। सुत शब्द वेखणी खेड, हरि करता पड़दा दए उठाईआ। आदि दस्सया तैनूं भेत, दूजा सार कोए ना पाईआ। अन्तिम करे आपणा हेत, हितकारी वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, इक पंज तेरा दर, दर दरवाज़ा दए खुल्हाईआ। इक पंज वेला आप सुहावेगा। पन्द्रां अंक मात जणावेगा। कक्का कर्म कांड डेरा ढावेगा। कत्तक रुत्त बसन्त सुहावेगा। बीस बीस वेख वखावेगा। जो कुछ रख्या सो तेरी झोली पावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण सरगुण ज़ीरो सिफ़रा दूए नाल बीस समझावेगा। बीस बीसा प्रभू जणा, तेरे हथ्थ वड्याईआ। इस दा भेव दे खुल्हा, खुल्ल्ही तरा प्रगटाईआ। कवण दुआर वसे कल्ला, कवण गृह खुशी मनाईआ। कवण फुलवाड़ी फूल फला, कवण पंखड़ी दए महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे

मंग मंगाईआ। शब्द सुत सच समझाउँदा हां। भेव अभेदा आप खुलाउँदा हां। जुग चौकड़ी वंड वंडाउँदा हां। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग नाम रखाउँदा हां। गुर अवतार आप प्रगटाउँदा हां। दो तिन्न मेल मिलाउँदा हां। तेई रंग इक रंगाउँदा हां। साचा हुक्म संदेस मन्नाउँदा हां। नरपत नरेश इक्को नज़री आउँदा हां। आपणा नाम दे के धुर दा ख़त, चिट्ठी बिन डाक आप पुचाउँदा हां। थोड़ा थोड़ा मात हक़, झोली फड़ फड़ आपे पाउँदा हां। अन्तिम आपणे ख़ाने घत, लेखा सब दा पूर कराउँदा हां। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणी करनी आप कमाउँदा हां। आपणी करनी सच कमावांगा। सच सच आपणा भेत जणावांगा। धुर दी धार आप समझावांगा। जल थल महीअल वेख वखावांगा। उच्चे टिल्ले पर्बत खोज खोजावांगा। धरनी धरत धवल डेरा लावांगा। नूर खुदाई अवल्ल, ज़ात इक्को सच समझावांगा। अमृत नाभी भर के कँवल, उलटा मूँह आप वखावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा भेत आप जणावांगा। साचा भेत इक्को खोल्हांगा। बिन रसना जिह्वा बोलांगा। जन कंडे तराज़ू तोलांगा। बिन दुआर धुर दा दुआरा खोलांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा रूप इक वरोलांगा। तेरा रूप इक वखावांगा। तेरा नाम इक प्रगटावांगा। कोटन कोटि नाद सुणावांगा। ब्रह्म ब्रह्माद आप उठावांगा।
६६५ रच रच काज वेख वखावांगा। निरगुण सरगुण राह चलावांगा। जो घड़या भन्न वखावांगा। जून अजूनी आप भवावांगा। ६६५
१५ जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा भेव इक दरसावांगा । साचा भेव इक दरसाएगा। १५
गुर अवतार इशारा दिवाएगा। पीर पैगम्बर नाअरा इक सुणाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा आपणे हथ्थ रखाएगा। लेखा आपणे रखे हथ्थ, चार जुग दए वड्याईआ। कलयुग अन्तिम हो प्रगट, निरगुण निरवैर फेरा पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा संदेसा जाइण दस्स, सो सज्जण वेख वखाएगा। सचखण्ड निवासी आए नट्ठ, बण पांधी फेरा पाएगा। साचे मन्दिर जाए वस, महल अटल रुशनाएगा। इक्को नूर कर प्रकाश, दीवा बाती डगमगाएगा। तेरी पूरी करे आस, आसा तेरी झोली पाएगा। बाकी रहे ना कोई ख्वाहिश, ख़सूसीअत आपणी इक समझाएगा। चार जुग जो रहे उदास, तिन्नां उदासी दूर कराएगा । बण सुहेला वसे पास, सज्जण आपणा डेरा लाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, रुत रुतड़ी आप महकाएगा। रुत रुतड़ी आप सुहावेगा। तेरा लेखा पूर करावेगा। साचा नूर इक दरसावेगा। ज़ाहर ज़हूर वेस वटावेगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जुग चौकड़ी लहिणा पूर करावेगा। शब्द सुत कहे प्रभ मेरे सतिगुर, सति पुरख निरँजण तेरी सरनाईआ। तेरा लेखा

आदि जुगादि रहे सद धुर, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा नाउँ नाद गावण नाल सुर, ताल तलवाड़ा जगत वजाईआ। तुं वेखणहार चढ़ अगम्मी घोड़, दो जहानां फेरा पाईआ। हर घट अन्तर जाएं बौहड़, गृह गृह वेखें चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, किस वेले पएं बौहड़, लेखा चुक्के बौहड़ी दुहाईआ। निरगुण हो के अन्तिम आवांगा। निरवैर हो के वेस वटावांगा। जोती नूर जोत रुशनावांगा। ज़ाहर ज़हूर फेरा पावांगा। शब्दी चोट इक लगावांगा। किला कोट फोल फोलावांगा। लोक परलोक आप सुहावांगा। ब्रह्मण्ड खण्ड वेख वखावांगा। सूरज चन्द नूर चमकावांगा। जेरज अंड पड़दा लाहवांगा। उत्भुज सेत्ज संग निभावांगा। बण सूरा सरबँग, आपणी कार कमावांगा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग गुर अवतार पीर पैगम्बर जो मंगदे गए मंग, अन्तिम सब दी पूर करावांगा। कलयुग अन्तिम कूड़ी क्रिया होए भंग, सतिजुग साचा राह चलावांगा। चार जुग दे विछड़े गुरमुख चाढ़ चन्द, नूर इक्को इक रुशनावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साचा हुक्म इक वरतावांगा। साचा हुक्म इक वरताएगा। निरवैर निरँकार फेरा पाएगा। पुरख अकाल जोती नूर डगमगाएगा। सब दे हल्ल करे स्वाल, बाकी नज़र कोए ना आएगा। शब्द सुत तैनूं बणावां दलाल, सच दलाली इक कराएगा। तेरे चले आप नाल, सगला संग वखाएगा। सच दुआर खोल्ह सच्ची धर्मसाल, दर इक्को इक वडयाएगा। लेखा जाण शाह कंगाल, ऊँच नीच माण रखाएगा। कूड़ी क्रिया तोड़ जंजाल, जागरत जोत आप जगाएगा। आ के पुछे मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाएगा। लख चुरासी विच्चों भाल, गुरसिख गुरमुख आप उठाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाएगा। साची करनी दूआ सिफ़रा हो तैयार, ज़ीरो इक नाल करे कुड़माईआ। वीह सौ इक कर प्यार, अक्ल कल खेल खलाईआ। वीह सौ दो हो उज्यार, उजरत मंगे थाउँ थाईंआ। वीह सौ तिन्न खोल कवाड़, नेत्र नैण करे रुशनाईआ। वीह सौ चार चौथे पद हो ख़बरदार, ख़बरां देवे आप लोकाईआ। वीह सौ पंज कर प्यार, पंचम मीता पंचम मेला सहिज सुभाईआ। वीह सौ छे बिन छप्पर छन्न होया बाहर, चार दीवार ना कोए रखाईआ। वीह सौ सत्त सति पुरख निरँजण आपणी धार, सति सतिवादी लई प्रगटाईआ। वीह सौ अठ्ठ अठ्ठां तत्तां करना ख़बरदार, धुर संदेसा नाम जणाईआ। वीह सौ नौ नौ ंखण्ड पृथ्मी पौणी सार, नव नौ आपणा रंग रंगाईआ। वीह सौ दस खेल करतार, करता पुरख आपणा पड़दा लाहीआ। छोटे बाले कर प्यार, परम पुरख रिहा समझाईआ। साची सिख्या इक सिखाल, मार्ग इक्को इक दृढ़ाईआ। उठ लाडले धुर दे लाल, लालन आपणा रंग चढ़ाईआ। सरगुण बणना मात दलाल, सच दलाली दए वखाईआ। जा के

६६६ १५

वेख सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआर प्रभू जणाईआ। खेले खेल आप निरँकार, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। जुग चौकड़ी मेरा तक्कदे रहे विहार, विवहारी हथ्थ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, रविदास चुमारे तेरा लेखा पूर कराईआ। वीह सौ दस दस धार, दहि दिशा वेख वखाईआ। दस्म दुआरी खोल्ह कवाड़, बंद ताकी कुण्डा लाहीआ। फड़ के बांहों बिन हथ्थां गुरमुख दए वाड़, बाहर निकल कोए ना जाईआ। कर प्रकाश बहत्तर नाड़, जोती नूर नूर रुशनाईआ। मेट मिटाए पंजम धाड़, त्रैगुण आपणी झोली पाईआ। बणा के सच्चा धुर दा लाड़, लाड़ा इक्को इक वखाईआ। साची सेजा आप स्वाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। उठ वेख लाडले लाल, हरि लालन हुक्म जणाईआ। तेरा शब्द गुरू दलाल, दूजा संग ना कोए रखाईआ। लोकमात तेरा मुख पूंझे नाल रुमाल, नीली धारों फड़ के बाहर कढ्ढाईआ। जिथ्थे ना कोई पुजे शाह कंगाल, राज राजान सोभा कोई ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक हकीकत दए वड्याईआ। इक इक दा होया जोड़, जोड़ा प्रभ जणाया। इक इक आया घोड़, घोड़ा नज़र किसे ना आया। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर नूं आपणी पई लोड़, दूजा संग ना कोए रखाया। शब्द सुत तेरी खेल करे होर, होका इक्को इक सुणाया। फड़ के आपणे हथ्थ डोर, निरगुण आपणा वेस वटाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दस इक मेल मिलाया। इक नाल मिल्या एका, एकँकार वड्डी वड्याईआ। जन भगत दिती साची टेका, टेक इक्को इक दरसाईआ। जिस दा एथे ओथे रिहा कोई ना लेखा, लिखणहार नज़र कोए ना आईआ। निरवैर पुरख खोलया भेता, भेव आपणा दित्ता समझाईआ। उठ लाडले वेख ला आपणा लेखा, सुत शब्द दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, इक जगदीश जगदीश नाल मिलाईआ। जगदीश नाल मिल्या जगदीश, इक इक वज्जी वधाईआ। पारब्रह्म दी अचरज रीत, रीती नज़र किसे ना आईआ। सदी बीसवीं रही बीत, दूआ सिफ़रा सिफ़रा दूए विच रिहा समाईआ। भगत भगवान मिल के गाउणा गीत, घर साचे सोभा पाईआ। करे खेल अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शब्द सुत तेरी साची रीत, शब्दी शब्दी रंग रंगाईआ। शब्द सुत उठ वेख ध्यान कर, हरि करता आप जणाइंदा। श्री भगवान देवे वर, पारब्रह्म प्रभ आपणी दया कमाइंदा। निरभउ चुकाए भय डर, भ्यानक रूप ना कोए वखाइंदा। साचा घाड़न आपे घड़, आपे लेखे लाइंदा। जिस दर सच तेरे नाउँ दा सच निशाना जाए चढ़, तिस साचा नाता इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक इक गंढु पवाइंदा। इक नाल लग्गा दूआ, एका दूआ जोड़ जुड़ाईआ। निरगुण सरगुण आपे

होया, होका देवे जगत लोकाईआ। सरगुण सच्चा निरगुण सोहया, निरगुण नज़र किसे ना आईआ। साचा बीज आपे बोया, पत डाली वेख वखाईआ। ना जन्मे ना कदे मोया, मात गर्भ ना फेरा पाईआ। ना हस्सया ना कदे रोया, दुःख दर्द ना कोए सताईआ। ना घटया ना किसे खोहया, झटका सके ना कोए बणाईआ। आदि जुगादी नवां नरोया, पुरख अकाल वड्डी वड्याईआ। वीह सौ बारां बिक्रमी बीज बोया, सच्ची संगत बूटा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करता खेल आप कराईआ। एकँकार इक पसार, निरगुण सरगुण खेल खलाईआ। त्रैगुण तेरा सच प्यार, इक तिन्न जोड़ जुड़ाईआ। वीह सौ तेरां बिक्रमी कहे सर्ब संसार, हरि का रंग समझ कोए ना आईआ। कलयुग अन्त वेख विचार, राजे राणयां दित्ता उठाईआ। साधां सन्तां वेखे आप जा घर बार, त्रैगुण माया बैठे झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। इक तिन्न दा सच्चा खेल, बिक्रमी तेरां दए वधाईआ। इक तिन्न दा सच्चा मेल, राज जोग दए समझाईआ। इक तिन्न दा गुरू चेल, चेला गुर जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप वखाईआ। आपणी खेल निरगुण धार, निरवैर आप कराइंदा। तिन्न तिन्न दा इक विहार, त्रैगुण अतीता आप समझाइंदा। जगत वड्याई विच संसार, जगत राजान सोभा पाइंदा। राष्ट्रपति करे ख़बरदार, पंज वस्त कूड़ी झोली पाइंदा। आपणा आप अबिनाशी ना मिलाए निरँकार, निरगुण आपणा भेव छुपाइंदा। कूड़ी क्रिया कर ख्वार, साची वस्त आपणे संग रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक तिन्न आपणा रंग रंगाइंदा। इक चार दा होया सौदा, बिनां हट्ट वणजारा। इक चार दा बणया मौका, मिल्या मेल सिरजणहारा। इक चार दा वेला औखा, ना कोई जाणे पार किनारा। इक चार दा सब नूं धोखा, जुग चौकड़ भुल्ला संसारा। इक चार जुग जुग ओटा, देवणहार आप निरँकारा। इक चार दा साचा कोठा, सचखण्ड सच मनारा। इक चार दा नित नित रोसा, जानणहार आप करतारा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वीह सौ चौदां दए हुलारा। वीह सौ चौदां इक्को चौका, चार इक नाल मिलाईआ। जन भगतां घर घर दित्ता होका, उठो सज्जण सच्चे भाईआ। प्रभ मिलण दा मार्ग सौखा, चौथे पद दए समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दूआ एके नाल मिलाईआ। एका होया दो विच, दूआ रूप वटाईआ। दो तों होया इक, इक विच समाईआ। जो इक सिख्या लए सिख, सो गुरमुख नज़री आईआ। इक्की परिवार दिती भिख, परवरदिगार दया कमाईआ। सब दी लेख लेखनी दिती लिख, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। चौदां लोकां दे के पिठ, प्रभ आपणी कार कमाईआ। चौदां तबकां छड्डे हित, हितकारी होया सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, एका इक्की निरगुण सरगुण आपे पाईआ। इक्की पाए सम्मत चौदां बिक्रमी बीस, देवे माण वड्याईआ। सच सुणा इक हदीस, ऊँच नीच भेव चुकाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश गाओ इक्को गीत, साचा ढोला गया समझाईआ। काया मन्दिर वेखो सच मसीत, काअबा इक्को नज़री आईआ। घर स्वामी वसे धाम अनडीठ, गृह बैठा डेरा लाईआ। उस नाल करो प्रीत, प्रीतम आपणा रंग चढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया विच ना बणो नीच, ब्रह्म रूप सारे नज़री आईआ। एका रंग वसे हस्त कीट, पारब्रह्म नूर रुशनाईआ। साचे दर तों मंगो भीख, भिच्छया इक्को रिहा वरताईआ। आदि जुगादि रहे अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आईआ। दो जहानां लए जीत, त्रैभवन धनी बेपरवाहीआ। जिस मात चलौणी साची रीत, इक पंज सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाईआ। इक पंज दा धुर विवहारा, हरि सतिगुर आप कराइंदा। इक पंज दा इक किनारा, इक्को घाट वखाइंदा। इक पंज दा इक पसारा, इक्को दर बणाइंदा। इक पंज दा इक नगारा, इक्को नाद वजाइंदा। इक पंज दा इक जैकारा, इक्को राग सुणाइंदा। इक पंज दा इक भतारा, इक्को कन्त हंढाइंदा। इक पंज दा इक श्रृंगारा, इक्को वेस वटाइंदा। इक पंज दा इक मनारा, इक्को महल्ल डेरा लाइंदा। इक पंज दा जोड़ न्यारा, पन्द्रां रूप जणाइंदा। पन्द्रां अन्दर सिरजणहारा, सच्चा खेल खलाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जिन्हां देंदा आया लारा, तिन्हां आसा पूर कराइंदा। अठसठ दा वेख अखाड़ा, तट तीर्थ फोल फोलाइंदा। प्रगट हो के धुर दा लाड़ा, धुरदरगाही फेरा पाइंदा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग जो बणया रिहा कुँवारा, इक्को वार हुण आपणे विच छुपाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक पंज माण वडियाइंदा। इक पंज हो तैयार, पन्द्रां देवणहार वधाईआ। वीह सौ बिक्रमी कर प्यार, प्रीतम आपणी खेल खलाईआ। साचे सज्जण आप उठाल, आपणा रंग चढ़ाईआ। नाता तोड़ शाह कंगाल, दूर दुराडे रंग रंगाईआ। आप चले नाल नाल, आउँदा जांदा नज़र ना आईआ। जा के वेखे सब दा हाल, जो बैठे ध्यान लगाईआ। तीर्थ तट कहिण प्रभू असीं होए कंगाल, साडे कोल वस्त रही ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, करे खेल बेपरवाहीआ। सुण फ़रयाद दीन दयाला, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। करे खेल आप निराला, समझ सोच ना कोए रखाइंदा। जन भगतां पाए अन्तर माला, साची भगती विच समाइंदा। धुरदरगाही बण दलाला, साचा वणज इक कराइंदा। हट खोल्ह हक़ हलाला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी तीर्थ अठसठ, हरि आपणी धार मिलाईआ। पन्ध मुका नट्ठ नट्ठ, वेखे थाउँ थाईंआ। साचे जन कर प्रगट, देवे माण वड्याईआ। त्रबैणी वेख इक

तट, किनारा आपणा सोभा पाईआ। धुर दी करनी लई रख, एका मंगण मंग मंगाईआ। धार गंगा चाढ़ सति दोहां नाल चरण धूल चरण कँवल विच आप ना रखे श्री भगवान बाहर आपणी खेल वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। देवे वड्याई त्रैगुण अतीता, तिन्नां मेल मिलाईआ। गंगा जमना सुरस्ती गावण गीता, खुशीआं राग सुणाईआ। धन्न भाग साहिब प्रभू हरि डीठा, घर आया फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दयावान दया कमाईआ। तिन्नां मंगी मंग एक, दोए जोड़ सरनाया। तेरे प्रभ भगत लए वेख, जिन्हां अन्तर तेरा नूर नज़री आया। एन्हां नाल साडा हेत, प्रेम इक्को इक वधाया। जिन्हां नाल मिल के तैनूं लईए पेख, नित तेरा दर्शन पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे सीस निवाया। तेरे सीस दर निवा के, प्रभ इक्को मंग मंगाईआ। जिन्हां दर्शन दित्ता सानूं आ के, जुग जन्म दी तृखा दिती बुझाईआ। तिन्नां माण देणा प्रभ आप वडया के, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। दर्शन करना सीस दस्तार बंधा के, तिन्नां इक्को वार मंग मंगाईआ। तिन्नां तिन्नां विच चिट्ठी आपणी धार रखा के, साचे दर देणी वड्याईआ। असीं ओस सरोवर आईए नहा के, जिथ्थे तेरे चरण धूढ़ मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। वीह सौ पन्द्रां हो मेहरवान, प्रभ दिती माण वड्याईआ। दूआ सिफ़रा कर परवान, सिफ़रा दूए नाल मिलाईआ। किरपा करां आप महान, मेहर नज़र नैण उठाईआ। सति धर्म दा देवां दान, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वड्याईआ। तीर्थ तट वेख किनार, प्रभ आपणा खेल खलाईआ। इक छे जो बणे भिखार, इच्छया साची इक धराईआ। कवण वेला प्रभ आए निरँकार, निरगुण फेरा पाईआ। जन्म जुग दा लाहे उधार, पूरब लेख मुकाईआ। साचा बख्शे इक प्यार, चरण धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। दोए जोड़ करीए निमस्कार, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। विष्नूं कहे मेरा होए ना संपूर्ण भण्डार, तुध बिन भिख्या ना कोए पाईआ। कर किरपा सिरजणहार, अन्तिम मेले चाई चाईंआ। वीह सौ सोलां बिक्रमी खेल न्यार, हरि करतार जुग जुग दा लाह उधार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां भुक्ख्यां भुक्ख गंवाईआ। सम्मत सोलां सच भण्डार, हरि जू आप वरताईआ। मनी सिँघ दा लेख अपार, मेहरवान पूर कराईआ। एथे ओथे दे सहार, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। पिच्छे अग्गे ना कोई किनार, जिस जन आपणी गोद बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करनेहारा सच विहार, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी इक सत्त, सति सतिवाद आप कराइंदा। सीस जगदीश ताज रख, रक्षया आपणे हथ्थ वखाइंदा।

गुर अवतार जो मार्ग गए दस्स, सो इक सति हो के आइंदा। साची धारों हो प्रगट, निरगुण नूर नूर प्रगटाइंदा। शब्द दुआरा खोल्ह हट्ट, कूड़ा वणज ना कोए वखाइंदा। शाह पातशाह राज राजान जन भगतां रखे पत, पतिपरमेश्वर दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करनी आप कमाइंदा। सीस रख ताज जगदीश, जगदीशर खुशी मनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे पढ़न हदीस, बैठे ध्यान लगाईआ। जिस दा लेखा दस्सदे आए बीस बीस, सो निरगुण सरगुण हो के सिफ़रे विच समाईआ। जिस ने दूए अग्गे एका ला के बणौणी इकीस, इक्की आपणा रंग चढ़ाईआ। उस दा कलमा सच हदीस, पढ़े सर्ब लोकाईआ। जगत सदी सदीवी जाणी बीत, साबत कोए रहिण ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। इक अट्ठ दा खेल अपारा, हरि करता आप कराइंदा। इक अट्ठ दा तत आधारा, अट्ठां तत्तां भेव चुकाइंदा। अट्ठ तत इक जैकारा, हरि शब्दी नाद सुणाइंदा। शब्द नाद इक कटारा, धुर दी धार आप वखाइंदा। राज राजाना शाह सिक्दारा, शहिनशाह आपणी कल वरताइंदा। अट्ठां तत्तां वेख कवाड़ा, बंद ताकी पड़दा लाहइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच कटारा नाम प्रगटाइंदा। जगत राज दा झूठा लहिणा, सच कूड़ी खेल वखाईआ। पंज तत दा अन्तिम गहिणा, मुलम्मां अन्तिम उतर जाईआ। नर निरँकार निरगुण सरूप सदा रहिणा, आदि जुगादि समाईआ। शाह भूप राज राजान जिस दा मन्नण कहिणा, सो कह के गया समझाईआ। शाह पातशाह किसे ना रहिणा, जो आया सो उठ उठ जाईआ। साचा खण्डा तेज कटार नाम तलवार गुरसिखां अन्तर आत्म पाए गहिणा, बाहरों नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, राज जोग जगत दुआरे जोगीशर खेल गया समझाईआ। राज दुआरे खेल निरँकार, निरगुण आपणा आप जणाईआ। जिस ने खड़ग खण्डा दिती तलवार, सो तलब मंगे थाउँ थाईंआ। सभनां करे ख़बरदार, लोकमात नैण अक्ख खुलाईआ। अठसठ तीर्थ गुरदर मन्दिर मस्जिद मट्ठ शाह सुल्तान करे बेज़ार, बेनज़ीर हुक्म दृढ़ाईआ। इक अट्ठ दी सच्ची धार, जल धार आप रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। इक अट्ठ कर प्यार, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। जुग चार सिर उधार, चुक्कया आपे लाहइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दी करदे गए पुकार, सो आपणी कार कमाइंदा। भगत भिच्छया मंगदे रहे जिस दुआर, सो भगवान इच्छया पूर कराइंदा। धुर दा नेता कर विचार, लेखा सच समझाइंदा। सति धर्म दा इक दुआर, सति सतिवादी आप जणाइंदा। भगतां मीता कर प्यार, लोकमात आप प्रगटाइंदा। सच सिँघासण कर तैयार, अग्गे पिच्छे सोभा पाइंदा। चौथी मंज़ल दे

१००१
१५

आधार, हरिजन साचे आप पुचाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच घर इक सुहाइंदा। सच दुआर भगत बणा, भगवन दए वड्याईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां दए वखा, वेखो लोकमात वज्जी वधाईआ। इक अट्ठ दा लेखा रिहा मुका, अठारां वेखे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सब दा लहिणा रिहा चुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेख वेख होए हैरान, हौके लै के रहे जणाईआ। करया अचरज खेल भगवान, पारब्रह्म प्रभ आपणा फेरा पाईआ। सति सरूप झुला निशान, सति सतिवादी आपणा रंग रंगाईआ। साचा मन्दिर बणा मकान, साचा राह दित्ता वखाईआ। चार वरनां दे ज्ञान, चार कुण्ट रिहा समझाईआ। चारे जुग कर परवान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल इक वखाईआ। साची खेल वखाए मात, हरि मता आपणे नाल पकाईआ। जो लोकमात दे के आए असीं दात, कलयुग जीव ख़ाली हथ्थ रहे वखाईआ। झगड़ा प्या ज़ात पात, दीन मज़्ब करे लड़ाईआ। मन मति होई नार कमज़ात, कुलखणी बैठी डेरा लाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी रात, साचा चन्द ना कोए चढ़ाईआ। श्री भगवान भगत बणा इक जमात, पट्टी इक्को नाम पढ़ाईआ। धुर संदेसा रिहा आख, कूड़ा झगड़ा छड्डो लोकाईआ। निज नेत्र खोलो आंख, दरस पाओ बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। देवे माण नौ इक, इक नौ अंक बणाईआ। दूआ सिफ़रे अग्गे इक, इक नाल नौवां करे कुड़माईआ। वीह सौ उन्नी पाई भिख, भिच्छया आप वरताईआ। हिंदू मुस्लिम सुन्नी कोई ना पए दिस, गुर अवतार पीर पैगम्बर बैठे सीस झुकाईआ। सारे प्रभ तेरे बणन सिख, सिँघ रूप वटाईआ। अग्गे लेखा देणा लिख, पिछला लहिणा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, मेहर नज़र उठाईआ। इक नौ उन्नी ना मुस्लिम ना सुन्नी, सो साहिब आप जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सब दी प्रभ दे विच समाई धुनी, आवाज़ राग ना कोए सुणाईआ। ख़ाली होई जगत कुंनी, काची गगरी रोवे दए दुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल आप वरताईआ। पीर पैगम्बर मारन नाअरा, इक नौ आप जणाईआ। परवरदिगार होया ज़ाहरा, ज़ाहरा पीर फेरा पाईआ। जिस दा हद्द हदूद ना कोई दाइरा, दिशा वंड ना कोए वंडाईआ। आदि जुगादि जुगा जुगन्तर सब तों वसे बाहरा, बाहर आपणा आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, इक नौ दए समझाईआ। इक नौ कहे मोहे बीस उडीक, सरगुण सिफ़रा नज़री आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे दस्स के गए तारीख, तरीका सक्या ना कोए समझाईआ। थोड़ी थोड़ी जिंनी मिली भीख, सो लोकमात गए वरताईआ। आत्म अन्तर

आपणी आप रखदे रहे उडीक, लोचण नैण अक्ख राह तकाईआ। कवण वेला प्रभ प्रीतम करे प्रीत, पारब्रह्म प्रभ फेरा पाईआ। सच वखाए देहुरा मन्दिर मसीत, काया काअबा इक्को नज़री आईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त सुणाए आपणा इक्को गीत, राग नाद इक शनवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे कहिण, कह कह रहे जणाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर कलयुग अन्तिम साडा लहिणा आवे लैण, लेखा पिछला पूर कराईआ। जिस ने अलिफ़ ये समझाई ऐन, सो ग़ैन नुक़ता वेख वखाईआ। उस बिन कोई ना आवे चैन, चाउ घनेरा ना कोए दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। गुर अवतार सारे हस्सण, दरगाह साची खुशी मनाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवान आपणा मार्ग आए दस्सण, साडा लेखा लेखे लाईआ, जन भगतां अन्दर आए वसण, निरगुण आपणा डेरा दए वखाईआ। कूड़ी क्रिया आए मथ्थण, नाम मधाणा नाल लिआईआ। मोह विकारा हँकारा आए कढ्ढण, शब्द खण्डां हथ्थ चमकाईआ। अन्तिम सानूं आए सद्दण, सच संदेसा इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, आपणा खेल इक वरताईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे सोचण, जन भगतां वेख वखाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल कवण खोल्हे इक्को लोचण, नैण आपणा आप जणाईआ। वेस वटाए लोक परलोकन, दो जहानां सोभा पाईआ। सच जणाए धुर श्लोकन, नाउँ इक्को सोभा पाईआ। साची देवे मोखन, मोक्ष इक्को झोली पाईआ। एथों कोए ना उठाए लोकन, हरिजन आपणी गोद उठाईआ। करे प्रकाश निर्मल जोतन, अन्ध अन्धेरा दए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, मेहर नज़र नैण उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे तक्क, निरगुण निरगुण ध्यान लगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लोकमात मार्ग दे दे गए थक्क, समझ सके ना जगत लोकाईआ। कूड़ी क्रिया कलयुग पाई नकेल नथ्थ, चार वरनां रही भवाईआ। सब दा खेड़ा दिसे भठ्ठ, घर नूर ना कोए रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा खेल इक समझाईआ। साची खेल जणाए बिन समझ, समझावणहार आप अख्वाइंदा। चार युग दी लाई रमज़, अन्तर अन्तर आपणा पड़दा उठाइंदा। वेखो एह की होया ग़ज़ब, गहर गम्भीर फेरा पाइंदा। निरगुण सरगुण सरगुण निरगुण होया जज़ब, रूप रंग रेख ना कोए वखाइंदा। निरगुण सरगुण करे अदब, आदाब इक्को इक सिखाइंदा। जिस नूं कोई दे ना सके ज़रब, अंकड़ा कोई ना मात बदलाइंदा। जिस दा लेखा कोए ना अरब खरब, सो प्रभ वेस वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुर पीर अवतार मंग मंगाइंदा। गुर अवतारां पीर

१००३
१५

पैगम्बरां वेस आस, शब्द गुरू दए जणाईआ। उठो सारे करो कयास, किस्म किस्म ना कोए बणाईआ। सर्ब जीआं दा इक्को साक, प्रभ सज्जण हरि रघुराईआ। रल मिल सारे बणो जमात, इक्को इक पढ़ाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग लोकमात जो आए आख, हुक्मे अन्दर सेव कमाईआ। सो प्रभू दी झोली पाओ प्रभ दी दात, आपणे लेखे ना कुछ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल दए कराईआ। गुर अवतार पैगम्बर इक दूजे नाल करन सलाह, साचा मता पकाया। सारे मन्नो इक मलाह, पारब्रह्म बेपरवाहया। सारे चल्लो इक राह, रहबर इक ख़ुदाया। सारे करो इक दुआ, दोए जोड़ सीस झुकाया। जे मन्नीए दाता बेपरवाह, बेपरवाही नज़र उठाया। साडा लहिणा देणा दए मुका, लेखा लेखे विच रखाया। साडे कोलों मंगे ना गवाह, प्रेम प्रीती शहादत दयो भुगताया। जे कोई देवे साहिब सज़ा, निउँ निउँ सीस दयो झुकाया। चरण धूढ़ी मस्तक लौणी छाह, आप आपणा माण मिटाया। कलयुग वेला अन्तिम गया आ, पांधी बैठा आपणा पन्ध मुकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहया। बेपरवाह खेल अनोखा, हरि करता आप कराईआ। जिस ने बणाया सचखण्ड कोठा, निरगुण जोत करी रुशनाईआ। जिस ने थिर घर बहाया शब्द पुता, पूत आपणा रंग रंगाईआ। सच श्लोक सुणाया श्लोका, इक्को नादी नाद वजाईआ। सो कलयुग अन्तिम गुर अवतारां पीर पैगम्बरां नाल करे ना धोखा, धुर दी धार आप जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग सब नूं आपणे मिलण दा दस्सदा रिहा मौका, मुकम्मल हाल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, कलयुग अन्तिम वेस जणाईआ। कलयुग अन्तिम वेस वटाए, हरि वड्डा वड वड्याईआ। आपणी करनी आप कमाए, करता पुरख सच्चा शहिनशाहीआ। दूजा ना कोई संग रलाए, तीजी बणत ना कोए बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करे निरँकार, निरगुण आपणा खेल कराइंदा। शाहो भूप हो उज्यार, शहिनशाह आपणा वेस वटाइंदा। जोती नूर कर उज्यार, शब्द जोती नाद वजाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी बीस सुहेला, हरि सतिगुर इक कमाईआ। आपे जाणे आपणा वेला, थित वार ना कोए वखाईआ। साहिब सतिगुर बण के सज्जण सुहेला, सगला संग रखाईआ। जुग चौकड़ी नालों हो के वेहला, कलयुग अन्तिम आपणा हुक्म वरताईआ। नस्सया फिरे जंगल जूह उजाड़ पहाड़ उच्चे टिल्ले पर्वत बेला, समुंद सागर डूंघी कन्दर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड दा सच विहार, लोकमात करे निरँकार, मात लगा इक दरबार, दरबारी आपणी धार चलाईआ। सच दरबार

वीह सौ वीह, हरि सतिगुर आप लगाइंदा। इक पंज दी रख नींह, पन्द्रां कत्तक दिवस वडियाइंदा। सति धर्म दा बीज बी, आप आपणी सेव कमाइंदा। चरण कँवल दा अमृत मींह, मेघ इक बरसाइंदा। लेखे ला साढे तिन्न हथ्थ सीं, सींआं धरनी धरत धवल सुहाइंदा। लेखा जाणे जीवत जी, जीवण जुगत समझाइंदा। प्रभ दा भाणा कोई जाणे की, बिन करते कीमत कोई ना पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप वरताइंदा। साची खेल वीह सौ बीस, हरि सतिगुर आप कराईआ। निरगुण जोत हरि जगदीश, सति पुरख निरँजण आप प्रगटाईआ। छत्र झुला साचे सीस, जगदीश मिले वड्याईआ। पंज तत ना कोए हदीस, शब्दी राग इक अल्लाईआ। करे खेल आप अनडीठ, अनडिठड़ी कार कमाईआ। चार जुग दे सच्चे मीत, सो पुरख निरँजण आप मिलाईआ। ना कोई शिवदुआला मट्ठ मसीत, गुरदर नज़र कोए ना आईआ। सतिजुग तेरी सच चलाए रीत, रीतीवान बेपरवाहीआ। वरन बरन मिल के ढोला गावण गीत, नाउँ इक्को इक अल्लाईआ। हरि चरण मिले प्रीत, दूजी वंड कोए रखाईआ। अमृत रस मिले नाम मीठ, जगत रस डेरा ढाहीआ। मन वासना लए जीत, बुध विवेक कराईआ। होवे पाक पतित पुनीत, पापी लए तराईआ। काया करे ठांडी सीत, अग्नी तत बुझाईआ। सच दुआरयों मिले भीख, हरि ठाकर झोली आप भराईआ। सब दी बदले दर ते नीत, नीतीवान साचा राह वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, वीह सौ वीह बिक्रमी इक दरबार वखाईआ। वीह सौ वीह लग्गे दरबारा, धुर दरबारी आप लगाइंदा। भूप बणे आप निरँकारा, निरगुण निरवैर खेल वखाइंदा। ताज पहने आप निरँकारा, पंज तत ना कोए वडियाइंदा। शब्दी बोले सच जैकारा, साचा सोहला आप जणाइंदा। भेव उठाए अगम्मी धारा, सहिज सहिज जणाइंदा। वजाए शब्द अनादी सितारा, तन्दी तन्द ना कोए हिलाइंदा। सच सुणावे इक्को नाअरा, तू ही तू राग अल्लाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा प्यारा, शब्दी सुत पुरख अकाल वेख वखाइंदा। दोहां मेला एका घर बारा, घर साचा सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबारा आप समझाइंदा। सच दरबारा लाया एक, एकँकार दए वड्याईआ। पहलों दिती भगतां टेक, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। फेर धरनी धवल लई वेख, जो चार जुग बैठी ध्यान लगाईआ। फेर गुर अवतारां पीर पैगम्बरां वेखी रेख, जो आपणी रेख विच्चों प्रगटाईआ। फेर शब्दी सुता दित्ता भेत, भेव अभेद खुलाईआ। फेर निरगुण सरगुण कीता हेत, नर निरँकार दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबार इक वखाईआ। सच दरबार लगौण दी ख़ातर, हरि ख़तरा सर्ब मिटाया। लख चुरासी विच्चों करे चातर, गुरमुख चात्रिक रूप बणाया। धुर संदेसा दे के पात्र, आपणा नाम पढ़ाया। दरस दिखाए

नूरी बातन, जलवा ज़हूर जणाया। चोटी चाढ़ के आख़र, आपणा मेल मिलाया। भेव चुका करता कादर, करीम कर्म कमाया। सूरबीर बण बहादुर, शब्द राग अलाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबार आप लगाया। सच दरबार लगाए प्रभू प्रभ दीना, दीनन दए वड्याईआ। जन भगतां रंग चाढ़ भीन्ना, भिन्नड़ी रैण नाल मिलाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी पन्द्रां कत्तक ठांडा करे सीना, कलयुग अग्नी तत बुझाईआ। भगत भगवान विछोड़ा सहि सके ना जिउँ जल मीना, जल मीन लेखा दए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआर इक सुहाईआ। सच दुआर सुहाए भगवान, भगतन दए वड्याईआ। भगत दुआरा कर प्रधान, लोकमात रुशनाईआ। तिस दुआरे आए काहन, आपणी आस वखाईआ। सन्त सुहेले कर परवान, गुर चेले मेल मिलाईआ। धुर संदेसा देवे आण, करे शब्द जणाईआ। पिछला लेखा चुके जहान, अगला मार्ग पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार पीर पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव दर मंगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सुण संदेसा, सारे लैण अंगड़ाईआ। पारब्रह्म प्रभ तेरा धाम न्यारा इक्को पेखा, पेख पेख ख़ुशी मनाईआ। लोकमात वसाया आपणा देसा, भगत दुआर वज्जे वधाईआ। ग़रीब निमाणयां करें हेता, राज राजानां धक्का लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे ध्यान लगाईआ। तेरे दर लग्गा ध्यान, प्रभ इक्को ओट तकाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी तेरा नज़र आया निशान, निशाना इक्को रिहा लहराईआ। चार कुण्ट दहि दिशा ख़ाली दिसे मैदान, सूरबीर बल ना कोए धराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, अन्त तेरी आस तकाईआ। अन्त आस तक्कदे आए, जुग चौकड़ी चार। साची भिख्या मंगदे आए, सरगुण रूप बण संसार। सृष्ट सबाई दस्सदे आए, उच्ची कूक बोल पुकार। तेरे हुक्म नस्सदे आए, बण पांधी पन्ध निवार। तेरा नाउँ ढोला रटदे आए, गा गा साची वार। तेरा चरण सहारा तक्कदे आए, नेत्र नैण उठाल। आपणा कीता तेरी झोली सटदे आए, शाह पातशाह श्री भगवान। इक्को इक मंग मंगदे आए, अन्तिम मेलणा आपणे नाल। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा धुर दा वर, निरगुण आपणा दरस दिखाल। वीह सौ वीह बिक्रमी आया कत्तक, पन्द्रां थित वड्याईआ। धुर दा हुक्म सुण लओ सख़्त, हरि सतिगुर आप जणाईआ। पुरख अबिनाशी आया परत, निरगुण फेरा पाईआ। ना कोई सोग ना कोई हरख, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। मिल के सारे करो दरस, विष्न ब्रह्मा शिव नाल मिलाईआ। पीर पैगम्बर मेटो हरस, हवस ना कोए वधाईआ। गुर अवतार मेघ अमृत देवे बरस, आपणी मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल वखाईआ। गुर

अवतार पीर पैगम्बर करन निमस्कार, इक्को कूक सुणाईआ। श्री भगवान तेरा सोहणा लग्गा दरबार, लोकमात वज्जी वधाईआ। असीं सारे होए ख़बरदार, नेत्र अक्ख खुल्हाईआ। जा के वेखीए सांझा यार, जो सगला संग निभाईआ। बिन अक्खां करीए दीदार, बिन लोचण नज़री आईआ। बिन हथ्थां चरण धूढ़ी लाईए छार, बिन मस्तक सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, अन्तिम वेला गया आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर ख़ुशी मनौण, दरगाह साची वज्जी वधाईआ। रल के ढोला इक्को गौण, प्रभ ठाकर बेपरवाहीआ। सब दा लेखा आया मुकौण, पिछला हिसाब चुकाईआ। अगला मार्ग आया वखौण, पन्थ दए जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरे दर आईए चाईं चाईंआ। आओ दर दूर दुराडे, नेरन नेरा रिहा बुलाईआ। निरगुण करे निरगुण लाडे, सरगुण रूप ना कोए वखाईआ। जिस दा खेल बोध अगाधे, नाम निधान जणाईआ। सो पुरख अकाल मारे वाजे, उच्ची कूक सुणाईआ। सच दुआर आओ भाजे, श्री भगवान रिहा बुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। गुर अवतार करन तैयारी, आपणी लै अंगड़ाईआ। उठो चलीए वारो वारी, आपणी लड़ी रहे बंधाईआ। तेई अवतार करन प्यारी, प्रीती इक बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म वरताईआ।

१००७ १००७

गुर अवतार तैयार हो के, होका इक सुणाया। तेरे मिलण दे आए मौके, कड्ढ राह जणाया। सुख माणया तेरी सेजा सौ के, आसण इक वडयाया। धन्न भाग तूं मात आएयों भौं के, निरगुण आपणा फेरा पाया। असीं तेरा नाउँ गए गौं के, शब्द राग नाद सुणाया। चार जुग लँघे तेरे हो के, हौका लै लै वक्त लँघाया। सदी बीसवीं आ के पहुंचे, बेपरवाह दया कमाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर आपणे रिहा बुलाया। दर तेरे प्रभ जी आवांगे। तेरा दरस अवल्ला पावांगे। फड़ के पल्ला ख़ुशी मनावांगे। तेरा वेख दुआर महल्ला, आपणा रंग चढ़ावांगे। आदि जुगादि सचखण्ड तैनूं वेंहदे रहे इकल्ला, तेरी अक्ल कला खेल विच समावांगे। कलयुग अन्तिम प्रभ तूं वसाया इक महल्ला, महल्ला इक्को इक वडयावांगे। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरे हुक्म अन्दर आपणा कदम उठवांगे। साचा हुक्म हरि जगदीशा, एका एक जणाईआ। आओ वेखो बीस बीसा, हरि प्रभ जू धार बंधाईआ। निरगुण छत्र झुलाए सीसा, सीस जगदीश ताज टिकाईआ। वेखो आपणे सारे ख़ाली खीसा, वस्त नज़र कोए ना आईआ। किसे घर बण के बहे ना कोई जीजा, परौहणा चारी मुकी जगत लोकाईआ। नाता रह गया चाचा भतीजा, पिता पूत नाता बैठा तुड़ाईआ। श्री भगवान दयावान हो मेहरवान जन भगतां करन आया रीझां, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सच प्रीती अन्दर

१५ १५

१००८
१५

आप पतीजा, दूजी वस्त लोड़ ना कोए रखाईआ। शब्द सुत नाल लिआया पुत गीगा, गहर गम्भीर दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, संदेसा देवे बेपरवाहीआ। विष्नूं कहे उठ ब्रह्मा, चलीए बण के पांधी राहीआ। ब्रह्मा कहे शंकर उठ वेखीए आपणी माई अम्मां, जिस साडी बणत बणाईआ। गुर अवतार कहिण निरगुण नूर पेखीए श्री भगवना, जिस भगवन आपणी धार चलाईआ। भगत कहिण चलो दर्शन पाईए जिस अग्ग बुझाई थम्मां, सांतक सति कराईआ। पीर पैगम्बर कहिण चलो वेखीए परवरदिगार अन्ना, जिन भुलाई सर्ब लोकाईआ। नानक गोबिन्द कहे चलो वेखीए बिन छप्पर छन्ना, जो बैठा डेरा लाईआ। सब दे नालों पिच्छों उठया जट्ट धन्ना, उच्ची कूक रिहा जणाईआ। वेखो ग़रीब निमाणयां दुआरे प्रभ जू मन्ना, मिन्नत कढुण दी लोड़ रही ना राईआ। जिन भाग लगाया नामे कटोरी छन्ना, सो जन भगतां काया कासा रिहा बणाईआ। जिस दा हद्द ना कोई बन्ना, किनारा नज़र कोए ना आईआ। उस दा चमके इक्को चन्ना, शब्दी नूर सति रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद्दा देवे बेपरवाहीआ। सुण के सद्दा सारे उठे, उठ उठ ध्यान लगाया। ठाकर स्वामी साहिब तुठे, मेहर नज़र उठाया। जुग चौकड़ी जो रिहा लुके, कलयुग अन्तिम नूर धराया। सब दे कोलों लेखा पुच्छे, बचया कोई रहिण ना पाया। चलो चलीए नंगी पैरीं पैरीं पाओ ना कोई जुते, श्री भगवान सच्चा राह वखाया। पीर पैगम्बर भंनो टोपी हुक्के, नेज़ा नड़ी कोई ना नाल रलाया। गुर अवतार पीर पैगम्बर ज़ात पात दीन मज़्हब कोई ना पुच्छे, साक सज्जण सैण इक बणाया। नीवें हो के वेखो साडा प्रभू ना होवे गुस्से, गुस्सा साडे विच रखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल रिहा वखाया। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां विच्चों, इक रिहा ध्यान लगाईआ। श्री भगवान करे खेल जिन ऊँच कीते नीचों, नीचों ऊँच बणाईआ। उस दी सिख्या सारे सीखो, करे सच पढ़ाईआ। सच जणाए इक प्रीतो, प्रीतम प्रीत इक जणाईआ। रल मिल गाओ इक्को गीतो, गीत ढोला इक सुणाईआ। दर ते स्वाली बण के मंगो भीखो, आपणी रखो ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब नूं आपणे घर बुलाईआ। सो पुरख निरँजण तेरा वेख दरबार, विष्न ब्रह्मा शिव ख़ुशी मनाईआ। हरि पुरख निरँजण वेख तेरा विवहार, गुर अवतार रहे जस गाईआ। एकँकार वेख तेरा जैकार, पीर पैगम्बर ध्यान लगाईआ। नेत्र नैण सर्ब उग्घाड़, चारे कुण्ट वेख वखाईआ। दो जहानां विच्चों नज़री आया भगत दुआर, जिस घर हरि जू बैठा डेरा लाईआ। जिस दे अग्गे पिच्छे सज्जे खब्बे जन भगतां रख्या पहरा, बैठे ध्यान धराईआ। कोई नज़र ना आवे राह खैहड़ा, गुर अवतार पीर पैगम्बर केहड़े रस्ते आईआ। चारों कुण्ट हरिसंगत पाया घेरा, घेरया बेपरवाहीआ। जिथ्थे

कूड़ी क्रिया नज़र ना आवे कोई डेरा, जगत वासना ना कोए वखाईआ। इक्को कहिण तूं मेरा मैं तेरा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। पिता कहे मेरा पुत इक्को बथेरा, बहुते कम्म किसे ना आईआ। पुत्त कहे मेरा बाप शेरा, दो जहानां गर्ज लगाईआ। दोहां रल के खुल्ह्या कीता वेहड़ा, समझ सोच सके कोई ना राईआ। उपरों नीचे आया लाया डेरा, करे खेल बेपरवाहीआ। पहलों डुबदयां तारे बेड़ा, आपणे कंध उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, आपणा दरवाज़ा इक बणाईआ। हरि का दरवाज़ा बण गए भगत, ताकी कुण्डा नज़र कोए ना आईआ। ना कोई खाणी समझे जगत, लख चुरासी भरम भुलाईआ। सरगुण विच निरगुण आया परत, प्रतिनिध इक अख्वाईआ। जुग चौकड़ी जो रिहा फ़र्क, अन्तिम पूरा दए कराईआ। गुर अवतारो पीर पैगम्बरो इस दे उते करो कोई ना हरख, एह सब दा इक गोसाईंआ। कलयुग अन्तिम कीता तरस, कोझे कमले गले लगाईआ। चार जुग राह तक्कदी रही धरत, आपणे नैण उठाईआ। राम चन्द रो के एथे कर के गया हरख, अपणयां नैणां नीर वहाईआ। कृष्न ला के शर्त, मुखी तीर इक छुहाईआ। नानक मंग मंग के गया धड़त, धुर आपणी झोली डाहीआ। गोबिन्द कर के गया लिख्त पढ़त, नाम कलम शाहीआ। पुरख अकाल दीन दयाल करे खेल आप समरथ, समरथ आपणी कार कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप
१००६ आपणी किरपा कर, सच दरवाज़ा इक सुहाईआ। जन भगत बणाए इक दरवाज़ा, हरि दर्दी दर्द वंडाईआ। अन्दर वड़ १००६
१५ ग़रीब निवाज़ा, आपणा आसण लाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस साजण साजा, सगली आप बणाईआ। शाहो भूप १५
बण राजन राजा, नौबत नाम वजाईआ। निरगुण सरगुण रच रच काजा, दूआ सिफ़रा वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सच्ची वड्याईआ। हरि जू वेख दरवाज़ा तेरा बंद, होए सर्ब हैराना। तेरे भगतां कढ्ढी अगम्मी कंध, झुलया सच निशाना। सिफ्त ना करे बत्ती दन्द, बोले रसना ना कोई ज़बाना। जिन्हां तेरे नाल पई गंढ, तिन्हां छुटा जगत नधाना। चार जुग वेखी पैंदी ना किसे ठंड, कलयुग अन्त खेल महाना। तूं कटया रंडेपा रंड, कर मेहर श्री भगवाना। जन भगत चढ़ा के चन्द, रोशन कीता दो जहानां। असीं अग्गे हो के गाईए छन्द, राह तक्के ज़िमीं असमाना। कर किरपा सानूं एन्हां नाल गंढ, जिन्हां दर करें परवाना। चार जुग दी औध गई हंढ, अन्तिम मिटे कूड़ निशाना। जो आपणा नाम रिहों वंड, बिन हथ्थां देवें दाना। क्यों साडे वल कीती कंड, करवट बदली ना नौजवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाह पातशाह सच्चा सुल्ताना। गुर अवतारो पीर पैगम्बरो ना करो रोसा, प्रभ रुस्सयां लए मनाईआ। आदि जुगादि ना होए होछा, होछा रूप ना कोए वटाईआ। की होया नौ सौ

चुरानवे चौकड़ी युग पिच्छों जन भगतां दा सुहाया इक्को कोठा, मन्दिर आपणा डेरा लाईआ। एथे लोड़ नहीं रही पढ़न दी पोथा, बिन पढ़यां दए समझाईआ। माण दिवाए लोक परलोका, चरण कँवल दए सरनाईआ। साख्यात प्रगट हो के करे ना कोई धोखा, डुबदयां पार कराईआ। शब्द नगारे लाए चोटा, दो जहानां रिहा जगाईआ। वीह सौ वीह बिक्रमी पन्द्रां कत्तक प्रभ दे चरण रहे ना कोई खोटा, खोटे खरे आपे वेख वखाईआ। निरगुण रूप निरगुण जोता, निरगुण नूर नज़री आईआ। निरगुण बाप निरगुण पुत निरगुण अग्गे छन्नयां पोता, दादी नज़र किसे ना आईआ। पारब्रह्म आपणी खेल करन दा रख्या शौका, शौकीन हो के आया सच्चा माहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। शाह पातशाह हरि वड सुल्ताना, गुर अवतारां आप जणाइंदा। सारे उठो वेखो इक निशाना, श्री भगवान आप झुलाइंदा। साचे भगतां कर परवाना, परवानगी आपणे हथ्थ रखाइंदा। धुर दा काहन बण के काहना, हरि आपणी खेल वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तुहाढ्ढे पिच्छे आपणी सेवा लाइंदा। आपणी सेवा लगाए आप, प्रभ आपणी दया कमाईआ। उठ के चारों कुण्ट रहे झाक, कवण दुआरे रस्ता नज़री आईआ। आपणयां भगतां देवे आख, सुणो प्रेम प्यार बेपरवाहीआ। चार जुग जो मंगदे रहे दात, उह बैठे ध्यान लगाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग मेरी उह दात, नूर नूर विच्चों प्रगटाईआ। लेखा लिख दे गए कलम दवात, लोकमात जगत शाहीआ। वस्त मंगदे गए दो हाथ, झोली आपणी अग्गे डाहीआ। कवण वेला प्रभ प्रगट होवे लोकमात, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। दरस करीए साख्यात, घर साचे खुशी मनाईआ। मस्त प्याला प्याए आबेहयात, अमृत रस इक चखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची सेवा आप कमाईआ। गुर अवतारो पीर पैगम्बरो प्रभ रस्ता रिहा टोल, आपणी सोटी हथ्थ उठाईआ। कवण गुरमुख तुहाढ्ढा रस्ता देवे खोल्ह, ताकी आपणी हथ्थीं लाहीआ। जिध्धर वेखां सारे बैठे अनभोल, तिन्हां भुल्ली सर्ब लोकाईआ। प्रभ बहिण आए तेरे कोल, बैठे अंग नाल अंग लगाईआ। चार जुग तैनूं रहे टोल, जुग जुग वेस वटाईआ। तेरा पड़दा रहे फोल, फोलयां हथ्थ किसे ना आईआ। तूं वसया रिहों काया चोले ओहल, निरगुण आपणा मुख छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। जन भगतो साचे सन्तो गुरमुखो गुरसिख, इक रस्ता दयो बणाईआ। तुहाढ्ढे कोलों मंगे भिख, हरि दाता बेपरवाहीआ। जिध्धर वेखां जन भगत औण दिस, दूजा नज़र कोए ना आईआ। प्यार करना मेरा हित, प्रीती प्रीतम नाल कुड़माईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल वखाईआ।

जन भगत कहिण प्रभ वेख रंग, अचरज आप रंगाया। आदि पुरख सूरे सरबँग, लाल गुलाला रूप वटाया। कंचन रूप तेरा जीव एह चन्द, मस्तक टिक्का इक सुहाया। पुरख अकाल दीन दयाल सूहा वेस वंडी वंड, सोभा इक दर वखाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, चिट्टी धार पाई गंढु, इक इक इक आपणे रंग समाया। सूहा कहे चिट्टी धार, घट घट गई समाईआ। जिस ने एह ब्रह्म करना पसार, पीले रंग दए वड्याईआ। पीला कहे मेरा गोबिन्द मीत मुरार, नीली धारों पार कराईआ। नीला कहे मेरा अस्वार, कलयुग छाही दए धवाईआ। कलयुग काला कहे मैनूं पैंदी मार, सतिगुर पूरा डण्डा हथ्थ उठाईआ। किरपा कर मेरे सांझे यार, नीली धारों तेरा राह तकाईआ। नीले वाला कहे मैं शाह अस्वार, पीला संग रलाईआ। पीला कहे मैं चिटे दा अस्वार, अग्गे पिच्छे सज्जे खब्बे सब विच रिहा समाईआ। चिटा कहे मेरा अगला यार, सूहा रंग रंगाईआ। सूहा रंग कहे मेरा कंचन आधार, काया कच्च दए वड्याईआ। कंचन कहे मेरा लाल सरदार, जिस नाल मेरी शहिनशाहीआ। लाल रंग कहे मेरे प्रभ गुरमुखां उत्तों जावां बलिहार, जिस दिती माण वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेख वेख सारे खुशी मनाण, पन्द्रां कत्तक रुत्त सुहाईआ। कवण रस्ता लँघीए आण, मिले मेल श्री भगवान, दर्शन करीए चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बोले नाल ज़ोर, वाहवा तेरी प्रभ वड्याईआ। उठ सुण लै साचा शोर, तेरे छोहरे रहे कराईआ। आपणे हथ्थ खिच्ची डोर, तनक इक्को इक लगाईआ। दर आए तेरे कोल, घर आ के खुशी मनाईआ। फेर साडा सुणीं बोल, तैनूं सुणाईए चाईं चाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरे चरण ओट रखाईआ। गुर अवतारो पीर पैगम्बरो जन भगतां कोलों पुछदा हां, आपणा हाल सुणाईआ। तुहाढे नाल कदे ना रुस्सदा हां, एन्हां लवां मनाईआ। एन्हां नालों ना छुटदा हां, तुहाढा रंग चढ़ाईआ। दुनिया तों बहि के लुकदा हां, आपणा पल्लू छुपाईआ। एथे ओथे दो जहानां निरगुण सरगुण हो के पुछदा हां, आपणी कार कमाईआ। जे कोई लभ्भे लुकदा हां, नज़र किसे ना आईआ। जे कोई सद्दे नेड़े हो के ढुकदा हां, जन भगत दुआरे फेरा पाईआ। जे कोई पुछे शेर हो के बुक्कदा हां, धुर दा हाल सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करे प्रभ एक, एकँकार वड्डी वड्याईआ। साहिब सतिगुर देवे टेक, स्वामी आपणी दया कमाईआ। सच दुआर लैणा पेख, हरि वक्खरी कार कमाईआ। जन भगतां करे आपणा हेत, हितकारी फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दए वड्याईआ। लाल कंचन दा

खुल्हे दरवाज़ा, सत्त सफ़ैदी धार जणाईआ। करे मेहर प्रभ ग़रीब निवाज़ा, मेहरवान दया कमाईआ। विष्नूं मारे पहली वाजा, इक्को राह वखाईआ। सीस झुका आए भाजा, नट्ठे वाहो दाहीआ। पारब्रह्म दा वेख काजा, एका खुशी मनाईआ। जिस दा सिँघ बिशन बणया दरवाज़ा, विच बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। विष्नूं कहे धन्न भाग, प्रभ दिती माण वड्याईआ। रस्ता मिल्या आ मैनूं लाज, भिन्नड़ी रैण खुशी वखाईआ। भगत भगवान वेख समाज, पिछली सुध भुलाईआ। नव नौ चार पिच्छों अगम्मड़ा रवाज, हरि करता रिहा चलाईआ। जिस दा लेखा लिख्या ना किसे कलम दवात, शाही समझ कोए ना आईआ। सो करे खेल पुरख समराथ, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर आपणे रिहा बुलाईआ। विष्नूं अन्दर आ लँघ, कर चरण ध्यान। साचा वेख श्री भगवान पलँघ, जिथ्थे बैठा नौजवान। सति सरूपी चढ़या रंग, झुल्ले इक निशान। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल नौजवान। विष्नूं आ के वड़या वेहड़े, नीवीं नज़र रखाईआ। धन्न भाग प्रभ तेरे आया खेड़े, मेरा खेड़ा देणा वसाईआ। सदा वसां तेरे डेरे, चरण मिले सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लहिणा झोली पाईआ। वेख ब्रह्मे सूहा पीला रंग, तेरी चिटी धार वंड वंडाइंदा। एस दरवाज़िउँ आउणा लँघ, तैनूं राह वखाइंदा। आ के वेखणा इक अनन्द, अनन्द आपणा आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा दरवाज़ा आप खुलाइंदा। ब्रह्मे दरवाज़ा देणा खोल्ह, इन्द्र सिँघ आपणा कुण्डा लाहीआ। सतिगुर अग्गे दिसे बैठा अडोल, निरगुण दाता बेपरवाहीआ। दर दुआर ब्रह्मा जाए कोल, अग्गे औण ज़रा ना पाईआ। उच्ची कूक कहे बोल, तूं मेरा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा दए जणाईआ। ब्रह्मा अन्दर आ के गया झुक, आपणा सीस निवाया। प्रभ जू मेरा पैंडा गया मुक्क, पिछला पन्ध ना रिहा राया। बिन तेरे मिल्या कोई ना सुख, चुरासी खेल खलाया। जन्म मरन विच इक्को दुःख, विछोड़ा तेरा ना मोहे भाया। कर किरपा आपणी गोदी चुक्क, तेरे चरण ध्यान लगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। श्री भगवान हो दयाल, प्रभ आपणी दया कमाईआ। ब्रह्मे तेरी सुरत लए संभाल, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। तेरा धाम सुहाए आपणे लाल, हरि देवे माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर आपणे लए बहाईआ। काला नीला वेख दरवाज़ा, शंकर दए वड्याईआ। अग्गे पिच्छे फिरे भाजा, राह नज़र कोए ना आईआ। सट्ट त्रिसूल मारे वाजां, उच्ची कूक सुणाईआ। मेरी प्रभू रख लाजा, तेरी ओट तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र

उठाईआ। शंकर रोवे भोला नाथ, कंठ माला नज़र कोए ना आईआ। हरि जू दस्स आपणा साथ, कवण दुआरे डेरा लाईआ। ना कोई मार्ग दिसे घाट, पांधी चल चल थक्का राहीआ। तुध बिन पुछे ना कोई वात, सच्चा बणे ना कोई माहीआ। हउँ सेवक बणया अनाथ, अनाथ रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे चरण दे वड्याईआ। भोले नाथ तेरी ताकी, नीली काली धार आप खुलाइंदा। लहिणा देणा रहे ना बाकी, लेखा आपणी झोली पाइंदा। चिटी धार तेरा साथी, सिँघ पाल नज़री आइंदा। प्रभ दी मन्न के उह आखी, आपणा कुण्डा आप खुलाइंदा। अग्गे वड़ के मार झाकी, हरि जू इक्को नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे मन्दिर आप बहाइंदा। पाल सिँघ अग्गों जाए हट, आपणा कदम आप उठाईआ। शंकर चरणी जाए ढट्ठ, सीस जगदीश निवाईआ। रसना कहे मेरा तुटा हठ, धीर ना कोए धराईआ। जिउँ भावे तिउँ लैणा रख, प्रभ तेरे हथ्थ वड्याईआ। कर खेल पुरख समरथ, साची सिख्या दए दृढ़ाईआ। तेरे धाम गुरमुख जाए वस, शाह पातशाह आप सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव अन्दर लँघण, आपणा पन्ध मुकाईआ। चरण प्रीती इक्को मंगण, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। तेरा प्रभू मिले अनन्दन, अनन्द इक्को इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लहिणा दे चुकाईआ। पिछला लहिणा चुके अन्त, हरि सतिगुर आप चुकाइंदा। अग्गे बणाए आपणी बणत, साचा घाड़त आप घड़ाइंदा। जुग चौकड़ी खेले खेल अनन्त, अन्त कल आपणी आप प्रगटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आप आपणे घर वसाइंदा। साचा घर वसा एक, एकँकार दए वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बरां सिधी बख्शी आपणी टेक, चरण कँवल मिले सरनाईआ। आपणी धारों आपणे नेत्र लए पेख, नैण नैण नाल मिलाईआ। सति स्वामी कर के हेत, सतिगुर साचे दर बहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर हरि चरण सच्चा दरवाज़ा, धुरदरगाही आप खुलाईआ। जो इस दर आवे भाजा, तिस अन्दर लए लँघाईआ। अन्दर वाड़ वखाए काजा, हरि करता भेव चुकाईआ। जिस दी सजदा कर पढ़दे रहे निमाज़ा, सो महिबूब नज़री आईआ। जिस दा हुजरा सुहौदे रहे महिराबा, सो महिफ़ल इक लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। आओ नेड़े वसो कोल, प्रभ अन्दर लए लँघाईआ। भगत दरवाज़ा दित्ता खोल्ह, तिन्नां तिन्ने कूटां दए वड्याईआ। नौ दुआरे तुहाढी रचना वज्जया ढोल, सज्जे खब्बे अग्गे दए वखाईआ। पिच्छे बैठ प्रभू अडोल, भगत दुआर दित्ता सुहाईआ। झूठ सच रिहा वरोल, नाम मधाणा इक्को

१०१३ १५

पाईआ। धुर दे कंडे तोले तोल, तराज़ू आपणे हथ्थ उठाईआ। बीस साल स्नेहड़ा देंदा रिहा कोई ना रहे अनभोल, अन्तिम लेखा मंगे बेपरवाहीआ। सब दी गठड़ी लए फोल, चार जुग गंढु खुल्हाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आवण हौली हौली, इक दूजे नाल सलाह पकाईआ। श्री भगवान सच दुआरा रिहा खोली, ख़ालक ख़लक रूप वटाईआ। जन भगतां जणाए आपणी बोली, दूजी करे ना कोए पढ़ाईआ। सृष्ट सबाई जिस ने आप वरोली, नाम मधाण रिड़के लोकाईआ। जोत जगाए उपर धौली, धरत धवल वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म इक सुणाईआ। तेई अवतार आ के लागे, वेखो बैठे सीस झुकाईआ। इक दूजे नूं मारन वाजे, पुछ गिछ रहे जणाईआ। अन्दर वड़ीए ग़रीब निवाज़े, आपणा सीस निवाईआ। अन्तिम साडी रखे लाजे, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, नेत्र नैण नैण उठाईआ। नेत्र नैण हरि उठा, आपणा ध्यान लगाया। तेई अवतार वेखे दर दरवाज़े बैठे आ, अक्ख सके ना कोए उठाया। श्री भगवान इशारे नाल रिहा समझा, लँघो अग्गे वाहो दाहया। आपणी करनी दयो वखा, जो लोकमात खेल रचाया। जो राम राम गया समझा, राम हर घट नज़र किसे ना आया। जो कृष्न काहन गया वखा, सो काहन गोपी सखी ना कोई हंढाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लेखा रिहा जणाया। तेई अवतार कहिण इक, इक्को वार जणाईआ। तेरी सिख्या तैथों सिख, प्रभ करी मात पढ़ाईआ। तेरे दर तों लै के भिख, भिच्छया लोकमात वरताईआ। तेरा दुआरा तेरे दर लेख, तेरी सिफ्त सालाहीआ। तेरे नाल करना दस्सया हित, तेरी प्रीती इक वधाईआ। बिन तेरे अन्त कोई ना जाणे भेत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वेख खेल आप कर, साडी चले ना कोए चतुराईआ। तेई कहिण अवतार, आपणा भेव चुकाईआ। असीं दस्सया तेरा विहार, विवहारी तेरी धार समझाईआ। जुग चौकड़ी बोल जैकार, तेरा नाम नाद शनवाईआ। कलयुग अन्तिम साडे दस्सयां सारे गए हार, भरमे भुली सर्ब लोकाईआ। मन्दिर शिवदुआले मढ्ढ धूंआँधार, साचा नूर ना कोए रुशनाईआ। भय भउ करे ना कोई जीव गंवार, मनमति ना कोए मिटाईआ। कलयुग अन्तिम सदी बीसवीं असीं गए हार, जित नज़र कोए ना आईआ। तेरा कीता तेरा दित्ता पुरख अकाल तेरी झोली दित्ता डार, आपणा खैहड़ा ल्या छुडाईआ। तूं जाण आपणे नाल संसार, तेरा संसार तेरी झोली पाईआ। सानूं आपणा बख्श इक दीदार, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। असीं गाईए तेरी वार, नाम सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साडा लहिणा दे चुकाईआ। अग्गे आओ ईसा मूसा मुहम्मद नाल, नालश आपणी नाल तकाईआ। नेत्र वेखो जो मार्ग आए सिखाल,

१०१४
१५

१०१५ १०१५

१५ १५

कलमा नबी कर पढ़ाईआ। रसूल दिसे ना कोई दलाल, हकीकत समझे ना कोए लोकाईआ। चौदा लोक होए बेहाल, चारों कुण्ट रही कुरलाईआ। शरअ छुरी कीता हलाल, तिक्खी धार रही वखाईआ। सब दे सिर ते कूके काल, काल नगारा रिहा वजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, आपणा इस्म दए समझाईआ। पीर पैगम्बर वेखो जो दस्सया सजदा, लोकमात सलाम जणाईआ। चार कुण्ट रिहा कोई ना बरदा, बंदगी सच ना कोए कमाईआ। आपणी करनी कलयुग जीव मरदा, साची वस्त हथ्थ ना कोए रखाईआ। कूड़ी क्रिया कूड़े पौड़े चढ़दा, चढ़ चढ़ वेखे जगत लोकाईआ। साचे हुजरे कोई ना वड़दा, दरस नूर नजर कोई ना पाईआ। चौदां सदीआं मुहम्मद की कुछ रिहा करदा, आपणा लेखा दे जणाईआ। ईसा दस्से खेल आपणा बरदा, सेवक सेव कमाईआ। वेख खेल नारी नर दा, विभचार करे लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा मंग मंगाईआ। मूसा कहे मेरी होई मुश्किल, मुशतबा नज़री आईआ। ईसा कहे मेरी नज़र ना आए किसे शक्ल, तेरा ज़हूर ना कोए रुशनाईआ। सब दी मारी गई अक्ल, आकल बैठे मुख भवाईआ। तेरे हुक्म कीते बेअक्ल, बैतल रूप ना कोए वटाईआ। बेड़ा लग्गे ना कोई पत्तण, मँझधार रहे रुढ़ाईआ। सब नूं भुल्लया आपणा वतन, याद आवे ना सच्चा माहीआ। कूड़ा होया हीरा रतन, अन्त कीमत ना कोए पाईआ। मैं दस्स के गया बथेरा यतन, फाँसी आपणे गल लटकाईआ। अन्तिम आए पुरख समरथन, परवरदिगार फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। मुहम्मद कहे परवरदिगार तेरा कलाम, मैं कलमा आप जणाया। मैं तैनूं कर सलाम, सजदा फेर जगत सिखाया। अलिफ़ ये लिख कुरान, कलम शाही मेल मिलाया। तैनूं मन्न इक अमाम, इस्म आअज़म इक समझाया। दर बण तेरा गुलाम, साची सेव कमाया। दे के आया इक पैग़ाम, धुर संदेसा मात सुणाया। सदी चौधवीं कोई ना करे हराम, हरामखोर रूप ना कोए धराया। दरोही मेरी सारे भुल्ल गए कलाम, मेरा कलमा याद किसे ना आया। मैं तेरे अग्गे देवां की ब्यान, मेरी उम्मत कर के सुंनत सति रूप ना कोए धराया। चारों कुण्ट कूड़ प्रधान, सच रूप ना कोए वखाया। मैनूं अन्तिम आई हाण, मेरा बल कम्म किसे ना आया। प्रभ मैनूं दित्ता आपणी झोली पा लै दान, मेरा खैहड़ा दे छुडाया। तेरा इस्म तेरा इस्लाम, तेरा आअज़म नूर रुशनाया। तेरा सिदक तेरा सलाम, परवरदिगार तेरी झोली पाया। तेरा मज़्हब तेरा ईमान, तेरा दीन तेरे हथ्थ फड़ाया। मैं इक्को वार करां सलाम, सदी चौधवीं सीस झुकाया। अग्गे लेखा तेरे हथ्थ तमाम, मेरा हुक्म रिहा ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे मंग मंगाया। परवरदिगार कहे बोल, कलमा इक जणाईआ। वेख मुहम्मद

नेत्र खोल्, साहिब सुल्तान रिहा जगाईआ। तेरी उम्मत कूड़ी क्रिया वजाए ढोल, ढोला सच ना कोए सुणाईआ। मक्का काअबा जिन्हां पिच्छे आएयों खोल्, सो हाजी बण के हज्ज ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तेरा लहिणा आपणी झोली पाईआ। आपणी झोली पा लै लहिणा, परवरदिगार मेरे सुल्ताना। इक्को मन्नां तेरा कहिणा, दूजा होर ना कोई ख्याला। तेरे चरणां मिले बहिणा, होवे मेरा राह सुखाला। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, किरपा कर वड मेहरवाना। मेहरवान किरपा कर करे बख्शीश, बख्शश आपणी आप जणाईआ। तेरा कलमा झोली पई हदीस, हज़रत आपणे लेखे लाईआ। खुशी मनाई बीस बीस, बिस्तरा सब दा गोल कराईआ। तुहाड्डा निशाना होया ठीक, ठीकर कूड़े भन्न वखाईआ। सदी सदीवी आई बीस, हरि ताकत आपणी लए प्रगटाईआ। अग्गे मार्ग लाए ठीक, लेखा सब दा दए जणाईआ। हिंदू मुस्लिम सिख ईसाई बणाए इक प्रीत, नाता इक्को इक जणाईआ। सब दी रसना गाए इक्को गीत, रसना रस इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। ईसा मूसा मुहम्मद बैठे झुक, आपणा सीस निवाया। भगत अठारां नेड़े आए ढुक, कबीर जुलाहा ध्यान लगाया। धू्र प्रहिलाद कहे प्रभ सानूं पुच्छ, दर तेरे सीस निवाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहर नज़र इक उठाया। अठारां भगत आओ दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। तुहाड्डा पूरा होया वर, करे आप बेपरवाहीआ। साचे भगतां बाहों लओ फड़, आप आपणा मेल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला लहिणा रिहा मुकाईआ। कबीर कहे धन्न वड भाग, वड भागी हरि पाया। तेरे घर जगया चिराग़, गुरमुख नज़री आया। जिन्हां धोते दुरमति मैल दाग़, आपणा रंग चढ़ाया। मेल मिलाया बण के कन्त सुहाग, साची नारी रूप वटाया। सच प्रीती गई लाग, इक्को घर सुहाया। एन्हां नाल सानूं मारी आवाज़, सगला संग बणाया। लँघ के तेरा दुआर वेख्या गुरू महाराज, महिमां तेरी अकथ वडयाया। तेरा बेड़ा भरया वेख जहाज़, सारे बैठे सीस निवाया। तेरे सीस ते तक्क के ताज, तख्ता ज़िमीं असमान रहे नीर वहाया। तेरा वेख सच्चा समाज, साडा पिछला भरम गंवाया। तेरा सोहणा सच्चा काज, चार वरनां रंग रंगाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दे दे इक वर, जन भगतां पल्लू दे बंधाया। भगतां नाल पल्लू बंध, बंदगी इक जणाईआ। सारे कहो धन्न धन्न, धन्न पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। भगतां नाल भगत गए मन्न, अठारां चौका वंड वंडाईआ। अठारां चार बहत्तर गए बण, श्री भगवान वंड वंडाईआ। बहत्तर कहिण दो विच्चों दे भन्न, मूर्ख अन्न्हे साडे विच रहिण ना पाईआ। दो घट सत्तर चढ़न चन्न, चन्द चांदनी नूर रुशनाईआ। सत्तर कहिण चार जुग दे चारे बन्न्ह

कन्न, चारे होर नाल मिलाईआ। चुहत्तर दे आपणा धन, धन्न तेरी वड्याईआ। पंजां कोई ना लावे संन्ह, पंज पहरेदार अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। भगत सारे गए मिल, हरि भगतां विच समाईआ। ना कोई मनसा रही दिल, दलील नज़र कोए ना आईआ। ना कोई पड़दा रिहा सिल, द्वैती रंग ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। गुर दस आए अग्गे, नानक गोबिन्द वज्जी वधाईआ। एका जोती नूर जगे, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। शब्द अनाद धुन वज्जे, दो जहान होए शनवाईआ। वेखे खेल सूरा सरबग्गे, शाह पातशाह बेपरवाहीआ। नानक निरगुण धार कहे मैं लिख के आया पंचम पंजे, पंजां मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, पंचम आपणे दर मिलाईआ। नानक निरगुण कहे पंच परवान, पंजां रंग रंगाया। पंच होण राज राजान, शाह पातशाह दए वडयाया। पंच दर तेरे प्रधान, पंचम हुक्म इक वरताया। पंच सोहण दर दरबान, दरवेशी रूप वटाया। पंजां मिल्या इक भगवान, सदी वीहवीं नज़री आया। एन्हां सद वड मेहरवान, घर आपणे लए मिलाया। सचखण्ड बैठे कर ध्यान, तेरा राह तकाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म वरताया। श्री भगवान हो दयाल, आपणी खुशी वखाईआ। हुक्म देवे उठ सिँघ पाल, तेरा वेला गया आईआ। सवरन सिँघ लैणा नाल, आपणी उंगली लाईआ। बाला छोटा आप उठाल, मनजीते लैणा उठाईआ। जगदीशा वेख होए खुशहाल, खुशीआं विच समाईआ। आपणी अंगड़ाई लए गुरदयाल, बल बावन खुशी मनाईआ। धन्न भाग सच दुआर सोहे सच्ची धर्मसाल, प्रभ भगतां दए वड्याईआ। ओथे वेखां शाह कंगाल, इक्को दुआरे सोभा पाईआ। जिन्हां दा नानक करे हल्ल स्वाल, भिच्छया इक्को इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वड्याईआ। पंच परवाने गए उठ, हरि पंचम आप उठाया। पुरख अबिनाशी आपे तुठ, सच संदेसा शब्द सुणाया। नेड़े आ के वेखो झुक, प्रभ आपणा खेल रचाया। गुर अवतारां कोलों लओ पुच्छ, सच संदेसा रिहा जणाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआर इक वखाया। पंजे उठण करन तैयारी, आपणा राह तकाईआ। चलो मिलीए नर नरायण निरँकारी, जोत सरूपी जोत नज़री आईआ। जिस दा खुल्ल्हा धर्म दुआरी, सचखण्ड रूप वटाईआ। जगे जोत अपर अपारी, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। उस दे चरण करीए निमस्कारी, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। साचा बोल इक जैकारी, तू ही तू ही नाम ध्याईआ। जा के दस्सीए संगत सारी, हरिसंगत इक समझाईआ। वेखो निक्कयां वढुयां मिली सरदारी, सचखण्ड साचे खुशी मनाईआ। उच्च अटल इक अटारी, प्रभ दिती माण वड्याईआ। ना कोई दुःख ना बीमारी, संसा रोग नज़र

ना आईआ। ना कोई रात दिवस ना कोई घड़ी पल पनहारी, ना कोई पुरख ना कोई नारी, सेज सुहञ्जणी ना कोई हंढ्ढाईआ। ना कोई पुत्तर धी करे प्यारी, ना कोई मात गोद सुहाईआ। ना कोई चन्द सूरज अवतारी, दीवा बाती ना कोए टिकाईआ। ना कोई जीव दिसे संसारी, विभचार ना कोए कमाईआ। ना कोई ठग्ग चोर यारी, कूड़ा हट्ट ना कोए चलाईआ। जिध्धर वेखीए जिध्धर तक्कीए नज़र आए एकँकारी, निरगुण निरवैर बेपरवाहीआ। तुहाढ्ढे वेंहदयां साडे नाल लगाई यारी, फड़ के उंगलों घर लै जाईआ। वेखो इन्द्र रोवे नेत्र ज़ारी, करोड़ तेतीसा नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पंजां देवे माण वड्याईआ। पंच कहिण प्रभू असीं तेरे प्यारे, सचखण्ड बैठे ध्यान लगाईआ। बिन अक्खां वेखीए सच नज़ारे, तेरा नैण इक तकाईआ। कलयुग अन्तिम तेरे सोहण सच दुआरे, जिस घर बैठा डेरा लाईआ। चल के आए गुर अवतारे, पीर पैगम्बर फेरा पाईआ। खुल्हे वेहड़े आपणे चरणां लए बहाले, देवें माण वड्याईआ। इशारयां नाल आप उठाले, धुर दी धार इक प्रगटाईआ। सब नूं पुछें पिछले अहिवाले, हालत सब दी वेख वखाईआ। अन्तिम सारे बणे कंगाले, तेरे अग्गे सीस झुकाईआ। साडे निकले मात दीवाले, दीवानी दाअवा ख़ारज दे कराईआ। तेरी ओट इक गोपाले, गोबिन्द तेरी सच सरनाईआ। तेरी अदालत वेख होए निहाले, घर खुशी खुशी मनाईआ। साडे पूरे करीं सवाले, जो बैठे ध्यान लगाईआ। मिले माण सिँघ पाले, प्रेम प्रीती सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा हुक्म आप वरताईआ। पंच परवाने आ गए घर, पंजां मिले वड्याईआ। नानक निरगुण देवे वर, हरि जू मेल मिलाईआ। दोहां जोड़ा गया जुड़, अबिनाशी करता वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार वड्याईआ। नानक कहे गोबिन्द दुलार, जोती जोत जोत रूप वटाईआ। गोबिन्द कहे पुरख अकाल, पिता इक अख्वाईआ। पुरख अकाल कहे मेरा सुत दुलार, गोबिन्द नज़री आईआ। गोबिन्द कहे मेरा नाता विच संसार, पंज तत काया जगत हंढ्ढाईआ। पंज तत कहे मैं होणा छार, थिर कोए रहिण ना पाईआ। छार कहे मैं करां प्यार, प्रभ चरण धूढ़ी टिक्का लाईआ। धूढ़ कहे मैं वेखां धार, आदर्श इक वखाईआ। निरगुण निरगुण सांचे देवां ढाल, आपणी भट्ठी इक तपाईआ। गोबिन्द विच्चों गोबिन्द दयां निकाल, सो गोबिन्द शब्द रूप अख्वाईआ। गोबिन्द पिता गोबिन्द बणे बाल, गोबिन्द गोबिन्द आप सहाईआ। गोबिन्द रुत्त गोबिन्द वेखे आण, गोबिन्द फुल फुलवाड़ी आप महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा लेखे लाईआ। गोबिन्द कहे गोबिन्द सुत, शब्द गोबिन्द रूप वटाईआ। कलयुग अन्तिम लैणा पुछ, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। तेरे दुआरे बैठे झुक, नेत्र नैण ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा

सच्चा वर, दर तेरे वड्याईआ। शब्द कहे मेरा गोबिन्द रूप, गोबिन्द मेरे रंग समाईआ। गोबिन्द कहे मैं सति सरूप, पारब्रह्म विच लुकाईआ। पारब्रह्म कहे मेरा इक्को पूत, सुत दुलारा नज़री आईआ। सुत कहे मैं चारों कुण्ट, हरि सतिगुर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमाईआ। गोबिन्द कहे मेरा गोबिन्द भगवान, तेरे हथ्थ वड्याईआ। सत्थर उते मंगया दान, यारड़ा सेज हंढ्ढाईआ । कवण वेला मेरी आसा करें परवान, आपणे लेखे लाईआ। तूं ठाकर हो के दित्ता दान, इक्को ढय्या विच रखाईआ। बीस बीसा हो प्रधान, तेरा लहिणा झोली पाईआ। सम्बल सोहे इक मकान, साचे मन्दिर दए वड्याईआ। शब्दी डंक वजाए आण, दो जहानां करे शनवाईआ। साचे भगतां कर पहचान, गुरमुख तेरे नाल मिलाईआ। चार जुग दा मेट निशान, सतिजुग तेरी धार बंधाईआ। नव खण्ड पृथ्मी दे ज्ञान, सत्त दीप दए समझाईआ। सृष्ट सबाई पुरख अकाल, इक्को इष्ट दए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वड्याईआ। गोबिन्द कहे प्रभ मेरे ठाकर, तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग वेख डूंग्घा सागर, तेरी ओट तकाईआ। तुध बिन दए ना कोई आदर, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। ज़ुल्म ज़ालम ते लेखे लाया तेग़ बहादर, तेग़ शमशीर तेरा नाम नज़री आईआ। गोबिन्द बणया प्रेम सौदागर, साचा वणज हट्ट चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सो धार तलवार मेरे हथ्थ फड़ाईआ। श्री भगवान कीता कौल, गोबिन्द आप जणाया। कलयुग अन्तिम उपर धौल, तेरे हथ्थ फड़ाया। करां खेल इक अनभोल, समझ सके कोई ना राया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवां माण वड्याईआ। गोबिन्द सुण धुर फ़रमान, श्री भगवान आप जणाईआ। जेहड़ी तलवार विच्चों निकली मात म्यान, जगत जलाद हथ्थ उठाईआ। जो तेग़ बहादर सीस सोही किरपान, तिस देवे माण वड्याईआ। ओस किरपान दा रहे निशान, तेरे हथ्थ दए फड़ाईआ। सदी बीसवीं सच निशान, शाह सुल्तान दए वखाईआ। राष्ट्रपति बणे नादान, धुर दी समझ कोए ना आईआ। एसे कर के खिच्ची विच्चों म्यान, नंगी कर के लै के गया आईआ। जिस ने कलयुग मेटणा अन्त निशान, सब दी जड़ देवे उखड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक तलवार जिस तेग़ बहादर कीता प्यार, तेग़ बहादर खूनी धार गुरमुखां रंग चढ़ाईआ। उह धार तलवार ना कोई खण्डा, जो राजिन्द्र प्रसाद फड़ाईआ। उह खेल प्रभ ब्रह्मण्डा, पारब्रह्म आप कराईआ। सतिगुर निक्कीआं निक्कीआं कदे करे ना वंडां, आपणी हद्द ना किसे जणाईआ। जिस दा सब तों उच्चा डण्डा, गुरमुख पौड़े ओस रखाईआ। जिस ने आदि जुगादि जुग चौकड़ी शाह सुल्तानां वढ्ढणीआ कंडां, तिस उपर सोहँ लेख लिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि,

१०१६
१५

आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप कराईआ। अठ दस दी इक तलवार, हथ्थ जगत राजान वखाईआ। कोई भेव ना पावे संसार, समझ सके ना कोई राईआ। तिस मिले माण महान, जो तेग़ बहादर सीस टिकाईआ। तेग़ बहादर नाल छोह के होई परवान, मिली माण वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सो सति किरपान वीह सौ वीह बिक्रमी कर ध्यान, शब्दी खण्डा सूरा सरबँगा गोबिन्द हथ्थ फड़ाईआ। उठ गोबिन्द लै लै खण्डा, हरि खड़ग धार वखाइंदा। जगत जहान वेख अन्धा, तेरा नूर नज़र किसे ना आइंदा। जिस भुला के बंदीख़ाने पाया बंदा, सो तेरी बंदगी करन कोई ना आइंदा। गुरदर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ साध सन्त तेरे नाम दा इकट्ठा करदे चन्दा, तेरा चन्द नूर ना कोए चमकाइंदा। तेरा प्रेम प्यार तज के कूड़ी वासना कलयुग जीव होया गंदा, कूड़ी क्रिया बाहर ना कोए कढ्ढाइंदा। हउमे हंगता वज्जा जंदा, बिन भगतां दरवाज़ा कोई ना खोल वखाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा दोहां मिल के गाया छन्दा, पट्टी नानक नाम पढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, चार युग दा पिछला लहिणा आपणी झोली पाइंदा। पिछला लहिणा झोली पा, शब्द गोबिन्द सच सुणाईआ। निहकर्मी आपणे मार्ग ला, दोहां दए समझाईआ। शब्दी गुर इक बणा, गोबिन्द रूप वटाईआ। गोबिन्द खण्डा नाम चमका, ब्रह्मण्डां दए डराईआ।
१०२० साची वंडा इक वंडा, लख चुरासी वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा सब दी झोली पाईआ। कलयुग लहिणा झोली पाउँदा ए। पावणहार पिछला लेखा मूल मुकाउँदा ए। वेखणहार सर्ब संसार, वीह सौ वीह बिक्रमी हुक्म अलाउँदा ए। पन्द्रां कत्तक कर उज्यार, पंज प्यारे नाल मिलाउँदा ए। सचखण्ड निवासी एकँकार, राष्ट्रपति नैण नीर वहाउँदा ए। राजिन्द्र रोवे ज़ारो ज़ार, राज राजनां कोलों हरि जू आपणा मुख छुपाउँदा ए। गोबिन्द देवे इक सहार, धुर दी वंडा आप वंडाउँदा ए। जन भगतां कर प्यार, साचा छन्दा गीत सुणाउँदा ए। सोहँ सति धुनकार, सति जोत दे नाल मिलाउँदा ए। परम पुरख एकँकार, वरन गोत दा डेरा ढाउँदा ए। दीन मज़्ह़ब पार किनार, चार वरनां इक्को घर बहाउँदा ए। महल अटल कर उज्यार, भगत भगवन्त वेख वखाउँदा ए। बंद ताकी खोल्ह कवाड़, सन्त साजण आप जगाउँदा ए। आलस निंद्रा ना कोए हुलार, गुरमुख गुर गुर गोद सुहाउँदा ए। देवे प्रेम हुलार, गुरसिख साची बूझ बुझाउँदा ए। कराए वणज व्यपार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग तेरा सच विहार चलाउँदा ए। सतिजुग विहार चले प्रभ सति, सति सतिवादी आप जणाईआ। इक्की दरबारी लए रख, एकँकार वड्डी वड्याईआ। एन्हां पिच्छे हरिसंगत पूरा देवे हक़, मेहर नज़र उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल १०२०

सच्चा शहिनशाहीआ। इकीआं सीस बद्धी दस्तार, हरि दस्ता इक बणाया। वेखे आप शाह अस्वार, शहिनशाह आपणा फेरा पाया। किला बणी अगम्मी दीवार, हरिजन घेरा इक रखाया। कोई अन्दर ना आवे बाहर, बाहरों अन्दर ना कोए लँघाया। जिस हुक्म करे करतार, सो दर्शन सच्चा पाया। विष्न ब्रह्मा शिव होए बलिहार, प्रभ लेखा अन्त चुकाया। तेई अवतार करन निमस्कार, साडा पल्लू गंढु वखाया। ईसा मूसा मुहम्मद कर दीदार, लख लख शुकर रहे मनाया। नानक निरगुण बोल जैकार, पंचम लेखा रहे जणाया। गोबिन्द बोल इक अकाल, साचा सोहला रिहा गाया। किरपा कर दीन दयाल, सिर आपणा हथ्थ टिकाया। उठ वेख मेरे लाल, तैनूं लाल दयां जणाया। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जो घालां आए घाल, तिन्नां आपणे घर बहाया। एथे ओथे दो जहान वज्जे ताल, अद्धविचकार ना कोए तुड़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, लोकमात भगत दुआर आप सुहाया। भगत दुआरा लोकमात, प्रभ आपणा आप सुहाईआ। पहली वार लेखा लिख के नाल कलम दवात, जगत शहादत इक जणाईआ। सतिजुग साची दे के दात, वस्त अमोलक आप वरताईआ। जन भगतां अन्तिम पत लए राख, निरगुण मिले सहिज सुभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवणहार वड्याईआ। पन्द्रां कत्तक ना कोई कर्म, निहकर्मी कर्म कमाइंदा। सृष्ट सबाई भुलेखा भरम, हरि का भेव किसे ना आइंदा। सृष्ट सबाई मरन जन्म, जन्म मरन खेल खलाइंदा। गुरमुख विरले सज्जण तरन, जिस जन आपणी दया कमाइंदा। जिस वेले प्रभ दा लड़ फड़न, पल्लू जगत छुडाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां आप जणाइंदा। जन भगत जगत विच्चों जाए मर, जिस वेले सतिगुर दर्शन पाईआ। मर के मरन दा चुक्के डर, घर इक्को नज़री आईआ। समरथ स्वामी पल्लू लए फड़, गुरमुख आपणे नाल रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जग मृत्यु रूप जणाईआ। भगत जन जग जाणो मुर्दा, मरी सर्ब लोकाईआ। बिन सतिगुर जो फिरदा तुरदा, पंज तत कम्म किसे ना आईआ। अग्गे पिच्छे वेखो बेड़ा रुढ़दा, श्री भगवान रिहा रुढ़ाईआ। जो पन्द्रां कत्तक श्री भगवान नाल जुड़दा, तिस जोड़ी बणे बेपरवाहीआ। एह जगत जहान खेड चक्की पुड़ दा, जग पीसे जगत लोकाईआ। जिस ने भेव पाया सतिगुर गुर दा, तिस छुट्टी जगत लोकाईआ। तिस अन्दर फुरना इक्को फुरदा, प्रभ मिले बेपरवाहीआ। जगत माण वड्याई वेख कदे ना झुरदा, दुःख सुख रूप समाईआ। एह लहिणा देणा चुक्के अनन्द पुर दा, पुर अनन्द आप जणाईआ। पन्द्रां कत्तक लेखा धुर दा, हरि मिलणी आप कराईआ। लेखा चुक्कया ताल सुर दा, सुरती शब्द विच समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां इकट्ठे

१०२२
१५

करके पहली वार आपणा मेल मिलाईआ। पन्द्रां कत्तक दा भेव अनोखा, अक्ल कला जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा तक्कदे रहे मौका, चार जुग ध्यान लगाईआ। ओस नूं समझणा हुण नहीं सौखा, भेव अभेद समझ कोए ना आईआ। जो प्रभ इक वार ला के ढौंका, गोबिन्द ढय्ये विच रखाईआ। जे कोई लभ्भे पटणा पौंटा, नज़री नज़र किसे ना आईआ। जे कोई आपणा काया मन्दिर कर के साफ़ रखे चौंका, घर आ के बहे बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन देवे माण वड्याईआ। पन्द्रां कत्तक रिहा तक्क, तक्कणी इक भवाईआ। जिस ने मेरे लेखे लाई रत्त, उस दी रुत्त दयां समझाईआ। दो नीहां हेठां दित्ते दब्ब, भगत दुआरे मिले वड्याईआ। दोहां प्रगट करां झब्ब, छब्बी पोह रुत्त सुहाईआ। इक्की इकट्ठे लवां सद्द, जिन्हां सिर दस्तार बंधाईआ। अन्तर दे के अमृत मध, इक्को रस दयां वखाईआ। जन भगत सदावां साची यद, साचे बंस दयां वड्याईआ। गोबिन्द सुत रहिण ना देवां अड्ड, गुरमुख उंगली दयां फड़ाईआ। जिन्हां तुहाढ्ढे पिच्छे लेखे लाई रत मास नाड़ी हड्ड, तिन्हां हौला भार दयां वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा लेखा आप कराईआ। पन्द्रां कत्तक सदी बीस, हरि सतिगुर धार चलाईआ। जिस दी कोई ना करे रीस, नकली रूप ना कोए वटाईआ। जन भगतां आत्म रिहा जीत, जित हार आपणी झोली पाईआ। सचखण्ड दी साची रीत, सतिजुग साचा राह वखाईआ। प्रभ मिले बिन मन्दिर मसीत, शिवदुआला मट्ठ ना कोए जणाईआ। रल मिल गाओ इक्को गीत, दीन मज़्हब ना कोए लड़ाईआ। ऊँच नीच करो सच प्रीत, छोटा वड्डा ना कोए अख्वाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां होए सहाईआ। जन भगत कहिण प्रभ की वेख्या तेरा, तेरी समझ कोई ना आईआ। पन्द्रां कत्तक सारे कहिन्दे रहे आए नेड़ा, रसना जिह्वा गीत सुणाईआ। सृष्ट सबाई उजड़ना खेड़ा, वसदा कोई नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सब दा संसा दए चुकाईआ। सुणो भगतो ला कर कन्न, हरि करता आप जणाइंदा। जिन्हां प्रभ दा कहिणा ल्या मन्न, तिन्हां मनसा पूर कराइंदा। बाकी सृष्ट सबाई देवे डंन, हरि डण्डा हथ्थ उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप समझाइंदा। साची किरपा हरी करनी, वीह साल करी जणाईआ। जो ना आए प्रभ दी सरनी, बैठे मुख भवाईआ। सो सृष्टी मरी आपणी मरनी, अग्गे लेखा कोए नज़र ना आईआ। सो उतरे पार जिन्हां प्रभ किरपा आपणी करनी, हरि करता दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जीउदे जीउदे गुरमुख लए जगाईआ। सो गुरमुख सदा जीवण, मिले माण वड्याईआ। अमृत रस साचा पीवण, तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। प्रभ सरनाई थीवण, घोली घोल घुमाईआ। दोए जोड़

नेत्र नैणां नीवण, हँकारी रूप ना कोए वखाईआ। साचा बीज इक्को बीवण, प्रेम प्रीती हल चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत लए तराईआ। जगत जहान जाणो मरया, जिस भुल्लया बेपरवाहीआ। अग्गे मिले ना कोई दरया, एथे होवे ना कोए सहाईआ। अग्नी हवन जाणो सड़या, मढ़ी गोर दबाईआ। जूनी विच्चों निकले जूनी वड़या, दुःख रोग ना कोए मिटाईआ। माणस जन्म जिस ने हरया, हरि जू गया भुलाईआ। जन भगतो सो जाणो मरया, जिस भुल्लया बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मुरदे जीउदे दोवें आप जणाईआ। सो गुरमुख जीऊँदा जग, जिस मिले जगत वड्याईआ। सतिगुर मेटे अग्नी अग्ग, कूड़ी तृष्ना दए गंवाईआ। घर कराए आपणा हज्ज, हुजरे साचे सोभा पाईआ। मन्दिर वखाए अगम्मी हद्द, दर दरवाज़ा इक खुल्हाईआ। दरस कराए रज्ज रज्ज, दीद ईद चन्द रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, सो गुरमुख जाए बच, राए धर्म ना दए सज़ाईआ। जगत जहान वेखो डुब्बदा, मझधार पई लोकाईआ। काया सूरज वेखो छुपदा, रैण अन्धेरी छाईआ। एथे ओथे कोई ना पुछदा, जिन्हां भुल्लया बेपरवाहीआ। नाता तुट्टे प्यो पुत दा, बिनां पिता पुरख अकाल संग ना कोए निभाईआ। एह खेल पुरख उलटे रुख़ दा, मात गर्भ अग्नी हवन तपाईआ। जो सतिगुर सरनाई झुकदा, तिस आपणे गले लगाईआ। उस दा जीऊँदयां ही पन्ध मुकदा, मरयां जीवण ना कोए रखाईआ। श्री भगवान अन्तिम इक्को पुछदा, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, पन्द्रां कत्तक शाह पातशाह बणे सच्चा शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि बण के मालक, पन्द्रां कत्तक दए वड्याईआ। सृष्ट सबाई बण के ख़ालक, हरि ख़लकत वेख वखाईआ। निरगुण हो के आया सालस, सालसी सच कमाईआ। वेखो जन भगत कढ्ढे ख़ालस, ख़ालस ख़ालसा रूप बणाईआ। वीहवीं सदी बणा के बालक, पिता पूत गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुरमुख साचे लए प्रगटाईआ। ख़ालस ख़ालसा बणया एक, प्रभ सतिगुर आप बणाया। जिस नूं दिती हरि जू टेक, सिर आपणा टिकाया। तिस बुद्धी होई विवेक, मन ममता मोह चुकाया। त्रैगुण ना लाए सेक, भाण्डा भरम भंनाया। सो सतिगुर इक्को पेख, इक्को घर सोभा पाया। रुत्त सुहञ्जणी मौले चेत, पत डाली रंग चढ़ाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग अन्तिम शहिनशाह इक अख्वाया। शहिनशाह हरि दो जहानां, वाली प्रभ अख्वाईआ। जन भगतां देवे धुर दा दाना, नाम अगम्म झोली पाईआ। एथे ओथे बण भगवाना, श्री भगवान होए सहाईआ। नाता तोड़ जगत ज़माना, ज़ामनी आपणी विच रखाईआ। पन्द्रां कत्तक दिवस महाना, श्री भगवान खुशी मनाईआ। दर आयां करे

परवाना, पिच्छे रहिंदया नाल रलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाह पातशाह खेल खलाईआ। शाह पातशाह सूरबीर सूरा, सो पुरख निरँजण इक अख्वाइंदा। आदि जुगादी शब्दी पूरा, नादी तूरा नाद अलाइंदा। कूड़ी क्रिया हूंझ कूड़ा, गुरमुख महल्ल आप वखाइंदा। शब्द भण्डार कर भरपूरा, अतोट अतुट रखाइंदा। रंग अमोलक चाढ़ गूढ़ा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी कार कमाइंदा। वेखो सृष्टी कूड़ी मरदी, मददी नज़र कोए ना आईआ। भैण भाई ना कोई दर्दी, पिता पुत ना कोए सहाईआ। पंज तत काया सब दी सड़दी, थिर नज़र कोए ना आईआ। बिन सतिगुर पूरे आत्म परमात्म घर कोई ना वड़दी, अग्गे पिच्छे पन्ध ना कोए मुकाईआ। चार जुग एसे गल्लों डरदी, लख चुरासी गेड़ ना फेर भवाईआ। दोए जोड़ गुरमुख आत्मा हाढ़े कढ्ढणी, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। प्रभ मैं तेरे दर दी बरदी, बण निमाणी सेव कमाईआ। मेरे कोलों कलयुग जीव कूड़े वर्ज दीं, नाता आपणे नाल जुड़ाईआ। मैं चाहुन्दी तेरे नाल मिल जाए मर्जी, मर्ज जन्म मरन दी रहिण ना पाईआ। जे मेरा चोला पाटा तूं सीं बण के दरज़ी, सूई धागा तेरे हथ्थ नज़री आईआ। वेखीं सानूं भगत ना बणाईं फ़र्जी, फ़ैसला इक्को वार दे सुणाईआ। एह खेल तेरा असचर्जी, अचरज खेल वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पन्द्रां कत्तक नौ सौ चुरानवे चौकड़ी जुग पिच्छों तेरे नाल मिलाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी कहे मेरी रुत्त सुहेली, जिस सज्जण इक मिलाया। भिन्नड़ी रैण कहे मैं हो के वेहली, मनमुखां कोलों पल्ला छुडाया। जन भगत दुआरे आ के बणी चेली, आप आपणा माण मिटाया। गोबिन्द कह के गया प्रभ माण दिवावे झीवर छींबे नाई तेली, तिलक आपणा नाम लगाया। सो सज्जण आ के वेख्या बेली, अलबेलड़ा आपणा फेरा पाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग रंगाया। भिन्नड़ी रैण कहे सुण कत्तक पन्द्रां, इक पंज विच मिली वधाईआ। मैं फिर फिर धक्की मस्जिद मन्दिरां, माही नज़र किते ना आईआ। साधां सन्तां अन्दर वज्जया जन्दरा, ताकी सके ना कोए खुल्हाईआ। जंगल जूह उजाड़ पहाड़ वेख के आई डूंघे कन्दरां, टिल्ले पर्बत फेरा पाईआ। मन वासना भाउँदे वांग बन्दरां, दहि दिशा उठ उठ धाईआ। भुल्ली रुली आ के भगत दुआर वेख्या बंगला, प्रभ बैठा बेपरवाहीआ। जां दर्शन पाया नज़री आया रंगला, जिस नूं गोबिन्द कहिन्दा माहीआ। जिस ने तोड़नी शरअ संगला, डोरी नाम बंधाईआ। मैं वी रल के गावां मंगला, जन भगतां नाल सुर ताल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी खेल वखाईआ। भिन्नड़ी रैण दी सुण के गल्ल, पन्द्रां कत्तक गलवकड़ी आपणी पाईआ। वेख स्वामी सब नाल करदा छल, अछल छलधारी समझ किसे ना आईआ। सारे कहिन्दे पन्द्रां कत्तक उठ के जाणा चल, बण के पांधी

राहीआ। पारब्रह्म प्रभ कहे मेरा मारन जवावण दा इक्को वल, तोड़ना विछोड़ना जोड़ना आपणी खेल वखाईआ। जिस जोड़ां सो वसे निहचल धाम अटल, सद ज़िंदा रूप वखाईआ। जिस विछोड़ां तिस धक्का लग्गे डूंघी डल, लख चुरासी जून भवाईआ। सो जींवदयां जग गए मर, जिन्हां मुर्शद मिल्या ना सच्चा माहीआ। सो मरदे मरदे गए तर, जिन्हां सतिगुर गले लगाईआ। दोहां विच आपे खड़, खड़वीं खेल वखाईआ। किसे दा सीस लग्गे लेखे धड़, लेखा किसे दा कम्म किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पन्द्रां कत्तक दा विवहारा जिस नाल खेल करे गुरू अवतारा, जिस दा मेल पीर पैगम्बर यारा, जिस दा विष्न ब्रह्मा शिव लए हुलारा, जिस दा जुग चौकड़ी रिहा आधारा, अन्तिम कलयुग विहार कराईआ। आओ तक्को वेखो इक नज़ारा, भगतां नाल सुहाया भगत दुआरा, जगत भगती बैठी चरणां हेठां आसण लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। भगत कहिण साडे सिर दस्तारे, हरि सतिगुर आप बंधाईआ। तिन्नां कोलों त्रैगुण रो रो कढ्ढे हाढ़े, चौथा चिटी धारे लए मिलाईआ। चिटी अग्गे मार मारे, अग्गे पिच्छे दोवें पन्ध मुकाईआ। सत्त सत्त दे सत्त जैकारे, सति पुरख निरँजण आप सुणाईआ। सति

१०२५ धर्म दा इक दुआरे, हरि पुरख आप प्रगटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो भगत होए प्यारे, १०२५

जिन्हां भगती भाव भावनी आप जणाईआ। भगती भाव तिन्हां जाणयां, जिन्हां जणाया आप। सच्चा रंग तिन्हां माणया, जिन्हां पढ़या अगम्मी जाप। दरस पाया तिन्हां भगवानया, जिन्हां भेव खुलाया आप। पन्द्रां कत्तक तिन्हां पछाणया, जिन्हां पुरख अकाल मिल्या बाप। सो गुरमुख बणे परवानया, शमअ होई अन्धेरी रात। मनमुख वेख जीव शैतानया, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सच बणाए इक जमात। सच जमात बणाए बनवारी, पन्द्रां कत्तक दए वड्याईआ। इकीआं सरदार सरदारी, सतिजुग साची धार बंधाईआ। सत्त सत्त दी खेल न्यारी, सति पुरख निरँजण आप वखाईआ। सन्तां पिच्छे नव दुआरी, दर दरवाज़ा खोल्ह वखाईआ। नौ सत्त दी लग्गी यारी, सोलां गंढु पवाईआ। सोलां अन्दर खेल न्यारी, निरगुण सरगुण दए समझाईआ। कलयुग अन्तिम पतिपरमेश्वर पावे सारी, पुरख अकाला वेस वटाईआ। चार जुग कर्ज़ा लाहे उधारी, पूरब लेखा दए मुकाईआ। गुरमुख नाता छड्डो जीव संसारी, संसार सहिसा रूप नज़री आईआ। राजे राणे बणे वगारी, हरि जू फड़ वगारी हुक्म सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्ची शहिनशाही इक कमाईआ। शहिनशाह हरि दो जहान, निरगुण इक अवखाइंदा। गोबिन्द हथ्थ देवे कमान, हुक्मरान आप बणाइंदा। सतिजुग सच कर बलवान, बलधारी आप प्रगटाइंदा। धुर संदेसा दे फ़रमान, साचा हुक्म मनाइंदा। जन भगतां मन्नी आण,

गुरमुखां मेल मिलाइंदा। सन्तां चलणा नाल, गुरसिखां अंग लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा हुक्म आप वरताइंदा। साचा हुक्म एको इकी, एकँकार जणाईआ। सति धर्म दी साची सिक्खी, सत्तां रंगां रंग रंगाईआ। ज़ात पात नाल जाए ना भिटी, चण्डाल रूप ना कोए वखाईआ। जिध्धर वेखो तिन्हां अन्दर धार चिटी, त्रैगुण माया डेरा देवे ढाहीआ। परम पुरख दी धुर दी चिट्ठी, गोबिन्द वाच के रिहा सुणाईआ। एह खेल खंडयों निक्की, जगत नेत्र नज़र ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मार्ग साचा इक समझाईआ। साचा मार्ग लग्गा इक, इक पंज वड्याईआ। पन्द्रां कत्तक करदे हित, हरिजन लए समझाईआ। धुर दा लेखा अगला लिख, पिछला पन्ध मुकाईआ। साहिब सतिगुर दा बण के सिख, सिख मिले ना जगत लोकाईआ। एको रूप हर घट आए दिस, इक्को रंग लए रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे दए वड्याईआ। इक्की सिख रंग सत्त, सत्त तिन्न वज्जी वधाईआ। तिन्न सत्त दा इक्को तत्त, हरि ततव आप प्रगटाईआ। सत्त तिन्न इक्को मति, गुरमति आप जणाईआ। बीज बीज साचे वत, पत डाली दए महकाईआ। पन्द्रां कत्तक दे के हक़, वसीअत दए कराईआ। गोबिन्द चेलयां करे फ़क्क, पूत सपूत सोभा पाईआ। साढे सैंती साल देवे आपणा रस, रस आपणे विच्चों प्रगटाईआ। जिस वेले करनी होवे बस, मस्तक टिक्का अग्गे देवे लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची धारा दए चलाईआ। साची धार चलाए अगम्म, अगम्मड़ी कार कमाइंदा। जे कोई कहे भेव जाणया हम, हमरा भेव किसे ना आइंदा। जे कोई कहे जाणां प्रभू दा कम्म, करनी हथ्थ ना किसे फड़ाइंदा। जे कोई कहे मैं वड्डा जन, प्रभ कोटन कोटि जननी बण के जन आपणी कुख्ख रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरि भगत आप वडियाइंदा। हरि भगत वडयाए बन्हू के चीरा, सिर सीस नाल सुहाईआ। हरिसंगत सारी बणाए हीरा, माणक मोती मुख शरमाईआ। सति धर्म दा इक कलीरा, गाना सगन दए बंधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन देवे माण वड्याईआ। देवे वड्याई सतिगुर आप, सदी बीसवीं होए सहाईआ। दुःख दर्द मेट संताप, रोग सोग दए गंवाईआ। चिन्ता दुःख मिटाए बण के माई बाप, पिता पूत गोद उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो गए भाख, सब दी भाख्या पूर कराईआ। अन्तिम लहिणा देणा साख्यात, साहिब सतिगुर आप चुकाईआ। अग्गे बणा इक जमात, साची करे नाम पढ़ाईआ। निरगुण सरगुण बणना दास, दासी दास रूप वखाईआ। जन भगतां वसे सदा पास, हरि जू विछड़ कदे ना जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, शाह पातशाह वड्डी वड्याईआ। शाह पातशाह बणया भूपा, भूप इक्को नज़री

आईआ। खेले खेल बिन रंग रूपा, सति सरूपा सति सतिवादी रूप वटाईआ। दहि दिशा लेखा जाणे चारे कूटा, आपणी धार जणाईआ। जन भगतां खाली भरे ठूठा, वस्त अमोलक इक वरताईआ। जुग जन्म दा बैठा रूठा, रुठड़ा लए मिलाईआ। प्रेम प्यार दा जो जन भुक्खा, तिस अन्तर आत्म दरस दिखाईआ। इकीआं अन्दर हरि जू लुका, लुकवी खेल रचाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे कहिण साडा पैंडा मुक्का, तेरे दर ते सीस झुकाईआ। श्री भगवान कहे सब दा बूटा सुक्का, हरया सिंच ना कोए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहर नजर उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लावण अंगूठा, अष्टाम आपणा आप भराईआ। तेरे दुआरे होए ना कोई झूठा, सच सच तेरी सरनाईआ। सदी बीसवीं सब दा मूधा ठूठा, ख़ाली प्याले रहे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणे चरणां लैणा रखाईआ। चरणां कोल लैणा रख, मिले सरन सरनाया। तेरे नालों ना होईए वक्ख, मेरे बेपरवाहया। मिलदी रहे तेरे नाल अक्ख, अक्ख अक्ख नाल मिलाया। साडा लहिणा दे दे हक़, हक़ आपणा मंग मंगाया। तेरा दर्शन लईए तक्क, दीदार इक्को नज़री आया। तेरा वेख दुआरा लँघ, भगवान साचे खुशी मनाया। लख चुरासी छड्ड के जगत, घर सच्चा तेरा भाया। पन्द्रां कत्तक आया वक्त, वेला रुत्त नाल सुहाया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देवें भगत वडयाया। भगत वड्याई कर वड्डा, सिफ्त दयां जणाईआ। पार कर के जगत हद्दा, हरिजन साचे रिहा उठाईआ। जाम प्याला दे के अमृत मधा, सति सरूर रिहा वखाईआ। एथे ओथे रख के लज्जा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। निरगुण हो के आए भज्जा, बेपरवाह फेरा पाईआ। जन भगत रहे ना कोई लज्जा, हय्या हय्याती विच्चों कढ्ढाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरि देवे माण वड्याईआ। इक्की कहो सोहँ महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान दी जै, दो जहान शब्द शनवाईआ। श्री भगवान कहे मेरा भगत सदा सद रहे, मरे ना जम्मे फेरा पाईआ। नित नवित्त मेरी चरणी बहे, घर साचे सोभा पाईआ। इक्को नाम धुर दा लए, दूजी करे ना कोए पढ़ाईआ। हरि सरनाई साची ढहे, माण अभिमान मिटाईआ। जन भगतां विच रल के बहे, मनमुख संग ना कोए रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे माण वड्याईआ। भगत कहे मेरा भगवान सच्चा, सच्ची करे पढ़ाईआ। भगवान कहे मेरा भगत बच्चा, बचपन आपणी झोली पाईआ। भगत कहे मेरा भगवान वड्डा, वड्डी तेरी शरनाईआ। भगवान कहे मेरा भगत नढ्ढा, जिस नाल मिल के खुशी मनाईआ। भगत कहे भगवान देवे सद्दा, अन्तर आत्म आवाज़ लगाईआ। भगवान कहे मैं भगतां बद्धा, जुग जुग आपणा फेरा पाईआ। भगत कहे भगवान रखे लज्जा, पन्द्रां कत्तक रुत्त सुहाईआ। भगवान कहे

मैं भगतां प्रेम अन्दर बद्धा, आपणा आप ना कुछ वखाईआ। दोहां मिल के दिती गंढा, गंढ इक दूजे नाल पवाईआ। भगत भगवान दोहां विच्चों कोई ना होवे रंडा, जोड़ी रहि के खुशी मनाईआ। भगवान रूप बण के बंदा, बंदा बंदगी दए जणाईआ। बंदा हो के बणे अन्धा, देवे हरि भुलाईआ। एसे कर के सहिब सतिगुर जन भगतां खोल्हे कुण्डी जिंदा, बजर कपाटी पड़दा आप उठाईआ। अट्ठे पहर दर्शन देंदा, निरगुण नूर जोत रुशनाईआ। शब्द विच सब कुछ कहिन्दा, हुक्मे आप जणाईआ। जन सुत्तयां रातीं घर विच बहिंदा, दर आपणा फेरा पाईआ। जिस वेले जन भगतां वेखे पासा ढहिंदा, फड़ बांहों लए उठाईआ। आओ वेखो भगत कोल भगवन रहिंदा, जिस साची बणत बणाईआ। सब दा भाणा सिर ते सहिंदा, सिर आपणे भार उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, कलयुग तेरी अन्तिम वर, पन्द्रां कत्तक खोल्हे दर, दर दरवाज़ा भगत दित्ते बणाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, निहकलंक बली बलवान, सति उठाए इक निशान, दो जहानां आप झुलाईआ। दर संगत करे परवान, लेखा मुक्के जीव जहान, मन्दिर चढ़ के सच मकान, मंज़ल अन्तिम आप मुकाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत खुशी विच सदा समाण, रोग सोग ना कोए रखाईआ। जिन्हां मिल्या श्री भगवान,
१०२८ तिन्हां देवे साम्हणे सब दे दान, चोरी यारी ठग्गी ना कोए कमाईआ। ना समझण जीव शैतान, शरअ मन नाल करे लड़ाईआ। १०२८
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, पिछला ख़त्म कर मैदान, अग्गे डंका फ़तहि गोबिन्द दए वजाईआ।

१५ १५

✪ १६ कत्तक २०२० बिक्रमी हरि भगत दुआर जेठूवाल ✪

तेरे दर ते आ के पुरख सो, सति मिली वड्याईआ। निरगुण तेरे जोगे गए हो, निरगुण धार रूप वखाईआ। आपणा बल बैठे खो, बलधारी रूप ना कोए रखाईआ। नेत्र नैण रहे रो, छहबर इक लगाईआ। सब कुछ प्रभ ने लैणा खोह, दिसे वस्त पराईआ। करे प्रकाश अगम्मी लो, निरगुण नूर कर रुशनाईआ। जन भगतां संग आपे हो, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। तेरे दर आ के पुरख निरँजण, सुणी सच वधाईआ। नेत्र मिल्या इक्को अंजन, गुरमुख वेखे पाईआ। सतिगुर जाणया इक्को सज्जण, सगला संग निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, वाहवा तेरी वज्जदी रहे वधाईआ। एकँकार तेरा दुआरा, शाह पातशाह सोभा पाईआ। आ के वेख्या पहली वारा, लोकमात खुशी जणाईआ। सच सिँघासण कर तैयारा, शब्दी वंड वंडाईआ। शब्दी गुरू बोल जैकारा, इक्को नाद सुणाईआ। मिल के कहे तूं मेरा मैं तेरा यारा, यारी यारड़े नाल निभाईआ।

सखीआँ मंगल वेख अखाड़ा, गीत गोबिन्द नाल सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी दया कमाईआ। दया कमा निरँजण आदि, आदि पुरख सुल्ताना। जुग चौकड़ी तेरा नाद, आप वजाए नौजवाना। आदि अन्त हरि खेल विस्माद, नेत्र नैण नज़र कोए ना आना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरे गृह मिले निशाना। पारब्रह्म तेरा वेख दर, सारे खुशी मनाईआ। निरगुण नूर लईए फड़, प्रेम डोरी तन्द बंधाईआ। इस दी विद्या लईए पढ़, जो सिख्या रिहा जणाईआ। जीवत सब कुछ लईए कर, मृत्यु लोथ कम्म किसे ना आईआ। सच दुआरयों मिले वर, वाहवा तेरी वड वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। अबिनाशी करता कहे खेल अवल्ला, सो पुरख निरँजण आप कराईआ। करे खेल इक इकल्ला, जुग चौकड़ी वेस वटाईआ। कलयुग अन्त संदेस घल्ला, धुर दी बाणी बाण लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सिर हथ्थ टिकाए आप मेहरवान, वज्जे नाम वधाईआ। सचखण्ड दुआर वेख्या आण, लोकमात सोभा पाईआ। चारों कुण्ट भगत सोभा पाण, घर बैठे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। देवे वड्याई हरि निरँकारा, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। निरगुण नूर तेरा उज्यारा, दर घर साचे सोभा पाईआ। चरण कँवल मिले सहारा, बूँद अमृत मुख चुआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा रंग वेख वखाईआ। वेख्या रंग हरि जू तेरा, दर आ के नैण उग्घाड़या। धर्म दुआरे लग्गा डेरा, सेजा साची सोभा पा रिहा। आत्म परमात्म बन्ने बेड़ा, सीस पल्लू नाम सवारया। इक वखाए साचा खेड़ा, महल अटल सोभा पा रिहा। लेख चुकाए तेरा मेरा, निरगुण इक्को नज़री आ रिहा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरि जू आपणा खेल खला रिहा। हरि जू तेरा वेख्या खेल, लोकमात सोभा पाईआ। जन भगतां कीता साचा मेल, बिन भगतीउँ भगत बणाईआ। निरगुण बण के सज्जण सुहेल, सगला संग रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, दर दिती माण वड्याईआ। तेरा दर वेख्या आ, कलयुग अन्तिम फेरा पाईआ। प्रभ दिसे सच मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। निरगुण सरगुण देवे इक सलाह, साची सिख्या आप समझाईआ। साचा दर्शन लओ पा, हरि दरसी दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचे दर खुशी मनाईआ। साचा दर वेख्या तेरा, इक पंज वज्जी वधाईआ। भगत दुआर सोहे डेरा, साचे मन्दिर मिले नाम वड्याईआ। लख चुरासी उलटा गेड़ा, जीव जंत दए भवाईआ। भेव चुकाए तेरा मेरा, मेरा तेरा नूर दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणी

१०२६ १५

करनी आप कमाईआ। साची करनी वेख करतार, घर साचे खुशी मनाईआ। तेरा वेख्या इक दरबार, लोकमात सोभा पाईआ। एका इक्की कर तैयार, एकँकार आपणे रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची खेल आप समझाईआ। साची खेल करे निरँकार, निरगुण वड्डा वड वडियाइंदा। सचखण्ड दुआरा वेख तेरा दरबार, दरगाह साची सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, धुर दा लेखा झोली पाइंदा। धुर दा लेख प्रभ तेरे हथ्थ, देवणहार वड्याईआ। निरगुण मार्ग दए दस्स, सरगुण नाल मिलाईआ। मेहरवान हो के जन भगतां खोले इक अक्ख, अक्खर अक्खर दए पढ़ाईआ। प्रेम प्रीती नालों कोई ना दिसे वक्ख, वक्खरी धार ना कोए जणाईआ। भगत दुआरे जन भगतां इक्को जिहा हक़, द्वैती रूप ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। देवे वड्याई दर ग़रीब निवाज़, ग़ैरत आपणे विच छुपाईआ। झगड़ा करे सर्ब समाज, जीव जंत रहे कुरलाईआ। सीस दिसे ना किसे ताज, जगदीश्र रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच दुआरा इक्को इक वखाईआ। सच दुआरा चरण कँवल, सो साहिब आप प्रगटाइंदा। देवे वड्याई उपर धवल, सत्त दो जोड़ जुड़ाइंदा। नूर इलाही बण के अवल्ल, आलम आपणा रंग वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, देवणहारा साचा दान, वस्त अमोलक आपणी दात झोली आप भराइंदा।

✪ पहली मग्घर २०२० बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ✪

नमस्कार नमो देव स्वामी, परवरदिगार बेपरवाहीआ। आदि जुगादी शाह सुल्तानी, शाह पातशाह बेपरवाहीआ। निरगुण नूर जोत नुरानी निरवैर पुरख वड वड्याईआ। शब्दी शब्द बोध अगाध खेल महानी, ख़ालक तेरा नूर ज़हूर इक रुशनाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करन चरण ध्यानी, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर नाउँ निरँकारा पढ़न अगम्मी बाणी, ढोला सोहला इक्को राग अलाईआ। सो पुरख निरँजण वड मेहरवान तेरा मन्दिर सच्चा पद निरबाणी, हरि पुरख निरँजण तेरी ओट इक रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच्चा वर, दर तेरे अलख जगाईआ। निमस्कार नमो देव प्रभ ठाकर, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। दीन दयाल गहर गम्भीर गुण सागर, बेअन्त तेरी वड्याईआ। पुरख अकाल करते कादर, मेहरवान बेनज़ीर रहमत तेरी इक्को भाईआ। सति सरूपी सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी नूरी चादर,

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा सच्चा वर, दर तेरे सीस झुकाईआ। नमो देव प्रभ एक, एकँकार ओट रखाईआ। जुग चौकड़ी तेरा भेख, निरगुण समझ कोई ना आईआ। जुग चौकड़ी रिहा वेख, अनभव प्रकाश कराईआ। बेपरवाह किसे ना देवे भेत, अभेव आपणे विच छुपाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग निरगुण सरगुण थोड़ा थोड़ा कीता हेत, गुर अवतार पीर पैगम्बर इशारे नाल उठाईआ। लोकमात मार झात पुरख अकाल खेल अगम्मी खेड, बण खिलाड़ी चाल चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। नमस्कार नमो देव प्रभ, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। नित नवित्त तेरी किसे ना लभ्भी हद्द, हदूद समझ सके कोई ना राईआ। निरगुण सरगुण आपणी धारों कढ्ढ, प्रकाश प्रकाश नाल प्रगटाईआ। सचखण्ड दुआरे बहि के सब दा पड़दा रिहों कज्ज, थिर घर स्वामी शब्दी रंग रंगाईआ। सच दुआरे मुकामे हक़ लाशरीक सच तौफ़ीक इक कराए अगम्मी हज्ज, हज़रत जलवा नूर दरसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरा वेख वखाईआ। नमस्कार नमो देव प्रभ सज्जण, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त गुर अवतार पीर पैगम्बर पंज तत भाण्डे भज्जण, थिर कोए रहिण ना पाईआ। कोटन कोटि लोकमात मार झात निरगुण तेरी धार लभ्भण, खोजत खोजत खोज थक्की लोकाईआ। चरण धूढ़ी कोई ना करे मजन, सचखण्ड दुआर मस्तक टिक्का नाम ना कोए लगाईआ। ठाकर हो के आवें पड़दे कज्जण, साहिब हो के दया कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे सीस निवाईआ। नमस्कार गुर देव स्वामी चरण कँवल गए झुक, सीस जगदीश निवाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करोड़ तेतीसा गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण साडा पैंडा गया मुक्क, पांधी नज़र कोए ना आईआ। जोत सरूप निरगुण वखा आपणा मुख, सो आपणी गोद लै बहाईआ। सरगुण हो के तेरा नाउँ वड्याई पंज तत काया मुख, रसना जिह्वा बत्ती दन्द सालाहीआ। निगहबान हो के अन्तिम पुछ, बेपरवाह झल्ली ना जाए तेरी जुदाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग बैठा रिहों लुक, तेरी समझ किसे ना आईआ। परवरदिगार सांझे यार पुरख अकाल नूरी धारों निरवैर आप उठ, मात पिता गोद ना कोए सुहाईआ। कर प्रकाश पुरख अबिनाश साची जोत, नूरो नूर नूर रुशनाईआ। तेरा वसे धाम अवल्लड़ा सच्चा किला कोट, मन्दिर इक्को सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। नमस्कार गुरदेव स्वामी, तेरे चरण कँवल बरदा, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बण दरवेश हाढ़े कढ्ढणा, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। शाह पातशाह शहिनशाह तेरे अग्गे कोई ना अड़दा, सीस सके

ना कोए उठाईआ। तेरा खेल सीस धड़ दा, आत्म परमात्म आपणी वंड जणाईआ। दो जहान तेरा नाउँ नाम सति पढ़दा, निरअक्खर अक्षर नाल मिलाईआ। सरगुण तेरे बिरहों विछोड़े अन्दर मरदा, नित नवित्त बैठा ध्यान लगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा भाणा जरदा, चरण कँवल मंगे सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर दरवेश बैठे ध्यान लगाईआ। नमस्कार नमो देव महिबूब, मुहब्बत तेरी इक्को भाईआ। महल अटल वेख तेरा अरूज, अर्श फर्श दोवें रहे शरमाईआ। मुकामे हक़ तेरा महिफ़ूज़, चार कुण्ट दहि दिशा नज़र किसे ना आईआ। तुध बिन तेरा देवे ना कोए सबूत, पड़दा सके ना कोए उठाईआ। पीर पैगम्बर सिफ्त कर के आए पंज तत कलबूत, काया काअबा दए जणाईआ। परवरदिगार तेरे हथ्थ हक़ हकूक, लाशरीक तेरी शरनाईआ। मेहरवान तेरी तौफ़ीक, तोहफ़ा दे बेपरवाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कोई ना रहे फ़रीक, फ़िरका नज़र कोए ना आईआ। साचा कलमा दे हदीस, हज़रत इक्को कर पढ़ाईआ। वेख खेल आपणा बीस, बिस्तरे बैठे गोल कराईआ। दूर दुराडे आए तेरे नज़दीक, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद नानक गोबिन्द जो दस्सया ठीक, ठोकर सारे रहे खाईआ। पुरख अकाल तेरी कोई ना जाणे लीक, लकीर फ़कीर जगत लोकाईआ। सति स्वामी अन्तरजामी तुध बिन बणे ना कोई मीत, मित्र प्यारा नज़र कोए ना आईआ। जुग चौकड़ी झूठी वेखी प्रीत, मुरीद मुर्शद गए भुलाईआ। साचा मिल्या ना कोई तबीब, बहत्तर नाड़ी फोल ना कोए फोलाईआ। अन्दर वड़ के वसया ना कोए नज़दीक, दूर दुराडे नाता रहे जुड़ाईआ। चौदां सदीआं तेरी करदे रहे उडीक, चौदां तबक ध्यान लगाईआ। धन्न भाग बेपरवाह दिती सानूं इक तौफ़ीक, तेरे चरण कँवल सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे सीस निवाईआ। सीस निवाया दर परवरदिगार पर्दानशीन, मुख नक़ाब दे उठाईआ। साडा पिछला चुका यकीन, यकमुशत बैठे डेरा ढाहीआ। अग्गे रहीए सदा अधीन, अदल अदालत तेरी इक्को भाईआ। पीर पैगम्बर होए मस्कीन, मुश्किल तेरी झोली पाईआ। नूर इलाही यामबीन, बेपरवाह तेरी सरनाईआ। तेरे कलमे कदे ना होए तौहीन, कायनात समझ कोए ना आईआ। लेखा कोई ना जाणे सीन, ऐन अक्ख ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर ठांडा तेरा नज़री आईआ। दर ठांडा तेरा दरबार, दरगाह साची ख़ुशी मनाईआ। पुरख अकाल एकँकार, आदि निरँजण तेरी रुशनाईआ। अबिनाशी करते तेरी धार, श्री भगवान समझ कोए ना पाईआ। पारब्रह्म तेरा विहार, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर वड्डा मिले वड्डी वड्याईआ। दर वड्डा एकँकार, सचखण्ड ख़ुशी मनाइंदा। जलवागर

१०३३

शाहकार, शहिनशाह आपणा आसण लाइंदा। दूजा करे ना कोई आधार, अक्ल कलधारी आपणी खेल वखाइंदा। गुर अवतार दर मंगण बण भिखार, नेत्र नैण नीर सर्ब वहाइंदा। किरपा कर सिरजणहार, सति स्वामी तेरा अन्त कोए ना आइंदा। सचखण्ड दुआर खोल्ह कवाड़, थिर घर शब्दी रंग रंगाइंदा। नव नौ चार आई हार, चौथा युग डेरा ढाइंदा। शास्त्र सिमरत वेद पुराण करन पुकार, गीता ज्ञान चरण कँवल सीस झुकाइंदा। अञ्जील कुरान रोवण ज़ारो ज़ार, खाणी बाणी धीर ना कोए धराइंदा। चरण धूढ़ी मंगण तेई अवतार, गुर दस झोली डाहइंदा। चारों कुण्ट अन्ध अँध्यार, साचा चन्द ना कोए चमकाइंदा। जुग चौकड़ी जो लेखा दस्सया मात विहार, बिवहारी राह ना कोए वखाइंदा। अन्तिम सारे आए हार, हरि जू तेरी ओट सर्ब तकाइंदा। पिछला लहिणा देणा दित्ता निवार, बाकी लेख ना कोए वखाइंदा। कट्ठे होए तेरे दरबार, दर इक्को सच्चा नज़री आइंदा। इकावन बावन भिख्या मंगण वस्त दे आप निरँकार, निरगुण निरगुण आसा पूर कराइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, आसा सब दी पूर कराइंदा। आसा प्रभू करदे पूरी, गुर अवतार पीर पैगम्बर ध्यान लगाईआ। तेरा रूप इक्को नूरी, नूर नुराने तेरी जोत सवाईआ। तेरा दर इक्को हज़ूरी, हज़रत वड्डे वड्डी तेरी वड्याईआ। चार युग दी टुटी सर्ब मग़रूरी, मुफ़लस बैठे ध्यान लगाईआ। लोकमात तेरे नाम दी कर के आए मज़दूरी, बण मज़दूर सेव कमाईआ। सृष्ट सबाई लख चुरासी दस्स के आए कूड़ी, कूड़ी क्रिया बन्धन ना कोए वखाईआ। पुरख अकाल दी सारे मंगो चरण धूढ़ी, गुर अवतार पीर पैगम्बर विष्न ब्रह्मा शिव मस्तक टिक्के रहे लगाईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग पिच्छों तैनूं इक्को ज़रूरत पई ज़रूरी, ज़ाहर आपणी कल धराईआ। मूसे तुटा माण जलवा कोहतूरी, ईसा आस बैठा गंवाईआ। मुहम्मद चरण कँवल होया मशकूरी, मुश्कल मेरी हल्ल कराईआ। नानक चुक्क के मोढे भूरी, तेरा बैठा ध्यान लगाईआ। गोबिन्द कहे प्रभ पुरख अकाल उते डोरी, पिता पूत गंढ्ढ पवाईआ। जुग चौकड़ी कहिण अबिनाशी करता शब्द अगम्मी चढ़ के आवे घोड़ी, घोड़ा अस्व शाहसवारा इक दौड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, वड साहिब सच गोसाईंआ। साहिब सच गोसाईं मीत, मित्र प्यारे तेरी ओट रखाईआ। पन्द्रां कत्तक सब ने छड्डी पिछली रीत, मन्दिर मसीत गुरदुआर शिवदुआले मट्ठ गुर अवतार पीर पैगम्बर फेर कोए ना आईआ। तेरे नाम दा गाईए इक्को गीत, दूजी अवर ना कोए पढ़ाईआ। तेरी धार सदा ठांडी सीत, अग्नी तत ना कोए तपाईआ। तेरा खेल प्रभू जगदीश, जगदीश्र तेरे हथ्थ वड्याईआ। असीं वेख्या माण मिलदा इकीआं विच्चों इकीस, एका इक्की गोबिन्द रंग रंगाईआ। नेत्र रो पए राग छतीस, सुरस्ती मारे उच्ची धाहींआ। गण गंधर्ब वेखण ला के नीझ, दूर दुराडे नैण उठाईआ।

नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग पिच्छों पुरख अकाल जन भगतां पूरी कीती आप रीझ, फड़ आपणे नाल मिलाईआ। दूर दुराडा चल के भगत दुआर लँघया इक दहिलीज़, दहि दिशा डेरा ढाहीआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दी करदे रहे उडीक, लिख लिख लेखा गए समझाईआ। प्रगट होवे बीसा बीस, कल कल्की फेरा पाईआ। लेखा जाणे हस्त कीट, लख चुरासी खोज खोजाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म लए जीत, पारब्रह्म ब्रह्म आपणी झोली पाईआ। जन भगतां छत्र झुलाए सीस, सीस दस्तार जगदीश आप रखाईआ। नीचों करे ऊँच उच्चों करे नीच, नीच ऊँच दोवें चरणां विच रखाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर पुरख अकाल दीन दयाल सर्ब स्वामी आपे वसे अद्धविचकार बीच, विचला लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। जगत नेत्र नज़र ना आए नीकन नीक, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहीआ। शहिनशाह हरि ठाकर प्रभ, हथ्थ तेरे वड्याईआ। चार जुग दी पिछली चुक्की हद्द, हदूद तेरी विच बैठे डेरा लाईआ । सच दुआरे लए सद्द, सद्दा आपणा नाम जणाईआ। अन्तिम पड़दा इक्को कज्ज, सिर आपणा हथ्थ रखाईआ। लोकमात कर के आए हज्ज, काया काअबा हुजरा इक सुहाईआ। इट्टां गारा पत्थर पिच्छे आए छड्ड, टक्करां मारे जगत लोकाईआ। बिन मुर्शद मुरीद कोई ना सके लभ्भ, बिन सतिगुर गुरसिख मिलण कोए ना आईआ। बिन तेरी किरपा कोई
१०३४ ना करे हज्ज, बिन तेरी रहमत दरस कोए ना पाईआ। मेहरवान हो जिस आपणे दुआरे लएं सद्द, देवें माण वड्याईआ। १०३४
१५ तिस दा पूरा होवे हज्ज, मक्का काअबा दोवें नैण शरमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, घर साचे वज्जे वधाईआ। वज्जे वधाई घर सच्चे एक, एकँकार तेरी शनवाईआ। सारे करीए तेरी टेक, सीस जगदीश चरण झुकाईआ। दीन मज़्हब विच्चों कर विवेक, ज़ात पात डेरा ढाहीआ। निज नेत्र आपणी अक्ख वेख, दोए लोचण बंद वखाईआ। अन्दर वड़ के दस्स भेत, बाहरों समझ कोए ना पाईआ। निरगुण तेरी अगम्मी खेड, ख़ालक ख़लक दे जणाईआ। तेरी सुहञ्जणी माणीएं सेज, सोभावन्त आसण लाईआ। लोकमात गुर अवतार पीर पैगम्बर बणा के दित्ते भेज, धुर संदेसा झोली पाईआ। जीवां जंतां साधां सन्तां लख चुरासी लिख के आए लेख, कलम शाही काग़ज़ नाल मिलाईआ। इक्को पुरख अकाल परवरदिगार करना हेत, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ । पंज तत काया सब दा होवे खेत, रण भूमी दो जहान दए जणाईआ। भगत भगवान मानण इक दूजे दी सेज, सच सिँघासण डेरा लाईआ । जोती जलवा नूरी तेज, जागरत जोत करे रुशनाईआ। प्रभ तेरा सब कुछ ल्या वेख, लख चुरासी जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर बैठे आसण लाईआ। दर तेरे आसण गया लग्ग, गुर अवतार

पीर पैगम्बर रहे जणाईआ। दरगाह साची तेरा हज्ज, सचखण्ड तेरा नूर नज़री आईआ। अगला मार्ग इक्को दस्स, रल मिल सारे तेरा इक्को नाम ध्याईआ। किरपा कर पुरख समरथ, तेरे हथ्थ वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सद रहीए तेरी सरनाईआ। तेरी सरनाई मंगीए इक, ख़ाली झोली रहे वखाईआ। अगला लेखा फेर लिख, पिछली मिटी छाहीआ। चारों कुण्ट आए दिस, दहि दिशा तेरी रुशनाईआ। तूं आपणा खेल कीता ज़ोर नाल हिक़, हकीकत आपणे नाल रलाईआ। चौथे युग दे के पिठ, करवट आपणी लई बदलाईआ। चार युग जो लेखा आए लिख, बिन समझों पूर कराईआ। तेरे कोलों सारे होए जिच, डरदे बैठे नैण शरमाईआ। साडी करनी साडे विच्चों लई खिच, ख़ालक आपणे विच रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सद मन्नीए तेरी रज़ाईआ। श्री भगवान हो मेहरवान, हरि करता आप जणाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर करो ध्यान, वड ध्यानी आप उठाइंदा। नव नौ चार चुक्की काण, कलयुग अन्तिम लेख मुकाइंदा। प्रगट हो श्री भगवान, सब दा लेखा झोली पाइंदा। बीस बीसा बण प्रधान, सच प्रधानगी आप कमाइंदा। इकीआं देवे इक्को माण, एकँकारा दया कमाइंदा। ऊँच नीच सर्ब मिट जाण, ज़ात पात ना कोए वखाइंदा। दीन मज़्ह्ब ना कोई काण, शरअ शरीअत ना वंड वंडाइंदा। रसना जिह्वा ना कोई कलाम, इस्म आअज़म इक वखाइंदा। धुर संदेसा दे पैग़ाम, साची विद्या आप पढ़ाइंदा। नज़री आए इक अमाम, नौबत आपणा नाम सुणाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर बरदे कर ग़ुलाम, हुक्मे अन्दर आप बहाइंदा। झुक झुक सारे करन सलाम, सजदा इक्को इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साचा इष्ट आप दरसाइंदा। साचा इष्ट पुरख अकाल, पंज तत ना कोए वड्याईआ। आदि जुगादी दीन दयाल, दीनां नाथ वेख वखाईआ। सच दुआर सच्ची धर्मसाल, साढे तिंन हथ्थ देवे माण वड्याईआ। आत्म परमात्म करे संभाल, सदा सुहेला संग रखाईआ। भगत भगवान कदे ना खाए काल, महाकाल नेड़ ना आईआ। त्रैगुण माया तोड़ जंजाल, जीवण जुगत दए समझाईआ। करे खेल बेमिसाल, मिसल आपणे हथ्थ वखाईआ। जुग चौकड़ी जो घालां रहे घाल, तिन्हां कीती घाल लेखे लाईआ। चौथे युग सब दा कर हल्ल स्वाल, ज़ीरो सिफ़रा निरगुण सरगुण दूए नाल जुड़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, डूंघी रचना आपणे विच छुपाईआ। डूंघी रचना श्री भगवान, हरि रचंता करता धरता आपणे विच रखाइंदा। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां नाम निधाना दे के छोटा जिहा ज्ञान, छोटी कुटीआ काया मन्दिर विच वसाइंदा। शब्द अगम्मी दे ब्यान, हुक्मे अन्दर आप फिराइंदा। जे कोई मंगण आवे दान, निक्की चुटकी

भर के झोली पाइंदा। सो लोकमात होवे प्रधान, लख चुरासी जीव जंत समझाइंदा। अन्दरे अन्दर मंगदा रहे दान, दोए जोड़ वास्ता पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, वस्त अमोलक धुर दी दात आप वरताइंदा। धुर दी दात आप वरतंता, वर्तमान इक अख्वाईआ। जुग चौकड़ी खेल श्री भगवन्ता, भगवन आपणी धार रखाईआ। लख चुरासी जीव जंता, चीऊँटी हस्त करे पढ़ाईआ। शब्द अगम्मी नाम इक्को मन्त्र मंता, मंतव आपणा दए समझाईआ। लख चुरासी नारी कन्ता, कन्त कन्तूहल इक अख्वाईआ। बेपरवाही रंग बसन्ता, बसन बनवारी आप रंगाईआ। बोध अगाधा हो के पंडता, साचा अक्खर दए समझाईआ। खेले खेल जेरज अण्डजा, उत्भुज सेत्ज सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर कर परिवार इकट्ठा, इक अडम्बर सच सुअम्बर दित्ता वखाईआ। सच सुअम्बर बीस बीसा, हरि इक्को इक जणाईआ। पन्द्रां कत्तक सब दा ख़ाली कर के ख़ीसा, कफ़नी चोली अल्फ़ी आपणे हथ्थ रखाईआ। बिन रसना जिह्वा सारे पढ़न हदीसा, उच्ची उच्ची ढोला गाईआ। हस्सण रोवण दोवें ताल मारन चीकां, दो जहान समझ कोए ना आईआ। खुशी कहे मैं रखदी रही उडीकां, बैठी राह तकाईआ। ग़मी कहे लेखा चुक्कया चाचा भतीजा, पुरख अकाल पिता इक्को नज़री आईआ। जन भगतां उपर आप पतीजा, पतिपरमेश्वर बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी एका इकी, एकँकार आप बणाईआ। गोबिन्द कह के गया खंडयों तिक्खी, वालों निक्की नज़र ना आईआ। श्री भगवान हो मेहरवान आपणे नेत्र पेखी, भेखनी संग ना कोए रखाईआ। अचरज खेल प्रभू कल खेडी, समझ सके कोई ना राईआ। ख़ाली रहि गए सोढी वेदी, बिध आपणे हथ्थ रखाईआ। मूर्ख मुग्ध मूढ़ अञ्याणे बणे भेदी, जिन्नां अन्दर वड़ के पड़दा दित्ता चुकाईआ। पन्द्रां कत्तक नौ सौ चुरानवे चौकड़ी दा विहार कीता नाल छेती, शहिनशाह इशारे नाल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची करनी आप जणाईआ। गुरमुख सज्जण यार चमरेटे, चमत्कार प्रभू जणाईआ। भगती प्यार दोवें बेटी बेटे, तेरी फूड़ी उते सवाईआ। जगत पिता कोई ना वेखे, भगत भगवान दए जणाईआ। बिरहों विछोड़े अन्दर दोवें लेटे, दुःख लग्गा बेपरवाहीआ। पारब्रह्म प्रभ भगतां अन्दर खुशीआं नाल लेटे, साडी वात ना पुछे कोई राईआ। जिस वेले चमरेटा आ के कोल बैठे, दोवें रो रो रहे सुणाईआ। तेरे प्रभू नूं साडे भुल्ले चेते, ग़रीब निमाणयां बैठा अंग लगाईआ। साडा करे कोई ना हेते, हितकारी होए सहाईआ। रविदास तैनूं लिखण डाहया सब दे लेखे, तेरी कलम विच चतुराईआ। तिक्खी नोक मारे नेज़े, दो जहानां सल लगाईआ। साडा स्नेहड़ा उस

कोल भेजे, दुखियां दर्द सुणाईआ। अमृत बरसे आपणा मेघे, मेहर धार वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा दए जणाईआ। रविदास अन्दर आया ध्यान, गुरमुख खुशी मनाईआ। रोंदयां लिखां इक ब्यान, प्रभू दयां जणाईआ। जिस दे उते कलम शाही करे ज्ञान, सो काग़ज़ नज़र ना आईआ। तारा सिँघ गंगा किनारे बाल नादान, ढाई साल बैठा मुख छुपाईआ। जिस वेले ब्रह्मण कसीरा मिल्या आण, उस वेले इक्को उंगली दर्शन नज़री आईआ। दर्शन वेख होया निहाल, वाह वा प्रभू तेरी वड्याईआ। ग़रीब निमाणयां रिहा सुरत संभाल, कोझयां कमलयां गले लगाईआ। साडा लेखा तैनूं कदी ना आया ख़िआल, बैठा आप भुलाईआ। श्री भगवान हो मेहरवान, शब्दी धार दित्ता जणाईआ। निरगुण हो के आवां विच जहान, रविदास नाल तेरा मेल मिलाईआ। जिस उते लिख्या जाए मेरा निशान, सो निशाना रसना तीर चलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, करनी आपणे हथ्थ रखाईआ। करनी रख हथ्थ करतार, हरि करता दया कमाइंदा। गुरमुख उठे उठ बलधार, बलधारी हुक्म जणाइंदा। अन्दरे अन्दर होए गुफ़तार, रसना जिह्वा ना कोए हिलाइंदा। लेखा लिखणा सिरजणहार, सति सतिवादी आप जणाइंदा। दर आ वेख डिठा दरबार, सच सिँघासण हरि जू सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, भेव अभेदा
१०३७ अछल अछेदा आप खुलाइंदा। प्रभ हथ्थ फड़या वरका, वरका वरका पत्रे नाल मिलाईआ। प्रेम प्यार दी कर के बरखा, १०३७
मेघला इक्को धार जणाईआ। भगत भगवान कर के तरसा, रहमत आप जणाईआ। निरवैर निराकार निरँकार लाह के पड़दा, सचखण्ड दुआरे बिन लिखिउँ लेख लेखा अक्खरां नाल जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, देवणहार आप वड्याईआ। देवे वड्याई रविदास चम्यार, गुरमुख सिँघ सिँघ रूप वटाईआ। कलयुग अन्त कर प्यार, परम पुरख सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सचखण्ड दा सच विहार, शब्द इशारे नाल जणाईआ। जो गुरमुख आए चल सच्चे दरबार, श्री भगवान आपणे प्रेम नाल बहाईआ। लकीर नहीं तकदीर मेटी जहान, तदबीर आपणी इक वखाईआ। तस्वीर बणी नौजवान, ला ताअरीफ़ आप सुणाईआ। अग्गे पिच्छे सारे इक्को जिहे नज़री आण, वड्डा छोटा ना कोए जणाईआ। निरगुण सरगुण दोवें रूप प्रसिद्ध विच जहान, बिन रूप सरगुण तों निरगुण नज़र किसे ना आईआ। छोटे बाले दोवें कुरलाण, भगती प्यार मारन धाहींआ। भगती प्यार दा सच विहार, नारी पुरख दए समझाईआ। नार पुरख हरि दी धार, निरगुण जोत विच रुशनाईआ। पुच्छणहारा सन्त सुहेला मीत मुरार, आपणी ख्वाहिश ख्वाहिश विच्चों प्रगटाईआ। क्यों लुक के बैठों सिरजणहार, आपणा नूर छुपाईआ। सच सरूप दे दीदार, तीजे नेत्र तेरा सति नज़री आईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर अग्गों कहे नाल

प्यार, बिन रसना जिह्वा जणाईआ। छब्बी पोह करां सच विहार, हरिसंगत सच दुआरे साचे हुक्म बहाईआ। इक्की मुखीए मुख करतार, पिच्छे संगत सगला संग रखाईआ। सब दे विच फिरे करतार, करता पुरख वड्डी वड्याईआ। इक इक फुल्ल सब दे उत्तों देवे वार, अतोल अतुल आप तुलाईआ। सदी बीहवीं मुल पाए निरँकार, जुग चौकड़ी जो गुरमुख बैठे ध्यान लगाईआ। कुल उधरे विच संसार, मिले माण धन्न जणेंदी माईआ। दोवें रूप कर तैयार, प्यार भगती गंढु वखाईआ। प्यार भगती तों वसे बाहर, धार धर्म इक जणाईआ। धर्म धार दी गोबिन्द पावे सार, दूजे समझ किसे ना आईआ। अगला दस्से फेर विहार, फ़रेब करे ना बेपरवाहीआ। बेऐब खुदाई परवरदिगार, सांझा यार वेस वटाईआ। लाईन सतर नहीं कतार, करता कुदरत रंग रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सचखण्ड दी साची धार, लोकमात दए वखाल, वक्खरा आपणा खेल खलाईआ। अक्खरां विच्चों सृष्टी निरगुण रही भाल, दृष्ट आपणी नज़र किसे ना आईआ। जिन्नां उपर होया आप कृपाल, किरपा निध आपणा मेल मिलाईआ। छब्बी पोह लख चुरासी जम की फाँसी मात गर्भ दस दस मासी सब दा तुटे जंजाल, जीऊँदयां जागदयां वेखदयां सुणदयां बिन भगतीउँ पार कराईआ। एसे कारण आया आप करतार, जुग जुग दा लाहे सिरों उधार, कर्ज़ा मकरूज़ आपणा अदा कराईआ। बीस बीसा हरि जगदीशा सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी फड़ के बांहों देवे तार, तारनहारा इक हो जाईआ। अगला लेखा लिखण तों बाहर कलम काग़ज़ शाही तिन्ने रहे शरमाईआ। हरिसंगत तेरा उच्च मनार, महल अटल इक रुशनाईआ। भगत दुआरा जगत सुधार, सुरत निरत तुरत अकाल मूर्त आपणे नाल मिलाईआ। जन्म कर्म धर्म वरन बरन सब दी आसा मनसा पूरत, पूरब लेखा लहिणा देणा झोली पाईआ। इकीआं इक्की इक्को वार दस्से महूरत, दो इक निरगुण सरगुण निरगुण आपणा अंक जणाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान करे खेल अनन्त कल धारी, कल आपणी कल वरताईआ।

✪ २ मग्घर २०२० बिक्रमी जेठूवाल दरबार विच ✪

निरगुण निरवैर प्रभ तेरा नाता, निर्धन सरधन दए वड्याईआ। उत्तम करे गुरमुख जाता, लेखा चुक्के जगत लोकाईआ। नाम अगम्म देवे दाता, दाता दानी झोली पाईआ। बोध अगाध सुणाए गाथा, धुर दी सच पढ़ाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे रैण अन्धेरी राता, सति सतिवादी चन्द चमकाईआ। जन भगतां बण के पिता माता, पूत सपूत गोद उठाईआ। जन्म जन्म दी पूरी करे ख्वाहिशा, आसा तृष्ना मेट मिटाईआ । घर गोपी काहन मंडल मण्डप सुरती शब्द वखाए रासा, नटुआ आपणा

१०३८ १५

स्वांग वरताईआ। इक इकेला सदा नवेला पुरख समरथ वसे पासा, बेपरवाह विछड़ ना जाईआ। होए सहाई दीनन दीन नाथ अनाथां, दीनां नाथ दया कमाईआ। भेव अभेदा अगम्म अथाह खोल्हे इक खुलासा, खसूसीअत आपणी दए जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग चलवणहारा लख चुरासी राथा, रथ रथवाही इक्को नज़री आईआ। दो जहान सच वखाए तीर्थ ताटा, घाट इक्को सोभा पाईआ। निरगुण सरगुण पूरी करे वाटा, पांधी नज़र कोए ना आईआ। नूर जोत परकासा, प्रकाशवान नूर इलाहीआ। खेले खेल पृथ्मी आकासा, गगन मण्डल सोभा पाईआ। रव सस सूरज चन्न सतार वेखे तमाशा, तमाशबीन खेल खलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, घर साचे रंग रंगाईआ। साचे घर रंग अवल्ला, सचखण्ड निवासी आप रखाईआ। पुरख अबिनाशी इक इकल्ला, बेपरवाह डेरा लाईआ। सच सिँघासण धुर दा मल्ला, जगत नेत्र नज़र किसे ना आईआ। धुर संदेस आदि जुगादि घल्ला, गुर अवतार कर पढ़ाईआ। पीर पैगम्बर फड़ाए पल्ला, भगत भगवान अंग लगाईआ। सन्त साजण निरगुण सरगुण रल्ला, जोती शब्दी जोड़ जुड़ाईआ। गुरमुख गुरसिख वखाए निहचल धाम अटला, ऊँचो ऊँच सोभा पाईआ। पावे सार जलां थलां, जल थल महीअल रिहा समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जोत शब्दी वड्याई वड, जुग चौकड़ी रहे जग

१०३८ गाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरा राह रहे तक्क, तक्कवा ओट इक्को इक रखाईआ। तेरे हथ्थ हकीकत हक़, हक़ूक १०३८

१५ वंडें बेपरवाहीआ। सूरज चन्न कोह करोड़ी चल चल गए थक्क, तेरा पन्ध ना कोए मुकाईआ। निरगुण सरगुण तेरा नाउँ १५

निरँकार पढ़ पढ़ गए अक्क, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ढोले गाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ मथ्थे गए घस, तेरा मस्तक टिक्का जोत ललाट नज़र कोए ना आईआ। दीन मज़्हब ज़ात पात ऊँच नीच मिटी ना वट्ट, बन्नां सके ना कोए तुड़ाईआ। चौदां लोक चोदां तबक रहे नस्स, सारे भज्जण उठ उठ वाहो दाहीआ। पूरी होई ना किसे आस, आसा सब दी नाल मिलाईआ। उच्ची कूक पुकार कह के गए पुरख अबिनाश, निरगुण आवे बेपरवाहीआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त करे दासी दास, धुर दा हुक्म इक वरताईआ। भेव अभेदा अछल अछेदा जन भगतां करे बंद खलास, बंदीख़ाना तोड़ तुड़ाईआ। अन्तर आत्म परमात्म वेखे मार झात, ताकी बंद कवाड़ी कुण्डा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची करनी आप कमाईआ। साची करनी करे निरँकार, निरगुण एको एक खेल कराइंदा। लहिणा देणा पूरब सब दी झोली देवे डार, नेत्र लोचण नैण वेख वखाइंदा। शब्द अगम्मी बोल जैकार, दो जहानां नाअरा इक सुणाइंदा। विष्न ब्रह्मा शिव कर के ख़बरदार, धुर संदेसा राग समझाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर देवे धार,

धुर दी धार आप वखाइंदा। साचे तख्त बैठ सिरजणहार, सिर सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। हुक्म देवे एका वार, एकँकार आप जणाइंदा। सारे बरदे बणो ग़ुलाम, अमाम इक्को नज़री आइंदा। दर सजदा करो सलाम, निवण सो अक्खर इक दृढ़ाइंदा। चार युग दी पिछली कीती होई हराम, सतिजुग साचा राह जणाइंदा। एको इष्ट श्री भगवान, दृष्ट सब नूं आप वखाइंदा। पंज तत कोए ना दिसे काहन, निरगुण घनईया इक्को नज़री आइंदा। काया चोली कोई ना दिसे राम, रमया इक्को सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करता आपणी वंड वंडाइंदा। हरि करता वड्डा खेल अवल्ला, आलमीन कराईआ। दस्तगीर दस्त बदस्त फड़ाए पल्ला, हस्त कीट भेव चुकाईआ। सच दुआरे एको खला, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जुग जन्म दा लहिणा रिहा चुकाईआ। जुग जन्म दा लहिणा मात, हरि मित्र प्यारा आप चुकाईआ। जन भगतां देवे धुर दी दात, वस्त अमोलक झोली पाईआ। कलयुग मेट अन्धेरी रात, साचा नूर दए दरसाईआ। इक सुणाए अगम्मी गाथ, धुर संदेसा राग अलाईआ। निरगुण निरगुण वसे साथ, सरगुण सरगुण जोड़ जुड़ाईआ। साची सेजा भोग बलास, आत्म अन्तर वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सच दुआरे इक वड्याईआ। सच दुआरे सोभावन्त, सो स्वामी खेल कराइंदा। धुरदरगाही इक्को कन्त, नर नरायण नज़री आइंदा। लख चुरासी जीव जंत, साध सन्त आप प्रनाइंदा। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म आप समझाइंदा। मुल्लां शेख़ मसायक बण के पंडत, साची सिख्या आप दृढ़ाइंदा। दूजे दर ना जाए मंगत, देवणहार वेस वटाइंदा। लेखा जाण जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज जोड़ जुड़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाइंदा। साची करनी सचखण्ड दुआर, निरगुण सरगुण दया कमाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव बण भिखार, दर बैठे सीस झुकाईआ। चरण कँवल करन निमस्कार, नेत्र रोवण मारन धाहीआ। करनी कर सिरजणहार, शाह पातशाह तेरी शहिनशाहीआ। कलयुग अन्तिम होए ख्वार, जगत समाज पई लड़ाईआ। सृष्ट सबाई होई विभचार, साचा राह ना कोए दरसाईआ। भरमे भुल्ला सर्ब संसार, भाण्डा भरम ना कोए भंनाईआ। तेरा करे ना कोई प्यार, प्रीती प्रीतम तोड़ ना कोए निभाईआ। तेरा करे ना कोई दीदार, दीद ईद चन्द ना कोए चमकाईआ। ग़फ्लत विच सुत्ता संसार, नेत्र अक्ख ना कोए खुलाईआ। चार वरन अठारां बरन उच्ची कूक करन पुकार, नाअरा इक्को इक जणाईआ। तोबा तोबा परवरदिगार, सच तौफ़ीक तोहे खुदाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, निरगुण निरगुण मंग मंगाईआ। निरगुण मंगे निरगुण दान, निरगुण निरगुण

झोली पाईआ। निरगुण सखी निरगुण काहन, निरगुण गोपी रिहा हंढ्ढाईआ। निरगुण मन्दिर निरगुण मकान, निरगुण बैठा आसण लाईआ। निरगुण नाद शब्द धुन्कान, निरगुण साचा राग सुणाईआ। निरगुण पीण निरगुण खाण, निरगुण आसा तृष्ना वेख वखाईआ। निरगुण खेल दो जहान, निरगुण लख चुरासी डेरा लाईआ। निरगुण निरगुण सके ना कोए पछाण, बेपहचान बैठा मुख छुपाईआ। कलयुग अन्तिम निरगुण निरगुण करे परवान, सरगुण सरगुण दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। निरगुण कहे मेरे दातार, निरगुण तेरी आस रखाईआ। आत्म कहे परमात्म यार, परम पुरख तेरी वड्याईआ। लोकमात विछड़ी तेरी धार, तुध बिन सके ना कोए मिलाईआ। आ वेख मित्र प्यार, मेहरवान नैण उठाईआ। लख चुरासी अन्दर वड़ के रोवे ज़ारो ज़ार, बिन नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका देणा साचा वर, दर तेरे सीस निवाईआ। आत्म कुरलावे मारे धाह, कूक कूक जणाईआ। पुरख अबिनाशी बेपरवाह, तेरी अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। जुग चौकड़ी बीते विच जहां, कलयुग अन्तिम गया आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दे के गए बिआं, लेखा लिख के कलम शाईआ। कलयुग अन्तिम आवे शहिनशाह, शाह पातशाह फेरा पाईआ। जोती जामा वेस वटा, कल कल्की रूप दरसाईआ। साची सखी लए प्रना, परम पुरख बेपरवाहीआ। अन्तर गंढु दए बंधा, तोड़ सके ना कोए लोकाईआ। साचा छन्द दए सुणा, मेरा तेरा ढोला गाईआ। अनन्द कारज दए करा, अनन्द अनन्द विच रखाईआ। लख चुरासी कूड़ी क्रिया गंढु दए मुका, जन्म मरन मात गर्भ फेर ना आईआ। साची सिख्या दए दृढ़ा, चार वरन आप समझाईआ। जिन्हां मिले पुरख बेपरवाह, निरगुण सरगुण लए जगाईआ। एथे ओथे बण मलाह, बेड़ी नईया नौका पार कराईआ। कोट जन्म दे बख्श गुनाह, पुनीत पतित पाक इक्को रूप वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, आत्म आपणा रंग रंगाईआ। आत्म सुण परमात्म बोल, निरगुण धार आप जणाइंदा। नित नवित्त वसां तेरे कोल, सुहञ्जणी सेज ना कोए जणाइंदा। जुग चौकड़ी तोलां पूरा तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाइंदा। सच सुणावां इक्को ढोल, धुन अनादी नाद अल्हाइंदा। सच दुआरा आपणा खोल्ह, पड़दा इक्को इक उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान मेहरवान मेहरवान मेहर नज़र आप तकाइंदा। मेहर नज़र तक्के आप, आपणी दया कमाईआ। आदि जुगादी माई बाप, पिता पुरख वड्डी वड्याईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां दा इक्को जाप, दूजा नज़र कोए ना आईआ। निरगुण निरगुण सज्जण साक, सरगुण नाता पंज तत नज़री आईआ। जिस अन्तर देवे आपणा साथ, सगला संग निभाईआ। सो चढ़े साचे राथ, साची डोली

इक बहाईआ। पार उतारे आपणे घाट, मझधार ना कोए रुढ़ाईआ। अग्गे जा के पुच्छे वात, पिछला लेखा दए मुकाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत कोई रहे ना नार कमज़ात, कुलखणी रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे लए तराईआ। तारन को गुर एक स्वामी, पारब्रह्म प्रभ दया कमाइंदा। आदि जुगादी अन्तरजामी, जुग करता वेख वखाइंदा। सुरती शब्दी मेला हाणी हाणी, साची जोड़ी जोड़ जुड़ाइंदा। दो जहानां अकथ कहाणी बिन रसना जिह्वा आप सुणाइंदा। चरण सरोवर ठंडा पाणी, अमृत रस जाम प्याइंदा। आवण जावण चुक्के काणी, कालख टिक्का मस्तक कूड़ी छाही मेट मिटाइंदा। लेखा चुके चार खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज पन्ध मुकाइंदा। भेव खुल्हे चार बाणी, परा पसन्ती मद्धम बैखरी आपणा नाम समझाइंदा। जिस जन बख्शे चरण कँवल ध्यानी, तिस आपणे रंग रंगाइंदा। जींवदयां जग देवे अमरापद सच निशानी, निशाना इक्को इक दरसाइंदा। कलयुग अन्त श्री भगवन्त हरिसंगत विटुह आप कुरबानी, तन माटी ख़ाक भेंट चढ़ाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची रीती आप वखाइंदा। साची रीती सतिजुग धार, सति सतिवादी आप जणाईआ। चार वरन दा इक प्यार, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश ना वंड वंडाईआ। जगत समाज कर ख्वार, धुर दी आवाज़ इक अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी
१०४२ किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन साचे वेख वखाईआ। हरिजन वेखे सतिगुर सच, सति सतिवादी दया कमाइंदा। १०४२
१५ साढे तिन्न करोड़ अन्दर रिहा रच, लूं लूं इक्को नूर नज़री आइंदा। घट अमृत देवे रस, निझर झिरना आप झिराइंदा। १५
भीतर जाए वस, बाहरों नज़र कोए ना पाइंदा। दूर दुराडा आवे नठ्ठ, बण पांधी पन्ध मुकाइंदा। लेखे ला बहत्तर नाड़ी रत, रुत रुतड़ी आप महकाइंदा। जानणहारा मित गत, गति मित आपणी झोली पाइंदा। सन्त सुहेले सज्जण रख, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। कूड़ी क्रिया नालों कर के वक्ख, साचा मार्ग इक समझाइंदा। शब्द अगम्मी चाढ़ रथ, बण रथवाही सेव कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची सिख्या इक वखाइंदा। साची सिख्या लोकमात, सतिजुग धार आप बणाईआ। इक्को ओट पुरख समराथ, दूजा नज़र कोए ना आईआ। साध संगत लेखा तेरे हथ्थ, मुल्लां शेख़ पंडत पांधा ग्रन्थी मिले ना कोए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक विहारा सब नूं दए जणाईआ। इक विहारा साचा खेल, हरि ख़ालक ख़लक जणाईआ। नारी पुरुष जगत मेल, आत्म परमात्म धुर दी धार समझाईआ। लेखा जाण गुरु गुर चेल, चेला गुरू दए वड्याईआ। करे खेल आप नवेल, सज्जण सुहेल सच्चा शहिनशाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं

भगवान, आत्म परमात्म कर परवान, तन माटी ख़ाकी देवे दान, जगत नाता पुरख बिधाता गुरमुख साथा सगला संग बंधप बन्धन विच बंदगी आप रखाईआ। भगत भगवान साचे खेड़े, सच मन्दिर सोभा पाईआ। दोहां चुक्के जगत झेड़े, झगड़ा अवर ना कोए जणाईआ। रल मिल बैठे इक्को बेड़े, पातण माही बणया बेपरवाहीआ। सच किनारे लग्गण डेरे, तट इक्को सोभा पाईआ। कदी ना आवे विच घुमण घेरे, तारनहार दया कमाईआ। जुग चौकड़ी कटे गेड़े, गेड़ा आपणे नाल रखाईआ। लेखे चुक्कण मेरे मेरे, तेरा तू ही नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगत भगवान होए सहाईआ। भगत भगवान इक्को रंग, हरि करता आपणा आप रंगाईआ। दोहां सुहञ्जणी सेज पलँघ, घर आत्म सोभा पाईआ। गृह वज्जे नाम सच अनन्द, ताल इक्को इक रखाईआ। गीत अगम्मी धुर दा छन्द, सोहला इक समझाईआ। सति सतिवादी सच अनन्द, रस इक्को इक रखाईआ। जुग जन्म दा मेट पन्ध, पत्तण वेखे बेपरवाहीआ। आत्म परमात्म पाए गंढु, गंढुणहार गोपाल स्वामी इक्को नज़री आईआ। मन वासना तोड़ घमण्ड, रीती नीती दए जणाईआ। कर प्रकाश अन्धेरे अन्ध, साचा दीप डगमगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भगतन मेला सहिज सुभाईआ। भगत भगवान बहिण इकट्ठे, सच दुआर वज्जे वधाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी साचे मते, सुलहकुल सुलह इक्को इक रखाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर होवण पक्के, नाता सके ना कोए तुड़ाईआ। लख चुरासी जीव जंत हक़े बक्के, हकीकत समझ किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। भगत भगवान इक महल्ल, सच महिफ़ल नाम लगाईआ। सदा सदा सद रहे अटल, उच्च अगम्म अथाह रिहा सुहाईआ। जोती शब्दी धार रल, निरगुण वेखे बेपरवाहीआ। करे खेल प्रगट कलयुग आपणी कल, कलधारी वड वड्याईआ। शाह पातशाह अछल अछल्ल, भेव अभेदा आपणे विच रखाईआ। जन भगतां उत्तों जाए बलि बलि, बलिहारी खुशी मनाईआ। नव नौ चार होया स्वाल हल, लेखा लेखे लए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन साचे लए उठाईआ। भगत भगवान खेल अनडिठ, जगत नेत्र नज़र ना आइंदा। निरगुण निरगुण करे हित, सरगुण सरगुण मेल मिलाइंदा। कर खेल अबिनाशी अचुत, चेतन धार आप समझाइंदा। सच सुहञ्जणी सोहे रुत्त, रुत्त रुतड़ी आप महकाइंदा। जन्म कर्म दी लाहे भुक्ख, तृष्ना रोग ना कोए सताइंदा। नाता तोड़ मात गर्भ कुक्ख, लख चुरासी पन्ध मुकाइंदा। साची गोदी आपणी चुक्क, दो जहानां शुकर मनाइंदा। निरगुण धारों निरवैर उठ, नर निरँकार खेल खलाइंदा। जन भगत मीता आपे लए पुच्छ, दर दर घर घर वेख वखाइंदा। सन्त सुहेला कदे ना जाए लुक, पड़दा उहला ना कोए वखाइंदा। नीवां हो के

वेखे नेड़े ढुक, दूर दुराडा पन्ध चुकाइंदा। उजल करे भगतां मुख, दुरमति मैल मात धवाइंदा। आत्म अन्तर देवे सुख, बाहरों नज़र ना कोए रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि करनी आप कमाइंदा। भगत भगवान करनी कर, हरि करता वड वड्याईआ। सति सतिवादी खोल्ह दर, दर दरवेश डेरा लाईआ। धुर संदेस अक्खर पढ़, निरअक्खर रिहा जणाईआ। साचे पौड़े महल्ले चढ़, मन्दिर इक्को इक सुहाईआ। सति सरूपी हरि जू खड़, सति सतिवादी दरस वखाईआ। जन भगतां बन्न्हाए आपणे लड़, पल्लू आपणी गंढु रखाईआ। साचा ढोला लए पढ़, मेरा तेरा राग सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार सदा वड्याईआ। देवे वड्याई भगत भगवान, दो जहानां सोभा पाइंदा। कलयुग अन्तिम हो प्रधान, धुर फ़रमाना हुक्म सुणाइंदा। सच संदेसा इक ज्ञान नाम निधाना झोली पाइंदा। कूड़ी क्रिया मेटे शैतान, संसा रोग सर्ब मुकाइंदा। अमृत आत्म रस पीण खाण, तृष्ना भुक्ख ना कोए वधाइंदा। चरण कँवल इक ध्यान, इष्ट दृष्ट इक प्रगटाइंदा। सच भूमका दरस्स अस्थान, मन्दिर इक्को इक वखाइंदा। नाद अनाद सुणाए कान, अनहद रागी राग अल्हाइंदा। किरपा कर नौजवान, बिरध बाल वेख वखाइंदा। रक्षक रक्षया करे आण, बख्शश आपणी आप वरताइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा

१०४४ वर, जन भगतां संग निभाइंदा। भगतां संग निभाए तोड़, अद्धविचकार ना कोए तुड़ाईआ। जुग जन्म दे विछड़े लए जोड़, १०४४

१५ जोड़ी आपणे नाल रलाईआ। नाम चढ़ाए साचे घोड़, शब्दी डोर हत्थ फड़ाईआ। आपे वेखे कर के ग़ौर, गहर गम्भीर १५

पड़दा दए चुकाईआ। दूर दुराडा जाए बौहड़, नेरन नेरा नज़री आईआ। जन्म जन्म दी मिटाए औड़, तृष्ना भुक्ख गंवाईआ। भगत सुहेला बण के वसे कोल, गुर चेला वंड वंडाईआ। भाग लगाए उपर धरनी धौल, धरत धवल खुशी वखाईआ। हर घट स्वामी जाए मौल, मौला आपणा खेल वखाईआ। भगत भगवान धुर दा तोल, लोकमात पूरा दए कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, हरिजन सच्चे लए मिलाईआ। हरिजन मिलावा भगवान भगत, देवणहार वड्याईआ। वेख वखाए सृष्ट सबाई जगत, जगजीवण दाता फेरा पाईआ। निरगुण निरवैर निरँकार साची धार बण के आए परत, परमात्म आपणी कार कमाईआ। भगत भगवान रहिण ना देवे कोई फ़र्क, फ़ैसला इक्को हत्थ रखाईआ। जुग चौकड़ी लगदी रहे शर्त, शरअ धर्म नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जन भगत लए तराईआ। हरि भगत तारे बण मित, मित्र प्यारा रूप वखाईआ। धुरदरगाही बण के सच्चा पित, पिता पूत गोद उठाईआ। निरगुण हो के करे सरगुण हित, हितकारी वेस वटाईआ। शत्रु हो के वसे चित, मन ठगौरी कोए

रहिण ना पाईआ। दाता हो के देवे भिख, भिच्छया इक्को इक वरताईआ। सतिगुर हो के वेखे सिख, सिख्या साची इक समझाईआ। मेहरवान हो के लेखा देवे लिख, लिख्या लेख ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, जन भगत लए तराईआ। भगत जनां प्रभ तारन आया, चरण कँवल दए सरनाईआ। दूर दुराडे फेरा पाया, नेरन नेरा नज़री आईआ। जगत तृष्ना डेरा ढाहया, माया ममता मोह चुकाईआ। साची संगता नाल मिलाया, संग वसे बेपरवाहीआ। आपणा रंग नाम चढ़ाया, उतर कदे ना जाईआ। जन्म जन्म दा पन्ध मुकाया, पांधी बणया शहिनशाहीआ। भगत भगवान घर इक्को अनन्द रखाया, अनन्द अनन्द मंगल आपणा राग जणाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, सद दया कमाया, सिन्ध सागर रूप समाईआ।

७ मग्घर २०२० बिक्रमी अजीत सिँघ दे गृह बटाला ज़िला गुरदासपुर

शाह पातशाह शहिनशाह जबर, ज़ाहर ज़हूर नज़र ना आईआ। जुग चौकड़ी रख आपणा सबर, बेसबर करे लोकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बणा टब्बर, जीआं जंतां संग रखाईआ। लेखा जाण मढ़ी गौर क़बर, निरगुण सरगुण वेख वखाईआ। निरवैर पुरख इक्को बब्बर, भबक आपणे नाम लगाईआ। अमृत रस देवे मधुर, झिरना इक्को सच झिराईआ। लेखा जाणे ज़िमीं असमान अम्बर, डूंग्घे सागर फोल फोलाईआ। सर्ब कला आपे भरतम्बर, भरपूर रिहा सर्ब ठाईंआ। लख चुरासी जानणहारा झंजट, जुग चौकड़ी वंड वंडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। शाह पातशाह शहिनशाह अन रंग, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड पुरी लोअ दो जहान निरगुण सरगुण वेखे लँघ, पांधी आपणा पन्ध मुकाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी आदि जुगादी शब्द सुहञ्जणी सेज वेखे इक पलँघ, पावा चूल वंड ना कोए वंडाईआ। नाम निधान नौजवान सूरा सरबँग वजाए सच मृदंग, नाद धुन इक शनवाईआ। दीन दयाल ठाकर स्वामी निहकर्मी भगत भगवन्त वसे संग, सति सतिवादी आपणा जोड़ जुड़ाईआ। पतिपरमेश्वर दीन दया वेख वखाए ब्रह्म हँ, हँ मम भेव चुकाईआ। गीत गोबिन्द शब्द अनाद धुन राग सुणाए छन्द, अनबोलत आपणा बोल अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाईआ। शहिनशाह पातशाह दूलो दूल, भूपन भूप खेल खलाइंदा। आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण बन्नणहारा सति असूल, असलीअत असल विच्चों आप प्रगटाइंदा। सच संदेस धुर फ़रमाना करनहारा आप क़बूल, हुक्म हाकम आपणी झोली पाइंदा। जोती

१०४५
१५

जाता पुरख बिधाता नूर इलाही इक महिबूब, सच अरूज सोभा पाइंदा। जुग चौकड़ी लेख लिख्त कलम शाही दे ना सके कोए सबूत, साख्यात हथ्थ किसे ना आइंदा। नव नौ चार दहि दिश वसणहारा चारे कूट, गृह मन्दिर अन्दर भगत दुआरे सोभा पाइंदा। नित नवित्त कर कर हित मुरीद मुर्शद भगत भगवान नाता तोड़े जूठ झूठ, सच सुच साहिब सतिगुर आप दृढ़ाइंदा। सन्त सुहेला गुरु गुर चेला ग़रीब निमाणयां उपर तुठ, मेहरवान दीन दयाल आपणी दया कमाइंदा। जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण अन्दर बैठा लुक, नेत्र लोचण नैण जीव जंत नज़र किसे ना आइंदा। कलयुग अन्त श्री भगवन्त नर हरि नरायण अगम्मी कन्त उजल करे मुख, गुरमुख सज्जण आप उठाइंदा। जन्म कर्म पूरब जगत मेट दुःख, भाण्डा भरम भउ भंनाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाइंदा। शाह पातशाह हरि राजन राज, वड्ड वड्डा वड वड्याईआ। जुग चौकड़ी साजणहारा साज, रचना रच रच वेख वखाईआ। नित नवित्त करनहारा काज, करता पुरख आपणी करनी आप कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग देवणहारा दात, वस्त अमोलक झोली पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जोड़नहारा नात, नाता बिधाता इक रखाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान लिखणहारा कलम दवात, काग़ज़ शाही जोड़ जुड़ाईआ। कूड़ी क्रिया माया ममता हउमे हंगता मेटणहारा अन्धेरी रात, साचा चन्द नूर इक चमकाईआ। आत्म परमात्म बोध अगाधी दस्सणहारा गाथ, साचा ढोला इक्को राग सुणाईआ। चार वरन पढ़ावणहारा इक जमात, निअक्खर अक्खर आपणा आप जणाईआ। दिवस रैण रखणहार प्रभात, अट्ठे पहर इक्को रंग रंगाईआ। वसणहारा इक इकांत, सचखण्ड निवासी पुरख अबिनाशी सच दुआरे नज़री आईआ। लख चुरासी अन्दर मारनहारा झात, घट घट अन्दर काया मन्दिर साढे तिन्न हथ्थ बंक बैठा डेरा लाईआ। जन भगतां सन्तां पुच्छणहारा वात, लेखा जाण मस्तक माथ, पूरब लहिणा झोली पाईआ। खेलणहारा खेल तमाश, वेखणहारा पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल आपणी रास रचाईआ। करनहारा नूर प्रकाश, बणनहारा दासी दास, सेवक साचा रूप वटाईआ। जन भगतां पूरी करे आस, जन्म जन्म मिटा प्यास, आसा तृष्ना देवे डेरा ढाहीआ। सतिगुर शब्द स्वामी अन्तरजामी निहकामी निहकर्मी सदा वसे पास, अगला पिछला विछोड़ा देवे पन्ध कटाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, किसे विच ना आवे ख्वाहिश, ख्वाहिश सब दी पूर कराईआ।

७ मग्घर २०२० बिक्रमी बंता सिँघ दे गृह पंज गराईं ज़िला गुरदासपुर

सति सतिवादी धुर दा टिक्का, सति पुरख निरँजण आप लगाइंदा। खुशी मनाए पहला पुत्त सतिजुग निक्का, घर साचे सोभा पाइंदा। पुरख अकाल दीन दयाल वर इक्को दित्ता, वस्त अमोलक झोली पाइंदा। जन भगतां करना साचा हिता, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। दीन दयाल सब दा पिता, पुरख पुरखोतम इक्को नज़री आइंदा। दो जहान जिस दा किता, ब्रह्मण्ड खण्ड चरणां हेठ दबाइंदा। करे खेल सदा अनडिठा, खाणी बाणी भेव ना कोए रखाइंदा। आपे जाणे आपणी वार थिता, घड़ी पल वंड ना कोए वंडाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा नाम कहाणी गाउँदे किस्सा, सो सब दा लेखा आपणे विच छुपाइंदा। निरगुण सरगुण आदि जुगादि देवणहारा हिस्सा, साची वंड आप वंडाइंदा। नाम अमोलक रस देवे इक्को मिट्ठा, पुरख अबिनाशी आपणी दया कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची करनी आप कमाइंदा। खुशी मनाए छोटा पुत, पहला आपणा रंग रंगाईआ। करे खेल अबिनाशी अचुत, निरवैर होए सहाईआ। कलयुग विच्चों सुहाई सतिजुग रुत्त, रुतड़ी आपणे नाम महकाईआ। परम पुरख प्रभ गया तुठ, दीनन आपणा भेव चुकाईआ। सन्त सुहेले गोदी चुक्क, गुरमुख रिहा जगाईआ। अन्दर वड़ के रिहा पुछ, बाहरों नज़र किसे ना आईआ। जुग जन्म दी लाहे भुक्ख, तृष्ना रोग मिटाईआ। उजल करे मात मुख, मुख सिफ्ती सिफ्त सालाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेहरवान होए सहाईआ। सतिजुग कहे मेरा सोहणा रंग, श्री भगवान आप रंगाइंदा। नाम वजाए इक मृदंग, निरगुण सरगुण आप सुणाइंदा। ब्रह्मण्ड खण्ड आपे लँघ, मन्दिर अन्दर डेरा लाइंदा। लख चुरासी सेज पलँघ, आत्म परमात्म आप हंढाइंदा। भगत सुहेला बण के संग, मीत मुरारा मित्र हो जाइंदा। निरगुण नूर चाढ़ चन्द, जगत अन्धेरा आप मिटाइंदा। गीत सुहागी सुणा छन्द, साचा मन्त्र इक दृढ़ाइंदा। घर मन्दिर दे अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों प्रगटाइंदा। मेरी पूरी कर मंग, आसा तृष्ना मेट मिटाइंदा। सति धर्म दा बेड़ा बंध, हरि जू आपणे कंध उठाइंदा। जुग चौकड़ी टुट्टी गंढ, डोरी आपणी तन्द बंधाइंदा। दीन दयाल हो बख्शंद, बख्शिश रहमत इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाइंदा। सतिजुग कहे मेरा ठाकर एक, जिस दिती माण वड्याईआ। आदि जुगादी उस दी टेक, जुग चौकड़ी होए सहाईआ। निरवैर पुरख लिखे लेख, लेखा जाणे बिन कलम शाहीआ। साचा करे इक्को हेत, हितकारी बेपरवाहीआ। सच धर्म दी ला मेख, जड़ इक्को इक जणाईआ। शब्द अगम्मी सतिगुर भेज, सच संदेसा रिहा सुणाईआ। हरि का नाम कोई ना सके वेच, कीमत सके ना कोए गणाईआ। कूड़ी क्रिया मेटे भेख, साचा

मार्ग इक समझाईआ। पुरख अकाल करो आदेस, सतिजुग साचा राह जणाईआ। आदि जुगादि रहे हमेश, ना मरे ना जाईआ। सेवा ला विष्न ब्रह्म महेष, गणपति हुक्म सुणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर निउँ निउँ सजदा करन आदेस, चरण कँवल धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। सतिजुग कहे मोहे चाउ घनेरा, घर वज्जी नाम वधाईआ। सो निरँजण पाया फेरा, बेपरवाह नज़र किसे ना आईआ। हरि पुरख निरँजण लाया डेरा, जोती जाता डगमगाईआ। एकँकारा वड वडेरा, आदि अन्त कोई कहिण ना पाईआ। आदि निरँजण मेटणहार अन्धेरा, इक्को नूर करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता देवे गेड़ा, जुग चौकड़ी आप भवाईआ। श्री भगवान मेटे झेड़ा, कूड़ी क्रिया डेरा ढाहीआ। पारब्रह्म कहे मैं तेरा तूं मेरा, ब्रह्म आपणा रंग वखाईआ। साचा वसे मन्दिर खेड़ा, बंक मिले वड्याईआ। जिस घर वसे साहिब सतिगुर इक्को चेरा, गुर चेला रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवे माण वड्याईआ। सतिजुग कहे मोहे चढ़या चाउ, घर साचे वज्जी वधाईआ। दाता मिल्या बेपरवाहो, पारब्रह्म सहिज सुखदाईआ। फड़ फड़ मार्ग पाए राहो, रहबर इक्को नज़री आईआ। सन्त सुहेले गुरु गुर चेले भगत भगवान चलाए आपणे भाउ, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। नथाव्याँ देवे साचा थाउँ, ग़रीब निमाणे गले लगाईआ। गुरमुख बणाए हँस काउँ, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। बण सुहेला देवे ठंडी छाउँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। एथे ओथे पिता माउँ, गोद सुहञ्जणी रिहा उठाईआ। लेखा जाणे नगर ग्राउँ, साढे तिन्न हथ्थ दए वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद आपणा रंग वखाईआ। सतिजुग कहे प्रभ मिल्या ठाकर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। लेख चुकाए कलयुग डूंघा सागर, गहर गम्भीर बेपरवाहीआ। छोटे बाले देवे आदर, मेहर नज़र नैण उठाईआ। किरपा करे करीम कादर, हरि करता होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। सतिजुग कहे मेरा मेला जगत, सो सतिगुर आप कराईआ। लख चुरासी विच्चों लभ्भ भगत, भगवन आपणा संग रखाईआ। आत्म परमात्म देवणहारा शक्ति, शक्ती इक्को इक जणाईआ। आदि जुगादि ना सोग ना कोई हरख, चिन्ता ग़म ना कोए जणाईआ। निरगुण सके कोई ना परख, सरगुण समझ कोई ना आईआ। कर किरपा मोहे दित्ता दरस, निज नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। छोटे बाले मेल मिलाया आपणा परत, पारब्रह्म प्रभ पड़दा रिहा उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दी लाउँदे गए शर्त, लेखा लिख के कलम शाहीआ। सो स्वामी रहिण ना देवे फ़र्क, फ़ैसला आपणे हथ्थ रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद वेखे थाउँ थाईंआ। सतिजुग कहे मेरा रंग

रंगीला, प्रभ इक्को नज़री आईआ। कलयुग अन्तिम बणया सच वसीला, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। करना प्या ना कोई वकीला, सच अदालत इक्को रिहा समझाईआ। जिस नूं कहिन्दे सूहा पीला लाल नीला, सो नीली धारों पार डेरा बैठा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी बेपरवाहीआ। सतिजुग कहे मेरा ठाकर स्वामी, शहिनशाह आपणी दया कमाइंदा। सर्ब जीआं घट अन्तरजामी, दर दर घर घर वेख वखाइंदा। सति धर्म सुणाए अगम्मी बाणी, धुर दा राग आप अलाइंदा। लेखा जाणे चारे खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फोल फोलाइंदा। लख चुरासी देवे दानी, दाता इक्को नज़री आइंदा। तीर निराला मारे कानी, अणयाला आप चलाइंदा। अमृत देवे ठंडा पाणी, सर सरोवर इक वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद सद आपणा संग निभाइंदा। सतिजुग कहे मेरा संगी एक, एकँकारा नज़री आईआ। चरण कँवल जिस बख़्शी टेक, सिर बैठा हथ्थ रखाईआ। बुध मति जिस कीती विवेक, मन वासना डेरा ढाहीआ। आत्म परमात्म जिस खेली खेड, ख़ालक ख़लक रूप नज़री आईआ। नित नवित्त जो धारे भेख, निरगुण सरगुण फेरा पाईआ। भगत भगवान जो करे हेत, हितकारी सद अख्वाईआ। रुत्त सुहञ्जणी सदा मौले चेत, ख़िज़ां रूप ना कोए वखाईआ। तिस सहिब करां आदेस, निउँ निउँ लागां पाईंआ। दूर दुराडा नेड़े हो के लवां वेख, नेत्र लोचण नैण अक्ख खुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, नित नवित्त आपणा राह जणाईआ। सतिजुग कहे प्रभ दस्से राह, मार्ग इक्को इक समझाइंदा। सति पुरख निरँजण बण मलाह, बेड़ा आपणे कंध उठाइंदा। सन्त सुहेले लए जगा, आलस निंद्रा मेट मिटाइंदा। शब्द इशारे नाल लए समझा, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोए हिलाइंदा। वेखणहारा समुंद सागर जल अस्गाह, उच्चे टिल्ले पर्बत फोल फोलाइंदा। दृढ़ावणहारा आपणा नाँ, नाउँ निरँकारा आप जणाइंदा। बणनहारा पिता माँ, पूत सपूते गोद बहाइंदा। बणावणहारा हँस काँ, कागों हँस आप उडाइंदा। देवणहारा ठंडी छाँ, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। कलयुग अन्तिम लहिणा रिहा मुका, सतिजुग साचा रंग रंगाइंदा। साचा सोहला रिहा गा, सोहँ ढोला आप जणाइंदा। बण विचोला रिहा मिला, दूर दुराडा पन्ध मुकाइंदा। पड़दा उहला चुका, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, घर साचे सोभा पाइंदा। सतिजुग कहे प्रभ मेरा स्वामी, साहिब सतिगुर नज़री आईआ। आदि जुगादि जिस दी अकथ कहाणी, रसना जिह्वा कथ ना सके राईआ। जुग चौकड़ी जिस दी सदा जवानी, जोबन मता बेपरवाहीआ। हुक्मे अन्तर जिस दे चारे खाणी, चारे बाणी ढोला गाईआ। चरणां हेठां जिस दे सत्त सरोवर सागर अमृत पाणी, जल धरती ख़ाक रही राह तकाईआ। जिस दा महल अटल

उच्च पद निरबाणी, सचखण्ड बैठा डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सति सतिवादी हो सहाईआ। सतिजुग कहे मेरा भगवान, भगवन इक्को नज़री आईआ। कलयुग अन्तिम दित्ता दान, दात अमोलक मेरी झोली पाईआ। सति धर्म दा बणाए काहन, बंसुरी नाम हथ्थ फड़ाईआ। धर्म वखाए इक निशान, शाह सुल्ताना आप झुलाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां लए ब्यान, पिछला लेखा रिहा चुकाईआ। अग्गे रही ना किसे आण, सीस सके ना कोए उठाईआ। सारे चरणीं डिगे आण, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। मैं नंन्हा बच्चा वेख होया हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। चुप चुपीते सारे सुणन फ़रमान, बण फ़रमाबरदार सेव कमाईआ। तू ही तू ही ढोला सारे गाण, मैं ममता चुक्की सर्ब लोकाईआ। नेत्र लोचण दर्शन इक्को नैण पाण, कँवल नैण नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, मोहे बाले रिहा समझाईआ। बाला कहे प्रभ देवे सद्दा, धुर दा हुक्म आप जणाईआ। हुक्मे अन्दर दो जहान बद्धा, लोक परलोक आपणा बन्धन रिहा सुहाईआ। सतिजुग तेरा पड़दा कज्जा, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आपणी धारों उठया बच्चा, बचपन प्रभ दी झोली पाईआ। पुरख अकाल बचन देवे सच्चा, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। जन भगत कोई ना रहे कच्चा, डोरी तेरे हथ्थ फड़ाईआ। दोए जोड़ कर निमस्कार कहे अच्छा, वाहवा तेरी वड वड्याईआ। साचा मार्ग मोहे दस्सा, जन भगतां मेल मिलाईआ। भगतां विच बहि के लोकमात वसां, अडरा डेरा ना कोए लगाईआ। दूर दुराडा वेख के नट्ठां, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। दोए जोड़ चरणी ढट्ठां, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। धन्न भाग जिस मिल्या प्रभ तत्तां अट्ठां, नौ दुआरे डेरा ढाहीआ। साचे मन्दिर बहि के हस्सां, जिस घर वज्जे तेरी वधाईआ। चार कुण्ट दहि दिशा नौ खण्ड पृथ्मी होका दे दे दस्सां, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। कूड़ कुड़यारे पावां ग़शां, सुरती सुरत दयां भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दित्ता सच्चा वर, मार्ग सच्चा इक दृढ़ाईआ। सतिजुग कहे प्रभ होया दयाल, दीन दयाल दया कमाईआ। सच दुआरा दस्सया इक धर्मसाल, साचा धर्म दए जणाईआ। जिस घर ग़रीब निमाणयां होए प्रितपाल, ऊँचां नीचां राउ रंकां मिले वड्याईआ। जिथ्थे इक्को माण बिरध बाल, वड्डा छोटा ना कोए रखाईआ। जिस घर वसण शाह कंगाल, रूप इक्को नज़री आईआ। सो दुआर सतिजुग लैणा भाल, पुरख अबिनाशी दित्ता जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दित्ता सच्चा वर, सच संदेसा आप अलाईआ। सतिजुग कहे मोहे मिले दुआर, जिस घर वसे बेपरवाहीआ। नज़री आवे सांझा यार, लाशरीक नूर इलाहीआ। साचा काअबा दए वखाल, हुजरा इक्को इक समझाईआ। जलवा देवे नूर जलाल, ज़ाहर ज़हूर बेपरवाहीआ। जोती जगे बेमिसाल, मिसल

सके ना कोई समझाईआ। सो मन्दिर वेखां सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा सोभा पाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी विच्चों करां भाल, उतर पूरब पच्छिम दक्खण वेख वखाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ वेखां हाल, घर घर आपणी अलख जगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दित्ता साचा वर, मोहे मार्ग इक समझाईआ। प्रभ जी मार्ग दस्सया मात, शब्द संदेसा इक सुणाईआ। जन भगतां तेरा निभे साथ, दूजा संग ना कोए निभाईआ। सच दुआरे पढ़नी गाथ, पूजा इक्को इक वखाईआ। पतण मिले माही घाट, बेपरवाह नज़री आईआ। डूंघे सागर पुच्छे वात, जगत भँवरी बाहर कढ्ढाईआ। पिछली मेट अन्धेरी रात, तेरा साचा चन्द चमकाईआ। जन भगतां नाल कराए बात, बातन आपणा भेव जणाईआ। नज़री आए साख्यात, साखी साची दए सुणाईआ। लेखा जाणे कायनत, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दित्ता इक वर, सतिजुग सच सच समझाईआ। सतिजुग कहे प्रभ तेरी सिख्या, सच स्वामी झोली पाईआ। चार वरन तेरा नूर दिस्सया, चार कुण्ट तेरी रुशनाईआ। ज़ात पात दीन मज़्हब तेरा नज़र ना आया हिस्सया, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। हर घट अन्तर दिसे सुत्ता दे कर पिठया, तेरी करवट सके ना कोए बदलाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरे नाउँ दा पढ़दे चिठया, बण चिट्ठी रसाइण घर घर होका गए सुणाईआ। जगत जहान दस्सण मिथ्या, थिर रहिण कोए ना पाईआ। भगत भगवान लेखा इक्को लिख्या, ना कोई मेटे मेट मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। सतिजुग कहे प्रभ खोल्हे भेद, अनभव आपणी धार जणाईआ। समझ ना सके चार वेद, पुराण अठारां सीस निवाईआ। निरगुण निरगुण खेले खेड, सरगुण सरगुण वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी गुर अवतार पीर पैगम्बर भेज, भजन बंदगी नाउँ संदेसा इक सुणाईआ। कन्त बण के हंढाउँदा रिहा सेज, नारी आपणा रंग रंगाईआ। कलयुग अन्तिम नूरी तेज, जोती जलवा करे रुशनाईआ। आदि जुगादी रहे सदा हमेस, ना मरे ना जाईआ। सतिजुग साचे दए संदेस, धुर स्नेहड़ा इक सुणाईआ। पुरख अकाल वड नरेस, दो जहानां नज़री आईआ। मुच्छ दाढ़ी ना कोई केस, मूंड मुंडाए ना बेपरवाहीआ। लेखा जाणे मुल्लां शेख़, पीर पैगम्बर गौंस कुतब मसायक वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सतिजुग तेरा रंग जणाईआ। सतिजुग तेरा रंग अवल्ला हरि सतिगुर आप बणाया। जन भगत फड़ाए इक्को पल्ला, भगती गंढु नाम पवाया। सच संदेस धुर दा घल्ला, साचा नाम मन्त्र इक दृढ़ाया। महल अटल इक्को मल्ला, उच्च अगम्म अथाह डेरा लाया। जोती शब्दी धार रल्ला, रूप रंग रेख ना कोए वखाया। तीर तलवार ना कोए भल्ला, नेज़ा हथ्थ ना कोए चमकाया। करे खेल अछल्ल अछल्ला, वल छलधारी आपणा फेरा पाया। सच प्रकाश दीपक

१०५१ १५

बला, तेल बाती ना कोए टिकाया। भगत भगवान दुआरे खला, ख़ालक ख़लक नज़र किसे ना आया। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहार साचा वर, सतिजुग मीता ठांडा सीता भगतन रीता इक्को राह वखाया। सो पुरख कहे सुण सतिजुग बाल, बाली बुध जणाईआ। दीन दयाल कहे सुण भगत जवान, जोबन तेरा इक्को नज़री आईआ। सति दुआरा धर्मसाल, सचखण्ड निवासी दए समझाईआ। छत्ती युग जिस दी करदे रहे भाल, जुग चौकड़ी नैण उठाईआ। गुर अवतार जिस दा देंदे रहे अहिवाल, पीर पैगम्बर लेख लिखाईआ। जिस नूं मन्नदे रहे काल दयाल, महाकाल नाउँ वड्याईआ। सो लेखा जाणे दो जहान, निरगुण सरगुण आपणी कार कमाईआ। सतिजुग साचे देवे दान, सच नाम आप वरताईआ। भगत भगवान कर परवान, परवाना इक्को हथ्थ फड़ाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड खुशी मनाण, पुरी लोअ राग अल़ाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव राह तकाण, नेत्र नैण बैठे उठाईआ। सतिजुग तेरा मंगया मिले दान, पुरख अकाल दया कमाईआ। जन भगत तेरा भगवन होया रखवाल, दूजा नज़र कोए ना आईआ। जगत विचोला बणया आण, बेपहचान फेरा पाईआ। प्रभ सरनाई सच्चा धर्म ईमान, ज़ात पात दीन मज़्ब सब दी ज़ात जाति नूर इक खुदाईआ। जिस दी कदे ना होए वफ़ात, मढ़ी गोर ना कोए दबाईआ। सो सतिजुग देवे दात, सो भगतां वसे साथ, सो दोहां लेखा रखे आपणे हाथ, बिन हथ्थां सब नूं बन्धन पाईआ। रल मिल दो जहान ब्रह्मण्ड खण्ड गुर अवतार पीर पैगम्बर कर सजदा नमस्कार नमो नमो कहिण शाबाश, शहिनशाह तेरी वड वड्याईआ। तूं करता पुरख पूरी करनहारा आस, आसा असल विच्चों असलीअत आपणी दएं जणाईआ। महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, तेरा खेल तमाश, वेखणहारा समझ कोए ना पाईआ।

✪ ८ मग्घर २०२० बिक्रमी महिन्दर सिँघ दे गृह पिण्ड द्दईआ ज़िला गुरदास पुर ✪

सतिजुग कहे मैं तेरा बरदा, बाला नढ्ढा ध्यान लगाईआ। पुरख अकाल चाकर तेरे दर दा, दिवस रैण सेव कमाईआ। सरन सरनाई इक्को पड़दा दूजी ओट ना कोए रखाईआ। नित नवित्त तैथों डरदा, नेत्र अक्ख ना कोए उठाईआ। तेरा ढोला साचा पढ़दा, धुर दा राग अल़ाईआ। साचे भगतां पल्लू फड़दा, फड़ आपणी गंढु बंधाईआ। साची तरनी मात तरदा, सरोवर इक्को वेख वखाईआ। साचे पौड़े निरगुण चढ़दा, महल अटल वेख वखाईआ। ना जीऊँदा ना कदे मरदा, तेरी गोद सोभा पाईआ। तूं साहिब सुल्तान प्रभ लेखा जाणे घर घर दा, दर दर आपणा पढ़दा लाहीआ। तेरा खेल नर हरि दा, नरायण तेरी शहिनशाहीआ। तेरा भाणा कोई ना झल्लदा, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। सच सिँघासण गुरमुख विरला

१०५३
१५

मल्लदा, जिस सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। धुर संदेस अगम्मी घल्लदा, गुर अवतार पीर पैगम्बर कर पढ़ाईआ। जोती शब्दी धार रलदा, नूर ज़हूर इक वखाईआ। करें खेल छिन पल दा, घड़ी वंड ना कोए वंडाईआ। दीपक इक्को तेरा बलदा, लख चुरासी करे रुशनाईआ। हउँ सेवक चाकर ख़ाक तेरा हां बरदा, वारी घोली घोल घुमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे सीस निवाईआ। सतिजुग सुण लाडले पुत्त, सो सतिगुर आप जणाईआ। तेरी सोहवे मात रुत्त, रुत्त रुतड़ी इक महकाईआ। कलयुग कूड़ विकारा कढ्ढ कुट्ट, नव नौ चार रहिण ना पाईआ। जूठी झूठी जड़ पुट्ट, सच सुच बूटा इक वखाईआ। हरि भगत जो बैठे रुट्ठ, तिन्नां मेरे नाल मिलाईआ। उजल कर मात मुख, गीत गोबिन्द इक सुणाईआ। सफल कर जननी कुक्ख, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। सतिजुग कहे मेरे निरँकार, हथ्थ तेरे वड्याईआ। निर्धन होवां सेवादार, सरधन साची सेव कमाईआ। साचा बख़्श इक भण्डार, वस्त अतोट अतुट वरताईआ। जुग चौकड़ी बीते विच संसार, कोटन कोटि काल विहाईआ। सेवा कर के गए गुरू अवतार, पीर पैगम्बर वेस वटाईआ। तेरे नाउँ दा बोल जैकार, कलमा नबी रसूल पढ़ाईआ। तेरा मार्ग दस्स संसार, साची सिख्या इक जणाईआ। महल अटल उच्च मनार, सचखण्ड साचा गए वखाईआ।, उच्ची कूक कर पुकार, रसना जिह्वा बत्ती दन्द गए हिलाईआ। तेरा अन्त ना पाया किसे पारावार, बेअन्त तेरी वड्याईआ। मैं बालक नढ्ढा तेरे दर खड़ा भिखार, भिखक आपणी झोली डाहीआ। किरपा कर सिरजणहार, समरथ सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। नौ खण्ड पृथमी सत्त दीप चारों कुण्ट कर विचार, दहि दिशा ध्यान लगाईआ। कलयुग दिसे रैण अँध्यार, साचा चन्द ना कोए चमकाईआ। नाता तुटा पुरख नार, विभचार करे लोकाईआ। पिता पूत ना कोए प्यार, माता गोद ना कोए सुहाईआ। सृष्ट सबाई हाहाकार, धीरज धीर ना कोए रखाईआ। शाह सुल्तानां आई हार, राज राजान बैठे डेरा डाहीआ। कूड़ी क्रिया होई प्रधान, माया ममता नाच नचाईआ। दर दर घर घर फिरे शैतान, शरअ शरीअत करे लड़ाईआ। साबत दिसे ना कोए ईमान, धर्म दुआर सोभा कोए ना पाईआ। गुर दर मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ रोवण ज़ारो ज़ार, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण करन पुकार, चारों कुण्ट वेख वखाईआ। अञ्जील कुरान डिगी मूँह दे भार, भार सके ना कोए उठाईआ। खाणी बाणी सके ना कोए विचार, बुद्धी बैठी आपणा आप गंवाईआ। मन मनसा रही ललकार, जगत आपणा बल जणाईआ। साध सन्त होए ख्वार, तेरा नूर नज़र किसे ना आईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत जंगल जूह उजाड़ पहाड़ डूंघी कन्दर रहे भाल, काया मन्दिर खोजण कोए ना आईआ।

१०५४
१५

तुध बिन हल्ल करे ना कोए स्वाल, पंडत पांधे बैठे हिसाब लगाईआ। लख चुरासी सिर ते कूके काल, कलयुग डौरु डंक नगारा रिहा वजाईआ। किरपा कर दीन दयाल, ठाकर स्वामी तेरी इक सरनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर होए बेहाल, सदी बीसवीं अक्ख ना कोए उठाईआ। जगत अवल्लड़ी दिसे चाल, निराली धार ना कोए समझाईआ। किरपा कर आप मेहरवान, मेहर नज़र इक तकाईआ। मैं बाला नढ्ढा तेरा बाल, पूत सपूता रूप वटाईआ। कूड़ी क्रिया तोड़ जंजाल, जागरत जोत कर रुशनाईआ। मुर्शद वेख मुरीदां हाल, दीद ईद चन्द चमकाईआ। जो तेरे पिच्छे तेरी घालदे रहे घाल, तिन्नां घाल लेखे लाईआ। प्रगट हो शाह नवाब, शहिनशाह आपणा फेरा पाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद तेरा ल्या खुआब, अन्तिम बैठे आस तकाईआ। सजदा सीस कीता आदाब, झुक झुक सलाम बुलाईआ। आपणा महल्ला वेख उच्च महिराब, महिबूब आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक देणा सच्चा वर, सतिजुग बैठा झोली डाहीआ। सुण सुत नौजवान, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। हरि पुरख निरँजण होए मेहरवान, मिहबान बीदो आपणी अक्ख खुलाईआ। एकँकार करे तेरा ध्यान, दो जहानां वाली वेख वखाईआ। आदि निरँजण साचा चाढ़े भान, जोती नूर करे रुशनाईआ। अबिनाशी करता देवे दान, नाम अमोलक झोली पाईआ। श्री भगवान वखाए निशान, धर्म निशाना इक उठाईआ। पारब्रह्म करे प्रधान, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। आत्म परमात्म देवे इक ज्ञान, साची सिख्या सच दृढ़ाईआ। कलयुग अन्तिम वेखे आण, सतिजुग तेरी धार बंधाईआ। भगत भगवान मिलाए जहान, निरगुण सरगुण लए जगाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे इक मैदान, शाह पातशाह आपणा बल धराईआ। साचा नाम करे प्रधान, सो पुरख निरँजण ढोला गाईआ। हँ ब्रह्म करे कल्याण, कलमा इक्को इक जणाईआ। लेखा जाण दो जहान, ब्रह्मण्ड खण्ड दए समझाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सीस झुकाण, करोड़ तेतीसा लागे पाईंआ। गुर अवतार सुणन फ़रमाण, पीर पैगम्बर ढोला राग अल्लाईआ। तेरा विचोला बणे आप भगवान, भगवन आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। साची सिख्या दस्से मीत, मित्र प्यारा दया कमाइंदा। सतिजुग तेरा साचा गीत, सो पुरख निरँजण आप समझाइंदा। लेखा मुके मन्दिर मसीत, जिस जन आपणी बूझ बुझाइंदा। निरगुण वसे सरगुण चीत, जगत ठगौरी ना कोए रखाइंदा। लेखा जाण हस्त कीट, ऊँच नीच वेख वखाइंदा। त्रैभवन धनी सदा अतीत, त्रैगुण विच कदे ना आइंदा। सच बंधाए इक प्रीत, प्रीती इक्को इक वखाइंदा। सदी बीसवीं जाए बीत, बीती कहाणी आपणी झोली पाइंदा। करे खेल आप अनडीठ, जगत नेत्र नज़र किसे ना आइंदा। जन भगतां काया चोली चाढ़े रंग बसीठ, सति सतिवादी आपणे रंग रंगाइंदा। सच दुआरयों

देवे भीख, नाम अगम्मा झोली पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची सिख्या इक दृढ़ाइंदा। सतिजुग कहे मेरे साहिब सतिगुर, प्रभ तेरे हथ्थ वड्याईआ। मेरी चरण प्रीती गई जुड़, लग्गी प्रीत ना कोए तुड़ाईआ। मेरा लेखा तेरे धुर, दूजा समझ सके कोए ना राईआ। चढ़ के आउणा साचे घुड़, शाह पातशाह सच्चे शहिनशाहीआ। कलयुग अन्तिम पई तेरी लोड़, राह तक्के तेरा नूर इलाहीआ। पारब्रह्म प्रभ जाणा बौहड़, बौहड़ी बौहड़ी गुरमुख गुरसिख हरिजन सन्त रहे सुणाईआ। मिट्ठा करना रीठा कौड़, अमृत फल रूप वखाईआ। नेत्र वेखणा कर के ग़ौर, गहर गम्भीर तेरी सरनाईआ। कूड़ी क्रिया डेरा ढाउणा ठग्ग चोर, साची सिख्या इक समझाईआ। तेरा मन्त्र फुरे फोर, फुरना सब दा बंद कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तेरे वज्जे नाम वधाईआ। सतिजुग सुण लाल निके, साहिब सतिगुर आप जणाईआ। तेरे मार्ग करे सिधे, सिध सादक आप पढ़ाईआ। धुर दे लेख जिस ने लिखे, लेखा सके ना कोए मिटाईआ। जुग चौकड़ी सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप नजिठे, दूजा संग ना कोए रखाईआ। सच संदेस नर नरेश गुर अवतार पीर पैगम्बर देवे चिठे लोकमात करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तेरा मार्ग दए लगाईआ। साचा मार्ग देणा ला, प्रभ हथ्थ तेरे वड्याईआ। निरगुण हो के बण मलाह, सरगुण बेड़ा आपणे कंध उठाईआ। साचा मन्त्र दे दृढ़ा, आत्म परमात्म इक पढ़ाईआ। साचा सोहला दे सुणा, रसना जिह्वा ख़ुशी मनाईआ। पड़दा उहला दे चुका, बजर कपाटी कुण्डा लाहीआ। अमृत सीर नीर जाम दे प्या, तृष्ना भुक्ख मिटाईआ। सति सरूपी दरस करा, जोती जलवा नूर रुशनाईआ। घर मन्दिर साचे डेरा ला, नौ दुआरे पन्ध चुकाईआ। सोई सुरती सर्ब जगा, शब्द हलूणा इक वखाईआ। जुग रुड्डड़े लै मना, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। जन भगतां मुखड़े दे सुहा, सोभावन्त तेरी वड्याईआ। जन्म कर्म दे दुखड़े दे गंवा, पूरब लहिणा झोली पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, हरि सच तेरी सरनाईआ। सतिजुग सुण साचे सज्जण, प्रभ देवणहार वड्याईआ। कूड़ी क्रिया भाण्डे भज्जण, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। नाम नगारे घर घर वज्जण, गुर शब्दी ताल सुणाईआ। सन्त सुहेले साचे गज्जण, उच्ची कूक राग अलाईआ। गुरमुख नाम चढ़े रंगण, हरि रंगे बेपरवाहीआ। भगत भगवान सुहाए अंगन, घर इक्को नज़री आईआ। अनहद नाद वज्जे मृदंगन, धुन आत्मक नाद शनवाईआ। मस्तक टिक्का नूरी चन्दन, जोत ललाट करे रुशनाईआ। कूड़ी क्रिया ढाहे कंधन, भाण्डा भरम भउ भंनाईआ। चार वरन जणाए इक्को बन्दन, बंदगी इक्को इक समझाईआ। लख चुरासी तोड़े फंदन, फाँसी जम की नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत

सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे नाम वर, तिस वेखे चाईं चाईंआ। सतिजुग कहे प्रभ तेरी ओट, मैं इक्को आस तकाईआ। आहलणयों डिगा तेरा बोट, तुध बिन सके ना कोए उठाईआ। तेरे नाम नगारे लग्गे चोट, सोई सुरती लए अंगड़ाईआ। आपणी आप संभाले होश, होछी मति गंवाईआ। तेरे नाम दा पढ़ के कोश, भुले जगत पढ़ाईआ। क्यों अन्दर वड़ के बैठा रिहों ख़ामोश, आपणा पड़दा दे उठाईआ। राह तक्कण तेरा लोक परलोक, दो जहान ध्यान लगाईआ। निरगुण सरगुण सुणना आपणा श्लोक, साचा सोहला राग अल्हाईआ। तेरे मन्दिर बहि के माणीएं मौज, ठाकर ठाकर दुआरा इक्को भाईआ। तेरे दर्शन लोचन रहे लोच, नेत्र अक्ख ध्यान लगाईआ। पारब्रह्म प्रभ घर साचे पहुँच, आप आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तुध बिन संग ना कोए निभाईआ। सतिजुग तेरा सगला साथ, सति सतिवादी आप जणाइंदा। किरपा करे पुरख समराथ, समरथ पुरख आपणी दया कमाइंदा। साचा मार्ग देवे दस्स, भेव अभेद खुलाइंदा। सच सुच तेरे हथ्थ, हरि करता आप फड़ाइंदा। जन भगतां अन्दर जाणा वस, साचा मन्दिर इक वखाइंदा। प्रेम प्यार दा पीणा रस, फिका रस ना कोए जणाइंदा। साचा नाउँ बोलणा हस्स हस्स, सोहँ ढोला

राग अल्हाइंदा। तूं मेरा मैं तेरे वस, दूजा नज़र कोए ना आइंदा। भगत भगवान मिल के गावण जस, जस वेद पुराण ना सिफ्त सालाहइंदा। तेरी इक्को खोल्हे अक्ख, निज नेत्र दया कमाइंदा। सब दा लेखा पूरा करे हक़, हक़ हकीकत वेख वखाइंदा। कूड़ी क्रिया नकेल पाए नक्क, चारों कुण्ट आप भवाइंदा। अन्तिम शौह दरयाए देवे सट्ट, पुरख अबिनाशी धक्का लाइंदा। सति धर्म दा खोल्ह हट्ट, सतिजुग तेरा राह चलाइंदा। चार वरनां इक्को मति, गुरमति सच्ची आप दृढ़ाइंदा। हरि सरनाई बन्नो नत, इष्ट देव स्वामी इक्को नज़री आइंदा। एथे ओथे दो जहान पत्त लए रख, मेहरवान प्रभ आपणे रंग रंगाइंदा। सतिजुग सति सतिवादी गाउणा जस, साची सिख्या इक समझाइंदा। पूरी करे हरि जू अस, आसा तृष्ना मेट मिटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग देवे इक वर, नाम अमोलक साची गोलक हरि करता आप पवाइंदा।

१०५६
१५

✪ ८ मग्घर २०२० बिक्रमी नौरंग सिँघ सविन्दर सिँघ दे गृह दय्या ज़िला गुरदास पुर ✪

पुरख अकाल तेरा भण्डार अतुट, सतिजुग साचा खुशी मनाईआ। सेवा करां बिन काया बुत्त, निरगुण तेरी धार समाईआ। तिन्न युग जो बैठा रिहा चुप्प, उच्ची कूक ना राग अल्हाईआ। सन्त सुहेले सज्जण लवां पुच्छ, लख चुरासी घर घर फेरा

पाईआ। जन भगतां करां उजल मुख, दुरमति मैल धोवां छाहीआ। तेरे चरण कँवल करां रुख़, साचा मार्ग इक समझाईआ। आओ वेखो जो बैठा लुक, नर नरायण नज़र किसे ना आईआ। ठाकर स्वामी हो के गया तुठ, अनमंगी दौलत रिहा वरताईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस नूं सजदा करन झुक, नमो नमो रहे जणाईआ। मैं उस दा बणया लाडला पुत्त, घर साचे ख़ुशी मनाईआ। जन्म जन्म दी मेरी लथ्थी भुक्ख, तृष्ना नेड़ कोए ना आईआ। कूड़ी क्रिया नाता गया छुट, मिल्या मेल बेपरवाहीआ। मेरे विच दूई द्वैती रहे कोई ना फुट्ट, ज़ात पात रहिण कोए ना पाईआ। अमृत जाम मिले इक्को घुट्ट, नीर सीर मुख चुआईआ। होए प्रकाश साची जोत, अन्ध अन्धेरा दए मुकाईआ। सुण नाम सच श्लोक, सोहँ ढोला एका गाईआ। वज्जे लोक परलोक, विष्न ब्रह्मा शिव रहे जस गाईआ। राग नाद शब्द धुन लावण इक्को चोट, सुर ताल ना कोए रखाईआ। सतिगुर पूरा पुरख अकाल इक्को मिल्या बहुत, बहुती देवे माण वड्याईआ। जन भगतां वेखे बैठ ख़ामोश, रसना जिह्वा बत्ती दन्द ना कोए हिलाईआ। काया मन्दिर अन्दर घर घर माणे मौज, सच सिँघासण सोभा पाईआ। जुग चौकड़ी किसे विच ना आया सोच, सोच सोच थक्की सर्ब लोकाईआ। लेखा जाणे लखण पुष्कर करोच, सान सलमल जम्बु आपणा हुक्म वरताईआ। कुशा देवे ना कोई दोष, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा शहिनशाहीआ। सतिजुग कहे मोहे मिल्या एक, एकँकार दया कमाईआ। साची बख़्श चरण टेक, टिक्का मस्तक इक लगाईआ। कूड़ी क्रिया मिटे भेख, जूठ झूठ रहिण ना पाईआ। लहिणा देणा चुक्के मुल्लां शेख़, मसायक पीर दस्तगीर दस्त ना कोए मिलाईआ। लेखा चुके खेल कमच अल नेक, नूरी जलवा नूर रुशनाईआ। सज्जण साहिब सतिगुर परवरदिगार इक आदेस, नाअरा इक्को इक सुणाईआ। निज नेत्र लोचण नैण बेपरवाह ल्या वेख, पर्दानशीं पर्दा रिहा उठाईआ। अन्दर वड़ के दस्सया भेत, बाहरों रमज़ ना कोए लगाईआ। निरगुण हो के खेले खेड, ख़ालक ख़लक वेख वखाईआ। शब्द संदेसा रिहा भेज, कलमा नबी रसूल दृढ़ाईआ। अन्तर आत्म सब दी माणे सेज, सच सिँघासण डेरा लाईआ। जोती जलवा अगम्मी तेज, नूर ज़हूर इक दरसाईआ। सच दुआरे लावे धुर दी मेख, मस्तक टिक्का इक्को इक वखाईआ। तिस अग्गे चले ना कोई किसे दी पेश, गुर अवतार पीर पैगम्बर बैठे सीस झुकाईआ। तिस दे चरण कँवल टेक मंगे शेश, विष्न ब्रह्मा शिव नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सो पुरख देवणहार वड्याईआ। सतिजुग कहे प्रभ पाया मीत, हरि वड्डा वड वड्याईआ। जिस दी वेखी अचरज रीत, जुग चौकड़ी रहे जस गाईआ। जिस दी आदि जुगादि ना बदले नीत, नीतीवान इक्को नज़री आईआ। जिस दा खेल हस्त कीट, ऊँच नीच रिहा समाईआ। जिस दा मन्दिर सदा अतीत,

खेड़ा ढट्ठ ना भट्ठ वखाईआ। जिस दी सति सतिवादी प्रीत, झूठी धार ना कोए चलाईआ। जो दूर दुराडा हर घट वसे नज़दीक, गृह गृह बैठा डेरा लाईआ। जिस नूं लभ्भदे मन्दिर मसीत, शिवदुआले मट्ठ राह तकाईआ। सो भगतां अन्तर वसे सदा ठीक, काया कूड़ा ठीकर भन्न वखाईआ। मन वासना लए जीत, मन का मणका आप भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। सतिजुग कहे प्रभ पाया ठाकर, घर दुआरे वज्जी वधाईआ। मेरा निर्मल कर्म करे उजागर, मेहर नज़र इक उठाईआ। साचा वणज कराए बण सौदागर, सौदा सच नाम विकाईआ। भाग लगाए काया गागर, साढे तिन्न हथ्थ खुशी वखाईआ। नज़री आए करीम कादर, करता पुरख बेपरवाहीआ। ग़रीब निमाणयां देवे आदर, कोझयां कमलयां गले लगाईआ। पार कराए कलयुग डूंघे सागर, भँवरी कवरी ना कोए रुढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। सतिजुग कहे मेरा स्वामी आप, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। आदि जुगादि जिस दा वड प्रताप, सद प्रतापी वेख वखाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जिस दा जपदे जाप, सो नाम निधाना झोली पाइंदा। लोक परलोक ब्रह्मण्ड खण्ड जेरज अण्डज उत्भुज सेत्ज जिस तों रहे कांप, सो भय भ्यानक आपणा रूप वखाइंदा। नित नवित्त जिस नूं कहिन्दे रसूल पाक, सो पाक

१०५८ १०५८

पवित आपणी धार समझाइंदा। जिस दा लेखा लख चुरासी माटी ख़ाक, सो ख़ालक ख़लक वेख वखाइंदा। जिस दा घट घट अन्दर वज्जा ताक, सो बजर कपाटी कुण्डा आप खुलाइंदा। जिस दी आत्म परमात्म ज़ात, पारब्रह्म ब्रह्म रूप आप प्रगटाइंदा। सो पुरख निरँजण बणया सगला साथ, साचा संग आप निभाइंदा। लेखा जाणे गुप्त ज़ाहर बातन बात, बैतल आपणा राह वखाइंदा। शब्द अगम्म सुणाए गाथ, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान ना कोए दृढ़ाइंदा। साचा पत्तण जणाए घाट, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती डेरा ढाइंदा। जन्म कर्म दी मेटे वाट, आवण जावण पन्ध मुकाइंदा। चरण प्रीती इक्को दात, सति सतिवादी झोली पाइंदा। जन भगतां पुछे निरगुण वात, सरगुण आपणा अंग बणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, साची करनी आप कमाइंदा। सतिजुग कहे प्रभ रंग चाढ़े गूढ़ा, दो जहानां उतर कदे ना जाईआ। साची बख्शे चरण धूढ़ा, टिक्का मस्तक नाम लगाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ा, झिरना इक बुधहीण दए वड्याईआ। जोती जाता बख्शे नूरा, अन्ध अन्धेर दए मिटाईआ। अमृत आत्म देवे सच सरूरा, निझर झिरना इक झिराईआ। शब्द अनाद वज्जे अनहद तूरा, तुरिया बैठी मुख शरमाईआ। कूड़ी क्रिया किरकट हूंझे कूड़ा, काया मन्दिर करे सफ़ाईआ। गढ़ हँकार तोड़ ग़रूरा, गुरबत कूड़ी दए मिटाईआ। सर्ब कला बण भरपूरा, हर घट इक्को

नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, पुरख अकाल सच्चा शहिनशाहीआ। सतिजुग कहे मिल्या शहिनशाह, पातशाह इक्को नज़री आईआ। सचखण्ड बैठा डेरा ला, थिर घर शब्दी रंग वखाईआ। सुंन अगम्मी खेल करा, धूंआँधार पार कराईआ। सच महल्ल इक वसा, महिफ़ल आपणा नाम समझाईआ। जुग चौकड़ी पन्ध मुका, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग डेरा ढाहीआ। नव नौ चार वेख वखा, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दा ढोला गए गा, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। सो रहबर बणया आप खुदा, बेनज़ीर वेस वटाईआ। लोक परलोक होए सहा, दो जहानां वज्जे वधाईआ। साचा मार्ग दए लगा, राह इक्को इक वखाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश दए सलाह, ऊँचां नीचां करे पढ़ाईआ। गुरमुख सन्त सुहेले लए जगा, आलस निंद्रा दए मिटाईआ। गुर चेले लए मिला, घर साचे खुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, निरगुण आपणी धार चलाईआ। सतिजुग कहे निरगुण मिलाप, प्रभ मिल्या बेपरवाहीआ। जिस दी रूप रंग ना कोई ज़ात, अजाति रूप ना कोए वखाईआ। सुबह शाम संधया ना कोई प्रभात, दिवस रैण ना वंड वंडाईआ। समुंद सागर ना कोई खात, धरत धवल ना कोए जणाईआ। त्रैगुण माया रखे ना कोई दात, पंज तत ना रंग रंगाईआ। एकँकारा इक इकल्ला आदि जुगादी कमलापात, कँवल नैण नज़री आईआ। जिस दी सिफ्त करे ना कोई लुगात, अक्खर दए ना कोए वड्याईआ। जिस दा कोई ना जाणे खेल तमाश, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचे इक्को राह चलाईआ। सतिजुग कहे प्रभ मिल्या पीर, पीर पीरां नज़री आइंदा। मुकामे हक़ लाशरीक दस्तगीर, दस्त आपणा आप मिलाइंदा। लेखा जाणे शाह हकीर, हकीकत सब दी खोज खोजाइंदा। सदी चौधवीं बदले तकदीर, तदबीर आपणी इक बणाइंदा। शरअ शरीअत कट ज़ंजीर, शरीअत आपणी इक समाइंदा। असलीअत दस्से बेनज़ीर, नज़रीआ आपणा इक उपाइंदा। वड दाता गुणी गहीर, गहर गम्भीर आपणी कार कमाइंदा। नाता तोड़ जगत सरीर, शरीर रूप ना कोए वटाइंदा। लभ्भदे फिरन जगत फ़कीर, फिकरा हक़ कोई ना अलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सतिजुग तेरा रंग रंगाइंदा। सतिजुग तेरा रंग अपार, हरि करता आप रंगाईआ। देवे वड्याई विच संसार, संसा रोग सर्ब मिटाईआ। सन्त भगवन्त मेले आण, निरगुण सरगुण साचा संग बणाईआ। गीत सुणाए धुर दा गान, गोबिन्द इक्को करे पढ़ाईआ। धर्म झुलाए सच निशान, चारों कुण्ट नज़री आईआ। शब्दी देवे इक ज्ञान, साची सिख्या इक वखाईआ। काग़ज़ कलम शाही होए हैरान, हरि का भेव कोए ना पाईआ। पुरख अबिनाशी चतुर सुघड़ बण सुजान, कोझे कमले लए उठाईआ।

तीर निराला मारे बाण, अणयाला आप चलाईआ। मन वासना मेटे शैतान, शरअ करे ना कोए लड़ाईआ। साबत दस्से इक ईमान, परवरदिगार कदमबोशी इक समझाईआ। धुर संदेसा सच फ़रमान, मुकामे हक़ करे शनवाईआ। सच दुआरे दे पैग़ाम, इलहाम इक्को इक जणाईआ। जिस दा कोई ना जाणे नाम, बनाम इस्म सके ना कोए समझाईआ। सो पुरख अगम्म करे खेल महान, सचखण्ड निवासी वड्डी वड्याईआ। सतिजुग साचे तेरे विच इक्को आपणा नाउँ करे प्रधान, प्रधानगी इक्को हथ्थ फड़ाईआ। छत्ती राग होण हैरान, चारों कुण्ट उठ उठ वेखण साथी नज़र कोए ना आईआ। अञ्जील कुरान नैण शरमाण, अक्ख सके ना कोए उठाईआ। वेद पुराण करन ध्यान, चरण कँवल मिले वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, तेरा लहिणा पूर कराईआ। सतिजुग कहे प्रभ दे दात, हथ्थ तेरे वड्याईआ। मिल नज़री आए तेरी ज़ात, दूजा रूप ना कोए वखाईआ। इक्को गीत जणाए छन्द, साचा सोहला इक अलाईआ। मेरा खुशी होए बंद बंद, बंदगी तेरी मोहे भाईआ। साचे दुआरे पए ठंड, अग्नी तत ना लागे राईआ। जुग जन्म दी टुटी गंढु, त्रेता द्वापर कलयुग तेरी सेव ना कोई कमाईआ। तेरे अग्गे इक्को मंग, बण मांगत झोली डाहीआ। जन भगतां दे सच्चा संग, मनमुख नज़र कोए ना आईआ। तेरा चमके नूरी चन्द, ज़हूर तेरी रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देणा नाम वर, दर तेरे अलख जगाईआ। तेरे दर अलख जगदीश, जगदीश्र तेरी सरनाईआ। इक्को वेखां छत्र तेरे सीस, शहिनशाह तेरे हथ्थ वड्याईआ। दो जहान मंगण तेरी प्रीत, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। नौ खण्ड पृथमी गाए तेरा गीत, लख चुरासी तेरा नाउँ ध्याईआ। लेखा चुक्के मन्दिर मसीत, शिवदुआला मठ्ठ काया काअबा इक बणाईआ। सच दुआरयों देणी भीख, भिच्छया आपणा नाम वरताईआ। तेरा दुआरा दिसे अतीत, त्रैगुण लेखा रहे ना राईआ। नज़री आए इक्को मीत, सज्जण सच्चा सच्चा माहीआ। तैनूं भगत कहिण बीठलो बीठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच वर, तेरी वज्जे नाम वधाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल, आपणी दया कमाईआ। सतिजुग साचे साचे लाल, तेरी साची सेज सुहाईआ। धर्म दुआर सच्ची धर्मसाल, हरि मन्दिर दए वखाईआ। जिथ्थे पोह ना सके काल, महाकाल नैण शरमाईआ। त्रैगुण माया ना कोई जंजाल, पंज तत ना कोए लड़ाईआ। निरगुण दिसे सदा नाल, विछोड़ा रहिण कोए ना पाईआ। सो मन्दिर दयां वखाल, जिस घर वसे सच्चा माहीआ। सेवा करी आप महान, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। प्रगट कर विच जहान, सच निशान दित्ता झुलाईआ। बहत्तर सत्तर कर परवान, चुहत्तरां अंक जोड़ जुड़ाईआ। अन्दर बाहर बैठ श्री भगवान, साचा मन्दिर दित्ता सुहाईआ। तेरी प्रीती निभे नाल, लग्गी आपणे

१०६० १५

नाल अन्तिम तोड़ निभाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा साचा राह जणाईआ। सतिजुग सुण होया खुशहाल, घर साचे खुशी मनाईआ। किरपा करी आप कृपाल, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सच दुआर दित्ता वखाल, मंज़ल मंज़ल आप चढ़ाईआ। नज़री आए इक्को काहन, लख चुरासी गोपी रिहा हंढ्ढाईआ। सच धर्म झुले निशान, दूजी वंड ना कोए वंडाईआ। साचे भगत दर बैठे सोभा पाण, नेत्र लोचण नैण इक्को दर्शन पाईआ। आत्म परमात्म ढोला सच्चा गाण, दूजा नाअरा ना कोए अल्लाईआ। इक्को ओट पुरख अकाल तकाण, दूजा संग ना कोए वखाईआ। जिस दी गुर अवतार पीर पैगम्बर घालदे गए घाल, सो साहिब सच्चा इक मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा मन्दिर दए समझाईआ। सतिजुग मन्दिर वेख एक, एकँकार रिहा जणाईआ। जिस दुआरे निरगुण धरया भेख, भेखाधारी वेस वटाईआ। सचखण्ड निवासी करे अगम्मी खेड, ख़ालक ख़लक आप जणाईआ। जिस गुर अवतार पीर पैगम्बर दित्ते भेज, अन्तिम आपणा हुक्म मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरा इक दरसाईआ। सच दुआरा वेख सोहणा, सतिजुग साचा खुशी मनाइंदा। ना हस्सणा ना कोई रोणा, खुशी ग़म ना कोए वडियाइंदा। ना मैला ना कपड़ धोणा, दुरमति मैल रंग ना कोए चढ़ाइंदा। ना जागणा ना कोई सौणा, आलस निंद्रा ना कोए वखाइंदा। पुरख अबिनाशी घट घट वासी इक्को नज़री आउणा, नेत्र नैण आप उठाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सच महल्ल इक सुहाइंदा। सच महल्ल प्रभ जू चंगा, चंगी तरह वेख वखाईआ। अट्ठे पहर इक अनन्दा, अनन्द मंगल इक्को इक सुणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दुआरे बहि के गावण तेरा छन्दा, सीस जगदीश रहे झुकाईआ। जिस मंज़ल बिन बंदगीउँ पार होवे बंदा, बन्धन सारे दएं तुड़ाईआ। जिस गृह पिछला दूर रहि जाए कन्ढा, पार किनारा इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साचा दर वखाईआ। सतिजुग कहे सच्चा दरबार, सच दुआरे वज्जे वधाईआ। जिस घर वसे आप निरँकार, निरगुण बैठा डेरा लाईआ। जन भगतां करे प्यार, भगवन आपणी दया कमाईआ। साचा मार्ग दए सिखाल, सिख्या इक्को इक समझाईआ। इकट्ठे कर शाह कंगाल, ऊँच नीच जोड़ जुड़ाईआ। सर्ब जीआं दा बण दलाल, साची सेवा आप कमाईआ। हकीकत दस्सो इक हलाल, हक़ सब दी झोली पाईआ। सतिजुग वेख छोटे बाल, बाली बुध रिहा समझाईआ। बिन भगतां तेरे चले कोई ना नाल, ख़ाली दिसे जगत लोकाईआ। घर घर वड़या कूड़ शैतान, दिवस रैण करे लड़ाईआ। साध सन्त होए बेईमान, सच धर्म नज़र कोए ना आईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द सारे देण ज्ञान, अन्दर वड़ के मन का मणका ना

कोए भवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग सच्चे रिहा समझाईआ। सतिजुग कहे प्रभ मेरी होछी मति, समझ समझ विच ना आईआ। इक जणाउणा आपणा तत्त, ततव इक्को इक दरसाईआ। मेरे अन्दर बहत्तर नाड़ी किसे ना उबले रत, जो तेरा नाम ध्याईआ। माढ़े चंगे आपणे खाते लैणे घत, जो चरण कँवल सीस निवाईआ। मेल मिलाउणा हस्स हस्स, दीनां नाथ दीनन गले लगाईआ। मेहरवान हो के तक्कीं आपणी अक्ख, आख़र आपणे घर बहाईआ। तेरे नालों तेरा कदी ना होवे वक्ख, वक्खरी धार ना मोहे भाईआ। नित नवित्त गाउँदे रहीए तेरा जस, प्रभ वड्डे तेरी वड वड्याईआ। वेखीं दे विछोड़ा ना जाईं नट्ठ, तेरी झल्ली ना जाए जुदाईआ। जुग जुग जन भगत तेरे मिलण दा कर के हठ, अपणीआं ख़ल्लां गए लुहाईआ। कबीर जुलाहे मार्ग दित्ता दस्स, प्रभ मिलदा सच गोसाईंआ। पहलों होवो उहदे वस, फिर वस आपणे लओ कराईआ। एथे असां ना करनी बस, बेसमझ रहे सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, दूजे दर मंगण कोए ना जाईआ। सतिजुग कहे मेरे दाते दातार, हथ्थ तेरे वड्याईआ। किरपा कर आप निरँकार, निरगुण तेरी सरनाईआ। सृष्ट सबाई लै उठाल, छिन भंगर रूप वटाईआ। साचा मार्ग दे सिखाल, आत्म अन्तर कर पढ़ाईआ। आ के वेख मुरीदां हाल, मुर्शद आपणा फेरा पाईआ। कलयुग कूड़ा तोड़ जंजाल, जागरत जोत कर रुशनाईआ। सच वखा सच्ची धर्मसाल, धर्म दुआरा इक्को नज़री आईआ। जिस घर वसण शाह कंगाल, राउ रंक डेरा लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, नाम संदेसा इक सुणाईआ। नाम संदेसा सुण सतिजुग, जुग करता आप जणाईआ। लख चुरासी विच्चों गुरमुख चुग, चोण आपणी मात समझाईआ। प्रगट होया जो बैठा लुक, पड़दा उहला आप मिटाईआ। सच दुआरे दस्सी इक्को सुच, नाम सच कर रुशनाईआ। अन्दर वड़ के ल्या पुच्छ, डूंघी भँवरी फोल फोलाईआ। कूड़ी क्रिया पैंडा गया मुक्क, जन भगतां रंग रंगाईआ। जूठ झूठ बूटा गया सुक्क, सच सुच फल फुलवाड़ी आप महकाईआ। निरगुण धारों निरवैर पुरख उठ, निराकार होए सहाईआ। सन्त सुहेले साचे सुत, सतिगुर साहिब लए जगाईआ। सुफल करा जननी कुक्ख, देवणहारा आप वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सिर हथ्थ रख प्रभ, आपणी दया कमाईआ। सन्त सुहेले सज्जण लभ्भ, आपणे घर वसाईआ। भगत दुआरे भगत सद्द, सद्दा नाम जणाईआ। जन्म कर्म दी मुक्की हद्द, घर इक्को वेख वखाईआ। लख चुरासी विच्चों कढ्ढ, चरण कँवल दए सरनाईआ। लेखे ला माटी हड्ड, रत्ती रत सोभा पाईआ। विश्व बणा इक्को यद्द, बंस आपणा लए सुहाईआ। पिछली कीती करके रद्द, अग्गे

मार्ग इक्को लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सूरा सरबग्ग, अंग संग सदा सहाईआ। अंग संग सदा सहाई, सो पुरख निरँजण दया कमाइंदा। भगत भगवान लए मिलाई, मिलणी जगदीश आप वखाइंदा। सतिजुग गीत गाउणा चाईं चाईं, चाउ घनेरा इक दृढ़ाइंदा। दोहां मेला साचे थाईं, थान थनंतर इक वखाइंदा। भगत दुआर वज्जे वधाई, वाधा आपणा नाम पाइंदा। दादी दादा बण के पिता माई, पूत सपूत आपणी गोद सुहाइंदा। सन्त कन्त भगत भगवन्त फड़ के बांहीं, पार किनारे आप लगाइंदा। गुरमुख गुरसिख वेले अन्त कोए ना मारे धाहीं, सति सरूप आपणे विच समाइंदा। सचखण्ड दुआरे देवे ठंडीआं छाईं, सिर आपणा हथ्थ टिकाइंदा। शाह पातशाह शहिनशाह हरि करे सच नयाईं, अदालत इक्को इक लगाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल बेपरवाही, बेपरवाह आपणा हुक्म वरताइंदा।

✪ ६ मग्घर २०२० बिक्रमी जोगिन्दर सिँघ दे गृह पिण्ड डडवां ज़िला गुरदास पुर ✪

१०६३ सतिजुग कहे प्रभ देवे जन्म, मेहरवान मेहर नज़र उठाईआ। सति बणाए मेरा कर्म, सति सतिवादी होए सहाईआ। १०६३
कूड़ी क्रिया रहे ना भरम, साची सिख्या इक समझाईआ। बख्शिश करे आपणी सरन, सरनगति इक दृढ़ाईआ। नाता तोड़े वरन बरन, ज़ात पात ना कोए रखाईआ। किरपा करे हरि करनी करन, करता पुरख सच्चा शहिनशाहीआ। साची सिख्या देवे इक्को नाम पढ़न, चौदां विद्या डेरा ढाहीआ। लोक परलोक सयदे करन, दो जहान सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवे मोहे माण वड्याईआ। सतिजुग कहे मेरा होए निवास, लोकमात वज्जे वधाईआ। खेड़ा वसे जगत प्रभास, जंगल जूह खुशी मनाईआ। डूंग्घे सागर खेल सर्ब गुणतास, गुणवन्ता रंग रंगाईआ। जन भगतां पूरी कर आस, कूड़ी तृष्ना मेट मिटाईआ। दरस दिखाए साख्यात, निरगुण आपणा रूप वटाईआ। शब्द अगम्मी सुणाए बात, बातन आपणा हाल जणाईआ। कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी रात, निर्मल सच्चा चन्द चमकाईआ। खुशी मनाए पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल वज्जे वधाईआ। दरगाह साची पए रास, गोपी काहन नाच नचाईआ। साचे मन्दिर हास बलास, सचखण्ड साचे खुशी वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सिर मेरे हथ्थ टिकाईआ। सतिजुग कहे मोहे मिले माण, श्री भगवान होए सहाईआ। धुरदरगाही देवे इक ज्ञान, नाम संदेसा सच सुणाईआ। चरण कँवल बख्शे आप ध्यान, दूजी ओट ना कोए जणाईआ। हर घट स्वामी होए जाणी जाण, गृह मन्दिर खोज खोजाईआ। पवण पाणी सेव

कमाण, अग्नी तत ना लागे राईआ। अमृत मिले पीण खाण, रस इक्को इक वखाईआ। साचा ढोला बोल बिनां ज़बान, बिन दन्दां दए जणाईआ। धर्म वखाए इक निशान, शाह पातशाह आप झुलाईआ। भूपत नज़री आए राज राजान, राजन राज इक हो जाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देवे सच्चा वर, लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। सतिजुग कहे प्रभ होए दयाल, दीनन आपणी दया कमाईआ। आपणे घर उपजावे छोटा लाल, पिता पूत गोद उठाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड वखाए सच्ची धर्मसाल, धरनी धरत धवल सोभा पाईआ। सेवा लाए बालक मोहे अञ्याण, साची मति इक जणाईआ। लेखा जाणे चतुर सुघड़ सुजान, गहर गम्भीर वड्डी वड्याईआ। सच दुआर दिसे मकान, निर्मल नूर जोत रुशनाईआ। चारों कुण्ट वेखे मार ध्यान, नव नौ चार खोज खोजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देवे सच्चा वर, निज नेत्र नैण अक्ख खुलाईआ। सतिजुग कहे प्रभ नेत्र खोले, ख़लक दए वड्याईआ। निरगुण सरगुण अन्दर बोले, धुर अगम्मी राग अलाईआ। भाग लगाए साचे चोले, देवे जगत माण वड्याईआ। आप चुकाए पड़दा ओहले, दूई नज़र कोए ना आईआ। साचे कंडे निरवैर तोले, निराकार वेख वखाईआ। सदा सदा सद वसे कोले, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। आदि जुगादि रहे अडोले, अडुल कदे ना जाईआ। जुग चौकड़ी जिस दे बणे रहे गोले, नित नवित्त सेव कमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दे गाउँदे ढोले, सच संदेसा राग अलाईआ। सो साहिब सुल्तान हो मेहरवान मेरा पड़दा आपे खोले, बंद ताकी कुण्डा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, दर घर देवे माण वड्याईआ। सतिजुग कहे प्रभ पत लए रख, मेहरवान दया कमाईआ। निरवैर हो के खोले अक्ख, आख़र आपणा मेल मिलाईआ। दो जहान दिसे प्रतख, सति सरूप वेस वटाईआ। सच्चा मार्ग देवे दस्स, कलयुग कूड़ी क्रिया मेट मिटाईआ। जूठ झूठ खेड़ा करे भट्ठ, सच सुच करे रुशनाईआ। चार वरनां देवे इक्को रस, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश रंग रंगाईआ। माया ममता हउमे हंगता चरण कँवल हेठां देवे झस्स, लोकमात बाहर कढाईआ। कर प्रकाश साचे सस, रव इक्को इक चमकाईआ। महिमा सुणाए आपणी अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। धर्म दुआरा खोले हट्ट, सौदा इक्को नाम विकाईआ। लेख चुकाए तीर्थ अठसठ, सच सरोवर इक नुहाईआ। लख चुरासी देवे ब्रह्म मति, ब्रह्म विद्या करे पढ़ाईआ। नाड़ बहत्तर ना उबले रत, बूँद रक्त वेख वखाईआ। दूर दुराडा आवे नस्स, निज घर साचे फेरा पाईआ। जन भगतां सिर रखे दे कर हथ्थ, समरथ आपणे हथ्थ रखे वड्याईआ। मैं चरण कँवल हरि सरनाई जावां ढट्ठ, धूढ़ी टिक्का मस्तक इक्को लाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देवे सच्चा वर, मेरी आसा पूर कराईआ। सतिजुग कहे प्रभ पूरे

१०६५ १५

आसा, आसा मनसा विच समाईआ। सच्चा देवे इक भरवासा, मिले माण वड्याईआ। भाग लगाए काया कासा, साची वस्त विच टिकाईआ। पहला पुत्त ना होए निरासा, सधरां आपणी रास बणाईआ। अगला दस्से भेव खुलासा, अनभव आपणा राग जणाईआ। चार युग दा पिछला पूरा करे खाता, कलयुग अन्तिम डेरा ढाहीआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग मुक्की वाटा, गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे सुणाईआ। सब नूं आया हार पासा, जित नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देवे सच्चा वर, सिर मेरे हथ्थ रखाईआ। सतिजुग कहे प्रभ दस्सणा बोल, अनबोलत राग जणाईआ। तेरे नाम दा वज्जे ढोल, दूजा गीत ना कोए सुणाईआ। आत्म परमात्म करना चोहल, घर मेला सहिज सुभाईआ। बजर कपाटी पड़दा देणा खोल्ह, गुरमुख साचे बूझ बुझाईआ। अमृत आत्म देणी पौहल, रस इक्को इक वखाईआ। आत्म सेजा वसणा कोल, मन्दिर साचे सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे इक अरज़ोईआ। दर तेरे अरज़ोई अरदास, नमो नमो सीस झुकाईआ। किरपा कर सर्ब गुणतास, गुणवन्त तेरी वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लेखा लिख के गए ख़ास, ख्वाहिश आपणी नाल मिलाईआ। कलयुग अन्त निरगुण नूर जोत करे प्रकाश, नर नरायण वेस वटाईआ। जिस दा ना कोई पिता ना कोई मात, आदि अन्त कहिण कोए ना पाईआ। रूप रंग रेख ना कोई ज़ात, दीन मज़्हब ना वंड वंडाईआ। जिस दी सिफ्त लिख ना सके कलम दवात, शाही काग़ज़ रोवण मारन धाहींआ। जिस दी आदि जुगादि जुग चौकड़ी किसे ना जाणी सच प्रभात, घड़ी पल वंड ना कोए वंडाईआ। जो गुर अवतारां पीर पैगम्बरां शब्द अगम्मी देवणहारा दात, पंज तत काया चोले दए टिकाईआ। जो विष्न ब्रह्मा शिव देवणहारा साथ, सगला संग निभाईआ। सो साहिब मिले कमलापात, सतिजुग सच्चा इक्को ध्यान लगाईआ। मेरी पूरी करे आस, आसा आपणे नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देवे सच्चा वर, घर साचे खुशी मनाईआ। सतिजुग कहे प्रभ देवे ढोला, साचा राग इक जणाईआ। कलमा नबी रसूल इक्को बोला, कायनात करे पढ़ाईआ। निरवैर पुरख बण विचोला, धुर दा मेला लए मिलाईआ। सच दुआरा जिस ने आदि जुगादि खोल्हा, गुर अवतार पीर पैगम्बर करे पढ़ाईआ। जिस दुआरे कूड़ी क्रिया कोई ना पाए रौला, नाअरा हक़ हक़ इक्को इक समझाईआ। सो शब्द स्वामी अन्तरजामी सब दा मौला, ना मालूम नज़र किसे ना आईआ। गोबिन्द नाल कर के गया कौला, कीता कौल भुल्ल कदे ना जाईआ। करे खेल उपर धौला, धरत धवल दए वड्याईआ। जिस नूं कहिन्दे भाला भोला, भेव अभेदा दए खुल्हाईआ। जो आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण जन भगत उठाए डोला, बण कहार सेव कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी

किरपा कर, इक्को देवे सच्चा वर, नित नवित्त आपणा दरस कराईआ। सतिजुग कहे प्रभ मिले सज्जण, घर साचे वज्जे वधाईआ। चरण धूढ़ कराए मजन, दुरमति मैल रहिण ना पाईआ। लख चुरासी आए पड़दे कज्जण, कोझे कमले गले लगाईआ। सन्त सुहेले दर ते मंगण, गुर चेले रंग चढ़ाईआ। भगत भगवान रखे अंगन, गृह मन्दिर खुशी वखाईआ। मस्तक टिक्का लगाए साचे चन्दन, चन्द चांदनी नूर रुशनाईआ। इक्को देवे परमानंदन, निजानंद करे रसाईआ। कूड़ विकारा करे खण्डन, नाम खण्डा खड़ग चमकाईआ। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत माणस जन्म ना होवे भंगन, लख चुरासी डेरा ढाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देवे धुर दा वर, मेरी झोली दए भराईआ। सतिजुग कहे प्रभ मिले गहर गम्भीर, गुणवन्त वड्डी वड्याईआ। जिस दा अमृत ठांडा नीर, सीर इक्को मुख चुआईआ। कलयुग जीवां बदल देवे तकदीर, तदबीर आपणी दए समझाईआ। चार वरनां नज़री आए इक तस्वीर, तालब करे सर्ब लोकाईआ। चोटी चाढ़े फड़ अख़ीर, अद्धविचकार ना कोए अटकाईआ। शरअ शरीअत कट ज़ंजीर, लाशरीक मेल मिलाईआ। नज़री आए इक्को ज़ाहरा पीर, पारब्रह्म बेपरवाहीआ। जिस दा लेखा सदा बेनज़ीर, नज़र नेत्र जगत वेखण कोए ना पाईआ। जिस नूं लभ्भदे जगत फ़कीर, सूफ़ी बैठे ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देवे मोहे वर, मेरा लेखा आपणे हथ्थ रखाईआ। सतिजुग कहे प्रभ मिले माही, महिबूब इक्को नज़री आईआ। दो जहान बणे राही, पांधी आपणा पन्ध मुकाईआ। कलयुग कूड़ी मेटे शाही, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। साची सिख्या दए समझाई, धुर संदेसा आप जणाईआ। कर्म कांड दी कटे छाही, जन्म जन्म दा लेख चुकाईआ। भगत भगवान उठाए फड़ फड़ बांहीं, फड़ बांहों गले लगाईआ। सिर रखे ठंडी छाईं, अग्नी तत नेड़ ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देवे सच्चा वर, दर आपणा इक जणाईआ। सतिजुग कहे प्रभ खोल्ह दरवाज़ा, दर तेरे वज्जे वधाईआ। तूं साहिब दयाल ग़रीब निवाज़ा, दीनन देवें माण वड्याईआ। तेरे घर अगम्मी वाजा, छत्ती राग समझ ना आईआ। जुग चौकड़ी रच रच काजा, करनी आपणी कार कमाईआ। निरगुण सरगुण हो के आवें भाजा, गुर अवतार वेस वटाईआ। दो जहानां बण के राजा, शहिनशाह आपणा हुक्म वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, तेरे अग्गे इक्को मंग मंगाईआ। सतिजुग कहे तेरी मंग अनोखी, इक्को आस रखाईआ। तेरे नाम दी पढ़ां पोथी, दूजा अक्खर ना कोए जणाईआ। तेरे नाम दी लवां झोंकी, सच प्यार वधाईआ। तेरा ढोला लोक परलोकी, दो जहानां दयां सुणाईआ। चढ़के वेखां तेरी चोटी, जिस घर बैठा डेरा लाईआ। श्री भगवान मेरे विच आए ना वासना खोटी, कूड़ा

कर्म ना कोए बणाईआ। तेरी निर्मल वेखां जगदी जोती, जोती नूर इक रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तेरा नाम सच्चा राग अल्लाईआ। सतिजुग कहे प्रभ दे दे राग, अनरागी बूझ बुझाईआ। कूड़ी क्रिया जाए त्याग, माया ममता रहिण ना पाईआ। हउमे हंगता बुझे आग, अमृत मेघ इक बरसाईआ। सोई सुरती खुले जाग, नेत्र नैण अक्ख उठाईआ। नज़री आएं साख्यात, शहिनशाह आपणा नूर जणाईआ। मेहर नज़र नाल खोल्ह ताक, पड़दा दूई दे उठाईआ। तेरे नाम दा पूजा पाठ, सिमरन इक्को दे समझाईआ। जोग अभ्यास देणी दात, चरण कँवल मिले सरनाईआ। कलयुग मिटे अन्धेरी रात, तेरा नाम चन्द नज़री आईआ। जिध्धर वेखां चारों कुण्ट वसें पास, विछोड़ा कोई रहिण ना पाईआ। मैं बाला नढ्ढा तूं मेरा माई बाप, पिता पूत गोद सुहाईआ। मैं तेरे भगतां वेखां तेरी ज़ात, जो तेरे रंग समाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सद मंगां चरण सरनाईआ। सतिजुग कहे प्रभ दे दे सरन, सरनगति इक्को नज़री आईआ। तेरे दुआरे सच्चा मरन, मर जीवत रूप वटाईआ। नेत्र खोल्ह आपणा हरन फरन, दोए लोचण कम्म किसे ना आईआ। तेरा नाउँ जीव जंत आत्म परमात्म सारे पढ़न, पारब्रह्म ब्रह्म तेरी करे शनवाईआ। तेरे पौड़े सारे चढ़न, मंज़ल इक्को दे वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच वखाउणा इक घर, जिस घर तू ही तू नज़री आईआ। सच घर वखाल स्वामी, सतिजुग दर ते मंग मंगाइंदा। जिस गृह सुणां तेरी अगम्मी बाणी, दूजा राग ना कोए अल्लाइंदा। सति धर्म दिसे निशानी, सति सतिवादी तेरा रंग मोहे भाइंदा। अमृत सरोवर मिले ठंडा पाणी, रस इक्को इक नज़री आइंदा। लेखा चुक्के तेरी खाणी, चारे बाणी तेरे विच वेख वखाइंदा। तेरा महल अटल अचल्ल उच्च पद निरबाणी, निरबाण पद इक्को सोभा पाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, दर तेरे सीस निवाइंदा। दर तेरे सीस गया झुक, मेरे साहिब सच सुल्ताना, मेरी तृष्ना मेट भुक्ख, सच भण्डार दे दाना, सफ़ल करा धरत मात दी कुक्ख, कूड़ी क्रिया मिटे निशाना। तेरा नाउँ अबिनाशी अचुत, चेतन आपणी धार समझाना। मैं तेरी धारों उपज्या तेरा पुत, सतिजुग योद्धा सूरबीर बलवाना। तेरे भगतां लवां पुच्छ, लोकमात वेखां मार ध्याना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तेरे दर खड़ा बण निमाणा। सतिजुग कहे मेरे सतिगुर मीत, हरि साहिब तेरी सरनाईआ। मैं चलावां तेरी रीत, साची सिख्या जगत समझाईआ। काया मन्दिर मस्जिद शिवदुआला मठ्ठ काअबा इक मसीत, मसला तेरा नाम जणाईआ। हर घट नज़री आएं आप अतीत, त्रैगुण बैठा डेरा ढाहीआ। जगत वासना कोई ना करे पलीत, पाकी पाक तेरी सरनाईआ। सदी चौधवीं रही बीत, गुर

अवतार पीर पैगम्बर बैठे राह तकाईआ। अन्तिम सब दा लेखा करे ठीक, कूड़ा ठीकर दए भंनाईआ। जो चिटे उते खिच के गए लीक, काली धार बणत बणाईआ। सो दूर दुराडे वेखण नेड़े हो नज़दीक, निज नेत्र ध्यान लगाईआ । पारब्रह्म पतिपरमेश्वर परवरदिगार सच प्रीत, सच सरनाई इक जणाईआ। मुकामे हक़ तेरी हदीस, हज़रत पढ़न सुणन कोए ना जाईआ। ईसा मूसा मुहम्मद तेरी करदे गए तारीफ, तुआरफ़ कीता जगत लोकाईआ। सदी चौधवीं रही बीत, बीती कहाणी तेरी झोली पाईआ। लख चुरासी बदली नीत, नीतीवान नज़र कोए ना आईआ। कर किरपा प्रभ मेरी झोली पा बख्शीश, बख्शश तेरे दुआरे नज़री आईआ। सति धर्म तेरी जणावां हदीस, नाम कलमा इक्को इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा धुर दा वर, तेरे नाम वज्जे वधाईआ। साचा नाम दस्स भगवान, सतिजुग आपणी मंग मंगाईआ। लख चुरासी सुणावां तेरा गान, घर घर फेरा पाईआ। सन्त सुहेले मिलावां आण, जुग विछड़े नाल रलाईआ। इक रखावां तेरी आण, दूजी ओट ना कोए जणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा दोहां लेखा होए परवान, परवाना तेरे हथ्थ वखाईआ। मैं बाला नढ्ढा तेरा बच्चा इक नादान, बचपन तेरी झोली पाईआ। सति धर्म दा दे ज्ञान, साची सिख्या इक समझाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे सुणन तेरा फ़रमान, विष्न ब्रह्मा शिव ध्यान लगाईआ। बीस बीसे हरि जगदीशे तेरी करे ना कोए पहचान, बेपहचान नज़र किसे ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, धर्म दुआरा वसे घर, भय भउ भ्यानक रहिण कोए ना पाईआ। भय भउ भ्यानक होए दूर, तेरे वज्जे नाम वधाईआ। नज़री आएं हाज़र हज़ूर, हर घट बैठा डेरा लाईआ। सतिजुग कहे मैं बणां तेरा मज़दूर, बण चाकर सेव कमाईआ। तूं देणी आपणी धूढ़, रहमत सच कमाईआ। मैं तेरा नाम करां मशहूर, दिवस रैण राग अलाईआ। तूं भर भण्डारा भरपूर, अतोट अतुट वरताईआ। जे भुल्लां मेरा मुआफ़ करीं कसूर, पहलों रिहा भुल्ल बख्शाईआ। दो जहान ज़िमीं असमान तेरा नज़री आए नूर, नूरी इस्म इक्को इक जणाईआ। तेरा भुल्ल ना जावां दस्तूर, सिर रखणा हथ्थ टिकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा तोड़ माण ग़रूर, गुरबत ग़फ़लत ग़नीम आपणी झोली पाईआ ।

✪ ६ मग्घर २०२० बिक्रमी जागीर सिंघ दे गृह पिण्ड सोहल ज़िला गुरदासपुर ✪

निरगुण नूर पुरख समरथ, शहिनशाह तेरी वड्याईआ। गुर अवतार जोड़न हथ्थ, निउँ निउँ चरण लागण पाईंआ। पीर पैगम्बर कहिण होए बेवस, तेरी समझ कोई ना आईआ। विष्न ब्रह्मा शिव रहे ढट्ठ, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जुग

चौकड़ी सिर चरणां उते रहे रख, माण अभिमान दोवें मिटाईआ। त्रैगुण कहे मेरा खेड़ा होया भट्ठ, भठियाला इक्को नज़री आईआ। पंज तत कहिण साडी दिसे ना कोई मति, तेरी धार ना कोए जणाईआ। हड्ड मास कहे उबली रत्त, रत्ती रत्त रूप ना कोए वटाईआ। सति स्वामी तेरा कोई ना गावे जस, वेद पुराण रहे कुरलाईआ। शास्त्र सिमरत रहे नट्ठ, चारों कुण्ट वाहो दाहीआ। अञ्जील कुरान नीवीं होई अक्ख, प्रतख रूप ना कोए वखाईआ। खाणी बाणी करे कोई ना पक्ख, नेत्र अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। नौ खण्ड पृथ्मी भाण्डे सक्ख, लख चुरासी सार कोए ना आईआ। नेत्र रोवण तीर्थ तट, अठसठ बैठे ढेरीआं ढाहीआ। तेरा रंग नज़र ना आए मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ, तेरा नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। कलजुग सब दा खेड़ा कीता भट्ठ, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण आपणी दया कमाईआ। गुर अवतार मंगण मंग, दर साचे अलख जगाईआ। पीर पैगम्बर होए नंग, अल्फ़ी तन ना कोए हंढाईआ। आत्म परमात्म देवे ना कोई संग, सगला संग ना कोए निभाईआ। निज घर मिले ना कोई अनन्द, अन्तर मेल ना कोए मिलाईआ। भाण्डा भरम भउ ढाहवे ना कोई कंध, सति सरूप ना कोए वखाईआ। रसना जिह्वा बत्ती दन्द गा गा थक्की छन्द, शहिनशाह अंग ना कोए लगाईआ। साध सन्त सुत्ते दे कर कंड, करवट सके ना कोए बदलाईआ। लख चुरासी सुरत सवाणी होई
१०६९ रंड, नर हरि कन्त ना कोए हंढाईआ। माणस जन्म सब दा दिसे भंग, अमरापद ना कोए सुहाईआ। कूड़ी क्रिया कीता १०६९
१५ खण्ड खण्ड, ब्रह्मण्ड पई दुहाईआ। धीरज देवे ना कोई जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। किरपा १५
कर सूरे सरबँग, शाह पातशाह तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच्चा वर, साहिब सुल्तान फेरा पाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे उडीक, निज नेत्र ध्यान लगाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल आपणी वेख अगम्मी तरीक, तारीख सारे गए जणाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग निरगुण दर तों मंगदे गए भीख, सरगुण इक्को आस तकाईआ। कलयुग अन्तिम प्रगट होवे लाशरीक, शाह पातशाह आपणा फेरा पाईआ। आदि जुगादि ज़ाहर ज़हूर नज़री आए इक्को मीत, मित्र प्यारा इक अख्वाईआ। लख चुरासी जीव जंत साध सन्त कर काया ठंडी सीत, अमृत मेघ नाम बरसाईआ। लेखा जाण हस्त कीट, ऊँच नीच गले लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरे मंग मंगाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दोए रहे जोड़, बन्दना इक्को सीस झुकाईआ। पुरख अगम्मड़े आपे बौहड़, बिन नाड़ी चमड़ी फेरा पाईआ। लख चुरासी रीठा होया कौड़, तुध बिन अमृत रस ना कोए भराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर अन्तिम कल कोई ना सके बौहड़, सारे तेरे चरण बैठे ध्यान लगाईआ। शब्द अगम्मी चढ़ घोड़,

शाहसवारे हो सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, शहिनशाह तेरी आस रखाईआ। श्री भगवान दया कमाउँदा ए। सो पुरख निरँजण हुक्म वरताउँदा ए। हरि पुरख निरँजण शब्द अलाउँदा ए। एकँकारा डंक वजाउँदा ए। आदि निरँजण नूर धराउँदा ए। अबिनाशी करता वेखण आउँदा ए। श्री भगवान फेरा पाउँदा ए। पारब्रह्म प्रभ आपणा रूप वटाउँदा ए। विष्न ब्रह्मा शिव आप जगाउँदा ए। गुर अवतार लेख मुकाउँदा ए। पीर पैगम्बर मुल्लां शेख़ चरण लगाउँदा ए। आपणी धार जाणे कमच अलनेक, लाशरीक खेल खलाउँदा ए। मुकामे हक़ लए पेख, बिन अक्खां नैण मिलाउँदा ए। निरवैर पुरख निराकार स्वामी सब नाल करे हेत, हितकारी आपणा घर वसाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर आप जणाउँदा ए। गुर अवतार पीर पैगम्बर हरि समझाया ए, शब्दी ढोला राग अलाईआ। धुर दा लिख्या लेख पूर कराया ए, पारब्रह्म बेअन्त स्वामी आपणी दया कमाईआ। चारे खाणी चारे बाणी वेखे बेपरवाहया ए, बेऐब पड़दा रिहा उठाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान देण दुहाया ए, अठ दस आपणा राग अलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, साची सिख्या आप जणाईआ। साचा लेखा आप जणाउँदा ए। निरगुण निरवैर पुरख समझाउँदा ए। विष्नूं विश्व धार जणाउँदा ए। ब्रह्मे ब्रह्म इक वखाउँदा ए। शंकर हत्थ त्रिसूल उठाउँदा ए। त्रैगुण माया डेरा ढाउँदा ए। पंचम बूटा जड़ उखड़ाउँदा ए। दो जहानां फेरा पाउँदा ए। ब्रह्मण्ड खण्ड चरण टिकाउँदा ए। पुरी लोअ आकाश वेख वखाउँदा ए। धरत धवल कर प्रकाश, निर्मल जोती जोत डगमगाउँदा ए। गोपी काहन वेख रास, मण्डल मण्डप सोभा पाउँदा ए। लेखा जाण पृथ्मी अकाश, समुंद सागर वरोल वखाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, गुर अवतार पीर पैगम्बर पारब्रह्म प्रभ इक्को धीर धराउँदा ए। गुर अवतार पीर पैगम्बर डौहण झोली, प्रभ चरण ध्यान लगाईआ। जुग चौकड़ी तेरी खेली होली, नाम गुलाला रंग रंगाईआ। अगम्मी बोली बोली, अनहद शब्दी तार सतार वजाईआ। भाग लगाया पंज तत काया चोली, लोकमात वज्जी वधाईआ। अन्तिम तेरे दुआरे रखी आपणी डोली, मित्र प्यारे तेरा ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। तुध बिन नज़र ना आए को, पारब्रह्म तेरी वड्याईआ। लख चुरासी अन्दर आपे हो, घट घट बैठा डेरा लाईआ। आत्म परमात्म जाए छोह, शहिनशाह आपणा रंग रंगाईआ। सच मुहब्बत दस्से मोह, महिबूब आपणी गंढु पवाईआ। घर साचे करे लो, प्रकाश इक्को नज़री आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर चौथे युग आपणी करनी सारे बैठे

खोह, तेरे चरण कँवल इक्को आस तकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा धुर दा वर, दर मंगण बेपरवाहीआ। बेपरवाह हो मेहरवान, प्रभ आपणी दया कमाइंदा। गुर अवतार करो ध्यान, पीर पैगम्बर नाल मिलाइंदा। सचखण्ड निवासी सच निशान, दरगाह साची आप झुलाइंदा। मुकामे हक़ नौजवान, नौबत आपणे नाम सुणाइंदा। शरअ शरीअत इक ईमान, कलमा साचा सच पढ़ाइंदा। साचा मन्त्र सुणो पैग़ाम, धुर संदेसा आप अल़ाइंदा। जुग चौकड़ी बीते विच जहान, कलयुग अन्तिम वेला आइंदा। शास्त्र सिमरत देण ब्यान, गीता ज्ञान भेव खुलाइंदा। वेद व्यासे मंगया दान, ख़ाली झोली अग्गे डाहइंदा। ईसा दे के गया पैग़ाम, मेरा हज़रत मेरा बाप मेरे पिच्छे फेरा पाइंदा। मुहम्मद बण के गया ग़ुलाम, बरदा बण बण सेव कमाइंदा। निउँ निउँ सजदा करे सलाम, साहिब इक्को इक सुणाइंदा। धुर दा कलमा बोल कलाम, कायनात आप जणाइंदा। मेरा साहिब इक अमाम, आलमीन सोभा पाइंदा। कलयुग अन्तिम वेखे आण, सदी चौधवीं वेस वटाइंदा। धुरदरगाही हुक्मरान, साचा हुक्म आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सब दा लेखा कढ्ढ वखाइंदा। सब दा लेखा दस्से खोल़, पारब्रह्म वड्डी वड्याईआ। नानक निरगुण तेरा पूरा करे बोल, रसना जिह्वा ढोला गाईआ। सचखण्ड निवासी तोले आपणा तोल, नाम कंडा हथ्थ उठाईआ। सच दुआरे बैठा आप अडोल, डोले सर्ब लोकाईआ। चार वरन प्या घोल, बरन अठारां करे लड़ाईआ। क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश हरि का नाम ना दिसे किसे कोल, ख़ाली बुत्त रहे कुरलाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मट्ठ गुरुदुआर वज्जदे ढोल, अनहद राग ना कोए सुणाईआ। साधां सन्तां अन्दर पोल, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। अन्दर वड़ के मारन रोल, ज़ाहरा रूप ना कोए धराईआ। गोबिन्द खण्डे अमृत छकी पौहल, पहला दूजा तीजा चौथा घर इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां रिहा जणाईआ। पुरख अबिनाशी गहर गम्भीर, हरि करता खेल कराइंदा। लेखा जाणे बिन शरीर, ततव तत भेव चुकाइंदा। भूपत भूप वड पीरन पीर, बेनज़ीर वेस वटाइंदा। बदलणहार सर्ब तकदीर, तदबीर आपणे हथ्थ रखाइंदा। गोबिन्द तेरे वस्त्र वेखे पहरे चीर, नीली धारों पार कराइंदा। चोटी चढ़ के वेख अख़ीर, उपर इक्को नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा लेखा आप समझाइंदा। धुर दा लेखा दस्से आप, आदि पुरख वड्डी वड्याईआ। आदि जुगादी धुर दा बाप, शाह पातशाह रिहा समझाईआ। निरगुण नूर निरवैर पुरख पाकी पाक, पतित पुनीत रिहा वखाईआ। दो जहानां सज्जण साक, नाता बिधाता जोड़ जुड़ाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जो लोकमात गए आख, सो लेखा पूर कराईआ। नौ खण्ड पृथ्मी वेखे

खेल तमाश, सत्त दीप पड़दा लाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सब दी आसा पूर कराईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर पूरी आसा, करनहार इक अख्वाईआ। करे खेल सर्ब गुणतासा, गुणवन्ता बेपरवाहीआ। कलयुग अन्तिम वेखण आए आप तमाशा, जोती नूर वेस वटाईआ। लख चुरासी करे हासा, कलयुग जीव समझ ना पाईआ। जन भगतां अन्दर कर के वासा, आत्म परमात्म दए समझाईआ। जोती जाता हो प्रकाशा, प्रकाश इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर संदेसा इक सुणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सुणो संदेसा, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। पुरख अकाल निरगुण रूप वटाया वेसा, जोती जामा नज़र किसे ना आइंदा। सम्बल वसया इक्को देसा, भेव अभेदा आप खुलाइंदा। दो जहानां बण के नेता, साचा हुक्म आप अलाइंदा। जुग चौकड़ी रखे चेता, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग भुल्ल कदे ना जाइंदा। तेई अवतारां वेखे कीता, भगत अठारां भेव खुलाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद करे हेता, हितकारी फेरा पाइंदा। नानक गोबिन्द निरगुण पेखा, नर निरँकार इक्को नज़री आइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा हुक्म आप सुणाइंदा। साचा हुक्म देवे भगवान, हरि करता आप जणाईआ। सारे वेखो आण, दूर दुराडा पन्ध मुकाईआ। खेले खेल नौजवान, दीन दयाल फेरा पाईआ। धरनी धरत धवल सुहाए आण, साचा नूर कर रुशनाईआ। शब्द अगम्मी इक बबाण, दो जहानां आप उडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, धुर दी धार आप बणाईआ। धुर दी धार दस्से भगवन्त, भगवन आपणी दया कमाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस नूं मन्नदे रहे कन्त, सो कन्त कन्तूहल फेरा पाईआ। कलयुग माया पाए बेअन्त, जीव जंत समझ सके कोए ना राईआ। गुरमुख विरले आप उठाए सन्त, जिस जन आपणी बूझ बुझाईआ। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दए समझाईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, धुर दा नाम दए समझाईआ। देवे वड्याई विच जीव जंत, जागरत जोत करे रुशनाईआ। उठो वेखो कलयुग अन्त, अन्तष्करन सब दा दए वखाईआ। साचा नज़र ना आए कोई मंत, मंतव सारे आपणा हल कराईआ। काया चोली चाढ़े रंग ना कोए बसन्त, दर दर घर घर कपड़ बैठे रंगाईआ। नाता तुट्टे ना जेरज अंडत, उत्भुज सेत्ज फंद ना कोए कटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, गुर अवतारां पीर पैगम्बरां घर इक्को इक जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखो घर, सचखण्ड निवासी आप जणाइंदा। जिस गृह बहि के देवे वर, मेहरवान हुक्म वरताइंदा। जन भगतां फड़े आप लड़, लड़ भगतां आप फड़ाइंदा। काया मन्दिर साचे पौड़े चढ़, महल अटल वेख वखाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा

आत्म परमात्म ढोला पढ़, सोहँ इक्को राग सुणाइंदा। करता पुरख करनी कर, हरि साची कार कमाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा मार्ग इक समझाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखो आ, रहबर इक्को इक खुदाईआ। साचा मार्ग रिहा लगा, दीन मज़्हब ना कोए जणाईआ। ज़ात पात ना वंड वंडा, वरन बरन ना कोए रखाईआ। निर्मल जोती जोत करे रुशना, घर घर दीपक आप टिकाईआ। बजर कपाटी कुंडा देवे लाह, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। अनहद नादी राग दए सुणा, धुन आत्मक कर शनवाईआ। अमृत आत्म जाम दए प्या, निझर झिरना आप झिराईआ। हर घट नज़री जाए आ, लख चुरासी रिहा समाईआ। सृष्ट सबाई इक जपाए नाँ, नाउँ निरँकारा इक्को इक दरसाईआ। कलमा नबी रसूल दए पढ़ा, सच असूल आप बताईआ। साचे हुजरे उच्च महिराबे महिबूब नज़री जाए आ, बेपरवाह इक्को इक अख्वाईआ। जिस दा लेखा कोई लिखे ना कलम शाह, कागज़ रोवे मारे धाहींआ। सो पीर पैगम्बरां सजदा रिहा करा, इस्लाम इक्को इक समझाईआ। उस दे सारे बणो वफ़ा, वफ़ादारी इक जणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम लेखा इक जणाईआ। अन्तिम लेखा दस्से एक, एकँकार हुक्म वरताइंदा। कलयुग अन्तिम छड्डणा सब ने भेख, भेखाधारी आप जणाइंदा। सतिजुग साची रखणी टेक, टेक इक्को इक जणाइंदा। पुरख अकाल करना हेत, दूजा इष्ट ना कोए बणाइंदा। लख चुरासी सुंञां दिसे खेत, नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप फोल फोलाइंदा। आत्म परमात्म कोए ना करे हेत, हितकारी नज़र ना आइंदा। सदी बीसवीं खेले खेड, हरि ख़ालक ख़लक रूप वटाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सतिजुग साची धार जणाइंदा। सतिजुग धार दस्से प्रभ सति, सति सति जणाईआ। चार वरन देवे मति, ब्रह्म मति इक समझाईआ। जन भगतां खोलू आपणी अक्ख, निज नेत्र करे रुशनाईआ। सच्चा मार्ग धुर दा दस्स, आत्म परमात्म मेल मिलाईआ। चौदां विद्या खेड़ा करे भट्ठ, भगत भगवान दए समझाईआ। लहिणा देणा जाणे तत अट्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच स्नेहड़ा इक घलाईआ। सच स्नेहड़ा देवे घल्ल, हरि पैग़ाम बेपरवाहीआ। पुरख अकाल करे वल छल, अछल छलधारी आपणा खेल रचाईआ। वेखणहारा जल थल, महीअल डूंघे सागर फोल फोलाईआ। जोती शब्दी गया रल, पंज तत नज़र कोए ना आईआ। सच प्रकाश गया बल, तेल बाती ना कोए टिकाईआ। कलयुग अन्तिम मेटे सल, सतिजुग साची धार बंधाईआ। गुर अवतारां पीर पैगम्बरां सदी बीसवीं पिछला दित्ता फल, अग्गे लेखा कोए रहिण ना पाईआ। हरि चरण दवारा लैणा मल्ल, मिले धुर सच्ची सरनाईआ। अमृत पीणा ठंडा जल, आबेहयात मुख

चुआईआ। इकावन बावन जाणा रल, पंज इक वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लहिणा सब दा लेखे लाईआ। गुर अवतार झुकावण सीस, प्रभ तेरी वड वड्याईआ। तेरा खेल नर हरि जगदीश, जग जीवण दाते समझ कोए ना पाईआ। साडे ख़ाली होए खीस, ख़ाली हथ्थ रहे वखाईआ। सदी चौधवीं रही बीत, बीती कहाणी नज़र किसे ना आईआ। मिट्ठा होया कलयुग कौड़ा रीठ, तुध बिन रस ना कोए भराईआ। तेरी सारे करन उडीक, नेत्र लोचण नैण उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लोकमात वसाउणा साचा घर, बण मालक बेपरवाहीआ। बेपरवाह बण मालक, पीर पैगम्बर रहे जणाईआ। साहिब सुल्तान साचे ख़ालक, ख़लक तेरी झोली पाईआ। तैनूं ना निंद्रा ना कोई आलस, ग़फ्लत रूप ना कोए वटाईआ। दो जहानां बण सालस, सच सालसी आप कमाईआ। तेरी नज़री आवे इक्को अदालत, अदल तेरे हथ्थ वड्याईआ। तेरे घर करे ना कोई वकालत, वुकले बैठे मुख शरमाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कलयुग अन्तिम किसे ना करे कोई सिफ़ारिश, तुआरफ़ नज़र कोए ना आईआ। कलयुग जीवां शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान लिखी भुल्ली इबारत, निष्अक्खर अक्खर समझ कोए ना पाईआ। पंडत पांधे मुल्लां शेख़ मसायक ग्रन्थी पन्थी तेरे नाम दी लैंदे आड़त, साचा सौदा हट्ट ना कोए विकाईआ। कोई ना जाणे तेरा खेल माअरफ़त, महिबूब तेरी सार किसे ना आईआ। माया ममता डिगे डूंग्घी ग़ारत, बाहर सके ना कोए कढ्ढाईआ। भरमे भुल्ले वड वड आरफ़, उल्मा चले ना कोए चतुराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा घर, जिस घर बहि के ख़ुशी मनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिण प्रभ खोल्ह दरवाज़ा, सचखण्ड निवासी तेरी ओट तकाईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी तूं साजण साजा, साजणहार तेरी वड्याईआ। शब्द अगम्मी तेरा सुणदे रहे वाजा, सुर ताल ना कोए वखाईआ। निरगुण सरगुण रचदा रिहों काजा, गुर अवतार पीर पैगम्बर मेल मिलाईआ। अन्दर वड़ के मारदा रिहों वाजां, सुत्तयां आप उठाईआ। कलयुग अन्तिम रख लाजा, तेरी इक शरनाईआ। शौह दरयाए डुब्बदा दिसे जहाज़ा, बेड़ा पार ना कोए कराईआ। नज़र ना आए शाह नवाबा, जगत जगदीश समझ कोए ना पाईआ। पढ़ पढ़ थक्के तेरी गाथा, दिवस रैण ढोले गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तुध बिन आस ना कोए पूर कराईआ। श्री भगवान कहे मैं आवांगा। निरगुण नूर जोत जगावांगा। किला कोट बंक सुहावांगा। शब्द नगारे चोट लगावांगा। लख चुरासी कढ्ढां खोट, साचा मार्ग इक प्रगटावांगा। जन भगतां प्रगट कर निर्मल जोत, जोती नूर इक चमकावांगा। लहिणा देणा चुका वरन गोत, ब्रह्म इक्को इक समझावांगा। प्रेम करे ना कोई काया माटी पोश, आत्म

आत्म नाल मिलावांगा। सज़ा मिले ना किसे निर्दोष, दोषी मनमुख आप बणावांगा। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग जो बैठा रिहा ख़ामोश, सो खोल्ह के हाल सुणावांगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरि मन्दिर इक वडयावांगा। हरि मन्दिर प्रभ वडयाएगा। जिस गृह आपणा चरण टिकाएगा। सच दुआरा सोभा पाएगा। भगत भगवान वेख वखाएगा। जगत निशान इक झुलाएगा। लख चुरासी आण इक्को पाएगा। दो जहानां ईमान इक समझाएगा। धुर दा राम नज़री आएगा। काहन इक्को रंग वखाएगा। पैग़ाम इक्को इक सुणाएगा। नाम इक्को इक जपाएगा। काण इक्को इक रखाएगा। बाण इक्को इक लगाएगा। ध्यान इक्को इक जणाएगा। शान इक्को इक वधाएगा। बलवान इक्को इक अख्वाएगा। भगवान इक्को नज़री आएगा। सीस जगदीश ताज सुहाएगा। लेखा जाणे बीस इकीस, निरगुण सरगुण वंड वंडाएगा। जुग चौकड़ी आपे जीत, हार सब दे गले बंधाएगा। सचखण्ड दुआरे बैठ अतीत, त्रैभवन धनी आपणी कार कमाएगा। जन भगतां काया कर ठांडी सीत, अमृत धार जाम प्याएगा। चरण कँवल जणाए प्रीत, धरनी धरत धवल वडयाएगा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा देवे नाम वर, साची धारा आप वखाएगा। साची धारा चले जग, हरि करता आप चलाईआ। जन भगतां दर्शन देवे उपर शाह रग, जगत दुआरा पन्ध मुकाईआ। जन्म कर्म दी मेट के तृष्ना अग्ग, सांतक सति सति वरताईआ। फड़ फड़ हँस बणा कग्ग, कागों हँस रूप वटाईआ। निर्मल जोती जाए जग, जिस आपणी दया कमाईआ। कूड़ी क्रिया पार हद्द, नव दुआर डेरा ढाहीआ। घर सच सुणाए छन्द, सोहँ ढोला राग अल्हाईआ। जन भगतां मेट पन्ध, घर आपणे लए बहाईआ। निज आत्म देवे अनन्द, परमानंद विच समाईआ। सतिजुग साचा चाढ़ चन्द, कलयुग अज्ञान अन्धेर मिटाईआ। खुशी कर बंद बंद, बंदगी इक्को इक समझाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जुग चौकड़ी जो मंगदे रहे मंग, तिन्हां आसा पूर वखाईआ। जन भगतां नंगी होण ना देवे कंड, सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। नाम खण्डा चण्ड प्रचण्ड, दोहरी धार आप चमकाईआ। नाता तोड़ भेख पखण्ड, कूड़ी क्रिया दए गंवाईआ। भेव खुल्ल्हा हँ ब्रह्म, पारब्रह्म लए मिलाईआ। लेखे ला जननी जन, देवे वड्याई धन्न जणेंदी माईआ। गुरमुख गुरसिख बेड़ा देवे बन्न्ह, बण खेवट खेटा पार कराईआ। किसे नज़र ना आए नेत्र अन्न्ह, दोए लोचण वेखण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, सच्चा मार्ग इक प्रगटाईआ। सच्चा मार्ग लावे एकँकार, अक्ल कल वड्डी वड्याईआ। सतिजुग साचा लए उठाल, चौथे युग लै अंगड़ाईआ। त्रेता द्वापर कलयुग बीतया काल, अन्तिम तेरी वारी आईआ। पुरख अबिनाशी होए दयाल, सिर तेरे हथ्थ टिकाईआ। नेत्र खोल्ह कर जमाल, जलवा इक्को दए

जणाईआ। हकीकत झोली पाए हक़ हलाल, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। मातलोक बण दलाल, जन भगतां मेल मिलाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर हलाल, तिक्खी छुरी धार वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सतिजुग साचे आप उठाईआ। सतिजुग सच्चा गया उठ, प्रभ चरण लए अंगड़ाईआ। पुरख अबिनाशी गया तुठ, मेहरवान दया कमाईआ। कीता प्यार लाडले पुत्त, पिता पूत खुशी जणाईआ। मेरी सुहाए सुहञ्जणी रुत्त, रुत्त रुतड़ी आप महकाईआ। मेरे कोल नहीं कुछ, नाम भण्डारा झोली देवे पाईआ। धरत मात दी सफ़ल करावां कुक्ख, कुक्खड़ी भाग लगाईआ। जन भगतां उजल करां मुख, दुरमति मैल धवाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर जिस दीआं सुखणां गए सुख, सो सतिगुर होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, आपणा खेल आप रचाईआ। सतिजुग कहे मैं बाल नधान, प्रभ तेरी ओट तकाईआ। धुर दा दे इक ज्ञान, जगत करां ना कोए पढ़ाईआ। नज़री आए तेरा मकान, सिँघासण तेरा सोभा पाईआ। हुक्म देवें हुक्मरान, हुक्मी हुक्म इक जणाईआ। चरण बन्दना करां आण, दोए जोड़ बंदगी इक तेरे दर तों पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक वर, तेरा ढोला गावां चाईं चाईंआ। सतिजुग सुण ला कर कन्न, हरि करता आप जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर कहिणा ल्या मन्न, मनसा सब दी पूर कराईआ। सीस झुका रसना कहु धन्न धन्न, धन्न तेरी वड्याईआ। जिस कलयुग अन्दर चाढ़या सच्चा चन्न, नूरी चन्द जोत रुशनाईआ। रवि ससि दोवें होए अन्न्ह, अन्ध अन्धेरा सके ना कोए मिटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच वखाया इक घर, जिस घर मिले माण वड्याईआ। सतिजुग कहे प्रभ दे प्यार, परम पुरख तेरी सरनाईआ। दर्शन करां गुरू अवतार, जो दर तेरे बैठे सीस झुकाईआ। जलवा वेखां पीर पैगम्बर यार, जो यारी तेरे नाल निभाईआ। अबिनाशी करता कहे सुण बाल अञ्याण, धुर दी धार आप जणाईआ। जा के वेख नौजवान, गुरमुख तेरा राह तकाईआ। सच प्रीती मंगण दान, झोली ख़ाली रहे वखाईआ। ओन्हां जा के कर पहचान, आप आपणा वेस वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देवे इक वर, वर दाता इक अख्वाईआ। वर दित्ता प्रभ आप स्वामी, सभा सच जणाईआ। पुरख अकाल अन्तरजामी, अन्तरगत सर्ब बुझाईआ। आदि जुगादि सदा निहकामी, निहकर्मी नज़री आईआ। जुग चौकड़ी बोध अगाध सुणाए बाणी, धुर दी धार आप प्रगटाईआ। कलयुग अन्तिम गुर अवतार पीर पैगम्बर दस्स के गए निशानी, निशाना इक्को इक जणाईआ। प्रगट होवे शाह सुल्तानी, शहिनशाह आपणा फेरा पाईआ। जिस दा दिसे ना कोई सानी, लासानी वाहद इक्को नज़री आईआ। उस दी सारे गावण कहाणी, कथनी कथ कथा सुणाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, करे खेल साचा हरि, निरगुण निरवैर निराकार नर हरि आपणा वेस वटाईआ। वेस वटाए नर हरि नरायण, नर इक्को नज़री आइंदा। रसना कोई ना सके कहिण, कह कह अन्त कोए ना पाइंदा। प्रभ सरनाई सारे ढहिण, सीस अग्गे ना कोए उठाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर सब दा चुकाए लहिणा देण, पूरब लेखा वेख वखाइंदा। भगत भगवान महल अटल उच्च मकान इकट्ठे रहिण, घर इक्को इक सुहाइंदा। सतिगुर बण के आया लैण, गुरमुख अंग लगाइंदा। लख चुरासी वेखे वैंहदी वहण, वाहवा पार ना कोए कराइंदा। लाड़ी मौत खाए डाइण, राए धर्म हुक्म समझाइंदा। गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत सन्त सुहेले गुरु गुर चेले पुरख अकाल चरणी बहिण, सच दुआरा इक जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, लेखा जाणे धुर दरबार, वड दरबारी आपणी करनी आप कमाइंदा।

✪ १० मग्घर २०२० बिक्रमी गुरबचन सिंघ दे गृह नईया शाला ज़िला गुरदासपुर ✪

गुर अवतार सीस झुका, हरि चरण डेरा लाईआ। पीर पैगम्बर कहिण पैंडा मुक्का, पन्ध नज़र कोए ना आईआ। लोकमात तेरा नूर किसे ना दिस्सा, चारों कुण्ट अन्धेरा छाईआ। सृष्ट सबाई भुल्लया नाउँ एका पिता, पुरख अकाल ना कोए मनाईआ। चार कुण्ट कूड़ हिता, सच सुच ना कोए समझाईआ। प्रेम प्रीती अमृत रस होया फिका, सर सरोवर धार ना कोए वहाईआ। मन मनुआ ना किसे जिता, बुध विवेक ना कोए कराईआ। हरि का मन्दिर किसे ना डिट्ठा, काअबे हज्ज ना कोए जणाईआ। कूड़ी क्रिया जीव जहान पिसा, कलयुग चक्की इक चलाईआ। साचा बीज ना किसे बीजा, पत्त डाली ना कोए महकाईआ। काम क्रोध लोभ मोह हँकार सब करन रीझा, निरगुण तेरा नाम निधान ना कोए गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, एका दे सच्चा वर, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। गुर अवतार टेक मत्था, पिछला लहिणा अग्गे टिकाईआ। पीर पैगम्बर चरणी ढट्ठा, बलहीण दए दुहाईआ। नौ खण्ड पृथमी कूड़ी क्रिया उडे घट्टा, खेह माटी नज़री आईआ। दीन मज़्ब दा प्या रट्टा, ज़ात पात करे लड़ाईआ। तेरे घर दा देवे कोई ना पता, साध सन्त बैठे मुख छुपाईआ। सच सुच होई हत्या, कलयुग कूड़ी छुरी रिहा चलाईआ। सच सवाणी पीर पैगम्बर तेरा कोई ना लै के आवे भत्ता, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। निज नेत्र दर्शन पाए कोई ना अक्खां, दोए लोचण रहे शरमाईआ। जगत विकारा खेड़ा होया भट्ठा, त्रैगुण अग्नी तन तपाईआ। पारब्रह्म तेरी कोई ना लए मता, मनमति दए दुहाईआ। तेरे प्रेम कोई ना रत्ता, रत्ती रत्त रंग ना

कोए रंगाईआ। कलयुग वहण डूंग्घी डिगे खड्डा, फड़ बांहों बाहर ना कोए कराईआ। इक्को चरण दुआरा तेरा छड्डा, नौ खण्ड पृथ्मी रोवे मारे धाहींआ। तेरा नाम शहिनशाह शेर इक्को बग्गा, दो जहानां भबक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, लहिणा सब दा वेख वखाईआ। गुर अवतार लग चरण, निउँ निउँ सीस झुकाईआ। पीर पैगम्बर मंग सरन, धूढ़ी टिक्का मस्तक लाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव सारे डरन, सिर सके ना कोए उठाईआ। कलयुग जीव जंत साध सन्त अग्नी सड़न, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ। बिरहों विछोड़े तेरे मरन, जन भगत ध्यान लगाईआ। कूड़ी क्रिया मनमुख करन, करते तेरी सार किसे ना पाईआ। लेखा चुक्के ना वरन बरन, चार अठारां देण दुहाईआ। साचा ढोला कोई ना पढ़न, अन्तर आत्म ध्यान लगाईआ। काया मन्दिर कोई ना वड़न, मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मड्ड भज्जण वाहो दाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, घट मस्तक वेख वखाईआ। गुर अवतार रख आस, जुग चौकड़ी ध्यान लगाईआ। पीर पैगम्बर बण के दास, बण सेवक सेव कमाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग निरगुण सरगुण तेरा खेल तमाश, ख़ालक ख़लक तेरी वड्याईआ। लख चुरासी नूर प्रकाश, जोत निरँजण डगमगाईआ। पवणी पवण पवण स्वास, मण्डल रासी रास रचाईआ। खेले खेल पृथ्मी आकाश, गगन मण्डल रंग रंगाईआ। शाह पातशाह शहिनशाह तोहे शाबाश, तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग अन्त गुर अवतार पीर पैगम्बर सदी बीसवीं सारे होए निरास, आसा सके ना कोए वधाईआ। निर्धन हो के आए तेरे पास, दोए जोड़ सीस निवाईआ। तेरी करनी तेरे हाथ, बेपरवाह तेरी वड्याईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया सति धर्म दा कीता घात, सच सुच नज़र कोए ना आईआ। तुध बिन देवे ना कोई नजात, मेहर नज़र ना कोए उठाईआ। चारों कुण्ट अन्धेरी रात, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा दे इक वर, वज्जे तेरे नाम वधाईआ। गुर अवतार कहिण बोल, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। पीर पैगम्बर वजावण ढोल, डंका तेरा नाम लगाईआ। सच दुआरा हरि जू खोल्ह, परवरदिगार तेरी सरनाईआ। नाम अगम्मे कंडे तोल, साचा तोला बण के फेरा पाईआ। लख चुरासी जीव जंत वरोल, नाम मधाणा इक्को पाईआ। कूड़ी क्रिया रही खौल, समुंद सागर रही तपाईआ। निर्धन दिसे ना कोए अडोल, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तुध बिन सार कोए ना पाईआ। गुर अवतार कहिण प्रभ वेख मात, कलयुग अन्त पई दुहाईआ। पीर पैगम्बर कहिण सब नूं भुल्ली तेरी ज़ात, तेरा नूर नज़र ना आईआ। साडा लेखा लिख्या कलम दवात, लख चुरासी गई भुलाईआ। सति सति दी करे कोई ना बात, जूठ झूठ चारो कुण्ट डेरा लाईआ। तेरे भगतां तेरे

सन्तां देवे ना कोई नजात, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। फुल फलवाड़ी वेख आपणा बाग़ात, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सब दा लेखा दे चुकाईआ। गुर अवतार कहिण प्रभ तेरी ओट, दूजा नज़र कोए ना आईआ। पीर पैगम्बर कहिण हउँ तेरी जोत, जोती जोत जोत रुशनाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरी करदे रहे सोच, सोच विच किसे ना आईआ। तेरे दर्शन नूं नेत्र लोचण रहे लोच, अन्तर अन्तर ध्यान लगाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल क्यों बैठा हो ख़ामोश, आप आपणा मुख छुपाईआ। राह तक्कण लोक परलोक, दो जहान अक्ख उठाईआ। लख चुरासी जीव आहलणयों डिगे बोट, तुध बिन गले ना कोए लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को दे सच्चा वर, निरगुण आपणा फेरा पाईआ। गुर अवतार मंगण मंग, दर झोली इक वखाईआ। पीर पैगम्बर होवण संग, सगला संग निभाईआ। पुरख अकाल टुट्टी गंढु, गंढुणहार तेरी वड्याईआ। दीन दयाल चाढ़ चन्द, निरगुण जोत कर रुशनाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया जाए हंढु, लोकमात रहिण ना पाईआ। जीव जंत तेरा नाम गाए बत्ती दन्द, रसना जिह्वा सिफ्त सालाहीआ। कर प्रकाश अन्धेरे अन्ध, जगत अन्धेरा दे गंवाईआ। करवट लै के सुत्ता दे कर कंड, आप आपणा मुख वखाईआ। तेरे प्रेम दा मिले अनन्द, अनन्द इक्को नजरी आईआ। लेखा चुक्के हँ ब्रह्म, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। तेरी धारों पए जम्म, अन्तिम तेरे विच समाईआ। निरवैर पुरख बेड़ा बन्न्ह, निराकार तेरी ओट तकाईआ। आदि जुगादी बण के जननी जन, साची गोद लै सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच वखाउणा इक दर, दर दरवाज़ा आप खुल्हाईआ। गुर अवतार कहिण प्रभ तेरा प्यार, परम पुरख तेरी सरनाईआ। पीर पैगम्बर कहिण परवरदिगार, लाशरीक तेरी वड्याईआ। निरवैर हो ख़बरदार, बेख़बर ख़बर आप सुणाईआ। चौदां तबक होए बेदार, चौदां लोक देण दुहाईआ। चौदां विद्या होई ख्वार, तेरी सार किसे ना पाईआ। चौदस चन्द होया अँध्यार, जोती नूर ना कोए रुशनाईआ। साचा कोए ना वणज व्यपार, धुर दा हट्ट ना कोए खुल्हाईआ। चारों कुण्ट ठग्ग चोर यार, नव नौ आपणा फेरा पाईआ । तेरा मन्दिर दिसे ना कोए दरबार, दरगाह साची नज़र किसे ना आईआ। साचा हज्ज ना करे कोई दीदार, हज़रत रूप ना कोए वखाईआ। किरपा कर सिरजणहार, साहिब सुल्तान तेरी सरनाईआ। अञ्जील कुरान करे पुकार, पुराण अठारां देण दुहाईआ। गीता ज्ञान करे विचार, चारे वेद मंग मंगाईआ। बाणी कूके कूक कूक वाजां रही मार, शाह पातशाह आपणा दरस दिखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा अगम्मा वर, लिखण पढ़न विच कदे ना आईआ। गुर अवतार कहिण प्रभ सज्जण सच, सच तेरी सरनाईआ। पीर पैगम्बर

कहिण सांझे यार सच, सच तेरी वड्याईआ। उठ वेख कूड़ी क्रिया नौ खण्ड पृथ्मी रही नच्च, मुख घूँगट बैठी पाईआ। साध सन्त माया ममता कोई ना सक्या बच, हउमे गढ़ इक्को नज़री आईआ। काम वासना नाड़ी नाड़ी गई रच, नाड़ बहत्तर रही कुरलाईआ। त्रैगुण माया लग्गी आंच, अग्नी तत ना कोए मिटाईआ। तेरा नाउँ किसे ना सके भास, भाख्या सच ना कोए समझाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात सारे आए आख, सच संदेसा इक सुणाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त इक्को आवे कमलापात, कँवल नैण फेरा पाईआ । जिस दा दीन मज़्ब ना कोई ज़ात, रूप रंग रेख ना कोए वखाईआ। सृष्ट सबाई देवे दात, नाम अमोलक झोली पाईआ। सच धर्म सुणावे गाथ, आत्म परमात्म राग अलाईआ। लहिणा देण चुकाए पूरब मस्तक माथ, कर्म धर्म वेखे थाउँ थाईंआ। कलयुग मिटे अन्धेरी रात, कूड़ अमावस नज़र ना आईआ। जन भगतां खोल्हे आपणा ताक, बजर कपाटी तोड़ तुड़ाईआ। निर्मल जोत करे प्रकाश, साचा नूर इक दरसाईआ। पूरा करे भविक्खत वाक, बेपरवाह वड्डी वड्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक्को घर, जिस घर तेरा नूर नज़री आईआ। गुर अवतार कहिण प्रभ ठाकर, शहिनशाह तेरी सरनाईआ। पीर पैगम्बर कहिण करते कादर,
१०८० कुदरत तेरी सोभा पाईआ। जोद्धे सूरबीर वड बहादर, महाबली तेरी ओट तकाईआ। निर्मल कर्म कर उजागर, लख चुरासी १०८०
दुरमति मैल धवाईआ। नाम वणजारे बण सौदागर, सौदा इक्को हट्ट विकाईआ। सुरत सवाणी कर इकागर, बिरती आपणे नाल जुड़ाईआ। भाग लगा काया गागर, साढे तिन्न हथ्थ दे वड्याईआ। सच कमा धुर दा आदल, अदली तेरा राह तकाईआ। कलयुग कूड़ा मिटे बादल, सतिजुग सच्चा नूर वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा आपणा घर, जिस घर बहि बहि खुशी मनाईआ। गुर अवतार कहिण प्रभ स्वामी, तेरा नाउँ वज्जे वधाईआ। पीर पैगम्बर कहिण शाह सुल्तानी, शहिनशाह तेरा रंग नज़री आईआ। चार जुग तेरी कटी मात ग़ुलामी, सरगुण हो के सेव कमाईआ। तेरे नाम दी पढ़ी कलामी, कलमा नबी रसूल जणाईआ। तेरा मुकामे वसया हक़ अमामी, दरगाह साची खुशी मनाईआ। तेरा खेल वेख्या चार खाणी, अण्डज जेरज उत्भुज सेत्ज फेरा पाईआ। तेरा अमृत पीणा धुर दा पाणी, आबेहयात बूँद स्वांती मुख चुआईआ। बोध अगाध सुणी अगम्मी बाणी, धुन अनादी नाद जणाईआ। आत्म परमात्म मिल्या इक्को हाणी, सेज सुहञ्जणी सोभा पाईआ। कलयुग अन्त श्री भगवन्त नौ खण्ड पृथ्मी होणी वैरानी, वैरी घर घर नज़री आईआ। तुध बिन बणे कोई ना बानी, रहबर राह ना कोए वखाईआ। तेरे नाम दी सारे गा गा गए कहाणी, कह कह शुकर मनाईआ। तेरा पद इक निरबाणी, सचखण्ड वसें शहिनशाहीआ । साची दे सति निशानी, दो जहानां नज़री आईआ। कलजुग मिटे परेशानी,

दुखियां दु:ख दे गंवाईआ। जन भगतां नेड़ ना आए शैतानी, मुरीद मुर्शद लै तराईआ। मन मनुआ ना होए हरामी, साची सिख्या दे समझाईआ। तेरा कलमा इक कलामी, कायनात कर पढ़ाईआ। तेरा नाम गुण निधानी, गुणवन्ता नज़री आईआ। तूं राम रहीम रहमानी, रहमत तेरी इक्को भाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग देंदे गए सर्ब ब्यानी, लेखा कलमबंद कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा आपणा घर, जिस घर तेरा नित नवित्त दर्शन पाईआ। गुर अवतार कहिण प्रभ उच्च अगम्म अथाह, अथाह तेरी वड्याईआ। पीर पैगम्बर कहिण बण मलाह, खेवट खेटा रूप वटाईआ। निरगुण हो के सरगुण दे सलाह, साची सिख्या इक समझाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरे बैठे मंग पनाह, सीस जगदीश रहे झुकाईआ। लख चुरासी वेख भरी गुनाह, पतित पुनीत ना कोए कराईआ। सब नूं भुल्लया तेरा नाँ, नाउँ निरँकारा रसना जिह्वा सके ना कोए गाईआ। नाता जुड़या पुत्रां माँ, पिता पूत गोद उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को वखाउणा धुर दा दर, दर मन्दिर इक्को नज़री आईआ। गुर अवतार कहिण तेरी ओट अकाल, अक्ल कला वड्याईआ। पीर पैगम्बर कहिण तेरा जलवा नूर जलाल, ज़ाहर ज़हूर समझ कोए ना पाईआ। निरगुण हो के बण दलाल, सरगुण बैठे पन्ध मुकाईआ। लख चुरासी वेख हाल, हालत सब दी दे बदलाईआ। कूड़ी क्रिया तोड़ जंजाल, जागरत जोत कर रुशनाईआ। भगत भगवान उठा आपणे लाल, लालन आपणा रंग रंगाईआ। लेखा चुका शाह कंगाल, ऊँच नीच इक्को घर बहाईआ। ग़रीब निमाणयां कर प्रितपाल, प्रितपालक तेरी वड्डी वड वड्याईआ। धर्म बणा इक सच्ची धर्मसाल, दुआरा इक्को इक वखाईआ। अमृत प्या धुर दा जाम, चार वरन तृखा बुझाईआ। नज़री आए इक्को राम, इक्को काहन संग बणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साची करनी लैणी कर, करता पुरख तेरी सरनाईआ। गुर अवतार कहिण हरि करनी करते, कुदरत तेरा राह तकाईआ। पीर पैगम्बर कहिण हउँ तेरे बरदे, बण सेवक सेव कमाईआ। जुग चौकड़ी मंगते दर दे, दर दर अलख जगाईआ। तेरी मेहर नाल दो जहान तरदे, आवण जावण पन्ध मुकाईआ। तेरे खेल घर घर दे, गृह गृह बैठा आसण लाईआ। तेरे कोलों विष्न ब्रह्मा शिव कोटन कोटि डरदे, अक्ख सके ना कोए उठाईआ। तेरे दुआरे बिन तेरी किरपा कोई ना वड़दे, दूर दुराडे बैठे राह तकाईआ। तेरे पौड़े कोई ना चढ़दे, तेरी मंज़ल हथ्थ किसे ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरे नाउँ दा ढोला पढ़दे, तू ही तू ही राग अलाईआ। आदि जुगादि तेरा भाणा जरदे, सद भाणे विच समाईआ। कर किरपा ठाकर सब दे दुखड़े हर दे, हिरदे आपणा डेरा लाईआ। दो जहान उडीकण चिर दे, नौ सौ चुरानवे चौकड़ी ध्यान लगाईआ। वेखीए खेल अगम्मी पिर दे, पिता पूत गोद उठाईआ। तेरी सरनाईआ

सारे फिरदे, बण बण पांधी राहीआ। गुरमुख विरले सन्त सुहेले तेरी सरन डिगदे, माण अभिमान दोवें जगत गंवाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा घर, नर हरि नरायण तेरा मन्दिर सच सुहञ्जणा नज़री आईआ। सच सुहञ्जणा मन्दिर तेरा, तेरे हथ्थ वड्याईआ। आदि जुगादि ना होए अन्धेरा, जोती दीपक नूर रुशनाईआ। वसदा रहे सदा खेड़ा, सचखण्ड वजे वधाईआ। कलयुग अन्तिम बन्नू बेड़ा, बेपरवाह तेरी सरनाईआ। तुध बिन ख़ाली दुआरा केहड़ा, जिस घर नज़र ना आईआ। जन भगतां कट चुरासी गेड़ा, गेड़ा आपणे विच वखाईआ। आवण जावण जन्म मरन कर्म कांड चुक्के झेड़ा, प्रकृती नजर कोए ना आईआ। निरगुण सरगुण रल मिल इक दूजे नूं कहिण तूं मेरा मैं तेरा, तेरा मेरा इक सरूप दूजा रूप ना कोए वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, निरगुण निरवैर कर आपणी मेहरा, मेहर नज़र इक उठाईआ।

१०८२

✪ १० मग्घर बिक्रमी २०२० अजीत सिँघ दे गृह पिण्ड कत्तो वाल ज़िला गुरदासपुर ✪

शाह पातशाह सूरे सरबँग, शहिनशाह तेरी वड्याईआ। निर्मल नूर प्रकाश सचखण्ड, दरगाह साची सच रुशनाईआ। बेपरवाह तेरा अगम्मी चन्द, बेनज़ीर नज़र किसे ना आईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर मंगां रहे मंग, दोए जोड़ ध्यान लगाईआ। चरण कँवल तेरे इक अनन्द, अनन्द अनन्द विच्चों दरसाईआ। सेज सुहञ्जणी सोहे पलँघ, पावा चूल बणत ना कोए बणाईआ। दो जहानां मुका पन्ध, दर तेरा इक्को नज़री आईआ। नेत्र निहाल दर्शन पाईं ठंड, अग्नी तत ना लागे राईआ। मिल प्रीतम ढोला गाया छन्द, सति सतिवादी राग अलाईआ। निरवैर पुरख निराकार स्वामी जोती धार जोत गंढ, आप आपणी दया कमाईआ। जुग चौकड़ी गई लँघ, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आपणा पन्ध मुकाईआ। साहिब सतिगुर दीन दयाल परम पुरख प्रभ ला अंग, अंगीकार आपणी गोद बहाईआ। नाता तुट्टे झूठ पखण्ड, कूड़ी क्रिया रहिण ना पाईआ। झल्लया ना जाए रंडेपा रंड, कन्त सुहागी तेरी बेपरवाहीआ। सच दुआर वेख्या लँघ, मुकामे हक़ तेरी रुशनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, तेरा नूर नज़री आईआ। तेरा नूर बेनज़ीर बेपरवाह, बेऐब तेरी वड्याईआ। सति सतिवादी सच मलाह, रहबर मार्ग इक वखाईआ। शास्त्र सिमरत वेद पुराण बैठे ध्यान लगा, कुरान अञ्जील अक्ख खुल्हाईआ। पीर पैगम्बर झुक झुक सयदे सीस रहे निवा, दोए जोड़ बन्दना इक सुणाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड दर मंगदे रहे पनाह, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। रवि ससि रहे शरमा, नूरी चन्द ना कोए चमकाईआ। लख चुरासी भरी अन्त गुनाह,

पतित पुनीत ना कोए कराईआ। किरपा कर आप खुदा, खुदी ग़फ्लत दे गंवाईआ। तेरा सदका नौजवान, सच सबूरी दे समझाईआ। साबत दिसे ना कोई ईमान, उल्मा नज़र कोए ना आईआ। कलमा भुल्लया तेरी कलाम, कायनात मुख भवाईआ। किरपा कर वड अमाम, आमद आपणी इक वखाईआ। तेरे बरदे बणे गुलाम, दर दरवेश सेव कमाईआ। कलयुग अन्तिम सदी चौधवीं वेख आ राम, धीरज जत नज़र कोए ना आईआ। चारों कुण्ट कूड़ निशान, सच सुच ना कोए वड्याईआ। मुल्लां शेख़ मसायक बेईमान, बेवा होई सर्ब लोकाईआ। किरपा कर श्री भगवान, शहिनशाह तेरी ओट तकाईआ। किसे नज़र ना आए सीता राम, सुरती शब्द ना कोए मिलाईआ। बंसुरी सुणाए ना कोई काहन, सखीआं मंगल कोई ना गाईआ। धुर दा देवे ना कोए पैग़ाम, दीद शुनीद ना कोए वखाईआ। मन्त्र भुल्लया सति नाम, नाम सति ना कोए पढ़ाईआ। डंका फ़तहि ना कोए जहान, नव नौ चार दए दुहाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरे दर ते मंगण दान, दोए जोड़ वास्ता पाईआ। कलयुग अन्तिम वेख आण, बेपरवाह आपणा वेस वटाईआ। जोद्धे सूरबीर बलवान, तेरी इक्को आस तकाईआ। जुग जुग लेखा लिख लिख दस्सदे रहे विच जहान, नाता जोड़ कलम शाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, प्रभ साहिब सच्चे गोसाईंआ। साहिब साचे मित्र प्यारे, प्रभ तेरी ओट तकाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे हारे, कलयुग तेरे चरण डेरा लाईआ। दीन मज़्ब ज़ात पात नौ खण्ड पृथ्मी दिसण कूड़ पसारे, साचा संग ना कोए निभाईआ। कलयुग साध सन्त लोकमात रहे कुँवारे, हरि जू कन्त नज़र किसे ना आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग जीवां जंतां तेरे देंदे रहे लारे, गुर अवतार पीर पैगम्बर लेख लिखाईआ। कल कल्की अन्तिम लै अवतारे, महाबली वेस वटाईआ। शब्द अगम्मी बोल जैकारे, दो जहानां दए सुणाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव कर पनहारे, साची सेवा आप लगाईआ। सन्त सुहेले आप उठाले, गुर चेले मेल मिलाईआ। जन भगतां वसे सदा नाले, हरि जू विछड़ कदे ना जाईआ। लेखा चुक्के शाह कंगाले, ऊँच नीच रहिण ना पाईआ। गुरमुख गुरसिख आपे भाले, लख चुरासी विच्चों फोल फोलाईआ। मुर्शद हो के पुच्छे हाले, मुरीद आपणे गले लगाईआ। निरगुण सरगुण बणे दलाले, जग साची सेव कमाईआ। हकीकत वेखे हक़ हलाले, हाज़र आपणा फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तेरे वज्जे नाम वधाईआ। गुर अवतार कहिण प्रभ किरपा कर, हथ्थ तेरे वड्याईआ। निरगुण रूप मात धर, जोती जामा वेस वटाईआ। पुरख अकाल आपणी करनी कर, करते तेरी इक सरनाईआ। निरभउ चुका भय डर, भ्यानक रहिण कोए ना पाईआ। भगत भगवान आपणे फड़, आलस निंद्रा दे मुकाईआ। काया मन्दिर साचे पौड़े चढ़, डूंघी भँवरी वेख वखाईआ।

नाम अगम्मा ढोला पढ़, रसना जिह्वा कोए ना गाईआ। निरगुण नूर जोत धर, घर सच होए रुशनाईआ। पुरख अकाल दे वर, दीन दयाल तेरी सरनाईआ। जो तेरी सरनी जाए पड़, एथे ओथे मिले वड्याईआ। भाग लगा काया गढ़, बंक इक्को इक समझाईआ। तेरा लेखा नरायण नर, नर हरि समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तेरा सच्चा नाम ध्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बिन रसना कहिण, निरगुण अग्गे निरगुण मंग मंगाईआ। पतिपरमेश्वर साक सज्जण सैण, सति पुरख निरँजण नाता इक बंधाईआ। नजरी आवें इक्को नैण, दोए लोचण बंद वखाईआ। महल अटल साचे तेरा रहिण, सचखण्ड दुआर छप्पर छन्न ना कोए छुहाईआ। सूरज चन्न ना कोई लहिण देण, मण्डल मण्डप नज़र कोए ना आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, आपणा लेखा दे जणाईआ। आपणा लेखा दस्स भगवन्त, दर तेरे आस रखाईआ। तेरी महिमा सदा बेअन्त, जुग जुग कहिण कोए ना पाईआ। बोध अगाधे धुर दे पंडत, सच सच तेरी पढ़ाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया कर खण्डत, खण्डा खड़ग नाम चमकाईआ। मार्ग दस्स जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज आप समझाईआ। लख चुरासी तेरे दर होए मंगत, दूजा इष्ट नज़र कोए ना आईआ। गढ़ तोड़ हउमे हंगत, हँ ब्रह्म दे जणाईआ। चार वरन बणा साची संगत, क्षत्री ब्रह्मण शूद्र वैश वंड ना कोए वंडाईआ। ऊँच नीच बहे इक्को पंगत, राउ रंक मिल मिल सोभा पाईआ। धुर दा दे सच अनन्दत, अनन्द इक्को इक वखाईआ। धर्म दुआरे बणे बणत, घड़न भंनणहार तेरी सरनाईआ। लेखा चुक्के दोज़ख़ बहिसत, जंनत तेरा चरण इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक्को वर, घर वेखीए चाईं चाईंआ। श्री भगवान रिहा दस्स, सो साहिब आप जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखो नस्स, निरगुण आपणा पन्ध मुकाईआ। भगतां अन्दर श्री भगवान रिहा वस, महल अटल डेरा लाईआ। अमृत देवे धुर दा रस, निझर झिरना आप झिराईआ। शब्द निराला तीर मारे कस, बजर कपाटी पार कराईआ। आत्म सेजा बहे सज, सेज सुहञ्जणी डेरा लाईआ। राग सुणाए धुर अनहद, आत्मक इक्को करे शनवाईआ। निर्मल जोत कर प्रकाश, महल अटल सोभा पाईआ। सुरत सवाणी मार आवाज़, साचे हाणी मेल मिलाईआ। सच दुआरे रच के काज, हरि करता वेख वखाईआ। भाग लगा देस माझ, दो जहान समझ कोए ना पाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव राह तक्कण ग़रीब निवाज़, चारों कुंट ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भेव अभेदा आप खुलाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखो नट्ठ, सो पुरख निरँजण आप जणाईआ। हरि पुरख निरँजण खेल अकथ, कथनी कथ ना सके राईआ। एकँकार होया वस, निरगुण

सरगुण बन्धन पाईआ। आदि निरँजण कर प्रकाश, महल अटल डेरा लाईआ। अबिनाशी करता दासी दास, बण सेवक सेव कमाईआ। श्री भगवान पाए रास, मण्डल मण्डप गोपी काहन नचाईआ। पारब्रह्म प्रभ खेल तमाश, जोती जाता वेख वखाईआ। जन भगतां वसे सदा पास, विछोड़ा सहि सके ना राईआ। किसे हथ्थ ना आए कोटन कोटि पृथ्मी आकाश, कोह करोड़ी चलत पन्ध ना कोए मुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, आपणा भेव रिहा चुकाईआ। साचा भेव खोल्हे प्रभ आप, आपणी दया कमाईआ। पीर पैगम्बर वेखो बाप, पिता पुरख अकाल इक्को नज़री आईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी जिस दा करदे आए जाप, जो जग जीवण दाता आपणी खेल रचाईआ। निरगुण हो के सरगुण भगतां वसया साथ, सगला संग निभाईआ। नाम अगम्मी चाढ़ राथ, बण रथवाही सेव कमाईआ। इक जणाए पूजा पाठ, तूं मेरा मैं तेरा राग अल्हाईआ। सरोवर नुहाए तीर्थ ताट, चरण कँवल इक जणाईआ। कूड़ी क्रिया मेट अन्धेरी रात, घर जोती नूर करे रुशनाईआ। मेल मिलावा कमलापात, घर सज्जण फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साचा राह दए जणाईआ। साचा राह भगत दुआर, हरि भगवन आप जणाईआ। पुरख अबिनाशी करे प्यार, साचा साथी इक्को नज़री आईआ। अन्दर वड़ सिरजणहार, सच सिँघासण डेरा लाईआ। शब्द अगम्मी बोल जैकार, ढोला इक्को इक सुणाईआ। तूं मेरा मैं तेरा यार, आत्म परमात्म दए बुझाईआ। पारब्रह्म ब्रह्म करे ख़बरदार, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। साचा धर्म सतिगुर चरण प्यार, दूजा राह ना कोए जणाईआ। लख चुरासी दिसे नार, पुरख अकाल इक्को कन्त नज़री आईआ। दोए जोड़ सरगुण निरगुण करो नमस्कार, निउँ निउँ लागो पाईंआ। जिस दा मन्दिर उच्च मनार, टिल्ला नज़र किसे ना आईआ। दीवा बाती बले अगम्म अपार, अबिनाशी करता आपणा नूर रखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, देवे नाम वड्याईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर नेत्र रहे पेख, लोचण नैण नैण उठाईआ। पुरख अबिनाशी धरया भेख, लोकमात वेस वटाईआ। किसे नज़र ना आए रूप रेख, रंग दस्से ना कोए समझाईआ। जन भगतां करे साचा हेत, हितकारी वेख वखाईआ। निरगुण हो के सरगुण रिहा खेड, ख़ालक ख़लक वड्डी वड्याईआ। शब्द संदेसा इक्को भेज, सच सुनेहड़ा रिहा घलाईआ। अबिनाशी करता जन भगतां माणे साची सेज, सेज सुहञ्जणी इक सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सद भगतां अंग लगाईआ। जन भगतां करे अंगीकार, अंगण आपणा इक जणाइंदा। सच दुआरे कर प्यार, प्रेम प्रीती इक समझाइंदा। अन्तर आत्म दे आधार, परमात्म धीर बंधाइंदा। कूड़ी क्रिया जगत नवार, साची वस्त इक वरताइंदा।

बजर कपाटी खोल्ह कवाड़, घर मन्दिर इक सुहाइंदा। अमृत बूँद स्वांती ठंडी ठार, निझर झिरना आप झिराइंदा। सुखमन टेडी बंक कर कर पार, ईड़ा पिंगल मुख भवाइंदा। अनहद नाद सच्ची धुनकार, अनरागी राग अल्हाइंदा। घर सखीआँ मंगलचार, हरि गीत गोबिन्द अल्हाइंदा। पढ़न सुणन दी नहीं कोई वार, वारता आपणी इक जणाइंदा। जिस मिल्या पुरख करतार, सो शिवदुआले मड्ड काया मन्दिर अन्दर वेख वखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां इक्को राह जणाइंदा। भगतां अन्दर भगवान वसेरा, सुहञ्जणा साक दरसाईआ। दूर दुराडा नज़री आए नेरन नेरा, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। मन मनुआ देवे गेड़ा, गेड़ा आपणे हथ्थ रखाईआ। पंच विकारा चुक्के झेड़ा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए हल्काईआ। इक्को दिसे सञ्झ सवेरा, घड़ी पल वंड ना कोए वंडाईआ। भगत भगवान इक दूजे नूं कहिण तूं मेरा मैं तेरा, दूजा संगी नज़र कोए ना आईआ। बिन भगतां वसे ना कोई खेड़ा, बिन खेड़े श्री भगवान डेरा कोई ना लाईआ। सति सतिवादी ब्रह्म ब्रह्मादी शब्द अनादी खुल्ह्हा रखे वेहड़ा, आदि जुगादी आपणी खेल रचाईआ। बिन तेरी किरपा ठाकर तैनूं वेखे केहड़ा, नेत्र नैण अक्ख ना कोए खुल्हाईआ। लख चुरासी भरम भुलाए कर कर हेरा फेरा, अछल अछल्ल तेरा वल छल समझ कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण करे आपणी मेहरा,
१०८६ मेहरवान आपणी दया कमाईआ। मेहर करे प्रभ उपर भगत, हरि भगवन दए वड्याईआ। आप प्रगटाए विच जगत, जागरत जोत करे रुशनाईआ। निरगुण देवे साची शक्ति, शक्ति आपणा नाम जणाईआ। लेखे लाए बूँद रक्त, रत्ती रत्त सोभा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दए वड्याईआ। जन भगत वड्याई देवे वड्डा, सो साहिब दया कमाईआ। करे खेल बुढा नढ्ढा, जोबन आपणा रंग रंगाईआ। प्रेम प्रीती अन्दर बद्धा, भज्जा फिरे वाहो दाहीआ। जन भगतां देवे धुर दा सद्दा, नाम संदेसा इक सुणाईआ। दूर कराए लोक लज्जा, पड़दा दूई द्वैत चुकाईआ। घर मन्दिर अन्दर काया काअबे कराए साचा हज्जा, हज़रत इक्को नज़री आईआ। एथे ओथे दो जहान जिस पड़दा कज्जा, सो बेपरवाह फेरा पाईआ। सच प्रीती अन्तर मधा, मध रस ना कोए वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां आप समझाईआ। जन भगत समझाए पारब्रह्म, प्रभ वड्डा वड वड्याईआ। निहकर्मी जाणे आपणा कर्म, कर्म कांड डेरा ढाहीआ। भाण्डा भंनाए भउ भरम, भेव अभेद खुल्हाईआ। लेखा चुकाए वरन बरन, ज़ात पात डेरा ढाहीआ। सच रखाए इक्को सरन, ऊँच नीच माण दवाईआ। भगत भगवान ढोला इक्को पढ़न, सोहँ सच्चा राग अल्हाईआ। इक दूजे दे अन्दर वड़न, आउँदा जांदा नज़र कोए ना आईआ। जीवदयां जग जन भगत मरन, मरयां सचखण्ड सोभा

पाईआ। अद्धविचकार किते ना अड़न, विष्न ब्रह्मा शिव बैठे सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां मेल मिलाईआ। जन भगतां करे मेल मिलावा आप, प्रभ आपणे रंग रंगाईआ। कोट जन्म उतार पाप, दुरमति मैल धवाईआ। काया माटी वेख ख़ाक, पंज तत लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। त्रैगुण माया कर पाक, पतित पुनीत रूप वटाईआ। शब्द अगम्मी दे दात, घर भण्डारा दए वखाईआ। चरण कँवल सच्चा नात, पुरख बिधाता आप जुड़ाईआ। कलयुग मेट अन्धरी रात, सतिजुग सच्चा चन्द चमकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, भगतन आपणी गंढु पवाईआ। जन भगतां पाए नाम गंढु, गंढुणहार हरि अख्वाइंदा। अन्दर वड़ के पाए ठंड, बाहरों नज़र किसे ना आइंदा। दीन दयाल साहिब बख्शंद, बख्शश आपणी आप कराइंदा। गुरमुख गुरसिख रसना जिह्वा बत्ती दन्द कोई ना लाए गंद, सोहँ ढोला धुर दा बोला आत्म मौला आप जणाइंदा। शब्द विचोला चुका पड़दा उहला उलटा नाभ कौला, अमृत झिरना इक झिराइंदा। धुरदरगाही बण के तोला, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, हरिजन साचे आप जगाइंदा। जन भगतां खोल्हे आप जाग, जुगती आपणे हथ्थ रखाईआ। दीपक जोत जगाए चिराग, अज्ञान अन्धेर मिटाइंदा। काया अन्दर लाए भाग, घर मन्दिर कर रुशनाईआ। फड़ फड़ हँस बणाए काग, सोहँ हँसा माणक मोती चोग चुगाईआ। आत्म परमात्म रच रच काज, घर मेला सहिज सुभाईआ। सुरत सवाणी देवे दाज, शब्द भण्डार झोली पाईआ। सतिगुर तेरा चलाए इक रवाज, चार वरनां इक सरनाईआ। मुल्लां शेख़ मसायक पंडत ज्ञानी ध्यानी हरि के नाम दा लए ना कोई बिआज, सौदे हट्ट ना कोए विकाईआ। किरपा करे आप महाराज, मुहब्बत आपणे नाल रखाईआ। सोवत जागत मार आवाज़, धुर संदेसा दए सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां रच के काज, आपणा बन्धन देवे पाईआ। जन भगतां बन्धन पाए डोर, नाम तन्दन हथ्थ उठाईआ। अन्दर वड़ अन्धेरे घोर सतिगुर पूरा वेख वखाईआ। शब्द स्वामी बन्न्हे पंजे चोर, चोरी यारी ठग्गी गुरमुख तेरे अन्दर करन कोए ना आईआ। बेपरवाह वेखे कर के ग़ौर, गहर गम्भीर ध्यान लगाईआ। कूड़ी क्रिया कढ्ढे खोट, खोटी वासना दए मुकाईआ। नाम नगारे ला चोट, चोटी आपणी लए चढ़ाईआ। कर प्रकाश निर्मल जोत, घर दीपक दए टिकाईआ। आत्म परमात्म परमात्म आत्म होवे मोहत, मुहब्बत इक्को घर वखाईआ। सृष्ट सबाई सब नूं दिसे ख़ामोश, जन भगतां मिल मिल जुग जुग ढोला गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, हरिजन सज्जण लए तराईआ। हरिजन तारे ठाकर स्वामी, साहिब सतिगुर वड वड्याईआ। परम पुरख प्रभ अन्तरजामी, अन्तर आत्म वेख

वखाईआ। लहिणा देणा चुका चारे खाणी, चारे बाणी पन्ध मुकाईआ। एका देवे पद निरबाणी, निरबाण पद आप समझाईआ। धर्म दुआर सच निशानी, हरि करता आप दरसाईआ। जन भगतां जाए विटुह कुरबानी, निउँ निउँ आपणा सीस झुकाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर वड्ड वड्डे तेरी मेहरवानी, मेहरवान तेरी सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगतां लेखा पूर कराईआ। जन भगतां लेखा करे पूरा, प्रभ पूर रिहा सर्ब ठाईंआ। गुरमुख तेरा लहिणा ना रहे अधूरा, हद्द हदूद आपणी पार कराईआ। दरगाह साची करे मंज़ूरा, मंज़ूरी इक्को वार सुणाईआ । गुरमुख गुरसिख हरिजन हरिभगत रंग चाढ़े गूढ़ा, उतर कदे ना जाईआ। चतुर सुघड़ बणाए मूर्ख मूढ़ा, जो जन आए सरनाईआ। जिन्हां लाए मस्तक धूढ़ा, तिन्हां दुरमति मैल धवाईआ। आत्म देवे सति सरूरा, सुरती शब्द नाल मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, साची सरन इक रखाईआ। साची सरन भगत भगवन्त, हरि करता आप जणाईआ। मेल मिलावा नार कन्त, घर वज्जे नाम वधाईआ। लेखा मुक्के विच जीव जंत, दरगाह साची सोभा पाईआ। जोत मिलावा जोती अन्त, जोती जोत विच समाईआ। हरि भगत तेरा निराला पन्थ, मार्ग समझ किसे ना आईआ। तेरी महिमा अन्दर गुर अवतारां पीर पैगम्बरां लिखे ग्रन्थ, अक्खर अक्खर जोड़ जुड़ाईआ। तेरे नाम दा जीव जंत वजाउँदे संख, वेले संधया धुन उपजाईआ। तेरा मेला अन्त श्री भगवन्त, भगवन आपणी गोद उठाईआ। सचखण्ड दुआर बणा तेरी बणत, चरण कँवल दए सरनाईआ। खैहड़ा छड्ड दे बहिश्त जंनत, गुरमुख तेरे कम्म किसे ना आईआ। ओस दुआर दर जा कर कर मिन्नत, जिस मिलयां आदि जुगादि जुग चौकड़ी तेरे वज्जे नाम वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, निरगुण निरवैर पुरख अकाल खेल करे बेअन्त, बेवफ़ा रूप ना कोए वखाईआ।

✪ ११ मग्घर २०२० बिक्रमी अजीत सिँघ दे गृह पिण्ड कत्तोवाल ✪

सति कहे मैं वेख्या सति, सति तेरी सरनाईआ। सति कहे मैं वेख्या तत्त, ततव तेरी वड्याईआ। सति कहे मैं वेख्या पत, कमलापति प्रभ इक्को नज़री आईआ। सति कहे मैं वेख्या रस, तेरा अमृत धुर दी धार बेपरवाहीआ। सति कहे मैं वेख्या पुरख समरथ, शाह पातशाह सच्चा शहिनशाहीआ। सति कहे मैं घर गया वस, गृह मन्दिर वज्जे वधाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति आपणा रंग रंगाईआ। सति कहे मेरा सतिगुर सति, सो पुरख निरँजण नज़री आईआ। आदि जुगादि देवे धुर दी मति, पारब्रह्म ब्रह्म समझाईआ । जन भगतां अन्दर जाए वस, सच सिँघासण

डेरा लाईआ। जन्म जन्म दी पूरी आस, आसावंद आप कराईआ। निरगुण सरगुण बण के दासी दास, गृह सेवक सेवा सच कमाईआ। साची देवे नाम रास, वस्त भण्डारा इक वरताईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति आपणा विच टिकाईआ। सति कहे मैं वेख्या जोग, हरि चरण मिले वड्याईआ। सति कहे मैं वेख्या भोग, प्रभ अन्तर सहिज मिलाईआ। सति कहे मेरा होया संजोग, हरि करता जोड़ जुड़ाईआ। सति कहे मेरा वसया कोट, घर मन्दिर सोभा पाईआ। सति कहे घर जगी जोत, निरगुण नूर नूर रुशनाईआ। सति कहे मैं होया मोहत, जन भगतां प्रेम वधाईआ। सति कहे मैं सुणया श्लोक, सोहँ ढोला बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति इक्को नाम जणाईआ। सति कहे मैं जाणया सति स्वामी, सति दर्शन नज़री आईआ। जन भगतां देवे इक निशानी, नाम निशाना हथ्थ फड़ाईआ। आवण जावण लख चुरासी चुकाए काणी, चारे खाणी पन्ध मुकाईआ। मन्दिर वखाए इक लासानी, उच्च अटल नज़री आईआ। दर दुआर देवे माणी, मेहरवान सिर आपणा हथ्थ टिकाईआ। सति प्रभ प्रभ दी सति कहाणी, सति नाम इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति आपणा रूप वखाईआ। सति कहे मैं सति जाता, श्री भगवान इक्को नज़री आईआ। सर्ब जीआं दिसे पित माता, लख चुरासी गोद सुहाईआ। सच सुच देवे दाता, दाता दानी दया कमाईआ। आत्म परमात्म पढ़ाए गाथा, अक्खर वक्खर आप जणाईआ। आपणी रखे उत्तम ज़ाता, वरन गोत ना कोए रखाईआ। बैठा रहे इक इकांता, घर सच्चे डेरा लाईआ। सति कहे मैं सति पछाता, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मोहे इक्को बूझ बुझाईआ। सति वेख्या घर भगत, जिस गृह आपणा डेरा लाईआ। भरमे भुल्ला जीव जगत, जुगत हथ्थ किसे ना आईआ। लभ्भदे फिरदे मरनी मुक्त, मरयां मुक्त ना पार कराईआ। साहिब सतिगुर हो दयाल जन भगतां किरपा करे मुफ्त, मुफ़लस आपणे गले लगाईआ। लख चुरासी आपणी करनी रहे भुगत, फाँसी जम ना कोए कटाईआ। नज़र ना आए अकाल मूर्त, मूर्ती सच ना कोए दरसाईआ। सुणे नाद ना कोई तूरत, धुन वज्जे ना कोए शनवाईआ। बुद्धी होई मूर्ख मूढ़त, सति चले ना कोए चतुराईआ। अबिनाशी करता जन भगतां आसा पूरत, तृष्ना कूड़ी मेट मिटाईआ। चोली चाढ़े रंग गूढ़त, लाल गुलाला आप रंगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सति इक्को घर समझाईआ। सति कहे मैं वेख ब्रह्माद, ब्रह्म विष्न ध्यान लगाईआ। शंकर करे तेरी याद, अन्दर वड़ ध्यान लगाईआ। गुर अवतार करन फ़रयाद, पीर पैगम्बर हाल सुणाईआ। लोकमात बिन तेरे सति होया बरबाद, उजड़या खेड़ा ना कोए वसाईआ। तेरे अन्तर ना कोए विस्माद, बिस्मिल रूप ना कोए वटाईआ। जगत वासना सारे रहे भाज, भज्जयां पन्ध ना कोए मुकाईआ। जोती

जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा साचा वर, सति तेरा रूप नज़री आईआ। सति कहे मैं वेख्या खेड़ा, सच रंग ना कोए रंगाईआ। चार वरन प्या झेड़ा, झगड़ा सके ना कोए चुकाईआ। डुब्बदे सार कोई ना तारे बेड़ा, किनारा पार ना कोए वखाईआ। आवण जावण कटे कोई ना गेड़ा, फांदन फंद ना कोए कटाईआ। कलयुग जीव करन मेरा मेरा, तेरी समझ किसे ना आईआ। सो पुरख निरँजण उच्चे टिल्ले चढ़ के वेखें करके वड्डा जेरा, आप आपणा भेव छुपाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सति सच सन्तां झोली पाईआ। सति कहे मैं भगतां जोगा, दर तेरे मंग मंगाईआ। उच्ची कूक देवां होका, दर तेरे अलख जगाईआ। नाता तुट्टे लोक परलोका, जगत जहान ना कोए वखाईआ। जो तेरा नाम गावण सच श्लोका, तिन्हां नाता देणा मिलाईआ। तेरे मिलण दा मानस मानुख मानव जन्म इक्को मौका, वेला गया हथ्थ ना आईआ। मेरे नाल ना करीं धोखा, धुर दाते बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक वर, सद तेरा राह तकाईआ। सति कहे प्रभ कर मेहर, मेहर नज़र उठाईआ। तूं गुरू मैं तेरा चेर, बण चेला सेव कमाईआ। दूर दुराडे ना करनी देर, नेरन नेरा नजरी आईआ। नव नौ चार पिच्छों आया तेरा गेड़, गेड़े गिढ़दी वेखी सर्ब लोकाईआ। हरि भगत सुहेले साचे मेल, मिलणी आपणे नाउँ कराईआ। मैं खुशीआं नाल चढ़ावां तेल, गीत सुहागी तेरा गाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा पड़दा दे चुकाईआ। सति कहे मेरा इक्को दाअवा, प्रभ तेरी ओट तकाईआ। जन भगतां होवे सच मिलावा, मिलणी हरि जगदीश कराईआ। हँस रूप वेखां कांवां, काग नज़र कोए ना आईआ। तिन्हां बलिहारी सदके जावां, जो प्रभ तेरा नाम ध्याईआ। धन्न जणेंदीआं होवण मांवां, सफ़ल कुक्ख कुखड़ी भाग लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, मेरी आसा पूर कराईआ। सति कहे मेरा नाता जोड़, पारब्रह्म तेरी सरनाईआ। जन भगतां पई मैनूं लोड़, नाता तुट्टया सर्ब लोकाईआ। दर आया ना देवीं होड़, मेहरवान ना धक्का लाईआ। ख़ाली हथ्थ किछ नहीं कोल, माण ताण ना कोए वड्याईआ। तेरे नाम दा वजावां इक्को ढोल, डंका तेरा हथ्थ उठाईआ। बिन भगत किसे नाल ना सकां बोल, सांझ प्यार ना कोए रखाईआ। अन्तिम आया तेरे कोल, डरदा डरदा पन्ध मुकाईआ । जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, मेरा लेखा लेखे लाईआ। सति कहे मैं तेरा सुत, सुत अपराधी नज़र कोए ना आईआ। ना काया ना कोई बुत्त, बुत्तख़ाने डेरा ना कोए वखाईआ। ना बहार ना कोई रुत्त, पत्त डाली ना कोए महकाईआ। ना ग़मी ना होवां खुश, सद तेरे रंग समाईआ। इक्को भेव रिहा पुच्छ, दोए जोड़ सीस निवाईआ। कवण वेला प्रभ गोदी लवें चुक्क, फड़ बांहों

गले लगाईआ। कलयुग विच मैनूं तेरे मिलण दी रही भुक्ख, फड़ बांहों ना कोए मिलाईआ। जिध्धर वेखां दिसे दुःख, साध सन्त रहे कुरलाईआ। आपणा बल धार के आया उठ, नाता तोड़ जगत लोकाईआ। मैं वेख्या प्रभ भगतां उते रिहा तुठ, दीन दयाल दया कमाईआ। जे दात देवे मैनूं कुछ, मेरी किस्मत दए बदलाईआ। मैं भगतां नाल मिल के हो जावां चुप्प, उच्ची कूक ना कोए जणाईआ। जुग विछड़े जे मेले पुत, क्यों पिता मोहे भुलाईआ। भगतां नाल सोहे मेरी रुत्त, तेरी फलवाड़ी इक महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा देणा इक्को वर, सद तेरे रंग समाईआ। सति कहे तेरा भगत अपार, अपरम्पर तेरी वड्याईआ। जिस दा लेख रहे जुग चार, जुग चौकड़ी मिले वड्याईआ। जिस दा लेखा लिखे सिरजणहार, दूसर हथ्थ ना किसे फड़ाईआ। मैं वारने जावां बलिहार, बलिहारी गुर सतिगुर तेरी सरनाईआ। कर किरपा मोहे तार, तारनहार बेपरवाहीआ। मैं घोल घुमाई आपा दित्ता वार, लेखा नज़र कोए ना आईआ। श्री भगवान कर प्यार, सच इशारे नाल जणाईआ। सति तूं वसणा सति दुआर, सति दुआरा भगत रहे बणाईआ। जिस दी छत्ती युग करदे रहे विचार, विचर सके कोए ना राईआ। सो मन्दिर बणया हरि निरँकार, निरगुण बैठा आसण लाईआ। जन भगतां करे सच प्यार, सति तेरा देवे जोड़ जुड़ाईआ। दोहां मिल के करना इक विहार, विवहारी आप जणाईआ। सति युग युग सति दी चले कार, हरि करता आप कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, लेखा लेख जाणे धुर दरबार।

✪ ११ मग्घर २०२० बिक्रमी चरण सिँघ दे गृह कत्तोवाल ज़िला गुरदासपुर ✪

सति देवे प्रभ एको दान, वड दाता दया कमाइंदा। भगतां नाल कर परवान, सिर तेरे हथ्थ रखाइंदा। जुग चौकड़ी साध सन्त तैनूं लभ्भदे बियाबान, जंगल जूह उजाड़ पहाड़ सर्ब खोज खोजाइंदा। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मठ्ठ तेरा लभ्भदे फिरन निशान, तेरा रूप नज़र किसे ना आइंदा। रसना जिह्वा बत्ती दन्द शास्त्र सिमरत वेद पुराण देण तेरा ज्ञान, तेरी समझ कोए ना पाइंदा। तीर्थ तट नहा नहा दुरमति मैल सर्ब धवाण, तेरा सति रंग ना कोए रंगाइंदा। नौ खण्ड पृथ्मी सत्त दीप लख चुरासी जीव होए अञ्याण, बाली बुध सर्ब कुरलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा वसेरा इक घर, जन भगत दुआरे आप रखाइंदा। सुण सति पुरख समरथ दस्से, हरि करता भेव चुकाईआ। जुग चौकड़ी तैनूं लभ्भ लभ्भ थक्के, सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग वेख वखाईआ। पीर पैगम्बर कह के गए एका मदीने मक्के,

१०६१ १५

मक्का काअबा काया समझ कोए ना पाईआ। पंडत पांधे पढ़ पढ़ थक्के, खोजत खोजत वेख वखाईआ। जगत जीव तेरे बणे ना मात सके, सज्जण नज़र कोए ना आईआ। कूड़ी क्रिया अन्दर फसे, सति रंग ना कोए रंगाईआ। माया ममता नाल हस्से, हस्ती आपणी समझ सके कोई ना राईआ। काम क्रोध विकारे अन्दर ढट्ठे, बंक सके ना कोए बणाईआ। त्रैगुण माया कीते तत्ते, अमृत मेघ ना कोए बरसाईआ । तेरे नाल कोई ना वसे, खेड़ा सच ना कोए सुहाईआ। कर किरपा प्रभ भगत तेरे नाल कीते कट्ठे, एका दूआ जोड़ जुड़ाईआ। दोवें बणे पुरख अकाल दे बच्चे, बचपन इक्को जेहा वखाईआ। सच दुआरे कदे ना रहिण कच्चे, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरी आसा तेरी झोली पाईआ। सति दुआरे तेरा पए मुल, हरि कीमत आप चुकाईआ। भगत प्रीती जाणा घुल, साची सिख्या इक दृढ़ाईआ। धुर दे कंडे जाणा तुल, हरि तोला इक्को नज़री आईआ। कूड़ी क्रिया विच ना जाणा रुल, ख़ाकी ख़ाक ना कोए मिलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। सति कहे मैं ना जाणा कर्म, प्रभ मेरी सार मोहे ना आईआ। मेरा नाता नाल ना किसे वरन, बरन गंढु ना कोए पवाईआ। दीन मज़्ह़ब सारे लड़न, लोकमात पई लड़ाईआ। साध सन्त मैथों डरन, बैठे मुख छुपाईआ। कलयुग जीव रसना पढ़न, अन्दर डेरा ना कोए लगाईआ। मेरी डोरी ना कोई फड़न, पल्लू गंढु ना कोए बंधाईआ। आपणी करनी सारे भरन, करते तेरा नाउँ भुलाईआ। धन्न भाग तूं किरपा कर के लाया आपणे चरण, हरि दिती माण वड्याईआ। भगत सुहेले तेरे दर ते खड़न, दर साचे सोभा पाईआ। महल अटल उच्च मनारे चढ़न, सचखण्ड जावण चाईं चाईंआ। जींवदयां दर तेरे मरन, मरयां मरन रहिण कोए ना पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच्चा दित्ता इक वर, मेरा लेखा ल्या लगाईआ। सुण सति हरि सच संदेसा, श्री भगवान आप जणाईआ। जुग चौकड़ी तेरा धुर दा पेशा, करनी करता इक वखाईआ। देवे वड्याई नर नरेशा, नर नरायण रिहा समझाईआ। जन भगतां करना इक्को हेता, प्रेम प्रीती जोड़ जुड़ाईआ। सदी बीसवीं रखणा चेता, चेतन तेरा रूप कराईआ। शब्द स्वामी खोल्ह् भेता, अनभव आप दृढ़ाईआ। आदि जुगादी तूं पुत्त पलेठा, पारब्रह्म प्रभ आपणी गोद बहाईआ। भगतां संग तेरा लेखा, दूजा मीत ना कोए वखाईआ। सच दुआरे खेलीं खेडा, गृह मन्दिर ख़ुशी मनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, तेरा खेल रिहा रचाईआ। सति कहे मैं होया वड भागी, प्रभ पाया गहर गम्भीर। मेरी धार सोई जागी, हरि बदल दिती तकदीर। जन भगतां बणया धुर दा साथी, दूजी कटी मात ज़ंजीर। मिल के गावां इक्को गाथी, वड दाते उच्चे पीर। जाम प्याया बण के साकी, अन्तर आत्म दिती धीर। पड़दा लाह खोल्ही ताकी, चोटी चाढ़्

वखाया अख़ीर। मैं मन्नां तेरी आखी, तेरा हुक्म बेनज़ीर। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दी देणी इक्को पाती, नाम निधान बिन काया तत सरीर। धुर दी पाती लै नाम, सो सति गुर झोली पाईआ। जन भगतां दे पैग़ाम, सच संदेसा इक जणाईआ। उठो वेखो श्री भगवान, शाह पातशाह फेरा पाईआ। हरिजन वेखे बाल अञ्याण, भगत भगवान रिहा जगाईआ। दोहां मेला विच जहान, जुगती आपणी नाल जुड़ाईआ। बिन अक्खां करो पहचान, बिन हथ्थां हथ्थ मिलाईआ। बिन रसना बोलो ज़बान, बिन दन्दां ढोला गाईआ। बिन मंगयां मिले दान, ख़ाली झोली लओ भराईआ। लेखा जाणे दो जहान, दोए दोए आपणी कार कमाईआ। सति सति दा इक निशान, भगत भगवान दए झुलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल सच्चा हरि, महल अटल इक रुशनाईआ। सति पुरख कहे तेरा सति निशाना, सच दुआरे आप झुलाईआ। सति मर्द सति मर्दाना, सति मर्दानगी आप कमाईआ। सति विष्न ब्रह्मा शिव देवे नाम ज्ञाना, सति सच करे पढ़ाईआ। सति गुर अवतार पीर पैगम्बर पहरे बाणा, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। सति शास्त्र सिमरत वेद लिखे पुराणा, पुराण प्राणी दए जणाईआ। सति गीत इक वखाना, अठ्ठ दस्स जोड़ जुड़ाईआ। सति पड़दा लाह अञ्जील कुराना, काया काअबा दए समझाईआ। सति शब्दी राग धुर तराना, खाणी बाणी बूझ बुझाईआ। सति जुग चौकड़ी खेल करे महाना, सति सतिवादी फेरा पाईआ। सति सति पहरे आपणा बाणा, कल कल्की वेस वटाईआ। सति वसे इक मकाना, सम्बल नगर सोभा पाईआ। सति होवे जाणी जाणा, जानणहार इक अख्वाईआ। सति भगत सति भगवाना, सति दोहां विच समाईआ। बिन सति ना कोई पैमाना, पैमाइश विच ना किसे लिआईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, भगत दुआरे निरगुण खड़, सति सति तेरी लाए जड़, बूटा निरवैर निरपक्ष आप झुलाईआ।

✪ ११ मग्घर २०२० बिक्रमी चरण सिंघ दे गृह नवां पिण्ड ✪

भगत कहे मेरी आसा पुनी, प्रभ तृष्ना जन्म मिटाईआ। सच पुकार दरगाह सुणी, सचखण्ड निवासी वेख वखाईआ। निरगुण दाता वड गुण गुणी, गहर गम्भीर वेख वखाईआ। नाम उपजाए अगम्मी धुनी, धुन अनहद नादी राग सुणाईआ। लख चुरासी छाणी पुणी, सन्त सुहेले लए उठाईआ। कोई भेव ना जाणे ऋषी मुनी, जगत तपीश्र ध्यान लगाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन पड़दा रिहा चुकाईआ। भगत कहे तेरी आसा पूर, मनसा जगत मिटाईआ। शहिनशाह मिल्या हाज़र हज़ूर, हरि हज़रत नज़री आईआ। कोट जन्म दे मुआफ़ करे क़सूर, मेहर नज़र नैण उठाईआ।

पन्ध मिटावे नेड़ा दूर, दो जहानां डेरा ढाहीआ। नाता तोड़े क्रिया कूड़, सच सुच दए समझाईआ। चतुर बणाए मूर्ख मूढ़, साचा नाम करे पढ़ाईआ। अमृत देवे इक सरूर, निझर झिरना रिहा झिराईआ। हंगता गढ़ तोड़ ग़रूर, निवण सो अक्खर इक समझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां सदा सहाईआ। जन भगत कहे प्रभ पाया ठाकर, घर वज्जी नाम वधाईआ। लग्गा भाग काया गागर, साढे तिन्न हथ्थ खुशी वखाईआ। वणज कराया धुर सौदागर, नाम अमोलक हीरा इक जणाईआ। सति सतिवादी शब्द अगम्मी दिती चादर, ओढन इक्को इक वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेख वखाईआ। भगत कहे प्रभ पाया घर मन्दिर, गृह इक्को नज़री आईआ। करया प्रकाश अन्धेरी कन्दर, डूंग्घी भँवर करी रुशनाईआ। बजर कपाटी तोड़ जन्दर, ज़िंदगी ज़िंदगी विच्चों बदलाईआ। महल्ल बणा उजड़या खण्डर, मेरा खेड़ा दित्ता वसाईआ। मन मनुआ ना भवे बन्दर, दहि दिशा ना उठ उठ धाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां दया कमाईआ। जन भगत कहे तन चाउँ घनेरा, मन वज्जे नाम वधाईआ। लेखा चुक्कया तेरा मेरा, दूई द्वैती डेरा ढाहीआ। उलटा दित्ता हरि जू गेड़ा, घर घर विच दए वखाईआ। पंच विकारा मुका झेड़ा, काम क्रोध लोभ मोह हँकार ना कोए लड़ाईआ। स्वामी दिस्सया नेरन नेरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेख वखाईआ। जन भगत कहे प्रभ पाया बेअन्त, बेअन्त वड्डी वड्याईआ। घर सज्जण मिल्या कन्त, नार सुहागण खुशी मनाईआ। देवे वड्याई विच जीव जंत, जागरत जोत करे रुशनाईआ। नाम समझाए आपणा मंत, मन्त्र इक्को इक दृढ़ाईआ। बोध अगाधा बण के पंडत, साची विद्या दए समझाईआ। माणस जन्म ना होवे खण्डत, कूड़ी क्रिया मेट मिटाईआ। नाता तोड़ जेरज अण्डज, उत्भुज सेत्ज पन्ध मुकाईआ। मेल मिला आपणी संगत, संगीत धुर दा इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां लए उठाईआ। जन भगत कहे मेरा चुक्कया अन्धेरा, अन्ध रहिण ना पाईआ। श्री भगवान वसाया साचा खेड़ा, तन खिड़की आप खुल्ह्हाईआ। आत्म सेजा नज़री आया इक्को पिर मेरा, प्रीतम बैठा बेपरवाहीआ। जुग चौकड़ी बन्न्हणहारा बेड़ा, खेवट खेटा आपणे कंध उठाईआ। सचखण्ड दुआरे जिस दा डेरा, दरगाह साची सोभा पाईआ। जन भगतां मिले विच कलयुग अन्ध अन्धेरा, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, सन्त सुहेले अंग लगाईआ। भगत कहे घर आया राम, रमईया आपणी दया कमाईआ। नज़री आया सच्चा काहन, घनईया आपणी धार समझाईआ। सति सरूपी देवे जाम, अमृत रस इक्को इक वखाईआ। भाग लगाए नगर ग्राम, बंक दुआरे वज्जे वधाईआ। महल्ल वसाए अज़ीम उलशान, आलीशान

इक्को नज़री आईआ। साचा देवे धुर दा नाम, सुरत सवाणी करे पढ़ाईआ। सच संदेसा दए पैग़ाम, कलमा नबी रसूल जणाईआ। नज़री आया इक अमाम, परवरदिगार नूर इलाहीआ। लेखा जाणे दो जहान, ब्रह्मंड खण्ड पुरी लोअ आकाश पाताल वेख वखाईआ। धर्म जणाए इक निशान, गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखण चाईं चाईंआ। मन्दिर सुहाए उच्च मकान, सचखण्ड साचे वज्जे वधाईआ। जन भगतां मिले आण, निरगुण सरगुण रूप वटाईआ। सच प्रीती दए ज्ञान, बोध अगाध करे पढ़ाईआ। बिन हरि नामे अन्त सारे पछताण, पश्चाताप करे लोकाईआ। जिस भगत हरि प्रभ ठाकर मिल्या आण, तिस लेखा मंगे कोए ना राईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सद देवणहार वड्याईआ। जन भगत अगला पिछला लेखा चुक्के, चुरासी गेड़ रहिण ना पाईआ। राए धर्म दर ते झुके, चित्रगुप्त ना लेख वखाईआ। पुरख अबिनाशी अन्तिम आपणी गोदी चुक्के, शब्द बबाणे लए बिठाईआ। अद्धविचकार किते ना रुके, दरगाह साची जावे वाहो दाहीआ। मिले मेल अबिनाशी अचुते, जोती जोत विच समाईआ। उजल करे मात मुखे, मुख उजल आप रखाईआ। जननी लेखे लाए कुक्खे, हरिजन सच्चे जो उपजाईआ। मूर्ख मुग्ध अञ्याण गूढ़ी नींदे रहि जाण सुत्ते, हरि का नाम ना कोए ध्याईआ।
१०६५ अन्तिम लख चुरासी गेड़ा गेड़ विच सुट्टे, कोहलू चक्की चक्क भवाईआ। श्री भगवान माँ पुत्त किसे कोई ना पुच्छे, सगला संग ना कोए निभाईआ। पारब्रह्म पतिपरमेश्वर जो तेरे नालों रुस्से, दो जहानां मिले सज़ाईआ। जे कोई भगतां कोलों पुच्छे, जन भगत कहिण प्रभ मिल्या हरि गोसाईंआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी निरगुण निरवैर कदी ना होवे गुस्से, जो जन बैठे ध्यान लगाईआ। जन्म कर्म दे जो अमृत भण्डार दे भुक्खे, तिन्हां धुर दा जाम प्याईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा साचा वर, जन भगत आपणी गोद उठाईआ। जन भगत उठाए आपणी गोद, मात पित रूप वटाईआ। हरिजन हिरदा देवे सोध, सति सतिवादी धार वखाईआ। नेत्र खोल्ह लोचण लोच, निज दर्शन आप वखाईआ। आत्म परमात्म जणाए खोज, ब्रह्म पारब्रह्म भेव मिटाईआ। जन्म कर्म दा मेटे बोझ, प्रकृती बन्धन ना कोए रखाईआ। कूड़ी क्रिया मिटाए सोच, सोच इक्को प्रभ सरनाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जिस जन देवे आपणा दरस, लेखा कोए रहिण ना पाईआ। जन भगतां लेखा जाए मुक्क, आदि अन्त रहिण ना पाईआ। श्री भगवान अन्तर आत्म देवे सुख, सुख आपणा इक समझाईआ। अन्दर वड़ के वेखे झुक, नीकन नीका नज़री आईआ। जगत विकारा कढ्ढे कुट्ट, नाम खण्डा खड़ग चमकाईआ। जन्म मरन दा मेटे दुःख, आवण जावण गेड़ कटाईआ। अन्त कन्त श्री भगवन्त भगत कहे आ मेरे लाडले सुत, सुत दुलारे मिल मिल खुशी मनाईआ। निरगुण सरगुण दो जहान मौले साची रुत्त, रुत्त रुतड़ी आप महकाईआ। १०६५

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, हरिजन हरिभगत उलटा मात गर्भ ना होवे रुख़, जूनी जून ना कोए भवाईआ।

१०६६ १५

✪ ११ मग्घर २०२० बिक्रमी दुर्गा देवी दे गृह पिण्ड गुजरात ✪

जन्म कर्म दी मिटी हरस, प्रभ हस्ती हस्ती विच मिलाईआ। बिन कर्म कांड कीता तरस, रहमत आप कमाईआ। त्रेते युग रही तड़प, प्रभ मिले बेपरवाहीआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, लेखा सब दा पूर कराईआ। जुग त्रेता रखी आस, त्रिया तरीमत ध्यान लगाईआ। कवण वेला प्रभ मेटे प्यास, अग्नी अग्ग बुझाईआ। जन्म कर्म दा कटे फाँस, फ़ैसला इक सुणाईआ। दर्शन कर रघुपत रघुनाथ, रघुवंस ध्यान लगाईआ। सखी सहेली मेरा साथ, घर साचे सेव कमाईआ। जनक सपुत्री पुच्छे वात, वारता आप समझाईआ। मिल्या मेल कमलापात, बेपरवाह होए सहाईआ। तेरी पुच्छे फेर वात, वास्ता आपणे नाल रखाईआ। माणस जन्म मिले दात, जुग चौकड़ी रूप वटाईआ। कलयुग अन्तिम बन्ने नात, नाता चरण कँवल जणाईआ। भेव खुल्हाए गुझ मिटाए अन्धेरी रात, चन्द नूर चमकाईआ। नज़री आए धुर दा नाथ, अनाथां लए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, अन्तिम लाए निरगुण साचे लड़, घर इक्को इक वसाईआ। घर वसे घर मेला राम, घर घनईया नज़री आईआ। घर माटी घर नगर खेड़ा चाम, घर बंक दए सुहाईआ। घर देवे सति सतिवादी साचा नाम, साची सिख्या इक पढ़ाईआ। घर मेले परम पुरख भगवान, भगवन आपणी दया कमाईआ। सखी सहेली होए परवान, सतिगुर चेली रूप वटाईआ। लेखा जाणे बली बलवान, बलधारी होए सहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, निहकलंक नरायण नर, महाराज शेर सिँघ विष्नूं भगवान, जन्म जन्म दा लेखा कर्म कर्म दा नेता नेरन नेरा हो के आप चुकाईआ ।

✪ ११ मग्घर २०२० बिक्रमी गुरमुख सिँघ दे गृह पिण्ड गंवारा ✪

सचखण्ड सोहे सच दरबार, दरगाह साची वज्जे वधाईआ। सो पुरख निरँजण शाह सुल्तान, सति सतिवादी सोभा पाईआ। हरि पुरख निरँजण नौजवान, मर्द मर्दाना डेरा लाईआ। एकँकारा वड बलवान, योद्धा सूरबीर नज़री आईआ। आदि निरँजण नूर महान, जोती जाता डगमगाईआ। अबिनाशी करता सच निशान, सति पुरख निरँजण आप उठाईआ। श्री भगवान

वेखे मार ध्यान, अनभव आपणी धार चलाईआ। पारब्रह्म हो प्रधान, सच प्रधानगी इक कमाईआ। सच संदेसा देवे वाली दो जहान, धुर दा हुक्म आप वरताईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करो ध्यान, बेपरवाह रिहा जणाईआ। शब्द दुलारा हुक्मरान, भूपन भूप इक अख्वाईआ। ब्रह्मण्ड खण्ड खेले खेल महान, पुरी लोअ आकाश वेख वखाईआ। धरनी धरत धवल कर परवान, लेखा जाणे थाउँ थाईंआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी जोत धर, सचखण्ड निवासी आपणी दया कमाईआ। सचखण्ड दुआरे सच दरबारा, हरि करता आप लगाईआ। इक इकल्ला एकँकारा, अक्ल कल आपणी खेल खलाईआ। मुकामे हक़ नूर उज्यारा, जलवा इक्को इक दरसाईआ। लाशरीक परवरदिगारा, बेऐब नूर ख़ुदाईआ। खेले खेल अगम्म अपारा, अलख अगोचर वड्डी वड्याईआ। विष्न ब्रह्मा शिव करे ख़बरदारा, धुर संदेसा इक सुणाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दुआरे डेरा लाईआ। सचखण्ड दुआर सच सिँघासण, सो पुरख निरँजण आप सुहाईआ। तख़्त निवासी पुरख अबिनाशन, हरि करता सोभा पाईआ। लेखा जाण पृथमी आकाशन, गगन गगनंतर खोज खोजाईआ। विष्न ब्रह्मा शिव पूरी करे आसन, आसा तृष्ना मेट मिटाईआ। सच जणाए खेल तमाशन, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल बेपरवाहीआ। बेपरवाह खेल सचखण्ड, सच साचा दया कमाइंदा। आदि जुगादी नूरी चन्द, निरगुण निरवैर
१०६७ आप चमकाइंदा। सति सतिवादी धुर दा छन्द, साचा ढोला आप अलाइंदा। निरगुण निरवैर कर कर वंड, हिस्सा आपणा १०६७
आप रखाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा खेल आप जणाइंदा। सचखण्ड दुआरे खेल अवल्ला, हरि करता आप कराईआ। वसणहारा नेहचल धाम अटला, महल अटल करे रुशनाईआ। दीपक जोती आपे बला, बाती तेल ना कोए रखाईआ। शब्द संदेसा निरगुण घल्ला, घर साचे करे पढ़ाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबारा इक लगाईआ। सच दरबारा गया लग्ग, सचखण्ड वज्जे इक वधाईआ। करे खेल सूरा सरबग्ग, शाह पातशाह बेपरवाहीआ। गुर अवतार लए सद्द, सच संदेसा इक अलाईआ। पीर पैगम्बर आउणा भज्ज, बण पांधी पन्ध मुकाईआ। मुकामे हक़ करना हज्ज, हकीकत इक्को दए जणाईआ। रल मिल सोहणा गाउणा छन्द, साचा राग इक समझाईआ। घर लैणा परमानंद, परम पुरख रिहा वरताईआ। जुग चौकड़ी टुट्टी देवे गंढु, गंढुणहार गोपाल स्वामी इक अख्वाईआ। सब दे चोले दए रंग, रंग अवल्लड़ा इक चढ़ाईआ। सेज वखाए सच पलँघ, पावा चूल ना कोए रखाईआ। नाम वजाए अगम्मी मृदंग, तार सितार ना कोए हिलाईआ। लेखा जाणे जेरज अंड, उत्भुज सेत्ज वेख वखाईआ। जुग चौकड़ी मुकावणहारा पन्ध, निरगुण सरगुण सोभा पाईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग रिहा लँघ, वेला अन्तिम दए दुहाईआ। नौ खण्ड पृथमी

सत्त दीप लख चुरासी जीव जंत नंग, ओढन नज़र कोए ना आईआ। आत्म अन्तर होई रंड, हरि जू कन्त ना कोए हंढुाईआ। दूर दुराडा मुकया किसे ना पन्ध, उच्चे टिल्ले पर्बत चढ़ चढ़ थक्के जीव लोकाईआ। दूई द्वैती भरम भुलेखा किसे ना ढाई कंध, भाण्डा भउ ना कोए चुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, सचखण्ड साचे हुक्म वरताईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर आओ नेड़े, हरि करता हुक्म जणाईआ। चारों कुण्ट वेखो झेड़े, दीन मज़्ह़ब करे लड़ाईआ। सति धर्म डुब्बदे वेखो बेड़े, चप्पू नाम ना कोए लगाईआ। नाते तुट्टे तेरे मेरे, मेरा नजर कोए ना आईआ। चारों कुण्ट घुप्प अन्धेरे, जोती चन्द ना कोए चमकाईआ। माया ममता पाए जेड़े, शरअ ज़ंजीर ना कोए कटाईआ। कूड़ी क्रिया आए घेरे, पल्लू सके ना कोए छुडाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सच दरबारे लेखा रिहा जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लोकमात मारो ध्यान, सो पुरख निरँजण साहिब सुल्ताना आप जणाइंदा। लख चुरासी भुल्लया हरि ज्ञान, शास्त्र सिमरत वेद पुराण गीता ज्ञान अञ्जील कुरान खाणी बाणी रंग ना कोए रंगाइंदा। पंच विकारा दर दर घर घर फिरे शैतान, कूड़ी क्रिया डेरा कोई ना ढाइंदा। मुल्लां शेख़ मसायक पंडत पांधे साबत रिहा ना किसे ईमान, सिदक सबूरी ना कोए हंढुाइंदा। नज़री आए ना धुर दा काहन, गोपी रूप ना कोए वटाइंदा। सीता सुरती शब्दी राम ना करे प्रणाम, रमईया रूप ना कोए वखाइंदा। दीन दुनी दोवें होए बेईमान, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, साचा लेखा आप जणाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर खोल्ह्ो अक्ख, सो पुरख निरँजण आप जणाइंदा। कलयुग अन्तिम खेल वेखो प्रतख, भेव अभेदा आप खुलाइंदा। फिरी दरोही तीर्थ तट, गंगा गोदावरी जमना सुरस्ती सीर नीर नेत्र नैणां दिसे वहाइंदा। कूक कूक पुकारन मन्दिर मस्जिद मट्ठ, शिवदुआले धीर ना कोए रखाइंदा। गुरुदुआरे नाम ना विके साचा हट्ट, जगत सियासत नाच नचाइंदा। मणका मणका साध सन्त माला रहे रट, मन का मणका ना कोए भवाइंदा। बहत्तर नाड़ उबले सब दी रत्त, अमृत मेघ ना कोए बरसाइंदा। कूड़ कुड़यारा घर घर गया वस, वसल सच ना कोए कराइंदा। जो मार्ग लोकमात आए दस्स, बण आमल अमल ना कोए कमाइंदा। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेई अवतार चलाया रथ, भगत अठारां संग वखाइंदा। ईसा मूसा मुहम्मद शरअ शरीअत आए दस्स, कलमा नबी रसूल ना कोए समझाइंदा। खाणी बाणी दे के आई मति, गुर मति झोली ना कोए वखाइंदा। पीर पैगम्बर सरगुण निरगुण हो के आए नट्ठ, पंज तत चोला नज़र किसे ना आइंदा। चारों कुण्ट अन्धेरा घट, साचा नूर ना कोए चमकाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा हुक्म आप वरताइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर करो विचार, हरि करता आप जणाईआ। लख चुरासी

भुल्ली विच संसार, संसार सागर तरन कोए ना आईआ। पढ़ पढ़ थक्के जीव गंवार, चौदां विद्या होई हल्काईआ। चौदां लोक रोवण ज़ारो ज़ार, उच्ची कूक कूक सुणाईआ। चौदां तबक होए ख्वार, परवरदिगार मिले ना सच्चा माहीआ। हक़ हकीकत ना सके कोई वखाल, पड़दा सके ना कोए उठाईआ। शब्दी गुर दिसे ना कोए दलाल, साचा वणज ना कोए कराईआ। उच्चे टिल्ले पर्बत जंगल जूह उजाड़ डूंघी कन्दर रहे भाल, प्रभू भालयां हथ्थ किसे ना आईआ। नेत्र वेखो सारे होए कंगाल, रती नाम हट्ट ना किसे विकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, करे खेल साचा हरि, धुर दा लेखा रिहा जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर लओ सुण, हरि वड्डा वड जणाईआ। कलयुग अन्तिम कूड़ी क्रिया इक्को गुण, नौ खण्ड पृथमी बैठा डेरा लाईआ। कोई ना सुणे धुर दी धुन, अनहद नाद ना कोए वजाईआ। सारे चोटीआं बैठे मुंन, सीस जगदीश ना कोए सुहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, वखावणहारा सच्चा घर, सच दरबारे दए जणाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर पूरब वेखो लेखा, हरि करता आप जणाईआ। कीता कौल करो चेता, इकरार भुल्ल कदे ना जाईआ। पुरख अकाल सब ने किहा धुरदरगाही नेता, नर नरायण वड्डी वड्याईआ। जुग चौकड़ी निरगुण सरगुण करे हेता, हितकारी फेरा पाईआ। सतिगुर हो के खेले खेडां, गुर गुर आपणी बूझ बुझाईआ। अन्दर वड़ के देवे भेता, दूई द्वैती पड़दा दए उठाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा रिहा जणाईआ। सुण संदेसा गुर अवतार, पीर पैगम्बर लैण अंगड़ाईआ। सृष्ट सबाई वेखी सिरजणहार दर दर घर घर राह तकाईआ। तेरा नाउँ भुल्लया परवरदिगार, पारब्रह्म तेरा इष्ट ना कोए मनाईआ। कूड़ी क्रिया गए हार, जित रूप ना कोए वटाईआ। कलम शाही लेखा लिख लिख आए जहान, कागद तेरे नाम वड्याईआ। पढ़ पढ़ सारे होए बेहाल, बेवा दिसे जगत लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तुध बिन दूजा भार ना कोए उठाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर प्रभ सरनाई गए ढट्ठ, झुक सजदा सीस झुकाईआ। बिन हथ्थां जोड़न हथ्थ, बिन मस्तक धूढ़ी टिक्का लाईआ। निरगुण रूप कहिण पुरख समरथ, शहिनशाह तेरी वड्याईआ। तेरे हुक्मे अन्दर लोकमात मार्ग आए दस्स, लेखा लिख के कलम शाहीआ। अन्तिम कह के आए पुरख अकाल सब दा माई बाप, पिता इक्को इक जणाईआ। जुग चौकड़ी वेखे खेल तमाश, ख़ालक खलक रूप वटाईआ। निरगुण सरगुण पूरी करे आस, आसा तृष्ना दए बुझाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, दर तेरा नज़री आईआ। श्री भगवान कहे वेखो एक, एकँकारा रिहा जणाईआ। जिस दी सारे दस्स के आए टेक, सो भुल्लया बेपरवाहीआ। बुद्धी दिसे ना किसे विवेक,

मनमति दए दुहाईआ। त्रैगुण माया लाया सेक, अग्नी तत रिहा जलाईआ। कलयुग वेख कूड़ा भेख, भरमे भुल्ली सर्ब लोकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, धुर दा लेखा आप दृढ़ाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर बिन रसना कहिण, वाहवा तेरी प्रभू वड्याईआ। असीं नेत्र लोचण वेख्या नैण, चारों कुण्ट अक्ख खुल्हाईआ। नाता तुट्टा साक सैण भाई भैण, पिता पूत ना कोए वड्याईआ। कूड़ी क्रिया कूड़े वहण वहण, साचा राह ना कोए वखाईआ। मन्दिर मस्जिद शिवदुआले मड्ड मिले ना किसे बहिण, जगत वासना चारों कुण्ट रही दौड़ाईआ। माया राणी खाए डाइण, घर घर फेरा पाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, तुध बिन सार कोए ना पाईआ। तुध बिन सार ना पाए कोए, गुर अवतार रहे जणाईआ। परम पुरख प्रभ तेरे होए, तुध बिन नज़र कोए ना आईआ। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग तेरे नाम दे दित्ते ढोए, वस्त अमोलक जगत वरताईआ। कलयुग जीव बैठे खोए, लाल अमोलक हीरा हथ्थ किसे ना आईआ। बिन दमां रहे रोए, नेत्र नैणां नीर वहाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, सब तेरी आस रखाईआ। तेरी आस बैठे तक्क, हरि साहिब सज्जण सुल्ताना। जुग चौकड़ी गए थक्क, तेरा दे दे नाम ज्ञाना। कलयुग अन्तिम सब नूं प्या शक, भुल्लया पारब्रह्म श्री भगवाना। कोई ना जाणे हकीकत हक़, चारों कुंट कूड़ प्रधाना। लेखा चुक्कया तत अट्ठ, अप तेज वाए पृथ्मी आकाश मन मति बुध ना कोए ज्ञाना। सति रहे ना किसे तीर्थ तट, अठसठ मिले ना कोए माणा। साधां सन्तां धीरज जत ना रिहा हठ, सति सन्तोख ना कोए वखाना। तेरी कोई ना जाणे मितगत, तेरा दरस ना कोए पाणा। सच सच प्रभ तैनूं रहे दस्स, हउँ बालक बाल अञ्याणा। जो किछ तेरा सो तेरे वस, कर किरपा वड मेहरवाना। निरगुण लोकमात हो प्रगट, कलयुग पहर अगम्मी बाणा। धुर दा खोल्ह साचा हट्ट, चार वरनां कर परवाना। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा अगम्मी वर, मिले सच तेरा परवाना। गुर अवतार पीर पैगम्बर रहे आख, आख़र तेरी ओट तकाईआ। भविक्खत वाक जो आए भाख, भाख्या भाषा विच सुणाईआ। कर किरपा प्रभ खोल्ह ताक, बंद कवाड़ी कुण्डा लाहीआ। कूड़ी क्रिया मेट ज़ात पात, कमलापात इक्को नूर कर रुशनाईआ। दीन मज़्ब बणा सज्जण साक, सगला संग आप निभाईआ। कलयुग जीवां वेख हालात, हालत सब दी दे बदलाईआ। बिन तेरे कलमे तेरे नाम सब दी होई वफ़ात, फ़तवे सब ते रिहा लगाईआ। मेहरवान सच प्याला प्या आबेहयात, हयाती सब दी दे बदलाईआ। दरोही तेरे नाम खुदाए तोबा करे कायनात, दोए जोड़ सीस झुकाईआ। किरपा कर सच महिराब, महिबूब आपणा नूर कर रुशनाईआ। तेरा लेखा लिख्या ना जाए किसे विच बाब, वंड सके ना कोए

वंडाईआ। तोहे सजदा इक आदाब, नमो नमो सीस झुकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, लोकमात वेखीं चाईं चाईंआ। लोकमात प्रभ वेख आ, कलयुग अन्धेरा छाईआ। निरवैर पुरख कल फेरा पा, बेअन्त तेरी वड्याईआ। नौ सौ चुरानवे चौकड़ी युग बैठे पन्ध मुका, मुकी वाट पराईआ। जोती जामा वेस वटा, नूरो नूर कर रुशनाईआ। धुर दा ढोला इक सुणा, सच्चा राग अल्हाईआ। बण के तोला शहिनशाह, दो जहान कंडे दे चढ़ाईआ। पड़दा उहला दे मिटा, सनमुख इक्को नज़री आईआ। भगत भगवान लै जगा, जागरत जोत कर रुशनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर दर बरदे मंगण दुआ, ख़ाली झोली रहे वखाईआ। बिन तेरे कलयुग करे ना कोई शफ़ा, मरीज़ बणी सर्ब लोकाईआ। पुरख अकाल दीन दयाल साहिब सज्जण हो सहा, सहायक इक्को नज़री आईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, उठ वेख आपणा दर, राह तक्के जगत लोकाईआ। राह तक्के तेरा लख चुरासी, चार कुण्ट ध्यान लगाईआ। कवण वेला प्रभ किरपा करे पुरख अबिनाशी, अबिनाशी करता दया कमाईआ। आवण जावण कटे जम की फाँसी, धुर दा लेखा दए मुकाईआ। निर्मल जोत नूर नूर होवे प्रकाशी, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। तेरा भेव ना पाए कोई पंडत कांशी, ज्ञानी ध्यानी सार किसे ना आईआ। कूड़ी क्रिया तेरे नाउँ करदे हासी, मसख़रे तेरा नाटक समझ कोए ना पाईआ। शब्द अगम्मी चढ़ ताजी, अस्व इक्को इक सुहाईआ। सोलां कलीआं आसण साजी, इच्छया सोलां पूर कराईआ। धुरदरगाही वड नवाबी, शाह पातशाह फेरा पाईआ। बिन तेरे होए उदासी, ग़मी चिन्ता रूप वटाईआ। सुंञा दिसे मण्डल रासी, गोपी काहन ना कोए नचाईआ। किरपा कर शाहो शाबासी, पुरख अकाल तेरी सरनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर तेरी रख के आए अन्तिम आसी, आसा सब दी पूर कराईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा धुर दा वर, जिस मिलयां तोट रहे ना राईआ। दे वर सच्चे भगवन्त, भगवन तेरे चरण सीस निवाईआ। आदि जुगादी साचे कन्त, कन्त कन्तूहल तेरी सरनाईआ। जुग चौकड़ी बीते बेअन्त, कोटन कोटि काल विहाईआ। तेरी महिमा लिख लिख थक्के अगणत, अन्त कहिण कोए ना पाईआ। तेरा ध्यान लगावण साचे सन्त, अन्तर आत्म वेख वखाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तुध बिन राजन राज नज़र कोए ना आईआ। श्री भगवान हो दयाल, दयानिध आप समझाईआ। सचखण्ड दुआर वेखो सच्ची धर्मसाल, दर इक्को इक जणाईआ। एथे ना कोई शाह ना कंगाल, ऊँच नीच ना कोए जणाईआ। त्रैगुण माया ना कोई जंजाल, पंज तत रूप ना कोए वटाईआ। इक्को जोत बेमिसाल, नूरो नूर डगमगाईआ। नज़र ना आए काल महाकाल, लेखा जाणे बेपरवाहीआ। सारे सुणो इक स्वाल, वड स्वाली आप समझाईआ।

जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, गुर अवतार पीर पैगम्बर इक्को हुक्म मनाईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर वेखो चरण कँवल, हरि सतिगुर आप जणाइंदा। झगड़ा छड्डो धरनी धवल, धुर दा भेव आप खुल्हाइंदा। सब ने मन्नया नूर खुदाई अवल्ल, आलमीन सोभा पाइंदा। सब ने पीणी धुर दी पवल, अमृत आबेहयात मुख चुआइंदा। सारे मेरे नूर गए मवल, मौला इक्को सोभा पाइंदा। रल मिल करो इक्को कौल, इकरारनामा आप जणाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सचखण्ड दुआरे सच हुक्म वरताइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर करो इकरार, इक इकल्ला आप जणाइंदा। दीन मज़्हब ना कोए विहार, ज़ात पात ना कोए रखाइंदा। निरगुण नूर निरगुण धार, निरगुण जोती निरगुण जोत जाता इक्को सोभा पाइंदा। निरगुण मन्दिर होए उज्यार, निरगुण आसण इक सुहाइंदा। निरगुण शहिनशाह सिक्दार, भूपत भूप इक अख्वाइंदा। निरगुण हुक्म करे जुग चार, गुर अवतार हुक्मे अन्दर फिराइंदा। निरगुण लेखा जाणे विष्न ब्रह्मा शिव वारो वार, नित नवित्त आपणा खेल खलाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दा लहिणा मूल चुकाइंदा। गुर अवतार पीर पैगम्बर पूरब लेखा दयो छड्ड, चौथे युग अन्त रहिण ना पाईआ। सचखण्ड दुआरे दीन
११०२ मज़्हब ना कोई अड्ड, धर्म इस्लाम ना कोए समझाईआ। पिछला नाता रहि गया काया माटी हड्ड, अग्गे नूरो नूर जोत रुशनाईआ। ११०२
जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, सब दी तोड़नहारा हद्द, सच हदूद इक वखाईआ। सच हदूद वखाए
१५ हरि, हरि करता दया कमाइंदा। परम पुरख दा पकड़ो लड़, पल्लू इक्को नाम बंधाइंदा। तूं मेरा मैं तेरा कलमा नाम ढोला १५
लैणा पढ़, दूजा राग ना कोए सुणाइंदा। साची अल्फ़ी पौणी गल, तन ख़ाकी आप समझाइंदा। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, धुर दा लेखा आपणे हथ्थ वखाइंदा। गुर अवतार कहिण सच, सच तेरी वड्याईआ। पीर पैगम्बर मन्नण हस्स, दर बैठे सीस झुकाईआ। हर घट अन्दर तू ही रिहा वस, तेरा नूर ख़लक खुदाईआ। साडी पूरी होई आस, सदी चौधवीं खुशी मनाईआ। सदी बीसवीं आए तेरे पास, सचखण्ड साचा वेख वखाईआ। दर दुआरे रल मिल पाई इक्को रास, गोपी काहन रूप वटाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जगत वसाउणा साचा घर, उजड़या खेड़ा वेख बेपरवाहीआ। कलयुग खेड़ा रिहा उजड़, चारों कुण्ट पई दुहाईआ। जगत जीव बणे बुच्चढ़, छुरी करद कसाई हथ्थ उठाईआ। हथ्थीं मारन तेरे पुत्तर, आपणा बच्चा ज़िबह ना कोए कराईआ। निरगुण धारों पुरख अकाल उतर, तैनूं जन्मे कोए ना पिता माईआ। गुर अवतार पीर पैगम्बर सारे मिल के मनावण शुकर, शुक्रिया तेरा अदा कराईआ। जन भगतां चुक आपणे कुछड़, साची गोदी लै बहाईआ। उजल कर मात मुखड़, दुरमति मैल धवाईआ। मात गर्भ उलटे फेर ना

होवण रुक्खड़, लख चुरासी पन्ध मुकाईआ। इक्को सरन तेरी हरि झुकण, दूजा इष्ट ना कोए मनाईआ। दो जहानां पैंडे मुक्कण, नव नौ चार डेरा देणा ढाहीआ। तेरे बूटे कदे ना सुक्कण, फुल्ल फलवाड़ी मात महकाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, हरिजन वेखे चाईं चाईंआ। आ प्रभू प्रभ ठाकर स्वामी, सोभावन्त तेरी सरनाईआ। निरवैर पुरख घट अन्तरजामी, मेहरवान वड्डी वड्याईआ। भरम मिटा चार ख़ाणी, चारे बाणी दे समझाईआ। परा पसन्ती मद्धम बैखरी ना किसे पहचानी, पर्दा सके ना कोए उठाईआ। दर दर घर घर शब्द मिलावा कर सुरत सवाणी, नार कन्त रूप वटाईआ। घर मन्दिर जगे जोत नूरानी, अन्ध अन्धेर गंवाईआ। शब्दी शब्द अगम्म सुणा धुर दी बाणी, बाण अणयाला तीर चलाईआ। लेखे लग्गे जीव प्राणी, प्राण आपणी झोली पाईआ। तुध बिन सतिगुर पूरे भगतां आई हानी, सिर हथ्थ ना कोए टिकाईआ। कलयुग कूड़ी क्रिया मनमुखता मारे कानी, तिक्खी धार वखाईआ। तुध बिन देवे ना कोए पद निरबाणी, साचे घर ना कोए वसाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, हरिजन साचे लै मिलाईआ। तुध बिन करे ना कोई मेला, प्रभू मालक नज़र कोए ना आईआ। तेरा रूप गुरु गुर चेला, सतिगुर तेरे हथ्थ वड्याईआ। कलयुग अन्तिम तेरे मिलण दा वेला, बौहड़ी बौहड़ी कर रहे कुरलाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तेरे चरण मिले सरनाईआ। जन भगतां बण प्रभ मीत, मित्र प्यारे तेरी आस रखाईआ। अन्दर वड़ के दस्स गीत, बाहर कोए ना करे पढ़ाईआ। आत्म परमात्म होए अतीत, त्रैगुण लेखा दे मुकाईआ। काया होए ठांडी सीत, अग्नी तत बुझाईआ। लेखा चुके मन्दिर मसीत, घर परमेश्वर नज़री आईआ। दर्शन पावां बीठलो बीठ, मुख पड़दा आप उठाईआ। तेरी कोई ना जाणे रीस, तेरी सार किसे ना आईआ। जुग चौकड़ी तेरा राह रहे उडीक, नेत्र नैण अक्ख खुल्हाईआ। कलयुग अन्त आई तारीख़, जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, इक्को देणा सच्चा वर, तेरे भगत तेरा ध्यान लगाईआ। श्री भगवान दया कमौदा ए। सचखण्ड निवासी धुर फ़रमान सुणाउँदा ए। शब्द अगम्मी राग अलाउँदा ए। आत्म परमात्म आप जगाउँदा ए। भगत भगवान वेख वखाउँदा ए। साचा देवे इक ज्ञान, अज्ञान अन्धेर मिटाउँदा ए। निरगुण हो के वेखे आण, सरगुण तेरा पन्ध चुकाउँदा ए। सच दुआरे देवे माण, कूड़ी क्रिया डेरा ढौंहदा ए। अमृत बख्शे आत्म पीण खाण, तृष्ना भुक्ख गवाउँदा ए। साचे मन्दिर कर परवान, सच सिंघासण आप बहाउँदा ए। नज़री आए नौजवान, बिरध बाल ना रूप वटाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां वेख वखाउँदा ए। जन भगतां दया कमाउँदा ए। प्रभ आपणे रंग रंगाउँदा ए। सच मृदंग नाम सुणाउँदा ए। निजानंद अनन्द

प्रगटाउँदा ए। जोती नूर चन्द चमकाउँदा ए। बंद बंद ख़ुशी कराउँदा ए। कूड़ी क्रिया कर के खण्ड खण्ड, ख़ालस आपणे नाल मिलाउँदा ए। जुग जन्म दा मेट पन्ध, धाम साचे आप वसाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगत दुआरे फेरा पाउँदा ए। जन भगत दुआरे आउँदा ए। नित नवित्त वेख वखाउँदा ए। सतिजुग त्रेता द्वापर कलयुग आप हंढ्ढाउँदा ए। आपणे मिलण दी कर के बिध, संग साचा आप रखाउँदा ए। हरि जन कारज कर के सिध, रिद्ध सिद्ध चरणां हेठ दबाउँदा ए। लेखा जाण जीउ पिण्ड इंड, ब्रह्मण्ड खोज खोजाउँदा ए। अन्त बणा नादी बिंद, सुत आपणी गोद उठाउँदा ए। दीन दयाल हो बख्शिंद, कलयुग अन्तिम वेखण आउँदा ए। दाता दानी गुणी गहिंद, गहर गम्भीर खेल रचाउँदा ए। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, देवणहारा सच्चा वर, जन भगतां पड़दा लौंहदा ए। जन भगतां पड़दा जाए लथ्थ, जुग छत्ती पन्ध मुकाईआ। नज़री आए पुरख समरथ, हरि करता नूर रुशनाईआ। चरण कँवल जाइण वस, सच दुआर मिले वड्याईआ। मेहरवान मेहरवान मेहरवान किरपा करे करता पुरख हो प्रतख, पुरख पुरखोतम होए सहाईआ। हरख़ सोग चिन्ता ग़म दुःख जाइण नस्स, सुख अन्तर इक उपजाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आप आपणी किरपा कर, जन भगतां अन्दर जाए वस, निरगुण निरगुण निरगुण रूप वटाईआ। भगतन अन्दर वसे आप, हरि जू आपणी दया कमाईआ। भगतां अन्दर दस्से जाप, अनबोलत राग सुणाईआ। भगतां अन्दर करे पाठ, रसना जिह्वा ना कोए हिलाईआ। भगतां अन्दर वेखे घाट, सर सरोवर इक प्रगटाईआ। भगतां अन्दर खोल्हे हाट, बण वणजारा हट्ट चलाईआ। भगतां अन्दर देवे दात, अनमुलड़ी दात आप वरताईआ। भगतां अन्दर खोल्हे ताक, बजर कपाटी पड़दा दए उठाईआ। भगतां अन्दर अमृत बूँद देवे स्वांत, सांतक सति सति कराईआ। भगतां अन्दर बैठा रहे इकांत, अडोल डुल कदे ना जाईआ। भगतां अन्दर मिल के देवे आपणा साथ, बण संगी संग निभाईआ। भगतां अन्दर निउँ निउँ टेके आपणा माथ, मस्तक सीस झुकाईआ। भगतां अन्दर खेल पुरख समराथ, हरि करता आप कराईआ। आदि जुगादि जुग चौकड़ी नित नवित्त जन भगतां हो के वस, बण चाकर चाक सेवक सेव आप कमाईआ। जोती जोत सरूप हरि, आपणी आप जोत धर, निहकलंक नरायण नर, खेले खेल सर्ब गुणतास, गुणवन्ता प्रभ बेअन्ता बेऐब अथाह आपणी कार हरि करतार हरि करता आप कमाईआ।